श्री
प्रकरणरत्नाकर

भाग १ लो.

जिनवचनामृतमहोदधिजन्य

धुरंधर सुविहित गीतार्थज्ञ पूर्वाचार्य वचन तरंग बिंदुरूप

विविध विषयक प्रकरणाख्य ग्रंथोनो यत्किंचित् संग्रह करीने

श्री मुंबापुरीमध्ये

शा. भीमसिंह माणक नामाख्य श्रावके

स्वामित्व विरहित

ज्ञानवृद्ध्यर्थ

मुंबई:—" निर्णयसागर " मुद्रायंत्रमां

आ पुस्तक छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

शाके १८२४ संवत् १९५९ सन १९०३

प्रस्तावना.



आ जगत्‌मां आत्महित पमाम्नार कोइ मार्ग होय तो ते परम पवित्र वीतराग पुरुषोनो धर्म छे. ए मार्ग स्याद्वाद छे; अविरोधी छे. एनी खात्री ए मार्गने अनुसर नारा पूर्वे थइ गयेला एवा महान् आचार्योनां वचनो छे. ए पूर्व पुरुषोए जे जे अपूर्व ग्रंथो रच्या छे, ते ते पवित्र दर्शनना महिमानी अने तेमनां ज्ञाननी साक्षी पुरेछे. आवा सत्पुरुषोए रचेल अपूर्व, अमृतमय ज्ञान पुस्तकोने देखी, वांची, विचारी क्यो आत्मानंदी जीव उल्लास नहिं पामे ?

एवो आनंद आत्महितैषियो प्राप्त करे, तत्त्व पामे, पूर्व महापुरुषोनापगले चाली तेना जेवा थाय, अने ए पूर्व महापुरुषोनी कृतिउं अविछिन्न जलवाइ रहे, ए आदि हेतुथी, स्वपर हित बुद्धिथी, निर्जरानां कारणथी अमे एवा महापुरुषोना प्रकरण ग्रंथो प्रसिद्धकरवा प्रयास कर्यो छे. ए प्रयासना अंगे अमारा तरफथी श्री प्रकरण रत्नाकरना चार भागआदि अनेक ग्रंथो बहार पडी चूक्या छे.ए बधानी खपती, अने एथी जाग्रत थएली जैनभाइयोनी ज्ञानरुचि ए ग्रंथो तथा तेमना कर्त्तापुरुषोनुं महा त्म्य प्रगट करेछे; तथा एवा बहु बहु ग्रंथो प्रसिद्धिमां आववानी आवश्यक्ता सूचवे छे.

आ प्रकरण रत्नाकरनो प्रथम भाग एकवार छपाइ गयो हतो; ए खपी जवाथी फरी आवृत्ति सुधारा वधारा साथे छपावी छे. तेमां प्रथम ग्रंथ, न्याय विशारद महोपा ध्याय श्रीमद् यशोविजयजी रचित विहरमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामिनी स्तुति गर्भित साडी त्रणसो गाथानुं अति अद्भुत स्तवन छे. ते ग्रंथमां सूत्रथी विरुद्ध आचारें चालनारा अने प्ररुपणा करनारा इत्यादिकोने प्रथम ढालमां सिद्धांत अनु-सारे यथाविधि प्रवर्त्तवा उपदेश आपेलो छे अने तेवाज उत्तम विषयो संबंधी सत्तर ढालमां स्तवननी रचना करेली छे. स्याद्वाद शैलीवाली नयगर्भित वाणीना शिखरना टोच उपर पहोंचेला आ विद्वाननी हरेक कृति वांचता मनमां सानंदाश्चर्य थायछे.

बीजोग्रंथ श्रीदेवचंद्रजी कृत आगमसार ग्रंथ छे. आ ग्रंथमां यथाप्रवृत्ति प्रमुख त्रण करणनुं, सात नयनुं, चार निक्षेपानुं, प्रमाणोनुं तथा सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपथी दर्शावेलुं छे. आ ग्रंथ वांचतां सिद्धांतनो सामान्यसार उपलब्ध थायछे. जे पद्धतिथी ग्रंथ लखवामां आवेलोछे, ते पद्धति प्राचिन छे, परंतु रसिक छे.

त्रीजो श्रीदेवचंद्रजी माहाराजनो रचेलोश्रीनयचक्रसार ग्रंथछे. आग्रंथमां सप्तनय तथा सप्तभंगोनुं स्वरूप एवुं उत्तम प्रकारे रचेलुंछे, के जेने यथास्थित रीते अध्ययन

करतां जैनदर्शननुं सूक्ष्म स्वरूप सारीरीते समजी शकाय. तेशिवाय षट् पदार्थनुं पण संक्षेपथी स्वरूप दर्शाव्युंछे.

चोथो ग्रंथ श्रीआनंदघनजी माहाराज कृत चोवीशीनोछे; अने ते बालावबोध सहितछे. अध्यात्मज्ञानना शिखर उपर बिराजमान थयेला श्रीआनंदघनजी माहाराज अने तेमनी चोवीसी जगप्रसिद्धछे. तेमना अध्यात्म ज्ञान विषे अत्रेविशेष लखवानी कांइपण आवश्यकता नथी. वली साक्षर पुरुषो ज्यारे तेमनी चोवीसी वांचेछे तथा तेनुं अध्ययन करेछे, त्यारे तरत तेमना अंतःकरणमां अध्यात्म ज्ञाननो विलास प्रगट थायछे. चोवीसी उपरनो बालावबोध प्राचीन गुजराती भाषामां लखायेलो होवाथी, तेने आधुनिक गुजराती भाषामां सुधरावी अमे आग्रंथमां छपेलोछे. कारणके तेप्रमाणे करवानी सूचना अमने अनेक अभ्यासीउं तरफथी थयेलीहती. ते सूचना अमने वास्तविक लागवाथी उपकारनो हेतु जाणी तेम करेलछे अने तेप्रमाणे करतां बालावबोध कर्त्ताए बतावेलो आशय लेशमात्र पण दूरकरवामां आवेलो नथी. जेथी आ चोवीसीना अभ्यासीउंने हवे ज्ञाननो उत्तम प्रकारे लाभ थवानो संभवछे.

पांचमो ग्रंथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायजी रचित श्रीद्रव्यगुणपर्यायनो रासछे. आ रासनो ग्रंथ उपाध्यायजी माहाराजे गुजराती भाषामां रचेलोछे अने तेनी पद्यरचना उपर बालावबोध पण ते उपकारी महात्माएज करेलोछे. आग्रंथनो विषय अतिगहनछे, आग्रंथने गुजराती भाषामां रचवानो ग्रंथकर्त्तानो हेतु चमत्कार उपजावे तेवोछे. परंतु दंतकथा रूप होवाथी ते अत्रे दर्शाव्यो नथी. गुजराती पद्यरचना अने तेना उपरनो स्वकृत बालावबोध छतां सामान्य वाचक वर्गने बोध न थइ शके तेनुं कारण ग्रंथनो विषय अतिशय कठिन अर्थात् द्रव्य, गुण अने पर्यायना अतिसूक्ष्म ज्ञानथी भरपूर छे ते छे.

छठो "योगदृष्टि समुच्चय सझाय" नामनो ग्रंथछे. आ मूलपद्य बद्ध छे; तेनो गुजराती बालावबोध साथे छे. श्री हरिभद्राचार्ये मूल संस्कृतमां "श्रीयोगदृष्टि समुच्चय" नामनो संस्कृत श्लोकबद्ध एक अपूर्व ग्रंथ लख्यो छे, तेनाज भाषांतर रुपे (संस्कृत श्लोकमांथी गुजराती पद्य) श्रीमद् उपाध्यायजीए संस्कृतथी अजाण एवा आ कालना घणा जीवोनां हित हेते परम उपकार बुद्धिथी आ सझाय रची छे. भवभीरु, आत्महितैषियोने पोतानी दशानुं माप करवाने, अर्थात् पोते ज्ञानदशानी, सम्यक्त्वनी, गुणस्थानकनी केटली हदमां छे, ए जाणवामाटे आ सझाय (thermometer) मापकरणयंत्र छे, एम कहिये तो चाले. मित्रादि आठ दृष्टिउं जे गुणश्रेणि बतावे छे, ते पैकी कइ दृष्टिमां (दृष्टि–बोध; आत्मबोध) पोते वर्त्ते छे, ते आ दृष्टिउंने मनन पूर्वक अभ्या-

र्त्तनारने बराबर मालम पडेछे, मालम पडेछे एटलुंज नहिं, पण अमुक दृष्टिए वर्त्तनारनां लक्षण अमुक गुणो छे,ए वगेरे हकीकत जणावाथी पोतामां ते गुणो होय तो ते वृद्धिंगत करी, अने नहोय तो मेलवी अथवा मेलववा प्रयास करी आगल दृष्टि पामवानुं, गुणश्रेणि वधवानुं निमित्त थाय छे. आम ए सज्झाय बहु उपकारी छे; आत्मार्थीओए ए बहु मनन करवा योग्य छे.

सातमो विषय "अध्यात्मसार" ए नामनो ग्रंथ छे. ए ग्रंथना संबंधमां अमे आ पुस्तकना पृष्ट (५५६–७) उपर सूचना रुपे कांइक लख्युं छे,ते वांचवा योग्य छे. आ ग्रंथ अध्यात्मनो सारज छे; अर्थात् आत्माने उद्देशीने,आत्म हितनी जे जे वातो होय,–तेनो सार छे. हेय (छांडवायोग्य) छांडी देवाना, उपादेय (ग्रहण करवायोग्य) ग्रहण करवाना बोधरुपे छे. आ ग्रंथना सात प्रबंध पाड्या छे; तेना बधामली एकविश अधिकार छे. ते अद्भुत संकलनाबद्ध छे, जे अनुक्रमणिकाथी समजाशे. आ ग्रंथ बहु उपकारी छे.

आठमो विषय " समाधिशतक " नामे (१०२) पदनो हिंदी भाषानोग्रंथ छे. संसारथी उद्विग्न थएला जीवोने आ पदो बहु बहु शांतिनुं निमित्त थायछे, तथा बाह्य प्रवृत्तिमां तणाता जीवो जो एकवार आ पदोने शांतिथी वांचे, तो तेओने तत्काल तो स्तब्ध करी दिये एम छे. मुमुक्षुओए आ पदो विचारवा योग्य छे.

नवमो विषय पण उपला जेवोज समता उपजावे एवो " समता शतक " नामे पद्यबद्ध हिंदी भाषानो ग्रंथ छे.

दशमो विषय दिगंबरोने कदाग्रह छोडवारुपे हित बुद्धिथी अपाएल उपदेशयुक्त " दिक्पट चोराशी बोल " नामे पद्यबद्ध हिंदी भाषानो ग्रंथ छे.

अग्यारमो विषय "श्री चिंतामणि पार्श्वजीननां" बे स्तोत्रो संस्कृतमां छे. एमांनो बीजो कोइक श्रावक मलुकचंद वीरचंदे रच्यो लागेछे. परम शांत वीतराग एवा प्रभुनी स्तुतिरुपे ए स्तोत्रो स्मरण–पठन करवा योग्य छे.

बारमो श्री समयसार ग्रंथछे. एना कर्त्ता कवि बनारसीदास छे. ए पुरुषनो सविगत इतिहास आपणने मल्यो नथी; तथापि आ ग्रंथमांथी एओना विषे आपणने घणुं जाणवानुं मली आवे छे. एनी पंडिताइ, विद्वता अने आत्मनिष्ठानी आ ग्रंथ आपणने प्रतीति करावे छे. आ ग्रंथ हिंदी भाषानां पदमांछे; साथे गुजराती टीका छे. प्रधान पणे एमां द्रव्यानुयोगनो अधिकारछे. नाम प्रमाणेज ए ग्रंथ "समय" ना,–'आगम" ना साररूप, तत्त्वरूप छे. स्याद्वाद शैलिना जाण पुरुषोए निश्चय अने व्यवहार ए बेरूपे धर्मनुं निरूपण कर्युं छे; तेमां आ ग्रंथ प्रधानपणे निश्चयधर्म प्ररूपतो होवाथी एकांत वादिने रोगीने अपथ्यनी जेम अहित रूप थाय. एकांतवादीने तो बधुं अहित रूप थवा योग्य छे; पण व्यवहार

लक्ष्मां राखी, तेनी जाणे-अजाणे उपेक्षा कर्याविना अपेक्षा पूर्वक वांचनार, विचार नारा आत्मार्थीउने आ ग्रंथ बहु उपकारनुं कारण ले. निश्चय लक्ष्मां राखी व्यवहारे विचरवुं ए आत्मार्थीनुं कर्त्तव्य ले; ए निश्चय शुं ले,-ए जाणीने लक्ष्मां राखवानुं आ ग्रंथ उत्तम साधन ले. वस्तुनुं सापेक्षपणुं विचारनारने आ अने आवा ग्रंथो बहु ला नरूप ले. द्रव्यनां स्वरूपना जिज्ञासुउने आ ग्रंथ परमाणंदनुं कारणले. ज्ञेय, हेय, आदेय, तत्त्व, द्रव्य, गुणश्रेणि-ए वगेरेनुं वस्तुना मूल धर्मने अवलंबीने कर्त्ता पुरुषे एवुं मनहर अने असरकारक निरूपण कर्युं ले, के तत्त्वरुचिजीवो आनंदमां गरकाव थइ रहे ले. बंद पण शूरातन उपजावे, आत्माने जाग्रत राखे एवा मोटे नागे सवैया एकतीसा अने तेइसा राख्या ले. ए ग्रंथ केवी पद्धतिए योजायलो ले,तेनुं कंइक सूचवन अनुक्रमणिकाथी थइ शकशे. आ नामनो मूल ग्रंथ प्राकृत नाषामां श्री कुंदकुंदाचार्ये रच्यो ले; ते परथी संस्कृतमां श्री अमृतचंद्राचार्ये योज्योले; अने ते परथी संस्कृत-प्राकृतना अजाण एवा आ कालना जीवोनाउपकार अर्थे श्री बनारसी दासे हिंदी नाषामां योज्यो ले.

आ नागमां उपर दर्शाव्या प्रमाणेना जे जे ग्रंथो प्रसिद्ध करवामां आवेलाले तेनुं यथार्थ ज्ञान मेलववामां मात्र वांचीजवुं ते पुरतुं नथी. अध्ययननी खास जरूर ले अने तेपण सारीरीते जेउए आ ग्रंथोनुं अध्ययन करेलुं होय तेवा साक्षर पुरुषोनी पासे अध्ययन करवानी जरूरले. ज्यांसुधी तेवीरीते अध्ययन करवामां न आवे त्यां सुधी ग्रंथना विषयने, मात्र वांचनार उत्तमप्रकारे पामीशकतो नथी. मात्र वांचवाथी ग्रंथना विषयनुं उपरचोटीयुं ज्ञान थायले, परंतु अन्यास करवामां आवे त्यारेज ते ज्ञाननुं पाचन थायले. अने ज्यारे निरंतर अन्यास करवानी पद्धति थइजाय, त्यारेज आवा ग्रंथोना अध्ययनथी जैनदर्शननी शैली समजी शकायले.

अंग्रेजी केलवणी लीधेला अने लेनारा आपणा जैनबंधुउ वारंवार एवी दलीलो करेले के, जैनदर्शनमां उतरवा सारू अर्थात् जैनदर्शननुं ज्ञान सेहेलाइथी मलीशके एवीरीतनी अध्ययन करवानीहाल पद्धति नथी. आवी तेमनी दलीलो अमूक आ-पेक्षाए वास्तविक लागे तेवीले, परंतु एवीदलीलो करी धर्मना ज्ञान पाबल बिलकुल प्रयास नहि लेता मात्र नहि अन्यास करवाना बाहाना वाली दलीलो करवी ते वास्तविक नथी. तेमना अनुनवमां आवेलुंज हशे के अंग्रेजी नाषानो, तेमज बीजा अनेक विषयोसंबंधी, अन्यास करवामां अध्यापकोनी केटली आवश्यकताले. मास्त-रोनी मददशिवाय तेउपण नाषासंबंधी तथा विषयो संबंधीबोध प्राप्त करी शक्यानथी. एवीरीते ज्यारे सांसारिक सामान्य ज्ञानसारू पण मास्तरोनी मदद लेवी पडेले,त्यारे

धर्मनुं उत्तम ज्ञान मेलववासारू अध्यापकोनी मदद शिवाय ते ज्ञान केवीरीते मलीशके ते सेहेज समजाइ शकाय तेमछे. तेथी आत्मकल्याणना अर्थी आत्मार्थीए उत्तम गुरु उंनी पर्युपासना करी आवा अपूर्व ग्रंथोनो अभ्यास करवानी जरूरछे. किं बहुना ?

ज्ञाननी वृद्धि ज्ञानीउं उपर आधार राखेछे अने ज्ञानीउंनी वृद्धि ज्ञान उपर आधार राखेछे. ज्ञान अने ज्ञानीउंनो परस्पर कार्य कारणभाव संबंध छे. ज्यारे ज्ञानीथी ज्ञाननो प्रसार थायछे त्यारे ज्ञानी ज्ञाननुं कारण छे अने ज्ञान ज्ञानीनुं कार्य छे अने ज्यारे ज्ञानना प्रसारथी ज्ञानीउंनी वृद्धि थायछे, त्यारें ज्ञान ज्ञानीउंनुं कारण छे अने ज्ञानी ज्ञाननुं कार्यछे. यद्यपि ज्ञान अने ज्ञानीनो गुण गुणी संबंध होवाथी भेद स्वरुपवाला कार्य कारणभावमां शंका उत्पन्न थाय, कारणके ज्ञान अने ज्ञानीनो कार्य कारण संबंध अभेद स्वरुपवालो छे, छतांपि कर्म सहित जीवने ज्ञानरुप गुण उत्पन्न थायछे तेथी भेद स्वरुपवाली कार्यता संभवेछे अने ज्ञानीने कारणता संभवे छे. तेज प्रमाणे ज्ञानथी ज्ञानीपणुं प्राप्त थायछे तेथी ज्ञानी कार्य छे अने ज्ञान कारण छे.

वस्तुउंनी सिद्धि सारु साधनोनी संपूर्ण आवश्यकता छे. ज्ञान प्राप्त करवानी अभिलाषावालाने तेनां साधनो, व्याकरण, काव्य, कोष, ज्योतिष, न्याय अने धर्मना अनेक शास्त्रो, तेते शास्त्रोना अध्यापको अने अध्ययनना विधि अने श्रवण, मननादिकनी आवश्यकता छे.

प्राचिन कालमां विद्वानोनी स्मरण शक्ति अतिप्रबल होवाथी हरेक विषयनी प्रक्रिया तेउं श्रेणिबंध कंठाग्र राखी शकता हता, अर्थात् द्वादशांगी सुधी तेउं मुखपाठ करी शकता हता. ते समये देवनागरी प्रमुख लीपीउं विद्यमान हती, छतां स्मरण शक्तिनी उत्कृष्टता होवाथी ग्रंथो लखी राखवानी तेउंने जरुर पडती नही. कालानुसारे मनुष्योनी स्मरण शक्तिमां मंदता थवाथी ज्ञाननी न्यूनता थवा लागी तेथी पूज्यपाद श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रमुख विद्वानोए एकत्र थइ ग्रंथो लखवा, लखववानो प्रारंभ कर्यो, ते समयथी उत्तम पुरुषोए अनेक ग्रंथो लखावीने ज्ञानना अनेक भंडारो कराव्याछे, जे अद्यापि विद्यमान छे.

प्रथम तालपत्र उपर ग्रंथो लखी राखता हता अने तेवा तालपत्र उपरना ग्रंथो जोइने मनमां घणुंज आश्चर्य उत्पन्न थायछे कारणके तालपत्र उपर ग्रंथ लखता बहुज मेहेनत लागेछे. ज्यारथी कागलनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी कागलो उपर ग्रंथो लखवानुं काम शरु थयुं अने तेवा कागलो उपर लखेला लाखो ग्रंथो अद्यापि विद्यमान छे.

कागल उपर लखेला ग्रंथोथी ज्ञानवृद्धि थायछे ते सत्य छे. परंतु ज्ञाननो अति विस्तारथी प्रचार करवो होयतो मुद्रायंत्र कला ज्ञान वृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन छे. लखेला

ग्रंथने दशांशमे नागे बलके तेनाथी पण ंडे खरचे मुद्रित ग्रंथ प्राप्त थइ शकेछे. तेथी ज्ञान वृद्धिना आ उत्तम साधनने अनेक रीते उपयोगमां लेवानी पुरी जरुर छे.

डुनीआना अनेक विद्वानो जैनदर्शनना तत्त्वज्ञानने उत्तम प्रकारे सेहेलाइथी जाणीशके तेवा ग्रंथो मुद्रित करावी प्रसिद्धिमां लाववानी संपूर्ण आवश्यकता छे. ज्यां-सुधी अपूर्व तत्त्वज्ञानना ग्रंथो अंधारामां राखी तेनो उपयोग थाय तेवी साधनोनी योजना करवानो प्रयास करशुं नही त्यां सुधी जैनदर्शनपण अतिविस्तार पामशे नही अने जे टुंकी हदमां अत्यारें प्रवर्त्ते छे, तेनाथीपण टुंकी हद थवानो संजव छे, तेथी बुद्धिवान पुरुषोए आ बाबतमां ध्यान आपवानी पुरी जरुर छे. जैनाचार्योए रचेला ग्रंथ वांचवाथी तथा अध्ययन करवोथी जैनदर्शनना अपूर्व ज्ञाननो बोध थायछे. उत्तम प्रकारनो बोध प्राप्त करावबा सारु ते महान उपकारी महात्माउं ए अतीशय परिश्रम लइने ग्रंथोनी रचना करेलीछे. ते ग्रंथो जनसमुदायनी प्रसिद्धिमां आवेछे, त्यारेज तेवा उपकारी पुरुषोनी कृतिउंनी साफल्यता थायछे.

सुज्ञ बंधुउंने आवा ग्रंथोने उपर मुजब स्वपरहित रुप जाणी मदद आपवा विनंति छे.

आ प्रकरण रत्नाकर ग्रंथना प्रथम नागनी प्रथमआवृत्तिमां तत्वानुबोध ग्रंथ अने उपमितिजव प्रपंच हता पण ए जुदा छपायेला होवाथी ते बंने बाद करी अमे "श्रीसमयसार" ग्रंथ दाखल कर्यो छे. जैन बंधुउंमां ज्ञान वृद्धि थाय, एउंनुं आथी आत्महित थाय एवी अर्हत् प्रजु पासे प्रार्थना करी अमे अत्रे विरमिये छिये. इतिशं.

श्री मुंबइ–कार्त्तिकी पूर्णिमा १ए६०. लां० प्रसिद्धकर्त्ता.

नंबर.	विषय.	पृष्ट. १–१३०

श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय कृत श्रीसीमंधर स्वामिने विनतिरुप स्तवन तेना स्थूल

विषयोनी अनुक्रमणिका.

२ श्रीदेवचंद्रजीकृत आगमसार

३ श्रीदेवचंद्रजीकृत नयचक्रसार



॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभः

॥ प्रथम अर्थ कर्तानुं मंगलाचरण ॥

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम् ॥
स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै ॥ १ ॥

॥ हवे अर्थकर्तानी सूचना ॥

ए स्तवन मांहेली गाथाउना अर्थ अन्वये करी कहीशुं पण पाधरो नही कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धीयें विचारी जोशो तो खरो अर्थ बेसशे.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ एछडिकिहांराखी ॥ ए देशी ॥

श्रीसीमंधरसाहिबआगें ॥ विनतडीएककीजें ॥
मारगशुद्धमयाकरीमुझने ॥ मोहनमूरतिदीजेंरे ॥
जिनजी, वीनतडीअवधारो ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ श्री के० चोत्रीशअतिशय अने आठ प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथा केवलज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरीयुक्त एहवा सीमंधरनामेसाहिब तेआगलएकज शुद्धमार्ग उलखवारूप अद्वितीयवीनतिकरीयें ते माहरा ऊपर मया के० कृपाकरीने शुद्धमार्गजे रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग अथवा अनेकदर्शनी वितत्थसंवादी तथा विपरीतभाषणकरनारा स्वदर्शनीने साचामानवा ते अशुद्धमार्गकहीयें ते सर्वेउवेखीने स्याद्वादसैलीयें जैनमार्ग उलखवोते शुद्धमार्गकहीयेंतेशुद्धमार्गसेवी अनेकभव्यजीव स्वसंपदाभोगीथया एहवो शुद्धमार्गते हे मोहनमूरति के० वल्लभमूरति! मुझनेदीजे के० मुझने द्यो आपो एवीनती करीयेछैयें माटे हे रागद्वेषनाजीतणहार जिनजी! तेअमारीवीनतीअवधारो के० केवलज्ञानेकरीजाणो ॥ १ ॥

चालेसूत्रविरुद्धाचारें ॥ भाषेसूत्रविरुद्ध ॥ एककहेंअमे
मारगराखूं ॥ तेकेममानूंशुद्धरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणीसूत्रथी विरुद्धआचारेंचालेछे, तथा भापेके० परुपणाकरेछे ते-पणसूत्रविरुद्ध; वलीलोकनेकहेशेजे अमेमार्गराखीयेछेयें, जोअमेंछेयेंतोमार्गचालेछे एह-वुंबोलेछे माटेहेप्रनु तेवातने अमेंशुद्ध केमकरीमानियें. इहांसूत्रतेशुं तेलखेछेः– ११ अं-ग, १२ उपांग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूलसूत्र, १ नंदी, १ अनुयोगद्वार, एवं ४५ आगम जाणवा. यतः 'एक्कारसतहावारस ॥ अंगुवंगाणिदसपयन्नाणी ॥ छछेयाचउमूला ॥ नं-दीअणुउगपणयाला ॥ १ ॥ तथा तेनी नाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, वृत्ति अने मूलसूत्र ए पंचांगीने सम्मतजे पूर्वाचार्यप्रणीत धर्मरत्नादि प्रकरण तथा जे नंदीसूत्रगतपयन्ना अने हरीनद्रसूरि उमास्वातिवाचक प्रमुखकृतग्रंथादिक ते सर्वसूत्रमांहेजआवे; के-मके दुर्निक्षपड्यातेकालें सूत्रविसरयाहता ते मांहे जेटला सांनस्या ते सूत्र लख्या अने जे अर्थ सांनस्या तेहना प्रकरण प्रमुखवांध्या तेपणसूत्रानुजायी होवाथी सूत्रज कहीयें तो तेथीविरुद्धकरेछे तथा वोले छे तेवाने शुद्धकेममानुं ॥ २ ॥

आलंवनकूडांदेखाडी ॥ मुगधलोकनेपाडे ॥ आणानंग
तिलकतेकालूं ॥ थापेआपनिहालेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ते विपरीतचालतां कोईककहेशे जे आंमकांचालोछो तेहने पाछोजवा व आपतां कूडां के० खोटांआलंवनदेखाडे जे आपंचमकालें संघयणधृतिप्रमुखपूर्व पु-रुषजेहवाकिहांछे एमकहिने मुगध के० मूर्खलोकने पाडे के० अज्ञानमार्गेपाडेछे एहवापुरुष ते आणा के० जिनाज्ञा तेहनोजेनंग तद्रूपजेकालुंतिलक तेपोतानेंकपालें थापेछे एटले जिनाज्ञालोपेछे. तेवारेकोइकवोल्यो जे आज्ञानंगनुंदूषणदीधुंतेखरुं पण सर्वथा विधितो कोई करीशके नही ॥ ३ ॥

विधिजोतांकलियुगमांहोवे ॥ तिरथनोउछेद ॥ जिमचाले
तिमचलवेजइयें ॥ एहधरेमतिनेदरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेविधिजोतांतो कलियुग के० पांचमोआरो जेने अन्यतिर्थीकलीयुगकहेछे अने जैन पांचमोआरोकहेछे ते कलियुगमांतीर्थनोउछेदथाय केमके तमे अविधिनीतोनाकहो छोअने विधियेंतोथायनही तेथी तीर्थविछेदजाय माटेजेमचाले तेम चलाव्याजैयें एटलेका-छीचापाचिपीकरीयेंनही नरमगरमचलावियें एरीते कोइक पोतानी मतिनोनेदधरेछे ॥४॥

इमभाषितेमारगलोपे ॥ सूत्रक्रियासविपीसी ॥ आचरणासू
धीआचरियें ॥ जोइयोगनीवीसीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एहवांवचनबोलीने जेविधिमार्गनेलोपेछे तेप्राणीयेंसूत्रक्रियासर्वे पीसी के० द लीनाखी तेमाटे आचरणाके० क्रियातेशुद्धआदरीयें तेश्रीहरीभद्रसूरीयें योगनीवीसवी सीकरेलीछे तेमांहेली सत्तरमीवीसीमांहेकह्युंछे. यतः ॥ तिछस्सुछेआइ ॥ विणालंबणंज स्सएमेव ॥ सुत्तकिरियाइनासो ॥ एसोअसमंजस्सविहाणो ॥ १ ॥ ५ ॥

पंचमेंआरेजिमविषमारे ॥ अविधिदोषतिमलागे ॥ इमउपदेश
पदादिकदेखी ॥ विधिरसिउजनजागेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पांचमाआरामांहेजेमविषमारेछे तेमपांचमाआरामांहे अविधिदोषपणलागेछे एटलेएभावजे पांचमाआरामांपांचविषकह्याछे तेपणजीवने असत्यप्रवृत्तिनाहेतुछे. यतः ॥ १ दुस्सम २ हुंडा सप्पिणि ॥ ३ दाहिणपासंमि ४ भासगहजोउ ॥ ५ तहकण्हपक्की जीवा ॥ पंचविसंपंचमेअरए ॥ १ ॥ एगाथासूयणासीत्तरीनीछे एजिमपांचविषकह्यां ते मारेछे तिमपांचमेंआरे जेअविधि दोषलागे तेपणमारेजछे अथवा चोथेआरे जिमविष खाधुंमारे तेम पांचमेआरेपण विषखाधुंमारे; तेमजअविधिदोषपण जेम चोथाआरामांहे लागे तेमपांचमेंआरेपणलागे. यतः "मारेइविसंभुत्तं ॥ जहाचउछारएतहादुसमंमि ॥ तहअविहिदोषजणीउ . धम्मोवियदुग्गइहेऊ ॥१॥ इतिहितोपदेशमालायां" एमउ- पदेशपदादिकग्रंथ पाठदेखीने विधिनोरसियो जनके० लोकहोयते जागेके० विधि करवानेसावधा थाय ॥ ६ ॥

कोइकहेजिमबहुजनचाले ॥ तिमचलियेंसीचर्चा ॥ मारगमहा
जनचालेंभाष्यो ॥ तेहमांलहीयेंअर्चारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाकतोएमकहेछे के जेमबहुजनके० घणालोकचाले तेरीतेचालीयें केमके जेघणाकरताहसे तेरुडुंजकरताहसे तोजाजीचर्चासीकरोछो अमेंपोतानीमतियें करताहश्ये तोभलेचर्चाकरो कारणके मार्गतोतेहनेजकहीयें के जेमार्गे महाजनके० म- होटालोकना समुदायचालेछे तेहनीचाले चालीए तेनेमार्गकहीयें इम भाष्योके० ग्रंथमांहें कह्योछे. यतः ॥ महाजनोयेनगतः सपंथाइति ॥ तोतेमहाजननीचालेंचालतांथकां लहीये के० पामीयें अर्चाके० पूजा इति ॥ ७ ॥

एपणबोलमृषामनधरीयें ॥ बहुजनमतआदरतां ॥ छेहनआवे
बहुलअनारय ॥ मिथ्यामतमांफिरतांरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥८॥

अर्थ ॥ हवेउत्तरआपेछे के एबोलजेकह्यो तेपणमृषाके० जूठो चित्तमांहेंधारीयें ते हनोहेतुकहेछे एटले वहुजनमतआदरतांके० घणालोकनोमतआदरतां तो वहुलअनारयके० घणाजनतोअनार्यछे तेहनो छेहके० पारपामीयेंनही मिथ्यामतमांहेफिरतांके० अनार्यछे तेसर्वेमिथ्यामतिछे माटे तेमांहेन्नमतांपारनपामीयें इतिन्नाव ॥ ७ ॥

थोमाआर्यअनारयजनथी ॥ जैनआर्यमांथोमा ॥ तेमांपणपरि
णतजनथोडा ॥ श्रमणअलपवहुमोडारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ए॥

अर्थ ॥ थोडाआर्यअनारयजनथीके० अनार्यलोकथी आर्यलोकथोडाछे केमके वत्रीसहजारदेशमांहें आर्यदेशतोसाडीपचवीसजछे तेवलीआर्यदेशमांपण जैननामधरावे एहवालोकथोडाछे वलीजैननामधरावे तेमांहेपण परिणतके० जैनवासनायेंपरिणम्याहोय एहवाश्रद्धावंत स्याद्वादसैलीनाजाणथोडा वलीतेपरिणतजनमांहेपण श्रमण के० मुनीराज तेअलपके० घणाथोडा अने वहुमोडाके० मात्र मस्तकमुंडनकराव्युं पण गुणविनाना एहवालोक वहुजाणवा ॥ ए ॥

न्नद्रबाहुगुरुवदनवचनए ॥ आवश्यकमांलहियें ॥ आणाशु
द्धमहाजनजाणी ॥ तेहनीसंगेरहियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ न्नद्रबाहुस्वामीनामुखनुं एवक्ष्यमाणवचनछे ते आवश्यकसूत्रमांहेंकह्युंछे तिहांथी लहियेंके० पामीयें जे आज्ञाशुद्धतेहिज महाजन एटले जिनाज्ञापालेतेहिज संघएहवुंजाणीनें तेवा महाजननीपासें वसीयें. गाथा ॥ “एगोयसाहुएगो, यसाहुणीसाव उवसढ्ढीवा; आणाजुत्तोसंघो, सेसोपुणअठिसंघाउ” ॥ १ ॥ इतिआवश्यक वचनात् १०

अज्ञानीनविहोवेमहाजन ॥ जोपणचलवेटोलुं ॥ धर्मदासग
णिवचनविचारी ॥ मननविकीजेन्नोलुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥११॥

अर्थ ॥ पणजेअज्ञानीनोसमुदायहोय अने जो ते टोलुं के० गछनेचलावे तोहेपण तेहने महाजन न कहीयें एहवुं धर्मदासगणीनुं वचनविचारीने मनने न्नोलूंनकरीयें एटले अज्ञाने धमाधम न करीयें. यतः “जंजयईअगीयछो” इतिवचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानीनिजछंदेचाले ॥ तसनिश्रायेंविहारी ॥ अज्ञानीजो
गछनेचलवे ॥ तेतोअनंतसंसारीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेअज्ञानीपुरुष ते निजछंदेके० पोताना अन्निप्रायेंचाले तथा ते अज्ञानीनी निश्रायें जे विहारीके० विचरे तेपण अज्ञानीजहोय तो एहवो अज्ञानी अगीतार्थ थको

जे गछनेचलावे तेतोअनंतसंसारी जाणवो. यतः॥जंजयइअग्गियछो ॥ जंच अग्गियछंनि स्सियोजयई, वट्टावेइयगछं, अणंतसंसारउहोई ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १२ ॥

खंमखंमपंमितजेहोवे ॥ तेनविकहीयेनाणी ॥ निश्चितसमय
लहेतेनाणी ॥ संमतिनीसहिनाणीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जे खंमखंमपंमितके० ग्रंथग्रंथमांहेथी थोमीथोमी वातसीखीने पंमितपणुंजेह- नेहोय तेपुरुषनेज्ञानीनकहीयें, यतः "जोसुत्तमछमुजयं,समहीजंतेगुरुकम्मविहिणो ॥ नो- जन्नईसोनाणी; अछमयछाणमूढमणो" ॥१॥ इति आवश्यकमाहात्म्ये माटे निश्चितसम- य के० निश्चेंसिद्धांतनीवातने लहे के० जाणे ते नाणी के० ज्ञानीकहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चयव्यवहारसहीत स्याद्वादसैलीयें ज्ञानथयुं होय ते सिद्धांत निश्चित ज्ञानकहियें ए- वात संमतिनीके० संमतितर्कशास्त्रनी सहिनाणी के० नीसानी छे. गाथा॥ "जोनिछयसम- यन्नू ॥ सववहारसमयमासज्ज ॥ गुरुपारतंतलछ; नयनि उणोगाहणाकुसलो" इति ॥१३॥

जिमजिमबहुश्रुतबहुजनसंमत ॥ बहुशिष्येंपरवरिउ ॥ तिमतिम
जिनशासननोवयरी ॥ जोनविनिश्चयदरीउरे॥ जिन० ॥ वी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जिमजिम बहुश्रुतके० घणोजण्यो अने बहुजनसंमतके० घणालोकने मान वायोग्यथयो वलीबहुशिष्येंपरवरिउके० घणाचेलाचांटिकस्यां तिमतिम जिनशासननो वयरीके० सिद्धांतनोशत्रुजाणवो जो निश्चयज्ञाननो दरिउ के० समुद्रनहोय तो. अने जे निश्चेंज्ञानीहोय तेहनेतोसर्वेलेखेछे. यदुक्तं ॥ जहजहबहुसुअसमउ ॥ सीसगुण संपरिवुडोय ॥ अविणीछिउअसमए ॥ तहतहसिद्धंतपमिणीउ ॥ इत्युपदेशमालायां तथा पंचवस्तुकेपिच ॥ १४ ॥

कोईकहेलोचादिककष्टें ॥ मारगभिक्षावृत्ति ॥ तेमिथ्यानवि
मारगहोवे ॥ जनमननीअनुवृत्तिरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केटलाएकतोएमजकहेछे जे लोचादिककष्टेके० लोचकरावना उघाडेपगे तथा उघाडेमाथें हिंडवुं इत्यादिककष्टकरवेकरीने मारगके० मुनीमारगजाणवो वली भि क्षायें वृत्तिके० आजीविकाकरवी ते मार्गछे एहवुंजेकहेछे तेमिथ्याके० खोटुंकहेछे ए रीते मार्गनहोय केमके आत्मार्थविना जनमननीअनुवृत्तिके० लोकनामननीअनुजायी यें प्रवर्त्ततांमार्गनहोय इतिभाव. गाथा॥ "कछंकरेइतिवं ॥ धम्मंधारेइज्जाणाणुंवित्तीए॥ सोपवयणमग्गस्स ॥ वेरीभूउअहाछंदो " ॥ १ ॥ १५ ॥

जोकष्टेमुनिमारगपावे ॥ बलदथाएतोसारो ॥ भारवहेजेता
वडेभमतो ॥ खमतोगाढप्रहारोरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोएरीते प्रभुनीआज्ञाविना कष्टकरतां मुनीनोमारग पामे तो तीर्यंच बलद तथा उपलक्षणथी बीजा ढोर पण लइयें तेढोरज साराके० भलाथाय केमके बलदऊ पर जेटलोभार भरीयें तेटलो सुखेडुखेपणवहे निरवाहकरे वली तावडेके० तडकेभम तोथको गाढके० आकरा कोरडा प्रोंणा प्रमुखनाप्रहारने खमतोके० सहनकरेछे ॥ १६ ॥

लहेपापअनुबंधीपापें ॥ बलहरणीजनभिक्षा ॥ पूरवभवव्र
तखंडनफलए ॥ पंचवस्तुनीशिक्षारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेतेप्राणी वर्त्तमानकालेंपण अशुभ अनेअनागतकालेपणअशुभ तेपापा नुबंधीपापकहीयें तेणेकरीने लहेके० पामे बलहरणीके० वीर्यनेहणे एहवी जनभिक्षा के० लोकनीभिक्षापामे एटलेसंयमयोगसाधीनशके तेबलहरणीभिक्षाकहीयें एपूरवभ वके० पाछलाभवें व्रतखंडनकस्याहोय तेहनांफलछे तेपापानुबंधीपापें बलहरणीभिक्षा पामें एमपंचवस्तुग्रंथ श्रीहरीभद्रसूरीकृतछे तेमांहेकह्युंछे. गाथा ॥ "चारित्तविहि णस्स ॥ अभसंगयस्सअकलुसभावस्स ॥ आणाणिणोयकापुण ॥ सापडिसिद्धाजिनव रेहिं" ॥ १ ॥ "भिक्खंअडंतिआरं ॥ भंसंगयाअपरिसुद्धपरिणामा ॥ दीणा संसारफलं ॥ पावाउकुत्तमेयंतु" ॥ २ ॥ इसिकाउणसुहणी ॥ वाडीयाउंहिंडुक्ख गहणंमि ॥ मायाएकेइपाणी ॥ तेसिंएयारिसंचहोई ॥ ३ ॥ चेइऊणघरवासं ॥ तस्स फलंचेवमहापरतंता ॥ नगिहिनयपव्वइया ॥ संसारपवड्डगाभणिया ॥ ४ ॥ १७ ॥

कोइकहे अमें लिंगे तरसुं ॥ जैनलिंगछे वारु ॥ तेमिथ्यानविगु
णविणुं तरियें ॥ भुजविणनतरे तारुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे कोईकहेशेजे द्रव्यलिंगतेहिजप्रमाणछे एटले लिंगजेउंगोमुहपतितेथी तरीसंसार पारपामीसुं केमकेजैननोलिंगते वारु के० सुंदरछे तेनेगुरुउत्तरकहेछेके तेमि थ्या के० खोटुंछे कारणके गुणविना एकलुंमात्रलिंगधारणकरेथी तरायनही तेहनोदृ- ष्टांतः— जेम तारुपुरुषतेभुजाविनानदिप्रमुखतरीशकेनही ॥ यदुक्तं ॥ वंदनावश्यके ॥ शिष्यवचनं ॥ "सुविहियदुविहीयंवा ॥ नाहंजाणामियंखुछउमछो ॥ लिंगंतुपूययामि ॥ तिगरण सुद्धेण भावेण" ॥ १ ॥ प्रत्युत्तर ॥ माहऊइतेलिंगपमाण ॥ वंदाहि निन्हएतुमे- सवे ॥ एअवंदमाणस्स ॥ लिंगमविअप्पमाणंते ॥ इत्यादि ॥ १८ ॥

कुटलिंग जिमप्रगट विंम्बक ॥ जाणीनमतांदोष ॥ निद्धंद्धसजा
णीनेनमतां ॥ तिमज कह्यो तसपोषरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेम विडंवकजे नाटकीआ प्रमुख तेहनो जे कुटलिंगके० खोटोवेश तेप्रगटपणेंजाणीनें एटले कोइक नाटकीयो साधुनो वेषलाव्यो तेखोटो वेशछे एम जाणतां थकां जोतेहने नमीयेंतो दोषलागे तथा लोकहांसी प्रमुख पणकरे तेमाटे निद्धंद्धसजे प्रवचनोपघातक निरपेक्षक केवल लिंगधारी पासत्थादिक जाणीने तेहने नमीयें तो तिमजके० ते पूर्वोक्त नाटकीया साधुनीपरे तसपोषके० ते दोषनोपोष कह्योछे यदुक्तं ॥ "जहवेंलंबुगलिंग ॥ जाणंतस्सनमउहवइदोसो ॥ निद्धंद्धसुत्तिनाऊणं ॥ वंदमाणे धुवोदोसो" ॥ १ ॥ इति वंदनावश्यके ॥ एरीते आचार्ये लिंग अप्रमाण कह्युं ॥ १९ ॥

शिष्यकहे जिमजिन प्रतिमाने ॥ जिनवर थापी नमियें ॥ साधुवेस
थापी अतिसुंदर ॥ तिम असाधुने नमियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेवारें शिष्यवोल्यो जे जिमजिनेश्वरनी प्रतिमामांहे ज्ञानादिक गुणनथी अने तेहने तीर्थंकरनी बुद्धीयें नमस्कार करतां महोटो लाभ थायछे महोटीनिर्ज्जरा थाय छे. यथा आवश्यके शिष्यवचनं:–॥ तित्थयरगुणा पडिमा ॥ सुनत्थि निस्संसयं वियाणंतो तित्थयरूत्तिनमंतो ॥ सोपावईनिज्जरंवीउलं ॥ १ ॥ इति ॥ तेम अतिसुंदर एहवो साधुवेस थापी असाधुने पण नमियें एटले गुणविनानी जिमजिन प्रतिमा छे तेहने नमतां निर्ज्जरा थाय तेम पासत्थादिकमां जो साधुनो गुणनथी तोपण साधुनो वेषतो छे माटे जो पोतानुं मनशुद्ध छे तो तेहवाने नमतां लाभ थाय कारणके लाभ अथवा खोट तेतो पोताना अध्यवसाय आश्रीछे. उक्तंच ॥ लिंगंजिणपन्नत्तं, एवनमंतस्सनिज्जरा विउला ॥ जइविगुणविप्पहिणं, वंदइअप्पप्पसोहिए ॥ १ ॥ इति शिष्यवचनं ॥ २०. ॥

भद्रबाहु गुरु बोले प्रतिमा ॥ गुणवंति नहीदुष्ट ॥ लिंगमांहेबे
वानांदीसे ॥ तेतोमानि अदुष्टरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे आचार्य उत्तर आपेछे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एम कहेछे के प्रतिमा गुणवंति नथी तेम दुष्टपण नथी माटे तेहने गुणवंति मानियें एटले अदुष्टपणानो आरोप करियेंतो थाय अने लिंगमांहेतो गुण तथा दोष एवेवानां देखायछे ते तुं हे अदुष्ट के० गुणवंत शिष्यमान. इति गाथार्थ। हवे एनो भावार्थ कहेछे जे जिनप्रतिमा मांहे गुण नथी तेम दोषपण नथी माटे पोताना अध्यवसायनी शुद्धीयें नमतां लाभ थाय इहांकोइ कहेशेजे परिणामे लाभ थाय छे तेवारें प्रतिमानुं शुं काम छे तेहने कहीयेंजे

शुद्ध परिणामनो हेतु ते प्रतिमाज छे तेवारे ते कहेशे जे साधुनो वेष ते पण शुद्ध परिणामनो हेतुछे तेहने कहेवुंजे साधुवेष पुरुषपणुं ते प्रतिमाने बराबर नथाय केमके प्रतिमा हजारो गमे जोइयें पण सर्व एकाकार छे सावद्यक्रिया नथी करती तेम निरवद्य क्रिया पण नथी करती अने साधुलिंग तो कोइक स्थानकें सावद्य कर्म करतो देखीयें तथा कोइक स्थानकें निरवद्य शुद्ध चारित्र पालतो देखीयें माटे बराबर नथाय अने जिनप्रतिमामांहे जिन गुणनो आरोप करीने परिणाम करतां निर्जरा थाय पण पासह्यादिकने वंदनाकरतां कोना गुणशंजारीश तेवारे ते बोल्यो जे बीजा रुडा साधुना गुण आरोप करीने प्रणाम करिशुंतेहने कहेछे जे निरगुणीने विषे गुणनो आरोप थाय नही अने जो गुणनो आरोप करीयें तो विपर्यास थाय अने जेविपर्यास तेतो कर्मबंधनो हेतुछे तेमाटे जिहां गुण तथा दोष नहोय तिहां आरोप थाय पण अन्यथा आरोप नथाय यडुक्तं वंदनावश्यके ॥ संतातिछयरगुणा ॥ तिछयरेतेसिमंतुअप्पप्पं ॥ नयसावद्याकिरिया ॥ इयरेसुधुवास मणुमन्ना ॥१॥चो०॥ "जहसावद्याकिरिया ॥ नछिउपडिमासुएवमियराबि ॥ तयनावे नछीफलं ॥ अहहोईअहेउयहोई" ॥२॥ आचा० कामंउनयानावो ॥ तह विफलंअछिमणविसुद्धीए ॥ तिपुणमणविसुद्धीए ॥ कारणंहुंतिपडिमाउ ॥ ३ ॥ जइवीयपडिमाउगुणा ॥ मुणीगुणसंकप्पकारणंलिंगं ॥ उनयमविअछिलिंगे । नयपडिमासूनयंअछि ॥ ४ ॥ नियमाजिणेसुअगुणा ॥ पडिमाउदिस्सजेमणेकुणइ ॥ अगुणोउवियाणंतो ॥ कंनमउमणेगुणेकाउ ॥ ५ ॥ इत्यादि वली एहनो विचार बृहत्वृत्तिथी विचारजो ॥ २१ ॥

कोइकहेजिनआगेमांगी ॥ मुक्तिमारगअमेलेसुं ॥ निरगुणनेप
णसाहेबतारे ॥ तसनक्तेगहगहिसुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ हवे कोइक एम कहेछे जे जिनेश्वर आगलें मुक्तीमार्ग अमे मागी लेशुं केमके निरगुणने पण साहेब तारशे तथा तेहनी नक्तिमां गहगहिंसुं के० हरष पामिशुं इति गाथार्थ. नावार्थ तो एम छे जे केटलाक एम कहेछे आ नवमांतो शक्ति नथी पण जन्मांतरे बोधिबीजनी सामग्री पामीशुं त्यारे करिशुं एहवुं प्रनुपासे मागी लइयें छीयें. इति नावः ॥ २२ ॥

पामीबोधनपालेमूरख ॥ मांगेबोधविचालें ॥ लहियेंतेहकहो
कुणमूले ॥ बोल्युंउपदेशमालेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेहने उत्तर कहेछे जे आ नवमां बोध के० बोधिबीजनी सामग्री पामीने पण जे मूरख के० अज्ञानी संयम अनुष्ठान तो पालतो नथी अने विचालें के० विचमां बोध मांगे जे आगल पालिसुं तो तेह के० ते बोधिबीज कहो कुणमूले के० शेमूले लहि-

सें के० पामीयें एटले ए भाव जे कोइक वस्तु लेवा जइयें ते वस्तु जो पासे द्रव्य होय तो जडे अने द्रव्य न होय तो स्यामूलेजडे, तेम आभवमांहेजो संयमादिक पाल्या होय तो आवतेभवें पण बोधिबीजनी सामग्री मले पण न पाल्या होय तो शेमूले पामे अर्थात् बोधि सामग्री नज पामे, एम उपदेशमाला मध्ये कह्युं छे. यतः ॥ "लद्धिल्लियंचबोहिं ॥ अकरितोणागयंचपछिंतो ॥ अन्नंदाइंबोहिं ॥ लप्भहिसिकयरेणमुल्लेण" ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनेपिच ॥ २३ ॥

आणापालेसाहेबतूसे ॥ सकलआपदाकापे ॥ आणाकारी
जेजनमागे ॥ तसजसलीलाआपेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ ते माटे आज्ञा पालतां थकां साहेब के० परमेश्वर तूष्टमान थाय अने समस्त आपदाने कापे, माटे आज्ञाकारी जे जन के० लोक ते मागे एटले आ भवमांहे प्रभुआज्ञा पाले ने ते प्राणी जे मागे तस के० ते प्राणीने जशनी लीला आपे एटले प्रभु आज्ञाथी जशलीला पामें ॥ २४ ॥ ए प्रथम ढालमांहे एम कह्युं जे अमे निर्गुणी थकां प्रभुपासेथी मांगी लेइसुं एवुं बोलनारने शिखामण दीधी ॥ २४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

कोइकहेअमेगुरुथीतरसुं ॥ जिमनावाथीलोहारे ॥ तेमि
थ्यानलहेसहवासें ॥ काचपाचनीसोहारे ॥ १ ॥ श्रीसी
मंधरसाहेबसुणजो ॥ भरतखेत्रनीवातोरे ॥ लहुंदेवके
वलरतिणेयुगें ॥ हुंतोतुजगुणरातोरे ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजी ढालमां जे एम कहेछे के अमे निर्गुणी थकाज गुरुथीतरीशुं तेमने शिखामण देवा संबंधी आवी बीजी ढाल ते कहेछे. कोइक तो एम कहेछे जे अमारामां तो गुण नथी पण अमारा गुरु गुणवंत छे तो तेथीज संसार समुद्रतरी पारपामिशुं जेम नावा के० जिहाज तरेछे ते मांहे लोहा के० लोखंडना खीला जड्या होय ते पण तरेछे ए दृष्टांते तरिशुं. यतः "संचंजंपेइजणो ॥ उत्तमसंगेणउत्तमोहोइ ॥ लोहोकठविलग्गो ॥ संजोगे सायरं तरई" ॥१॥ इति पाठात् ॥ तेहने उत्तर जे ए रीतना बोलनारा ते पण मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके सारा गुरुने सहवासे के० मात्र भेला वसवाथीज न लहे के० न पामे, जेम काच ते पाच के० पानानी सोभा पामे नही. उक्तंच ॥ मणिर्लुठतिपादाग्रे ॥ काचः शिरसिधार्यते ॥ परीक्षककरेप्राप्ते ॥ काचः काचो मणिर्मणिः ॥ १ ॥ तथा उपनि-

युंक्तावपि ॥ सुचिरंपि अछमाणो ॥ वेरुलिउं कायमणीयउं ॥ मीसोनउवेइकाय नावं ॥ पाहाण गुणेण नियएणं ॥ १ ॥ माटे हे श्रीसीमंधर साहेब ! आ नरतखेत्रनी वातो के० चरित्र ते सुणजो के० सांनलजो. हे देव हे आत्मगुणरमणि इणेयुगें के० आविषमकाल पंचमआरो हुंमावसर्पिणीनें विषे केवल के० निःकेवल जेहुं रतिलहुं के० साता पामुंछुं ते तुज गुणरातो के० तमारा गुणने विषे तत्पर थको एटले तमारा गुणनो रंग छे एटलीज शाता छे, बाकी मतन्नेद कदाग्रहदेखी तो कांइंपण शातानुं कारण नथी. इति नावः ॥ २ ॥

कोइकहेजेगछथीनटव्या ॥ तेनिरगुणपणसाधोरे ॥ नातिमांहे
निरगुणपणगणीयें ॥ जशनहींनातिबाधोरे ॥ श्रीसी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे केटलाएक एम कहेछे के जे गछथी बाहिर निकल्या नथी अने आचार्यना संघाडामांहे रह्या छे ते जो निर्गुण छे तो पण ते गछमां रह्या माटे साधो के० साधु कहियें. तेहनुं दृष्टांत कहेछे; जेम न्यातिना सर्वलोक उत्तम होय अने ते मांहे कोइक निर्गुण होय पण तेहने जिहांलगें न्याति बाहर कस्यो न होय तिहां लगे ते न्याति मांहेज गणाय छे; जश के० जे गुणरहितपुरुषनो नाति बाधो के० नातीनो बाध नही के० नथी एटले ते पुरुषनो जिम नातिमांहे बाध नथी, तेम साधु पण गछमांहे छे माटे रुडो जाणवो ॥ ३ ॥

गुणअवगुणइमसरिखाकरतो ॥ तेजिनशासनवैरीरे ॥ निर
गुणजोनिजछंदेचाले ॥ तोगछथाएस्वैरीरे ॥ श्रीसी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वोक्त कहेनारने शिखामण आपेछे के जे ए रीते गुण अने अवगुणने सरखा करे ते जिन शासननो वैरी जाणवो. तेहनो हेतु देखाडे छे के, ते गछमांहे रह्यो जे निर्गुण पुरुष ते जो निज के० पोताने छंदेचाले तो गछ थाय स्वैरी के० ते सर्व गछ स्वेछाचारी थाय, केमके एकने हीणो देखीने बीजा पण हीणाचारी थाय ॥ इतिनावः ॥ ४ ॥

निरगुणनोगुरुपक्षकरेजे ॥ तसगछत्यजवोदाख्योरे ॥ तेजि
नवरमारगनोघातक ॥ गछाचारेंनाख्योरे ॥ श्रीसी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली जे निर्गुण होय तेनो पक्षपात जे गुरु करे तो ते गुरुनो गछ बीजा साधुयें त्यजवो के० छांडचो एम दाख्यो के० कह्योछे एटले ते गछमां रहेवुं नही अने ते गुरु जिनेश्वरना मार्गनो घात करनार जाणवो. ए रीतेगछाचारपयन्नामध्ये कह्युं छे. यतः ॥ जाहिंन छी गुणाणपरको ॥ गणीकुसीलो कुसील परकधरो ॥ सोय अगछोगछो ॥ संजमकांम-

हिं मुत्तवो ॥ १ ॥ जहिंनत्नी सारणा वारणाय ॥ चोयणायसगछंमि ॥ सोय अगछो गछो ॥ संयमकांमीहिंमुत्तवो ॥ २ ॥ इति गछाचारे ॥ ५ ॥

विषमकालमांनिरगुणगछें ॥ कारणथीजोवसीयेंरे ॥ द्रव्य
थकीव्यवहारेंचलीयें ॥ भावेंनविउल्लसीयेंरे ॥ श्रीसी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि विषमकालमां एटले पांचमा आरामां पोतानी मनोबल शक्तिने अभावें निरगुणगछे एटले गुणरहित गछनेविषे जो कोइ कारणे वसवुं पडे तो द्रव्य थकी एटले बाह्यथी तो ते गछने व्यवहारें चलियें के० प्रवृत्तियें पण भावथकी उल्लास पामियें नही एटले अंतरथी हरषीयें नही पण जो शुद्धाचारीनी संगतमले तो निर्गुण गछने तुरत छोडी आपियें. यतः ॥ गीयछो गुणयुत्तो ॥ निग्गुणगछंमिसंवसिज्जाय ॥ नोनिग्गुणाणपरकं ॥ कुझ्झासोगणहरसरिछो ॥ इत्युपदेशपदे ॥ ६ ॥

जिमकुवृष्टिथीनगरलोकने ॥ घहेलादेखीराजारे ॥ मंत्रिसहि
तघहेलाहोईबेठा ॥ पणमनमांहेंताजारे ॥ श्रीसी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम घहेलापणानी करनारी कुवृष्टि थइ ते कुवृष्टीनुं पाणी ते नगरना सर्व लोक पान करीने घहेला थया मात्र एक राजा अने प्रधान ए बेजणे पाणी पीधुं नही माटे डाह्या रह्या. पछी ते बेहुने विष सदृशाचारी घहेला लोकोए मारवानो उपाय कर्यो तेवारें राजा पोताना जीववाना उपायने माटे प्रधान सहित पोते घहेला थइ बेठा, पण मनमां तो ताजा के० डाह्या छे एम जाणे छे जे सारी वृष्टी थाय तो सहु डाह्या थइयें एम ए दृष्टांतें इहां पण जाणवुं जे नीर्गुण गछमां वसे तथा तेहनी पेठें चाले तो पण मनमां तो एम जाणे जे सुविहित मले तो तेहने संगे रहुं अने शुद्धाचारी थाउं इतिभाव॥७॥

इमउपदेशपदेएभाष्युं ॥ तिहांमारगअनुसारिरे ॥ जाणीने
भावेंआदरीयें ॥ कल्पभाष्यनिरधारिरे ॥ श्रीसी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ ए रीते श्रीहरीभद्रसूरिकृत उपदेशपदनामाग्रंथमां भाष्युं छे गीयछो गुणयुत्तो इत्यादि पूर्वोक्त गाथा जाणवी तथा एम कह्युं जे द्रव्यथकी व्यवहारे चालीयें पण भावथी उल्लास पामीयें नही तो पण तिहां के० ते गछमां जो कदाचित सर्व क्रिया व्यवहारमां सावधान न होय पण जो मार्गानुसारी शुद्धपरुपक होय अने गुण पक्षपाति होय तेवा मार्गानुसारी जाणीने तेहने भावथी पण अंगीकार करीयें एहवुं बृहत्कल्पभाष्यमांकह्युं छे. यतः ॥ सिढिलोअणायारकउ ॥ चोयणपडिचोयणाइ गुणहीणो ॥ गुणपरककरोगछो ॥ सीलेयवो विभावेण ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥

ज्ञानादिकगुणवंतपरस्पर ॥ उपगारेंआदरवोरे ॥ पंचवस्तु
मांगछसुगुणने ॥ अवरकह्योछेत्यजवोरे ॥ श्रीसी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली परस्पर के० माहोमांहे ज्ञानादिकगुणवंत के० ज्ञान दर्शन चारित्र गुणवंत होय वली उपगारे के० उपकारी होय एटले मांहोमांहे कोइनो ज्ञान उपकार कोइनो दर्शन उपकार इत्यादिक उपकारवंत होय तो आदरवो एम श्रीहरिजद्रसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां कह्युं छे. यतः ॥ मुत्तुणमिहुवयारं ॥ अन्नुन्नगुणादिजाव संबंधं ॥ छत्तमढछत्ततुल्लो ॥ वासोउणगछवासोति ॥१॥ ते माटे सुगुण जे गुणवंत होय. तेणे पूर्वोक्त ज्ञानादिकना उपकारी गछविना अवर के० बीजो जे गछ ते त्यजवो कह्यो छे ॥ए॥

जेनिरगुणगुणरत्नाकरने ॥ आपसरिखादाखेरे ॥ समकित
साररहिततेजाणो ॥ धर्मदासगणीजाखेरे ॥ श्रीसी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली जे पोते निर्गुणछतां बीजा जे गुणना रत्नाकरके० समुद्र होय तेहने आपके० पोतासरीखा दाखेके० कहे एटले एम कहेजे अमारामां तथा एहुमां शो फेरछे एम गुणी अवगुणीने सरिखाकरे तो ते प्राणी सारके० प्रधान एहवो जे समकित तेथी रहित जाणवो. एरीतें उपदेशमाला मध्ये धर्मदासगणियें कह्युं छे. यतः ॥ गुणहीणोगुणरयणा ॥ यरेसुजोकुणइतुल्लमप्पाणं ॥ सुत्तवस्सीणोयंहीलइ ॥ सम्मत्तं कोमलंतस्स ॥ १ ॥ १० ॥

कोइ कहे जे बकुस कुशीला ॥ मूलोत्तर पडिसेवीरे ॥ जगवई
अंगेजाख्या तेथी ॥ अंतवातनविलेवीरे ॥ श्रीसी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ग्रंथकारना कहेवा प्रमाणे सर्वथा गुणवंत होय तोज आदरवो एम उक्युं तेऊपर शिष्य प्रश्न करेछे के, कोईक एम कहे छे जे बकुस कुशीला के० बकुस चारित्रीया तथा कुशील चारित्रीया ए मूलउत्तरगुणना प्रतिसेवी कह्या छे. पडीसेवी के० प्रतिकूलपणे सेववुं दोष लगाडवो एटले ए जावजे १ पुलाक २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक ए पांच निग्रंथ कह्याछे तेमां बकुस चारित्रीया ते उत्तरगुणना एटले मात्र दशविध पच्चखाणनाज प्रतिसेवी होय तथा कुशील चारित्रीया ते मूलगुणना तथा उत्तरगुणना प्रतिसेवि होय, यद्यपि मूलुत्तर पडिसेवी इहां सामान्ये कह्या तो पण अर्थ पूर्वोक्त रीते करवो केमके पंचनिग्रंथी प्रकरण तथा जगवतीसूत्रमां एरीते छे तेरीते अमें पण अर्थ लख्योछे. यडुक्तं पंचनिग्रंथी प्रकरणे ॥ यतः ॥ मूलुत्तरगुणविसया ॥ पडिसेवासेवएकुशीलो य ॥ उत्तरगुणेसुवउसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ १ ॥ वली जगवती अंगे जाख्या छी गुणाणपरको ॥ २ तत्पाठः ॥ बउसेणं पुछा गोयमा पडिसेवएहोज्जा, णो अप्पडिसेवए

होज्जा यदि पडिसेवएहोज्जा किंमूलगुणपडिसेवएहोज्जा उत्तर पुच्छा ॥ गोयमानोमूलगुणपडिसेवए होज्जा उत्तरगुण पडिसेवएहोज्जा इत्यादि तथा पडिसेवणा कुशीलेजहापुलाए एटले पुलाकनेमूलगुण पडिसेवएहोज्जा उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा एम कह्युंछे माटे कुशील पण मूलोत्तर गुणना पडिसेवी थया इति भगवति सूत्रे सतक (२५) में उद्देसे ६ ठे कह्युं छे तेथी एम ठेखुं जे मूलगुणना प्रतिसेवी थाय तिहां लगे चारित्रीया कह्यां तेथी अमने दोष लागतां छतां पण अमारुं चारित्र कांई जतुं नथी माटे वातनो अंतलेवो नही ऊकुं अमने बोलावी अंतशुंछ्योछो इति शिष्य वचनं ॥ ११ ॥

तेमिथ्या निःकारणसेवा ॥ चरणघातीनी भाषीरे ॥ मुनीनेते
हने संभव मात्रें ॥ सत्तमठाणुं साखीरे ॥ श्रीसी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे गुरु कहेछे के एम भगवति सूत्रनी साख आपीने जेम तेम प्रतिकुल सेवावालाने जे चारित्र ठरावेछे ते मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके निःकारणसेवा के० कारण विना जे प्रतिकुलपणे सेवा अपवादरूप तेहने मुख्य करीने जे प्रतिसेवा करे ते प्रतिसेवा तो चरणघातीनीभाषी के० चारित्रने घात करनारी कहीछे. यतः ॥ संवरणंमि असुरूं ॥ दोएहविगिएहंतदिंत्तगाएहियं ॥ आउरदिठ्ठं तेणं तंचेवहियं असंथरणे ॥१॥ इति बृहत्कल्प भाष्ये ॥ ते प्रतिसेवा मुनीने तेहने के० ते मुनीने संभवमात्रें के० लागवा रूप संभव पण उपयोग पूर्वक प्रतिसेवा करे नही कदाचित उपयोग पूर्वक करे तो ते अपवादें करे पण उत्सर्गें नही करे एपण संभवज कहीयें तिहां सत्तमठाणु साखी के० ठाणानामा प्रकरणमां सातमे ठाणे कह्युंछे ते ठाणा प्रकरण माराहाथमां प्राप्त थयुं नथी पण मारा गुरुने वचने जाणुंछुं के ठाणाप्रकरण छे अन्यथा इहां कोइक ठाणांगसूत्र कहेछे पण ते ठाणांग मध्ये ए पाठ जडतो नथी ते माटे गुरुवचन सत्य. इति ज्ञेयं ॥ १२ ॥

पडिसेवा वचने ते जाणो ॥ अतिचार बहुलाईरे ॥ भावबहु
लतायें ते टाले ॥ पंचवस्तु मुनिध्याईरे ॥ श्रीसी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे तिहां पंचवस्तुनी साख लखियेंछेयें गाथा ॥ तेउपडिसेवणाए ॥ अणुलोमाहोतिविअडणाए ॥ अपडिसेवणाविअडणाए ॥ इछंचउरोभवेभंगो ॥ १ ॥ व्याख्या तेतु दोषाः प्रतिसेवनया आसेवनारूपया अनुलोमा भवंत्यनुकूला भवंति विकटनयालोचनयाच प्रतिसेवनायां आलोचनायां च पदद्वये चत्वारो भंगा भवंति तद्यथा प्रतिसेवनया अनुलोमा विकटनयाच १ तथा प्रतिसेवनया न विकटनया २ तथा न प्रतिसेवनया विकटनया ३ तथा न प्रतिसेवनया न विकटनयेति ४ गाथार्थ॥ ते चेवतरस्थनवरं ॥ पायछित्तंति आहसमयंणू ॥ जम्हासइसुहजोगो ॥ कम्मक्खय कारणं भणीउं ॥

॥ २ ॥ व्याख्या ते एवनवरं केवलं समुदानिका अतिचाराश्चिंत्यमानाः संतः तत्र कायिका दीर्घपथिकायां प्रायश्चित्तमित्येवमाहुः समयज्ञाः सिद्धांतविधः किमिति अस्मात्सदासर्वकालमेवसुभयोगः कुसलव्यापारः कर्मक्षयकारणं भणीतस्तीर्थंकरगणधरैरिति गाथार्थः ॥ ततःकिमित्याह गाथा ॥ सुहजोगोयअयंजं ॥ चरणाराहण निमित्तमणुअंपि ॥ माहोज्जाकिंचिखलियं ॥ पेहेइतउवउत्तोवी ॥ ३ ॥ व्याख्या सुभयोगश्चायं सामुदानिकातिचारचिंतनरूपःकथमित्याह यद्यस्माच्चरणाराधननिमित्तं स्खलितं चारित्रपालनार्थं मणुअंपि सुक्ष्ममपिमाभूत् किंततुस्खलितं प्रेक्ष्यते पर्यालोचयतिततः उपयुक्तोपि भिक्षाग्रहणकाले ॥ इतिगाथार्थ. आ ठेकाणे एज अर्थनी सूचक गाथा ज्ञानविमलसूरियें टबामां लखी छे ते कहेछे. गाथा ॥ सवावियपडिसेवा ॥ उक्कडभावेण होइ सासिढिला ॥ अइयार बाहूलत्तं ॥ पडिसेवा वियपयसेढी ॥१॥ एगाथा पण रुडीछे ए ठेकाणे एहवी गाथा जोइयें पण ए गाथा पंचवस्तु ग्रंथमां जडी नही माटे अमे लखी नही तथा मूलगुण उत्तरगुणना प्रतिकूलपणे सेवी होय ते पडिसेवा वचने के० प्रतिसेवा शब्दें करी जाणो के० जाणवी; एटले मूलगुणमां तथा उत्तरगुणमां अतिचार घणा लागे ते अतिचार भावनी तीव्रतायें करीनें टाले एम पंचवस्तु ग्रंथमां मुनीध्यायी के० मुनीराजे अतिचारनी वहुलता ध्यायी भावी छे ॥ १३ ॥

सहसादोषलागेतेबुटे ॥ संयतनेततकालेंरे ॥ पछितेंआ
कुट्टियेंकीधुं ॥ प्रथमअंगनीभालेंरे ॥ श्रीसी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ सहसा के० सहसात्कारें अनाभोग थकी जे दोष लागे ते बुटे, एटले तद्भव वेदवायोग्य कर्म बांध्युं होय ते बुटे, संयतने के० मुनिराजने ततकालें के० तेज भवमां बुटे इतिभाव. श्री आचारांगे पंचमाध्ययने चतुर्थोद्देशके गाथा ॥ एगयागुणसमिति ॥ स्सरीयतोकायसंफासमणुचिन्नं ॥ एगतया पाणा उद्दायंति ॥ इहलोग वेदणवेज्जावडीअ ॥ अस्यार्थ लेशः कदाचित् गुणसमित्त के० गुणसहित अप्रमत मुनिने चालतां थकां काय संफास के० कायस्पर्श थयाथी कोइ जीव हणाणो ॥ तेवारे इहलोके वेदनानो जे वेद्य के० अनुभव तेहने आवडिअं के० पाम्युं एटले आभवें भोगववा योग्य कर्म बंधाय तथा आकुट्टियें के० विना प्रयोजने कारण विना पापकर्म कर्युं ते कर्म पछिते के० दश प्रकारनुं प्रायश्चित्त छे तेमां हरकोइ प्रायश्चित्त आवे एम प्रथम अंगनी भालें के० आचारांगनी भलामण छे. पांचमा अध्ययनना चोथा उद्देशामां जंआउट्टीकयं कम्मं ॥ तंपरिन्नाय विवेगमेति इति एतद्वृत्यैकदेशः जंआउट्टि इत्यादियत्तु पुनः कर्माकुट्याकृतमागमोक्तकारणमंतरेणोपेत्यप्राण्युपमर्द्देनेन विहितं तत् परिज्ञाय ज्ञ-

परिज्ञया विवेकमेति विविच्यते अनेनेति विवेकः प्रायश्चित्तं दशविधं तस्यान्यतरं भेदमुपैति तद्विवेकं वा अभावाख्यमुपैतीतितत् करोतियेन कर्मणो अभावो भवतीति तेकारण माटे पाप जाणीने सेववुं तेहनो महादोष छे इतिभावः ॥ १४ ॥

पायछित्तादिकभावनराखे ॥ दोषकरिनिःसूको रे ॥ निद्धं
धससेढीथीहेठो ॥ तेमारगथीचूको रे ॥श्रीसी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटे ते अतिचार सेवीने पण पायछित्तादिक के० विशुद्ध थाय तेवुं गुरु आदिक पासेंथी प्रायश्चित्त प्रमुख लेवानो अभिप्राय राखेज नही तो ते प्राणी दोष करीने पण निःसूको के० निर्दयी जाणवो. यतः ॥ जोचयइउत्तरगुणे ॥ मूलगुणेविअचिरेणसोचयई ॥ जहजहकुणइपमायं ॥ पीलीज्जइतहतहकसाएहिं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तथा ते प्राणी निद्धंधस के० गतधर्मा छे एटले प्रवचनरूप धर्मनी हाणी थाय तेहनी अपेक्षा राखे नही ते जीव सेढीथी हेठो के० गुणश्रेणी थकी अधोवर्त्ति अथवा संयमश्रेणी थकी हेठो जाणवो. वली ते प्राणी साधुना मार्गथी चूक्यो एम जाणवुं. यतः अइयारंजोनिसेवि ॥ तापायछित्तंनगिएहए ॥ अणुज्जुउंयतभावो ॥ निधम्मोसोगणीघासु ॥ १ ॥ इति श्रीहरिभद्रसूरीकृत संबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥

कोईकहेजेपातिककीधां ॥ पडिकमतांछूटीजें रे ॥ तेमिथ्याफ
लपडिकमणानुं ॥ अपुणकरणथीलीजें रे ॥ श्रीसी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली केटलाक एम कहेछे के जे पाप कर्यां होय ते सर्व पापथी पडिकमतां के० पडिकमणुं करतां छुटीयें ॥ यतः आणाएउकयं पावं ॥ पडिकमणाऊविसुज्झइ ॥ इति वचनात् ॥ पडिकमणं पापहरणं इति लोकोक्तिः एम कहेछे ते मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके फल पडिकमणानुं के० पडिकमणानुं जे फल ते तो अपुणकरणथी लीजे के० फरी अण करवाथी पामीयें एटले पापने पडिकमीने फरी पाप नही करे तोज पडिकमणानुं फलपामे इतिभाव ॥ यतः पुणपावस्सअकरणे ॥ पडिकमणंहोइ भावसारंच ॥ पुणपावाणं करणं ॥ नकुबदवं पडिक्कमई ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ १६ ॥

मिथ्यादुक्कडदेईपातिक ॥ तेभावेजेसेवे रे ॥ आवश्य
कसांखेतेपरगट ॥ मायामोसनेसेवे रे ॥श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटे जे मिथ्या दुक्कड के० मिछामी दुक्कडं देइने वली तेहिज पाप भावें करीने सेवेछे ते प्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनी साखे माया मृषाने सेवेछे. शामाटे जे गुरु आदिकने राजी करवाने अर्थें मिछामि दुक्कडं दिए छे पण परमार्थें सुन्य छे ॥ यतः जंदुक्कडंति-

मिच्छा ॥ तंचेवनिसेवेईपुणोपावं पच्चरकमुसावाइं ॥ मायानियडी पसंगोय ॥१॥ इत्यावश्यके

मूलपदेंपडिकमणुंभाष्युं ॥ पापतणुंअणकरवुंरे ॥ सक्ति
भावतणेअभ्यासे ॥ तेजसअर्थेंवरवुंरे ॥ श्रीसी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ मूलपदें के० उत्सर्गमार्गे अथवा प्रथमथी पडिकमणुं भाष्युं के० कह्युं छे केम कह्युं छे ते कहेछे के जे पापतणुं अणकरवुं के० पापनुं जे न करवुं तेनुं नाम पडिकमणुं कहीयें. यतः जइयपडिक्कमियव्वं ॥ अवस्सकाउणपावयं कम्मं ॥ तंचेवन कायव्वं ॥ तो होइपएपडिक्कंतो ॥१॥ इति आवश्यके पए के० उत्सर्गपदें अथवा पए के० प्रथमथी पडिकम्या इति ते माटे सक्ति के० शक्तिमाफक भावेकरीने अभ्यास करे एटले शक्तिभावथी अभ्यास करे ते पण जश के० जेहने अर्थें पाप अणकरवाने अर्थें वरवुं के० आदरवुं एटले शक्ति अभ्यास करे ते पण पछे पाप न करे इति भावः अथवा परमार्थें जश ते मोक्ष तेने अर्थें वरवुं के० आदरवुं अने कर्तानुं नाम पण जशविजय छे ते पण सुचव्युं ॥ १८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तुंगीयागिरि शिखरसोहे ॥ ए देशी ॥

देवतुझसिद्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ दुष्टआलं
बननिहाली ॥ कहोकेमतरिएं ॥ देवतुझ० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥ हवे त्रीजी ढाल कहेछे एने बीजी ढाल सार्थें ए संबंध छे जे बीजी ढालमां एम कह्युं के पाप न करवुं ते पडिकमणुं. माटे त्रीजी ढालमां कहेछे के पाप शी रीतें न थाय. जो हीणा आलंबन न होय तो पाप न थाय ते कहेछे जे हे देव, हे परमानंद विलासी, तुझसिद्धांत के० ताहारुंजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुझने अत्यंत मीठुं लागे छे इतिभाव ॥ ते एक मने धरिएं के० एकाग्र चित्तें करी धरी राखीयें अने दुष्ट जे हिणा आलंबन ते निहाली के० जोइने एटले कोइकें कोइ कारणे कांइ विपरीत अंगीकार कर्युं होय ते पोते धारी राखे तो ते धारीने हे सज्जन पुरुषो तमे कहो जे केम के० केवी रीतें संसारसमुद्र तरीयें ॥ १ ॥

दुष्टआलंबनधरेजे ॥ भग्नपरिणामि ॥ तेहभाव
श्यकेंभाष्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुझ० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे दुष्ट कें० दूषणसहित जे अपवादें साधन होय ते जे कोइ चित्तमां धरे तेतो भग्नपरिणामि के० संयम क्रियाथी भाग्या छे परिणाम जेहना एहवा जे लिं-

गीहोय तेहने आवश्यकने विषे नाष्या के० कह्या छे केवा कह्या छे के मुनिनामि के० मुनि नामना धणी एटले जे मुनीश्वर होय ते तेवा लिंगीने त्यजे के० छांडे ॥२॥

नियतवासविहारचेईय ॥ नक्तिनोधंधो ॥ मूढ अ
ज्जालानथापे ॥ विगयपडिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे डुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेछे ते एक नियतवास विहार के० नित्यवासेविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पइतिनाव एकस्थानके रहेवुं एमकेइकस्थापेछे,बीजो चेइयनक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेरुं तथा जिनप्रतिमा तेनी नक्तिनो धंधो जेकार्य व्यग्रता ते साधुनेकरवो एटलेजिनपूजादिक करवी इतिनाव; वलीत्रीजो मूढ के० मूर्ख ते अज्जालानथापेके० आर्यानोलानथापेछे एटले साध्वीवोहोरीलावे ते साधुने खपे एमथापेछे; चोथो विगयजे डुधदहीप्रमुख अने कडाविगयनेविषे पडिबंधो के० प्रतिबंध आसंग एटलेविगयनालोलपि तेएमकहेछे के विगयखातां दोषनथी. यतः॥ नीआवासविहारं ॥ चेइयनत्तिंचअज्जीयालानं ॥ विगईसुअपडिबंधं ॥ निद्दोसंचोइयाछिंत्ति

कहेउग्रविहारनागा ॥ संगमआयरिउ ॥ नियतवा
सननजेबहुश्रुत ॥ सुणिउंगुणदरिउ ॥ देव० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउग्रविहाररूप द्वार दृष्टांतेकरी देखाडेछे जेकोईक एमकहेछे के उग्रविहारथी थाक्यांथकां संगमआयरिउ के० संगमाचार्य नियतवासनजेके० नित्यवासीपणुंनज्युंछे, तेसंगमाचार्य बहुश्रुतके० ज्ञानी पुरुषहता एवुंअमे सुणिउंके० आगममां हेसांनल्युंछे एटले गुणसमुद्र तथाबहुश्रुत एवासंगमाचार्ये नित्यवासकबुलकर्यो तेथी अमे पण जाणीयें छैयें जे एकगामेरहेतांदोष देखातो नथी एमकहीने नित्यवास थापे छे. यतः ॥ संगमथेरायरिउ ॥ सुट्ठुतवस्सीतहेवगीयत्थो ॥ पेहित्तागुणदोसं ॥ नियावासंपवन्नोउ ॥ १ ॥ इतिवंदनकनिर्युक्तौ ॥ ४ ॥

नजाणेतेखीणजंघा ॥ बलथिविरतेहो ॥ गोचरी
नागकल्पी ॥ बहुरह्योजेहो ॥ देव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेजेकहेछे तेनेउत्तर करेछे के जे एमकहेछे तेपुरुषनजाणेके० नथीजाणता एटले नथी गणता जे खीणके० उंबुंथयुंहतुं जंघाबलके० जंघानुंबल एटले हिंडवानी शक्ति हतीनही वली थिविरके० घडपणहतुंएवा तेहोके० तेसंगमाचार्यहता तथा उपलक्षणथी डुर्जिक्षहतो शिष्यनेविहारकराव्योहतो वलीतेअप्रतिबंधपणे रह्याह

ता, तेपणगौचरीना ज्ञाग गाममांकल्पीनेरह्याहता, एटले एकघरेआहारनलेता एवोथ-कोबहु रह्योके० घणुं एकगामे रह्यो जेहोके० जेसंगमाचार्य ॥यतः॥ ठमेसीसपवासं ॥ अप्प-डिबंधंअजंगमत्तं च ॥ नगणंतिएगाखित्ते ॥ गणंतिवासंनियवासी ॥१॥ एटले नित्यवास नकरवो इतिज्ञाव. तेसंगमाचार्यनुं कथानक आवश्यकसूत्रथी जाणवुं ॥ ५ ॥

चैत्यपूजामुक्ति मारग ॥ साधुनेकरवी ॥ जिणे
कीधी वयरमुनिवर ॥ चैत्यवास ठवी ॥ देव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे चैत्यपूजा के० प्रज्ञुपूजा ते मोक्षनोमार्गछे तेमाटे साधुने करवी केमके अमे नकरीयें तो एदेरासरनी संज्ञालकोणकरे, जोमूकीदइयें तोविछेदजाय तेमाटे अमे असंयमअंगीकारकर्युंछे तेउपरदृष्टांतदेखाडेछे के जिणेके० जेकारणमाटे श्रीवयरस्वा-मीआचार्यें पूजाज्ञक्तिकरीछे चैत्यवासके० देहरानेविषे पुष्पादिक ठवीके० थापीने प्र-ज्ञुज्ञक्तिकरीछे माटे निर्दोषछे इतिज्ञाव. यतः॥ चइयपूयाकिंवयर॥ सामीणा मुणियपुव्व-सारेणं ॥ नकयापुरियाइतया ॥ तउमुरकंगसाहुणं ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ एक पुष्पादिक लाव्या एटलूंजदेखेछे पण आवांकारणहतां ते देखतानथी ॥ ६ ॥

तीर्थउन्नतिअन्यशासन ॥ मलिनताटाणे ॥ पूर्वअ
विचितपुष्पमहिमा ॥ तेहनविजाणे ॥ देव० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे तिहांतो तीर्थके० जिनशासननी उन्नतिथतिहती वली अन्यशासनके० अन्यतीर्थिनी मलिनताके० मेलाशकरवाने टाणेके० अवसरे तेपण पूर्वेअविचितके० पूर्वेपुष्पऊतारीज्ञेलाकर्यांहतां एवां फूलहतां तेहनो महिमाके० महात्म्यहतुंते नवी-जाणेके० एहवीवातनी जेने खबरनथी तेज्ञूलेछे, एवयरस्वामीनुंचरित्रआवश्यकथीजा-णवुं. यतः ॥ उहावणापरेसिं ॥ सतिछऊस्सावणंचवछलं ॥ नगणंतिगणेमाणा ॥ पुव्व-च्चियपुप्फमहिमंच ॥ ५ ॥ इत्यावश्यके ॥ ७ ॥

चैत्यपूजाकरतसंयत ॥ देवज्ञोईकह्यो ॥ शुज्ञमनेप
णमार्गनाशि ॥ महानिशीथेंलह्यो ॥ देव० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ चैत्यके० जिनप्रतिमातेनीपूजाकरतांथकां संयतके० द्रव्यलिंगीसाधुते देव-ज्ञोइके० देवनाद्रव्यनोज्ञोगवनारो कह्योछे, एटलेसंयतनेपूजाकरतां देवद्रव्यनीशंकार-हेनही माटेदेवद्रव्यनोज्ञोगीकहीयें जिनपूजाकरुं, एवापरिणामते शुज्ञमनकहीयें, पण एवीकरणीकरतोथको मार्ग जे जैनमार्गतेनोनाशकरेछे एटलेउन्मार्गें प्रवर्त्तेछे; एरीतेम-हानिशीथसूत्रमां कह्युंछे. तथाचतत्सूत्रं ॥ एवंचणं गोयमा केइअमूणियस समयसज्ञावे

उसन्नविहारीणीयवासीणो अहिपरलोगपच्चवायंसमयती इड्डीरससायगारवाइसुड्डिएरागदोसमोहाहंकारसमीकाराइसुपडीबद्धोकसिण संयमसधम्मंपरम्मुहे निद्दयनित्तिंसनिग्घिणअकलुणनिक्किवे पावायरणेक्कनिविठबुद्धी एगंतेणंअइचंदरोद्दकूरा भिग्गहिउंमिछदिठीणो कयसव्वसावज्जजोगपच्चक्खाण विप्पमुक्कासेससमारंभ परिग्गहे तिविहेणंपडिपुन्न सामाइएयदवताए नभावत्ताएनाम मेतमुंडे अणगारे महव्वयधारी समयाणविभत्ताणं एवंमन्नमाणेसवहाउमग्गं पवत्तंतितहाकिल अम्हे अरहंताणं भगवंताणं गंधमल्लयं दीवसमज्जणोवलेवणे विचित्तवत्थवल्लीधूवाइ एहिं पूयासक्कारेहिं अणुदीय अमज्जवणं पकुवाणा तित्थुन्नपणंकरेमो तंचणोणं तहति गोयम्मासमणुजाणेज्जा सेभयवंकेणंअठेणं एवंवुच्चईजहाणं तंचणोणं तहतिसमणुजाणिज्जा गोयमानियभाणुसारेणं असंयमबाहुल्लेणं चथूलंकंमासयं थूलंकंमासवाओय अज्ववसायं पडुच्चाथूलोयरसूहासूह कम्मपयडिबंधोसव्वसावज्जविरयाणंचवयभंगो वएभंगेणंच आणाईकम्मो आणाईकम्मेणंतु उमग्गगामित्तं उमग्गगामितेणंच समग्गपल्लोयणं उमग्गीपवत्तणं समग्गीविप्पलोयणेणंच मईणंमहतिआसायणा तउअणंत संसारोहिंडणंएएणं अठेणंगोयम्माणोणंतं तहतिसमणुजाणिज्जा ॥ इत्यादिकमहानिशीथेतृतीयाध्ययने अथवा महानिशीथेपंचमाध्ययनेपणपाठछे ॥यथा॥ सेभयवंजेणंकेई साहुवा साहूणीवा निग्गंथे अणगारे दव्वछयंकुज्जासेणंकिमालाविज्जा गोयम्मा जेणं केईसाहूवासाहूणीवा निग्गंथे अणगारे दवत्थयंकुज्जासेणं अजएवा देवभोएइवादेवच्चगेईवाजावण उमग्गपयईएवापुरुज्जियसीलेईवाकुसीलेईवाआलवेज्जा ॥ इत्यादि ॥ ७ ॥

पुष्टकारणविनामुनिनवि ॥ द्रव्यअधिकारी ॥ चैत्य
पूजायेंनपामे ॥ फलअनधिकारी ॥ देव० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ माटे कोइशासननोउद्योतप्रमुख मोहोटापुष्टकारणविना मुनीश्वरते द्रव्यअधिकारीके० द्रव्यस्तवनाअधिकारी नथिके० नहोय जेकारणमाटे चैत्यपूजाकरतांसर्वेफलनपामे केमके अनधिकारीके० जेहनोजेहनेअधिकारनही अनेते करेतो तेहनुं फल नपामे अन्यथा अधिकारीतोफलपामे. यतः ॥ अकसिणपवत्तगाणं ॥ विरयाविरयाणएसखलुजुत्तो ॥ संसारपयणुकरणे ॥ दव्वछएकूवदिठंतो ॥१॥ इतिवचनात् ॥ तेमाटेमुनिने नकरवी ॥ कसीणसंयमविउपुप्फाइयंनइछंति ॥ इतिवचनात् ॥ अनेवयरस्वामीतो कारणे प्रवर्त्या माटे तेने तो पूजा फलवंतजछे ॥ ए ॥

मार्गअन्नियपुत्तअजा ॥ लाभथीलागा ॥ कहे
निजलाभेंअतृप्ता ॥ गोचरीभागा ॥ देव०॥१०॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणी निजलानेंअतृप्ताके० पोतानेलाने अतृप्तथका तथा अज्ञा लानथीलागाके० आर्यानि लानें लग्नठेगृऊठे वली गोचरीनागाके० गोचरीनाआल- सुठे तेहने कोइकप्रेरणाकरेजे आर्यानोआण्यो आहारकिमकरोठो ते वारे एमकहेजे मार्गेअन्नियपुत्तके० अर्णिकापुत्रनेमार्गें एटले ए नावजे अर्णिकापुत्रेंसाध्वीनोआण्यो आहारलीधोठे तेमार्गे अमेपणलश्येंठैयें; जोदोषहोयतो तेअरणीकापुत्रकेमलीये, माटे आर्यानो आण्योआहारनिर्दोषठे, परवचनंआवश्यके ॥यतः॥ अज्जियलानेगिऊ ॥ सए- णलानेणजेअसंतुठाः ॥ निक्कायरियानगगा ॥ अन्नियपुत्तंचवइसंति ॥ १ ॥ १० ॥

नजाणेगतशिष्यअवमे ॥ थिविरवलहीणो ॥ सुगुण
परिचितसंयतिकृत ॥ पिंडविधिलीणो ॥ देव०॥११॥

अर्थ ॥ हवेजेएमकहेठे तेहनेठपकोदेतांसद्गुनेऊपदेशदेठे के जे अरणीकापुत्रनो दृष्टांत आपेठेते नजाणेके० नथीजाणता जे तेअरणीकापुत्र आर्यानोआण्योआहारलेता पण केवाहता जे गतशिष्यके० शिष्यनोसमुदायपासेनहतो वली अवमेके० डुकाल- हतो एटले एनावजे डुकाल जाणी शिष्यनेविहार कराव्यो हतो वली पोतानीपण थिविरके० वृद्धावस्थाहती तथा वलहीणोके० शक्तिहीणहता, गोचरीयेंफरवाने अस- मर्थहता तथाआर्याजेपुष्पचूलानामेसाध्वी तेपण जलागुणनीपरिचयवानहती तेसंय- तिके० साध्वी तेणेकृतके० कस्यो एटले आण्यो एवोजे पिंमके० आहारतेवली विधिके० विधिसहित लीणोके० लीधोठे, तेकारणतोकोइगणतानथी अने केवल आर्यालान गवेषे- ठे. यतः ॥ अन्नियपुत्तायरिउ ॥ नत्तंपाणंचपुप्फचूलाए ॥ उवणियंजुजतो तेणेवनवेणअंत- घडो ॥१॥ गयसीसगणउमे निक्कायरियाअपच्चलेथेरं नगणंतिसहाविसढा अज्जियलानं गवेसंतो ॥२॥ तो सहाविके० सखाइशिष्यादिकठतांपण शठमूर्ख एमकहेठे इतिनाव ११

विगयलेवीनित्यसूजे ॥ लष्टपुष्टनणे ॥ अन्यथा
किमदोषएहनो ॥ उदायननगणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे केइक एमकहेठे जे विगयवावरवी निरंतरकल्पे एमपोते लष्टपुष्टथका नणेके० कहेठे, एटले निरंतरविगय वावरतांदोषनथी एवुंबोलनारने कोइक रूडा- साधु ठपको आपे के नाई विगयतो साधुने निरंतरलेवीकल्पेनही. यतः ॥ विगई विग- ईनीयो ॥ विगईगयंजोउजुंजईसाहु ॥ विगतीविगतीसहावा ॥ विगतीवीगतीवला- नेई ॥ ॥ इतिवचनात्॥ एमकहे तेहनेपाठो आवीरीतेउत्तरआपे जे अन्यथाके० जो विगयवावरतां दोषहोयतो तेउदायनराजऋषीयें केमगण्योनही एटलेएनाव जे विग-

यद्वेतांदोषहोयतो उदायनऋषियें केमवावरीहती. यतः॥ जत्तंवापाणंवा ज्जतूणंलावलवियमविसुद्धं ॥ तोअवज्ञपडिछन्नं ॥ उदायनरिसिववईसंति ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ १२ ॥

उदायनराजर्षितनुनवि ॥ सीतलुक्खसहे ॥ तेह
व्रजमांविगयसेवे ॥ सूंतेनलहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्तरकहेछे जे उदायनराजऋषीना तनुके० शरीरनेविषे शीतके० टाढुं अने लुक्खके० लुखुं तेनविके० नथी सहेवातुं एटले राजवीथकां दिक्षालीधीछे अने रोगीष्टशरीरछे तेमाटे सहननथीथातुं इतिभाव. माटे उदायनऋषियें व्रजमांके० श्रीगोकुलमां विगयवावरीछे एहवुं विगयवावरवानुंकारणते मूढ नलहेके० शुंनथी जाणता ए के कोइकारणेविगयवावरी एटले ते ओतुंलेइने पोते वावरनार उजमालथायछे. यतः॥ सीयललुक्खाणुचीयं ॥ वएसुविगईगएणजावित्तं ॥ हछाविजणंतिसढा ॥ किमासिउदायणोनमुणी ॥ एकथाउंसर्वे आवश्यकवृहत्वृत्तियें वंदनावश्यकेछे ॥ १३ ॥

लोकआलंबनेभरिउं ॥ जनअसंयतने ॥ तेह
जगमांकांइदेखे ॥ धरेतेहमने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एम लोकके० मनुष्यलोकतो आलंबनेभर्योछे. बाल, वृद्ध, सूत्र, अर्थ, द्रव्यादिक आपद प्रमुख आलंबनकरे. जेमहुंबालकछुं, अथवावृद्धछुं तेमज सूत्रभणुंछुं, अर्थभणुंछुं, आद्रव्यदोहिलुंछे अथवाआक्षेत्रनानुंछे हमणादुर्भिक्षादिकछे तथाहुं आजारीछुं इत्यादिकनिश्रापदकरीने पछेआलंबनखोले. यतः ॥ सुत्तछबालवुढे असहुंदव्वाइआवइओय ॥ निस्साणपयंकाउं ॥ संथरमाणाविसीयंति ॥ १ ॥ इत्यावश्यकेएमअसंयतने आलंबनेजेभर्योछे तेहवाअयत्नायेंचालवानीइछाकरनारजननेआलंबनघणाछे तेप्राणी जगतमां जेकांइ नियतवासादिकदेखेते मनेके० मनमांहे धरेके० धारीराखे, अनेकोइपुछे त्यारे तेदृष्टांतदेखाडे इतिभावः॥यतः॥ आलंवणाणलोगो॥भरिओजीवस्सअजउकामस्स ॥जंजंपिछईलोए ॥ तंतंआलंवणंकुणइ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ १४ ॥

शिथिलआलंबनगहेमुनी ॥ मंदसंवेगी ॥ संयता
लंवनसुजसगुण ॥ तीव्रसंवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेजे मंदसंवेगीके० अल्पसंवेगवंतमुनिहोय तेशिथिलविहारीना ओठां ल्येछे जेममथुरामां मंगुआचार्य सुगालमां पण एकठामेरह्या प्रतिवंधतज्योनही पासत्थाथया तेमाटे एमकरतांपण प्रभुयेंधर्मदीठो एमजणायछे ॥ गाथा ॥ जेजछजयाजइया वहुसुआचरणं करपइछा॥ जंतेसमायरंति। आलंबणं मंदसड्ढाणं॥ इत्यावश्यके तथा तीव्रसंवेगी

के० आकरावैराग्यवंततेतो संयतालंबनके० संयतमुनिराज तेमनुं आलंबनकरे जे अमुक मुनिराजे निक्षुकप्रतिमावही तथाअमुकमुनिराजे उपसर्गपरिसहसहनकस्या तोहुंपणतेवा सहनकरुं अथवातपकरुं एवीरीतेकरतां सुजसगुणके० जलाजसनोगुणवधारे ॥ गाथा ॥ जेजह्जयाजइया ॥ वहुसुआचरणकरणमाउत्ता ॥ जंतेसमायरंती ॥ आलंवणतीवसद्दाणं ॥ १ ॥ इत्यावश्यके एढालमांघणोवंदनकनिर्युक्तिनोअधिकारछे एत्रीजीढालमां एमकह्युंजे हीणाआलंवनलेइने पोतेहीणाचारीथाय पछेजेपोतेहीणाचारीहोय तेशुद्धाचारीनां छिद्रकाढे तेवातचोथीढालमांकहेछे ॥ १५ ॥

॥ ढालचोथी ॥

प्रनुपार्श्वनुं मुखडुंजोतां ॥ नवनवनांपातिकखोतां ॥ एदेशी ॥

सुणजोसीमंधरस्वामी ॥ वलीएककहुंसिरनामी ॥
मारगकरतानेप्रेरे ॥ दूर्जनजेदूषणहेरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे हेश्रीमंधरसाहेवतुमे सुणजोके० अवधारजो वलीके० पूर्वेकही तेथी वीजीवात ए कहुंछुं सिरनामीके० मस्तकवडेतमने नमस्कारकरीने जेशुद्धमार्गना करताके० पालता एवाने प्रेरेके० उदीरे एवाजे डुर्जनके० खलपुरुषछिद्रान्वेषीछे ते दूषणहेरेके० पारका अछता दूषणजूए ॥ १ ॥

कहेनिजसाखेव्रतपालो ॥ पिणधर्मदेशनाटालो ॥
जनमेल्यानुंसुंकाम ॥ वहुबोल्युंनिंदाठाम ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेएमकहेछे जेपोतानीसाखेव्रतपालो अनेधर्मकरो पण लोकनेलाकरीने धर्मदेशना आपवानुंशुंकामछे माटे एवातनेटालो एमउपदेशकरी लोकनेलाकस्यानुं शुंकामछे केमके घणुं वोलतां कोइअवसरे निंदानुं स्थानक पणथाय ॥ २ ॥

एमकहेतांमारगगोपे ॥ खोटुंदूषणआरोपे ॥
जेनिर्नयमारगबोले ॥ तेकह्योद्वीपनेतोले ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एवीरीतना वोलनाराते मार्गगोपेके० शुद्धमार्गने उलवेछे खोटुंदूषणके० खोटादूषणनोआरोपकरेछे केमके जेप्राणी निर्नयके० कोइनोनयनराखे अनेशुद्धमार्गनाषे ते द्वीपनेतोले शास्त्रमां कह्योछे ॥ उक्तंच ॥ जोसम्मंजिणमग्गं ॥ पयासएनिप्पएणिरासंसो ॥ सोनवाणजणाणं ॥ दीवसमोनवस्समुद्दंमि ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

अज्ञानीगारवरसिया ॥ जेजनछेकुमतेंग्रसीया ॥
तेहनोकुणटालणहार ॥ विणधर्मदेशनासार ॥४॥

अर्थ ॥ जे अज्ञानिके० मिथ्याज्ञानीहोय अथवा गारवरसियाके० ऋद्धिगारव, रस गारव, शातागारवमांहे मग्नथयाहोय वली जेप्राणी कुमतेंग्रसियाके० कदाग्रहेकुश्रद्धायें ग्रसायीरह्याछे एटलेअन्यअन्यदर्शनना आग्रहवंतछे इत्यादिकनी कुमति ते सारके० प्रधानएहवीजे धर्मदेशना तेदीधाविनातेओनी कुमतीने बीजो कोणटालणहारछे अने सारधर्मदेशनाविना कुमार्गसुमार्गनी शीखवरपडे ॥ ४ ॥

गीतारथजयणावंत ॥ भवभीरुजेहमहंत ॥ तस
वयणेलोकेंतरीयें ॥ जेमप्रवहणथीभरदरीयें ॥५॥

अर्थ ॥ हवे ते देशनाकेवापुरुषआपे तेकहेछे जे गीतार्थहोय ॥ गाथा ॥ गीयंभण इसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ उभएणयसंजुत्तो ॥ सोगीयछोमुणेयवो ॥ १ ॥ तथाजयणावंत एटले छकायनारक्षकहोय वली भवभीरुके० संसारनीबीकराखनारहोय के रखेखोटुंबोलीजवाय, खोटुंबोलीयेतो संसारवधे अने महंतके० महोटाहोय एटले गुणेगिरुआहोय तेवाउत्तमपुरुषोनांवचनथकी लोकमांथीतरीयें जेमभरसमुद्रमां प्रवहणके० जहाजथी पारपामीयें तेमगीतार्थनी देशनायें संसारसमुद्रथीतरीयें ॥ ५ ॥

बीजोतोबोलीबोले ॥ सुंकीजेनिर्गुणटोले ॥ भा
षाकुशीलनोलेखो ॥ जनमहानिशीथेंदेखो ॥ ६ ॥

अर्थ॥हवे जे गीतार्थविनाडाहीडाहीवातोकरेछे तेने शीखामण आपेछेके गीतार्थविना जेबीजो तेतोबोलीनेके० देशनाप्रमुखआपीने श्रोतानेसंसारसमुद्रमां बोले के० बुडाडेछे माटेएवा निर्गुणटोलानेशुंकरीयें गीतार्थविनाघणुंटोलुंमल्युंहोय पणतेशाकामनुं? केमके जेअगीतार्थछे तेघणुंबोले उन्मार्गप्ररुपेतोतेहने भाषा कुशीलने लेखेजाणवा. जनके० हेजन हेलोक (एमलौकीकभाषाछेतेथीएकवचनछेमाटेएमकहेवुंजे) हेलोको एवात महानिशीथसूत्रमां देखोके० जुउ॥यथा॥ कुसीलोसन्नपासछो ॥सछंदेसबले तहादिछी ॥ एवइमेपंच ॥ गोयमाननिरिक्खए ॥ १ ॥ पंचेएसुमहापावे ॥ जोनवजीज्जगोयमा ॥ संलावाइकुसीलेहिं ॥ भमीहिसोसुमईजहा ॥ इतिमहानिशीथे ॥ एमां एम कह्युंजे पासछादिकपांचनेजेनवरजे तेमां संलापकुशीलादिकदोषआवे अनेतेदोषथीसुमतिनीपरेंसंसारभमे ॥ तथा ॥ तहाजिप्भाकुसीले सेणं अणेगहा तित्त कडुअ कसाय महुराइं लवणाइं रसाइं आसायंते अदिछासुयाइं इयपरलोगोभयविरुद्धाइं सदोसाइं मयारजयारुच्चारणाइं अवसंप्रक्काणं संतापिउगाइं वाभणंते असमयन्नुधम्मदेसणावत्तणाणय

जिह्वा कुसीलेणए सेन्नयवं किंन्नासाए विन्नासाए कुसीलत्तंनवइ गोयमान्नवइसेन्नयवं जइएवं ताधम्मदेसणंनकायव्वं गोयमा सावज्जणंच न्नाणं वयणाणंजोनजाणइ विसेसं वुत्तुपि तस्सनखमंकिमंगपुणदेशणंकाऊ इतिमहानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेलननीनहीईहा ॥ मुनिन्नाषेमारगनीरीहा ॥
जोबहुजनसुणवाआवे ॥ तोलान्नधर्मनोपावे ॥७॥

अर्थ ॥ जनमेलनके० लोकन्नेलाकरवानी नहीईहाके० इह्वातोनथी पणधर्मनी प्राप्ति जाणीने लोकआवीबेसेछे तेनेमुनीश्वर जैनमार्गन्नाषे पणनिरीहाके० आशारहितथकाक हे पणकोडीमात्रनीआशानराखे अनेयशतथा माननी इह्वानराखे. एरीतेधर्मदेशनादेतां कदाचित् घणा लोक सांन्नलवाआवे तोधर्मनोलान्नघणोथाय घणालोक धर्मपामे संसारतरे ॥ ७ ॥

तेहनेजोमारगनन्नाषे ॥ तोअंतरायफलचाखे ॥
मुनिशक्तिछतीनविगोपे ॥ वारेतेहनेश्रुतकोपे ॥८॥

अर्थ ॥ तथा जेलोकधर्मसांन्नलवाआव्या तेहनेधर्ममारग नन्नाषेके० नसंन्नलावे तो ते मुनियें ज्ञाननोअंतरायकर्यो तथा विघ्न कर्युं तेहनांफल चाखेके० न्नोगवे एटले ज्ञानावरणीकर्मबांधे॥ गाथा ॥ अन्नाणीवरकाणंकरेइ ॥ जोतस्सहोइपावफलं ॥ नाणीविजोनन्नासइ ॥ सोलहएनाणविग्घंखु ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां ॥ तेमाटे मुनिमां जोदेशनाआपवानी छतिशक्तिहोय तोगोपवेनही अथवा देशनाआपतोथको थाके नही तथा धर्मदेशनादेताथकाने जे वारेछे नाकहेछे तेप्राणीने श्रुतकोपेके० न्नवांतरे ज्ञानावरणीबांध्युंहोय ते उदयथाय अज्ञानपणुंआवे एटले श्रुतकोप्युं ॥ ८ ॥

नविनिंदामारगकहेतां ॥ समपरिणामेंगहगहतां ॥
मुनिअद्दचरितमनरंगे ॥ जोईलीजेंबीजेअंगे ॥९॥

अर्थ ॥ एटलेशुद्धमार्गकहेतांनिंदानथी केमके देशनातेज्ञाननोहेतुछे समपरिणामेंके० रागद्वेषरहितपणे एटलेकोइऊपररागद्वेषनकरे अनेकोइनुं नामलेइ तेनाअवर्णवाद नबोले एरीते गहगहतांके० हर्षपामीन्नाषें एमआर्द्रकुमारनुंचरित्र बीजुंअंगश्रीसुयडांगसूत्रना बीजाश्रुतस्कंदे छहाअध्ययने जोइलेजो ॥ यथा ॥ इमंवयंतंतुमं पाउकुवं ।पावाईणो गरिहसिसव्वमेव ॥ पावाईणो पुढोपुढोकिट्टयंता॥सयंसयंदिठ्ठी करे-

तिपाउं ॥ १ ॥ तअन्नमन्नस्सगरहमाणा ॥ अक्कंतिउसमणामाहणाय ॥ सतोय अच्छी-असतो अनछी ॥ गरहामोदिठ्ठीनगरहामो किंचि ॥ २ ॥ नकिंचि रूवेणमन्निधारयामो॥सदिठिमग्गंतुकरेमिपाउं इत्यादिकअधिकार मननेरंगेकरीनेजोजो ॥ ए ॥

कोईजाषेंनवीसमजावो ॥ श्रावकनेगूढाजावो ॥
तेजुठकह्यालठ्ठा ॥ श्रावकसूत्रेंगहियठ्ठा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकएमकहेठे जे श्रावकने गूढाजावोके० सूक्ष्मअर्थेशुंसमजावो ठो एनहीसमजावो जोतमेसमजावशोतो सर्वेनेपूठताफरशे सामाआपणांठिद्रजोशे एवी रीते जेकहेठे तेजुठुंकहेठे केमके श्रावकनेतो श्रीजगवतिसूत्रमध्येलद्धठ्ठा, गहियठ्ठा, पुछीयठ्ठा, अजिगयठ्ठा, विणिछियठ्ठा इत्यादिकपाठकह्योठे माटेजोश्रावकनेगूढअर्थेन-समजाव्याहोय तोएपाठकेमकह्योठे इतिजाव ॥ १० ॥

कहेकोईनवीसिजोमी ॥ श्रुतमांनहीकाईखोमी ॥ तेसि
ध्याउठ्ठतजावा ॥ श्रुतजलधिप्रवेशेंनावा ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक असमंजस एमबोलेठे के नवीसीजोडीके० नवाग्रंथ अथवा स्तवन सज्झाय जोमवानुं शुंकामठे केमके श्रुतके० सिद्धांतमांतोकांइखोमनथी एटले सिद्धांतमांठे तेकरतांतमे अधिकशुंकहेशो एवुंकहेठे तेपण मिथ्याके० खोटुं कहेठे कारणके सिद्धांतमांथी उद्धरीनेजेग्रंथकस्याठे तेजावठे ते श्रुतजलधिके० श्रुतरूपसमुद्रमां प्रवेशकरवाने नावासरिखाठे एटलेसमुद्रमां जोनावाहोय तोप्रवेशथाय तेमज सिद्धांतरूपसमुद्रमांपण जो एग्रंथप्रकरणरूपीनावडांहोय तोजप्रवेशथाय ॥ ११ ॥

पूरवसूरीयेंकीधी ॥ तेणेजोनविकरवीसिद्धी ॥
तोसर्वेंकीधोधर्म ॥ नवीकरवोजोयोमर्म ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एवुंसांजली वली प्रतिवादीबोल्याके तो पूर्वाचायेंजे जोडीकीधीठे तेहज जणो तेणेके० तेमाटे जोनवीकरवीसिद्धिके० नवीजोमीनकरवी एमवातसिद्धथई एटलेनवाप्रकरणप्रमुखजोडवानही एमसिद्धथयुं एवुंबोलनारने उत्तरकहेठेके तो पूर्वेंसर्वेउत्तमजीवोथया तेणेसर्वेंधर्मकस्याठे तेमाटे तमेवलीधर्म शुंकरवाकरोठो, तमने पणनकरवो केमके पूर्वाचार्येजोडीकरीठे माटेआपणेनकरवी तोपूर्वेंधर्मपणघणाजीवेंकस्योठे माटेआपणेनकरवो ए मर्मके० एजाव ॥ १२ ॥

पूरवबुधनेबहुमाने ॥ निजशक्तिमारगग्याने ॥ गुरु
कुलवासीनेजोडी ॥ युगतिएहमांनहीखोडी ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटे जोग्रंथनोजोडनार आवोथइनेनवाग्रंथजोडे तोतेमांकांइदोषनथी पूरवबुधनेबहुमानेके० पूर्वेपंडितगीतार्थथया तेहनुंबहुमानकरेजेपूर्वाचार्यआगलेंहुंते शास्त्रीसावमांहुं पणतेनुंवचनखंडेनहीतथापोतानी शक्तिप्रमाणेयोजनाकरे पण अधिकयोजनानकरे जोअधिकयोजनाकरे तोकोइकठेकाणेखोटुंआवीजाय माटे शक्तिप्रमाणे जोडे वलीमार्गग्यानेके० जैनमार्गनुंज्ञानचोखुंनिर्मलहोयतोजोडे वली गुरुकुलवासीहोय तेसंप्रदायशुद्धजाणे तेवारेंयथार्थजोडाय एवापुरुषेजोडवुं युक्त घटमानछे एहमांकांइखोडीके० हाणीनथी ॥ १३ ॥

एमश्रुतनोनहीउच्छेद ॥ एतोएकदेशनोभेद ॥
एअर्थसुणिउल्लासें ॥ भविवरतेश्रुतअभ्यासें ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीते नवीजोडीकरतां श्रुतज्ञाननो उच्छेदनथीथातो पणश्रुतवृद्धिथायछे एतोएकदेशेंभेदछे एटले ग्रंथनामेभेदछे पण आत्यंतिकभेदनथी वली एग्रंथनोजे अर्थके० भावते उल्लासेंके० हर्षे सांभलीने भव्यप्राणीते श्रुतज्ञानभणवाना अभ्यासमां वर्त्ते केमके तेहनामनमांहे एमउपजेके आग्रंथमां आटलीवातकहीछे तो सिद्धांतमां तोघणासूक्ष्मभावकह्याहशे तेसारुवधारेभणवानो अभ्यासकरे माटेनवीजोडीकरवी ते सिद्धांतनीवृद्धिकरेछे पण उच्छेदकरतीनथी इतिभावः ॥ १४ ॥

इहांदूषणएककहाय ॥ जेखलनेपीडाथाय ॥ तोपण
एनवीछोडीजें ॥ जोसज्जननेसुखदीजें ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांएकदूषणकहेवायछे तेआवीरीतेके पंडितलोकजेग्रंथकरेछे तेथीपंडितनो यशवादबोलायछे तेजेखललोकहोयतेथीखमातुंनथी माटे ते खललोकोने पीडा थायछे तोपणएनवीजोडीकरवी ते नवीछोडीजेके० नमूकीयें जोसज्जनपुरुषने सुखआपीयें तोनवाग्रंथजोडताजजइयें पणथाकियेंनहीइत्यादिभावः ॥ १५ ॥

तेपुण्येंहोसेतोष ॥ तेहनेपणइमनहीदोष ॥ उज
मतांहीयडेहीसी ॥ जोइलीजेंपेहेलीवीसी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ते नवाग्रंथजोमतां पुण्यथाशे तेपुण्येंकरीने सज्जनलोकोने संतोषउपजशे इहां सज्जनपदवहारथीलइयें तथा तेहनेपणके० तेखललोकोनेपण एमदोषनथी एटलेतेने पणपीडानथाय. केवीरीतेनथायके जो उजमतांके०उद्यमकरीने हीयडेहीसीके०हृदयमां हर्षपामीने एअर्थ प्रथमवीसीमां हरिभद्रसूरियेंकह्युंछे तेजोइ लेजो॥यतः॥इक्कोपुणहोइ-

दोसो॥जंजायइखलजणस्सपिडत्ति ॥ तह्विपयट्टोइब्वं॥दिठुंसुयणाणअइतोसं॥१॥तत्तोचि यजंकुसलं ॥ तत्तोतिसिंपिहोइनहुपीडा ॥ सुद्धासयापविति ॥ सब्बेनिद्दोसियाज्ञणिया ॥२॥

कहेकोईकजूदीरीतें ॥ मुनिन्निदाज्ञांजेज्ञीतें ॥ तेजू
ठुंशुज्ञमतिईहे ॥ मुनिअंतरायथीबीहे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वलीकोईकतो जूदीजरीतेंकहेछे जे देशनादेवानीनाकहीयेंछैयें तेहनोआ शय एछे जेमुनीदेशनादेतां अमारीज्ञीढाज्ञांगोछो कारणकेतमे एवोमार्गप्ररुपोजेथकी अमनेन्निदाकोइआपेनही ते ज्ञीतीके०बीकनेमाटे देशनादेवानी नाकहीयेंछैयें तेजुठुंके० एमबोलनारापण खोटुंकहेछे केमके जेयथार्थदेशनाआपनारमुनिछे तेशुज्ञमतिने ईहेके० वांछेछे एटले उत्तरोत्तर शुज्ञ अध्यवसायराखनाराछे तो ते एहवा मुनिराज तो अंतरायथीबीहेछे के जोकोईने अंतरायपाडीशुं तोपोतानेअंतरायकर्मबंधाशे तो एवामुनि बीजानी न्निदाकेमज्ञांजे ॥ इतिज्ञावः ॥ १७ ॥

जेजनछेअतिपरिणामी ॥ वलीजेहनहीपरणामी ॥
तेहनेनितेंसमजावे ॥ गुरुकल्पवचनमनज्ञावे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ ज्ञाटे जे लोक अतिपरणामीछे एटले एकनिश्चेंमार्गज आदस्योछे ते पोतेज आ स्तवनमां आगलकेहेशे जे–ज्ञेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥ होयअतिपरिणतिपरसमयथितिज्ञजे ॥ वली केटलाकलोकते नहीपरणामीके०केवल व्यवहारनेज आदरेछे तेक्रियाव्यवहारमांराता पणनिश्चेंमार्गजाणताजनथी तेपण पोतेजआस्तवनमांआगलकहेशे केइनवीज्ञेदजाणेअपरिणतमती ॥शुद्धनयअतिहिगंज्ञीरछेतेवती॥ एवचनथीतो एमजाणीयेंछैयेंजे अतिपरिणतिते निश्चयवादी अने अपरिणतिते व्यवहारवादी तथा विशेषावश्यकमध्ये तो वृत्तिकारेंएमलख्युंछे जे इहशिष्यास्त्रिविधास्तद्यथा अपरिणामा अतिपरिणामाः परिणामाश्चेति तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरिणतजिनमतरहस्या अपरिणामाः अतिपरिणामा अतिव्याप्तापवाददृष्टयोऽतिपरिणामाःसम्यक्परिणतजिनवचनास्तुमध्यस्थवृत्तयःपरिणामाः तत्रयेअपरिणामास्तेनयानांयः स्वस्वआत्मीयआत्मीयविषयो ज्ञानमेवश्रेयः क्रियावाश्रेय इत्यादिकस्तमश्रद्धानाः येत्वतिपरिणामाः तेपियदेवैकेननये क्रियादिकं वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणतया गृएहंत इत्यादिकलख्युंछे इहांतो पूर्वोक्तअर्थपणलागेछे तथा महाज्ञाष्योक्तअर्थ पणलागेछे वलीविशेषें बहुश्रुतकहेतेखरूं इतिज्ञावः एहवाअतिपरिणामी तथा नही परिणामी जे लोकछे तेहने नितेंके०न्यायमार्गे स्याद्वादमार्गेदेखाडी गुरुसमजावेछे अथवा नितेके०निरंतरदेशनायेंक-

रीसमजावेछे तेकोणसमजावेछे गुरूके०गुरूसमजावेछे एमबृहत्कल्पभाष्यमांवचनछे ते मनमांभावीनेंकहेछे ॥यतः॥ अइपरिणइअपरिणई॥ दुण्हंविमग्गंजणोपणासंति ॥ तं-झादेसणमाइरकई ॥ सुहगुरूमग्गरकठा ॥ १ ॥ १८ ॥

खलवयणगणेकुणसूरा ॥ जेकाढेपयमांपूरा ॥ तुज
सेवामांजोरहीयें ॥ तोप्रभुजशलीलालहीयें ॥ १९ ॥

अर्थ॥तेमाटे देशनान देवी विगेरे खललोकनां वचनने कोणशूरवीरपुरुष गणेके०कोण-खात्रमांआणे एटलेशूरवीरतेनेगणतीमांआणताजनथी.जे खलपुरुषछे तेपयके०दूधमांथी पण पूराकाढेछे माटेजेदेशनागुणकारीछे तेहनेअहितकारी कहेछे तो हे प्रभुजी तेहनां वचन लेखामांगणीयेंनही अने तुजसेवामांरहीयेंके० तमारीआज्ञापालीयें एटलेतमारी आज्ञाएवीरीतेंछे जे देशनाआपतां लाभजथायछे माटेदेशनाआपवी ए आज्ञा पालनरूप तमारीसेवाछे तेसेवामांजोरहियें तो जशलीलापामीयें. प्रभुपद संबोधनकरी आगलसंबं धकस्योछे अथवा प्रभुतानोयशतेहनीलीलापामीयें इतिभावः ॥१९॥ एचोथीढालनेविषे खललोके गुणवंतनेदूषणदीधा तेहनासमाधानकस्या. हवे पांचमीढालमां खललोकनिर्गु-णीछतां पोतानाआत्माने गुणकारीमानेछे तेनेदोष दीयेछे तेसंबंधेपांचमीढालकहेछे ॥१९॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ रागरामग्री ॥ मंत्रीकहेएकराजसभामां॥ एदेशी ॥

विषमकालनेजोरेंकेई ॥ उठ्याजडमलधारीरे ॥ गुरुगछछेमी
मारगलोपी ॥ कहेअमेंउग्रविहारीरे ॥ १ ॥ श्रीजिनतुंआलं
बनजगने ॥ तुजविणकवणआधारोरे ॥ भगतलोकनेकुम
तिजलधिथी ॥ बांहिग्रहिनेतारोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ॥विषमकालनेजोरेंके०पांचमोआरो तथा हुंडाअवसर्प्पिणीकालनेजोरे केटलाए-क उठ्याके०प्रगटथया जडके०मूर्ख वली मलधारीके०बाह्यशरीरेपणमेला अनेअंतरंगपाप-मेलेकरी मलीनथयेला माटेमेलनाधरनाराकह्या एटलेएभावजे एढालप्राएढुंढीआ लुंका-आश्रीछे पछीबीजाजीवोनेपण शिखामणदाखलछे.हवेते ढुंढीआओने माथेगुरुनथी माटे एमकह्युंजेउठ्याजडमलधारी॥ उक्तंचवंगचूलिकायां॥श्रुतहीलनाअध्ययने विक्कमकाला-उपन्नरसय ॥ पणहत्तरीवासेसुगएसुकोहंडी ॥ अपरिग्गहिवंतरी यहावाउभारहेवासे॥१॥ सूयहीलणाजिणपडिमा॥भत्तिनिसहे कारयासछंदाचारा ॥ दुमेहा मलिणादुग्गइगमि-णि॥ बहवेभिरकायरासमुप्पजिहितित्ति ॥ एटले गुरुने तथागछनेछांडी मारगलोपीके०

उन्मार्गप्ररूपीने तथा तेमने कोइपुछे तेनेएमउत्तरआपे जे अमे उग्रविहारना करनारछीए तथा अमेअद्भुतमार्गपाम्याछैयें माटे श्रीजिनके०बाह्यअन्यंतरलक्ष्मीयुक्त एहवाहेजिनराज तुंज जगतने आलंबनके०आधारछे पण हे प्रजुतमाराविना बीजोकोणआधारछे तमेतमाराजक्तिनाकरनारा जे जक्तलोकछे तेहने कुमतिरूप जलधिके०समुद्र तेथकी बांहिग्रहीने तारोके०पारऊतारो एटले नवनवाकदाग्रहउपजतावारो ॥ २ ॥

गीतारथविणजूलाजमता ॥ कष्टकरेअजिमानेरे ॥ प्रायें
गंठीलगेंनवीआव्या ॥ तेखूताअज्ञानेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेते मूर्खलोक गीतार्थविनाजूलाजजमेछे अहंकारेंकरीजेपोतानोएकमत पकड्यो तेहनाअजिमानेकरी लोच,जिक्षा, उघाडुंमाथुं, उघाडापग इत्यादिककष्टकरता फरेछे, पणप्रायें एमजाणीयेंछैयेंजे तेलोक गंठीलगेंपणआव्यानथी एटलेगंठीजेदपणनथीकस्यो तोसमकितनीवाततोवेगलीछे तेप्राणीअज्ञानने विषेजखूता छे केमके गुरुआणाविनाछेमाटेइतिजावः ॥ ३ ॥

तेहकहेगुरुगछगीतारथ ॥ प्रतिबंधेशुंकीजेंरे ॥ दर्शन
ज्ञानचरितआदरियें ॥ आपेंआपतरीजेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीते पोतानुंएकाकीपणुं थापवामाटे एमकहेछे जे गुरुनोप्रतिबंध गीतार्थनोप्रतिबंध तथागछनोप्रतिबंध राखी तेप्रतिबंधेशुंकरियें केमके प्रतिबंधतेतो दुःखनोहेतुछे माटेप्रतिबंधकोइसाथेनकरवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें बीजोकोइकोइने तारणहारनथी आपेआपतरीजेके०पोतेपोतानीमेलेतरीयें ॥यतः॥ अप्पानईवेयरणी ॥ अप्पामेकुडसामलि ॥ इतिवचनात् ॥ ४ ॥

नवीजाणेतेप्रथमअंगमां ॥ आदिगुरुकुलवासोरे ॥ कह्यो
नतेविणचरणविचारो ॥ पंचाशकनयखासोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेएनेउत्तरआपेछे के ते एमनथी जाणताजे प्रथमअंगमां श्रीआचारांग सूत्रनी आदिके०धुरें गुरुकुलवासोके०गुरुकुलवासकह्योछे ॥ यतः ॥ सूयंमेआउसंतेणं ॥ जगवयाएवमरकायं एमएसूत्रमांहेकह्युंजे सूयंके०सांजल्युं मेके०सुधर्मास्वामी जंबूप्रतें कहेछे के में एम सांजल्युंछे साक्षात् पणकरणाघाटेनही आउसंतेणंके०आमृशता जगवान वीरना चरणउंलासताथका सांजल्युं एवचनेकरीने सुधर्मास्वामीयें एमवताव्युं जे गुरुकुलवासेंवसवुंइतिजाव नके०नही तेविणके०तेगुरुकुलवासविना चरणके०चारित्र एम

विचारोके०चिंतनकरो एटलेएभावजे गुरुकुलवासविनाचारित्रनहोय एमपंचाशकमांहे श्रीहरिभद्रसूरियें खासोके०उत्तम नयके०न्यायकह्योछे ॥यतः॥दंसणनाणचरित्तं ॥ गुरुकुलवासंमिसंगयंभणियं ॥ अगुरुकुलवासियाणं ॥ दुप्पडिलंभंखुत्तिएवमवि ॥१॥ तथा सिद्धांतमांपणपिंडविशुद्धे चारित्रनी शुद्धिकहेवायछे तेपिंडविशुद्धितो जो गुरुकुलवासहोय तोथाय तेमाटे गुरुकुलवासविना चारित्रनहीं ॥ यतः ॥ पिंडंअसोहयंतो ॥ अचरित्तीइछसंसउनत्थि ॥ चारित्तंमिअसंते ॥ सव्वादिक्खानिरत्थिया ॥ ११ ॥ इति ॥ ५ ॥

नित्येंगुरुकुलवासेंवसवुं ॥ उत्तराध्ययनेभाष्युंरे ॥ तेहनेअप
मानेवलीतेहमां ॥ पापश्रमणपणुंदाख्युंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निरंतरगुरुकुलवासें वसवुं एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनाअग्यारमाअध्ययनेकह्युं छे यतः वसेगुरुकुलेनिच्चं ॥ जोगवउवहाणवं ॥ पियंकरेपियंवाई ॥ सेसिक्खंलद्धुमरीहई ॥१॥ इति वली तेहनेके०तेगुरुनेअपमानेके०अवज्ञाकरेतोतेहनेवलीतेहमांके०तेउत्तराध्ययनना सत्तरमापापश्रमणियअध्ययनमध्येज पापश्रमणपणुंदेखाड्युंछे एटलेगुरुआदिकनी निंदाकरतोहोयतो तेहनेपापश्रमणकहीयें ॥यतः॥ आयरियउवज्झायाणं ॥ सम्मंनपडितप्पई ॥ अप्पडिपूयंएथद्धे ॥ पावसमणित्तिवुच्चई ॥ १ ॥ तेमाटेगुरुकुलेरहेवुं

दसवैकालिकगुरुशुश्रूषा ॥ तसनिंदाफलदाख्यारे ॥ आवंतिमां
द्रहसमसदगुरु ॥ मुनिकुलमछसमभाष्यारे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीदशवैकालिकसूत्रनेविषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषाके०सेवाकरवी तेसेवानां फल घणांकह्यांछे ॥ काव्य ॥ आयरियग्गिमिवाहियग्गी ॥ सुस्सूसमाणोपडिजागरेज्जा ॥ आलोइयंगीयमेवनच्चा ॥ जोछंदमाराहयइसपुज्जो ॥१॥ इत्यादिक आखो त्रीजोउद्देशोजाणवो वली तसनिंदाके०तेगुरुनी निंदानां फलपण तेदसवैकालिकमांहेज नवमाध्ययनना पहेलाउद्देशामां कह्यांछे॥काव्यं ॥ आसीविसोआविपरसुरुट्ठो॥ किंजीवनासाउपरंतुकुज्जा ॥ आयरियपायापुणअप्पसन्ना ॥ अबोहिआसायणनत्थि मोक्खो॥१॥ इत्यादिकसंपूर्ण प्रथमउद्देशोइहांजाणवो वली आवंतिमांके०आचारांगमां पांचमाअध्ययनना पांचमाउद्देशामध्ये सदगुरुनेद्रहसमानकह्याछे तथा मुनिनाकुलके०समूह ते मछसमानकह्याछे तथा चतत्सूत्रं सेवेमि तंजहा अविहरएपडीपुन्नेचिट्ठंति समंसिभोमे उवसंतरएसारक्खमाणे सेचिट्ठंति इत्यादिक एनी वृत्तिनो वचेथीएकदेशलखीयेंछैयें इहपुनः प्रथमभंगपतितेनोभयसन्नाविनाधिकारस्तथाभूतस्यैवायंह्रदइष्टांतः सचह्रदोनिर्मलजलस्यप्रतिपूर्णोजलजैः सर्वर्त्तुजैरूपशोभितःसमे भूभागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्यमेवतिष्ठति नकदाचिद्दोषमुपयातिसुखोत्तारावतारसमन्वितउपशांतमपगतरजः

कालुष्यापादकं यस्य स तथानानाविधांस्तुयादशान् गणान्सह्वायादौगणैरात्मानसा. रक्षयन्प्रतिपालयन्सारक्षन् तिष्ठत्येषांक्रियाप्रकृतैवयथावासो ह्रदस्तथाचार्येपीति द-र्शयतिसेचिठ्ठइ इत्यादिसआचार्यः प्रथमजंगपतितःपंचविधाचारसमन्वितो अष्टवि-धाचारसंपडुपेतःषट्त्रिंशद्गुणगणाधारो ह्रदकल्पोनिर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समेत्रूत्नागइति-संसक्तादिदोषरहिते सुखविहारक्षेत्रेसमोवा ज्ञानदर्शनचारित्राख्योमोक्षमार्गे उपशम-वतांतत्रतिष्ठतिसमध्यास्तेकिंत्रूत उपशांतमोहनीयइतिकिंकुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्चसडुपदेशदानतोनरकादिपाता ऋेतिस्त्रोतोमध्यग इत्यनेन प्रथमजंगपतितं स्थविराचार्यमाहतस्यहिश्रुतार्थदानग्रहणसङ्गावात्स्रोतोमध्यगतत्वं सचकिंत्रूतःस्यादि-त्याह इत्यादि ॥ ७ ॥

गुरुदृष्टिअनुसारेंरहेता ॥ लहेप्रवादप्रवादेंरे ॥ एपणअर्थ
तिहांमनधरियें ॥ बहुगुणसुगुरुप्रसादेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुदृष्टिके०गुरुनामुखआगल रहेतां तथा अनुसारेंके०गुरुनेअनुजायी रहेतां लहेप्रवादप्रवादेंके०प्रकृष्टजेवाद तेनेप्रवादकहियें तेप्रवादेंकरीने प्रवाद जाणे एटलेप्रवादतेआचार्यपरंपरानोउपदेश तद्रूपप्रवादेंकरीने सर्वज्ञउपदेशरूपप्रवादनेजाणे अथवा प्रवादजे सर्वज्ञवाक्य तेणेकरीने अथवा प्रवादजे अन्यतीर्थिउंना वाक्य तेप्र-तेपरिक्षाकरीनेजाणे एरीतेगुरुपासेरहेतांज्ञान अंगीकारकरे इत्यादिक एअर्थ. पणति-हांके०तेआचारांगना पाचमाअध्ययनना उठाउद्देशामां कह्युंछे तेमनमां धरियें तत्सू-त्रं अणाणाए एगे सोवठाणे अणाणाए एगे ॥ निरूवठाणे एयं ॥ तेमाहोउएयंकुस-लस्सदंसणं॥तद्दिठिए तमोत्तीए तप्पूरकारें तस्सन्नितन्निवेसणे अन्निजूय अदक्खू अण-न्निजूए पहू निरालंबणयाए जे महंअबहिमणे पवायेणपवायंजाणेज्जा सहसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वाअंतिएसोच्चा निदेसं नातिवत्तेज्जा मेहावी सुपडीलेहिय सव्व-तोसव्वआएसममेव समन्निजाणीज्जाइत्यादिक एहनोअर्थटीकामांतोवहुछे पणआहिं श-ब्दार्थमात्रलिखीयें ठैयें अणाणाएके०प्रजुआज्ञारहित एगेके०केटलाक सोवठाणेके० धर्ममांसदाउद्यमवंतथया तथा केटलाक अणाणाएके०अनाज्ञायें निरूवठाणेके०सद्अ-नुष्टाननाउद्यमरहीत एयंके०एबेकुमार्गने सद्मार्गनाउद्यमनुंआलसजाणवुं हवेफरिगुरु-शिष्यनेकहेछे तुजने ए वे मांहेजो एयंकुसलस्सदंसणंके०एतीर्थंकरनोदर्शनअन्निप्रा-यछे तद्दिठिएके०विनितशिष्यें तेआचार्यनीदृष्टीयें वर्तवुं तमोत्तिएके०तेआचार्यनीमुक्ति-येंवर्तवुं तप्पुरकारेके०तेआचार्यनी आज्ञा आगलकरीनेवर्ते तस्सन्निके०तेओनीसंज्ञा-जाणे चित्तनोअन्निप्रायजाणे तन्निवेसणे के०सदागुरुकुलवासेंवसे एहवोशिष्यकेवागुण-

नेपामे तेकहेछे अनिनूयके०परिसहउपसर्गनेजीतीने अदरकूके०घातिकर्मनेउछेदे हे शिष्यवली अणनिनूएके०परिसहोपसर्गनेअणजित्योथको पहुके०समर्थहोय निरालंवणयाएके०मातापितासज्जनादिकना आलंवनरहितपणे विचरवानेकोणसमर्थहोय तेकहेछे जेके०जेकोइपुरुष मइंके०माहराअनिप्रायथकी अवहिसणेके०मनवाहेरनथी निकल्युंजेहनुं एटले सर्वज्ञउपदेशेंवर्तेछे इतिनावः तेसर्वज्ञउपदेशकेमजाणीयेंतेउपरें कहेछे पवाएणंपवायं जाणेज्जा एअर्थ 'लहेप्रवादप्रवादें'एमकह्युंतिहांकस्योछे तेजाणवुं हवेपूर्वोक्तजेप्रवादते त्रणप्रकारेजाणे तेकहेछे सहसंमुइयाएके०पोतानीमतिअवध्यादिकमत्ते अथवा परवागरणेणंके०सिद्धांतेकरीने वाके०अथवा अनेसिंके०अन्यआचार्यादिकतेहने वाअंतिएसोच्चाके०समीपेंसांनलीने यथार्थजाणीने निद्देसंनातिवत्तेज्जाके० तीर्थंकरना उपदेशनेउलंगेनही केमकेजे मेहावीके०पंडीत सुपडिलेहियके०नलेप्रकारें जोईने सवतोसवआएके०सर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रेंकालनावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनप्रतें सममेवके०सम्यक्रीते समनिजाणीज्जाके०जाणीनेनिराकरणकरे इत्यादिकबहुअधिकारछे तेमाटे वहुगुणसुगुरुप्रसादेके०गुरुआदिकनापसायथी घणागुणथाय ॥ पुज्जाजस्स पसियंति ॥ संवुद्धापुव्वसंथुया ॥ पसन्नालाननइस्संति ॥ विउलंअठियंसुयं ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेप्रथमाध्ययने इहांसूत्रआलावोविषमहतोमाटेअर्थकह्योछे ॥ ७ ॥

विनयवधेगुरुपासेंवसतां ॥ जेजिनशासनमूलोरे ॥ दर्शन
निर्मलउचितप्रवृत्ति ॥ सुनरागेंअनुकूलोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ॥वली गुरुपासेवसतां विनयवधे अने जेविनयते जिनशासननुं मूल छे॥यतः॥एवं धम्मस्स विनउमूलंपरमोसेमोरकोइति दसवैकालिक नवमाध्ययनना वीजा उद्देशकेंकह्यो तथा विनयफलंशुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलंश्रुतज्ञानं॥ ज्ञानस्यफलंविरति, विरतिफलंचाश्रवनिरोधः॥१॥ आश्रवनिरोधाद्भवसं, तत्तिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः॥ तस्मात्कल्याणानां, सर्वेपांनाजनंविनयः॥२॥इतिप्रशमरतौ वली गुरुकुलवासेंदर्शनश्रद्धानिर्मलथाय उक्तंच सवगुणमूलनूउ ॥ नणीउआयारपढमसूत्तेजं ॥ गुरुकुलवासोवस्सं ॥ वसिज्जाउतउचरणढी ॥१॥ इतिधर्मरत्नवचनात् वलीगुरुकुलवासें दर्शनश्रद्धानिर्मलथाय. तथा उचित के०योग्यप्रवृत्तिथाय तेपणसुनरागेंके०नलारागसहितप्रवृत्तिकरे तेपण अनुकूल के०सन्मुखनावपणेकरे पणवेठनीपेठेनकरे ॥ ए ॥

वैयावच्चेंपातिकत्रूटे ॥ खंतादिकगुणशक्तीरे ॥ हितोपदेशें
सुविहितसंगे ॥ ब्रह्मचर्यनीगुप्तिरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुरुनोवैयावच्चकरतांथकां पातिकके० पापकर्मत्रूटे यतः ॥ वैयावच्चेणंभंते जीवे किंजणइवेयावच्चेणंतिछयरनाम गोयं कम्मंनिबंधइ इतिउत्तराध्ययने उंगणत्रीसमाध्ययनेकह्युं वलीगुरुआदिकपासेरहेतां खंतादिकके० क्षमाप्रमुखगुणनीशक्तिवधे तथा गुरुपासेंरहेतोथको हितोपदेशसांभले तेणेकरी तथा सुविहितनासंगेकरीने ब्रह्मचर्यनीगुप्तिके०नववाडोभलीरीतेंपाले तेगुप्तिपणवाधे ॥ १० ॥

मनवाधेमृडुबुद्धीकेरा ॥ मारगभेदनहोवेरे ॥ बहुगुणजाणे
एअधिकारें ॥ धर्मरयणजेजोवेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥तथा मृडुबुद्धीकेराके०जे ऋजुमतिनाधणीहोयतेहना मनवाधेके० चित्त मांहे उल्लासवधे कारणके जेभोलालोकहोयतेगुरुसाथेदेखीने हर्षपामे अने गुरुथी जूदादेखीने भडकीजाय तथा मारगनोभेदनथाय अने जे एकाकीमार्गप्ररुपे तेघणो अपवादप्ररुपे अने गीतार्थघणोउत्सर्गप्ररुपे एवीरीते जूदीजूदी प्ररुपणा सांभलीने लोकपणभिन्नमार्गसमजे तेथीधर्ममार्गनोभेदथाय अनेगुरुसाथे भेलारहेताथकांनथाय. इत्यादिक गुरुकुलवासमांहे बहुके०घणागुणजाणे एअधिकारेंके०एगुरुकुलवासना अधिकारनेविषेधर्मरत्नग्रंथजेप्राणी जुए तेजाणे एटले एग्रंथमांगुरुकुलवासेंरहेतां घणागुणछेतेविस्तारेंकह्युंछे इतिभावः॥११॥

नाणतणोसंभागीहोवे ॥ थिरमनदर्शनचरित्तेंरे ॥ नत्यजे
गुरुकहियेंएबुधभाष्युं ॥ आवश्यकनिर्युक्तेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेजीव गुरुपासेथीज्ञानभणे माटे नाणके०ज्ञाननोसंविभागीथाय तेमज दर्शननेविषे तथाचरित्तेके०चारित्रनेविषेपण तेहनुंमनथिररहे तेप्राणीगुरुके०गुरुआदिकने कहियेंके०कोइकाले नत्यजेके०नछांडे एरीते बुधभाष्युंके०पंडितलोकेंकह्युं एटले भद्रबाहुस्वामी चउदपूर्वधर तेणेआवश्यकनिर्युक्तिनेविषे एमकह्युंछे यतःनाणस्सहोइभागी ॥ थिरयरउदंसणेचरित्तेय ॥ धन्नाआवकहाए ॥ गुरुकुलवासंनमुंचंति ॥१॥ इति ॥ १२ ॥

भीतप्रतेंजेमबाणेहणता ॥ पगअणफरसीसबरारे ॥ गुरुछांमि
आहारतणोखप ॥ करतातेमसुनिनिवरारे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तथा भीतके०चैाधप्रतेंजेम पिछुंलेवानेमाटे बाणेकरीनेहणता पण पग अणफरसीने एटले पगफरसतांपापलागे तेमाटेसबराके०सबरानामेराजानीपेठे जे गुरुकुलवासछांडीने आहारनोखपकरता एटले शुद्धमानआहारखोलताजेमुनि तेहने निवरा जाणवा एटले नकामाजाणवा इतिगाथार्थ. भावार्थतोकथाथीजाणीयें तद्यथा कोइकसन्निवेशनेविषे सबरनामेराजा तेचैाधनोभक्तिवंतहतो तेनाघरेंचैाधनोगुरुआव्यो तेणेपो-

तानामाथाऊपर अति अद्भुत शोभावंत मोरनापीछनुंछत्रधारणकर्युंहतुं राजायेंघणो आदरसत्कारआपी आसनेबेसाड्यो पछीतेनुंछत्र मोरनाचंद्रकेकरीऊगऊगाट करतुं राजानीराणीयेंदीठुं पछीकुतूहलपामतीथकी राणीयेंतेछत्रमांग्युं केमके तेदेशमां मोरनहता तेथी तेनवाइजेवुं हतुं माटे तेछत्रबौधनागुरुयेंआप्युंनही अने उठीनेपोतानेठेकाणेजतोरह्यो पछीराणीयेंभोजनकीधुंनही तेवारेराजायेंपुब्युंके शावास्तेभोजनकरतीनथी राणीबोलीके एछत्रआवेतोभोजनकरुं त्यारेराजायें तेछत्रगुरुपासेमांग्युं पण गुरुयें आप्युंनही फरीवारंवारमांग्युं पणगुरुआपेनही पछेस्नेहरागअतिदुर्धरछे माटेराणीना स्नेहें राजायें पोताना सुभटोनेहुकमकर्यो जे बलात्कारेंपण एपीछनुंछत्र लेइआवो तेवारें सुभटोबोल्याजे ए पोतेजीवतांतोछत्रआपशेनही माटेतमारोहुकमहोयतो कोइक प्रहारकरी बलात्कारेंलावियें तेवारेंराजाबोल्योजे गुरुनीआशातनानथाय माटे गुरुनापादस्पर्शकरशोनही पण दूरउभारहिबाणनाखीने चेष्टारहितकरीछत्रलेइआवो पणपादस्पर्शकरशोतो गुरुनीअवज्ञाथशे तेनुंमोहोटुंपापलागशे एदृष्टांते जेमशबरराजा गुरुनोनाशकरतो पण पादस्पर्शकरतांवारतोहतो एहवोजविवेकगुरुकुलवास तजीने जेशुद्धआहारगवेषेछे तेहनेपण जाणवो. यतः ॥ सुद्धंछाईसुजुत्तो ॥ गुरुकुलवागाइणोहविन्नेउ ॥ सवरससरक्खपिछ ॥ छघायपायाछिवणतुल्लो ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्ने ॥ १३ ॥

गुरुकुलवासेंज्ञानादिकगुण ॥ वाचंयमनेवाधेरे ॥ तोआहार
तणोपणदूषण ॥ खपकरतांनविबाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली गुरुकुलवासेंवसतांथकां ज्ञानदर्शनचारित्रना गुण ते दिनदिनप्रतेंवधे वाचना पृछनादिकेकरी वाचंयमनेके० मुनिराजने वाधे हवेपाठलावेपदनोअर्थअन्वय करीकहियेंछैयें तेज्ञानादिकगुणनी वृद्धीथायतो आहारनोखपकरतांपण दूषण न वाधे इत्यन्वयः एटले ज्ञानध्याननी लेहेरमांवेठाथकां कोइकद्रव्यानुयोगमां अत्यंतमग्नथयाछे एवामां गोचरीयेंनिकल्याथकां कोइकस्थानकें सूक्ष्मदोषदेखीने चिंतवन करे जे ध्याननीलेहेर हजीचित्तमां अंतरवासनायेंछे अनेघणाघेरफरवाजइशतो ते लेहेरफरी आवशेनही एहवुंविचारी कांइकदूषणसहित आहारलीये तोपणतेहनेबाध न करे एटलेकर्मबंधनोहेतुनथाय. यतः अहागडाइंभुंजंता ॥ अन्नमन्नेणकम्मुणो ॥ उवलित्तेविआणिज्जा ॥ अणुवलित्तेतिवापुणो ॥ १ ॥ इत्यादिकसुयगडांगसूत्रेअध्ययन २१ मांमध्ये कह्युंछे तथा गुरुकुलवासवसतां मुणीणोवढ्ढंतीनाणपमुहेहिं ॥ जइएसणाइंदोसस्स ॥ लवमविमन्निजएसुगुणं ॥ १ ॥ इतिभावः तथाअपवादें गाढग्लानादिकनाकार्यें अणसरते गछमांरह्या गुरुआणावर्त्तिने असठभावेंवर्त्ततानेआतुरदृष्टांते आधाकर्मादिक आ-

हारतेपण निर्दोषजाणवो तथाचागमः संथरणंमिअसुद्धं ॥ दुन्हविगिन्हंतयाण-हियं ॥ आऊरदिठ्ठंतेणं ॥ तंचेवहीयंअसंथरणे ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ जाजयमाणस्सन्नवे॥ विराहणासुत्तविहिसमग्गस्स ॥ साहोइनिज्जरफला ॥ अजझविसाहिजुत्तस्सत्ति ॥ २ ॥ उत्तराध्ययने एरीतेदूषणसहितआहारतेपणवाधनकरे ॥ १४ ॥

धर्मरतनउपदेशपदादिक ॥ जाणीगुरुआदरवोरे ॥ गछक
ह्योतेहनोपरिवारो ॥ तेपणनितअनुसरवोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तथाधर्मरत्न अनेउपदेशपद प्रमुखग्रंथजोइने एग्रंथोमांगुरुकुलवासना अधिकारघणाछे माटे तेमांथीजाणीने गुरुआदरवो वली गछ ते कोने कहीयें तेकहेछे तेहनोपरिगारोके० एहवासुविहितसाधुनो परिवारतेहनेगछकहीयें यतः ॥ गुरुपरिवारोगछो इत्यादिकपंचवस्तुवचनात् माटेतेगछपण निरंतरअंगीकारकरवो अनुसरवो इति यतः गुरुगुणजुत्तोगछो ॥ गछोसंविग्गयासाहुसमवाउ ॥ मुरकमग्गछिणासोय ॥ अणुसरियव्वोपयत्तेण ॥ इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारणप्रमुखलहीने ॥ मुक्तिमारगआराधेरे ॥ सुजवीरय
तिहांसुविहितकिरिया ॥ देखादेखेंवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वलीसारणके० विसरुंहोयते संचारीआपे अनेवारणके० पापकरणीकरताने वारे तथाप्रमुखशब्देंकरीचोयणा प्रतिचोयणापणलेवी तेपणजेगछमांरहे तेहनेथाय पछीतेतेसारणादिक लहीनेके० पामीने मुक्तिमारगआराधेके० मोक्षमार्गसाधे यतः गुरुपरिवारोगछो ॥ तछवसंताणनिज्जराविउला ॥ विणयाउतहासारण ॥ माइहिंनदोसपडिपत्ति ॥ १ ॥ इतिपंचवस्तुके तथाश्रीधर्मरत्नप्रकरणनीवृत्तिमध्येकह्युंछेके सुजवीरयके० जलोवीर्योल्लासवाधे वलीसुविहितकिरियाके० आत्मार्थिगीतार्थनी क्रियाव्यवहार तेदेखादेखीयें वधे एटले साधुउनासमूहने क्रियातपजपादिक करतांदेखीने पोतानेपण करवानुंमनथाय तेहथीवधारोथाय ॥ १६ ॥

जलधीतणोसंखोभअसहता ॥ जेमनीकलतामीनोरे॥ गछसार
णादिकअणसहता ॥ तिममुनीडखियादीनोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेमजलधीके० समुद्रनो संखोभके० कल्लोलप्रमुखनीजे क्षोभना तेहने असहताके० जेवारेंसहीशकेनही तेवारें जेम मीनके० मछहोयतेसमुद्रमांथीबाहारनीकले तोदुःखीथाय तेमगछमांरहेताथका गुरुआदिकजेसारणादिककरे तेसहनकरवी पडे अनेजेवारें नसहवाय तेवारेंगछथीबाहारनिकले तोतेसमुद्रमांथीनिकलेला मछ-

नीपेठेदुःखीथाय दीनथाय केमके गत्यंतरेदुर्गतियेंजाय माटेदुःखीदीनजथाय इति भावः यतः ॥ जहजलनिहिकल्लोल ॥ खोजमसहंतायवाहिरंपत्ता ॥ मीणाअमुणियमूणीणो ॥ सारणपमुहाइअसहंता ॥ १ ॥ इतिआचारांगपंचमाध्ययनेचतुर्थोद्देशकवृत्तौ पुनर्यथा ॥ जहसायरंमिमीणा ॥ संखोहंसायरस्सअसहंता ॥ णितितउसुहकामी ॥ णिग्गयमित्ताविणस्संति ॥ १ ॥ एवंगच्छसमुद्दे ॥ सारणवीइहिंचोइयासंता ॥ णिंतितउसुहकामी ॥ मीणावजहाविणस्संति ॥ १ ॥ इत्यादिकउघनिर्युक्तिवचनात् ॥१७॥

काकनर्मदातटजेममूकी ॥ मृगतृष्णाजलेंजातारे ॥ दुखपा
म्यातेमगच्छतजीने ॥ आपमतिमुनीथातारे ॥ श्रीजिन० ॥१८॥

अर्थ ॥ वलीदृष्टांतकहेछे जेमनर्मदानदीना किनाराऊपररहेनारा काकपक्षीजेंकागडा ते तटके० नदीनोकांठोमूकीने तेनदीनाकांठाथीदूरपाणीजेवीझाकलदेखाय पण पाणीहोयनही तेभ्रांतिरूपपाणी तेनेमृगतृष्णाजलकहीयें तेजलनीभ्रांतियेंदोडताएवाजे कागडा तेजेमदुःखपामे तेवीरीते सुविहितना समुदायनोगच्छतजीने जे मुनि आपमतिके० स्वेच्छाचारी थवाजाय तेकागडानीपेठेदुःखपामे ॥ १८ ॥

पालविनाजेमपाणीनरहे ॥ जीवविनाजेमकायारे ॥ गीता
रथविणतेममुनीनरहे ॥ जूठकष्टनीमायारे ॥ श्रीजिन० ॥१९ ॥

अर्थ ॥ माटे जेम सरोवरादिकनुंपाणी ते पाल वांध्याविना रहेनही तथा जेम जीवविना काया नरहे तेम जेमुनिराजछे तेगीतार्थविना रहेनही. गीयच्छस्सविहारो ॥ बीउगीयछमीसिउभणीउ ॥ इत्यादिवचनात् माटेजे गीतार्थविना जेटला कष्टकरे ते सर्वे अज्ञानमां भले अने जेअज्ञान तेमिथ्यात्वछे ते मायाके० कपटविना होयनही ॥ १९ ॥

अंधप्रतेंजेमनिर्मललोचन ॥ मारगमांलेईजायरे ॥ तेमगीता
रथमूरखमुनिने ॥ दृढआलंबनथायरे ॥ श्रीजिन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली दृष्टांत कहेछे जेम आंधलाने निर्मलआंखनो धणी ते कांटा प्रमुखें रहित एहवा उत्तममार्गें लेइजइने स्थानकें पोहोचाडे तेम गीतार्थ जेछे ते जो कदाचित् मूर्खमुनि होयतो तेने पण दृढके० जवरदस्तआधारभूतथायछे ॥ २० ॥

समभाषीगीतारथनाणी ॥ आगममांहेंलहियेंरे ॥ आतमअरथी
शुभमतिसज्जन ॥ कहोतेविणकेमरहियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली समभाषीके० स्याद्वादवचनना भाषीहोय अथवा समभाषीके० गरी-

बने तथा मातबरने रागद्वेषरहितपणे देशना आपे तथा गीतार्थ होय नाणीके० स-म्यग्ज्ञानीहोय आगममांहेथी एहवा गीतार्थ लहियेंके० पामीयेंछैये वली आतमअ-रथीके० पोतानुं आत्मस्वरूप साधवाने उजमालथया तथा शुभमतिके० भलीमतिना धणी एटले जेमांकुमति कदाग्रहहोयनहीं वली सज्जनके० उत्तमगुणवंत भलीशिखा-मणना आपनारा एहवा गीतार्थविना इहां सर्वपदसंबोधने बोलावीयें हे आत्मार्थि हेशुभमति हेसज्जन तमे कहोके ते एहवा गुरुगीतार्थ पुरुषविना केम रहीयें के० शीरीतेरहीशकीयें ॥ २१ ॥

लोचनआलंबनजिनशासन ॥ गीतारथछेमेढीरे ॥ तेविणसु
नीचढतीसंयमनी ॥ आरोहेकेमसेढीरे ॥ श्रीजिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली गीतार्थ ते ज्ञानरूप लोचनना आपनारा माटे गीतार्थने जिनशासन-नेविषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिनेविषे पडता प्राणीने आधार थाय माटे गीतार्थने जिनशासननेविषे आलंबनकहीयें वली गीतार्थते मेढीबराबरछे एटले जे खेतर ख-लाना वचमां स्तंभरोपीनेअन्नउपर फेरवेछे तेनें मेढीकहीयें उपलक्षणथी स्तंभभूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहेछे तथा यानकहीये जेहने आधारे महाअ-टवीनो बिहामणोमार्ग होय तोपणपारपामीयें यतः मेढीआलंबणंखंभ ॥ दिठि जा-णंसुउत्तमं ॥ गीयछंगुरुगुणाइणं ॥ सम्मंजाणसुगोयमा ॥ १ ॥ माटेते गीतार्थविना मु-निराज ते संयमनी सेढीके०श्रेणी केम आरोहे एटलेकेमचढे अने उत्तरोत्तर शुभाध्य-वसायें केमवधे एसंयमश्रेणीनो अधिकारते संयमश्रेणीनुंस्तवन अमारागुरुश्रीउत्तमवि-जयजीकृतछे तेथी विस्तारेंजाणवुं तथापंचसंग्रहथीजाणवुं. ॥ २२ ॥

गीतारथनेंमारगपूछी ॥ छंडीजेंउन्मादोरे ॥ पालेकिरिया
तेतुजभक्ति ॥ पामेजगजशवादोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेगीतार्थनें मार्ग पूछीने उन्माद जेस्वेछाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं तेछांडवुं एरीते तमारीआणासहितचाले तेजतमारीभक्तिजाणवी तेतमारीभक्तिकरीने जे क्रिया पाले ए-टले एभावके तमारीएआज्ञाछे जेज्ञानसहित क्रियापाले तेप्राणीजगतनेविषे जशवादपामे

॥ ढालछठी ॥

॥ रासुडानीदेशी अथवा हितशिक्षाछत्रीशीनीदेशी ॥

प्रथमज्ञाननेपछेंअहिंसा ॥ दसवैकालिकसाखिरे ॥ ज्ञानवंतते
कारणभजियें ॥ तुजआणामनराखिरे ॥ साहेबसुणजोरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली ढालमां ज्ञानसहितक्रियाकरता संयमश्रेणीआरोहे एमकह्युं तेमांज्ञानपूर्वकक्रियाकरे तो लेखेछे माटे आढालमांज्ञानवर्णवेछे जेप्रथमज्ञान होयतो पछी अहिंसाके०दयापलीशकेछे एमश्रीदशवैकालिकसूत्रमां कह्युंछे यतः पढमंनाणंतओ-दया एवंचिठ्ठइसव्वसंजए तेकारणेज्ञानवंतने भजीयेंके०सेवीयें पणहेपरमेश्वर तमारी आज्ञा ते मनराखिके०चित्तमांराखीने एटलेएभावजे ज्ञानवंतने भजीयें पण साध्यमां एमराखीयेंजे ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्षः नाणक्रियाहिमुक्खोऽइतिभाष्यवचनात् माटे स्याद्वा-ददृष्टीयें ज्ञाननीसेवाकरीयें हेसाहेबसुणजोके०सांभल्यानी पेरेसांभलजो अन्यथा पर-मेश्वर केवलज्ञानीछे तेतो सर्व जगतना भाव देखीरह्याछे तेहनेशुंसांभलवुंछे पणभक्तिवंत प्राणीउपचारेकहेछे के हे साहेब सांभलजो ॥१॥

द्रव्यखेत्रनेकालनजाणे ॥ भावपुरुषपडिसेवरे ॥ नविउ
त्सर्गलहेअपवादह ॥ अगीतारथनितमेवरे ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीजे अगीतार्थछे ते १ द्रव्यनजाणे २ क्षेत्र नजाणे ३ कालनजाणे अने ४ भावपण नजाणे तथा ५ योग्यछेके अयोग्यछे एहवा पुरुषने पण नजाणे तथा ६ पडिसेवके० पापनीसेवनाने नजाणे जे एणेस्ववशें पापकह्युं अथवा एणे परवशें पापकह्युं तेअगीतार्थ नजाणे वली ७ छतिशक्तियें जेमसिद्धांतमां मार्गकह्यो तेमज करवुं तेहनेउत्सर्गमार्गकहीयें तेपण नजाणे तथा ८रोगादिक कारणे अल्प दोषसेवे ते अपवादमार्गनेपण नजाणे ए (८) वातो नितमेवके०निरंतरपणे जेअगीतार्थछे तेंनजाणे यतः उपदेशमालायां ॥ दव्वंखि-त्तंकालं ॥ भावंपुरीसपडिसेवणाउंय ॥ नवि जाणइअगीउ ॥ स्सग्गववाइयंतंचेव ॥ १ ॥ २ ॥

सचित्तअचित्तमिश्रनवीजाणे ॥ कल्पअकल्पविचाररे ॥ योग्य
नजाणेनिजनिजठामें ॥ द्रव्ययथास्थितसाररे ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रथमगाथाविस्तारतां एहिज द्वारमांप्रथम द्रव्यद्वार कहेछे तेमांद्रव्यथी अगीतार्थ शुं नजाणे तेकहेछे सचित्तवस्तु तथा अचित्तवस्तु तथामिश्रवस्तुने जाणे नही वलीकल्पनीखवरनपडे जे आवस्तुकल्पेछे वा नथी कल्पति अकल्पछे तेविचार अ-गीतार्थ नजाणे वलीयोग्यतानी खबरनपडे निजनिजठामेके०पोतपोताने स्थानकें यो-ग्यता नजाणे जे आबालने योग्य के ग्लाननेयोग्य इत्यादिक नजाणे एरीतें यथास्थि-तके०जेद्रव्य जेमहोयतेवीजरीते तेहनी अगीतार्थनेखबरपडेनही यथास्थितद्रव्य के-वुंछे सारके०प्रधानछे यदुक्तं ॥ जहट्ठियदव्वंनयाणइ ॥ सचित्ताचित्त मीसगंचेव ॥ क-प्पाकप्पंचतहा ॥ जोग्गंवाजस्सजंहोई ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ३ ॥

खेत्रनजाणेतेहयथास्थित ॥ जनपदअध्वविशेषरे ॥ सुभि
दुर्भिक्षकल्पनजाणे ॥ कालविचारअशेषरे ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेक्षेत्रद्वार कहेछेअगीतार्थ यथास्थितके० जेवुंक्षेत्रहोय तेहवुंक्षेत्रनसमजे के आनूपक्षेत्रछे के अनूपकछे इति तथा जनपदके०लोकेव्याप्त देशनेविषे विहार करतां आवीविधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवीविधियेंकरवुं इत्यादिक नजाणे वलीअध्वविशेषके०दूरदेशेअटवीप्रमुखें आवीरीते विहारकरवो इत्यादिक वातो अगीतार्थ नजाणे हवेकालद्वारकहेछे जेसुभिक्षमां कल्पनजाणेके० योग्यनजाणे एटले सुभिक्षमां आरीतेविरचवुं वलीदुर्भिक्षमां पणकल्पके० योग्यनजाणे जेदुर्भिक्षमांआवीवस्तु होय तोज लेवाय इत्यादिक वातो कालना विचारनीते अशेषके०समस्तप्रकारें अगीतार्थ नजाणे इतिभावः यतः जहठियंखित्तंनजाणई ॥ अद्धाणेजणवएयजंभणीयं ॥ कालंपियनविजाणइ ॥ सुभिक्खदुभिक्खजंकप्पं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ४ ॥

भावहिठगिलाणनजाणे ॥ गाढअगाढहकल्परे ॥ खमतो
अखमतोजननलहे ॥ वस्तुअवस्तुअनल्परे ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेभावद्वारकहेछे जे भावके०भावना विचारनेविषे हिठके०निरोगीने तथा गिलाणके०रोगाक्रांतने नजाणे एटले निरोगीने आदेवुं तथा रोगीने आवस्तुदेवी ते वातो अगीतार्थनजाणे अने गाढकल्पके०आकरेकारणेंआरीतें करवुं तथा अगाढकल्पके०स्वभावेसेहेजरीतेंतो आप्रमाणे वर्त्तवुं एअगीतार्थनजाणे हवेपुरुषद्वार कहेछे खमतोके० आपुरुषसामर्थ्यवानशरीरें कठोरछेमाटेखमी शकशे तथाअखमतोके० आपुरुषनुं सुकुमारशरीरछे ते नहीखमीशके एहवा जनके०प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखेनही वली वस्तुके०आचार्यादिक अवस्तुके०सामान्यसाधुने ते अगीतार्थ नओलखे जेपदस्थनेआमघटे तथा सामान्यनेआमघटे माटे अनल्पके०इत्यादिकबहुप्रकार ते न जाणे यतः भावेहिठगिलाणं ॥ नविजाणइगाढगाढकप्पंच ॥ सहुअसहुपुरिसवत्थु ॥ वत्थुमवत्थुचनविजाणइ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जेआकुट्टीप्रमादेंदर्पें ॥ पडिसेवावलिकल्परे ॥ नविजाणे
तेतासयथास्थित ॥ पायछित्तविकल्परे ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रतिसेवानामेंद्वार कहेछे जे निषेधआचरण तेहने प्रतिसेवा कहीयें तेहना चारप्रकारछे तेमां प्रथम आकुट्टीके०जाणीने पापसेववुं तेपण कारणविना सेववुं बीजो कंदर्प्पादिकने वशथका जेपापसेवे तेप्रमाद कहियें त्रीजो धावनवलनादिके

करीजे पापलाग्युं तेदर्प्पकहीयें चोथो आगमोक्तकारणेकरीनिषेधाचरण कस्युं तेकल्प कहीयें एचारेन्नेद पडिसेवाना जाणवा ॥ यतः पडिसेवणाचउद्धा ॥ आउट्टिपमायदप्पकप्पेसु ॥ नविजाणइअग्गिउं ॥ पछित्तंचेवजंतह ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायांतल्लक्षणगाथा आउट्टिआउविद्या ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाईउं ॥ कंदप्पाइयपमाउं ॥ कप्पोपुणकारणेन्नणिउं ॥ १ ॥ इत्याचारांगवृत्तौ एगाथानोअर्थकहेछे आउट्टि तेजाणीनेपापकवुं दर्प्पतेधावनवलनादिक सोत्कर्षपणें निपजे कंदर्प्पते प्रमादवशें जाणवुं अने जे ज्ञानादिकने आलंबनहेतेआचरवुंतेकारणे जाणवुं एचारप्रकारनुं जेपाप तेपापनुं यथास्थितके०जेहने जेवुंघटे तेवुं प्रायश्चित्तनुं विकल्प जे आ प्रायश्चित्तवालाने आवुं तपदेवुं इत्यादिक वातो ते अगीतार्थ नजाणे ॥ ६ ॥

नयणरहितजेमअनिपुणदेशें ॥ पंथनठजेमसत्थरे ॥ जा
णेहुंगामेपोंचावुं ॥ पणनहीतेहसमत्थरे ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइकनयणरहितके०अंधपुरुषहोय अनेवली अनिपुणदेशेंके०मार्गनो अजाणछे ते अंधपुरुष एवामार्गनेविषे पंथनठजेमसछके० जेममार्गमां कोइकसाथनष्ट एटलेन्नूलोपड्योहोय ते साथने आंधलोजाणे जेहुं ठेकाणे पोंचाडुं पणपोचाडवाने समर्थनथाय यतः जहनामकोपुरिसो ॥ नयणविहुणोअदेसकुलोय ॥ कंताराडविन्नीमे ॥ मग्गयणठससछस्स ॥ १ ॥ इछइयदेसियत्तं ॥ किंसोउसम्मछुउदेसियतस्स ॥ डुग्गईयाणंतो ॥ नयणविहुणोकहंदेसे ॥ २ ॥ ७ ॥

अगीतार्थतेमजाणेगरवें ॥ हुंचलवुंसविगछरे ॥ पणतस
पासेगुणगणग्रासे ॥ होईगलागलमछरे ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्तअंधपुरुषनीरीतें अगीतार्थ पण तेमगर्वेके० अहंकारेकरी एम जाणेजे हुं वधोगछचलावुंछुं पण तेनीपासे रहेताथकां गुणगणके० गुणनाजेसमूह ते ग्रासेके० घसाइजाय एटलें अगीतार्थने संगें गुणनो नाशथाय यतः एवमगीयछोविहु ॥ जिणवयणयईवचरकुपरिहीणो ॥ दव्वाइअयाणंतो ॥ उस्सग्गववाइयंचेव ॥१॥ कहसोजयउंअगीउं ॥ कहवाकुणउअगीयनिस्साए ॥ कहवाकरेउगछं ॥ सवालवुट्ठाउलंसोउ ॥२॥ इत्युपदेशमालायां अगीतार्थने पासे वसतां मछगलागलथायके०मोहोटामछ नानामछनेगलीजाय एम धींगामस्तिनी वातथाय पणमार्गनीरीतनरहे ॥ ८ ॥

पछित्तेअतिमात्रदिएजे ॥ अपछित्तेपछित्तरे ॥ आसाय
णातससूत्रेवोली ॥ आसायणमिछत्तरे ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली अगीतार्थहोयतेवगरसमजणे पछित्तेंके०प्रायश्चित्त जेटलुं आवेते करतां उलटो अतिमात्रके० अधिकुं दिएके०आपे अने जेहने अपछित्तेके०प्रायश्चित्त नआवतुंहोय तेहने पछित्तके०प्रायश्चित्तआपे एटलेथोडाप्रायश्चित्तवालाने घणुंआपे अने मूलगुंजेने प्रायश्चित्तलागतुंजनहोय तेने कहेशे जे तमने प्रायश्चित्त लाग्युं इत्यादिक असमंजसकरे एम करनारने सूत्रनेविषे आसायणबोलीके०जिनाज्ञानीविराधनाकरी माटे विराधक कह्योछे अनेआसायणके०जिनाज्ञानीविराधना तेहिज मिछत्तके० मिथ्यात्व जाणवुं तथा तेमिथ्यात्वनिमितिउं संसार वधारे यतः सुत्तेयइमंजणियं ॥ अपछित्तेयदेइपछित्तं॥ पछितेअइमत्तं ॥ आसायणतस्समहइउं ॥१॥आसायणमिछत्तं॥ आसायणवज्जणायसम्मत्तं ॥ आसायणानिमित्तं ॥ कुवईदीहंचसंसारं ॥२॥ इत्युपदेशमालायां॥९॥

तवसीअबहुश्रुतविचरंतो ॥ करीदोषनीश्रेणिरे ॥ नवि
जाणेतेकारणतेहने ॥ केमवाधेगुणश्रेणिरे ॥ सा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तवसीके०तपश्चर्याकरतो तथा अबहुश्रुतके० अगीतार्थथको विचरंतोके० विहारकरतोथको करीदोषनीश्रेणिके०अनेकदोषनी श्रेणीनेकरतो एटले अनेक अपराधपद करतोथको पण नविजाणेके०नजाणे एटले पोताना दोषनी पोताने खबर न पडे तेकारणके०ते हेतुयें तेअगीतार्थ कष्ट करताने गुण श्रेणीनीवृद्धि केमथाय अर्थात् न थाय तेटलीज रहे यदुक्तं अबहुस्सउंतवस्सी ॥ विहरिउंकामोअ जाणिउणपहं ॥ अवराहपयसयाइ ॥ काऊणोविजोनयाणेइ ॥१॥ देसियराइयसोहिं ॥ वयाइयारेउजोनयाणेइ ॥ अविसुद्धस्सनवढ्ढई ॥ गुणसेढीतत्तिआठाइ ॥२॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १० ॥

मार्गमात्रजाणेजेमपंथी ॥ अलहीतासविसेसरे ॥ लिंगा
चारमात्रतेजाणे ॥ पामेमूढकलेशरे ॥ सा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइक पंथीहोय तेहने कोइडाह्योपुरुष मार्ग बतावे तोपण विशेष मार्गनी तेने खबरनपडे केमके पोतेडाह्योनथी माटे डाबोजमणो मार्गजेमन जाणे एकसामान्यप्रकारें मार्गमात्रजाणे तासके०तेमार्गनीडाबीजमणी बाजु ते अलहीके०अजाणतो क्लेशपामे तेमज लिंगके०साधुवेष ने आचारके०साधुनी क्रिया ते लिंगाचारमात्र जाणे एटलेमात्र एकसूत्रनाज अक्षरमान्यकरी क्रियादिक करतो पण मार्गनेअजाणतो एहवोजे मूढके० मूर्ख अगीतार्थ तेक्लेशनेपामे संसार वधारे. यतः जहदायंमिविपहे ॥ तस्सविसेसेपहस्सयाणंतो ॥ पहिउंकिलिस्सइच्चिय ॥ तह लिंगायारसुअमित्तो॥१॥ इत्युपदेशमालायां ॥११॥

भेदलह्याविणनानापरिणति ॥ मुनीमननीगतबोधरे ॥ खिण
राताखिणतातायाता ॥ अंतेंउपाईविरोधरे ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गतबोधके०गयुंछे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जेहोयते मुनीश्वरोना मननी नानापरिणतिके०विचित्रप्रकारनी परिणतिउना जे न्नेदके०प्रकार ते लह्याविणके० जाण्याविना एटलेजेमूर्खमुनिउहोयते बीजामुनिउनी विचित्रपरिणति अजाणताथका कणेकमां राताथाय एटले अंतःकरणमां क्रोधदीप्तथाय तथा कणेकमां ताता थाय एटले बाह्यपणे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एमथातांथकां अथवाराताके०रागीथाय परस्परें क्रीडाकरे तथा ताताके०तपीजाय कषायमयीथईजाय अने अंतेके० बेवटे विरोधने उपाईके०उपजावे एटले तेमूर्ख मांहोमांहे वढीमरे, पणसमाधि नउपजावे॥१२॥

पथ्थरसमपामरआदरतां ॥ मणिसमबुधजनबोम्फिरे ॥ न्नेद
लह्याविणआगमथितिनो ॥ तेपामेंबहुखोडिरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ मणिरत्नसमान जेबुधजनके०पंडितलोक तेहने बांडीने पथ्थरसमके० पथरा समान जे पामरके०मूर्खजन तेहनेज आदरतांके०अंगीकारकरे तेप्राणी ते मूर्खपासेरहेताथकां आगमनीजे उत्सर्ग अपवादादिरूप थितिके०मर्यादा तेनो न्नेदके०प्रकार ते अणलेहताथका तेआदरनारापुरुष घणी खोडपामे एटलेसंयमरूपशरीर आखुं न रहे जरूरखंडितथाय इतिन्नावः ॥ १३ ॥

ज्ञानन्नक्तिन्नांजीअणलहेतां ॥ ज्ञानतणोउपचाररे ॥ आरा
सारेंमारगलोपे ॥ चरणकरणनोसाररे ॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा जे मूर्खहोयते ज्ञाननी न्नक्तिनेतो न्नांजे एटलेखंम्तिकरे तथा अणलहेताके०अणआराधता ज्ञानतणोके०ज्ञाननोजे उपचारके०विनय तेनेअणजाणता ते प्राणी आरासारेके०जेपांचमोआरो तेनेअनुसारें मारगलोपेके०न्नलामार्गने लोपेछे एटले मूर्खनेआदरतां ज्ञानन्नक्तिने न्नांजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष होय तेपांचमा आराप्रमाणे चारित्रने पाले कांतो एकलाजउत्सर्ग मार्गें चाले अथवाकाल दोषकाढी उत्सर्गमार्गबीलकुल मूकीज दे, पण सारके०प्रधान एवोजे चरणसित्तरि तथा करणसित्तरिनोमार्गतेनेपांचमाआराने अनुसारे तेमूर्ख लोपेछे एरीतेअमनेन्नास्यो तेरीते लख्योछे वलीएगाथानो अर्थ पंडितलोकोने सुजेतेखरो ॥ १४ ॥

उत्कर्षितेहनेद्येशिक्षा ॥ उदासीनजेसाररे ॥ परुषवचन
तेहनेतेबोले ॥ अंगकहेआचाररे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ वली उत्कर्षिके०उत्कृष्टाचारित्रियाहोय तथा उदासीनके०बेपरवाह होय सारके०उत्तमहोय तेवा साधु जो तेउने प्रमादस्खलितादिकदेखी शिक्षाआपे तेवारेंते जे

एकाकीगच्छथी निकळ्या होय तेपाछो शिक्षा आपनारसाधुने परुषवचनके०कठोरवचन कहे जेमुजने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कर्यो मेंशुंमातुंकर्युं छे बीजातो एरीते करे-जछे तोधिक्कारपमो माराजीवितने इत्यादिकबोले. एमश्रीआचारांगमध्ये कह्युंछे तथाच त-त्पाठः॥ वयसाविएगेचु॥ इयाकुप्पंतिमाणवाउ॥ णयमाणेयनवरे॥ महयामोहेणमुच्चइ॥१ इति एमवचनमात्रेंज गच्छनेछांमि एकला रही अकार्य सेवे इतिभावः ॥ १५ ॥

अमसरिखाहोजोतुमेजाणो ॥ नहीतोस्यातुमबोलरे ॥
एमभाषीजात्यादिकदूषण ॥ काढेतेहनिटोलरे ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ पछी ते मूर्खमुनि शिक्षा आपनारने पाछा एवाजवाब आपे के जो अम सरिखा तमे होत तोजाणत एटलेएभावजे अमारे गोचरीपाणीप्रमुख लाववां पडे तेतमनेकरवुं पडतुंहोयतो तमेजाणो नहीतो बेठा मोटाई करो एटलुंज तमारामांछे पणकांइ भलिवारनथी जोअमारी पेठे चालो तोतमेजे अमने शिक्षाआपोते खरी नहीतो तमारा बोलशा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकटछे एमभाषीके०एम कहीने जात्यादिकना दूषणकाढे एटले एम कहेजे तमे हीणजातिना उपज्याछो तमारुं कुलकेवुंछे इत्यादिक बोले तेहनिटो-लके०तेपुरुषने निटोलजाणवा पण ते सज्जनउत्तमपुरुषमां नगणाय ॥ १६ ॥

पासत्थादिकदूषणकाढी ॥ हिलेज्ञानीतेहरे ॥ यथाछं
दताविणगुरुआणा ॥ नविजाणेनिजरेहरे ॥ सा० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली ते मूर्खप्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्थादिक दूषण का-ढीने हिलेके०हिलनाकरे एटलेएम कहेजे तमारामां शा गुणछे तमे पासत्थाउसन्ना छो एम कहीने ज्ञानीके०पंडितगीतार्थनी हिलनाकरे एबेपदनोएकठोअर्थछे एमविणगुरु आणाके०गुरुआज्ञा पाम्याविना यथाछंदताके०आपछंदे आचरणकरवानी एवी जे नि-जके०पोतानी रेहाके०रेखाछे एटले हीणाआचरणनी मर्यादापोतानी छे तेनी पोता-नेज नजाणेके०खबरनपडे एटले ज्ञानीना अछता दूषण काढे अने पोताना छतादूषण होय ते ऊवेखे इतिभावः ॥ १७ ॥

ज्ञानीथीतेमअलगारहेता ॥ हंसथकीजेमकाकरे ॥ भेदविन
यनाबावनभाष्या ॥ नलहेतसपरिपाकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानीके०जे गीतार्थ गुरुआदिक तेथकीअलगा रहेताथका केवा दे-खाय जेमराजहंसथकी कागडो जूदो देखाय तेवोतेसाधु देखाय तथा विनयना बा-

वनन्नेद शास्त्रमां कह्याछे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक तेकुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रियातेअस्तिवादरूप ७ खंत्यादिकधर्म ८ मत्यादिकज्ञान ए मत्यादिकज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थविर ते सिदातासाधुनेथिरकरे १२ उपाध्याय १३ केटलाकसाधुना समुदायनाअधिपतितेगणी ए तेरनो चारचारन्नेदेविनयकरवो १ अनाशातना तेजात्यादिक दूषणकाढीने हीलनानकरे २ न्नक्तितेउचितउपचाररूप ३ बहुमानते अंतरप्रीतिप्रतिबंधरूप ४ वर्ण संज्वलनाते यश बोलवा एरीतेतेरनेचारेगुणतां बावनन्नेदथाय इतिप्रवचन सारोद्धारे पांसठमेद्वारे ए अधिकारजोजो उपलक्षणथी बावनकह्या तेमज ए१ न्नेद समवायांगे तथा पिस्तालीस न्नेद तथा दशन्नेद इत्यादिक अनेकन्नेद ग्रंथांतरथी जाणवा. तेसर्वेन्नेदनुं शीखवुं तथा ते रीतेप्रवर्त्तवुं तेने परिपाक कहीयें तेपरिपाकने नलहेके०एकाकी साधुनपामे केमके एकाकीविहारकरनार कोनापासेथीशिखे तथा केनोविनयकरे ॥ इतिन्नावः ॥ १८ ॥

सर्वउद्यमेंपणतसबहुफल ॥ पडेकष्टअन्नाणरे ॥ सूत्रअ
न्निन्नतणेअनुसारें ॥ उपदेशमालावाणिरे ॥ सा० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ सर्वक्रियाअनुष्ठाननोउद्यम तेनुंजे बहुफलके०घणुंफल स्वर्गादिक ते पडेकष्टअन्नाणरेके०अज्ञानकष्टमांपडे एटलेनिर्ज्जरानथाय संसारपरित न थाय कोनेनथाय तेकहेछे जे अविवृतार्थ विशिष्टव्याख्यानरहित एहवुंजेसूत्र तेहनेअन्निन्न सूत्रकहीयें तेअन्निन्नसूत्रनेअनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठानकरे तेअज्ञानकष्टमांपडे इति योगः जे टीकाप्रमुखविनाविशेषप्रतिपत्तिकेम थाय? अन्यथाअनुयोगनुंकथननिरर्थकथाय एउपदेशमालानीवाणीछे. यडुक्तंतत्सूत्रे॥ अपरिछियसुयणिहसस्स ॥ केवलमन्निन्नसुत्तचारित्तस्स ॥ सवुज्जमेणविकयं ॥ अन्नाणतवेबहुपरुइ ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अपरिछियके०नथी जाण्यो सुयणिहसस्सके०श्रुतरहस्यजेणे शेषंसुगमं ॥ १ए ॥

तेतोऋजुन्नावेएकाकी ॥ चालेतेहनेजुत्तरे ॥ वाम्यकुवा
सनजेअकुवासन ॥ देशाराधकउत्तरे ॥ सा० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञानीथी अलगा क्यारे थवुं तथा शा कारणे एकाकी रहेवुंपडे ते असिवादिककारण घणांछे. यतः असिवेउंमोयरिए ॥ रागन्नएछान्नियउत्तमठेय ॥ फिडियगिलाणेअइसे ॥ सदेवयाविवआयरिए ॥ १ ॥ एमकारणोनाअर्थविस्तारेंलख्याछे पण अहींलखतांग्रंथवधे माटेलखतानथी पणएक अशिवकारणलखीयेंछैयें जे साधु बारवर्ष आगलथी ज्ञानादिक अतिशयेंकरी खबरराखे जेअमुकवर्षेअशिवथशे अने कदाचित

बारवर्षे अगाउ उपयोगनरह्यो होयतो ज्यारे, ते नही तो दशवर्षे अगाउ, एमयावत् एकवर्षेअगाउपण उपयोगराखे. तेपणउपयोगनरह्योहोयतो ज्यारें अशिवजाणेतेवारे साधुत्यांथीविहारकरे तेमांकोइक ग्लानसाधु होय तेविहारकरीशकेनही तेवारे एवाकारणेएकला ज्ञानीविना पणहोय तेमांपण १ साधुन्नद्रक अने गृहस्थप्रांत २ तथा साधु प्रांतअनेगृहस्थन्नद्रक ३ तथासाधुन्नद्रकअनेगृहस्थपणन्नद्रक ४ तथासाधुप्रांतअनेगृहस्थपणप्रांत एमचोन्नंगीथाय इत्यादिकसर्वेउघनिर्युक्तिमांविस्तारछे तेजोजो हवेअक्षरार्थलखेछे जेसाधुरुजुन्नावेके० न्नद्रकथकां पूर्वोक्तरीते एकाकीचालेके० रह्याहोय तेहने जुत्तके० कोइकपूर्वोक्तरीते एकाकीपणुंयुक्तछे पणअन्यथानही इतिन्नावः वलीवेप्रकार नाघटचाल्याछे एकन्नावित अने बीजोअन्नावित तेमांअन्नाविततें नवाघट अनेन्नावितना वेन्नेद एकशुन्नद्रव्येंन्नावित बीजाअशुन्नद्रव्येंन्नावित तेवलीएकेकनावेबेन्नेद एकवास्य बीजो अवास्य. जेवास्यतेवासनाटालीशकीयें अने जे अवास्यतेवासनाटालीनशकीयें तेमांकुवासनावमवायोग्यहोयतेरुमाजाणवा एवास्यकुवासन एटलापदनोअर्थथयो अने जे अकुवासनाके०कुवासनायेंवास्याजनथी एवानवा घटके०घडाछे तेपणरुडा एमविशेषावश्यकमांछे अथवा वास्य अवास्य घटनीन्नावना नंदिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी. उक्तंच पयइहिंन्नद्दन्नावा ॥ कुवासणावासियाविनोदुहा ॥ उज्जुमइणोसुकंखा ॥ तेदेसाराहगाउत्ता ॥१॥ एवादेशाराधकयुक्तहोयते पूर्वोक्तकारणेंएकाकीपणे गीतार्थविनारहे इतिन्नावः ॥ २० ॥

अज्ञानीगुरुतणेनियोगें ॥ अथवाशुन्नपरिणामरे ॥ कम्म
पयमीसांखेसुदृष्टि ॥ कहियेंएहनोठामरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली अज्ञानी अगीतार्थने गुरुतणेनियोगें आज्ञा परवशें थकां पण रुजु मार्गेवर्त्ते छे अथवा शुन्नपरिणामवंतछे गुणनो रुचीवंतछे तो कम्मपयडीनीसांखे तेने सुदृष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक्दृष्टीगुणठाणो जाणवो ॥ २१ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेला टवा ऊपरथी लख्योछे ॥ २१ ॥

जेतोहठथीगुरुनेछंमि ॥ न्नग्नचरणपरिणामरे ॥ सर्वउद्य
मेंपणतसनिश्चय ॥ कांइनआवेठामरे ॥ सा० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेतोके० जेवली न्नग्नचरणपरिणामके० जेहना चारित्रना परिणाम न्नांग्याछे एहवोथको हठकदाग्रहथकी गुरुने छांडीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनीपेठे उद्यमेंके० कष्टउद्यमकरेछे पण तसके० तेना कष्टप्रमुखसर्व निश्चयकरीनेकोइनआवेठामके० कांइ लेखे नलागे यतः आणाए तवो आणाइ ॥ संजमोतहयदाणमाणाए ॥ आणारहिउंधम्मो ॥ पलालपुलुव्वपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिसंवोधसित्तरीमध्येकह्युंछे ॥ २२ ॥

आणारुचीविणचरणनिषेधें ॥ पंचाशकेंहरिभद्रे ॥ व्यव
हारेंतोथोडुंलेखे ॥ जेहसक्कारेंसद्दरे ॥ सा० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचीछे तेतोचारित्रनेयोग्यछे पण एवीआज्ञा रुचीविना चरणनिषेधेंके० चारित्रनीनाकहीछे शामाटे जे आज्ञारुचीनथी तोवीजोकष्टअनुष्ठानकोनी आज्ञायेंकरेछे यतः आणारुइस्सचरणं ॥ तभ्भंगेजाणकिंनभग्गंति ॥ आणंचअइक्कंतो ॥ कस्साएसाकुणइसेसं॥१॥इति ते जेआज्ञासहितकरेछे तेचारित्र अने आज्ञाविना पंचाशकनेविषे हरिभद्रसूरिचारित्रने निषेधेछे व्यवहारेंतोके०शुद्धसमाचारीसहीत व्यवहारपालेतो पोतानी शक्तिप्रमाणें थोडुंकरे तोपण लेखामांछे एटले आज्ञासहित थोडुंकरे तेलेखेछेशामाटे जेथोडुंपणअनुष्ठानते सक्कारेंके०सत्यकरे अने सद्दके० शब्दते आगमकहियें केमके चारप्रमाण कह्यांछे तेमां आगमप्रमाणने शब्दप्रमाणकरी बोलाव्युंछे माटे आगम सत्कारेतोथोडो व्यवहार पण प्रमाणछे अनेबीजुघणुंकष्ट तेनिष्फलछे ॥ २३ ॥

शिष्यकहेजोगुरुअज्ञानी ॥ भजतांगुणनिधिजाणीरे ॥ जोसु
वासनातोकिमत्यजतां ॥ तेनेअवगुणजाणीरे ॥ सा० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवेइहांशिष्यकहेछे के जोगुरुअज्ञानीछे तोपणतेहने भजतांके० सेवतांथकांगुणनिधिजाणवो जोसुवासनाछे तोकेवाप्रकारे तेहने अवगुणीजाणीनेत्यजीयें ॥२४॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिना टवामांथी लख्योछे ॥

गुरुबोलेशुभवासनकहियें ॥ पन्नवणिजसुभावरे ॥ तेआ
यत्तपणेछेआद्यें ॥ जशमनेभद्रकभावरे ॥ सा० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ गुरु कहे हे शिष्य जे शुभवासना ते पन्नवणिज्ज स्वभावछे एटले जे समजाव्योसमजे एवो जेनो स्वभावछे तो एवोजेहोय तेतो आद्येंके० प्रथम गुरुने आयत्तपणेके० वशवर्तियें होय वली जशमनेके० जेहना मननेविषे भद्रकभावछे ते शिष्य आज्ञारुची जाणीयें ॥ २५ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथी लख्योछे॥

सूधुंमानीसूधुंथातां ॥ चउभंगीआचाररे ॥ गुरुकहणेंते
हमांफलजाणी ॥ लहीयेंसुजशअपाररे ॥ सा० ॥ २६ ॥

अर्थ॥एक सूधुंमाने अने सूधुंकरे, बीजो सूधुंमाने अने असूधुंकरे, त्रीजो असूधुंमाने अने असूधुंकरे, चोथो असूधुंमाने अने सूधुंकरे इत्यादिक शब्दें चउभंगी आचारांगादिक सूत्रमां कहीछे तेमांअशुद्धनाबेभांगा त्याज्यछे अने शुद्धनाबेभांगा ते

ग्राह्यछे ते जांगामां फलहोय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपारके० घणोसुजश लहीयें ॥ २६ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथीलख्योछे ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राजगीतानीदेशी अथवा सुरतिमहिनानी ॥

कोइकहेगुरुगछगीतारथसारथशुद्ध ॥ मानुपणनविदि
सेजोतांकोईविबुद्ध ॥ निपुणसहायविनाकह्योसूत्रेंएक
विहार ॥ तेहथीएकाकीरहेतांनहीदोषलगार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पूर्वढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरुपासे वसवुं ते आ ढालमांकहेछे कोइक आगमना रहस्यने अजाणतोथको आगमनुंशरणकरी बोलेछे जे गुरुके० गुरुआदिक गछके० सुविहितनोसमुदाय वली गीतार्थनो सारथके० समुदाय संघसार्थौतुदेहिनां इतिसामान्यकांडवचनात् एवा शुद्धके० पवित्र ते गुरु,गछ,गीतार्थ सर्वने मानुके० अंगीकारकरुंछुं पण ते जोतांथका कोइविबुद्धके० कोइडाह्यापंडित नविदिसेके० देखातानथी अमारी नजरमां कोइ आवतानथी निपुणसहायके० डाह्यानीसखाइनमले तोतेविना सूत्रेंके० उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्युंछे जे एकविहारके० एकलाविहारकरीयें उक्तंचकाव्ये ॥ नवालभिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुणउंसमंवा ॥ इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जाकामेसुअसज्जमाणो ॥ १ ॥ एम तेसूत्रमां एकाकीविहारनी आज्ञाछे माटे एकाकीरहेतांथकांलगारदोषनथी ॥ १ ॥

अणदेखंताआपमांतेसविगुणनोयोग ॥ किमजाणेपरमां
व्रतगुणनोमूलवियोग ॥ छेददोषतांईनवीकह्याप्रवचनेमु
निदुःशील ॥ दोषलवेंपणथिरपरिणामीबकुसकुशील ॥२॥

अर्थ ॥ हवे तेने उत्तर आपेछे जे एमकहेछे तेप्राणी आपमांके० पोतामां सर्व गुणनो योगके० संयोगने अणदेखतोथको एटले एज्ञावजे पोते सर्वगुणीतो थयोनथी तो पोते दोषवंतथको केवीरीते परमांके० बीजामां व्रतगुणनोमूलवियोगके० व्रतनो गुण मूलथी नथी एमशीरीतेंजाएयुं केमके गुरुआदिकमांतो कांइक गुण हशेज तोदोषनोलेश देखीने गुरुने मूकाय नही गाथा ॥ इयनाविययपरिमछा ॥ मज्झछानियगुरुनमुंचंति ॥ सव्वगुणसंपउंगं ॥ अप्पाणंमिविअपिछंता ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे तथा छेददोषतांइके०दसप्रकारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेददोषलागे तिहां लगें प्रवचनेके०सिद्धांतनेविषे मुनिने दुःशीलके०कुशीलिया हीणानथीकह्या यतः छेयस्सजावदाणं ॥ तायंमेगंपिनोअइक्कमइ॥

एगंअइक्कमंतो ॥ अइक्कमेपंचमूलेणं ॥ १ ॥ इतिवचनात् अने थोको दोष देखीने गुरुने नही आदरे तो सर्वनो त्यागकरवो पडशे तेकहेछे. जे पांचप्रकारना निग्रंथ अने चउदप्रकारनी अभ्यंतरगंठी तथा नवप्रकारनी वाह्यगंठी तेथी मूकाणा ते निग्रंथ कहीयें यतः गंछोमिछत्ताई ॥ घणाईर्छअंतरोयववज्झोय ॥ दुविहाउतउजे ॥ निग्गंछंतितेहुंतिनिग्गंथा ॥१॥ मिछंत्तंवेयतियं ॥ हासाइछक्कयंचनायव्वं ॥ कोहोईणचउक्कं ॥ चउदसअछिंतरागंथी ॥ २ ॥ धणधन्नखित्तकुवयं ॥ वछु दुपय कणय रूप चउचरणा ॥ नववाहिरयागंथी ॥ एवंतेहुंतिपुणपंच ॥३॥ सुगमं नवरं चउचरणाके०चतुष्पदइति १ पुलाग २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक एनांलक्षण भगवतिसूत्रना शतक २५ में उद्देशेछठ्ठेजोजो एपांच कह्या तेमां १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक एत्रणतो प्रतिसेवा रहित जाणवा अने बकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवाछे गाथा ॥ मूलुत्तरगुणविषया ॥ पडिसेवासेवएकुशिलोय ॥ उत्तरगुणेसुबहुसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ ४ ॥ तेमांपणनिग्रंथ तथा सनातकतो श्रेणीविछेदगइ तेमांगया तथा पुलागलब्धिपणविछेदगइ तेमाटे एत्रण जंबुस्वामी साथे विछेदगयां तेहेतुयें बकुस तथा कुशील एबेहुथी तीर्थ चालेछे यतः निग्गंथ सिणायाणं ॥ पुलागसहियाणतिण्हवुछेउ ॥ समणावसकुशीला ॥ जातिछंतावहो हिंति ॥५॥ जेमाटेते छठ्ठासातमा गुणठाणावंतहोय ते अंतरमुहूर्त्ते अवश्यपरावर्त्तथाय तेवारे छठेगुणठाणेआवे तिहांअवश्य प्रमत्तदोषनो लवमात्र देखीने गुरुनो त्याग केम थाय अने ते त्यागकरीशतो जगतमां आजनाकालेंनिर्दोषकोइ नहीलाभे तेमाटे लवमात्र दोषलागते पण बकुस तथा कुशील एबेहु जातिनामुनि ते थिरपरिणामी एटलेतेंहना परिणाम अतिउन्मार्गें नथी चालता अथवा थिरपरिणामीके०एवेमुनि थिरपरिणामेछे एटले पंचमआरानाछेडालगे एहिजछे माटे न छंडाए इतिभावः एहनोविस्तार धर्मरत्नग्रंथनीवृत्तिथीजाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिकगुणपणगुरुवादिकमांहेजोय ॥ सर्वप्रकारें
निर्गुणनविआदरवोहोय ॥ तेछंडेगीतारथजेजाणेवि
धिसर्व ॥ ग्लानौषधदृष्टांतेमूढधरेमनगर्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानादिकके०ज्ञानदर्शनचारित्रमांहेलोहरकोइ उत्कृष्टगुण पण गुरु आदिकमां जोइयें पण सर्वप्रकारेंके०सर्वथानिर्गुणहोयतो न आदरीयें माटेजेगीतार्थ होय तथा जे प्राणी उत्सर्गअपवादप्रमुखनी सर्वविधि जाणता होयते छांडेके० गछने पण निर्गुण जाणीने छांडे तेउपरदृष्टांत कहेछे ग्लानौषधके०जेमरोगीनेऔषध तेजिहांलगें रोग तिहांलगें औषध तेमजिहांलगे अगीतार्थ तिहांलगें औषधसदृशगछ अने

ज्यारेनिरोगीसदृशगीतार्थ थयो त्यारे औषधरूपगछनुं कामनही तेमाटे मूढके०जेमूर्खछे तेअहंकारमनमांधरीने गछबाहिरनिकलेछे इहांकोइबीजीरीते ए दृष्टांत जोडे छे, जेमग्लाननेऔषधआपे अनेआहारनआपे माटेरोगीनेछांड्योनकहेवाय पण सामो रोगीने उपकारकर्यो कहेवाय तेमजगीतार्थगछछांडे तेछांड्योनकहीयें पणउलटोगछने उपकारकर्यो एमकहीयें यतः नाणाइगुणविउत्तं ॥ जोचयइगुरुगणंचगीयछो ॥ अणुकंपेइतमेवय ॥ आउरन्नेसज्जमिवत्तीए ॥ १ ॥ इतिवचनात् एवेव्याख्याछे माटेजेगीतार्थनी दृष्टीमां ठरे ते खरुं इतिभावः ॥ ३ ॥

तेकारणगीतारथनेछेएकविहार ॥ अगीतार्थनेसर्व
प्रकारेंतेनहीसार ॥ पापवरजतोकामअसजतोभां
ख्योजेह ॥ उत्तराध्ययनेगीतारथएकाकीतेह ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेकारणके०पूर्वेकह्युंतेकारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञाछे यतः गीयछोयविहारो ॥ बीउगीयछनिस्सिउभणिउं ॥ इत्तोतइयविहारो ॥ नाणुन्नाउजिणं देहिं ॥१॥ इतिआवश्यकनिर्युक्तौ अने अगीतारथके० मूर्खने सर्वथा जे एकलो विहार करवोते सारके०प्रधान नथी रुडोनथी इतिभावः तथा पापनेवर्जतो कामने असजतो एटले कामक्रीडामां जे तत्परनही भांख्योजेहके०उत्तराध्ययननामेंसिद्धांतमां जेभांख्योछे के गीतार्थहोय गुणीहोय तेएकाकीरहे तेकाव्यपूर्वेलख्युंछे " नवालभिज्जानिउणं सहायं " इत्यादिक विचारीजोजो ॥ ४ ॥

पापतणोपरिवर्जननेवलिकामअसंग ॥ अज्ञानीनेन
वीहुएतेनविजाणेभंग ॥ अज्ञानीशुंकरशेशुंलहशेशुभ
पाप ॥ दशवैकालिकवयणेपंचाशकआलाप ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेएकाकी होयते पापनुंवर्जन केमकरे?वलीकामके०कंदर्पनासंगनो जे त्याग करवो ते एकाकी मूर्खने केमहोय? माटे एविचार अज्ञानीने नहोय तेअज्ञानीने तेना भांगानी खबरनपडे के आ अवसरे शुद्धजलेवुं के आअवसरे अशुद्धआहार होय तोपणलइयें इत्यादि भांगानी खबरनपडे वली अज्ञानीपुरुषहशे तेजीवअजीवादिक जाण्याविनाशुंकरशे एटलेसंयमानुष्ठानशुंकरशे तथा शुभपापके०पुण्य अने पाप ते प्रते अज्ञानीशुंजाणशे ते दशवैकालिकवयणेके०दशवैकालकिसूत्रनावचनथकी यदुक्तं॥तत्र अन्नाणीकिंकाहि किंवानाहीछेयपावगं इत्यादिचतुर्थाध्ययने तथा पंचाशकग्रंथमांपण एवोज आलापके०आलावोछे एटले वचन छे ॥ ५ ॥

एकविहारेदेखोआचारेंसंवाद ॥ बहुक्रोधादिकदूषण
वलीअज्ञानप्रमाद ॥ वलियविशेषवाख्योछेअव्यक्त
विहार ॥ पंखीपोतदृष्टांतेजाणोप्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएकाकी विहारकरे तेहनो आचारेंके०आचारांगनेविषे संवादके०वचनछे तेकहेछे जे तेआचारांगनापांचमाअध्ययनना प्रथम उद्देशानेविषे देखोके०जुर्ड एकविहारीने बहुक्रोधआदिशब्दें मान प्रमुखपणलेवा. यथा ॥ इहमेगेसिंएगचरिया भवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुरते बहुनडे बहुसठे बहुसंकप्पे आसवसक्कीपलिउंवछन्ने एमांविषमपदनोअर्थलखियेंछेयें बहुरतेके०बहुपाप बहुनडेके० नाटकियानी पेठे भोगनेअर्थें बहुवेषनाकरनारा तथा बहुसठेके०अनेक प्रकारेंशठ तथा बहुसंकल्प उपजे आसवके०आश्रवजेहिंसाप्रमुख तेहनो सक्किके०सक्त एटलेसंगी अने पलिउंवछन्नेके०पलितएटलेकर्मेंकरीअवछन्न एटले ढांक्योइति. वलीवीजादोषकहेछे अज्ञानप्रमादथाय एटलेएभावजे एजआलावेपदछे उठियवादंपवयमाणे मामेकेइअदक्खु अन्नाणपमायदोसेणं इति उठियवादंपवयमाणेके०अमें संयमचारित्रमां उजमालथयाछेयें एमवोलता मामेकेइअदक्खुके०आश्रवमांप्रवर्त्ततांथकांजाणेमुजनेकोइदेखतुंनथी एम अन्नाणपमायदोसेणंके०अज्ञानप्रमाददोषे सहितप्रवर्त्तें तेनेवलीविशेषेंकरीने आचारांगमां अव्यक्तविहारवाख्योछे अव्यक्तके०वयपणपूरीनही अनेश्रुतपणपूरुंनही तेहनेअव्यक्त कहीयें आचारांगपंचमाध्ययननेउद्देशेचोथेकह्युंछे यथा ॥ गामाणुगामंडुइज्जमाणस्स डुज्जातं डुपरक्कं तंभवति अवियत्तस्सभिक्खुणो एहनोअर्थ ॥ गामाणुगामं डुइज्जमाणस्स के०एकगामथी बीजेगाम एकाकी विचरताने डुज्जातंके०डुष्टगमनछे अर्हन्नकमुनिनीपेठे डुपरक्कंतंके०डुष्टपरआक्रांतछे थुलिभद्रनाईर्षावंतसिंहगुफावासिमुनिने जेमकोश्यायेंआक्रम्या तेम सर्वमुनिने नहोय तेमाटे विशेषणकरेछे अवियत्तस्सभिक्खुणोके०अव्यक्तभिक्षुने एटलेअव्यक्तभिक्षु वेप्रकारनाछे एकश्रुतअव्यक्त बीजोवयअव्यक्त जेआचारप्रकल्प न भण्याहोय अनेगछमांरह्याहोय तेश्रुतअव्यक्तकहीयें तथागछथीनिकल्या ते नवमांपूर्वेनी त्रीजीवस्तुनभण्याहोयतेगछनिरगतअव्यक्तकहीयें गछमां रह्याथका सोलवर्षनाथाय तिहांलगें वयअव्यक्त कहीयें अनेजे गछनिरगतते त्रीसवर्षनाथाय त्यांलगे वयअव्यक्तकहीयेंइतिइहांचोभंगी छे १ श्रुतअव्यक्त अने वयअव्यक्तहोय तेतोएकाकी विहारकरेज नही केमके संयमात्म विराधनाथाय माटे नकरे २ श्रुतअव्यक्त अनेवयव्यक्त तेपणअगीतार्थ माटे संयमात्मविराधनाथाय माटेतेमनेएकाकी विहार नकल्पे ३ श्रुतव्यक्त अनेवयथीअव्यक्त तेहनेपण नकल्पे बालपणाथकीकुलिंगी तथागृहस्थने पराभवनुंस्थानकहोयते

माटे ४ श्रुतव्यक्ततथावयव्यक्त तेहनेपणएकलमल्लप्रतिमाप्रमुखकारणें एकाकीपणेविचरवानी आज्ञा छे पणकारणविना नही इत्यादिक बहुवातछे तेआचारांगवृत्तिथीजाणवी एटलाजमाटे आस्तवननी मूलगाथामां विशेषपदमूक्युंछे माटे अव्यक्तने तोविशेषेंकरी सर्वथावार्यो तथाव्यक्तनेपणकारणविनावार्योछे तोअव्यक्तनेवार्योतेनुंशुंकहेवुं तेपंखीपोतदृष्टांतेंकरीजाणवुं जेमपंखीनो पोतके॰बालक तेने पांखआवीनहोय अने ऊडवाजाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रवकरे तेम अव्यक्तअगीतार्थ बालक होय तेहने परदर्शनी उपद्रवकरे जाणोप्रवचनसारके॰एजैनागमनो सार जाणवो यतः काव्यं जहादियापोयमपक्खजायं ॥ सवासयापविउमणं मणागं ॥ तमचाइयातरुणपमत्तजाई ॥ ढंकाइअव्वत्तगमंहरेज्जा ॥ १ ॥ माटे जेमपंखीपोताना बालकने सूंना मूकता नथी तेम मूर्खनेगीतार्थ एकलानमूके इतिभावः ॥ ६ ॥

एकाकिनेस्त्रीरिपुश्वानतणोउपघात ॥ भिक्षानिनविशु
द्धिमहाव्रतनोपणघात ॥ एकाकिसछंदपणेनविपामे
धर्म ॥ नविपामेपृछादिकविणतेप्रवचनमर्म ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे एकाकीविहारकरे तेने स्त्रीनो तथा रिपुके॰शत्रुनो अने श्वानके॰कुतरानो उपघातथाय तथा भिक्षा पण दोषसहित लीयेतो तेनेकोणनिषेधकरे माटे भिक्षानी शुद्धि पण नरहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घातथाय गाथा ॥ डुछपसुसाणसावय ॥ इत्थिभिरकाइदोसडुल्ललिउं ॥ वयगाइधम्ममाइ ॥ तम्मारम्भोनएगागी ॥१॥ इतिपिंडनिर्युक्तौ तथा एगाणियस्सदोसा ॥ इत्थिसाणेतहेवपडिणीएय ॥ भिक्खविसोहिमहव्वय ॥ तम्हासबिइज्जाएगमणं ॥२॥ इतिधर्मरत्नवृत्तौ जेएकाकी विहारकरे तेस्वछंदपणेविचरे पोतानेमते ऊपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानीअपेक्षा नरहे तेमाटेजे स्वमति कल्पनावंत ते धर्म नपामे यतः इक्कस्सकउधम्मो॥ सछंदमइगईपयारस्स ॥ इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकीहोयते पृछाके॰वांचनापृछनादिकतेपण गुरुविनानपामे अने तेविना प्रवचनके॰ सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्यते केमपामे ॥ यतः ॥ कत्तोसूत्तछागम ॥ पडिपुछणचोयणावइक्कस्स ॥ विणउवेयावच्चं ॥ आराहणावमरणंते ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

सुमतिगुपतिपणनधरेएकाकीनिःशंक ॥ भावपराव
र्तेआलंबनधरेसपंक ॥ जुदाजुदाथातांथविरकल्प
नोभेद ॥ भोलाएमनलोकनाथाएधर्मउछेद ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सुमतिके॰इर्यासमितिप्रमुखपांचसमिति तथामनादित्रणगुप्ति तेपण नधरेके॰

नपामीशके केमके जेएकाकीविहार करनारहोयतेनिःशंकहोय कोइनीशंकानराखे एट लेअकार्य करवानुंचित्तथायतो कोइनीशंका नधरे सुखेअकार्यकरे गाथा ॥ पिच्छिज्जेसणमिक्को ॥ पइन्नपमयाजणाउनिच्चनयं ॥ काउमाणोविअकज्जं ॥ नतरइकाऊणवहुमज्झे ॥ इत्युपदेशमालायां तथा चित्तनाअभिप्रायतेनावकहीयें तेनावनुंजे परावर्त्तके०पलटाववुं तेणेकरीजेवापोतानाअभिप्रायथाय तेवुंकांइक आलंबनपामीने तत्काल तेआलंबन धरेके०अंगीकारकरे तेआलंबन केवुंहोयतेकहेछे सपंकके०मेलुंहोय एटलेएनावजे चित्तनाअध्यवसायतो क्षणेक्षणेपलटायछे तेचित्तना अभिप्राय कोइक अवसरें हीणाथाय अने निमित्तपणतेवुंज मले तेवारें पोतेपणतेवोजथाय यतः एगयिवसेणबहुआ ॥ सुहायअसुहायजीवपरिणामा ॥ इक्कोयसुहपरिणउ॥चइज्जआलंवणंलद्धुं ॥ १ ॥ आलंबनहिणु पामीने चइज्जके०संयमनेछांडे इत्युपदेशमालायां वली एकजणेएकलो विहारकीधो एटले वीजाने पणएकला विचरवानुंमनथाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जूदा जूदाथातां एटलेअवस्था नरहे तथा थिविरकल्पनोनेदथाय एटले आपमतें कोइक क्रिया एकरीतेकरे कोइकबीजीरीतेंकरे एमभिन्नभिन्नथाय तेथीलोकनांमन मोलाय जे अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे के अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे इत्यादिकविकल्पलोकने उपजे तेथी धर्मनो उच्छेदथाय कोइकपरप्रतित रहेनही तेवारें लोकमूलगोधर्ममूकीआपे गाथा ॥ सवजिणपडिकुठं ॥ अणवछाथेरकप्पनेउय ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

टोलेपणजोनोलेंअंधप्रवाहनिपांत ॥ आणाविणनविसं
घछेअस्थितणोसंघात ॥ तोगीतारथउद्धरेजेमहरीजल
थीवेद ॥ अगीतारथनविजाणेतेसविविधिनोनेद ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली टोले पण जोनोलेंके०कदाचित टोलुंहोय नेजोनोलुंहोय तेमां कोइ गीतार्थनहोय तो तेटोलामां वसवुंतेपण अंधप्रवाहनिपातके०आंधलानीजश्रेणीमांपडवुं थयुं एमजाणवुं कारणके आणाविनासंघनकहीयें पण अस्थितणो संघातके०हाडकानो समूहजाणवो यतः एगोसाहुएगोय ॥ साहुणीसावउवसहीवा ॥ आणाजुत्तो संघो ॥ सेसोपुणअठिसंघाउ ॥१॥ एमसंबोधसित्तरीमांकह्युंछे ते माटेजेगीतार्थहोय तेजससंसारसमुद्रमांथी नव्यजीवने उद्धरेके०उद्धारकरे जेम हरीजलथीवेदके०जेरीते श्रीकृष्णेसमुद्रमांथी वेदउद्धर्या एदृष्टांते तेनी कथाकहेछे शंखनामे दैत्यउपज्यो ते ब्रह्मा पासे वेदनणवाबेठो एवामां ब्रह्माने बगासुंआव्युं ते बगासुं छमहीनेपुरुंथयुं त्यारें ब्रह्मानुं सुखमोकलुंदेखी शंखदैत्यें विचार्युं जे वेदनणतां क्यारे पारपामीशुं माटे ब्रह्माना पेटमांप्रवेशकरी वेदलेइजाउं एमविचारी पेटमांपेसीने वेद लेइगयो नेसमुद्रमां

पातालमां जइपेठो पछी श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो नूतसरिखा केम देखायछे एम विचार करतां श्रीकृष्णेजाण्युं जे शंखदैत्य चारेवेद लइगयोछे हवेहुं लेइआवुं एम विचारकरी मत्स्यावतारधरी शंखासुरना नवनमांगयो त्यांबालकनुंरूपधरी तेनीस्त्रीपासे बेठो तेस्त्रीयेंजाएयुंजे आपणे मनोहर बालक पाम्या पछीतेनेरमाडवाबेठी एटलामां शंखासुरनापेटमां चारेवेद वातोकरवा लाग्याजे आपणीवाहारकरवा ठाकोरजीआव्याछे तेवात सांजली शंखासुरे जाएयुंजे अनर्थथयो पछीस्त्रीने कह्युंजे बालकमूकीद्यो पणस्त्रीयेंनमूक्युं त्यारेंबालकने मारवादोड्यो तेथीस्त्रीयेंबालकनेमूकीदीधुं पछीतेबालकें तेदैत्य साथेयुद्धकरीमत्स्यरूपेंथइ दैत्यने मारी तेनापेटमांथी चारेवेद लइ श्रीकृष्णपाणीमांथी बहारआव्या तेमाटे प्रथम मत्स्यावतारलीधो एअधिकार शिवमार्गेनाशासने दशावतारग्रंथमध्येकह्युंछे इहांदृष्टांते लख्युंछे वलीजे अगीतार्थ होयते उत्सर्ग अपवादादिक सर्वे विधिउंना नेदनजाणे माटे अगीतार्थनेएकलो विहारनहोय ॥ इतिनावः ॥ ए ॥

कारणथीएकाकीपणुंपणनाष्युंतास ॥ विषमकालमांतो
पणरुमोनेलोवास ॥ पंचकल्पनाष्येंनणयुंआतमरक्
णएम ॥ शालिएरंमतणेएमनांगेलहिएखेम ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली कोइ कहेशेजे श्रीउत्तराध्ययनमध्ये एकाकीपणानी हा केम कही यथा इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ इतिवचनात् ॥ तेने उत्तर जेगीतार्थहोय तासके० तेने कोइक कारणथी एकाकीपणुं पण नाष्युंके० कह्युंछे यथा तिहांज काव्य नवालनिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुण उसमंवा ॥ इतिवचनात् तोपणविषमकालमांके० आपांचमाआरामां हुंडाअवसर्प्पिणी कालमां रुमोनेलोवासके० नेलावसवुंतेजरुडुं पणएकाकी वसवुं रुडुं नहीं एमपंचकल्प नाष्यनेविषेकह्युंछे आतमरक्षणएमके० जेसंयमरूपआत्मा तेनी रक्षातेएमज थाय अथवा आत्मानेशरीर अनेदछेमाटे आतमके०शरीरनी रक्षापण एमके०एमजनेलावसतांथकां होय इहां शालितथाएरंडनीचोनंगीछे १ शालिनोवृक्षअनेशालिनीवाडी २ शालिनो वृक्षअनेएरंमनीवाडी ३ एरंडनोवृक्षअनेशालिनीवाडी ४ एरंडनोवृक्षअने एरंमनीवाडी एचोनंगीमांथी शालितथाएरंडना त्रणनांगे वसतांतो खेमके०कल्याणछे इतिअक्षरार्थ ॥ नावार्थतोएछेजे शालि सरिखागीतार्थ एटले आचार्य अने एरंडसरिखा मूर्ख तेनी चोनंगीदेखाडेछे १ गीतार्थआचार्य अने जे गीतार्थनो परिवारते वाडी पणगीतार्थनी २ गीतार्थआचार्य अने मूर्खपरिवारनीवाडी३ मूर्खआचार्यअने गीतार्थनापरिवारनीवाडी एत्रणनांगालगेकोइरीते आज्ञाछे पणमूर्खआचार्य अनेमूर्खपरिवारएनांगोतो सर्वथाज

निषेधछे यतःजछयपंचकुशीला ॥ गणीवायगथविरपवत्तनिग्गंथा ॥ तेणएरंडसमाणं ॥ चउछजंगीएनायव्वो ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

एकाकीपासत्थोसछंदोगतयोग ॥ ठाणवासीउसन्नो
बहुदूषणसंयोग ॥ गछवासीअणुउगीगुरुसेवीवलि
होय ॥ अनियतवासीआउतोबहुगुणएमजोय ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ १ एकाकी केवलधर्मबंधुरहित ते पासछो २ ज्ञानादिकपार्श्ववर्त्तिस्वछंदो ३ गुरुआज्ञाविकल एटलामाटे गतयोगकहिये ४ ठाणवासीके०स्थानकवासी तदैकत्रविहार नित्यवासीत्यर्थः ५ अवसन्न तेआवश्यकादिकें शिथिलमनपरिणामी तेउसन्नो ए पांचपद ते बहुदूषणसंयोगीहोय ते क्यारे कोइकने एकपद क्यारे बेपद क्यारे त्रण पद क्यारे चारपद अथवा पांचपदना संयोगीथाय जेमएकपदस्थानक वधे तेमदोष वृद्धिपण जाणवी एवं २६ जेदथाय इत्यादिकअनेकप्रकारेंदोषवृद्धिथाय यतः एगागी पासछो ॥ सछंदो ठाणावासीयउसन्नो ॥ डुगमाइसंयोगा ॥ जह बहुआतहगुरुहुंति ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां एनाद्धिकादिसंयोगकरतां २६ जेदथाय तेमांद्धिकसंयोगी १० तथात्रिकसंयोगी १० चतुःसंयोगी ५ पंचसंयोगी १ एवं २६ जांगादोषवृद्धिनाजाणवा तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडेछे १ गछगत २ अणुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आयुक्त एहनापणएमज छवीसजेद गुणवृद्धिनाथाय जेमजेमगुणवधे तेमतेमविशेष आराधकथाय अनेदोषवृद्धियें विराधकपणुंवधे तथागुणवृद्धियें आराधकपणुंवधे तेमां दोषवृद्धिना २६ जांगालखियेंछैयें.

द्धिकसंयोगी १० जांगा १ एकाकी–पासत्थो २ एकाकी–सछंदो ३ एकाकी–ठाणवासी ४ एकाकी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो ६ पासत्थो–ठाणवासी ७ पासत्थो–उसन्नो ८ सछंदो–ठाणवासी ए सछंदो–उसन्नो १० ठाणवासी–उसन्नोः

त्रिकसंयोगीजांगा १० लखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो २ एकाकी–पासत्थो–ठाणवासी ३ एकाकी–पासत्थो–उसन्नो ४ एकाकी–सछंदो–ठाणवासी ५ एकाकी–सछंदो–उसन्नो ६ एकाकी–ठाणवासी–उसन्नो ७ पासत्थो–सछंदो–ठाणवासी ८ पासत्थो–सछंदो–उसन्नो ए पासत्थो–ठाणवासी–उसन्नो १० सछंदो–ठाणवासी–उसन्नो

चतुसंःयोगीजांगा ५ लखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो–ठाणवासी २ एकाकी–पासत्थो–सछंदो–उसन्नो ३ एकाकी–पासत्थो–ठाणवासी–उसन्नो ४ एकाकी–सछंदो–ठाणवासी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो–ठाणवासी–उसन्नो

तथापंचसंयोगी १ जांगोथयो एवं २६ थाय ते द्धिकसंयोगीथी त्रिकसंयोगीदूषणे

चारी तेथीचतुःसंयोगीदूषणेचारी चतुःसंयोगीथीपंचसंयोगीदूषणेचारी हवेदोषनेव्यतिरेके गुणवृद्धिपणोदेखाडेछे १ गछवासीके०गछमांवसे २ अणुछंगीके०अर्थधारे ३ गुरुसेवीके०गुरुआदिकनीसेवाकरे ४ अनियतवासीके०उग्रविहारी ५ आयुक्तते आउत्तोके० उपयोगीहोय एपांचपदमां जेमजेमएकेकापदनीवृद्धिथाय तेमतेम बहुगुणहोय अने विशेषआराधकथाय यतः १ गछगउ२ अणुउंगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आउत्तो॥ संजोएणपयाणं ॥ संयमआराहगाचणिया ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

दोषहाणीगुणवृद्धिजयणाचाषेंसूरि ॥ तेशुचपरिवारेंहुये
विघनटलेसविदूरि ॥ देवफलेजोआंगणेतुजकरुणासुर
वेलि ॥ शुचपरिवारेंलहियेंतोसुखजसरंगरेलि ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एम दोषनी हाणीथाय तथागुणनीवृद्धिथाय अनेजयणाके०जतनाथाय एटले बहुलाच अल्पदोपेंप्रवृत्तिथाय तेएहवागुण क्यारेआवे तेहनोउत्तर चाषेसूरिके०आचार्यचाषेछे के ते शुचपरिवारेंहुयेके०एवागुणतोपरिवारशुचहोय तिवारे आवे तथा विघ्नसर्वदूरटले तेमाटेहेदेव तुजके०तमारीकरुणारूपजे सुरवेलीके०कल्पवृक्षनीवेलमी ते आंगणे फलेके०माराआत्मरूपजेआंगणुं तिहांजोसफलीथाय तोतेशुचपरिवारपामियें एटलाजमाटे उपदेशमालाना कर्तायेंकह्युंछे यतः सीहगुरुसुसिस्साणं ॥ चद्दंगुरुवयणसद्दहंताणं॥वयरोकिरदाहीवा ॥ यणत्तिनविकोवियंवयणं ॥१॥ ते माटेशुचपरिवारपामवोदुष्करछे तेशुचपरिवारेंकरी सुखयशनी रंगरेलपामियें एटले सेहेजानंदस्वरूपनारंगनीरेल तेहनोप्रवाहपामीयें एसातमीढालमां कह्युंजेहेदेव तमारीकरुणारूप सुरवेलीजोफलेतो सुखयश पामियें तेमाटे हवे आठमीढालमां करुणा विशेष जे दया तेहनुं स्वरूप कहेछे ॥१२॥

॥ ढालआठमी ॥

॥ प्रचुचित्तधरीनेअवधारोमुजवात ॥ एदेशी ॥

कोइकहेसिद्धांतमांजी ॥ धर्मअहिंसासार ॥ आदरियेंतेएकलीजी ॥
त्यजीयेंबहुउपचार ॥ मनमोहनजिनजी ॥ तुजवयणेमुजरंग ॥ १ ॥

अर्थ॥वलीकोइकएमकहेछेके सिद्धांतसूत्रनेविषेएमकह्युंछे जे धर्मअहिंसाके०दयाधर्म तेजसारके०प्रधानछे नहिअहिंसासमोधम्मोइतिवचनात् माटेएकलीअहिंसाजआदरीयें बीजा बहुके०अनेक उपचारके०उपायने त्यजीयेंके०मूकीदइयें एमकहेछे माटे हे मनमोहनजिनजी अथवामननेमोहनाउपजावणहार एवाजेजिनेश्वरतेनोसंबोधनकरियें जे हेमनमोहनजिनजी तुजवयणेके०तमारावचननेविषेमुजनेरंगछेरीजछे ॥ १ ॥

नविजाणेतेसर्वत्यजीने ॥ एकअहिंसारंग ॥ केवल
लौकिकनीतिहोवे ॥ लोकोत्तरपंथभंग ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरआपेछे के तेअज्ञानीनथीजाणता नथीसमजता जे सर्वपूजा प्रभावना सामिवत्सलप्रमुखकरणीत्यजीने मात्रएकअहिंसानेविषेज रंगके०रीझकरेछे तेथी केवल लौकिकके०व्यवहारनीतिकरीने एटलेलौकिकव्यवहारमां एक दया दया पोकारे तेसारीलागे पण लोकोत्तरमार्ग जे जिनमार्गतेहनोभंगथायछे एटले एकलीदयामांजिनशासननथी पणजिनआज्ञामांशासनप्रवर्त्तेछे एकलीदयायेंतो पडिक्कमणापोसहप्रमुख पणनकरीशके तोपूजाप्रभावनानीवाततो वेगलीरही इतिभावः ॥ २ ॥

वनमांवसतांबालतपस्वी ॥ गुरुनिश्राविणसाध ॥ एक
अहिंसायेंतेराचे ॥ नलहेमर्मअगाध ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकतोबालतपस्वी जे अज्ञानतपस्वीतेपणवनमांवसतो एटले घोरकष्टनोकरणहार तथा बीजो गुरुनिश्राविणके०गुरुआणाविना एवेहु एकअहिंसायेंतेराचेके०एक अहिंसामुखेकहे एटलेबाह्यजीवनीरक्षाकरवी एटलामांजरीझछे पणतेअहिंसानो अगाधके०ऊंडोमर्मछे तेमूढ नजाणे एटलेस्वआत्माहणायतेहिंसा अनेस्वआत्मानहणायतेअहिंसा एहवामर्मनीतेनेखबरनथी ॥ ३ ॥

जीवादिकजेमबालतपस्वी ॥ अणजाणंतोमूढ ॥ गुरुलघुभा
वतथाअणलहेतो ॥ गुरुवर्जितमुनिगूढ ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकहेशेजे बालतपस्वी तथासाधुएवेबरावरकेमथाय तेनेकहेछे के जेमबालतपस्वी तेजीवअजीवपुन्यपापप्रमुखनुंयथार्थ स्वरूपतेमूढ अणजाणंतोके०अणसमजतोथको जेमतेहोय तथाके०तेमज गुरुलघुभावअणलहेतोके०हलकाभारे लाभखोटने अणजाणतोजे आवुंप्रायश्चित्तकरशुं तेकरतांबीजीकरणीमांयद्यपिप्रायश्चित्तछे तोपण लाभघणोछे इत्यादिकवातोथीअणसमजुछे जेमाटेगुरुवर्जितमुनिके०गुरुयेंकरीरहित एहवाजेमुनिते गूढके०गुप्तरहस्यजेहोय तेवागुरुअनेलघुभावने न लहे इतिभावःएरीतेंगूढ शब्दगुरुलघुभावनेजोडीयें ॥ ४ ॥

भावमोचकपरिणामसरिखो ॥ तेहनोशुभउद्देश ॥ आ
णारहितपणेजाणीजे ॥ जोइपदउपदेश ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ भावमोचकपरिणामके०बौद्धादिकनापरिणामसरिखोछे एटलेबौद्धादिक एम मानेछे के जेदुःखीहोयतेनेमारीयें तोदोषनलागे कारणके तेनेमारतांनथी पण उलटोदुः-

खथीमूकावियेंछैयें एरीतेमाठुंकृत्यकरीने तेनेरुडुंमानेछे तेसरिखो तेहनोके०ते ढुंढकादिक अज्ञानीनो शुन्नउद्देशके०शुरूप्रवर्तनजाणवो एटलेयद्यपितेओनीअहिं साद्ध्यथीछे पण परिणामे हिंसाजजाणवी तिहां हेतुकहेछे जे आणारहितपणेजाणीजे एटले आज्ञारहितमाटे यतः आणाएतवोआणाए॥संयमोतहयदाणमाणाए॥आणारहिउंधम्मो॥पलालपुलुवपन्हिहाइ॥१॥ इतिवचनात् ए अर्थउपदेशपदग्रंथमांजोइने जाणीजेके०जाणीयें यतः जंअन्नाणीमूढो॥जंचअगीयछनिस्सिउंविहरे॥सोसुग्गयकम्मसरिसो॥पावयवंधेविछिप्पंति

एकवचनऊालीनेछंमे ॥ बीजालौकिकनीति ॥ सकल
वचननिजठामेजोडे ॥ एलोकोत्तरनीति ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एगाथानोअन्वयकरीअर्थ करेछे जेएकलौकिकवचनऊालीने बीजासर्व नीतिनांवचनछांडेछे इत्यन्वयः तेलौकिकवचनएजेकोइनेनहणवो तेऊपरआगमनापाठदेखाडेछेजे सवेपाणा सवेन्नूआ सवेजीवा सवेसत्ता नहंतवा इत्यादिकआगमनुंएहवुं वचनछे अनेयद्यपिलोकपणप्रौढमार्गेएम कहेछे जे कोइनेनमारवो तेमाटे एवचननेलौकिकवचन कहीयें तेलौकिकवचनपकडीने बीजांसर्वे नीतिवचनके०लौकिकथीबीजां जे लोकोत्तरवचन दानदेवपूजासाहमीवत्सलप्रमुख ते नीतिवचन कहीयें ते सर्वेछांडिदेछे पणतेसर्वेखोटुंकरेछे केमके जे सकलवचननिजठामेजोडेके०समस्तसिद्धांतनांवचनजेछे तेने ठेकाणेजोडे तेलोकोत्तरनीतिजाणवी सकलवचनएपदवीजीवारजोडवुं एटलेएन्नाव जे गुणठाणामाफक सहुसहुनीहदप्रमाणे समस्तसिद्धांतनांवचनजोडे जे आवचनते मुनिराजनेजआश्रीछे अनेआवचनतेगृहस्थनेआश्रीछे तेअपेक्षाउंजैनशासनमांघणीछे ते पोतपोतानीअपेक्षाप्रमाणेजोडे एलोकोत्तरनीति तेजिनशासननी नीतिछे ॥ ६ ॥

जिनशासनछेएकक्रियामां ॥ अन्यक्रियासंबंध ॥ जेमन्ना
षीजेत्रिविधअहिंसा ॥ हेतुस्वरूपअनुबंध ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तथाजिनशासनते एकक्रियामां अन्यक्रियासंबंधछे जेमाटे जेहिंसातेज अहिंसा अने जेअहिंसातेजहिंसा अनेजेतपस्या तेज जो निस्पृहिपणुंनथी तोअतपस्याछे न्नोगीछे अनेन्नोगीछतांनिस्पृहिपणुंछे तो तेतपस्वीछे इत्यादिकजिनशासनमां एकांतनथी स्याद्वादछे यतः अविद्धायापिहियाहिंसा॥हिंसाफलन्नाजनंन्नवत्येकः॥कृत्वाप्यपरोहिंसां॥ हिंसाफलन्नाजनं नस्यात् ॥ १ ॥ इतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ ते वलीहिंसातथाअहिंसा अनेकन्नेदें आगलीगाथामांदेखाडेछे जेमन्नाषीजेके०जिनशासनमांकही जेत्रिविधेअहिंसाके०त्रणप्रकारनीअहिंसा तेदेखाडेछे १ हेतुअहिंसा २ स्वरूपअहिंसा ३ अनुबंधअहिंसा एविवरीनेदेखाडेछे ॥७ ॥

८

हेतुअहिंसाजयणारूपें ॥ जंतुअघातस्वरूप ॥ फलरू
पेजेंतेहपरिणामे ॥ तेअनुबंधस्वरूप ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेमांपहेलीहेतुअहिंसाते यतनाकरवी केमके जे जीवयतनाकरवीतेअहिंसानोहेतुछे माटेहेतुअहिंसाकहीयें, बीजी जे जंतुअघातके०जीवनेमारवोनही प्राणवियोगनकरवो तेहतुं नाम स्वरूपअहिंसाकहीयें, त्रीजी स्वर्गापवर्गादिकफलरूपेंजे अहिंसा परिणमे तेअनुबंधअहिंसानुंस्वरूपजाणवुं ॥ ७ ॥

हेतुस्वरूपअहिंसाआपे ॥ शुभफलविणअनुबंध ॥ दृढ
अज्ञानथकीतेआपे ॥ हिंसानोअनुबंध ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेत्रणेअहिंसानांफलकहेछे. जेहेतुअहिंसातथास्वरूपअहिंसा एबेअहिंसते शुभफलके० पुण्यफलआपे विणअनुबंधके० अनुबंधविना एटलेहेतुतथास्वरूप आहिंसाथीपुण्यबंधाय ते देवताप्रमुखनोभवपामे पण आगलेंसंलग्न पुण्यपरंपरानचाले माटेपापानुबंधीपुण्यबंधाय जेम अहिंसानात्रणभेद तेम हिंसानापणत्रणभेदछे ते कहेछे १ हेतुहिंसा २ स्वरूपहिंसा ३ अनुबंधहिंसा एत्रणमां हिंसानुं अनुबंधके० फलतेपणजे हिंसानुंजआपे तेनोहेतुकहेछेके दृढअज्ञानथकीके० आकरेअज्ञानेकरीने एटलेएभावजेहेतुथीजोइयेंतोअहिंसा तथास्वरूपथीजोइयेंतोपणअहिंसा अने अनुबंधेजोइयेंतो हिंसाछे तोतेहिंसाथीपण संसारवधे अने अज्ञानअहिंसाथीपणसंसारवधे तेमाटेजेमां अनुबंधअहिंसाहोयते आदरवी इतिभावः ॥ ए ॥

निन्हवप्रमुखतणीजेमकिरिया ॥ जेहअहिंसारूप ॥ सुर
डुरगतिदेइतेपाडे ॥ डुत्तरभवजलकूप ॥ मन० ॥१०॥

अर्थ ॥ जेम जमालीप्रमुखनिन्हव सर्वेजैनलिंगेहता तथाक्रियापणजैननीकरताहता तेश्रीभगवतिमांजमालीनुंमहासंयमवखाण्युं पणजे अहिंसारूपके० तेक्रियासर्वे हेतुअहिंसा तथास्वरूपअहिंसारूपहती पणते सुरडुरगतिदेइके० देवतानीडुर्गति एटले किल्विषियाप्रमुखदेवतानीडुर्गतिआपीने पछी पाडेके० नाखे डुत्तरभवजलकूपके० डुःखेंतरायएवोसंसाररूपजलनोकुवो तेमांनाखे इति ॥ १० ॥

डुर्बलनग्नमासउपवासी ॥ जोछेमायारंग ॥ तोपण
गरभअनंतालेशे ॥ बोलेबीजुंअंग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेऊपर सांख देखाडेछे जेम कोइक शरीरेंडुर्बल थयोहोय तथानग्नके० नागोरहेतोहोय अनेमासखमणनोपारणुंकरतोहोय एवोहोय अनेमायारंगके० माया-

वंतहोय एटलेअज्ञानकष्टकरेछे एवोछे तोपण अनंतिवारगर्ननमांउपजशे एटलेअनंता नवकरशे एमबीजुंअंगजेसुयगडांगसूत्रतेबोलेछे यतः जइवियणिगिणेकिसे ॥ चरेजइ-विज्जुंजियमासमंतसो ॥ जेइहमायातिमज्जुति ॥ आगंतागप्पायणंतसो ॥ १ ॥ इति द्वितीयाध्ययने एटले एनीदया कोइलेखामां न आवे ॥ ११ ॥

निंदितआचारेंजिनशासन ॥ जेहनेहीलेलोक ॥ मायापे
हेलीतसअज्ञाने ॥ सर्वअहिंसाफोक ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ते निंदितआचारें लोक जिनशासन हीले एटले जे एकलीदयामानेछे अने अज्ञानकष्टकरेछे तेप्राणीनेपूर्वाचार्यना जीतनीखबरनथी केजितव्यवहारें लोकनिंदा न करे अनेपोतानीमतियेंप्रवर्त्ते तेनाआचरणनी लोकनिंदाकरे तेवारेजिनशासननीपण निंदाथाय के जुउआवालोक जिनशासनमांछे माटे जिनशासनपण डुगंछाकरवायो-ग्यछे त्यारेजिनशासननी हिनतानुं कारणथाय माटे तसके० तेप्राणीने अज्ञानथयुं ते अज्ञानेकरीने मायापहेलीके० प्रथममायाथयीज अनेज्यांमायाठेरी त्यांसर्वेअहिंसाते फोककें० खोटीनिःफलजाणवी जेमाटे अज्ञानीनीदयाते हिंसाजजाणवी यतः मासे मासेयजोबालो ॥ कुसग्गेणंतुजुंजएनसो ॥ सुअक्खायस्सधमस्स ॥ कलिंअग्घइसोल-सिं ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

स्वरूपथीनिरवद्यतथाजे ॥ छेकिरियासावद्य ॥ ज्ञानश
क्तिथीतेहअहिंसा ॥ दिएअनुबंधेसद्य ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलीगाथामां दयापाले ने फलहिंसानुं आपे एम कह्युं हवे जेकथंचित् हिंसाथाय तेपण अहिंसानुंफलआपे तेकहेछे जे स्वरूपथीके० परमार्थेतोनिरवद्यछे निःपापछे अनेक्रियासावद्यके०क्रिया देखीतियद्यपिसावद्यछे तोपण तेजेस्वरूपथी हिंसाछे ते ज्ञानशक्तियेंकरी दिएअनुबंधेके० अनुबंधेआपे अहिंसाके० दया सद्यके० तत्काल एटलेएनावजेस्वरूपहिंसाजे दानविहारप्रमुख तेमुनिप्रमुखनीछे तेअनुबंधेअहिंसानुंज फलआपे यतः नगवत्यां अणगारस्सणंनंतेनावि अप्पाणोपुरउडुहउजुगमायाएपेहा एरीयरीयमाणस्स पायस्सअहेकुकुडपोएवावट्टपोतेवाकुलिंगच्छाएवा परियावज्जेज्जा ॥ तस्सणंनंतेकिंइरियावहियाकिरियाकज्जइसंपराइयाजावकज्जत्ति गोयमाणोसंपराइया जावकज्जति इरियावहिया जावकज्जइ सेकेणं जाववुच्चइ जहासत्तमसएसंवुडुद्देसए जावअठोनिक्खित्तो ॥ इतिअढारमाशतकनाआठमाउद्देशामांछे ॥ १३ ॥

जिनपूजाअपवादपदादिक ॥ शीलव्रतादिकजेम ॥ पुण्यअनु
त्तरमुनिनेआपी ॥ दिएशिवपदबहुखेम ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीजेमपूर्वेंमुनिनेहिंसा स्वरूपथी हती तेअनुबंधेअहिंसाकही तेमजजिन पूजा तथाअपवादपदादिकें वर्त्ततामुनि वलीशीलव्रतादिक जेममुनिने अनुत्तरके० उ-त्कृष्टपुण्यआपीने एटलेएजिनपूजादिकरणी यद्यपिकिंचितमात्र स्वरूपथीसावद्यछे अने शीलव्रतादिकत्ते स्वरूपथीनिरवद्यछे पणएवेभेदवालाने अनुबंधे अहिंसानुंज फल आपे तेमाटे एमकह्युंजे अनुत्तरपुण्यआपीने दिएके० आपे शिवपदके० मोक्षपद जे बहुखेमके० घणुंक्षेमछेजिहां एटलेपरंपरायें सर्वसिद्धनुं देनारछे ॥ १४ ॥

एहभेदविणएकअहिंसा ॥ नविहोवे थिरथंभ ॥ यावत
योगक्रियाछेतावत ॥ बोल्योछेआरंभ ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध एत्रणभेदेहिंसा तथाएत्रणभेदे अहिं-सा ते जाण्याविना एकलीजअहिंसासामान्यप्रकारें माने ते नविहोवेके० नहोयथिरथं-भके० थिरभावे एटलेएकलीअहिंसाछेरेनही शामाटेके यावतयोगक्रियाछेके० ज्यांलगे मन वचन कायानायोगनीक्रियातेचलनक्रियाछे तावतके० तिहां लगें बोल्योछेके० क-ह्योछे आरंभके० कर्मबंध एटलेपोतपोताना गुणठाणानीमर्यादा माफक तेरमा गुण-ठाणालगें कर्मबंधछे अन्यथाइरियापथिकाबंध बेसमयनी स्थितिनो केमकह्योछे तेमाटे एकली अहिंसाकहेवीतेकाम न आवे पणतेनाभेदसमजे तो सर्वछेकाणेजोडे ॥ १५ ॥

लागेपणलगवेनहिहिंसा ॥ मुनिएमायावाणि ॥ शुद्धकि
रियालागीजेआवे ॥ तेमांतोनहीहाणि ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागेछे पण लगावेनहीएटले हाथेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते माया वाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायागालीवातबोलेछे पण शुद्धक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे छे तेपोतानीमेलेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो ते अजाण्योथतो नथी तेतो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरतां हिंसाथशे तोपण उ-तरेछे प्रभुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुद्धक्रियाकरतां लागीआवेछे तेमां हाणीके० दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनिने ॥ होयअहिंसकभाव ॥ सू
क्ष्मएकेंद्रिनेंहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वभाव ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति न करी एटले देखीतो कोइ

जीव न मास्यो एटला मात्रथीज जो मुनिनेके० साधुने होयअहिंसकनावके० अहिंसकपणुं थायतो सूक्ष्मएकेंद्रिनेके० लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण शुद्धस्वनाव होवो जोइयें केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानाममात्र पण नथीकरता माटे तेतमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकनावेंपरिणम्यो तेतो शुद्धस्वनाव निरावर्णथाय पण तेएकेंद्रितो कोइए निरावर्णथता देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसानेअणकरवेज अहिंसकनथाय जमालीनीपरें अविद्धायापिहियोहिंसां ॥ हिंसाफलनाजनंनवत्येकइतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ १७ ॥

नावेंजेदअहिंसामाने ॥ तेसविजोमेंठाम ॥ उत्सर्गेंअ
पवादेंवाणी ॥ जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे जेप्राणी द्रव्यनावप्रमुख नेदेंकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते मांपण नावेंके०परिणामें जेप्राणी अहिंसामाने तेके०तेप्राणी सविजोडेठामके०सर्व जिनवाणी पोतपोताने ठेकाणेजोडे तेप्राणीथी आगमवचन एकपण दुषायनही ते नावथी अहिंसामानीने सर्वआलावाठेकाणे क्यारे जोडे ज्यारे उत्सर्गेंअपवादेंवाणीके०उत्सर्गवचन तथा अपवादवचन एबेहुयेंकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे एटले एनावजे उत्सर्गमार्गें अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांगप्रमुखनेविषे तथासाध्वी प्रमुख पाणीमां वहेती जाणेतो काढे तथा एकमहिना मध्ये बेनदीउतरवी इत्यादिक अपवाद आज्ञा पण प्रनुयेंकरीछे तोए सर्वउत्सर्ग अपवाद नावजाणे तेसर्व वचन ठामेजोडे पण मूर्ख शुंजाणे ॥ १८ ॥

कोइकहेउत्सर्गेंआणा ॥ गंदोछेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थें ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेछेजे उत्सर्गमार्गेंचालवुं तेज आज्ञाछे पण अपवाद ते गंदोछे एटलेपोतानीमतिकल्पनाछे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेछे ते मिथ्याके०खोटुंछे अणपामेंअर्थेंके०अर्थजाण्याविना एमकहेछे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयते साधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एबंने विधिवादछे ते सर्वजीवने साधारणछे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युं, तेमाटे अपवाद पण आज्ञाछे पणगंदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणेजेमनावेंआणा ॥ तेमतसकारणतेह ॥ कार्यइ
छतोकारणइछे ॥ एछेशुनमतिरेह ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेछेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंछे के जेअपवाद तेका-

रण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमनावेआणाके०उत्सर्गें आज्ञाछे एटले नावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीयें तेमाटे जेम उत्सर्गें आज्ञाछे तेमतसकारणतेहके०तेमजते उत्सर्गनुंजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके कार्यने इछतोथको कारणपण इछे अनेजो कारणछेरेतो कार्यपणछेरें जोकारणनहीतो कार्य किहांथीआवे एरीतेमाने तेजशुनमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थवीजी रीतेकरीयेंछैयें जे इहांढुंढकलोकएमकहेछे जेअमारेतोनावनिक्षेपतेवंदनाकरवायोग्यछे पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षेपावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण देछे जेमुख्यपणे जेमनावेआणाके०नाव निक्षेपे आज्ञाछे एटले नाव निक्षेपो वांदवायोग्यछे,तेम तस कारणके०तेमज ते नावनां कारणजेनामादित्रण निक्षेपातेपण वांदवायोग्यछे केमके जेकार्यनेइछशे तेकारणने इछशे अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशे नहीं एज शुनमतिनी रेखाछे एटले जे नाव निक्षेपोमानशेतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोनावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयुं ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादें ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतोमुनिनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ पंचकल्पमांहे एहवुंवचनकह्युंछे के अपवादमार्गते जिनाज्ञानुंमूलछे यतः अववाउववहारो ॥ आणामूलंजउनवेतिछं ॥ इतिवचनात् माटे मुनिनेतो ते मिश्र पक्षघटेनही रुडोनथी तेअनुकूलनथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायेंमिश्रपक्षतानथी तेहिजआगलीगाथामांदेखाडेछे ॥ २१ ॥

अपुनर्बंधकथी मांडिनें ॥ जावचरमगुणठाण ॥ नावअ
पेक्षायेंजिनआणा ॥ मारगनाषेजाण ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ फरीबंधनथी फरवो तेने अपुनर्बंधककहीयेते अपुनर्बंधकजेचोथुंगुणठाणुं तिहांथी मांडिने जावचरमके०छेल्लाअयोगीकेवली चउदमा गुणठाणालगें इहांअपुनर्बंधकशब्दें चोथुंगुणठाणुं जाणीयेंछैयें जेकारणे अंतःकोमाकोडनी स्थितिकरीने कदापिफरी मिथ्यात्वगुणठाणेआवेतोपण सितेरकोडाकोडीनीस्थितिफरी नबांधे तेमाटे अपुनर्बंधककहीयें तथा उपाध्यायजीयेंपण सवासोगाथाना स्तवनमध्ये एवीगाथाकही छेके, जेजेअंशेरेनिरूपाधिकपणुं ॥ तेतेजाणोरेधर्म ॥ सम्यक्दृष्टीरेगुणठाणाथकी ॥ जाव लहेशिवशर्म ॥१॥ एगाथाने अनुमानेपण एमजजणायछे पछीतो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुतकहे तेप्रमाण तथाउपाध्यायजीयेंस्वकृतअध्यात्मसारग्रंथमांपण कह्युंछे जे अपुन-

बंधकायावत् गुणस्थानंचतुर्दशं ॥ इत्यादिथी स्पष्टजणायछे केचोथागुणठाणाथी चउद-मालगें जिनआणाके०जिनेश्वरनी आज्ञाछे अने जाणपुरुषते एनेज मार्ग कहेछे तेस-वैजाव जावनीअपेक्षायें जाणवा अन्यथाचोथागुणठाणाप्रमुखनेविषे तोमहाविजाव-मांबेठोछे पण जावनीअपेक्षायें जिनआणाछे इतिजावः ॥ २२ ॥

एकअहिंसामांजेआणा ॥ जाषेपूरवसूरि ॥ तेएकांतम
तिनविग्रहियें ॥ तिहांनयविधिछेजूरि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तथाशास्त्रमां एकली अहिंसामां आज्ञाछे जेम सवेजीवानहंतव्वाइतिआ चारांगादिकवचनथी एमपूर्वाचार्य यद्यपिकहेछे तथापि एपाठ एकांतमतिके०एकांतपक्षे नविग्रहियेंके०अंगीकारनकरीयें तेमजतेअहिंसापण स्याद्वादमतें अंगीकार करीयें जेम मुनिराज नवकोटीपच्चरकाण करीने नदीउतरेछे अनेपच्चरकाण करती वखते नदीमो-कलीतो राखीनथी तोते पच्चरकाण स्याद्वादेछेपणएकांते नथी एम जाणवुं तेमाटे इहां नयविधिछेजूरिके०तेअहिंसानेविषे नयनोविधिघणोछे तेतो जेनयनीवात समजे तेजाणे एटलेअहिंसाते अनेकप्रकारनीछे ॥ २३ ॥

आतमजावहिंसनथीहिंसा ॥ सघलाएपापस्थान ॥ तेहथ
कीविपरीतअहिंसा ॥ तासविरहनुंध्यान ॥ मन० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजवात देखाडेछे आतमजावहिंसनथीके०जेकरणीकरतां पोतानोआ-त्मजाव हणाणो तो तेमां हिंसाके०हिंसालागे तथाआत्मजावहणातांथकांअढारे पा-पस्थानकलागे अने तेहथकीके०ते आत्मजावहणायाथकी विपरीतके०आत्मजावजिहां नहणाय ते अहिंसाके०दयाकहीयें तासके०तेपापस्थानकना विरहनुंध्यानएवीएजाव-अहिंसाछे एपदअहिंसानुंविशेषणछे ॥ २४ ॥

तसउपायजेजेआगममां ॥ बहुविधछेव्यवहार ॥ तेनिःशे
षअहिंसाकहियें ॥ कारणफलउपचार ॥ मन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तसके०तेआत्मजाव नहणवाना उपायके०प्रकार जे जे आगममां के०सि-द्धांतमां कह्याछे एवाव्यवहारते बहुविधछेके०अनेकप्रकारनाछे दान देवपूजा पडिक्कमणा पोसहइत्यादिकअनेकछे अने जोउपरनी मूलगाथानोपाठ बिहुविधहोयतो एमअर्थक-रीये जे उत्सर्ग तथा अपवाद एबेप्रकाररूप व्यवहारछे तेनिःशेष के०समस्त जेटला आत्मानहणाववाना प्रकारछेतेअहिंसाकहियें एटलेएजावजे अपवादपणआत्मा नह-णाववानुंकारणछे तथादान देवपूजाप्रमुखपण आत्मानहणाववानाकारणछे तेने अहिं-

साकहीयें एमस्तवनकरनारे ठेराव्युं तेवारे अपवादने गंदोछे अनेउत्सर्ग तेआज्ञाछे एरी-तेपूर्वे प्रतिवादियें कह्युंहतुं तेदूरकर्युंइतिभावः॥ इहांकोइकदेशेजे एअपवादप्रमुख अने-कआत्माने नहणवानाकारणने अहिंसा केवीरीते कहीयें तेने कहेछे के कारणनेविषे फ-लउपचारके०कार्यनोउपचार करीयें छेयें यथातंडुलान् वर्षतिपर्जन्यइतिन्यायात् ॥२५॥

जीवअजीवविषयछेहिंसा ॥ नैगमनयमतउत्त ॥ संग्रह
व्यवहारेंषटकायें ॥ प्रतिजीवेंऋजूसूत्त ॥ मन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वे कह्युंहतुंजे अहिंसामां नयनाप्रकार घणाछे तेदेखाडेछे तेमां प्रथम नैगमनयआश्रीजीवनेविषे तथा अजीवनेविषे हिंसाकहेछे ते नैगमनय एमकहेछेजे जेमलोकमां अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीवघटनेहण्यो घटनोविनाशकर्यो इत्यादिकहिंसाशब्द सघले प्रवर्त्तेछे तथा संग्रहनय अनेव्यवहारनयएबेहुनयनेमते छकायनेविषे हिंसामाने पणजे अजीवनीहिंसा तेने हिंसामानतानथी इहांसंग्रहनय नाबेभेदछे एकदेशग्राहीसंग्रह बीजोसर्वग्राहीसंग्रह तेमांसर्वग्राहीसंग्रहतो नैगमन यमां भव्यो माटे देशग्राहीसंग्रह इहांलीधोछे हिंसाशब्द अजीवमां प्रवर्त्ततो लीधो नथी तेमाटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तो जेरीतें लोकमाने तेरीतें एवेनयपण माने माटे लोकपण छकायने हिंसामानेछे तेमएबेनयवादी पणकहेछे तथा ऋजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवेंके० जीवजीवप्रतें भिन्नभिन्न हिंसामानेछे एमउंघनिर्युक्तिनीवृत्ति मध्येकह्युंछे तेआगलएज गाथामां कहेछे तथाच तद्देशःतत्रनैगमस्य जीवेष्वजीवेषुहिं सा तथावक्तारोलोकेदृष्टाः यडुतजीवोनेनहिंसितोविनाशितस्तथा घटोनेनहिंसितोवि-नाशितः ततश्चसर्वत्रहिंसाशब्दनुवर्तनात् जीवेष्वजीवेषुचाहिंसानैगमस्यअहिंसाप्येवमे-वेति संग्रहव्यवहारयोःषट्सुजीवनिकायेषु हिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीद्रष्टव्यःसामान्य-रूपश्चनैगमातर्भावि व्यवहारश्चस्थूलविशेषग्राही लोकव्यवहारणशीलश्चायंतथा चलो-कोबाहुल्येनषट्स्वेवजीवनिकायेषुहिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीच्छतीतिऋजुसूत्रश्च प्रत्येकंप्र-त्येकं जीवेजीवेहिंसां व्यतिरिक्तामिच्छतीति हवेशब्दार्थलखीयेंछेयेंजीव अजीवनेविषे नैगमनयने मतेहिंसाकहेवी एजुत्तके०युक्तछे अनेसंग्रहतथा व्यवहारनयनेमते छकायने विषेज हिंसामानेछे तथाऋजुसूत्रनेमते जीवजीवप्रतेहिंसाजूदीजुदीमानवी ॥ २६ ॥

आतमरूपशब्दनयतिने ॥ मानेएमअहिंस ॥ उंघवृत्ति
जोइनेलहियें ॥ सुखजशलीलप्रसंस ॥ मन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ आतमरूपके०आत्मातेजस्वरूपछे माटे हिंसाअथवाअहिंसाते आत्मारूपमा-

नेछे शब्दनयतिनेके०शब्दछेप्रधान जेने एवात्रणनय१शब्द२समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रण नयमानेछे जेपोतानो आत्मा प्रमादीथयो त्यारे आत्मातेहिंसा अने तेजआत्मा जेवारे अप्रमादीथयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा यतः आयाचेवअहिंसा ॥ आयाहिंसतिनिछउएसो ॥ जोहोइअप्पमत्तो ॥ हिंसउअहिंसउइयरो ॥१॥ इतिउंघनिर्युक्तिवचनात् पाछलात्रणनयनिश्चयना घरनाछे माटे उंघनिर्युक्तिनीवृत्तिनोपाठपणएमछे यथा ॥ शब्दसमभिरूढैवंभूताश्चनयाआत्मैवहिंसामिछंतीतिए जेमहिंसा सातनये फलावी तेमज अहिंसाके०अहिंसापण फलावियें अहिंसाप्येवमेवेतिउंघनिर्युक्तिवृत्तिवचनात् ए हिंसाना तथाअहिंसानासातप्रकार ते उंघनिर्युक्तिनीवृत्ति जोइने सुख जशनीलीलातथा रुडीप्रशंसाते लहियेंके०पामिये एटलेयथार्थ जाणवाथीएटलावानां पामियें ॥ २७ ॥

॥ ढालनवमी ॥

॥ चैत्रीपुनमअनुक्रमे ॥ एदेशी ॥

कोइकसूत्रजआदरे ॥ अर्थनमानेसार ॥ जिनजी ॥ आपमतिअ
वलुंकरे ॥ भूलातेढगमार ॥ जिनजी ॥ तुजवयणेंमनराखीयें ॥१॥

अर्थ ॥ आठमीढालने अंतेसातनयेंकरी हिंसाफलावी तेनयेंकरी हिंसातो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रनी टीका चूर्णितथाभाष्य अनेनिर्युक्ति मानीये तो समजायपण केवलसूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी नसमजाय केमके जेसूत्रहोय तेसूचनामात्रहोय माटेजे अर्थनेनथीमानता तेने शिक्षादेवा सारु नवमीढालनेआठमीढालसाथेंसंबंधकरी कहेछे जे कोइकके०जेढूंढक लुंपाक नामनदेवायोग्य माटेकोइक एवुं नामकह्युं ते सूत्रजआदरेके०केवलसूत्रजमानेछे इहां एकवारते वृत्त्यादिकनिषेधवाचकछे तथाअर्थके० टीकाप्रमुखतेनथीमानता जिनजीके०हेरागद्वेषनाजीतणहारहेवीतराग तेकेवाछे आपमतिके०स्वछंदेंचालणहारछे पणआगमानुयायी चालतानथी अवलुंकरेके०जेटलुंकार्य करेतेटलुं अवलुंकरेछे माटे तेमूर्खगमार भूलाभमेछे कारणके सूत्रतोगणधरनारच्या अने अर्थतो तीर्थंकरनोकह्यो ॥ यतः ॥ अछंभासइअरहा ॥ सुत्तंगंछंति गणहरानिउणं ॥ इतिवचनात् तेमाटे अर्थनी ना कहेतां तीर्थंकरनीआशातनाकरेछे माटे अवलुंकरेछे माटे हेप्रभुतमारेवचने मनराखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमालोपेपापीआ ॥ योगअनेउपधान ॥ जि० ॥ गुरुनो
वासनसिरधरे ॥ मायाविअज्ञान ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली तेलोक प्रतिमाने लोपेछे एटले प्रतिमाउथापेछे पणकेवाछे जेपापी-

आके०पापीछे शामाटे जेश्रीसमवायांग तथाभगवति तथाज्ञाता अनेउपासक रायपश्रे णी जीवाभिगम जंबुद्वीपपन्नति प्रमुखनेविषेसाक्षात्प्रतिमाकहीछे तेनेलोपीउत्सूत्रबोलेछे अनेजे उत्सूत्रबोलवुं तेश्रीभगवतिसूत्रमां पापकही बोलाव्युंछे तेमाटे पापीया कह्या तेप्रतिमानोअधिकारतो उपाध्यायजीयें हुंडीना स्तवनमध्ये कह्योछे माटे इहां नथीकह्यो वली योगवहेवा तेने लोपेछे कारणके श्रीनंदिसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्र अनेउत्तराध्ययन ठाणांगप्रमुखसूत्रनेविषे योगपणकह्याछे तेपणउत्सूत्रबोलीलोपेछे उपलक्षणथी श्रावकने सूत्रभणावे तेपण निशीथ तथा ठाणांग सुयगडांग व्यवहार उपासकप्रमुखमां नाकहीछे ते वातो पण हुंडिनास्तवनमां आणीछे तेथीअहींनथी कहेता माटे पापीछे वली उपधानलोपेछे केमके श्रीमहानिशीथप्रमुखसूत्रमां उपधानकह्याछे तेलोप्यामाटे पापीकह्या वली गुरुनोवास मस्तकनेविषे नधरे एटलेए भावजे समवायांगसूत्र तथाश्री अनुयोगद्वारसूत्रप्रमुखनेलेखे तथा आवश्यकनिर्युक्तिप्रमाणछे तेमां गुरुनोवास कह्योछे तेलोप्यो माटेपापीकहियें वलीमायावीछे कपटे करी लोकने भरममांनाखेछे अक्षरार्थ मरडवो तेवक्रता अनेजे वक्रताते माया वली अज्ञाने भर्याछे केमके व्याकरणादिकभण्याविना सूत्रवांचेछे तेनघटे यतः अहकेरिसकंपुणाइं॥सच्चंतुभासियवंजंतंदवेहिं॥पज्जवेहिंयगुणेहिं॥कम्मेहिंबहुविहेहिं॥सिप्पेहिं आगमेहिंयनामक्खायनिवाउवसग्गतद्धियसमाससंधिपद हेउ जोनिय उणादिकिरिया विहाण धातु सरविभत्ति वन्नजुत्तं तेकल्लंदशविहंपिसच्चं जहभणियं तहय कमुणाहोइ डुवालसविहायहोइभासावयणंपियहोइसोलसविहं इत्यादि प्रश्नव्याकरण सूत्रमध्येपाठछे माटेजेजाणेतेज्ञानी अन्यथा अज्ञानीकहियें ॥ २ ॥

आचरणातेहनीनवी ॥ केतिकहीयेंदेव ॥ जि० ॥ नित
त्रुटेछेसांधता ॥ गुरुविणतेहनीटेव ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेढुंढीआनी आचरणाजे बाह्यक्रिया तेसर्व नवीजछे मुखबांधीबाहेरनिकलवुं झांडो राखवोजनही वीपाकसूत्रने विरोधी तथा भगवति दशवैकालकि प्रश्न व्याकरणादिकसूत्रथकी विरोधी आचरणा तेहनीकेतिके०केटलीकहीयें एटले घणीछे माटेहेदेव हेआत्माराम हेपरमानंदविलासी वलीतेने निरंतर सांधतांथकांत्रुटेछे एटले लोक उखाणोछे जे नवसांधे ने तेरत्रुटे तेउखाणो एनेघरेंछे वलीपूजामां हिंसाबतावे अने पोतें मरे तेवारेशुंकरीयें तथा पोतानेवांदवा आवे तयादीक्षामहोत्सवकरे तेमां हिंसाथायके नथाय इत्यादिक बहुअधिकारछे पणकेटलोलखाय एमएकवात सांधवा गयो एटले ठामठामथी त्रुटीगयुं जेमाटे गुरुविना तेनीखराबटेवपडीगयीछे जोगुरुपरं-

परागत होयतो कांइअटकेनही क्यारें खलायनही संप्रदायविना ठामठामअटकेछे एटले एन्नावजे नगुराछे माथेकोइनिकल्यो त्यारेपणगुरुनइतो ॥ ३ ॥

वृत्तिप्रमुखजोइकरी ॥ न्नाषेआगमआप ॥ जि० ॥ तेहज
मूढाउंलवे ॥ जेमकुपुत्रनिजबाप ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वृत्तिके०टीका अने प्रमुखशब्दें चूर्णिनिर्युक्ति आदिलेवा तेजोइकरीने आपके०पोतेआगमने न्नाषे एटले वृत्तिप्रमुखछानीराखी तेना न्नावजोइ आगमनोअर्थ ठीकबेसाडे पछीलोकआगल एकलुं सूत्रवांचे एमतेअज्ञानी टीकाप्रमुखनेउंलवे कोइपूछे जेटीकानिर्युक्तिमानोछो तेवारें कहेशेजेनथी मानता जेम कुपुत्रहोयते पोताना बापने उंलवे एटले बापहोएसादो अनेपोतेहोए छेल पछीकोइपुछेजे आ तमारा शा सगा छे तेवारें आडोअवलोजवावआपे तेमटीकाप्रमुखनो उपकार अनेतेनेज न माने ॥४॥

वृत्त्यादिकअणमानता ॥ सूत्रविराधेदीन ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तदुन्नयथकी ॥ प्रत्यनीककह्यातीन ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली वृत्त्यादिकके०वृत्तिचूर्णिन्नाष्यने अनुसारें प्रकरणचरित्रादिकनेअणमानताथका तेदीनके०न्नावदयाकरवायोग्य सूत्रनेज विराधेछे सूत्रनीज आशातनाकरेछे श्रीसमवायांगसूत्रें तथानंदिसूत्रेंकह्युंछे आयरेणंपरित्तावायणासंखिज्जाअणुउंगाथारासंखेज्जावेढासंखेज्जा सिलोगासंखेज्जाउं निज्जुत्तीउंसंखेज्जाउं पडिवत्तिउंसंखेज्जाउं संघेयणीउं इत्यादिककह्यांछे तेमानेनही तेवारें सूत्रनेविराधेजछे वली १ सूत्रप्रत्यनीक २ अर्थप्रत्यनीक ३ तदुन्नयप्रत्यनीक एश्रीठाणांगसूत्रेंकह्याछे यतः सुयंपडुच्चतउ पडिणीयायतंसुत्तपडिणीए अछपडिणिए तदुन्नयपडिणीए एत्रीजाठाणाना चोथाउद्देशेंकह्युंछे एमज न्नगवतिसूत्रना आठमाशतकना आठमाउद्देशामांकह्युंछे तो अर्थप्रत्यनीकतेनिर्युक्त्यादिकजेनथीमानता तेनेकहीयें तेशिवायअर्थप्रत्यनीक तथातदुन्नय प्रत्यनीक तेबीजाकोनेकहीयें ते बतावो ॥ ५ ॥

अक्षरअर्थजएकलो ॥ जोआदरताखेम ॥ जि० ॥ न्नगव
इअंगेन्नाषिउं ॥ त्रिविधअर्थतोकेम ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोकेवल एकलो अक्षरार्थ मानीयें एटले जेटलुं सूत्र तेटलोज शब्दार्थ आदरीयें मानीयें अनेतेम मानता तमने खेमके०कुशलछे तोन्नगवतिसूत्रमांत्रिविधके० त्रणप्रकारें व्याख्यान अर्थ कहेवो कह्योछे तेकेमघटे तथा अनुयोगद्वारें वे प्रकारें अनुगमकह्योछे सत्ताणुगमेय निज्जुत्तिअणुगमेय तथानिज्जुत्तिअणुगमेतिविहेपन्नतेतंजहा

निज्जुत्ति अनुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसेय एगाथाअनुयोगद्वारमांहे तेनाअर्थकेमकरशोइतिभावः ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपहेलोबीजो ॥ निज्जुत्तीयेमीस ॥ जि० ॥ निरवि
शेषत्रीजोवली ॥ इमभाषेजगदीश ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनुं व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यनेदेवो जेम नमोकेनमस्कारथाउ अरिहंताणंके०अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते शब्दार्थअवलिरीते आवव्यो तेवारें बीजोके०बीजीवार अर्थकहे ते निज्जुत्तियेंमीसके० निर्युक्तिसहित अर्थ कहे हेशिष्य ते अरिहंतचारप्रकारना छे नाम, स्थापना, द्रव्य, अनेभाव भेदें यतःनामजिणाजिणनामा ॥ ठवणजिणापुणजिणंदपडिमाउ ॥ दवजिणाजिणजीवा ॥ भावजिणासमवसरणछा ॥१॥ इत्यादिक एम बीजीवार अर्थआवव्यो पछी त्रीजीवार फरी एजपदनो अर्थ निरविशेषके०समस्तरीतें कहे एटलेसंगेप्रसंगे सर्वेकहे नैगमादिकनयपण शक्तिहोय तोफलावे तेना साधनकहे उदाहरण जे अरिहंतने नमस्कारनुं फलकहे इत्यादिक एटले एभावजे प्रथम अर्थमां टीकाचूर्णि अने बीजाअर्थमां निर्युक्ति तथात्रीजाअर्थमां भाष्यआव्युं एम हेजगदीशतुं भाषेके०भगवतिनाशतक २५ माना त्रीजा उद्देशामां कहेछे सुत्तथोखलुपढमो॥बीउनिज्जुत्तिमीसउभणीउ ॥ तइउयनिरविसेसो ॥ एसविहिहोइअणुउगो ॥ १ ॥ एगाथा नंदिसूत्रमध्येपणछे तेमाटेअर्थप्रमाणकरेतो खेमथाय ॥ ७ ॥

छायानरचालेंचले ॥ रहेथितितसजेम ॥ जि० ॥ सूत्रअ
रथचालेचले ॥ रहेथितितसतेम ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमनरके०पुरुषनीछाया तेजेवारें पुरुष चाले तेवारे तेनो छांयडो पण चाले अने रहेके०पुरुषऊभोरहे तेवारे तसके०तेछायानीपण स्थितिके०रहेवुं थाय जेम ए तेम सूत्रअने अर्थमांपण एमज भाववुं सूत्रनीचाले अर्थ चलेके०चाले रहे के०सूत्ररहे तेवारें तसके०ते अर्थनुं पण थितिके०रहेवुंथाय ॥ ८ ॥

अर्थकहेविधिवारणा ॥ उभयसूत्रजेमठाण ॥ जि० ॥ तेम
प्रमाणसामान्यथी ॥ नविप्रमाणअप्रमाण ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखहोय तेजसमजावे अनेविधिके०विधिवाद तथा वारणाके०निषेधसूत्र तथा उभयसूत्रके०विधिसूत्र तथानिषेधसूत्र एबेहु सूत्रजेमठाणके०ठाणांगसूत्रमध्येकह्यांछे यथा॥नोकप्पइनिग्गंथाणवानिग्गंथिणवाइमाउं ॥ उद्दिहाउ

गणियाअ उचितजिताउंपंचमहण्णवाउंमहानदिउं अंतोमासस्स डुखुत्तोवा तिखुत्तोवाउ-त्तरिए संतरित्तए वा तं गंगाजऊणासरसइ एरावतिमही इति एरीते निषेधकरीने वली लगताज सूत्रमांआज्ञाकरी यथा पंचविहिंठाणेकप्पंतितंजयंसिवाडुन्निक्खंशिवापवहे जं च णंकोइतिदउग्घंसिवाएज्जमाणंसिमहतावायणारितेहिइति एवे सूत्रकह्यां एकविधिनुं एकनिषेधनुं एवेमांकयुंसूत्रप्रमाणकरियें अनेकयुंसूत्र अप्रमाणकरिये इहां एके अप्र-माण नथायइतिन्नावः हवे पठवाम्नाना बेपदनो अर्थकहेठे तेमके० तेरीतेजेम ठाणांग मध्ये बेहुसूत्र देखाड्या तेम सामान्यप्रमाण जेसूत्रठे ते सूत्रथी नविप्रमाणअप्रमाणके० इहांसामान्यपदठे तेमाटेजाणियेंठैयें जेविशेषपद बाहारथीलावीयें तेवारेएम अर्थथाय जेविशेषप्रमाण तेटीकाप्रमुख तेनविअप्रमाणके०अप्रमाणनथी एटलेएन्नावजे प्रमाण बे प्रकारना एकसामान्यप्रमाण बीजुं विशेषप्रमाण तेमां सामान्यप्रमाण तेसूत्रकहीयें जेमां सामान्यपणे सूचनामात्रें कह्युं होय अने विशेषप्रमाणते अर्थटीकाप्रमुखनेकहीयें जेमां विस्तारीनेकह्युंठे एवेप्रमाणठे तेमां सामान्यप्रमाणखरुं अने विशेषप्रमाणखोटुं एम नकहेवाय सामान्यप्रमाणथी विशेषप्रमाण तेअप्रमाण केमथाय इतिन्नावः ॥९॥

अंधपंगुजेमबेमले ॥ चालेइछितठाण ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तेमजाणीयें ॥ कल्पन्नाष्यनीवाण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम अंध लोचनहीन अनेपंगुके०चरणहीन एवेमलीने चालेइछितठाणके० वांछितस्थानकनेविषे चाले तेमसूत्र तथाअर्थजे टीकाप्रमुख मलीने यथार्थ स्थानके अर्थ जोडीशकीयें एमकल्पन्नाष्यनीवाणीठे ॥ १० ॥

विधिउद्यमन्नयवर्णना ॥ उत्सर्गहअपवाद ॥ जि० ॥ तडुन्नय
अर्थेजाणीयें ॥ सूत्रन्नेदअविवाद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ न्नयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसूत्र ६ अपवादसूत्र ७ तडुन्नयसूत्र एसर्वेसूत्रनान्नेदनीखबर अर्थथीजणाय नहीतो शीखबर पडेजे आसूत्रते शीअपेक्षानुंठे यथा ॥ संपत्तेन्निक्खुकालंमि ॥ असंन्नंतोअ मुछिउं॥इ-म्मेणकम्मजोगेणं ॥ न्नत्तंपाणंगवेसए ॥१॥ एदशवैकालिकनापांचमाअध्ययने कह्युं इ-त्यादिकविधिसूत्रकहीयें तथा डुमपत्तयपंडुयए ॥जहानिवडइरायगणाणअच्चए ॥ एवं-मणुआणजीवियं ॥ समयगोयमामापमायए ॥ इत्युत्तराध्ययननेदशमाध्ययनेकह्युं इ-त्यादिकउद्यमसूत्रकहीयें अने नरकनेविषे मांसरुधिरादिकवर्णवीकहेवा यथा ॥ उत्त राध्ययनेमृगापुत्रअध्ययनमां तथा सुयगडांगना नरकविन्नत्तिअध्ययनमां तेपरमार्थेमां-सादिक नथी पणन्नयसूत्रठे यतः नरएसुमंसरुहिराइ ॥ वज्जंपसिद्धिमित्तेणं ॥ न्नयहेउ-

इहरतेसिं ॥ विउव्वियपावउंनतयं ॥१॥ इत्यादिक ज्ञयसूत्र यथा रूढिछमिय समिरूढाइ-त्यादिकउववाइ ज्ञाताधर्मकथाप्रमुखनेविषे प्रायेंसूत्रछे तेवर्णवसूत्रछे वली इचेसिंछन्ह-जीवनिकायाणं मेवसयंदंमसमारंज्नेज्जा इत्यादिक छजीवनिकायना रक्षक प्रमुखआचा-रांगादिकसूत्रनेविषे तेउत्सर्गसूत्रजाणवा तथाछेदग्रंथतेप्रायें अपवादसूत्रछे अथवा न-वालज्निज्जानिउणंसहायं॥ गुणाहियं वागुणउंसमंवा ॥ इकोविपावाइविवज्जयंते ॥ विहरि-ज्जाकम्मेसुसज्जमाणो ॥ इत्यादिक अपवादसूत्रजाणवा तथा जेमां उत्सर्ग अने अपवाद साथेकहेवाय तेतङ्ज्ञयसूत्रकहीयें जेम अट्टझाणाज्ञावे समंअहिआसियवउंवाहि ॥ तप्रावंमिउंविहिणा ॥ पम्मियारपवत्तणंनेयं ॥१॥ इत्यादिकअनेकप्रकारना स्वसमय पर-समय निश्चय व्यवहार ज्ञानक्रियादिक नानाप्रकारें नयमतनाप्रकाशक सूत्रनाजेज्नेद तेअविवादपणेके०जेमांऊगडोनऊछे एरीते स्वस्थानकें अर्थथीजोम्राय ॥ ११ ॥

एहज्नेदजाण्याविना ॥ कंखामोहलहंत ॥ जि० ॥ ज्नंगंतर
प्रमुखेकरी ॥ ज्नाष्युंज्नगवइतंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तोएपूर्वोक्तज्नेद जाण्याविना ज्नंगंतरप्रमुखेकरीने कंखामोहके०मिथ्यात्वमो-हनीने लहंतके०वेदे एमज्नगवतिसूत्रमां तंतके०निश्चेंज्नाष्युंछे एटले एज्नावजेसूत्रतो विविध आशयनाहोय तेआशयनीजेवारेंमालमपडे तेवारें मनमां शंकाउपजेकेआखरुं के आखरुंएवीशंकाथाय अनेजेशंका तेमिथ्यात्वमोहनीथाय तथाचोक्तंज्नगवत्यंगे प्रथम-शतके तृतीयउद्देशके अछिणंज्नंतेसमणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेति हंताअ-छिकहणंज्नंतेसमणाविणिग्गंथा कंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेतिगोयमा तेहिंतेहिंनाणंतरेहिं दंसणंतरेहिं चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिंमग्गंतरेहिं मतंतरेहिं ज्नंगंतरेहिं णयंतरेहिं णियमंतरेहिं पमाहिणंतरेहिं संकित्ता कंखित्ता विति-गिछता ज्नेयसमावन्ना कलुसमावणा एवंखलुसमणा निग्गंथाकंखामोहणिज्जं कम्मंवे-देतिइति एनासमाधान ज्नगवतिनीवृत्तिथी जोइलेजो तेमाटेटीकाप्रमुख अर्थ जाण्याथीज सर्वसमाधानथाय आम्नायपामियें पण केवल सूत्रेंज नपामियें इहां ज्नंगंतरप्रमुखेकह्युं ते मध्यग्रहणेआद्यंतयोर्ग्रहणमितिन्यायात् णाणंतरेहिं पदपणलेवा ॥ १२ ॥

परिवासितवारीकरी ॥ लेपनअशनअशेष ॥ जि० ॥ कारण
थीअतिआदस्था ॥ पंचकल्पउपदेश ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ परिवासितके०रात्रें वासीराखवुं तेवारीकरीके०वारीने एटले मुनिने संनि-धिमात्रे पणराखवुं ते रात्रें नघटे एहवुं शुंतेकहेछे लेपनके०विलेपन अथवा कुसुमवा-सिततेलप्रमुख अने अशनके०आहारतथाअशेषशब्देंप्रमुख लेवा तेवारीने वली कार-

णथी अतिके०अत्यंतकारणे आदस्यांके०तेमुनियेंअंगीकारकस्यां एटले वासीराखवानी मुनिने आज्ञाकरी तेपंचकल्पग्रंथनो उपदेशछे उपलक्षणथी निशीथनेविषे पण कह्युंछे यतः ननुउंषधादिसंनिधिःक्रियतेनवा उच्यते उत्सर्गेणनकल्पते कारणेतुभवत्यपि तथाहिवोछिन्नमंरूबनांमयछडुज्जोयणय्यंतरउंगामघोसाइनछितछतुरिएकज्जेनलप्रइअउंतछछिन्नमंरूबेउंसहगणोपरिवासिज्जाइइतिनिशीथे तेमाटे एकारणादिक प्रकार तेटीकाप्रमुखविना जणायनहि ॥ १३ ॥

वर्षागमननिवारीउं ॥ कारणेंभाष्युतेह ॥ जि० ॥ ठाणांगे
श्रमणीतणुं ॥ अवलंबादिकजेह ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वर्षागमनके०चोमासानेकाले विहारकरवानुं निवास्युंछे श्रीठाणांगना बीजाउद्देशामध्ये यतः णोकप्पतिनिग्गंछाणंवानिग्गंछीणंवा पढमपाउसंमिगामाणुगामंडुत्तिजित्तएइति तथा कारणेभाष्युंतेहके०तेजवर्षाकालमां कारणथी विहारकरवानी आज्ञा करी तेपणठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामांकह्युंछे यतः पंचहिठाणेहिंकप्पंतितंभयंसिवा डुन्निक्खंवा जावमहतावाआणारिएहि इतितथातत्रैववासावासंपज्जोसवियाणं नोकप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणवागामाणुगामंडुइज्जितंएवंपंचहिठाणेहिं कप्पतितं णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरिय उवज्झाएवा संविसुभेज्जा आयरियउवज्झायाणवा वहिता वेयावच्चकरणयाएइति वलीएजश्रीठाणांगनेविषे श्रमणीके०साध्वीने अवलंबनके०आलंबेतो प्रभुनी आज्ञा अतिक्रमेनहि यतः पंचहिठाणेहिंसमणेनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमछतंनिग्गंथिचणं अन्नयरे पसुजातितेवा पक्खिजातिएवा उझातेज्जातत्थनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि डुग्गंसिवा विसमंसिवा पक्खलमाणिंवा पवडमाणिंवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उकुमाणिवा उवुज्जमाणिवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमइ निग्गंथे निग्गंथि णावआरुहमाणेवा उरुंभमाणेवा जावणातिक्कम निक्खत्तइत्तं जक्खतिठंजावभत्तपाणपडियाइक्खितं निग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवाणातिक्कमइ इत्यादि एउपलक्षणथी साधुसाध्वी एकस्थानके भेलावसे एवापणआलावा श्रीठाणांगमध्येछे तेकेटलाक लखाय अने वलीनवमेठाणे ब्रह्मचेराकह्या तेमांस्त्रीनाअंगोपांग जोवानहि तथा भीतने आंतरे वसवुंनहि एमकह्युं तेवाततो प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें संभास्योनहि तेथी अमे लख्यो पण नहि तो वृत्यादिकविना केम बंधबेसेइतिभावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकंत ॥ जिन० ॥ सुयगडे
तेकेमघटे ॥ विणवृत्यादिकतंत ॥ जिन० ॥ तुऊ० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके०नथीकह्यो बंधतणोएकंतके०कर्मबंधनो एकांतनथी एटले एज्ञावजे श्रीसुयगडांगसूत्रमध्ये आधाकर्मी आहारकरतां कर्मबंधाय पणखरुं अने वली नवंधाय एम पण कह्युं तेकेमघटे यतः आहागडाइभुंजंति ॥ अणमणेसकम्मुणा ॥ उवलित्तेवियाणिज्जा ॥ अणुवलित्तेतिवापुणो ॥१॥ एतेहिंदोहिंगणेहिं ववहारोणविज्जइ ॥ एतेहिंदोहिंगणेहिं ॥ आणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एसुयगडांगना २१ माअध्ययनेछे माटेएवीवातोते टीकाप्रमुखविना सूत्रकेमस्पष्टथाय ॥१५॥

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह ॥ जिन० ॥ तुऊ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके०विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख तेसूत्रमां जडेनही अथवा जेम वीस विहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी ऋषज्ञादिकना गणधरपण सर्वसूत्रमां नथी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनथी तथा जिनके० चोवीसतीर्थंकरना जनकादिके० मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्व सूत्रमां नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उज्ञयटंक पडिक्कमणुंकरवुं तेहनोजे क्रमके०अनुक्रम ते जे अमुक पछी अमुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रनहीके० मात्रएकलासूत्रमां नलाज्ञे एवी घणीवातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिक माने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामियें ॥ ज्ञावसंकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारतां ॥ होवेसर्वसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके०समस्त अनिबद्धके० अणीबंद्ध तेधुरथी ते छेडालगें सर्ववात केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र कहे संपूर्णतो टीकाप्रमुखमां लाज्ञे अथवा अनिबद्धके०सूत्रमांनथी बंधाणा एवा ज्ञावतो घणा रह्याछे अत्यंत थावरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षेगयां इत्यादिक वगर बांध्या पांचसो आदेशछे तेसर्व केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय तेमाटे गुरुआदिकना मुखनी वाणी सांज्ञलीयें जे संप्रदायिक होय तेधारतांथकां होवेसर्वसुबद्धके० सर्वसुबद्धथाय सुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा ॥ सघलीजेहनेहाथ ॥ जि० ॥ तेसुवि
हितअणमानतां ॥ केमरहेसेनिजआथ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख जेगुरुसंप्रदायनी परंपरा तेसर्वजेने हाथेछे एवाजे सुविहित शुद्धमार्गना प्ररुपनार तेहने अणमानतां एटले अंगीकार कस्याविना केम रहेशे? निजआथके०पोतानी समकितरूप जे लक्ष्मी तेशीरीते रहेशे ॥ १७ ॥

सद्गुरुपासेशिखतां ॥ अर्थमांहेनविरोध ॥ जि० ॥ हेतुवाद
आगमप्रतें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे स्वछंदपणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे टीकाप्रमुख तेधारवां तेमां कांइविरोधनथी पण तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरोधनथी अने अर्थमां विरोधछे ते खोटुंछे. गुरुमुखे शीखतांथकां कांइ विरोध छेजनही तथा एरीते गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सिद्धांत तेनेजाणे जेथकीसुबोधके०जलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थेमतन्नेदादिकें ॥ जेहविरोधगणंत ॥ जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे ॥ जोजोशेएकंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थेके०टीकाप्रमुखनेविषे मतन्नेदादिकेंके०कोइमतन्नेदें कोइ वाचनांतरन्नेदे न्नेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलती नथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसूत्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे तेकेम नथीजोता इतिन्नावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही ॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि० ॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज सूत्रना विरोधिपणाने देखाडेछे जे देवानंदानी कुखथी लेइने त्रिसलादेवीने कुखे संहरताके०संहस्या तेसंहरतां वीरस्वामीयें जाण्युंनही एमश्रीकल्पसूत्रमां कह्युंछे यथा ॥ साहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ ॥ साहरिज्जमाणेनजाणइ ॥ साहरिएमित्तिजाणइ इतिपाठात् तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीये संहस्या तेअवसरे प्रथम अंगजे श्रीआचारांगतेमां ज्ञाननो जल्पके०शब्दछे एटले एन्नावजे संहरतां थकां प्रज्ञुयेंजाण्युं एमकह्युंछे तथाचतत्सूत्रं साहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ साहरिमित्तिजाणइ साहरिज्जमाणेविजाणइ सेसमणोउसोइतिपंचदशेन्नावनाध्ययने इतिविरोधः ॥ २१ ॥

रुषनकूटअमजोयणो ॥ जंबूपन्नत्तिसार ॥ जि० ॥ वारव
लीपाठांतरें ॥ मूलकहेविस्तार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली रुषनकूटनुं आठयोजन मूलविस्तारछे एमजंबूद्वीपपन्नत्तिसूत्रमां कह्युंछे यतः एवणंउसनकूडेनागकूडेपन्नते अठजोयणाइंउर्द्धं उच्चत्तेणं दोजोयणाइं उवेहेणंमूले अठजोयणाइंविरकंनेणंमझेछजोयणाइंविरकंनेणं उवरिचत्तारिजोयणाइं विरकंनेणंइत्यादिक जंबूद्वीपपन्नत्तिनोपाठछे सारके०प्रधान एहवी जंबूद्वीपपन्नत्तिकहेछे गाथानोअर्थअन्वयकरी करियें एटले एकपाठतो ए कह्यो वली एज जंबूद्वीपपन्नत्तिमां पाठांतरे वीजोपाठछे तेमां वारजोजन मूलेंविस्तार कह्योछे तेंकेम मले एकज सूत्रमां वेपाठशा? सर्वज्ञना ज्ञानमांफेरनथी तोसंदिग्धवचन केमहोय इति नावः तथाचतत्पाठः मूलेवारजोयणाइंविरकंनेणं मझेअठजोयणाइंविरकंनेणं उप्पिंचत्तारिजोयणाइंविरकंनेणंइत्यादिकपाठजोजो केवलसूत्र मेलवी आपजो ॥ २२ ॥

सत्तावनसयमल्लिनें ॥ मणनाणीसमवाय ॥ जि०॥ आठ
सयाज्ञाताकहे ॥ एतोअवरउपाय ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यवज्ञानी श्रीसमवायांगसूत्रमध्ये कह्याछे यतः मल्लिस्सणंअरहंतोसत्तावन्नंमणपज्जवन्नाणीसयाहोत्थाइति ॥ तथा श्रीज्ञातासूत्रमध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यवज्ञानी कह्याछे यथा अठसयामणपज्जवनाणीणं एम श्रीसमवायांगसूत्र तथाज्ञातासूत्र मल्युंनहीएविरोध एतो अवरउपायके०एमेलववानो उपायतो अन्यजछे तेतो गीतार्थज्ञानीजाणे ॥ २३ ॥

उत्तराध्ययनेस्थितिकही ॥ अंतरमुहूर्त्तजघन्य ॥ जि० ॥ वेदनी
यनीबारते ॥ पन्नवणामांअन्य ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त कहीछे यतः उदहिसरिनामाणं तीसइकोमाकोमिउं उक्कोसियाठिइहोइ ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१॥ आवरणिज्जाणडुण्हंपि ॥ वेयणिज्जेतहेवय ॥ अंतराएयकम्मंमि ॥ ठिइए सावियाहिया ॥२॥ इत्युत्तराध्ययनअध्ययन ३३ मामध्ये कह्युंछे. वली तेजवेदनी कर्मनी वारमुहूर्त्तजघन्यस्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमध्येकहीछे यथा ॥ सायावेयणिज्जस्स ॥ इरियावहियवंधगंपमुच्च ॥ जहन्नंमणुक्कोसेणं ॥ दोसमयासंपराइय ॥ वंधगंपडुच्चजहन्नेणं ॥ वार समुहुत्ताउक्कोसेणं ॥ पणरससागरो ॥ वमकोमाकोमिउ ॥ इत्यादिपन्नवणामध्येकह्युं तो तेउत्तराध्ययननीसाथेमल्युंनही माटे विरोध तेतोअन्यके०जुदीजवातछे॥ २४ ॥

अनुजोगद्धारेकह्या ॥ जघननिखेपाचार ॥ जि० ॥ जीवा
दिकतोनविघटे ॥ ऽव्यन्नेदआधार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ वली श्रीअनुयोगद्धारसूत्रनेविषे एम कह्युंठे के जेवस्तुना जेटला निखेपा करवानी तारीबुद्धिथाय तेवस्तुना तेटला निखेपा तुं तिहांकरजे पण कदाचित्त घणा निखेपा तुं नजाणे तिहांपण चारनिखेपातो अवश्यकरजे एटले एमआव्युंजे जघन्यथी चारनिखेपातो सर्वत्रकरवा पणचारथीओछातोहोयजनही १ नाम २ स्थापना ३ ऽव्य ४ नाव एचार अवश्यकरवा यतः जब्बयजंजाणिद्या निक्खेवं निक्खेवेनिरवसेसं ॥ जब्बवियन-जाणिद्या ॥ चउक्कयंनिक्खेवेतब्ब ॥ १ ॥ इत्यनुयोगद्धारसूत्रे तेवारे जीवादिकशब्दना निखेपा नविघटेके०घटेनही शामाटे जे ऽव्यनिखेपो न्नेदआधारके०न्निन्न आधारेंथाय केमके जेन्नावनुंकारण तेऽव्य तेवारे जीवनो ऽव्यनिक्षेपो केमथायजेन्नावजीवथवानुं कारणहोय तेऽव्यजीव कहेवाय तेतोज्ञानादिक गुणेहीणतो जीवहोयनही दव्वंपद्म-वविम्रुयं ॥ दव्वविजुयायपद्मवानञ्चि ॥ इतिवचनात् तेमाटे मंडूखनी जटाना न्नारनी पेठे समस्तधर्मरहित कोइपदार्थजनथी तोएऽव्यनिक्षेप जीवादिकमां शून्यछे आदि शब्दथी बीजापणजीवादिकलीजीयें जेम ऽव्यदेवमुनिराजनेकहियेंतेमऽव्यजीवकोने कहेशोतेनासमाधानतोपंचांगीप्रमुखथीनीकले अत्रार्थेतत्त्वार्थवृत्तिजोजो ॥ २५ ॥

एमबहुवचननयंतरें ॥ कोइवाचनान्नेद ॥ जि० ॥ एमअर्थे
पणजाणीयें ॥ नविधरीयेंमनखेद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ एरीते बहुके०घणा सइक्कोगमेवचनविरोध अल्पबुद्धिवालाने लागे एवा पाठ सूत्रमध्येछे तेकोइ स्थानकें नयन्नेदन्नेदेंव्याख्याहोय अने कोइस्थानकें वाचनान्ने-दके०वल्लन्नी तथा मथुरी एवे वाचना थइ तेथीन्नेदथयो एमउपलक्षणथीमतांतर प्र-मुख लिपिदोष पणलइये एवीरीते जेमसूत्रमांन्नेदछे तेमज अर्थेके०टीकाप्रमुखनेविषे पण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके न्नेदआवे तेमाटे टीकाप्रमुख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थबरावरछे ॥ २६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुन्नमतिकोण ॥ जि० ॥ तोले
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारके०जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अ-धिकाशुन्नमतिनाधणी कोणथया एटले एन्नावजे समुऽजेवीबुद्धिनाधणी टीकाकारतथा चौदपूर्वेनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुन्नमतिकोणथया एटले शुन्नमतिनहीज थयाइति

भावः लोकमांछखाणोछे जे खांभना खानार तेरीतना एशुभमतिजाणवा पण कोइकाले लूणजेनीमक तेअमृतने तोले आवेनही ॥ २७ ॥

राजासरिखुंसूत्रछे ॥ मंत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमांएके
हेलीजे ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंके०चक्रवर्ति बरावरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे एटले राजानोआशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो कोइसूत्रनो आशय जाणेनही एमांके०एवेहुमांथी एकेहेलीजेके०एकने निंदतांथकां दियेसंसार अनर्थके०संसारनोअनर्थआपे भवपरंपरावधारे ॥ २८ ॥

जेसमतोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसूंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुझक
रुणायेंवरे ॥ सुखजशनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ माटेजे आत्मार्थिप्राणीते सूत्र तथाअर्थ वेहुने समतोलें सरिखीरीतें अंगीकारकरे प्रीतिराखे अवज्ञानकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रभुतमारीकरुणाके०दयायें करीने सुखतेनिरावाधपणुं अनेजशकीर्ति तथानिर्मलजे नीतिके०न्याय ते वरेके०पामे ॥ २९ ॥ हवे दशमी ढालकहेछे तेने नवमी ढालसाथेए संबंधछे जेपूर्वेढालमां सूत्र तथाअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्युं तेसूत्रतथाअर्थ तो ज्ञान स्वरूपछे वास्तेएदशमीढालमांज्ञाननुंवर्णनकरेछे ॥

॥ ढालदशमी ॥

॥ आपछंदेछबीलाछलवरे ॥ एदेशी ॥

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामांछेदोषरे ॥ कर्मबंधछेतेहथी
रे ॥ नहिसमसुखसंतोषरे ॥ १ ॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे ॥
सुझमनसेहेजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप
तापसविजायरे ॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिछे तेमां घणादोषनी उत्पत्तिछे तेअज्ञानक्रियाथी कर्मबंधजथायछे पणसमसुखसंतोषके०समतानासुख जेमां परभावनी ईहा नही एहवो जेसंतोषते अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थतो नथी यतः नाणगुणेहिं विहिणा ॥ किरियासंसारवढ्ढणीभणिया ॥ धम्मरुइपहवमित्ता ॥ नाणसमेयासयाहुज्जा ॥ १ ॥ एयोगनी वीसीमध्ये कह्युछेमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेछे मा-

रामनमांसेहेज सोहायछे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीतमारीवाणीने मनमांधारतांथकां पापरूप तापके०उष्णता तेसर्वेमटीजायनेशीतलताथाय ॥ २ ॥

लोकपंतिकिरियाकरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे ॥ जवइछानाजो
रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रनु० ॥ मुज० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके०लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके०शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके०अज्ञानीजीवते जवजे संसार तेनीइछाना जोर थकी एटले बहुलसंसारीजीवछे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना जशमानप्रतिष्ठानेअर्थेंकरे ॥ ३ ॥

कामकुंनसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुछरे ॥ जनरंजनकेवल
लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुछरे ॥ प्रनु० ॥ मुज० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंन सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंयशमानादिक तुछ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके०लोक रीझे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रियाथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुछके०गुछो उपलक्षणथी फलइयें तेनपामे ॥ ४ ॥

करुणानकरेहीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ द्वेषधरं
तांतेहसुंरे ॥ हेठाआवेतेहरे ॥ प्रनु० ॥ मुज० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे षोडशकमां पांचगुण आशयविशेष देखाड्याछे यथातृतीयषोडशके १ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोग नेदतःप्रायःधर्मज्ञैराख्यातःशुनाशयःपंचधा त्रिविधौ एपांचनेद अन्वयरीतें श्रीहरिनद्रसूरियें देखाड्याछे ते श्रीजशोविजयउपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडेछे तेमां प्रथमप्रणिधाननामाआशयकहेछे जेहीनके० पोताथकी हीणगुणीछे एटले हीणगुणठाणेवर्त्ते तेहनी करुणानकरे विणपणिहाणसनेहके०प्रणिधाननामाआशयविशेषना सनेहविना हीननीकरुणानकरे वलीहीनगुणी उपरद्वेषकरतांथकां जेएमांशागुणछे इत्यादिक द्वेषधरतां तेपोतेज हेठाआवे ॥ ५ ॥

एककाजमांनविधरेरे ॥ विणप्रवृत्तिथिरनावरे ॥ जिहांतिहांमो
होडुंघालतांरे ॥ धारेढोरस्वनावरे ॥ प्रनु० ॥ मुज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रवृत्तिनामाआशय वखाणेछे विणप्रवृत्तिके०प्रवृत्तिनामागुणविना एक काजमांके०एकजेधर्मकार्यमांड्युं तेमां नविधरेके०नराखे थिरनावके०थिरतानाव एटलेएककाजमां थिरनही अने प्रारंनितकार्यमां तेवोप्रयत्ननही एमपण समजवुं जिहां तिहां मुखघालतो एटले जेधर्मस्थानक मांड्युंछे तेमूकीने अकालें फलवांछे अनेअका-

लेंफल वांछवुंते तत्वथीआर्त्तध्यानछे तेवारे जिहांतिहां मोहोडुं घालतां ढोरनोस्वन्ना-वधरेछे जे खावा मूक्युंहोय तेमूकीने वीजामां मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी
शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय वतावेछे विघनके०अंतराय तेनो जयके०जीतवुं तेविघ्न-जयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले मोक्षमार्गे अविछिन्नपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिन्नप्रयाणे शीवपुर नहोय ए वातो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेछे ॥ ७ ॥

शीततापमुखविघनछेरे ॥ बाहेरअंतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श
नएहनीरे ॥ मात्रामृडुमध्याधिरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना भेदत्रणछे १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टुंविघ्न एमां ही नविघ्नते जेमधर्मकरतां शीतके०टाढवाए तथातापके०तरूकोलागे तेधर्ममां विघ्नछे तथा वाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नकहियें जे माटे टाहाड तथातडका करतां शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजुंउत्कृष्टुंविघ्न तेअंतरव्याधि मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्टुं धर्ममां विघ्नछे जेमाटे ध-र्मकरतां जो मिथ्यादर्शननो उदयथइ जायतो धर्ममां महोटुंविघ्नथाय ए विघ्नपूर्वे जे बेविघ्नकह्यां तेकरतांएआकरुं विघ्नछे माटे उत्कृष्टुंविघ्नकह्युं जेममार्गमां चालतां जघ-न्यमध्यम अनेउत्कृष्टुं एत्रणविघ्नछे मार्गमांकांटालागेते जघन्यविघ्न, मार्गमां ज्वरप्रमु-खतेमध्यमविघ्न, मार्गमां दिग्मूढथायतेउत्कृष्टुंविघ्न तेमधर्ममांपण पूर्वोक्तत्रणविघ्नजा-णवां तेनीमात्राके० प्रमाणकहेछे मृडुके० हीन मध्यके० मध्यम अनेअधिके० उत्कृष्टुं एमअनुक्रमे जोडवां ॥ एतोविघ्नदेखाड्यां हवेविघ्नजय अनुक्रमेंदेखाडेछे ॥ ८ ॥

आसनअशनजयादिकेंरे ॥ गुरुयोगेंजयतासरे ॥ विघनजो
रएनविटलेरे ॥ वगरज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ए॥

अर्थ ॥ आसनके० वीरासनादिकेकरी पूर्वोक्त शीततापादिक विघ्ननो जयकरे तथा अशनएटले आहारेंकरी पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगेंकरी पूर्वोक्त मिथ्यादर्शनरूपविघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगें समकितपामेज एविघ्ननुंजोर तेज्ञाना-भ्यासविना टलेनही माटेज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढराखे शीततापप्रमुखमां चलेनही अनेज्वरप्रमुखमां कृतकर्मअहियासे एटले एमजाणे जेमारांउदयेआव्यां कर्मभोगवुंछुं तथा मिथ्यात्वनुंजोरछते ज्ञानेसम्यक्जिनवचनभावे ॥ ए ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि
नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो विनय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगुणवंताहोय तेने उपकारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोताथी हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय ॥ १० ॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मेयोगरे ॥ तेहविनाज
नमांतरेरे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुज०॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना परजीवने जेधर्मेजोडवुं तेयोग नसंभवेके० नहोय तेविनाके० तेहविनियोगविना जनमांतरेंके० परभवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धनुंकार्य तेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपरात्रूटेनही अनेजोविनियोग नामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वेगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरियामांखेदेकरीरे ॥ दृढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म
नोरे ॥ जेमपाणीकृषिमांहिरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रभुनी स्तवनाकरे तेप्रभुनी स्तवनातो प्रभुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजथइ तेप्रभुनुंध्यान बेभेदेछे एकसालंबन बीजुंनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादिकनुंआलंबनकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनिरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वभावनुं ध्यानकरवुं तेनिरालंबनध्यान कहियें शुद्धपरमात्मगुणध्यानंनिरालंबनं इतिवचनात् हवेइहांतो सालंबनध्याननी वातछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरे थके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यडुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ द्वेग ३ क्षेपो ४ त्थान ५ भ्रांत्य ६ न्यमु ७ द्रुगा ८ संगैः ॥ युक्तानिहि चित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मतिमान् ॥१॥ ए आठचित्तने दोषेकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषकहेछे खेदके०थाक जेम पंथेहिंमतांथाके तेनीपेरे खेददोषेकरी क्रियामां मननी दृढताके० एकाग्रपणुं तेनहोय एटलेक्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधान ते धर्मनोमुख्यहेतुछे जेम करशण (खेती)मां पाणीते मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानते मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

वेठापणजेऊपजेरे ॥ किरियामांउद्वेगरे ॥ योगद्वेषथीते
क्रियारे ॥ राजवेठसमवेगरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उद्वेगनामा वीजो दोषवखाणेछे खेदविनापण वेठांथकां उद्वेगथाय तेनीपेरे उद्वेगदोषमां पणजाणवुं वेठांथकां पणजेक्रिया करे तेमां उद्वेगऊपजेतो ते क्रियाकरतां तेप्राणीने सुखजेचित्तनीप्रसन्नता तेकेमउपजे जेवारे क्रियामां उद्वेगथयो तेवारे द्वेषउपनो तेद्वेषथी राजानी वेठनीपेठे कथंचित्क्रियाकरे वेगके० उतावलो करे एवीरीतें राजवेठनी पेठे करे तेने जन्मांतरे योगीनाकुलने विपेजन्मपण नहोय एअर्थषोडशकमांजोइलेवो ॥ १३ ॥

भ्रमथीजेहनसांजरेरे ॥ कांइअकृतकृतकाजरे ॥ तेहथीशुन्न
किरियाथकीरे ॥ अर्थविरोधिअकाजरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे यद्यपि षोडशकमां भ्रांतिनामा पांचमो दोषकह्योछे तथापि उपाध्यायजीयेंइहांत्रीजोभ्रांतिनामा दोषवर्णव्योछे एमअनानुपूर्वीपण व्याख्याननुंअंगछे हवे भ्रांतिनो अर्थकहेछे भ्रांतिके०वस्तु अन्यहोय तिहांअन्यजाणे जेम शुक्तिका(शीप)नेविषे रजतनी भ्रांतिथाय तद्वत् भ्रमेकरी जेवस्तु सांजरेनही जेमेंधर्मकृत्यकर्युं अथवा नथीकर्युं उपलक्षणथी मेंपाठउच्चर्यो के नथीउच्चर्यो इत्यादि तेशुन्नक्रियाथकी पण अर्थविरोधि एवुंजे अकाजके०इष्टफलरूपजेकार्य ते नथाय तेनेअकाजकहिये ॥ १४ ॥

शांतवाहितावि‌णहोवेरे ॥ जेयोगेउत्थानरे ॥ त्यागयोगछे
तेहथीरे ॥ अणछंमातुंध्यानरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्थाननामाचोथो दोषवर्णवेछे उत्थानके०चित्तनी अप्रशांतता तथा मनप्रमुखनी उत्सुकताथकी जेम कोइक पुरुष मदिराप्रमुखेंकरी मदावष्टब्धथयो होय तेनीपेठे जेयोगने उत्थानदोषेकरीने शांतवाहितावि‌णहोयके०शांतवाहिता न होय एटले जेक्रियाकरे तेमांउद्वेगरहे पण छरणनहोय तेक्रियाकेवीछे के त्यागयोग के०त्यागवायोग्यछे पणतेहथीके०तेत्यागयोगक्रियाथी अणछंमातुं ध्यानके०छंमातुं तजातुंनथी एवुं ध्यानछे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षालीधीहोय अने सर्वथामूलोत्तरगुण निर्वाहकरवा असमर्थछे तेप्राणीनेविधिपूर्वक जेमश्रावकाचार ग्रहवानोउपदेशआपीयें ते लिंग त्यजवायोग्यछे पणलोकनी निंदाप्रमुखेअणछंमातुंछे उक्तंचउपदेशमालायां ॥ जइनतरसिधारेउं ॥ मूलगुणत्नरंउत्तरगुणंच ॥ मोत्तूणंतोतिन्नूमिं ॥ सुसावगत्तंवरतरागं ॥ १ ॥ १५ ॥

विचेविचेबीजाकाजमांरे ॥ जाएमनतेखेपरे ॥ ऊखणतांजि
मशालिनुंरे ॥ फलनहीतिहांनिर्लेपरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमो क्षेपनामादोषकहेछे जेक्रियामांमीहोय तेक्रियामां वच्चेवच्चे बीजाकार्यमां मनजाय तेखेपकहियेंऊखणतांके०वारंवार उपाडेलीउपाडेली एवीजे शालितेनुं निर्लेपके०चोखुंफल नहीके०नथाय एटले एकवारजे एकवार शालि उखेडीने वावेतो फलथाय पणवारंवारउखेडीने वावेतो फलनथाय तेमइहांवारंवार प्रारंभित क्रियामूकीने अन्यक्रियामांमनजाय तेफलनपामे ॥ १६ ॥

एकजठामेंरंगथीरे ॥ किरियामांआसंगरे ॥ तेहजगुणठा
णेथितिरे ॥ तेहथीफलनहीचंगरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे आसंगनामाछठो दोषकहेछे आसंगके०जेक्रियाकरतोहोय तेमां इदमेवसुंदरं एहवो जेरंग तेआसंगनामादोषकहीयें जोपणतेअनुष्ठानशास्त्रोक्तछे तोपण तेमां रंगनुंजे घरछे तेदोषरूपछे तेहजगुणठाणेथितिके० तेवेनेतेवेजगुणठाणेरहे पण आगल गुणठाणो वधेनही जेमश्रीमहावीरऊपर गौतमस्वामीने भक्तिरागहतो तेथीतेजगुणठाणे स्थितिरही पणमोहनीकर्मनुंउन्मूलनकरीने केवलज्ञानरूपजेफलते चंगके०मनोहर नथयुं माटे आसंगते दोषता जाणवी एअर्थषोडशकवृत्तिमांजोजो ॥ १७ ॥

मांमीकिरियाअवगणीरे ॥ बीजेठामेहर्षरे ॥ इष्टअर्थमां
जाणीयेंरे ॥ अंगारानोवर्षरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे अन्यमुद्नामा सातमो दोषकहेछे जेप्रारंभितकार्यथकी अन्यस्थानकें हर्ष तेअन्यमुद्दोष जेमांमीकिरियाके०जेक्रियाकरेछे ते अवगणीके०तेनो आदरमूकीने बीजेठामेंहर्षके०बीजीक्रियामां हर्षराखे एटले चैत्यवंदनकरतोहोयने सामायकमां हर्षकरे तेप्राणीने इष्टअर्थके०वांछितअर्थमां अंगारानोवर्षके०अंगारानो वरसादवरसेछे एटलेमांडेलीक्रियामांजे अनादरछे तेसर्वदोषनुंमूलछे ॥ १८ ॥

रोगहोएसमजणविनारे ॥ पीडाभंगसुरूपरे ॥ शुद्धक्रिया
उछेदथीरे ॥ तेहवंध्यफलरूपरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे आठमो रोगनामादोष कहेछे तेपीडाभंगसुरूपके०पीडासुरूप अथवा भंगसुरूप एमसमजणविनाजेपदछे तेशुद्धक्रियाने जोडीयें तेवारेएवो अर्थथायजे समजणविनाशुद्धक्रियानो उछेदकरे पण अशुद्धक्रियाकरेखरो तेवारे शुद्धक्रियाने पीडा थयी अथवा शुद्धक्रियानोभंगथयो एवे अर्थरोगनाथया एटले रोग दोषथके शुद्ध

क्रियानो उछेद ते विनाशकरे तेवंध्यफलके० तेअशुद्धक्रिया वांझियाफलरूपथाय ॥१ए॥

मानहानीथीदुःखदिएरे ॥ अंगविनाजेमभोगरे ॥ शांतोदात्त
पणाविनारे ॥ तेमकिरियानोयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ एऊपर कह्याआठेदोष रहित जेहोय तेने शांतादिकगुणआवे माटे एक शांतबीजोउदात्त एवेगुणवखाणेछे तेमानीपुरुषने जेममाननी हाणीथाय एटले दुःख उपजे तथाअंगविनाके० अंगोपांगेहीन होय अनेभोगनी सामग्रीस्त्रीप्रमुख मली होय ते जेम चित्तने दुःखआपे अथवाजेम भोगनी सामग्री मलीहोय तोपण मान हानीथीके० प्रमाणहीन अधिका उंबा भोगवे तो दुःखआपे तथाअंगविना पण दुःखथाय तेम शांतअनेउदात्त एवेगुण आव्याविना क्रियानो योगपणएवो जाणवो ॥ २० ॥

शांततेकषायअभावथीरे ॥ जेउदात्ततेगंभीररे ॥ किरियादोष
त्यजीलहेरे ॥ तेसुखजशभरधीररे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ शांततेकहियेंजे कषायनोअभाव अनेउदात्ततेगंभीरहोय एवाप्राणी जेहोयत्ते क्रियामां लागता दोषत्यजीने लहेके०पामे ते धीरके०धीरपुरुष सुखनोअने यशनो भरके०समूहपामे ॥ २१ ॥ हवेएढालमांशांत तथा उदात्तगुणवखाण्या तेशांत उदात्त गुणतो धर्मरूपछे तेधर्मरूपरत्ननी योग्यताकोनेहोय तेदुहामांकहेछे ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ दोहा ॥

एकवीस गुण परिणमे ॥ जास चित्त नितमेव ॥
धरमरतननी योग्यता ॥ तास कहे तूं देव ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमां नितमेवके०निरंतर एकवीसगुणपरिणम्याहोय तेजीवने धर्मजे देशविरति सर्वविरतिरूपरत्न तेनी योग्यताहोय एम हेदेव तमेकहोछो ए एकवीसगुण द्रव्यश्रावकनाछे तेसंक्षेपेकहेछे ॥ विस्तारेंआगलकहेशे ॥

१ खुद्दनही २ वलीरूपनिधि ॥ ३ सोम्म ४ जनप्रियजधन्य ॥
५ क्रूरनही ६ भीरुवली ॥ ७ असठ ८ सार दखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ ॥ १ क्षुद्रमतिनहोय एटले गंभीरहोय २ रूपनोनिधानहोय एटले पंचेंद्रिय स्पष्ट होय ३ सोम्म एटले सौम्य होय तेस्वभावेंअपापकर्मिहोय ४ जनप्रियजके०लोकने वल्लभ होय ते सदासर्वदासदाचारीहोय धन्यके०एप्रशंसाकरवायोग्यछे ५ क्रूरनही के०अक्लिष्ट

चित्तहोय एटलेसंक्लेशपरिणामीनहोय ६ आलोकपरलोकनाअपायथी जीरुके०बीहीतो रहे७ असठ एटलेपरनेठगेनही ८ सारके०प्रधान दखिन्नके०दाक्षिण्यगुणवंतहोय एटले परनीप्रार्थनानोजंगनकरे ॥ २ ॥

९ लज्जालुउं १० दयालुउं ॥ ११ सोमदिठिमज्झथ्थ ॥ १२ गुण
रागी १३ सतकथ १४ सुपरख्ख ॥ १५ दीरघदरशिअथ्थ ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ९ लज्जालुउंके०स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटलेअकार्यवर्जक १० दयालुउं-के०प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टिते यथावस्थितविचारनी दृष्टिछेअने दूरदोषत्यागीते सौम्यदृष्टिकहियेंतेज मज्ऊछके०मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सौम्यदृष्टि अने मध्यस्थ एपदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी तेगुणीजीवनो पक्षपाती होय १३ सतकथ ते जली कथानो कहेनार एटले धर्मकथावाहालीछे जेने १४ सुपरकके०सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसीके०अनागतकाल विचारीने परिणामे सुंदरकार्यकारी होय अछके०ए अर्थछे ॥ ३ ॥

१६ विशेषज्ञ १७ वृध्धानुगत ॥ १८ विनयवंत १९ कृतजाण ॥
२० परहितकारी २१ लब्धलख्ख ॥ गुणएकवीसप्रमाण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १६ विशेषज्ञके०पक्षपातरहितपणे गुणदोषविशेषनो जाण १७ वृद्धानुगतके० परिणतमतिपुरुषने सेवनारोहोय १८ विनयवंतके०गुणाधिक पुरुषनेविषे गौरवकर्त्ता १९ कृतजाणके०कस्यागुणनोजाण २० परहितकारीके०निर्लोजी थको परोपकारकरे एटले जेदाक्षिण्यगुण तेपरनो प्राथ्यों उपकारकरे अने परहितकारी तेपोताथी उपकारकरे एटलुं आठमा गुणथी वीसमा गुणमां विशेषजाणवुं २१ लब्धलक्षगुणते धर्माधिकारी तेहनोजावार्थ लब्धश्वप्राप्तश्चलक्ष्योलक्षणीयोधर्मानुष्ठानव्यवहारोयेनसलब्धलक्ष्यःसुशिक्षःसुशिक्षणीयइति एएकवीसगुणसंपन्न जेजीव तेधर्मरत्नने योग्यहोय ॥४॥

खुद नही ते जेह मने ॥ अति गंजीर उदार ॥ न
करे जन उतावलो ॥ निज परनो उपगार ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेए एकवीसगुण अर्थ विस्तारें कहेछे खुद्दनहीतेके०अक्षुद्रतेनेकहियें जेनुं मन अतिगंजीरहोय उदारहोय तुछ न होय केमकेजे उतावलो मनुष्यहोय ते पोताने तथा परने उपकार करीशकेनही एटले गंजीर होयते पोताने तथा परने उपकार करे पण उतावलो होयते नकरीशके एप्रथमअक्षुद्रगुण ॥ ५ ॥

शुज्ञ संघयणी रूपनिधि ॥ पुरण अंग उपंग ॥
ते समरथ सेजें धरे ॥ धर्म प्रज्ञावन चंग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शुभकें०उत्तम संघयणवंतहोय रूपनुं निधानहोय संपूर्ण अंगोपांगहोय पंचेंद्रिय परवडांहोय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थहोय ते धर्मनी प्रभावनाकरे इहां नंदिखेण तथा हरीकेशीप्रमुख साथेविरोध न गणवो केमके तेपणसंपूर्ण अवयववंतहता तथा आवचनते प्रायिकछे जोशेषवीजागुणयुक्तहोयतोरूपनुंप्रयोजन नथी॥६॥

पाप कर्म वरते नही ॥ प्रकृति सोम्य जगमित्त ॥
सेवनीक होवे सुखे ॥ परने प्रशम निमित्त ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पापकर्म तेआक्रोश वध हिंसा चोरीप्रमुखनेविषेनप्रवर्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सोम्यभाव अवीहामणो सर्वजगतनेविषे मित्रताहोयएवापुरुषने सुखेलोक सेवीशके परने प्रशमकें०समतानुं कारणहोय एत्रीजो गुणथयो ॥ ७ ॥

जन विरुद्ध सेवे नही ॥ जन प्रिय धर्मेंसूर ॥ मलिन
भाव मनथी तजी ॥ करी शके अक्रूर ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जनशब्देंलोककहियें तेलोकमांइहलोक तथा परलोक अने उभयलोक पण आवे एटले एभावजे इहलोक विरुद्ध नसेवे यदुक्तं सव्वस्सचेवनिंदा ॥ विसेसउतहय गुणसमिद्धाणं ॥ उजुधम्मकरणहसणं ॥ रीढाजणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥ बहुजणविरुद्धसंगो ॥ देसाचारलंघणंतहय ॥ उव्वणभोगोयतहा ॥ दाणाइविपयरूमनेउ ॥२॥ साहुवसणंमित्तो ॥ सोसइसामछंमिअपडिआरोअ ॥ एमाइयाइछं ॥ लोगविरुद्धाइंनियाणंति ॥३॥ तथा परलोकविरुद्धजेखरकर्मादि तेपन्नरकर्मादिकतथा उभयलोकविरुद्ध द्यूतादिक सात व्यसन नसेवे तोज जनप्रियकें०लोकने प्रिय तथा धर्में सूरकें० धर्मनोअधिकारीहोय ए चोथो गुणकह्यो मलिनभाव मनथी तजीने धर्मकरीशके एटलुं धर्मपद बाहारथी लेवुं तेअक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनुं लक्षण धर्मरत्नप्रकरणमध्ये एमज वखाएयुंछे यथा ॥ इहपरलोयविरुद्धं ॥ नसेवए दाणविणय शीलढ्ढो ॥ लोयप्पिउजणाणं ॥ जणेइधम्मंमिबहुमाणं ॥ १ ॥ कूरोकिलिठभावो ॥ सम्मंधम्मंनसाहिउत्तरइ ॥ इयसोनइछजोगो ॥ जोगोपुणहोइअक्कूरो ॥ २ ॥ एगाथाने अनुसारें अर्थकर्योछे वली बुद्धिअविरुद्धपणे सुजेतोविशेषकरजोएपांचमोगुण ॥ ८ ॥

इह परलोक अपायथी ॥ बीहे भीरुक जेह ॥ अप
यशथी वली धर्मनो ॥ अधिकारी छे तेह ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आलोक तथा परलोकना अपायथीकें०कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे तेभीरुककहियें तेपुरुष धर्मनो अधिकारीजाणवो एछठो गुणकह्यो ॥ ए ॥

असठ न वंचे परप्रतें ॥ लहे कीर्त्ति विश्वास ॥ जाव
सार उद्यम करे ॥ धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥

अर्थ ॥ असठके०मायावी नही एवो गुणवंत तेपरने वंचेके०ठगेनही तिवारे लोकमां कीर्त्तिपामे प्रशंसवायोग्यहोय अने लोकपण तेनो विश्वासकरे वली जाव सारके० पोतानुंचित्त रीझवे पण परनुं चित्तरिझववामाटे उद्यमनकरे तथाचोक्तं जूयांसो जूरिलोके स्युः ॥ चमत्कारकरानराः ॥ रंजयंतिस्वचित्तं ये ॥ जूतलेतेतुपंचषाः ॥ १ ॥ इत्यादिक तथा धर्मठामनेविषे खासके०रुडो उद्यमकरे ॥ एसातमोगुण ॥ १० ॥

निज कारय छांडी करी ॥ करे अन्य उपकार ॥
सुदखिन्न जन सर्वने ॥ उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली जेपोतानुं कार्य छांडी एटले पडतुंमूकीने पण परउपकारकरे जेजे इहलोक परलोकनेविषे हितकारीछे तेवाउपकारकरे पण पापहेतुयें नप्रवर्त्ते ते सुदाक्षिण्यनामाआठमोगुण कहियें तेजन सर्वलोकने उपादेयव्यवहारके०आदेयवाक्य (जेनुं कहेवुं बधामाने एवो) होय व्यवहारते वाक्यव्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृत न त्यजे त्यजे ॥ लज्जालुउ अकाज ॥
धरे दयालु धर्मनी ॥ दयामूलनी लाज ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ धर्मकार्य जेअंगीकारकर्युं होय तेनत्यजे अने अकाजके०जेअकार्यहोय ते त्यजे तेने लज्जालु नामेंनवमोगुण कहियेंतथा दसमोदयालु तेने कहियेंजे दयामूल धर्मछे तेनी लाज धरे एटले दयामूलधर्मनलोपे ॥ १२ ॥

धर्म मर्म अवितथ लहे ॥ सोमदिठि मझ्छ ॥ गु
णसंयोग करे सदा ॥ वरजे दोष अणछ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे मध्यस्थ सोमदृष्टिनामा अग्यारमो गुणवखाणेछे मध्यस्थते कोइ दर्शनउपर पक्षपातनथी तथा सोमदिठीके०द्वेषरहित दृष्टिदर्शन छेजेने ते मध्यस्थ सोमदृष्टिकहियें तथा धर्मनो जेमर्म तेअवित्तछके०यथार्थ लहे जाणे एटले सद्गुण निर्गुण अल्पगुण बहुगुण तथासर्व पांखंडीनिरुपित जेधर्म ते कनक परिक्षक पुरुषनीपेठे जाणे अनेजेज्ञानादिकगुण तेनो सदासंबंधकरतोरहे तथाअनर्थनाकरनारादोष तेसर्ववर्जे तेअग्यारमोगुण ॥ १३ ॥

गुणरागी गुण संग्रहे ॥ दूसे न गुण अनंत ॥ उ
वेखे निर्गुण सदा ॥ बहुमाने गुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ गुणनो रागीहोय धर्मऊपर रागधरे तथा गुणनो संग्रहकरे नवागुण अंगे-आणे गुणअनंतके॰घणागुणवंतने दूसेनके॰डुःखवेनही एटले एभावजे गुणघणाहोय अने कदाचित् कोइक दोषहोय तोपण तेने डुःखवेनही यतः भूरिगुणाविरलविय ॥ इक्कगुणेविहुजणोनसव्वछ ॥ निद्दोसोणेविभद्दं ॥ पसंसिमोथेवदोसेवि ॥ १ इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखेके॰डुखवेनही तेमजस्तवे पणनही अनेगुणवंत जे देशविरतिसर्वविरतिवंत तेनो बहुमानकरे जे धन्यए धन्य एनो अवतार इत्यादिक गुणरागीनामा बारमोगुणथयो

अशुभ कथा कलुषित मति ॥ नासे रतन विवेक ॥
धर्म्मार्थि सतकथा हुए ॥ धर्मनिदानविवेक ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अशुभकथाजे स्त्रियादिकनीकथा तेणेकरीने कलुषितमति थयीछे जेहनी तेप्राणीने विवेकरूपरत्न सदसद्वस्तुनुं जेपरिज्ञान तद्रूपरत्न नासे तेमाटे धर्मार्थियको सत्कथकहोय तीर्थंकर गणधर महर्षिप्रमुखनाचरित्रकहे जेधर्मार्थि तेधर्मनो अर्थियको ए सत्कथाजधर्मनुंनिदानछे विवेकके॰विभागछे जेअशुभकथानो त्याग अने शुभकथाकरवी एतेरमोगुण ॥ १५ ॥

धर्मशील अनूकूल यश ॥ सदाचार परिवार ॥
धर्म सुपख्ख विघने रहित ॥ करी शके ते सार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे सुपक्षयुक्तनामा चउदमोगुणकहेछे ते जेनोपरिवारते धर्मशील के॰ धर्मकरवाना आचारवालोछे अनुकूलके॰धर्ममांविघ्न न करे तेवो तथा यशवंत अने सदा-चारीपरिवारहोय एवो सुपक्ष॰ के सुपक्षगुणवंत विघ्नरहितहोय ते पुरुष सारके॰प्रधा-नएवोजे धर्मते प्रतेकरीशके ॥ १६ ॥

मांडे सवि परिणाम हित ॥ दीरघदर्शी काम ॥
लहे दोष गुण वस्तुना ॥ विशेषज्ञ गुणधाम ॥१७॥

अर्थ ॥ हवे दीर्घदर्शिनामा पन्नरमो गुणकहेछे ते जे कामके॰कार्यमांडे तेपरिणामे हितकारीजहोय उपलक्षणथी तेमां लाभघणोहोय अनेक्लेश अल्पहोय बहु लोकने प्रशंसनीकहोय यतः आढवइदीहदंसी ॥ सयलंपरिणामसुंदरंकज्जं ॥ बहुलाभमप्पकेसं ॥ सलाहणिज्जंबहुजणाणं ॥१॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे हवेविशेषज्ञ नामा सोलमोगुणवखा-णेछे जे लहेके॰जाणेवस्तुना गुणदोष एटले एअर्थजेपक्षपातविना वस्तुना गुणदोष स-र्वेने जाणे जोपक्षपातहोय तोगुणमां दोषकाढे अनेदोषमां गुण काढे पण मध्यस्थबु-द्धिने यथास्थितभासे एवोविशेषज्ञ तेगुणनुं धामके॰घरहोय ॥ १७ ॥

वृद्धानुगत सुसंग ते ॥ होवे परिणत बुद्धि ॥ विनय
वंत नियमां करे ॥ ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुणकहेछे ते जे परिणतबुद्धिवान परिपक्क बुद्धिनो धणीहोय तेपापना आचारनेविषे नजप्रवृत्ते अनेगुणवंतजे वृद्ध होयतेने अनुगतके०अनुजायीयें प्रवर्ते एटले वृद्धनी संगतकरवी तेसुसंगतकहियें तेसुसंगते करी पोते पण परिणतबुद्धिवालो थाय परिपक्कबुद्धिवानथाय यतः वुढ्ढोपरिणयवुद्धी ॥ पावायारेपवत्तइनेव ॥ वुढ्ढाणुगोविएवं ॥ संसग्गिकयागुणाजेण इति हवेविनयनामा अढारमो गुणकहेछे तेविनयवंतप्राणी नियमांके०निश्चेंज्ञानादिकनीशुद्धिकरे एटले एजावजे सर्वज्ञानादिकगुणनुं तथा मोक्षनुंमूलतेविनयछे माटेविनयगुणजोइये यतः विणर्ज सव्वगुणाणं ॥ मूलंसन्नाणदंसणाईणं ॥ मुरकस्सयतेमूले ॥ तेणविणीर्जइहपसन्नो ॥ १७ ॥

गुण जोडे गुरु आदरें ॥ तत्वबुद्धि कृतजाण ॥ पर
हितकारी परप्रतें ॥ थापे मार्ग सुजाण ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवेकृतज्ञनामाओगणीसमोगुणकहेछे तेजेगुणनेविषे तथा धर्मनेविषे बीजानेजोडे तथा धर्मगुरुऊपर घणोआदरकरे तथा जेने तत्व ग्रहवानी बुद्धिहोय तेने कृतजाणके०कृतज्ञ कहियें हवे वीसमो परहितकारीनामा गुणकहेछे जे परप्रतें धर्ममार्गथापे अने सुजाणके०डाह्याहोय वलीजेणेधर्ममार्गजाण्योछे एटले गीतार्थछे केमके जोअगीतार्थहोयअनेतेपरनेहितकरवा चाहे तोपण अहितथाय यतः किंसत्तोकठयरं ॥ जंसंममनायसमयसप्रावो ॥ अन्नंतुदेसणाए ॥ कठंयरागंमिपाडेइ ॥१ ॥ १९ ॥

शीखे लखे सुखें सकल ॥ लब्धलक्ष शुभकाज ॥ एम
एकवीस गुणे वर्यो ॥ लहे धर्मनुं राज ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुणकहेछे तेजे शीखेके०थोडाकालमां आगमादिक नणे तथा लखेके०जाणे सुखेंके०अनायासें वगरप्रयासें सकलके०समस्त शुभकाजजे धर्मनाकार्य तेने लब्धलक्षकहियें यतः लरकेइलक्ष्लरको ॥ सुहेणसयलंपिधम्मकरणिज्जं ॥ दरकोसुसासणिज्जो ॥ तुरियंचसुसिरिकर्जहोइ ॥ इतिधर्म रत्नप्रकरणे एरीते एकवीसगुणे करीविराजित होयते धर्मनुंराज्य लहेके०पामेइति ॥

पूरण गुण उत्तम कह्यो ॥ मध्यम पादें हीन ॥ अर्द्ध
हीन जघन्य जन ॥ अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एपूर्णएकवीसगुणे सहितहोय तेउत्तमकहियें अने पादेंके०चोथेभागेंहीन

होय तेमध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणेहीनहोय तेजघन्यकहियें अपरके०एअर्द्धथकी हीनगुणी होयते दरिद्री दीनजाणवा केमके दरिद्री होयते पोतानाउदरभरवानी चिंतायें व्याकुलपणेकरी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंतानकरीशके तेम हीनगुणीते धर्मरत्ननोमनोरथ पणनकरीशके यतःपायद्धगुणविहिणा ॥ एएसिंमझिमावरानेया ॥ इत्तोपरेणहीणा ॥ दरिद्दपायामुणेयव्वा ॥ १ ॥ २१ ॥

अरजे वरजी पापने ॥ एह धर्म सामान्य ॥ प्रभु
तुझ भक्ति जश लहे ॥ तेह होए जन मान्य ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जे पापने वर्जिने एसामान्यधर्म जेश्रावकधर्म तेने अरजेके०उपार्जे ते प्राणी हेप्रभु तारी भक्तिकरीने जशलहेके०जशप्रतिष्ठापामे एटले एवागुणवंतहोय तेतारी भक्तिकरेज तथा तेप्राणी सर्वलोकने मान्यहोय ॥ २२ ॥ ए एकवीस गुणेसहितहोयते भावश्रावकपणुंपामे माटे भावश्रावकना गुणवर्णवानेबारमीढालकहेछे ॥

॥ ढालबारमी ॥

॥ चोपाइनीदेशी ॥

एकवीसगुणजेणेलह्या ॥ जेनिजमर्यादामांरह्या ॥ तेह
भावश्रावकनालहे ॥ तसलक्षणएतुंप्रभुकहे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ए एकवीसगुणने जेपाम्याहोय वलीजे पोतानी मर्यादामां रह्याहोय आचारशीलमांरह्याहोय तेजप्राणीभावश्रावकपणुंपामे एटले एभावजे पूर्वे द्रव्यश्रावक थयीनेउत्तरकालें भावश्रावकथाय ते भावश्रावकना लक्षण एप्रमाणेहेप्रभुवीतराग परमेश्वर तमेकह्यांछे तेप्रमाणे आगल कहियेछैयें ॥ १ ॥

कृतव्रतकर्माशीलाधार ॥ गुणवंतोनेऋजुव्यवहार ॥ गु
रुसेवीनेप्रवचनदक्ष ॥ श्रावकभावेंएप्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहां मार्गानुसारीना पांत्रीस गुण ज्ञानविमलसूरीयें लख्याछे पण विशेष शब्दार्थादिकमां प्रयोजननथी तथाएनुंमूल धर्मरत्नप्रकरणकह्युंछे तेमांपणनथीकह्या माटे अमेलख्यानथी १ कर्युंछे व्रतरूपकार्यजेणे तेकृतव्रतकर्माकहियें २ शीलवंतहोय ३ विवक्षितगुणवंतहोय ४ ऋजुव्यवहार एटले सरलमनहोय ५ गुरुनीशुश्रूषा एटले सेवाकरे ६ प्रवचनके० आगममांकुशलहोय डाह्योहोय एछलक्षण जेमां होय तेप्रत्यक्षपणे भावश्रावक कहियें यतः कयवयकम्मोतहय ॥ शीलवंचगुणवंच ऋजुववहारी ॥ गुरुसुस्सूसोपवयण ॥ कुसलोखलुसावगोभावे ॥ १ ॥ २ ॥

श्रवणजाणणग्रहणउदार ॥ पडिसेवाएचारप्रकार ॥ प्रथ
मन्नेदनामनधारीयें ॥ अर्थतासइमअवतारीयें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे उपरना छ लक्षणमांथी प्रथमकृतव्रतकर्मानामें लक्षणना चारन्नेद छे १ श्रवणके०सांजलवुं २ जाणणाके०जाणवुं ३ ग्रहणके०अंगीकारकरवुं उदारके०विस्तारपणे ४ पडिसेवाके०सम्यक्पालवुं एचारन्नेदकह्या एप्रथमन्नेदजेकृतव्रतकर्मानामे तेना अवधारीयें तासके० तेनाअर्थ एम अवतारीयेंके०उतारीयें ॥ ३ ॥

बहुमानेनिसुणेगियड ॥ पासेन्नंगादिकबहुअड ॥
जाणगुरुपासेंव्रतग्रहे ॥ पालेउपसर्गादिकसहे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ इहां बहुमान कह्युं पण विनयतथाबहुमान बंने लेवां यतः विणयबहुसाणसारं ॥ गीयडाउकरेइवयसवणं ॥ इतिवचनात्. गीयडपासेके०गीतार्थपासेथीजेनिसुणेके०सांजले तेविनय तथाबहुमानसहित सांजले इहांचोन्नंगीकहेछे १ कोइकधूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनयतोहोय पणगुरुकर्माके०न्नारीकर्मिमाटेबहुमान अंतरप्रीति नहोय२ कोइकमां बहुमानहोय पण विनयकरवानी शक्तिनहोयतेग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धियाजीवमां विनय तथा बहुमान बेहु होय ४ कोइकआकरापापकर्मीमां विनय तथा बहुमान एके नहोय इहां व्रतसांजलवाने कह्युं. पण उपलक्षणथी सर्व शास्त्र सांजले सूत्रतेगीत अने तेनुं व्याख्यानतेअर्थ अने जेअर्थसहित तेगीतार्थ यतः गीयंन्नन्नइसुत्तं ॥ अडोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ गीएणयअडेणय ॥ संजुत्तोहोइगीयडो ॥१॥ एटले गीतार्थपासे सांजलीने एपहेलोन्नेद न्नंगादिक बहु अर्थ जाणेके०व्रतनान्नांगा प्रमुखबहुअर्थसमजे जेम पच्चरकाणना ४९ न्नांगाने त्रिकालनागणियें तेवारे१४७ न्नांगा थाय वली व्रतआश्रीगणियें तेवारे एकव्रते ६ बेव्रते ४७ त्रणव्रते ३४२ इत्यादिक यावत्बारव्रते १३८४१२८७७२०० न्नांगाथाय अत्रगाथा ॥ तेरसकोमीसयाइं ॥ चुलसीकोडीउबारसयलरका ॥ सगसीइसहसदोसय ॥ सवग्गंछक्कन्नंगीए ॥१॥ नवन्नंगीयेंएकव्रते ९ बेव्रते ९९ यावत्बारव्रते ९९९९९९९९९९९९ अने एकवीसन्नंगीकरियेंतेवारें बारेव्रते १२८५५००२६३१०४९२१५ थाय ४९ न्नंगेबारेव्रते २४४१४०६२४९९९९९९९९९९९९ न्नांगाथाय १४७ न्नांगायेंबारेव्रते ११०४४३६०७७१९६११५३३५६९५७६९५ न्नांगाथाय सर्वअक्षरसंचारणायें जाणवा. इत्यादिक न्नांगानुं ज्ञानकरे, आदिशब्दें व्रतनाअतिचार जाणे, एबीजो न्नेदविस्तारे धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो. पछीगुरुपासेथी व्रतअंगीकारकरे. आणंदादिकश्रावकनीपेठे इत्वर तेचोमासाप्रमुखना अथवा यावत्कथिकते जावजीवना

एत्रीजोभेदथयो, अने पालेके०सम्यक्पाले तथा उपसर्गादिक जेआवे तेसर्वे कामदेव श्रावकनीपेठेसहे, एचोथोभेद कह्यो. एकृतव्रतकर्मोना चारभेदवखाण्या ॥ ४ ॥

सेवेआयतणाउद्देश ॥ परगृहतजेअणुभडवेस ॥ वचन
विकारत्यजेशिशुलील ॥ मधुरभणेएषटविधशील ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेवीजाशीलव्रतनामालक्षणना छभेदकहेछे. सेवेआयतणाके०साधर्मिकने मलवानुं स्थान सेवे. यतः ॥ जच्छसाहम्मियाबहवे ॥ शीलवंताबहुसुया ॥ चरित्तायारसंपन्ना ॥ आययणंतंवियाणाहि ॥१॥ तेवो उद्देशके०स्थानक सेवे पण भिल्लनी पालीप्रमुखसेवेनही, एपहेलोभेद. वली परगृहतजेके०पारका घरमांपेसतो नफरे, केमके कांइवस्तु खोवाय त्यारेतेनाऊपर शंकाआवे पण कारणे कोइना घरमांजाय तेवात जूदीछे, ए बीजोभेद. तथा अणुभडवेसके०उद्भटवेषनपहेरे जेथकी लांठीआ ठेलीआ आदमीमां गणाय तेनकरे, एत्रीजो भेद. वली वचनविकार त्यजेके०जेथकी रागद्वेष वधे एवा विकारनां वचनबोलेनही, एचोथो भेद. अनेशिशुलीलके०बालक्रीडा, जुगटुं रमवुं इत्यादिक त्यजे, एपांचमोभेद. वली मधुरभणेके०मीठुंबोले गमेतेवुं कार्यपडे तोपण हे सौम्य, हेसुंदर, आकामकरशो एमकहे ए छ भेद शीलवंतनामागुणना जाणवा ॥५॥ हवे एज छ भेद विस्तारीदेखाडेछे ॥

आयतनेसेवेगुणपोष ॥ परगृहगमनेवाधेदोष ॥ उद्भट
वेषनशोभालाग ॥ वचनविकारेंजागेराग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आयतनके०जेसाधर्मिनां स्थानक तेसेवतांथकां गुणनी पुष्टिथाय गाथा ॥ आययणसेवणाउ ॥ दोसाजिच्चंतीवड्ढइगुणोइतिवचनात् ॥ वली परगृहगमनेके०पारकेघेरजातां वाधेदोषके०दोषवधे यतः परगिहगमणंपिकलंकपंकमूलंसुशीलाणंइतिवचनात्॥ वली उद्भटवेषतेशोभालायकनही गाथा ॥ सहइपसंतोधम्मी ॥ उभडवेसोनसुंदरेतस्सइतिवचनात्॥सहइके०शोभेपसंतधम्मीके०प्रशांतधर्मिउद्भटवेषतेने सुंदर नथीइति तथा वचनना विकारेकरीने रागजागे माटे विकारनां वचन कहेनही यतः सवियारजंपियाइं॥ मूण मूइरंतिरागग्गि इतिवाक्यात्तेमाटेनकहे यतः जंसुणमाणस्सकहंसुठुयरंजलइमाणसे मयणो ॥ समणेणसावयेणविनसाकहाहोइकहियव्वा ॥ इतिवचनात् ॥६॥

मोहतणोशिशुलीलालिंग ॥ अनर्थदंडअछेएचंग ॥ क
ठिणवचननुंजल्पनजेह ॥ धर्मिनेनहिसम्मततेह ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे शिशुलीलाके०बालक्रीडा ते मोहतणोके०मोहनुंलिंगछे वली केवीछे अ-

नर्थदंडछे तेजीवने चंगके०मनोहर लागेछे यतः बालिसजणकिलाविहु ॥ मूलंमोहस्स-णछदंमाउं ॥ इतिवचनात् हवे छठोभेद कहेछे ते कठिणवचननुं जे बोलवुं ते धर्म्मि-जीवने सम्मतके०मान्यनही यतः परुसवयणाभियोगो ॥ नसम्मउंसुद्धधम्मिणंइतिव-चनात् एछभेदेकरी बीजो शीलवंतनामाभेद संपूर्णथयो ॥ ७ ॥

उद्यमकरेसदासज्झाय ॥ करणविनयमांसर्वउपाय ॥ अन
भिनिवेशीरुचिजिनआण ॥ धरेपंचगुणएहप्रमाण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे गुणवंतनामाभावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षणकहेछे तेमां यद्यपि औदार्य धर्य गांभीर्य प्रियबोलवुं इत्यादिक अनेक गुणछे तोपण पांचगुणेकरी गुणवंत गीता-र्थेकह्याछे १ सज्झायके०भणवा वांचवा पूछनादिकनो उद्यमकरे २ करणके०अनुष्ठानक्रि-याकरे ३ विनयमांके०गुरुआदिक आवे अभ्युछानादिककरे सदाउजमालथको जेजेवि-नयनाप्रकारछे तेते सर्वेकरे ४ अनभिनिवेशीके०कदाग्रहीनहोय इहलोक साधवामां कदाग्रहनकरे ५ रुचिके०आकरी श्रद्धा जिनआणके०जैनागमनेविषे होय एपांचगुण धरे तेगुणवंतकहियें ते प्रमाणके०मान्यछे ॥ ८ ॥

सज्झायेंधरेवैराग ॥ तपनियमादिककरणेराग ॥ विनयप्र
युंजेगुणनिधितणो ॥ जेममनबाधेआदरघणो ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे एपांचेनां फलकहेछे. प्रथम सज्झायकरतां जीवने वैरागवधे तथा अ-नुष्ठानमां सावधानथको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंतहोय. जेतपते बारभेद प्र-सिद्धछे अने नियमते साधुने विश्रामण उत्तरपारणालोचकराव्योहोय तेने घृतप्रमुखनुं दानदेवुं. यतः पहसंतगिलाणेसुय ॥ आगमगाहिसुतहयकयलोए ॥ उत्तरपारणगंमिय ॥ दाणेसुबहुफलंहोइ ॥ १ ॥ इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुखपण ए गुणमां लेवां३तथा गुणनो निधानजेपुरुषतेनोविनय प्रयुंजेके०करे. गुणवंत आवे तेवारे उभोथाय. सामोजाय, मस्तके अंजलीकरे, आसनआपे, गुरुवेठापछी बेसे, सेवाकरे, जायत्यारे वोलावाजाय इत्यादिक विनयकरे तेविनयवंत देखीने तेनाऊपर गुरुनो घणो आदरवधे आम्नायादिकगुरुतेनेआपे ॥ ९ ॥

अनभिनिवेशीअवितछगणे ॥ गीतारथभाषीतजेसुणे ॥
सदहणायेंसुणवाचाह ॥ समकितनोमोटोउछाह ॥ १० ॥

अर्थ ॥ अनभिनिवेशीजेहोय तेने अवितछके०यथार्थ माने अनेगीतार्थ जेबोले गीतार्थकहेतेयथार्थजाणे तथा गीतार्थपासे सांभले श्रद्धापूर्वक सांभलवाने वांछे उप-

लक्षणथी श्रद्धायेंइच्छापूर्वकअनुष्ठानकरे एवी श्रद्धाविनासमकितनी शुद्धिक्यांथी थाय यतः सवणकरणेसुइच्छा॥ होइरुइसद्दहाणंसंजुत्ता ॥एइएविणाकत्तो॥सुद्धिसम्मत्तरयणस्स ॥ १ ॥ इतिएसमकेतनो मोहोटो उच्छाहके०हर्षछे ॥ १० ॥

अवितथकथनअवंचकक्रिया ॥ पातिकप्रकटनमैत्रीप्रिया ॥
बोधवीजसद्भावेंसार ॥ चारन्नेदएरुजुविवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनुं चोथुंरुजुव्यवहारनामा लक्षण चारन्नेदेकरी कहेछे १ अवितथकथनते यथार्थवोले धर्म व्यवहारमां परने ठगवाने माटे धर्मने अधर्मनकहे अधर्मने धर्मनकहे क्रयविक्रयव्यवहारमां लेवेदेवे जूठुं नवोले तथा साक्षीव्यवहारमां राजदरवारे पण खोटीसाहेदी नपूरे तथा धर्मनी हांसीथाय एवुं पणनवोले ए प्रथमन्नेद २ अवंचकक्रियाके०बीजाने कष्टउपजे एवीक्रिया नकरे सारीवस्तुमांखरावव-स्तुन्नेलीनआपे अथवा ताकडीप्रमुखतोलमां अधिकुंओछुं आपीलेइने परने ठगेनही तथा आनवमां पणवंचनक्रियाते केवलपापजछेएमदेखतो परने ठगवाथी निवर्ते यद्य-पिअवंचकक्रियाते पोतानो आत्माठगायनही ईहां योगअवंचक क्रियाअवंचक फल-अवंचक इत्यादिकपूर्वेना टवामां अर्थलख्योछे पण धर्मरत्नग्रंथमां एरीतेनथी माटे अमे नथीलख्यो ३ कोइक पापकरतोहोय तेने प्रकटनके०अपाय कही देखाडे जे हे नद्र पापकरतां अनर्थथाय इत्यादिक कहे पणतेने उवेखेनही ४ मैत्रीप्रियाके०निष्क-पटपणे मित्राइकरे ते साचेन्नावेकरे पण खोटेन्नावे नकरे माटे एमकह्युंजेसारबोधवी-जपामे एचारन्नेदेंकरी रुजुके०सरलतानो व्यवहारकहियें अने एचारेबोलथी विपरी-तकरे तोबोधवीजजाय एम धर्मरत्नप्रकरणमांकह्युं छे ॥ ११ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसंपादनन्नावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्यानयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रूषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउवि-हके०चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके०बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपा-दनके०गुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुंकरे ४ नावनाके०गुर्वादिकनो वहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो वहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनलेवा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेन्योधर्मशास्त्राणां देशकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारेन्नेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणवगरअवसरें नकरे तेक-हेछे जे ध्यानके०धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० छेद नकरे एटले जीर्णशेठनीपेठे व्याघातनकरे ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणन्नाषेनिजपरबतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुन्नावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके०बीजाने गुरुसेवानेविषे प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरुगुण न्नाषीके०वर्णनकरीने एटले एन्नावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादी होय ते पणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिन्नावः ३ तथा निजके०पोताथी अने परबतें के०परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगीतेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां न्नोगववा योग्य तेन्नेषज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइये ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुन्नावेंचालेके०गुरुने अन्निप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरुने अनुजायीचाले अविचलीके०अविचलथको

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ न्नावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योबेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे न्नावश्रावकनुं प्रवचनदक्षनामा बहुंलक्षण वखाणेबे ते बन्नेदेबे ते माटे श्रावकपण बन्नेदे जाणवो तेकहेबे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके०अपवाद एटले विशेषसूत्रनेविषे कुशल ५ न्नावेंके०विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके०उद्यमसहित निपुणपणुंके०कुशलपणुंपाम्योबे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंन्नणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषय
विन्नागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे एबन्नेद विस्तारीकहेबे १ उचितसूत्रके०श्रावकने योग्यसूत्र चौसरणादिक प्रवचनमाताथी मांडीने बजीवणीयाअध्ययनपर्यंतन्नणे उक्तंच ॥ पवयणमाइबजीवणियंताउन्नयवियरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहणशिक्षा तत्रप्रकृता उन्नयतः सूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीते सूत्रन्नणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रंथनासमूह तेपोतानीबुद्धिनेअनुसारेन्नणे २ अर्थके०तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थें के०संविज्ञ गुरुपासेथी सांन्नले ३–४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एवेन्नेदसाथेकहेबे अविवादके०विवादरहितपणे विषयविन्नागलहेके०पोतपोतानेठेकाणेजाणे उत्सर्गनेउत्सर्गठामेजाणे अपवादने अपवादठामे जाणे पण एकलो उत्सर्गज न आलंबे अथवा एकलो अपवादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लान्नालान्न जोइ कार्यकरे एसर्वेचारन्नेद कह्या ॥ १५ ॥

पञ्चावविधिमांहेधरे ॥ देशकालमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पञ्चावके०बहुमानहोय तथा बीजो कोइ विधिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अन्नावें पण विधिआराधवानो मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं ६ हवे व्यवहारकुशलनामा बठो नेदवखाणेबे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एन्नाव जे देशतेसुस्थित डुस्थितादि तथाकालते सुकाल डुष्कालादिक प्रमुखशब्दें डव्यसुलन्न डुर्लन्नादि न्नावथी हृष्ट ग्लानादिक तेसर्वेने पोतपोतानीहदेजाणे गीतार्थनो व्यवहार सर्वपोतेजाणे एटले एन्नावजे उत्सर्गेअपवादना जाणजेगीतार्थ तेणे आचस्योजे व्यवहार ते पोतानी मते डुषवेनही पण तेसर्वेव्यवहार तेमज अंगीकारकरे एबप्रकारनो प्रवचनकुशल ते उदारके०प्रधानकहियें ए बलक्षण न्नावश्रावकनां जाणवां ॥ १६ ॥

किरियागतएषटविधलिंग ॥ न्नाषेतुंजिनराजअन्नंग ॥ एविधिश्रावकजेआचरे ॥ सुखजशलीलातेआदरे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ षटविधलिंगके०एबप्रकारना लिंग ते किरियागतके०क्रियाथी उलखाय जेम धूम्रथी अग्निउलखाय तेनीपेठे एम हेजिनराज सामान्यकेवलीमां राजासरिखा तुं न्नाषेके०कहेबे अन्नंगके०समस्तपणे एविधि जे श्रावक आचरे ते सुख तथायश तेनी जे लीला तेने आदरेके०पामे ॥ १७ ॥ इहांशिष्यप्रश्न पूबेबे जेहेस्वामी बीजा वली कांइ लिंगबे के तमेएबलिंगक्रियागत कह्यां तेटलांजबे तेने गुरुउत्तरआपेबे जेन्नावगतलिंग जूदांबे ते तेरमी ढालमां कहेबे एसंबंधेआवी ढालतेकहेबे ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ बठीन्नावनामनधरो ॥ एदेशी ॥

न्नावश्रावकनान्नावियें ॥ हवेसत्तरन्नावगततेहोरे ॥ नेहोरे ॥ प्रन्नुतुऊवचनेअविचलहोजोए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे न्नावश्रावकनालिंग गणत्रीयें सत्तरबे तेन्नावगतबे तेकहियेंबेयें माटे हेप्रन्नु हेस्वयंबुद्ध तारा वचननेविषे चलेनही एवो मुऊने स्नेहहोजो ॥ १ ॥

इबीचंचलचित्तथी ॥ जेवाटनरकनीमोटी रे ॥ खोटीरे ॥ बंडेएगुणधुरेंगुणोए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ यतः १ इत्थि २ दिय ३–४ संसारब ५ विषय ६ आरंन्न ७ गेह ८ दंस-

णउं ॥ ए गरुरिगाइंपवाहे ॥ १० पुरस्सरंआगमपवित्ति ॥ १ ॥ ११ दाणाईजेहासत्ति॥ पवत्तणा १२ विहर १३ रन्नदुठेय ॥ १४ मञ्झब १५ संबरू ॥ १६ परच्छकामोवत्तो-गीव ॥ २॥ १७ विसाइवगिहवासं पालइसत्तरसपयंनिबद्धंतु॥ नावगयन्नावसावग ॥ ल-खणमेयंसमासेणं ॥ ३ ॥ एसत्तरगुणकह्या तेमां पहेलुं लक्षणकहेछे इहां इछाचंचल चित्तथी एवुं विपिदोषे घणीप्रतोमां लखायुंछे तेथी पूर्वेटवाकारें इछा एवो अ-र्थकह्योछे पण तेनिर्मूलछे माटेउवेख्योछे अत्रार्थे धर्मरत्नग्रंथजोइनेनिश्चयकरवो इत्री के० स्त्री केवीछे जेचित्तथी चंचलके०चपलछे एटले अन्यअन्य पुरुषनी इछाकरनारीछे व-लीवाट नरकनी मोटीके०मोटीनरकनी वाटछे एटले नरकेजवानोमार्गछे तेखोटीरेके० हीणी वाटछे माटेस्त्रीने एवीजाणीने मूके एगुणधूरेंगुणोके०पहेलोसंख्यामांगणो ॥ २ ॥

इंद्रियचपलतुरंगने ॥ जेरूंधेज्ञाननीराशिरे ॥
पासेंरे ॥ तेबीजोगुणश्रावकधरेए ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे इंद्रिय जे पांच शास्त्रोक्तस्वरूप तद्रूपजे चपलके० शीघ्रगामीपणामाटे दुर्गतिने सन्मुखचालता एहवाजे तुरंगके०घोडा तेने जे ज्ञानरूप राशिके०राशडीयें करीने रूंधेके०रोकीराखे एवीजोगुणते श्रावकपोतापासेधरे ॥ यतः इंदियचवलतुरंगे ॥ दुग्गइमग्गाणुंधाविरेनिच्चं ॥ नावियन्नवस्सरूवो ॥ रुंनइसन्नाणरस्सीहिं ॥ १ ॥ ३ ॥

क्लेशतणुंकारणघणुं ॥ जेअर्थअसारजजाणे
रे ॥ आणेरे॥तेत्रीजोगुणनिजसंनिधिए॥४॥

अर्थ ॥ जे घणुंके०अत्यंत क्लेशनुंकारण एवोजे अर्थके०द्रव्य तेने असारजजाणे एत्रीजोगुण निजसंनिधिके०पोतानीपासे आणेके०लावे ॥ ४ ॥

नवविडंबनामयअछे ॥ वलीदुःखरूपीदुःखहेतो
रे ॥ चेतोरे ॥ एमचोथोगुणअंगीकरेए ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नवके०जेसंसार तेकवोछे जे विटंबनामयीछे वली जन्म, जरा, मरण, रोग, शोकादिक दुःखरूपीछे वली जन्मांतरे नरकादिक दुःखनोहेतुछे एम दुःखनीज परं-पराआपे तेचेतोके०जाणो एचोथोगुणश्रावकअंगीकारकरे ॥ ५ ॥

खीणसुखविषयविषोपमा ॥ एमजाणीनवीबहुइ
हेरे ॥ बीहेरे ॥ तेथीपंचमगुणवरघोए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे विषयकेवाछे जे क्षणिकमात्र सुखछे तेपण विषोपमाके०कालकूटस-

रिखाछे परिणामे दारुणछे एवा विषयजाणीने तेने बहुके०अत्यंतपणे नवीइहेके०नवांछे अनेतेविषयने असारजाणेछे माटे तेथी वीहेके० बीतोरहे एपंचमगुणनेवस्योथको शोन्ने॥

तीव्रारंन्नतजेसदा ॥ गुणछठानोसंन्नागीरे ॥
रागीरे ॥ निरारंन्नजननोघणुंए ॥ ७ ॥

अर्थ॥ हवे तीव्रारंन्नके०घणाप्राणीने पीडाकारीजे खरकर्मादिक व्यापार तेने सदा तजे कदाचित्करे तोसशोकथकोकरे पण निःशोकथको नकरे तेछठागुणनो संन्नागी-के०न्नजनारोथाय यद्यपिअणचालतेकांइकआरंन्न पोतेसशोक थकोकरेछे पणरागीतो निरारंन्नके०आरंन्नरहितजे जनके०लोकतेमुनिराजनोहोयघणोके०अत्यंतहोय ॥

मानेसत्तमगुणवरयो ॥ जनपाससदृशगृहवासो
रे ॥ अन्यासोरे ॥ मोहजितवानोकरेए ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे सातमो गेहनामा गुणवखाणेछेते सातमो गुणवस्योथको मानेके०जा-णे ते जनके०प्राणी घरवासने पाससदृशके०बंधनसरिखो माने जेम पक्षी पासमां पड्यो उडीनशके अने पोताना आत्माने दुःखीमाने एम गृहमातापितादिकसंबंधेदी-क्षा लेइनशके पण दुःखमाने अनेतेप्राणी अन्यासतो मोहने जीतवानोज करे ॥ ७ ॥

अठमदंसणगुणन्नस्यो ॥ बहुन्नांतेंकरेगुरुन्नक्ति
रे ॥ शक्तिरे ॥ निजसद्दहणानीफोरवेए ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आठमो दर्शननामा गुणेन्नस्योथको गुरुजेधर्माचार्य जेनाथी समकित पा म्योतेगुरुनी न्नक्ति बहुन्नांतेंकरे अने पोतानी श्रद्धानी शक्तिफोरवे एटले एन्नावजे आ-स्तिक्यन्नावसहितअने अतिचाररहित दर्शननेधरतो शक्तियेंप्रन्नावना तथा वर्णवाद बुद्धिवंतकरे यतः अछिकन्नावकलिउं॥ पन्नावणावन्नवायमाइहिं ॥ गुरुन्नत्तिजुउंधीमं ॥ धरेइइयदंसणंविमलं ॥ १ ॥ ए ॥

लोकसन्नाहविपरिहरे ॥ जाणेगाडरिउंपरवाहो
रे ॥ लाहोरे ॥ एमनवमागुणनोसंपजेए॥१०॥

अर्थ ॥ हवे गाडरीकप्रवाहनामानवमोन्नेदवखाणेछे लोकसन्नाहके०लोकअविचारित रमणीकतेने परिहरेके०त्यजे अने लोकनीचाल तेगाडरीयाप्रवाहजेवीछे जेम एकगाड-रनीपछवाडे बीजुंगाडर चाले उपलदृणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाहपण कहेवोतेजेम अविचारितछे तेम लोकप्रवाहपण तेवोछे तेमाटे वर्जे एम नवमागुणनोलाहोनीपजे ॥१०॥

आगमनेंआगलकरे ॥ तेविणकुणमारगसाखीरे ॥
नाषीरे ॥ एमकिरियादशमागुणथकीए ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेदशमो आगमनामाजेद वखाणेडे जेकार्यकरेते आगमने आगलकरी-नेकरे एम विचारेजे आगमविना जेपरलोकसाधवानोमार्ग तेनो कोणसाखी एटले वीतरागनाआगममांज एवामार्ग होय नाषीके०एवुं कहीने एरीतनी क्रिया करे एटले एनावजे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूपक्रिया जिनागमतथ्य जाणीने आगमोक्तक्रियाकरे एदेववंदनादिक क्रियानोविस्तारधर्मरत्नमां जोइलेजो एद-शमागुणथकी क्रियापामे ॥ ११ ॥

आपअबाधायेंकरे ॥ दानादिकचारशक्तिरे ॥
व्यक्तिरे ॥ एमआवेगुणइग्यारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे दानादिक यथाशक्तियेंकरे एअग्यारमोजेदकहेडे आपअबाधायेंके० पोताने पीडा नउपजेतेम दानादिकचारेकरे जोद्रव्यपात्रहोय तो देतोथको थाकेज नही अने जोअल्पद्रव्यवानहोय तो अतिउदार न थाय उक्तंच ॥ लाजोवियदाणे ॥ लाजोवियजोयणे ॥ लाजोवियपरिजावे ॥ लाजोवियनिधिकरेसिया इत्यादि एमथोरे कालेघणुंआपीशके तेमज शील तप जावनानेविषेपण यथाशक्तिप्रवर्ते एमव्यक्तिके० प्रगटपणेअग्यारमोगुण श्रावकनेआवे ॥ १२ ॥

चिंतामणिसरिखोलही ॥ नविमुग्धहस्योपणलाजे
रे ॥ गाजेरे ॥ निजधर्मेंएगुणबारमोए ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे विह्रिकनामाबारमोगुणकहेडे चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानोधर्म ल-हीके०पामीने जे मुग्धके०मूर्खलोक तेणे हस्योथको पण नविलाजेके०नलाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजेनही गाजेरेके०उत्सुकहोय हर्षवंतहोय निजधर्मेके०पोतानाध-र्मनेविषे एबारमो गुणजाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमांचिंतामणिरत्नसरिखी क्रियाकर-तोनलाजे एमकह्युंडे तोइहांचिंतामणिरत्नसरिखोधर्मकह्यो तेमांकांइविरुद्धनथीकेमके क्रियाने धर्मकांइजूदांनथी ॥ १३ ॥

धनजवनादिकजावमां ॥ जेनविरागीनविद्वेषी
रे ॥ समपेषीरे ॥ तेविलसेगुणतेरमेए ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे तेरमोअरक्तद्विष्टनामाजेद वखाणेडे शरीरनीस्थिति हेतुडे धनजवन

आदिशब्दथी स्वजन आहार घर क्षेत्र कलत्र वस्त्र शस्त्र यान वाहन इत्यादिक लेवां. तेपदार्थमां रहेतोथको पण नविरागी नविद्वेषीके० रागद्वेषरहितनीपेठे होय एटले मंदआदरहोय अन्यथारागद्वेषरहिततो उपलेगुणठाणे होय ते इहांकेमघटे अने समपेषीके०मध्यनावनो जोनारो होय जेमाटे नावश्रावक एमनावे यतः नेयइन्नकोइ सयणो ॥ नसरीरंनेयनोगउवनोगा ॥ जीवोअन्नन्नवगइ ॥गन्नइसवंपिमोत्तूणंइत्यादिअविनितलोक ऊपरद्वेषपण नकरे तेश्रावक तेरमागुणने विलसे ॥ १४ ॥

रागद्वेषमध्यस्थनो ॥ समगुणचउदमेनवाधेरे ॥
साधेरे ॥ तेहठगंडीमारगनलोए ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे चउदमो मध्यस्थनामागुण वखाणेछे रागद्वेषमध्यस्थनोके० रागद्वेषमां तणायनही तेमां मध्यस्थपणुंराखे एरागद्वेषमध्यस्थनो समगुणकहियें एटले एनावजे परमार्थविचारकरे जे मेंमतलीधोतेकेम मूकुं अथवा अमुक मारो मत खंडेछे तेने खंडुंएवो रागद्वेषनकरे तेप्राणी चौदमागुणनेविषे वाधानपामे एटले समगुणीपीडाय नही तेप्राणीपोतानो हठके०कदाग्रहगंडीने नलोमार्गसाधे एटले परने तथा पोताने हितवांछकथको कदाग्रहमूकी मध्यस्थगीतार्थगुरुने वचने प्रदेशी राजानीपेठे प्रवर्त्ते एटले तेरमागुणमां धननवनादिकमां मंदआदरहोय अनेचौदमागुणमां धर्ममां कदाग्रहमूके सम्यक्अंगीकार करे ॥ १५ ॥

क्षणनंगुरतानावतो ॥ गुणपन्नरमेसेवंतोरे ॥
संतोरे ॥ नधनादिसंगतिकरेए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे असंवंधनामापन्नरमो नेदवखाणेछे क्षणनंगुरतानावतोके०सर्वपदार्थ क्षणनंगुरछे अनित्यछे तन धन स्वजन जीवित द्रव्यप्रमुख एसर्वेअनित्यछे एम विचारतो पन्नरमा गुणने विषे संतोके० सज्जनपुरुषोने सेवंतोके०सेवे नधनादिसंगतिकरेके०धनप्रमुखनी संगतनकरे एमविचारे यतः विज्जुडुपयंचउप्पयंच ॥ खित्तंगीहंधणधन्नंचसवं ॥ सकम्मप्पवीउअवसोपयाइ ॥ परंनवंसुंदरपावगंवा ॥ १ ॥ १६ ॥

नावविरतिसेवेमनें ॥ नोगादिकपरअनुरोधेरे ॥
बोधेरे ॥ एमउल्लसेगुणसोलमेंए ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे सोलमो परार्थकामोपनोगीनामा नेदकहेछे नव जेसंसारनेविषे विरक्तमनथको नोगादिकने सेवे तेपण परअनुरोधेके० परनादाक्षिण्यादिकेंसेवे बोधेरेके० एवाउदासीनज्ञानेकरी सोलमोगुणउल्लासपामे ॥ १७ ॥

आजकालएछांडिसु ॥ एमवेश्यापरेंनिसनेहोरे ॥
गेहोरे ॥ परमानेगुणसत्तरमेंए ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे सत्तरमो वेश्यानीपेठे घरवासपाले एजेदवखाणेछे जेए घरवासछेते आज छांडिशुं अथवा काले छांडिशुं एम वेश्यानीपेठे निस्नेहीरहे जेमवेश्यानिर्धन देखी विचारे जे हवे आज अथवा काले छांडुंछुं एमविचारे तेम गृहस्थपण आस्थाप्रमुख विना घरमांवसे पणघरने परकरीमाने एसत्तरमेगुणे देशविरतिना अनेक जेदछे माटे नानाजिप्रायवंतहोय तेमाटे पुनरुक्तदोषकोई जेदमांनजाणवो ॥ १७ ॥

एगुणवृंदेजेजस्या ॥ तेश्रावककहियेंजावेंरे ॥
पावेरे ॥ सुजशपूरतुजजक्तिथीए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एगुणना वृंदके०समूह तेणेकरी जेजस्याछे ते जावेंके०जावथी श्रावककहियें यतः इयसत्तरसगुणजुत्तो ॥ जिणागमेजावसावगोजणीयो ॥ इति वचनात् ते पावेके० पामे सुजशपूरके०जलाजशनो पूरपामे तुजजक्तिथीके०हेवीतराग हेचिदानंदस्वरूपी तारी जक्तिथकी पामे एटले तारीआज्ञायें जावश्रावकपणुंपालवुं तेतारी जक्तिजछे ॥ १९ ॥ एतेरमीढालमध्ये जावश्रावकनुं लक्षणकह्युं ते जावश्रावकजे होय ते ड्रव्य-साधु कहियें अनेजेड्रव्यसाधु होयते जाव साधुपणुंपामे तेमाटे हवे जावसाधुनांल-क्षण चउदमी ढालमां कहेछे ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

तेजावसाधुपणुंलहे ॥ जेजावश्रावकसार ॥ तेहनांलक्षणसातछे ॥
सविजाणेहोतुंगुणजंडार ॥ साहेवजीसाचीताहरीवाणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेसारके०प्रधानजावश्रावकपूर्वेकह्या तेजावसाधुपणुंपामे तेनांवली सातलक्ष-णछे ते हेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्य सुखदान लाजजोग उपजोगादिक गुणनाजंडार एवा हेपरमेश्वर तमेसर्व जाणोछो केवलज्ञान केवलदर्शनेकरी षट्ड्रव्यनुं जासन थायछे ते माटे हेसाहेवजी तमारी वाणीते साचीछे सत्यछे एटले एजावजे आचार्यपरंपरा तथा जि-तआचार तथाप्रकरणादिकमां जेजावकह्याछे तेतमारीज वाणीछे पणकोइनी कल्पित नथी

किरियामारगअनुसारणी ॥ श्रद्धाप्रवरअविवाद ॥ रुजुजावे
पन्नवणिजाता ॥ किरियामांहोनित्यंअप्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे सातलक्षणकहेछे सर्वक्रिया प्रत्युपेक्षणादि तेमार्गानुसारणी जे मोक्ष-

मार्गने अनुजायीचेष्टाहोय तेप्रथमलक्षण तथाधर्मनेविषे श्रद्धाके०करवानीइछा प्रवरके० प्रधान अविवादके०विवादरहित तेबीजुंलक्षण अनेपन्नवणिज्जताके०प्रज्ञापनीयपणुं एटले परुपणाकरवी ते ऋजुभावेंके०सरलभावें एटले तेनी परुपणा तेअसदभिनिवेश कदाग्रहेंनहोय एत्रीजुंलक्षण वली क्रियाजे शुभहितअनुष्ठान तेनेविषे निरंतर अप्रमादीहोय पणशिथिलनहोय एचोथुंलक्षण ॥ २ ॥

निजशक्तिसारुकाजनो ॥ आरंभगुणअनुराग ॥ आराध
नागुरुआणनी ॥ जेहथीलहियेंदोभवजलताग ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तथा पोतानी शक्तिप्रमाणें तपसंयमादिक कार्यनो प्रारंभकरे पणशक्तिने उलंघी तपस्याप्रमुख नकरे एपांचमुं लक्षण अने गुणअनुरागके०गुणीनो पक्षपातहोय एछठुंलक्षण तथा गुरुआज्ञानुं आराधवुं तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवुं गुरुनीआणाथी संसारसमुद्रनो पारलहियेंके०पामियें एसातमुं लक्षण ॥ ३ ॥

मार्गसमयनीथितितथा ॥ संविज्ञबुधनीनीति ॥ एदोई
अनुसारेक्रिया ॥ जेपालेहोतेनलहेभीति ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ऊपरकहेला सातभेदमांथी मार्गानुसारणीक्रिया नामें प्रथमभेदवखाणेछे मार्गके०समयनीस्थिति एटले आगमनी मर्यादा तेआगम केने कहियें उक्तंच आगमोह्याप्तवचनमाप्तंदोषक्षयाद्विदुः ॥ वीतरागोनृतंवाक्यं नब्रूयाद्धेतसंभवात् ते आगमनी स्थिति उत्सर्गअपवादरूप शुद्ध संयमनो उपाय तेमार्ग कहियें अथवाजे संविज्ञबुधनीनीतिके०संविज्ञ जेमोक्षाभिलाषी अने बुध तेगीतार्थ इहां बहुपदअधिकुं कहियें तेवारे एमकहेवुंजे संविज्ञ बहुगीतार्थनी नीतिके०जेआचरण क्रियारूप तेने पण मार्गकहियें एदोईके०बेअर्थ मार्गनाकह्या तेबामार्गने अनुसारणीजेक्रिया आगमनी अबाधायें संविज्ञ व्यवहाररूप तेमार्गानुसारणीक्रिया कहियेंएवी क्रियाजेपालेते भीतिके०संसारनीबीक नलहेके०कदापि नपामे इतिगाथार्थ हवे संविज्ञ गीतार्थनी नीति एनापदछेदकरियेंछैयें संविज्ञपदकह्युं तेअसंविज्ञपणुं टालवामाटेकह्युं तोतेघणा असंविज्ञमलीने जेआचर्योहोय तोपण प्रमाण नथाय यद्व्यवहारः जंजीयमसोहिकरं ॥ पासत्थपमत्तसंजयाईहिं ॥ बहुएहिंविआयरियं ॥ नपमाणंसुद्धचरणाणं ॥ १ ॥ इहां बहुगीतार्थपदमूक्युं तेनुं कारण एजे एकगीतार्थें आचर्युंहोय तेकदाचित् अनाभोगें अनवबोधादिककारणे विपरीतपणे आचर्युं होय तेपण प्रमाण नथाय तेमाटे बहुगीतार्थपद मूक्युं तोते बहुगीतार्थ जेआचरेते अवितथहोय इहांकोइ प्रश्नकरे जेआगम मार्ग कहेवो तेतोयुक्तछे पण बहुजनाचरणकहेवुं युक्तनथी केमके घणालोकोये तो

लौकिकमार्गे आचर्योहोय माटे आगमतेतोप्रमाण पण घणालोकोनुं आचरण प्रमाण नही वली आगमते ज्येष्ठछे अने बहुजनआचरणते अनुज्येष्ठछे अने लौकिकमां पण ज्येष्ठनेमूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्तनथी तेमज आगमतो केवलीपण अप्रमाण नकरे यतः अहोसुउंववज्तो ॥ सुअनाणीजइविगिएहइअसुऊं ॥ तंकेवलिविभुंजई ॥ अपमाणंसुअंचवेइहर ॥ १ ॥ तथा आगमछतां जोआचरणा प्रमाणकरियेंतो आगमनीलघुता थाय हवे गुरुउत्तर कहेछे जे संविझगीतार्थछे तेआगमनी अपेक्षाविना आचरे-जनही तेशुंआचरे नही तथाशुंआचरे तेकहेछे यतः दोसाजेणनिरुझंति ॥ जेणखिझंतिपुव्वकम्माइं ॥ सोसोमुक्खोवाउ ॥ रोगावछासुसमणंच ॥ १ ॥ इत्यादिक आगमवचनसंजारी द्रव्य खेत्र काल नाव पुरुषादिकउचितजोइ संयमने वृद्धिकारीज आचरे तेबीजासंविझगीतार्थ पणअंगीकारकरे तेमार्गकहियें अने बीजा बहुलोके आचर्युं तेतो असंविझ अगीतार्थमाटे अप्रमाणछे वलीआचरणा प्रमाणकरतां आगमतो अत्यंत प्रतिष्ठा पामेछे श्रीठाणांगसूत्रमां पांचप्रकारना व्यवहार प्ररूप्याछे उक्तंच पंचविहे ववहारे पन्नते तंजहा आगमववहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जियववहारे इहां जितअने आचरणा तेएकजअर्थछे तेमाटेआचरणा मानतां अत्यंतपणे आगममान्युं तो आगमअविरोध जेआचरणा तेप्रमाणजछे ॥ ४ ॥

सूत्रेनण्युंपणअन्यथा ॥ जुउंजबहुगुणजाण ॥ संविझवि-
बुधेआचर्युं ॥ कांइदिसेहोकालादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली एज वातकहेछे सूत्रेनण्युंके०आगमनेविषे कह्युंछे तोपण अन्यथाके० हेरफेरकरीने बहुगुणजाणके०तेमां घणोगुणजाणीने संविझगीतार्थलोके जे आचरण कर्युं तेवी केटलीकवातो दीसेछे पणतेशुंजाणी आचर्युं तेकहेछेजे कालादि प्रमाणके० दुःखमादिकालप्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचर्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुंधरवुंझोलिका ॥ नाजनेदवरकदान ॥ तिथिप-
जूसणनीपालटी ॥ नोजनविधिहोइत्यादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली तेज देखाडेछे कल्पनुंधरवुंके०पूर्वेंकल्पजेकपडोतेकारणे उंढता तथा गोचरीप्रमुखनेविषे वालीने खंधेमूकी चालता एआगमनो आचारहतो अने हवेतो गोचरीप्रमुखनेविषे पांगरीनेजावुं तथा चोलपट्टप्रमुख पणसमजवा पूर्वें कुणीयेंराखता हमणाकंदोरे राखियेंछैयें तथापूर्वेंझोलिकाके०झोली मुठीयेंझाली ग्रंथी कुणीयें ढुंकसी बांधता अने हमणां हाथमां झालियेंछैयें उपलक्षणथी उपग्रहिक कटासणुं संथारीउं दंडासणादिकलेवां तथा तरपणीप्रमुखनेविषे दोरादेवा एम सीकी दोरानी झोलीना आ-

धारविशेष इत्यादिक वली पात्रेलेपदेवा तथा पजूसणनी तिथिजे पांचम तेनीचोथकरी उपलक्षणथी चोमासांपुनमनांटाली चउदशनांकस्यां तथा जोजनविधिप्रमुख शास्त्रोक्तविनापण आचरितप्रमाणछे जोजनविधिते मांमलीयेंवेसवुं वेंचीदेवुंइत्यादिक तथा चव्यवहारजाष्ये ॥ सबपरिणाछकाय ॥ संयमोपिंमउत्तरझाए ॥ रुक्खेवसहेगीवे ॥ जोहेसाहीयपुक्खरिणी ॥ १ ॥ एनोलेशथी अर्थकरे छे जेपूर्वे शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन सूत्रार्थे जणे के साधुने उठामणकरताहता अने हमणां दशवैकालिकनुं चोथुंअध्ययन जणेथके उठावणाथायछे तथा पूर्वे पिंमेषणाध्ययनजण्यापछी उतराध्ययन जणावता हमणां वगरजणेपण जणावियेंछैयें तिहांदृष्टांतकहेछे पूर्वेकल्पवृक्षहता हमणा आंवाप्रमुखें कामचालेछे पूर्वे अतुल्यवलधवल वृषजहता हमणां धुसरेंज कामचालेछे पूर्वे गोपजे करषणी तेचक्रवर्त्तिने तेजदिवसे धान्य नीपजावीदेताहता आजतेविनापणकामचालेछे तथापूर्वे सहस्त्रयोधीहता हमणा अल्पपराक्रमीसुजटोथी पणशत्रूनोपराजयकरी राज्य पालेछे तेम साधुहमणां जितव्यवहारेपण संयमपालेछे तथा षटमासनुं प्रायश्चित्तहोय तेने हमणां पांच उपवासकह्याछे तथापूर्वेमहोटी पुष्करणीउंहती हमणां नानीछे तेथी कामचालेछे इत्यादिकदृष्टांते जितव्यवहारपण जाणवो अथवा किंवहुना जंसवहान ॥ सुत्ते पडिसिद्धंतेयजीयववहे ॥ उत्तंसव्वंपिपमाणं ॥ चारित्तधणाणजणियंच ॥१॥ अवलंविऊणकज्जं ॥ जंकिंचिसमायरंतिगीयबा ॥ थोवावराहवहुगुणं ॥ सव्वेसिंतंपमाणंतु ॥२॥ इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीयें आचस्युं तेडुर्वलिकापुष्पमित्रजीये अंगीकारकस्युं ते मज सुविहीते जेआचस्युं ते सर्वेकबूलकरे ॥ ६ ॥

व्यवहारपांचेजाषीया ॥ अनुक्रमेंजेहप्रधान ॥ आजतो
तेमांजीतछे ॥ तेतजियेंहोकेमविगरनिदान ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेज कहेछे जे पांचव्यवहार कह्याछे तथा अनुक्रमें जे प्रधानहोय ते आदरवो यडुक्तं कत्तिविहेणंजंतेववहारेपसत्ते गोयमा पंचविहे ववहारेपन्नते तंजहा आगमे सुए आणाधारणाजीए जहासेतबआगमेसिया आगमेणंववहारंपठवेज्जाणोयसेतबआगमेसिया जहासेतबसुएसिया सुएंववहारंपठवेज्जा २ णोयसेतबसुएसिया जहासेतबआणासिया आणाएववहारंपठवेज्जा ३ णोयसेतबआणासिया जहासेतबधारणासिया धारणाएववहारंपठवेज्जा ४ णोयसेतबधारणासिया जहासेतबजीएसिया जीएणंववहारंपठवेज्जा ५ इच्चेतेहिंपंचहिंववहारंपठवेज्जा तं आगमेणंसुएणं आणाए धारणाए जीएणं जहाजहासेआगमेसुएआणाधारणाजीएतहातहाववहारंपठवेज्जा सेकिंमाहुजंतेआगमवलियासमणानिग्गंथाइच्चेयंपंचविहंववहारं जदाजदाजहिंजहिंतहातहा

तहिंतहिं अणस्सितोवस्सयंसमंववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहएनवइ इतिन्नग-वतिसूत्रेशतकआठमे उद्देशेआठमेकह्युंछे आजतो तेपांचव्यवहारमां जितव्यवहारमु-ख्यछे जितव्यवहारेज कामचालेछे तेजितव्यवहार विगरनिदानके०कोइपणकारणवि-नाकेमत्यजियें एटले जितव्यवहार जेआचार्येंबांध्यो तेप्रमाणछे ॥ ७ ॥

श्रावकममत्वअशुद्धवली ॥ उपकरणवसतिआहार ॥ सुखशी-
लजेजनआचरे ॥ नविधरियेंहोतेचित्तलगार ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएवीआचरणातेअप्रमाणछे केमके०सिद्धांतमां नाकहीछे जे श्रावकनुं ममत्वनकरवुं यतः गामेवा कुलेवा नगरेवा देशेवा ममत्वन्नावंनकरेचिकुज्जा इत्यादि श्रावकनुं ममत्वकरे तेअप्रमाणछे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहारप्रमुख लेवानी आगममां नाकहीछे अने जो लीयेतो तेआचार अप्रमाणछे यतः आगमे पिं-डसिज्जंचवछंच ॥ चउछंपायमेवय ॥ अकप्पियंनइछिज्जा ॥ पडिगाहेज्जाकप्पियं ॥१॥ इति उपलक्षणथी वस्त्रपात्रादिकपण एमजाणवांमाटे सुखशील लोके जेआचर्युं एटले पो-ताना शरीरनी शोन्नानेअर्थे जेआचर्या तेअप्रमाण बाकी दुर्भिक्षादिक कारणे तो कांइ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोषछे यतः पिंडनिर्युक्तौ ॥ एसोआहारविहि ॥ जहन्नणी उसवन्नावदंसीहिं ॥ धम्मावस्सगजोगा ॥ जेणनहायंतितंकुज्जा ॥१॥ तथा कारणपडिसे वापुण ॥ न्नावेणासेवणत्तिदवछा ॥ आणाइतिइन्नावे ॥ सोसुद्धोमुक्खहेउत्ति ॥२॥ इत्यादि वलीउववाइसूत्रें शुद्धेसणीए एवा अन्निग्रह मुनियेंकर्या तेथी जाणियेंछैयेंजे पूर्वे अ-शुद्धपणकोइक कारणे लेतादीसेछे एअपवादतो प्रमाणछे पणसुखशीललोकेजे आचर्युं ते चित्तमां लगार पणनधरियें एटलेए न्नाव जे दुप्पसहआचार्यलगें तो चारित्रसिद्धां-तमां सांन्नलियेंछैये अनेजो मार्गानुसारीक्रिया कहि तेरीतेयत्नकरताहोयतेनेचारित्री-या न मानियें तो एथी बीजा चारित्रीया तोदेखाता नथी तेवारे चारित्रविछेदगयो एम ठेर्युं तोतेचारित्रविना तीर्थपण विछेदगयुं एमठेर्युं एम करतांतो आगम विरुद्ध थायछे यतः व्यवहारन्नाष्ये जोन्नणइनछिधम्मो ॥ नयसामाइयं नचेवयवयाइं ॥ सोस-मणसंघबज्झो ॥ कायवोसमणसंघेण ॥ १ ॥ इत्यादिवचने तोमार्गानुसारीक्रियानो कर-नार तेन्नावसाधुछे एम ठर्युं एप्रथमक्रियानामान्नेदथयो ॥ ८ ॥

विधिसेवनाअवितृप्तिशुन्न ॥ देशनाखलितविशुद्धि ॥ श्रद्धा
धर्मइछाघणी ॥ चउन्नेदेंहोएमजाणेसुबुद्धि ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे बीजुंलिंग श्रद्धाप्रवरनामाकहेछे तेना न्नेदचारछे तेकहेछे १ विधिसे-वना २ अवितृप्तिके०अतृप्ति ३ शुन्नदेशनाके०शुद्धदेशना ४ खलित परिशुद्धिनामा

चोथुलिंग ते श्रद्धाप्रवरनोअर्थकहेछे श्रद्धाके० धर्मनीइछा घणीके० अत्यंतहोय पण बालकने रत्नग्रहवानी अनिलाषानी पेठे सामान्यपणे विषयप्रतिनास मात्रनहोयते एम ऊपरकहेला चारन्नेदेएलिंगहोय ते सुबुद्धिके०बुद्धिवंतहोय तेजाणे ॥ ए ॥

दृढरागछेशुन्नन्नोज्यमां ॥ जेमसेवतायेंविरुद्ध ॥ आपदा
मांरसजाणने ॥ तेममुनीनेहोचरणेतेशुद्धि ॥ सा० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे एश्रद्धाप्रवरनाचारन्नेदमां प्रथम विधिसेवनानामेन्नेदओलखावेछे जे शक्तिवंतहोयतेश्रद्धावंतथको विधिप्रधानशक्तिवंतप्रत्युपेक्षणादिक क्रियाकरे अने जे शक्तिरहित होयते ड्रव्य क्षेत्र काल तथा न्नावेकरी जो तादृशक्रियाकरी न शके तो पण प्रतिबंध ते विधिअनुष्ठाननेविषेज होय यतः विहिसारंचियसेवइ ॥ सद्धालूसत्तिमं अणुठाणं ॥ दव्वाइदोसनिहउवि ॥ पक्कवायंवहइत्तंमि ॥ १ ॥ इहां कोइपुछेजे शक्तिरहितजे होय तेअनुष्ठान न करे अनेविधिअनुष्ठानमां पक्षपातिकेमहोय तेनेअन्वयसहित गाथानाअर्थथीकहेछे जेमकोइक पुरुषहोय तेडुकाल अथवादरिद्रपणुंपाम्यो तो तेपुरुष गवार अरणीपत्र तथावृक्षनीछालप्रमुखखाइने दिवसव्यतिक्रमे पणतेवा न्नोजनमां लपटायनही केमके पोते उत्तम आहारनो स्वादजाणेछे तेथी तेनोराग तो उत्तमन्नोजनमांज होयछे जे उत्तमन्नोजन क्यारे मलशे तेमलेतो वावारेयें एवो अत्यंतरागहोय हवे अक्षरार्थ कहेछे जे शुन्नन्नोज्यमां दृढरागछे तथा रसनो जाणते केम जे पूर्वेंषटरस वावस्याछे तेस्वादनो जाणछे तेआपदामांके०डुकालादिक आपदामां विरुद्धसेवतो एटले कुधान्य खातोथको पण तेनोराग सुधान्यमां होय एदृष्टांते मुनिनेपण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपिद्रव्यखेत्रादिक कारणपामीने विरुद्ध सेवे तोपण शुद्धचारित्रनो रसीउछे तेथी न्नावचारित्रने उलंगेनहीतेनेन्नावथी चारित्रीयाज संगमाचार्यनी पेठे कहियें इत्यादिक बहुवक्तव्यताछे इतिप्रथमन्नेदः ॥ १० ॥

जेमतृप्तिजगपामेनही ॥ धनहीनलेतोरत्न ॥ तपविनय
वेयावचप्रमुख ॥ तेमकरतोहोमुनिवरबहुयत्न ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे अतृप्तिनामा बीजुं लक्षणकहेछे जेम धनहीनकें०दरिद्रीहोय तेने रत्नो ढगलोमल्यो तेवारें तेरत्नलेतां जगतमां तृप्तिके०संतोषपामेज नही तेम मुनिपण तप विनय वैयावच्च तथा प्रमुखशब्दें ज्ञानचारित्र तेहनेविषे घणोयत्नकरे यत्नकरतो थाकेजनही तृप्तिपामेजनही तेमां तपकरतांथकांतो निर्जराथाय तथाशासनदीपे तेप्रसिद्धछे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पहेलाअध्ययनथी जाणवो अने वैयावच्चपण निर्जराने अर्थें अनेकप्रकारनुंकरे तेप्रश्नव्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञा-

नत्नणतांपण नवनवोवैरागउपजे यतः जहजहसुयमवगाहइ ॥ अइसयरसपसरसंजुयमउ-
व्वं ॥ तहतहपल्हाइमुणी ॥नवनवसंवेगसद्धाइ ॥१॥ इत्यादि तथा चारित्रमांपण विशुद्ध
विशुद्धतर संयमस्थानक पामवानेसर्वेअनुष्ठानकरे उत्तरोत्तरसंयमकंडकआरोहतां अ-
प्रमादपणे केवल ज्ञाननालाभ नणीथायज यतः जोगेजोगेजिणसासणंमि॥ दुक्खक्खयाप-
उज्जंति ॥ इक्किकंमिअणंता ॥ वट्टंताकेवलीजाया ॥२॥ इत्यादिबीजोभेदकह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनीअनुज्ञालेइने ॥ जाणतोपात्रकुपात्र ॥ तेमदेश-
नाशुद्धिदिए ॥ जेमदीपेहोनिजसंयमगात्र ॥सा०॥१२॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धदेशनानामा त्रीजुंलक्षण कहेछे गुरुनी अनुज्ञाके० आज्ञालेइ ते-
मज शुद्धिदेशनाआपे तेपण पात्रकुपात्रने जाणतोथको जेमसंयमरूप गात्रके०शरीर
ते दीपेके०शोभे निजके०पोतानुं संयमरूपगात्र शोभेइत्यक्षरार्थ एटले एभावजे सद्गु-
रुपासेथी सिद्धांतनो सारजाणी गीतार्थथयोहोय तोपण गुरुनी आज्ञालेइने पण पो-
तानीमेलेनही पोतेधन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूतदेशनाआपे पणपात्रकुपात्रओलखीने दे-
शनाआपे तेपात्रना त्रणभेदछे १ बाल २ मध्यम ३ बुद्ध यतः बालःपश्यतिलिंगं ॥ मध्य-
मबुद्धिर्विचारयेत्वृत्तं ॥ आगमतत्वंतुबुद्धः ॥ परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥ १ ॥ इत्यादिक तेनीदे-
शनानीविधि बीजाषोडशकथकी जाणवी इहां विस्तारथाय माटे नथी लखता तेमाटे
जेपात्रने जेमउपगारथाय तेमतेपात्रने देशनाआपे अन्यथा संसारवधारे इत्यादिक
त्रीजुंलक्षण एत्रीजालक्षणमां पात्रापात्रविचार प्रमुखनी चर्चाघणीछे तेधर्मरत्नग्रंथथी
जोजो जेम पोतानुसंयमगात्रशोभे ॥ १२ ॥

जेकदाचितलागेव्रतें ॥ अतिचारपंककलंक ॥ आलोयणें
तेशोधतां ॥ मुनिधरेहोश्रद्धानिःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे खलितपरिशुद्धिनामा चोथुंलक्षणकहेछे ते जे कदाचित व्रतपालतां
थकां कोइअतिचाररूप पंकके० कचरो तद्रूपकलंक जो व्रतने विषे अनाभोगे करी
अतिचारलागे ते पण १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प एत्रण रीते लागे अने चोथो आकु-
ट्टियेतोप्रायेंचारित्रीयाने संभवेजनही तेआकुट्टिप्रमुखनुं स्वरूपकहेछे यतः आउट्टिया
उविच्चा ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाईओ ॥ विगहाइओपमाओ ॥ कप्पोपुणकारणेकरणं ॥१॥ उ-
पलक्षणथी अनेकप्रकारनी प्रतिसेवाछे तेसर्वएमांसमाय तेप्रायश्चित्तादिकलेइने शु-
द्धथाय एरीते करतोमुनिराज निःशंकपणेश्रद्धाधारे एचोथोभेदथयो ॥ १३ ॥

श्रद्धायकीजेसर्वलहे ॥ गंभीरआगमभाव ॥ गुरुवचनेपभ
वणिजते ॥ आराधकहोहोवेसरलस्वभाव ॥ सा० ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतांत्रीजुंलक्षण कहेछे आखीगाथानोअर्थ भेलोलखियेंछैयें १ विधि २ उद्यम ३ भय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तदुभय इत्यादिक आगमना जेगंभीरभावछे तेश्रद्धाथकी सर्व जाणे जोएसर्वभाव नजाणेतो जमालीनीपेठेमिथ्यात्वी थइजाय एबीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुंलक्षणक- हेछे जेएवा भावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जके०प्रज्ञापनीय एटले परुपवा योग्य पदार्थनो सरलस्वभावे उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुंलक्षण ॥ १४ ॥

षटकायघातप्रमत्तने ॥ पडिलेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामांहोमुनिशुभसंयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुंलक्षणकहेछे प्रमत्तके०प्रमादीने पडि- लेहणादिकयोगवंतनेपृथिव्यादिक छकायनो घातथायछे एटलेएभावजे उपयोगविना प्रमादीथको पडिलेहणादिककरतो छकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेकरेतो आरा- धकथाय यतः पडिलेहणंकुणंतो ॥ मिहोकहंकुणइजणवयकहंवा ॥ देइयपच्चक्काणं ॥वाए- सयपडीछइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ॥ पडिलेहणापमत्तो ॥ छन्हंपिविराहउंहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणसइतस्साणं ॥ पडिलेहणा आउत्तो ॥ छन्हंपिआराहउंहोइ ॥३॥ इत्युत्तराध्ययनना छवीसमेंअध्ययने. माटे एवुंजाणी पडिलेहणादिकयोगमांप्रमादी नहोय प्रमादकरतां जैनदिक्षावंत पण आर्यमंगुनीपेठे संसारभमे माटे क्रियामां मुनिराजतेशुभसंयोगके०भलायोगवंत होय भलीक्रियानो सं- योगकरे आगममां अनेकप्रकारनी क्रियाकहीछे तेसर्वभलीरीतेकरे एचोथुंलिंग ॥१५॥

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउजमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउजमें ॥ शिवभूतिहोजेमगुरुहीलंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुष्ठाननामा पांचमुंलक्षणकहेछे तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागिरि जीये उद्यमकस्यो तेमबलवंतथको उजमेके०उजमालथाय एटले एभावजे संघयणी धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजसुसाधुप्रारंभे पणप्रतिज्ञाभंगथाय तेवुंप्रारंभेन- ही बलअविषयके०जेक्रियामांपोतानुं बलनचाले तेमांउद्यमनकरे अने करेतोउलटीखो- टआवे यतः सोहुतवोकायव्वो ॥ जेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी ॥ जेणयजो- गानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवभूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदाकरवालाग्यो तेरीतेउत्तमसाधुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवभूतिनो अधि- कार धर्मरत्नग्रंथमांलख्योछे तेथीजाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश
पणपरनुंथुणे ॥ निजदेखेहोअवगुणवडभाग ॥सा०॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे छठुंगुणानुरागनामा भावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहोय तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके०रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम ॥वेयावच्चंवंभगुत्तीउ ॥ नाणाइतियंतव ॥ कोहाइनिग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिंमविसोहिसमइ ॥ भावणपडिमाउइंदियनिरोहो ॥ पडिलेहणागुत्तिउ ॥ अभिग्गहाचेवकरणंतु ॥१॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोराग धरे अने श्रीकृष्णे जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेठे बीजामां गुणनो लेश होय तेपण स्तवे तथानिजके०पोतानाअवगुण देखे वडभागके०मोहोटा भागनोधणी जेमबेश्रावककालादेहरामां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे ॥ १७ ॥

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार
सर्वनामूलगुरु ॥ तेजाणेहोचतुरसुजाण ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे भावसाधुनांलिंग शास्त्रांतरमांतोछकह्यांछे यतः मग्गाणुसारीसड्ढो॥पन्नवणिज्जोकिरियावरोचेव ॥ गुणरागी सक्कारंभ ॥संगउतहयचारित्ती ॥ १॥ एरीते छगुणकह्याछे तोतमे सातमोगुण क्यांथी कहोछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिभद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युंछे तथा चतत्सूत्रं एयंचअहिलक्खणं ॥ मिमस्सनिसेसमेवधन्नस्स ॥ गुरुतहगुरुआणासं ॥ पाडणंचगमामिहलिंगं ॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछेयें हवेसातमालक्षणनुं स्वरूप कहेछे गुरुजेछत्रीसछत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोथको वलीते साधुएम जाणेजे सर्वेआचारनुं मूलतेगुरुछे गुरुथीसर्व प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥ १८ ॥

एसातगुणलक्षणवर्यो ॥ जेभावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख-
जशसंपदा ॥ तुजचरणेहोजशभक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवर्योथको एवोजेभावसाधु उदारके०प्रधान ते सुखजशनी संपदानेवरेके०पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानभास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारभक्तिहोय तेवरे ॥ १९ ॥ एढालमां प्रथमथीमांडीने जेटली वात टबामां लखीछे तेसर्वधर्मरत्नसूत्रवृत्तिथीलखीछे पण तेग्रं-

थमां विस्तारघणोछे तेजोइलेजो एचउदमी ढालमां साधुनां लक्षण कह्यां तेलक्षण कहेतां मुनिराजऊपर बहुमानउपनुं तेबहुमानना हर्षेकरी पन्नरमी ढालमध्ये साधुना गुण वर्णन करेछे एसंबंधेपन्नरमीढालकहेछे ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ आजमारे एकादशीरे, नणदलमौनकरीमुखरहीयें ॥ एदेशी ॥

धन्यतेमुनिवरारे ॥ जेचालेसमभावें ॥ भवसायर
लीलाएउतरे ॥ संयमकिरियानावें ॥ धन्य० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जे मुनिमांप्रधानसरिखा समभावे चालनारा रागद्वेषरहितपणेविचरे ते मुनिराजनेधन्यछे तेमुनिसंयम जेचारित्र तेनी जेक्रियातद्रूप नावेंके०नावायेंकरीने भवसायरके०संसारसमुद्रनो लीलायेंके०सेहेजमां पारउतरेछे ॥ १ ॥

भोगपंकतजीऊपरबेठा ॥ पंकजपरेंजेन्यारा ॥ सिंहपरें
निजविक्रमशूरा ॥ त्रिभुवनजनआधारा ॥ धन्य० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ भोग जेपंचेंद्रीना विषय तद्रूपजे पंकके०कचरो तेतजीने ऊपरबेठाके०अलगारह्या अने पंकजके०कमलनीपेठे जेन्याराछे एटलेकमल तेकचराथी उपनो अने कचराथी न्यारोरहे तेम मुनिराजपण भोगरूप कचरामांउपना अने तेभोगछांडीने अलगा रह्या इतिभावः वली सिंहनीपेरें पोतानो विक्रमके०पराक्रम फोरववाने शूरवीरछे वलीस्वर्ग मृत्युने पातालरूप जेत्रणभुवननालोकने आधाररूपछे ॥ २ ॥

ज्ञानवंतज्ञानीसुंमलता ॥ तनमनवचनेसाचा ॥ द्रव्यभा
वसुधाजेभाषे ॥ साचीजिननीवाचा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्याद्वादशैली देखाडतांथकां मुनिराजनुं वर्णनकरेछे पोतेज्ञानवंतछे तथा ज्ञानीपुरुषसाथे मलीरहेछे पणखेदधरतानथी वली तनके०काया अने मन तथा वचनेकरीसाचाछे पण जूठीप्रवृत्तिनथी वली जेमुनिद्रव्यथी तथा भावथी सूधाभाषेके०सत्यबोले एटले द्रव्यते षट्द्रव्यादिक अने भावते तेनापर्याय अथवा द्रव्यथी ही बह्यवस्तु अने भावथी अभ्यंतरवस्तु तेसत्यकहे इत्यादिक अनेकप्रकारेते जिनेश्वरनी टआवे कहियें तेनेसाचीकहे एटले शुद्ध परुपकहोय इतिभावः ॥ ३ ॥

मूलउत्तरगुणसंग्रहकरता ॥ त्यजताभिक्षादोषो ॥ पग
निंदाकरवा गव्रतदूषणपरिहरता ॥ करतासंयमपोषो ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

कार धर्मरत्नग्रं मूलगुणजे पंचमहाव्रतादिक अने उत्तरगुणपिंडविशुद्ध्यादिक तेनो संग्रह

गानहार्यां

करताके०राखता वली भिक्षा जेगोचरी तेना बेंतालीसदोष तेने त्यजताके०छांडता प-
गपगके०डगेडगे व्रतनां दूषणजे अतिचार तेने परिहरताथका एरीते संयमने पो-
षेके०पुष्टकरतारहेछे ॥ ४ ॥

मोहप्रतेंहणतानितआगम ॥ भणतासदगुरुपासें ॥ दूषम
कालेंपणगुणवंता ॥ वरतेशुभअभ्यासें ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथा शुभअध्यवसायेंकरी मोहरूप शत्रूने हणता तथा नितके०निरंतर आ-
गमके०सिद्धांतने सद्गुरु पासेथीभणता एवाविषमकालें पंचमआरेपण गुणवंता पुरुषछे
ते रुडेअभ्यासेवर्त्तेछे एटले पूर्वार्द्धमांज्ञानकह्युं अनेपश्चिमार्द्धमांक्रियाकही ॥ ५ ॥

छठुंगुणठाणुंभवअटवी ॥ उलंघणजेणेलहिउं ॥ तससो-
भागसकलमुखएके ॥ केमकरिजाएकहिउं ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्रमत्तनामा छठुंगुणठाणुं ते केवुंछे जे भवअटवी उलंघणके०संसाररूपअट-
वीनो पारपमाडनारुंछे ते जेणे लहिउंके०जेपुरुषेपाम्युं यतः भवाटवीलंघनतुल्यमेतत् ।
प्रमत्तनामक्रिययासमेत ॥ गुणगुणस्थानमसंख्यवृद्ध्या प्रमादहानेः प्रवरंप्रभाप्या ॥ १ ॥
तेमुनिराजनुं समस्तसौभाग्य तेएकेमुखे शीरीते कह्युंजाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानीपरिणतिजेहनी ॥ नवीपेभवजंजाले ॥ रहे
शेलडीढांकीराखी ॥ केतोकालपरालें ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेपुरुषने गुणठाणानी परिणतिथयीहोय एटलेगुणठाणुंपरणम्युंहोय तेनी प-
रिणति भवजंजालेके०संसारविटंबनामां छीपेनहीके०छानीरहेनही तेपुरुष संसारमां र-
ह्योथको पण उदासीनज देखाय केनीपेठे जेमशेलडीने पराले करीढांकीराखी होय ते
केटलोकालरहे आगलजातां अंकुराफूटे त्यारे प्रगटथाय पण छानीनरहे ॥ ७ ॥

तेहवागुणधरवाअणधीरा ॥ जोपणसूधुंभाषी ॥ जिनशा-
सनशोभावेतेपण ॥ सुधासंवेगपाखी ॥ धन्य० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिराजना पूर्वोक्तगुण धरवाने जेअणधीराके०असमर्थहोय एटले एहवा
गुणजेसाधुधरीशकेनही तोपणजे सूधुंभाषीके०शुद्धपरुपकहोय अनेदेशना प्रमुखगुणे
करीने जिनशासनने शोभावे तेनेपण सुधाके०शुद्धसंवेगपक्षीकहियें यतः संविग्गप-
क्खियाणं ॥ लक्खणमेयंसमासउभणियं ॥ उसन्नचरणकरणावि जेणकम्मंविसोहंति ॥ १ ॥
सुद्धंसुसाहुधम्मं ॥ कहेइनिंदइयनियमायारं ॥ सुतवस्सियाण पुरउ ॥ होइउसव्वोमराइ-
णिउ ॥ २ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणाअनुमोदनकारण ॥ गुणथीसंयमकिरिया ॥ व्यव-
हारेंरहियातेफरसे ॥ जेनिश्चयनयदरिया ॥ धन्य० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ सद्दहणाके०तत्वश्रद्धा अनुमोदनके०गुणवंतनी प्रशंसाकरवी तथा कारणके० मोक्षसाध्यनांसाधन इत्यादिक गुणथीके०पूर्वोक्त गुणेकरीने जे व्यवहार मार्गेरह्या एवाजेपुरुष तेणे फरसेके०संयमक्रिया फरसीज एमजाणवुं केमकेते निश्चय नयरूपमतना समुद्रछे यतःसद्दहणाजाणणसु॥ मोयणकारणगुणापरेशिंजे ॥ णिछयववहारविऊ॥ तेसिंकिरियाभवेभावा ॥ १ ॥ इतिसंमतिवृत्तौ ॥ ए ॥

दुःकरकारथकीपणअधिका ॥ ज्ञानगुणेंईमतेहो ॥ धर्मदा
सगणीवचनेलहियें ॥ जेहनेप्रवचननेहो ॥ धन्य० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ दुःकरकारथकीके०दुखथाय एवा कष्टना करनाराहोय अने अल्पआगमना धणीहोय तो शाकामआवे तथा कष्टादिक थोडुंछेतुंहोय अने ज्ञानीपुरुषहोय तोतेज्ञानगुणेकरी कष्टनाकरनारथी अधिकाकह्याछे एम धर्मदासगणीयें उपदेशमालामध्ये कह्युंछे यतःनाणाहिर्ठवरतरं॥ हीणोविहुपवयणंपभावंतो ॥नयदुक्करंकरंतो ॥सुट्ठुविअप्पागमोपुरिसो इतिवचनात् तेधर्मदासगणी केवाछे जेने प्रवचनके० आगमनेविषे घणोस्नेहहतो ॥ १० ॥

सुविहितगछकिरियानोधोरी ॥ श्रीहरिभद्रकहाय ॥ एह
भावधरतोतेकारण ॥ मुऊमनतेहसुहाय ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ सुविहितके०भलाआचारवंत गछछेजेहनो तथा वली क्रियावंतमां धोरी समान एवा श्रीहरिभद्रसूरि १४४४ ग्रंथनाकर्त्ता शास्त्रकारेकह्याछेते एहभावके०एसंवेगपक्षीना भावने धरनारहता तेकारणे माराचित्तमांपण तेसुहायछे गमेछे एटले ते संवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तियें क्रियावंतहतामाटेमारा मनमांते घणागमेछे ॥११

संयमठाणविचारीजोतां ॥ जोनलहेनिजसाखें ॥ तोजू
ठुंबोलीनेदुरमती ॥ शुंसाधेगुणपाखे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली संयमठाणके०संयमनांस्थानक असंख्याताछे तेविजारीजोतांके०विचारतां जोपोतानी साखें नलहेके०नदेखे संयमनीवाततो मोहोटीछे तेआगमनेमेले जुएतो पोतामां क्यांथीदेखे तो जूठुंबोलीने संयमविना संयमीनाम धरावीने दुरमतिके०हेदुष्टमतीनाधणी गुणपाखेके०गुणविना शुंसाधेछे ठालीमहेनतक्यांकरेछे यतःअसंजएसंजमसमाणे ॥ पावसमणेत्तिवुच्चइ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

नविमायाधर्मेंनविकहेवुं ॥ परजननीअनुवृत्ति ॥ धर्मवचनआ-
गममांकहियें ॥ कपटरहितमनवृत्ति ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ नविमायाधर्मेंके०धर्मनेविषे मायानथी एटले मायाकरतां धर्मनहोय वली परजननी अनुवृत्तिके०परनाअनुजायीपणे अथवा परने आवर्जनअर्थें नविकहेवुंके० धर्मदेशनाप्रमुख धर्मवचन नकहेवुं एम आगमजेउपदेशमाला तेमांकहियेंके०वक्रोक्तियेंकहियेंछैयें एटले कह्युंछे यतः धम्मंमिनछिमाया ॥ नयकवडंअणुअत्तियंचेव ॥ कुडपागरूमकंभिल्लं ॥ धम्मवयणमुज्जुयंजाणं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तेधर्मवचनकेवुंछे जे कपटरहित सरलमननीवृत्तिहोय एरीते धर्मवचनकहे ॥ १३ ॥

संयमविणसंयतताथापे ॥ पापश्रमणतेजाष्यो ॥ उत्तराध्य-
यनेसरलस्वजावे ॥ शुद्धपरुपकदाख्यो ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली पोतामांसंयम नहोय अने संयतताथापे एटले साधुपणुं ठेरावेजे अमे साधुछैयें तेमुनिने पापसाधु कह्योछे तेमाटे सरलके०ऋजुस्वजावनोधणी तेऋजु स्वजावेंकरीने शुद्धपरुपक कह्योछे एटलेसरलस्वजावीहोय तेशुद्धकहे माटे होय तेवुंज कहेवुं यतः समद्दमाणिपाणाणि ॥वीयाणीहरियाणिय ॥ असंजएसंजयमन्नमाणे ॥पावसमणितिवुच्चइ ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेसतरमेअध्ययने ॥ १४ ॥

एकबालपणकिरियानयेंते ॥ ज्ञाननयेंनविबाला ॥ सेवायो-
ग्यसुसंयतनेते ॥ बोलेउपदेशमाला ॥ धन्य० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एकबालके०कोइक बालछे पणकिरियानयेंके०क्रियामां शिथिलछे एटले क्रियानयेबालछे पणज्ञाननयनी अपेक्षायेतो बालनथीके०गीतार्थशुद्धजाषीछे तेगीतार्थ सुसंयतके०जलाक्रियावंतसाधुनेपण सेववायोग्यछे एटले क्रियावंतमुनि तेक्रिया रहितगीतार्थनो वैयावच्चकरे एमउपदेशमालामध्येकह्युंछे यतः हीणस्सविसुद्ध परुवगस्स ॥ नाणाहियस्सकायव्वं ॥ जणचित्तगाहणत्थं ॥ करिंतिलिंगावसेसेवि ॥ १ ॥ १५ ॥

किरियानयेंपणएकबालते ॥ जेलिंगीमुनिरागी ॥ ज्ञानयो-
गमांजसमनवरते ॥ तेकिरियासोजागी ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेक्रियानयनीअपेक्षायें बालछे एटले क्रियावंतनथी शिथिलक्रियावंतछे एवाजे लिंगीके०केवलसाधुनुंलिंगमात्र राखेछे पणजो मुनिरागीके० गुणवंतमुनिना रागीछे एटले पोते गुणवंतनथी पण गुणीनारागीछे तेपोतेपणज्ञानीथाय तेमाटे

कहेछे जे ज्ञानयोगमां जसमनवरतेके०एरीते जेनुंमन ज्ञानयोगमां वर्त्तेछे तेनी अल्प क्रियापण सोभागीके०सोभाग्यवंतजाणवी इहां अल्पक्रिया एवो अर्थकरियें तोपूर्वापरसंबंधमले एटले एभावजे पोते अल्पक्रियावंत होय पणमुनिनो रागीछे तोएरीते ज्ञानयोगमांवर्त्ततां अल्पक्रियापणसोभाग्यवंती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिकअनुकूलक्रियाथी ॥ आपेंइछायोगी ॥ अध्यात्म
मुखयोगअभ्यासें ॥ केमनविकहियेंयोगी ॥ धन्य० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ आपेंके०पोते इछायोगीथकोरहे एटले योगत्रणप्रकारना कह्याछे १ इछा योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथापुनः श्रद्धानाविकलो २ वाक्याविकलं ३ शक्त्यतिक्रम इतियोगनिर्णये एत्रण योगमां प्रथम इछायोगते श्रद्धाअविकलथकां आपेंके०पोते श्रद्धावंत अने क्रियावंतहोय तो तेंक्रियाथी बालादिकअनुकूलके०बालजीव मार्गना रागीथाय एटलामांएवमोगुणछे तो अध्यात्ममुखके०अध्यात्मप्रमुख योगसाधननाग्रंथोनो अभ्यासकरे एटले अहोरात्री अध्यात्ममां मग्नरहे तेपुरुषने योगीश्वर केम न कहियें एटले श्रद्धावंतथकोक्रियाकरतो बालजीवने उपकारीथायछे अनेसाधु कहेवायछे तोअध्यात्ममां मग्नरहेतां साधुमुनिनेयोगी केम नकहियें ॥ १७ ॥

उचितक्रियानिजशक्तिछांमि ॥ जेअतिवेगेचढतो ॥ तेभवथि-
तिपरिपाकथयाविण ॥ जगमांदिसेपमतो ॥ धन्य० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वली अध्यात्ममार्गे पणपोतानी उचितशक्तियें क्रियाकरतो साधे अने यथाशक्ति क्रियामूकीने शक्तिउल्लंघनकरे तोतेने गुण नथाय माटे जेटली पोतानी शक्तिहोय तेटलीज क्रियाकरवी एनुंनाम उचितक्रियाकहियें तेरीतेनकरे अनेजे अतिवेगेचढतोके०शक्तिथी अधिककरे एटले एभावजे शक्तिने अभावें उपवास छठप्रमुख करे अथवा आतापना लेवाजाय इत्यादिक कामकरतो तेप्राणीपण भवस्थिति परिपाक थयाविना जगतमां पमतादेखियेंछैयें एटले एभावजे शक्तिउल्लंघनकरीने अधिककरवाजाय अने भवस्थिति पाकीनथी तेथी तेने शुकमालिकाप्रमुखनीपेठे परिणाम टकेजनही परिणाम पमताजहोय इतिभावः ॥ १८ ॥

माचेमोटाईमांजेमुनी ॥ चलवेमाकममाला ॥ शुद्धपरुपणगु-
णविणनघटे ॥ तसभवअरहटमाला ॥ धन्य० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीजे मुनि पोतानी मोटाइमां माचेके०रीझपामे एटले थोमीक्रियाप्रमुख आवमीहोय तेमां मग्नरहे जेअमे समजुछैयें तथा माकमालचलावे एटलेलोकमां

आडंबरघणोदेखाडे पणशुद्ध परुपकगुणविना तेनी जवके०संसाररूपअरहटनी माला ते घटेनही उंडीथायनही एटलेशुद्धपरुपकगुणविनासंसार उंडोनथाय ॥ १९ ॥

निजगणसंचेमननविखंचे ॥ ग्रंथजणीजनवंचे ॥ लुंचेके
शनमुंचेमाया ॥ तोव्रतनरहेपंचे ॥ धन्य० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निजगणके०पोतानोजे गच्छसमुदाय तेने संचेके०नेलाकरे जेअमारा श्रावकश्राविका साधुसाध्वी इत्यादिक ऊपर ममत्वकरे मन नवीखंचेके०पोतानुं मन हीणीप्रवृत्तिथी खेंचीराखेज नही ग्रंथजणीके०द्रव्यनेअर्थे जनवंचेके०लोकनेठगे अथवा ग्रंथके०सिद्धांतशास्त्र जणीके०अध्ययनकरीने लोकनेठगे उत्सूत्रपरुपणाकरीलोकने डुर्गतियेंलेइजाय एरीते जे लुंचेकेशके०मस्तकेकेशनुं लोचकरे अने नमुंचेमायाके०मायाकपट मूकेनही तोतेप्राणीना पांचमहाव्रतमां एके नरहे ॥ २० ॥

योगग्रंथनाजावनजाणे ॥ जाणेतोनप्रकाशे ॥ फोकट
मोटाइमनराखे ॥ तसगुणदूरेंनासे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेथकी आत्मस्वरूपसधाय एवाजे योगग्रंथके०परमार्थनाशास्त्र तेना जावके० रहस्यने नजाणेके०उंलखेनहीं समजेनही अनेकदाचितजाणे तोप्रकाशेनही जव्यजीवने तेग्रंथोनीवातो कहेनहीं कारणकेजो तेवीवातोकहे तोपोताने तेमज करवुंपडे वली फोकट मोटाइके०मिथ्याअजिमानराखे जेअमेमोटाछैयें अमारा जेवोकोइनथी एवो अहंकारराखे तसगुणके०तेप्राणीमां जोकोइगुणहोयतो तेपणदूरनासीजाय एम छतागुणपणजायतो अणछतानुंकहेवुंजशुं ॥ २१ ॥

मेलेवेशेंमहियलम्हाले ॥ बकपरेंनीचोचाले ॥ ज्ञानविना
जगधंधेघाले ॥ तेकेममारगचाले ॥ धन्य० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ मेलेवेशेंके०वस्त्रादिकमलीनराखे अने महियलके०पृथ्वीनेविषे म्हालेके०मलपतांफरे वली बगलानीपेठे नीचुंजोइनेचाले जेथी लोकजाणे ईर्याजूयेछे एवाहोय अनेजो ज्ञानीहोयतो सर्वेलेखेछे पणज्ञानविना एटले अज्ञानीथका जगतने धंधेके०क्लेशमां घालताफरे एटले एवीकष्टक्रियाकरनारनांवचन लोकमाने अनेते पोतेतो ज्ञानविनानोछे माटेअशुद्धपरुपे तेवारे लोकनेपण अज्ञानउपदेशलागेमाटे जगतने कदाग्रहरूपक्लेशमां नाख्युंज इतिजाव तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्ग केम चाले यतः- मासेमासेयजोबालो ॥ कुसंगेणंतुजुंजए नसो ॥ सुअरकायस्सधम्मस्स ॥ कलिं अग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ तथाअन्नाणीकिंकाहि इत्यादिवचनात् ॥२२॥

परपरिणतिपोतानीमाने ॥ वरतेआरतध्याने ॥ बंधमोक्ष
कारणनपीछाने ॥ तेपहिलेगुणठाणे ॥ धन्य० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ परपरिणतिके०पारकी समजणते पोतानीकरी माने एटले परअज्ञानीनी मतेचाले अथवा परपरिणतिके०पुद्गलशरीर वस्त्रपात्रादिकनाजे परिणमन ते अज्ञाने करीने तन्मयपणेपरिणमतो सर्वेपोतानीज परिणतिमाने अथवा परजे स्वव्यतिरिक्त लोकनांघर तेनाजे परिणमनके०घरव्यापारनुं चिंतववुं तेपोतानुं करी माने अनेतेथी आर्तध्याननोविकल्पकरे यतः सयंगेहंपरियज्ज ॥ परगेहंसिवावरे इत्युत्तराध्ययनवचनात् माटेपोतानुंघर मुकी परघरनी चिंताकरेतो पापश्रमणकह्योछे इतिभावः अने बंधमोक्षकारणके०बंधनांकारणजे मिथ्यात्व अविरतिकषाययोगप्रमादप्रमुखजेबंधना हेतु ते नपीछानेके०नजाणे मोक्षनांकारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रियाप्रमुख एटले नाणकिरियाहिमुरकोइतिवचनात् ॥ इत्यादिकमोक्षना हेतुछे तेपण नपीछानेके० नजाणे एवाअज्ञानीप्राणी तेगमेतेटला कष्टादिककरो तोपण अज्ञानीछेमाटे पहेलेगुणठाणेजाणवा यडुक्तं ॥ नाणेणविणाचरणं ॥ पढमगुणठाणपुठीकरं इत्युपदेशमालावृत्तौ॥

किरियालवपणजेज्ञानिनो ॥ दृष्टिथिरादिकलागे ॥ तेथी
सुजशलहिजेंसाहिब ॥ सीमंधरतुझरागे ॥ धन्य० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानिनोके०ज्ञानवंतनो क्रियानोलवके०एकअंशमात्र पण जे पांचमी थिरानामादृष्टि तिहांलागतोहोय एटले सम्यक्तसहितहोय आदिशब्दथी कांता प्रभा परा एत्रणदृष्टिलइयें तेथीके०तेज्ञानसहित क्रियानाअंशथी हेसाहेब सुजश लहिजेके० भलोजशपामियें मोक्षरूपउत्कृष्टोजशपामियें पणते हेश्रीमंधरपरमात्मा तुझरागेके० तारे स्नेहेकरीने पामियें ॥ २४ ॥ एपन्नरमीढालनी कोइकगाथामां ज्ञाननीमुख्यताकरी कोइकगाथामां चारित्रनी मुख्यताकरी तथा कोइक गाथामां बेहुनो स्याद्वादकह्यो तेसांभली कोइकशिष्यने व्यामोहउपजे जेतेवारेस्थितपक्षते शोहशे तेशंका टालवाने सोलमी ढालमां स्याद्वादमार्गनो स्थितपक्ष देखाडेछे ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ सफलसंसारअवतारएहुंगणुं ॥ एदेशी ॥

स्वामीसीमंधरातुंभलेध्याइयें ॥ आपणोआतमाजे
मप्रकटपाईयें ॥ द्रव्यगुणपज्जवातुझयथानिर्मला ॥
तेममुझशक्तिथीजईविभ्रवसामला ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसीमंधरसाहेब तुझने मनमांध्यायियें एज जलेके०जलुंछे जेम तमारा ध्यानथी आपणोके०पोतानो आत्मातेप्रगटपामियें तमारा ध्यानथी ज्ञानीथयीये ते ज्ञाने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मजाव पाम्याज इतिजावः तेवारेयथाके०जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुझके०तमारानिर्मलछे एत्रणनां लक्षणकहेछे यथा गुणाणमासर्उदव्वं॥ एगदव्वसियागुणा॥ लक्खणंपज्जवाणंतु ॥ उजर्उनिस्सियाजवे ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययने मोक्षमार्गाध्ययने २८ मे अथवा गुणपर्यायनुं जाजन तेद्रव्य सहजाविधर्म तेगुण क्रमजावी तेपर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथांतरथी जाणवुं एरीते जेमतमारुंआत्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञान दर्शनचारित्रादिक अनंतगुण तथा तेमांसमयसमय उत्पादव्ययपणानुं परणमवुं तथा अनंतअगुरुलघुप्रमुख जेपर्याय तेसर्वेनिर्मल थया निरावरणथया तेरीते मारे पण शक्तिथीके० (यद्यपि व्यक्तिथीनथी तोपण)शक्तियेछेते जइविके०यद्यपि जवके०संसारनेविषे सामलाके०मेलाछे एटले आवरणसहितछे एटलोफेरछे ॥ १ ॥

चारछेचेतनानीदशाअवितथा ॥ बहुशयनशय
नजागरणचोथीतथा ॥ मिछअविरत्तसुयततेरमें
तेहनी ॥ आदिगुणठाणेनयचक्रमांहेंमुणी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे चेतनानीअवस्था वर्णवेछे चेतनानी अवितथाके० साचीदशा चार छे तेदेखाडेछे १ बहुशयनके०घोरनिद्रारूपतेपहेली २ शयनके०चक्षुमिचवारूपबीजी ३ जागरणके०कांइक जागवारूपत्रीजी ४ चोथीतथाके०पूर्वेकही तेमज एटले बहुजागरणरूप इतिजावः हवेएचारअवस्थानेगुणठाणे फलावेछे आदिगुणठाणेएपद सर्वत्रजोडियें एटले बहुशयननी आदि मिछके०मिथ्यात्वगुणठाणो अनेबीजीशयनअवस्थानी आदि तेअविरतिसम्यक्दृष्टीगुणठाणो तथात्रीजी जागरणअवस्थानी आदि तेसुयतके०अप्रमत्तसातमो गुणठाणो ४ बहुजागरणअवस्थानीआदि तेसंयोगीकेवलीनामा तेरमोगुणठाणोछे तेहनीके०तेअवस्थाना आदिगुणठाणते प्रथम धुरगुणठाणा एरीते जोडजो एटले एअर्थ जेबहुशयनदशाते १–२–३ गुणठाणे कहेवी अने शयनदशाते ४–५–६ एत्रण गुणठाणेकहेवी अने जागरणदशाते ७–८–९–१०–११–१२ एछ गुणठाणेकहेवी अने बहुजागरणते १३–१४ एबे गुणठाणे कहेवी एरीते अमने सुज्यो तेवोअर्थलख्यो वलीजे बहुश्रुतहोय तेणे नय चक्रग्रंथजोयी यथार्थकरवुं स्तवनकर्तायेतो नयचक्रमांमुणीके०नयचक्रमांगुणठाणानीआदिजाणीएमकह्युं तेनयचक्रग्रंथहमणां अमारीपासेनथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

भावसंयोगजाकर्मउदयागता ॥ करमनविजीवन
विमूलतेनविछता ॥ खडीयथीभितिमांजेमहोएश्वे
तता ॥ भीतिनवीखडीयनवीतेहभ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ भावपदार्थजे संयोगसंबंधथीउपना कर्मनेउदयेआव्यातेभाव कर्मनथी जीवनथी मूलथी तेछतापणेनथी जेम भीतिके० भींतमांहे खडीयके० खडीथी श्वेतताके० धवलताथायछे तो तेधवलतामां भींतनथी अनेखडीपणनथी अन्योन्ये भिन्नछे पण भ्रमेकरी संगति ऐक्यतामलतिथायछे ॥ ३ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटवाऊपरथी लख्योछे ॥ ३ ॥

देहनविवचननविजीवनविचित्तछे ॥ कर्मनविरा
गनविद्वेष न विचित्तछे ॥ पुद्गलिभावपुद्गलपणेप
रिणमें ॥ द्रव्यनविजूउंजूउंएककहोवेकिमे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ देहके० शरीरनथी ऐक्यतापणे वचनकायिकवाचिकयोगनथी जीवनथी चित्तनथी कर्मनथी रागनथी द्वेषनथी विचित्तछेके० विचित्रताअनेकजातिछे एसर्व पुद्गलिकभावछे तेपुद्गलपणेपरिणमे केमके पुद्गलनुं अनेकप्रकारे परिणमनधर्मछे पूरणगलणधर्माणः पुद्गलनुंएलक्षणछे तेमाटे जीवादिकजेद्रव्यछे तेसर्वेथकीजूदोजूदो छे तेएककेमहोयनही उपचारेएककहियें ॥ ४ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानवि० टवाथी लख्योछे॥

पंथीजनलुंटतांचोरनेजेमभणे ॥ वाटेंकोलुंटि
येंतेमजमूढोगिणे ॥ एकक्षेत्रेमल्याअणुतणी
देखतो ॥ विकृतिएजीवनीप्रकृतिउवेषतो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम पंथीलोकने लुंटतांथकां चोरने कोके० कोइक पुरुषएमकहे जे वाटेलुंटेछे पणतेचोर वाटनेलुंटतानथीपण वाटेंके० वाटजे मार्गतेने विषेरह्याजेलोक तेलुंटायछे पण लक्षणे एमकहेछेजे वाटलुंटी तेमज मूढोके० मूर्खतेशरीर आत्माप्रमुखने एककरी गणेछे शामाटेजे एकक्षेत्रेमल्याके० जेक्षेत्रे आत्मा तेजआकाशप्रदेशेमल्या परस्परसंबंध थयो एवाजे अणुतणीके० परमाणुनी विकृतिके० विकारने देखतोके० देखीने मूर्ख एम गणेछे अने जीवनीप्रकृतिजेस्वभाव तेने उवेषतोके० लेखामां अणगणतो थको जीवते शरीरादिकने एकपणेगणेछे पणएम जाणतोनथीजे पुद्गलतेजडछे अचेतनछे अनेआत्मातो ज्ञानस्वरूपीछे तेएक केमथायइतिभावः ॥ ५ ॥

देहकर्मादिसविकाजपुद्गलतणां ॥ जीवनातेव्यव
हारमानेघणां ॥ सयलगुणठाणजीअठाणसंयोग
थी ॥ शुद्धपरिणामविणजीवकारयनथी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे देहके०शरीर तथा ज्ञानावरणादिकर्म अने आदिशब्दथी घरबार प्रमुख एसर्वे पुद्गलनांकार्यछे पुद्गलथी नीपनांछे तेपुद्गलनांकार्यने जीवनांकार्यकहीवो लावेछे तेव्यवहारमानेघणांके०तेव्यवहारनयथी जीवनांकार्यकहियें पणनिश्चयनये तो सर्व पुद्गलस्वरूपछे सयलगुणठाणके०समस्तमिथ्यात्वादिकगुणस्थानक तथा जीअ-ठाणके०समस्तएकेंद्रियादिकजीवस्थानक इत्यादिक सर्वप्रकारते संयोगथीके०पुद्गल-कर्मादिकना संयोगथीजाणवा पणएआत्मस्वरूपनहीं केमके शुद्धपरिणामके०समस्त उपाधिरहित जेनाप्रदेशनेविषे एक अणुमात्रपण भेलनथी एवुंजे शुद्धस्वरूप तेविना जीवकारयनथीके०जीवरूपकार्यनथी ॥ ६ ॥

नाणदंसणचरणशुद्धपरिणामजे ॥ तंतजोतानछे
जीवथीभिन्नते ॥ रत्नजेमज्योतिथीकाजकारण
पणे ॥ रहितएमएकतासहजनाणीमुणे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानदर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंतजे शुद्धआत्मानापरिणाम छे ते तंतके०नियतपणाथीजोइयेंतो कांइजीवथकी भिन्ननथी केमके ज्ञानादिक गुण जो भिन्नहोय तो आत्मानिर्गुणजरूपणे मानवोजोइयें तेतो नथी माटेजीवथी ज्ञानादिक गुणभिन्ननथी जेम स्फटिकरत्नप्रमुख पोतानी ज्योतिथी भिन्ननथी शामाटे जे काज-कारणपणे कहेतां कांइपूरवनुंनथी केमके जो रत्नथीज्योतिथयी एमकहियें तो ज्योति विना रत्नहतुंजनहीं माटेरत्नथी ज्योतिथयी एम कहेवायनहीं तथा ज्योतिथी रत्नथ-युंएमपण नकहेवाय केमके रत्नविनाज्योतिपण किहांहती तेमाटे कार्य कारणपणेरहि-तछे एमके०एरीते आत्मा तथाआत्मगुण ते भिन्ननथी सहजस्वभावेजअभेदछे ऐक्य-ताछे एवात नाणीमुणेके०जेज्ञानीहोयतेजाणे पणमूर्ख समजेनहीं ॥ ७ ॥

अंशपणनविघटेपूरणद्रव्यना ॥ द्रव्यपणकेमकहुं
द्रव्यनागुणविना ॥ अकलनेअलखएमजीवअति
तंतथी ॥ प्रथमअंगेवदिउअपदनेपदनथी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ संपूर्णद्रव्यना जेअंश कहेवा तेपणयुक्तनथी केमके जेवारेंअंशकहीयेतेवारें द्रव्यपणशानुं एगंनिच्चंनिरवयवं॥अक्रियंसव्वगंचसामन्नं॥इतिमहाभाष्यवचनात् जेद्रव्य

ते सामान्यछे अने जेसामान्यते निरवयवछे तथा द्रव्यपणकेम कहुं द्रव्यनागुणविना के॰द्रव्यसंबंधी जेगुणतेविना द्रव्यपण केमकहेवाय कारणके गुणाणमासउंदव्वंश्त्युत्तरा ध्ययने २८ मे अध्ययने द्रव्यलक्षणंतथागुणपर्यायवद्द्रव्यं इतितत्वार्थवचनात् तथा पर्यायेनयवालानीयुक्तियेंतो द्रव्यछेजनही परमार्थें पर्यायजस्वतंत्रछे यथाऊत्फणवि-फण कुंरूलितादि अवस्थाथी भिन्न सर्प्पद्रव्यते शीवस्तुछे जोद्रव्य ठेरेतो ऊत्फण-विफणादिक द्रव्यनाकहेवाय तेमाटे द्रव्यनथीतो द्रव्यना गुण क्यांथी होय जेम गाम नहोय तोतेगामनी सीमक्यांथी इत्यादिवत् महाभाष्यमांजोजो एटले एभा वजे अंशपण नकहुं अनेद्रव्यपण नकहेवाय युक्तियेंतोएम आव्युं अने आगममांतो अंशसहित पणद्रव्यकहिये एमछे गुणपर्यायवत्द्रव्यं एवचन सुचवेछे ते माटे अ-कलके॰कल्योनजाय अनेअलखके॰लख्योनजाय एरीतनो जीवके॰आत्मा ते अतितं-तथीके॰अत्यंतपणे निश्चयथकीजाणवो एटले कांइकहेवायनही यतः वरूातरएसव्वे ॥ सराणीयट्टंतितक्काजब्बनविज्जति ॥ मतितब्बगहेयाउंएअपइठ्ठाणस्सखेयन्ने सेणदीहेण-हस्सेनवट्टेनतंसेनचउरंसेनपरिमंफ्लेनकिन्हेननीलेनलोहिएनहालिद्देनसुकिल्लेनसुरभि गंधे नडुरभिगंधे नतित्ते नकरुवे नकसाये नआंबिले नमहुरे नकक्खडे नमउए नगु-रुए नलहुए नसीए नउन्हे ननिन्हे नलुक्खे नकाउं नरूहें नसंग नइत्थी नपुरिसे नअन्नहा परिन्ने सन्नेउवमानिविज्जये अरूवीसत्ताअपयस्सपयंनत्थि ॥ इत्यादिकआ-चारांगपंचमाध्ययने उद्देशेछठेकह्युंछे तेमांहेलाविषमपदोनो अर्थकरियेंछेयें वरूातके॰ मोक्षतेनेविषे रएके॰राता सव्वेसराके॰तेमोक्षस्वरूपकेवुंछे तेकहेछे सर्वस्वर निवृत्याछे एटले कोइशब्देंवाच्यनथी तक्काके॰ विचारजे आमहशे केआमहशे ते कहेवाय नही मतिजे उत्पातकीप्रमुख तेनो ग्राहजेनेविषेनथी तेपण उंएके॰ एकलुं छे पणकर्मकलं-कसहित नथी अपइठ्ठाणस्सके॰उदारिकादिकशरीरनुंप्रतिष्ठाननथी तथाखेअन्नेके॰ लोकालोकनुंज्ञायकछे तथा नकाउंके॰कायनथी नरूहेंके॰संसारमांउगवुंनथी अन्नहा के॰नपुंसकनथी परिन्नेके॰समस्तप्रकारेजाणछे सन्नेके॰सम्यक्जाणेछे तथा अपयस्सप-यंनत्थिके॰अवस्थाविशेषजे पदतेनथी जेने तेअपदकहिये एटले अपदते सिद्धनेपद के॰जेअभिधानतेनथी एटले सिद्धनेकोइनामेंकहीबोलावीयें तेनथीइतिभावः ॥ ८ ॥

शुद्धताध्यानएमनिश्चयेंआपनुं ॥ तुऊसमापत्ति
उंषधसकलपापनुं ॥ द्रव्यअनुयोगसंमतिप्रमु
खथीलही ॥ भक्तिवैराग्यनेज्ञानधरियेंसही ॥९॥

अर्थ ॥ शुद्धताके॰शुद्धस्वरूपनुंजे ध्यानतेहिजपोतानुंनिश्चयरूपेंजाणवुं माटे हेप्रभु

सर्वपापनुंसमापत्तिऔषध सर्वदोषनाशनरसायन ते एकहिजछे जे शुद्धउपयोगलक्षणते अने षटद्रव्यनीविचारणारूप अनुयोग संमतिमहातर्कादिग्रंथथकीजाणीने साहिवनीविधिसेवापूर्वक निराशंसतारूपभक्ति वैरागके० विषयविमुखता ज्ञानते शुद्धउपयोग निश्चयथकीएहीजचित्तमांधरियें कार्यसाधकताएहिजछे एटले भक्तिदशा वैराग्यदशा ज्ञानदशा एत्रणकार्यसाधकताछे तिहांचोथोगुणठाणोभक्तिमुख्ये पांचमो छठोगुणठाणो वैराग्यदशामुख्ये क्षीणमोहादिकगुणठाणो ज्ञानदशामुख्ये इत्यादिद्रव्यभावेंसर्वजाणवी मुख्यता गुणतायें एकेंत्रणेएकइत्यादिव्यक्तता ग्रंथांतरथीजाणवी ॥ ए ॥ आ गाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाउपरथीलख्योछे.

जेहअहंकारममकारनुंबंधनं ॥ शुद्धनयतेदहेदहनजेमइंधनं ॥ शुद्धन
यदीपिकामुक्तिमारगभणी ॥ शुद्धनयआथिछेसाधुनेआपणी ॥१०॥

अर्थ ॥ जेअहंकारके० मान ममकारके० ममत्व तेनुं बंधनंके० कारण एटलेअहंकार तथा ममकारनुंमूलरागद्वेषछे तेरागद्वेषथी अहंकार तथा ममकारहोय तेरागद्वेषने दहनजेमइंधनंके० जेमअग्नि लाकडांने बालीनाखे तेनीपेठें शुद्धनयके० आत्मतत्वचिंतनरूपध्यानते दहेके० बाले एटले शुद्धध्यानथी रागद्वेषवली भस्मथाय शुद्धनयके० निश्चयनयतेमोक्षमार्गेनोदीवोछे केमके मोक्षमार्गेगमनकरतां अजवालुंकरे माटेजे शुद्ध नयतेज साधुने आपणीके० पोतानी आथिके० संपत्तिछे यतः दीपिकाखलुनिर्वाणेनिर्वाणपथदर्शिनि ॥ शुद्धात्मचेतनायाच साधूनामक्षयोनिधिः ॥ १ ॥ इतियोगनिर्णये ॥ १० ॥

सकलगणिपिटकनुंसारजेणेलह्युं ॥ तेहनेपणपर
मसारएहजकह्युं ॥ उंघनिर्युक्तिमांएहविणनवि
मिटे ॥ दुःखसविवचनएप्रथमअंगेंघटे ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ गणिके० आचार्य तेनासकलके० समग्रगुणरूपरत्ननी पिटकके० पेटीएटले द्वादशांगीरूपजेगणिनीपेटी तेनो सारके० प्राधान्यपणुं तेजेणे लह्युंके० जाण्युंछे एहवा समस्त द्वादशांगीनाजाणने पण परमसारके० प्रधानरहस्यपरमसारतेएजशुद्धनयपरिणमनरूपकह्युंछे एद्वादशांगीना जाणनेपण निश्चयनयज सारकह्युंछे तोवीजानीशीवात एमश्रीउंघनिर्युक्तिमध्येकह्युंछे यतः परमरहस्समिसीणंसम्मत्तगणिपिडगझरियगराणं॥ परिणामियंपमाणंनिछयमवलंवमाणाणं ॥ १ ॥ इति तोएहविणके० एनिश्चयनयसमज्या विना दुःखके० पापते नविमिटेके० नटले तथा कोइकप्रतमां एहविणनघटे एमलख्युंछे तेनविघटेके० दुःखउंछुं नथाय माटे वेहुनो भावार्थएकजछे एसर्ववचन प्रथमअंगेघ-

टेके० श्रीआचारांगसूत्रमां घटमानछे युक्तछे जेएगंजाणइसेसव्वंजाणइ जेसव्वंजाणइ सेएगं जाणइ इत्यादिपाठात् ॥ ११ ॥

शुद्धनयध्यानतेहनेसदापरिणमे॥ जेहनेशुद्धव्यव
हारहीयडेरमे ॥ मलिनवस्त्रेयथारागकुंकुमतणो ॥
हीनव्यवहारचित्तएहथीनविगुणो ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एटलीवार शुद्धनयनीमुख्यतायेंवातकही हवेकोइक एमसांभलीनेएकांतनिश्चयनयजअंगीकारकरे अनेव्यवहारनय लेखामांगणेजनही तेने शिक्षाकरेछे जे पूर्वोक्तप्रकारें शुद्धनयनुंजे ध्यान तेतो तेप्राणीनेसदानिरंतरपरिणमे जेप्राणीनेशुद्धव्यवहारसंयमानुष्ठानप्रवृत्तिरूप हीयडेरमेके०हृदयनेविषेरमे तेनाउपरदृष्टांत कहेछे जेम मेलांवस्त्रनेविषे कंकुनोअथवा केसरनोरंग नलागे तेमज हीणाव्यवहारवंतनाचित्तने नविगुणोके०गुणनहोय एटले व्यवहारविनानिश्चयपरिणमेनही ॥ १२ ॥

जेहव्यवहारसेढीप्रथमछंडता ॥ एकएआदरे
आपमतमांडता ॥ तासउतावलेनविटलेआ
पदा ॥ क्षुधितइछायेंउंबरनपाचेकदा ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी व्यवहारश्रेणीरूपजेअनुक्रम तेतोप्रथमछांडेछे तथा एकएआदरे के०एकलोएनिश्चय नयज आदरेछे आपमतमांडतांके०पोतानुं मतदृढकरतां एक नवस्थितिउपर दृढथयाछे पणउद्यम करतानथी तोतेनीउतावले आपदाटलेनही एटले एकलोनिश्चय पोकारवाथी संसारपरिभ्रमणरूप आपदा टलेनही जेमक्षुधितके०भूख्यानीइछायें उंबरनाफलकदापि नपाके एटले उंबरफल ते जलसेकादिकक्रियायेपाके पणइछामात्रेंनपाकेइतिभावः ॥ १३ ॥

भावलवजेहव्यवहारगुणथीभले ॥ शुद्धनयभा
वनातेहथीनविचले ॥ शुद्धव्यवहारगुरुयोगपरिण
तपणुं ॥ तेहविणशुद्धनयमांनहितेघणुं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ भावके०रुडाअध्यवसायनो लवके०अंशतेपण व्यवहारपडिनालिकारूप गुणथी भलतोहोय एटले व्यवहारसहितहोय तो शुद्धनयभावनाके०शुभअध्यवसायनीजेभावना घोलना तेतेप्राणीथी नविचलेके०खसेनही एटले शुद्धनयनीभावना तेतो तेवारे स्थिरथायके जो व्यवहारयुक्तहोयतो; अन्यथा क्षणतोलो क्षणमासोथाय ते-

शुद्धव्यवहारतो गुरुयोगके०गुरुनासंयोगे एटले गुरुकुलवासें निर्मलव्यवहारथाय तेशुद्धव्यवहारथी परिणतपणुंके०परिपक्वपणुंहोय एटले शुद्धनयमां परिपक्व तोजेशुद्धव्यवहारवंतहोय तेहजथाय अन्यथाशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयठेरीशकेनही अने तेहविणके०ते गुरुयोगशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयमांके०अध्यातममां नहीते घणुंके० तेजे परिणतपणुं ते घणुं न होय एटले गुरुकुलवासे शुद्धव्यवहार अनेशुद्धव्यवहारेपरिपक्वपणुं निश्चयमां निश्चलपणुंहोयइति एटले जोगुरुयोगव्यवहारशुद्धहोयतो शुद्धनयमांपरिपक्वताहोय ॥१४॥

केइनविभेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअति
हिगंभीरछेतेवती ॥ भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥
होयअतिपरिणतीपरसमयस्थितिभजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एरीते केटलाकप्राणी अपरिणतमतीके०अपरिणामीतेने नविभेदजाणे के० अनेकप्रकारनी खबरनपडे इहां भेदते अपवाद उत्सर्ग निश्चयव्यवहारप्रमुख जाणवा तेनजाणे अपरिणतमतीशब्दे व्यवहारनयवालालीजियें तेकेमनजाणे जे शुद्धनयअतिहिगंभीरछेके०उपलानयतेअत्यंतगंभीरछे एटले एभावजे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनय यद्यपि अपरिणतमतीजाणे पणनिश्चयनय तो अतिगंभीर उपयोगरूपनयमांखबरनपडे इति भाव एटलेजे व्यवहारनय एकलोमाने तेनेठपकोदीधो हवे एकलोनिश्चयनय मानेतेने ठपकोदेछे केटलाकप्राणी भेदलवजाणतांके०भेदनो अंशमात्रजाणतांमार्गने तजेके०छांडीदे एटले अंशमात्र कांइकशिख्युंसांभल्युंछे तेवचनजाणे तेथी महा अहंकारधरता एमजाणेजे निश्चयस्वरूपनी वातो आपणे जाणियेछैये एवी बीजोकोणजाणेछे अने आपणे आतमस्वरूपजाण्युं एटले क्रियानुं शुंकामछे क्रियातो ज्ञाननीदासीछे इत्यादिकवचन बोलीक्रियानकरे अनेमार्ग छांडे एवीरीते जे अतिपरिणामिथाय तेशुंकरे तेकहेछे जे समय जेसिद्धांत तेनी परके०उत्कृष्टस्थिति तेमर्यादा तेनेभजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति जेनिश्चयनीवातोकरवी तेभजेके० करे अथवा परसमयस्थितिभजेके०अन्यदर्शननीस्थितिभजे एटले एकांतनिश्चयनयवादी दिगंबरादिक तेपरदर्शनीकहियें तेवारेपणपरदर्शनिनीस्थितिभजी इतिभावः ॥१५॥

तेहकारणथकीसर्वनयनविकह्या ॥ कालिकश्रुतमां
हेंतीनप्रायेंलह्या ॥ देखीआवश्यकेंशुद्धनयधुरें
भणी ॥ जाणियेंउलटीरीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेकारणथकी निश्चयपरिणामी तेएकली परिणामनी वातोकरीने मार्ग उपाडीनाखशे एवुंजाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत ए सर्वेनयनथीकह्या किहां नथीकह्यातेकहेछे कालिकश्रुतमांहेंके०आ-

चारांगादिक कालिकश्रुतनेविषे तीनप्रायेंलह्याके०बहुलतायें १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनयलख्याछे एवात ग्रंथकार शिष्यनेकहेछे जेदेखी आवश्यकेके०आवश्यकनिर्युक्तिमां देखजो एटलेकालिकश्रुतमां प्रायेत्रणनयकह्याछे एम आवश्यकनिर्युक्तिमां कह्युंछे यतः एएहिं दिठिवाए ॥ परुवणासुत्तअछकहणाय॥ इहपुणअणब्भुवगमो॥ अहिगारोती हिंउसन्नं॥१॥पायसंववहारं॥ तेहिंतेहिंउजलोएतेणं॥परिकम्मणछंकालिय ॥सुत्तेतदहिगारो ॥२॥ इत्यावश्यके एरीततोश्वेतांबरपद्धेछे जे पूर्वेव्यवहार समजावीने पछे निश्चयनीवात समजावेइति तथाहवेदिगंबरनीप्रक्रिया दूखवेछे जेशुद्धनयधूरेके०निश्चयनयधूरेछे तेमाटे बोटिकके०दिगंबरनीरीती तेउलटीके०विपरीत जाणीये जेमाटे पहेलांथी निश्चयनय समजावे एटले व्यवहारमां दृष्टिठरेजनही माटे विपरीतकहिइतिभावः ॥१६॥

शुद्धव्यवहारछेगछकिरियाथिति ॥ दुप्पसहजाव
तीरथकह्युंछेनीति ॥ तेहसंविज्ञगीतार्थथीसंभ
वे ॥ अवरएरंडसमकोणजगलेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे व्यवहार तेप्रधानछे तेशुद्धव्यवहारतो सुविहितगछजे साधुसमुदाय तेनी क्रियानी जेस्थिति तेमांछे एटले शुद्धव्यवहारते सुविहितगछमां होय दुःप्रसहनामा आचार्यजेपांचमाआराने छेडेथशे जावके०तिहांलगें नीतिके०निरंतर तीर्थकह्युंछे यतः इयसबोदययुगपवर॥सूरिणोचरणसंजुएवंदे ॥ चउरुत्तरदुसहस्स ॥दुप्पसहतेसुहम्माइ ॥ इतिदुसमसंघस्तोत्रे तथा वासाणवीससहसा॥नवसयतिमासपंचदिणपहरा ॥ इक्काघडियादोपल ॥अस्करइगुआलजिणधम्मो॥ इतिदीपालीकल्पे ॥ तेतीर्थतो गीतारथसंविज्ञहोयतेथीज संभवे एटले नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिभाष्यवचनात् एटलेज्ञानक्रियाथी मोक्ष तेज्ञानक्रिया तोगुणछे अने जेगुणछे. तेगुणीथी अभेदरूपछे तेमाटेसंविज्ञशब्दे क्रियावंतआव्या अने गीतार्थशब्दे ज्ञानवंतआव्या तेसंविज्ञ गीतार्थथीजे बीजा तेएरंडासरिखाजाणवा तेने जगतनेविषे कोणलेखामांगणेछे ॥ १७ ॥

शास्त्रअनुसारजेनविहठेताणियें ॥ नीतितपगछनी
तेभलीजाणियें ॥ जीतदाखेजिहांसमयसारू
बुधा ॥ नामनेठामकुमतेनहीजसमुधा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेसंविज्ञगीतार्थ परमार्थेंतोतेने कहियेजे शास्त्रने अनुसारें हठेंताणेनही शास्त्रना अक्षरदेखे एटले पोतानोकदाग्रहमूकीआपे एवीरीती तोतपगछनी भलीके० घणीउत्तमछे एटले तपगछमां पंचांगीप्रकरणादिकजे सुविहितना कस्याग्रंथ तेसर्वेप्रमाणछे एमजाणियें इतिभावः जिहांके० जेतपगछनेविषे बुधाके० पंडितलोक तेसमय-

सारूके०सिद्धांतप्रमाणे जीतदाखेके०वर्त्तमानकालनोजीतदेखाडेछे जेतपगछनां नाम अने ठामके०स्थानक तेकुमतेके०कदाग्रहे मुधाके०फोकट जसके०जेना नही के०नथी एटले एतपगछनांजेनामठामतेसर्वेगुणनिष्पन्नछे ॥ १७ ॥

नामनिर्ग्रंथछेप्रथमएहनुंकह्युं ॥ प्रथमअडपाट
लगेंगुरुगुणेसंग्रह्युं ॥ मंत्रकोटीजपीनवमपाटेय
दा ॥ तेहकारणथयुंनामकोटिकतदा ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ हवे तपगछनां नामधुरथकी अनुक्रमे निष्पन्नछे तेकहेछे प्रथमश्रीसुधर्मा स्वामीथी निर्ग्रंथएहवुं नामप्रथमकह्युं तेप्रथमना आठपाटलगें गुरुगुणेके०मोहोटे गुणे निस्पृहतारूपगुणेकरी संग्रह्युंके०ग्रह्युंछे पछे नवमेपाटे सुस्थित सुप्रतिबद्धआचार्यें कोटीवार सूरिमंत्रजपीनेरह्याबीजाआचार्यते चारलाख तथा सवालाखमंत्रजपे एटलेसूरिमंत्रपुरोथयो अने एबेआचार्यें कोटीवारजप्यो तेकारणके०तेहेतुये तेवारे कोटीकनाम कहेवाणुं एटलेएनामपणगुणनिष्पन्नछेपणकोइमतकदाग्रहेनथी ॥ १ए ॥

पंनरमेपाटेंश्रीचंद्रसूरेंकर्युं ॥ चंद्रगछनामनिर्म
लपणेंविस्तर्युं ॥ सोलमेपाटवनवासनिर्मम
मति ॥ नामवनवासीसामंतभद्रोयति ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेकोटिकगछ चउदपाटलगेंचाल्युं तेवारपछे पंनरमेपाटेंश्रीवज्रसेनाचार्यना शिष्य चारथया तेलक्षमूलनी हांडी व्यवहारीयाने घरेचडी तेवारेबीजे दीनेसुकालथशे एमकही जीवाड्या तेव्यवहारीये तथा तेना चारपुत्रे उपकारजाणी चारित्र लीधुं तेचार शिष्यनांनाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति एचार थया तेचारे आचार्यपदपाम्या तेमां चंद्रनामाआचार्यपन्नरमे पाटेथया तेउथी त्रीजोचंद्रगछ एवुंनाम निर्मलपणे विस्तार पाम्युं तेपण गुणनिष्पन्नथयुं पण मतकदाग्रहे थयुंनथी पछेसोलमेपाटे वनमां वस्या ममत्वरहित जेनीमतिहति एवाआचार्यथया माटे वनवासीनाम चोथुकहेवाणुं तेआचार्यनुंनामसामंतभद्र यतिके०जितेंद्रियहतुं ॥ २० ॥

पाटछत्रीशमेसर्वदेवाभिधा ॥ सूरिवडगछतिहां
नामश्रवणेसुधा ॥ वडतलेंसूरिपदआपीउंतेव
ती ॥ वलीयतसबहुगुणेजेहवाध्यायती ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तथा छत्रीशमे पाटेसर्वदेवाभिधनामेसूरिथकी वडनाझाडतलें सूरिपद आप्युं माटे वडगछ बिरुदथयुं तेश्रवणनेविषे सुधाके०अमृतसमान जाणवुं एटले वडनाझाडहेठें आचार्यपदआप्युं माटे वडगछ अने वलीते आचार्यने गुणवंतयतिनो समुदाय

बहुवृद्धिपाम्यो एटले साधुनोसमुदाय तेवडनीपेठेविस्तारपाम्यो तेथीवडगछ कहेवाणो एनाम पणगुणनिष्पन्नछे तेमाटेवडगछनामथयुं ॥ २१ ॥

सूरिजगचंदजगसमरसचंद्रमा ॥ जेहगुरुपाटेचउअ
धिकचालीसमां ॥ तेहपाम्युंतपानामबहुतपकरी ॥
प्रगटआघाटपुरीविजयकमलावरी ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ पछे जगतचंद्रसूरिजे जगतनेविषे उपशमरसेकरी चंद्रमासरिखाथया एटले चंद्रमाअमृतरसेभर्यो तेमआचार्य ते समतारसेभरेला मोटापाटनाधणी चउअधिक चालीसमांकेवचुम्मालीसमेपाटेथया तेणे श्रीआंबिलवर्द्धमानादिकबहु तप करीने प्रगटपणें आघाटकेवउदयापुरनेविषे राणोजी हस्तीउपर चडीआवताहता तेवारें श्रीजगचंद्रसूरि वर्द्धमानतपलागटकरता दुर्बल शरीरनाधणी सन्मुखआवताहता त्यारे राणें प्रधानने पूछ्युंजे एकोण आवेछे प्रधानेकह्युं हेमहाराज घणामोहोटा तपनाकरनार आचार्यआवेछे त्यारे राणोजी हस्तिऊपरथी हेठाउतरी नमस्कारकरीने महातपा एवुंबिरुददीधुं त्यारे प्रधानेकह्युं महाराज महापद काडीनाखो नहीतरलोक महातपाने ठेकाणेमहात्माकहेशे तेमाटे महापद मकहो तेसांभली राणाजीयें तपानामदीधुं ए पण गुणनिष्पन्न छठुंनामथयुं पणतपाएवुंनामकदाग्रहथीथयुंनथी तथा विजयकमलावरीकेवराणाजीनी सभामां चोर्यासी वादीयोने जीतीने जयलक्ष्मीवर्या त्यारे राणे हीरलाजगचंद्रसूरिकहीबोलाव्या ॥ २२ ॥

एहषटनामगुणठामतपगणतणा ॥ शुद्धसद्दहणगु
णरयणएहमांघणा ॥ एहअनुगतपरंपरभणीसेव
ता ॥ ज्ञानयोगिविबुधप्रगटजगदेवता ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ एषटनामकेवएपूर्वोक्तछनाम तेकेवांछे जे गुणनां स्थानकछे ते तप गणतणाकेवतपगछना जाणवा शुद्धसद्दहणाकेवशुद्धश्रद्धावंत गुणरयणकेवगुणरूपरत्न तेए तपगछमां घणाछे एटले श्रद्धावंत गुणवंतघणाछे एअनुगतपरंपरकेवस्वतंत्रपरंपरा आवी एटले जेनीपरंपरामां त्रुटपडीनथी तेनुंनाम अनुगतपरंपराकहियें तेभणीकेवतेमाटे सेवताकेवसेवाकरता एवाकोणछे जे ज्ञानयोगिविबुधकेवज्ञानसंयोगवंतापंडित अनुगतपरंपरानीसेवाकरेछे इतियोगः प्रगटजगदेवताकेवए जगतनेविषे प्रगटपणे देवताजछे एटलेपंडितलोकशुद्धपरंपरानीजसेवाकरे ॥ २३ ॥

कोइकहेमुक्तिछेविणतांचीथरां ॥ कोइकहेसहजजमतांघरदहिथरां ॥
मूढएदोयतसभेदजाणेनही ॥ ज्ञानयोगेंक्रियासाधतांतेसही ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवे सर्वअधिकारकहीने बेके निश्चयतथा व्यवहारनयफलाववातेफलावे
बे कोइकव्यवहारनयवादिककहेबे जेविणतांचिथरांकेण्पडिलेहणा पडिक्कमणादिक तथा
फाटांत्रुटांवस्त्रादिकपहेरतां इत्यादिक कष्टकरतां मुक्तिबेकेण्मुक्तिपामियें तथा कोइ-
कनिश्चयवादीएमकहेबे जे सेहेजरीतेघरनेविषे दहिथरांजमतां उपलक्षणथी पवरमो-
दकप्रमुखलेवा एटले निश्चयनयवालाकहेबे जेकष्टकरेशुंथाय खुबखावुंपीवुं पण तत्व-
ज्ञानथयु एटलेसिद्धिजाणवी एवीजूदीजूदीरीतना बोलनाराते बेहु मूढकेण्मूर्खबे ए-
टले तेमोक्षसाधवानो नेदकेण्प्रकारजाणतानथी केमके ज्ञानने संयोगेक्रियासाधतां
सहीकेण्तेमुक्तिसत्यबे यतः नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिनाष्यवचनात् तथा हयंनाणंकि-
याहिणं ॥ हयाअन्नाणउक्रिया ॥ पासंतोपंगुलोदढो ॥धावमाणोअअंधउ ॥१॥ एवंसवे-
विनया ॥मिन्नदिठिसपक्खपडिबद्धा ॥ अन्नोन्ननिस्सियाऊण ॥हवंतिते चेवसम्मत्तं॥२॥
इत्यादिक आवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥ २४ ॥

सरलनावेंप्रनोशुद्धएमजाणतां ॥ हुंलहुंसुजशतुऊ
वचनमनआणतां ॥ पूर्वसुविहिततणाग्रंथजाणीकरी ॥
मुऊहोजोतुऊकृपानवपयोनिधितरी ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ माटेहे प्रनो एमकेण्एरीते सरलस्वनावें करीबेहुनयेसिद्धिबे एरीतेजाणतां
पणकपटेनही जेकहे एक अने चित्तमां बीजुंहोय एम कपटसहित नही तथा तुऊ-
वचन मनआणतांकेण्पूर्वें ज्ञानक्रियान्यांमोक्षः एमजाणतां तथा मनआणतांकेण्प्रति-
तकरतां थकां सुजशकेण्नलोजे जशतेहुंपामु एटले मुनिराजप्रमुख सुविहितलोक न-
लोजशबोले एवीस्याद्वाददृष्टि केमथयीतेकहेबे जे पूर्वसुविहिततणा केण्पूर्वाचार्य श्री-
हरिनद्रसूरि तथाधर्मदासगणी नाष्यकारजी उमास्वातिवाचकप्रमुखना जेग्रंथते जा-
णीकरीने सम्यक्ज्ञानेकरी स्याद्वाददृष्टिथयी तेएवीदृष्टितो प्रनुकृपाथी थाय तेमाटेप्र-
नुपासे प्रार्थनाकरेबे जेनवपयोनिधिकेण्जेसंसारसमुद्र तेनेविषे तुऊकृपाकेण्तमारीदया
तद्रूप तरीकेण्जहाज तेमुऊहोजोकेण्मारेथाजो एटलेसंसारसमुद्रमां तमारी कृपारूप-
जहाज मारेथाजो एसोलमीढालनेअंतेस्याद्वाददृष्टिनी सिद्धिकही एवीदृष्टि पोतानी
थयी तेथीउपनोजेहर्ष तेहर्षेकरीसतरमीढालमां बोलेबे ॥ २५ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥
॥ कडखानीदेशी ॥

आजजिनराजमुजकाजसिद्धांसवे ॥ वीनतीमाह
रीचित्तधारी ॥ मार्गजोमेंलह्योतुऊकृपारसथकी ॥
तोहुइसंपदाप्रगटसारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेजिनराज आजके०जेदिवसे स्याद्वाददृष्टियें उंलखाणथयुं तेदिवसे कवीश्वरनुं वर्त्तमानछे तेमाटेआजकहियें तेआजे मारां जेकार्यतेसर्वसिद्धथयां शामाटे जेमारीवीनती चित्तमांपरमेश्वरेधारी यद्यपि परमेश्वरतो वीतरागछे कोइनी वीनती चित्तमांधरतानथी तोपण परमेश्वरनीनक्तिजनितकार्य नक्तलोकने थयुं माटेकारणे कार्योपचारकरीनेकहेछेके जोतुझकृपारूपरसथकी मेंमार्गलह्योके०हुंमार्गपाम्यो अने तेमार्गरूप सारीके० मनोहर संपदा माहरेप्रगटथयी ॥ १ ॥

वेगलोमतहुजेदेवमुझमनथकी ॥ कमलनावन
थकीजेमपरागो ॥ चमकपाषाणजेमलोहनेखेंच
से ॥ मुक्तिनेसेहेजतुझनक्तिरागो ॥ आज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे मारामनथकी वेगला मतथाजो एटले घटमांरहेजो जेम कमलना वनथकी परागोके० वासना दूररहेतीनथी एटले जेमकमलनीवासना तेकमलना वनमांरहे तेम तमेमाराचित्तमां रहेजो चमकजातीनो कोइपछर विशेष छे जेम लोहने खेंचसेके० जेम लोढानखेंचे एटले एपछरनो एवो सेहेजस्वनावछे जे लोढुं वेगलुंहोय तोपण तिहांथीपोतानी मेले आवीने पछरनेवलगे तेरीते तमाराऊपर माहरोजेनक्तिरागछे तेस्वनावेजमुक्तिनेखेंचशे ॥ २ ॥

तुंवसेजोप्रनोहर्षनरहीयमले ॥ तोसकलपापनावंधत्रूटे ॥ उगते
गगनसूरयतणेमंमले ॥ दहदिशिजेमतिमिरपमलफूटे ॥ आ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेप्रनो हर्षनखुं जेमारुंहीयुं तेनेविषे जोतुंवसे तोसमस्तजेनवांतरे पापनावंधकस्याछे तेत्रुटीजाय तिहांदृष्टांत कहेछे जे गगनके० आकाशनेविषे सूर्यनाविमाननुं मंमल तेउगेथके दहदिशिके० दशेदिशानेविषे जेम तिमिरके० अंधकारनपमलजे समूहते फूटेके० नाशपामे तद्वत् पापपमल त्रूटे ॥ ३ ॥

सींचजेतुंसदाविपुलकरुणारसें ॥ मुझमनेशुद्धमतिकल्पवेली ॥ नाण
दंसणकुसुमचरणवरमंजरी ॥ मुक्तिफलआपशेतेएकेली ॥ आ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ विपुलकरुणारसेंके० विस्तारवान करुणारूपरसेंकरीने माहारामननेविषे शुद्धमतिरूप कल्पवृक्षनीवेलीते हेस्वामीतुंसिंचजे इतिनावः तेसिंच्यांथकां ज्ञानदर्शनरूपतो फूलआवशे तथा प्रधानचारित्ररूप मंजरीके० मांजरलागशे तेवारपछे मुक्तिरूपफलने आपशे तेएकेलीके० तेशुद्धमतिरूपकल्पवेलडी एकलीआपशे ॥ ४ ॥

लोकसन्नाथकीलोकबहुवाउलो ॥ राउलोदासतेसविउवेषे ॥ एकतु
झआणसुंजेहरातारहे ॥ तेहनेएहनिजमित्रदेखे ॥ आज० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञा जेगाडरियोप्रवाह तेथकी लोकबहुवाळलोके० घणोलोक घेलो थयोछे पणराळलोदासके० राजानोदास एटले तमारोदास एवोजेहुं ते सर्वगाडरिया प्रवाहनेछवेखुंछुं एटले खात्रमां आणतोनथी मात्र एक अद्वितीय तुझआणसुं-जेरातारहेके० तमारी आज्ञाथी जे रंगाणाछे तेने ए मारो आत्मा ते पोतानो मित्र करीजाणेछे एटले तमारीआणाथीजे बाह्यछे तेने छवेखुछुं पण तमारी आज्ञा-वंतने साधर्मिकसंबंधपणामाटे मित्रकरीजाणुंछुं इतिभावः ॥ ५ ॥

आणजिनभाणतुझएकहुंशिरधरुं ॥ अवरनीवाणीनविकानेसुणियें ॥
सर्वदर्शनतणुंमूलतुझशासनं ॥ तेणतेएकसुविवेकथुणियें ॥ आज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजिनके० सामान्यकेवलीमां भाणके० सूर्यसरिखातारी एक अद्वितीय आज्ञाते हुं मस्तकेंधरुं अने अवरके० बीजानीवाणीते कानेसांभलियेंनही एटले वीतरागनी आज्ञा आदरीयें पण अवर जे रागीद्वेषी तेनां वचन काने न धरियें इति भावः सर्वदर्शनके० सम्यक्त केमके सकलनयश्रद्धायें सम्यक्त यदुक्तं महाभाष्ये यावइयावयणपहा ॥ तावइयानयाविस कमया॥ चेवहुंतिनयवाया॥सम्मतंसमुदियासव्वे ॥ इतिवचनात् तेमाटे समकितनुंमूलते तुझशासनके० तमारी आज्ञाछे अथवा षट-दर्शननुंमूलते तुझशासनछे एटले सर्वदर्शन तेतमाराजदर्शननाअंशछे तेमाटे त-मारी आज्ञातेज एक अद्वितीय भलाविवेकेकरी स्तवियेंछैयें एटले सर्वदर्शननुं मूल छांडी अवरनीस्तवना कोणकरे इतिभावः ॥ ६ ॥

तुझवचनरागसुखसागरेहुंगणुं ॥ सकलसुरमनुजसुखएकबिंदू ॥ सा
रकरजोसदादेवसेवकतणी ॥ तुंसुमतिकमलिनीवनदिणंदू ॥ आज०॥७ ॥

अर्थ ॥ तमारा वचनऊपर जेराग एटले जैनागमनोजेराग तद्रूपजे सुखसमुद्रना समूह तेआगल समस्तदेवता तथासमस्तमनुष्य चक्रवर्त्यादिकनांसुख तेएकबिंदुस-मान हुंगणुंके० हुंमानुंछुं तेमाटे हेदेव सदासर्वदा तमारो हुंसेवकछुं तेनी सारके० संभालकरजो एटले तमारासरिखो करजो तमे सुमतिरूपजे कमलिनी तेनुं जेवन तेनेविषे दिणंदूके० सूर्यसरिखाछो एटले सूर्यजेम कमलिनीने विकस्वरकरे तेम सुम-तिरूपकमलिनीने तमे विकस्वरकरो एटले तमाराथी सुमतिआवे इतिभावः ॥ ७ ॥

ज्ञानयोगेंधरीतृप्तिनविलाजियें ॥ गाजियेंएकतुझवचनरागें ॥ शक्तिउ
ल्लासअधिकोहुसेतुझथकी ॥ तुंसदासकलसुखहेतजागें ॥ आज० ॥८॥

अर्थ ॥ ज्ञानयोगमां तृप्तिधरीने एटले ज्ञानमां मग्नरहीने क्रियानुष्ठान करतां

लाजियेंनही पण सावधानथयीने एकतमारा वचननेरागेंकरीगाजियें एटले कोइक ज्ञानवादिक्रियानुष्ठान उथापतोहोय तेने आगमवचनेकरी गाजीनेजवाबआपियें ए रीतें प्रवर्त्ततां तुऊथकीके० तमारा वचनथकी एटले तमारीआज्ञाथकी शक्तिनोउ ल्लास पणअधिकोथशे पणगलियांथयीने बेशीरहेतां वीर्योल्लासनहिवाधे उलटुंआ लसवधसे इतिभावः एवीरीते प्रवर्त्तनकरतां कारणद्वारे कर्त्ताने फलदेखाडेछे तुंसदा सकलके० तमे सदानिरंतर समस्तसुख जेसिद्धिनांसुख तेनो हेतुके० कारणते जागे के० जागतोछे एटले ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः एप्रभुनुं वचनछे तेवचनथकी भव्यप्राणी अजरामरसुखनुं भाजनथाय तेमाटे सिद्धिनोहेतु पणतुंहिजथयो इतिभावः ॥ ७ ॥

वरतपागछनंदनवनेसुरतरु ॥ हीरविजयोजयोसूरिराया ॥ तास
पाटेविजयसेनसूरिसरू ॥ नितनमेनरपतिजासपाया॥आज० ॥ ए ॥

॥ अर्थ ॥ श्रीजगचंद्रसूरियें तपाबिरुदधराव्युं एमोहोटोतपगछतद्रूप नंदनवनने विषे सुरतरुके० कल्पवृक्षसमान श्रीहीरविजयसूरि जयोके० जयवंतोवर्तो सूरिराया-के० बीजाआचार्यमां राजासरिखाथया तेहनेपाटें श्रीविजयसेनसूरि सर्वआचार्योमां ईश्वरतुल्यथया जेमनांचरणकमलने नरपतिके० पादशाह तेनिरंतर नमस्कारकरताह-ता एटले एभावजेपादशाहजाहांगीरे षटदर्शनपरिक्षानेअर्थें सर्वदर्शनीनेतेडाव्या तेमां जैनदर्शनमांहेला श्रीविजयसेनसूरिगयाहता तेमणेसर्वदर्शननोपराजयकस्यो तेवारें पा-दपादशाहेकह्युंजे श्रीहीरविजयतेगुरु अने तमे सवाइ गुरुथया इतिभावः॥ए॥

तासपाटेंविजयदेवसूरिसरू ॥ पाटतसगुरुविजयसिंह-
धोरी ॥ जासहितसीखथीमार्गएअनुसस्यो ॥
जेहथीसविटलीकुमतिचोरी ॥ आज० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीतेनेपाटें श्रीविजयदेवसूरिथया तथा तेमनापाटें श्रीविजयसिंहसूरि तेगछनो भारवेहेवाने वृषभसमानधोरीथया जेमनी हितसीखके० आज्ञापामीने में एसंवेगमार्ग आदस्यो एटलेएभावजे श्रीजशोविजयजीउपाध्यायें पण एउनी आज्ञा पामीने क्रियाउद्धारकस्यो तथा श्रीविजयसिंहसूरिना शिष्य अनेक हता तेमां सत्तर शिष्य सरस्वती बिरुदधारीहता तेसर्वमां मोहोटा शिष्य पंडितश्रीसत्यविजयगणीहता तेमणे श्रीपूज्यनी आज्ञापामी क्रियाउद्धारकीधो तेमाटे एमकह्युंजे मार्ग एअनुसस्योके० एसंवेगमार्गआदस्यो जेआदरवाथकी तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त इत्यादिक कुमतिकदा ग्रहरूप चोरीटलीगयी ए श्रीतपगछना आचार्योनी परंपरा कही ॥१०॥

हीरगुरुशीसअवतंसमोटोहुउ ॥ वाचकांराजकल्या
णविजयो ॥ हेमगुरुसमवर्कशब्दअनुशासने ॥
शीसतसविबुधवरलाभविजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे उपाध्यायजी पोतानी परंपराकहेछे तेपूर्वें कह्याश्रीविजयसिंहसूरितेना शिष्यसमुदायमां अवतंसके० मुकुटसमान महोटाथया वाचकांराजके० उपाध्यायोमां राजासरिखा एवा श्रीकल्याणविजय उपाध्यायथया ते शब्दअनुशासनेके० व्याकरण शास्त्रमांतो हेमगुरुसमवर्के० श्रीहेमाचार्य सरिखाथया वली तेमना शिष्य विबुधवर-के० सर्वपंडितमां शिरोमणी एवा श्रीलाभविजयगणीथया ॥ ११ ॥

शीसतसजितविजयोजयोविबुधवर ॥ नयविजयविबु
धतससुगुरुभाया ॥ रहिअकाशीमठेंजेहथीमेंभलें ॥
न्यायदर्शनविपुलभावपाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेमना शिष्य एकश्रीजितविजयजीजयवंता पंडितोमां प्रधानसरि-खा तथा बीजाश्रीनयविजयजी पंडितप्रधानथया तेश्रीजितविजयजीनारुडागुरुभाइ-जथया जेहथीके० तेबेहुगुरुनापसायथी हुं रहिअकाशीमठेंके० काशीना मठने विषे रहीने भलीरीते न्यायदर्शनके० न्यायशास्त्रना भावते विपुलके० विस्तारपणेपाम्यो.

जेहथीशुद्धलहियेंसकलनयनिपुण॥ सिद्धसेनादि
कृतशास्त्रभावा ॥ तेहएसुगुरुकरुणाप्रभोतुऊसुगु
ण ॥ वयणरयणायरीमुऊनावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेगुरुनाप्रसादथकी श्रीसिद्धसेनदिवाकर तथा आदिशब्दथी हरिभद्रसूरि उमास्वातिवाचकप्रमुख पंडितोनां करेलां जे शास्त्र तेमांकह्याजेभाव तेनाशुद्धलहियेंके० शुद्ध रहस्यपामियें तेभावकेवाछे जे सकलनयनिपुणके० समस्त जे न्याय तेमां निपुण अथवा समस्तजेनैगमादिकनय तेमां निपुण एवा जे संमति तत्वार्थ, षड्दर्शनसमुच्चय, नयचक्रसार, धर्मसंग्रहणी, अनेकांतजयपताका प्रमुखग्रंथोनाभाव तेना शुद्धरहस्यने हुं पाम्यो माटे एगुर्वादिकनी जे करुणा के० कृपा ते केवीछे जे हे प्रभो तुऊ के० तमारुं जे सुगुणवयणके० गुणवंतजेवचन तद्रूप रयणायरीके० समुद्रनेविषे नावा के० जहाजसरिखीछे एटले एभावजे जो गुर्वादिकनी करुणारूपनावा होयतोतमारा वचन-रूपसमुद्रनो पार तेपामिये, तेमारागुरुनी कृपारूपनावा मारे थयी ॥ १३ ॥

॥ कलस ॥

इमसकलसुखकरडुरितभयहरस्वामीश्रीमंधरतणी ॥ एवीन
तिजेसुणेभावेंतेलहेलीलाघणी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसे
वकजशविजयबुधआपणी ॥ रुचिशक्तिसारुंप्रगटकीधीशा
स्त्रमर्यादाभणी ॥ १ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनविज्ञप्तिःसंपूर्णा॥

अर्थ ॥ हवे जेमनवोप्रासादकरावे तेनेमाथे कलशचढावे तेवारे संपूर्णथाय तेम आस्तवनरूपप्रासादनीपनुंतेसंपूर्णकरवामाटे कलशकहेछे एरीते सकलसुखना करनारा तथाडुरितके० पापनुं जेभयतेना हरवावाला एवा स्वामीके० नायक श्रीसीमंधरप्रभुनी अमेविनतीकही तेजेप्राणीभक्तिभावेंकरी सांभले तेप्राणी घणीसुखलीलापामे एरीते श्रीनयविजयजीपंमितना चरणकमलनी सेवानाकरनार श्रीयशोविजयजीपंमित तेमणे पोतानी शक्तिप्रमाणे श्रद्धाभावनीजे रुचिहती एटले स्याद्वादमार्गनी रुचिजेपोताना चित्तमांहतीते शास्त्रनीमर्यादायेप्रगटकरी कहि देखामी इति ॥ १ ॥

॥ इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनटबार्थःसमाप्तः ॥

क्वेदंकर्त्तुंवचःशस्तं । नानाशास्त्रार्थगर्भितं ॥ क्वमेऽल्पविषयाप्रज्ञा । मुसलाग्रोपमाखलु ॥ १ ॥ यदत्रवितथंप्रोक्तं । मंदबुद्ध्यादिहेतुना ॥ तद्बुधनैःकृपांकृत्वा । मयिशोध्यममत्सरैः ॥२॥ श्रीमद्विजयसिंहाव्हः सूरिरामुविजितेंद्रियः॥तस्यांतेवासीसत्यादि।विजयःसान्वयःसुधीः ॥३॥ कर्पूरविजयस्तस्य । शिष्योगुणगणैर्युतः॥ तस्यापिक्रमयायुक्तः । क्षमाविजय इत्यभू-त् ॥४॥ जिनादिविजयस्तस्य । शिष्योभूद्भूरिशिष्यकः ॥ शास्त्रज्ञःसज्जनोधीमान् । कर्म-ठोधर्मकर्मणि ॥५॥ उत्तमादिजयस्तस्य । शिष्यःशिष्यौघसत्तमः ॥ सर्वोत्तमगुणैर्व्याप्तः । कर्मशास्त्रकुशाग्रधीः ॥ ६ ॥ तस्यांह्रिपंकजेपद्म । विजयोभ्रमरोपमः ॥ नभाग्निवसुचंद्रेब्दे १८३० । तेनेदंवार्तिकंकृतं ॥ ७ ॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनकवियशोविजयजीकृत
सार्द्धत्रिशतगाथाप्रबंधेतस्यकविपद्मविज
यकृतबालावबोधःसमाप्तः

॥ ॐश्रीसर्वज्ञायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीपंन्डितदेवचंद्रजीकृत आगमसार ॥

भव्यजीवनेप्रतिवोधवानिमित्तेमोक्षमार्गनीवचनिकाकहेछे. तिहांप्रथम जीवअनादिकालनो मिथ्यात्वीहतो तेकाललब्धिपामीने त्रणकरणकरेछे. तेनांनाम-पहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण, वीजुं अपूर्वकरण अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण.

तेमांपहेलुं यथाप्रवृत्तिकरणकहेछे. १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ वेदनी, ४ अंतराय, एचारकर्मनी त्रीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे, तेमांथी उंगणत्रीस कोडाकोडीखपावे अने एककोडाकोडीबाकीराखे; तथा १ नामकर्म, २ गोत्रकर्म, ए वे कर्मनी वीसकोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी उंगणीसखपावे अने एककोडाकोडी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सितेरकोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी अगणोत्तेरखपावे वाकीएककोडाकोडीराखे एत्रीरीते एकआयुकर्मवर्जीने वाकीसातेकर्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमाभागेन्यून एककोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिराखे, एवुं जे वैरागरूप उदासिपरिणाम ते यथाप्रवृत्तिकरणकहिये. ए पहेलुंकरण सर्व संज्ञीपंचेंद्री जीव अनंतिवार करेछे.

हवे वीजुंअपूर्वकरणकहेछे. तेएककोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिमांथी एकमूहुर्त्त अनेअनादिमिथ्यात्व जे अनंतानुवंधीआनीचोकडी ते खपाववाने अज्ञान हेय तेछांडवुं अने ज्ञानउपादेय एटले आदरवुं, ए वांछारूप अपूर्वकहेतां पहेलांक्यारे नाव्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्वकरणकहिये, एवीजुंकरणते समकितयोग्यजीवनेथाय.

हवेत्रीजुंअनिवृत्तिकरणकहेछे. तेमुहुर्त्तरूपस्थितिखपावीने निर्मलशुद्धसमकेतपामे मिथ्यात्वनो उदयमटे त्यारे जीव उपशमसमकेतपामे, एत्रोजेपरिणामते अनिवृत्तिकरणकहिये. एकरणकीधाथी गंठीभेदथयोकहिये उक्तंच आवश्यकनिर्युक्तौ "जागंठी तापढमं । गंठीसमयछेउभवेवीउं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण । समत्तपुरक्करुजीवे" ॥ १॥ ऊसरदेसंदड्डुल्लिअंच । विज्झाइवणदवोयप्पइय ॥ मिछत्तस्सअणुदए । उवसमसम्मंलहइ जीवो ॥ २ ॥ एममिथ्यात्वनोउदयमट्याथी जीवसमकितपामे, तेसमकितनी सद्दहणा नावेभेदछे, एक व्यवहारसमकितसद्दहणा, वीजी निश्चयसमकितसद्दहणा.

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरुसुसाधु जे सूधोअर्थकहेते तथा धर्मकेवलीनो परुप्यो जे आगममां सातनय तथा एकप्रत्यक्ष वीजुंपरोक्ष एवेप्रमाण अने चार निक्षेपेकरीसद्दहे, एवी सद्दहणा ते व्यवहारसमकितकहिये. एपुण्यनुं कारण तथा धर्म प्रगटकरवानुंकारणछे एवीरुचि ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे.

बीजुंनिश्चयसमकित तेआवीरीतेजे निश्चयदेवते आपणोजआत्मा जीवनिष्पन्न स्वरूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीसत्तागवेषतां तथा निश्चयगुरुतेपण आपणोआत्माज तत्वरमणी अने निश्चयधर्मते आपणाजीवनोस्वन्नावजछे एवीसद्दहणा ते मोक्षनुंकारण छे केमके जीवस्वरूपउंलख्या विनाकर्मखपेनही एवी शुद्धसद्दहणा तेनिश्चयसमकित.

हवेज्ञाननुंस्वरूपकहेछे तेज्ञाननाबेन्नेदछे एकव्यवहारज्ञान बीजुंनिश्चयज्ञान तेमांजे अन्यमतिनांसर्वेशास्त्रजाणवां अथवा जैनागममध्ये कह्याजे एकगणितानुयोग तेक्षेत्रमान बीजो चरणकरणानुयोग तेक्रियाविधि त्रीजोधर्मकथानुयोग एत्रणअनुयोगनुं जाणवापणुं तेसर्वेव्यवहारज्ञानछे अथवा अंतरउपयोगविनाजेसूत्रना अर्थ करवा ते पण व्यवहारज्ञानकहियें.

हवेनिश्चयज्ञान ते छद्रव्य तथा तेनागुण अनेपर्याय सर्वनेजाणे तेमां पांचअजीवद्रव्यछे तेहेयके० छांमवायोग्यजाणीछांमवा अने एकजीवद्रव्यतेनिश्चयकरी सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनुंकारण मोक्षनोजावावालो मोक्षमांजरहेछे एहवो आपणोजीव अनंतगुणीअरूपीछे तेनेजध्यावे तेनिश्चयज्ञानकहियें.

हवे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय चोथोपुद्गलास्तिकाय पांचमोजीवास्तिकाय अनेछठोकाल एछद्रव्यशाश्वताछे तेनुंज्ञानकहेछे एछ द्रव्यमध्ये पांचअजीवद्रव्य छे अनेएकजीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंतछे उपादेयछे.

हवेएछद्रव्यनागुणकहेछे पहेलोधर्मास्तिकायनाचारगुण एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोगतिसहायगुण; अनेबीजोअधर्मास्तिकायनापण चारगुणछे एक अरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोस्थितिसहायगुण; अने त्रीजो आकाशास्तिकायद्रव्यनाचारगुणछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोअवगाहना दानगुण; हवेकालद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोनवापुराण वर्त्तनालक्षण; हवेपुद्गलद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकरूपी बीजो अचेतन त्रीजो सक्रिय चोथोमिलणविखरणरूपपूरणगलनगुण; हवेजीवद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअनंतज्ञान बीजोअनंतदर्शन त्रीजो अनंतचारित्र चोथोअनंतवीर्य एछद्रव्यना गुण कह्या तेनित्यध्रुवछे ॥

हवेछद्रव्यनापर्यायकहेछे धर्मास्तिकायनाचारपर्यायछे एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथो अगुरुलघु; अधर्मास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथो अगुरुलघु; पुद्गलद्रव्यनाचारपर्याय एकवरण बीजोगंध त्रीजोरस चोथोस्पर्श अगुरुलघुसहित; तथाआकाशास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु; कालद्रव्यनाचारपर्याय एकअतीतकाल बीजोअनागतकाल त्रीजोवर्त्तमा-

नकाल चोथोअगुरुलघु; अनेजीवद्रव्यनाचारपर्याय एकअव्याबाध बीजो अनवगाह त्रीजोअमूर्त्तिक चोथोअगुरुलघु. एछद्रव्यनापर्यायकह्या.

हवेछद्रव्यनागुणपर्यायनुंसाधर्मपणुंकहेछे अगुरुलघुपर्यायसर्वेद्रव्यमांसरिखोछे अने अरूपीगुणपांचद्रव्यमांछे एकपुद्गलद्रव्यमांनथी; तथाअचेतनगुणपांचद्रव्यमांछे,एकजीव्यद्रव्यमांनथी; अनेसक्रियगुणजीव तथापुद्गलएबेद्रव्यमांछे,बाकी चारद्रव्यमांनथी;तथा चलणसहायगुणएकधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; वलीस्थिरसहायगुण एक अधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; तथाअवगाहनागुणतेएकआकाशद्रव्यमांछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; अने वर्त्तनागुणतेएककालद्रव्यमांजछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; तेमज मिलणविखरणगुणतेपुद्गलमांछे, बीजाद्रव्यमांनथी. तथाज्ञानचेतनागुण ते एक जीवद्रव्यमांछे, पणबीजाद्रव्यमांनथी. एमूलगुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मिलेनही. एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश एत्रणद्रव्यना त्रणगुण तथा चारपर्यायसरिखाछे अनेत्रण गुणेकरीतो कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवेवलीअग्यारबोलेकरीछद्रव्यनागुणजाणवानेगाथाकहेछे " परिणामजीवमुत्ता ॥ सपएसाएगखित्तकिरिआय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगदइयरअप्पवेसा ॥१॥अर्थ॥ निश्चयनयथीआपआपणा स्वभावेंछएद्रव्यपरिणामिछे अनेव्यवहारनयथी जीव तथापुद्गल ए बेद्रव्यपरिणामीछे तथाएकधर्म बीजो अधर्म त्रीजोआकाश अनेचोथोकाल एचारद्रव्यअपरिणामीछे तथाछद्रव्यमां एकजीवद्रव्यतेजीवछे बीजापांचद्रव्यअजीवछे तथाछ द्रव्यमांएकपुद्गलमूर्त्तिवंतअरूपीछे अनेपांचद्रव्य अमूर्त्तिवंत अरूपीछे. छद्रव्यमां पांच द्रव्यसप्रदेशीछे, अने एककालद्रव्यअप्रदेशीछे तेमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकायएबेद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे अने एकआकाशद्रव्यअनंतप्रदेशीछे जीवद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे, पुद्गलपरमाणुअनंतप्रदेशीछे; परमाणुआअनंताछे, एमपांचद्रव्य सप्रदेशीछे अनेछठोकालअप्रदेशीछे.

छद्रव्यमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय एत्रणते एकेकद्रव्यछे, तथाएकजीवद्रव्य बीजोपुद्गलद्रव्य त्रीजोकालद्रव्य एत्रणद्रव्यअनेकअनेकछे, छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्यक्षेत्रछे, अनेबीजापांचद्रव्यक्षेत्रीछे;निश्चयनयथीछद्रव्यपोतपोतानाकार्यैंसदाप्रवर्त्तेछे माटेसक्रियछे; अनेव्यवहारनयथी जीवतथापुद्गल एबे द्रव्यसक्रियछे, तेमांपणपुद्गलसदासक्रियछे, अनेजीवद्रव्यतो संसारीथकोसक्रियछे; पण सिद्धअवस्थायेंथकोसंसारीक्रियाकरवाने अक्रियछे, तथाबाकीनाचारद्रव्यतोअक्रियछे; निश्चयनयथी छद्रव्यनित्यछे ध्रुवछे; अनेउत्पादव्ययेंकरी अनित्यपणेपणछे तथाव्यवहार नये जीवअनेपुद्गलएबेद्रव्यअनित्यछे, बाकीनाचारद्रव्यनित्यछेयद्यपिउत्पादव्यय ध्रुवप-

ऐसर्वपदार्थपरिणमेछे तोपण एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल एचार द्रव्य सदाअवस्थितछे तेमाटेनित्यकह्यां ॥

छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यअकारणछे अनेपांचद्रव्यकारणछे केमके पांचेद्रव्यजीवने भोगमांआवेछे माटेकारणकहियें केमके धर्मास्तिकाय चालवानोसाह्यआपेछे अधर्मास्तिकायथिररहेवानोसाह्यआपेछे आकाशास्तिकायअवकाशआपेछे पुद्गलास्तिकायजीवनेमधुरादि सुरभिगंधादिक तथासकोमलस्पर्शादिक भोगपणेथायछे तथाकालद्रव्यते जीवने जरा बाल तारुण्यअवस्थादेछे तथाअनादिसंसारीजीव भवस्थिति परिपाक छतां एकअंतरमुहूर्त्तकालमां सकलकर्मनिर्झरीमोक्षपदहोचेतिहांसिद्धअवस्थायें अनंतोकालपर्यंतजीवअनंतासुखनेविलसे माटेकालद्रव्यपण जीवनेभोगथायछे पणएकजीवद्रव्यकोइनेभोगआवतोनथी माटे अकारणकह्युं अनेपांचद्रव्यभोगआवे माटेकारण कह्यां तथाघणीप्रतोमांतोसंक्षेपेएटलुंछेजे छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यकारण छे पांचद्रव्य अकारणछे एपणवातघणीरीतेमलतीछे माटेजेबहुश्रुतकहेतेखरुं मारी धारणाप्रमाणे जीवद्रव्यकारण अने पांचद्रव्यअकारणएमसंभवेछे निश्चयनयथी छए द्रव्यकर्त्ताछे अने व्यवहारनये एकजीवद्रव्यकर्त्ताछे बाकीपांचद्रव्यअकर्त्ताछे छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्य सर्वव्यापीछे अनेपांचद्रव्यलोकव्यापीछे छएद्रव्यएकखेत्रमांएकठांरह्यांछे पणएकबीजासाथेमलीजायनही एछद्रव्यनोविचारकह्यो.

हवेएकेकाद्रव्यमां एकनित्य बीजोअनित्य त्रीजोएक चोथोअनेक पांचमोसत् छठो असत् सातमोवक्तव्य आठमोअवक्तव्य एआठआठपक्षकहेछे.

धर्मास्तिकायनाचारगुणनित्यछे तथापर्यायमांधर्मास्तिकायनोएकखंधनित्यछे बाकीनादेशप्रदेश तथा अगुरुलघुपर्यायअनित्यछे अधर्मास्तिकायनाचारगुण तथाएकलोकप्रमाणखंधनित्यछे अने एकदेश बीजोप्रदेश त्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्य छे तथा आकाशास्तिकायनाचारगुण तथालोकालोकप्रमाणखंधनित्यछे अनेएकदेश बीजो प्रदेशत्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्यछे तथाकालद्रव्यनाचारगुण नित्यछे अनेचार पर्यायअनित्यछे पुद्गलद्रव्यनाचारगुणनित्यछे अनेचारपर्यायअनित्यछे जीवद्रव्यनाचार गुण तथा त्रणपर्यायनित्यछे अनेएकअगुरुलघुपर्यायअनित्यछे एरीतेनित्यानित्यपक्षकह्यो.

हवेएकअनेकपक्षकहेछे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनोखंधलोकाकाशप्रमाणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअसंख्याताछे तेणेकरी अनेकछे आकाशद्रव्यनोलोकालोकप्रमाणखंधएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअनंताछे माटेअनेकछे कालद्रव्यनोवर्त्तनारूपगुणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्याय अनंताछे समयअनंताछे केमकेअतीतकालेअनंतासमयगया अने अनागतकाले अनंता-

समयआवशे तथावर्त्तमानकालेसमयएकछे माटेअनेकपक्षछे पुद्गलद्रव्यनापरमाणुअनंताछे ते एकेकपरमाणुमां अनंतागुणपर्यायछे तेअनेकपणुंछे अनेसर्वेपरमाणुमां पुद्गलपणुंतेएकजछे माटेएकछे.

जीवद्रव्यअनंताछेएकेकाजीवमां प्रदेशअसंख्याताछे तथागुणअनंताछे पर्यायअनंताछे तेअनेकपणुंछे पणजीवितव्यपणुंसर्वेजीवोनुं एकसरिखुंछे माटे एकपणुंछे इहांशिष्यपूछेछे जेसर्वेजीवएकसरिखाछे तोमोक्षनाजीव सिद्धपरमानंदमयीदेखायछे अनेसंसारीजीवकर्मवशपड्याडुःखीदेखायछे अनेतेसर्वेजूदाजूदादेखायछे तेकेम? तेहनेगुरुउत्तर कहे छे के निश्चयनयेतोसर्वजीवसिद्धसमानछे माटेजसर्वेजीवकर्मखपावीनेसिद्धथायछे तेथीसर्वजीवनीसत्ताएकछे.

फरिशिष्यपूछेछेके जोसर्वजीवसिद्धसमानकह्योछो तोअभव्यजीवपणसिद्धसमानछे एमछेखुं अनेतेतोमोक्षेजतानथी तेहनेउत्तर जे अभव्यनेकर्मचीकणाछे अनेअभव्यमां परावर्त्तधर्मनथी तेथीसिद्ध थतानथी माटेतेनोएहवोज स्वभावछे जेमोक्षेजवुंज नथी अनेभव्यजीवमांपरावर्त्तधर्मछे माटेकारणसामग्रीमिले पलटणपामे गुणश्रेणीचढी मोक्ष करीसिद्ध थाय पणजीवनामुख्यआठरुचकप्रदेशजेछे तेनिश्चयनयथी भव्य तथाअभव्य सर्वनासिद्धसमानछे माटे सर्वजीवनीसत्ताएकसरिखीछे केमकेएआठप्रदेशने बिलकुल कर्मलागता नथी तेश्रीआचारांगसूत्रनी श्रीसिलंगाचार्यकृतटीकानालोकविजयाध्ययने प्रथमोद्देशकेसाखछे तिहांथीसविस्तरपणेजोवुं.

हवेसत्तथाअसत्पक्षकहेछे एछद्रव्य तेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभावपणे सत्एटलेछताछे अने परद्रव्य परक्षेत्र परकाल तथा परभावपणे असत् एटले अछताछे तेनीरीतबताववानेअर्थे छएद्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहियें छैयें.

धर्मास्तिकायनोमूलगुण चलणसहायपणो ते स्वद्रव्य अधर्मास्तिकायनोमूलगुण स्थितिसहायपणो ते स्वद्रव्य आकाशास्तिकायनोमूलगुण अवगाहपणो तेस्वद्रव्य कालद्रव्यनोमूलगुण वर्त्तनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य तथा पुद्गलनोमूलगुण पुरणगलनपणो तेस्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनोमूलगुणज्ञानादिकचेतनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य एछ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणोकह्यो.

हवे स्वक्षेत्र ते द्रव्यनोप्रदेशपणोछे ते देखाडेछे तिहां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशछे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशछे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्रसमयछे पुद्गलद्रव्यनो स्वक्षेत्रएकपरमाणुछे तेपरमाणुअनंताछे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एकजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे.

हवे स्वकालते छएद्रव्यमां अगुरुलघुनोजछे अने एछद्रव्यनापोतपोताना गुणपर्या-

यते सर्वद्रव्यनो स्वन्नावजाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल न्नावछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्यादिक चारछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी एमज आकाशास्तिकायनेविषे आकाशनाज स्वद्रव्यादिकचारछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी कालद्रव्यमां कालनाद्रव्यादिकचारछे बीजा पांचद्रव्यनानथी अने पुद्गलनाद्रव्यादिकचार ते पुद्गलमांजछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी तथा जीवद्रव्यना स्वद्रव्यादिकचार ते जीवमांछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी.

जेद्रव्यतेगुणपर्यायवंत द्रव्यथीअन्नेदपर्यायहोयतेद्रव्यकहियें, तथास्वधर्मनोआधारवंतपणो ते क्षेत्रकहियें अने उत्पादव्ययनीवर्त्तना तेकालकहियें तथाविशेषगुणपरिणति स्वन्नावपरिणति पर्यायप्रमुख ते स्वन्नावकहियें.

इहां १ न्नेदस्वन्नाव २ अन्नेदस्वन्नाव ३ न्नव्यस्वन्नाव ४अन्नव्यस्वन्नाव ५ परमस्वन्नाव एपांचस्वन्नावकहेवा तेमांद्रव्यनासर्वधर्मने पोतपोतानास्वस्वकार्यने करवेकरी न्नेदस्वन्नावछे अने अवस्थानपणेअन्नेदस्वन्नावछे अणपलटणस्वन्नावें अन्नव्यस्वन्नावछे तथा पलटणस्वन्नावें न्नव्यस्वन्नावछे अने द्रव्यनासर्वधर्म तेविशेषधर्मनेअनुजायीजपरिणमे तेमाटे ते परमस्वन्नावकहियें एसामान्यस्वन्नावजाणवा एरीतेछएद्रव्यस्वगुणे सत्छे अनेपरगुणे असत्छे.

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्यपक्षकहेछे एछद्रव्यमां अनंतागुणपर्यायते वक्तव्यएटले वचनेकहेवायोग्यछे अने अनंतागुणपर्यायतेअवक्तव्य एटले वचनेकह्याजायनहीं एवा छे तिहांकेवलीन्नगवंते समस्तन्नावदीठा तेने अनंतमेन्नागे जे वक्तव्य एटलेकहेवायोग्य हता ते कह्या वलीतेनोपणअनंतमोन्नाग श्रीगणधरदेवे सूत्रमां गुंथ्यो तेसूत्रमांगुंथ्या तेनेअसंख्यातमेन्नागे हमणांआगमरह्याछे ए छद्रव्यमांआठपक्षकह्या.

हवेनित्यतथाअनित्यपक्षथीचौन्नंगीउपनीतेकहेछे एक जेनीआदिनथी अने अंतपणनथी तेअनादिअनंत पहेलोन्नांगो अनेजेनी आदिनथी पणअंतछे तेअनादिसांतबीजोन्नांगो तथाजेनीआदिपणछे अनेअंतएटले छेहेमोपणछे तेसादिसांतत्रीजो न्नांगो व॰ लीजेहनीआदिछे पणअंतनथी तेसादिअनंतनामेचोथोन्नांगो जाणवो.

हवेएचारन्नांगाछद्रव्यमांफलावीदेखाडेछे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणतेअनादिअनंतछे नित्यछे अनेन्नव्यजीवनेकर्मसाथेसंबंध तथा संसारीपणानीआदिनथी पणसिद्ध थाय तेवारे अंतआव्यो तेथीए अनादिसांत न्नांगोछे अने देवता तथा नारकीप्रमुखना न्नवकरवाते सादिसांतन्नांगोछे अने जेजीवकर्मखपावी मोक्षगया तेनी सिद्धपणे आदिछे अने पाछेसंसारमां कोइकालेंआववुंनथी माटेअंतनथी तेथीएसादिअनंतन्नां-

गोछे एजीवद्रव्यमांचोभंगीकह्यी जीवद्रव्यनाचारगुणअनादिअनंतछे जीवनेकर्मसाथें संयोगतेअनादिसांतछे केमकेकेवारेपणकर्मबूटेछे.

हवेधर्मास्तिकायमांचारगुण तथाखंधपणो ते अनादिअनंतछे अने अनादिसांतभांगोनथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु एसादिसांतभांगोछे तथासिद्धनाजीवमां धर्मास्तिकायनाजेप्रदेशरह्याछे तेप्रदेशआश्रयीने सादिअनंतभांगोछे एवीजरीतें अधर्मास्तिकायमांपण चौभंगीजाणवी अनेआकाशद्रव्यमां गुणतथाखंधअनादिअनंतछे बीजो भांगोनथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघुसादिसांतछे तथासिद्धना जीवनी साथे संबंधतेसादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमांगुणअनादिअनंतछे जीवपुद्गलनोसंबंध अभव्यने अनादिअनंतछे भव्यजीवनेअनादिसांतछे पुद्गलनाखंधसर्वेसादिसांतछे जेखंधबांध्यातेस्थितिप्रमाणे रही खरेछे वलीनवाबंधायछे माटेसादिअनंतभांगोपुद्गलमांनथी.

कालद्रव्यमां गुणचारअनादिअनंतछे पर्यायमां अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्तमानकालसादिसांतछे अनागतकालसादिअनंतछे एकालनुंस्वरूपते सर्वेउपचारथीछे ए रीतेंकालद्रव्यमां चौभंगीकह्यी.

हवे द्रव्यक्षेत्रकालतथा भावमांचौभंगीकहेछे जीवद्रव्यमां स्वद्रव्यथीज्ञानादिकगुणते अनादिअनंतछे स्वखेत्रेंजीवनाप्रदेशअसंख्याताछे तेसादिसांतछे ततोद्वर्त्तनापणे फरेछे तेमाटे. अथवा अवगाहनामाटेसादिसांतछे पणछतिपणेतो अनादिअनंतछे स्वकाल अगुरुलघुनेगुणे अनादिअनंतछे अनेअगुरुलघुगुणनो उपजवो तथाविणशवोतेसादिसांतछे तथा स्वभावगुणपर्याय तेअनादिअनंतछे अनेभेदांतरेअगुरुलघु तेसादिसांतछे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्यजेचलणसहायगुण तेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रअसंख्यात प्रदेशलोकप्रमाणछे ते अवगाहनापणे सादिसांतछे स्वकालतेअगुरुलघुगुणेकरी अनादिअनंतछे अने उत्पादव्ययतेसादिसांतछे स्वभावते चारगुणअगुरुलघुअनादिअनंतछे १ खंध २ देश ३ प्रदेशतेअवगाहनानेप्रमाणे सादिसांतछे एमअधर्मास्तिकायनापण द्रव्यादिचारभांगाजाणवा तथाआकाशास्तिकायमां स्वद्रव्यअवगाहनादानगुणतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रलोकालोकप्रमाणअनंतप्रदेशते अनादिअनंतछे स्वकालते अगुरुलघुगुणसर्वथापणेअनादिअनंतछे अनेउपजवे तथाविणसवेसादिसांतछे स्वभाव ते चारगुण तथा खंधअने अगुरुलघुते अनादिअनंतछे तथादेशप्रदेशते सादिसांतछे ते आकाशद्रव्यना बेभेदछे एकचौदराजलोकनो खंध लोकाकाश तेसादिसांतछे बीजो अलोकाकाशनो खंध तेसादिअनंतछे.

कालद्रव्यमां स्वद्रव्यजे नवपुराणवर्त्तनागुण तेअनादिअनंतछे स्वखेत्रसमयकालते

सादिसांतछे केमके वर्त्तमानसमयएकछेतेमाटे. तथा स्वकालतेअनादिअनंतछे स्वन्नाव तेगुणचार अनेअगुरुलघु अनादिअनंतछे अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्तमानकाल सादिसांतछे अनागतकाल सादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमां स्वद्रव्यते द्रव्यपणे जेपूर्णगलनधर्मतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रपरमाणुते सादिसांतछे स्वकालस्थिति अगुरुलघुगुणते अनादिअनंतछे अगुरुलघुनोउपजवोविणशवोते सादिसांतछे स्वन्नावतेगुणचार अनादिअनंतछे वर्णादिपर्यायचार एटले वर्ण गंध रस स्पर्श तेसादिसांतछे एद्रव्यादिचारमां चौन्नंगीकही.

हवे छद्रव्यनासंबंधआश्रीचौन्नंगीकहेछे तिहांप्रथमआकाशद्रव्यछे तेमांअलोकाकाशमांकोइद्रव्यनथी अनेलोकाकाशमां छद्रव्यछे तिहांलोकाकाशद्रव्य तथाबीजुंधर्मास्तिकायद्रव्य अनेत्रीजुंअधर्मास्तिकायद्रव्य ते अनादिअनंतसंबंधीछे जेलोकाकाशना एकेकप्रदेशमांधर्मद्रव्य तथाअधर्मद्रव्यनोएकेकप्रदेशरह्योछे तेपण किवारे विछडसेनही माटेअनादिअनंतसंबंधीछे आकाशखेत्रलोकसर्व अनेजीवद्रव्यनोअनादिअनंतसंबंधछे अनेसंसारीजीवकर्मसहित तथा लोकनाप्रदेशनोसादिसांतसंबंधछे लोकांतसिद्धखेत्रनासिद्धजीवोनो आकाशप्रदेशसाथेंसादिअनंतसंबंधछे लोकाकाशअनेपुद्गलद्रव्यनोअनादिअनंतसंबंधछे आकाशप्रदेशनीसाथें पुद्गलपरमाणुनो सादिसांतसंबंधछेएमआकाशद्रव्यनीपरेधर्मास्तिकाय तथाअधर्मास्तिकायनोपण सर्वसंबंधजाणवो जीवअने पुद्गलनासंबंधमां अन्नव्यजीवनेपुद्गलनोअनादिअनंतसंबंधछे केमके अन्नव्यजीवनाकर्मकिवारें खपशेनहीमाटे अने न्नव्यजीवनेकर्मनुंलागवुंअनादिकालनुंछे पणते किवारेकछुटशे माटेन्नव्यजीवनेपुद्गलसंबंधअनादिसांतछे तथानिश्चेंनयकरीछद्रव्यस्वन्नावपरिणामपरिणम्याछे तेपरिणामीपणोसदाशाश्वतोछे तेमाटेअनादिअनंतछे अने जीवतथापुद्गलबेहुद्रव्यमलिसंबंधन्नावपामेछे तेपरपरिणामीपणोछे तेपरपरिणामिपणोअन्नव्यजीवनेअनादिअनंतछे अनेन्नव्यजीवनेअनादिसांतछे अनेपुद्गलनोपरिणामीपणो तेसत्तायें अनादिअनंतछे अनेपुद्गलनोमिलवो विछरवोतेसादिसांतछे एटलेजीवद्रव्यपुद्गल साथे मिल्योसक्रियछे अनेपुद्गलकर्मथीरहितथाय तेवारेंजीवद्रव्यअक्रियछे अनेपुद्गल द्रव्यसदासक्रियछे.

हवेएकअनेकपक्षथी निश्चेंज्ञानकहेवाने नयकहेछे.सर्वद्रव्यमांअनेकस्वन्नावछे तेएकवचनथीकह्याजायनही माटेमांहोमांहेंनयकरीसंक्षेपपणेकहेछे. तिहांमूलनयनाबेन्नेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांउत्पादव्ययपर्यायगौणपणे अनेप्रधानपणे द्रव्यनोगुणसत्तानेग्रहेतेद्रव्यार्थिकनयकहियें तेनादशन्नेदछे. १ सर्वद्रव्यनित्यछ तेनित्यद्रव्यार्थिक २ अगुरुलघु अनेखेत्रनीअपेक्षानकरे मूलगुणने पिंडरूपणेग्रहे तेएकद्रव्यार्थिक ३

ज्ञानादिकगुणेसर्वजीव एकसरिखाछे माटेसर्वनेएकजीवकहे स्वद्रव्यादिकनेग्रहे तेसत् द्रव्यार्थिक जेमसत्लक्षणंद्रव्यं ४ द्रव्यसांकहेवायोग्यगुण अंगीकारकरे तेवक्तव्यद्रव्यार्थिक ५ आत्मानेअज्ञानीकहेवुं तेअशुद्धद्रव्यार्थिक ६ सर्वद्रव्यगुणपर्याय सहितछे एमकहेवुं तेअन्वयद्रव्यार्थिक ७ सर्वजीवद्रव्यनीमूलसत्ताएकछे तेपरमद्रव्यार्थिकनय ८ सर्वजीवना आठप्रदेशनिर्मलछे तेशुद्धद्रव्यार्थिकनय ९ सर्वे जीवनाअसंख्यातप्रदेश एकसरिखाछे तेसत्ताद्रव्यार्थिकनय १० गुणगुणीद्रव्य तेएकछे तेपरमभावग्राहकद्रव्यार्थिक जेमआत्माज्ञानरूपछेइत्यादिक एद्रव्यार्थिकनयनादशभेदकह्या.

हवे पर्यायार्थिकनयनाछभेदकहेछे. जेपर्यायनेग्रहेतेपर्यायार्थिकनयकहियें, तेनाछभेद छे. १ द्रव्यपर्यायतेजीवनेभव्यपणुं तथासिद्धपणुंकेहेवुं २ द्रव्यव्यंजनपर्याय तेद्रव्यनुंप्रदेशमान ३ गुणपर्यायजेएकगुणथीअनेकताथाय जेमधर्माधर्मादिद्रव्य पोताना चलणसहकारादिगुणथी अनेकजीवतथापुद्गलने सहायकरे ४ गुणव्यंजनपर्यायजे एकगुणनाघणाभेदछे ५ स्वभावपर्यायतेअगुरुलघुपर्यायथीजाणवुं एपांचपर्यायसर्वद्रव्यमांछे अनेछठोविभावपर्यायतेजीवपुद्गलएवेद्रव्यमांछे तिहांजीवजेचारगतिना नवानवाभवकरे ते जीवमांविभावपर्याय तथापुद्गलमां खंधपणुंतेविभावपर्यायजाणवो.

हवेपर्यायनाबीजाछभेदकहेछे. १ अनादिनित्यपर्याय तेजेमपुद्गलद्रव्यनोमेरुप्रमुख २ सादिनित्यपर्यायतेजीवद्रव्यनुंसिद्धपणुं ३ अनित्यपर्यायतेसमयसमयमांद्रव्यउपजेविणशेछे ४ अशुद्ध अनित्यपर्यायते जन्ममरणथायछे तेणेकरीकहेवुं ५ उपाधिपर्यायतेकर्मसंबंध ६ शुद्धपर्यायजेमूलपर्यायसर्वद्रव्यनाएकसरिखाछे. एपर्यायार्थिकनुंस्वरूपकह्युं.

हवेसातनयकहेछे.१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत एसातनयनानामजाणवां तेमां पहेलोनैगमनयकहेछे नथीएकगमोतेनैगम कहियें गुणनोएकअंशउपनोहोयतो नैगमनयकहियें. दृष्टांत—जेमकोइकमनुष्यने पायलीलाववानोमनथयो तेवारेंजंगलमां लाकडुंलेवाचाल्यो रस्तामांकोइकमनुष्यमल्यो तेणें पुछ्युं तुंक्यांजायछे तेवारें तेणेंकह्युं जे पायलीलेवाजाउंछुं तेपायलीतोहजीघडीनथी पणमनमांचिंतवी तेथइएमगण्युं तेमनैगमनय सर्वजीवनेसिद्धसमानकहे केमके सर्व जीवनाआठरुचकप्रदेशनिर्मलसिद्धरूपछे तेथीएकअंशेंसिद्धछे ते माटे सिद्धसमानसर्व जीवकह्या तेनैगमनयनात्रणभेदछे १ अतीतनैगम २ अनागतनैगम ३ वर्त्तमाननैगम ए नैगमनय कह्यो.

हवेसंग्रहनयकहेछे. सत्ताग्रहेतेसंग्रह जेएकनामलीधाथी सर्वगुणपर्यायपरिवारसहितआवे तेसंग्रहनयजाणवो. तेनोदृष्टांत—जेमकोइकमनुष्ये प्रभातें दातणकरवानेअर्थें पोतानाघरनाबारणेबेशीने चाकरपुरुषने कह्युं जे दातणलइआवो तेवारेतेचाकरमनुष्यपा-

णीनोलोटो तथारुमालअनेदातण एमसर्वचीजलइआव्यो. हवेशेठेंतोएकदातण नामल-इनेमंगाव्युंहतुं पणसर्वनोसंग्रहकरीचाकरलेइआव्यो तेमज द्रव्यएवुंनामकह्युं तोद्रव्य-नागुणपर्यायसर्वआव्या. एसंग्रहनयनावेभेदछे एकजेद्रव्यपणोसामान्यपणेबोलताजीव तथाअजीवद्रव्यनोभेदपड्योनही तेपेहेलोसामान्यसंग्रह तथावीजोविशेषताने अंगी-कारकरेछे जेजीवद्रव्य एमकह्युंतो अजीवसर्वटल्या तेविशेषसंग्रह.

हवे व्यवहारनयकहेछे जेबाह्यस्वरूपदेखीनेभेदनीवेहेचणकरे अनेजेबाहेरदेखाता गुणनेज माने पण अंतरंगसत्तानमाने एटलेएनयमां आचारक्रियामुख्यछे अंतरंगप-रिणामनोउपयोगनथी केमके नैगमतथासंग्रहनयतेज्ञानरूपध्याननापरिणामविना अं-शतथासत्ताग्राहीछे तेमइहांकरणीमुख्यछे तेव्यवहारनयपणे जीवनी व्यवस्थाअनेकप्र-कारेंछे तिहां नैगम तथासंग्रहनयकरी सर्वजीवसत्तायें एकरूपछे पणव्यवहारनयथी जीवना बेभेदछे एकसिद्ध बीजासंसारी तेवलीसंसारी जीवनाबेभेदछे एकअयोगीचौ-दमा गुणठाणावाला तथावीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एककेवली बीजो छद्मस्थ, छ-द्मस्थनाबेभेद एक क्षीणमोही बारमागुणठाणेवर्त्तता मोहनीयकर्मखपाव्युंते बीजाउ-पशांतमोह ते उपशांत मोहनावली बेभेद एकअकषायी इग्यारमा गुणठाणा-नाजीव बीजासकषायी तेसकषायीनाबेभेदछे एक सूक्ष्म कषायी दशमा गुणठाणना-जीव बीजाबादरकषायी ते वादरकषायीना वलीबेभेदछे एकश्रेणीप्रतिपन्न वी-जाश्रेणीरहित तेश्रेणीरहितनाबेभेद एकअप्रमादी वीजाप्रमादी तेप्रमादीनाबेभेद एकसर्वविरति वीजादेशविरति देशविरतिनाबेभेद एकव्रतिपरिणामि वीजाअ-व्रतिपरिणामि अव्रतिनाबेभेद एकअव्रतिसमकेति वीजाअव्रतिमिथ्यात्वी तेमिथ्यात्वी नाबेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेभव्यनाबेभेद एकग्रंथीभेदी वीजाग्रंथीअभेदी एवी रीतेजेजीव जेवोदेखाय तेनेतेवोमाने एव्यवहारनयछे एमजपुद्गलनाभेदकरवा तेकहेछे पुद्गलद्रव्यनाबेभेदछे एकपरमाणु बीजोखंध खंधनाबेभेद एकजीवनेलागा तेजीवसहित बीजाजीवरहित ते धर्मोप्रमुखअजीवनोखंध हवेजीवसहितखंधना बेभेदछे एकसू-क्ष्मखंध बीजोबादरखंध.

इहां वर्गणानोविचारलखीयेछैयें तिहां पुद्गलनीवर्गणाआठछे १ उदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ भाषावर्गणा ६ उसासवर्गणा ७ मनो-वर्गणा ८ कार्मणवर्गणा एआठवर्गणानांनामकह्यां बेपरमाणुभेलाथाय त्यारे द्व्यणुकखंध कहेवाय त्रणपरमाणुभेलाथाय तेवारे त्र्यणुकखंधथाय एमसंख्यातापरमाणुमिले संख्या-ताणुकखंधथाय तेमजअसंख्याते असंख्याताणुकखंधथाय तथाअनंतापरमाणुमिले अ-

नंताणुकखंधथाय एखंधतेसर्वेजीवने अग्रहणयोग्यछे अने जेवारें अजव्यथी अनंतगुण अधिकपरमाणुन्नेलाथाय तेवारें उदारिकशरीरने लेवायोग्यवर्गणाथाय.

एमजउदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दलन्नेलाथाय तेवारेंवैक्रियवर्गणा थाय वली वैक्रियथकीअनंतगुणापरमाणुमिले तेवारेंआहारकवर्गणाथाय एमसर्ववर्गणा-नाएकेकथी अनंतगुणाअधिकपरमाणुमिले तेवारेंतेवर्गणाथाय एटलेपहेलीथी बीजीव-र्गणा बीजीथीत्रीजी एमसातमीमनोवर्गणाथी आठमीकार्मणवर्गणामांअनंत गुणपरमा-णुअधिकछे इहां १ उदारिक २ वैक्रिय ३ आहारक ४ तेजस एचारवर्गणाबादरछे ते-मांपांचवर्ण बेगंध पांचरस आठस्पर्श एवीसगुणछे तथा १ नाषा २ उसास ३ मन ४ कार्मण एचारवर्गणासूक्ष्मछे एमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस चारस्पर्श एसोलगुणछे अनेएक परमाणुमां एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श एपांचगुणछे एमपुद्गलखंधनाअनेकन्नेदछे.

एव्यवहारनयनाछन्नेदछे १ शुद्धव्यवहार तेआगलागुणठाणानुं छोमवुं अनेऊपरना गुणठाणानुं ग्रहणकरवुं अथवाज्ञानदर्शनचारित्रगुणते निश्चयनयएकरूपछे पणते शिष्य-नेसमजाववाने जूदाजूदान्नेद कहेवा तेशुद्धव्यवहारछे २ जीवमां अज्ञानरागद्वेषलाग्या छे तेअशुद्धपणुंछे माटेअशुद्धव्यवहार ३ जे पुण्यनीक्रियाकरवी तेशुनव्यवहार ४ जेथ-कीजीवपापरूपअशुनकर्मकरेतेअशुनव्यवहार ५ धन घर कुटुंब प्रत्यक्ष सर्व आपणाथी जूदाजूदाछे पणजीवेंअज्ञानपणे आपणाकरीजाण्याछे ते उपचरितव्यवहार ६ शरीरा-दिकपरवस्तुयद्यपिजीवथीजुदीछे तोपणपरिणामिकन्नाव लोलीपणेएकठा मिलीरह्याछे तेनेजीवआपणाकरीजाणेछेते अनुपचरित व्यवहारजाणवो एव्यवहारनयकह्यो.

हवेरुजुसूत्रनयनो विचारकहेछे जेअतीतकालअनेअनागतकालनीअपेक्षानकरे पण वर्त्तमानकालें जेवस्तुजेवागुणेंपरिणमे वर्त्ते तेवस्तुने तेवेजपरिणामेमाने माटे एनयपरि-णामग्राहीछे जेमकोइकजीवगृहस्थछे पण अंतरंग साधुसमानपरिणामछे तो ते जीवने साधुकहे अनेकोइकजीव साधुनेवेषेछे पणमननापरिणाम विषयान्निलाषसहितछे तो तेजीव अव्रतीजछे एमरुजुसूत्रनुंमानवुंछे तेरुजुसूत्रनावेन्नेदछे एकसूक्ष्मरुजुसूत्र ते एम कहेजे सदाकालसर्ववस्तुमां एकवर्त्तमानसमयवर्त्तेछे एटले जे जीवगयाकालें अज्ञानी हतो अनेअनागतकालें अज्ञानीन्नावेंअज्ञानीथशे एमवेहुकालनीअपेक्षानकरे पणएक वर्त्तमानसमये जेजेवोतेनेतेवोकहे तेसूक्ष्मरुजुसूत्रकहियें अनेमहोटा बाह्यपरिणामग्रहे तेस्थूलरुजुसूत्रनयजाणवो एटलेरुजुसूत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुगुणवंत अथवानिर्गुण तेवस्तुनेनामकहीवोलावियें जेन्ना-षावर्गणाथी शब्दपणेंवचनगोचरथाय तेशब्दनय जे कारणेअरूपीद्रव्यवचनथीग्रह्या जा-यनही पणवचनथी कहेवातेशब्दनयकहियें इहांजेशब्दनोअर्थहोय तेपणोजे वस्तुमां

वस्तुपणेपामियें तेवारें तेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एशब्द-नयमां व्याकरणथीनीपना अनेबीजापणसर्वेशब्दलीधा तेशब्दनयनाचारभेदछे १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे.

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने नामकरीबोलाववो जेम एकलाकर्मीनो कटकोलेइने कोइके तेहनेजीवएवुंनामकह्युं तेनामजीवजाणवुं जेमकालीदोरीने सापनीबुद्धियेंकरीघावहणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयुं एवीज रीते नामतप अथवानामसिद्ध जेमवरुप्रमुखने सिद्धवरु एमकहीबोलावेछे ते नाम निक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेंछे

२ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमां कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेहनेतेवस्तु कहे जेमचित्राम अथवाकाष्टपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे तोतेघोडाहाथीकहेवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपेंसहितहोय जेमस्थापनासिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्भावस्थापनापणहोय अनेअसद्भावस्थापनापण होय अकृत्रिमजिनप्रतिमाते नंदीश्वर द्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेहइशांनीजिनप्रतिमाते कृत्रिम ते सर्वेस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमांडीहोय तिहांसाधुरहेनही कारणके स्थापनास्त्रीछे तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहां कोइक अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामांज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी पूजवीनही तेने उत्तरकहेछे के स्थापनारूपस्त्रीमां स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनुं कारणथायछे तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुंकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे अनेभगवंतेतोदयाने धर्मकह्योछे तेहनेएमकहेवुंजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वांदवाने अर्थें बीजेदीवसें महोटा आडंबरथीआव्यो तेवंदनामांहिंसाथयी पणलाभकारण गणतांत्रोटोनथयो बीजोमल्लिनाथजीयेंछमित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदृष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी पणतेलाभना कारणमांगणीछे एमभावशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहेछे जे अमेआपणेस्थानकेबेठानमोत्थुणंकहिसुं अमनेलाभथासेतेखरो पणभगवतीसूत्रमां भगवानने वंदनाने अधिकारें तोतिहांजइवंदनाकरवानुंफलमहोटुंकह्युंछे तथानिक्षेपाने अधिकारें एम कह्युंजे भावनिक्षेपोएकलोथाय नही पण नामस्थापना तथाद्रव्य एत्रण मिल्याभावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्यमानवी. हवेजेस्थापनानमाने तेनेकहियें जे चित्रामनीमूर्त्तिनेहिंसानापरिणामथीफाडे तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिनवरनाध्याने जिनप्रतिमा पूजतांलाभथायछे एमयुक्ति करतां तथाआगमनीसाखेपणजिनप्रतिमानेजिनसमानमाने तेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने तेणेस्थापनानिक्षेपोउथाप्यो अने स्थापनाउथापीतो द्रव्यतथाभावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही माटेद्रव्यतथाभावपण

उथाप्यो एम त्रणनिक्षेपाउथाप्या तेवारें सिद्धांतउथाप्याज माटेजेजिनप्रतिमानेनही माने तेविराधक जाणवो तेस्थापना इतर अने यावत्कथिक एवेनेदेंछे.

३ द्रव्यनिक्षेपोकहेछे. जेनोनामपणहोय तथा आकारथापनागुणपणहोय अने लक्षणहोय पणआत्मोपयोगनमिले तेद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एटलेअज्ञानीजीव तेजीवस्वरूपनाउपयोगविनाद्रव्यजीवछे अणुवउगोदव्वं इतिअनुयोगद्धारवचनात् वलीकह्युंछे जेसिद्धांतवांचतांपुछतां पदअक्षरमात्राशुद्धअर्थकरेछे अनेगुरुमुखेसद्दहेछे तेपणशुद्धनिश्चेंपोतानीसत्ताउंलख्याविना सर्वेद्रव्यनिक्षेपामांछे जेनावविनाद्रव्यपणोछे ते पुण्यबंधनुंकारणछे पणमोक्षनुंकारणनथी एटलेजेकरणीरूप कष्टतपस्याकरेछे अनेजीवअजीवपदार्थनी सत्ताउंलखीनथी तेने नगवतीसूत्रमां अव्रती तथाअपच्चखाणीकह्याछे तथाजेएकली बाह्यकरणीकरेछे अनेपोतेसाधुकहेवायछे ते मृषावादीछे एम उत्तराध्ययनसूत्रमांकह्युंछे नमुणीरन्नवासेणं एवचनें नाणेणयमुणीहोइ ॥ एवचनथी जेज्ञानवानतेमुनिछे अनेजे अज्ञानीतेमिथ्यात्वीछे तथाकोइक गणितानुयोगना नरकदेवतानाबोल अथवा यतिश्रावकनो आचारजाणीनेकहेजे अमेज्ञानीछैयें तेपणज्ञानीनथी पणजेद्रव्यगुणपर्यायजाणे तेने ज्ञानीकहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्षमार्गेंकह्योछे गाथा एयंपंचविहणानं दवाणयगुणाणय ॥ पज्जवाणसवेसिं नाणंनाणीहिदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुसत्ताजाण्याविना ज्ञानी समजवुंनही अनेनवतत्वउंलखेतेसमकेति अनेएहवाज्ञानदर्शनविना जेकहेकेअमेचारित्रिआछैयें तेपणमृषावादीछे कारणके श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्येकह्युंछे जे नाणंदंसण नाणं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचनछे तेमाटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रियानोआडंबरदेखाडेछे तेठगछे तेहनोसंगकरवोनही एबाह्यकरणीअन्नव्यजीवनेपण आवे माटेएबाह्य करणीउपर राचवुंनही अनेआत्मानुंस्वरूपउंलख्याविना सामायक पडिकमणा पच्चखाणकरवांते सर्वेद्रव्यनिक्षेपामां पुण्याश्रयछे पणसंवरनथी श्रीनगवतीसूत्रमध्येकह्युं छे आयाखलुसामाइयं ॥ एआलावाथीजाणजो तथाजीवस्वरूपजाण्या विना तपसंयमपुण्यप्रकृति तेदेवतानानवनुंकारणछे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमेणंदेवलोएउववज्जंतिनो चेवणंआयत्तानाववत्तवयाए एआलावोनगवतीमांकह्योछे तथाजेक्रियालोपी आचारहीनछे अनेज्ञानहीनछे मात्रगछनीलाजें सिद्धांतनणेवांचेछे व्रतपच्चखाणकरेछे तेपणद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एम श्रीअनुयोगद्धारमांकह्युंछे इमेसमणगुणमुक्क योगीछकायनिरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ घठामठातुप्पोठा ॥ पंडुं रयाउरगणाजिणाणं ॥ आणाएसछंदा ॥ विहरिऊणउनउंकालंआवस्सगस्सउवठंतितं ॥ लोगुत्तरियंदव्वावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेनेछकायनीदयानथी घोडानीपेरेंउन्मदछे हाथीनीपेरेंनिरंकुशछे पोतानाशरीरनेधोवता मसलता उजलेकपडेशिणगारकरी गछनाममूत्वना-

वेंमाचतां स्वेबाचारी वीतरागनीश्राज्ञानांजता जेतपक्रियाकरेबे तेपण द्रव्यनिक्षेपा-मांबे अथवाज्योतिषवैद्यककरेबे अनेपोताने आचार्य उपाध्यायकहेवरावीने लोकपासेंम-हिमाकरेबे तेपत्रीवंधखोटारूपैयाजेवाबे घणानवनमसे माटेअवंदनिकबे एसाखउत्त-राध्ययनमध्ये अनाथीमुनिना अध्ययनथकीजाणवी अनेसूत्रनाअर्थगुरुमुखेसिख्याविना तथानयप्रमाणजाण्याविना निश्चेंआत्मानुंस्वरूप उंलख्याविना निर्युक्तिविनाउपदेशआपेबे तेपोतेतोसंसारमांबुड्याबे पणजे तेमनीपासेवेसेबे तेमनेपण संसारमांबुडावेबे एमप्रश्नव्याकरणसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्रमांकह्युंबे अज्ञाबचेवसोलसमंइत्यादि अनेनगवतीसूत्रमांपणकह्युंबे सुतब्बोखलुपढमो बीउंनिर्युत्तिमिसउंनणिउं ॥ इत्तोतईयणुउंगो नाणुन्नाउंजिणवरेहिं ॥ अनेकेटलाकएमकहेबेजे अमेसूत्रऊपरअर्थकरियेबैयें तो निर्युक्ति तथाटीकाप्रमुखनुं शुंकामबे तेपणमृषावादबे केमकेश्रीप्रश्नव्याकरणमां वयणतिर्यंलिंगतियं इत्यादिकजाण्याविना अनेनयनिक्षेप जाण्याविना जेउपदेशआपे तेमृषावादबे एमअनेकसूत्रमां कह्युंबे माटेवहुश्रुतपासेउपदेशसांनलवो श्रीउत्तराध्ययनमध्ये वहुश्रुतने मेरुनीतथासमुद्रनी अने कल्पवृक्षादिसोलउपमादीधीबेएद्रव्यनिक्षेपोकह्यो.

४ नावनिक्षेपोकहेबे. जे नाम स्थापना अने द्रव्य एत्रणनिक्षेपाते एकनावनिक्षेपा विनाअशुद्धबे जे नामतथाआकार लक्षण गुणसहित वस्तु ते नावनिक्षेपोजाणवो उवउंगोनावइतिवचनात् एटले पूजा दान शील तप क्रिया ज्ञान एसर्वे नावनिक्षेपेसहितलानानुंकारणबे इहांकोइकहेशेजे मननापरिणामदृढकरीनेजेकरियें तेनेनावकहियें एमकहेबे तेजूठाबे एतोसुखनीवांबायें मिथ्यात्वीपणघणाकरेबे तेगणवुंनही इहांसूत्रनी साखे वीतरागनी आज्ञाहेयउपादेयनीपरीक्षाकरी अजीवतत्व तथा आश्रवतत्व अने वंधतत्व ऊपर हेयके० त्यागनाव अने जीवनास्वगुणजे संवरनिर्जरा तथामोक्षतत्वऊपरेंउपादेय परिणामतेनावकहियें एटले रूपीगुणतेद्रव्यनिक्षेपबे अनेअरूपीगुणते नावनिक्षेपबे एटले मनवचनकाया लेश्यादिकसर्वेद्रव्यनिक्षेपामांबे अनेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यध्यानप्रमुखसर्वेगुण नावनिक्षेपामांबे एनावनिक्षेपो ते नामस्थापनातथाद्रव्य सहितहोय एटलेचारनिक्षेपाकह्या.

हवेचारनिक्षेपापदार्थऊपरलगाडीदेखाडेबे नामजीवतेचेतना अथवा मांचाने एकाणने जीवकहीबोलावेबे तेनामनिक्षेपेजीवमूर्तिप्रमुखथापियें तेस्थापनाजीव एकेंद्रीपंचेंद्रीपर्यंत सर्वेजीवबे पणउपयोगमिलेनहीतेद्रव्यजीव अनेमूर्तिमांजीवस्वरूपउंलखीसमेलि...उपयोगमांबे तेनावजीवएमधर्मास्तिकायादिकद्रव्यमांपण जाणवुं नामथीधर्मास्तिकायकहीबोलाववो तेनामधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायएहवाअक्षरलखवा अथवादृष्टांतकारणेकांइकवस्तुथापवी ते स्थापनाधर्मास्तिकाय तथा धर्मास्तिकाय जे

असंख्यातप्रदेशी धर्मद्रव्यछे तेद्रव्यधर्मास्तिकाय एधर्मास्तिकायनेजेवारें चलणसहाय गुणनी अपेक्षासहितओलखियें तेभावधर्मास्तिकाय.

हवे कोइकनोसाधुएहवोनामछे तेनामसाधु अनेस्थापनाकरियेंतेस्थापनासाधु तथा जे पंचमहाव्रतपाले क्रियाअनुष्ठानकरे सुजतोआहारलीये पणज्ञानध्याननोजेवो उपयोगजोइये तेवोउपयोगनहोय तेद्रव्यसाधु जेभावसंवरमोक्षनोसाधकथइ भाव साधुनी करणीकरे तेभावनिक्षेपेसाधुकहियें.

कोइकनोअरिहंतनामछे तेनामअरिहंत अनेअरिहंतनीप्रतिमाते थापनाअरिहंत जेटलासुधीछद्मस्थअवस्थाछे द्रव्यअरिहंत अनेकेवलज्ञानपाम्यापछे लोकालोकनो भावजाणेदेखे तेभावअरिहंत एमसिद्धमांपणकहेवो.

कोइजीवनोज्ञानएहवोनाम अथवाभावेंअजीवनोनाम तेनामज्ञान तथाजेज्ञानपुस्तकमांलख्युंछे तेस्थापनाज्ञान जेउपयोगविनासिद्धांतनोभणवो अथवाअन्यमतिना सर्वशास्त्रभणवा तथाज्ञशरीरादिकतेसर्वेद्रव्यज्ञान जेनवतत्वनुंजाणवुं तेभावज्ञान.

तथाकोइकनुंतपएहवुंनाम ते नामतप तथापुस्तकमां तपनीविधीनुंलखन ते थापनातप अने पुण्यरूपमासखमणादिककरवोतेद्रव्यतप जेपरवस्तुउपरत्यागनोपरिणामते भावतप एमसंवरादिकसर्वेमांचारचारनिक्षेपाजाणवा तथाश्रीअनुयोगद्वारमध्येकह्युंछे यतः जछयजंजाणिज्जा निरकेवंनिख्किवेनिरवसेसं ॥ जछवीयनजाणिज्जा चोकयंनिरकवेतछ ॥ १ ॥ एचारनिक्षेपाकह्या एटलेशब्दनयकह्यो.

हवे छठोसमभिरूढनयकहेछे जेवस्तुनाकेटलाकगुणप्रगट्याछे अनेकेटलाकगुण प्रगट्यानथी पणअवश्यप्रगटशे एहवीवस्तुनेवस्तुकहे तेवस्तुनानामांतरएककरीजाणे जेम जीव चेतन तथाआत्मा एहनोएकअर्थकहे ते समभिरूढनयकहियें एनयएकअंशउणीवस्तुनेपूरेपूरीवस्तुकहे जेमतेरमागुणठाणेकेवलीहोय तेहनेसिद्धकहे ए नयनाभेद बिलकुलनथी एसमभिरूढनयकह्यो.

हवेएवंभूतनयकहेछे जेवस्तुपोतानेगुणेसंपूर्णछे अनेपोतानीक्रियाकरेछे तेने ते वस्तु कहीबोलावे जेममोक्षस्थानकें जेजीवपहोतो तेने सिद्धकहे जेमपाणीथीभरेलो स्त्रीना माथाउपरआवतो जलधरणक्रियाकरतो तेने घमोकहेएएवंभूतनयकह्यो.

हवेसातनयनादृष्टांत श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथी लखियेंछैयें. जेमकोइकपुरुषेकोइकवीजापुरुषनेपुब्युं जेतमेकिहांवसोछो तेवारेंतेपुरुषेकह्युं हुंलोकमांवसुंछुं तेवारेंअशुद्ध नैगमवालेपुब्युं जेलोकनात्रणभेदछे १ अधोलोक २ त्रिछोलोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमांतुं किहां रहेछे तेवारेंशुद्धनैगमेंकह्युंजे त्रिछालोकमांरहुंछुं वलीपुब्युंजे त्रिछोलोकमांअसंख्याता द्वीपसमुद्रछे तेमांतुंकयाद्वीपमांरहेछे तेवारें विशुद्धनैगमेंकह्युंजे जंबुद्वीपमांरहुंछुं तेजं-

बुद्वीपमांखेत्रघणाछे तेमांतुंकयाखेत्रमांरहेछे तेवारें अतिशुद्धनैगमबोल्यो जे भरतक्षेत्रमांरहुंबुं तेभरतखेत्रनाछखंडछे तेमांहेलाकयाखंडमांरहेछे तेवारेंकह्युंजेमध्यखंडमांरहुंबुं एमक्रमेपूछतां छेल्लेकह्युंजेआपणादेशमांरहुंबुं तेवारेंफरीपुछ्युंजे देशमांतोनगरग्रामघणा छे तोतुंकिहांरहेछे तेवारेंकह्युंजे हुंअमुकगाममांरहुंबुं तेगाममांवलीअमुकपाडो तथा अमुकघरबताव्युं तिहांसुधीनैगमनयजाणवो.

अनेसंग्रहनयवालोबोल्योजे मारापोतानाशरीरमां वसुंबुं तथाव्यवहारनयवालो बोल्योजे संथारेबेठोबुंतेटलाजबिछानामांरहुंबुं अनेऋजुसूत्रनयवालेकह्युंजे माराआत्माना असंख्याताप्रदेशमांरहुंबुं वलीशब्दनयकहेजे मारास्वभावमांरहुंबुं तेमजसमभिरूढनयकहेजे हुंमारागुणमां रहुंबुं अने एवंभूतनयवादीकहेजे ज्ञानदर्शन गुणमां वसुंबुं एदृष्टांतकह्यो तेमसर्ववस्तुमांकहेवुं.

तथाकोइके प्रदेशमात्रखेत्रअंगीकारकरी पुछ्युंजे एप्रदेशकयाद्रव्यनोछे तेवारेंनैगम नयबोल्योजेछएद्रव्यनोप्रदेशछे केमके एकआकाशप्रदेशमध्येछद्रव्यभेलाछे तेवारेंसंग्रहनयबोल्यो जे कालद्रव्यतोअप्रदेशीछे तेमाटे सर्वलोकमां एकसमयसरिखोछे पण ते एक आकाशद्रव्यनाप्रदेशमां जूदोनथी माटे कालविनापांचद्रव्यनो प्रदेशछे तेवारेंव्यवहारनयबोल्योके जेद्रव्यमुख्यदेखायछे तेहनोप्रदेशछे तेवारेंऋजूसूत्रनय बोल्योके जे द्रव्यनोउपयोगदेइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे जोधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइ पुछियें तो धर्मास्तिकायनोप्रदेशछे जोअधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोअधर्मास्तिकायनो प्रदेशछे तेवारेंशब्दनयबोल्योके जे द्रव्यनोनामलइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे हवे समभिरूढनयबोल्योजे एकआकाशप्रदेशमध्येधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अनेजीवनाअनंताप्रदेशछे पुद्गलनापणअनंताप्रदेशछे तेवारेंएवंभूतनय बोल्यो के प्रदेशनेजेद्रव्यनी क्रियागुणपर्यायअंगीकारकरी देखियें तेसमयते प्रदेश ते द्रव्यनोगणियें एप्रदेशमांसातनयकह्या.

हवेजीवमां सातनयकहेछे प्रथमनैगमनयनी मते जेगुणपर्यायवंत शरीरसहित ते जीव एटलेशरीरमांजेबीजा पुद्गल तथाधर्मास्तिकायादिकद्रव्यछे तेसर्वेजीवमांजगण्या तेवारेंसंग्रहनयबोल्यो जेअसंख्यातप्रदेशी तेजीव एटलेएकआकाशना प्रदेशटल्या बीजासर्वेद्रव्यएमांगणाणा तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जेविषयलेयी कामवातसंभारे तेजीव इहांधर्मास्ति अधर्मास्तिकाय आकाश तथाबीजापुद्गलसर्वेटल्या पणपांचेइंद्री तथा मन अनेलेश्याएपुद्गलछे तेजीवमांगणाणा कारणके विषयादिकतोइंद्रियोलेछे तेजीवथीन्याराछेपणइहांव्यवहारनयमते जीवभेलालीधाछे तेवारें ऋजुसूत्रनयबोल्यो जेउपयोगवंत तेजीव इहांइंद्रियादिकसर्वेटल्या पणअज्ञान तथा ज्ञाननाभेदटल्यानहीं हवेशब्दन-

यबोल्यो जे नामजीव स्थापनाजीव द्रव्यजीव भावजीव इहांजीवमां गुणनिर्गुणनोभेद पड्योनही तेवारें समभिरूढनयबोल्यो जे ज्ञानादिगुणवंततेजीव तेवारें मतिज्ञानश्रुतज्ञान इत्यादिकसाधकअवस्थानागुण तेसर्वजीवस्वरूपमां आव्या हवेएवंभूतनयबोल्यो जे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र शुद्धसत्तावंत तेजीवएनयेजेसिद्धअवस्थामां गुणहता तेजग्रह्या एसातनयेजीवद्रव्यकह्यो.

हवेसातनयेंधर्मकहेछे नैगमनयबोल्योजे सर्वधर्मछे केमकेसर्वप्राणीधर्मनेचाहेछे एनयअंशरूपधर्मने धर्मएहवुंनामकहे हवेसंग्रहनयबोल्यो जे वडेरायेंआदर्यो तेधर्म एणेअनाचारछोड्यो पणकुलाचारनेधर्मकह्यो व्यवहारनयबोल्योजे सुखनुंकारणतेधर्म एणे पुण्यकरणीनेधर्मकरीमान्यो ऋजुसूत्रनयमते जेउपयोगसहित वैरागरूपपरिणामते धर्मकहियें एनयमां यथाप्रवृत्तिकरणनापरिणामप्रमुखसर्वधर्ममांगण्या तेमिथ्यात्वीनेपणहोय हवेशब्दनयबोल्यो जे धर्मनुंमूलसमकितछे माटेसमकिततेजधर्म तेवारेंसमभिरूढनय बोल्यो जे जीव अजीव नवतत्व तथाछद्रव्यनेउलखीने जीवसत्ताध्यावे अजीवनोत्याग करे एहवोज्ञानदर्शन चारित्रनोशुद्धनिश्चय परिणामतेधर्म एनये साधकसिद्धनापरिणामतेधर्मपणेलीधा एवंभूतनयबोल्यो जे शुक्लध्यान रूपातीतनापरिणाम क्षपकश्रेणीकर्मक्षयना कारणतेधर्म जेजीवनोमूलस्वभाव तेवस्तुधर्म जेमोक्षरूपकार्यनेकरे तेधर्म एसातेनयें धर्म कह्यो.

हवे सातनयें सिद्धपणोकहेछे नैगमनयनीमतेसर्वजीवसिद्धछे केमके सर्वजीवना आठरुचकप्रदेश सिद्धसमाननिर्मलछे माटे संग्रहनयकहेजे सर्वजीवनीसत्ता सिद्धसमानछे एणेपर्यायार्थिकनयेंकरी कर्मसहितअवस्थातेटालीने द्रव्यार्थिकनयेंकरी अवस्थाअंगीकारकरी तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जे विद्या लब्धिप्रमुखगुणेकरी सिद्धथयोतेसिद्ध एनयेबाह्यतपप्रमुख अंगीकारकर्या हवेऋजुसूत्रनयबोल्यो केजेणे पोतानाआत्मानीसिद्धपणानी सत्ताउलखी अने ध्याननोउपयोगपणतेजवर्त्तेछे तेसमयें तेजीवसिद्धजाणवो एनयेसमकेतिजीवसिद्धसमानछे एमकह्युं हवेशब्दनयबोल्यो जेशुद्धशुक्लध्यान परिणाम नामादिकनिक्षेपेंतेसिद्ध तेवारेंसमभिरूढनयबोल्यो जे केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र एगुणेसहित तेसिद्धजाणवा एनयें तेरमाचउदमागुणठाणाना केवलीने सिद्धकह्याअनेएवंभुतनयकहेछेकेजेना सकलकर्मक्षयथया लोकनेअंतेविराजमान अष्टगुण संपन्नतेसिद्धजाणवा एरीतेसिद्धपदेंसातनयकह्या एमसातनयमिथ्यासमकेतिछे अनेजे एकनयनेग्रहणकरेतेमिथ्यात्वीछे एसातेनयसिद्धतेवचनप्रमाणछे अने एसात नयमां कोइपणनयने उथापेतेनुंवचनअप्रमाणछे.

हवेप्रमाणनोविचारकहेछे प्रमाणनाबेभेदछे एकप्रत्यक्षप्रमाण बीजुंपरोक्षप्रमाण

तेमां जेजीवपोतानाउपयोगथीद्रव्यनेजाणे तेप्रत्यक्षप्रमाणकहियें जेमकेवली द्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणेजाणे तथादेखे तेमाटेकेवलज्ञानतेसर्वथीप्रत्यक्षज्ञानछे अनेमनपर्यवज्ञान तेमनोवर्गणाप्रत्यक्षजाणे तथाअवधिज्ञानतेपुद्गलद्रव्यनेप्रत्यक्षजाणे माटे एवेज्ञानदेशप्रत्यक्षछे वीजुंछद्मस्थज्ञानतेसर्वपरोक्षप्रमाणछे.

हवे परोक्षप्रमाणकहेछे मतिज्ञाननो अनेश्रुतज्ञाननो उपयोगपरोक्षप्रमाणछे केमके जेशास्त्रनावलथीजाणे तेपरोक्षप्रमाणकहियें तेपरोक्षप्रमाणनात्रणभेदछे १ अनुमानप्रमाण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमां अनुमान एटले कोइक सहिनाणदेखीने जेज्ञानथाय जेम धुमाडोदेखीने अग्निनुंअनुमानथाय अनेआगमएटले शास्त्रनीसाखथीजेवातजाणियें जेम देवलोकतथानरक निगोदविगेरेनोविचारआगमथी जाणियेंछेयें तेआगमप्रमाण अने कोइकवस्तुनोदृष्टांतआपीने वस्तुनेउलखाववी तेउपमानप्रमाणजाणवो एप्रमाणकह्या हवेसत्असत्पक्षथीसप्तभंगीकहेछे.

१ स्यात्के० अनेकांतपणे सर्वअपेक्षालेइ जीवद्रव्यमां आपणोद्रव्य आपणोखेत्र आपणोकाल आपणोभाव एमआपणेगुणपर्यायेंजीवछे तेमसर्वद्रव्यआपणेगुणपर्यायेंछे तेस्यात्अस्तिनामापहेलोभांगो थयो.

२ जेजीवमां वीजापांचद्रव्यना१ द्रव्य २ खेत्र ३ काल ४ भाव तेपरद्रव्यनागुणपर्याय जीवमांथी एटलेपरद्रव्यनागुणनोनास्तिपणोसर्वद्रव्यमांछे एस्यात्नास्तिवीजोभांगोथयो.

३ द्रव्य स्वगुणेअस्ति अनेपरगुणेनास्ति एवेभांगाएकसमयेद्रव्यमांछे जेम जेसमये शुद्धस्वगुणनीअस्तिछे तेजसमयें परगुणनीनास्तिपणछे माटेअस्तिनास्ति एवेहुभांगाभेलाछे तेस्यात्अस्तिनास्तित्रीजोभांगो थयो.

४ अस्ति अनेनास्ति एवेहुभांगा एकसमयमांछे तो वचनेकरीअस्तिएटलोवोलतां असंख्यातासमयलागे तेथीनास्तिभांगो तेजवखतेकहेवाणोनही अने जोनास्तिभांगो कह्यो तोअस्तिपणोनाव्यो माटेएकजअस्तिकहेतांथकां नास्तिपणोतेजसमयेद्रव्यमांछे तेनहीकहेवाणो माटेमृषावादलागे तेमजनास्तिकहेतां अस्तिनोमृषावादलागे माटेवचनेअगोचरछे एकसमयमांवेहुवचनवोल्याजायनही केमकेएकअक्षरबोलतां असंख्याता समयलागेछे माटे वचनथीअगोचरछे तेस्यात्अवक्तव्य एचोथोभांगोकह्यो.

५तेअवक्तव्यपणो वस्तुमांअस्तिधर्मनोपणछे माटेस्यात्अस्तिअवक्तव्यपांचमोभंगोकह्यो.

६ तेमजनास्तिधर्मनोपणअवक्तव्यपणोवस्तुमध्येछे माटेस्यात्नास्तिअवक्तव्यछठोभंगोजाणवो.

७ तेअस्तिपणोतथानास्तिपणोवेहुधर्मएकसमयेवस्तुमध्येछे पण वचनथीअवक्तव्यछे माटेस्यात्अस्तिनास्तियुगपत्अवक्तव्य एसातमोभंगोकह्यो.

हवे एसातभंगा नित्य तथाअनित्यपणामांलगाम्छे १ स्यात्नित्यं २ स्यात्अनित्यं ३ स्यात्नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्यअवक्तव्यं ६ स्यात्अनित्यअवक्तव्यं ७ स्यात्नित्यानित्यंयुगपत्अवक्तव्यं एमज एकअनेकनासातभंगाकहेवा तथा गुणपर्यायमां पणकहेवा केमकेसिद्धमध्येनयनथी तोपणसप्तभंगीतोसिद्धमांछे.

हवेसत्ताउलखाववानेत्रिभंगीयोकहेछे १ मिथ्यात्वदशा तेबाधकदशा २ समकेत गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठाणासुधीसाधक दशाजाणवी ३ सर्वकर्मथी रहिततेसिद्धदशा १ ज्ञाननोजाणपणोतेजीवनोगुण २ तेनोज्ञातातेजीव ३ ज्ञेयतेसर्वद्रव्य १ ध्यानतेजीवनास्वरूपनो २ तेध्याननोध्याताजीव ३ ध्येयआत्मानोस्वरूप १ कर्त्तातेजीव २ कर्मतेएकमोक्षवीजोबंध ३ क्रियातेएकसंवरबीजीआश्रव १ कर्मतेचेतना नेकर्मबंधनापरिणाम २ कर्मनुंफलतेचेतनानेजे कर्मउदयनापरिणाम ३ ज्ञानचेतनाते जीवनोस्वगुण तेआत्मानात्रणभेदछे १ अज्ञानीजीव शरीरादिकपरवस्तुनेआत्मबुद्धीयें करीमाने तेपहेलोबहिरात्मा २ जेदेहसहितजीवछे तेपणनिश्चेंसत्तागुणसिद्धसमानछे एटलेपोतानाजीवने सिद्धसमानकरीध्यावे तेवीजोअंतरआत्माजाणवो ३ कर्मखपावीकेवलज्ञानपाम्याते अरिहंत तथासिद्ध सर्वपरमात्माजाणवा एत्रिभंगीनोविचारकह्यो एटले आठपक्षनोविचारकह्यो.

हवेएकद्रव्यमध्ये छसामान्यगुणछेतेकहेछे पहेलोअस्तित्वते जेछद्रव्यआपणागुणपर्यायप्रदेशेकरीअस्तिछे तेमां धर्म अधर्म आकाश अने जीव एचारद्रव्यनो असंख्याता प्रदेशमिल्या खंधथायछे अनेपुद्गलमांखंधथवानीशक्तिछे माटेएपांचद्रव्यअस्तिकायछे अनेछठोकालद्रव्यनोसमय कोइकोइथीमिलतोनथी केमके एकसमयविणस्यापछे बीजो समयआवेछे माटेकालअस्तिकायनथी एद्रव्यमांअस्तित्वपणोकह्यो.

२ वस्तुत्वके० वस्तुपणो कहेछे तेद्रव्यछएएकठाएकखेत्रमध्येरह्याछे एकआकाशप्रदेशमांधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशरह्योछे तथाअधर्मास्तिकायनोपण एकप्रदेशरह्योछे अने जीवअनंताना अनंताप्रदेशरह्याछे पुद्गलपरमाणुअनंतारह्याछे तेसर्वेपोतानीसत्तालीधाथकारह्याछे पणकोइद्रव्यकोइद्रव्यसाथेमिलीजातोनथी तेवस्तुपणो.

३ द्रव्यत्वके० द्रव्यपणोते सर्वद्रव्यपोतपोतानीक्रियाकरे एटलेधर्मास्तिकायमांचलणगुणते सर्वप्रदेशमध्येछे सदाकालेंपुद्गल तथाजीवने चलाववारूपक्रियाकरेछे इहांकोइ पुछेजे लोकांतसिद्धखेत्रमांधर्मास्तिकायछे तेसिद्धनाजीवने चलाववापणोकरतीनथी ते केम? तेनेउत्तरकहेछेजेसिद्धनाजीवअक्रियछे माटेचालतानथी पणतेखेत्रमांजेसूक्ष्मनिगोदनाजीव तथापुद्गलछे तेहनेधर्मास्तिकायचलावेछे माटेपोतानीक्रियाकरेछे तेमजअधर्मास्तिकायजीवतथापुद्गलने स्थिरराखवानीक्रियाकरेछे तथाआकाशद्रव्य ते सर्वद्रव्य-

नेअवगाहनारूपकार्यकरेछे इहांकोइपुछेजे अलोकाकाशमांतो बीजुंकोइद्रव्यनथी तो अलोकाकाश कयाद्रव्यनेअवगाहदानआपेछे तेनेउत्तरकहेछे जेअलोकाकाशमां अवगाहकरवानीशक्तितो लोकाकाश जेवी ज छे परंतु तिहां अवगाहनो दान लेनार द्रव्य कोइनथी माटे अवगाहदानकरतोनथी अनेपुद्गलद्रव्य मिलवाविखरवारूपक्रियाकरे छे तथा कालद्रव्यवर्तनारूपक्रियाकरेछे अनेजीवद्रव्यज्ञानलक्षणउपयोगरूपक्रियाकरेछे एमसर्वद्रव्यपोतानेपरिणामीस्वसत्तानीक्रियाकरेछे एद्रव्यत्वपणोकह्यो.

४ प्रमेयत्वंके० प्रमेयपणो जे छद्रव्यमांप्रमेयपणोछे तेनोप्रमाण केवलीपोतानाज्ञानथीकरेछे जेधर्मास्तिकायतथाअधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय एकेकद्रव्यछे अने जीवद्रव्यअनंताछे तेहनीगणतिकहेछे संज्ञीमनुष्यसंख्याताछे असंज्ञीमनुष्य असंख्याताछे नारकीअसंख्याताछे देवताअसंख्याताछे तिर्यंचपंचेंद्रीअसंख्याताछे बेंद्रीअसंख्याताछे तेंद्रीअसंख्याताछे चौरेंद्रीअसंख्याताछे तेथकीपृथ्वीकायअसंख्याता अपकायअसंख्याता तेउकायअसंख्याता वायुकायअसंख्याता प्रत्येकवनस्पतिजीवअसंख्याता तेथकी सिद्धना जीवअनंता तेथकीबादरनिगोदनाजीवअनंतगुणा एटलेबादरनिगोदतेकंदमूल आदु सूरण प्रमुख एहने सुइने अग्रनागें अनंताजीवछे तेसिद्धना जीवथी अनंतगुणाछे अनेसूक्ष्मनिगोद सर्वथीअनंतगुणाछे तेसूक्ष्मनिगोदनोविचार कहेछे जेटला लोकाकाशना प्रदेशछे तेटला गोलाछे तेएकेक गोलामां असंख्यातानिगोदछे निगोद शब्दनो अर्थएछे जे अनंताजीवनो पिंडनूतएकशरीर तेहने निगोदकहियें तेएकेकी निगोदमध्ये अनंताजीवछे तेअतीतकालना सर्वसमय तथाअनागतकालनासर्वसमय अनेवर्त्तमानकालनोएकसमयतेनेनेलाकरी अनंतगुणाकरियें एटला एकनिगोदमांजीवछे एटले अनंताजीवछे एसंसारीजीवएकेकानाअसंख्याताप्रदेशछे अने एकेकाप्रदेशे अनंतिकर्मवर्गणालागीछे ते एकेकवर्गणामध्येअनंतापुद्गलपरमाणुछे एमअनंतापरमाणु जीवसाथेलाग्याछे तेथकीअनंतगुणापुद्गलपरमाणुजीवथीरहितछुटाछे गाथा ॥ गोलायअसंखिज्जाअसंखनिगोयउं हवइगोलो ॥ इक्किक्कमिनिगोए अनंतजीवामुणेयवा ॥ १॥ अर्थ ॥ लोकमांहिअसंख्यातागोलाछे एकेकागोलामध्येअसंख्यातिनिगोदछे एकेकनिगोदमांअनंताजीवछे गाथा ॥ सत्तरससमहिआ । किरइगाणुपाणमिहुंतिखुड्डनवा ॥ सगतिससयतिहुत्तर । पाणुंपुणइगमुहुत्तंमि ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदियाजीवतेमनुष्यनाएक उसासमां सत्तरनवजाजेराकरेछे अनेसरूत्रीससोतिहुंतेर श्वासोश्वासएकमुहूर्त्तमांथाय गाथा पणसछिसहस्सपणसय ॥ छत्तिसाइगमुहुत्तखुड्डनवा ॥ आवलियाणंदोसय ॥ छप्पन्नाएगखुड्डनवे ॥ १ ॥ अर्थ निगोदनाजीवएकमुहूर्तमां ६५५३६ नवकरे अनेनिगोदनोएकनव २५६ आवलीनोछे क्षुल्लकनवनोएप्रमाणछे ॥ गाथा ॥ अछिअनंताजी-

वा जेहिंनपत्तोतसाइपरिणामो ॥ उवज्जंतिचयंतिय पुणोवितत्थेवतत्थेव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदमांअनंताजीवएहवाछे जेजीवत्रसपणोपहेलाकिवारेपाम्यानथीअनंतोकालपूर्वेगयो अनेअनंतोकालजाशे पणतेजीववारंवारतिहांजउपजेछे अने तिहांजचवेछे एमएक निगोदमांअनंताजीवछे तेनिगोदनावेभेदछे एकव्यवहारराशीनिगोद अनेबीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमांजेबादरएकेंद्रीपणो नावेंत्रसपणोपामिनेपाछानिगोदमांजाइ पड्याछे तेनिगोदियाजीवने व्यवहारराशीयाकहियें अनेजेजीवकोइपणकालेनिगोदमांथीनिकल्यानथी तेजीवअव्यवहाररासीयाकहियें अनेइहांमनुष्यपणाथीजेटलाजीवकर्मखपावीने एकसमयमांमोक्षजायछे तेटलाजीवतेजसमये अव्यवहारराशी सूक्ष्मनिगोदमांथीनिकलीनेउचांआवेछे जोदशजीवमोक्षजायतो दशजीवनिकले कोइकवेलाएभव्यजीव उछानिकलेतो तेठेकाणेएकवेअभव्यनिकले पणव्यवहारराशीमांजीवकोइवधेघटे नही एवा निगोदनाअसंख्यातालोकमांहेलागोलाते छदिशीनाआव्यापुद्गलने आहारादिपणेलेछे तेसकलगोलाकहेवाय अने लोकअंतना प्रदेशेजे निगोदनागोलारह्याछे तेने त्रणदिशीनाआहारनीफरशनाछे माटेविकलगोलाकहियें एसूक्ष्मनिगोदमां पांच थावरनासूक्ष्मजीव तेसर्वेलोकमांकाजलनीकुंपलीनीपरे भर्याथकाव्यापीरह्याछे अनेसाधारणपणोते मात्रएकवनस्पतिमांजछे पणचारथावरमांनथी एसूक्ष्मनिगोदमांअनंतुदुःख छे तेनुंउदाहरणकहेछे सातमीनरकनुंआउष्य तेत्रीससागरोपमनुंछे तेत्रीससागरोपमनाजेटलासमयथाय तेटलावखतसातमीनरकमां उत्कृष्टोतेत्रीससागरोपमनेआयुषेकोइकजीवउपजे तेटलाभवमांजेटलुंवेदन भेदननुंदुःखथाय तेसर्वेएकठुंकरियें तेथीअनंतगुणुंदुःखनिगोदनाजीव एकसमयमांभोगवेछे दृष्टांत जेमकोइकमनुष्यनेसाडात्रणक्रोडलोढानीसुइनेअग्निथीतपावीने कोइकदेवतासमकालेचोभे तेनेजेवेदनाथाय तेथीअनंत गुणीवेदनानिगोदमध्येछेअनेभव्यजीवनेनिगोदनुंकारण तेअज्ञानदशाछे माटेतेहनो त्यागकरो एनिगोदनोविचारकह्यो एसर्वेप्रमेयनोप्रमाताआत्मा पोतानाज्ञानगुणेकरी प्रमेयनोप्रमाणकरेएप्रमेयत्वपणोकह्यो.

५ सत्वपणो तेछद्रव्यएकसमयमांउपजे विणशेछे अनेस्थिरपणछे उत्पादव्यय ध्रुवपणोतेहिजसत्पणो उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत् इतितत्वार्थवचनात् तेविस्तारथी कहिदेखाडेछे जे धर्मास्तिकायनाअसंख्याताप्रदेशछे तिहांएकप्रदेशमां अगुरुलघुअसंख्यातोछे अनेबीजाप्रदेशमांअनंतो अगुरुलघुछे त्रीजाप्रदेशमां संख्यातोअगुरुलघुछे एमअसंख्याताप्रदेशमां अगुरुलघुपर्यायघटतो वधतोरहेछे तेअगुरुलघुपर्यायचलछे तेजेप्रदेशमां असंख्यातोछे तेप्रदेशमां अनंतोथायछे अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातोथायछे एमलोकप्रमाणअसंख्यातप्रदेशमां सरिखोसमकालें अगुरुलघुपर्यायफिरेछे तेजेप्रदेशमांअसंख्यातो

फिटीने अनंतोथायछे तेप्रदेशमांअसंख्यातपणानोविनाशछे अनेअनंतपणानोउपजवोछे अनेअगुरुलघुपणे गुणध्रुवछे एम उपजवो विणसवो अने ध्रुव एत्रणेपरिणामछे.

अधर्मास्तिकायमां पणएत्रणेपरिणाम असंख्यातप्रदेशेंसदासमयसमयमां परिणमी रह्याछे तेमांपण उपजे विणशे अनेथिररहेछे एमआकाशनाअनंताप्रदेशमां पण एक समयेंत्रणपरिणामपरिणमेछे अनेजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे तेमध्येपणउपजे विणशे थिररहे तथापुद्गलपरमाणुमांपणसमयसमयथायछे अने कालनोवर्त्तमानसमयफिटीनेअतीतकालथायछे तो तेसमयमां वर्त्तमानपणानोविनाशछे अनेअतीतपणानोउपजवोछे कालपणेध्रुवछे एथुलथकीउत्पादव्ययध्रुवपणोकह्यो अनेवस्तुगते मूलपणे ज्ञेयनेपलटवे ज्ञाननोपणतेन्नासनपणेपरिणमवोथाय तेपूर्वपर्यायनान्नासननोव्यय अनेअन्निनवज्ञेयनापर्यायन्नासननोउत्पाद तथाज्ञानपणानोध्रुव एरीतेसर्वगुणना धर्मनीप्रवृत्तिरूप पर्यायनोउत्पादव्यय श्रीसिद्धन्नगवंतमांपणथइरह्योछे एमजधर्मास्तिकायनाप्रदेशें जेखेत्रगतअसंख्यातापुद्गलतथाजीवने पहेलेसमय चलणसहायीपणोपरिणमतोहतो अनेवीजे समय अनंतपरमाणु तथाअनंताजीवप्रदेशने चलणसहायीथयो तेवारें असंख्याताचलणसहायनोव्यय अनेअनंताचलणसहायनोउपजवो अनेगुणपणेध्रुव एमधर्मद्रव्यमध्ये उत्पादव्ययथयीरह्योछे तेमजअधर्मादिकद्रव्यनेविषेपणन्नाववुं तथावलीकार्यकारणपणे उत्पादव्यय तथा अगुरुलघुनाचलणनोउत्पादव्यय पंचास्तिकायनेविषे कहेवुं तथाकालद्रव्यतेउपचारछे तेनुंस्वरूपसर्वउपचारथीजकहेवुं एरीते सर्वद्रव्यमांसत्पणोछे जो अगुरुलघुनोन्नेद न थाय तोपछेप्रदेशनोमांहोमांहेन्नेदकहेवोथाय तेमाटेअगुरुलघुनोन्नेद सर्वमांछे अने जेनोउत्पादव्ययरूपसत्पणोएकछे तेद्रव्यएकछे तथा जेनोउत्पादव्ययसत्पणो जूदो तेद्रव्यपणजूदोछे एटलेसत्केo सत्वपणो कह्यो.

६ अगुरुलघुत्वपणोकहेछे जेद्रव्यनोअगुरुलघुपर्यायछे तेछप्रकारनीहानिवृद्धिकरे तेमांछप्रकारनीवृद्धिछे १ अनंतन्नागवृद्धि २ असंख्यातन्नागवृद्धि ३ संख्यातन्नागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि हवेछप्रकारनीहानि कहेछे १ अनंतन्नागहानि २ असंख्यातन्नागहानि ३ संख्यातन्नागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एरीतेछप्रकारनीवृद्धि तथा छप्रकारनीहानि तेसर्वद्रव्यमांसदासमयसमयथयीरहीछे वृद्धितेउपजवोअनेहानितेव्ययकहियें एअगुरुलघुपणोकह्यो नहीगुरुतथानहीलघु ते अगुरुलघुस्वन्नावकहियें एसर्वद्रव्यमध्येछे तेश्रीन्नगवतीसूत्रें सव्वदव्वा सव्वगुणा सव्वपएसा सव्वपज्जवा सव्वद्धाअगुरुलहुआए अगुरुलघुस्वन्नावनेआवरणनथी तथाआत्मामध्येजेअगुरुलघुगुण तेआत्मानासर्वप्रदेशेंक्षायकन्नावथये

सर्वगुण सामान्यपणेपरिणमे पणअधिकाउंछापरिणमेनही तेअगुरुलघुगुणनुंप्रवर्तनजाणवुं तेअगुरुलघुगुणने गोत्रकर्म रोकेछे एअगुरुलघुस्वभावतेसर्वद्रव्यमांछे.

हवेगुणनीभावनाकहेछे तिहांजेटलाछएद्रव्यमां सरिखागुणछे तेसामान्यगुणकहियें अनेजेगुणएकद्रव्यमांछे अनेबीजाद्रव्यमांनथी तेविशेषगुणकहियें जेगुणकोइकद्रव्यमांछे अनेकोइकद्रव्यमांनथी तेसाधारणअसाधारणगुणकहियें एमएछद्रव्यमां अनंतगुण अनंतपर्याय अनंतस्वभावसदाशाश्वताछे जेमश्रीकेवलीभगवंतेंपरूप्या तेसर्वेजेरीतेंछे तेरीतेंसद्दहणापूर्वकयथार्थउपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथीयथार्थपणेजाणवासद्दहवा एनिश्चेंज्ञानतेमोक्षनुंकारणछे जेजीव ज्ञानपाम्यो तेजीवविरतिकरेछे तेचारित्रकहियें ज्ञाननुंफल विरतिपणोछे तेमोक्षनुंतत्कालकारणछे.

हवेनिश्चेंचारित्र अनेव्यवहारचारित्रनोविचारकहेछे तेमांप्रथमव्यवहारचारित्रते जेप्राणातिपातविरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप तेसर्वविरतिकहियेंअने स्थुलप्राणातिपात विरमणव्रतादिकश्रावकना बारव्रत तेदेशविरतिचारित्रजाणवुं एव्यवहारचारित्र सुखनुंकारणछे एवीकरणीरूपश्रावकनाबारव्रत अनेयतिनांपांचमहाव्रत तेअभव्यनेपण आवेतेथी देवतानीगतिपामे पणसकामनिर्जरानुं कारणनथाय इहांकोइ पुछेके मोक्षनुंकारणनथीतो एटलुंकष्ट शावास्तेकरियें तेने उत्तर जे त्यागबुद्धी निश्चेंज्ञानसहित चारित्र तेमोक्षनुंकारणछे माटेनिश्चेंचारित्रसहित व्यवहारचारित्रपालवुं तेनिश्चेंचारित्रकहेछे शरीर इंद्रिय विषय कषाय योग एसर्वेपरवस्तुजाणीछांडवा तथाआहार ते पुद्गलवस्तुजाणीछांडवो आत्माअणाहारीछे तेमाटेभुक्तने आहारकरवोघटेनही आहारतेपुद्गलछे आत्माअपुद्गलीछे तेमाटेत्यागकरवो तद्रूपजेतप तेतप निश्चेंचारित्रमांजाणवुं चारित्रकहेतांचंचलतारहित थिरतानापरिणाम अनेआत्मस्वरूपनेविषे एकत्वपणेरमणतन्मयतास्वरूपविश्रांति तत्वानुभवतेचारित्रकहियें तेचारित्रनाबेभेदछे एकदेशविरति बीजीसर्वविरति तिहांदेशविरतिके०श्रावकनाबारव्रत ते बारव्रतनिश्चेंतथा व्यवहारथीकहेछे.

१ प्राणातिपातविरमणव्रत ते परजीवने आपणाजीवसरिखोजाणी सर्वजीवनी रक्षा करे तेव्यवहारदयाथयी माटे व्यवहारप्राणातिपात विरमणव्रतजाणवुं अनेजे आपणोजीव कर्मवशपड्योदुःखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मबंधनथीमूकाववुं अने आत्मगुणरक्षाकरीगुणवृद्धिकरवी तेस्वदया बंधहेतुपरिणतिनिवारी स्वरूपगुणनेप्रगटपणेकरवा जेगुणप्रगटथयोतेराखवो एटलेज्ञानेकरी मिथ्यात्वटाली आपणाजीवनेनिर्मलकरे तेनिश्चेंथी प्राणातिपात विरमणव्रतकहियें.

२ मृषावादविरमणव्रतकहेछे. जूठुंवचनबिलकुलबोलवुंनही ते व्यवहारमृषावादविरमणव्रत अने जे परपुद्गलादिकवस्तुनेआपणीकहेवी तेमृषावादवचनछे अनेजीवनेअ-

जीवकहे तथाअजीवनेजीवकहे इत्यादिकअज्ञानभाव ते सर्वनिश्चेंमृषावादछे अथवा सिद्धांतनाअर्थ खोटाकहे एमृषावादजेणेछांड्यो तेनिश्चेंमृषावादविरमणव्रतकहियें एट-लेबीजाअदत्तादानादिक व्रतजोभांजे तोतेनोमात्रचारित्रभंगथाय पणज्ञानदर्शननोभं-गनथाय अनेजेणेनिश्चेंमृषावादनो भंगकस्यो तेणे समकेततथाज्ञानअने चारित्रएत्रणे-नोभंगकस्यो तथाआगममां एमकह्युंछेजे एकसाधुयेंचोथोव्रतभंगकस्यो अनेएकसाधुयें बीजोमृषावादव्रतभंगकस्यो तोजेणेचोथोव्रतभंगकस्यो तेआलोवणलेइशुद्धथायपणजे सिद्धांतनाअर्थनोमृषाउपदेशआपे तेआलोवणलीधे पणशुद्धथायनही.

३ अदत्तादानविरमणव्रतकहेछे जेपारकुं धन वस्तु छुपावे चोरीकरे ठगवाजीकरी लीये तेचोरीछे एटलेपारकीवस्तुधणीनादिधाविनालेवीनही एव्यवहारथी अदत्तादान विरमणव्रतजाणवुं अने जेपांचइंद्रियना त्रेवीसविषय आठकर्मवर्गणाइत्यादिक परवस्तु लेवीनही तथा तेनीवांछानकरवी तेआत्मानेअग्राह्यछे माटे तेनिश्चेंथीअदत्तादानविरम-णव्रतकहियें इहांकोइपुछेजे विषयनी अनेकर्मनीवांछाकोणकरेछे तेनेउत्तरजे पुण्यनेभ-लोलेवायोग्यछे ते जीवकर्मनीवांछाकरेछे जेपुण्यना ४२ भेदछे तेचारकर्मनीशुभप्र-कृतिछे एटलेजे व्यवहार अदत्तादानतोनथीलेता पण अंतरंगपुण्यादिकनीवांछाछे तेने निश्चेंअदत्तादानलागेछे.

४ मैथुनविरमणव्रतकहेछे. जेपुरुषपरस्त्रीनोपरिहारकरे तथा जेस्त्रीपुरुषनोपरिहारकरे इहां साधुनेस्त्रीनोसर्वथात्यागछे अनेगृहस्थनेपरणेलीस्त्रीमोकलीछे परस्त्रीनोपच्चखाणछे ते-व्यवहारथीमैथुननुंविरमणकहियें अने जेविषयनाअभिलाषनुं तथाममतातृष्णानोत्याग परभाववर्णादिक परद्रव्यनास्वामित्वादिक तेनोअभोगीपणो आत्मास्वगुणज्ञानादिक-नोभोगीछे अनेएपुद्गलखंध ते अनंताजीवनीएठछे तेनेकेमभोगवे एरीतेत्यागतेनि-श्चेंथी मैथुन विरमणकहियें जेणेबाह्यविषयछांड्योछे अनेअंतरंगलालचछुटीनथीतो तेहनेतेमैथुननाकर्मलागेछे.

५ परिग्रहपरिमाणव्रतकहेछे. परिग्रह धन धान्य दास दासी चौपद जमीन वस्त्र आभरणनोत्याग तेमांसाधुनेतोसर्वथापरिग्रहनोत्यागछे तथाश्रावकनेइछापरिमाणछे जेटलीइछाहोय तेटलो परिग्रहमोकलोराखे बीजानीव्रतिकरे एव्यवहारथीकह्यो अने जेकर्मरागद्वेष अज्ञानद्रव्यज्ञानावरणीप्रमुखआठकर्म अनेशरीर इंद्रियनो परिहार एटलेकर्मने परजाणीछांडवो तेनिश्चेंथीपरिग्रहनोत्याग एटलेपरवस्तुनीमूर्छाछांडवी जेणे मूर्छाछोडी तेणेपरिग्रहछोड्योजछे एमजाणवुं.

६ दिशिपरिमाणव्रतकहेछे. तिहांतिरछिचारदिशी पांचमीअधो छठीऊर्ध्व एछदिशी-नाखेत्रनो मानकरीमोकलोराखे तेव्यवहारथीदिशीपरिमाणकहियें अनेचारंगतिमां

जटकवुंतेकर्मनुंफलछे एमजाणी तेथीउदासीपणो अनेसिद्धअवस्थाशुंउपादेयपणो ते निश्चेंदिशिपरिमाणव्रतकहियें.

७ जोगोपजोग परिमाणव्रतकहेछे. जेएकवारजोगववुंतेजोग अनेजेवारंवार जोगववुं तेउपजोग तेनोपरिमाणकरे ते व्यवहारजोगोपजोगव्रतकहियें अने जेव्यवहारनयें कर्मनोकर्त्ताजोक्ताजीवछे अने निश्चयनयेतोकर्मनोकर्त्ता कर्मछे आत्माअनादिनोपरजावजोगीथयोछे तेथीपरजावग्राहक अनेपरजावरक्षकथयो एटले आत्मानी ज्ञायकता ग्राहकता जोग्यता रक्षकता वीगरे कर्त्तापणोवीगड्यो तेवारेंपरजाव कर्त्ताथयो तेपणपरजावरंगीपणें आठकर्मनोकर्त्ताथयोछे पणसत्तायेंतोस्वजावनोकर्त्ताछे पणउपगरण अवराणा तेथीस्वकार्यकरीशकतोनथी विजावनेकरेछे अज्ञानपणे जीवनोउपयोगजल्यो छे पणन्यारोछे पोताना ज्ञानादिकगुणनोकर्त्ताजोक्ताछे एहवोस्वरूपानुयायीपरिणामते निश्चें जोगोपजोगव्रत त्यागजाणवो.

८ अनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे. जेकामविनाजीवनोविधकरवो पारकावास्ते आरंज प्रमुखकरवानी आज्ञाप्रमुखआपवी तेव्यवहारअनर्थदंडअनेशुजाशुजकर्मतेमिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी बंधायछे तेनेजीवआपणाकरीजाणे एनिश्चेंथी अनर्थदंड.

९ सामायकव्रतकहेछे. जे मनवचनकायाना आरंजटालीने तेनेनिरारंजपणेवर्त्तावे तेव्यवहार सामायकजाणवो अनेजेजीवना ज्ञान दर्शन चारित्रगुणविचारे सर्व जीवनागुणनीसत्ता एकसमानजाणी सर्वजीवसाथे समतापरिणामेंवर्त्ते ते निश्चेंथी समतारूपसामायक कहियें.

१० देशावगाशीकव्रतकहेछे. जेमनवचनकायानायोग एकठोरकरी एकस्थानकेंबेसी धर्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेशावगाशीककहियें अनेजेश्रुतज्ञानेकरीछद्रव्य उलखीने पांचद्रव्यनोत्यागकरे अनेज्ञानवंतजीवनेध्यावे तेनिश्चें देशावगाशीकव्रतकहियें.

११ पोशहव्रतकहेछे. जेचारपहोर अथवाआठपहोरसुधीसमतापरिणामे सावद्य छोडी निरारंजपणे सिझायध्यानमांप्रवर्त्ते तेव्यवहारपोशहकहियें अनेपोतानाजीवनेज्ञानध्यानथीपोषीनेपुष्टकरे तेनिश्चेंथीपोशहव्रतकहियें जीवनेपोतानास्वगुणेकरी पोषीजे तेने पोशहकहियें.

१२ अतिथिसंविजागव्रतकहेछे. जेपोशहनेपारणे अथवा सदासर्वदासाधुने तथाजैनधर्मिश्रावकने पोतानीशक्तिप्रमाणे दानदेवुं तेव्यवहारअतिथिसंविजागकहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यनेज्ञाननुंदानते जणवुं जणाववुं सुणवुं सुणाववुं तेनिश्चेंथी अतिथिसंविजागव्रतकहियें एटले श्रावकनाबारव्रतकह्यां ते समकितसहित जेनिश्चेंतथाव्यवहारथीबारव्रतधारे तेजीवनेंपांचमेगुणठाणे देशविरति श्रावककहियें

देशके० देशथकी थोमीशीव्रतिपणोछेमाटे अनेयतिनेसर्वथीव्रतिपणोछे तेथीपांचमहाव्रतजछे साधुनेपांचमहाव्रतमांसर्वव्रतआव्यां एनिश्चेंत्यागरूपज्ञानध्यान संवरनिर्जरामां थिरतानापरिणाम तेनिश्चेंचारित्रना एकउत्सर्ग वीजोअपवाद एवेमार्गछे तेमांजेउत्कृष्ट तीक्ष्णपरिणाम तेउत्सर्ग अनेजेउत्सर्गराखवाने कारणरूप तेअपवाद उक्तंच॥ संघरणंमिअसुद्धं दुन्नविगिन्हतदेतयाणहियं ॥ आउरदिठंतेणंते चेवहीयंअसंघरणे ॥ १ ॥ एटले ज्यांसुधीसाधकभावने बाधकनपमे त्यांसुधी जेहनीनाकही तेआदरवोनही अनेजोसाधकपरिणाम रहेतानदीठा तेवारेंजेहनीना ते आचरे तेनेअपवादमार्गकहियें जेआत्मगुणराखवाने करवो तेअपवाद अनेगुणीनेरागे भक्तियेंकरवो तेप्रशस्त एवेतो साधनछे अनेजेउदेकनेअखमवाथीकरवुं तेअतिचारछे तथासवलो अने उदेकमाटे अशक्तपणेकरवुं तेपमिवाइछे तेमध्ये अपवादमार्गते परिणामदृढरहे तेमआज्ञायेंकरवो.

हवेचारध्यानकहेछे. १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान. तिहां पहेलावेध्यानतेअशुभकहियें अनेपाछलावेध्यानतेशुद्धछे तिहांमनमां आहटदोहटना परिणामते आर्त्तध्यानकहियें तेनाचारपायाछे १ भाइ मित्र सज्जन माता पिता स्त्री पुत्र धन प्रमुखइष्टवस्तुनोवियोगथयाथी विलापकरे तेपहेलो इष्टवियोगनामा आर्त्तध्यान तथा २ अनिष्टजेभुंमांदुःखनांकारण दुश्मन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादिमलवाथी मनमां दुःख चिंताउपजे तेअनिष्टसंयोग नामाआर्त्तध्यान ३ शरीरमांरोगउपनाथका दुःखकरे चिंताघणीकरे तेरोगचिंतानामाआर्त्तध्यान ४ मनमांआगलनावखतनोसोचकरे जेआवर्षमां आकामकरशुं आवतावर्षमांअमुककामकरशुंतोअमुकलाभथशेअथवा दान शील तपनुं फलमांगे जे आभवमांतपकीधोछे माटे आवतेभवें इंद्रचक्रवर्त्तिनी पदविमले एहवी आगलाभवनी वांछाछे तेअग्रशोच आर्त्तध्याननो चोथो पायोजाणवो.एआर्त्तध्याननाचारभेदकह्या एतिर्यंचगतिनाकारणछे एध्याननापरिणामतेपांचमाअथवाछठागुणठाणासुधीहोय.

२ जेकठोरपरिणामनुंचिंतवनतेरौद्रध्यान तेनाचारभेदछे १ जीवहिंसाकरीने हर्ष पामे अथवा वीजोकोइहिंसाकरतोहोय तेनेदेखी खुशीथाय अथवा युद्धनी अनुमोदनाकरे तेहिंसानुवंधी रौद्रध्यान २ जूठुं वोलीनेमनमां हर्षपामे के जुओ में केवोकपटकेलव्यो माराजूठापणानी खवरकोइनेपमीनही एवोमृषावादरूप परिणाम तेमृषानुवंधीरौद्रध्यान ३ चोरीकरी अथवाठगाइकरी मनमां खुशीथाय के माराजेवो जोरावर कोणछे हुंपारकोमालखाउंछुं एवोपरिणामते चोरानुवंधि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धनधान्य परिवार घणोवधवानी लालचहोय तेधनअथवा कुटुंवनेमाटे गमेतेवुंपापकरे अथवा घणो परिग्रह मिल्याथी अहंकारकरे तेपरिग्रहरक्षणानुवंधी रौद्रध्यान एरौद्रध्याननाचारभेद-

कह्या एध्यान नरकगतिपमाडवानुं कारणछे महाअशुभकर्मनुं कारणछे एपांचमा गुणठाणासुधीछेअने छठेगुणठाणेपण एकहिंसानुबंधी रौद्रध्याननापरिणाम कोइकजीवनेहोय.

हवेधर्मध्यानकहेछे. जेव्यवहारक्रियारूप कारणतेधर्म तथाश्रुतज्ञान अनेचारित्र ए उपादानपणेसाधनधर्म तथारत्नत्रयी भेदपणे तेउपादानशुद्धव्यवहार उत्सर्गानुयायी ते अपवादधर्मजाणवो अने अभेदरत्नत्रयी तेसाधनशुद्ध निश्चेनयें उत्सर्ग धर्म अने धम्मो वत्थुसहावो जेवस्तुनोसत्तागम शुद्धपरिणामिक स्वगुणप्रवृत्ति कर्त्रादिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थायेंरह्यो तेएवंभूत उत्सर्गउपादान शुद्धधर्म तेधर्मनुं भासन रमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनोचिंतववो तेधर्मध्यानकहियें तेनापायाचारछे तेकहेछे.

१ आज्ञाविचयधर्मध्यानते जेवीतरागदेवनीआज्ञा साचीकरीसद्दहे एटलेभगवंते छद्रव्यनुंस्वरूप नयप्रमाणे निक्षेपासहीत सिद्धस्वरूप निगोदस्वरूप जेमकह्या तेमसद्दहे वीतरागनीआज्ञा नित्यअनित्य स्याद्वादपणे निश्चेंव्यवहारपणे माने सद्दहे ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थउपयोग भासनथयो तेनेहर्षेकरी तेउपयोगमध्ये निरधार भासन रमण अनुभवता एकता तन्मयपणो तेआज्ञावीचयधर्मध्यानकहियें.

२ अपायविचयधर्मध्यान तेजीवमां अशुद्धपणे कर्मनायोगथी संसारीअवस्थामां अनेक अपायके० दूषणछे तेअज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव एमारानथी हुं एथकी न्यारोछुं हुंअनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमयी शुद्ध बुद्ध अविनाशीछुं अजअनादि अनंत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल अकल अमल अगम्य अनमी अरूपी अकर्मा अबंधक अनुदय अनुदीरक अयोगी अभोगी अरोगी अभेदी अवेदी अछेदी अखेदी अकषायी असखाइ अलेशी अशरीरी अणाहारी अव्याबाध अनवगाही अगुरुलघुपरिणामी अतेंद्री अप्राणी अयोनी असंसारी अमर अपर अपरंपर अव्यापी अनाश्रित अकंप अविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अनारक लोकालोकज्ञायक एवो शुद्धचिदानंद मारोजीवछे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो.

३ विपाकविचयधर्मध्यानकहेछे. जे एहवोजीवछे तोपण कर्मवशेंदुःखीछे तेकर्मनो विपाकचिंतवे जे जीवनोज्ञानगुण तेज्ञानावरणीकर्मेंदाब्योछे अनेदर्शनावरणीकर्मेंदर्शन गुणदाब्योछे एमआठकर्मे जीवना आठगुणदाब्याछे एटलेआसंसारमांभमतांथकां जीवने जेसुखदुःखछे तेसर्वेकर्मनांकीधांछे माटेसुखउपनेराचवुंनही अनेदुःखउपने दिलगीरथवुंनही कर्मस्वरूपनीप्रकृति स्थिति रस अनेप्रदेशनो बंध उदय उदीरणा तथा सत्ता चिंतववानुं एकाग्रतापरिणाम तेविपाकविचयधर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यानकहेछे. ते चउदराजमानलोकनुं स्वरूपविचारे जेएलोकते

चउदराजऊंचोछे तेमध्ये सातराजअधोलोकछे विचमां अढारसोयोजन मनुष्य खेत्र त्रिछोलोकछे तेऊपर कांइकऊणो सातराज ऊर्ध्वलोकछे तेमांसर्व वैमानिक देवतावसेछे अनेऊपरें सिद्धशिलासिद्धखेत्रछे एरीतेलोकनुंप्रमाणछे एलोकनुंसंस्थान वैशाखछे अनंतोकाल आपणाजीवें संसारमां जमतां सर्वलोकने जन्ममरणकरी फरस्योछे एवुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथापरिणमन द्रव्यमध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थान तेनो जे एकाग्रताये तन्मयचिंतवणपरिणाम एहवुंजेध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्याननना चारपायाकह्या. एधर्मध्यान चोथागुणठाणाथी मांडीने सातमा गुणठाणासुधीछे.

हवेशुक्लध्यानकहेछे. शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने तन्मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वजाव विजाव तेनेजूदापृथक्पणे वहेंचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो पृथक्पणे ध्यानकरी पर्यायतेगुणमां सक्रमावे अनेगुणते पर्यायमांसक्रमणकरे एरीतेस्वधर्मनेविषे धर्मांतरजेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउपयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतववो तेने विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्कसप्रविचार पेहेलो पायो. एआठमागुणठाणाथीमांडी इग्यारमा गुणठाणासुधीछे.

२ एकत्ववितर्कअप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे. जेजीव आपणागुणपर्यायनीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्मधर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विकल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकसमयी कारणकार्यतापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो. एपायोबारमागुणठाणेध्यावे एबेहुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यान करीसकेनही एवेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्याननथी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणठाणे ध्यानंतरीकापणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणठाणे एबेपायाध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे. तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुंधे शैलेशीकरणकरी अयोगीथाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रिया अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्ताये ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये ७२ खपावे.

४ उच्छिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे. जेयोगनिरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मी थाय सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्यावतां शेषदलखरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोजागघटाके शरीरमूकी इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेगुणठाणेतो अक्रियछे तोसातराजउंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रियछे परंतु पूर्वप्रेरणायें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेरणागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षेजता लोकनेअंतेजायीरहे इहांकोइपुछेजे आगलउंचोअलोकछे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेनजाय वलीकोइ पुछेजे तोअधोगतियें अथवातिरछीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाजारथी रहितथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाभावो जिमणोनजाय कारणके प्रेरककोइनथी तथाकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मकेमलागतानथी तेनेकहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धनाजीवने अज्ञान तथायोग नथी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे. १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत. तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्ठीना गुणसंजारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे ते पदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथवा गुणीनागुणमध्ये एकत्वताउपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पणएमारोजीव अरूपी अनंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीथयापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवो जेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरंजन निर्मल संकल्पविकल्परहित अभेद एकशुद्धत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्गणागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमभाव सर्वछांडवायोग्यथया एकसिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेभावनाकहेछे.तेमांधर्मध्याननी चारभावनाकहेछे—१ मैत्रीभावनाते सर्वजीव साथें मित्रतानोभावचिंतववो सर्वनुंभलुंचाहवुं पणकोइनुं माठुंचिंतववुंनही सर्वजीवऊपरहितबुद्धिराखवी ते मैत्रीभावना २ गुणवंत अने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते बीजीप्रमोदभावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेम द्वेषपण नही कारणके हिंसकउपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामार्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केमके ते अजाणछे

एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थभावना ४ सर्वजीवने पोतानेतुल्यजाणी दया-पाले कोइनेहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरुणा तेनादुःखटा-लवानोपरिणाम तथाधर्महीन जीवदेखीने एवोचिंतवेजे एजीवकिवारें धर्मपामशे यथार्थआतमसाधन पामीस्वरूपधर्मने किवारेंअवलंबशे एवो परिणाम ते चोथी करु-णाके० दयाभावना. एचारभावनाकही.

१ हवेबारभावनाकहेछे. शरीर कुटुंब धन परिवार सर्वविनाशीछे जीवनोमूलधर्म अविनाशीछे एम चिंतववुंतेपहेलीअनित्यभावना २ संसारमां मरणसमये जीवनेशरण राखनारकोइनथी एकधर्मनोशरणछे एवुंचिंतववुंते बीजीअशरणभावना ३ माराजीवे संसारमां भमतां सर्वभवकीधाछे एसंसारथी हुंकेवारेंछुटीश एसंसारमारोनथी हुंमो-क्षमयीछुं एमविचारवुं तेत्रीजीसंसारभावना ४ एमाहरोजीवएकलोछे एकलो आव्यो एकलोजशे पोतानाकरेलांकर्म एकलोभोगवशे एमचिंतववुंते चोथी एकत्वभावना ५ आसंसारमां कोइकोइनोनथी एमचिंतववुंतेपांचमीअन्यत्वभावना ६ आशरीर अपवित्र मलमूत्रनीखाणछे रोगजराथीभर्योछे एशरीरथी हुं न्यारोछुं एमचिंतववो ते छठीअशु-चिभावना ७ रागद्वेषअज्ञान मिथ्यात्वप्रमुख सर्वआश्रवछे एमचिंतववुं तेसातमी आ-श्रवभावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततोजीव नवाकर्मबांधेनही ते आठमी संवरभावना ए ज्ञानसहित क्रियातेनिर्जरानुंकारणछे तेनवमीनिर्जराभावना १० चउदराजलोकनुं स्वरूपविचारवुंते दशमी लोकस्वरूप भावना ११ संसारमांभमताजीवने समकितज्ञा-ननीप्राप्तिपामवीदुर्लभछे अथवा समकेतपाम्योपण चारित्र सर्व विरतिपरिणामरूप धर्म पामवोदुर्लभछे तेइग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मनाकहेणहारगुरु तथाशुद्धआगमनुं सांभलवुं एहवीजोगवाइ मलविदोहेली-छे तेबारमीधर्मदुर्लभभावना एटलेबारभावनाकही एचारित्रनुंस्वरूप संपूर्णकह्युं.

एवोसमकितसहित ज्ञानचारित्र तेमोक्षनुंकारणछे तेनाऊपर भव्यप्राणीयें विशेषें उद्यमकरवो अनेजोतेवुं ज्ञानचारित्रनहीपले तोपण श्रेणीकराजानीपेरें सद्दहणा शुद्ध राखजो जोसमकेतशुद्धछे तोमोक्षनजीकछे समकेतविना ज्ञानध्यान क्रियासर्व निःफ-लछे एमआगममांकह्योछे ॥ गाथा ॥ जंसक्केतंकिरइ अहवानसक्केइतहयसद्दहइ ॥ सद्द-हमाणोजीवो पावइअयरामरंठाणं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रेजीवतुंकरीशके तोकर अनेजो न करीशके तोपण जेवोवीतरागेंधर्मकह्यो तेरीतेसद्दहजे सद्दहणाशुद्ध राखनारजीव अ-जरामर स्थानक तेमोक्षपदवीपामे.

हवेसमकितनो मार्गकहेछे १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्जरा ८ बंध ए मोक्ष एनवतत्वछे तेमांमोक्षनुंकारणजीवछे अनेसंवर तथानिर्जरा

एबेगुणछे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष एचारउपादेयछे अनेबीजा पांचहेयछे ए-
हवो परिणामतेने समकेतज्ञानकहियें तेसमकेतज्ञानभलोजथाय तिहां अनुयोगद्वा-
रमांकह्योछे ॥ गाथा ॥ नायम्मिगिन्हियव्वयव्वे अगिन्हियव्वेअइछअछमि ॥ जइवमेवइ-
यजो सोउवएसोनउंताम ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानथीछद्रव्यजाणीने लेवायोग्यहोयतेले
अनेछांमवायोग्यछांमे एवोजेउपदेश तेनयउपदेशजाणवो हवेसमकेतनी दशरुचिकहेछे.

१ निसर्गरुचि तेनिश्चयनयकरी जीवादिनवतत्वजाणे आश्रवत्यागे संवरआदरे वी-
तरागनाकह्याभाव जेछद्रव्य तेद्रव्य खेत्र काल भावसहितजाणे नामादिचारनिक्षेपा
पोतानी बुद्धिथीजाणे सद्दहे वीतरागनाभाष्याभाव तेसत्यछे एवीसद्दहणाहोय.

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथाछद्रव्यने गुरुउपदेशथीजाणीसद्दहेते उपदेशरुचि.

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेषमोहजेमनागयाछे अज्ञानमिथ्युंछे एहवाअरिहंतदेव ते-
णेजे आज्ञाकही तेनेमानेसद्दहे तेआज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि ते १ आचारांग २ सुयगमांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ भगवती ६
ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगमदशांग ९ अनुत्तरोववाइदशांग १० प्रश्न-
व्याकरण ११ विपाक एइग्यारअंग तथा बारमुंअंगदृष्टीवाद जेमांचउदपूर्वहता तेहम-
णाविछेदगयाछे तथा १ उववाइ २ रायपश्नेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ जंबुद्वी-
पपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सुरपन्नति ८ कप्पीआ ९ कप्पविमंसिया १० पुप्फिआ ११
पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदिशा एबारउपांगजाणवा अने १ व्यवहारसूत्र २ बृहत्कल्प
३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जितकल्प एछछेद ग्रंथ तथा १ चौस-
रण २ संथारापयन्नो ३ तंडुलवेयालीया ४ चंदाविजय ५ गणिविजय ६ देविंदथुओ
७ वीरथुओ ८ गछाचार ९ जोतिकरंम १० आयुःपच्चखाण एदशपयन्नानानाम तथा
१ आवश्यक २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ उंघनिर्युक्ति एचारमूलसूत्र तथा
१ नंदि २ अनुयोगद्वार एपीस्तालीसआगम तेमूलसूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ भाष्य ४
चूर्णि ५ टीका एपंचांगीनावचन जेजीवमाने तथाआगमसांभलवानी तथा भणवा-
नीजेनेघणीचाहनाहोय तेसूत्ररुचिजाणवी.

५ जेजीवगुरुमुखथी एकपदनोअर्थसांभलीने अनेकपदसद्दहे ते बीजरुचि.

६ अभिगमरुचि ते जेसूत्रसिद्धांत अर्थसहितजाणे अनेअर्थविचार सांभलवानी
घणीचाहनाहोय ते अभिगमरुचि.

७ जे छद्रव्यनागुणपर्यायने चारप्रमाण तथासातनये करीजाणे ते विस्ताररुचि.

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्ति बाह्यक्रिया सहित
आत्मधर्मसाथे जेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचि.

ए संक्षेपरुचि ते जे अर्थनेज्ञानमां थोमोकहेथके घणो जाणीने कुमतिमां पमेनही जिनमतमांप्रतितमाने तेसंक्षेपरुचि.

१० जेपांचअस्तिकायनुंस्वरूपजाणे श्रुतज्ञाननोस्वनाव अंतरंगसत्तासद्दहेतेधर्मरुचि-

हवेसमकेतनाआठगुणकहेछे १ निसंका ते जिनागममध्येसूक्ष्मअर्थकह्या तेसाचा सद्दहे तेमांसंदेहआणेनही तथासातन्नयथीपणमरेनही २ निकंषागुण ते पुण्यरूपफलनीचाहनानराखे केमके जिहांइछा तिहांकर्मनोबंधछे माटे ३ निवित्तिगिछागुण ते शुनअशुनपुफल एकसरिखाछे तेमां पुण्यनाउदयथी शुनयोग मिल्याखुशीथइअहंकारनकरवो तथापापनाउदयथी दुःखसंयोगमिल्यादिलगीरथावुंनही ४ अमूढदृष्टीगुण ते जे आगममां सूक्ष्मनिगोदना तथाछद्रव्यना सूक्ष्मविचारकह्याछे तेसांनलतोथकोमुजायनही जेपोतानी धारणामांआवेतेधारीराखे अनेजेधारणामां नआवे तेनेसद्दहे ५ अववुहगुण जे एआपणाजीवमां अनंतज्ञानादिकगुणछे तेउपाववा नही शुद्धसत्ताजेवीछे तेवीकहेवी रागद्वेष अज्ञानतेकर्मनीउपाधिछे जीवएउपाधीथीन्यारोछे ६ स्थिरिकरणगुण ते आपणापरिणाम ज्ञानमांस्थिरकरवा मगाववा नही अथवाकोइनव्यप्राणीधर्मथीपमतोहोय तेने साह्यदेइउपदेशआपीस्थिरकरवो ७ वात्सल्यतागुण ते जेनीसाथें ज्ञान ध्यान तप पमिकमणो नेलोकरता होइये अनेसद्दहणापणएकजहोय तेआपणोसाधर्मिनाइछे तेनीनक्तिकरवी अथवा सर्वेजीवनाज्ञानादिगुण आपणासमानछे माटे सर्वेजीवउपरदयाकरवी अथवाबीजाजीवनापण आपणातुल्यज्ञानादिगुणछे तेजीवने पोषवायोग्यज्ञानध्याननोघणोअन्यास करावे ८ प्रनावकगुण ते नगवंतनाधर्मनीप्रनावनामहिमाकरवी अथवा पोतानेज्ञानादिणवधारवा दान शील तप नाव पूजा करीघणीमहिमाकरवी एसमकितनाआठगुण.

हवेसमकेतनापांचनूषणकहेछे १ उपशमनावनूषण ते विवेकीप्राणीप्रायेंकषाय नकरे अनेजोकदाचितूकषायकरेतोपण तरतमननेपाछोवाले २ आस्तानूषण तेनगवंतना वचनउपरशुद्धप्रतितराखें नगवंतेंजेमआगममां आज्ञाकरीतेमसद्दहे ३ दयानावनूषण ते सर्वेजीव पोतानासरिखाजाणीदयापालवी ४ संवेगनूषण जे संसारथी तथाधनथी शरीरथी उदासीपणोराखवो ५ निरवेद्यनूषण ते इंद्रियना सुखजीवेंअनंतिवारनोगव्या पणतेदुःखनाकारणछे एकचिदानंदमोक्षमयी अतींद्रियसुखनेआपणाकरीजाणे ए समकेतनापांचनूषणकह्या.

हवेछआयतनकहेछे १ निश्चयकुगुरुतेनगवंतनावचननाखोटाअर्थकरे खोटीपरुपणाकरे २ व्यवहारकुगुरु ते योगी संन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति तेपणछोमवा ३ निश्चयकुदेव ते जिणेश्रीवीतरागदेवनुंस्वरूपनथीजाण्युं ४ व्यवहार

कुदेव ते जेसरागीदेव कृष्ण माहादेव खेत्रपाल देवी पितरप्रमुख तेपणछोरुवा ५ निर्श्रें-
थीकुधर्मते जेएकांतमार्गे बाह्यकरणीऊपरराच्याछे अंतरंगज्ञाननथीउलख्योते ६ व्यव-
हारकुधर्म ते पारकाअन्यदर्शनीनामतसर्वछांरुवा एटले कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मने छोरुी
शुद्धदेव गुरुतथाधर्मसद्दहे तेसमकेतनी सद्दहणाजाणवी समकेतनालक्षण पन्नवणासूत्रथी
कहेछे गाथा ॥ परमठ्ठसंथवोवा सुदिठ्ठपरठ्ठसेवणावावि ॥ वावन्नकुदंसणा वज्जणायसमी
त्तसद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ छद्रव्य नवतत्वनागुणपर्याय मोक्षनुंस्वरूप एटले जे
परमार्थसूक्ष्मअर्थछे तेजाणवानोघणोपरचोकरे अथवाजाणवानीघणीचाहनाराखे अने
सुदिठ्ठके० भलीरीतेदीठाजाण्याछे परमार्थछद्रव्यमोक्षमार्गजेणे एहवागुरुनीसेवाकरे
एटलेज्ञानीगुरुधारवा अने वावन्नके० जिनमतियतिनामधरावीने जेखेत्रपालप्रमुखने
समकितविनामाने एवागुरुनोसंगवर्जे अनेकुदर्शनी जेअन्यमतितेनोसंगनकरे एवाजेप-
रिणामतेसमकितनीसद्दहणाजाणवी विरयासासज्जाउ कषायहीणामहव्वयधरावि ॥ स-
म्मदिठ्ठिविहुणा कयाविमुक्खंनपावंति ॥२॥ अर्थ ॥ जेसावद्यआरंभथीविरम्याछेक्रोधादि
आचारकषायजीत्याछे अनेशुद्धपांचमहाव्रतपालेछेपणसमकेतविनाछेतेजीवमोक्षपामेनही
हवेसमकिततेसीवस्तुछे तेविषेगाथाकहेछे गाथा ॥ नयभंगपमाणेहिं जो अप्पासा-
यवायभावेणं ॥ जाणइमोक्खसरूवं सम्मादिठ्ठिउसोनेऊ ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नय तथा
भंगेकरी तथाप्रमाणेकरी जेपोतानाआत्मानेजाणे उलखे स्याद्वादआठपक्षेजाणे अने
एमस्याद्वादपणेमोक्षनिकर्मावस्थानेपणजाणे परवस्तुने हेयजाणे जीवगुणउपादेयजा-
णे तेने समकेति जाणवो.

हवेजीवस्वरूपध्यानकरवाने गाथाकहेछे ॥ अहंमिक्कोखलुसुद्धो निम्ममउनाणदंसण
समग्गो ॥ तम्मिदिठ्ठउतच्चित्तो सव्वेएएखयंनेमि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानीजीव एहवुं ध्या-
नकरे के हुंएकछुं परपुद्गलथीन्यारोछुं निश्चेनयकरीशुद्धछुं अज्ञानमलथीन्यारोछुं निर्म-
लछुं ममताथीरहितछुं ज्ञानदर्शनथीभर्योछुं हुंमाराज्ञानस्वभावसहितछुं हुंमारागुण-
मांरह्योछुं चेतनागुणतेमाहारीसत्ताछे हुंमाराआत्मस्वरूपनेध्यावतो सर्वकर्मक्षयकरुंछुं
॥ गाथा ॥ निरंजणंनिकलअयल देवअणाइअणइअणात्तं ॥ चेयणलक्खणसिद्धसम प-
रमप्पासिवसंतं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कर्मअंजनथीरहित निरंजनछुं कलंकरहितछुं अयल
के० पोतानास्वरूपथीकिवारेचलायमानथाउंनही परमदेवछुं जेनीआदिनथी तथा जेनो
अंतनथी चेतनालक्षणछुं सिद्धसमानछुं संतसत्तामयीछुं गाथा ॥ जीवादिसद्दहणं सम्म-
त्तंएसअधिगमोनाणं ॥ तथेवसयारमणं चरणंएसोउमुक्खपहो ॥ ६ ॥
अर्थ ॥ जीवादिकछद्रव्यजेवाछे तेवासद्दहवा तेसमकेत अनेछद्रव्यजेवाछे तेहवा गु-
णपर्याय सहितजाणे तेज्ञानजाणवुं तेनद्रव्यजाणीनेछांरुे अजीवनेछांरुे अने जीवना

स्वगुणमां स्थिरथयीनेरमे तेचारित्रकहियें एज्ञानदर्शनचारित्र शुद्धरत्नत्रयी तेमोक्षनो मार्गछे माटे एज्ञानदर्शनचारित्रनो घणोयत्नकरवो एरत्नत्रयीपामीनेप्रमादकरवोनही तिहांनिश्चयव्यवहारनीगाथा ॥ नछियमग्गोमुक्खो ववहारोपुन्नकारणोवुत्तो॥ पढमोसंवररूवो आसवहेउतउंबीउं ॥ ७ ॥

अर्थ निश्चेनयनोमार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुंकारणछे एटलेमोक्षछे अनेव्यवहार क्रियानय ते पुण्यनुंकारणकह्यो पहेलो निश्चेनयसंवरछे अनेनिश्चेसंवरनिश्चेनय तेएकजछे जूदानथी बीजोव्यवहारनय तेआश्रव नवाकर्मलेवानोहेतुछे एटलेशुभपुण्यकर्मनो आश्रवथायछे अनेअशुभव्यवहारें अशुभकर्म्मनोआश्रवथायछे कोइ पुछेजे व्यवहारनय आश्रवनुंकारणछे तो अमेव्यवहारनहीआदरसुं एकनिश्चेमार्ग आदरसुं तेनेउत्तर कहेछे ॥ गाथा ॥ जइजिणमयंपवज्जह तामाववहारनथ्थिएसुयह ॥ एकेणविणातिथ्थं छिज्जईअन्नेणउंतच्च ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोभव्यप्राणी जोतमनेजिनमतनी चाहनाछेअनेजो तुमेजिनमतने इछोछो मोक्षनेचाहोछो तोनिश्चेनय अनेव्यवहारनय छांडशोनही एटलेबेहुनयमानजो व्यवहारनयचालजो अनेनिश्चेनयसद्दहजो जोतुमेव्यवहारनयउथापशो तोजिनशासनना तीर्थनोउछेदथाशे जेणेव्यवहारनय नमान्यो तेणे गुरुवंदना जिनभक्ति तप पच्चरकाण सर्वनमान्या एम जेणेआचारउथाप्यो तेणे निमित्तकारणउथाप्योअनेनिमित्तकारणविना एकलो उपादानकारण तेसिद्धनथाय माटे निमित्तकारणरूप व्यवहारनय जरुरमानवुं अनेजो एकलोव्यवहारनय मानियें तोनिश्चेनय उलख्याविना तत्वनुंस्वरूप जाण्युंजायनही माटेतत्वमार्ग अनेमोक्षमार्ग तेनिश्चेनयविना पामियेंनही अनेतत्वज्ञानविना मोक्षनथी एटलेनिश्चेविना व्यवहारनिःफलछे अनेनिश्चेसहित व्यवहार ते प्रमाणछे तेनोदृष्टांत जेमसोनानाआभूषणमां उपधातु अथवाकिणजोमिल्योहोय तेपण उंचासोनानेभावेंलेइ राखियेंछेयें अनेजोतेकिणजो तथासोनुजूडुंकरियें तो सहुकोइसोनानेले पण कोइकिणजो जेकुधातु तेलीयेनही तेम निश्चेनय सोनासमानछे माटेनिश्चेनयसहित सर्वेभलाछे अनेनिश्चेनयविना सर्वेअलेखेछे माटेआगममां निश्चेव्यवहार रूप मोक्षमार्गछे तेकह्यो.

वलीशरीरउपर मोहकरेनही तेविषे ॥ गाथा ॥ छिज्जोभिज्जोजायखउं जोईहमेहुशरीर ॥ अप्पाभावेनिम्मलो जंपावंभवतीरं ॥ ए ॥ अर्थ ॥ भव्यप्राणीएमचिंतवेजे एशरीर छीजजाउं भिजजाउं क्षयथइजाउं विणशीजाउं एमाहारुं शरीरपुद्गलीक छे परवस्तुछे तेएकदीवसेंमूकवुंछे माटे रेप्राणी तुंआपणीआत्मानेनिर्मलपणेध्यावतो संसारथी तरीनेकांठेपामीश ॥ गाथा ॥ एहिजअप्पासोपरमप्पा कम्मविसेसोईजायोजप्पा ॥

इयमेदेवज्ञाजुसोपरमप्पा वहुतुह्मेअप्पोअप्पा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ अहोनव्यजीव एहीज आपणोआत्माछे तेशुद्धब्रह्मछे पणकर्मनेवशपड्यो जन्ममरणकरेछे पणएशरीरमां जेजीवछे तेदेवछे परमात्माछे माटेतुमे आपणोआत्माध्यावो तरणतारणजिहाज एआपणो आत्माजछे एमश्रीहेमाचार्यें वीतरागस्तोत्रमांकह्युंछे यःपरात्मापरंज्योतिः परमःपरमेष्टिनां ॥ आदित्यवर्णोतमसःपरस्तादामनंतियं ॥ १ ॥ सर्वेयेनोदमूल्यंत समूलाःक्लेशपादपाइत्यादि ॥ अर्थ ॥ परमात्माछे परमज्योतिछे पंचपरमेष्टीथी पणअधिकपूज्यछे केमकेपंचपरमेष्टीतो मोक्षमार्गनादेखाडनाराछे पणमोक्षमांजवावालोतो आपणोजीवछे अज्ञाननो मिटावनारछे सर्वकर्म्मक्लेशनो खपावनारछे एवो आत्माध्यावो एहिजपरम श्रेयनुंकारणछे शुद्धछेपरमनिर्मलछे एहवोआत्माउपादेय जाणीसद्दहे अनेजेवोपोताथी निरवाहथाय तेवोत्यागवैरागमांप्रवर्त्ते एटले धन तेपरवस्तुजाणी सुपात्रनेदानआपे अनेइंद्रियनाविकारते कर्मबंधनाकारणजाणीपरिहरे शीलपाले जेआहारछे तेपुद्गलीक परवस्तुछे शरीरपुष्टीनुंकारणछे अनेशरीरपुष्टकीधाथी इंद्रियोनाविषयनोपोपथाय माटे तेपरस्वभावछे अज्ञान संसारनुंकारणछे माटेआहारनोत्यागकरवो तेनेतपकहियें तथा पूजाते जेश्रीअरिहंतदेवें मोक्षमार्गउपदेश्यो तेआपणेजाण्यो माटेआपणाउपकारीछे तेउपकारीनी वहुमानसहित भक्तिकरियें माटेश्रीअरिहंत देवाधिदेवनी पूजाकरवी एम दान शील तप पूजा सर्व जीव अजीवनुंस्वरूप ओलख्याविनाजेकरवुं तेपुण्यरूप इंद्रियसुखनुंकारणछे अनेजे जीवनेउपादेयकरी वांछाविनाकरणीकरेछे तेनिर्जरानुंकारणछे एमदयापण श्रीभगवतीसूत्रमां सातावेदनीकर्मनुं कारणछे एटले सम्यक्ज्ञानीने सर्वकरणीतेनिर्जरारूपछे अनेज्ञानविना सर्वकरणी बंधनुंकारणछे माटेज्ञाननो घणोअभ्यासकरजो एभगवंतेंसीखामणदीधीछे.

तथाज्ञाननुंकारण श्रुतज्ञानछे तेनोघणोभावराखजो श्रीठाणांगमां तथा उत्तराध्ययनमां तथाभगवतीमां १ वाचना २ पूछना ३ परावर्त्तना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मकथा ए सिझाय भणवा गुणवानुंफल मोक्षकह्योछे सिझायकरवाथी ज्ञानावरणी कर्मखपावे केमके वाचनाथी तीर्थधर्मप्रवर्त्ते महानिर्जराथाय पुछवाथी सूत्रतथा अर्थशुद्धथाय मिथ्यात्वमोहनीयखपावे तेजेमजेम अर्थविचारपूछे तेमतेमसमकितनिर्मलथायअने अनुप्रेक्षाते अर्थविचारतां सातकर्मनीस्थितिना रसपातलाकरे अनंतो संसारखपावीने पातलोकरे तथा श्रुतज्ञाननी आराधनाथी अज्ञानमिटे एवाफल कह्याछे.

माटे वांचवा तथा भणवानो घणोउद्यमकरवो केमके आजपांचमाआरामां कोइ केवलीनथी तथा मनपर्यवज्ञानी अनेअवधिज्ञानीपणनथी एकमात्रश्रुतज्ञान तेहिजआगमनो आराधकछे यतः कछअम्हारिसापाणी दुसमादोसदूसिया ॥ हायणाहाकहंहुंता

नहुंतोजइजिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेभगवंत अमसरिखाप्राणीनी शीगतिथात जे अमेंआडुसमपंचमकालमां अवतारलीधो हाइतिखेदे अमेअनाथ तुं जो जिनराजना कहेला आगमनहोत तोआजसुंथात एटले आजआगमनोजआधारछे माटेआगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनोघणोविनयकरवो आगममांविनयनुंफल तेसांभलवुं अनेसांभलवानुं फलज्ञानछे ज्ञाननुंफलमोक्षछे एमआगम सांभलीलेवायोग्यलेजो अयोग्यछांरुजो सद्दहणाशुद्धराखजो सद्दहणाते मोक्षनुंमूलछे एइंद्रियसुखतोआजीवें अनंतिवारपाम्याछे एहवी जाति जन्म योनी कोइरही नथी जेआपणाजीवेनहीकरीहोय एजीवने संसारमांभमतां अनंतापुद्गल परावर्त्तनथया पणधर्मनी जोगवायीमलीनही तोहवेमनुष्यभव श्रावककुल निरोगशरीर पंचेंद्रीप्रगट बुद्धिनिर्मल एटलासंयोगमल्या वलीश्रीवीतरागनीवाणीनाकेहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइपामीने अहोभव्यलोको तुमेधर्मनेविषे विशेषउद्यमकरजो फिरिथीएवीजोगवाइ मिलवीदुर्लभछे माटेप्रमादकरशोनही एशरीर धन कुटुंब आयुष्य सर्व चंचलछे क्षणक्षणछीजेछे माटे पांचसमवायकारणमल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धकरवुं तेपंचसमवायनानामकहेछे १ काल २ स्वभाव ३ नियत ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार एपांचसमवायमाने तेसमकेतिछे एमांएकसमवाय उछापे तेहनेमिथ्यात्वीकहियें एम सम्मतिसूत्रमां कह्योछे गाथा ॥ कालोसहानियइ पुव्वकयंपुरिषकारणेपंच ॥ समवाएसमत्तं एगंतेहोयमिछत्त ॥ १ ॥

अर्थ ॥ काललब्धिविना मोक्षरूपकार्य सिद्धथायनही एटलेकालसर्वेनुंकारणछे जे कालें जेकार्यथवानोहोय तेकार्यतेकालेंथाय एकालसमवाय अंगीकारकरीकह्यो इहां कोइपुछेजे अभव्यजीव मोक्षकेमजतानथी तेनेउत्तरजे अभव्यनेकालमले पण अभव्यमांस्वभावनथी तेथीमोक्षजायनही केमके कालस्वभाव एबेकारणजोइये तेवारेंफरिपुछ्युंजे भव्यजीवमांतो मोक्षजवानोस्वभावछे तोसर्वभव्य केममोक्षजतानथी तेने उत्तर जे नियतके० निश्चेंसमकितगुणजागे तेवारेंमोक्षपामे एटलेकाल स्वभाव नियतए त्रणकारणमान्या तेवारेंफरिपुछ्युं जे समकितआदिकारणतो श्रेणीकराजानेहता तो मोक्षकेमनथयो तेनेउत्तर जे पूर्वकृतकर्मघणाहता अथवापुरुषाकार ते उद्यमकर्योनही फरीपुछ्युंजे शालीभद्रप्रमुखें तो उद्यमघणोकीधो तेनुंउत्तरजे तेमनापूर्वकृत शुभकर्म खप्यानहता माटेपांचसमवाय मिल्याकार्यनीसिद्धिथाय तेवारेंफरिपुछ्युंजे मरुदेवामाताने तोचारकारणमिल्या पणपांचमो पुरुषाकारउद्यम कांइकीधोनही तेनेउत्तर जे क्षपकश्रेणी चढवानो शुक्लध्यानरूप उद्यमकीधोछे माटे पांचसमवायमील्या मोक्षरूपकार्य सिद्धथाय.

जेवारें केवलज्ञानेकरीसर्वद्रव्य जेमरह्याछे तेमदेखे एटले आकाशद्रव्य लोकालोकप्रमाणछे तेमांअलोकमां बीजुंद्रव्यकोइनथी लोकाकाशनाएकेकप्रदेशे धर्मास्तिकाय

अधर्मास्तिकायनो एकेकप्रदेशरह्योछे तथाअनंताजीवना अनंताप्रदेशरह्याछे अनंतापुद्गलपरमाणुरह्याछे कालनोसमय सर्वत्रवर्त्तेछे.

हवे छद्रव्यनीफरशनाकहेछे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशे धर्मास्तिकायना छप्रदेश फरस्याछे तेआवीरीते के चारदिशीनाचार अनेपांचमोनीचे छठोऊपर एछप्रदेशफरस्याछे तथा एकमूलपोतेंप्रदेश एमसातप्रदेशनो संबंधछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सातसातप्रदेश फरशेछे तेएकमूलनाप्रदेशने बीजाद्रव्यनो मूलनोप्रदेशफरशे माटे सातप्रदेशनीफरशनाछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशें जीवपुद्गलना अनंताप्रदेशनी फरसनाछे अनेलोकनेअंतेजे धर्मास्तिकायना प्रदेशछे तेने आकाशनीफरसनातो छएदिशीनीछे अनेएकमूलप्रदेशसुद्धां सातप्रदेशनी फरसनाछे अनेबीजाद्रव्यनी त्रणदिशीनीफरसनाछे एमसर्वद्रव्यनीफरशनाछे अने आकाशथी धर्म अधर्मनीअवगाहना सूक्ष्मछे धर्मअधर्मद्रव्यथीजीवनीअवगाहना सूक्ष्म छे जीवथी पुद्गलनी अवगाहना सूक्ष्म छे.

एमछद्रव्यना गुणपर्याय सामान्यस्वभाव ११ छे अनेविशेषस्वभावदशछे तेश्रीकेवली भगवंत ज्ञानथीजाणे दर्शनथीदेखे तेइग्यारसामान्यस्वभावकहेछे १ अस्तिस्वभाव २ नास्तिस्वभाव ३ नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभाव ५ एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेदस्वभाव ८ अभेदस्वभाव ए भव्यस्वभाव १० अभव्यस्वभाव ११ परमस्वभाव एइग्यारसामान्यभाव सर्वद्रव्यमांछे एसामान्यउपयोग दर्शनगुणथीदेखे हवेदशविशेषस्वभावकहेछे १ चेतनस्वभाव २ अचेतनस्वभाव ३ मूर्त्तिस्वभाव ४ अमूर्त्तिस्वभाव ५ एकप्रदेशस्वभाव ६ अनेकप्रदेशस्वभाव ७ शुद्धस्वभाव ८ अशुद्धस्वभाव ए विभावस्वभाव १० उपचरितस्वभाव एदशविशेषस्वभाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्वभावछे कोइक द्रव्यमांकोइकस्वभावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धभगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एहवाअनंतगुणीअरूपी सिद्धभगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेत जाणवो.

॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ भएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे ॥ वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगऔषधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यक्दृष्टी ॥ २॥ एहिजसदगुरुशीखछे ॥ एहिजशिवपुरमाग ॥ लेजोंनिजग्यानादिगुण ॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोभविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअगमपद फललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥४॥ संवतसत्तरछिहुत्तरे ॥ मनशुद्धफागुणमास ॥ मोटे कोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥ ५ ॥ सुविहितखरतरगछसुथिर ॥ युगवरजिनचं-

दसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकगुणेपंकूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठक प्रवर ॥ सुमतिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ तासशिष्यपाठकविबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ भविककमलप्रतिबोधवा ॥ राजसागरगुरुभाण ॥ ८ ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेअगाह ॥ राजहंसगुरुगुरुसक्ति ॥ सहुजगकरेसराह ॥ ९ ॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें ॥ कीनोग्रंथप्रकाश ॥ १० ॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचंदमुनी ॥ ग्यानामृतरसकूप ॥११॥ कस्योइहांसदायअति ॥ दुर्गदासशुभचित्त ॥ समजावननिजमित्रकुं ॥ कीनोग्रंथपवित्त ॥ १२ ॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ भविजनसमकितवंत ॥ शुद्धअमरपदउलखण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ जोवेबालाबोध ॥ निजपरसत्तासवलिखे श्रोतालहेप्रबोध ॥ १४ ॥ ताकारणदेवचंद मुनी ॥ कीनोआगमग्रंथ ॥ भणसेगुणसेजेभविक॥लहेशेतेशिवपंथ ॥१५॥ कथकशुद्धश्रोतारुची मिलजोएह संयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥१६॥ परमागमसुंराचजो ॥ लहेसोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मसौं ॥ धरजोएसुखकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसौं ॥ सितपखफागुणमास ॥ भोमवारअरुतिजतिथि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आआगमसारमां पेज १३७ नी लेन २८ मीमध्ये चउदराजलोकनोंखंधलोकाकाश सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यभागेंआठरुचकप्रदेशथी मांडीनेसादिछेजिहां चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोछेलोप्रदेशमूकीनेएछेअलोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे.

तथापेज १४४ नीआठमीलेनमां श्रीभगवतीसूत्रमांसुत्तत्थोखलुपढमो बीउनिज्जुत्ति मिसउभणिउ ॥ इत्तोतईयणुउगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ एवीरीतेआगमसारनी जूदी जूदीत्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंछे पणबीजाघणाठेकाणे एभगवतीनी साखदीधीछे तिहांतो सुत्तत्थोखलुपढमो बीउनिज्जुत्तिमिसउभणिउ तइउयनिर विसेसो एसविहिहोइअणुउगे ॥ एवोपाठछे तेखरोजणायछे पछेबहुश्रुतकहेतेखरुं.

॥ इति श्री आगमसारोद्धारग्रंथः समाप्तः ॥

॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्रसारनुंबालावबोधलिख्यते

॥ मंगलाचरण ॥

प्रणम्यपरमब्रह्मशुद्धानंदरसास्पदं ॥ वीरंसिद्धार्थराजेंद्रनंदनंलोकनंदनं ॥१॥ नत्वासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वयं ॥ स्वगुरून्दीपचंद्राख्यपाठकानश्रुतपाठकान् ॥ नयचक्रस्यशब्दार्थकथनं लोकभाषया ॥ क्रियतेबालबोधार्थं सम्यङ्मार्गविशुद्धये ॥ ३ ॥

प्रशस्ति

श्रीजिनागमनेविषे १ द्रव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मकथानुयोग एचारअनुयोगकह्याछे तेमां छद्रव्य अने नवतत्व तेनागुणपर्याय स्वभावपरिणमननेजाणवुं तेद्रव्यानुयोग एवं पंचास्तिकायनुं स्वरूपकथनरूपछे तेपंचास्तिकायमध्ये एकआत्मानामेअस्तिकायद्रव्यछे तेआत्माअनंताछे तेनामूलबेभेद छे तेमां एकसिद्धनिष्पन्न सर्वकर्मावरणदोषरहित संपूर्णकेवलज्ञान केवलदर्शनादिगुणप्रगटरूप अखंड अमल अव्याबाधानंदमयी लोकनेअंतेविराजमान स्वरूपभोगी तेसिद्धजीवकहियें ते सिद्धतासर्वआत्मानो मूलधर्मछे तेसिद्धतानीईहाकरवाने सिद्धभगवंतनो यथार्थसिद्धपणो उलखीने निष्पन्नसिद्धनोबहुमानकरवो अनेपोते पोतानीभूले अशुद्धचेतनपणे परिणमतां बांध्या जे ज्ञानावरणादिकर्म तेटालीने पोतानी संपूर्णसिद्धतानी रुचि करवी एहीजहितशिक्षाछे.

वलीबीजोभेद संसारीजीवोनोछे तेजेणे आत्मप्रदेशें स्वकर्त्तापणे कर्मपुद्गलनेग्रह्या जेनेकर्मपुद्गलनोलोलीभावछे तेमिथ्यात्व गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठाणाना चरमसमयपर्यंत सर्वसंसारीजीवकहियें तेनावलीबेभेदछे एकअयोगी बीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एकसयोगीकेवली बीजासयोगीछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एकअमोही बीजासमोही समोहीनाबेभेद एकअनुदितमोही बीजाउदितमोही उदितमोहीनाबेभेद एकसूक्ष्ममोही बीजाबादरमोही बादरमोहीनाबेभेद एकश्रेणीवंत बीजा श्रेणीरहित श्रेणीरहितनाबेभेद एक संयमीविरति बीजाअविरति अविरतीनावलीबेभेद एकसमकेति बीजामिथ्यात्वी मिथ्यात्विनाबेभेद एकग्रंथिभेदी बीजाग्रंथिअभेदि ग्रंथिअभेदिनाबेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेमां अभव्यजीवोतुं तो दलजएवोहोय जे

श्रुतअज्यासपणकरे तथा द्रव्यथीपंचमहाव्रतआदरे पणआत्मधर्मनायथार्थ श्रद्धावि-ना पेहेलो गुणठाणो किवारे मूके नही माटे ए जीवो तेसिद्धपद पामवाने योग्य नही तेअन्नव्यचोथेअनंतेछे.

बीजाज्ञव्य तेजेसिद्धपणानेयोग्यछे जेनेकारणयोगमिले पलटणपामे तेन्नव्यजीवो अन्नव्यथीअनंतगुणाछे तेमध्येकेइकन्नव्यसामग्रीयोगपामी ग्रंथिन्नेदकरीने समकितपामे अनेकेटलाएकन्नव्यतो सामग्रीनेअन्नावें समकितपामेजनही उक्तंचविशेषणवत्यां सा-मग्गीअन्नावाउ ववहाररासिअप्पवेसाउ ॥ न्नवावितेअणंता जेसिद्धसुहंनपावंति ॥ १ ॥

पणतेन्नव्यजीवोमां योग्यताधर्म छतोछे तेमाटे न्नव्यकहियें जेजीवमिथ्यात्वतजीने शुद्धयथार्थ आत्मपणेव्यापकरह्यो तेजमारोधर्म अनेजेथीते आत्मसत्तागतधर्मप्रगटे ते साधनधर्मवेन्नेदेछे एकवायणापुछणादि वंदननमनादि पडिलेहणप्रमार्ज्जादि जेटलीयो-गप्रवृत्तिते सर्वेद्रव्यथी साधनधर्मकहियें तेन्नावधर्म प्रगटकरवाने जेकरे तेनेकारणरूप छे द्रव्यतेजेन्नावनुंकारण कारयासेदव्वं इतिआगमवचनात् ॥

अनेजेउपयोगादि पोतानाक्षयोपशमन्नावें प्रगट्याजे ज्ञानवीर्यादिगुण तेपुद्गलानुया-यीपणाथीटालीने शुद्धगुणीजेश्रीअरिहंत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायी करवा अथवाआत्मस्वरूप अनंतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेन्नावथीसाधनधर्म जाण-वो एआत्मानीपजाववानो उपायछे.

जिहांलगेंआत्मानुंशुद्धस्वरूप चिदानंदघन तेसाध्यमांनथी अनेपुद्गलसुखनीआ-शायें विष गरल अन्योन्य अनुष्ठान जेकरवुं ते संसारहेतुछे माटे साध्यसापेक्षपणेस्या-द्वादश्रद्धायें साधनकरवुं एहिजमार्गछे अने एमार्गनीजे प्रतितरुचि ते सम्यक्तकहियें तेसम्यक्तग्रंथिन्नेदकस्योपामियें तेग्रंथिन्नेदतो त्रणकरणकरेतोजथे तेत्रणकरणजीवकरे तेवारेंसम्यक्दर्शनपामे तेत्रणकरणमां पेहेलुंयथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकरण त्रीजुंअनि-वृत्तिकरण एकरणसर्व संज्ञीपचेंद्रीकरे तेमां प्रथमयथा प्रवृत्तिकरणतेन्नव्य तथाअन्नव्य पणकरे कोईकजीवअनंतिवारकरे तेयथाप्रवृत्तिकरणनुं स्वरूपलखियेंछैये.

सर्वकर्मनी उत्कृष्टस्थितिना बांधनारजीवने संक्लेशघणोछेमाटे यथाप्रवृत्तिकरणक-रेनही उक्तंचविशेषावश्यके उक्कोसठिनलप्पइ नयणाएसुपुवलद्धाए ॥ सवजहन्नठिसु विन लप्पइजेणपुवपडिवन्नो ॥ १ ॥ माटेकर्मनी उत्कृष्टस्थितिनो बांधनारजीव ते चा-रसामायकनोलान्ननपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति बांधे तेजीवतोगुणवंतजछे एरीतछेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंन्नागेउणी स्थिति बांधतोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो तेशक्तिपा-म्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचन्नाष्ये येनअनादिसंसिद्धप्रकारेण प्रवृत्तंकर्मक्षप-

णंक्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्तावध्य वसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्य जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे तेथी परिग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडाकोडीनायोकडा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावे ने कांइकउणी एककोडाकोडीराखे एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिन्नेदकरीशकेनही एकरण तेगिरिनदीनेविचें आव्युं पाषाणते घंचनाघोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय अने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनान्नोगथीज नववैरागें जीव यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्येंविचारेजे नवभ्रमणते दुःखछे एसंयोगवियोगादि असारछे पणकांइक ज्ञानानंदादितेसारछे एहवीगवेषणाकरनारो जीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेनव्यनेतो पलटण योग्यताछे पण अनव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरनक्तिमांजे देवतानीमहिमा तथालोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांछायें देवत्वराज्यादिकलानइछायें इग्यार अंग तथाबाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेपुद्गलान्निलाषीछे तेनेगुणस्पर्शनथाय उक्तंचमहान्नाष्ये ॥ अर्हदादिविन्नूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधसत्कारोदेवत्वराज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नबुद्धेरनव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदेहया निर्वाणश्रद्धारहित कष्टानुष्ठानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलान्नेपि सम्यक्त्वादिलाभःश्रुतस्यनन्नवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसारमां लख्योछे तेज प्रमाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवाक्षायक सम्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्त्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रोधक एहवोमिथ्यात्वमोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टलवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तिथाय तेथीयथार्थपणे निर्द्धारसहितजाणपणोप्रवर्त्ततेजीवनेद्रव्यानुयोगें तत्वज्ञानप्रगटे तेथीजेआत्मगुणप्रगटे तेआत्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेहनेधर्मकरीसद्दहे तेमाटेस्याद्वादपरिणामी पंचास्तिकायछे तेस्याद्वादरूपज्ञान तेनयज्ञानेथाय माटेनयसहितज्ञानकरवुं तेनयज्ञानअतीदुर्लनछे अनेनयनीअनंतताछे उक्तंच जावइयावयणपहा तावइयाचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेक्षनही ते कुनयकहियें अने सर्वसापेक्षपणेवर्त्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयछेतेनुंस्वरूपअल्पमात्रलखियेंछैयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनछे जेकारणेएकद्रव्यमध्येअनंताधर्मछे तेएकसमयें श्रुतोपयोगमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतज्ञाननोउपयोग असंख्यातसमयेंथाय अनेवस्तुमध्येतोअ-

नंताधर्म एकसमये परिणमतापामियें तेवारेंश्रुतज्ञान सत्यथायनही तेमाटेनयेंकरीजाणे तथायद्यपिकेवलीनोउपयोग एकसमयीछे तेमाटेजाणवामां नयनुंकार्यकेवलीने पडेनही पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेंकरीकहेवुंपडेकारणकेवचन तोक्रमेबोलायछे अनेवस्तुधर्मेअनंताएकसमयकालेंछे तेमाटेनयेंकरीकहे वलीजिनभद्रगणीक्षमाश्रमणपूज्यकहेछेः—

जीवादिद्रव्यमांजेगुणछे तेअनंतस्वभावीछे गुणनीछति तेनुंपरिणमन तेनीप्रवृत्ति तेमांजेसमयेकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकपरिणतिसहितछे तेथीकोइक रीतें सर्वनुं भिन्नाभिन्नपणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितरुचिजीवने नयसहितज्ञानकरवुं जे एटलाधर्म सर्वद्रव्यमध्ये रह्याछे माटे प्रथमतो श्रीगुरुकृपाथी द्रव्य- गुण पर्याय उलखावेछे एपीठिकाकही हवेमूलसूत्रनाअर्थनुं व्याख्यानकरेछे.

श्रीवर्द्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ क्रि

यतेतत्वबोधार्थं पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीके०गुणनीशोभा अतिशयशोभायेंविराजमान एहवाश्रीवर्द्धमान अरिहंत शासननानायक तेप्रतेंअत्यंतपणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी त्रण योगसमावी गुणीनेअनुजायीचेतनानुंकरवुं तेनेनमवुंकहियें तेपण स्वके०पोताने अने परजेशिष्यअथवाश्रोतादिकने अनुग्रहके०उपकारने सारु तत्वके० यथार्थवस्तुधर्मतेने बोधके०जाणवानेअर्थें पदार्थके०धर्मास्तिकायादिक छमूलद्रव्य तेनो अनुगमके०साचोपरुपवो ते क्रियतेके०करियेंछेयें.

जगतमांमतांतरीउ द्रव्यनेअनेकपणेकहेछे तिहांनैयायिक सोलपदार्थकहेछे वैशेषिक सातपदार्थकहेछे वेदांतिसांख्य एकपदार्थकहेछे मीमांसक पांचपदार्थकहेछे पणतेसर्वेमिथ्याछे तेणेपदार्थनुं स्वरूपजाएयुंनथी अनेश्रीअरिहंत सर्वज्ञप्रत्यक्षज्ञानी ते एकजीवअनेपांचअजीव एरीतेंछपदार्थकहेछे इहांकोइपुछे जेनवतत्वरूप नवपदार्थकह्याछे तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव बीजोअजीव एबेपदार्थतोमूलछे अने शेष साततत्वतो जीवअजीवनो साधकबाधक शुद्धअशुद्ध परिणतिनीअवस्था भिन्नउलखाववानेकह्याछे.

श्लोक ॥ द्रव्याणांचगुणानांचपर्यायाणांचलक्षणं ॥

निक्षेपनयसंयुक्तंतत्वभेदैरलंकृतम् ॥ तत्रतत्वभेदप

र्यायैर्व्याख्यातस्यजीवादेर्वस्तुनोभावःस्वरूपतत्वं

अर्थ ॥ द्रव्यना गुणना तथा पर्यायना लक्षण जेउलखाण तेनिक्षेपेंकरी तथा नयें करीयुक्ततत्वनाभेदेंसहितकहुंछुं तत्रके०तिहांजिनागमनेविषे तत्वजेवस्तुस्वरूप भेद तेनाजूदाजूदाभेदपर्याय तेमांरह्याजेधर्म एटलाप्रकारें व्याख्याके०अर्थनुंकहेवुं तेणेकरीने

यथार्थ व्याख्यानथाय तिहांतत्वनुंलक्षणकहेछे व्याख्यानकरवायोग्य जे जीवादिक वस्तु तेनोमूलधर्म तेवस्तुनुंस्वरूपतत्वकहियें जेमकंचननुंस्वरूप पीत गुरुस्निग्धतादि तथाएनुंकार्यआभरणादिक अने एहनुंफलते एहथीअनेकभोग्यवस्तुआवे एमजीवनुं स्वरूप ज्ञानदर्शनचारित्रादिअनंतगुण तथाजीवनुंकार्यसर्वभावनुंजाणवुं प्रमुखएरीतें अभेदपणेंरह्याजेधर्म तेसर्ववस्तुनुंतत्वकहियें.

येनसर्वत्राविरोधेनयथार्थतयाव्याप्यव्यापकभावेनलक्ष्यतेव स्तुस्वरूपंतल्लक्षणं तत्रद्रव्यभेदायथाजीवाअनंताःकार्यभेदे नभावभेदाभवंति क्षेत्रकालभावभेदानामेकसमुदायित्वंद्रव्यत्वं

अर्थ ॥ हवेलक्षणकहेछे जेगुणेकरीसर्वद्रव्य स्वजातिमां अविरोधिपणे यथार्थपणे १ अतिव्याप्ति २ अव्याप्ति असंभवादिदोषरहित वस्तुजेव्याप्य तेहनेविषे व्यापकपणे लखियें जाणियें तेनेवस्तुनुंलक्षणकहियें तेलक्षणबेप्रकारनुंछे एकलिंगबाह्य आकाररूप अने बीजुं वस्तुमांरह्योजे स्वरूपते एवेभेदछे तेमांलिंगथीतो गायनुंलक्षण जेशास्नस-हितपणो तेबाह्यआकाररूपलक्षणछे एबाह्यलक्षणेजेउलखाणकरे तेबालचालछे अने जेवस्तुनेधर्मेंउलखाय तेस्वरूपलक्षणकहियें जेमचेतनालक्षणतेजीव तथाचेतनारहित तेअजीव इत्यादिकलक्षणें लक्षणस्वरूपजाणवो एमअनेकरीतेंजाणीलेवो भेदाश्च हवे भेदनुंस्वरूपकहेछे वक्तव्यवस्त्वंशाः के० जेवस्तुकथनकरताहोय तेहना चारभेदछे तत्र द्रव्यभेदाके०तिहांद्रव्यनाभेदमूललक्षणे सरिखापणपिंरूपणेजूदाछे ते द्रव्यथीभेदक-हियें यथाके०जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजीवप्रते पोतानागुणप-र्यायनो पिंरूपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांभिविजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यभिन्नपणे तेमजअजीवअनंताद्रव्य भिन्नपणे एमपुद्गलपरमाणुपण जरूतारूपपणेसरिखा पणसर्व परमाणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूछियें तेकालें एटलानेएटलाछे कोइकालेंघटेनही ते-मनवोवधेनही ए सर्वद्रव्यथी भेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रथीभेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादि द्रव्य-नाप्रदेश अवगाहनाधर्मेंजूदाछे पणद्रव्यथीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्यायसर्वप्र-देशें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायविभागएकनो अनेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंताभिन्नछे अनेजेअनंतापर्यायमलीने ए-ककार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीभेदछे.

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्य-यतथाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतेथीबीजीपरिण-

मनथइ तेवीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तिथइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूप जाणवी अनेआगामिकथासेते कार्यरूपेंयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो तथाअनागत कालनो कोइढिगलोनथीअनेपिंडरूप पंचास्तिकायनुं वर्ततोजेपरणमनतेनुंमान तेकालक-हियें तेनेसमयभेदते त्रीजोकालरूपभेदकहियें ते जेपर्यायभिन्नभिन्नकार्यकरे तेकार्यभेदें-भिन्नपणोछे तेमाटेचोथोभावथीभेदकहियें हवेद्रव्यनुंलक्षणकहेछे तेक्षेत्रकाल अनेभाव-नाजेभेद तेसर्वनुंएकठामिलिनेपिंडपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेवुं तेद्रव्यकहियें.

तत्रैकस्मिन्द्रव्येप्रतिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरूपाअनंताअविभागरूपपर्यायास्तेषांसमुदायोगुणः ॥ भिन्नकार्यकरणेसामर्थ्यरूपाभिन्नगुणस्यपर्यायाः एवंगुणाअप्यनंताः प्रतिगुणंप्रतिदेशंपर्यायाअविभागरूपाः अनंतास्तुल्याः प्रायीइतितेचास्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतास्ततोनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

अर्थ ॥ हवेगुणनुंलक्षणकहेछे तिहां गुणानामासउदवं इतिवचनात् एकद्रव्यनेविषे स्वस्वके० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानुं जेनेसामर्थ्यछे एवा अनंतासूक्ष्म जेनो अविभागके० वीजोछेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणकहियें जेमएक दोरडो सो तांतणानोकह्यो तेसोतांतणा तोअविभागपणे छतापर्यायछे तेदोरडाथीअने-ककार्यथाय अनेकवस्तुवंधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकवेटणथाय तेनेसामर्थ्य पर्यायकहियें छतिरूपजेपर्याय तेतोवस्तुरूपछे अने सामर्थ्यपर्यायतो प्रवर्त्तनरूप कार्य रूपछे तेछतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें छतिपर्यायनाअविभाग तेयोगस्थान स-मयस्थानमां कह्योजछे अने भिन्नके० जुदोकार्य करवानुं जेमांसामर्थ्यहोय एवाअवि-भागरूप आत्माप्रदेशें वर्तता पर्याय तेभिन्नके० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम जेअ-विभाग परिणामालंवनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय तेवीर्यगुण एमज जाणवारू-पसामर्थ्यछे जेमां एहवाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदायतेज्ञानगुण तेवागुण एकद्र-व्यनेविषेअनंताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशे पर्यायअविभागरूप अनंताछे अनेसर्वप्रदे-शे सरिखाछे तथापंचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे तथापुद्गलपर-माणुमध्ये कालभेदें अथवाद्रव्यभेदें वर्णादिकनापर्यायनो तरतमयोग ते थोडाघणाप-णोछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदाछताछे कोइपर्यायद्रव्यांतरमां जातोनथी प्रदेशांतरमां पण जातो नथी तेछतिपर्यायथी सामर्थ्यपर्याय अनंतगुणाजाणवा तेकार्यरूपछे तथाच

महाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतात-तोप्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए
तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षयालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्द्रव्यं एतत्पर्यायनयापेक्षया अर्थक्रियाका
रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्ययके० पूर्वपर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एतीनपरिणमनपणें सर्वदाजेपरिणमे तेनेद्रव्य कहियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य बेधर्मेंसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायज नही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकारण तेहिजकार्यथायछे ते कारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालें थायछे वली कारणपणो समयेंनवो-नवोछे अनेकार्यपणोपण समयेंसमयेंनवोनवोछे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययछे अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे अनेगुणपिंडपणें द्रव्याधारपणेध्रुवछे एवीपरिणतियें परिणमे ते सत्के० छतिवंतद्रव्यजाणवो एटले एलक्षणते द्रव्यास्तिकनय तथापर्या-यास्तिकनय एबेभेलालेइनेकह्योछे जे ध्रुवपणो ते द्रव्यास्तिकधर्मेग्रह्योछे अनेउत्पादव्य-य तेपर्यायास्तिकधर्मेग्रह्योछे तेमाटेएलक्षणसंपूर्णछे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यछे.

तथावलीबीजुंलक्षण तत्वार्थमांजकह्युंछे एकद्रव्यमां बहुमांस्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण अने पर्यायते गुणनुंकारणभूत द्रव्यनुंभिन्नभिन्न कार्यपणे परिणमे द्रव्यगुण एबेहुने स्वाश्रयीपणेपरिणमन तेबेछेजेमां तेद्रव्यकहियें एटलेगुण तथापर्यायवंत तेद्रव्यक-हियें तेद्रव्यएकनाबेखंडथायजनही एमूलद्रव्यनुंलक्षणछे अनेजेघणापरमाणुना खंधने द्रव्यमान्योछे तेउपचारेंजाणवो जेनीपरिणतित्रणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही तेद्रव्यपो-तानीमूल जातत्यजेनही जेनेअगुरुलघुनुं षड्गुण हानिवृद्धिरूपलक्षण चक्र एकठोफिरे तेएक द्रव्य अनेजेने जूदोफिरे ते भिन्नद्रव्यकहियेंएटले धर्म अधर्मआकाश ए एक एक द्रव्यछे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकअखंडद्रव्यछे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंता छे तेजीवसिद्धमांवधेछे अनेसंसारीपणामांओछाथायछे पण सर्वसंख्यामां घटता वधता नथी तथापुद्गलपरमाणु एकआकाशप्रदेशप्रमाण एकद्रव्यछे तेवापरमाणु सर्वजीवथी तथा सर्वजीवनाप्रदेशथी पण अनंतगुणाद्रव्यछे स्कंधपणे अथवा छुटा परमाणुपणे

वधे तथा घटीजाय पण परमाणुपुज्ञलपणे जेसंख्याछे तेमांवधताघटता नथी ए निश्च यनयथी लक्षण कह्युं.

हवेव्यवहारनयथीलक्षणकहेछे अर्थजे द्रव्यतेनीजे क्रियाके० प्रवृत्तितेनेकरे तेद्रव्य कहियें तेमांजीवनीशुद्धक्रिया ते ज्ञानादिकगुणनीप्रवृत्ति जेमसकलज्ञेयजाणवामाटे ज्ञानविजागनीप्रवृत्ति एमसर्वगुणनुंजेकार्य जेमज्ञानगुणनुंकार्यविशेषधर्मनुंजाणवुं तथा दर्शनगुणनुंकार्य सकलसामान्यस्वजावनोबोध अने चारित्रगुणनुंकार्य तेस्वरूपनुंरमवुंइत्यादि अनेधर्मास्तिकायनुंकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीवतथापुज्ञल तेने चालवानेसहकारीथाय एमसर्वद्रव्यनीसमजणजोइलेवी एलक्षण सर्वद्रव्यनाजेगुण छे तेसर्वनास्वकार्यानुयायीप्रवृत्तितेने अर्थक्रियाकहेवी हवेतेछद्रव्यछे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुज्ञलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल एछद्रव्यजाणवा एथी वधारेपदार्थ कोइनथी जे नैयायिकादिक सोलपदार्थकहेछे तेमृषाछे कारणके तेप्रमाणने जिन्नपदार्थकहेछे तेतोज्ञानछे तेआत्माना प्रमेयनोगुणछे तेगुणीजेआत्मा तेमध्येरह्यो छे तेने जिन्नपदार्थ केमकहियें बीजाप्रयोजन सिद्धांतादिक तेसर्वेजीवद्रव्यनी प्रवृत्तिछे ते माटे जिन्नपदार्थकहेवायनही.

तथावैशेषिक १ द्रव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ विशेष ६ समवाय ७ अजाव एसातपदार्थकहेछे पणतेनेकहियें जेगुणतेतो द्रव्यमांजरह्याछे तो तेनेजिन्न पदार्थकरी कहेवुं तेकेमघटे अने कर्मतेद्रव्यनुंकार्यछे तथा सामान्य अने विशेष एबेतोद्रव्यमध्ये परिणमनछे वली समवायते कारणतारूपद्रव्यनुं प्रवर्त्तनछे अने अजावतो अछताने कहेवाय ते अछताने पदार्थकहेवुंघटतुंनथी तेमाटेवैशेषिकमतपणमृषाछे तेमध्येद्रव्यनव कहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७ दिशि ८आत्मा ए मन एनवपदार्थकहेछे तेनेउत्तर जे पृथ्वी आप तेज वायुएतोआत्माछे पणकर्मयोगें शरीर जेदें नामपड्याछे अनेदिशितोआकाशमांज मिलीगयीछे तथा मन ते आत्मानेसंसारीपणाना उपयोगप्रवर्तनानो द्वारछे तेनेजिन्नद्रव्यकेमकहियें.

वलीवेदांतिसांख्य तेएकआत्माअद्वैतपणे एकजद्रव्यमानेछे तेनीपणजूलछे केमके जेशरीरछे तेतोरूपीछे अने पुज्ञलद्रव्यनांखंधछे तेकेमएकथाय तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाशछे तेसर्वेप्रसिद्धछे तेजूदोमान्याविना केमचाले तेमाटेअद्वैतपणो रह्यो नही.

अनेबौद्धदर्शन तेसमयसमय नवानवापणे १ आकाश २ काल ३ जीव ४ पुज्ञल ए चारद्रव्यमानेछे तेनेपुछीयें जेजीवपुज्ञलएकजक्षेत्रें केमरेहेतानथी तेतोचलादिजावपामेछे माटेतेना अपेक्षाकारणरूप १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकायएबेद्रव्यपण मान-

वाजोइयें तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्त्ता एकपरमेश्वरनेमानेछे तेपण मृषाछे जे निर्मलरागद्वेषरहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्ताकेमथाय वली कोइक इछा वलगाडेछे तेइछातो अधूरानेछे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्वरनी लीला कहे छे ते लीलातो अजाण अधूरो तथा जेनेपोतानो आनंद पोतापासेनहोय तेकरे पणजे संपूर्ण चिदानंदघन तेने लीला होयजनही धर्माधर्मौविनानांगंविनांगेनमुखंकुतः ॥ सुखंविना- नकर्त्तत्वंतछास्तारः परेकथं १ अनेमीमांसादिक पांचभूतकहेछे तेमांपण चारभूततो जीवपुद्गलना संबंधेउपनाछेअनेआकाशतेलोकालोकभिन्नद्रव्यछे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंडत्वात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाभा वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतैवद्रव्यंनवस्तुवृत्त्या ॥

एरीतेअसत्यपरुपणानुंनिराकरणकरी आगमनीसांखे कार्यादिकनेअनुमाने द्रव्यछ ठरेछे माटेतेहिजमानवा तेमां पांचद्रव्य सप्रदेशीछे तेप्रदेशनापिंडपणामाटे अस्तिका- यपणो पांचद्रव्यनेछे अने छठोकालद्रव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी ति- हांकालते मुख्यवृत्तियेंद्रव्यनथी उपचारथी द्रव्यकहेवायछे जेमवस्तुगते धर्मास्तिकाया- दिक द्रव्यछे तेमकालद्रव्यनथी जोएकालने पिंडरूपद्रव्यमानियेंतो एनो मानकिहांछे जोमनुष्यक्षेत्रमांकालद्रव्यमानियेंतो बाहिरनाक्षेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पादव्यय कोणकरेछे अनेजोचौदराजलोकमां व्यापीमानियेंतो असंख्यातप्रदेश मानवा जोइयें अनेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्याताकानियें तोलोकप्रदेश प्रमाण रेणुकथाय तेवारें असंख्याताकालद्रव्यथाय तेतोअनंतद्रव्यमान्योछे माटेएका- लने पंचास्तिकायना वर्त्तनारूपपर्यायने आरोपेंद्रव्यमानियें केमके अस्तिकायतानथी अनेसर्वेमांवर्त्तनाकरे एपक्षसत्यछे जे आगमनेविषे ठाणांगसूत्रनाआलावामांछे किंभदंते अद्धासमयेतिवुच्चत्ति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एटलेकाल ते जीवतथाअजीवनो वर्त्तमानपर्यायछे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्त्तनानेकालकह्योछे ते कालने अजीवद्रव्यमांगण्यो तेनोआशयएछे जेजीववर्त्तनाथीअजीववर्त्तनाअनंतगुणीछे तेबहुलतामाटे कालने अजी- वगवेष्योछे केमके कालनीवर्त्तना अजीवऊपर अनंतिछे अने जीवऊपरतेथीथोडीछे माटे.

तथा विशेषावश्यकभाष्यमध्ये नपश्यतिक्षेत्रकालावसौतयोरमूर्त्तत्वात् अवधेश्चमूर्त्ति विषयत्वात् वर्त्तनारूपंतुकालंपश्यति द्रव्यपर्यायत्वात्तस्येति तथा बावीसहजारीमध्ये तथा कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात् पर्यायत्वात् द्रव्योपक्रमःउपचारात् तथाभगवत्यांगे १३ तेरमाशतकमध्ये इहांपुद्गलवर्त्तनानीअपेक्षायें कालनेरूपीगवेष्योछे.

तत्रगतिपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टंभहेतुधर्मा स्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशोलोकप्रदेशपरिमाणः

अर्थ ॥ हवेपंचास्तिकायनुं भिन्नभिन्नलक्षणकहेछे जेगतिपरिणामीपणेपरिणम्याजीवतथापुद्गलतेनेगतिनाउंठंभानोहेतु तेधर्मास्तिकायद्रव्यकहियें तेधर्मास्तिकायअसंख्याता प्रदेशपरिमाणछे लोकमांव्यापिछे लोकमानछे लोकनाएकएकप्रदेशेधर्मास्तिकायनोएकएकप्रदेश तेअनंतसंबंधीपणेछे एधर्मादित्रणद्रव्य अचल अवस्थितअक्रियछे.

स्थितिपरिणतानां जीवपुद्गलानां स्थित्युपष्टंभहेतुः
अधर्मास्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकपरिमाणः

अर्थ ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उंठंभानोहेतु ते अधर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसंख्यप्रदेशीछे.

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावानां जीवपुद्गलानां अवगाहोपष्टंभकः आकाशास्तिकायः सचानंतप्रदेशः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्त्ततेसलोकः असंख्यप्रदेशप्रमाणः ततःपरमलोकःकेवलाकाशप्रदेशव्यूहरूपःसचानंतप्रदेशप्रमाणः

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने अवगाहनानोउंठंभानोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनंताछे लोक तथा अलोकरूपछे तेमांजेक्षेत्रेंजीव तथा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते क्षेत्रने लोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहांछे तेनेअलोककहियें एटले जेलोक तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहांनथी तेने अलोककहियें ते अलोकना प्रदेशअनंताछे अवगाहकधर्मे सर्वद्रव्य एमांसमायछे.

कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः ॥ एकरसवर्णगंधोद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच ॥ पूरणगलनस्वभावः पुद्गलास्तिकायःसचपरमाणुरूपः तेचलोके अनंताः एकरूपाः परमाणवःअनंताः द्व्यणुकाअप्यनंताः त्र्यणुकाअप्यनंताः एवंसंख्याताणुकास्कंधाअप्यनंताः असंख्याताणुकस्कंधाअप्यनंताः एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवंसर्वलोकेपि ज्ञेयं एवंचत्वारोस्तिकायाः अचेतनाः

अर्थ ॥ हवेपुद्गलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछेयें जेपूरणकें०पूरायें वरणादिगुणेवधे गली-जाय खरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमांस्वनावछे तेपुद्गलास्तिकायकहियें तेमू-लद्रव्यपरमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेसर्वेनुं अ-त्यंतकें०मूलकारणपरमाणुछे एटलेसर्वेस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणएपरमाणुनुं कारण कोइनथी कोइनुंनीपजाव्योथयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआ-काशप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे तोपणते एकआकाशप्रदेशमां अनंतपर-माणुसमायछे पणपरमाणुमध्ये बीजुंद्रव्यकोइसमायनही माटे परमाणु द्रव्य सूक्ष्मछे अने नित्य छे जेटलुं परमाणुद्रव्यछे तेखंधादिक अनेकपणेपरिणमे पणपरमाणुद्रव्य कोइ विणसीजायनही एवुंपरमाणुद्रव्यछे तेएकपरमाणुमां एकरस होय एकवर्णहोय एकगंधहोय अनेलुखोचिकणोटाढोउन्हो एचारफरसमाहेला गमे ते बेफरसहोय एवुं एकपरमाणुद्रव्यछे इहां कोइपुछेजे तेपरमाणुदेखातोनथी तोकेवीरीतेमनाय तेनेउत्तर जेघटपटशरीरादिककार्यदेखायछे ग्रहवायछे तेरूपीछेतो एहनासंबंधनुंकारण परमाणु सूक्ष्मछे माटे इंद्रियज्ञाने ग्रहेवातोनथी परंतुरूपीछे केमके अरूपीथीरूपीकार्यथायनही तेमाटेज परमाणुरूपीछे तेथीएस्कंधपणरूपीथयाछे अनेआकाशप्रदेश अरूपीछे तोतेनो अनंतप्रदेशीस्कंधपणअरूपीछे एमधारवुं तेपरमाणुना द्व्यणुकादिकस्कंध अनंताछे त-थाछुटापरमाणु तेपणअनंताछे तेवलीखंधमां मिलेछे तोबीजाखंधमांहेथी छुटाथायछे एमखंधविखरीजाय ने परमाणुथाय तेनी वर्गणा अठ्यावीसप्रकारनीछे .तेअठ्यावीस भेदकम्मपयडीथीजाणवा एमएकलापरमाणु तेपणअनंता तथाबेमिलीनेखंधपाम्यातेवा खंधपण अनंता एमजसंख्याताणुकनाखंध पणअनंता तेमजअसंख्यात परमाणुमिलिखं-धथाय तेपणअनंता तथा अनंतपरमाणु मल्याखंधथाय तेवा खंध पणअनंता तेए जातीनाखंधतेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांशअवगाहे एमअसंख्याताप्रदेश अवगाहेछे पणएकवर्गणानी अवगाहना अंगुलनेअसंख्यातमें नागेअवगाहे वधतिअ-वगाहेनही अनेअनंतिवर्गणामिले अंगुल हाथ गाउ योजनादिकने माने अवगाहना थाय एम ए १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय एचारेद्रव्यअचेतनछे अजीवछे जाणपणारहितछे.

चेतनालक्षणोजीवः चेतनाचज्ञानदर्शनोपयोगी अनंतप र्यायपरिणामिक कर्तृत्वनोक्तृत्वादिलक्षणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्रव्यनुंस्वरूपकहेछे चेतनाजे बोधशक्तिछे लक्षण जेनुं तेजीवकहियें जेपोतानीपरिणमन तथा परनीपरिणमन सर्वेनेजाणे तेजीव तथासर्वेद्रव्य तेअनंता

सामान्यस्वजाव अनेअनंताविशेषस्वजाववंतछे तेमांसर्वेद्रव्यनाअनंताविशेषधर्मनुं अवबोधक तेज्ञानगुणकहियें तथासामान्यविशेष स्वजाववंतवस्तुनेविषें जे सामान्यस्वजावनुं अवबोधक तेदर्शनगुणकहियें तेज्ञानदर्शनोपयोगी जेअनंतपर्याय तेनोपरिणामी कर्त्ता जोक्तादिक अनंतिशक्तिनुंपात्र तेजीवजाणवो उक्तंच नाणंचदंसणंचेव, चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरीयंउवउंगोय, एवंजीवस्सलरकणं ॥ १ ॥

चेतनालक्षण ज्ञानदर्शनचारित्रसुखवीर्यादिक अनंतगुणनुंपात्र स्वस्वरूपजोगी तथाअनवछिन्नजे स्वावस्थाप्रगटी तेनोजोक्ता अनंतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति तेनो कर्त्ता जोक्ता परजावनोअकर्त्ताअजोक्ता स्वक्षेत्रव्यापी अनंतिआत्मसत्तानो ग्राहक व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाणवो.

पंचास्तिकायानांपरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिंगव्यक्तवृत्तिवर्त्तनारूपपर्यायःकालः अस्यचाप्रदेशिकत्वेनअस्तिकायत्वाजावःपंचास्तिकायांतर्जूतपर्यायरूपत्वैवास्य एतेपंचास्तिकायाः तत्रधर्माधर्मौलोकप्रमाणासंख्येयप्रदेशिकौ लोकप्रमाणप्रदेशएवएकजीवः एतेजीवाअप्यनंताः आकाशोहि अनंतप्रदेशप्रमाणः पुजलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्रदेशबंधहेतुजूताद्रव्ययुक्तत्वात् अस्तिकायः कालस्य उपचारेणजिन्नद्रव्यताउक्ता साचव्यवहारनयापेक्षयाआदित्यमतिपरिछेदपरिमाणःकालः समयक्षेत्रेएवएषव्यवहारकालः समयावलिकादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यनुंलक्षणकहेछे जेपंचास्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे एलिंगे तथा पुजलखंधने नवपुराणपणे व्यक्तके०प्रगटछे वृत्तिके०प्रवृत्तितेनेवर्त्तनाकहियें तेवर्त्तनारूप पर्यायत्तेनेकालकहियें एनेप्रदेशनथीतेमाटे अस्तिकायपणोनथी एकालते पंचास्तिकायनेविषेअंतर्जूतपर्यायपरिणमनछे जातेधर्मास्तिकायादिकनोपर्यायछे एम तत्त्वार्थवृत्तिनेविषे कह्योछे तिहांधर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे असंख्यातप्रदेशीछे लोकाकाशनाप्रदेशप्रमाणछे एमअधर्मास्तिकायपण एकद्रव्यछे लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे अनेएकजीवद्रव्यतेपण लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे पण स्वअवगाहना प्रमाणव्यापकछे तेजीवद्रव्यअनंताछे अकृतसदाछता अखंमद्रव्यछे सत्चिदानंदमयीछे पणपरपरिणामीथवे पुजलग्राहक पुजलजोगीथवे प्रतिसमये नवाकर्मबांधवे संसारीथयाछे तेहिज जेवारेंस्वरूपग्राहक स्व-

रूपन्नोगीथाय तेवारेंसर्वेकर्मरहितथयी परमज्ञानमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सिद्धबुद्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अलेशी अनाकारी एकांतिक आत्यंतिक निःप्रयासी अविनाशी स्वरूपसुखनोन्नोगी शुद्ध सिद्धथाय तेमाटेअहोचेतन एपरन्नावअन्नोग्य सर्वे जगतनाजीवनीएठ तेनोन्नोगववापणोतजी स्वन्नावन्नोगीपणानो रसीयोथयी स्वस्वरूप निरधार स्वरूपन्नासन स्वरूपरमणीथयी पोतानाआनंदनेप्रगटकरीनें निर्मलथावुं.

तथाआकाशद्रव्य तेलोकालोकमिलि एकद्रव्यछे अनंतप्रदेशीछे अनेपुद्गलद्रव्यते परमाणुरूपछे केमकेपरमाणुअनंताछेमाटे अनंताद्रव्यछे इहांकोइपूछेजे प्रदेशनासंबंध विनापरमाणुद्रव्यने अस्तिकायकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीछेपण अनंता परमाणुथीमिलवानाजेकारण तेआद्रव्यतेणेयुक्तछे तेयोग्यतामाटे अस्तिकाय कह्योछे तथाकालद्रव्यने उपचारें न्निन्नद्रव्यपणोकह्योछे तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें जे मनुष्यक्षेत्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिज्ञानेएटलेसमयावलिकादिरूप परिमाणे जेमान तेने व्यवहारथीकालकहियें इति एकालमुख्यवृत्तियें तोसमयक्षेत्रमध्येछे अने मनुष्य क्षेत्रथीबाहेर जेजीवोछे तेनाआयुष्यपणएजक्षेत्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेंकह्याछे तथासूर्यनोचारते पण जीवपुद्गलनुंजप्रवर्तनछे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुद्गलछे एटले एकालद्रव्यते कालपणे न्निन्नपिंरूपणे छेस्योनही उपचारेंजछेस्यो एममानवो.

इहांकोइकहेजे एकएकद्रव्यनेविषे अनेकअनेकपर्यायछे ते कोइपर्यायने द्रव्यपणो नकह्यो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्रव्यनोआरोप शामाटेकस्यो तेनेउत्तर एवर्त्तना परिणतितेसर्व पर्यायने सहकारीछे अनेसर्वेद्रव्यनेछे तेथीमुख्यपर्यायछे माटे एने द्रव्यनोआरोपछे तेपणअनादिचालछे.

एतेपंचास्तिकायाः सामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वन्नावलक्षणं द्रव्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वन्नावःतत्रएकंनित्यंनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यंनित्यानित्यनिरवयवसावयवः सक्रिय
ताहेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषरहितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ हवेएपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीछे ते सामान्यनुंलक्षण विशेषावश्यकेंकह्योछे तिहांप्रथमथी स्वन्नावनुंलक्षणकहेछे जेद्रव्यनेविषेव्यापतोहोय तथा गुणपर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपामियें तेनेसामान्यस्वन्नावकहियें ते सामान्यस्वन्नावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव केंॅजेहने

अविभागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके०सर्वमांव्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वभावकहियें जीवादिद्रव्यनेविषे एकपणोतेपिंरूपणेछे तेसर्वद्रव्यनेविषेछे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंडपणुंमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतेंजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वभावकहियें तेसामान्यनावेभेदछे अस्तितादिकजेसर्वपदार्थनेविषेछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्रत्यक्षतो अविधिदर्शन केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेंनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जंबु प्रमुख व्यक्तिअनेकछे पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवांतरसामान्य तेचक्षुदर्शने तथा अचक्षुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अविधिदर्शन तथाकेवलदर्शने ग्रहवाय अने विशेषधर्मते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे विशेषनुंलक्षण कहियेंछेयें कोइकधर्मेंनित्य कोइकधर्मेंअनित्य कोइकरीतेंअवयवसहित कोइकरीतें अवयवरहित अविभागपर्यायें सावयव सामर्थ्यपर्यायें निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तेमाटेदेशगत जेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म तेसर्वविशेष जाणवा पदार्थनागुणनीप्रवृत्ति तेनाजेकारणतेविशेषस्वभाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण विशेषधर्मजगणवो जेसामान्यते विशेषरहितनथी अनेजेविशेषते सामान्यरहितनथी.

तेमूलसामान्यस्वभावाःषट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्वं ३ द्रव्यत्वं ४ प्रमेयत्वं ५ सत्त्वं ६ अगुरुलघुत्वं तत्र १ नित्यत्वादीनां उत्तरसामान्यानां परिणामिकत्वादीनां विशेषस्वभावानामाधारभूतधर्मत्वं अस्तित्वं २ गुणपर्यायाधारत्वंवस्तुत्वं ३ अर्थक्रियाकारित्वंद्रव्यत्वं अथवाउत्पादव्ययोर्मध्येउत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्वाविर्भावलक्षणव्ययीभूतपर्यायाणांतिरोभाव्यभावरूपायाः शक्तेराधारत्वं द्रव्यत्वं ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयतेअनेनेतिप्रमाणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यंप्रमेयं ज्ञानेनज्ञाय तेतद्योग्यतात्वंप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तंसत्वं ६ षड्गुणहानिवृद्धिस्वभावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वंअगुरुलघुत्वंएते षट्स्वभावाः सर्वद्रव्येषुपरिणमंति तेनसामान्यस्वभावाः

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना छभेदछे तेसर्वद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व २ वस्तुत्व ३ द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्त्व ६ अगुरुलघुत्व एछमूलस्वभावछे ते सर्वद्रव्य मध्ये

परिणामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्यनेविषे उत्तरसामान्यस्वभाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वभाव तेपरिणामिकत्वादिक तेनोआधारभूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वभाव अस्तित्वरूपकहेछे तथा २ गुणपर्यायनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य तेनीजेक्रिया जेम धर्मास्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रिया आकाशद्रव्यनी अवगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथा पुद्गलनी मिलवाविखरवारूप क्रियानो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेतेअर्थक्रियानो आधारी धर्म तेनेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.

वलीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजें प्रसवशक्ति एटले आविर्भावलक्षण जेशक्ति तेनाव्ययीभूतपर्यायनो तिरोभावथयो अथवा अभावथवारूप शक्तिनो जेआधारभूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.

४ स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुद्गलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने यथार्थपणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचभेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे एवीजेशक्ति तेनेप्रमेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसाव्योजेवस्तु तेने प्रमेयपणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रमाणपणो तथा प्रमेयपणो एवेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोतेजकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण ज्ञानगुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयवछे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगुणते सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्रमाणकहेवाय पणप्रमाणनाभेदकह्याछे तिहां ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्यक्तपरूतोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो नथी तेप्रमाणना मूलबेभेदछे एकप्रत्यक्ष अने बीजोपरोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्यत् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.

५ उत्पादके० उपजवो व्ययके० विणसवो ध्रुवके० नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां एकसमये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकहियें अने ते सत्पणानो भाव ते सत्वपणो कहियें.

६ तथा छहो १ अनंतभागहानि २ असंख्यातभागहानि ३ संख्यातभागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारनीहानि तथा १ अनंतभागवृद्धि२असंख्यातभागवृद्धि३संख्यातभागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एछवृद्धि एमछप्रकारनीहानि तथा छप्रकारनीवृद्धि तेअगुरुलघुपर्यायनी सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशे परिणमेछे तेकोइकप्रदेशें कोइसमये अनंतभाग हानिपणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतभागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंबार

प्रकारें परिणमेछे ते अगुरुलघुपर्यायनी परिणमनशक्ति तेअगुरुलघुत्वं अगुरुलघुनोभाव जाणवो तत्वार्थटीकानेविषेपांचमाअध्यायें अलोकाकाशनेअधिकारें कह्योछे एमएछ स्वभाव सर्वद्रव्यनेविषे परिणमेछे एछएद्रव्यनोमूलस्वभावछे द्रव्यनोभिन्नपणो प्रदेश-नोभिन्नपणो तेअगुरुलघुनेभेदपणे थायछे तेमाटे एछमूलसामान्यस्वभावछे एद्रव्या-स्तिकधर्मछे अने एनुंपरिणमनते पर्यायास्तिक धर्मछे केटलाकवादीएमकहेछेजे पर्याय-नोपिंमतेद्रव्यछे पणद्रव्यपणोभिन्ननथी जेम धूरी पइमा कागमो १ मागली जूंहरी प्रमुख समुदायने गामोकहियें पण सर्वअवयवथीभिन्न गामापणोकोइदेखातोनथी ते-मज ज्ञानादिकगुणथी भिन्नपणेकोइ आत्मादेखातोनथी तेने कहियें जे ज्ञानादिकगु-णनेविषे छतिएकपिंमसमुदायता सदाअवस्थितपणो अनेद्रव्यथीमिलीनजाय तथास्व-क्रियावंतपणो इत्यादिकसामान्यधर्मछे छतिअस्तित्व अर्थक्रियावंततेद्रव्यपणो एकपिं-मपणोतेवस्तुत्व इत्यादिकते सर्वद्रव्यपणोछे एटले द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक ए बे-हुमलीनेद्रव्यपणोछे उक्तंच संमतौदव्वापज्जवरहिआ नपज्जावादव्वउविउत्पत्ति एमूलसा-मान्यस्वभावनाछभेद कह्या.

तत्रअस्तित्वं उत्तरसामान्यस्वभावगम्यं तेचोत्तरसामान्य स्वभावाअनंताअपिवक्तव्येनत्रयोदश १ अस्तिस्वभा वः २ नास्तिस्वभावः ३ नित्यस्वभावः ४ अनित्यस्वभा वः ५ एकस्वभावः ६ अनेकस्वभावः ७ भेदस्वभावः ८ अभेदस्वभावः ९ भव्यस्वभावः १० अभव्यस्वभावः ११ वक्तव्यस्वभावः १२ अवक्तव्यस्वभावः १३ परमस्व भावः इत्येवरूपंवस्तुसामान्यानंतमयं

अर्थ ॥ तथावली अस्तित्व उत्तरसामान्यस्वभावकहेछे ते उत्तरसामान्यस्वभावव-स्तुमध्ये अनंताछे पणतेरसामान्यस्वभाव अनेकांतजयपताकादिग्रंथे वखाण्याछे तेमां-थीलेशमात्र लखियेछैयें तेनानामजपरनामूलपाठमां सुलभछे माटे लिख्यानथी तथाए-ना व्याख्यानथी पणजणासे एतेर सामान्यस्वभावें परिणमतिवस्तुहोय.

स्वद्रव्यादिचतुष्टयेनव्याप्यव्यापकादिसंबंधि स्थितानांस्वपरिणामात् परिणामांतरागमनहे तुः वस्तुनःसद्रूपतापरिणतिः अस्तिस्वभावः

अर्थ ॥ तेमां १ प्रथम अस्तिस्वभावनुं लक्षणकहेछे स्वके० पोतानाद्रव्यादिकचार

धर्मतेनोजेमां व्यापकपणोछे १ द्रव्यतेगुणपर्यायना समुदायनो आधारपणो २ क्षेत्रतेप्रदेशरूप सर्वगुणपर्यायनी अवस्थानेराखवापणो जेजेनेराखे तेतेनुंक्षेत्रजाणवुं ३ कालते उत्पादव्यय ध्रुवपणेवर्त्तना ४ नावते सर्वगुणपर्यायनो कार्यधर्म तिहांजीवद्रव्यनुं १ स्वद्रव्यप्रदेशगुणनोसमुदायद्रव्यछे तेगुणपर्यायनो जनकपणो तेस्वद्रव्य अने २ जीवनाअसंख्याताप्रदेशते स्वपर्यायनोस्वक्षेत्रपर्यायतेजाणवा एटले देखवादिकजेगुणनोपर्याय तेनुं जेक्षेत्र तेस्वक्षेत्र ३ पर्यायमध्ये कारणकार्यादिकनो जे उत्पादव्यय तेस्वकाल तथा ४ अतीतअनागत वर्त्तमाननुंपरिणमनतेस्वनाव तेकार्यादिकधर्म जेमज्ञानगुणनो पर्याय जाणंगपणो वेत्तापणो परिछेदकपणो विवेचनपणोइत्यादिक स्वनाव एमस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वनाव जेपरिणामिकपणेपरिणमता तेनीअस्तिताकेवी एसर्वनीछतिछेतेअस्तिस्वनावछे एअस्तिस्वनावें द्रव्यछे तेपोतानोमूलधर्ममूकी अन्यधर्मपणे परिणमतो नथी परिणामांतरे आगमनछे एअस्तिस्वनावते सर्वद्रव्यमां पोतानागुणपर्यायनो जाणवो जेअस्तितेसद्रूपता छतारूपपणानी परिणतिलेवी सर्वद्रव्य पोतानेंधर्मेंजपरिणमें पणजेजीवद्रव्यतें अजीवद्रव्यपणेनपरिणमे तथा एकजीव ते अन्यजीवपणे नपरिणमे वलीएकगुणते अन्यगुणपणेनपरिणमे ज्ञानगुणनेविषे दर्शनादिकगुणनीनास्तिता छे अनेज्ञाननाधर्मनीअस्तिताछे तथा एकगुणनापर्याय अनंताछे तेसर्वपर्यायधर्मेंसरिखा छे पण एकपर्यायनाधर्म बीजापर्यायमांनही अने बीजापर्यायनाधर्म पहेलापर्यायमांनही माटेसर्व पोतानेधर्मेंजअस्तिछे एरीतेंअस्ति नास्तिनुं ज्ञानसर्वत्रकरवुं एद्रव्यनेविषे प्रथमअस्तिस्वनावकह्यो.

अन्यजातीयद्रव्यादीनां स्वीयद्रव्यादिचतुष्टयतयाऽव्यवस्थितानांविवक्षिते परद्रव्यादिकेसर्वदैवानावाविछिन्नानां अन्यधर्माणांव्यावृत्तिरूपोनावः नास्तिस्वनावः यथाजीवेस्वीयाः ज्ञानदर्शनादयोनावाः अस्तित्वेपरद्रव्यस्थिताः अचेतनादयोनावानास्तित्वेसाचनास्तिताद्रव्येअस्तित्वेनवर्तते घटेघटधर्माणां अस्तित्वं पटादिसर्वपरद्रव्याणांनास्तित्वंएवंसर्वत्र

अर्थ ॥ हवेबीजानास्तिस्वनावनुं स्वरूपलखियेंछैयें अन्यके० बीजाजेद्रव्यादिक जे द्रव्यगुणपर्याय तेनापोताना जेद्रव्यक्षेत्रकालनाव तेतेहिजद्रव्यमां सदाअत्रष्टंनपणे परिणमेछे एटले विवक्षित द्रव्यादिकथी परजेबीजाद्रव्यादिकना जेधर्म तें तेमांसदा अनावपणे निरंतरअविछेदछे तेमाटेपरद्रव्यादिकना धर्मनीव्यावृत्तितापणानोजेपरधर्म ते विवक्षितद्रव्यमांनथी एवाद्रव्यमांजेनावछे तेनास्तिस्वनावजाणवो जेमजीवनेविषे

ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेभाव तेतोअस्तिपणेछे अनेपरद्रव्यमां रह्याजेअचेतनादिक भाव तेनीनास्तिताछे एटलेतेधर्मजीवद्रव्यमांनथी माटे परधर्मनी नास्तिताछे पणतेनास्तिता तेद्रव्यमध्ये अस्तिपणेरहीछे जेमघटनाधर्मघटमांछे तेथीघटमां घटधर्मनोअस्तित्वपणोछे पणपटादिसर्वपरद्रव्योनो नास्तित्वपणो ते घटनेविषेरह्योछे तथाजीवमध्ये जीवज्ञानादिकगुण तेअस्तित्वपणेंछे पणपुद्गलनावर्णादिक जीवमध्येनथी माटेवर्णादिकनीनास्ति ते जीवमध्येरहिछे श्रीभगवतीसूत्रेकह्युंछे हेगौतम अछित्वं अछित्तेपरिणमयी नछित्वं नछित्तेपरिणमयी तथाठाणांगसूत्रे १ सियअत्थि २ सियनत्थि ३ सियअत्थिनत्थी ४ सियअवत्तवं एचोभंगीकहीछे अनेश्रीविशेषावश्यकमध्येकह्युंछेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अनेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणेजाणे ते मिथ्यात्वी उक्तंच सदसदविशेषणाउ भवहेउजहछीउवलंभाउ ॥ नाणफलाभावाउ मिछादिठिसअन्नाणं ॥ १ ॥ एगाथानीटीकामध्ये स्याद्वादोपलक्षितवस्तुस्याद्वादश्चसप्तभंगीपरिणामः एकैकस्मिन्द्रव्येगुणेपर्यायेचसप्तसप्तभंगाभवंत्येव अतः अनंतपर्यायपरिणतेवस्तुनिअनंताः सप्तभंग्योभवंति इतिरत्नाकरावतारिकायां तेद्रव्यनेविषे गुणनेविषे पर्यायनेविषे स्वरूपेंसातभंगाहोय जेएसातभंगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहियें.

तथाहि स्वपर्यायैःपरपर्यायैरुभयपर्यायैः सद्भावेनासद्भावेनोभयेनवार्पितोविशेषतः कुंभःअकुंभः कुंभाकुंभोवा अवक्तव्योभयरूपादिभेदोभवति सप्तभंगीप्रतिपाद्यतेइत्यर्थः उंष्ठग्रीवाकपोलकुक्षिबुध्नादिभिः स्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः विशेषतःकुंभकुंभोभण्यते सन्घटइतिप्रथमभंगोभवति एवंजीवः स्वपर्यायैः ज्ञानादिभिः अर्पितः सन्जीवः

अर्थ ॥ एसप्तभंगी परनीअपेक्षायेंनथी तेद्रव्यादिकमध्येजछे यथास्वधर्मेंपरिणमवुं एअस्तिधर्मछे अनेपरद्रव्यनाधर्मेंनपरिणमवुं एनास्तितुंफलछे तेमाटेएसप्तभंगी तेवस्तुधर्मछे तेविशेषावश्यकथी सप्तभंगीलखियेंछैयें एकविवक्षितवस्तु स्वके०पोतानेपर्यायें सद्भावके०छतापणेछे अनेपरपर्यायेंजे अन्यद्रव्यनेपरिणमे तेनो असद्भावके०अछतापणो परिणमेछे तथाजेछता अथवाअछतापर्याय तेनोछतापणोछे कोइकपणे अछतापणोछे माटे छताअछतापणोपण तेजकालेंछे केमके वस्तुमध्ये अनेकधर्मछे तेसर्वेकेवलीने एकसमयें समकालेंभासेछे तेपणवचनेभंगांतरेजकहीशके अनेछद्मस्थने श्रद्धामांतोसर्व धर्म समकालेसद्दहेछे पण छद्मस्थनोउपयोग असंख्यातसमयीछे अनुक्रमेछे पूर्वापरसापेक्षछे तेथीसप्तभंगेभासनछे जेवस्तुमांसमकालेंछे समकेतिनी श्रद्धामां समकालेछे अने

केवलीनाभासनमां समकालेछे तेश्रुतज्ञानीनाभासनमां क्रमपूर्वकछे केमके भाषासर्वक्रमेंकहेवायछे तेथीअसत्यथाय तेनेजोस्यात्पदेंपरुपियेंजाणियें तोसत्यथाय माटेस्यात्पूर्वक सप्तभंगीकहियें द्रव्यगुणपर्याय स्वभावसर्वमध्येछे तेरीतेंसद्दहवी तेदृष्टांतेकरीकहेछे उंछके०होठ गाबरु कांठो कपाल तलो कुक्षिपेटो बुध्र पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घटछतोछे तेघटनेस्वपर्यायें छतापणे अर्पितकरियें तेवारेंते कुंभकुंभधर्में सन्के०छतोछे पणअछतादिकधर्मनी छतिसापेक्षराखवाने स्यात्पूर्वककहेवो एटले स्यात्अस्तिघटः एप्रथमभंगोजाणवो तथाजीवादिद्रव्यनेविषे जीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवद्रव्यनेनित्यादि स्वभावेंकरीने स्यात्अस्तिजीवः एमसर्वद्रव्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाअजीवनो नित्यपणो सरिखोभासे पणतेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजातीद्रव्यछे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणछे तेबीजाजीवमांनथी माटेसर्वद्रव्य स्वधर्मेंज अस्तिछे अने परधर्मेंनास्तिछे एमस्यात्अस्तिजीव एप्रथमभंगजाणवो.

तथापटादिगतैस्त्वक्त्राणादिभिः परपर्यायैरसद्भावेनार्पितः
अविशेषितः अकुंभोभवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर
सत्वविवक्षायामसन्घटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ
सत्जीव इतिद्वितीयोभंगः

अर्थ ॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढांके लांबोपथराय इत्यादिपर्याय ते घटनापर्यायनथी परपर्यायछे पटनेविषेरह्याछे घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिछे तेथी एपर्यायनो असद्भावछे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेंपरपर्यायना अछतापणानीविवक्षायें अछतोघटछे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो जीवमध्येअसत् अछतापणो तेथीजीवपरपर्यायेंनास्तिछे माटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगो जाणवो केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन द्रव्यनेविषेछे.

तथासर्वोघटःस्वपरोभयपर्यायैः सद्भावासद्भावाभ्यांसत्वास
त्वाभ्यामर्पितोयुगपद्वक्तुमिष्टोऽवक्तव्योभवति स्वपरपर्या
यसत्वासत्वाभ्यांएकैकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि
तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाभ्यामे
कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतितृतीयो
भंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुग्रहणपरत्वात्

अर्थ ॥ सर्वघटादिवस्तुछे तेस्वपर्यायजे पोतानासद्भावपर्याय तेणेकरी छतापणे कहेवाय तथा परनेपर्यायें अछतापणकहेवाय तेवारें स्वपर्यायनोछतापणो परपर्यायनोअछतापणो एबेधर्मसमकालेंछे पणएकसमयेंकहेवायनही तेमाटेएघटादिद्रव्यतेस्वद्रव्यमां स्वपर्यायनोसत्वपणो परपर्यायनोअसत्वपणो तेकोइपणएक सांकेतिकशब्दें करी कहेवानेसमर्थनही माटे सत्व अस्तिपणो असत्व नास्तिपणो ते एकसमयेंकहेवामां असमर्थछे तेथीवस्तुस्वभावनाबेधर्म तेएकसमयेंछताछे तेनोज्ञानकरवामाटे स्यात्अवक्तव्य एवचनबोल्या केमके कोइकनेएवोबोधथाय जेसर्वथीवचने अगोचरजछे तेमाटेस्यात्पददीधो स्यात्के०कथंचितपणे कोइकरीतें एकसमयेनकहेवाय माटे स्यात्अवक्तव्यएजीवछे एम सर्वद्रव्यजाणवा एत्रीजोभांगोथयो एत्रणभंगासकलादेशीछे सर्ववस्तुने संपूर्णपणेग्रहेवारूपछे जीवादिकजेवस्तु तेनेसंपूर्णग्रहेवावंतछे.

अथचत्वारोविकलादेशाः तत्रएकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन
अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्चअसंश्चभवति घटोऽघटश्चएवं
जीवोपिस्वपर्यायैःसन् परपर्यायैः असन् इतिचतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचारभांगाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुंस्वरूपकहेवो तेनाएकदेशनेजग्रहे एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे तेवारेंवस्तु सद्असत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअसत् ते माटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकहेवामांअसंख्यातसमयेंछे तेमाटेस्यात्पूर्वकछे एम स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोभांगोजाणवो.

तथाएकस्मिन्देशेस्वपर्यायैः सद्भावेनविवक्षितः अन्यत्र
तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैः सत्वासत्वाभ्यांयुगपदसंकेतिकेनश
ब्देन वक्तुंविवक्षितः सन्अवक्तव्यरूपः पंचमोभंगोभवति
एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायैःसन्शेषैः अवक्तव्यइति

अर्थ ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें स्वद्रव्यादिकें छतापणेगवेषीयें अने अन्यके० बीजादेशोनेविषे स्वपरएबेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें असंकेतपणे नामनेअणकहेगवेषीयें तेवारेंसत्के०अस्तिअवक्तव्यरूप भांगोउपजे अने एभांगाछतांबीजाछभांगाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति अवक्तव्य एपांचमोभांगोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अनेनास्तिपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनआवे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य.

तथाएकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्यै
स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यां युगप
दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ
वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वात्
देशे अवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके०अछतापणे अर्पित करीने मुख्यपणेगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्यायजे नास्तिपर्याय एवे सत्वके०छतापणे असत्वके०अछतापणे युगपत्समकालेकहियें एसंके-तिक शब्दने अभावें कहेवामांनआवे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यात् पदते अन्यभांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटे स्यात्-नास्तिअवक्तव्य एछठोभांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय स-मकालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोभांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप
र्यायै रसद्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैः
सद्भावासद्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षितः
सन्असन्अवक्तव्यश्चभवतिइतिसप्तमोभंगः एतेनएक
स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तभंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशे स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेश परपर्यायने अ-छतापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंभेलारह्याछे पणवचनेकहेवायनही एटलेअ-स्तिपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथायनही ए अपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसा-तमोभांगोजाणवो एसप्तभंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एम एकधर्मनेविषेसप्तभंगीकही.

तत्रजीवःस्वधर्मैज्ञानादिभिःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात्
अस्तिरूपःप्रथमभंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदगृहीताःशेषा
नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंगृहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तभंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक पर्यायनेविषे एकस्वभावनेविषे सातसातभांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंसप्तभंगीकहेछे स्या-

द्वादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योछे एकस्मिन्जीवादौ अनंतधर्मापेक्षासप्तभंगीनामानं- त्यं एवचनथीजाणीलेजो अत्थिजीवे इत्यादिगाथाथीजाणजो एसुयगडांगसूत्रेंछे हवे पेहे- लोभांगोलखियेंछेयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंडगुणपर्यायसमुदाय आधारपणो स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेश ज्ञानादिगुणनुंअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान अनेस्वका- ल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्ययनीपरिणमननोभिन्नस्वभावतथाअनंतज्ञानअनंतदर्शन अ- नंतचारित्र अनंतदान अनंतलाभ अनंतभोग अनंतउपभोग अनंतवीर्य अनंतअव्या- वाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्दव परमआर्जव स्वरूपभोगीप्रमुख स्वस्व- भाव एअनंतज्ञेयज्ञायकपणे जीवद्रव्यछतोछे एमजीवनोज्ञानगुण सधर्म सकलज्ञेयज्ञा- यकपणो स्वशक्तिधर्मे अनंतअविभागें एकएकपर्यायअविभागमां सर्वअभिलाप्य अन- भिलाप्य स्वभावनोजाणगपणोछे इहांविस्तारेंलखियेंछेयें तिहांमतिज्ञानना पर्यायजू- दाछे श्रुतज्ञानना अविभागजूदाछे मनपर्यायज्ञानना अविभागजूदाछे केवलज्ञानना प- र्यायजूदाछे श्रीविशेषावश्यकें गणधरवादनेछेडेकह्योछे जोआवरवायोग्यवस्तुभिन्नछे तो- आवरणजूदाछे तिहांक्षयोपशमनेभेदेंजाणेछे तेपरोक्ष अथवादेशथीजाणेछे सर्वथाआ- वरणगयेथकेप्रत्यक्षजाणे पण केवलज्ञानसर्वभावनोसंपूर्ण प्रत्यक्षज्ञायक तेसंपूर्णप्रगट्यो तेवारेंवीजाज्ञाननीप्रवृत्तिछे पणभिन्नपरूतिनथी माटेतेकेवलज्ञाननो जाणपणोज कहेवा- यछे तथाकोइक ज्ञानगुणना अविभागसर्व एकजातीनाकहेछे तेअविभागमध्ये वरणादि- कजाणवानीशक्ति अनेकप्रकारनीछे तेमांजेआवरणएटले जे शक्तिप्रगटेते शक्तिनुं [illegible]- ज्ञानादि भिन्ननामछे अनेसर्वआवरणगयाथी एककेवलज्ञानरह्युंछे छद्मस्थज्ञाननोभासछे एपणव्याख्यानछे एवोज्ञानगुणपोतानास्वपर्याय ज्ञायक परिछेदक वेतृत्वादिकेंअस्तिछे एमसर्वगुणमां स्वधर्मनी अस्तिताकहेवी तेमजजेअविभागरूपपर्यायछे जेनासमूहनी एक प्रवृत्तिनेगुणकहियेंछेयें तेपणस्वकार्यकारणधर्मे अस्तिछे एमछद्रव्यनुंस्वरूप स्वस्वरूपेंअ- स्तिछे अने अन्यछे भांगापणछेएवोसापेक्षतामाटे स्यात्पददेइनेबोलवो तेस्यात्अस्तिए- प्रथमभांगापणो थयो एटले गवेष्यो जेअस्तिधर्म तेपणनास्तिपणासहितछे एट- ले अस्तिकहेतां थकां नास्ति प्रमुख छभांगानीछतिछे तिहांशब्दसहित उपयोगथयो तेथीसत्यपणो थयो.

तथास्वजात्यन्यद्रव्याणां तद्धर्माणांचविजातिपरद्रव्याणां
तद्धर्माणांच जीवेसर्वथैवअभावात्नास्तित्वंतेनस्यात् ना
स्तिरूपोद्वितीयोभंगः अत्रपरधर्माणांनास्तित्वं नास्तिपदे
नगृहीतं शेषाअस्तित्वादयः स्यात्पदेगृहीताइति

अर्थ॥ हवेबीजोभांगोकहेछे जेएकजीवनुं स्वरूप उपयोगमां आण्याछे तेजीवनेविषे अन्यजे सिद्धसंसारी जीवछेते सर्वना गुणपर्याय अस्तित्वादिप्रमुख सर्वधर्मनीनास्तिछे अने अजीवद्रव्यतथातेना जडतादिकसर्वधर्मनीनास्तिछे जेम अग्निमांदाहकपणोछे तेनी पासे बीजोअग्निनोकणियुंपड्योछेतेपण दाहकछे पणतेदाहकपणोभिन्नछे एटले तेकणीयांनोदाहकपणो ते अग्निमांनथी अने तेअग्निनोदाहकपणो तेकणीयांमांनथी तेमज एकजीवमां ज्ञानादिकगुणछे तेबीजामांनथी अनेबीजाजीवमां जेज्ञानादिकगुणछेते तेमांनथी बाकी सरिखाछेतेमाटेजाणवादिककार्यसरिखाकरे तोपणसर्वमांपोतपोतानागुणछे पणकोइद्रव्यनागुणकोइद्रव्यमांआवतानथी तेमाटे स्वजाति अन्यद्रव्यपणो अन्यगुणपणो तथाअन्यधर्मपणोते सर्वनीनास्तिछे एमजगुणमांपणसर्व अन्यद्रव्यादिकनीनास्तिछे तथापर्यायना अविभागमां पण स्वजातिअविभागकार्यता कारणतानीनास्तिछे तेमाटेपरद्रव्यपणोपरक्षेत्रपणो परकालपणो परभावपणोएनी नास्तिछे एवोनास्तिपणापण तेमांजरह्योछे तेमाटे स्यात्नास्तिपणो एभांगोपणतेमांजछे एमएकज मात्रनास्तिपणोकह्यो थके अस्तिपणो तथाएककालपणोपणछे तथाजीवमांजडतागुणनीनास्तिछे एटलेजडतानीनास्तिते जीवमांजरहीछे इत्यादिकअनंताधर्मनीसापेक्षतामाटे स्यात्पदेंबोलतां सर्वधर्मनोभासन थयो एटलेसत्यता थाय तेमाटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगोकह्यो.

केषांचिद्धर्माणां वचनगोचरत्वेन तेनस्यात्अवक्तव्य इ
तितृतीयोभंगः अवक्तव्यधर्मसापेक्षार्थंस्यात्पदग्रहणं

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभांगोकहेछे जेवस्तुहोय तेमां केटलाकधर्मएवाछे जेवचनेकरी कहेवातानथी तेअवक्तव्यछे तेकेवलीनेज्ञानमांजणायछे पणवचनेकरीतेपणकहीशकेनही तेमाटेतेवाधर्मनीअपेक्षायें वस्तुअवक्तव्यछे एटलेकहेतांथकां वक्तव्यनीनाथयीपणकेटलाकधर्मवस्तुमध्येवक्तव्यछे तेजणाववामाटे स्यात्पदग्रहणकरीने स्यात्अवक्तव्य एत्रीजोभांगोकह्यो.

अत्रअस्तिकथने असंख्येयाः नास्तिकथनेप्यसंख्येयाः
समयावस्तुनिएकसमये अस्तिनास्तिस्वभावौ समकवर्त्त
मानौ तेनस्यात्अस्तिनास्तिरूपश्चतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचोथोभांगोकहेछे जेअस्तिएवोशब्द उच्चारकरतांपणअसंख्यातसमयथाय तथानास्तिएशब्द उच्चारकरतांपण असंख्यातसमयथाय अनेवस्तुमांतो अस्तिधर्मनास्तिधर्मएबेहुएकसमयमांछे तेबेहुसमकालेंजणाववामाटे अनेजेअस्ति ते नास्तिनथाय तथाजेनास्ति ते अस्ति नथाय तेसापेक्षतामाटेस्यात्अस्तिनास्तिएचोथोभांगोजाणवो.

तत्रअस्तिनास्तिभावाःसर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्तिअवक्तव्य
इतिपंचमोभंगः स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ठः

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा छठोभांगोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य एमकहेवाथी द्रव्य तेमूलधर्मेंएकलो अवक्तव्यथयो तेसंदेहनिवारवाने कह्योजे स्यात्अस्तिअवक्तव्य वस्तुमांअनंताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणछे तेनासापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्यः एपांचमोभांगोजाणवो. एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्यः एछठोभांगोजाणवो.

अत्रवक्तव्याभावाः स्यात्पदेगृहीताः अत्रअस्तिभावावक्तव्या
स्तथाअवक्तव्याः तथानास्तिभावावक्तव्याअवक्तव्याःएकस्मिन्
वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यात्अ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोभंगः अत्र वक्तव्याभावास्तेस्या
त्पदेसंगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिधर्मानास्तित्वेननास्तिधर्मा
युगपदुभयस्वभावत्वेनवक्तुमशक्यत्वात्अवक्तव्यः स्यात्पदेच
अस्त्यादीनामेवनित्यानित्याद्यनेकांतसंग्राहकं

अर्थ ॥ हवे सातमोभांगोकहेछे इहांअस्तिभावपणोवक्तव्यछे तेमजनास्तिभावपणवक्तव्यछे अने अवक्तव्यपणछे एसर्वेधर्मेएकसमयमां एकवस्तुमध्ये तथाएकगुणमध्ये तथाएकपर्यायमध्ये समकालेंपरिणमेछे तेजणाववामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्यः एसातमोभांगो इहांअस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्य नथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणाववानेअर्थे स्यात्पदग्रह्योछे इहांअस्तिपणेजेभावछे तेअस्तिधर्म अनेनास्तिपणेजेभावछे तेनास्तिपणेग्रह्याछे बेहु समकालेछेतेमाटे एकसमय वक्तव्यके०कहेवामांअशक्यछे असमर्थछे तेथीअवक्तव्यके०अगोचरपणेछे अनेजेस्यात्पदछे तेअस्तिधर्म नास्तिधर्म अवक्तव्यधर्मेनोनित्यपणो अनित्यपणोप्रमुख अनेकांतनोसंग्रहकरेछे जेअस्तिधर्मछे तेनित्यपणेपणछे तथाअनित्यपणेपणछे एकपणेछे अनेकपणेछे भेदपणेछे अभेदपणेछे इत्यादिक तेअस्तिधर्ममांअनेकांतताछे तेनेग्रहेछे केमके वस्तुनोएकगुण तेमांअस्तिपणोछे नास्तिपणोछे नित्यपणोछे अनित्यपणोछे भेदपणोछे अभेदपणोछे वक्तव्यपणोछे अवक्तव्यपणोछे भव्यपणोछे अभव्यपणोछे एअनेकांतपणो एहजस्याद्वादछे तेनुंसंकेतिकवाक्य तेस्यात्पदछे एरीतेजाणवो.

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तितताछे स्वगुणनोपरिणमवो अनित्यछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडरूपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे तथाआत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेजवनधर्मछे तोपणआत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअजवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे एरीतेषट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान जासनथाय तेसम्यक्ज्ञान सम्यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परजोक्ता परग्राहकता टालवानाउपायनुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूलधर्मेंरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचिउद्यमपणोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्‌अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्‌अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिजावाअ
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तजंगाः एवंनित्यत्व
सप्तजंगी अनित्यत्वसप्तजंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तजंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात्‌अस्ति स्यात्‌नास्ति स्यात्‌अवक्तव्य एत्रणजांगा वस्तुनासंपूर्ण रूपनेग्रहे माटेसकलादेशीछे अने शेषरह्याजेचारजांगा तेविकलादेशीछे तेवस्तुनाएकदेशनेग्रहेमाटे. तथावलीअस्तिपणानेविषेजेअस्तिपणो तेनास्तिपणेनथी अनेनास्तिपणोनास्तिपणेछे तेमांअस्तिपणोनथी इहांकोइपुछेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अस्तिपणे कह्योछे तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेनास्तिपणोतेअस्तिछे छतापणेछे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनथी माटेनाकहीछे छतिनीनाकहीनथी तथाएमज नित्यपणानीसप्तजंगी तथा अनित्यपणानीसप्तजंगीतेमज सामान्यधर्मसर्वेनी जिन्नजिन्नसप्तजंगी तथासर्वेविशेषधर्मनीसप्तजंगी तेमजगुणपर्यायसर्वेनी जूदीजूदी सप्तजंगी कहेवी तद्यथाके०तेकहीदेखाडेछे.

ज्ञानंज्ञानत्वेनअस्तिदर्शनादिजिः स्वजातिधर्मैः अचेत
नादिजिः विजातिधर्मैः नास्ति एवंपंचास्तिकायेप्रत्यस्ति
कायमनंतासप्तजंग्योजवंति अस्तित्वाजावेगुणाजावात्‌प
दार्थेशून्यतापत्तिः नास्तित्वाजावेकदाचित् परजावत्वेन
परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगेसत्तास्फु

रति तथाअसत्तायाअपिस्फुरणात्पदार्थानामनियताप्र तिपत्तिः तत्वार्थेतज्ञावाव्ययंनित्यं ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनीसप्तजंगीकहीदेखाडेछे जेमज्ञानगुण ज्ञायकादिकगुणेअस्तिछे अनेदर्शनादिकस्वजातिएकद्रव्यव्यापिगुण तथास्वजातिजिन्नजीवव्यापि ज्ञानादिकसर्वेगुण अनेअचेतनादिक परद्रव्यव्यापि सर्वेधर्मेनीनास्तिछे एमपंचास्तिकायनेविषे अस्तिकायें अनंतिसप्तजंगीउपामे एसप्तजंगी स्याद्वादपरिणामेंछे तेसर्वेद्रव्यादिकमांछे.

हवे वस्तुमध्येअस्तिपणोनमानियें तोस्योदोषउपजेतेकहेछे जोवस्तुमांअस्तिपणो नमानियें तोगुणपर्यायनोअजावथाय अनेगुणनाअजावें पदार्थशून्यतापणो पामे.

तथाजोवस्तुमध्ये नास्तिपणोनमानियेंतो तेवस्तुकदाकालें परवस्तुपणें अथवा परगुणपणें परिणमिजाय तेथीकोइवारे जीवतेअजीवपणोपामे अनेअजीवतेजीवपणोपामे तोसर्वसंकरतादोषउपजे तथा व्यंजनके॰प्रकटतानोहेतु तेनेयोगेंछतोधर्म तेफुरे पण जेधर्मेनीसत्ताछतिनहोय तेफुरेनही जोनास्तिपणोनमानियें तोअसत्तापणेफुरे अनेजेवारेंअसत्तास्फुरे तेवारेंद्रव्यनो अनियामकके॰अनिश्चयपणोथइजाय तेमाटेसर्वेजाव अस्तिनास्तिमयीछे व्यंजकतानोदृष्टांतकहेछे जेमकोराकुंजामांसुगंधतानीसत्ताछे तोज पाणीनेयोगेंवासनाप्रगटेछे जोवस्त्रादिकमांतेधर्मेनथी तोतेमांप्रगटतोपणनथी एमसर्वत्रजाणवो हवेत्रीजोनित्यस्वजावकहेछे तेजेवस्तुनाजावतेनो अव्ययके॰नहीटलवो एटलेतेमनोतेमजरहेवो तेनित्यपणोकहियें तेनाबेजेदछेतेकहेछे.

एकाअप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा द्रव्याणांऊर्ध्वप्रचयतिर्यग्प्रचयत्वेनतदेवद्रव्यमितिध्रुव त्वेननित्यस्वजावःनवनवपर्यायपरिणमनादिजिः उत्पत्ति व्ययरूपोनित्यस्वजावः उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्यं ॥

अर्थ ॥ एकअप्रच्युतिनित्यता बीजीपारंपर्यनित्यता तिहां अप्रच्युतिनित्यतातेनेकहियें जेद्रव्यतेऊर्ध्वप्रचय तिर्यक्प्रचयनेपरिणमवे एद्रव्यतेहिज एध्रुवतारूपज्ञानथायछे एटलेसदासर्वदा त्रणेकालेतेहिज एवुंजेज्ञानथायछे जेमूलस्वजावपलटेनही ते अप्रच्युतिनित्यताकहियें अनेएनित्यतामांजे ऊर्ध्वप्रचयकह्यो तेउलखावेछे जेपहेले समयें द्रव्यनीपरिणतिहती तेबीजेसमयेंनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें सर्वपर्यायनी परावृत्तिथइ तोपणएद्रव्यतेनुंतेज एवुंजे ज्ञानथायते द्रव्यमांऊर्ध्वप्रचयकहियें उपरले कांसयेतेमाटेऊर्ध्वप्रचयकहियें.

तथाअनंताजीवसरिखाछे पणसर्वेभिन्नभिन्नछे पणसर्वेजीवजाणताए पणजीवएत्वो जीवत्वसत्तायेंतुल्यभिन्नजीवसत्तारूपज्ञान थाय तेतिर्यक्प्रचयकहियें.

ऊर्ध्वप्रचय ते समयांतरे अनेकउत्पादव्ययनेपलटवे पणएजीवते तेजछे एवुंज्ञान थाय एनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो एकारणथीकार्यउपनो तेनुंज्ञानथाय तेनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो तथाएकारणथीजेकार्यउपनो वलीज्ञानथयुं तेकारणथीबीजेकारणेंबीजुं कार्यथाय एमनवेनवेकार्यउपने पणजीवतेजछे एवुंजेज्ञानथाय परंपरारूपसंततिचाली जाय तेपारंपर्यनित्यताकहियें जेमप्रथम शरीरनेकारणेंरागहतो तेहिज वस्त्रधननेकारणप्रतेरागथयो तेकारणनवारागनोनवापणोपणरागरहितआत्माकेवारे नही एपारंपर्य एटले परंपरानित्यताकहियें बीजुंनामसंततिनित्यताजाणवी तेकारणयोगेनिमित्तेंनीपजे नवानवापर्यायनेपरिणमवे एटले पूर्वपर्यायनेव्ययथवे तथाअभिनवपर्यायनेउपजवे अनित्यस्वभावजाणवो एटलेउत्पत्तिके० उपजवो व्ययके० विणसवो एवोजेस्वभाव ते अनित्यस्वभाव जाणवो.

तत्रनित्यत्वंद्विविधं कूटस्थंप्रदेशादीनां परिणामित्वं ज्ञानादिगुणानां तत्रोत्पादव्ययावनेकप्रकारौ तथापिकिंचिल्लिख्यते विस्रसाप्रयोगजभेदात्द्विभेदोसर्वद्रव्याणांचलनसहकारादिपदार्थक्रियाकारणंभवत्येव ॥

अर्थ ॥ तिहांवलीग्रंथांतरे नित्यपणोवेप्रकारेकह्योछे एककूटस्थनित्यता बीजीपरिणामिनित्यताछे जीवनाअसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाक्षेत्रावगाह पलटतोनथीते तथागुणनोअविभाग तेसर्वकूटस्थनित्यताछे.

ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंछे केमकेगुणनोधर्मजएछे जेसमयेंसमयेंस्वकार्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय तेपरिणामिकंपणेजहोय एनीतिजछे अने जोज्ञानगुणने कूटस्थनित्यतापणेमानियें तोपेहेलेसमयेंजे ज्ञानेकरीजाण्यो तेहिज जाणपणो सदासर्वदारहे पणतेमतोनथी ज्ञेयतोनवनवीरीतें परिणमतादेखायछे तो तेज्ञेयनीनवनवी अवस्थाज्ञानजाणेनही एटलेपहेलेसमयजेरीते ज्ञानपरिणमेछे तेरीतें परिणमनजोवुंजोईयें अनेएरीतें ज्ञानयथार्थथयुं एमघटे नहीं तेमाटे ज्ञेयजे घटपटादिक तेजेमपलटेछे तेमज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थथाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयजाणवामाटे परिणामीजाणवो अनित्यज्ञायकताशक्ति माटेनित्य एरीतें नित्यानित्यस्वभावी सर्वगुणछे सर्व द्रव्यनेविषेपोतानीक्रियानुंकारणथायजछे.

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यंधर्मास्तिकायं द्रव्यस्यप्रतिप्रदेशस्थच लनसहकारिगुणाविन्नागाः उपादानकारणंकारणस्यैवकार्यपरिण मनात् तेनकारणत्वपर्यायव्ययः कार्यत्वपरिणामस्योत्पादः गुण त्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमयंकारणस्यापि उत्पादव्ययौ कार्यस्याप्युत्पा दव्ययावित्यनेकांतजयपताकाग्रंथे एवंसर्वद्रव्येषुसर्वेषांगुणा नांस्वस्वकार्यकारणताज्ञेया इतिप्रथमव्याख्यानं ॥

अर्थ ॥ तिहांजेमधर्मास्तिकायद्रव्यनो चलणसहकारीपणो तेमुख्यकार्यछे अने अधर्मास्तिकायद्रव्यनो स्थिरसहायी तेमुख्यकार्यछे वलीआकाशद्रव्यनुंअवगाहनादान तेमुख्यकार्यछे जीवनोजाणवा देखवारूपउपयोगतेमुख्यकार्यछे पुद्गलनोवर्णगंधरसस्पर्शपणो तेमुख्यकार्यछे इत्यादिस्वकार्यनोथावुंछे तेजिहांथावुं तिहां नवनधर्मथयो अने जिहांनवनधर्म तेउत्पादथयो अनेउत्पादहोय तेव्ययसहितजहोय तेनवनधर्म तत्वार्थग्रंथमध्येकह्योछे हवेतेउत्पादव्ययबेप्रकारनाछे एकप्रयोगथीथाय अनेबीजो विश्रसाके० सहजेपरिणामीधर्मेथाय हवेइहांसहजनो उत्पादव्ययकहेछे तिहांधर्मास्तिकायादि छद्रव्यने पोतापोताना चलणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थक्रियानोकरवो थायज अनेचलणसहकारपणोतेकार्य धर्मास्तिकायद्रव्यने प्रतिप्रदेशें रह्यो जे चलणसहकारीगुणाविन्नाग तेउपादानकारणछे तेहिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले कारणपणानोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज अधर्मास्तिकायनेविषे थिरसहायगुणनुं प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण अवगाहनागुणनुं प्रवर्त्तन एमजछे वलीपुद्गलमां पूरणगलनादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे तेमजजीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे अथवावली अनेकांतजयपताकाग्रंथनेविषेएमपणकह्युंछे जेप्रतिसमयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकारणपणानोपण उत्पादव्ययछे तेमजप्रतिसमयें कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे एटलेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे एमसर्वद्रव्यने विषे सर्वगुणनो कार्यपणो कारणपणो उपजे विणसेछे एम उत्पादव्ययनो एक स्वरूप प्रथम नेद कह्यो.

तथाचसर्वेषांद्रव्याणांपारिणामिकत्वं पूर्वपर्यायव्ययः नवप र्यायोत्पादःएवमप्युत्पादव्ययौ द्रव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिद्वितीयः

अर्थ ॥ सर्वधर्मछेतेपरिणामिकन्नावेंछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उत्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेंछे अनेद्रव्यपणोध्रुवछे ए बीजो नेद.

प्रतिद्रव्यंस्वकार्यकारणपरिणामनपरावृत्तिगुणप्रवृत्तिरूपाप रिणतिः अनंताअतीता एकावर्त्तमाना अन्याअनागतायो ग्यतारूपाः तावर्त्तमानाअतीताभवंति अनागतावर्त्तमानाभ वंति शेषाअनागताकार्ययोग्यतासन्नतांलभंते इत्येवंरूपावु त्पादव्ययौ गुणत्वेनध्रुवत्वं इतितृतीयः अत्रकेचित्काला पेक्षया परप्रत्ययत्वंवदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्या यत्वेनैवागमेउक्तत्वात् इयंपरिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात्स प्रत्यक्षं एवंतथाकालस्यभिन्नद्रव्यत्वेपिकालस्यकारणताअ तीतानागतवर्त्तमानभवनंतुजीवादिद्रव्यस्यैवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यनेविषे स्वके० पोतानुंकारण परिणमन परावृत्तिके० पलटणपणेगुणनीप्रवृत्तिरूप परिणमनछे ते परिणतिअनंति अनंतजातिनी अतीतकालेंथइछे अने अनंतिजातिनी एकवर्त्तमानकालेंछे अनेबीजीअनागतयोग्यतारूपपणे अनंतिछे ते वर्त्तमानपरिणतिते अतीतथायछे एटले तेपरिणतिमध्ये वर्त्तमानपणानोव्यय अने अतीतपणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेध्रुवछे अनेअनागतपरिणति तेवर्त्तमानथायछे तिहां अनागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानोउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनागतकार्ययोग्यता तेदूरहताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अने नजीकतानोउत्पाद तथाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्व द्रव्यनेविषेअतीतवर्त्तमान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एद्रव्यनेविषेस्वकालरूप परिणमन छे एउत्पादव्ययनोत्रीजोभेद जाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके कालद्रव्यजेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वकालरूपवस्तुनोपरिणाम तेनोभेदछे अथवाकालनेभिन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेकारणपणे छे अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेए उत्पादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोभेदथयो.

तथाचसिद्धात्मनिकेवलज्ञानस्ययथार्थज्ञेयज्ञायकत्वात्य थाज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथाघटपटादिरूपावापरिणमं तितथैवज्ञाने भासनात् यस्मिन्समयेघटस्यप्रतिभा

सः समयांतरेघटध्वंसेकपालादिप्रतिभासः तदाज्ञानेघटा प्रतिभासध्वंसः कपालप्रतिभासस्योत्पादः ज्ञानरूपत्वे नध्रुवत्वमितितथाधर्मास्तिकायेयस्मिन्समयेसंख्येयप- रमाणूनांचलनसहकारिता अन्यसमयेअसंख्येयानां ए वंसंख्येयत्वसहकारिताव्ययः असंख्येयानंत सहका रिताउत्पादः चलनसहकारित्वेन ध्रुवत्वं एवमधर्मादि ष्वपिज्ञेयं एवंसर्वगुणप्रवृत्तिषु इतिचतुर्थः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमजवलीसिद्धात्मानेविषे केवलज्ञानगुणनीसंपूर्णप्रगटताछे तेय- थार्थजेकालें जेज्ञेयजेमपरिणमे तेकालेंतेमजजाणे एहवोज्ञेयनोज्ञायक तेकेवलज्ञानछे जेमधर्मादिद्रव्य तथाघटपटादिज्ञेयपदार्थ जेरीते परिणमे तेरीतेज केवलज्ञानजाणे ते जेसमयेघटज्ञानहतुं तेसमयांतरे घटध्वंसथये कपालनुंज्ञानथाय तेवारेंघटप्रतिभासनोध्वं- सकपालप्रतिभासनोउत्पाद अनेज्ञाननोध्रुवपणो एमदर्शनादि सर्वगुणनोप्रवर्त्तनजाणवो.

तथाधर्मास्तिकायनेविषे जेसमयेसंख्यात परमाणुनो चलनसहकारीपणो हतो फ- रीसमयांतरे असंख्यात परमाणुने चलनसहकारी पणोकरे तेवारें संख्याता परमाणुचल- नसहकारतानोव्यय अनेअसंख्येयपरमाणुने चलनसहकारतानो उत्पाद अनेचलनस- हकारीपणेध्रुवछे एमजअधर्मास्तिकायादिकनेविषे पण सर्व गुणनीप्रवृत्तिथायछे एरी- तेएकद्रव्यनेविषेअनंतागुणनीप्रवृत्तिछे इहांकोइपुछशे जेधर्मास्तिकायमध्ये अनंताजीव तथाअनंता परमाणु ते चलणसहकारीथाय एटलोचलनसहकारीछे तोथोडाजीव अ- नेथोडा परमाणुनें चलणसहकारकरतां बीजोगुणकयोअणप्रवर्त्यो रह्यो एमकहे तेनेउत्तर के निरावरणजेद्रव्यछे तेनोगुणअणप्रवर्त्यो रहेजनही अनेजीवपुद्गलजे आवी पहोता तेने सहकारेंसर्व चलनसहकारीगुणना पर्यायते प्रवर्तेजछे केमकेअलोकाकाशमध्ये जोअव- गाहकजीवपुद्गलनथी तोपण अवगाहकदान गुणतोप्रवर्त्तेजछे तेमधर्मास्तिकायादिकमां जीवपुद्गलथोडाने पोचवे पणगुणतोबधो प्रवर्त्तेजछे एमधारवो एरीतेंगुण पर्यायनो उ- त्पादव्यय ध्रुवरूपधर्मकहेवो एचोथुंरूपकह्युं.

तथासर्वेपदार्थाः अस्तिनास्तित्वेनपरिणामिनः तत्रास्ति भावानांस्वधर्माणां परिणामिकत्वेनउत्पादव्ययौस्तः नास्ति भावानांपरद्रव्यादीनांपरावृत्तौ नास्तिभावानांपरावृत्तित्वेना प्युत्पादव्ययौ ध्रुवत्वंच अस्तिनास्तिरूपौ इतिपंचमः

अर्थ ॥ तथासर्वद्रव्यमांअस्तितथानास्ति ए बे स्वन्नावपरिणमिरह्याछे तिहांजेअस्ति-स्वन्नावछे तेस्वद्रव्यादिकनोछे ते जेवारेंज्ञानगुण घटजाणतोहतो तेवारें घटज्ञाननीअ-स्तिताहती अनेतेजघटध्वंस थये कपालज्ञानथयुं तेवारें घटज्ञाननीअस्तितानो व्यय थयो अने कपालज्ञाननी अस्तितानोउत्पादथयो एरीतेंअस्तितानोउत्पादव्ययछे तेज रीतेंनास्तितानोपणउत्पादव्ययजाणवो जेपहेलीघटनास्तिताहती तेपछेघटध्वंसेंकपाल-नास्तिताथयी एमपरद्रव्यनेपलटवे नास्तितापलटेछे तेस्वगुणनेपरिणामिक कार्यनेपल-टवेकरीनेअस्तितापलटेछे अनेजिहांपलटवापणो तिहांउत्पादव्ययथायज एमद्रव्यमां सामान्यस्वन्नाव सर्वधर्मछे तेमां जेमसंन्नवेतेम श्रीप्रन्नुनीआज्ञायें उपयोगदेइने उत्पा-दव्ययपणोकरवो अने अस्तिनास्तिपणे ध्रुवछे एपांचमोअधिकारकह्यो.

तथापुनःअगुरुलघुपर्यायाणां षड्गुणहानिवृद्धिरूपाणांप्र तिद्रव्यंपरिणमनात् नानाहानिव्ययेवृध्युत्पादः वृद्धिव्यये हान्युत्पादः ध्रुवत्वंचागुरुलघुपर्यायाणां एवंसर्वद्रव्येषुज्ञेयं तत्वार्थवृत्तौआकाशाधिकारेयत्राप्यवगाहकजीवपुद्गलादिर्ना स्ति तत्राप्यगुरुलघुपर्यायवर्त्तनयावश्यत्वेचानित्यताभ्युपेया तेचअन्येअन्येचन्नवंति अन्यथातत्रनवोत्पादव्ययौनापेक्षि कावितिन्यूनं एवंसल्लक्षणंस्यात् इतिषष्ठः ॥

अर्थ ॥ तथाकेंतेमज वलीसर्वद्रव्यतथापर्याय ते अगुरुलघुधर्मै संयुक्तहोय द्रव्य-नेप्रदेशें अगुरुलघुअनंतोछे तेअगुरुलघुसमयेंसमयें प्रदेशें तथापर्यायें कोइकवारेंवृद्धि पामे कोइकवारेंघटीजाय तेवधुघटुथवोछप्रकारेंछे १ अनंतन्नागहानि २ असंख्यातन्ना-गहानि ३ संख्यातन्नागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगु-णहानि एछप्रकारेंहानि तथा १ अनंतन्नागवृद्धि २ असंख्यातन्नागवृद्धि ३ संख्यातन्ना-गवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एछप्रकारनीवृद्धि तेसर्वद्रव्यनासर्वप्रदेशें सर्वपर्यायमांथाय एकप्रदेशमां कोइकसमयेंवधेछे कोइकसमयें घटेछे जेम परमाणुमांवर्णादिक वधेघटेछे तेमअगुरुलघुपणोपण वधेघटेछे हानिनोव्ययछे तोवृद्धिनोउत्पादछे अथवावृद्धिनोव्ययछे तोहानिनोउत्पादछे पणअगुरुलघुध्रुवनोध्रुवछे एमसर्वद्रव्यनेविषेजाणवो तिहांतत्वार्थटीकामां आकाशद्रव्यनें अधिकारेंकह्युंछे तेल-खियेंछैयें जिहांअलोकाकाशमध्ये अवगाहकजीवपुद्गलादिकद्रव्यनथीतिहांपण अगु-रुलघुपर्यायवंतपणो अवश्यछे तेअगुरुलघुनीअनित्यता अवश्यअंगीकारेछे अनेतेअगुरु-

लघु तेपर्यायें तथाप्रदेशें अन्यअन्यके०वीजोवीजोथायछे एटलेपूर्वसमयें अगुरुलघुनो व्यय अनेबीजेसमयें नवाअगुरुलघुनो उत्पादछे जोएरीतेनवोउत्पादव्यय गवेषियेनही तोअलोकाकाशनेंविषे सतुलक्षण न्यूनकें०उंछेोपरू जेउत्पादव्ययध्रुवतासंयुक्ततेसत्क-हियें अनेजेद्रव्यहोयतेसत्पणासंयुक्तजहोय माटेअगुरुलघुनापरिणमन सर्वद्रव्यमांस-र्वपर्यायमां सर्वप्रदेशमांछे एअगुरुलघुनो उत्पादव्ययकह्यो एछठोअधिकारथयो.

तथाभगवतीटीकायां तथाच अस्तिपर्यायतःसामर्थ्यरूपा विशेषपर्यायास्तेचानंतगुणास्तेप्रतिसमयंनिमित्तभेदेनपरावृ त्तिरूपाः तत्रपूर्वविशेषपर्यायाणांनाशः अभिनवविशेषपर्या याणामुत्पादपर्यायवत्वेध्रुवत्वं इत्यादिसर्वत्रज्ञेयं इतिसप्तमः

अर्थ ॥ तेमजवली अस्तिपर्यायथी विशेषपर्यायजे सामर्थ्यरूप तेअनंतगुणाछे एभ-गवतीसूत्रनीटीकामध्येकह्योछे जेअस्तिपर्याय तेज्ञानादिकगुणनाअविभागरूपपर्यायछे जेपर्यायपर्यायमांसर्वज्ञेयजाणवानुं सामर्थ्यछे तेविशेषपर्यायछे तथामहाभाष्ये यावंतोज्ञे-यास्तावंतोज्ञानपर्यायाः एसामर्थ्य पर्यायगवेष्याछे एसामर्थ्यपर्याय तेज्ञेयनें निमित्तेछे तेज्ञेयतोअनेकउपजेछे नेअनेकविणशेछे तेवारेंविशेषपर्यायपणपलटेछे तेप्रतिसमयें नि-मित्तभेदनी परावृत्तिपलटवेथी पूर्वविशेषपर्यायनाशथाय तथाअभिनवविशेषपर्यायनो उपजवोछे अनेपर्यायनीअस्तिताध्रुवछे एमगुणपर्यायनोउत्पादव्ययध्रुवपणो ते सात-मोछे ए अस्तिनास्तिस्वभाव वखाण्या.

नित्यताऽभावेनिरन्वयताकार्यस्यभवति कारणाभावताच भवति अनित्यतायाअभावेज्ञायकतादिशक्तेरभावः अर्थ क्रियासंभवः तथासमस्तस्वभावपर्यायाधारभूतभव्यदेशा नांस्वस्वक्षेत्रभेदरूपाणामेकत्वपिंडीरूपापरत्यागः एकस्व भावः क्षेत्रकालभावानांभिन्नकार्यपरिणामानांभिन्नप्रभाव रूपोनकस्वभावः एकत्वाभावेसामान्याभावः अनेकत्वाभा वेविशेषधर्माभावः स्वस्वामित्वव्याप्यव्यापकताप्यभावः

अर्थ ॥ एमज सर्वद्रव्यमांनित्यता तथाअनित्यताछे एनित्य अनित्यपणाविनाद्र-व्यकोइनथी जोद्रव्यमांनित्यतानहोयतो कार्यनोअन्वयकोनेहोय एटलेअमुककार्यते अमुकद्रव्यें कर्यो एमकह्योजायनही माटेद्रव्यमांनित्यतामानवाथीज अमुकद्रव्ये-अमुककार्यकर्यो एमकहेवायछे माटे जोद्रव्यनेनित्यपणेजमानियें तोगुणनुंकार्य तेद्र-

व्यनोकहेवाय अनेगुणतेद्रव्यनकहेवाय अनेजोद्रव्यनित्यहोय तोकारणपणानो अभाव थाय माटेद्रव्यमां नित्यतामानवी अनेजोद्रव्यमांअनित्यपणोनमानियेंतो जाणंग आदेदेइनें सर्वद्रव्यना गुणरूपकार्यनो अभावथइजाय अर्थक्रियासंभवेनही एटलेकोइक अनित्यपणोहोय तोअर्थक्रियानेकरे केमकेकरवापणोकोइकबीजापणो एटलेनवापणो निपजाववो तेपूर्वपर्यायनो ध्वंसथयेथीथाय अनेतेएकनोध्वंस अनेकोइकबीजा नवानोनीपजवो तेद्रव्यमांअनित्यपणोछे एटलेनित्यस्वभाव तथा अनित्यस्वभाव उलखाव्या हवेएकस्वभाव तथाअनेकस्वभाव उलखावेछे.

तथाके० तेमज समस्तके० सर्वजेस्वभाव अस्तित्व प्रमेयत्व अगुरुलघुआदिक समस्तपर्याय गुणाविभागादिक तेसर्वनुंआधारभुतक्षेत्र तेप्रदेशछे ते स्व के० पोतानाजेक्षेत्र तेसर्वभेदरूप जुदाजुदाछे एटलेसंख्याताप्रदेश भिन्नछे पणतेएकपिंडपणो किवारेंतजतानथी सर्वप्रदेशमां अंतरालक्षेत्रपणो कोईवारेंपामतोनथी जेअनंतास्वभाव अनंतपर्याय तेअसंख्यातप्रदेशरूप तेनुंप्रमाणफिरतुंनथी एवोजेद्रव्यनेविषे समुदायपिंडपणो रहेछे तेएकस्वभावकहियें तेपंचास्तिकायमध्ये १ धर्म २ अधर्म ३ आकाश एत्रणद्रव्यएकेकछे अनेजीवद्रव्यअनंताछे तेथीपुद्गलपरमाणु अनंतगुणाछे तेएकजीव अनेक रूपनवनवाकरे पण अंतरपडेनही तेमाटे द्रव्यमध्येएकस्वभावछे.

क्षेत्रअसंख्यातप्रदेश कालउत्पादव्ययरूप भावपर्याय गुणनाअविभागते पोताना भिन्नकार्य परिणामीछे तेसर्वनोभिन्नप्रवाहछे एटलेसर्वनो कार्यपणोभिन्नछे तेमाटेद्रव्यने सर्वस्वभावपर्यायभेदें विचारतांद्रव्यमां अनेकस्वभावपणछे. जोवस्तुमां एकपणानो अभावमानियें तोसामान्यपणोरहेनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामी आधारते कोण थाय अनेआधारविनागुणादिआधेयते क्यांरहे तेमाटेद्रव्यनो एकपणोछे. जोवस्तुमां अनेकपणोनमानियें तो द्रव्यतेविशेषरहितथईजाय तेथीगुणनोअनेकपणो शीरीतेद्रव्यने विषे पामियें माटें द्रव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणछे तथास्वस्वामिव्याप्य व्यापकभाव केमछेरे जेगुणपर्याय ते स्व के० धनअनेद्रव्यतेतेनोस्वामीछे अथवा द्रव्यतेव्याप्य अने गुणपर्यायते व्यापकछे एरीते द्रव्यमां एकस्वभाव तथाअनेकस्वभाव जाणवा.

स्वस्वकार्यभेदेन स्वभावभेदेन अगुरुलघुपर्यायभेदेनभेदस्वभावः अवस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः भेदाभावेसर्वगुणपर्यायाणां संकरदोषः गुणगुणीलक्षलक्षणः कार्यकारणतानाशः अभेदाभावेस्थानध्वंसः कस्यैतेगुणाःकोवागुणीइत्याद्यभावः

अर्थ ॥ स्वस्वके० पोतपोताना कार्यनेभेदेंकरी एटले जीवद्रव्यमां ज्ञानगुण तेजा-

णवानुंकार्यकरे अनेदर्शनगुण देखवानुंकार्यकरे तथाचारित्रगुण थिरतारमणतारूप कार्यकरे तथापुद्गलद्रव्य ते रूपपणोभिन्नकार्यकरे तथावर्णपणो गंधपणो रसपणो अने स्पर्शपणो सर्वेकार्यभिन्नछे तथास्वभावभेदते अस्तिस्वभावछतिरूपछे नित्यस्वभाव अविनाशीपणोछे अनित्यपणोते पलटणरूपछे एकपणोतेपिंडरूपछे अनेकपणोते प्रदेशादिकछे इत्यादि स्वभावभेद तथाअगुरुलघुपर्याय प्रदेशेंगुणाविभागें जूदोजूदोछे कोईकोईनोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपपरिणमनछे इत्यादि प्रकारे द्रव्यमांभेदस्वभावछे.

तथा सर्वधर्मनो अवस्थानके० रेहेवो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाके० सरिखापणोकेवारें भिन्नपडतोनथी तेमाटेंद्रव्यमां अभेदस्वभावछे.

जोद्रव्यगुणपर्यायमांभेदस्वभावनहोयतो सर्वसंकरएकपणोथाय तेवारें कार्यनो भेद केमपडे तेमाटे सर्वद्रव्यगुणपर्यायमां भेदसर्वभावछे. जीवतेचेतनालक्षणवंत अजीवते चेतनारहित एभेदछे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायद्रव्यते चलणसहकारनेंकरेछे पणबीजाअजीवद्रव्यतेएकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरसहायगुणनेंकरेछे आकाशअवगाहदाननेंकरेछे पुद्गलरूपी आवरणस्कंधादिकपरिणमनकरेछे एमसर्वद्रव्यनेंभेदछे तोजभिन्नभिन्नद्रव्यकहेवायछे इहांकोइकहेशेके जीवअनंतातेतोसरिखाछे तोसर्वजीवनें एकद्रव्यशावास्तेनकह्यो तेनेउत्तरजेरूपैया सोनारूपापणे अथवा धवलापणे तोलपणे सरिखाछे पणवस्तुनापिंडपणे भिन्नछे तेमाटे सोनेपण भिन्नभिन्नकहियेंछैयें तेमजीवने पण भिन्नभिन्नकहियें वलीउत्पादव्ययनोफिरवो सर्वमां तेजरीतनोछे पणपलटण ते एकरीतनोनथी तथाअगुरुलघुनी हानिवृद्धिनो फिरवोपण सर्वद्रव्यमां पोतपोतानेछे तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुभिन्नछे एभेदस्वभाव जाणवो.

तन्मयतावस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः तथातन्मयता अवस्थानतानो अभेदछे अनेआधारतानोपण अभेदपणोछे तेअभेदस्वभावछे.

तथाभेदनोजो अभावपणोमानियें एटलेवस्तुमांभेदपणो नमानियेंतो सर्वगुण तथा पर्यायनो संकरके० एकमेकपणो एदोषलागे तोगुणीकोण तथागुणकोण द्रव्यकोण एम गुणपर्यायने केइद्रव्यनो कयोपर्याय एमवेहेंचणथायनही गुण तथागुणी तथा जेउंलखवायोग्यलक्षण तेनुंचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मेता एवेजुदापडेनही कार्यधर्म तथाकारणधर्मनो नाशथाय माटेवस्तुमां भेदस्वभावमानवो.

तथाजोवस्तुमांअभेदपणोनमानियें तोस्थानध्वंसथायछे जेस्थान कोण अनेतेस्थानकमां रहेतेकोणछे इत्यादिकनोअभावथायछे एमविचारतां सर्वथाएकपणोमानतां कोण गुणी अनेकोणगुण एमउंलखाणनथाय. एरीतेंभेदाभेदस्वभाववस्तुमां मानवा.

परिणामिकत्वेउत्तरोत्तरपर्यायपरिणामनरूपोनव्यस्वभावः त
थातत्वार्थवृत्तौ इहतुभावेद्रव्यंभव्यंभवनमितिगुणपर्यायाश्च
भवनसमवस्थानमात्रकाएवउच्छ्रितासीनोत्कुटकजागृतशयि
तपुरुषवत्तदेवच वृत्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जायतेअ
स्तिविपरिणमतेवर्द्धते अपक्षीयते विनश्यतीति पिंडातिरिक्त
वृत्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते सव्यापारैश्चभ
वनवृत्तिः अस्तिइत्यनेननिर्व्यापारात्मसत्ताख्यायते भवनवृ
त्तिरुदासीनाअस्तिशब्दस्यनिपातत्वात् विपरिणमतेइत्यनेन
तिरोभूतात्मरूपस्यानुछिन्नतथावृत्तिकस्यरूपांतरेणभवनं य
थाक्षीरंदधिभावेनपरिणमते विकारांतरवृत्याभवनवत्तिष्ठते
वृत्यंतरव्यक्तिहेतुभाववृत्तिर्वाविपरिणामःवर्द्धतइत्यनेनतुपच
यरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्द्धतेउपचयवत्परिणामरूपेणभवन
वृत्तिर्व्यज्यते अपक्षीयते इत्यनेनतुतस्यैवपरिणामस्यापच
यवृत्तिराख्यायते दुर्बलीभवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूप
भवनवृत्यंतरव्यक्तिरुच्यते विनश्यति इत्यनेनाविर्भूतभवन
वृत्तिस्तिरोभवनमुच्यते यथाविनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमव
स्थानात्मिकाभवनवृत्तिस्तिरोभूतानत्वभावस्यैवजाता कपाला
द्युत्तरभवनवृत्यंतरक्रमाविछिन्नरूपत्वादित्येवमादिभिराकारैर्द्र
व्याण्येवभवनलक्षणान्यपदिश्यंते त्रिकालमूलावस्थायाअ
परित्यागरूपोऽनव्यस्वभावः नव्यत्वाभावविशेषगुणानाम
प्रवृत्तिः अनव्यत्वाभावेद्रव्यांतरापत्तिः

अर्थ ॥ हवे नव्यस्वभाव तथाअनव्यस्वभावकहेछे जीवअजीवादिक द्रव्यछे तेप-
रिणामिछे समयेंसमयें नवानवापरिणामें परिणमेछे तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशे अने उत्त-
रोत्तर नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे द्रव्यनीपरिणति तेनुंमूलकारणते नव्यस्वभाव
कहियें तिहांतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे इहांद्रव्यानुयोगनेविषे भावधर्मनेविषे एटले
गुणपर्यायनेविषे द्रव्य ते भव्यके० भवनथयो एटलेनवोनीपजवो तेभवन इतिके०

एमवस्तुना गुणपर्यायजेछे तेनवनके० नवोथवारूप समवस्थानमात्रछे एटले नवानवा थावारूपछे तिहांदृष्टांतकहेछे जेपुरुष उत्थितके० ऊभ्यो आसीनके० फरीतेहिजवेठो वेसवुंतेपद्मासनकहियें अथवाउकरुवुंतेआसनसहितसूवुं जेमइत्यादिकपर्यायेंतेपुरुषथायछे तेम तेहजवृत्यंतरके० पूर्वपर्यायनोविनाश अनेउत्तरपर्यायनो उपजवोते वृव्यंतर कहियें वृत्यंतरव्यक्तिरूपपणेउपदेशेछे तेनवनधर्मेंनीप्रवृत्तिकहेछे जायतेके० नवोऊपजे अस्तिके० छतिपणेरहे विपरिणमतेके० बीजापणेपरिणमे वलीसामर्थ्यधर्मेंवधे अने अपक्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिंमके० समुदायपणो तेथी अतिरिक्तके० बीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्यंतरनी अवस्थाने प्रकाशथवे करीने जे नवनपणोथाय एटले छेरीजेनवनवृत्ति तेसव्यापारछे पणनिर्व्यापारनथी.

अस्तिएवचने निर्व्यापार आत्मशक्तिछे तेकहियेंछैयें तेपण नवनवृत्तिथी उदासीनछे एटलेनवनवृत्तिने ग्रहणकरतीनथी अस्तिशब्दने निपातपणोछे विपरिणमतेएवचने तिरोनूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमांतद्रूपपणे अनुछिन्नके० विछेदगई तथावृत्तिकस्यके० तेरीतें वर्त्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपांतरेथवो तेनवनकहियें तिहांदृष्टांत जेम क्षीरते दूध दधिनावेंपरिणमे विकारांतरेथवो तेरीतेंरहे एनवनधर्मेकहियें जेज्ञानादिपर्यायमां अनंतज्ञेय जाणवानीशक्तिछे पणजेज्ञेय जेरीतेंपरिणमे तेरीतेंज्ञानगुणप्रवर्ते एज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनछे एपणनवनधर्मेछे वलीवृत्यंतरवर्त्तने अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेनवांतरें वर्त्तवो तेविपरिणामकहियें तथावली वर्द्धतेके० वधेएवचने उपचयरूपपणेप्रवर्ते जेमअंकुरवधेछे तेमवर्णादिक पुद्गलना गुणउपचयपणे वधे एऊपचयरूपनवनतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंछैयें.

एमगुणने कार्यांतरपणे परिणमवे द्रव्यमां नवनधर्मेछे अपक्षीयते एवचनेकरीने तुके० वली तेहिजपरिणामनो ऊणोथवो अथवाटलवोकहियें दुर्बलथतापुरुषनीपरें जेमपुरुषदुर्बलथाय तेमपर्यायनेघटवे द्रव्यप्रमाणादिक तथातेसमयें अगुरुलघुपर्यायघटवे तेदुर्बलथवुं तेरूपजेनवनवृत्तिनेअंतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिछे तथाविनश्यति एमकहेवाथी आविर्नूतके० प्रगटथयोजेनवनधर्मेनुंवर्त्तवो तेनो तिरोनावथयोकहियें जेम विणस्योघट जेमृत्पिंमनेविषे तेचक्रादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रध्वंसें विनाशकहियें एमद्रव्यनेविषे कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोनावें अन्यपणे कार्यकरणरीते समवस्थानजेरहेवुं तेसमयेंतेनवनवृत्तिकहियें तथा तिरोनावपणानेअनावें थावुंजेकपालादिक उत्तरनवन तेपणेवर्त्तवुं एपणनवनधर्मेछे एमअनुक्रमेअविछिन्न निरंतररूपेंइत्यादिकअनेकआकारें द्रव्यतेजनवनलक्षणकहियें एनव्यस्वनाव जाणवो द्रव्यनेविषे जे अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुलघुत्वादिक धर्मेतेत्रणेकालमां मूलअवस्थाने अपरि-

त्यागेके० तजतानथी तेहिजरूपपणेरहे एहवाजेटलाधर्मते अन्नव्यस्वन्नावजाणवो जेअनेक उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोपलटायनही तेमज अजीवनो अजीवपणो पलटायनही एसर्वअन्नव्यस्वन्नावजाणवो.

हवे एबेस्वन्नाव जोद्रव्यमांनमानियें तोस्योदोषथाय तेकहेछे जोद्रव्यनेविषे न्नव्यपणोनमानियें तोद्रव्यनाजेविशेषगुण गतिसहकार स्थितिसहकार अवगाहदान ज्ञायकता वर्णादिजेपंचास्तिकायना विशेषगुण तेनीप्रवृत्तिनथाय अनेप्रवृत्तिविना कार्यनो करवोनथाय अनेकार्यनेअणकरवे द्रव्यनोव्यर्थपणोथाय तेमाटेन्नव्यस्वन्नावछे.

जोद्रव्यनेविषे अन्नवनरूप अन्नव्यस्वन्नावनहोय अनेएकलो न्नवनस्वन्नावजहोय तोनवानवापणेथवे तेद्रव्यपलटीने अन्यद्रव्यथयीजाय तेमाटे द्रव्यत्व सत्य प्रमेयत्वादि धर्मअन्नव्यपणोछे तेथीज द्रव्यपलटतोनथी तेमनोतेमजरहेछे एअन्नव्यस्वन्नावछे.

वचनगोचरायेधर्मास्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राद्राः संख्येयाः तत्संनिपाताअसंख्येयाः तद्गोचरान्नावाः न्नावश्रुतगम्याः अनंतगुणाः वक्तव्यान्नावेश्रुताग्रहणत्वापत्तिः अवक्तव्यन्नावे अतीतानागतपर्यायाणां कारणतायोग्यतारूपाणामन्नावः सर्वकार्याणां निराधारतापत्तिश्च सर्वेषांपदार्थानांये विशेषगुणाश्चलन स्थित्यवगाहसहकारपूर्णगलनचेतनादयस्तेपरमगुणाः शेषाः साधारणाः साधारणासाधारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिहेतुः परमस्वन्नावः इत्यादयः सामान्यस्वन्नावाः

अर्थ ॥ आत्मानो वीर्यनामागुण तेनाअविन्नाग जेवीर्यांतराय कर्मेंआवस्याछे तेज वीर्यांतरायनेक्षयोपशमें तथाक्षयथवाथी प्रगट्योजेवीर्यधर्म तेनेन्नाषापर्याप्ति नामकर्मनेउदयें लीधराणाजे न्नाषावरगणानांपुद्गल तेशब्दपणेपरिणमे तेशब्दपुद्गलखंधछे पण श्रोताजनने ज्ञाननाहेतुछे एटलेजेमांजेगुणनहोय तेगुणनुंकारणपण थायनही एमजे कहेछे तेमृषाछे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणहोयकिंवानपणहोय अने उपादान कारणमां तेगुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणेनियामकछे तेवचनयोगेंज ग्रहवाय एवाजेवस्तुमांधर्मछे तेनेवक्तव्यधर्मकहियें अनेतेथीइतरके० जूदाजेधर्मास्तिकायद्रव्यमां अनेकधर्मछे तेवचनमांग्रहवातानथी तेवासर्वधर्म अवक्तव्यकहियें तेवक्तव्यधर्मथी अवक्तव्यधर्म अनंतगुणाछे वचनतोसंख्याताछे पणतेवचनोमां एवो सामर्थ्यछे जेअवक्तव्यधर्म

सर्वनो ज्ञायपणोथाय उक्तंच अभिलप्पाजेभावा अणंतभागोयअणभिलप्पाणं अभिलप्पसाणंतो भागसुएनिबद्धोअ ॥ १ ॥ तत्रकें० तिहां अक्षरसंख्याताछे तेअक्षरना सन्निपात संयोगीभाव असंख्याताछे तेअक्षरसन्निपातने ग्रहवाय एवाजे पदार्थादिकना भाव तेअनंतगुणाछे तेथीअवक्तव्यभाव अनंतगुणाछे जेमतिज्ञान श्रुतज्ञान अभिलप्पभावनो परोक्षप्रमाणेग्राहकछे अवधिज्ञान तेपुद्गलनो प्रत्यक्षप्रमाणेजाणगछे पणएकपरमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनही केटलाकपर्यायनेजाणे तेपणअसंख्यातसमयेंजाणे अनेकेवलज्ञान एछद्रव्यनासर्वपर्यायने एकसमयमां प्रत्यक्षजाणे माटेजोद्रव्यमां वक्तव्यपणोनहोय तो श्रुतज्ञानेग्रहणथायनही अने जेग्रंथाभ्यासउपदेशादिक सर्वकामथायछे तेतोएमनथीमाटेद्रव्यमांवक्तव्यपणोछे.

अवक्तव्याभावेकें० अवक्तव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तुमांकारणतानी परंपरामांरह्याछे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामांरह्याछे तेसर्वनोअभाव थाय तेवारें वस्तुमां वर्त्तमानपर्यायनी छतिपामियें तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानथायनही माटे अवक्तव्यस्वभाव अवश्यमानवो अनेवर्त्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइजाय अनेद्रव्यमां एकसमयमां अनंताकारणछे तेअनंताकारणना अनंताकार्यधर्मछे अनेअनंताकार्यना अनंताकारणपरंपरानुं ज्ञानतेकेवलीनेछे अनेवर्त्तमानकालें कारणधर्मतथाकार्यधर्मथी अनंतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्ताछे तेकोइना अविभागनथी पण अविभागी जेज्ञानादिकगुण तेमां अनंता कारण धर्म अनंताकार्य धर्म ऊपजवानी योग्यतारूपसत्ता छे ते सर्व अवक्तव्यरूपछे.

हवेपरमस्वभावनुं स्वरूपकहेछे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनाविशेषगुण जे धर्मास्तिकायनो चलनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाशास्तिकायनो अवगाहक तथापुद्गलद्रव्यनो पूरणगलन जीवद्रव्यनो चेतनालक्षण एसर्व द्रव्यना विशेषगुणकह्या एमलक्षणरूप .तथाद्रव्यांतरथी भिन्नपाडवानुं मूलकारण ते परमप्रकृष्टगुणकहियें एप्रधानगुणने अनुयायी बीजाजे साधारणगुण ते गुण पंचास्तिकायमां पामियें तेनानाम अविनाशीपणो अखंडपणो नित्यत्वादिकधर्म एपंचास्तिकायने सरिखाछे तेमाटेसाधारणगुण तथापंचास्तिकायमां कोइक अस्तिकायमांपामियें कोइकमांनपामियें तेगुणने साधारणअसाधारणकहियें तेसर्वगुणनेविषे विशेषगुणने ...यिप्रवर्त्तनछे ते प्रवर्त्तननाकारण द्रव्यमां एकपरमस्वभावपणोछे तेपरमस्वभावने ... द्रव्यनासर्वगुणमुख्यगुणने अनुगमेजप्रवर्त्ते तेपरमस्वभाव सर्वद्रव्यनेविषेछे अ ... व्यस्वभाव कह्या वली अनेकांतजयपताकामांकह्याछे.

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व ज्ञोगृत्व असर्वगतत्व प्रदेशवत्वादिज्ञावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकुर्वन्ज्ञापयत्यत्रानंतधर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः प्रतिपदंप्रवचनत्वेनपुंसायथासंज्ञवमायोजनीयाः क्रियावत्वंपर्यायोपयोगिताप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराः संतिज्ञूयांसः अनादिपरिणामिकाज्ञवंतिजीवस्वज्ञावाः धर्मादिज्ञिस्तुसमानाइतिविशेषः

अर्थ ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो ज्ञोक्तापणो गुणवंतपणो असर्वव्यापिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वज्ञाववंतद्रव्य छे तेमज तत्वार्थ टीकामध्ये परिणामिकज्ञावनाज्ञेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जे वस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वविस्तारीशकेनही तोपणद्रव्यद्रव्यनेविषे प्रवचननाजाणपुरुषें जेमसंज्ञवेतेमधर्मजोरूवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजाणवाने प्रतिसमयेंप्रवर्त्तेछे श्रीज्ञाष्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरणअने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वेगुण तेत्रणपरिणतियें परिणामीछे तेमाटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्यायनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वज्ञावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्वज्ञावछे तिहांधर्माधर्म अने आकाश ए त्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अवस्थितपणेछे पुद्गलनेचलणपणो सदासर्वदाछे पुद्गलपरमाणु तथा पुद्गलस्कंध तेसंख्यातोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवद्रव्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन ज्ञवथी ज्ञवांतरगमनरूप चलताछे तेजीवने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरज्ञावज्ञोगीपणो निवारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपज्ञासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स्वधर्मकर्त्ता स्वधर्मज्ञोक्तापणे सकलपरज्ञावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निर्द्वंद्वनिष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याबाध परमानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आचारांगनीटीका शैलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचदशविधेनापियोगेनात्मा अष्टौप्रदेशान्विहाय तप्तज्ञाजनोदकवद्उद्वर्त्तमानैः सर्वैरैवात्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्बध्नाति तत्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आठप्रदेशे कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआठप्रदेशनिरावरणछे तो लोकालोककेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आतमद्रव्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशमिले प्रवर्त्ते तोतेमां एआठप्रदेश अल्पछे तेथीआठप्रदेशमां सर्वगुणनिरावरणछे पण कार्य करीशकता नथी जेमअग्निनुंअत्यंतसूक्ष्मकणीयुंहोय तेमां दाहक पाचक प्रकाशक गुण छे पण अल्पतामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुंनथी.

वलीकोइपुछेजे एआठप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुंउत्तर जेचलप्रदेशहोय तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमभगवतीसूत्रेकह्युंछे जेअइ वेअइ चलइ फंदइ घट्टइ सेवंधइ एपाठछे तेमाटे जेचलहोयतेवंधाय अनेआठप्रदेश तो अचलछे तेथी एआठप्रदेशने वंधनथी तथाकार्यज्यारेंप्रदेशभेला थाय तेथी प्रदेशनागुणपण तिहांतेकार्यकरवाने प्रवर्त्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेंहोय तेगुणतेप्रदेशमूकी अन्यक्षेत्रेंजायनही तथाजीवना आठप्रदेश सर्वथानिरावरणछे वीजा प्रदेशे अक्षरनो अनंतमोभाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीतें संतिके० छेघणाअनादिपरिणामिकभावते भवंतिके० होय अनादिपरिणामिकभावछेते जीवनाभावछे अने सप्रदेशादिक धर्मास्तिकायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वभावछे.

भिन्नभिन्नपर्यायप्रवर्त्तनस्वकार्यकरणसहकारभूताः पर्यायानुगत परिणामविशेषस्वभावाः तेचके १ परिणामिकता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ भोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्यव्यापकता ८ आधाराधेयता ९ जन्यजनकता १० अगुरुलघुता ११ विभूतकारणता १२ कारकता १३ प्रभुता १४ भावुकता १५ अभावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गति स्वभावता १९ स्थितिस्वभावता २० अवगाहकस्वभावता २१ अखंडता २२ अचलता २३ असंगता २४ अक्रियता २५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिकाः उक्तंचसंमतौ आरोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तन्नवस्तुधर्मः उपाधिताभव नात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वभावकहेछे भिन्नभिन्नजेपर्यायछे तेनुंकार्यकारणपणे जेप्रवर्त्तन तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वभाव तेविशेषस्वभावकहियें तेना अनेकभेदछे ते श्रीहरिभद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रंथमांकह्याछे ते कहेछे.

१ सर्वद्रव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते भिन्नभिन्न परिणामे परिणमे तेसर्वपोतानागुण तेने कारणीकछे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्त्तृत्वं जीवस्यनान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताछे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेछेअप्पाकत्ताविकत्ताय इति उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेछे ज्ञानलक्षणजीवछे तेमाटेगिन्हईकांईएणंइतिआवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिपणजीवनेछे गृण्हातीतिक्रियानोकर्त्ता जीवछे ५ भोक्ताशक्तिपण जीवमांछे जोकुणइ सोभुंजइ यःकर्त्ता सएवभोक्ता इतिवचनात् १ रक्षणता २ व्यापकता ३ आधाराधेयता ४ जन्यजनकता तत्वार्थवृत्तिमध्येछे तथा अगुरुलघुता विभुता करणता कार्यता कारकता ए शक्तिनीव्याख्या श्रीविशेषावश्यकेंछे भावुकता तथा अभावुकताशक्ति तेश्रीहरिभद्रसूरिकृतभावुकनामे प्रकरणमध्येकहिछे.

एमकेटलीकशक्तिजैननातर्कग्रंथोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांछे तथाऊर्ध्वप्रचयशक्ति अनेतिर्यक्प्रचयशक्ति उघशक्ति समुचितशक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविषेछे तथाजेछिगुणीआत्मामाने तेसर्वेधर्मेशक्तिरूपजमानेछे तेणेदानादिकलब्धि अव्याबाध सुखप्रमुख शक्तिमानीछे इहांव्याख्यांतरे जेगुणकरणछे तेनेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्यछे जाणवोदेखवो तेकार्यछे केटलीकशक्तिजीवमांजछे अनेकेटलीक पंचास्तिकायमध्येछे तथादेवसेनकृत नयचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्वभाव मूर्तस्वभाव तथापुद्गलपरमाणुने चेतनस्वभाव अमूर्तस्वभावकह्या तेअसत्छे एतोआरोपपणेकोइककहे तेकथनमात्रजाणवो पणएवातछतीमांनथी जेधर्मआरोपें तथाउपचारेंगवेषाय तेवस्तुनोधर्मनथी उपाधीथीथायछे तेमाटेजेउपाधि तेवस्तुनीसत्तानथी एमधारवुं.

धर्मास्तिकायेअमूर्ताचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मास्तिकाये अमूर्त्ताचेतनाक्रियस्थितिसहकारादयोगुणाःआकाशास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुद्गलास्तिकाये मूर्ताचेतनसक्रियपूर्णगलनादयोवर्णगंधरसस्पर्शादयोगुणाः जीवास्तिकायेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्या व्याबाधामूर्त्तागुरुलघुअनवगाहादयोगुणाः एवंप्रतिद्रव्यंगुणानामनंतत्वंज्ञेयं ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायना गुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिसहाय इत्यादिअनंतगुणछे अधर्मास्तिकायनागुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ स्थितिसहाय इत्यादिअनंतगुणछे आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अ-

क्रिय ४ अवगाहनादिक अनंतगुणछे पुद्गलास्तिकायनागुण चार छे १ रूपी २ अचेतन ३ सक्रिय ४ पूर्णगलन १ वर्ण २ गंध ३ रस ४ स्पर्श इत्यादिकगुणअनंताछे जीवास्तिकायनेविषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५ अव्याबाध ६ अरूपी ७ अगुरुलघु ८ अनवगाह्यादिकअनंतगुणछे एरीतें द्रव्यनेविषे अनंतागुणजाणवा.

पर्यायाः षोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशसिद्धत्वादयः १ द्रव्य व्यंजनपर्यायाः द्रव्याणांविशेषगुणाश्चेतनादयश्चलणसहायादय श्च २ गुणपर्यायाः गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञा यकादयः कार्यरूपाः मतिज्ञानादयः ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो द र्शनस्य क्षमामार्दवादयः चारित्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त्त स्यइत्यादि ४ स्वभावपर्यायाअगुरुलघुविकाराः तेचद्वादशप्र काराःषट्गुणहानिवृद्धिरूपाः अवाग्गोचराः एतेपंचपर्यायास र्वद्रव्येषु विभावपर्यायाः जीवेनरनारकादयः पुद्गलेद्व्यणुकतो नंताणुकपर्यंतास्कंधाः

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहांद्रव्यास्तिकनयनामूलबेभेदछे १ शुद्धद्रव्यास्तिक २ अशुद्धद्रव्यास्तिकअनेदेवसेनकृतपद्धतीमांद्रव्यास्तिकनादशभेदकस्याछे तेसर्वेएबेभेदमध्येसमायछेतथातेसामान्यस्वभावमांसमाणाछेतेमाटेइहांनवखाण्या.

हवेपर्यायना छ भेद कहेछे तिहां प्रथम १ जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणे रह्या जे जीवादिकना असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ सिद्धत्वादिक अखंडत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजककेº प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें.

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमांनथी तेनेविशेषगुणकहियें तेजीवनेचेतनादिक अने धर्मास्तिकायमांचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमांथिरसहकार आकाशमां अवगाहदान पुद्गलमां पूरणगलणरूप एसर्वेस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरे छे तेमाटे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें.

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडरूपणो तेगुणपर्यायकहिये ४ गुणव्यंजनपर्यायतेज्ञाननो जाणंगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ज्ञानगुणनाभेदांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शनादिकभेद तथा चारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्ण गंध रस स्पर्श संस्थानादिक अरूपीगुणना अवन्ने अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा ते गुण व्यंजनपर्याय

५ स्वभावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वभावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे छे छ प्रकारनीवृद्धि तथाछप्रकारनी हानी एवीरीतें बारप्रकारें परिणमेछे इहांकोइप्रेरकनो योगनथी वस्तुनेमूलधर्मनोहेतुछे एनोस्वरूपपूरूं वचनगोचरनथी अनुभवगम्यनथी केमकेश्रीठाणांगसूत्रनी टीकामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातअंगछे तिहांप्रथम सूत्रअंग वीजुं निर्युक्तिअंग ३ भाष्यअंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वनाअर्थकहेछे ५ टीकाव्याख्यानिरंतर एपांचअंगतो ग्रंथरूपछे तथाछहोअंगपरंपरारूपछे तथासातमुंअंगअनुभव एसातेकारणे विनयसहितभणतां सुणतांथकांसाचाअर्थ पामिने आत्मानुंज्ञाननिर्मलथाय श्रीभगवतिसूत्रे गाथा सुत्तछोखलुपढमो वीउनियुत्तिमिसिउंभणीउं तइयोअनिरवसेसो एसविहिहोइअणुउंगे एपांच पर्यायकह्या तेसर्वेद्रव्यमध्येछे.

६ विभागपर्याय तेजीव तथापुद्गलमध्येजछे तेविभावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पामवुंते तथा पुद्गलनो द्व्यणुकत्र्युणुकादिकखंधनो मिलवुंअनंताणुकपर्यंत अनंतपुद्गल स्कंधरूप ते विभागपर्याय कहियें.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिभागन्यूनावगाहनादयः सादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायाभवशरीराध्यवसायादयः अनादिसांतपर्यायाभव्यत्वादयः तथाचनिक्षेपाः सहजरूपावस्तुनः पर्यायाःएवंचत्वारोवथ्थुपज्जायाइतिभाष्यवचनात्नामयुक्तेप्रति वस्तुनिनिक्षेपचतुष्टयंयुक्तमुक्तंचानुयोगद्वारेजथ्थयजंजाणिज्जा निक्खेवंनिक्खवेनिरवसेसं जथ्थयनोजाणिज्जा चउक्कयंनिक्खवेतथ्थ तत्रनामनिक्षेपः स्थापनानिक्षेपः द्रव्यनिक्षेपः भावनिक्षेपः तत्रनामनिक्षेपोद्विविधः सहजः सांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्विविधा सहजाआरोपजाच द्रव्यनिक्षेपोद्विविधः आगमतोनोआगमतश्च तत्रआगमतः तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआगमतोज्ञशरीर भव्यशरीर तद्व्यतिरिक्तभेदात्रिधाभावनिक्षेपोद्विविधः आगमतो नोआगमतश्चतदज्ञानोपयुक्तः तद्गुणमयश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं तत्रनिक्षेपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मभेदाः

अर्थ ॥ पुद्गलनुंमेरुप्रमुख तेअनादिनित्यपर्यायछेजीवनीसिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिकतेसादिनित्यपर्यायछे तथाभवअनेशरीर तथाअध्यवसाय एत्रणप्रकारनायोगस्थानजे वीर्यनाक्षयोपशमथीऊपना तेमांकषायस्थान जेचेतनानोक्षयोपशम कषायनाउद-

यथीमिथ्या अनेसंयमस्थानजे चारित्रनो क्षयोपशमपरिणमी जेचेतनादिकगुण एसर्वे अध्यवसायस्थानक तेसादिसांतपर्यायछे तथासिद्धिगमनयोग्यताधर्मे तेनव्यपणो एपर्याय तेअनादिसांतछे जेसिद्धत्वपणोप्रगटे नव्यत्वपर्यायनोविनाशछे तेमाटे अनादिकालनो छे पणअंतथवासहितछे माटेअनादिसांतपर्यायछे एमपर्यायअनेकजाणवा.

तथावस्तुमां सहजना जेचारनिक्षेपाछेतेपणवस्तुनास्वपर्यायछे तेश्रीविशेषावश्यकनी नाष्यमध्येकह्योछे चत्वारोवत्थुपज्जाया एवचनछे तेमाटेस्वपर्यायकहियें वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमांकह्योछे जिहांजेवस्तुना जेटलानिक्षेपाजाणियें तिहां तेवस्तुना तेटलानिक्षेपाकरियें कदाचित्वधतानिक्षेपा नासनमांनआवे तोपण १ नाम २ थापना ३ द्रव्य ४ नाव एचारनिक्षेपातो अवश्यकरवा तेमांनामनिक्षेपानाबेन्नेदछे.

१ सहजनाम २ सांकेतिकनाम तेकोइकनोकरयोनाम तथास्थापनानाबेन्नेदछे १ सहजस्थापना तेवस्तुनीअवगाहनारूप २ आरोपस्थापना ते आरोपथी थयी माटेकृत्रिमकहियें आरोपजाकहियें हवेद्रव्यनिक्षेपानाबेन्नेदछे तेकहेछे १ आगमथीद्रव्यनिक्षेपो ते जे जेपुरुषना स्वरूपनाजाणपणे हमणांतेउपयोगेंनथी तेआतमद्रव्यनिक्षेपजेवस्तुतेगुणसहितछे पणहमणांतेपणेवरततानथी तेहनात्रणन्नेदछे १ ज्ञशरीरजेहनाहता पणमरणपाम्या तेथीतेनुंशरीर जेऋषन्नदेवना शरीरनीन्नक्ति श्रीजंबूद्वीपपन्नतीमांछे २ नव्यशरीरते हमणांतो गुणमयनथी पणगुणमयथशे जेम अयमंतामुनी एनव्यशरीरजाणवो ३ तद्व्यातिरिक्त जेतेगुणेवर्त्तेछे पणतेउपयोगें हमणांवरततानथी.

नावनिक्षेपानाबेन्नेद १ आगमथी नावनिक्षेपो तेआगमना अर्थनोजाण वलीतेउपयोगेंवर्तेछे २ नोआगमथी नावनिक्षेपो तेजेपणेइवर्त्तेछे तेजरूपछे एरीतेंनिक्षेपाकहेवा.

एचारनिक्षेपामां पेहेलात्रणनिक्षेपा तेकारणरूपछे अनेचोथोनावनिक्षेपो तेकार्यरूपछे तेनावनिक्षेपाने निपजावतां पहेलात्रणनिक्षेपा प्रमाणछे नहीकांअप्रमाणछे पहेलात्रणनिक्षेपा द्रव्यनयछे एकनावनिक्षेपो तेनावलयछे नावनिक्षेपाने अणनिपजावतां एकलीद्रव्यनीप्रवृत्ति ते निष्फलछे एमश्री आचारांगनीटीकामां लोकविजया अध्ययने कह्युंछेतेलखीयेछैयें फलमेवगुणः फलगुणः फलंचक्रियान्नवतितस्याश्चक्रियायाः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र रहितायाऐहिकामुष्मिकार्थप्रवृत्तायाः अनात्यंतिकोनैकांतिकोन्नवेत् फलंगुणोप्य गुणोन्नवति सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रक्रिया यास्त्वेकांतिकानाबाधसुखाख्यसिद्धिगुणोवाप्यते एतदुक्तंन्नवति सम्यक्दर्शनादिकैवक्रियासिद्धि फलगुणेनफलवत्यपरातुसांसारिकसुखफलान्यासएवफलाध्यारोपान्निष्फलेत्यर्थः

एटलेरत्नत्रयी परिणमनविना जेक्रियाकरवी तेथकी संसारिकसुख थाय ते क्रियानिःफ-

ल छे एपाछछे माटेभावनिक्षेपाना कारणविना पेहेलात्रणेनिक्षेपा निःफलछे निक्षेपातो मूलगीवस्तुनापर्यायछे द्रव्यनोस्वधर्मजछे.

नयास्तुपदार्थज्ञानेज्ञानांशाः तत्रानंतधर्मात्मकेवस्तुन्येकधर्मोन्नयनंज्ञाननयः तथारत्नाकरे नीयतेयेनश्रुताख्यप्रमाणविषयीकृतस्यार्थस्यांशस्तदितरांशौदासीन्यतः सप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयः स्वाभिप्रेतादंशादितरांशापलापीपुनर्नयाभासः सव्यासससमासाभ्यांद्विप्रकारः व्यासतोनेकविकल्पः समासतोद्विभेदः द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकःतत्रद्रव्यार्थिकश्चतुर्धा १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्रभेदात् पर्यायार्थिकस्त्रिधा. १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूतभेदात्.

अर्थ ॥ जेनयछे तेपदार्थनाज्ञाननेविषे ज्ञाननाअंशछे तिहांनयनुंलक्षणकहेछे अनंतधर्मात्मक जेवस्तु एटलेजीवादिक एक पदार्थमां अनंताधर्मछे तेनोजेएकधर्मगवेष्योतोपण अन्यके० वीजाअनंताधर्म तेमांरह्याछे तेनोउछेदनही अनेग्रहणपणनही एकधर्मनीमुख्यताकरवी तेनयकहियें तेनयना व्यासके० विस्तारथी अनेकभेदछे अने समासके० संक्षेपथीवेभेदछे १ द्रव्यार्थिक २ पर्यायार्थिक तेरत्नाकरावतारिकाग्रंथथी लखियेंछेयें द्रवतिद्रोष्यति अदुद्रवत् तांस्तान्पर्यायानितिद्रव्यंतदेवार्थःसोऽस्तियस्यविषयत्वेन सद्रव्यार्थिकः

जेवर्त्तमानपर्यायनेद्रवेछे अनेआगामिककालेंद्रवसे तथा अतीतकालेंद्रवतोहतो ते द्रव्यकहियें तेजछेअर्थप्रयोजनविषयपणेजेने ते द्रव्यार्थिककहियें एटलेपर्यायतेजन्य अने द्रव्यतेजनककह्योतथाद्रव्यतेध्रुवअनेपर्यायते उत्पादविनाशरूपछे उक्तंच.

पर्येतिउत्पादविनाशौप्राप्नोतीतिपर्यायः सएवार्थः सअस्तियस्यासौपर्यायार्थिकः जे उपजवाविणशवानो परिके० नवानवापणे एतिके० पामेतेजअर्थप्रयोजन तेने पर्यायार्थिककहीयें तेद्रव्यार्थिकपर्यायार्थिक एवेधर्मने द्रव्यतथापर्यायकहियें.

इहांकोइकपुछेजे त्रीजोगुणार्थिककेमकहेतानथी तेवलीरत्नाकरावतारिकामध्ये कह्योछे गुणस्यपर्यायेएवांतर्भूतत्वात् तेनपर्यायार्थिकेनैवतत् संग्रहात्.

जेगुणतेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंग्रह्योछे तेपर्याय वेभेदेछे एक सहभावि वीजोक्रमभावि तेमांसहभावितेगुणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तिहांद्रव्यपर्यायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एवेधर्मछे माटेसामान्यविशेष वेनयवत्ताकेमकहेतानथी एमकोइपुछेतेनेउत्तर.

जे द्रव्यपर्यायाभ्यां व्यतिरिक्तयोः सामान्यविशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्तमूर्ध्वतासामान्यं तिर्यक्सामान्यंच तत्रोर्ध्वसामान्यंद्रव्यमेव तिर्यक्सामान्यंतु प्रतिव्यक्तिसदृशपरिणामलक्षणंव्यंजनपर्यायएव एपाठथी ऊर्ध्वसामान्यते द्रव्यनोधर्मछे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मछे विशेषोपिवैसादृश्यविवर्त्तलक्षणंपर्यायएवांतर्भवतिनैताभ्यामधिकनयावकाशः

विशेषपणेअनेकरीतें वर्तवानोलक्षणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भावछे तेमाटे भिन्ननयनो अवकाशनथी एवेनयमध्येज अंतर्भावछे तेमांवली द्रव्यार्थिकना चारभेदछे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजूसूत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणभेदछे १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत.

विकल्पांतरेऋजुसूत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनैगमस्त्रिप्रकारः आरोपांशसंकल्पभेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्यभिन्नग्रहणात् चतुर्विधःनएकेगमाआशयविशेषायस्यसनैगमः तत्रचतुःप्रकार आरोपः द्रव्यारोपगुणारोप कालारोपकारणाद्यारोपभेदात् तत्र गुणेद्रव्यारोपः पंचास्तिकायवर्तनागुणस्यकालस्यद्रव्यकथनं एतद्गुणेद्रव्यारोपः १ ज्ञानमेवात्मा अत्रद्रव्येगुणारोपः २ वर्त्तमानकालेअतीतकालारोपःअद्यदीपोत्सवेवीरनिर्वाणं वर्तमानेअनागतकालारोपः अद्यैवपद्मनाभे निर्वाणं एवंषट्भेदाः कारणेकार्यारोपः बाह्यक्रियायाधर्मत्वं धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं संकल्पो द्विविधः स्वपरिणामरूपः कार्यांतरपरिणामश्च अंशोपिद्विविधः भिन्नोभिन्नश्चेत्यादिशतभेदोनैगमः

अर्थ ॥ वलीविकल्पांतरे ऋजुसूत्रते पर्यायार्थिकमां पणकह्योछे केमके एविकल्परूप नयछे तेमाटे. तेमांनैगमनात्रणभेदछे १ आरोप २ अंश ३ संकल्प तथाविशेषावश्यकमां चोथोभेदपणउपचारपणेकहेछे नथीएकगमो अभिप्रायजेनो तेनैगमनयकहियें एटलेअनेकआशयीछे तेनैगमनयना चारभेदछे तेमध्ये आरोपना चारप्रकारछे १ द्रव्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणाद्यारोप.

१ तिहांगुणादिकनेविषे द्रव्यपणोमानवो तेद्रव्यारोपजेमवर्तनापरिणाम तेपंचास्तिकायनो परिणमनधर्मछे तेने कालद्रव्यकहिबोलाव्यो एकालतेभिन्नपिंडरूपद्रव्यनथी पणआरोपेंद्रव्यकह्योछे माटेद्रव्यारोप अनेद्रव्यनेविषे गुणनोआरोपकरवो जेमज्ञानगुणछे पणज्ञानीतेजआत्मा एमज्ञानने आत्माकह्यो तेगुणनोआरोपकर्यो माटेगुणारोप

तथा जेमश्रीवीरनिर्वाणथयातेने तोघणोकालगयोछे पणआजदीवालीनादीवसेंवीरनो निर्वाणछे एमकहेवुं एवर्त्तमानमां अतीतनो आरोपकर्यो अथवा आजश्रीपद्मनाभप्रभुनो निर्वाणछे एमकहेवुं तेमवर्त्तमाननेविषे अनागतकालनोआरोपछे एवीरीतें वलीअतीतनाबेभेदछे तथाएवीजरीतेअनागतनाबेभेदछे अनेवर्त्तमानना बेभेदउपरकह्या तेसर्वे मली कालारोपना भेदजाणवा.

वलीकारणविषे कार्यनोआरोपकरवो तेकारणचारछे १ उपादानकारण २ निमित्तकारण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमांबाह्यद्रव्यक्रिया ते साध्यसापेक्षवालाने धर्मनुंनिमित्तकारणछे तोपणएनेधर्मकारणकहियें तेमजश्रीतीर्थंकर मोक्षनुंकारणछे तेथी तेने तारयाणं कह्यो तेकारणनेविषे कर्त्तापणानोआरोपकर्यो एम आरोपता अनेकप्रकारेंछे तेकारणाध्यारोप वलीसंकल्प नैगमनाबेभेदछे १ स्वपरिणामरूपजेवीर्यचेतनानो जेनवोनवो क्षयोपशमतेलेवो बीजोकार्यांतरे नवेनवेकार्यें नवोनवोउपयोग थाय ते एबेभेदथया तथाअंशनैगमनापणबेभेदछे १ भिन्नांशतेजूदोअंशस्कंधादिकनो बीजो अभिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाअविभाग इत्यादिक एसर्वेनैगमनयनाभेदजाणवा एटलेनैगमनयकह्यो.

सामान्यवस्तुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विविधसामान्यसंग्रहोविशेषसंग्रहश्च सामान्यसंग्रहोद्विविधःमूलतउत्तरतश्चामूलतोस्तित्वादिभेदतः षड्विधः उत्तरतोजातिसमुदायभेदरूपःजातितः गविगोत्वं घटेघटत्वं वनस्पतौ वनस्पतित्वं समुदयतोसहकारात्मकेवनेसहकारवनं मनुष्यसमूहेमनुष्यवृंदइत्यादिसमुदायरूपः अथवाद्रव्यमितिसामान्यसंग्रहः जीवइतिविशेषसंग्रहः तथाविशेषावश्यके संगहणंसंगिन्हइसंगिन्हंतेवतेणजंभेया तोसंगहोसंगिहियपिंडियत्थंवउजस्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोमनंसंग्रहःअथवासामान्यरूपतयासर्वंगृन्हातीतिसंग्रहःअथवासर्वेपिभेदाः सामान्यरूपतयासंगृह्यंतेअनेनेतिसंग्रहः अथवासंगृहीतंपिंडितंतदेवार्थोभिधेयंयस्यतत्संगृहीतपिंडितार्थएवंभूतंवचोयस्यसंग्रहस्येतिसंग्रहीतपिंडितं ततूकिमुच्यतेइत्याह संगहीयमागहीयं संपिंडियमेगजाइमाणीयं ॥ संगहीयमणुगमोवा वइरे

गोपिंमियंजणियं ॥ १ ॥ सामान्याजिमुख्येनग्रहणंसंगृहीतसंग्रह उच्यते पिंमितंत्वेकजातिमानित मजिधीयतेपिंमितसंग्रहः अथ सर्वव्यक्तिष्वनुगतस्यसामान्यस्यप्रतिपादनमनुगमसंग्रहोजिधीयते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्मनिषेधात्ग्राह्यधर्मसंग्रहकारकं व्यतिरेकसंग्रहोजण्यतेयथाजीवोजीवइतिनिषेधे जीवसंग्रह एवजाताः अतः १ संग्रह २ पिंमितार्थ ३ अनुगम ४ व्यतिरेकजेदाच्चतुर्विधः अथवास्वसत्ताख्यंमहासामान्यंसंगृण्हाति इतरस्तुगोत्वादिकमवांतरसामान्यंपिंमितार्थमजिधीयते महासत्तारूपं अवांतर सत्तारूपं एगंनिच्चंनिरवयवमक्कियं सव्वगंचसामन्नं एततूमाहासामान्यं गविगोत्वादिकमवांतरसामान्यमितिसंग्रहः ॥

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेठे सामान्ये मूलसर्वेद्रव्यव्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्याजेधर्म तेनोजेसंग्रहकरे तेसंग्रहकहियें तेनाबेजेदठे १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह वलीसामान्यसंग्रहना बेजेदठे १ मूलसामान्यसंग्रह २ उत्तरसामान्यसंग्रह वली मूलसामान्यसंग्रहना अस्तित्वादिकठजेदठे तेपूर्वेंकह्याठे तथाउत्तरसामान्यना बेजेदठे १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहांगायनासमुदायमां गोत्वरूपजातिठे तथाघटसमुदायमांघटत्वपणो अनेवनस्पतिनेविषे वनस्पतिपणो तेजातिसामान्यकह्यो अनेआंबानासमूहनेंविष अंबवनकहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्यग्रहणथाय तेसमुदायसामान्य एउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकठे अनेमूलसामान्यतेअवधिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहवायठे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह तिहां ठ द्रव्यनासमुदायने द्रव्यकह्युंएसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोठे अनेजीवनेजीवद्रव्यकही अजीवद्रव्यथी जूदोजेदपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तारघणोठे तथाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारजेद तेलखियेंछैयें मूलपाठमां कहेलीगाथानोअर्थठे.

संग्रहणंके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमां समकालेंग्रहेवुं सामान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोडण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें अथवासामान्यरूपपणे सर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेथकीसर्वेजेद सामान्यपणे ग्रहियें तेने संग्रहकहियें अथवासंगृहीतं पिंमितके० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहवाय तेसंग्रहवचनकहियें तेनाचारजेदठे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंमितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह.

१ सामान्यपणे वेचणविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एवुंवचन अथवा एवोधर्म कोइपणवस्तुनेविशेहोय तेनेसंगृहितसंग्रहकहियें.

२ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाएगे पुग्गले इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेवीजोपिंम्रितसंग्रहकहियें.

३ जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटले सर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइतरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जीवनहीतेअजीवकहिये एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेछेस्यो तथाउपयोगें जीवनो ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें.

अथवासंग्रहनयबेन्नेदेंकहेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रहनोस्वरूपकह्योछे सवतिन्नणिएणज म्हासब्बन्नाणुप्पवत्तएबुद्धि तोसवंसत्तमत्तंनन्नीतदंतरं किंचि ॥ १ ॥ यद्यस्मान्सदित्येवंन्नणीते सर्वत्रिन्नुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुद्धौनप्रतिन्नासते तस्मात्सर्वं सत्तामात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूपत्वादेवसंग्रहस्येति एटलेत्रणेन्नुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयनेग्रहणमांआवतीनथी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुन्नेदांतरेण विन्नजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्यवहारःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहारः धर्मास्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीवस्यलोकालोकादिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मन्नावसाधनरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशुद्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्विविधः सद्भूतासद्भूतन्नेदात् सद्भूतव्यवहारो ज्ञानादिगुणाः परस्परंन्निन्नः असद्भूतव्यवहारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्लेषिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असंश्लेषितासद्भूतव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरितव्यवहारन्नेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यवहारः एसतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोवजउविसज्जंतेणव्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः विशेषतोव्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः लोकव्य

वहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहारास्वस्वधर्मप्रव
र्तितेनऋतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूपव्यवहारस्यैववस्तुत्वंत
मंतरेणतञ्जावात् सद्विविधः विजजन १ प्रवृत्ति २ जेदात्प्रवृ
त्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः १ साधनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्र
वृत्तिश्च ३ साधनप्रवृत्तिस्त्रेधा लोकोत्तर १ लोकिका २ कुप्रावच
निक ३ जेदात् इतिव्यवहारनयश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेछे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेजेदांतरे विजजनके० वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेंहेचणकरियें जे द्रव्यनावेजेदछे १ जीवद्रव्य २ अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेंहेचणकरियें जेजीवना वेजेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेंहेचणकरवी तेसर्वेव्यवहारनयनो स्वजावजाणवो अथवा व्यवहरणके० प्रवर्त्तन तेव्यवहारनय तेनावेजेदछे १ शुद्धव्यवहार २ अशुद्धव्यवहार वलीशुद्धव्यवहारनावेजेदछे १ सर्वद्रव्यनी स्वरूपरूपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायता तथाअधर्मास्तिकायनीथिरसहायता तथाजीवनीज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगतशुद्ध व्यवहारकहियें २ द्रव्यनोउत्सर्ग निपजवामाटे रत्नत्रयी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणीआरोहणरूप तेसाधनशुद्ध व्यवहारकहियें.

वलीअशुद्धव्यवहारनावेजेदछे १ सद्भूत २ असद्भूत तेमांजेखेत्रे अवस्थाने अजेदें रह्याजे ज्ञानादिगुण तेनेपरस्परजेदंकहेवा ते सद्भूतव्यवहार.

तथाजेमक्रोधीहुं मानीहुं अथवादेवताहुं मनुष्यहुं इत्यादिदेवतापणो तेहेतुपणेपरिणमतांग्रह्याजेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेउदयरूपपरजावछे तेपणयथार्थज्ञानविना जेदज्ञानशून्यजीवने एककरीमानेछे तेअशुद्ध व्यवहारकहियें तेनावेजेदछे १ संश्लेषित अशुद्धव्यवहार ते जे शरीरमारुं हुंशरीरी इत्यादिकसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार २ असंश्लेषितअशुद्धव्यवहार ते आपुत्रमारो धनादिकमारा एमकहेवुंतेअसंश्लेषितअसद्भूत व्यवहार तेचउपचरित अनुपचरित एवेजेदजाणवा.

तथाविशेषावश्यकमाहाजाष्यमांकह्युंछे जे व्यवहारनयना मूलवेजेदछे एकवेंहेचणरूपव्यवहार वीजोप्रवृत्तिव्यवहार तेवलीप्रवृत्तिनात्रणजेदछे १ वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ३ लौकिकप्रवृत्ति तेमांवलीसाधनप्रवृत्तिनात्रणजेदछे १ जे अरिहंतनीआज्ञायें शुद्धसाधनमार्गें इहलोकसंसारपुजलजोगआशंसादिदोषरहितजेरत्नत्रयीनीपरिणति परजावत्यागसहित तेलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति २ जेस्याद्वादविना मिथ्याजिनिवेशसहित साधनप्रवृत्तिते कुप्रावचनिकसाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेलोकनास्वस-

देश कुलनीचालेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एत्रणप्रवृत्तिकहियें एव्यवहारनयनाभेद जाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोभेदकह्याछे तेजैनशासनरहस्य नाजाणजीवे तेग्रंथमांथीधारवा एव्यहारनयकह्यो.

उजुंरुजुसुअनाणे मुज्जसुयमस्ससोयमुज्जसुउ ॥ सुत्तयइवाजमु वत्थु तेणउज्जुसुतोत्ति ॥ १ ॥ उक्तंतिरुजुश्रुतंसुज्ञानंबोधरूपं ततश्चरुजुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमृजुश्रुतंवा अथवा रुजुअवक्रं वस्तुसूत्रयतीतिरुजुसूत्रइति कथंपुनरेतदभ्युपगतस्य वस्तुनो वक्रत्वमित्याह पच्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नंजंचजस्सपत्तेयं तंरुजुतदेव तस्सत्थि उवकम्ममन्नंतिजमसंतं ॥ २ ॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्त्तमा नकालीनं वस्तुयच्चयस्य प्रत्येकमात्मायत्तदेवतद्भयस्वरूपं व स्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदेवासौनयः रुजुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्त मानकालीनंवस्तुतस्यार्जसूत्रस्यास्तिअन्यत्रशेषातीतानागतंपर कार्यंच यद्यस्मात् असदविद्यमानं ततोअसत्वादेवतरूक्रमिच्छ त्यसावितिअतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पच्चुपन्नगाही उजुसुनयवि हीमुणेयव्वोति यतकालत्रयेवर्तमानमंतरेणावस्तुत्वं उक्तंचयतः अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतद्वर्तते इतिवर्तमानस्यैव वस्तुत्वमितिअतीतस्यकारणता अनागतस्यकार्यता जन्यजन कभावेनप्रवर्तते अतः रुजुसूत्रंवर्तमानग्राहकंतद्वर्तमानं नामा दिचतुः प्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हवे रुजुसूत्रनयकहेछे रुजुके० सरलछे श्रुतके० बोधतेरुजुसूत्रकहियें रुजु-शब्दें अवक्रएटलेसमोछे श्रुतजेने तेरुजुसूत्रकहियें अथवारुजु अवक्रपणे वस्तुनेजाणे कहे तेरुजुसूत्रकहियें ते वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणियें तेकहेछे सांप्रतके० वर्तमानपणे उपनोजेवर्तमानकालेंवस्तुतेरुजुसूत्रकहियें अन्यजे अतीतअनागत तेरुजुसूत्रनीअपेक्षा-यें अछतोछेकेमके अतीततोविणसीगयोछे अनेअनागतआव्योनथी तेवारेंअतीतअना-गत एबेअवस्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायेंवर्ते तेवस्तुपणोछे जेपूर्वकालपश्चात्काल लेयीव-स्तुकहेवीते नैगमनयछे आरोपरूपछे तिहांकोइपुछे जेसंसारीसकर्माजीवने सिद्धसमान कहेछे तेतोअनागतकालें सिद्धथशे तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोछो तेनोउत्तर जे

हेजव्यएअनागतजाविमाटेकहेतानथी एतोवर्तमान सर्वगुणनी छति आत्मप्रदेशेछे ते आवरणदोषें प्रवर्ततिनथी तेथीतिरोजावीपणामाटे संग्रहनयें कहियें पणवस्तुमां सर्व केवलज्ञानादिगुण छतावर्त्ते छे तेमाटेसिद्धकहियेंछैयें.

अनेजेवस्तु तेनामादिकपर्यायसहितवर्त्तेछे माटेनामादिकनिक्षेपा तेसर्वऋजुसूत्रनयनाजेदछे तथानामादिक त्रणनिक्षेपातोद्रव्यछे अनेजावतेजावछे एव्याख्याकारण कार्य जावनी वेंचणकरियें तेमाटेछे पणवस्तुमां सहज चारनिक्षेपाते जावधर्मजछे तथा एस्वकार्यनाकर्त्ताजछे एऋजुसूत्रनावेजेद दिगंबरकहेछे १ सूक्ष्मऋजुसूत्र २ स्थूलऋजुसूत्र जेवर्तमानकालनो एकसमयतेने सूक्ष्मऋजुसूत्रकहियें अनेजेबहुकालिते स्थूलऋजुसूत्र एपणकालापेक्षीजावछे तथाएजावनयछे अनेयोगावलंबीपणो तेवाह्यछे तेपणद्रव्यमाटे एकद्रव्यमध्येगणेछेएऋजुसूत्रनयकह्यो.

शपआक्रोशेशपनमाव्हानमितिशब्दः शपतीतिवाआव्हानयतीति शब्दःशप्यतेआहूयते वस्तुअनेनेतिशब्दः तस्यशब्दस्य योवाच्योर्थस्तत्परिग्रहात्तत्प्रधानत्वात्नयशब्दः यथाकृतकत्वादित्यादिकपंचम्यंतःशब्दोपिहेतुः अर्थरूपंकृतकत्वमनित्यत्वगमकत्वान्मुख्यतयाहेतुरुच्यतेउपचारवस्तुतद्वाचककृतकत्वशब्दोहेतुरभिधीयते एवमिहापिशब्दवाच्यार्थपरिग्रहाउपचारेणनयोपिशब्दः व्यपदिश्यतेइतिजावः यथाऋजुसूत्रनयस्याजीष्टं प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानं तथैवइच्छत्यसौशब्दनयः यद्यस्मात्पृथुबुध्नोदरकलितमृन्मयं जलाहरणादिक्रियाक्षमं प्रसिद्धघटरूपं जावघटमेवेच्छत्यसौ नतुशेषान्नामस्थापनाद्रव्यरूपान्त्रीन्घटानितिशब्दार्थप्रधानो ह्येषनयः चेष्टालक्षणश्चघटः शब्दार्थोघटचेष्टायां घटतेइतिघटः अतो जलाहरणादिचेष्टांकुर्वन्घटः अतश्चतुरोपिनामादिघटानि छतःऋजुसूत्राद्विशेषिततरंवस्तुइच्छति असौशब्दार्थोपपत्तेर्जावघटस्यैवानेनाभ्युपगमादिति अथवाऋजुसूत्रात् शब्दनयःविशेषिततरःऋजुसूत्रेसामान्येनघटोजिप्रेतः शब्देनतुसज्ञावादिजिरनेकधर्मैरजिप्रेतइति तेचसप्तजंगाःपूर्वउक्ताइति ॥

अर्थ ॥ हवेशब्दनयनुं स्वरूपकहियेंछैयें शपतिके० बोलावे तेनेशब्दकहियें अथवा शपियेंबोलावियें वस्तुपणेतेशब्दकहियें तेशब्देंजेवाच्यअर्थ तेने ग्रहे एहवोछेप्रधानपणो

जेनयमां तेपणशब्दनयकहियें जेमकृतकतेजेकस्यो तेनो हेतुजेधर्मते जेवस्तुमांहोय ते बोलाय एटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनोधर्मथयो जेमजलाहरणधर्मजेमांछे तेनेघटकहियेंछैयें एमइहांपण शब्देंवाच्यअर्थग्रहेतेमाटेतेनयनोनामपण शब्दकहेवायजेमऋजुसूत्रनयने वर्त्तमान कालनाधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनयने पण वर्त्तमानतानाधर्मजइष्टछे.

केमकेपेटेपृथुके० पहोलो बुध्नके० घोल संकोचितउदरकलितयुक्त जलाहरणक्रियानेसमर्थ प्रसिद्धघटरूप भावघट तेनेजघटइछेछे पण शेष नामस्थापना अनेद्रव्यरूप त्रणघटने एशब्दनयघटमानेनही घटशब्दनाअर्थने तेसंकेतनेजघटकहे घटधातुतेचेष्टावाचीछे अतःकारणात्के० एकारणपणामाटे एशब्दनयते चेष्टाकर्त्तानेजघटकहे एटले ऋजुसूत्रनय चारनिक्षेपासंयुक्तने पण घटमाने अनेशब्दनयते भावघटनेजघटमाने एटलोविशेषपणोछे शब्दनाअर्थनी जिहांउपपत्तिहोय तेनेजतेवस्तुपणेकहे एटलेऋजुसूत्रनयें सामान्यघटगवेष्यो अनेशब्दनयें सद्भाव जे अस्तिधर्म तथाअसद्भाव जेनास्तिधर्म तेसर्वेसंयुक्तवस्तुने वस्तुपणेंकहे.

एटले वस्तुने शब्देंबोलावतां सातभांगेबोलाववो माटेएसप्तभंगीजेटलाज शब्दनयनाभेदजाणवा तेसप्तभंगीनो स्वरूपपूर्वेकह्युंछे एशब्दादिकनय वस्तुनापर्यायने अवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनाग्राहकछे तेमाटेवस्तुना भावनिक्षेपा एनयेंमुख्यछे धुरनाचारनयमां नामादिक त्रणनिक्षेपामुख्यछे एशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं.

गाथा ॥ जंजंसण्णंभासइ ॥ तंतंचियसमभिरोहइजम्हा सणंत
रथ्थविमुहो तउनउसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ यांयांसंज्ञांघटादिल
क्षणांभाषते वदतितांतामेवयस्मात्संज्ञांतरार्थविमुखः समभिरू
ढोनयःनानार्थनामाएवभाषते यदिएकपर्यायमपेक्ष्यसर्वपर्यायवा
चकत्वं तथाएकपर्यायाणांसंकरःपर्यायसंकरेचवस्तुसंकरोभवत्ये
वेतिमाभूत्संकरदोषः अतःपर्यायांतरानपेक्षएवसमभिरूढनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयनी व्याख्याकहियेंछैयें जेशब्दनयतेइंद्र शक्र पुरंदर इत्यादिकसर्वेइंद्रनानामभेदछे पणएकइंद्रपर्यायवंत इंद्रदेखी तेनासर्वेनामकहे उक्तंचविशेषावश्यके एकस्मिन्नपिइंद्रादिकेवस्तुनियावत् इंद्रनशक्रनपुरदारणादयोर्थाघटंते तद्वशेनेंद्रशक्रादिबहुपर्यायमपितद्वस्तुशब्दनयोमन्यतेसमभिरूढवस्तुनेवमंस्यतेइत्यनयोर्भेदः

जे एकपर्यायप्रगटपणे अने शेषपर्यायने अणप्रगटवे शब्दनय तेटलासर्वेनामबोलावे पण समभिरूढनयतेनबोलावे एटलोशब्दनय तथा समभिरूढनयमां भेदछे माटे हवे समभिरूढनय कहेछे.

घटकुंनादिकमां जेसंज्ञानो वाच्यअर्थदेखाय तेजसंज्ञाकहे जेमांसंज्ञांतर अर्थने विमुखछे तेनेसमनिरूढनयकहियें जोएकसंज्ञामध्ये सर्वनामांतरमानियें तोसर्वनोसंकर थाय तेवारेंपर्यायनो नेदपणोरहेनहीं अनेजेपर्यायांतरहोय तेतोनेदपणेजहोय तेथीपर्यायांतरनो नेदपणोजरह्यो तेमाटेलिंगादिनेदने सापेक्षपणे वस्तुनोनेदपणोजमानवो एसमनिरूढनयवखाण्यो एनयमांपण नेदज्ञाननी मुख्यताछे.

एवंजहसदथ्थो संतोनूउंतदन्नहानूउं ॥ तेणेवंनूअनउं सदथ्थ परोविशेशेणं ॥ १ ॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेणशब्दार्थोव्यवस्थितः तहत्तितथैवयोवर्त्तते घटादिकोर्थः सएवंसन्नूतो विद्यमानः तदन्नहानुउंत्तिवस्तुतदन्यथाशब्दार्थोल्लंघनेनवर्त्तते सतत्वतोघटाद्यर्थोपिनन्नवति किंनूतोविद्यमानःयेनैवमन्यते तेन कारणेनशब्दनयसमनिरूढनयाभ्यांसकाशादेवंनूतनयो विशेषेणशब्दार्थनयतत्परः अयंहियोषिन्मस्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तंघटमानमेव चेष्टमानमेव घटमन्यते नतुग्रहकोणादिव्यवस्थितंविशेषतःशब्दार्थतत्परोयमिति वेंजणमछेणछंच वंजणेणोनयंविशेशे इजहघम्रसदंचेठा वयातहातंपितेणेव॥१॥व्यंज्यते अर्थोनेनेतिव्यंजनंवाचकशब्दोघटादिस्तंचेष्टावताएतद्वाच्येनार्थेनविशिनष्टिसएवघटःशब्दोयश्चेष्टावंतमर्थंप्रतिपादयति नान्यइत्येवंशब्दमर्थेननैयत्येव्यवस्थापयतीत्यर्थः तथार्थमप्युक्तलक्षणमनिहितरूपेणव्यंजनेनविशेषयतिचेष्टापिसैवया घटशब्देनवाच्यत्वेनप्रसिद्धायोषिन्मस्तकारूढस्यजलाहरणादिक्रियारूपानतु स्थानतरणक्रियात्मिका इत्येवमर्थं शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः इत्येवमुनयं विशेषयतिशब्दार्थोनार्थः शब्देननैयत्येस्थापयती त्यर्थः एतदेवाहयदायोषिन्मस्तकारूढचेष्टावानर्थो घटशब्देनोच्यतेसघटलक्षणोर्थःसचतद्वाचकोघटशब्दः अन्यदातुवस्त्वंतरस्येवतच्चेष्टान्नावादघटत्वं घटध्वनेश्चावाचकत्वमित्येवमुनयविशेषकः एवंनूतनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेएवंनूतनयनोस्वरूपकहिछैयें एवंके०जेमघटचेष्टावाची इत्यादिकरूपे

शब्दनयनोअर्थकह्योछे एरीतेजेघटादिकअर्थवर्त्ते ते एवंके० एमज जेविद्यमानपणे शब्दनाअर्थने उलंघीनेवर्त्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोजेमांनपामियें ते वस्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण उछोहोयतो एवंभूतनयतेने तेपणो कहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमभिरूढनयथी एवंभूतनयतेविशेषांतरछे.

एएवंभूतनयते स्त्रीनेमस्तकेचढ्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मार्गेआवतापणानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूंणे रह्योजेघट तेनेघटकरीमानेनही केमकेते चेष्टाने अणकरतोछेतेमाटे. जेथकीअर्थने व्यंजीयेके०प्रगटकरियें तेनेव्यंजनकहियें व्यंजनतेवाचकशब्दछे तेअर्थनेकहेतेक्रियावंतथको तेनेजतेवस्तुकहे वीजानेनकहे अनेतेहिजअर्थकह्युं जेलक्षण तेकह्यानेरूपेंविशेषथाय जेमचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धछे योषितूके०स्त्रीनेमाथेपाणीलावतो तेघट तथास्थानकेंरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवंभूतनयघटकहेनही एशब्देंअर्थ तथाअर्थेशब्दनेथापेछे एनुंएरहस्यछे जेस्त्रीनेमस्तकें चढ्यो चेष्टावंतअर्थ तेघटशब्देंबोलावे तेथीअन्यथा तेने तेपणेबोलावेनही जेम सामान्यकेवली जे ज्ञानादिकगुणेसमानछे तेने समभिरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंभूतनयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेवलीतेइंद्रादिकेंपूजतां युक्तहोयतेनेज अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरणतानेकहे एस्वरूपे एवंभूतनयजाणवो.

एसातेनयनाभेद ते विशेषावश्यकने अनुसारेकह्या तेमांनैगमनादसभेद संग्रहना छभेद अथवाबारकह्या व्यवहारनाभेदआठ अथवाचउदकह्या रुजूसूत्रनाचार अथवा छ कह्या शब्दनासातभेदकह्या समभिरूढनाबेभेद अनेएवंभूतनो एकभेदकह्यो एरीते सर्वनाभेदकह्या वलीनयचक्रमां नयनाभेद सातसोकह्याछे तेपणजाणवा.

एवमेवस्याद्वादरत्नाकरात्पुनर्लक्षणतउच्यते नीयतेयेनश्रुताख्य प्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशस्तादितरांशौदासीन्यतः संप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयःस्वाभिप्रेतादेशादपरांशापलापीपुनर्नयाभासःससमासतःद्विभेदः द्रव्यार्थिकःपर्यायास्तिकश्च आद्योनैगम संग्रह व्यवहाररुजुसूत्रभेदाच्चतुर्धा केचित्रुजुसूत्रंपर्यार्थिकं वदंति तेचचेतनांशत्वेनविकल्पस्यरुजुसूत्रेग्रहणात्श्रीवीरशासने मुख्यतःपरिणतिचक्रस्यैवभावधर्मत्वेनांगीकारात् तेषांरुजुसूत्रः द्रव्यनयेएवधर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनभारोपसंकल्पांशादिभावेनानेकगमग्रहणात्मकोनैगमः सत्चैतन्यमा

त्मनीतिधर्मयोः गुणपर्यायवत्द्रव्यमितिधर्मधर्मिणोः क्षणमेको सुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोः सूक्ष्मनिगोदीजीवसिद्ध समानसत्ताकः अयोगी नोसंसारीतिअंशग्राहीनैगमःधर्मधर्मादी नामेकांतिकपार्थक्याभिसंधिर्नैगमाभ्यासः

अर्थ ॥ हवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्वरूपलखियेंछैयें नीयतेके० पमाडीयें जेथकीश्रुत ज्ञान स्वरूपप्रमाणे विषयेकीधो जेपदार्थनोअंश तेअंशथी इतरके० बीजोजे अंशतेथकी उदासीपणोतेनेपरिवर्जवावालानोजेअभिप्रायविशेष तेनेनयकहियेएटले वस्तुनाअंश-नेग्रहेअनेअन्यथी उदासीनपणो तेनयकहिये एकअंशनेमुख्यकरीने बीजा अंशनेउथापे तेनयाभ्यासकहियें तेनयनावेभेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांद्रव्यार्थिक-ना १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र एचारभेदछे केटलाक आचार्यते ऋजुसूत्र-ने विकल्परूपमाटे भावनयगवेपेछे तेरीते द्रव्यार्थिकना त्रणभेदछे.

हवेनैगमनयनुं स्वरूपकहेछे जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मीने प्र-धानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्मीएवेउने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवेषवो ए-टलेधर्मोनी प्राधान्यता तेवारेपर्यायोनी प्रधानताथयी अनेजिहांधर्मीनोप्रधानपणो तिहांद्रव्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मीनो प्रधानगौणपणो एरीतेजेद्र-व्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेपणारूप ज्ञानोपयोग तेनैगमनयजाणवो तेनावो-धने नैगमवोधकहिये तेनाउदाहरण कहेछे.

सत्के०छतापणे चैतन्यके०जाणपणो एवेधर्ममध्ये एकधर्मपक्षमुख्यपणेगणे अनेबी-जानेगौणपणे नगवेपे एरीतें नैगमनयजाणवो इहांचैतन्यनामेजे व्यंजन पर्यायतेने प्र-धानपणेगणे केमकेचैतन्यपणो तेविशेषगुणछे अने सत्वनामाव्यंजनपर्यायछे तेसकल-द्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेने गौणपणेलेखवे एनैगमनोप्रथमभेदकह्यो.

तथावलीवस्तुपर्यायवत्द्रव्यं एमबोलवुंते धर्मिनोनैगमछे इहांपर्यायवत्द्रव्यं एमव-स्तुछे इहांद्रव्यनोमुख्यपणो वलीवस्तुनेपर्यायवंतकहेवुं ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्याय-नोमुख्यपणो इहांउभयगोचरपणामाटे एनैगमनोबीजोभेदकह्यो.

क्षणमेकःसुखी विषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहांविषयासक्तजीवाख्य जेध-र्मिना मुख्यताना विशेषपणाथी सुखलक्षणधर्मनीप्रधानता तेविशेषणपणेकरीने धर्म-धर्मिने आलंबने एत्रीजोनैगम जेवारेधर्म तथाधर्मिएवेने अवलंबे ग्रहणकरे तेवारेसं-पूर्णवस्तुनोग्रहणथयो तेवारेएज्ञाननेप्रमाणकह्यो तिहांउत्तरद्रव्यपर्यायतेबेहुनेप्रधानपणे अनुभवतो जेज्ञानप्रमाणथाय इहांबेपक्षनेविषे एकनीगौणता बीजानीमुख्यतालेइने

ज्ञानथायछेतेमाटे नयकहियें तथावलीसूक्ष्मनिगोदिजीव तेसमानसत्तावंतछे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकहेवुं तेअंशनैगम.

हवेनैगमाभ्यासकहेछे वस्तुमांधर्मअनेकछे तेएकांतेमाने पणएकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एटलेएकधर्मनेमाने अनेबीजाधर्मनेनमाने तेनैगमाभ्यासकहियें एदुर्नय जाणवो केमके अन्यनयनेगवेषेनही माटेजेमआत्मानेविषे सत्वतथाचैतन्य एधर्मभिन्नभिन्नछे तेमांचैतन्यपणोनमाने ते नैगमाभ्यासकहियें एटलेनैगमनयकह्यो.

यथात्मनिसत्वचैतन्येपरस्परंभिन्ने सामान्यमात्रग्राहीसत्ता परामर्शरूपसंग्रहः सपरापरभेदात्द्विविधः तत्रशुद्धद्रव्य सन्मात्रग्राहकःपरसंग्रहः चेतनालक्षणोजीवइत्यपरसंग्रहः सत्ताद्वैतंस्वीकुर्वाणः सकलविशेषान्निराचक्षाणः संग्रहाभासः संग्रहस्यैकत्वेन एगेआयाइत्यनभिज्ञानात् सत्ताद्वैतएवआत्माततःसर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादि द्रव्याणामदर्शनात् द्रव्यत्वादिनावांतरसामान्यानिमन्वानस्तद्भेदेषुगजनिमीलिकामवलंबमानःपरापरसंग्रहः धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवद्रव्याणामैक्यं द्रव्यत्वादिभेदादित्यादिद्रव्यत्वादिकंप्रतिजानानस्तद्विशेषान्निन्हुवानस्तदाभासः यथाद्रव्यमेवतत्वं तत्वपर्यायाणामग्रहणाद्विपर्यासइतिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्यमात्र समस्तविशेषरहित सत्यद्रव्यत्वादिकने ग्रहेवानोछेस्वभावजेनोते संके० पिंडरूपणेविशेषराशीनेग्रहे पणव्यक्तपणेनग्रहे स्वजातिनादीठाजे इष्टअर्थतेने अविरोधेंकरीने विशेषधर्मोने एकरूपपणेजेग्रहणकरवो तेसंग्रह नयकहियें एभावनाछे तेनाबेभेदछे १ परसंग्रह २ अपरसंग्रह तेमां अशेषविशेषोदासीनंभजमानंशुद्धद्रव्यं सन्मात्रमभिमन्यमानःपरसंग्रहइति जेसमस्तविशेषधर्मस्थापनानीभजनाकरतो एटलेविशेषपणाने अणग्रहतोथको शुद्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेंमाने जेमद्रव्यएपरसंग्रह विश्वएकसत्पणामाटे एमकह्याथी छतापणाना एकपणानुं ज्ञानथायछे एटलेसर्वपदार्थनोएकपणेग्रहणछे तेपरसंग्रहकहियें.

तथाजेसत्तानो अद्वैतस्वीकारे अने द्रव्यांतरभेदनमाने समस्तविशेषपणानेना कहेतोथको जेग्रहणकरे तेअद्वैतवादिवेदांत तथासांख्यदर्शन एपरसंग्रहाभासछे केमके जेभेदधर्म छतादेखायछे तथाद्रव्यांतरपणो तेनेनमाने माटे परसंग्रहाभासकहियें अने जैनतो विशेषसहित सामान्यनेग्रहेछे माटेसंग्रहनयकहियें.

द्रव्यत्वादिनयांतरसामान्यानिमत्वातः तद्भेदेषुगजनिमीलिकावलंबमानः अपरसंग्रहः द्रव्यजे जीवअजीवादिक जेअवांतरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे प्रतिजीवनो विशेषन्नेद नव्य अन्नव्यसम्यक्तमिथ्यात्वी नरनारकादिजेन्नेद तेनेगजनिमीलिकाके० मास्ताइयेंनगवेषवो तेअपरसंग्रहकहियें अनेद्रव्यने सामान्यपणेमाने पणस्वद्रव्यनी परिणामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरसंग्रहान्नासकहियें एसंग्रहनयनुंस्वरूपकह्युं.

संग्रहणेचगोचरीकृतानामर्थानांविधिपूर्वकमवहरणं येनाभिसंधि
नाक्रियतेसव्यवहारः यथायत्सत्तत्द्रव्यंपर्यायश्चेत्यादियः पुन
रपरमार्थिकंद्रव्यपर्यायप्रविन्नागमान्निप्रैतिसव्यवहारान्नासःचा
र्वाकदर्शनमितिव्यवहारदुर्नयः

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयकहेछे संग्रहनयेंग्रह्याजे वस्तुनासत्वादिकधर्म तेनेजगुणन्नेदें वेहेंचे भिन्नभिन्नगवेषे तथापदार्थनीगुणप्रवृत्ति तेनेजमुख्यपणेगवेषे तेव्यवहारनयकहियें जेमद्रव्यछेतेनाजीवपुद्गलादिकपर्यायना क्रमन्नावी तथासहन्नावी एरीतेंबेन्नेदछे तेमांवलीजीवबेप्रकारें १ सिद्धना २ संसारी तेमजपुद्गलनाबेन्नेद परमाणुतथाखंध इत्यादिक कार्यन्नेदें भिन्नमाने तथाक्रमन्नावीपर्यायनाबेन्नेद एकक्रियारूप बीजोअक्रियारूप इम वेहेंचणजे सामर्थ्यादिकगुणन्नेदेंपके तेसर्व व्यवहारनयजाणवो अने जेपरमार्थविना द्रव्यपर्यायनोविन्नागकरे ते व्यवहारान्नासजाणवो.

जेकल्पनाकरीन्नेदेंवेंचे तेचार्वाकमतप्रमुख एव्यवहारनोदुर्नयछे जेमचार्वाकप्रमाणपणें छतोजीवपणो लोकप्रत्यक्षमां दृष्टिगोचर नथी आवतो ते माटे जीव नथी एमकहे अनेजगत्मांपंचन्नूतादिकवस्तुनथी एमकल्पनाकरी थुललोकनेकुमार्गेप्रवर्त्तावे ते व्यवहारदुर्नयकहियें एव्यवहारनयनुंस्वरूपकह्युं

ऋजुवर्तमानक्षणस्थायिपर्यायमात्रप्राधान्यतःसूत्रयतुअन्निप्रायःऋजुसूत्रः
ज्ञानोपयुक्तःज्ञानीदर्शनोपयुक्तः दर्शनी कषायोपयुक्तःकषायीसमतोपयुक्तः
सामायकीवर्तमानापलापीतदान्नासः यथातथागतमतइति ॥

अर्थ ॥ हवेऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलपणेअतीतअनागतने अणगवेषतो अनेवर्त्तमानसमयवर्त्तता जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रके० गवेषे ते ऋजुसूत्रनयकहियें तेज्ञाननेउपयोगें वर्तताने ज्ञानीकहे दर्शनपयोगें वर्तताने दर्शनी कहे कषायपणेवर्तताजीवने कषायीकहे समतानेउपयोगेंवर्तताजीवने सामायकवंतकहे इहांकोइपुछेजे उपरकह्यामुजबतो ऋजुसूत्र तथा शब्दनय एबेएकजथायछे तेनेउ-

त्तरकहेछे जेविशेषावश्यकमांकह्युंछे कारणंयावत् रुजुसूत्रः एटलेज्ञाननेकारणपणे वर्तती तेरुजुसूत्रग्रहेछे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेथाय तेशब्दनयकहियेंएफेरछे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहण न करे तेरुजुसूत्राभासकहियें जेछताभावनेअछताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीवनेअजीवकहे अजीवनेजीवकहे इत्यादिक ते गत के० बौद्धनोमतछे जेछतोसदासर्वदावर्ततो जीवादिद्रव्य तेनापर्यायने पलटवे सर्वथाद्रव्यने विनासिकमाने तेनेरुजुसूत्रनयाभासाभिप्रायजाणवो एरुजुसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्रागृभावेनतिरोभाविपर्यायग्राहकशब्दनयः कालादि भेदेनध्वनेरर्थभेदंप्रतिपाद्यमानः शब्दः जलाहरणादिक्रियासमर्थ एवघटः नमृत्पिंम्रादौ तत्वार्थवृत्तौशब्दवशादर्थप्रतिपत्तिः तत्कार्यधर्मेवर्त्तमानवस्तुतथामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंअर्थपरिणतं द्रव्यमिछतित्रिकालत्रिलिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिभिः समन्वितमर्थमिछति तद्भेदेतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाभासः

अर्थ ॥ हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे बीजाशब्दवाचकपर्यायने तिरोभावें अणप्रगटवेंपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण लिंगत्रण तेनेभेदें शब्दनोभेदपडे तेभेदेंजअर्थनेकहे अथवा जलाहरणादि समर्थनेघटकहे तथाकुंभादिक चिन्हपर्यायजेटलाछे तेटलानो अर्थवर्ततोनदेखाय तोपण तेनेनाम कहीबोलावे एम जेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोछे तेनेग्रहे पण माटीना पिंम्रने घट कहेनही तेशब्दनयकहियें अनेजे संग्रह तथानैगमनयवालोकहे ते सत्तायोग्यता अंशनाग्राहकछे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशथीअर्थपरूिवर्जवो तेशब्देंबोलावतोहोय जे अर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी अर्थेपरिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेछे काललिंगादिभेदें अर्थनोभेदछे ते भेद तेम ते धर्मेवस्तु माने तेशब्दनयकहियें अनेतेअर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातो नथी तेनेते वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दाभासकहिजे एटलेशब्दनयकह्यो.

एकार्थावलंबिपर्यायशब्देषुनिरुक्तिभेदेनभिन्नमर्थं समभिरोहन्समभिरूढः इंदनादिंद्रः शकनाछक्रः पुरदारणात् पुरंदरःइत्यादि षुयथापर्यायध्वनिनामाभिधेयनानात्वमेवकक्षीकुर्वाणस्तदाभासः यथाइंद्रःशक्रःपुरंदर इत्यादिभिन्नाभिधेये

अर्थ ॥ हवेसमजिरूढनयकहेछे जेएकपदार्थनेअविलंबी जेटलासरिखानाम तेटलापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानिरुक्तिव्युत्पत्तिजिन्नहोय तेअर्थनो पणजेदहोय तेअर्थने शं के० सम्यक्प्रकारें आरोहतो एटलेएटलासर्वेअर्थसंयुक्तजेहोय तेसमजिरूढनयकहियें जेमइंद्रादिधातु परमैश्वर्यनेअर्थेछे तेपरमऐश्वर्यवंतनेंइंद्रकहियें तथाशकनकहेतांनविनविशक्तियुक्तने शक्रकहियें पुर के० दैत्यने दरे के० विदारे तेपुरंदर अनेशचिजेइंद्राणी तेनोपतिस्वामी तेशचीपतिकहियें एटलासर्वेधर्म तेइंद्रमां छे तेमाटेजेदेवलोकनोधणीछे तेनेइंद्रएवेनामें बोलावेछे बीजानामादिकइंद्रने एनामेन बोलावे जेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वेनेजिन्नजिन्नअर्थकहेछे पण एकार्थ नजाणेते समजिरूढाजासकहिये एटलेंसमजिरूढनयकह्यो.

एवंजिन्नशब्दवाच्यतत्वाच्छब्दानांस्वप्रवृत्तिनिमित्तजूतक्रियावि
शिष्टमर्थवाच्यत्वेनाज्युपगछन्नेवंजूतः यथाइंदनमनुजवन्निंद्रः
शकनाछक्रः शब्दवाच्यतयाप्रत्यक्षस्तदाजासः यथा विशिष्ट
चेष्टाशून्यं घटाख्यवस्तुनः घटशब्दवाच्यं घटशब्दप्रव्यवृ
त्तिजूतार्थशून्यत्वात् पटवदित्यादि

अर्थ ॥ हवेएवंजूतनयकहेछे शब्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तजूतजेक्रिया तेविशिष्टसंयुक्त जेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेनेजेपहोंचतोहोय एटलेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवंजूतनय कहियें तथा ऐश्वर्यसहित तेइंद्रशक्ररूप सिंहासनेबेशेतेशक्र शचि के० इंद्राणीनेसाथेबेठो तेवारेंशचीपतिकहे एटलेजेशब्दना जेटलापर्याय तेसर्वेतेमांपहोंचताजावने ते नामकहिबोलावे अनेजेपर्यायपहोंचतोदेखेनहीतेपर्यायनीनाकहे जिहांसुधीएकपर्याय ऊणोछेतिहांसुधी समजिरूढनयकहियें अने सर्वेवचनपर्यायनेपहोंचे तेवारेंएवंजूतनयकहियें जेपदार्थनोनामजेदनो जेददेखीनेपदार्थनीजिन्नताकहे तेएवंजूतनयाजासकहिजे नामजेदेंतेवस्तुजजिन्न जेम हाथी घोमाहिरण्यजिन्नछे तेमजिन्नपणोमाने जेमअर्थजिन्नपणामाटे घटथी पट जिन्न छे तेमइंद्रपणाथी पुरंदरपणोजिन्नमाने तेएवंजूतनयनोकुनयजाणवो एटलेएवंजूतनयकह्यो एरीतेसातनयनी व्याख्या कही.

अत्र आद्यनयचतुष्टयमविशुद्धपदार्थप्ररूपणाप्रवणत्वात् अर्थ
नयानामद्रव्यत्वसामान्यरूपानयाः शब्दादयो विशुद्धनयाः श
ब्दावलंबार्थमुख्यत्वादाद्यास्तेतत्वजेदद्वारेणवचनमिछंतिशब्दन
यास्तावत्समानलिंगानां समानवचनानांशब्दानां इंद्रशक्रपुरंद

रादीनांवाच्यं भावार्थमेवाभिन्नमभ्युपैति नजातुचित्भिन्नवचनं वाशब्दंस्त्रीदाराः तथाआपोजलमितिसमभिरूढवस्तुप्रत्यर्थंश ब्दनिवेशादिंद्रशक्रादीनांपर्यायशब्दत्वंनप्रतिजानीते अत्यंतभि न्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वादभिन्नार्थत्वमेवानुमन्यंते घटशक्रादिशब्दा नामिवेति एवंभूतःपुनर्यथासद्भाववस्तुवचनगोचरं आपृछती तिचेष्टाविशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यःचित्रालेख्यतोपयोगपरिणत श्चचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठन्घटोनघटःतछब्दार्थरहितत्वात् कूटशब्दवाच्यार्थवन्नापिभुंजानः सयानोवाचित्रकाराभिधाना भिधेयश्चित्रज्ञानोपयोगपरिणतिशून्यत्वाद्गोपालवदेवमभेदभेदा र्थवाचिनो नेकैकशब्दवाच्यार्थावलंबिनश्चशब्दप्रधानार्थोपसर्ज नाछब्दनयाइतितत्वार्थवृत्तौ एतेषुनैगमः सामान्यविशेषोभय ग्राहकः व्यवहारविशेषग्राहकः द्रव्यार्थावलंबिरुजुसूत्रविशेषग्रा हकएव एतेचत्वारः द्रव्यनयाः शब्दादयः पर्यायार्थिकविशेषाव लंबीभावनयाश्चेति शब्दादयोनामस्थापनाद्रव्यनिक्षेपादवस्तुत याजानाति परस्परसापेक्षाःसम्यक्दर्शनिप्रतिनयंभेदानांशतं ते नसप्तशतंनयानामितिअनयोगधारोक्तत्वात्ज्ञेयं.

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनय जेछे तेअविशुद्धछे शामाटे के जे पदार्थ के० द्रव्य तेनेसामान्यपणेकहेवाना अधिकारीछे एनयनुं किहांएकअर्थनय एपणनामछे तेअर्थशब्देद्रव्यलेवुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयछे केमके शब्दनाअर्थनी एनेमुख्यता छेपेहेलानयते भेदपणेवचननेवांछेछे अनेशब्दादिकनयते लिंगादिके अभेदवचते अभेद कहे तथाभिन्नवचनने भिन्नार्थकहीमाने अनेसमभिरूढते भिन्नशब्दतेनेवस्तुपर्यायन माने तथाएवंभूतते भिन्नगोचरपर्यायने भिन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय तेनेघटकहे पण खूणेपड्योघटकहेनही चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगेवर्ततोहोय तेनेचित्रकार कहेपणतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावावेगेहोय तेनेचित्रकारनकहे केमकेतेउपयोगेंरहितछे माटेएनयतेशब्द तथाअर्थनेअभेदपणोमानेछे अनेअर्थथीशून्यशब्दते प्रमाणनथी अनेशब्दप्रधान अर्थतेद्रव्यने गौणपणेवर्तता शब्दादिकत्रणनयछे एम तत्वार्थटीकामध्येकह्योछे.

एसातनयनेविषे पेहेलोनैगमनयते सामान्यविशेषबेहुनेमानेछे संग्रहनय ते सामान्यनेमानेछे व्यवहारनयविशेषनेमानेछेअने द्रव्यार्थावलंबीछे तथाऋजुसूत्रतोविशेषग्राहकछे एचारतेद्रव्यनयछे अनेपाछला शब्दादिकत्रणनयते पर्यायार्थिक विशेषावलंबी भावनयछे तथाशब्दादिकनयते नामस्थापनाद्रव्य एपेहेलात्रणनिक्षेपाने अवस्तुमानेछे तिन्हसद्दनयाणंअवत्थू एअनुयोगद्वारसूत्रनुंवचनछे एसातेनयपरस्पर सापेक्षपणे ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोमिथ्यात्वी जाणवा तथाएकेकानयना सोसोभेदथायछे एमसातेनयनामली सातसोभेदथायछे एअधिकार श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथीकह्योछे.

पूर्वपूर्वनयःप्रचुरगोचरःपरास्तुपरिमितविषयाः सन्मात्रगोचरात्
संग्राहात्नैगमोभावाभावभूमित्वाद्भूरिविषयः वर्त्तमानविषया
ऋजुसूत्राद्व्यवहारस्त्रिकालविषयत्वात्बहुविषयकालादिभेदेनभि
न्नार्थोपदर्शनात् भिन्नाहजुसूत्रविपरीतत्वान्महार्थःप्रतिपर्यायमश
ब्दमर्थभेदमभीप्सितःसमभिरूढाछब्दप्रभूतविषयः प्रतिक्रियां
भिन्नमर्थप्रतिजानात्एवंभूतात् समभिरूढः महान्गोचरःनयवा
क्यमपिस्वविषयेप्रवर्त्तमानंविधिप्रतिषेधाभ्यांसप्तभंगीमनुव्रजति
असंग्राहीनैगमः सत्ताग्राहीसंग्रहः गुणप्रवृत्तिलोकप्रवृत्तिग्राही
व्यवहारः कारणपरिणामग्राहीऋजुसूत्रः व्यक्तकार्यग्राहीशब्दःप
र्यायांतरभिन्नकार्यग्राही समभिरूढःतत्परिणामनमुख्यकार्यग्राही
एवंभूतः इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचारः जावंतियावयणप्पहा ॥
तावतियाचेवहूंतिनयवाया ॥ इतिवचनात् उक्तोनयाधिकारः

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वकेंपूर्वलोजेनैगम नय तेनो विस्तारघणोजाणवो अनेतेथी ऊपरलोनयतेनो परिमितविषयछे एटले थोमोविषयछे केमकेसत्तामात्रनुंग्राहकसंग्रहनयछे छतिसत्ताने संग्रहनयग्रहे अनेनैगमते छताभाव अथवा संकल्पपणे अछता भाव सर्वेनेग्रहे अथवासामान्यविशेष बेधर्मनेग्रहे तेमाटेनैगमनोविषयघणोछे. तथा संग्रहनयते सत्तागत सामान्यविशेष बेहुनेग्रहेछे अनेव्यवहारते सत्एकविशेषनेज ग्रहेछे माटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनो विषयथोमोछे अने व्यवहारनयथी संग्रहनय ते बहुविषयीछे

तथाऋजुसूत्रनय ते वर्त्तमानविशेषधर्मनो ग्राहकछे अनेव्यवहारथी ऋजुसूत्रनयते काल-विषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहार बहुविषयीछे अने व्यवहारथी ऋजुसूत्रअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानकालग्रहे अनेशब्दनयकालादि वचनलिंगथी वेहेंचताअर्थनेग्रहे अने ऋजुसूत्रनयतेवचनलिंगने भिन्नपाम्तोनथी तेमाटे ऋजुसूत्रथी शब्दनयअल्पवि-षयीछे ऋजुसूत्रबहुविषयीछे अनेशब्दनय सर्वपर्यायनो एकपर्यायनेग्रहताग्रहे अनेस-मभिरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेग्रहे तेमाटे शब्दनयथी समभिरूढनय ते अ-ल्पविषयीछे केमके समभिरूढते पर्यायनोसर्वकालगवेष्योछे अने एवंभूतनयते प्रति-समयें क्रियाभेदें भिन्नार्थपणो मानतोअल्पविषयीछे तेमाटे एवंभूतथी समभिरूढब-हुविषयीजाणवो अने एवंभूत अल्पविषयी जाणवो.

जेनयवचनछे तेपोतानानयने स्वरूपेंअस्तिछे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिछे ए-मसर्वेनयनी विधिप्रतिषेधेंकरीने सप्तभंगीऊपजे पणनयनीजेसप्तभंगी ते विकलादेशी जहोय अनेजेसकलादेशीसप्तभंगी तेप्रमाणछेपणनयनीसप्तभंगीनऊपजे.

ऊक्तंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वभावाहिनयसप्तभंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूप-कत्वात् सकलादेशस्वभावनुंप्रमाणसप्तभंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्ररूपकत्वात्एवचनछे एट-लेयथायोग्यपणेनयनोअधिकार कह्यो.

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताआत्माप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः चैतन्यस्वरूपः परणामीकर्त्तासाक्षात्भोक्तास्वदेहपरिमाणः प्रतिक्षेत्रभिन्नत्वेनैवपंचकारणसामग्रीतः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रसाधनात्साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्द्विविधप्रत्यक्षपरोक्षभेदात्स्पष्टंप्रत्यक्षापरोक्षमन्यत् अथवाआत्मोपयोगताइंद्रियद्वाराप्रवर्त्तनेनयत्ज्ञानंतत्प्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायो देशप्रत्यक्षो केवलज्ञानंतुसकलप्रत्यक्षंमतिश्रुतेपरोक्षे तच्चतुर्विधं अनुमानोपमानागमार्थापत्तिभेदात् लिंगपरामर्शोनुमानं लिंगंचाविनाभूतवस्तुकंनियतंज्ञेयंयथागिरिगुहिरादौव्योमावलंबिधूमलेखांदृष्ट्वाअनुमानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवत्वात् यत्रधूमस्तत्राग्निः यथामहानसं एवंपंचावयवशुद्धं अनुमानं यथार्थज्ञानकारणं सदृश्यावलंबनेनाज्ञातवस्तुनांयत्ज्ञानंउपमान

ज्ञानं यथागोस्तथागवयः गोसादृश्येनअदृष्टगवयाकारज्ञानं उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुषआप्तः सद्उत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञएव आप्तोक्तंवाक्यंआगमः रागद्वेषाज्ञानभयादि दोषरहितत्वात् अर्हतः वाक्यआगमः तदनुयायिपूर्वापरविरुद्धमिथ्यात्वासंयमकषायभ्रांतिरहितं स्याद्वादोपेतंवाक्यं अन्येषांशिष्टानामपिवाक्यंआगमः लिंगग्रहणाद्ज्ञेयज्ञानोपकारकंअर्थापत्तिप्रमाणं यथापीनोदेवदत्तोदिवानभुंक्ते तदाअर्थाद्रात्रौभुंक्तेएव इत्यादिप्रमाणपरिपाटीगृहीतजीवाजीवस्वरूपःसम्यक्ज्ञानीउच्यते

अर्थ ॥ हवेप्रमाणनुं स्वरूपकहेछे सर्वनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथा सर्वधर्मनो जाणंगपणोछेजेमां एहवुंजेज्ञानतेने प्रमाणकहियें जेप्रमाणतेमापवानुंनामछे त्रण जगतनासर्वप्रमेयने मापवानुंप्रमाण तेज्ञानछे अनेतेप्रमाणनो कर्त्ताआत्मातेप्रमाताछे तेप्रत्यक्षादिप्रमाणे सिद्ध के० ठहेरयोछे चैतन्यस्वरूपपरिणामीछे वलीभवनधर्मेथी उत्पादव्ययपणे परिणमेछे तेमाटेपरिणामिकछेतथाकर्त्ताछे तथाभोक्ताछे जेकर्त्ताहोय तेजभोक्ताहोय भोक्तापणाविना सुखमयीकहेवायनही तेचैतन्यसंसारीपणेस्वदेहपरिमाणछे प्रतिक्षेत्रके० प्रत्येकें शरीरभिन्नपणामाटे भिन्नजीवछे तेजीवपांचकारणनी सामग्री पामीने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रनेसाधवाथी संपूर्णअविनाशी निर्मल निःकलंकअसहाय अप्रयास स्वगुणनिरावरण स्वकार्यप्रवृत्ति अक्षर अव्यावाधसुखमयी एवीसिद्धता निःपन्नतानीपजे एजसाधनमार्गछे.

स्वशब्देंकरीआत्मा परशब्देंपरद्रव्य स्वआत्माथीभिन्न अनंतापरजीवधर्मादिक तेनाव्यवसायीव्यवच्छेदकजेज्ञान तेनेप्रमाणकहियें तेनामूलभेदबेछे एकप्रत्यक्ष बीजो परोक्ष तिहांस्पष्टज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेथीइतरके० बीजोजे अस्पष्टज्ञानते परोक्षकहियें अथवा आत्माना उपयोगथी इंद्रियनीप्रवृत्तिविना जे ज्ञान ते प्रत्यक्षकहियें तेना बे भेदछे एकदेशप्रत्यक्ष बीजोसर्वप्रत्यक्ष तेमांअवधिज्ञान तथामनपर्यवज्ञान ते देश प्रत्यक्ष छे केमके अवधिज्ञान एकपुद्गलपरमाणुने द्रव्यैंतथाक्षेत्रें अने कालें तथाभावें केटलाकपर्यायनेदेखे तथामनपर्यवज्ञानी मननापर्यायने प्रत्यक्षजाणे पण बीजाद्रव्यने न जाणे माटेबेहुज्ञानने देशप्रत्यक्षकहियें कारणके देशथीवस्तुनेजाणे पण सर्वथीनजाणेमाटे अने केवलज्ञान ते जीवतथाअजीवरूपीतथाअरूपीसर्वलोकालोकना त्रणकालना सर्वभावने प्रत्यक्षपणेजाणे माटे सर्वप्रत्यक्षकहियें.

तथामतिज्ञान अनेश्रुतज्ञान एवेअस्पष्टज्ञानछे माटेपरोक्षछे तेपरोक्षप्रमाणना चारभेदछे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमाणतिहांचिन्हेकरीने जेपदार्थनेउलखवुं तेनेलिंगकहियें तेपरामर्शके०संभालवाथी जेज्ञान थाय तेनेअनुमानज्ञानकहियें लिंगते जेविना तेवस्तुहोयजनही ते तेवस्तुनुंलिंगजाणवुं तेलिंगनेदेखवाथी वस्तुनोनिर्धारकरवो तेअनुमानप्रमाणजाणवो.

जेमगिरिगुहिरनेविषे आकाशावलंबी धूमनीरेषादेखीने अनुमानकरेजेएपर्वत अग्निसहितछे ए पक्ष तथासाध्यकह्यो जेपक्षतेपर्वत अनेसाध्यते अग्निवंतपणो साधवो ते हेतु जेधूम्रवंतपणामाटे एटलेजिहांधूम्रहोय तिहांअग्निअवश्यहोयज आकाशने पोहोंचती जेधूम्ररेषाते अग्निविनाहोयनही तिहांदृष्टांतकहेछे.

जेममाहानसके०रसोइआए तेरसोडानेविषे धूम्रतथाअग्निनेभेलादीठा तेमाटेइहां आअमुकपर्वतनेविषेधूम्रछे तोतिहांनिश्चेथीअग्निछेज एहवीव्याप्ति निर्धारीनेज्ञानकरवो तेपंचावयवें शुद्धअनुमानप्रमाणकहियें तेअनुमानप्रमाण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं कारणछे तेअनुमानेजे यथार्थज्ञानथाय तेनेमानके०प्रमाणकहियें अने जे अयथार्थज्ञान थाय ते प्रमाण नही.

तथासरिखावलंबीपणे अजाणीवस्तुनो जेजाणपणोथाय जेम गो के० बलद तेम गवय के० गवो ए गो सरिखो गवयनुंज्ञानथयुं तेउपमानप्रमाणकहियें.

यथार्थभावनो उपदेशकजेपुरुष तेआप्तकहियें तेउत्कृष्टआप्त वीतरागरागद्वेषरहितसर्वज्ञकेवलज्ञानीते आप्तनोकह्योजेवचन तेनेआगमकहियें जेराग द्वेषतथाअज्ञान एदोषेआगोपाछो अधिकोउछो बोलायछे तेआगमनही अने राग द्वेष भय अज्ञान रहितजे अरिहंत तेनुं वचन ते आगमप्रमाणजाणवो.

तथावलीते अरिहंतनावचनने अनुजायी पूर्वापरअविरोधि मिथ्यात्व असंयम कषायथीरहित तेभ्रांतिविनास्याद्वादेंयुक्त तथा जे साधक ते साधक बाधक ते बाधक हेय ते हेय उपादेय ते उपादेय इत्यादिकवहेंचणसहित जेहोय तेनोकह्योते आगम प्रमाणजाणवो उक्तंच सुत्तंगणहररइयं तहेवपत्तयबुधरइयंच ॥ सुअकेवलीनारहियं अभिन्नदशपुविणारइयं ॥ १ ॥ इत्यादिकसडुपयोगी भवभीरु जगतजीवोना उपकारी एवाश्रुतआम्नायधर जेश्रुतनेअनुसारेंकहे तेनोवचनपण प्रमाणमानवुं.

तथाकोइक फलरूपलिंगेकरीने जेअजाण्यापदार्थनो निर्धारकरियें तेअर्थापत्तिप्रमाणकहियें जेमदेवदत्तनो पीन के०पुष्टशरीरछे पण ते देवदत्त दिवसनोजमतोनथीतेवारेंअर्थापत्तिथीजाणीयें जेरात्रेंजमतोहशे माटेपुष्टशरीरछे एमअर्थापत्तिप्रमाणजाणवो एप्रमाणतेजाते अनुमाननोअंशछे तेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमां प्रथमकह्योनथी.

इहांदर्शनांतरी जे प्रमाणमानेछे पणतेसत्यनथी जेमछप्रकारनाइंद्रियसन्निकर्षथी ऊपनो जेज्ञान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेछे अने परब्रह्मनेइंद्रियरहितमानेछेज्ञानानंदमयीमानेछे तेवारें इंद्रियरहितज्ञानते अप्रमाणथायछे इत्यादिकअनेकयुक्तिछे तेमाटेतेप्रमाणनही तथाचार्वाकमतवाला मात्र एकइंद्रियप्रत्यक्षनेज प्रमाणमानेछे एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पटालीने सर्वनयनिक्षेप सप्तभंगी स्याद्वादयुक्त जेवस्तु जीव तथाअजीवनो जे सम्यक्ज्ञान तेने सम्यक्ज्ञानीकहियें एज्ञाननुंस्वरूपकह्युंः

तत्वार्थश्रद्धानंसम्यग्दर्शनं यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्तज्ञाने नसम्यग्ज्ञानंस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रंएतद्रत्नत्रयीरूपमोक्षमार्गसाधनात्साध्यसिद्धिः इत्यनेनात्मनः स्वीयंस्वरूपंसम्यक्ज्ञानंज्ञानप्रकर्षएवात्मलाभः ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणएवात्मा छद्मस्थानांचप्रथमंदर्शनोपयोगः केवलीनांप्रथमज्ञानोपयोगः पश्चाद्दर्शनोपयोगसहकारीकर्तृत्वप्रयोगात् उपयोगसहकारेणैवशेषगुणानां प्रवृत्त्यभ्युपगमात् इत्येवंस्वतत्वज्ञानकरणे स्वरूपोपादनं तथास्वरूपरमणध्यानैकत्वेनैवसिद्धिः

अर्थ ॥ हवे श्रीवीतरागना आगमथी जाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेने हेयोपादेयपणे निर्धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहियें तिहांतत्वार्थनेविषेकह्योछे के जे तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शन उक्तंच उत्तराध्ययने जीवाजीवायबंधो ॥ अपुन्नंपावसवोतहा ॥ संवरो निज्जरामुक्को ॥ संतिएतिहियानव ॥ १ ॥ तिहियाणंतुभावाणं सब्भावेउवएसण ॥ भावेणसद्दहंतस्स ॥ समत्तंतिवियाहियं ॥२॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवुं जे तत्वार्थ जीवादिपदार्थनो श्रद्धाननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते धर्मनुंमूलछे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी परिक्षासहित जेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानछे जेमांहेयोपयोग संकोच अकरणबुद्धीनथी पणउपादेयने उपयोगें एहवीचिंतवणाथायजेहवे किवारेकरुं एविनाकेमचाले एहवी जोबुद्धीनथी तो तेसंवेदनज्ञानछे तेथीसंवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी.

तथास्वरूपरमण परभावरागद्वेष विभावादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें एरत्नत्रयीरूप परिणामते मोक्षमार्गछे एमार्गनेसाधवाथी साध्य जे परमअव्याबाधपद तेनी सिद्धिनिष्पत्तिथाय. जेआत्मानोपोतानुंरूप तेयथार्थज्ञानछे तथा चेतनालक्षण तेज जीवपणोछे अने ज्ञाननोप्रकर्ष बहुलपणोते आत्मानेलाभछे ज्ञानतथादर्शननो उपयोगल-

क्षणआत्माछे तिहांछद्मस्थने प्रथमदर्शनोपयोग पछेज्ञानोपयोगछे अनेकेवलीने प्रथम ज्ञानोपयोग पछे दर्शनोपयोगछे जेसर्व जीवनवोगुणपामेतेनो केवलीनेज्ञानोपयोग तेकालेंथाय तेमाटे प्रथमज्ञानोपयोगवर्त्ते.

अनेसहकारीजेकर्तृताशक्ति तेजेमहतोतेमजछे एकगुणनेसाह्यकरे अनेबीजागुणनो उपयोगसहकारेंवर्त्तेछे सहकारतेज्ञानोपयोग विशेषधर्मनेजाणे तेजाणतांविशेषते सामान्यनेआधारेंवर्त्तेछे तेसहितजाणेएटले विशेषतेनेला सामान्यग्रहवाणा अनेसामान्यग्रहतां सामान्यतेविशेषता जनकहेता सहितजाणेतेमाटेसर्वज्ञसर्वदर्शीपणोजाणवोएरीतेस्वतत्वनुंज्ञानकरवुं तेथीस्वधर्मनो उपादानके०लेवापणुंथाय पछे स्वरूपनेपामवे स्वरूपमांरमणथाय तेरमणथकीध्याननी एकत्वताथाय एटलेनिर्शेज्ञान निर्शेचारित्र तथा निर्शेतपपणो थाय जेथकी सिद्धिके०मोक्ष निपजे एसिद्धांत जाणवो.

तत्रप्रथमतः ग्रंथिभेदंकृत्वाशुद्धश्रद्धानज्ञानीद्वादशकषायोपशमः स्वरूपैकत्वध्यानपरिणतेनक्षपकश्रेणीपरिपाटीकृतघातिकर्मक्षयः अवाप्तकेवलज्ञानदर्शनः योगनिरोधात् अयोगीभावमापन्नः अघातिकर्मक्षयानंतरंसमयएवास्पर्शवद्गत्याएकांतिकात्यंतकानांबाधनिरूपाधिनिधिरूपं चरित्रानयाशाविनाशिसंपूर्णात्मशक्तिप्राग्भावलक्षणंसुखमनुभवन् सिध्यति साद्यनंतंकालंतिष्ठतेपरमात्माइति एतत्कार्यं सर्वभव्यानां

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिभेदकरीने शुद्धश्रद्धावान तथाशुद्धज्ञानीजेजीव ते प्रथमत्रण चोकडीनो क्षयोपशमकरीने पाम्योजेचारित्र तेध्यानेंएकत्वथयीने क्षपकश्रेणीमांडी अनुक्रमेंघातिकर्म क्षयकरीने केवलदर्शनपामे पछेएसयोगीगुणें जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अनेउत्कृष्टो आठवरशऊणापूर्वकोडीरहीने कोइककेवलीसमुद्घात करे कोइककेवलीसमुद्घातनकरे पणआवर्जिकरण सर्वेकेवलीकरे ते आवर्जिकरणनुंस्वरूपकहेछे इहां आत्मप्रदेशे रह्याजेकर्मदल तेपेहेलाचलेछे पछेउदीरणाथायछे पछेभोगवीनिर्जरेछे तिहांकेवलीने जिवारेतेरमेंगुणठाणे अल्पायुरहे तिवारेंआवर्जिकरणकरेछे तेआत्मप्रदेशगतकर्म्मदलने प्रतिसमयें असंख्यातगुणनिर्जराकरवीछे तेटलादलने आत्मवीर्येंकरीने सर्वेचलायमानकरीमूके एवुंजेवीर्यनुंप्रवर्तन तेआवर्जिकरणकहियें एमकरतां त्रणकर्म्मदलवधतांरह्यातो समुद्घातकरे नहीका नकरे तेमाटे आवर्जिकरण सर्वेकेवलीकरे पछे तेरमागुणठाणानेअंते योगनोरोधकरीने अयोगी अशरीरी अणाहारीअप्रकंप घनीकृ-

तथ्आत्मप्रदेशीथको पांचलघुअक्षरजेटलोकाल अयोगीगुणठाणेरहिने शेषसत्तागत प्रकृतिविद्यमान तथाअविद्यमान स्तिबुकसंक्रमें सत्ताथीखपावी सकलपुद्गलसंगपणाथी रहितथयी तेहिजसमयें आकाश प्रदेशनी वीजीश्रेणीने अणफरसतोथको लोकांतेसिद्धकृतकृत्य संपूर्णगुणप्राग्भावी पूर्णपरमात्मा परमानंदी अनंतकेवलज्ञानमयी अनंतदर्शनमयी अरूपीसिद्धथाय उक्तंच उत्तराध्ययने कहिपडिहयासिद्धा ॥ कहिसिद्धापयठिया ॥ कहिबोंदिचइत्ताणं ॥ कत्थंगंतुणसिज्झई अलोएपडिहयसिद्धा लोयग्गम्मिपयठिया ॥ इहबोंदिंचइत्ताणं तत्थगंतूण सिज्झइ ॥ इत्यादि तेसिद्ध एकांतिक आत्यंतिक अनावाध निरुपाधि निरुपचरित अनायास अविनाशी संपूर्ण आत्मशक्तिप्रगटरूपसुखप्रते अनुभवे अव्याबाधसुखते प्रदेशेंप्रदेशें अनंतोछे उक्तंच उववाइसूत्रे सिद्धस्ससुहोराशि ॥सव्वद्धापंडियंजहवज्जा ॥ सोणंतवग्गोभइयो ॥ सव्वागासेनमाइज्जा॥१॥ इतिवचनात् एरीतेपरमानंदसुख भोगवतारहेछे सादिअनंतकालपर्यंत परमात्मापणेरहेछे तोएहिजकार्य सर्वभव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताभ्यासछे तेश्रुतअभ्यासकरवा माटे एद्रव्यानुयोग नयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेगुरुनीपरंपराथी हुंपाम्यो ते गुर्वादिकनी परंपरानेसंभारुंछुं.

काव्य

गछेश्रीकोटिकाख्येविशदखरतरेज्ञानपात्रामहांतःसूरिश्रीजैनचंद्रा गुरुतरगणभृत्शिष्यमुख्याविनीताः ॥ श्रीमत्पुण्यात्प्रधानाः सुमतिजलनिधिपाठकाः साधुरंगाः ॥ तच्छिष्याःपाठकेंद्राः श्रुतरसरसिकाराजसारामुनींद्राः ॥ १ ॥

तच्चरणांबुजसेवालीनाः श्रीज्ञानधर्मधराः ॥ तच्छिष्यपाठकोत्तम दीपचंद्राःश्रुतरसज्ञाः ॥ २ ॥ नयचक्रलेशमेतत्तेषांशिष्येणदेवचंद्रेण ॥ स्वपरावबोधनार्थं कृतंसदभ्यासवृध्यर्थं ॥ ३ ॥ शोधयंतुसुधियःकृपापराः शुद्धतत्वरसिकाश्चपठंतु ॥ साधनेनकृतसिद्धिसत्सुखाः परमसंगलभावमश्नुते ॥ ४ ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मबोधविणुभविकने ॥ नहोयेतत्वप्रतीत ॥ तत्वालंबनज्ञानविण ॥ नटलेभवभ्रमरूप ॥ १ ॥ तत्वतेआत्मस्वरूपछे ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परभावानुगचेतना ॥ कर्मगेहनिषे ॥ २ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ भजनिजभावविशुद्ध ॥ आत्मभावथीएकतापणोछे अ॰सिद्ध ॥ ३ ॥ स्याद्वादगुणपरिणमन ॥ रमतासमतासंग ॥ साधेशुद्धानंदता॥

निर्विकल्पपरसरंग ॥ ४ ॥ मोक्षसाधनतणुमूलते ॥ सम्यक्दर्शनज्ञान ॥ वस्तुधर्मअवबोधविणु ॥ तुसखंमणसमान ॥ ५ ॥ आत्मबोधविणुजेक्रिया ॥ तेतो बालकचाल ॥ तत्वार्थनीवृत्तिमें ॥ लेजोवचनसंभाल ॥६॥ रत्नत्रयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीव॥ लोकविजयअध्ययनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इंद्रिविषयआसंसना ॥ करताजेमुनिलिंग ॥ खूतातेभवपंकमें ॥ नाखेआचारंग ॥ ८ ॥ इमजाणीनाणीगुणी ॥ नकरेपुद्गलआस ॥ शुद्धात्मगुणमेंरमे ॥ तेपामेसिद्धिविलास ॥ ९ ॥ सत्यारथनयज्ञानविनुं ॥ नहोयेसम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिन भाण ॥ १० ॥ स्यादवादवादीगुरु ॥ तसुरसरसियाशीस ॥ योगमिलेतोनीपजे ॥ पूरणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ वक्ताश्रोतायोगथी ॥ श्रुतअनुभवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखलीन ॥ १२ ॥ इमजाणी शासनरुची ॥ करजोश्रुतअभ्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ लेहेसोलीलविलास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रगुरुराजने ॥ सुपसायेंउल्लास ॥ देवचंद्रभवीहितभणी ॥ कीधोग्रंथप्रकाश ॥ १४॥ सुणसेभणसेजेभविक ॥ एहग्रंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअभ्यासतां॥ लहेसे तत्वतरंग ॥१५॥ द्वादशसारनयचक्रछे॥ मल्लवादिकृतवृद्ध॥ सप्तशतिनयवाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अल्पमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ मुख्यथूलनयभेदनो ॥ भाष्योअल्पविचार ॥ १७ ॥ खरतरमुनिपतिगछपति ॥ श्रीजिनचंद्रसूरिस ॥ तासशीसपाठकप्रवर ॥ पुन्य प्रधानमुनीस ॥ १८ ॥ तसुविनयीपाठकप्रवर ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगुणरत्ननिधि ॥ राजसारउवझाय ॥१९॥ पाठकज्ञानधर्मगुणी ॥ पाठकश्रीदीपचंद ॥ ताससीसदेवचंदकृत ॥ भणतांपरमानंद॥२०॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तं ॥

॥ इतिश्रीपंडित देवचंदजीकृत नयचक्रसार
बालावबोधसहितः संपूर्णः ॥

॥ श्रीगौतमगुरुभ्योनमः ॥

॥ श्रीआनंदघनकृत चतुर्विंशति जिनस्तवन बालावबोध सहित ॥

दोहा

चिदानंद आनंदमय, चिदरूपिअविकार ॥ सिद्धबुद्धसुविशुद्धतुं, तुंजग परमाधार ॥ १ ॥ तुजकृपालताथीकरूं, भाषाभाषारूप ॥ तवनाजिनबा वीसनी, आनंदघनरसकूप ॥ २ ॥ राजरीद्धि जेम देखीने, डमक करे मनआश ॥ बुद्धि रीद्धिविण हुं डमक, अरथराजरीद्धिरास ॥ ३ ॥ आ शय आनंदघनतणो, अतिगंभीर उदार ॥ बालक बाहु पसारिजिम, कहे उदधि विस्तार ॥ ४ ॥ तेममनोरथमुजमने, बुद्धिविण किमथाय॥ गुरू कृपाथी गहननग, पंगु पार लंघाय ॥५॥ शीभाषाभाषातणी, को एवुं कहिदेय ॥ पीस्यानुं शुं पीसवुं, पीस्येगणनलेय ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री ऋषभ जिनस्तवन ॥

॥ रागमारू ॥ करमपरिक्षा करण कुमर चल्योरे ॥ ए देशी ॥

ऋषभ जिनेश्वर प्रितममाहरोरे॥ ओर न चाहुंरे कंत॥
रीझ्यो साहेब संग न परिहरेरे ॥ भांगेसादिअनंत ॥ ऋषभ० ॥१॥

अर्थ ॥ शुद्धचेतना श्रद्धासखीने पोताना घरनुं वृत्तांत कहेछे. हे सखि ! मारा स्वामिनुं वृत्तांत सांभल; मारा स्वामिनुं वृत्तांत सांभलवाथी, मारा घरनुं सर्व वृत्तांत, तुं पोतानीमेले समजी जईश. जे स्त्रीने पति कथनमां होय तेने बीजातो कथनमां होयज. मारो प्रितम के० भर्त्तार ऋषभ जिनेश्वर के०प्रथम तीर्थंकर, रागद्वेष रहित छे; एवो भर्त्तार पामवाथी हुं रागद्वेषयुक्त परिणतिवाला बीजा देवोनी कंत के० भर्त्तार-पणे चाहना करती नथी. मारा भर्त्तारनो एवो स्वभावछे के, माराविना बीजा कोइथी ते रंजन थतो नथी अर्थात् ज्यारथी ते मारीसाथे रीझ्यो छे त्यारथी, अत्यारसुधी, ते साहेबके०स्वामिए मारा संगनो त्याग कर्यो नथी अने भविष्यमां त्याग करशे पण नही, कारणके अभेदस्वरुपे संग थयो छे. मारा स्वामिना संगनो सिद्धांतमां सादि अनंत भांगो वर्णवेलो छे. शुद्ध स्वभाव प्रगट्यो त्यारथी सादि अने ते स्वभाव त्रि-

कालें अक्षय, माटे अनंत, अथवा वीतरागपणे प्रतीत कर्यो ते सादि अने ते स्वभाव स्वरूपताभावि तन्मयिभाव आचरणहेतुरूपे थयो ते अनंत. ए प्रमाणे मारो भर्त्तार मने तजवानो नथी. ॥ १ ॥

प्रीत सगाईरे जगमां सहु करे रे ॥ प्रीत सगाई न कोय ॥
प्रीतसगाईरे निरूपाधिक कहीरे ॥ सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ प्रीति बे प्रकारनी छे. लोकोत्तरप्रीति अने लौकिकप्रीति. जगतमां सर्व मनुष्यो प्रीति वधारवामाटे पुत्रपुत्रीनो सगपणसंबंध अन्योअन्यवच्चे करेछे, परंतु ते प्रीतिनी रीतितरफ विचारकरतां मने भासे छे के, हे श्रद्धा, मारा भर्त्तारनी प्रीति एवा सगपण संबंधवाली नथी. मारा भर्त्तारनी प्रीतिमां स्वभावनो मेलाप होवाथी, ते निरुपाधिक प्रीति छे अने सिद्धांतमां पण प्रीतिनी रीतिने उपाधिरहित वर्णवेली छे, तेथी हे श्रद्धा! जेविभावीहोय अने स्वभावि ऋषभपरमात्मासाथे उपाधियुक्त प्रीतिकरवा वांछतो होय ते ऋषभजिननी प्रीतिरूप स्वभावनी प्राप्तिसंबंधी परमधनने खोवेछे अर्थात् आत्मगुणनो नाश करेछे ॥ २ ॥

कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करेरे ॥ मलशुं कंतने धाय ॥
ए मेलो कहिये नवि संभवेरे ॥ मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली सोपाधिक प्रीतिनुं दृष्टांत आपी, निरुपाधिक प्रीति दृढ करेछे. हे श्रद्धा! कोइ स्त्री पतिना मरण पछी पतिने मलवावास्ते काष्टभक्षण के० सति थायछे. वली केटलाएक मतवादी, निरंजन परमात्माने मलवासारू पंचाग्नि तपेछे, जंपापात करेछे, धरतीमां समाध करेछे, एम धारीने के, दोडीने कंतने मलीए; परंतु एवां कष्टो करवाथी, निरंजन परमात्मानी साथे मेलाप थवो ते त्रणे कालमां संभवतो नथी. वली अमुक गतिमां तुं जाजे अने हुं पण अग्निमां भस्मथइ तेज स्थानके आवीश एम मेलोठामनठायके० निश्चये कदापि तेज स्थान प्राप्त थतुंज नथी. वली तेनी जेम पंचाग्नि प्रमुखथी मरण थाय ते पण बालमरणछे तेथी तेवा मरणथी सिद्धस्थानक प्राप्त थाय नहि. ॥ ३ ॥

कोइ पतिरंजन अतिघणो तप करेरे ॥ पतिरंजन तनताप ॥
ते पतिरंजन में नविचित्त धर्युरे ॥ रंजन धातु मेलाप ॥ रीषभ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली हे श्रद्धा ! मारा पतिने मलवावास्ते, कोइ क्रियारुचि जीव मारा पतिने रंजनके०राजी करवावास्ते अत्यंत तप करे छे, तेवी एकांत तपस्याथी मारो पति राजी थतो नथी, तेवी तपस्याथीतो मात्र शरीर सूकायछे. तेथी मात्र तपस्यारूप बाह्यकरणीए मारा पतिने राजी करवा एवुं में माराचित्तमां ठराव्युं नहि, कारणके मारा पतिने

रंजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेवीछे अर्थात् तेवी प्रकृतिवालो थइ तन्मय थाय त्यारे ते राजी थाय ॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे ललख अलखतणीरे ॥ लख पूरे मनआश॥
दोषरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोषविलास ॥ऋषभ०॥५॥

अर्थ ॥ वली कोइ जगत्कर्त्ता ईश्वरवादी एम कहेछे के अलखके०परमेश्वरनी लीला ललखके०जाणीशकाय तेवी नथी. ते परमेश्वरे पोतानी शक्तिथी लीलानी परमकारणभूत माया रची. तेनुंज नाम सर्वजगतनुं चटनविचटनरूप लीलानुं लखवुं, समजवुं. तेज परमेश्वर जगतना जीवोनी लाखोगमे आशा पूरेछे. हे श्रद्धा! आवुं कथन न्याययुक्त नथी, कारणके रागादिदोष सहित होय ते अलख कहेवाय नही अने परमेश्वरने अलख कही ते लीला करेछे एम कहेवुं ते वाजबी नथी, कारणके लीला ते मात्र दोषनो विलास के०तरंग छे, तेथी रागद्वेषविना लीलानो विलास न होय. ॥५॥

चित्तप्रसन्नेरे पूजन फल कह्युंरे ॥पूजा अखंडित एह॥
कपट रहित थइ आतम अरपणारे ॥ आनंदघन पदरेह ॥ ऋषभ० ॥६॥

अर्थ ॥ तेथी हे श्रद्धा ! तप, संयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला छे, वा, तप संयमादिक विनापण तुं लाखोना मननी आशानो पूरणहार छो एवां खुशामतनां वचनो ते परमेश्वरनुं पूजन नथी; परंतु चित्तनी प्रसन्नता के० आल्हादपणुं तेज पूजननी सफलता छे. अखंड तंदुल, धूप, दीप, नैवेद्य, केशर, बरास, पुष्प विगेरे सर्व सामग्री संपूर्ण होय छतांपि चित्तनी प्रसन्नता के०शुभभावनो अभाव होय तो ते अखंड पूजा नही. शुभ भाव तेज अखंड पूजा छे. माटे हे सखि! जे प्राणी आनंदघन पद के०मुक्तिपद पामवानी अभिलाषा राखतो होय ते मारा ऋषभ भर्त्तारसाथे कपटरहित के०बहिरात्मपणानो त्याग करी अंतरात्मवंत थइ स्थिर स्वभावे परमात्म स्वरूपने पोताना आत्मामां चिंतवे. ए प्रमाणे जे प्राणी ऋषभ परमात्माने आत्मानुं अर्पण करे ते आनंद के०ज्ञानानंदनुं पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के०रेखा अर्थात् मेलाप प्राप्त करे. ते सिद्ध थाय. ॥ ५ ॥ इति ऋषभजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारुं मन मोह्युंरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए देशी ॥

पंथडो निहालुंरे बीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥
जे तें जित्यारे तेणे हुं जीतियोरे ॥ पुरुष किस्युं मुजनाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन सुमतिने कहेछे. हे सुमति! बीजा अजितनाथनो पंथ के०मार्ग-

प्रवर्त्तना ते हुं यूथभ्रष्ट मृगनी जेम जोउंछुं, अर्थात् जे मार्गे प्रवर्त्तता अजितजिन निर्वाणपद पाम्या ते मार्गनी शोध करुंछुं. ते अजितनाथ, भव्यजीवो विना बीजा प्राणी मात्रथी प्राप्त न थइशके तेवा अनंतज्ञानदर्शनादि गुणोना धामछे. ते अजितनाथ भगवंतने आनंदघन कहेछे के, हे प्रभु ! राग, द्वेष, मोह प्रमुख जे शत्रुउने तमे जीत्या, ते रागद्वेषादिके मने जीती लीधोछे, तेथी हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुष केम कहेवाय ? धर्मविना धर्मी केम थई शके, !जेम तमे पुरुषत्वधर्मे रागादिने जीत्या तेम हुं जीत्यो होत तो हुं पण पुरुष कहेवात ॥ १ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥
जेणे नयणे करी मारग जोईएरे ॥ नयण ते दीव्य विचार ॥पंथ०॥२॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर! चर्मनयण के०बाह्यदृष्टिएकरी तमारो मार्ग, आत्मस्वरूप रूप, वीतराग परिणतिये परिणामेलो, परमात्मधर्मे धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार भूलमां भमेछे अर्थात् बौध, नैयायिक, सांख्य, वैशेषिक, वेदांती प्रमुख एकांतवादी, मतममत्वी सर्व तमारा मार्गथी दूर भम्या करेछे. हे भगवंत ! जे नेत्रथी, शुद्ध स्याद्वाद परमामृतमय जैनदर्शन, आत्मस्वरूप साक्षात्कार करवाने असाधारण कारणरूप तमारो मार्ग देखी शकिये, तेतो दीव्य के०ज्ञानरूप चक्षुज विचारके०जाणवी अर्थात् अजितनाथ प्रभुनो मार्ग ज्ञान चक्षुथीज जोवाय ॥ २ ॥

पुरुष परंपर अनुभव जोवतांरे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥
वस्तु विचारेरे जो आगमें करीरे ॥ चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥३॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! पुरुषोनी परंपरा के०श्रेणी– अहिं सुधर्मास्वामि, प्रभवस्वामि इत्यादि संबंधे कथन नथी, परंतु गछोना भेद करनारा, मतममत्वी, परभवनी बीकथी नही करनारा एवा गछ स्थापी परंपरा स्थापनारा पुरुषोने अनुभव के०विचार करी जोतां अंधोअंध पुलाय ए दृष्टांत साक्षात् संभवेछे. जेमके सुयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां कह्युं छे के "अंधोअंध पहंनित्ता पुरमद्धा न गछइ" आंधलो आंधलाने ग्रामांतरे पहोचाडी शके नही, तेम अहिं पण ज्ञान नेत्र अने पुरुष परंपरा जेथी मार्ग पामी शकाय ते बे कारणो विद्यमान नथी अने आगम जे सिद्धांत तेनाथी वस्तु के०तत्त्वविचारणा करीए छीए तो जे रीते अजितनाथ प्रवर्त्या, ते मार्गमां संपूर्ण प्रवर्त्तवुं तो दूर रह्युं, परंतु चरण के०पग मुकवुं अर्थात् पग मात्र प्रवर्त्तवुं ते पण कठिन छे. ॥ ३ ॥

तर्कविचारेंरे वाद परंपरारे ॥ पार न पहोंचे कोय ॥ अनि
मतें वस्तु वस्तुगतें कहेरे ॥ ते विरलाजगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली हे सुमति ! तर्कथी मार्गने विचारुं तुं तो एक तर्करूप कथन तेना उपर बीजुं कथन, एम कथन परंपरा एटले वादपरंपरा चाली आवेछे. तेप्रमाणे विचारतां मारो जन्म विति जाय तोपण पार पामी शकुं नही. हुंतो शुं परंतु महातर्कवादी बीजो कोइपण पार पामे नही; माटे हे सुमति ! अनिमते के०पामवायोग्य जे वस्तुके०पदार्थ ते जैनमार्गी सिद्धांत, तेने विषे गत के०जेम छे, तेमज कहे, परंतु एक अक्षर पण हिनाधिक न कहे, तेवा प्राणी जगतमां विरलाज तुं जोयके०देखीश. श्रीयशोविजय उपाध्यायजी कहेछे के " शुद्ध नाषकनी वलिहारी " ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेंरे दीव्य नयन तणोरे ॥ विरह पड्यो निरधार ॥
तरतमजोगेरे तरतम वासनारे ॥ वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे जेथी वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो विचार करीशकुं एवा ज्ञानरूप नेत्रनुं तो रागादिकथी निरधार के०निश्चयपूर्वक विरह के०अंतर पड्युं, अर्थात् मारुं आत्मज्ञानरूप नेत्र फूटी गयुं. वली बीजीरीते वस्तुके०तत्वविचारे विचारीएतो दीव्यनयनके०केवलज्ञानीविना शुद्धमार्ग पामी शकीए नही अने केवलज्ञानीनो निश्चयथी विरह पड्यो; माटे हे सुमति ! शुद्ध कथन करनार केवलज्ञानी प्रमुख मार्ग पामवाना कारणनो तो अनाव थयो अर्थात् निःसंदेह योग प्राप्त नही थवाथी मार्ग पामीए केवीरीते ? तेथी ज्ञाननी तरतमतानो योग प्राप्त थवाथी वासना के०श्रद्धा पण तरतम थइ परंतु संदेह रहित न थइ; तो एवी श्रद्धाए वासितके०सुगंधित बोध ज्ञाननो मारे आधार छे. ॥ ५ ॥

काललब्धि लही पंथ निहालशुंरे ॥ ए आश्या अविलंब ॥
ते जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे ॥ आनंदघनमतअंब ॥ पंथ० ॥६॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व वात विचारी सुमति सहित आनंदघन विलखो थइने विनति करेछे. हे प्रनु ! परिपाक काल पामीने अर्थात् चरमावर्त्तन नवस्थितिनो परिपाक एवी कालरूप लब्धि पामीने पंथके०तमारो मार्ग निहालशुं के०जोइशुं. आ कालमां तमारो मार्ग हाथ आववानो कोइ उपाय नथी तेथी हे परमेश्वर ! काललब्धिरूप आशाके०मननी तेवी स्थिरता तेने अविलंबके०ग्रहण करीने ए जनके०आ पंचम कालना पुरुष जीवेके०जीवता रहेछे अर्थात् निराधार छतां कालक्षेप करेछे. एवी पंचम कालवासी जीवोनी व्यवस्था हे प्रनु ! तमे जाणजो के०ध्यानमां लेजो. हे प्रनु ! तमे

केवा छो ? आनंदके०ज्ञानानंद तेना घन के०समूह अर्थात् केवल ज्ञान आपनार जे शुद्ध स्याद्वाद मत तेना अंब के०आम्रवृक्ष छो. ॥ ६ ॥ इति अजितजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री संभवजिनस्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ रातडी रमीने क्यांथी आवीयारे ॥ ए देशी ॥

संभवदेव ते धूर सेवो सवेरे ॥ लही प्रभु सेवन भेद ॥ सेवन
कारण पेहेली भूमिकारे ॥ अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत थवाथी निजस्वरूपानुयायी पुष्टालंबन परम कारणरूप त्रीजा संभव परमेश्वरनुं सेवन तेज परमेश्वर पासे मागतां, पोते तेमज सर्वने उपदेश आपतां विनति करतो कहेछे. हे भव्य प्राणीयो ! संभवनाथ प्रभुने धूरके०प्रथम सेवो; कारणके आत्मानुं अनंतकालथी आवरण पामेलुं आत्मस्वरूप, तेनो भास, प्रथम ए परमात्मानी सेवा कर्याविना थायज नही तेमज थशे पण नही अर्थात् जे जे भव्य प्राणीयोए पोताना आत्मस्वरूपने भूतकालमां उलख्युं छे, वर्त्तमानमां उलखेछे अने भविष्यमां उलखशे ते सर्व प्रथमथी प्रभुना स्वरूपनुं सेवन करवानुं फल छे. अहीं अजकुलगत केशरी सिंहनुं दृष्टांत विचारवुं. वली जेम सुवर्ण अने माटी खाणमां अनादि मिश्र छे तेम आत्मा संसारमां अनादिथी कर्म साथे मिश्र छे. ते आत्मा प्रथम संभवदेवथी पोतानुं एकत्व जाणी, जड स्वभावथी पोतानुं स्वरूप भिन्न जाणी, पोते जडथी भिन्न थाय. तेथी अनादि कालथी भूलेला आत्माने स्वरूपनी प्राप्तिनुं असाधारण कारण धूरथीज संभवतुं नथी. माटे हे सुमति ! शुद्ध आत्म प्रवर्तिये परमेश्वरने स्वरूपे सेवननुं रहस्य पामीने, प्रभुसेवनना कारणनी प्रथम भूमिका के० पायो लक्षमां लेवो; तेज सेवनारूप कार्यना कारक छे. तेना त्रण प्रकार छे. १ अभयपणुं २ अद्वेषपणुं ३ अखेदपणुं. मजबुत पायाविना जेम बांधकाम टकी शके नही तेम आ त्रण गुणविना प्रभुसेवनरूप मकान स्थिर थइ शके नही ॥ १ ॥

भयचंचलता होजे परणामनी ॥ द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद
प्रवर्तिहो करतां थाकीयेरे ॥ दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ प्रथम अभयनुं लक्षण कहेछे. संभवजिननुं चिंतवन करतां ते चिंतवनथी परिणाम चलायमान थइ अन्य चिंतवनमां मन प्रवर्त्ते, इत्यादि परिणामनी चंचलता, अस्थिरपणुं ते भय, ते सर्व पलटावी एकाग्र स्वरूपनुं चिंतवन ते अभय. हवे अद्वेषनुं लक्षण कहेछे. संभवदेवनुं सेवन, स्तवन, स्वरूप चिंतवन चित्तमां रुचे नही एवो जे अरोचक भाव ते द्वेष अने तेज सेवन प्रमुख चित्तमां रुडां लागे ते अद्वेष. हवे

अखेदनुं लक्षण कहेछे. संभवप्रभुना स्वरूप चिंतवन प्रमुख प्रवृत्तिमां प्रवर्त्तता थकां अल्प कालमां मन थाकी जाय, कंटाली जाय अने तेथी प्रवृत्तिमां रही शके नही ते खेद अने तेज सेवनादि कार्यमांथी निवृत्त नही ते अखेद. तेथी हे सुमति! जेने संभवदेवनी सेवनामां अभय, अद्वेष अने अखेद छे तेने स्वरूपानुयायी बोधनुं जाणपणुं छे अने जेउने तेमां भय, द्वेष अने खेद छे तेउने अबोध के०स्वरूपनुं अजाणपणुं अने दोषनुं लखाव के०प्रवर्त्तवुं छे. ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहो चरम करण तथारे ॥ भवपरिणति परिपाक ॥
दोष टले वली दृष्टी खुले भलीरे ॥ प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव० ॥३॥

अर्थ ॥ ते दोष दूर करवानां जे कारणो श्रीसंभवनाथ परमात्माए सिद्धांतमां कह्या छे, तेमां पेहेलुं कारण तो जीवने संसारमां परिभ्रमण करतां अनंती उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि थइ, तेमां छेल्ली उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि संसार भ्रमण करवानी रहे ते चरमावर्त्तन अने बीजुं कारण अपूर्व करणादि त्रण करणमध्येनुं छेल्लुं करण ते चरम करण तथा के०तेमज त्रीजुं कारण भवके०संसारनी गति आगति तेनुं जे परिणमवुं तेनो परिपाक अर्थात् गत्यागतिनो अभाव ते भवपरिणति परिपाक नामनुं कारण छे. तेथी हे सुमति! आ त्रणे कारण मलतांज जीवने भय, द्वेष अने खेदरूप दोष दूर थाय अने आत्मा अभयी, अद्वेषी अने अखेदी थतांज भलीके०स्वरूपानुयायी ज्ञानरूप दृष्टि के०चक्षु तेनी खुले के०उघडे ते ज्ञान दृष्टि खुलवाथी प्रवचन वाक के०सिद्धांतना सप्तनयाश्रित वाक्यनी शंका रहित प्राप्ति थाय ॥ ३ ॥

परिचय पातिक घातिक साधुशुंरे ॥ अकुशल अपचय चेत ॥
ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे ॥ परिशीलन नय हेत ॥ संभव० ॥४॥

अर्थ ॥ ज्यारे प्रवचनामृतनी प्राप्ति थई त्यारे मिथ्यादर्शनीउथी प्रथम परिचय हतो ते दूर थयो अने आश्रवना रोधनार, संवरना शोधनार, प्राणातिपातादिकना हणनार, मोक्षमार्गना साधनार साधुओनो परिचयके० आसेवनरूप संबंध थाय; अने तेथी आत्मस्वरूप पामवाने विघ्नकारक जे अशुद्ध श्रद्धा तद्रूप अकुशलपणानो अपचय के० नाश करनार चेत के० चित्त थाय अर्थात् आत्मस्वरूपानुयायी चित्त थाय. तेवुं चित्त थवाथी संमतितर्क, तत्वार्थ, अध्यात्म कल्पद्रूम, अध्यात्मसार प्रमुख अध्यात्मिक ग्रंथोनुं श्रवण अने मनन थाय. नैगमादि साते नयना भिन्न भिन्न हेतुए भिन्न भिन्न कथन होय अने भिन्न हेतुने अभावे भिन्न कथननो अभाव होय, परंतु अहिंतो श्रीसंभवनाथ प्रभुना स्वरूपथी पोताना आत्मस्वरूपने परि के०

समस्त प्रकारे शीलन के० स्वभावथी मेलववुं छे तेथी ते नयनो हेतुपार पडे ॥ ४ ॥

कारण जोगेंहो कारज निपजेरे ॥ एमां कोइ न वाद ॥ पण
कारणविण कारज साधियेरे ॥ ते निजमतउनमाद ॥ संभव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ परमात्माना स्वरूपसाथे पोताना आत्मस्वरूपने मेलववुं तद्रूपकारणने संयोगे पोताना स्वरूपनी सिद्धिरूप कार्य थाय, तेमां कांइ विवाद नथी; परंतु श्रीसंभवदेवना स्वरूपनी सेवाना कारणविना आत्मस्वरूपनी सिद्धतारूप कार्यनी वांछा राखवी ते पोतानी मतिनी उन्मत्तता छे, हठग्राहीपणुं छे अथवा बहिरात्मपणारूप कुमतिनो उन्माद के० चित्त विभ्रमताछे. ॥ ५ ॥

मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे ॥ सेवन अगम अनूप ॥
देजो कदाचित सेवक याचनारे ॥ आनंदघन रसरूप ॥ संभव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ संभवदेवनी सेवनारूप कारणने सद्भावे आत्मस्वरूपरूप कार्यनुं निःसंदेह सद्भावीपणुंजछे, पण ते सेवन घणुं दुष्कर छे. मात्र मुग्ध के० सेवनना असमंजस भद्रक लोक ते सेवनने सुगम जाणीने आदरेछे. परंतु अंतरात्माविना ते सेवननुं स्वरूप बीजा कोइने गम्य नथी. ए सेवन तो परमोत्कृष्ट निरुपमछे. आ भवे तो पामवुं दुर्लभ छे; माटे संभवदेवने विनति करुंछुं के कदाचित् के० चरमावर्त्तनादि कारणोने मेलापे कोइभवे तमारो सेवक जे हुं पामर तेनी याचनाके० सेवनारूप प्रार्थनाने देजो के० सफल करजो. हे प्रभु तमे आनंदके० ज्ञानानंद तेना घन के० समूह एटले केवलज्ञान केवल दर्शनेकरी द्रव्यना अनंत गुणादिने जाणवाथी उपन्यो जे आनंद तद्रूप रस छे रूप के० स्वरूप ते जेनुं एवा छो ॥ ६ ॥ इतिश्री संभवजिनस्तवन.

॥ अथ श्री अभिनंदन जिनस्तवन ॥

॥ राग धनाश्री सिंधुउ ॥ आजनीहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

अभिनंदनजिन दरशण तरसियें ॥ दरशण दुर्लभ देव ॥ मत
मतभेदेंरे जो जइ पूछीयें ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अभिनंदन प्रभुनुं दर्शन एटले जैनदर्शन तरसियेंके० कोइ रीते मले एवी चाहना करीए छीए, परंतु हेप्रभु! तमारुं दर्शन अतिदुर्लभ के० दुःखे पामीशकाय तेवुं छे. भूतकालमां कोइ वखत पाम्या नथी अने आ जन्ममां पामवानी व्यवस्था आ प्रमाणे छे. जेम कोइ अजाण पुरूष मार्गनी माहितीमाटे बीजानेपुछे, तेरीते जुदाजुदा मतवालाछे तेमने पुछीए के शुद्ध आत्मस्वरूपनुं भासन करावे तेवुं स्वरूपानुयायी दर्शन कयुं? त्यारे तेते मतना धारक सर्वे अहमेव के० निश्चयपूर्वक अमे प्रवृत्ति करीए छीए तेज शु-

रूदर्शन छे. परंतु अमारा दर्शनथी स्वरूपनी प्राप्ति थती नथी एम कोइ कहे नही. ॥१॥

सामान्ये करी दरशण दोहेलूं ॥ निरणय सकलविशेष ॥ मदमें
घेर्योरे अंधो केम करे ॥ रविशशिरूप विलेष ॥ अनि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर ! सामान्यप्रकारे मतमतांतरना नेदें अर्थात् एकांतवादीउने पूछतां तमारुं जैनदर्शन पामवुं डुर्लन छे. वली निरणयके० परमतात्विकपणे स्वरूपानुयायी, अनंताकेवलज्ञानीए कथन करेलुं, तदाकारनूते समस्त नयानुयायी, एम विशेषपणे तमारुं दर्शन प्रत्यक्षपणे कहेवुं ते पण कठिन छे. वली ते मतमतांतरीउने पूछतां तमारुं दर्शन नज पामीए, ते उपर दृष्टांत कहेछे. जेम कोइ जन्मांध प्राणी छे, तेणे वली मद्यपान कर्युं, ते प्राणी जेम सूर्यचंद्रना स्वरूपने विशेषपणे जाणी शके नही तेम जे मिथ्यादर्शने करी अंध छे, वली मतममत्वरुप मदिरापानथी घेरायोछे, ते सूर्यचंद्ररूप जैनदर्शनना स्वरूपने विशेषपणे केवी रीते जाणी शके अर्थात् नज जाणी शके॥

हेतु विवादेंहो चित्तधरि जोईयें ॥ अति डुरगम नयवाद ॥ आगम
वादेंहो गुरूगम को नही ॥ ए सबलो विषवाद ॥ अनि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! जे साधवा योग्य कार्यनी प्राप्ति करावे एवा हेतु के० कारणोनो विवाद के० विस्तारपणे कथन तेने मनमां विचारी जोइए छीए अर्थात् ज्ञान दृष्टिए विचारीए छीएतो तमारा दर्शनमां नयोनुं वाद के० कथन एवुं छे के जे वस्तुने एक नये स्थापीये तेनेज बीजी नये उत्थापी शकाय छे, माटे तमारा दर्शनमां नयवादनी डुर्गमता छे. वली तमारा सिद्धांतना वाद के० कथनथी तो सहेजे तमारुं दर्शन पामी शकीए, परंतु तमारा सिद्धांतोना कथननुं गुरुगम कोइ नथी अर्थात् जे गुरुउथी सिद्धांतोनी समज पके एवा गुरु कोइ नथी अथवा गुरुने आधीन रही समज्या होयएवा परंपरागामी कोइ गुरु आकालमां देखाता नथी, माटे मतमतांतरोना नेदथी, हेतु विवादोथी तेमज नयवादोथी अने आगमवादथी तमारा दर्शननी प्राप्ति नथी एज सबलो के० अति बलवान, मनमां विषवाद के० उद्वेग छे ॥ ३ ॥

घाति डुंगर आमा अतिघणा ॥ तुज दरिशण जगनाथ ॥
धीगाई करी मारग संचरूं ॥ सेंगु कोइ न साथ ॥ अनि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जगनाथ ! त्रण जगत्ना स्वामी तमारुं दर्शन पामवाने अंतरायना करनार पर्वत उपमारूप घातकारक पूर्वोक्त जे कारणो छे तेनाथी पण बीजा घणां छु छे, माटे केटलां कहुं;तोपण धीगाइ करी के० तमारा दर्शन पामवाने अंतराय करनारां एवां कारणोने नही गणतां हगानुयोगें जैनदर्शनना मार्गमां संचरुं के० प्रवर्त्तन करुं

बुं, परंतु शुद्ध स्याद्वाद मार्गनो प्रवर्त्तावनवालो तेने सेंगू कहीए तेवो कोइ ज्ञाता पुरुष तमारो मार्ग देखाडनार साथे नथी के जेना सहायथी मार्गे प्रवर्त्ती शकीए ॥ ४ ॥

दरशण दरशण रटतो जो फरूं ॥ तो रणरोझ समान ॥ जेहने
पिपासाहो अमृत पाननी ॥ केम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे अभिनंदन प्रभु! तमारा दर्शननी पूर्वोक्त कारणोथी अप्राप्ति जाणीने, मात्र दर्शनीर्ज परत्वे दर्शन दर्शन एम हे उपगारीर्ज! शुद्ध आत्मस्वरूपानुयायी, परमपदप्रापक एवुं दर्शन मने बतावो एम रटतो के० बोलतो थको जो के०कोइरीते फरूं के०परिभ्रमण करुं, अर्थात् जैनीर्ज सुधांत सर्व दर्शनना अध्यक्षोने पुछतो पुछतो भटक्या करुं तेथी कांइ तमारुं दर्शन प्राप्त थाय नहीं, उलटुं जैनदर्शननी शोध करतो देखीने सर्व दर्शनीर्ज एम कहेके आतो मनुष्याकारे जंगलनुं रोझ छे, अर्थात् मूर्ख शिरोमणि छे. वली सर्व दर्शनीर्जथी तमारा दर्शननी शोध करतां थकां कोइ महावंचकी नयनो पक्ष ग्रहण करी एवी वात संभलावे के तमारा दर्शननी प्राप्ति थवी तो दूर रही पण उलटा मनमां शंकाना गोटा उत्पन्न करावीदे तेथी श्रद्धा भ्रष्ट थइ अन्यमत प्रवर्त्तन करी तमारा दर्शननी निंदा करवा लागी जउं; माटे हुं जेने तमारा दर्शनरूप अमृतपाननी पिपासा के०तृषा छे, तेने अमृतपान तो मले नही पण तेथी उलटुं भ्रष्ट श्रद्धाथी मिथ्यात्व प्रवर्त्तनरूप झेर अन्यमतियोने पूछवाथी मारी श्रद्धामां दाखल थाय, तेथी ते विष के०झेरनुं पान मारी अमृतपानरूप पिपासाने केम दूर करी शके? ॥ ५ ॥

तरस न आवेहो मरण जीवनतणो ॥ सीजे जो दरिशण काज ॥
दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी ॥ आनंदघन महाराज ॥अभि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर! तमारुं जैनदर्शनरूप कार्य जो कोइ रीते सिद्ध थाय तो मरण जीवननो तरस के०त्रास न रहे अर्थात् ते प्राणी जन्मजरामरणादिकना दुःखथी रहित थइ मुक्ति पामे; परंतु तमारुं दर्शन पामवुं दुर्लभ छे. मात्र तमारी कृपाथी सुलभ छे तेथी हे आनंदघन के०ज्ञानानंदनो अत्यंत भराव तेना महाराज ते आनंदघन महाराज, तमारी कृपाथी जैनदर्शन पामीए ॥६॥ इति अभिनंदन जिनस्तवन.

॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन ॥

॥ रागवसंत तथा केदारो ॥

सुमति चरण कज आतम अरपणा ॥ दरपण जेम अविकार ॥ सुज्ञानी ॥
मतितरपण बहु सम्मत जाणियें ॥ परिसरपण सुविचार ॥सुज्ञानी ॥सुमति० १॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ भगवंतना चरणकमलमां मारा आत्मानुं अरपण के० स्थापन करुंछुं. निभ्रमपणे परमात्म स्वरूपनुं चिंतवन ते आत्मार्पण कहीए. ते परमेश्वर उपाधिजनित विकारथी रहित छे. जेम आरीसामां जेवुं स्वरूप होय तेवुंज भासे पण विपरीत न भासे,तेवीरीते परमात्मा पण निर्विकारी यथातथ्य कान्तिवंत, केवलज्ञान स्वरूपी होवाथी तेमां आत्मार्पण करवाथी यथार्थ स्वरूप भासे. माटे हे सुमतिवंत प्राणी! बहु के० घणां मतने सम्मत थइ चालतां आत्मार्पणनुं स्वरूपतो मतितरपण थइ जाय के० बुद्धि तृप्त थाय तेटले सुधी जाणी लेवुं पछी परिके० समस्तपणे अन्यमतिउमां जे आत्मार्पण तेथी सरपण के० निवर्त्तवुं तेज सुविचार के० उत्तम विचार छे॥१॥

त्रिविध सकल तनुधरगत आतमा ॥ बहिरातम धुरिभेद ॥ सु० ॥
बीजो अंतर आतम तिसरो ॥ परमातम अविछेद ॥सु० ॥ सुमति० ॥ २॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे आत्मार्पण संबंधी योग्यता बताव्या पछी आत्माना भेद कहेछे. समस्त शरीरधारीउना शरीरने विषे रहेला आत्माना त्रण प्रकार छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा ३ परमात्मा. अहिं कोइ पुछेके सिद्ध अनंता छे माटे तेना अनंता भेद केम न कह्या? उत्तर–जे अनंता सिद्धनुं स्वरूप एक छे तेथी परमात्मा साथे अविछेद के० अभेद शब्द मुक्यो छे. अहीं पेहेलो, बीजो, त्रीजो आत्मा ए प्रमाणे तो जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट त्रण प्रकारना आत्मा थया, परंतु सत्ताभिन्नथी कोइ पूछे तो तेना अनंता भेद थाय. ॥ २ ॥

आतम बुद्धें कायादिकें ग्रह्यो ॥ बहिरातम अघरूप ॥ सु० ॥ काया
दिकनोहो साखीधर रह्यो ॥ अंतरआतम रूप ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे त्रणे आत्मानुं स्वरूप कहेछे. मलीन बुद्धियें करी शरीरादिकथी अहंबुद्धिपुर्वक ग्रह्यो के० बंधायेलो अर्थात् शरीरने सुखे सुखी अने शरीरने दुःखे दुःखी, आदिशब्दें माया, ममता, मिथ्यात्वादिके ग्रह्यो, ते परिणतिये परिणम्यो इत्यादि लक्षित जे आत्मा तेने बहिरात्मा कहीए. ते आत्मा पापरुप व्यापारवंतछे;अने जे आत्मा कार्यादि के० शरीर प्रमुखअंगोपांग, भूमि धन कंचनादिनोशाक्षी, कायादिकनो निर्ममत्वी आत्मस्वरूपनो ज्ञाता, आत्माने दशमेद्वारे स्थापन करनार इत्यादि सक्षणे लक्षित ते अंतरात्मा कहीए ॥ ३ ॥

ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो ॥ वरजित सकल ऊपाधि ॥ सु० ॥
अतिंद्रियगुणगण मणिआगरू ॥ एमपरमातमसाध॥ सु० ॥सुमति०॥४॥

अर्थ ॥ स्वरूपज्ञानथी प्रगट्यो जे आनंद तेना हर्षेथी संपूर्ण पवित्र, वळी कर्मजनित समस्त उपाधियोथी रहित कारण के उपाधिनो अभाव थया विना ज्ञानादि गुणयुक्त थवातुं नथी, वळी अतिंद्रिय गुण के० शब्दादि पांचे इंद्रियोजनित गुणोना अभावथी प्रगट थयो जे अतिंद्रिय गुणज्ञान दर्शनादि तेना अनंता समूह तद्रूप महा मणिउना आगर के० उत्पत्तिस्थान. एवा परमात्म स्वरूपने हे सुमति! तुं साध के० सिद्ध कर. तारा विना ए परमात्मानुं स्वरूप सिद्ध नज थाय. ॥ ४ ॥

बहिरातम तज अंतर आतमा ॥ रूप थई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमा
तमनुं हो आतम भाववुं ॥ आतम अरपण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहीं कोइ शंका करे के आनंदघने प्रथम सुमति परमेश्वरने चरणे आतम अरपणा एवुं कह्युं अने पछी आत्मानां त्रण लक्षण कह्यां तेनुं शुं कारण? उत्तर जे परमात्माना चरणमां आत्मार्पणरूप स्तवनानी प्रथम जरूर छे, पछी आत्मानां लक्षण बतावी कयो आत्मा परमात्मा स्वरूपमां आत्मार्पण करी शके ते बताववानी जरूर छे. माटे पूर्वोक्त बहिरात्मपणुं मूकीने अंतरात्मानुं जे स्वरूप तेमां स्थिर भावे थइ, एकाग्रताए परमात्मानुं स्वरूप आत्मामां चिंतववुं, एज आत्मार्पणनो दाव के० उपाय छे. ॥५॥

आतम अरपण वस्तु विचारतां ॥ भरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
पदारथ संपति संपजे ॥ आनंदघनरस पोष ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे आतम अरपण वस्तु विचारतां के० तत्त्व विचारणा करतां परस्वरूपने पोतानुं स्वरूप मान्युं हतुं तद्रूप बुद्धिनुं दूषण मटीजाय. भ्रमता मटतांज केवलज्ञान केवलदर्शनथी उपन्यो जे आनंदनो समूह तद्रूप अनिर्वचनीय रसनी पुष्टता छे जेने विषे एवो परम पदार्थ जे उत्कृष्ट मोक्षरूप संपत्ति के० संपदा ते संपजे के० प्राप्तथाय ॥ ॥ ६ ॥ इति सुमति जिनस्तवन ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ रागमारू तथा सिंधुउ ॥ चांदलीया संदेशो कहेजो मारा कंतने ॥ए देशी॥

पद्मप्रभजिन तुज मुज आंतरूरे ॥ केम भांजे भगवंत ॥ करम
विपाकें कारण जोईनेरे ॥ कोई कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो श्री पद्मप्रभ परमेश्वर सिद्धांत अनुसारे तमारी साथे मारे कांइ अंतर नथी. मारे अने तमारे अंतर शानुं होय? परंतु अन्वय व्यतिरेक लक्षणे मारी अने तमारी वच्चे बहु अंतर पड्युंछे. माटे हे भगवंत के० ज्ञानवंत ते अंतर केम दूर था-

य, ते आप कहो. हे प्रजु ! तमारा अने मारा अंतरनुं कारण, ज्ञानावरणादि कर्मनो विपाक के०परणमवुं, तेना कारण मिथ्यात्व, अविरती, कपाय, योग, तेना बंधने जोइने कोइ महाबुद्धिवंत ज्ञानीए तमाराथी अंतर पड्युं ते कह्युं के, जे ठते जे होय ते अन्वय अने जे अठते जे न होय ते व्यतिरेक अर्थात् कर्मबंधना कारणने अन्नावे अंतरनो पण अन्नाव थाय ॥ १ ॥

पयइ ठिई अणुन्नाग प्रदेशथीरे ॥ मूल ऊत्तर बहुन्नेद ॥ घाति
अघाति हो बंधूदय ऊदिरणारे ॥ सत्ताकरम विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे अंतर पडवानां कारण विस्तारथी बुद्धिवंत पुरुष कहे ठे. १ प्रकृति बंध २ स्थितिबंध ३ अनुन्नाग ते रसबंध ४ प्रदेश ते दलनो संचय, एम चार प्रकारे कर्म बंध ठे. कर्मनी मूलप्रकृति आठ ठे. उत्तर प्रकृति एकसो अठावन ठे. मूलमां चार आत्मगुणना घात करनारा कर्म ठे अने बीजां चार आत्मगुणना अघातक ठे. वली कर्मना बंध, उदय, उदिरणा, सत्ता इत्यादि विछेद के० न्नेद ठे. इत्यादि शब्दथी ध्रुवबंधी अध्रुवबंधी, ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी, ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता, तेमज न्नव विपाकि, क्षेत्र विपाकि, जीवविपाकि, पुद्गलविपाकि तेमज देशघाति, सर्वघाति, परावर्त्तमान, पुण्यप्रकृति, पापप्रकृति इत्यादि सर्व कर्मना विछेद ठे ॥ २ ॥

कनकोपलवत पयडि पुरुसतणीरे ॥ जोडी अनादि स्वन्नाव ॥
अन्य संजोगी जिहां लगे आतमारे ॥ संसारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एरीते कर्मनी पयडि के० प्रकृति ते पुरुस के० जीवनी साथे अनादि कालथी मलेली ठे. संयोग संबंध ठे. जेम सुवर्ण तथा माटीने खाणमां अनादि संबंध स्वन्नाविक ठे, तेम पुरुष प्रकृतिनो अनादि संबंध स्वन्नाविक ज ठे. माटे ज्यांसुधी आत्मा पुद्गलादिक साथे संयोगी ठे त्यांसुधी आ आत्मा संसारी कहेवाय ठे. ॥ ३ ॥

कारणजोगे हो बंधे बंधनेरे ॥ कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव
संवर नाम अनुक्रमेरे ॥ हेयऊपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥४॥

अर्थ ॥ आत्मा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग, आ कारणोने लीधे कर्मनो बंध करे ठे अने सम्यकत्व, विरति, अकषाय अने अयोग, आ कारणोने लीधे कर्मथी बुटे ठे. एम अनुक्रमे कर्मबंधनां कारणोने मेलववा ते आश्रव अने कर्म आवतां अटके एवां कारणो मेलववां ते संवर. तेमां आश्रव ते हेय के० ठांडवा योग्य ठे अने संवर ते उपादेय के०आदरवा योग्य ठे. ए प्रमाणे सिद्धांतमां संन्नलाय ठे. ॥ ४ ॥

यूंजन करणे हो अंतर तुज पड्योरे ॥ गुण करणें करी भंग॥ ग्रंथ
उकते करी पंम्तिजने कह्यो रे ॥ अंतरभंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथी पंडित पुरुषे आनंदघनने कह्युं के सिद्धांतमां त्रण कारण कह्यां तेमां जे कारणथी आत्मा कर्म साथे जोमाय तेने यूंजनकरण कहीए. ते यूंजन करणने योगे हे आनंदघन ! तारे परमेश्वर साथे अंतर पमी गयुं छे. तेथी ज्ञान करणे आत्मस्वरूप जाणीने गुणपणे आचरणा अर्थात् कार्य कारण भावनो अभेद उपचार छे, तेथी ज्ञानदर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञानदर्शन एवा अभिन्न भावे करी हे आनंदघन ! पद्मप्रभु साथेना तारा अंतरनुं त्रुटवुं छे. वली पंम्तिोने आनंदघने पुछ्युं के, आ कथन तमारी पोतानी बुद्धिए कहोछो ? पंम्तिोए उत्तर आप्यो के,हे आनंदघन! जैन सिद्धांतना न्यायथी अमे आ वचन कहीए छीए, स्वेछाए कहेता नथी, माटे हे आनंदघन ! परमेश्वरथी तमारुं अंतर भांगवानो रहस्य स्वरूपे एज उत्तम उपाय छे. ॥५॥

तुऊमुऊ अंतर अंतर भाजसेरे ॥ वाजसे मंगलतूर ॥ जीव
सरोवर अतिशय वाधसेरे ॥ आनंदघन रसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी हे पद्मप्रभु! ज्यारे हुं गुण करणे प्रवर्त्तिश त्यारे तमारुं अने मारुं जे ध्याता ध्येयरूप अंतर छे ते दूर थशे, अर्थात् भेदनुं अभाविपणुं थशे, अने त्यारेज स्वरूप प्राप्तिना हर्षना उत्कर्षनुं महाघोष करनारुं अनादि ध्वनिरूप मांगलिक वाजिंत्र वागशे. ए रीते आत्मा परमात्म स्वरूप पामे थके आनंदघन के०केवल ज्ञान केवल दर्शनथी अनंताज्ञेय स्वरूपने अवलोकन करवाथी परम आल्हादरूप रस उपजशे अने तेना संपूर्ण भरावथी अत्यंत शुष्क एवुं जीवरूप सरोवर अनंत ज्ञानरूप जलथी वृद्धि पामशे ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रभजिन स्तवन.

॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ रागसारंग ॥ मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥

श्रीसुपास जिनवंदियें ॥ सुख संपतिने हेतु ॥ ललना ॥
शांत सुधारस जलनिधि ॥ भव सागरमां सेतू ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन कुमतिवंत प्राणीउने आत्म साधनना उपाय कथनपूर्वक श्रीसुपार्श्व परमेश्वरनी स्तवना करतो कहे छे. हे भव्यो ! श्रीसुपार्श्व प्रभुने द्वादशावर्त्तवंदने वांदो. ते अव्याबाध सुख प्राप्तिरूप मोक्षनी संपत्तिना हेतुरूप ए वंदन छे. ललना शब्द वाक्य अलंकारे छे. वली ते सुपार्श्वजिन केवा छे ? आत्म स्व-

रूपना अनुभवथी रागद्वेषने अभावे उत्पन्न थयो जे शांतरस तद्रूप अमृत रसना समुद्र छे. वली संसार समुद्रनो पार उतरवाने सेतु के० पाज समान छे. ॥ १ ॥

सात महाभय टालतो ॥ सप्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥
सावधान मनसा करी ॥ धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली सुपार्श्वनाथ केवा छे ? वज्र समान इहलोक परलोकादि सात भय अथवा काम, क्रोध, लोभ, मद, राग, द्वेष, मिथ्यात्व आ सात भयना नाश करनार छे. एवा सुपार्श्वजिन के० सामान्य केवलीमां वर प्रधान, स्वस्वरूप कान्तिवंत परमेश्वरने अहो बहिरात्माओ तमे सावधान थइ एकाग्र तदाकार मनः प्रवृत्ति करी बहिरात्मपणुं तजी अंतरात्मवंत थइ जिनेश्वरना चरणकमलनी सेवा त्रणेकाल तन्नत ध्याने करो ॥ २ ॥

शिवशंकर जगदीश्वरु ॥ चिदानंद भगवान ॥ ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थंकरु ॥ ज्योतिसरूप असमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आनंदघननुं एवुं कथन सांभलीने, शिव, शंकर, अलख, योगी, निरंजन, विरंचि रुषीकेश इत्यादी अन्य सर्वना उपासको आनंदघनने पूछवा लाग्या, हे आनंदघन ! अमारा सर्वना देवोना सेवनने उत्थापी एक सुपार्श्वनाथनुं सेवन स्थापन करो छो तेनुं शुं कारण ? शुं उपरना सर्व अभिधाननी सत्ता तेनामां छे ? आनंदघन कहे छे के, हा. शिव के० कर्म उपद्रव निवारक, शंकर के० सुखना कर्ता, जगदीश्वर के० जगतना परमेश्वर, चिदानंद के० ज्ञानानंदी, भगवान के० महा वैराग्यवंत, ऐश्वर्यवंतजिन के० राग द्वेषना जीतनार, अरिहा के० इंद्रादि सर्वेनी द्रव्य तथा भाव पूजा योग्य तथा कर्मरूप शत्रुने हणनार, तीर्थंकरु के० गणधर प्रमुख साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध संघना स्थापन करनार एम सर्व सत्ता सुपार्श्वभगवंतमां छे. तेनी तुलना करी शके एवुं ज्योतिस्वरूप पण अन्यमां नथी ॥ ३ ॥

अलख निरंजन वछलू ॥ सकलजंतु विशराम ॥ ललना ॥ अभय
दान दाता सदा ॥ पूरण आतमराम ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली ते प्रभु अलख के० बहिरात्माथी जाणी शकाय नही तेवा छे. वली निरंजन के० कर्मरूप लेपरहित छे, वछलू के० सर्व प्राणीना हित करनार छे. वली त्रस थावर सर्वजीव भव अटवीमां भमतां थकां कर्मजनित प्रचंड तापथी तपेलाने अर्थात् जन्म जरा मरण आधि व्याधि अने उपाधिथी दुःखी थयेलाओने विशराम के० शाताना धाम छे, वली मरणथी बचावनार तेथी निरंतर अभयदानना दातार

छे, अर्थात् जन्म मरणना टालणहार छे. वली ज्ञानादिगुणे जरपूर होवाथी आतमराम के० आत्म स्वरूपमां रमण करनार पण तेज छे. ॥४ ॥

वीतराग मद कल्पना ॥ रति अरति जय सोग ॥ ललना ॥ निद्रा
तंद्रा दुरंदशा ॥ रहित अबाधित योग ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली राग द्वेष रहित छे तेथी वीतराग छे. वलीमद के० अजिमान, कल्पना के० संकल्प विकल्प, रति के०रागनो उत्कर्ष, अरति के० द्वेषनो उत्कर्ष, जय, सोगके०शोक कल्पांत, निद्रा,तंद्रा के०आलस, पूर्वोक्त सर्व दूषणोथी रहित छे. वली मनोयोग, वचनयोग अने काययोगनुं बाधकपणुं, तेनाथी पण प्रजु अबाधित छे. ॥५॥

परम पुरुष परमातमा ॥ परमेश्वर परधान ॥ ललना ॥ परम
पदारथ परमेष्ठी ॥ परमदेव परमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतने विषे जेटला पुरुष छे तेमां उत्कृष्ट पुरुषत्व धर्मयुक्त पुरुष एज छे तथा परम उत्कृष्ट आत्मा पण एज छे. वली परमेश्वर के० सर्व मनुष्य शिरोमणि, त्रण जगतना नायक छे, तेमज त्रण जगतमां सर्वोत्कृष्ट वस्तु पण तेज छे, अथवा परमपद के० मुक्तिपद तेना रहस्य छे. तथा परमइष्ट के० परमोत्कृष्ट वांछित पदार्थ पण तेज छे, अर्थात् जव्य आत्माउने परम वांछनीक पण एज छे. वली सर्वोत्कृष्ट देव पण एज छे. हे अन्य देवनी सेवा करनारा प्राणीउं, सर्व देवोमां परम देवपणे सेववा योग्य आ सुपार्श्वनाथ प्रजुने परमान के० अवधारो. ॥ ६ ॥

विधि विरंचि विश्वंजरू ॥ रुषीकेश जगनाथ ॥ ललना ॥ अघ
हर अघमोचन धणी ॥ मुक्ति परमपद साथ ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रजुनी सेवा करनार शुजबंध करे अने तेनुं नहीं सेवन करनार अशुज बंध करे अने जे जीवो बंध करे तेवुं जोगवे ते स्वरूपे विधाता पण एज छे. वली संसारी जीवो अने परमात्मा सत्ताए एकज छे, परंतु श्रेष्ठ स्वरूपनो कर्त्ता होवाथी विरंचि के० ब्रह्मा पण तेज छे. वली संसारी जीवोने परम आधाररूप होवाथी विश्वंजर पण तेज छे. वली रुषीउं तेनुं ध्यान करता होवाथी रुषीउंना स्वामी पण एज छे. वली जगतना जीवोने शुद्ध स्वरूपना पोषण करनार होवाथी जगतना नाथ पण तेज छे. वली पापना करनारा तथा अनेक कालना पापी प्राणीउंने मुक्त करावनारा पण तेज छे, तेवीजरीते जगतना स्वामी पण तेज छे. वली मुक्ति जे परमपद तेना सार्थवाह छे, अर्थात् आगेवान दोरनार छे. ॥ ७ ॥

एम अनेक अजिधा धरे ॥ अनुजव गम्य विचार ॥ ललना ॥
जे जाणे तेहने करे ॥ आनंदघन अवतार॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥७॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे अनेक के० घणी अजिधा के० शक्तिउने धारण करनारा बे, अर्थात् अमर, अजर, अक्षर, अकल, अनादि स्वरूपि, विजयी, अतिंद्रिय प्रज्ञात्मा, शंजु, स्वयंजु, सार्व, अज, अच्युत, अविरुद्ध इत्यादि अनेक नामोना धारण करनारा बे. तेथी हे जव्य प्राणीउ! तेनी सेवा करो. ते प्रजुना सेवनमां सर्वेनुं सेवन अंतर्जूत बे. वली अनेक नामोना अर्थ विचारना रहस्यनुं चिंतवन अर्थात् दरेक नामना व्युत्पत्ति सहित अर्थनुं विवेचन अंतःकरणमां करवुं ते अनुजव गम्य कहेवाय. ए प्रमाणे नामोनो विचार, हेतु सहित चिंतवन करवानी जे रीत जाणे ते प्राणीने श्री सुपार्श्वनाथ परमेश्वर आनंदघन अवतार करे के० परमानंदपणे अवतरण करे ॥७॥

॥ अथश्री चंद्रप्रजजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे, मने कोइ मुकावे ॥ ए देशी ॥

देखणदेरे सखी मुने देखणदे ॥ चंद्रप्रज मुखचंद ॥ स० ॥ उप
शमरसनो कंद ॥ स० ॥ गतकलिमल दुखदंद॥ स० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शुद्ध चैतन्य धर्मयुक्त शुद्ध चेतना परमेश्वरना मुख प्रमुख अंगोपांगने विषे व्यापि रही बे ते, परमेश्वरनुं मुखारविंद देखवा देती नथी, तेने अनादि कालथी कर्म उपाधि युक्त आनंदघननो आत्मा सुमतिवंत थइ परमेश्वरना मुखनुं दर्शन करवा इच्छा करतो कहे बे. हे सखी! चंद्रप्रज परमात्माना मुखरूप चंद्रने मने जोवादे, कारणके ते प्रजुना मुखनुं अवलोकन तुं तो निरंतर कर्या करे बे अने में पूर्वे जे जे स्थानके ते मुखावलोकन कर्युं नथी तेनुं वर्णन हवे पबी करीश. माटे विनंति करुं बुं के, ते मुखरूप चंद्र जोवादे. ते मुखरूप चंद्र केवो बे? राग द्वेषना अजावथी उपशमरस के० शांतरसनो कंद के० उगतो किसलय बे. वली जेने चारे निकायना देवोना इंद्रो तथा मनुष्यना इंद्र जे चक्रवर्ती प्रमुख सेवता होवाथी ते सेवनाराउना कलिमल के०पाप तथा दुःखोनादंद के०समुदाय गत के०नाश पाम्या बे. माटे हे सखि! मारा पण पाप अने दुःखसमुदाय दूर थाय. ॥ १ ॥

सुहमनिगोद न देखियो ॥ स० ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥
पुढवि आउ न लेखीयो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेश ॥ स० ॥ २॥

अर्थ ॥ हे सुखी! अव्यवहार राशी सूक्ष्म निगोदमां चंद्रप्रजुना मुखनुं दर्शन

थयुं नहीं; कारण के सूक्ष्म निगोदे रूपनो असंभव, रूपना असंभवथी चक्षुनो असंभव, तेथी देखवानो असंभव, माटे हे सखि ! अहिं मने जोवादे. वली बादर निगोदमां तो अत्यंत विशेषपणे मुख दीठुं नथी, कारण के, जो के सूक्ष्म निगोदमां प्रभुमुख दीठुं नथी तो पण सिद्धक्षेत्रमां सूक्ष्म निगोद छे अने सिद्ध परमात्माउंनी नजीक सूक्ष्म निगोदना जीवो छे अने बादर जीवोनो नजीक वास नथी तेथी बादरमां तो अति विशेषपणे प्रभुमुख दीठुं नथी. वली पृथ्वीकाय, अप्कायमां पण चक्षु दर्शनने अभावे न लख्यो के० जोवामां आव्युं नथी अने जाणवामां पण आव्युं नथी. वली तेउकाय तथा वाउकायमां पण लेशमात्र दीठुं नथी, कारणके मनुष्यना भवमां प्रभुनुं दर्शन करी मरण पामीने जो आवे तो अपर्याप्त अवस्थाये पूर्वभवनुं लेश पण पामे, पण मनुष्य ए बे निकायमां तो मरण पामी आवेज नहीं तेथी ते बे कायमां पण दीठुं नथी. ॥ २ ॥

वनसपति अतिघण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीं देदार ॥ स० ॥
बिति चउरिंदी जललीहा ॥ स० ॥ गतिसन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सखि ! मारो जीव वनस्पति कायमां पण घणो काल रह्यो, तेथी त्यां पण चक्षु इंद्रिने अभावे प्रभुना मुखनुं दर्शन थयुं नहीं. हे सखि ! हवे तुं एम कहीश के एतो तें एकेंद्रीनांज स्थानको बताव्यां, तो कहुं छुं के बेंद्री अने तेंद्रीने पण चक्षु नथी अने चउरिंद्रीने जे चक्षु छे ते पण जललिहा के० पाणीनी लीक जेम निष्फल छे, तेम ते चक्षु पण दर्शन कार्यसिद्ध करवा माटे निष्फल छे. जेम पाणीमां लीटी पाडीये पण रहे नहीं तेम आंख छतां दर्शन न थाय तेथी ते आंख प्राप्त थइ पण निरर्थक छे. वली संज्ञीपणानी पण के० पांचे गतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी एम हे शुद्ध चेतना सखि ! तुं धार के० अवधारजे, मानजे. ॥ ३ ॥

सुरतिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥
अपजाता प्रतिभासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीउ हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली विषयाशक्त थवाथी देवगतिमां अने विवेकना विकलपणाथी तिर्यंचगतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी. वली नर्कगतिमां निवासथतां अत्यंत दुःखनी वेदनाथी संभारवुं पण थयुं नहीं तो देखवुं तो क्यांथीज थाय. वली धर्माधर्मना ज्ञानना अभाववाला अनार्य मनुष्यना साथ के०संगमां उत्पन्न थवाथी तेमज अपज्जता के०अपर्याप्ता मनुष्यनी प्रतिभा के०प्रतिबिंब ते पण धर्माधर्म विवेक विकल होवाथी ते स्थानकमां प्रभुमुख दीठुं नथी,इत्यादि पूर्वोक्त स्थल मात्रमां चतुर के० म-

हानिपुण एवो परमेश्वर मारे हाथ न आव्यो, अर्थात् दर्शननी प्राप्ति न थइ, परंतु हवे दर्शननी योगवाइ मली छे तेथी हे सखि ! मने प्रभुमुख जोवा आप. ॥ ४ ॥

एम अनेक थल जाणिये ॥ स० ॥ दरिशण विणु जिणदेव ॥ स० ॥
आगमथी मत जाणिये ॥ स० ॥ कीजे निरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त तेमज अन्य स्थलो जेवां के कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, रागी इत्यादि चोरासीलक्ष जीवायोनि फरसतां अनेक स्थलो श्री जिनेश्वर भगवंतना मुखनुं दर्शन कर्याविना निरर्थक थया, तेथी हे सखि ! प्रभुना मुखनुं दर्शन करवा दे. वली सुमतिवंत आनंदघन शुद्धचेतनाने कहेछे के गया भवतो निरर्थक गया, परंतु आ मनुष्य भवमां पण शीरीते सेवा करूं ? त्यारे शुद्धचेतना उत्तर आपे छे के, हे आनंदघन ! सिद्धांतना वचनथी पूजानुं मत के०स्वरूप जाणीए. सिद्धांतमां, हिआए सुहाए निस्सेसाए अर्थात् हितने माटे, सुखनेमाटे, निःश्रेयसने माटे परमात्मानी सेवा छे एम जाणीने अभय, अद्वेष, अखेदपणे निर्मल भावांकितपूजा करवानी आज्ञाछे.

निरमल साधु भगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥
किरिया अवंचक तिमसही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निर्मल के०शुद्ध, मुक्ति मार्गना साधनारा साधुउनी भक्ति के०भावांकित वात्सल्यपणुं प्राप्त थयुं. तेना सद्भावथी आत्माना ज्ञानादिक गुणो ठगाय नही एवा मनवचन कायाना अवंचय योगनी प्रवृत्ति थइ; अने तेम थवाथी क्रियानुं सर्व प्रवर्त्तन अवंचक के०अठगाइरूप थाय अने तेम थाय त्यारे मनोयोग अवंचकपणे प्रवर्त्ते, तेथी सही के० निश्चयथी आत्मस्वरूप अवछेद फल पण अवंचक जोय के०हे सखि ! तुं देख ॥ ६ ॥

प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥
कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे समये अवंचक फल स्वरूपनी प्राप्ति थाय तेसमये प्रेरक के० प्रेरणाना कारक, पोताना स्वरूपथी अन्यना स्वरूपने उलखावनार एवा चंद्रप्रभ परमेश्वर प्रावर्त्तक छे अने आत्मा प्रवर्त्तक छे, एम हे सखि ! स्वरूप तदाकारपणे आत्मा प्रवर्त्यो थको अचिंतनीय आत्मशक्तिथी मोहनीय कर्मनो क्षय करे. माटे केवल ज्ञान केवल दर्शननो जे परमानंद तेनो घन के०समूह, तेज छे स्वरूप जेनुं एवा जे चंद्रप्रभ स्वामी तेना पाय के० चरण ते कामित के० निज स्वरूपाभिलाषी प्राणीउना मनोवांछित पूरवाने हे सखि ! साक्षात् सुरतरु के० कल्पवृक्ष छे. ॥ ७ ॥ इति चंद्रप्रभस्तवन.

॥ अथश्री सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

सुबुद्धि जिणेसर पाय नमिने ॥ शुभकरणी एम कीजेरे ॥
अतिघणो ऊलट अंग धरीने ॥ प्रह ऊठी पूजीजेरे ॥ सुबु० ॥१॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन सुबुद्धि जिनना पूजनना भेदपूर्वक स्तवनने करतो थको, भव्य प्राणीउने यथातथ्य पूजननुं फल उपदेशे छे. अहो भव्यो ! तमे सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमिने हवे पछि वर्णवीश तेवी शुभ करणी करो अर्थात् स्वरूप अनुयायी कर्त्तव्य आचरो, वा, देवगतिदायक शुभ करणी शरु करो. ते शुभ करणी आ प्रमाणे छे. जेम संसारी जीवने विवाह प्रमुख कारणो अति हर्षना स्थानक छे, वा, अपुत्रीयाने पुत्रोत्पत्ति जेम हर्षनुं स्थानक छे, तेम शुभगतिना इछनाराने प्रभुपूजन हर्षनुं स्थानक छे. माटे अत्यंत उल्लास अंगमां धारण करीने, जन्ममां ते दिवसने धन्य मानतां अहो भव्यो! तमे हर्षोत्कर्ष सहित प्रभातमां उठीने अन्य सर्व संसारी कामो कर्या पहेलां सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमस्कार करी, पूजनरूप शुभ करणी करो ॥ १ ॥

द्रव्यभावशुचिभाव धरीने ॥ हरखे देहरे जइएरे ॥ दह
तिगपण अहिगम साचवतां ॥ एकमना धुरि थइएरे ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे जे वखते पूजा करवी ते ते वखते प्रथम निर्मल जलथी स्नान करवुं अने शुद्धवस्त्र परिधान करवा, तेटलीज शुचि के० पवित्रता करवी, एम कर्त्तानी मान्यता नथी, पण द्रव्य अने भाव बंनेनी पवित्रता कही छे. ते प्रमाणे द्रव्य भावनी पवित्रताथी साडात्रण क्रोड रोमरोजी विकस्वर थकां, निस्सिहि प्रमुख दश त्रिक तथा पांच अभिगमन, जे रीते प्रवचन सारोद्धार तथा चैत्यवंदनभाष्य प्रमुख ग्रंथोमां कह्या छे, ते सर्व रीत साचवतां थकां हर्षभर हैये जिनमंदिर जइए. त्यां जइ प्रथम तो मात्र पूजा करवाने विषेज मननी एकाग्रता करवी अर्थात् अन्य सर्व कार्यथी सर्व प्रकारे मननी निवृत्ति करवी. एवीरीते तन्मयी थइ पूजारूप शुभकरणी करीए ॥२॥

कुसुम न्हवण वर वास सुगंधो ॥ धूप दीप मन साखीरे ॥ अंग
पूजा पण भेद सुणी एम ॥ गुरु मुख आगम भाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पूजाना चार भेद छे. १ अंगपूजा २ अग्रपूजा ३ भावपूजा ४ प्रतिपत्ति

पूजा. तेमां प्रथम अंगपूजाना पांच भेद छे. १ कुसुम ते मोगरो, चंबेली, गुलाब प्रमुख २ न्हवण ते गंगाजल प्रमुख ३ वर के० प्रधान चंदन, कस्तुरि, बरास प्रमुख ४ धूप ते अगर, सेल्हारसना दशांग धूप ५ घी तथा सूतरनी वत्तियुक्त दीपक. आ सर्वे मननी एकाग्रताए सार्थक छे अने ते विना निरर्थक छे. आ अंगपूजा पण के० पांच भेदे जेम आगममां कहीछे तेमज गुरुमुखथी श्रवण करी छे ॥ ३ ॥

एहनुं फल दोय भेद सुणीजे ॥ अनंतर ने परंपररे ॥ आणा
पालण चित्त प्रसन्नी ॥ मुगति सुगति सुरमंदिररे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त अंगपूजानुं फल कहे छे. तेनुं कार्य सिद्धरूप फल बे प्रकारनुं छे. १ अनंतर २ परंपर, ते जेम सिद्धांतमांथी श्रवण कर्युं छे तेज प्रमाणे कहुं छुं. जे पूजामां तदाकार वृत्तिये स्वामि सेवक संबंधे प्रवर्त्ते, ते परमेश्वरनी आज्ञा लोपे नहीं. चित्त प्रसन्नी के० मननी हर्ष प्रवृत्तिये आज्ञापालनरूप फलनी प्राप्ति थाय ते पूजानुंअनंतर के० आंतरा रहित फल जाणवुं. कारण के जेने प्रभु आज्ञानी प्राप्ति थइ तेने जैनदर्शननुं सर्वस्व हस्तगत थयुं. अने ए रीते आज्ञा सहित पूजन करनारने परंपर फल तो मुक्ति तथा सुगति के० उत्तम मनुष्यगति अने सुरमंदिर के० देवभुवन प्राप्त थाय. तेमां पण भावाधिकपणे मुक्तिज कही छे. परंतु भवस्थितिनी परिपक्तताना कारणने अभावे तथाविध भावनी निर्मलता न होय तोपण मनुष्य तथा देवनी उत्तम गति पामे ॥ ४ ॥

फूल अक्षत वर धूप पइवो ॥ गंध नैवेद्य फल जल भरीरे ॥ अंग
अग्रपूजा मलि अष्टविध ॥ भावे भविक शुभगति वरीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे अग्रपूजा नामनो बीजो भेद वर्णवे छे. पूर्वे पांच भेद अंगपूजाना कह्या ते साथे त्रण भेद अग्रपूजाना कहे छे. १ अक्षत ते शुद्ध तंडुल २ नैवेद्य ते साकर प्रमुख ३ फल ते सोपारी प्रमुख एम पूर्वोक्त १ न्हवण २ चंदन ३ पुष्प ४ धूप ५ दीप, साथे अग्रपूजाना त्रण भेद मेलवतां आठ भेद थाय छे. ते अंग तथा अग्रपूजा जे भव्यजीव भावसहित करे ते प्राणी शुभगति के० पंचम गति जे मुक्ति तेने प्राप्त करे ॥ ५ ॥

सत्तर भेद एकविश प्रकारे ॥ अठोत्तर शत भेदेरे ॥ भावपूजा
बहुविधि निरधारी ॥ दोहग डुरगति छेदेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे अंग तथा अग्र पूजाना मली सत्तर भेद बतावे छे. १ न्हवण २ विलेपन ३ वस्त्रयुग ४ वासक्षेप ५ पुष्प ६ पुष्पमाला ७ पंचवर्ण पुष्प ८ चूर्ण ए ध्वजा १०

आभरण ११ पुष्पघर १२ पुष्प पगर १३ अष्टमंगल १४ धूप १५ गीत १६ नृत्य १७ वाजीत्र ए रीते सत्तर भेदथी, एकवीश प्रकारथी, एकसो आठ भेदथी अने एक हजार आठ भेदथी पण पूजा थाय. ए सर्व पूजाना भेद भाव सहित आचरतां सुगति प्राप्त थाय. हवे त्रीजो पूजानो भेद ते भावपूजा छे. भाव शब्दें परमात्माना स्वरूपने ज्ञानादिक बहुविधि के० घणां प्रकारे निरधारी के० ते ते लक्षणे अवधारीने चिंतववुं अर्थात् मनन करवुं. ते त्रीजी पूजानुं फल, दुर्भाग्य जे स्वरूपनी अप्राप्तिरूप कर्म्म संबंधनी चारे दुर्गति तेनो तथा तेना दुःखनो नाश थाय अने पंचम गतिनी प्राप्ति थाय ते रूप छे ॥ ६ ॥

तुरिय भेद पडिवत्ती पूजा ॥ उपशम खीण सयोगीरे ॥
चउहा पूजा एम उत्तर झयणे ॥ भाषी केवल भोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे पूजानो तुरीय के० चोथो भेद जे पडिवत्ती के० प्रतिपत्ति पूजा तेनुं स्वरूप कहे छे. प्रतिपत्ति के० अंगीकार करवुं अर्थात् पोताना स्वरूपने अविछिन्नपणे आदरवुं ते प्रतिपत्ति पूजा छे. ते, अग्यारमा उपशम, बारमा क्षिणमोही अने तेरमा सयोगीकेवली गुणठाणे प्राप्त थाय. ए रीते चार प्रकारनी पूजा, उत्तराध्ययन सूत्रना सम्यक्त पराक्रम नामना अध्ययनमां केवल ज्ञानना भोगी के० धारण करनारा पुरुषोए उपदेशेली छे. तेथी अहो भव्यो! मत ममत्वमां ग्रस्त थइ, परभवनी बीकने अवगणी, उत्सूत्रना भाषण करनारा, परमेश्वरनी पुष्प, धूप प्रमुख पूजामां आरंभ बतावे छे, ते प्रमाणे केवलज्ञानी जो तेवी पूजामां आरंभ थाय छे एम जाणता होत तो सिद्धांतमां तेवी पूजानुं वर्णन नहीं करतां निषेध करत; परंतु तेमणे तो लाभ जाणी करवाने उपदेश करेलो छे. ॥ ७ ॥

एम पूजा बहु भेद सुणीने ॥ सुखदायक शुभकरणीरे ॥
भाविक जीव करशे ते लेशे ॥ आनंदघन पद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे हे भव्यो! ए रीते द्रव्य भाव पूजाना घणां भेद ते सुख के० मुक्तिसुख आपनाररूप शुभ करणी अर्थात् आत्माने स्वस्वरूप प्राप्त करावनार कर्त्तव्य श्रवण करीने जे भविक जीव, द्रव्यपूजा तथा भावपूजा करशे ते प्राणी आनंद के० अनिर्वाच्य अतिशय प्रमोदना भरावरूप पद के० मुक्तिपदनी धरणी के० भूमिने प्राप्त करशे ॥ ८ ॥ इति सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥ मंगलिकमाला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी ॥ विविध भंगी मन मोहेरे ॥
करुणा कोमलता तीक्ष्णता ॥ उदासीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शीतलजिन! सामान्य केवलीना स्वामि तमारा स्वरूपमां रमण थयेली, प्रत्यक्ष विरोधाभासी परंतु तमारे विषे अविरोधपणे प्रवर्त्तेली, माटे ते मनोहर छे, एवी त्रिभंगी के० त्रण छे प्रकार जेना एवी एक त्रिभंगीने विषे, वली मूल भंगीना नामोना अर्थ विभेदे भंगांतरनी रचना विविध के० नाना प्रकारनी छे, ते भव्य जीवोने मनोहर के० चमत्काररुप छे, परंतु मनमां भयानकपणे दुर्धर्ष नथी. ते त्रिभंगीनी भंग रचनानुं स्वरूप कहे छे. १ करुणा ते मननी कोमलता, दयाना परिणाम. ते शितलजिनना स्वभावरूप अहिंसक भावेज परिणम्या छे. अहिं करुणानो कोमलता अर्थ पद्य रचनामांज कर्यो छे, ते दोष नथी, कारण के भाष्य निर्युक्तिमां, पोताना पदनो अर्थ पोतेज योजनामां करे तेमां दोष नथी एम कहेलुं छे. वली तीक्ष्णता के० तीक्ष्णवृत्ति, क्रूरता, दुर्धर्षपणुं, आ बीजो भंग छे अने उदासीनवृत्ति ते त्रीजो भंग छे. भव्य जीव, काल परिपाक कारण मलतां सेहेजे सिद्ध थाय, माटे दया चिंतववाथी शुं? वली कर्म पण सेहेजे खपी जाय, माटे कोमलता तथा तीक्ष्णतामां मध्यस्थ भावे प्रवृत्ति करवी ते उदासीनता, एवी शीतलजिननी मनोहर त्रिभंगी छे ॥ १ ॥

सर्व जंतु हितकरणी करुणा ॥ कर्म विदारण तीक्ष्णारे ॥
हानादान रहित परिणामि ॥ उदासीनता विक्षणारे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज त्रिभंगीनो संभव बतावे छे. समस्त सूक्ष्म, बादर, त्रस, थावर संसारी जीवमात्रने हितकारी चिंतवणा ते करुणा नामनो प्रथम भंग. ज्ञानावरणादि कर्मनुं विदारवुं, नाश करवुं ते तीक्ष्णता. अहिं निर्दयीपणुं छे अर्थात् बापडा, रांकडाने कोण हणे एवी रीते कर्मोनो नाश करवामां दया आवती नथी ते तीक्ष्णता नामनो बीजो भंग. हवे त्रीजो भंग उदासीनता, जे उभय विलक्षणी होवाथी जेनो असंभवज होय तेनो संभव कहे छे. हान के० छोडवायोग्य अने आदान के० ग्रहण करवायोग्य, तेथी रहित परिणामि अर्थात् छोडवायोग्य वस्तुने छोडवानी इछा नथी अने ग्रहण करवायोग्य वस्तुने ग्रहवानी इछा नथी, ए रीते इछानो निरोध कर्यो छे. ते पण जाणीने अर्थात् कृत्रिमपणे नही परंतु स्वभावेज निरोध करेलो छे. इष्ट अनिष्ट वस्तु उपरथी स्वभाविकरीते हानादानपणुं थयेलुं छे. ते उदासीनता वृत्तिने हे

विक्षण के० विचक्षण धारो. अहिं "च" अक्षर पादपूर्त्ति माटे तजी दीधो छे. हवे उदासीनतानुं लक्षण कहे छे. अनादि निजस्वरूपनुं जे ग्रहण ते आदान अने परपरिणतिनो त्याग ते हान. ए बंनेथी रहित परिणामीपणुं छे, केमके मारा अनादि स्वरूपने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष, जेम ज्ञान दर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञान दर्शन. तेवीज रीते निश्चय नये त्रण कालमां आत्मामां कर्मनो असंभवज छे तेथी शोक पण शुं. ए रीते उदासीनतानो संभव कह्यो ॥ २ ॥

परदुःखछेदन इछा करुणा ॥ तीक्षण परदुःख रीझेरे ॥
उदासीनता उभय विलक्षण ॥ एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ए त्रिभंगीने विषे अर्थ भेदथी त्रिभंगी बतावे छे. संसारी जीवोने अनादि कालथी पुद्गलादि जड संबंधथी थयुं जे दुःख, तेने छेदवानी इछा ते करुणा नामनो प्रथम भंग. भगवंत महावीर स्वामि, संगमाना उपसर्गथी पुद्गलोने दुःख पामता देखीने रीझे के० हर्ष पामे अर्थात् ज्ञानी पुरुष एम विचारे के अनादि कालथी ए कर्मो मने दुःख आपता हता, आजे ए दुःख पामे छे एवी विचारणा ते रीझ कहेवाय, ए तीक्षणता नामनो बीजो भंग; अने उभय विलक्षण के० ए बंने लक्षणोथी जे जुदीज छे ते उदासीनता नामनो त्रीजो भंग. ते आ प्रमाणे. जेमके पुद्गलसंगी जीवोने दुःखी जोइने विचारे के, तेउनी भवस्थिति परिपक्व थया विना मारी करुणाथी शुं थाय ? वली ए पुद्गलादिक जड वस्तुने बीजाना करेला उपसर्ग प्रमुखथी दुःखी देखीने हुं राजी थयो, परंतु मारुं स्वरूप निश्चयथी एक आनंदोपेतज छे. माटे जड तेने रोकी शके नही, ते उदासीनता. एम त्रणे लक्षण कह्या. ते एक परमेश्वररूप ठाम के० स्थानकमां शीरीते सिद्ध थाय? केमके तेना लक्षण भिन्न भिन्न छे, तेथी एक स्थानमां केम पामिये ? तेनो उत्तर आगली गाथामां आपे छे ॥ ३ ॥

अभयदान ते मलक्षय करुणा ॥ तीक्षणता गुणभावेरे ॥
प्रेरण विणु कृत उदासीनता ॥ एम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ते त्रिभंगीनुं शीतल परमेश्वरमां अविरोधिपणे अवतरण करी देखाडे छे. कोइ जीवने भय न उपजाववो एवुं अभयदान सर्व जीवने परमेश्वर आपे छे, ते करुणा; ते राग द्वेषरूप मलना क्षयथी थाय छे. हवे सुमति पुछे छे के, तीक्षणता अने करुणाने परस्पर विरोधि भाव छे, माटे ज्यां करुणा त्यां तीक्षणता केम संभवे? उत्तर के—परमात्मामां स्वगुण स्वभाव एवोज छे के, कर्मो उपर अति तीक्षणता तेमने उत्पन्न थाय. अहिं जीव उपर करुणा अने कर्म उपर तीक्षणता होवाथी मतिमां वि-

रोध आवतो नथी. वली मतिनो अर्थ सुमति करीए तोपण विरोधिपणुं नथी. ए बीजो जंग. हवे त्रीजा जंगनुं स्वरूप कहे छे. प्रेरणा कर्या विना उदासीनता छे. ज्यां इष्टनो वियोग अने अनिष्टनो संयोग थाय त्यां उदासीनता थाय, परंतु ते दुःखनी प्रेरणाथी थइ कहेवाय, पण परमेश्वरने विषे जे उदासीनता छे ते प्रेरणाविना छे, केमके आत्मधर्मथी वीतराग परिणति परिणमि परमात्मवृत्तियें स्वजाव प्राप्ति थइ, तेनो शो हर्ष; तेथी प्रेरणाविना उदासीनता छे. माटे हे सुमति! शीतल परमेश्वरमां पूर्वोक्त रीते त्रिजंगीनी परस्पर विरोधता आवती नथी. ॥ ४ ॥

शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता ॥ निर्ग्रंथता संयोगेरे ॥
योगी जोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयोगी उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे बे जांगाना प्रयोगथी त्रीजो जांगो थाय एवी पांच त्रिजंगी कहे छे. १ शक्ति २ व्यक्ति. तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न शक्ति, न व्यक्ति. वली १ त्रिजुवन प्रजुता २ निर्ग्रंथता. तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न त्रिजुवन प्रजुता, न निर्ग्रंथता. एम जांगा थाय छे. स्वगुणपर्यायने ग्रहवानुं सामर्थ्य ते "शक्ति." तेज शक्तिथी स्वस्वजावनुं प्रत्यक्ष करवुं ते "व्यक्ति." वली स्वगुण ग्रहण करतां शक्ति फोरववानुं शुं काम? ते तो आत्माना गुण हता ते आत्मामां प्रगट थया, माटे "नशक्ति" अने आत्मा पोताना स्वजावमां रम्यो तेमां प्रत्यक्ष शुं कर्युं? ते "नव्यक्ति" ए प्रथम त्रिजंगी. वली त्रण जगतना पूज्य तेथी "त्रिजुवन प्रजुता" अने बाह्य अज्यंतर ग्रंथीथी रहित तेथी "निर्ग्रंथता." स्वेछाये त्रण जगतना पूज्यपणाना अवांछक तेथी "न त्रिजुवन प्रजुता" पासे उंघो मुहपत्ति राखे नही, निर्ग्रंथी थइने फरे नही, तेथी "न निर्ग्रंथता" ए बीजी त्रिजंगी. १ योगी २ जोगी. साथे "न" जोडतां ३ नयोगी, न जोगी. मनवचन कायाना योगना रुंधनारा तेथी "योगी." निजगुणना जोक्ता, तेथी "जोगी." सिद्धस्वरूपने चिंतवनारा तेथी "नयोगी" स्वजावे सिद्धगुणना अंतर्जावी तेथी "नजोगी". ए त्रीजी त्रिजंगी. १ वक्ता २ मौनी. साथे "न" जोडतां ३ नवक्ता, नमौनी. द्वादशांगीना उपदेष्टा, तेथी "वक्ता". आश्रव संबंधी वचन न कथन करे, तेथी "मौनी". अनंता तीर्थंकरे द्वादशांगी प्ररूपी तेमनाथी कांइपण हिनाधिक न कह्युं, तेथी "नवक्ता". तीर्थप्रवर्तनसमये द्वादशांगी वचनवर्गणाए जाषी, तेथी "न मौनी". ए चोथी त्रिजंगी. हवे अनुपयोग उपयोगने संयोगे पांचमी त्रिजंगी बतावे छे. १ अनुपयोगी २ उपयोगी. साथे "न" जोडतां ३ नअनुपयोगी, नउपयोगी. उपयोग प्रयुंज्या विना अनंता पदार्थ केवलज्ञानथी प्रत्यक्ष छे, तेथी "अनुपयोगी". केवल-

ज्ञानोपयोगी, केवलदर्शनोपयोगी, तेथी "उपयोगी". सिद्धअवस्थामां केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोगोनो संभव, तेथी "नअनुपयोगी" परंतु उपयोग प्रयुंजवानुं कारण कोइपण वखते पडतुं नथी, तेथी "नउपयोगी" ए पांचमी त्रिभंगी. ॥ ५ ॥

इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी ॥ चमत्कार चित्त देतीरे ॥ अच
रिजकारी चित्रविचित्रा ॥ आनंदघन पद लेतीरे ॥ शी०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादि अनेक द्विक संयोगी त्रिभंगीउना भांगा छे. जेमके १ कामकर्में २ क्रोधकर्में. साथे "न" जोमतां ३ नकामकर्मे, नक्रोधकर्मे. स्वस्वरूप ग्रहवानो काम के० अभिलाष तेमां क्रमके० व्यापि रेहेवापणुं. मोहादिक शत्रु हणतां क्रोध व्यापि रह्यो छे. संज्वलननो लोभ खपावी बारमे गुणठाणे चड्या त्यारे "नकामी नक्रोधी". अहिं कामक्रोधादि सर्वना त्यागी छे. ए त्रिभंगी थइ. तेमज १ सकामी २ निष्कामी ३ नसकामी ननिष्कामी. स्वरूप ग्रहवाने अभिलाषा, तेथी "सकामी". परपरिणतिने नही ग्रहवाथी, "निष्कामी". कामकर्मने त्यागवाथी, "नसकामी" अने पोताना अनंतगुणोमांथी एकपण गुण उछो न ग्रहण कर्यो, तेथी "ननिष्कामी". इत्यादि अनेक त्रिभंगीउ छे. असंभवपणाने प्राप्त करती थकी चित्तने चमत्कार उपजावनारी छे, केमके चित्र के० नानाप्रकारना विचित्रा के० अनेक भंग तरंगनी त्रिभंगी ते असंभव संभवरूप तेथी अचरिजकारीछे. जेमके करुणा, त्यांज तीक्ष्णता, त्यांज उदासीनता, ए केम संभवे माटे आश्चर्यकारी छे. ए त्रिभंगीउनी फलप्राप्ति ते ज्ञानानंदना भराव रूप जे मुक्तिपद तेने लेतीके० ग्रहण करनारी छे. अर्थात् त्रिभंगीउना भंग तरंग, केवलज्ञान केवलदर्शनात्मक छे, अथवा एकेक भंग ते पण आनंदघनपदथी व्यापी रहेल छे ॥ ६ ॥ इति शीतलजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

॥ रागगोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामीरे ॥ अध्या
तम मत पूरणपामी ॥ सहज मुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांस प्रभुने साक्षीभूत करीने कहेछे. हे सुमति ! केवलज्ञानादि लक्ष्मीवाला श्रेयांस परमात्मा आपणा अंतर के० अंतःकरणना सर्वभेदना जामी के० जाणनार छे. ते सर्वना अंतरजामी तेथीज तेनुं नाम आतमाराम छे. वली जेणे स्वस्वरूप संबंधी संपूर्ण ज्ञान अखंडितपणे प्राप्त करेल छे, तेथी अध्यात्ममतना पूरण पामी छे, वली निःप्रयासे मुक्तिगतिने प्राप्त करनारा छे ॥ १ ॥

सयलसंसारी इंद्रियरामी ॥ मुनिगुण आतमरामीरे ॥
मुख्यपणे जे आतमरामी ॥ ते केवल निःकामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सर्व संसारी जीवो, शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श रूप इंद्रियोना सुखभागमां लीनपणे प्रवृत्ति रह्या छे. अने सिद्धांत वचनानुसारे आत्मस्वरूपने साधनारा मुनिराजो ज्ञानादि आत्मगुणोमां रमी रह्या छे. तेथी निश्चयनयने मतें मुख्यपणे, गुणगुणीने अभेदस्वरूपे, आत्मस्वरूपमां तद्रूपपणे प्रवृत्ति करनारा जे मुनिराज, तेमने तो निःकेवल एक आत्मस्वरूपनी कामना शिवाय अन्य अभिलाष मात्र नथी, तेथी तेउ निष्कामी छे ॥ २ ॥

निजस्वरूप जे किरिया साधे ॥ तेह अध्यातम लहियेंरे ॥ जे
किरिया करी चउगति साधे ॥ ते न अध्यातम कहियेंरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! जे प्राणी पोताना आत्मस्वरूपमां रमतां थकां प्रतिक्रमणादि पापनिवर्त्तनरूप क्रियामात्रने साधे ते प्राणी अध्यात्म के० आत्मामां अंतवर्ती रहुं एवुं स्वस्वरूप अविछेदकरूप आत्मस्वरूप पामे अर्थात् तेने अध्यात्म लहिये के० कहिए. परंतु जे प्राणी निजस्वरूपमां नही रमतां क्रियाकरी चारगति सिद्धकरे अर्थात् शुभकरणी करी देव तथा मनुष्यनी गति सिद्धकरे अने अशुभ करणी करी नरक तिर्यंचनी गति सिद्ध करे; दृष्टांत के साधुपणामां देव अने मनुष्यनी गति सिद्ध करे अने साधुपणुं छतां वंचक करणी करी अथवा प्राणातिपातादियुक्त करणी करी नरक तिर्यंचगति सिद्ध करे, ते क्रियाने अध्यात्म स्वरूप अनुयायी क्रिया न कहीए ॥ ३ ॥

नाम अध्यातम ठवण अध्यातम ॥ द्रव्य अध्यातम छंडो रे ॥
भावअध्यातम निजगुण साधे ॥ तो तेहशुं रढ मंडो रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मक्रियाना चार प्रकार छे. तेमां प्रथम, अध्यात्मशब्दनो मात्र अर्थ पण न जाणे अने जे पुछे तेने कहे के अमे अध्यात्मी छईए ते नाम अध्यातम. बीजो अध्यात्म स्वरूपनो अक्षरविन्यास आदि स्वरूप ते स्थापना अध्यात्म. त्रीजुं, रेचक, पुरक, कुंभकादि प्राणायामना भेदे बाह्यवृत्तिए एवुं ध्यान बतावे के जे मने देखी लोको एम जाणे के तेणे अंतरवृत्तिए आत्मानुं स्वरूप प्रत्यक्ष कर्युं देखाय छे, परंतु पोते तो कोरानेकोरा होय, ते द्रव्य अध्यात्म. आ त्रणे अध्यात्म छांडवा योग्य छे तेथी तेउने तजीयो अने जे आत्मस्वरूपमां रमणतासहित क्रियामां प्रवर्त्तनरूप भाव ते भाव अध्यात्म. ते आत्माना ज्ञान दर्शनादि गुणोने सिद्धकरे, निर्मल करे. माटे अहो भव्यो! जो तमारे निजगुणनी सिद्धता करवी होय तो भावं अध्यात्मनीज रटना करो.

शब्द अध्यातम अरथ सुणीने ॥ निरविकल्प आदरजोरे ॥
शब्द अध्यातम ज्ञजना जाणी ॥ हान ग्रहणमति धरजोरे ॥ श्रीश्रे० ॥५॥

अर्थ ॥ हे ज्ञव्यो ! आत्माने अंतवर्ती आत्मस्वरूपमां तदाकारपणे रमणता करवी ते अध्यात्मशब्दनो अर्थ छे. ते गुरूमुखथी श्रवणकरी, निश्चयनये आत्मानेविषे स्वरूपनुं निरविकल्पिपणुं अर्थात् अन्नेदिपणुं छे ते आदरजो के० अवधारजो. वली अध्यात्मशब्दना बीजा बे ज्ञेद छे. एकमां स्वरूप अध्यात्मीपणुं छे अने बीजामां स्वरूप अध्यात्मीपणुं नथी. माटे ज्ञजना समजजो अर्थात् मात्र नामपण अर्थ रहित एवो अध्यात्मशब्द, स्वरूपनी सिद्धताना अज्ञावने लीधे हान के० छांमवा योग्य छे, तेथी तेमां छांडवानी बुद्धि धारजो, अने अर्थ अध्यात्ममां स्वरूपनी सिद्धता होवाथी तेने ग्रहण करवानी बुद्धि धारजो ॥ ५ ॥

अध्यातम जे वस्तु विचारी ॥ बीजा जाण लबासीरे ॥
वस्तुगतें जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मत वासीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तु के० आत्मतत्त्वने तदाकार स्वरूपे विचारनारा, लक्ष्य लक्षणना अज्ञिन्न विचारी, तेतो अध्यात्मने ग्रहण करेछे; अने जेउ अध्यात्मस्वरूपथी ज्ञिन्न तथा शुन्य हृदय छतां हठ ग्राहीपणे अध्यात्ममतना ममत्वी, मात्र निश्चयनयना वाद करनार तेउंतो लबासीके० लबाड छे. जे मुनिराज वस्तु के० सिद्धांतनेविषे गत के० प्राप्त थयेल एवुं वस्तु के० अध्यात्म तत्त्वप्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् सिद्धांतमां जेम अध्यात्म स्वरूप कह्युं छे तेमज प्रकासे, ते आनंदघन के० अनंत केवलज्ञानीउंनो जे सप्तनयाश्रित मत के० जिनमत, तेनो वासी होय ॥ ६ ॥ इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी तथा परज ॥ तुंगीयागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

वासुपूज्यजिन त्रिज्ञुवनस्वामी ॥ घननामी परनामीरे ॥
निराकार साकार सचेतन ॥ करम करम फलकामीरे ॥ वासु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो ज्ञव्यो ! वासुपूज्य प्रज्ञु त्रणज्ञुवनना पूज्य होवाथी स्वामि छे. वली जे घननामी के० घणां नामवालां छे अने जे परमात्माना नामो ते ते परिणामेज परिणमि रह्या छे. हवे संसारी जीवोना बे ज्ञेद छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा. तेमां अंतरात्मानी अहिं विवक्षा करतां, निराकार ते सामान्य उपयोग अने साकार ते विशेष उपयोग, एवां उपयोग लक्षणसहित चेतन छे. ते करम करम फलकामी के० सामान्य

विशेष शुभाशुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन ज्ञानावरणादि कर्मोंनो कामी के० अभिलाषी तेमां शुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन शुभपुण्य प्रकृतिनो कामी के० अभिलाषी अने अशुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन अशुभ पाप प्रकृतिनो कामी छे ॥ १ ॥

निराकार अभेद संग्राहक ॥ भेदग्राहक साकारोरे ॥
दर्शनज्ञान दुभेद चेतना ॥ वस्तुग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे निराकारनुं लक्षण कहे छे. भेदरहित जे संग्रह करनार ते निराकार, दर्शनोपयोग अने जे भिन्न भिन्न स्वरूपनो ग्राहक ते साकार, ज्ञानोपयोग. एवी रीते निराकार अने साकार बे उपयोगना भेदथी चेतनाना पण बे भेद थया. एवी रीते सामान्य विशेष बे उपयोगें जडथी आत्मतत्त्वने भिन्न के० जुदुं करी लेवुं ते छे व्यापार के० प्रवर्त्तन ते जेनुं एवो चेतनावंत लक्षणयुक्त अंतरात्मा छे. ॥ २ ॥

कर्त्ता परिणामी परिणामो ॥ कर्म जे जीवे करीएरे ॥
एक अनेक रूप नयवादें ॥ नियतें नर अनुसरीएरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्मनुं कर्त्तापणुं ते परिणामि के० व्यापीने परिणामो के० परिणमवुं ते छे; अर्थात् कर्मनुं कर्त्तापणुं ते परिणामे व्यापि रह्युं छे पण जीवमां नथी. कोइ पुछे के जीवमां कर्त्तापणुं केम नथी, तेने उत्तर के, जे परिणामे प्रवर्त्ते ते कर्मने जीव करे. जेमके मिथ्यात्वपरिणामे परिणमतो जीव, मिथ्यात्व कर्मप्रकृतिने करे पण अविरतिने न करे. तेथी कर्त्तापणुं परिणाममां छे, पण जीवमां नथी. जे करीए ते कर्म तेथी करवामात्र कर्म तो एकज छे, परंतु नयवादे के० नय वचन मार्गे तेनां अनेक रूप छे. अर्थात् वस्तु तत्त्वे एक नयवचन मार्गे ज्ञानावरणादि कर्म आठ छे. ते हे भव्य नर के० मनुष्यो नियतें के० निश्चयथी अनुसरिये के० अवधारो. ॥ ३ ॥

दुःखसुखरूप करमफल जाणो ॥ निश्चय एक आनंदोरे ॥
चेतनता परिणाम न चूके ॥ चेतन कहे जिनचंदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे भव्यो ! दुःखस्वरूप अने सुखस्वरूप एवां बे कर्मनां फल छे. ते व्यवहारनयनी अपेक्षायें छे अने निश्चयनयने मते तो त्रणे कालमां निज स्वभावनोज आत्मा कर्त्ता, एक अद्वितीय आनंदमयी छे. चेतनाने विषे चैतन्य धर्म ते चेतनापणुं छे; ते चेतनतानो परिणाम के० परिणमन धर्म ते चेतना कदि मुके नही, केमके ते तेनो धर्म, गुण छे. धर्मथी धर्मीनी ओलखाण थाय, गुणथी गुणीनी ओलखाण थाय. यथा ॥ धर्मी अपने धर्मकुं ॥ न तजे तिनूकाल ॥ आत्मज्ञान गुण नव तजे ॥ जड कि-

रियाकी चाल ॥ १ ॥ माटे धर्मने अन्नावे धर्मीनो अन्नाव अने तेने सद्न्नावे तेनो सद्न्नाव, तेथी चेतनता धर्मवंतने श्रीजिनचंद्रे चेतन कह्यो ॥ ४ ॥

परिणामी चेतन परिणामो ॥ ज्ञान करमफल न्नावीरे ॥ ज्ञान
करमफल चेतन कहिये ॥ लेजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे चेतना धर्मे परिणामि के० व्यापी रह्यो एवो चेतन जे जीव तेनुं परिणामो के० परिणमन शुं बे, अर्थात् धर्म शुं बे ? ते कहे बे. ज्ञान के० निजस्वरूपज्ञान, जेमके हुं चेतन बुं अने पुफ्लादिकमां रमी रह्योबुं, ते जरू बे. हुं अविनाशी बुं, जरू विनाशी बे. हुं चैतन्य धर्मी बुं, शास्वत बुं, ते सरूण पडण विध्वंसन धर्मी बे. तेथी ते ज्ञानस्वरूप आत्मानुं करम के० करवुं ते शुद्ध आत्मस्वरूप प्राप्तिरूप फल तेनो न्नावि के० विचारनारो तेथी ज्ञान के० आत्मज्ञाननुं करम के० करवुं, प्रयुंजवुं तेनुं फल ते स्वरूप प्राप्तिरूप तेने चेतनावंत चेतन कहीए एटले लक्षण सहित चेतन कहीए; केमके सिद्धांतमां स्वरूप प्राप्ति थइ तेनेज लक्षण सहित चेतन कह्यो बे; अने बीजा तो कहेवा मात्र चेतन जाणवा. माटे अहो न्नव्यो ! ते शुद्ध आत्मस्वरूपने मनावी लेजो के० निरंतर तेनी साथे हेत राखजो, अर्थात् स्वरूपमांज प्रवर्त्तजो. अन्य कांइ पण चिंतवनमां प्रवर्त्तशो नहीं ॥ ५ ॥

आतमज्ञानी श्रमण कहावे ॥ बीजा तो ड्रव्य लिंगीरे ॥ वस्तु
गतें जें वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मति संगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे अंतरात्मवंत ज्ञानीने साधु कहीए, कारण के ते शुद्ध आत्मस्वरूपना ज्ञाता बे. जेने आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष थइ रह्युं बे तेज श्रमण के० साधु कहेवाय बे. "नाणेणय मुणी होइ" इति वचनात्ः अने बीजा जे स्वरूपज्ञानथी रहित बे, तेंतो मात्र उंघा मुहपत्तिना धारक ड्रव्यलिंगी बे. स्वरूप ज्ञानमां न्नावलिंगीपणुं बे. उंघा मुहपत्ति धारण करवामां ड्रव्यलिंगीपणुं बे. माटे वस्तुगतें के० आत्मवस्तु जेम बे, तेमज आत्मवस्तु तत्त्वने जे प्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् आत्मार्थी बहार स्वरूपज्ञान नथी परंतु आत्मानी अंदरज स्वरूपज्ञान बे, एवुं जे कहे. ते आनंदघन मति संगी के० चित् आनंदनो समुद्र तेनी मति जे सुमति तेनो संगी के० सहचारी थाय. ॥ ६ ॥ इतिश्री वासुपूज्यजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आंवलीरे ॥ ए देशी ॥

डुख दोहग दूरें टल्यारे ॥ सुख संपदशुं जेट॥धींग धणी माथे कियारे॥
कोण गंजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज ॥ मारासिध्या वं-
छितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना डुःख अने अनादि कालनुं अज्ञान संबंधी डुर्जाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्युं. वली प्रजुने निरखतां हर्षे निर्जर गात्रो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारूप सुख थयुं. ते सुखथी, शमदम क्षम विचक्षण रुची, प्रजु स्वरूपानुयायी अनुजव संबंधी प्रीत. तेथी प्रगट थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो जेट के० मेलाप थयो. हे सुमति ! परमात्माना दर्शन मात्रथी डुःख दौर्जाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा धींग के० समर्थने माथे धणी कर्या बतां, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, खेटनर के० खानारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमांज प्रवर्त्तनारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराजव करवाने समर्थ नथी. एवा विमलनाथ प्रजुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा. मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने प्रजु दर्शनथी मारां मनोवांछित कार्य सिद्ध थयां ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥
समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए बीए. कमला के० लक्ष्मीए पोताना निवासनुं स्थान, कमल कादवमां उत्पन्न थएलुं होवाथी समल के० मल सहित बे एम जाणी तथा ते कमलनी पांखमीउं खरी जती होवाथी अन्य कमलमां निवास करवानी जरुर पके एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी,वली तेज कमलने पामर पेख के० रांकसमान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि के० तजी दीधुं. अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरूप मेलरहित विमलनाथ प्रजुना चरणकमल के० पगरूप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमां निवास कर्यो अर्थात् त्रण जगतनी लक्ष्मी प्रजुना चरणकमलमां निवास करे बे. मुग्ध प्राणीउ लक्ष्मीनो वास अन्यस्थलमां धारे बे, तेउ जूठा बे, कारण के विमलनाथ प्रजुना चरणकमलनी सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाउं मले बे ॥ २ ॥

भुजमन तुऊपद पंकजेरे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर भ्रमराउं लीन थई कमलमां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप भ्रमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चरणकमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल ढे अने ते हर्षेथी एवो उन्मत्त थयो ढे के मंदरधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय भूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक समान गणे ढे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउं शी गणतीमां ढे? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे ढे, एटलुंज नही पण देवोना स्वामि इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे ढे; एवुं मारुं मन मोटुं थयुं ढे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहोरे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रभु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थयो तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउं, हवे मने पराभव करी शकशे नही. वली हे प्रभु! तमो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो ढो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त थया. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय भार होवाथी शांति नहोती तेथी हे प्रभु! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी तमो मनना विसरामी ढो. हे प्रभु! तमो मने पूर्ण वहाला ढो एटलुंज नही पण मारा आत्माने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार ढो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणोरे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करभर पसरंतारे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! विमलनाथ प्रभुने में नेत्रथी निरख्या, ते प्रभुना दर्शननो प्रभाव एवो ढे के, भाव विशुद्धताए ते प्रभुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए ते दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० भ्रांति रहे नही, एटलुंज नही पण प्रभुनुं अने मारुं स्वरूप एक ढे अने तेमां वेध के० विरोध नथी एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय. दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किरणोनो भर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय तेज प्रमाणे प्रभुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

अमीय भरी मूरति रचीरे॥ उपमा न घटे कोय ॥
शांत सुधारस झीलतीरे ॥ निरखत तृपति न होय ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परमात्मानी मूर्तिना स्वरूपनुं अधिक वर्णन एक मुखें केटलुं करी शकुं ? तोपण अल्पमां बहु कहीश. जगतमां अमृतसमान प्रशंसापात्र कोइ वस्तु नथी, तेथी निःकेवल अमृतमयज जेम कोईए रची होय तेम तमारी मूर्ति स्वभाविक तेवी रचायेली छे. जगतमां एवो कोई पदार्थ नथी के जेनी उपमा तमारी मूर्तिने आपी शकाय, तेमज तमारी मूर्तिमां उपमा संबंधी अतिव्याप्ति, अव्याप्ति के असंभव एवो दोष पण नथी. वली प्रत्यक्ष के अनुमान प्रमाण पण उपमा संबंधमां बीजा पदार्थने दोरतुं नथी; अहीं जे मूर्तिने अमीयभरी कही ते तो मात्र वचन व्यापार करवारूप उपमा कही छे; परंतु प्रभुनी मूर्ति तो राग द्वेषना अभावथी परम शांतरूप अमृत रसमांज झीली रही छे, जाणे मूर्तिमान शांतरस द्रवतो होय, तेवी मूर्ति छे. वली अमृतोपमा पण घटती नथी, कारण के अमृतथी तो मात्र अंगोपांग अजर थाय छे अने प्रभु मूर्तिना शांतरसथी आत्मा जन्ममरणरहित थाय छे. तेथी प्रभुनी मूर्तिने निरखतां निरखतां मारी चक्षुने, दर्शननी इच्छाने अने हृदयनेत्रने तृप्ति थती नथी.

एक अरज सेवक तणीरे ॥ अवधारो जिनदेव ॥
कृपा करी मुज दीजीयेरे ॥ आनंदघनपद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन विमलप्रभुने आधीन थइ विनंति करे छे. हे जिनदेव! सामान्य केवलीना स्वामि, हुं लाभानंद नामनो तमारो अनुचर, सेवक, तेनी एक अरज अवधारो के० मानो. मारा उपर संपूर्ण कृपा करी मने आपवानी इच्छा करता हो तो, बीजुं तो शुं परंतु पांच अनुत्तरवासी देवोना सुखनी पण हुं अभिलाषा राखतो नथी परंतु निजस्वरूपथी उत्पन्न थयो जे आनंद, तेनो जे समूह ते रूप पदने प्राप्त करावनारी एवी तमारा चरणकमलनी सेवा आपो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनंतजिन स्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ कडखानि देशी ॥

धार तरवारनी सोहेली दोहेली ॥ चउदमा जिनतणी चरणसेवा ॥
धारपर नाचता देख बाजीगरा ॥ सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धार० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन आ पंचम कालमां जैनदर्शनीओनी जैनदर्शनथी विरुद्ध आचरणा देखी दुःखी थवाथी तेमज अनंतप्रभु सेवित चारित्रनी पण दुषमकालमां

दुष्करता देखी महादुःखी थवाथी सुमतिने कहे छे. हे सुमति! तरवारनी तीक्ष्ण धार उपर उघाडे पगे चालवुं ते दोहेलुं छे, पण विचार करतां सेहेलुं छे, परंतु चउदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुना चरण के० चारित्रनुं सेवन ते दोहेलुं छे. अर्थात् तरवारनी धार करतां चारित्रनी धार तीखी छे. जुओ के चोगठामां चारे बाजुए तरवारने बांधी ते तरवारोनी धारोनी वचमां गुलांटा खातां खातां निकली जनारा एवा बाजीगरोने नाचता दीठा छे, परंतु चारित्रनी आसेवनारूप धारा उपर महाशक्तिवंत एवा देवो पण रही शकता नथी, देवताओने व्रतना उदयनोज असंभव तो चारित्र प्रवर्त्तन तो क्यांथीज होय. तेथी तरवारनी धारा सुगम अने चारित्र प्रवर्त्तनरूप धारा विषम छे. ॥ १ ॥

एक कहे सेवियें विविध किरिया करी ॥ फल अनेकांत लोचन न देखे ॥
फल अनेकांत किरिया करी बापडा ॥ रूवडे चारगतिमांहि लेखे ॥ धा०॥२॥

अर्थ ॥ कोइ गणभेदी, समुदायना नायक कहे छे के विविध प्रकारे तपस्या प्रमुख किरिया के० आचरणा आचरीने परमेश्वरना चारित्रनी सेवना करीए, कारण के चारित्रनुं मूल क्रिया छे जेम ढुंढकादि करे छे तेम. ते प्रमाणेबोलनारा प्रवचन रहस्यना अजाण छे. कारण के नथी जेमां एकांत फल ते अनेकांत फल एवी अनेक क्रियाओनां अनेक फल छे. जेम क्रिया भिन्न भिन्न तेम तेनां फल पण भिन्न भिन्न उदय पण भिन्न भिन्न भोगपण भिन्न भिन्न. जेम शालिभद्रना भवमां देवसुख ते संगमाना भवमां दान देवानुं फल तेम. आ सर्व शुं लोचने नथी जोतां? आ प्रमाणे अनेकांत छे फल जेनां एवी अनेक क्रिया करीने परमार्थशुन्य ते निरर्थक छतां आंधीना रेंटनी जेम चारे गतिमां रडवडे के० परिभ्रमण करे ते लेखे के० न्याये अनेकांत फलवाली गतिनी समृद्धि थवाथी भवभ्रमण टले नहीं. तेथी आत्मानी सिद्धि पण केम थाय? ए प्रमाणे एकांत क्रियाज करवी ते तो आश्रव छे. ॥ २ ॥

गछना भेद बहु नयण निहालतां ॥ तत्त्वनी वात करतां न लाजे ॥
उदर भरणादि निज काज करता थकां॥मोह नडिया कलिकाल राजे ॥धार३॥

अर्थ ॥ गछ के० समुदायविशेष, जेम के खरतर, तपा, लोंका प्रमुख गछो; तेमना मतोना भेद ग्रहण करतां, प्रतिभेद पण ग्रहण थाय. तेवा मत मतांतरना बहु के० घणांभेद प्रतिभेद नयण निहालतां के० तात्विक दृष्टियें, हृदयरूप नेत्रें, विचारी जोतां एम लागेछे के शुं ते निर्लज्जोने आत्मतत्त्वनी वातो करतां शरम नहीं आवती होय? कारणके ममत्व अने तत्त्वनी वातने परस्पर विरोध छे. जेम वृक्षना को-

टरमां अग्नि होय तो वृक्ष नवपल्लव न थाय, तेम आत्मामां ममत्व होय तो आत्म तत्त्वरूप वृक्ष नवपल्लव न थाय.तेथी शुद्ध तत्त्वज्ञानी मत ममत्वीने तत्त्वनी वातो करतां देखीने हसे ठे. गछ नेदीउंने जे जे धर्म करणी करवा प्रमुख थाय ठे ते उदर नरवा निमित्तेज थाय ठे. तेमज आदि शब्दथी क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, उन्नति प्रमुखने अर्थेज थाय ठे. उत्तम पुरुष तो लाखमां कोइक हशे. वाकी वीजा तो वेशना धारण करनारा जाणवा. आ दुषम कलिकालमां मोहनुं प्रवल राज्य तेथी संसारीउं करतां पण गछधारीउं उपर तेनुं विशेष शासन चाले ठे. रहस्य ए ठे के, संसारी जीवोमांथी कोइए मोहने गलेथी, कोइए ठातीएथी अने कोइए केडथी पकडेल ठे अने गछधारीएतो मोहने सर्वांगे मस्तक सुधी पकडेल ठे. ॥ ३ ॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल ॥ सांनली आदरी कांइ राचो ॥ धार० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे मतवादी होय ते अपेक्षा सहित बोलनारो थायज नहीं. तेतो एकांतवादि, निरपेक्षी अर्थात् अपेक्षारहित वोलनारा थाय. तेवा अपेक्षा रहित वचनें, अत्यंत कठिन चारित्रमां प्रवर्त्तन होय तोपण ते व्यवहार जूठो के० आज्ञाथी विरुद्ध जाणवो. तेथी हे नव्यो, वांठायुक्त ते सापेक्ष कहेवाय. जेम निश्चय संवंधी वचन व्यवहारनी वांठा राखे ठे तेम, ज्ञान क्रियासहित उत्सर्ग अपवादयुक्त, सापेक्ष वचने जे व्यवहार के० चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते सिद्धांत अनुयायी व्यवहार ठे. ते चारित्र आज्ञाथी अविरुद्ध तेथी साचुं ठे. तेथी वांठा विनानुं अर्थात् अपेक्षा वगरनुं वचन ते निरपेक्ष वचन कहेवाय. तेवा वचनवाला एकांतवादीउंनुं चारित्र, संसारफल आपनारुं ठे. तेथी तेवा एकांतवादीउंना वचनस्वरूप अनिलाषीउंने सांनलवा योग्य नथी. कदाच सांनलवामां आवी जाय तो आदरवा नही अने कदाच आदरवामां आवी जाय तो तेमां राचवुं नहीं. निरपेक्ष वचन जैनमतथी विरुद्धज ठे. तेथी तेवां वचनो सांनली राग करवो नहीं. यथा ॥ नाषे निरपेक्षक वचन ॥ क्रिया देखावे क्रूर ॥ वाको तप संयम सरव ॥ कर्यो करायो धूर ॥ १ ॥ तेथी एकांत क्रियापक्षी, एकांत पूजापक्षी, एकांत नक्तिपक्षी, एकांत गुरुपक्षी, इत्यादि वचनना कथन करनाराउं चारगतिमां नटकनारा ठे ॥ ४ ॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे ॥ केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥
शुद्ध श्रद्धानविण सर्व किरिया करी ॥ ठारपण लींपणो तेह जाणो ॥ धार० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो भव्यो ! ते एकांतवादिर्जना वचनथी शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मनी परिक्षा केम थइ शके? अर्थात् नज थइ शके; अने शुद्ध देव गुरु धर्मनी परिक्षाने अभावे शुद्ध देव गुरु उपर श्रद्धा के० प्रतीत ते पण केम रहे. कारण के साची वस्तुनी उंलखाण विना साची प्रतीत पण न थाय, ए वात आणो के० अवधारो; अने शुद्ध श्रद्धा-प्रतीतविना सर्वे क्रियानुं प्रवर्त्तन, ते गार के० राख अथवा खातरनी पृथ्वी उपर गाण प्रमुखनुं लींपण करवा तुल्य निरर्थक छे ॥ ५ ॥

पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिस्यो ॥ धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो ॥
सूत्र अनुसार जे भविक किरियाकरे ॥तेहनो शुद्ध चारित्र परखो॥धार०॥६॥

अर्थ ॥ माटे निरपेक्ष उत्सूत्र भाषण छे, तेथी सूत्रथी विरुद्ध भाषण समान बीजुं पाप नथी. सिद्धांतमां उत्सूत्र भाषीने महापापी कहेलो छे; अने सूत्रमां जे प्रमाणे वचन होय तेज प्रमाणे भाषण करवुं, ते समान तप संयमादिमां पण धर्म नथी. तेथी सूत्रने अनुसारे जे भव्यजीव, तप संयमादि क्रिया करे ते चारित्रवंतनुं शुद्ध चारित्र परखो के० जाणजो, अर्थात् जेवुं भगवंत तीर्थंकरनुं चारित्र तेवुंज तेनुं चारित्र जाणजो ॥ ६ ॥

एह उपदेशनो सार संक्षेपथी ॥ जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
ते नरा दीव्य बहुकाल सुख अनुभवी ॥ नियत आनंदघनराज पावे ॥धा० ॥७॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त उपदेशनो सार अर्थात् सूत्र अनुयायी चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते संक्षेपथी कह्युं. तेने जे भव्यप्राणी निरंतर पोताना चित्तमां धारी राखे. सार ए छे के वर्त्तमानना गच्छधारीउं शुद्ध धर्मतत्वनुं स्वरूप पुछतां, हठग्राहीपणुं शिखवे छे, तेथी तेवा मतवादीउंनो उपदेश अंगीकार न करवो; अने जे भव्य प्राणीउं सूत्र अनुसारे प्रवर्त्तनारा छे ते दीव्य के० निरूपम देवता संबंधी वा मनोहर मनुष्य संबंधी घणां पल्योपम अने सागरोपम काल सुधी सातावेदनीना विपाकोदयने अनुभवी के० भोगवीने नियत के० निश्चयपणे, संदेह रहितपणे परमानंद, अतिंद्रिय आनंद समूहने पामे अर्थात् मोक्षस्थान पामे ॥ ७ ॥ इति अनंतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ राग गोमी सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

धरम जिनेसर गाउं रंगशुं ॥ भंग म पमशो हो प्रीति ॥ जिनेसर ॥
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं ॥ ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥धर्म०॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्ध चेतनावंत थइ, भावोल्लासें हर्षोत्कर्षवंत थइ, परंतु प्री-

तिना जंगनो जय लागवाथी, दीनवचने धर्मनाथ प्रजुनी स्तवना करे ले. हे प्रजु ! तमने निजस्वरूप प्राप्तिरूप रंग के० रागथी वचनद्वाराए स्तवुं बुं, परंतु दृष्टिरागथी स्तवतो नथी. हे शुद्ध चेतना ! ते स्तवनारूप कार्यारंज अविच्छिन्न धाराए पार पामजो. तेमां कांइपण विघ्न पडशो नहीं. धर्मनाथ प्रजुविना बीजा राग द्वेषयुक्त देवोने मारा मनरूप मंदिर के० मेहेलमां लावुं नहीं अर्थात् रागादि दोषयुक्त देवोनुं ध्यान कदापि करुं नहीं; कारण के आत्मधर्मे धर्मित एवा आत्मामात्रना कुलनी वट के० मर्यादा एज ले, एज धर्म ले. एज लक्षण के वीतराग विना बीजाने ध्यावे नहि. ॥ १ ॥

धरम धरम करतो जग सहु फरे ॥ धरम न जाणेहो मर्म ॥ जि० ॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पली ॥ कोइ न बांधेहो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! जगतना प्राणीमात्र धर्म धर्म करता फरे ले, कोइ शिवधर्म, कोइ विष्णुधर्म, कोइ संन्यस्तधर्म, कोइ गृहस्थाश्रमधर्म, कोइ तपधर्म, कोइ कुलधर्म, एम प्राणीमात्र निरर्थक ज्रमण करी रह्या ले. परंतु तेवा सर्व प्राणीर्ड धर्मशब्दनो जे मर्म के० रहस्य ते बिलकुल जाणता नथी. अर्थात् आत्मस्वजावरूप धर्म जेथी विजाव परिणतिनो त्याग करी स्वजाव परिणतिमां रमणता करवी तद्रुप धर्मनुं रूप रहस्य जाण्या विना तेर्ड धर्म धर्म पोकारे ले. परंतु हे शुद्ध चेतना ! धर्मनुं रहस्य तो धर्म परमेश्वरना चरणकमलमां व्यापेलुं ले, तेथी जे प्राणी बहिरात्मपणानो त्याग करी अंतरात्मवंत थइ धरम परमेश्वरना चरणकमलमां आत्मस्वरूप प्रवर्तीए मनने स्थापे ते प्राणी आश्रवद्वारने बंध करवाथी कोइपण कर्मनो बंध न करे ॥ २ ॥

प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे ॥ देखे परमनिधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण निहाले जगधणी ॥ महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे धर्मनाथ प्रजुनुं स्वरूप केवीरीते जाणी शकाय ते कहे ले. हे सुमति ! शुद्ध उपदेशक गुरु जो कृपा करीने, हृदयरूप चक्षुने विषे सिद्धांतरूप अंजन करे तो अनादिकालनो मिथ्यात्वरूपी हृदयनेत्रनो रोग दूर थाय. ते रोग दूर थवाथी आत्मस्वरूपरूप परमनिधान के० अनाशवंत धन जे अनादिथी गुप्त हतुं ते प्रत्यक्ष थाय. पली ते हृदयरूप नेत्रथी त्रण जगतना स्वामिने ते प्राणी निहाले के० देखे अने स्वस्वजावे पोताना स्वरूपने प्रगट जाणे. जे प्राणी पोताना स्वरूपने र्डलखे ते प्राणी हृदयचक्षुथी परमेश्वरना स्वरूपने र्डलखी शके; अने ते प्राणीनो महिमा के० प्रताप मेरुपर्वत समान सर्वोत्कृष्ट थाय, अर्थात् निरूपम थाय. ॥ ३ ॥

दोमत दोमत दोमत दोमीउं ॥ जेती मननीरे दोम ॥ जि० ॥ प्रेम
प्रतीत विचारो ढूकडी ॥ गुरुगम लेजोरे जोम ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्ध चेतना आनंदघनने कहेछे के प्रवचन कारण विना परमनिधान देखवानो बीजा मत ममत्वीउंए कहेलो सिद्धांत शुं कारण नथी? त्यारे आनंदघन कहेछे के हुं तो आत्मस्वरूप उंलखवा माटे दोमी दोमीने थाक्यो. मत मात्रने ढुंढि जोया. मात्र बाह्य दृष्टिए नही, परंतु तेउंना संकल्पित वेदांत न्यायादिक सिद्धांतोमां उतरवा सारु जेटली मारा मननी दोम हती अर्थात् विचार बल हतुं तेटले सुधी दोड्यो, परंतु स्वरूप प्राप्ति न थइ; अने विचार करतां प्रेम के० स्वरूप अभिलाषनो निश्चय तेनाथी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत ढुंकमी के० अत्यंत नजीक छे, दूर नथी अर्थात् आत्मामां ज छे; अने नजीक छतां पामता नथी, ते पामवानो उपाय गुरुगम के० गुरुए बतावेलो मार्ग अंगीकार करवो अर्थात् सूत्र मर्यादाथी गुरु जे मार्ग बतावे ते मार्गे निजस्वरूपनी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत नजीक छे ॥ ४ ॥

एक पखी केम प्रीति वरें पडे ॥ उभय मिल्या हुए संधी ॥ जि० ॥
हुं रागी हुं मोहें फंदिउं ॥ तुं निरागी निरबंध ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ धर्म जिनेश्वरनी साथे प्रीति केम थइ शके? हुं प्रीतिनो अभिलाषी, प्रभु प्रीतिना अभिलाषी नथी. कदाच एक पक्षी प्रीत थाय तो पण ते वरे पडे नही के० भजे नही. विरुद्ध स्वभावनी प्रीत टके नही. प्रभु शुद्ध आत्मस्वरूपी, हुं तेवा स्वरूपथी रहित, तेवा वच्चे प्रीति केम भजे? प्रीतिनो तो उभय के० बंने समान धर्मवाला होय तो संधि के० मेलाप थाय. माटे हे जिनेश्वर! हुं तमारी साथे मेलाप करवा इछुं छुं, परंतु मारा परिणाम संबंधमां अंतःकरणथी विचार करतां संधी माटे विष अमृत जेटलो तफावत छे. हुं रागी छुं, तमे वीतराग छो. हुं मोह फंदमां फसायेलो छुं अने तमे तो मोहना बंधनथी रहित छो. तेथी मारो अने तमारो प्रकृतिए मेलापज नथी, तो प्रीति केम थाय? यथा ॥ प्रकृति मिले तें मन मिले, अनमिलते न मिलात ॥ दूध दहीं तें जमत है, कांजी तें फट जात ॥ १ ॥ तेथी अगर जो हुं अने तमे सत्ताए तो एक छइए, परंतु दहींनी खटाश अने कांजीनी खटाश प्रकृतिमां भिन्न भिन्न छे, दहींथी डुध जमे, कांजीथी डुध फाटी जाय, तेम मारी सराग प्रकृति, तमारी निराग प्रकृति तेथी प्रीतिरूप डुध जमे नहीं. हुं तो प्रीतिने जमावुं, परंतु तमे वीतराग होवाथी प्रीति जमावो नहीं. ॥ ५ ॥

परमनिधान प्रगट मुख आगलें ॥ जगत उलंघीहो जाय ॥ जि० ॥
ज्योति विना जुर्ज जगदीशनी ॥ अंधोअंध पुलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना! जगतनी विपरीत रीति तेंतो जो! पूर्वें कथन कर्युं एवुं परनिधान प्रत्यक्ष अंतःकरणरूप हृदयकमलमांज छे, दूर नथी; छतां जगतना प्राणीमात्र ते उलंघी जाय छे. ज्यां ते प्राप्त थाय ते स्थानकने तो जोतांज नथी अने कष्ट क्रियादिक, ज्यां ते न पामी शकीए तेनी पाछलज मंडी रह्या छे. कारण के जगतना स्वामिनी ज्ञान प्रकाशक ज्योति अने आत्मानी स्वरूप प्राप्तिनी ज्योति ते बंनेमां अन्नेद-पणुं छे; परंतु जुर्ज, जेम ज्योतिस्वरूपने अन्नावे आंधलानी पाछल आंधला दोमे तेम, ज्ञानस्वरूप दृष्टिने अन्नावे, अज्ञानीनी पाछल अज्ञानी दोड्या जाय छे. वक्ता पण आंधला अने श्रोता पण आंधला एवो योग छे. ॥ ६ ॥

निरमल गुणमणि रोहण भूधरा ॥ मुनिजन मानसहंस ॥ जि० ॥
धन्य ते नगरी धन्य वेलाघमी ॥ मात पिता कुलवंश॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे जगदीश्वरनी ज्योतिविना जगतमां अंधकार व्यापि रह्यो छे, ते जगदीश्वर, महा निर्मल छे ज्ञानादि गुण जेना एवा अनंत गुणरूप रत्नोना रोहिताचल पर्वत समान छे. वली मुनिराजोना मानस के० अंतःकरणरूप मानसरोवरने विषे हंस समान छे; अर्थात् जे मुनिराजोना अंतःकरणमां वसी रह्या छे. एवा परमेश्वरे जे नगरीमां जन्म लीधो ते नगरीने धन्य छे, जे वेलाए जन्म लीधो ते वखतने पण धन्य छे, तेमना माता, पिता, कुल तथा वंश सर्वने धन्य छे ॥ ७ ॥

मन मधुकर वर कर जोमी कहे ॥ पदकज निकट निवास ॥ जि० ॥ घन
नामी आनंदघन सांजलो ॥ ए सेवक अरदास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेथी वर के० उत्तम एवो मारो मनरूप भ्रमर, परम उल्लासवंत थइ, हाथ जोमी विनंति करेछे के, हे प्रजु! मारा उपर कृपा करीने, तमारा चरणकमलनी निकट के० नजीकज मने निवास करवा द्यो. हे प्रजु! तमे अनेक नामोवालाछो, चिदानंदना समूह छो, माटे आधीन वृत्तिवाला आ सेवकनी अरज सांजलो॥७॥इति

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासुं पडिकमी ॥ ए देशी ॥

शांतिजिन एक मुज विनति ॥ सुणो त्रिज्जुवन रायरे ॥ शांति
सरूप केम जाणीए ॥ कहो मन केम परखायरे ॥ शांति० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन शांतिनाथ परमेश्वरनुं शांतस्वरूप स्वपक्ष, परपक्षथी निश्चय करवा प्रभुने विनतिरूप प्रश्न करे छे. हे त्रण भुवनना स्वामि! तमे मारी एक विनति कृपा करी सांभलो. तमे शांतरस पूर्ण छो तेथी तमारुं नाम शांति छे. ते शांतरसनुं स्वरूप यथातथ्य केवीरीते जाणी शकीए ते कृपा करी मने उपदेशो, जेथी मारा मनने शांतरसनी परीक्षा थाय. ॥ १ ॥

धन्य तु आतम जेहने ॥ एहवो प्रश्न अवकाशरे ॥ धीरज
मनधरी सांभलो ॥ कहुं शांति प्रतिभासरे ॥ शांति० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली आनंदघन पोताना मनमां हर्षवंत थइ कहेछे के हे आत्मा ! तने पण धन्य छे, तुं सर्व आत्मामां उत्कृष्ट थयो, कारणके तने शांतरसना स्वरूपनो प्रश्न करवानो अवकाश के०अवसर प्राप्त थयो; अने शांतिनाथ प्रभुने तें प्रश्न पुछ्यो. हवे शांतिनाथ प्रभुए प्रश्ननो जे उत्तर आप्यो ते आनंदघन भव्य जीवोने कहेछे, हे भव्य आत्माउ! तमे अंतःकरणमां धीरज धारण करी शांतरसनुं स्वरूप कहुंछुं ते एकाग्रताए सांभलो. जे प्रमाणे शांति जिनेश्वरें कह्युं, तेज प्रतिभास के० रहस्य हुं कहुंछुं, मारी स्वमत कल्पनाथी कहेतो नथी. ॥ २ ॥

भाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे ॥ कह्या जिनवर देवरे ॥ ते तेम
अवितथ सद्दहे ॥ प्रथम ए शांतिपद सेवरे ॥ शांति०॥३॥

अर्थ ॥ षड्द्रव्यना शुद्धाशुद्धभाव जे रीते जिनवर देवे कथन करेला छे, तेम, शुद्धभावने शुद्धपणे अने अशुद्धभावने अशुद्धपणे अवितथ के० भ्रांतिरहितपणे सद्दहे के० श्रद्धान करे ते शांतिरसनुं प्रथम पद के० स्थानक तुं समजजे अने ए प्रथमपदने तुं आदर, कारणके शुद्ध श्रद्धानविना शांतिपदनुं कथन संभवेज नहीं,तेथी प्रथम शुद्ध श्रद्धानरूप शांतरसनुं स्थानक हे आत्मा तुं सेव के० आदर ॥३॥

आगमधरगुरु समकीति ॥ किरिया संवर साररे ॥ संप्रदायी
अवंचक सदा ॥ शुची अनुभव आधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली सिद्धांतना धारण करनारा कोइ गुरु कहेछे, नवपूर्व सुधी अभव्य पण भणे तो आगमधर गुरुनी शी अधिक्यता? उत्तर के शुद्ध देव गुरु धर्मनी प्रतीतवाला, समकितवंत गुरुथी शांत स्वरूप पामीए. ते गुरु केवा होय? आश्रवनो निरोध करी सार के० उत्तम संवरनी क्रियामां प्रवर्ती रह्या होय. मुग्ध प्राणीउने ठगवानो संप्रदायी के० परंपरा, गुरुक्रमागतें लेशमात्र आचरण जेमनामां नथी, अर्थात् जेउ निर्मल सं-

प्रदायवाला छे. शुचि के० पवित्र आत्मस्वरूपना ज्ञानना अभिलाषी होवाथी, अनुभव स्वरूपमां प्रवर्त्तवाथी अनुभवना आधार छे,तेवा गुरुथी शांत रसनुं स्वरूप पामीए.

शुद्ध आलंबन आदरे ॥ तजी अवर जंजालरे ॥ तामसी
वृत्ति सवि परिहरी ॥ भजे सात्विकी सालरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली ते गुरु केवा होय ? आत्मस्वरूपना अनुभवथी प्रगट थयेल निर्मल ज्ञानथी सिद्ध स्वरूपनुं अवलंबन करनारा छे, अर्थात् स्वस्वरूपमां विद्यमान छतां सिद्धादिनुं ध्यान करनारा छे. बीजा आर्त्तरौद्र ध्यान अने मोह तथा रागादि विघ्नकारक जंजालोने दूर करी, शुद्ध आलंबनने आदरी रह्या छे. वली तामसी के० क्रोधादि दुर्गुणो जेथी उत्पन्न थाय तेवा आहार प्रमुख लावी आजीविका करवानो जेमणे त्याग कर्यो छे, वा हठग्राहीपणे प्राणायामादिकनो त्याग करी शालके० प्रधान सात्विक वृत्ति अंगीकार करी ज्ञानादि गुणथी उपजेली शत्रु मित्रउपर समानवृत्तिना धारण करनारा छे. ॥ ५ ॥

फल विसंवाद जेमां नहीं ॥ शब्द ते अर्थ संबंधीरे ॥ सकल
नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधीरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरु उत्सूत्रना भाषण करनारा, अर्थात् विसंवाद के० विरुद्धता जेमां होय नही तेवा वचनना बोलनारा होय, जे वचननुं फल पण विरुद्ध न होय. शब्दनो अर्थ पण संबंध युक्त कहेनारा होय. जेमना वचनमां नैगमादि साते नयनुं वाद के० कथन होय. एवा शांतरसना भरेला गुरु ते शिव साधनना हेतु के० मेलाप करावनारा छे.

विधि प्रतिषेध करी आतमा ॥ पदारथ अविरोधरे ॥ ग्रहण
विधि महाजने परिग्रह्यो ॥ इस्यो आगमे बोधरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरुना मेलापथी स्वरूप अभिलाषी प्राणी स्वकार्य साधे ते विधि कहेछे. जेथी आत्मस्वरूप सुखे ग्रहण थाय ते आचरवा योग्य आचरण ते विधि कहेवाय; अने जे आत्म स्वरूपने ग्रहण करवामां विघ्न करे एवा जडादि स्वरूपने न ग्रहण करवा ते प्रतिषेध कहेवाय. एवा विधि प्रतिषेधथी आत्मा मुक्तिरूप पदना अर्थ कार्यनो अविरोधपणे करनारो थाय. एवा ग्रहण करवा योग्य विधिने महाजन के० महा मुनिराजोए समस्तपणे ग्रहण करेलो छे. एम सिद्धांतमां कथन करेलुं छे, वा सिद्धांतनो एवो बोध छे एम तमे अवधारजो ॥ ७ ॥

दुष्टजनसंगति परिहरी ॥ भजे सुगुरु संतानरे ॥ जोग सामर्थ्य
चित्त भावजे ॥ धरे मुगति निदानरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली शांतरसना अभिलाषी पुरुष दुष्ट के० क्षुद्र अंतःकरणवाला, मत ममत्वधारी, हठग्राही मनुष्य जेमना वचनथी श्रद्धा भ्रष्ट थाय तेनी संगतनो त्याग करे अने ज्ञानादि उत्तम गुणना धारण करनारा सद्गुरु अने तेमना शिष्य परंपरानुं भजे के० सेवन करे. पछी जोगसामर्थ्य के० मनादि त्रणे योग, स्ववशीभूत छतां, चित्तने विषे भाव के० आत्मभावने अछेदी, अभेदीपणे जे प्राणी धारण करी राखे ते निदान के० निश्चयपणे मुक्ति प्राप्त करे, कारण के चित्तवृत्तिनो निरोध तेज कर्मक्षयनुं मूल कारण छे ॥ ८ ॥

मन अपमान चित्त समगणे ॥ समगणे कनक पाषाण रे ॥
वंदक निंदक समगणे ॥ इस्यो होय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एवा आत्मस्वभावमां प्रवर्त्तेला पुरुषोनां चित्त केवां होय ते कहेछे. तेमनो कोइ सत्कार,सन्मान करे तेथी ते हर्षवंत न थाय अने कोइ अपमान करे तो खेदवंत न थाय एवी तेमनी चित्तवृत्ति समान होय. वली लोभदशानी मंदता थवाथी तेमनीपासे कोइ सुवर्ण मुके वा कोइ माटी के पथ्थर मुके तोपण बंनेमांथी कोइने हिनाधिकपणे न माने. बंनेने तुल्यमाने. वली कोइ प्रशंसा करी तेमने वंदना करे तो तेमना उपर प्रसन्न न थाय वा कोइ तेमनी निंदा करे तो तेना उपर नाराज न थाय. हे भव्य! ते पुरुष एवा होय एमं तुं जाण के० अवधार ॥ ९ ॥

सर्व जगजंतुने समगणे ॥ गणे तृणमणि भावरे॥ मुक्ति
संसार बेहु समगणे ॥ मुणे भवजलनिधि नावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली त्रस थावर समस्त जगतना जंतु के० जीवो जेमके राजा रांक, शत्रु मित्र, स्वजन परजन, इत्यादि सर्वने तुल्य माने, तेमज तृण अने मणि के० चंद्रकांत्यादि मणि प्रमुखने पण तुल्य गणे; कोइने हिनाधिक न गणे. वली मुक्ति तथा चार गतिरूप संसारने पण समतुल्य माने. आ कथन अप्रमत्तादि सातमा गुणठाणे प्रवर्त्तकने माटे छे. त्यां मन स्वस्थ वृत्तियें छे. तेने हिनाधिक कांइ नथी. संसारथी उदासीन वृत्ति गइ अने मोक्ष पामवानी हर्ष वृत्ति पण गइ. मारा पदने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष. ते भव्य संसारसमुद्रमां शांतरसने नाव समान मुणे के० जाणे अथवा भवजलनिधिनो शांतरसरूप नावाए करी मुणे के० पार पामे ॥ १० ॥

आपणो आतम भावजे ॥ एक चेतना धाररे ॥ अवर सवि
साथ संयोगथी ॥ एह निज परिकर साररे ॥ शांति० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे भव्य! एवुं जाण के मारो आत्मा ज्ञानदर्शन स्वभाववंत छे. एक अद्वितीय स्वरूपमयी चेतनानो आधार के० आश्रय करी रह्यो छे. चेतनाने आधारे आत्मा आधेय छे. ए चेतनाविना अवर के० बीजा सर्व पुद्गल संबंध, शरीर पुण्य पापादि, संयोगजन्य छे. ज्ञानादि गुण समवाय संबंधे छे. रागद्वेषादि इछादि सर्व आरोपित धर्म छे. ते आत्मस्वभाव नथी. क्षांत्यादि धर्म तथा समित्यादिने पोतानो सार के० प्रधान परिवार जाण ॥ ११ ॥

प्रभु मुखथी एम सांभली ॥ कहे आतमरामरे ॥ ताहरे
दरिशणे निस्तर्यो ॥ मुज सिध्धा सवि कामरे ॥ शांति० ॥१२॥

अर्थ ॥ अहो भव्यो ! पूर्वे जे कह्युं ते परमेश्वरे पोताना मुखथी जे कथन करेलुं ते सिद्धांतमांथी में सांभल्युं. ते प्रभुनी वाणी सांभलतांज मारो आत्माराम अत्यंत उल्लास पाम्यो. ते कहेछे के अहो परमेश्वर! तमारा दर्शनथी अर्थात् जैनदर्शनथी हुं निस्तार पाम्यो अर्थात् शांतरसना स्वरूपनो पार पाम्यो. कारणे कार्योपचार ए न्याये शांतरसना स्वरूप जाणवारूप कारणथी मारां स्वस्वरूपादि सर्व कार्यनी सिद्धि थइ ॥१२॥

अहो अहो हुं मुजने कहुं ॥ नमो मुज नमो मुजरे ॥ अमित
फलदान दातारनी ॥ जेहनी भेट थइ तुजरे ॥ शांति० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन कहेछे के अहो भव्यो ! में परमेश्वरने शांतरसनो प्रश्न पुछ्यो, परमेश्वरे मने उत्तर आप्या, तेथी हुं हर्षवंत थइ मारा आत्माने कहुंछुं. अहो आत्मा! मने नमस्कार करो; मारा आत्माने नमस्कार होजो. कोइ प्रश्न करे के पोताना आत्माने पोतेज नमस्कार करे एम केम घटे ? उत्तर के आत्माने अमित के० प्रमाणरहित दानना आपनार श्रीशांतिनाथ परमात्मानी भेट के० प्राप्ति थइ. तेथी नमो मुज नमोमुज एम कह्युं, परंतु रहस्यार्थतो आनंदघने श्रीशांतिनाथ परमेश्वरने शांतरसनो प्रश्न करतां उत्तर मल्याना हर्षथी ए वचन छे. ॥ १३ ॥

शांतिसरूप संक्षेपथी ॥ कह्यो निज पर रूपरे ॥ आगम
मांहे विस्तर घणो ॥ कह्यो शांतिजिन भूपरे ॥ शांति० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन कहेछे के अहो भव्यो ! आ स्तवनमां शांतरसनुं स्वरूप निज स्वरूपथी के० पोताना स्वरूपने तथा बीजा भव्य जीवोना स्वरूपनी प्रातिनेमाटे य-

यातथ्य रीते संक्षेपथी कह्युं. जो तमे ते रसना विशेष रुचिवंत होतो शांतिनाथ जिनराजे स्वभाषित सिद्धांतनेविषे तेनुं विस्तारपणे स्वरूप कह्युंछे त्यांथी अवधारजो ॥१४॥

शांतिसरूप एम भावशे ॥ धरी शुद्ध प्रणिधानरे ॥ आनंद
घनपद पामशे ॥ ते लहेशे बहुमानरे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटे अहो भव्यो ! पूर्वोक्तरीते, रागद्वेष विषय कषायादि रहितपणे अने प्रणिधान के० मननी एकाग्रताए जे प्राणी शांतरसना स्वरूपने भावशे के० विचारशे, ते प्राणी आनंद के० परमानंदनो घन के० समूह ते रूप पद जे मुक्तिपद तेंने प्राप्त करशे, अर्थात् त्रण जगतना पूज्यपणारूप बहुमान पामशे ॥१५॥ इतिश्री शांतिनाथजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ रामकली ॥ अंबर देहो मुरारी हमारो ॥ ए देशी ॥

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे ॥ कुंथु०॥ जेम जेम जतन
करीने राखुं ॥ तेम तेम अलगुं भाजेहो ॥ कुंथु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे कुंथुनाथ परमेश्वर ! मारा मनने महाकष्टे तमारीसाथे जोडवा चाहुंछुं, परंतु भावस्तव संबंधी ध्यानादिकमां कोइपणरीते न बाजे के० जोडातुं नथी. अन्य स्थानके जोडाय छे पण तमारी साथे जोडातुं नथी. हे परमेश्वर! जेम जेम मारा मनने, प्रयत्न करी कबजे राखवा इछुंछुं, प्राणायामादिके, रेचक पुरक कुंभक इत्यादिके एकाग्र करवा ध्यानथी प्रयास करुंछुं तेम तेम हे प्रभु! ए मन तमारी साथे नहीं जोडातां अलगुं के० दूर थतुं जाय छे ॥ १ ॥

रजनी वासर वस्ति उजाड ॥ गयण पायालें जाय ॥ साप
खायने मुखडुं थोथुं ॥ एह उखाणो न्यायहो ॥ कुं० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ एम कहेके मननो एवो स्वभावज छे के कोइ स्थानके जाय नहीं तेथी परमेश्वरपासे पण जतुं नथी. तेवुं बोलनारने आनंदघन उत्तर आपेछे के, हे भाइ ! तेनो तो मने अनुभव छे. ए मन तो जेम रात्रे तेम दिवसे, जेम वस्तिमां तेम उजाडमां, जेम आकाशमां तेम पातालमां, एवी रीते ठाम ठाम फरी रह्युं छे. ए मननी गति अप्रतिहत छे, भ्रमणशील छे, एवी चंचल छे के तेनी उपमा आपी शकाय एवो कोइ जगतमां चंचल पदार्थ नथी. वली कोइ कहे के जे फरे ते चरे पण खरो, तेथी शब्द रूप रस गंध स्पर्शनो स्वाद तेने मलतो हशे? उत्तर-ना. तेम पण नथी. दृष्टांत के जेम कोइ पुरुषने सर्पे खाधो, एवुं कहेनारने कोइए पुछ्युं के सापना मुखमां कांइ

ग्रास आव्यो ? उत्तर आप्यो के, सापना मुखमां शुं आवे ? तेनुं मुखतो थोथुं के० खालीज छे. ए उखाणो के० दृष्टांत न्याय के० सत्य छे. शब्दादिनो स्वाद मात्रतो पांचेइंद्रियने मल्यो अने मनना मुखमां कांइ आव्युं नहीं ॥ २ ॥

मुगतितणा अभिलाषी तपीया ॥ ज्ञान ने ध्यान अभ्यासें ॥
वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते ॥ नांखे अलवे पासेंहो ॥ कुं० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए मन महादुष्ट निर्दय छे, केमके मात्र मोक्षनाज अभिलाषी तपस्याना करनारा ते मनने साधवा माटे अर्थात् आत्मस्वरूप जाणवामाटे ज्ञान अने ध्याननो अभ्यास करी रह्या छे, तदाकार वृत्तियें स्वरूपचिंतवनमां लीन थइ रह्या छे, एवा महामुनिउने पण ए महादुष्ट मन एवुं करेछे के, अर्थात् तेना संबंधमां एवो घाट विचारे छे के, तेउ अलवे के० निःप्रयासे, विशेष विचाररूप उद्यम कर्याविनाज कर्मरूप पास के० जालमां फसाइ पडे. दृष्टांत के प्रश्नचंद्र राजर्षिने सातमी नर्कना दलीयां एकठां करावी दीधां अने अल्प समयमां केवलज्ञान पण उपजावी दीधुं. माटे ज्यांसुधी मन स्थिर न थाय त्यांसुधी कष्ट क्रिया भवभ्रमणरूप छे ॥ ३ ॥

आगम आगम धरने हाथे ॥ नावे किणविधि आंकुं ॥ किहां
कणे जो हठ करी हटकुं ॥ तो व्यालतणी परें वांकुं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्यांसुधी आगमनी प्रवृत्ति जाणी न होय त्यांसुधी मन दुःसाध्य छे. उत्तर जे आगम जो मननी स्थिरतानुं कारण होय तो आगमना धरनारा जेना हाथमांज आगम छे अने जेउ मन दमन करवा संबंधी अधिकारज वांची रह्या छे, तेउनुं मन पण स्थिरताथी हे प्रभु ! तमारा चरणकमलोमां कोइ पण विधि के० रीते चोटतुं नथी. सर्व प्रयास निष्फल जाय छे. केमके ते मन आंकुं के० वांकुं छे. सरल नथी, वक्र छे. विना रोक्युं कदाच रही जाय, परंतु रोक्युं तो रहेज नहीं. एम जाणतां छतां पण किहां कणे के० कोइ स्थानके ए मनने हठ करीने हटकुं के० खीजवुं, तो जेम सर्पनुं गमन छेरू कर्याविना पण वांकुं छे तो छेरू कर्या पछी तो तेनी वक्रतानुं शुंज कहेवुं ? तेम ज्यांसुधी ए मनने हटकुं नहीं त्यांसुधी तो भलुं, परंतु जो खीजवुं तो सर्पनी जेम वक्र थइने हे प्रभु! तमारी साथे जोडाय नही ॥४॥

जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं ॥ शाहुकार पण नांही ॥ सर्वमांहि
ने सहुथी अलगुं ॥ ए अचरिज मनमांहि हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर ! जो हुं ए मनने ठगाइ करतां देखुं तो ठग कहुं, परंतु ठगाइनी करनारी तो इंद्रियो छे अने मन तो पांचे इंद्रियोनो प्रेरक छे. तेथी मनने

ठग केम कहुं? वली पांचे इंद्रियो तेना प्रवर्त्तन विना प्रवर्त्ती शकती नथी अर्थात् शब्द रूपादिकमां प्रवर्त्तवानुं मूलकारण मन छे, तेथी ए मन शाहुकार पण नथी, एटलेके नारद जेवुं महा ठग छे. केमके सर्व जे पांचे इंद्रियो तेमां ए नोइंद्रिय मली रह्युं छे, एकीभूत थइ रह्युं छे. तेना मेलापविना इंद्रियोथी ठगाइ थायज नही. वली इंद्रियो पोतपोताना विषय ग्रहण करे ते वखते पोतानो भाग वेहेंची लेतुं नथी, माटे सर्वेथी वेगलुं पण छे. तेथी हे परमेश्वर! मने आश्चर्य लागे छे के सर्वेथी भेलुं ते वेगलुं केम कहेवाय? अने सर्वेथी वेगलुं ते भेलुं केम कहेवाय? एम परस्पर विरोध छतां अविरोधपणे भेलां रह्यां छे. ॥ ५ ॥

जे जे कहुं ते कान न धारे ॥ आपमतें रहे कालुं ॥ सुरनर
पंडित जन समजावे ॥ समजे न मारुं सालुं हो ॥ कुं० ॥६ ॥

अर्थ ॥ वली तेने जे जे हितशिक्षानो उपदेश करुं ते ते तमाम मारां वचनो कानेज धरतुं नथी, अर्थात् पोतानी इच्छाए जे जे शुभाशुभ तरंग उपजे छे ते ते प्रमाणे वर्त्ते छे, तेथी ते कालुं के० महा मेलुं छे. आर्त्तरौद्र चिंतवनथी श्याम छे. तेवाने हुंतो शुं समजावी शकुं? महा शक्तिवंत देवताउं, सिंह अष्टापद जेवा पशु पक्षीउं पण जेनाथी भय पामे तेवा प्रबल शक्तिवंत मनुष्यो अने शास्त्रना जाणनारा कोविदो पण जेने समजावी शकता नथी. तेथी ए मारी कुमति स्त्रीनो भाइ, मारो सालो छे अने आत्मा शुद्ध उपयोगे प्रवर्त्ते त्यारे पण ए मारी सुमति स्त्रीनो भाइ होवाथी सालोज छे. ॥ ६ ॥

में जाण्युं ए लिंग नपुंसक ॥ सकल मरदने ठेले ॥ बीजीवातें
समरथ छे नर ॥ एहने कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहो प्रभु! शास्त्रद्वाराए में जाण्युं के ए मन नपुंसकलिंगे छे. परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणे विचारी जोतां ए मन समस्त मरदोने ठेले के० हठावी नांखे तेवुं छे. पुरुषत्वधर्म सहित छतां जो मन परवश होय तो पुरुष पण स्त्रीने संयोगे नपुंसक समान थइ जाय. तेथी ए मन सर्व मरदोमां अग्रगामी छे. जो के तप करवामां, कष्ट क्रिया साधवामां, सिंहनागादिने दमन करवामां, समुद्रादि जल तरणमां, आकाश गमनादि क्रियामां, भूतपिशाचादि वशीकरण क्रियामां पुरुष समर्थ छे, परंतु हे कुंथुप्रभु! ए मनने एक भवपरिणति परिपाकी मुनिराज विना बीजो कोइ पण जेले के० जीली शके नही, अर्थात् तेनी गतिने रोकी शके नही, तेने एकाग्र करी शके नहीं॥७॥

मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं ॥ एह वात नहीं खोटी ॥ एम
कहे साध्युं ते नवि मानुं ॥ एक ही वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! चंचलता मटाम्री, एकाग्रताए जे पुरुषे मनने साध्युं के० वशीजूत कर्युं, ते पुरुषे सर्व तपसंयमादि कार्य साध्यां. केमके ते साधननुं अंत ते मननुं साधवुं बे. जे प्राणीए मन वश कर्युं तेणे आत्मैश्वर्यनुं मूल सिद्ध कर्युं, ए वात के० कहेवुं खोटुं नथी, निःसंदेह साचुं बे. परंतु कोइ मारा जेवो मूर्ख, मायावी उतां पोताना मुखथी एम कहे के में मारा मनने साध्युं बे, तो तेनुं कहेवुं हुं मानुं नहीं, प्रमाण न करुं, कारण के में मन वश कर्युं एम कहेवुं ते वात वहु मोटी बे, ते जेवी तेवी वात नथी. ॥ ७ ॥

मनडुं डुराराध्य तें वश आण्युं ॥ ते आगमथी मति आणुं ॥
आनंदघन प्रजु माहरुं आणो ॥ तो साचुं करी जाणुंहो ॥ कुं० ॥ए॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! डुःखे साधवा योग्य मन, तमें वश कर्युं. ते मन वश करवानी वात सिद्धांतोथी मारी बुद्धिमां लावुं, अर्थात् सिद्धांतथी मनवश करवानी रीत समजाय, परंतु मने प्रत्यक्ष नथी. तो हे परमानंदना समुहरूप प्रजु ! मारुं मन जे तमारी साथे जोमातुं नथी ते तमारे विषे स्थिरताए; एकाग्रताए प्रवर्त्ते, तो हुं साचुं के० प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाण करुं. शब्दप्रमाणे तो ए वात प्रमाण ज बे, परंतु परमेश्वरे मन वश आण्युं ते प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाण त्यारेज करुं ॥ए॥ इतिश्रीकुंथुनाथजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीअरजिन स्तवन ॥

॥ राग परज ॥ मारु ॥ रीषजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

धरम परम अरनाथनो ॥ केम जाणुं जगवंत रे ॥ स्वपर
समय समजावीए ॥ महिमावंत महंत रे ॥ ध० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गाथानो अर्थ अन्वयथी कर्यो बे. अहो महंत के० महा शक्तिवंत, चोसठ इंद्रो, असंख्याता देवता, चक्रवर्ती, वासुदेव प्रमुख महर्द्धिवंतोए जय जय शब्दोथी जेनो महिमा वर्णव्यो बे एवा, समवसरणमां बिराजमान थयेला अरनाथ परमेश्वर तमारा केवलज्ञानथी प्ररूपायेला परमोत्कृष्ट धर्मने हुं केवीरीते जाणीशकुं ? हे जगवंत ! स्वसमय के० स्वरूपप्राप्ति समय अर्थात् सिद्धांतप्रमाणे वर्त्तता स्वरूप पामीए ते समजावीए के० मने समजावो. तेमज तेनाथी अन्य जे समयप्रमाणे प्रवर्त्तता स्वरूपसिद्धि न पामीए ते परसमय ते पण मने समजावो ॥ १ ॥

शुद्धातम अनुजव सदा ॥ स्वसमय एह विलासरे ॥ परबमी
गंहमी जेह पमे ॥ ते परसमय निवासरे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ परमेश्वर उत्तर आपे छे. हे आनंदघन! शुद्धनिर्मल स्वरूपवंत, निरुपाधिक आत्मतत्वनुं सदा के० निरंतर स्वरूप प्रत्यक्ष करवुं ते अनुभव कहेवाय. जेथकी शुद्धात्म स्वरूपनुं तात्कालिक ज्ञान थाय ते स्वसमय के० मारा स्याद्वाद सिद्धांतनो विलास के० बोध जाणवो अने ते शुद्धात्मस्वरूपना अनुभवथी भिन्न यावत् मात्र कथन ते मारो समय नही. पर के० बीजा जे कथनमां शुद्धात्म अनुभवीपणुं नथी एवा बधी के० वट एटले कथननो जेटलो विस्तार छे अथवा जे कथनमां शुद्धात्म अनुभव जेटलो विस्तारयुक्त कथन नथी पण छांहडी के० जे कथनमां आत्म अनुभवथी विरुद्ध कथननी छाया पडे छे, अर्थात् कोइ जैनमतानुसारे स्वरूपनुं कथन करी रह्युं छे, तेमां सर्वथा तो परसमय नथी पण छाया मात्र छे एटले कोइक नये आत्म अनुभवथी परकथन छे, तो आनंदघनना आशय प्रमाणे तो ते पण परमेश्वरे परसमय कहेल छे. निज समय नहीं. रहस्य ए छे के ते विरुद्ध समय के० सिद्धांतनो निवास के० स्थानक छे. शुद्धात्मस्वरूपना अनुभवथी लेशमात्र भिन्न ते परसमय छे ॥ २ ॥

तारानक्षत्र ग्रह चंद्रनी ॥ ज्योति दिनेश मझाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥
दर्शन ज्ञान चरण थकी ॥ शक्ति निजातम धाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली आनंदघन कहे छे के अहो स्वामि! शुद्धात्म अनुभवमां अने ज्ञान-दर्शन चारित्रमां कांइ भेद छे के तेउ अभेद छे? परमात्मा कहे छे के, जेम तारा, नक्षत्र, ग्रह अने चंद्रमानी ज्योति दिनेश के० सूर्यने विषे अंतर्भूत छे, तेम केवलज्ञान, केवलदर्शन अने क्षायकचारित्र ए त्रणेनी ज्योति ते शुद्धात्मशक्तिना अनुभवनी ज्योतिने विषे अंतर्भूत छे. ते सर्व पोताना आत्मानी अनंतवीर्यरूप जे शक्ति–सामर्थ्यता ते थकी धार के० अवधार. ॥ ३ ॥

भारी पीलो चीकणो ॥ कनक अनेक तरंगरे ॥ पर्याय
दृष्टी न दीजीए ॥ एकज कनक अभंगरे ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली दृष्टांत कहे छे. सुवर्ण धातुथी कोइ अजाण्यो पुछे के, सात धातुउमां सुवर्णने शी रीते उलखी शकीए, त्यारे कोइए उत्तर आप्यो के पारादि सर्वथी जे वजनमां भारे होय ते सुवर्ण समजवुं; कोइ बोल्यो के जेनामां पीलाश वधारे होय ते सुवर्ण; कोइ बोल्यो के जेनामां चिकाश वधारे होय ते सुवर्ण. एवी रीते सुवर्णना अनेक तरंग के० पर्याय छे. परंतु पर्यायो उपर दृष्टि आपवी नहीं, कारण के पर्यायांतर संबंधी जे भंग तेथी रहित एवुं अभंग सुवर्ण द्रव्य ते एकज छे ॥ ४ ॥

दरशन ज्ञान चरण थकी ॥ अलखसरूप अनेक रे ॥ निर-
विकल्प रस पीजियें ॥ शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ केवलदर्शनरूप पर्यायें एक अलखनुंज स्वरूप ठे अने केवलज्ञानरूप पर्यायें जोइए तोपण एक अलखनुंज स्वरूप ठे, वली क्षायकचारित्र पर्यायें जोतां पण एक अलखनुंज स्वरूप ठे. एम बीजापण अजर, अमर, अचल, अकल, अरुज इत्यादि अलख के० परमेश्वरनां अनेक स्वरूप ठे. परंतु पर्यायांतर संबंधी जेद कल्पनाए रहित, द्रव्यार्थिकपणे अजेदवृत्ति चिंतवनरूप, निरविकल्परूप, अमृतोपशम रसनुं पान करतां, शुद्ध निर्मल कर्मअंजन रहित जे परमेश्वर ते एकज ठे. जेम ऋषजादिथी महावीरपर्यंत सर्वे तीर्थंकर सत्ताए जिन्न परंतु रूपे अजिन्न तेम. ॥ ५ ॥

परमारथ पंथ जे कहे ॥ ते रंजे एक तंत रे ॥ व्यव-
हारें लख जे रहे ॥ तेहना जेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे परम के० उत्कृष्ट अर्थ के० कार्यनुं करनार एवो जे पंथ के० मार्ग बतावे ते एकांत निश्चयनयनाज रागी ठे, एटले तेउ लेशमात्र व्यवहार नयना अपेक्षी नथी, अथवा ए बंने पदोना अर्थनो अन्वय आ प्रमाणे करीएतो तीहण जास थाय. जे एकांत रागी ते परमार्थ पंथ कहे एटले उत्कृष्ट मार्ग कहे, पण बीजा तेम न कहे. आ कथन निश्चयनुं ठे. जे प्राणी व्यवहार नयनेज लख के० जाणीने रह्या ठे, एटले मात्र व्यवहारनेज मुख्य जाणी रह्या ठे, ते व्यवहार नयवादीउना जेद के० विकल्प अनंत के० घणा ठे ॥ ६ ॥

व्यवहारें लखे दोहिला ॥ कांइ आवे हाथ रे ॥ शुद्ध
नय थापना सेवतां ॥ नविरहे डुविधा साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे प्राणी व्यवहारना रसीया होय, ते स्थिविर गुणवाला प्रवृत्तकादिकोनी घणी सेवनादि कष्ट क्रियाथी, तप संयमादि व्यवहारने लखे के० शीखीने दोहिला के० महाकष्ट करतां प्रवर्त्ते ठे, परंतु तेवा व्यवहारने सेवतां जन्मारो वही जाय परंतु मात्र व्यवहारनी कडाकुट करणी करतां लेशमात्र स्वरूपप्रातिरूप वस्तु हाथ आवे नहीं, तेथी शुद्धनयने थापना के० प्रमाण करीने, अर्थात् आत्मा शुद्ध निर्मल कर्मोपाधियें रहित एम सेवियें के० विचारीए तो, आत्मा शुद्ध स्वरूप रहित ठे वा आत्मा आत्मस्वरूप पामशे एवी डुविधा के० बे प्रकारनी साथ के० कल्पना न रहे. अर्थात् आत्मा त्रणे कालें शुद्ध आत्मस्वरूपीज ठे, ए अरनाथनो धर्म ठे, ते धर्मने प्रसादे डुविधानी विचारणा न रहे ॥ ७ ॥

एक पखी लखी प्रीतनी ॥ तुम साथे जगनाथरे ॥ कृपा
करीने राखजो ॥ चरणतलें ग्रही हाथ ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे जो शुद्धात्मस्वरूपी हुं बुं तो तमे शुद्ध आत्मस्वरूपी ज बो, परंतु हुं रागी तमे निरागी, माटे तमारे मारे असमान धर्मीपणुं बे, तेथी में तमारी साथे एक पक्षी प्रीत लखी के० जाणी; अर्थात् तमने तो मारी साथे प्रीति करवानी इच्छाज नथी तो पराणे प्रीत शी रीते थाय? तेथी हे जगतना नाथ! तमारी साथे प्रीति थायज नहीं. तमे त्रण जगतना पूज्य, हुं भिखारी. लोकोक्ति पण एम बे के वेर, विवाह अने प्रीति सरखा साथे करीए. मोटानी साथे प्रीति शी? मोटानी तो कृपाज जोइए. दयावंतपणानुं तमारुं बिरुद बे तेथी मारा उपर कृपा करीने तमारा चरण के० पगनी नीचे मारा हाथने राखजो. अहीं परमेश्वर तो मुक्ति पाम्या तेथी तेने चरणनो असंभव अने सेवकना हाथने ग्रहण करवानो पण असंभव, परंतु भक्तिनां वचनो बे, तेथी दुषण नथी. भक्त लोकोने उलंभा देवानो स्वभाव बे. ॥ ८ ॥

चक्री धरम तीरथतणो ॥ तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ
सेवे ते लहे ॥ आनंदघन निरधार रे ॥ ध० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर! तमारा समयधर्मनुं शुद्ध आत्मस्वरूपप्राप्तिरूप फल कह्युं अने तमारा धर्मसमय संबंधी तीर्थनुं आनंदघन प्राप्तिरूप फल आगल वर्णव्युं. ते धर्मतीर्थ के० चतुर्विध संघना तमे चक्रवर्ती बो तेथी तमारी आज्ञा चतुर्विध संघमां अखंडपणे वर्त्ते बे. वली तीरथफल के० चतुर्विध संघना तमे फल बो. तेमज तीरथ शब्द साथे तत शब्द जोडतां, तीर्थना तत्व बो—रहस्यबो तेमज तीर्थमां सार के० प्रधान तमे बो. वली तीर्थनुं चक्रवर्तीपणुं, तीर्थनुं फलपणुं, तीर्थनुं तत्वपणुं अने तीर्थनुं सारपणुं एवुं जे तमारुं तीर्थ, जेने तमारा जेवा नमो तीथ्थस्स एवी वाणीए नमस्कार करे बे, एवा चतुर्विध संघरूप तीर्थने जे प्राणी सेवे ते प्राणी निरधार के० निश्चयपूर्वक आनंदघननो समूह पामे॥ए॥ इति श्रीअरजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ सेवक केम अवगणीए हो ॥ ए देशी ॥

सेवक केम अवगणीए हो ॥ मल्लिजिन ॥ एह अब शोभा सारी ॥
अवर जेहने आदर अतिदीए ॥ तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे मल्लिनाथ परमेश्वर! अब के०हवे कर्मक्षय करवाथी पाम्या जे केवल

ज्ञान, केवलदर्शन तेनी शोन्ना सारी के० प्रधान पामीने पोतानी साची सेवाना करनार चाकर तेनी आवे टाणे केम अवज्ञा करो ठो अर्थात् मारी अवज्ञा करवी योग्य नथी. अवर के० बीजा मारा जेवा संसारी जीव रागादि परिणतियें ग्रस्त जेने आशा दासी अत्यंत आदर सत्कार करे ठे ते आशा दासोने हे प्रन्नु! तमे मूल के० जडथी निवारण करी अर्थात् निर्लोन्नता खीलीए उखेरी नांखी. दिक्षा लेतांज आशानो त्याग कर्यो अने ज्यारे बारमे गुणठाणे चड्या त्यारे मुक्तिरूप आशाने पण तजी दीधी.

ज्ञानसुरूप अनादि तमारुं ॥ ते लीधुं तमे ताणी ॥ जुर्ज

अज्ञान दशा रीसावी ॥ जातां काण न आणीहो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रन्नु! तमारुं ज्ञानस्वरूप अनादि कालथी, मोहथी प्रगटी जे अज्ञान दशा तेथी आठादित हतुं, ते तमे ताणी लीधुं अने हे सुमति! तमे जुर्ज के० देखो. अनादि कालनी क्षीर नीर जेवी संबंधवाली अज्ञानदशा नामनी स्त्री ते मल्लिनाथ परमेश्वरने, आत्मस्वरूप अनुन्नवीने, असोहामणी लागी तेथी अप्रीतकारिणी जाणीने तेने आत्मरूप घरथी जातां जाणी पण काण न आणी एटले तेनी साथे अनादि घरवास हतो ते घर ठंडीने जेम ऊंठ सींघ गया तेम जाय ठे तो नले जार्ज एम कर्युं, पण तेनी साथे नाषण करवुं एटली पण काण के० मर्याद न आणी ॥२॥

निद्रा सुपन जागर उजागरता ॥ तुरिय अवस्था आवी ॥

निद्रा सुपनदशा रीसाणी ॥ जाणी न नाथ मनावीहो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! नव्य अनव्य संसारीजीवोने निद्रा तथा सुपन, बे अवस्था ठे अने नव्यने नव्यत्वनो परिपाक काल तेरमे गुणठाणे थाय त्यारे ए बे अवस्थानो नाश थाय अने ते जाग्रत अवस्था पामे तथा चउदमा गुणठाणाना अंतथी सिद्धनेविषे उजागर अवस्था होय. ए चार अवस्थामां हे प्रन्नु तमारे तुरिय के० चोथी उजागर अवस्था प्राप्त थइ, ते जोइने निद्रागर्न्नित सुपनअवस्थाए जाण्युं के अमने प्रन्नुए डुर्वचन कह्याविनाज अमारी प्रतिपक्षीणीर्जने मनावी, तेथी अमारो तिरस्कार थयो एम जाणी तेउ रीसाणी. तेर्जने आत्मघरथी जाती देखीने, स्वरूपमां अंतरायकारक तेर्जने जाणीने हे नाथ! तमे तेर्जने मनावी नही ॥ ३ ॥

समकित साथे सगाइ कीधी ॥ सपरिवारसुं गाढी ॥ मिथ्या

मति अपराधण जाणी ॥ घरथी बाहिर काढिहो ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर तमे मिथ्यात्वथी पराङ्मुख थइने उपशम विवेक संवरादि परिवार सहित समकित साथे सगाइ गाढी के० दृढपणें कीधी. तेम थवाथी आत्म-

स्वरूपथी विरुद्ध प्रवर्त्तनारी मोहरायनी पुत्री जे मिथ्यामति तेने आत्मस्वरूप प्राप्तिमां जंग पमावनारी अपराधी जाणीने तमारा आत्मघरथी बहार काढी मुकी अने तेणीने फरी घरमां प्रवेश न करवा दीधो ॥ ४ ॥

हास्य अरति रति शोक डुगंछ ॥ जय पामर करसाली ॥
नोकषाय श्रेणीगज चढतां ॥ श्वानतणी गति जालीहो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! नोकषाय जे हास्य, अरति, रति, शोक, डुगंछा अने जय ए छ नोकषाय मोहनी क्रोधादि कषायनी अपेक्षाए पामर के० रांक, परंतु संसाररूप खेतीनी वृद्धि करनारी, तेथी करसा के० खेती खेडानी आली के० पंक्ति जे क्रोधादि कषाय तेनी सदृश माटे नोकषाय, तेउने ज्यारे तमे क्षपकश्रेणिरूप गज के० हाथी उपर स्वारी करी त्यारे श्वान के० कुतरानी रीत ग्रहण करनारीने गणी नही. जेम राजमार्गे हाथी चालतां हाथी उपर चडेलाने कुतरा पहोंची शके नही, परंतु हाऊ हाऊ करे तेम परमात्मा श्रेणिरूप गजे आरूढ थया, त्यारे हास्यादि छए कुतरानी जेम हाउ हाउ करता रह्या. ॥ ५ ॥

रागद्वेष अविरतिनी परिणति ॥ ए चरण मोहना योधा ॥ वीत
राग परिणति परिणमता ॥ उठी नाठ्या बोधाहो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली जवरूप बीजना अंकुरना उत्पादक राग तथा द्वेष तेमज अविरतिनी परिणति, ए त्रणेनुं परिणमन; तेउ त्रणे चारित्रमोहनीयना योधा के० सुभट छे. चारित्रमां प्रवर्त्तनारा मुनियोने चारित्रथी पाडनारा छे. परंतु हे परमेश्वर! तमे ज्यारे वीतराग परिणतिने विषे तदाकार प्रवृत्तिए प्रवर्त्या त्यारे तेउए विचार्युं के अमारी विरोधी वीतरागता घरमां आवी तेथी हवे अमे रही शकीये नही, एम विचारी बोधा के० एवुं जाणनारा ते पोतानी मेलेज उठीने नाशी गया. एं प्रमाणे हे प्रभु! तमारुं कार्य सेहेजे सिद्ध थयुं. ॥ ६ ॥

वेदोदय कामा परिणामा ॥ काम्यकर सहु त्यागी ॥ निःकामी
करुणारस सागर ॥ अनंत चतुष्कपद पागीहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! वेदना उदयथी कामना परिणाम के० अभिलाष एटले पुरुषने स्त्री, स्त्रीने पुरुष, एवो अभिलाष वेदोदयथी थाय. ते वेदना उदयथी कामनो अभिलाष तो दुर रह्यो, परंतु तमे तो काम्यकर के० वांछारूप कर्ममात्रना त्यागी थया, तो वेदनो सर्वथा अभाव थाय तेमां शुं नवाइ! हे प्रभु! तमे निरभिलाषीपणाथीज करुणारूप रसना समुद्र छो. निष्कामी विना दयाना परिणामनो अभावज होय.

तेथी तमे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य ए अनत चतुष्पद जे निर्वाणपद तेना पागी के० पदना रंगाणा अर्थात् मोक्षपदमां लीन छो ॥ ७ ॥

दान विघनवारी सहु जनने ॥ अनयदान पद दाता ॥ लान
विघन जगविघन निवारक ॥ परम लान रस माताहो ॥ म० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रनु! तमे दान संबंधी विघन एटले दानांतरायनो नाश करीने नव्यराशि जीवमात्रने अनयपद जे मुक्तिपद तेरूप दानना दातार थया. वली लानांतराय कर्मनो नाश करीने तेमज जगतवासी सर्व जीवोना लानांतरायना दूर करनार थश्ने पोते परम के० उत्कृष्ट आत्मरीद्धि संबंधीरस ते अव्ययपद प्राप्त थवाथी उत्पन्न थयो जे अतिंद्रियरस ते रसमां माता के० मग्न थया ॥ ८ ॥

वीर्य विघन पंमित वीर्ये हणी ॥ पूरण पदवी योगी ॥ नोगो
पनोग दोय विघन निवारी ॥ पूरण नोग सुनोगीहो ॥ म० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली परम आत्मस्वनाव पामवाथी उत्पन्न थयुं जे परम आत्मवीर्य तद्रूप पंमित वीर्यें के० पराक्रमथी वीर्यांतरायनो नाश कर्यो तेथी संपूर्ण पदवी जे तीर्थंकर पदवी, ते पाम्या अर्थात् आत्मवीर्ये फोरवता आत्मपदवीने विघ्न करनार मोहनो तमें नाश कर्यो. ए योग्य छे. अहीं पदमां योगने वदले योगी शब्द सूत्रकारे गुंथ्यो छे. ते प्रास मेलववा माटे लागे छे. योगी शब्दनो अर्थ करीए तो ते पदवीथी संयोग थयो एम थाय अने आत्माने स्वरूपपदवीनो समवायसंबंध संनवे पण संयोगसंबंध न संनवे तेथी योग शब्दनो अर्थ ए पदवीने योग्य छे एम कर्यो छे. कर्त्तानो आशय कर्त्ता जाणे. वली तमे नोगांतराय, उपनोगांतराय, बंने अंतरायने आत्मवीर्यथी निवारीने सिद्धात्मसंबंधी आठ गुणरूप नोगना सुनोगी के० उत्तम नोगवनारा थयाछो अर्थात् सुनोगने अंतराय करनारा नोगोपनोगांतराय बंनेनो नाश कर्यो ॥ ९ ॥

ए अढार दूषण वरजित तनु ॥ मुनिजन वृंदे गाया ॥ अवि
रतिरूपक दोष निरूपण ॥ निरदूषण मन नायाहो ॥ म० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! पूर्वोक्त अढारे दोष रहित तमारुं तनु के० शरीर असंख्यात प्रदेशरूप आत्मपिंरुधारक छे. तेथी तमे मुनिराजोना वृंद के० समूहने स्तववा योग्य थया छो अने तेमणे तमने स्तव्या. परंतु हे सुमति! अविरति दोषथी नथी निवर्तवुं जेने तेनुं कथन तो दोष निरूपण छे अर्थात् अढारे दोषमां प्रवर्त्तवुं ते दोष तो सर्वजीवमात्रमां कहेवाय परंतु प्रनु तो अविरति प्रमुख दूषणोथी रहित थया तेथी निरदूषण एवा ते मारा मनमां नाया के० सुहाया-गम्या छे ॥ १० ॥

इणविध परखी मन विसरामी ॥ जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनबंधु
नी मेहेर नजरथी ॥ आनंदघन पद पावेहो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे सुमति! जे स्वरूपज्ञाता प्राणी होय ते पूर्वोक्त अढार दोष वर्जवानी विधि के० रीत कही, ते रीते मन वीसरामी के० मनने स्थिरताभावे प्रवर्त्तावी अढार दूषण रहित तेज अरिहंत देवाधिदेव एवी परीक्षा करीने सामान्य केवलीउमां प्रधान एवा मल्लिपरमेश्वरना गुणग्राम–स्तवना करे अथवा मनने विशरामना धाम एवा मल्लिजिनना गुण वर्णवीने स्तवना करे. ते प्राणी मोहमल्ले हणायेला,निजस्वरूपे रहित, संसारमां जन्मजरादिथी खिन्न थयेला दीन होवाथी तेमना बंधु के० भ्रातासमान निःस्वाथ सहायना करनार मल्लिपरमेश्वरनी मेहेर के० कृपानजररूप शितळ दृष्टिथी, अतिंद्रियानंदनो समूह एवुं जे मुक्तिपद ते निःसंदेहपणे पामे ॥११॥

॥ अथ मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिनराय एक मुज विनति निसुणो ॥ आतमतत्व
क्युं जाण्युं जगतगुरु ॥ एहविचार मुज कहियो ॥ आतमतत्व
जाण्याविण निरमल ॥ चित्तसमाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो मुनिसुव्रत जिनराज! आनंदघननी आत्मतत्व संबंधी एक विनति अतिशयपणे श्रवण करो. हे त्रण जगतना स्वामि! आत्माथी विसर्जन थयेलुं एवुं आत्मधर्मरूप तत्व तमे केवी रीते जाण्युं? तेनो विचार अनुक्रम विधिए मने कृपाकरीने कहो. केमके आत्मतत्व जाण्याविना अर्थात् पुद्गलादि जडथी आत्माने भिन्न अवधारण कर्याविना, काम, क्रोध, लोभ मोहादिना जोरथी मननी समाधि के० स्थिरता न पामी शकीए. परंतु अकामी, अक्रोधी, अमानी, अलोभी इत्यादि वृत्तिथी निरमल थइ चित्तवृत्ति निरोधकरी तदाकारे स्वस्वरूपने विषेज प्रवर्त्तन, ते न पाम्यो. माटे आत्मतत्त्व जे रीते जाणुं ते उपदेश करो ॥ १ ॥

कोइ अबंध आतम तत माने ॥ किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया
तणुं फल कहो कोण भोगवे ॥ एम पुछयुं चितरीसें ॥ मुनि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ प्रश्न करे के, सर्व मतोमां आत्मतत्वनुं वर्णन छे, तेथी परमेश्वरने पुछवानुं शुं कारण छे? उत्तर के मुनिसुव्रत प्रभुविना, बीजाउने जो आत्मतत्वनो निर्णय होय तो कोइ के० सांख्यादि मतवाला अबंधपणे आत्मतत्व माने छे. तेउ माने छे के

"विगुणो न बध्यते न मुच्यते" गुणविनानो आत्मा त्रणे काल कर्मथी बंधातो नथी, मुकातो नथी. निश्चयनयनो मत तो एमज छे, परंतु व्यवहार नयनी अपेक्षाथी तेउ रहित छे. वली वेदांति आत्माने अबंध माने छे अने काम क्रोधादि उपयोगे प्रवर्त्तता तेमने पुछीए के तमे कर्मथी बंधाउ छो के केम? त्यारे तेउ उत्तर आपे छे के, जे कर्मथी बंधाय एम माने ते कर्मथी बंधाय, परंतु आत्मा तो स्वभावेज निर्मल छे तेथी आत्मा बंधातो ज नथी. एप्रमाणे बोलनारा वेदांति प्रमुखने पाछा क्रिया करतां तो देखीए छीए. माटे हे शुद्ध चेतना! में तेउने क्रियामां प्रवर्त्तता देखीने चित्त रींसे के० मनमां रींस आववाथी पुछयुं के तमे आत्माने तो अबंध मानो छो एटले शुभाशुभ करणीए आत्मा शुभाशुभ कर्मनो बंध करतो नथी, परंतु आत्मा आत्मस्वभावे निर्मल अबंधक छे, एम मानो छो, तो महाकष्टकरी,शुभकरणी करी ते क्रियानुं फल आत्मा भोक्तापणे भोगवे एम मानशो तो तमारो पक्ष छेदाशे,अने क्रियानुं फल आत्मा न भोगवे एम मानशो तो क्रिया करो छो तेनुं फल कोण भोगवशे? अने जो क्रियानुं फल आत्मा न भोगवे तो क्रिया निरर्थक थइ, असिद्ध थइ, तेथी व्यवहारनयने अंगीकार कर्या छतां तेने छेदो छो. तो हे शुद्ध चेतना! एवा मतवालाउने पुछवाथी हुं आत्मतत्वने केम पामुं? तेथीज परमेश्वरने पुछयुं ॥ २ ॥

जड चेतन ए आतम एकज ॥ थावर जंगम सरिखो ॥ डुख
सुखशंकर दूषण आवे ॥ चित्त विचारी जो परिखो ॥ मुनि०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली अद्वैतवादीना त्रण पक्ष छे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत. विशिष्टाद्वैतपक्षी विष्णुना उपासक छे. तेउ जड चेतन के० जडयुक्त चेतन एवो आत्मा एकज छे एम माने छे. सर्व शरीरधारीउमां परमात्मा अंशे व्यापी रह्यो छे, ते एक छे. सर्व गत छे, नित्य छे. एवो तेमनो मूल सिद्धांत छे. जीवात्मा कोइकाले परमात्मा नज थाय, त्रणेकाल जीवात्मा सेवक अने परमात्मा स्वामि एम तेउ माने छे. इत्यादि तेमनी मान्यतानो घणो विस्तार छे. वली द्वैताद्वैतपक्षी स्थावर जंगममां कथंचित् भेद माने छे. तेउ विशिष्टाद्वैतने पुछे छे के, पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने वनस्पतिने निर्मल पृथ्वीना अंतर्भावी मानोछो तो थावर जंगममां जड संबंधीत चेतना एक छे वा कथंचित् भेद छे. त्यारे तेउ कहे छे के थावर जंगम सरिखो के० थावर अने जंगम अभेद छे. तो हे शुद्ध चेतना! में तेउने पुछ्युं के तमारो मत जे तमे स्थाप्यो, तेनो चित्त विचारी परिखो के० चित्तमां विचार करी कांइ परिक्षा तो करो. तमारा मतमां तमाराज कहेवाथी डुःख सुख संबंधी शंकर दूषण प्रवेश करे छे. सुखडुःखने प-

रस्पर विरोध छे. सुख ते दुःख न थाय अने दुःख ते सुख न थाय. एवा सुख दुःखने एक समान अधिकरणरूप मानी सुखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन अने दुःखनो कर्त्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन; तेथी थावरनुं करेलुं सुखदुःख जंगममां प्रवेश थवुं जोइए अने जंगमनुं करेलुं सुख दुःख थावरमां प्रवेश थवुं जोइए. एम कहेवाथी शंकर दूषण थावर जंगम थाय ॥ ३ ॥

एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दरशण लीनो ॥ कृत
विनाश अकृतागम दूषण ॥ नवि देखे मतहीणो ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली कोइक अद्वैतवादी, तेरापंथी, समयसारीया, वाशिष्ठसार ग्रंथी एम कहेछे के आत्मा निश्चयथी चारे गतिमां ज्ञमतां छतां पोताना स्वरूपदर्शनमां लीनो के० व्यापक छे अर्थात् त्रणे काल आत्मा स्वरूपदर्शनथी रहित नथी. तेमने में पुछ्युं के जो आत्मा आत्मस्वरूपमांज लीन होय तो कृत विनाश के० साधेली उत्तम क्रियाना उत्तम फलनो विनाश तेरूप दूषण शुं तमे नथी देखता? अने अकृतागम के० आत्मा आत्मस्वरूपमां लीन होय तो दुष्कृतनो बंध नज थाय अने प्राणीउने दुष्कृतोना फल ज्ञोगवता तो देखीए छीए तेथी ते अकृतागमरूप दूषण तेने पण हे मतहीणा के० बुद्धिहीन तमे देखता नथी. तमाराज शास्त्रमां कह्युं छे के "कृतंविना न ज्ञोक्तव्यं" तेथी कर्याविना ज्ञोगवाय केम? ॥ ४ ॥

सुगतमति रागी कहे वादी ॥ क्षणिक ए आतमजाणो ॥
बंधमोक्ष सुखदुःख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना! बौधमतना रागी, वादी के० पक्षवाला एम कहे छे के, यावत् मात्र आत्मा, क्षणेक्षणे ज्ञिन्नज्ञिन्न छे एम जाणो के० अवधारो. अर्थात् जगतमां आत्मा मात्र तथा पदार्थ मात्र क्षणिक छे, जे प्रथम क्षणे छे ते बीजी क्षणे नथी एवो तेमनो सिद्धांत छे. ते बौधमतवादीने में कह्युं के आत्माने जो क्षणेक्षणे ज्ञिन्नज्ञिन्न ठरावशो तो बंध के० शुज्ञाशुज्ञ कर्म बंध तथा मोक्ष के० कृतकर्मनो नाश, तेमज सुकृत्योनुं फल सुख अने दुष्कृत्योनुं फल दुःख, आ चारे प्रकारो क्षणिक आत्माने न घटे के० संज्ञवता नथी; कारण के जे क्षणे आत्मा बंध करे ते बंधना कर्त्ताथी बीजी क्षणनो आत्मा जे ज्ञोक्ता छे ते ज्ञिन्न छे, तो कर्त्ता आत्मा ज्ञिन्न अने ज्ञोक्ता आत्मा ज्ञिन्न एम थाय छे. तो तेवीरीते थवुं असंज्ञव छे, तेथी ते असंज्ञवनो विचार मनमां आणो के० लावो माटे हे शुद्ध चेतना! जे पोतेज आत्मतत्व

पाम्या नथी अने नूल्या फरे छे तेउने पुछतां हुं आत्मतत्व शीरीते जाणुं ? माटे परमेश्वरने विनति करुं छुं के मारी विनति तत्वनी उलखाण करावववानी अवधारो ॥ ५ ॥

नूत चतुष्क वरजित आतम तत ॥ सत्ता अलगी न घटें ॥
अंध शकट जो नजर न देखे ॥ तुं शुं कीजे शकटे ॥मुनि०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! वली नास्तिक मतवादी कहे छे के १ पृथ्वी २ अप ३ तेज ४ वायु आ चार नूत शिवाय आत्मतत्वनी सत्ता के० आत्मतत्वनुं अस्तित्वपणुं अलगी के० पृथक् न घटे के० संनवतुं नथी. अहीं आकाश तत्वने जूदुं लख्युं नथी, कारण के ज्यां ए चार नूत होय त्यां आकाश पण होयज. तेथी नास्तिकमतिए चारनुंज ग्रहण कर्युं. तेउ ए नूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिरा दृष्टांते माने छे. जेम मदिराना एक एक अंगमां केफनी शक्ति नथी, तमाम अंगना एकत्र थवाथी तेमां केफनी शक्ति आवे छे. तेवीजरीते चारे नूतने संयोगे चैतन्य शक्ति प्रगट थाय छे. हे नास्तिमति ! आ तमारो मत अयोग्य छे. जेम अंध के० जन्मांध प्राणी शकट के० गाडानी लंबाइ, पहोलाइ नजरे देखी शकतो नथी तेने गाडानी परोक्षवात करवाथी शुं समज पडे तेवीरीते ज्यारे गाडा जेवुं मोटुं दृष्टांत हृदयरूप नजरथी न देखाय तेवाने बीजुं दृष्टांत शाकामनुं ? जेमके कोइ प्राणी मरण पाम्यो, तेना शरीरमां चारे नूतोथी प्रथम आत्मसत्ता प्रगट थइ हती अने चारे नूतो विद्यमान छतां आत्मसत्ता अलग थाय तेम तो घटतुं नथी तो आत्मसत्ता चारे नूतोने तजीने केम चाली गइ. तेथी हे शुद्ध चेतना ! तेवाथी आत्मतत्व केम उलखाय ॥ ६ ॥

एम अनेकवादी मत विन्रम ॥ संकट पडीयो न लहे ॥ चित्त
समाध तेमाटे पुछुं ॥ तुमविण तत कोइ न कहे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे जैनविना बीजा एकांतपक्षी सर्व मतवादीना सिद्धांतोथी निन्न निन्न कथन सांनलतां आत्मतत्त्व संबंधी विन्रम के० विशेष शंका-न्रांति तद्रूप संकट के० महाकष्टरूप समुद्रमां डुब्यो छतो अर्थात् न्रांतिमां पड्यो छतो आत्मतत्वने पामे नहीं; परंतु हे शुद्ध चेतना! अनेक मतवादीउना कथनरूप विन्रममां हुं पड्यो नथी तेथीज मारा चित्तने समाधि छे. अर्थात् तेमना कहेवा मुजब मारुं मन प्रवर्त्ततुं नथी तेथीज परमेश्वरने पुछुं छुं के हे प्रनु! तमाराविना बीजा कोइ आत्मतत्वनुं स्वरूप कहेवाने समर्थ नथी तेथी तमेज कहो जेथी शुद्धात्मतत्व पामीए ॥७॥

वलतुं जगगुरु एणी परे नाखें ॥ पक्षपात सब छंमी ॥ राग
द्वेष मोह परववर्जित ॥ आतमशुं रढ मंडी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मारा प्रश्ननो त्रण जगतना स्वामिए आ प्रमाणे उत्तर आप्यो ते कहुं बुं जे प्राणी आत्मतत्व जाणवानी चाहना करे ते प्राणी एकांतपक्षी वाद सर्वथा मुकीने राग द्वेष मोह अने अज्ञाननो पक्ष वर्जे तो ते प्राणी अवश्य आत्मस्वरूप प्राप्तिथी रात्रदिवस, सुतां जागतां, उठतां बेसतां, खातां पीतां, कार्यादिकमां प्रवर्त्तता छतां तेनी अंतरवृत्ति अर्थात् मनःप्रवृत्ति आत्मस्वरूपमां प्रवर्त्ततां आत्मतत्व यथार्थ जाणे॥८॥

आतमध्यान करे जो कोउ ॥ सो फिर इणमें नावे ॥ वागजाल
बीजुं सहु जाणे ॥ एह तत्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ए रीते जे प्राणी ब्रह्मरंध्र मध्य आसन पुरीने आत्मामां लयलीन थइ तदाकारवृत्तिए शुद्धात्मस्वरूपनुं ध्यान करे ते प्राणी अनेक मतवादीउना विभ्रम ममत्वरूप जालमां फसे नही. ते प्राणी एक आत्मस्वरूप कथनविना अन्य जे जप तप पूजा नियमादि कथनमात्रने वागजाल के० वचननी जाल, आत्माने फसवानो फंद जाणे अने आत्मस्वरूपना तत्वनेज पोताना चित्तमां चावे के० चिंतव्याकरे॥ए॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहियें ॥ ते ततज्ञानी कहियें ॥
श्री मुनिसुव्रत कृपाकरो तो ॥ आनंदघन पद लहिए ॥ मुनि० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ माटे जे विवेक धरी के० विवेकवंत प्राणी होय ते आत्मध्यान संबंधीपक्ष ग्रहण करे अने तेनेज तत्वज्ञानी आत्मतत्वनो वेत्ता कहीए, माटे सिद्ध संपदाना धारण करनारा अहो मुनिसुव्रत प्रभु! कृपा करो के० आत्मतत्वनी उलखाण करावो तो अनादि कालथी जेथी दूर छइए एवा चिंतामणि सदृश परमानंदना समूहरूप पद जे मुक्तिपद ते पामीए ॥ १० ॥ इति मुनिसुव्रतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन ॥

॥ राग आशाउरी ॥ धनधन संपति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

षट दरशण जिन अंग भणीजे ॥ न्यासषडंग जो साधेरे ॥
नमिजिनवरना चरण उपासक ॥ षट दरशन आराधेरे ॥ षट० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! पूर्वेना स्तवनमां वर्णवेला छए दर्शन जिन के० जिनेश्वरना अंग छे, परमात्मा पोते छए अंगोना धारक छे अने बीजाउ एक एक अंगना धारक छे. जैननां वचन सप्तनयाश्रीत छे. बीजाउ एक एक नयना अपेक्षी छे, तेथी अन्यने अंग कह्या अने जैन उत्तमांग छे. कर्त्तानो आशय एवो छे के जे अंगोने छेदे ते जिनेश्वरना उत्थापक छे, कारण तेउ जिनेश्वरना अंग छे. अहीं कोइ प्रश्न करे के

"एगंते होइ मिछत्तं" एवो पाठ छे. उत्तर के ते सत्य छे, परंतु अन्य मतोमां जे जे स्थले जैन सदृश वस्तुप्ररुपणा करी होय ते ते स्थलने सर्वथा असत्य कहेवाय नहीं कारण के षट्दर्शन ते जिनेश्वरनां अंग छे एवो पाठ छे. तेउने जिनेश्वरना अंग कह्या परंतु दर्शन कहेल नथी. तेथी हे शुद्ध चेतना! आ स्तवनमां जेम षडंग के० छए अंगनुं न्यास के० स्थापन कर्युं छे तेवी रीते नमि परमेश्वरना चारित्रना आराधन करनारा, निरममत्वी, समपरिणामि थइ छए अंगोरूप षट्दर्शननुं आराधन करे. कर्त्तानो आशय एवो छे के अन्यदर्शनी सर्व एक एक नयाश्रीत छे, तेउने ते ते नयें सत्य कहे. परंतु ज्यांसुधी अन्यदर्शनी जैनदर्शननुं उत्थापन करे तेवा वचनो कहे नही त्यांसुधी जैनी पण तेउने दूषवता वचन कहे नही. ॥ १ ॥

जिनसुर पादप पाय वखाणुं ॥ सांख्य जोग दोय भेदेरे ॥ आतम
सत्ता विवरण करता ॥ लहो डुग अंग अखेदेंरे ॥ षट० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ छए मतोमां जे जे मत परमेश्वरना जे जे अंग छे ते कहे छे. एक सांख्य, बीजो योग के० नैयायिक. आ बे दर्शन, ते नमि परमात्माना सुरपादप के० कल्पवृक्ष समान उपमा छे जेने एवा पाय के० चरण वखाणुं के० व्याख्यान करुं छुं. अर्थात् तेउ परमेश्वरना बे पग छे. जेम शरीरनुं मंडाण पगोथी छे तेम जीवमात्रनुं मंडाण सत्ताथी छे. आ बंने दर्शनो पण आत्मसत्ताना विवेचन करनारां छे. सांख्यदर्शन कहे छे के आत्मामात्र पुष्करपत्रवत् निर्लेप छे, लेप तो प्रकृतिने छे इत्यादि बहु विस्तारयुक्त कथन छे, परंतु सर्व आत्मसत्तानुं विवेचन छे. नैयायिक पण आत्मा मात्रमां सत्ता तो एकज माने छे, परंतु एक जीवात्मा बीजो परमात्मा एम आत्मानी बे जाति माने छे. तेमां जीवात्माने मात्र कार्यनुं कारणभूत माने छे अने परमात्माने कर्त्ता माने छे. ए प्रमाणे हे शुद्ध चेतना! जेम सत्ता सर्वनुं मूल छे तेम पाद अंगोनुं मूल छे. ए प्रमाणे आ बे दर्शन ते परमेश्वरना डुग अंग के० बे चरण ते अखेद के० प्रसन्नचित्तें लहो के० जाणो. दर्शनोनुं विशेष स्वरूप षड्दर्शन समुच्चय प्रमुख ग्रंथोथी जाणवुं ॥ २ ॥

भेद अभेद सुगत मीमांसक ॥ जिनवर दोय करभारी रे ॥
लोकालोक अवलंबन भजियें ॥ गुरु गमथी अवधारी रे ॥ ष० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सुगत के० बौधदर्शन अने मीमांसक दर्शन. तेमां बौधदर्शन क्षणे क्षणे आत्मादि सर्व वस्तुने भेद के० भिन्न माने छे. मीमांसक आत्मा नित्य अकर्त्ता माने छे. त्रणे काल स्वरूपे अभेद माने छे. यथा ॥ एक एवही भूतात्मा, भूतेभूते व्यव-

स्थितः ॥ एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ वली, एकः सर्वगतो नित्यः पुनः वेदे, विगुणो न बध्यते न मुच्यते ॥ इत्यादि; माटे आ बे दर्शन ते परमेश्वरना दोय कर के० बे हाथ छे. भारी के० गंभीर आशयवाला छे माटे गुरुगम के० गुरुए बतावेल जे रेचक, पूरक, कुंभक संबंधी प्रवर्त्तन, तेथी प्रथम तो लोक के० ब्रह्मरंध्रथी नीचेनुं बाकीनुं शरीर जेने भूगोल संज्ञा छे ते लोक शब्द छे, तेनुं अवलंबन के० आत्माने आश्रयकरीने, आ बे दर्शनरूप परमेश्वरना बे हाथ तेने अवधारी के० निर्णय् करीने भजियें के० ध्याइए. तेमज अलोक के० शुन्य माटे खगोल संज्ञा ते ब्रह्मरंध्रने छे तेथी अलोक शब्दे ब्रह्मरंध्रने विषे आत्माने आश्रयकरीने आ बे दर्शनरूप बे हाथनो निर्णयकरी भजीए, ध्याइए.

आ बे दर्शनमां बौद्धदर्शन, जे विद्यमान ते क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न छे, एवो तेनो सिद्धांत छे. ते प्रमाणे आत्मा प्रमुखने व्यवहार नयथी पर्यायांतर कालथी अवधारीए तो क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न छे ते सत्य छे. मीमांसक वस्तुने अभेद माने छे. ते प्रमाणे निश्चय नयनी अपेक्षाए आत्मा प्रमुख सर्ववस्तु पोतपोताना लक्षणथी त्रणे काले अभेद छे ते सत्य छे. ए प्रमाणे आ बे दर्शन ते व्यवहार अने निश्चय नयना अपेक्षी छे. परमेश्वरनुं प्रवर्त्तन निश्चय अने व्यवहार बंनेथी छे तेथी बौद्धदर्शननुं व्यवहारथी प्रवर्त्तन छे तेथी ते वामकर छे अने मीमांसकनुं निश्चयथी प्रवर्त्तन छे तेथी ते दक्षिण कर छे. आ आशय समजवामां कठिन छे तेथी गंभीर कह्युं. एरीते परमेश्वरनां चार अंग वर्णव्यां.

लोकायतिक कूष जिनवरनी ॥ अंश विचारी जो कीजे रे ॥
तत्वविचार सुधारस धारा ॥ गुरुगमविण केम पीजे रे ॥ षट० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नमि परमेश्वरनुं कूष के० पेट ते लोकायतिक के० नास्तिकवादी चार्वाक दर्शन छे. जीव, पुण्य, पाप, गत्यागति कांइ नथी, एवो नास्तिकनो मत छे. सर्वांशे तो ते परमेश्वरनुं पेट नथी, पण अंशविचारी जो कीजे के० एक अंश विचारी जोइए तो परमेश्वरनुं ते पेट छे. नास्तिक जेम शुन्यवादी छे, तेम परमेश्वरनुं पेट पण शुन्य छे. परंतु तत्वविचारे जोइए छीए तो सर्व दर्शन वाणीथी वर्णव्या अने वाणी पेटथी उत्पन्न थइ माटे कूख ते पांचे अंगनो खजानो छे. ए कूखथी पांचे दर्शननी उत्पत्ति छे. माटे सुधारसधारा के० अमृतरूप रसनो प्रवाह छे तेथी ए सर्वांग धारानो मेलाप करीने पीले के० रस आस्वादन करीए. निर्ममत्वी गुरुना बतावेला मार्गविना सर्वांग दर्शनना मेलापरूप तत्वनो विचार तद्रूप सुधारसनी धारा शीरीते पान करी शकीए. ममत्वरूप दुर्जन पान करतां ढोली नांखे. एरीते पांच दर्शन वर्णव्या.

जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग ॥ अंतरंग वहिरंगेरे ॥ अक्षर
न्यास धराआधारक ॥ आराधे धरी संगेरे ॥ षट० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जैनदर्शन ते नमि परमेश्वरनुं वर के० प्रधान, सर्व अंगोमां शिरोमणि उत्तमांग, मस्तक छे, केमके अंतरंगे जोइए तो जैनदर्शनना अन्नावे स्वस्वरूप प्राप्ति न थाय, अने वाह्यांगे जोइए तो जैनदर्शन सर्वांशी छे. सर्व नयाश्रित छे तेथी ते उत्तमांग छे. परंतु जे प्राणी निर्ममत्वी थइ अक्षरन्यास के० एकेक अक्षरनुं स्थापन तेनी धरा के० नूमिका स्थानक अर्थात् आ पहेला अक्षरने रेहेवानुं स्थानक, आ बीजाने रेहेवानुं स्थानक एम एकेक अक्षरना आधारक के० आधारनूत एटले आश्रय करीने रह्या जे अर्थ ते अर्थने संगे धरी के० साथे करीने, सर्वांशी जैनदर्शननुं आराधेके० आराधन करे. अर्थात् एक अक्षर मात्रनो उछेद करवो ते तो दूर रह्युं परंतु अक्षर आगल पाछल पण न कहेवुं. एवीरीते जैनदर्शननुं आराधन करे. ए छ दर्शन परमेश्वरना अंग वर्णव्या ॥ ५ ॥

जिनवरमां सघला दरशन छे ॥ दर्शने जिनवर नजनारे ॥
सागरमां सघली तटनी सही ॥ तटनीमां सागर नजनारे ॥ षट० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ए रीते नमि परमेश्वरमां सर्व दर्शन छे. तेथी ए छए दर्शन परमेश्वरना अंग छे. एकेका अन्य दर्शनमां सर्वांगी सत्ता न पामीए अर्थात् एकांगी सत्ता पामीए तेथी ते अंशे जिनवर नजना कहीए. जेम समुद्रमां सर्व तटनी के० नदीउ सही के० निश्चयथी छे, परंतु नदीउमां समुद्रनी नजना छे, एटले समुद्रनी वेलनुं पाणी जे नदीमां आवे तेरीते ते नदीमां समुद्र एक देशे संनवे छे. ए रीते समुद्रोपमाए जिनवरना ए छए दर्शन अंग छे ॥ ६ ॥

जिनस्वरूप थइ जिन आराधे ॥ ते सही जिनवर होवे रे ॥ नृंगी
इलिकाने चटकावे ॥ ते नृंगी जग जोवे रे ॥ षट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए रीते सर्व दर्शनोना एकज नावरूप जिनेश्वरना स्वरूपरूप थइ तदाकारवृत्तिए परमेश्वरनुं आराधन करे—ध्यान करे ते प्राणी सही के० निश्चयथी जिनवर के० केवलज्ञानदर्शनी थाय. जेम भृंगी के० नमरी उष्णकालमां मदनी उन्मत्तताथी, चंचलता वधवाथी अने पोताना कांटामां पण विष वधवाथी, काली अथवा पीली नींनी माटीमां पोते लव मुकी, गोलीवाली, एकेक गोली लावी घर वांधी, तेमां पोते इलिका के० लट, तेने कांटाथी चटको दइ ते लटने घरमां मुकी, फरी एक गोलीए

ते घरनुं मोढुं ढांकी, सत्तरमे दीवसें, चटकाथी ते घरनुं मुख उघाडे. उघाडतांज जे लट हती ते ज्रमरी थइ उडी जाय. ते लटने ज्रमरी थयेली जगत देखे. ते दृष्टांते जिनस्वरूप थइ जिनने आराधतां पोते जिनवर थाय ते आ प्रमाणे. जिनेश्वरनां वचन प्रमाणे अंतरात्मवर्ती थइ लटरूप बाह्यात्माने चटको आपी निजस्वरूपमां परिणमन तद्रूप घरमां रही ध्यानथी प्रवर्त्ततां लटरूप बाह्यात्मा ते ज्रमरीरूप परमात्मा थाय. एम सर्व जगतने जासन थतां, सिद्धमां गमन ते उडवारूप थाय ॥ ७ ॥

चूरण जाष्य सूत्र निर्युक्ति ॥ वृत्ति परंपर अनुजव रे ॥ समय
पुरुषना अंग कह्या ए ॥ जे छेदे ते डुरजव रे ॥ षट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहो शुद्ध श्रद्धा ! परमेश्वरना उत्तमांगरूप जैनदर्शन तद्रूप समयपुरुषना छ अंग छे. १ पूर्वधरकृत त्रुटक पदनी व्याख्या ते चूर्णि २ सूत्रोक्त अर्थ ते जाष्य ३ गणधरादि कृत वचन मात्र रचना ते सूत्र ४ पूर्वधरकृत पदजंजना ते निर्युक्ति ५ सूत्रो उपर विस्तारयुक्त टीका ते वृत्ति ६ परंपर अनुजव के० गुरु संप्रदायथी अनुजव के० उतरती यथार्थ स्मृतिपूर्वक जिन्न तात्कालिक ज्ञान. आ प्रमाणे समय के० सिद्धांतरूप पुरुषना पूर्वोक्त चूर्णि प्रमुख छ अंग छे. तेने जे प्राणी, परजवनी बीक नहीं राखतां निर्जय थइ उछेदे, ममत्वरूप रसथी हिनाधिक जाषे ते प्राणी डुरजव के० डुष्ट जवगामी जाणवो ॥ ८ ॥

मुद्रा बीज धारणा अक्षर ॥ न्यास अरथ विनियोगे रे ॥
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे ॥ क्रिया अवंचक जोगे रे ॥ षट० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ मुद्रा बीज धारणा अक्षरन्यास ए वधा ध्याननां अंग छे. ए मुद्रा बीज धारणादिनो अर्थ के० तात्पर्यार्थ–रहस्य तेनुं विनियोगे के० विशेषपणे विधिनुं ज्ञान. आ ध्यानना अंगोना रहस्यनुं मने जासन नथी अने कर्त्ताए त्रीजा पदमां जे ध्यावे एवुं पद गुंथ्युं छे तेथी ते ध्याननुंज कथन छे, परंतु मने जासतुं नथी, कर्त्तानो आशय कर्त्ता जाणे. तेथी जे प्राणी उपशमयुक्त, निर्ममत्वी थइ पूर्वोक्त मुद्रा बीज धारणादिकें स्तवना विधि ध्यावे अर्थात् एकाग्रचित्तें, तदाकार वृत्तियें, तद्रूप तन्मयी तल्लेशी तदाजिलाषी थइ ध्यान करे, जेने विषय विषयी अजिन्न जासे ते प्राणीनुं आत्मस्वरूप रूप चिंतामणि रत्न रागादिथी वा डुष्ट ममत्वी ठगोथी नवंचिजे के० ठगाइमां जाय नहीं. ते प्राणी अवंचक क्रियानो जोगी थाय. शुद्ध सरल स्वजाविक करणीनो जोगी थाय. ते मायावी वचनोथी ठगाय नही. अहीं कोइक प्रतमां ध्यावेने

ठेकाणे साधे एवो शब्द छे तेनो अर्थ एवो छे के मुद्रा बीज धारणादिके जे समयपुरुषने साधे ते क्रिया अवंचकनो जोगी होय. आ पदनुं रहस्य कर्त्ता जाणे मने जास्युं नथी।।ए

श्रुत अनुसार विचारी बोलुं ॥ सुगुरु तथाविधि न मिले रे ॥
किरियाकरी नवि साधी शकीये॥ ए विषवाद चित्त सघले रे ॥ षट० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! आ कालमां जेवा प्रवर्त्तने मारो कालक्षेप थाय छे ते तने कहुं छुं. जैनदर्शनना श्रुत के० सिद्धांतनुं नैगमादि नयानुयायी कथन, वचन वर्गणाए कहेतां अपार छे माटे अनुसार के० ते पाठने समीप राखी अर्थ करतां विचारी विचारी बोलुं छुं. वली सिद्धांतमां जे प्रमाणे गुरुनुं लक्षण कर्युं छे, तेवा विशुद्ध श्रद्धावंत, ज्ञानी, आत्मार्थी, परोपकारी, निर्मायी, निर्ममत्वी, कथनी करणी समान, सप्तनयानुयायी, जिन प्रवचन विशुद्धजाषी तथाविध के० तेवा प्रकारना गुरुनी योगवाइ मने मलती नथी. तेथी सूत्रमर्यादाए विचारीने बोलुं तो पण शुं? कारण के ते मर्यादामां रहीने साधु संबंधी क्रिया करी उदयमां आवेला चारित्रने नविसाधी शकीए के० साधी शकतो नथी, कारण के श्रुतमर्यादाए पण चारित्र साधवुं अति कठिन छे. तेथी एक तो ए अने बीजुं तथाविध गुरुनो योग न मलवाथी क्रिया न करी शकुं. माटे जोके वेषधारी छुं, तोपण कोइ पुछे के तमे कोण छो ? त्यारे महाहीन वचने मुखथी कहुं छुं के हुं जैननो फंफो छुं. तेथी समस्त चित्तने विषे प्रदेशे प्रदेशे विषवाद के० उदासीनता लागी रही छे ॥ १० ॥

ते माटे उजा करजोमी ॥ जिनवर आगल कहीएरे ॥ समय
चरण सेवा शुध्द देजो ॥ जेम आनंदघन लहीएरे ॥ षट० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे शुद्ध चेतना ! तुं, हुं अने शुद्धश्रद्धा, आपणे त्रणे परमेश्वरनी आगल बे हाथ जोमी उजा थइ विनंति करीए के हे प्रजु! तमारा जाषित समय के० सिद्धांत अनुसार शुद्ध चारित्रनी सेवा के० प्रवर्त्तना अमने आपजो, जेम अमे पण आनंदना समूह पामीए. अथवा हे परमेश्वर! अमने चरमावर्तन, चरमकरण अने जवपरिणति परिपाक समये शुद्ध आगमोक्त चारित्रनी सेवा आपजो वा तमारा चरणकमलनी सेवा आपजो जेथी आनंदघन पद पामीए॥११॥ इति नमि जिनस्तवन.

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग मारुणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

अष्ट जवांतर वालहीरे ॥ तुं मुज आतमराम ॥ मनरावाला ॥

मुगति स्त्रीशुं आपणेरे ॥ सगपण कोइ न काम ॥ मन० ॥ १ ॥
घर आवोहो वालिम घर आवो ॥ मारी आशाना विसराम ॥ म० ॥
रथ फेरोहो साजन रथ फेरो ॥ साजन मारा मनोरथ साथ ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नेमनाथ प्रभु राजेमतिनुं पाणिग्रहण करवा तोरणे आव्या त्यारे मृगादि पशुने सभय देखी तेउने निर्भय करवा सारथिने कह्युं के रथ पाछो फेरवो. ते समयनां राजेमतिनां वचनो नेमनाथजी परत्वे छे. हे परमेश्वर! तमे आठ भवथी मारा वल्लभ छो, आठमांथी एकपण भवमां प्रीतिनी न्यूनता राखी नथी तेथी मारा आत्मानेविषे तमे रमी रह्या छो. अंतःकरणरुप कमलनी पांखडी दीठ रमी रह्या छो. तेथी हे स्वामि! आपने मुक्तिस्त्री साथे संबंध करवानुं कांइ पण काम के० जरुर नथी. मुक्ति स्त्रीतो रूप रहित छे, हुं राजकुमरी शोभनरुपा स्त्रीरत्न छुं. जो मारा उपर मुक्तिस्त्रीने लावशो तो ते स्त्री मारी शोक थशे अने स्त्रीने शोकना दुःख करतां मरणनुं दुःख मोटुं नथी, माटे तमारे मारी प्रीतिनो नाश करवो होय तो बीजी स्त्री लावो ॥ १ ॥ माटे अहो स्वामि! महारा वाला उग्रसेनना घरनेविषे पधारो. अहीं राजेमति अत्यंत रागथी रंजित थयेली पतिना फरवाथी विकल चित्त थतां शुन्य हृदय थइ भवाथी कहे छे. हे स्वामि! तमे मारी आशाना विसराम के० धाम छो. हे वालेसर! तमे विलंब न करो, कारणके मारी आशारूप वेल त्रुटशे तो फरी संधाशे नहीं, तेथी हे सज्जन! रथने पाछो फेरवो अने मारा मनना मनोरथ पूराकरो, केमके तमारा रथने अने मारा मनोरथने जेवो साथ छे तेवो साथ फरी मलशे नही ॥ २ ॥

नारीपखो श्यो नेहलोरे ॥ साच कहे जगनाथ ॥ मन० ॥
इश्वर अरधंगे धरीरे ॥ तुं मुज झाले न हाथ ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नारीविना स्नेह नही, जोके स्नेहनो वास अंतःकरणमां छे, परंतु नारी स्नेहलता छे, स्नेहरूप फलने उत्पन्न करनारी छे, तेथी नारी साक्षात् मूर्तिमान स्नेहज छे. जगतना जीवो नारीविना स्नेह मानताज नथी. जो नारीविना स्नेह गणातो होय तो महादेव जे सृष्टि संहारकर्त्ता कहेवाय छे ते पण पोताना अर्धांगमां पार्वतीने केम धारण करी राखे छे. तेणे तो न करवा योग्य कार्य कर्युं, तमारे तो तेम करवानुं नथी. सगाइ करीने पाणिग्रहण तो सर्व जगत करे छे, तेम तमारे पण करवानुं छे, माटे तमे मारो हाथ झालो. ॥ ३ ॥

पशुजननी करुणा करीरे ॥ आणी हृदय विचार ॥ मन० ॥
माणसनी करुणा नहीरे ॥ ए कोणघर आचार ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे पशुउनी करुणा संबंधी विचार अंतःकरणमां आण्यो के पशुउनी हिंसा थशे, तेथी धिःकार छे मारी परणवानी प्रीतिने, कारणके एवा अविवेकी पुण्यहीन प्राणीउनी दया चिंतवी रथ फेरव्यो अने हुं तेउथी असंख्यात गुण पुन्यप्रबल मनुष्यनी दया तमने न आवी. आवो विचार ते कोना घरनो आचार जोइ आव्यो. जगतमां हीनमां हीन अने अधिकमां अधिक जातिवाला घरोमां आवुं प्रवर्त्तन नथी ॥ ४ ॥

प्रेमकल्पतरू छेदीउरे ॥ धरीउं जोग धतूर ॥ मन० ॥
चतुराइरो कोण कहोरे ॥ गुरु मलीउं जगसूर ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कल्पवृक्ष आश्रव संबंधी मनोवांछक छे तेम हे स्वामि! प्रेमरूप कल्पवृक्ष पण आश्रव संबंधी वांछाउं पूरनार छे, अर्थात् स्त्रीना सुंदररूप, हावभाव, मंदहास्य, तीक्ष्ण कटाक्ष, मनोभावित षट्रस भोजन, अंतर पुष्पादिकनी सुरभि इत्यादि मनोवांछित प्रेमकल्पतरुने छेदीने हे स्वामि! तमे योगरूप धतूरो धारण कर्यो. कारणके क्षुधा पिपासा, शीत उष्ण, दंशमशक इत्यादि शरीरनी शाताने विषप्राय छे; अशाताना कारणरूप होवाथी धतुर प्राय छे. माटे हे स्वामि! आवी चतुराइनो शिखवनारो जगतमां सूर्य जेवो रत्नप्राय तमारे हाथ क्यांथी चडी आव्यो ॥ ५ ॥

मारुंतो एमां क्युंही नही रे ॥ आप विचारो राज ॥ मन० ॥
राजसभामें बेसतां रे ॥ किसडी वधशे लाज ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे राजन्! मने तजीने आप जाउ छो तेमां मारी बदनामोशी किंचित् मात्र नथी केमके, तमे पोतानी इच्छाए रथ पाछो फेरव्यो, तेथी में अकार्य कर्युं एम कोइ कहेशे नहीं. वली मारो त्याग करो छो तेथी चित्तमां विचारजो जे तमारा समान राजाउनी सभामां ज्यारे जइने बेसशो त्यारे तमारी किसडी के० केवी शोभा वधशे? कोइक बहु बोलो हशे तेतो तमने जोइनेज मुखे कहेशे के जुउ आ मरद आव्या, एम कहेशे त्यारे तमारी केवी लाज वधशे. घणी शरम जेवी वात छे. हजु कांइ बगड्युं नथी तेथी रथ पाछो फेरवो ॥ ६ ॥

प्रेमकरे जगजन सहुरे ॥ निरवाहे ते उर ॥ मन० ॥
प्रीत करीने छोमीदेरे ॥ तेशुं न चाले जोर ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ संसारी जीवमात्र रागी छे तेथी प्रीति करवाना अभिलाषी छे. सरागीपणुं प्रीतरूप कार्यनुं कारण छे. ए प्रमाणे प्रीति तो करनारा सहु छे, परंतु करेली प्रीतिनो

निरवाह करनारा उर के० जुदाज छे. तमे तेवा नथी. तमे प्रीत तो करो छो परंतु प्रीतने नभावतां तमने आवमतुं नथी. यथा ॥ प्रीतरीत अति कठिन है ॥ समज करैउ काय ॥ भांग भखंता सोहेली ॥ लेहेरां मुश्किल होय ॥ १ ॥ तेथी हे वल्लभ! जे मनुष्य प्रथम प्रीत बांधीने पछी त्रोमी नाखे तेनी साथे शुं जोर चाले? पराणे प्रीत थती नथी ॥ ७ ॥

जो मनमां एहवुं हतुं रे ॥ निसपत करत न जाण ॥ मन० ॥
निसपत करीने छांमता रे ॥ माणस हुए नुकसाण ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जो आपना मनमां प्रथमथीज, तोरणथी रथ फेरवी, मने तजी देवानी इछा हती तो निसपत के० मारी साथे संबंध करवो घटतो नहोतो अने हुं पण संबंध करत नही. तेथी हवे विचार करो के स्त्रीमात्रनी ज्यांसुधी सगाइ थइ नथी त्यांसुधी तो दरेक स्त्रीने बंधन नथी, परंतु ज्यारे कोइ पुरुषनी साथे कोइ स्त्रीनो सगपण संबंध थाय त्यारे ते पुरुषनी साथेज तेनो संबंध रह्यो. हवे ज्यारे संबंधी पुरुष स्त्रीने तजी दे त्यारे ते तजायेली स्त्रीने बीजो पुरुष रांधेली हांडली प्राये जाणे अने तेनी साथे कोइ संबंध करवा जाय तो ते पुरुषने बीजाउ कहे के तमने बीजी कोइ कन्या मलती नथी, ते कन्याने तो अमुक पुरुषे तजी दीधी छे तेथी विषकन्या प्रमुख डुषणो पण ते कन्या उपर लोको मुके. तेथी संबंध कर्या पछी कन्यानो त्याग करतां ते कन्याने मोटुं नुकशान छे, प्रगट रीते कलंकित करवा जेवुं छे ॥ ८ ॥

देतां दान संवत्सरी रे ॥ सहु लहे वंछित पोष ॥ मन० ॥
सेवक वंछित नवी लहे रे ॥ ते सेवकनो दोष ॥ मन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे रथ फेरवी घेर गया. लोकांतिक देवताए दीक्षानो अवसर जाणी तमोने विनंति करी. जेथी तमे संवत्सरी दान देवा लाग्या. सर्व प्राणीमात्रना मनोवांछित पूर्ण करवा लाग्या. दाननो वरसाद वरसावतां छतां मारा जेवा परम सेवक कांइपण वंछीत पामता नथी, तेथी एवी केहेवत थइ के ॥ पेंडा खावे दूरका, भूख्या मरे हजूरका ॥ अथवा, घरनां छैयां घंटी चाटे, पामोसणने आटो ॥ एवी वातो तमे साची करी बतावी; पण तेमां तमारो दोष नथी, तमारा सेवकनोज दोष छे. बीजा सर्वने भोगकर्मनो उदय हतो तेथी तेउ तमारी पासेथी इत्यादि पाम्या अने मारे भोगोपभोग कर्मनो असंभव तेथी हुं न पामी, एवी रीते मारा कर्मनोज दोष छे ॥ ९ ॥

सखी कहे ए शामलोरे ॥ हुं कहुं लक्षण सेत ॥ मन० ॥
इण लक्षण साची सखीरे ॥ आप विचारे हेत ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ आजसुधी पुरुषसंबंधी मारी परिक्षा साची पडी, मात्र तमारी परिक्षा हुं बराबर करी शकी नहीं. तमारी साथेनी सगाइने वखते मारा सखीवर्गे मने सूचव्युं हतुं के तमारो भर्त्तार अंतर अने बहार श्याम छे; में तेउने कह्युं के बहारथी तो श्याम छे, परंतु अंतरथी ते सेत के० उज्वल, निष्कपटी छे. हवे तमे ज्यारे मारो संबंध करी मने कुवामां उतारी दोरडुं काप्युं, त्यारे सखीउना वर्गनुं केहेवुं साचुं थयुं अने मारी परीक्षा खोटी पडी. ते हेत के० कारणने असत्य गणता हो तो आप विचारी जोजो ॥ १० ॥

रागीसुं रागी सहु रे ॥ वैरागीस्यो राग ॥ मन० ॥
रागविना केम दाखवोरे ॥ मुगति सुंदरी माग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! हुं सरागणी छुं तेथी आपने सरागी थवुं योग्य छे. जगतनी पण एवीज नीति छे. राग राखे तेनी साथे रागनो संबंध थाय, परंतु रागरहितनी साथे राग केम थाय? हुं रागी तमारा उपर छुं तेथी जो तमारामां राग होय तो मारा उपर राग राखो; परंतु तमारामां रागज लागतो नथी तेथी मारा उपर केवी रीते राग करो. वली मने एक विचार आवे छे के जो तमे रागी नथी तो रागने अभावे जे मार्गे मुक्तिस्त्री पामीए तेवो मार्ग जेने मुगति सुंदरी मार्ग कहेवाय छे, तेने बारे पर्षदामां केम दाखवो के० प्रगट बतावो छो? तेथी जेम अंतःकरणमां होय तेज होठे आवे तेम तमारे मुक्तिस्त्री उपर राग छे अने तेणीने सर्व समक्ष लाजनो त्याग करी स्मरो छो. जेने अनेक भर्त्तार छे एवी स्त्रीने इछो छो अने मने परिहरो छो. आवो ते कोना घरनो आचार ॥ ११ ॥

एक गुह्य घटतुं नथी रे ॥ सघलो जाणे लोक ॥ मन० ॥
अनेकांतिक भोगवो रे ॥ ब्रह्मचारी गतरोग ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि ! लोको मने आवी कहे छे के तमारा भर्त्तारनी केवी रीत के तजीने चाल्या गया. में कह्युं के तेमनामां कामरूपी रोग नथी अने ते ब्रह्मचारी छे तेथी गया. लोको कहे छे के एक राजेमतिने तज्या तेमां शुं ? अनेकांतिक भोगवेछे अने ब्रह्मचारी कहेवाय छे. तेथी जो आप ब्रह्मचारी नाम धरावता होतो अरज करुं छुं के आवुं एक गुह्य आपने घटतुं नथी. लोको जाणे ते गुह्य शानुं? लोको जाणे

छे के ते अनेक जोगवे छे अने निष्कामी, ब्रह्मचारी एवुं नाम धरावो तेथी एवुं गुह्य अघटित छे. घटित गुह्य तो ते कहेवाय के जेने लोको न जाणी शके. चतुरनी गुप्तवात कोइ जाणी शके नही. आपनुं गुप्त तो सर्व लोकोए जाण्युं के अनेकने जोगवोछो तो मने एकने जोगववामां ब्रह्मचर्यनो शुं जंग थाय छे? जो ब्रह्मचर्यने अखंम पालवुं एवुं धारता होतो अनेकांतने जोगववुं तजीयो. पण तमे तो बे घोडे चमो छो, अनेकांतने जोगवो छो अने ब्रह्मचारी नाम धरावो छो. ॥ १२ ॥

जिण जोणी तमने जोउं रे ॥ तिण जोणी जुउं राज ॥ मन० ॥
एकवार मुजने जुउं रे ॥ तो सीजे मुजकाज ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामी जिण जोणी के० जे जोवानी रीते हुं तमने जोउं छुं अर्थात् जे सराग दृष्टिए हुं आपने निरखुं छुं, तेज सराग दृष्टिए हे राजन्! मने आप हृदयरूप नेत्रे जुउं. जो कृपाकरी आप एकज वखत मारा उपर दृष्टि करशो तो मारुं वांछित कार्य सिद्ध थशे ॥ १३ ॥

मोहदशा धरी जावनारे ॥ चित लहे तत्वविचार ॥ मन० ॥
वीतरागता आदरी रे ॥ प्राणनाथ निरधार ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अत्यारसुधी राजेमति सखीउ साथे तथा नेमनाथजी साथे मोहदशानी व्यवस्थानां वचनो बोलती हती. हवे चित्तमां मोहदशा धारण कर्या छतां स्वजाविकरीते एकत्वजावना आवी अने तेवाज आशयने प्रसंगे, कर्त्ताए पाछली गाथामां “ एकवार मुजने जुउं ” एवुं पद मुक्युं छे तेथी मोहमयी वचनो कह्यां छतां स्वजाविकरीते एकत्वजावना आवी एम लागे छे. राजेमति विचारे छे के, मारुं आत्मद्रव्य मारा आत्मप्रदेशोने आधारे छे तो मारे तेमनी साथे शुं संबंध छे? आवो आत्मतत्वनो विचार के० जेद राजेमति पामवाथी पोताना आत्माने कहेछे के हे आत्मा! प्राणनाथ के० प्राणोना नाथ जे नेमनाथ स्वामी तेमणे निरधार के० निश्चयथी वीतरागता आदरी के० ग्रहण करी, तेथी तारो राग तेमने केम जेदी शके, माटे ते कोण अने हुं कोण? एम एकत्वजावना जावता हवा ॥ १४ ॥

सेवक पण ते आदरे रे ॥ तो रहे सेवक माम ॥ मन० ॥
आशय साथे चालीए रे ॥ एहीज रुडुं काम ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे राजेमति नीतियुक्त सन्मुख दृष्टिए एकत्वजावना जावे छे. हे आत्मा! नेमनाथजी साथे स्वामी सेवक संबंध करवो तने योग्य हतो? तेवा संबंधथी

तारे परवश थवुं पडत अने परवश थवुं ते स्वेछाचारीने नरकतुल्य छे. परंतु ए वात तारे प्रथम विचारवी योग्य हती. पाछलथी विचार करवाथी शुं सिद्धि ? स्वामीए वीतरागता आदरी तो सेवक पण निश्चयथी तेज आदरे अने तेम करे तोज सेवकनो नाम के० महिमा रहे, धर्म स्थिर रहे. माटे हे आत्मा ! स्वामिना मननो आशय के० अनिप्राय जाणी ते प्रमाणे चालीए तो तेज उत्तम काम बने. सेवकनो सेव्यधर्म एवो छे के पोतानी मरजी प्रमाणे नहीं चालतां स्वामिनी आज्ञाप्रमाणे वर्त्तवुं ॥ १५ ॥

त्रिविध योगधरी आदर्यो रे ॥ नेमनाथ नरतार ॥ मन० ॥
धारण पोषण तारणो रे ॥ नवरस मुगताहार ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटे श्रीनेमनाथ स्वामिए मन वचन काया, त्रिविधथी योग आदर्यो तेथी मारे पण तेमज करवुं ते उत्तम छे. मारा मननो वल्लन श्रीनेमनाथ मारा आत्मिक गुणोनो आधार छे, वली गुणोनुं पोषण करनारा पण तेज छे तेमज मारा आत्माने संसारसमुद्रथी तारनार पण तेज छे. वली तेज मारा स्वामि नवरस मुक्तानो हार छे. शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, नयानक, बिनत्स, अद्भूत अने शांत, आ नव रस छे. तेमां निरूपम आत्मिकस्वरूप ते अद्वितीय शृंगार छे. अनादि कनकोपलनी जेम पुरुषनो प्रकृतिथी वियोग तेथी अतींद्रियनो हर्षोत्कर्ष ते परम हास्य छे; सर्व जंतुने अनयदान देवानी वृत्ति ते करुणा छे. कर्मने विडारवानी वृत्ति ते रौद्र रस छे. इत्यादि सर्व रसनो विचार यथार्थरीते करवो. विशेष लखाण वधवाथी विस्तार कर्यो नथी ॥ १६ ॥

कारणरूपी प्रनु नज्योरे ॥ गण्यो न काज अकाज ॥ मन० ॥
कृपाकरी मुज दीजीए रे ॥ आनंदघन पदराज ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हे प्रनु ! में आपनी कारणरूपे सेवा करी अर्थात् मारा मनमां परमेश्वरनुं स्वरूपरूप कारण प्रवर्त्तशे तो मारुं आत्मस्वरूपरूपकार्य सिद्ध थशे एवी धारणाथी तमारुं सेवन करतां में करवा नहीं करवा योग्य कांइ गण्युं नही. जेम संसारीने शब्दादिनुं सेवन ते करणीय अने वैराग्यनुं सेवन ते अकरणीय एरीते बंनेने नहीं गणतां मात्र परमेश्वरनुं ज सेवन कर्युं. माटे हे परमेश्वर ! मारा उपर कृपा करीने प्रसन्न थइ मने आनंदघन के० निर्वाणपदरूप राज्य आपो ॥ १७ ॥ इति श्रीनेमनाथ जिनस्तवन. इति श्रीआनंदघनजी कृत वावीसी. आ वावीस स्तवननो बालावबोध ज्ञानसारजीए कृष्णगढमां रही संवत् १८६६ ना नादरवासुद १४ ना रोज संपूर्ण कर्यो. ते प्रमाणे आशय लइ छापतां नूल थइ होय ते वांचनारे सुधारी वांचवुं. वली

बीजी प्रत उपर आनंदघनजीना छेल्ला बे स्तवनो हता ते पोतानाज करेला हता अने तेनी उपर ज्ञानविमलसूरिए बालावबोध कर्यो छे. ते हवे पछी छाप्या छे ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

ध्रुवपदरामीहो स्वामि माहरा ॥ निःकामी गुणराय ॥ सुग्यानी ॥
निजगुण कामीहो पामी तुं धणी ॥ ध्रुव आरामीहो थाय ॥ सु०॥ध्रु०॥१॥

अर्थ ॥ ध्रुव के० निश्चलपद जे सिद्धपणुं तेना रामि के० रमणहार प्रभु ते मारा स्वामि छे, वली कामकंदर्पना अभिलाष रहित छे तेथी निष्कामी छे. अष्टगुण युक्त होवाथी गुणराय छे. अव्याबाध सुखना भोगी छे. केवलज्ञान युक्त होवाथी सुज्ञानी छे. पोताना गुणना अभिलाषी छे एटले स्वस्वभाव प्रगट थयो तेनाज अर्थी छे. सम्यक् दृष्टि जीवो तमारा जेवो धणी पामी ध्रुवपद आरामी के० अचल सुखवाला आत्मारामी थाय, कारणके जे परमात्माने सेवे ते परमात्मा थाय ॥ १ ॥

सर्वव्यापि कहे सर्व जाणंगपणे ॥ परपरिणमन सरूप ॥ सु० ॥
पररूपें करी तत्वपणुं नही ॥ स्वसत्ता चिदरूप ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु! तमने केटलाएक सर्वव्यापि कहे छे: तमे सर्वज्ञ होवाथी ज्ञानस्वरूपे सर्वव्यापि छो एवी रीते आरोपें घटे छे, परंतु तेउं जो वस्तुधर्मे सर्वव्यापि कहे तो दोष उपजे छे; केमके जे परमां व्यापे ते परपणे परिणमवुं थाय त्यारेज व्यापे अने परपरिणमन स्वरूप थवाथी परमात्म द्रव्यने अस्थिरस्वभाव तथा अन्यस्वभावरूप दूषणो थाय. वली पररूपें थतां, अन्य द्रव्यरूप थवाथी तत्वपणुं रहे नही, माटे पोतानी सत्ताज चिद्रुप ज्ञानस्वरूप छे तेनाथी तत्वपणुं कहेवाय ॥ २ ॥

ज्ञेय अनेके हो ज्ञान अनेकता ॥ जल भाजन रवि जेम ॥ सु० ॥ द्रव्य
एकत्वपणे गुण एकता ॥ निजपद रमताहो खेम ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली ज्ञेय के० सर्वद्रव्य ते अनेक छे तेने ज्ञाने करी जाणे तेथी आत्मानुं ज्ञान अनेक छे. ज्ञेयना भेदथी ज्ञानना पण अनेकरूप छे. जेमके सूर्य एक छे छतां जलाशयमां प्रतिबिंब पडतां अनेक जोनारने पृथक् पृथक् देखाय छे, तेमज ज्ञान गुणाधिकरणभूत सर्व आत्मभावनुं स्थानरूप जे आत्मद्रव्य तेनुं तथा प्रकाशरूप गुणनुं एकरूप छे, परंतु पर्यायरूपे अनेकता छे. ज्ञायकरूप कार्य अभेदें ज्ञानगुण एक छे परंतु अन्योने प्रकाश करवाथी ते पृथक् पृथक् लागे छे. एप्रमाणे सर्वगुण पोतपोतानुं क्षेत्र जे द्रव्य तेमां रमतां थकां क्षेम कल्याण छे अर्थात् कोइ गुण पर परिणामी नथी.

परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे ॥ परक्षेत्रे थयुं ज्ञान ॥ सु० ॥
अस्तिपणुं निजक्षेत्रे तमे कह्युं ॥ निर्मलता गुणमान ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥४॥

अर्थ ॥ स्व अवगाहनाथी पर के० अन्य क्षेत्रे रह्युं जे जीवद्रव्य तथा अजीवद्रव्य तेने मात्र जाणवाथी, ज्ञान परक्षेत्री थयुं, परंतु जे गुणी होय ते गुणथी अन्नेदपणे होय. तेथी ज्ञान निज क्षेत्रे के० आत्मानेविषे व्यापकपणे रह्युं ठे तेथी तमे तेने अस्तिपणुं कह्युं. ज्ञानमां स्वन्नावे निर्मलता ठे तेथी तेमां सर्वद्रव्य दर्पणनी जेम न्नासे ठे. परंतु ज्ञान क्षेत्रमां ज्ञेय जतां नथी अने ज्ञेयमां ज्ञान जतुं नथी ॥ ४ ॥

ज्ञेय विनाशेहो ज्ञान विनिश्वरु ॥ काल प्रमाणेरे थाय ॥ सु० ॥
स्वकाले करी स्वसत्ता सदा ॥ ते पररीतें जाय ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्ञेय जे घटपटादि तेना विनाशथी ज्ञान पण विनाशी ठे. अतीत अनागत वर्त्तमानने परावर्त्ते, जे अनागत पर्याय ते वर्त्तमानपणुं पामे अने वर्त्तमान पर्याय ते अतीतपणुं पामे ते सर्व पर्यायनुं न्नासन ज्ञानमां ठे. न्नासन पर्याय ए रीते परिणमे ठे तेथी ज्ञानमध्ये विनाशी धर्म ठे. तेने उत्तर के, स्वकालें करी पोताना उत्पादव्ययरूप परिणमन जोतां ज्ञान उत्पादव्ययरूप ठे, तोपण तेनो स्वसत्ता धर्म कदापि परसत्तापणुं पामतो नथी. परानुयायी चाल न ग्रहण करवाथी स्वरूप धर्म ठे.

परन्नावें करी परता पामता ॥ स्वसत्ता थिर ठाण ॥ सु० ॥ आत्म
चतुष्कमयी परमां नही ॥ तो केम सहुनोरे जाण ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली परन्नावे करी के० परन्नावने जाणवाथी ज्ञान ते पर थाय अर्थात् परतापणुं पामे; परंतु ज्ञान स्वसत्तारूप ठे, स्थिर स्थानक ठे माटे स्वसत्तारूप होय ते कदापि परपणुं पामे नहीं. अर्थात् आत्मचतुष्कमयीपणुं ते परमां न पामीए. सारांश के स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वन्नावपणे आत्मानो धर्म होय ते अन्यमां न पामीए. एम निरधार कर्यो. अहीं कोइ पूठे जे, त्यारे ज्ञान सर्व परद्रव्यनुं जाण ठे एम केम थाय?

अगुरु लघु निज गुणने देखतां ॥ द्रव्य सकल देखंत ॥ सु० ॥
साधारण गुणनी साधर्म्यता ॥ दर्पण जलने दृष्टांत ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेने उत्तर आपे ठे. जीवादि सर्व द्रव्यमां अगुरुलघु धर्म ठे. ते सर्व द्रव्यमां सामान्य ठे. जीवमां पण सर्वव्यापि ठे. ते पोतानो अगुरुलघुन्नाव देखतां सर्व द्रव्यने देखे, सर्वने जाणे. दर्शनोपयोगे सामान्य जाणे, ज्ञानोपयोगे विशेष जाणे. साधारण गुणने, नित्यत्वादिकने तथा अगुरुलघुत्वादिकने समानधर्मि तेथी

एकने जाणवे सर्वनो जाण थाय. जेम आरसीमां सर्वनुं प्रतिबिंब पडे छे, पण जेनुं जेनुं प्रतिबिंब आरसीमां पडे छे, ते ते वस्तुमां आरसी प्रवेश करती नथी, तेम ते ते वस्तु पण आरसीमां प्रवेश करती नथी. तेवीज रीते जलनुं दृष्टांत पण समजवुं. ए दृष्टांतो मुजब ज्ञान ज्ञेयमध्ये परिणमतुं नथी अने ज्ञेय ज्ञानमध्ये परिणमतां नथी ए रीते स्व अवगाहनागत ज्ञानगुण ते आत्मानुं स्वरूप छे.

श्रीपारसजिन पारसरस समो ॥ पण इहां पारस नाहिं ॥ सु० ॥
पूरण रसीउं हो निजगुण परसनो ॥ आनंदघन मुज मांहि ॥सु०॥ ध्रु०॥७॥

अर्थ ॥ एवा पार्श्वनाथ जगवान पार्श्वमणि समान छे. जेम पार्श्वमणिनो स्पर्श थतां लोह ते कनक थाय तेम पार्श्वप्रजुना योगथी आत्मारूप सेवक परमात्मा थाय. पार्श्वनाथ जगवानमां पार्श्वमणिनो रस नथी परंतु पोताना अनंतज्ञानादि गुणरूप रस छे ते अनंतज्ञानादि मारामां पण छे, पण सत्तारूपे छे अने परमात्मामां प्रगट छे तेथी जगवान पूज्यछो ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

वीर जिनेश्वर चरणे लागुं ॥ वीरपणुं ते मागुं रे ॥ मिथ्या
मोह तिमिर जय जागुं ॥ जितनगारु वागुं रे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्री महावीर परमात्माना चरणमां नमस्कार करीने हुं क्षायकवीर्यपणुं मागुं छुं. जे वीर्यना उल्लासथी मिथ्यात्व के० कुश्रद्धा अने मोह के० मूढता तद्रुप तिमिर के० अंधकारनो जय दूर कर्यो छे एवा हे प्रजु! तमे शत्रुनो नाश करीने जीत नगारु वगाड्युं तेवुं वीर्य हुं मागुं छुं. जे वीर्यथी हुं पण कर्मशत्रुने जीतुं ॥ १ ॥

छद्मस्थ्य वीरय लेश्यासंगे ॥ अजिसंधिज मति अंगेरे ॥
सुक्ष्म थूल क्रियाने रंगे ॥ योगी थयो उमंगे रे ॥ वी० ॥२॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! छद्मस्थवीर्य ते क्षयोपशमवीर्य. ते लेश्याए जे परिणम्यो ते अजिसंधिजवीर्यें अनेक कर्म ग्रहण करे. जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य ते अजिसंधिज वीर्य कहीए. ते सूक्ष्म क्रिया कंपनरूप, स्थूलक्रिया आकुंचनप्रसारणरूप एटले जाव योग तथा डव्ययोगरूप. सूक्ष्म तथा स्थूल क्रियाने रंगे योगवंत थयो थको आत्मा संसारमध्ये उमंग पामी रह्यो छे. आ विचार कम्मपयडी ग्रंथमां छे ॥ २ ॥

असंख्य प्रदेशे वीर्य असंखें ॥ योग असंखित कंखेरे ॥ पुजल
गण तेणे ले सुविशेषें ॥ यथाशक्ति मति लेखे रे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आत्माना असंख्याता प्रदेश छे. एकेका प्रदेशे असंख्याता वीर्य विजाग छे, एम कम्मपयडीना योगस्थानकमां कह्युं छे. एरीते जीवने योग पण असंख्याता छे. जे क्षयोपशमी वीर्य असंख्यातु छे ते योगरूप छे, तेणे करी जीव कर्मपुजलना समूहने ग्रहण करे छे. योगविशेषे, विशेष कर्म ग्रहणे करे. जेवी योग वलशक्ति तेवुं कर्मनुं दल जीव ग्रहण करे, एम समजवुं ॥ ३ ॥

उत्कृष्टे वीरयने वेसें ॥ योग क्रिया नवि पेसे रे ॥ योगतणी
ध्रुवताने लेसें ॥ आतम शक्ति न खेसे रे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ज्यां उत्कृष्ट के० अनंतवीर्य त्यां कर्म न लागे. ज्यां चलवीर्य त्यां कर्म लागे. जे प्रदेशोमां उत्कृष्ट वीर्य होय त्यां योगक्रिया जे कर्म ग्रहणरूप क्रिया ते प्रवेश करी शके नहीं. आत्माना आठ रूचक प्रदेशोमां कर्मग्रहणरूप योगक्रिया नथी. वली योगनी ध्रुवता के० निश्चलता छे. ज्यां योगनी निश्चलता त्यां आत्मशक्तिने कोइ कर्म रुंधी शके नहीं, अर्थात् ते प्रदेशे आवरण न थाय ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशें जेम जोगी ॥ तेम आतम थयो जोगी रे ॥ सूरपणे
आतम उपयोगी ॥ थाय तेहने अयोगी रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम काम के० अजिलाषना वीर्यना वशथी जेम जोगी पुरुष सर्व परजावने वांछे छे, तेम आत्मा परजावनो जोगी थयो छे अने तेज आत्मा शुरवीर थइ सारा स्वरूप विना परजावमां प्रवेश करवो नहीं एवी प्रतिज्ञा धारण करी आत्मोपयोगी थाय तो अयोगीपणुं प्रगट करे. एवुं शुरवीरपणुं हे वीरपरमात्मा! तमारुं घणुंज उत्कृष्ट छे.

वीरपणुं ते आतम ठाणे ॥ जाण्युं तुमची वाणे रे ॥ ध्यान
विनाणे शक्ति प्रमाणे ॥ निज ध्रुवपद पहिचाणे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुं वीरपणुं ते आत्मस्थानकमां अर्थात् आत्मामांज छे, एम में तमारी वाणीथीज जाण्युं छे. तेवा ध्यानथी, विज्ञानथी तथा शक्तिना प्रमाणथी जेम जेम आत्मानुं मूल वीर्य-शूरत्व चिंतवीए तेम तेम आत्मा तेमां रमीने पोतानुं ध्रुवपद के० निश्चल परमानंदपद तेने पहिचाने के० उलखे ॥ ६ ॥

आलंबन साधन जे त्यागे ॥ परपरिणतिने जागे रे ॥ अक्षय
दर्शन ज्ञान वैरागे ॥ आनंदघन प्रजु जागे रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ परंतु परने अवलंबन करी जे साधन करवुं, तेनो त्याग करवाथी परावलंबनपणुं छंडाय तो परपरिणति भागे के० जाय अने ए प्रमाणे जे करे ते अक्षय अप्रतिपाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अने वीतरागता के० यथाख्यात चारित्रमां लयलीन थयो थको आनंदघन के० परमानंदमय प्रभुता जाग्रत करे ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तवन. श्रीज्ञानविमलसूरि तथा पंडित देवचंद्रजीए आ चोवीसीना पाछला बे स्तवनो कर्या छे. ज्ञानविमलसूरिजीए बालावबोध चोवीसे स्तवनो उपर कर्यो छे. देवचंद्रजीए कर्यो नथी. अहीं ज्ञानसारजीनो बालावबोध छाप्यो छे, अने हवे पछीना तेमनाज बे स्तवनो छापेला छे.

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ शांतिजिन एक मुज विनति ॥

पासजिन ताहरा रूपनुं ॥ मुज प्रतिभास केम होयरे ॥ तुऊमुऊ
सत्ता एकता ॥ अचल विमल अकल जोयरे ॥ पास० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो पार्श्वनाथ प्रभु! तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास के० प्रकर्षे आभास अर्थात् साक्षात्कार केम थाय? विचार करतां तमे अने हुं सत्ताए एक छीए तेथी अभिन्न छीए अने भिन्नभावीपणुं थया विना तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास केम थाय? वली निश्चयनयथी हुं मारा स्वरूपने विचारुं तो जेम तमे स्वरूपथी त्रणेकाल निश्चल छो तेम हुं पण मारा स्वरूपथी चल्यो नथी. वली जेम तमे निर्मल तेम हुं पण निश्चयथी कर्ममल रहित, जेम तमने कालादिके कल्या नथी तेम हुं पण कालादिकथी अकल छुं, माटे ए त्रणे रीते एकता देखीने अहो पार्श्वप्रभु! तमारुं रूप भिन्नपणे प्रत्यक्ष केम करी शकुं? ॥ १ ॥

मुज प्रवचन पक्षथी ॥ निश्चय भेद न कोयरे ॥ व्यवहारे
लखी देखीए ॥ भेद प्रतिभेद बहु लोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे परमात्मा उत्तर आपे छे. हे आनंदघन! निश्चयनयनी अपेक्षाए तो परमात्मा अने जीवात्मामां भिन्नभावीपणुं अर्थात् भेद कांइ नथी अने व्यवहार नयनो आश्रय करी जोइए तो अर्थात् हेतुप्रतिहेतुपुर्वक हृदयनेत्रें अवलोकन करीए तो जीवना लोय के० लोकने विषे बहु के० घणां भेद प्रतिभेद थाय. एक देवता एक मनुष्य तेज जीवने नरकपणुं प्राप्त थाय ए रीते भेद प्रतिभेद घणां थाय॥२॥

बंधन मोख नहीं निश्चयें ॥ व्यवहारें भज दोयरे ॥ अखंडित
अबाधित सोय कदा ॥ नित अबाधित सोयरे ॥ पास० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे आनंदघन! निश्चयनयथीज आत्माने अवलोकन करीए तो आत्मा मात्रने त्रणेकालमां कर्मबंधन नथी. निश्चयनयथी जीव त्रणेकाल अरुपीज छे अने ज्यारे बंधन नथी त्यारे मोक्ष के० मुकवापणुंज नथी अर्थात् निश्चयनयथी आत्माने बंध मोक्ष नथी; अने व्यवहारनयथी आत्माने बंध अने मोक्ष बंने भज के० अवधार. व्यवहारनयें आत्मा अखंडित नथी अक्षरनो अनंतमो विभाग ज्ञान रही गयुं तेथी. वली पर्याय मरण तेथी अनादि नथी. गत्यागति करवाथी अचल नथी. क्षीणविनश्वर तेथी नित्य नथी. कर्मे पीडित तेथी अबाधित नथी. ए रीते व्यवहारनयनी अपेक्षाए सोय के० आत्मा छे अने तेज आत्मा निश्चयनयथी विचारतां आठ रुचक प्रदेश निरावरण होवाथी त्रणेकाल अखंडित छे .अणाइए अपज्जवसिए ए भांगे अपर्यवसित तेथी अनादि छे. सर्वथा ज्ञाननो अभाव थतो नथी तेथी अचल छे. त्रणे काल आत्मद्रव्यनो नाश थतो नथी तेथी नित्य छे. अनादि निर्मल स्वरूपने बाधा पहोंचती नथी तेथी अव्याबाध छे. ए रीते पण सोय के० आत्मा छे. ॥ ३ ॥

अन्वय हेतु व्यतिरेकथी ॥ अंतरो तुझमुझ रूपरे ॥ अंतर
मेटवा कारणे ॥ आत्मस्वरूप अनूपरे ॥ पास ०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे छते ते छतुं ते अन्वय कहेवाय अने जे अछते ते अछतुं ते व्यतिरेक कहेवाय. एवा अन्वय तथा व्यतिरेक हेतुथी अर्थात् स्वरूपने सद्भावे परमात्मानो सद्भाव अने स्वरूपने अभावे परमात्मानो अभाव एवी रीते तमारा अने मारामां अंतर के० भेद पडेलो छे. ते मारा अने तमारा भेदने मटाडवा माटे अन्वयहेतुरूप तमारा आत्मानुं निरूपम स्वरूपज छे ॥ ४ ॥

आतमता परमात्मता ॥ शुद्धनय भेद न एकरे ॥ अवर
आरोपित धर्म छे ॥ तेहना भेद अनेकरे ॥ पास० ॥५॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! मारा आत्माने विषे रहेली आतमता अने परमात्माने विषे रहेली परमात्मता तेमां भेद छे के केम ? उत्तर, हे आनंदघन ! शुद्धनयथी तारा आत्मामां अने मारा परमात्म स्वरूपमां कांइ भेद नथी. कारण के अवर के० स्वरूपथी व्यतिरिक्त जेटला संयोगजन्य आरोपित धर्म छे ते कर्मे आरोपित छे. तेना अनेक भेद छे. यथा ॥ कबहु हाटक कबहु नाटक, काटक कबहु कबहु ॥ कबहु साटक कबहु फाटक, चेटक कबहु कबहु ॥ करमकी कैसी बात कहुं ॥ एम अनेक भेद छे.

धरमी धरमथी एकता ॥ तेह मुजरूप अभेदरे ॥ एक सत्ता
लख एकता ॥ कहे ते मूढमति खेदरे ॥ पास० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन ! आत्मत्व धर्मयुक्त आत्मस्वरूपमां अने मारा स्वरूपमां अ-भेदपणुं छे, केमके हुं आत्मत्वधर्मयुक्त थयो छुं अने बीजा जे आत्मत्वधर्मे युक्त थाय तेमां अने मारामां भेद कांइ न रहे. परमात्मानी सत्ता जेम निर्मल छे तेम श-रीरमां रहेलो आत्मा त्रणे कालें कर्मलेपरहित निर्मल छे एवी जे एकता के० एक-त्वपणुं अद्वैतपक्षी लख के० कहेछे ते अतात्विक छे. एवो खेद के० प्रयास छे ते मू-ढमति के० बुद्धिहीन पुरुषनो छे ॥ ६ ॥

आतम धरम अनुसरी ॥ रमे जे आतमरामरे ॥ आनंद
घनपदवी लहे ॥ परम आतम तस नामरे ॥ पास० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन ! जे आत्मा आत्मधर्मने अनुसरी तद्रवत् थइ रमे के० प्र-वर्त्ते, तेनुं नाम आतमराम कहीए अने तेज आत्मा आनंदघन के० अनंता पदा-र्थोनुं भासन थाय एवा ज्ञानना समूहनी पदवी जे मुक्तिपदवी तेने लहे के० प्राप्त करे. तेज आत्मानुं नाम परमात्मा कहीए. ए रीते अहो प्रभु! मने तमारा कहेवाथी तमारा रूपनो प्रतिभास करामलकवत् थयो ॥ ७ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ पंथडो निहालुंरे बीजा जिनतणोरे ॥ ए देशी ॥

चरमजिणेसर विगत स्वरूपनुंरे ॥ भावुं केम स्वरूप ॥ साकारी
विण ध्यान न संभवेरे ॥ ए अविकार अरूप ॥ चरम० ॥ १॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! चरमजिनेश्वर शासननायक महावीर परमात्माना स्व-रूपनुं चिंतवन कर. त्यारे शुद्धचेतना कहेछे के ते तो विगतस्वरूपी छे. अर्थात् मनःप-र्यवज्ञानी पण जेना स्वरूपने जाणी शके नहीं तो हुं शी रीते जाणी शकुं. वली सिद्धां-तमां सालंबन ध्यान कह्युं छे तो रूपविना आलंबन केम संभवे? आलंबनने अभावे ध्याननो असंभव तेथी साकारी के० आकारवालाविना ध्यान केम करी शकुं? वली परमेश्वर ज्ञानावरणादि कर्मना विकाररहित माटे अविकारी छे तथा रूपरहित तेथी अरूपी छे. माटे एवा चरमपरमेश्वर अलख स्वरूपीने स्वरूपे केम चिंतवी शकुं? ॥ १॥

आप स्वरूपे आतममां रमेरे ॥ तेहना धुर बे भेद ॥ असंख
उक्कोसें साकारी पदेंरे ॥ निराकारी निरभेद ॥ चरम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! तें कह्युं के, विगतस्वरूपीने शीरीते ध्याइ शकुं? ते तारुं वचन सत्यासत्य छे, कारणके अरूपीनुं ध्यान संभवे छे तेथी असत्य छे अने तुं पण

चेतना मात्र चिंतववारूप छो तेथी आत्मधर्मरहित अने हुं आत्मा छतां अघरूपीवुं तेथी आत्मधर्मरहित छुं, तेथी आपणे बंने विगतस्वरूपीनुं ध्यान ध्याववा अशक्त छीए तेथी सत्य छे. परंतु तुंज शुद्धचेतना थई मारा आत्मामां रमणता कर, तो हुं पण आपस्वरूपे आत्मामां रमुं. जे आत्मा आपस्वरूपे आत्मामां रमे ते आत्माने ध्याता अने आत्मस्वरूपने ध्येय कह्युं छे. कारणके ते आत्माने तथा परमात्माने अभेद छे. घनघाती चार कर्म खपावी अघाती चार कर्म जेना शेष रहे तेवा आत्मा ते साकारी परमात्मा छे अने जेना घाती अने अघाती सर्व कर्म खपी गयाछे ते निराकारी परमात्मा छे. तेमां वळी साकारी परमात्माना वे भेद छे. एक तीर्थंकर नाम कर्मोदयी साकारी, बीजा अतीर्थंकर नाम कर्मोदयी साकारी. तेमां तीर्थंकर साकारी उत्कृष्ट पदें १७० अने उत्कृष्ट पदें अतीर्थंकर साकारी—सामान्य केवळी नवक्रोड पामीए. निराकारी अनंतसिद्धोनुं एकरूप माटे तेउ भेदरहित छे ॥ २॥

सूखम नाम करम निराकार जे रे ॥ तेह भेदें नहीं अंत ॥ निराकार
जे निरगत कर्मथीरे ॥ तेह अभेद अनंत ॥ चरम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वळी हे शुद्धचेतना! आ वचनो मारां लाडनां वचनो छे ते सांभळ. निराकारना वे भेद छे. एक सूक्ष्म नामकर्मी निराकार अने वीजा निर्गतकर्मी निराकार. अहीं ध्यान करवा माटे वर्णन नथी, परंतु निराकार नाम मात्रना भेदनुं वर्णन छे. सूक्ष्म नामकर्मोदयथी प्राप्त थयुं जे निराकारीपणुं तेना भेदनी संख्यानो पार नथी, तेमज निर्गत के० सर्वथा खपाव्यां छे कर्म जेणे एवा निराकारी जे सिद्ध तेना पण भेद अनंत छे. सर्व सिद्धोनी सत्ता असंख्यात प्रदेशात्मक, भिन्नपणामाटे अनंत छे ॥ ३ ॥

रूप नहीं कंईए बंधन घट्युंरे ॥ बंधन मोक्ष न कोय ॥ बंध
मोक्षविण सादि अनंतनुंरे ॥ भंग संग केम होय ॥ चरम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वळी हे आनंदघन ! जो आत्माने रूप नथी तो बंधन शीरीते घटे ? एटले कर्मथी बंधावुं शीरीते संभवे. रूपविना बंधनो असंभव. ज्यारे बंध नहीं अने आत्माने त्रणेकाळें अबंधक मानशो तो पुण्य पापना क्षयथी जे मोक्ष थाय ते मोक्षनो पण असंभव अने मोक्षने अभावे सादि अनंत भांगाना संगनो पण असंभव होय ॥ ४॥

द्रव्यविना तेम सत्ता नवि लहेरे ॥ सत्ताविण स्यो रूप ॥ रूप
विना केम सिद्ध अनंततारे ॥ भावुं अकल स्वरूप ॥ चरम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई मनुष्यने पुछ्युं के पृथ्वी उपर घट छे ? तेणे पृथ्वी तरफ जोई

घट न दीठो त्यारे कह्युं के पृथ्वी ऊपर घट द्रव्य नथी. द्रव्यने अभावे सत्ता के० अस्तित्व पण न होय अने सत्ताने अभावे रूप के० स्वरूप पण शेनुं होय. माटे हे आनंदघन! रूपने अभावे वस्तुनो अभाव समजवो अने वस्तुने अभावे, एक, बे, त्रण, चार, एवी संख्यानो पण संभव नथी तो सिद्धनी अनंतता तो केम संभवे? माटे चरम जिनेश्वरनुं स्वरूप चिंतववा तमे कह्युं परंतु अकल स्वरूपनुं स्वरूप केम भावुं ते आप कहो ॥ ५ ॥

आतमता परिणति जे परिणम्यारे ॥ ते मुज भेदअभेद ॥ तदा
कारविण मारा रूपनुंरे ॥ ध्यावुं विध प्रतिषेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धचेतना तथा आनंदघनने चरम जिनेश्वर उत्तर आपे छे. आत्माने विषे रह्युं जे आत्मत्वधर्म तेने विषे आत्मतानुं परिणमवुं–तद्रूपथवुं, अर्थात् आत्मस्वरूपने विषे स्थिरताभावे– रूपातीत भावे अभेदोपचारे प्रवर्त्तवुं, तेवी परिणतिए परिणम्या एवा, ज्ञानदर्शनरूप आत्मा अने आत्मता ते ज्ञानदर्शन, आत्मामां अने मारामां एटलोज भेद छे. ते साकारी परमात्मा अने हुं सिद्ध निराकारी परमात्मा, माटे बहिरात्मपणुं तजी अंतरात्म स्वरूपवंत थइ मारा अभेद्य अछेद्यादि स्वरूपने विषे तदाकार थइ मारा रूपनुं ध्यावुं के० ध्यान करवुं तेतो विध के० ध्याननो विधि छे अने तदाकार थयाविना स्वरूप धर्मने अभावे अर्थात् बहिरात्मपणे ध्यान करवुं ते प्रतिषेध के० निषेध छे, एम जाणजो ॥ ६ ॥

अंतिम भवगहणे तुज भावनुंरे ॥ भावशुं शुद्धस्वरूप ॥ तइयें
आनंदघन पद पामशुंरे ॥ आतमरूप अनूप ॥ चरम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते सांभली आनंदघन बे हाथ जोडी वीर परमात्माने विनंति करेछे. अहो स्वामि! अंतिम भवगहणे के० भविष्यमां सर्वथा अभावी एवो जे छेल्लो भव अर्थात् चरमावर्त्तन, चरमकरण अने भवपरिणतिनो परिपाक, ए सर्व प्राप्त थशे त्यारे तुज भावनुं के० परमात्मस्वभावनुं मारा आत्मामां भावशुं के० चिंतवन करीश. ज्यारे परमात्मस्वभावनुं चिंतवन करीश त्यारेज जे अरूपी छे तथा जे अनुपमेय छे एवा आनंदघनपद के० मुक्तिपद, तेने प्राप्त करीश ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥ इति श्री ज्ञानसारजीकृत बालावबोध संपूर्ण ॥

॥ इति श्रीआनंदघनकृतचतुर्विंशतिजिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्रीशांतिनाथायनमः ॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृत द्रव्यगुणपर्यायनो रास ॥

॥ बालाबोधसहित लखियें बैयें ॥

॥ श्लोकः ॥

इंद्रश्रेणीनतं नत्वा । जिनं तत्वार्थदेशिनं ॥
प्रबंधे लोकवाचात्र । लेशार्थः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥

श्रीगुरुजितविजयमनधरी ॥ श्रीनयविजयसुगुरुआदरी ॥
आतमअरथीनेउपकार ॥ करुंद्रव्यअनुयोगविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीजितविजयपंमित अनेश्रीनयविजयपंमित एवेहुरुडागुरुने चित्तमां संज्ञारीने आत्मार्थी ज्ञानरुचि जीवना उपकारनेहेते द्रव्यानुयोगनो विचार करुंबुंजे अनुयोगते सूत्रार्थव्याख्यान तेहना चारज्ञेद शास्त्रेंकह्याडे १ आचारवचन आचारांग प्रमुखसूत्र ते चरणकरणानुयोग २ संख्याशास्त्र चंद्रप्रज्ञप्तिप्रमुखसूत्र ते गणितानुयोग ३ ज्ञाताप्रमुख आख्यायिकावचन तेकथानुयोग ४ षड्द्रव्यादिविचारते सूत्रमध्येसूत्रकृतांग तथाप्रकरणमध्ये संमतितत्वार्थप्रमुख महाशास्त्र तेद्रव्यानुयोग एचारज्ञेदमां द्रव्यानुयोग जे द्रव्यगुणपर्याय ते विचारेबे तेनोमहिमाकहेबे इहांप्रथम गुरुने नमस्कारकरीने प्रयोजनसहित अज्ञिध्येयदेखाड्युं. पहेलावेपदें नमस्कारकस्यो ते मंगलाचरणदेखाड्युं अने इहांअधिकारी आत्मार्थिजीवबे तथाआत्मार्थिने अवबोधथसे ते उपकाररूप प्रयोजनजाणवुं द्रव्यनो अनुयोगके० कथन तेइहांआत्मार्थि ज्ञानरुचिजीवनाउपकारनेअर्थेकरुंबुं ॥ १ ॥

विनाद्रव्यअनुयोगविचार ॥ चरणकरणानोनहिकोसार ॥
संमतिग्रंथेंज्ञाष्युंइस्युं ॥ तेतोबुद्धजनमनमांवस्युं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनो विचारकस्याविना केवलचरणसितरी तथाकरणसितरी प्रमुखनो सारकोइबेनही एवुंसंमतिग्रंथनेविषेकह्युंबे तेतो बुद्धजननामनमांवस्युं पण बाह्यदृष्टीना चित्तमांवसेनही. उक्तंच चरणकरणप्पहाणा ॥ ससमयपरसमयमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्ससारं ॥ णिछयसुद्धंनयाणत्ति ॥ १ ॥ वलीतेहीजदृढकरेबे ॥ २ ॥

शुद्धाहारादिकतनुयोग ॥ मोटोकहिउंद्रव्यअनुयोग ॥ ए
उपदेशपदादिकग्रंथे ॥ सांखलहीचालोशुनपंथे ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ बेतालीसदोषरहित शुद्धआहारलेउं इत्यादिकयोगछे पणतेसर्वे तनुके० न्हानायोगकहियें अने स्वसमयपरिज्ञानजे द्रव्यअनुयोगते मोटोयोगकह्योछे केमके शुद्धआहारादिकेंतो स्वाध्यायनुंज साधनछे एसांख उपदेशपद आददेइने ग्रंथोथीलेइने शुनपंथेंके० उत्तममार्गेंचालो पणबाह्यव्यवहार प्रधानकरीने ज्ञाननीगौणताकरवी ते अशुद्धमार्गजाणवो अनेजिहांज्ञाननी प्रधानता राखवी तेशुन उत्तममार्ग जाणवो जे ज्ञानादिकगुणनोहेतु गुरुकुलवासतेनेछांमी शुद्धआहारादिकनी यत्नावंतने महादोषें चारित्रहानि कहीछे यतः गुरुदोषारंनितयालब्धकरणयत्नतोनिपुणधीनिः ॥ सन्निंदादेश्च तथाज्ञायतेयन्नियोगेन इतिषोडशके ॥ ३ ॥

एयोगेंजोलागेरंग ॥ आधाकर्मादिकनहिनंग ॥ पंच
कल्पनाष्येंइमनण्युं ॥ सदगुरुपासेइस्युंमेंसुण्युं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे द्रव्यानुयोगविचाररूप जेज्ञान तेनेयोगें जोअनंग सेवारूप रंगलागे तो गुरुकुलवासें समुदायमध्ये ज्ञानान्यासकरतां कदाचित्आधाकर्मादि दोषलागे तोपण चारित्रनंगथायनही केमके नावशुद्धि बलवंत छे माटे. एरीतें पंचकल्पनाष्यमां कह्युं छे तथा सद्गुरुपासेथीपण एमसांनल्युं अतएव कल्पाकल्पतो अनेकांत शास्त्रेकह्युंछे ॥ आहागम्माइन्नुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलितेवियाणिज्जाअणुवतलित्तत्तिवापुणोएतेहिंदोहिंठाणेहिं ववहारेणविज्जाइ एतेहिंदोहिंठाणेहिंअणायारं तुजाणए ॥ १ ॥ एमबीजाअंगनापहेलाअध्ययनमांकह्युंछे तथा किंचिछुद्धंकल्प्यमकल्प्यंस्यादकल्प्यमपिकल्प्यं ॥ पिंडःशय्यावस्त्रंपात्रंवानेषजाद्यंवा ॥ १ ॥ देशंकालंपुरुषमवस्थामुपयोगशुद्धिपरिणामान् ॥ प्रसमीक्ष्यनवतिकल्प्यं नैकांतात्कल्प्यतेकल्प्यं एमप्रशमरतिग्रंथमांकह्युंछे ॥ ४ ॥

बाह्यक्रियाछेबाहिरयोग ॥ अंतरक्रियाद्रव्यअनुयोग ॥ बाह्य
हीनपणज्ञानविशाल ॥ नलोकह्योमुनिउपदेशमाल ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आवश्यकादिरूपबाह्यक्रियातेतो बाह्ययोगछे अनेद्रव्यानुयोगजे स्वसमय परिज्ञानते अंतरंगक्रियाछे माटेजे बाह्यक्रियायेंहीनहोय पणज्ञानविशालबहुश्रुतहोय एवो मुनीश्वर ते उपदेशमालामां नलोकह्योछे यतः नाणाहिउंवरतरं हीणोविहुपवयणंपनावंतो ॥ नयडुक्करंकरितो सुठ्ठुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १ ॥ हीणस्सविसुद्धपरुवगस्स

नाणाहियस्सकायव्वं तेमाटे क्रियाहीनतादेखीनेपण ज्ञानवंतनी अवज्ञा न करवी तेहने ज्ञानयोगेकरीनेजप्रजाविकजाणवुं ॥ ५ ॥

द्रव्यादिकचिंतायेंसार ॥ शुक्लध्यानपणलहियेंपार ॥ ते
माटेएहिजआदरो ॥ सदगुरुविणमतजूलाफिरो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुछेजे क्रियाहीन ज्ञानवंतनेजलोकह्योतेतो दीपकसम्यक्तनी अपेक्षायेंकह्यो पणक्रियाहीनतायें मात्र ज्ञानथीज पोतानो उपकार न थाय एमकहे तेनी शंकाटालवाने द्रव्यादिकज्ञान तेहिजशुक्लध्यानद्वारें मोक्षनुं कारणछे माटेउपादेयछे ए द्रव्यादिकनी चिंतवणायें शुक्लध्याननोपण पारपामियें केमके आत्मद्रव्य गुणपर्यायजेदचिंतायें पण शुक्लध्याननो पहेलोपायोहोय अने तेनीज अनेदचिंतायेंशुक्लध्याननो वीजोपायोहोय तथाशुद्धद्रव्य गुणपर्यायनीजावनायें सिद्धसमापत्तिथाय तेतो शुक्लध्याननुंफलछे एमप्रवचनसारोद्धारमध्येकह्युंछे जोजाणइअरिहंते दव्वगुणपज्जवंतेहिं ॥ सोजाणइअप्पाणं मोहोखलुजाहितस्सलयं ॥ १ ॥ तेमाटेएहिज द्रव्यानुयोगने आदरो एहिजउपायछे पणसद्गुरुविना स्वमतिकल्पनायें जूलाफिरसोनही ॥ ६ ॥

एहनोजेणेपाम्युंताग ॥ उंघेएहनोजेहनेराग ॥ एवेविण
त्रीजोनहिसाध ॥ जाष्योसंमतिअरथअगाध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेज्ञानविना मात्रचारित्रथीज संतुष्टथायछे तेहनेशिक्षा कहेछे एक तो एद्रव्यानुयोगनो जे ताग के० पारपामी संमतिप्रमुख तर्कशास्त्रजणीने जेगीतार्थ थयो ते तथा वीजो उंघे के० सामान्यप्रकारें एद्रव्यानुयोगनो जेनेरागछे तेगीतार्थनिश्रित एवेहुविना त्रीजोसाधुनही एवोअगाधअर्थ संमतिग्रंथमांकह्योछे तेमाटेज्ञानविना चारित्रजनहोय उक्तंच गाथा ॥ गीयत्थोयविहारो वीउंगीयत्थनिस्सिउंजणीउं ॥ इत्तो तइयविहारो नाणुणाउंजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एटलोविशेष जे चरणकरणानुयोग दृष्टी निशीथ कल्प व्यवहार दृष्टीवादीध्ययने जघन्यमध्यमोत्कृष्ट गीतार्थजाणवा द्रव्यानुयोगदृष्टीते संमत्यादिक तर्कशास्त्रपारंगामीज गीतार्थजाणवा अने तेनीनिश्रायेंज अगीतार्थनेंचारित्रकहेवुं ॥ ७ ॥

तेकारणगुरुचरणआधीन ॥ समयसमयइणयोगेलीन ॥ सा
धुजेकिरियाव्यवहार ॥ तेहिजअममोटोआधार ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनी लेशमात्रप्राप्ति पोताना आत्मानें कृतकृत्यताकहेछे ते माटे द्रव्यानुयोगनी बलवत्तानेंहेतें गुरुचरणनें आधीनतायेकरी मतिकल्पनापरि-

हरीनें समयसमय एद्रव्यानुयोगें लीन के० आसक्तथका जेक्रियाव्यवहारसाधु छेयें तेहिजश्रमनें महोटोआधारछे केमके एनाथी इच्छायोगसंपजे तेहलुंलक्षणकहेछे कर्तु-मिच्छोःश्रुतार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः ॥ विकलोधर्मयोगोय मिच्छायोगउदाहृतः ॥ १ ॥ एमललितविस्तरादिग्रंथनेविषेकह्युं एमइच्छायोगेंरहीनें हुंपरोपकारनेअर्थें द्रव्यानुयोग-नो विचारकहुंछु पणएटलेंज संतुष्टकरवोनही विशेषार्थें गुरुसेवामूकवी नही एहित-शिक्षाआगलीगाथामांकहेछे ॥ ८ ॥

संमतितत्वार्थमुख्यग्रंथ ॥ मोटाजेप्रवचननिर्ग्रंथ ॥ तेहनो
लेशमात्रएलह्यो ॥ परमारथगुरुवयणेरह्यो ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ संमतितत्वार्थ प्रमुखग्रंथ जे महोटानिर्ग्रंथ प्रवचनरूपछे तेनोलवलेशमात्र एलह्योके० आप्रबंधमांबांध्योछे पणपरमार्थें गुरुवचनरहेजो थोडुंजाणीने गर्वकरशो-नही अधनेनधनंप्राप्तं तृणवत्मन्यतेजगत् एदृष्टांते माटेज ऊपरलाचारनय ते अति-गंभीरछे घणाने न परिणमे एमजाणीने सिद्धांते पेहेलादेखाड्यानथी अनेजेगंभीर होयगुरुआधीनहोय तेहनेजदेखाडवाकह्याछे ॥ ९ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धनधनसंप्रतिसाचोराजा ॥ ए देशी ॥

गुणपर्यायतणूंजेभाजन ॥ एकरूपतिहुंकालेंरे ॥
तेहद्रव्यनिजजातिकहियें ॥ जसनहिभेदविचालें
रे ॥ जिनवाणीरंगेमनधरियें ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ गुण तथा पर्यायनो जे भाजनके० स्थानक तेजेहनोअतीत अनागत तथा वर्त्तमान एत्रणेंकालें एकस्वरूपेंहोय पणपर्यायनीपरेफिरेनही तेहनें निजजातिके० पोतानी स्वजाति द्रव्यकहियें जेमज्ञानादिक गुणपर्यायनुं भाजन तेजीवद्रव्यअने रूपादिगुणपर्यायनुं भाजनते पुद्गलद्रव्य तथा रक्तादि घटादि गुणपर्यायनुं भाजन ते मृद्द्रव्य वलीतंतुतेपटनीअपेक्षायें द्रव्य अनेतंतुअवयवनी अपेक्षायें पर्याय केमके पटनेविचालें पटावस्थामध्ये तंतुनोभेदनथी अनेतंतुअवयव अवस्थामध्ये अन्य-त्वरूप भेदछे माटे पुद्गलस्कंधमां द्रव्यपर्यायपणो ते अपेक्षायें जाणवो इहांकोइ कहेशेजे एरीतें द्रव्यत्वपणुं स्वभाविकनथयुं पण अपेक्षिकथयुं तेने उत्तर जे सघलवस्तुनो व्य-वहारते अपेक्षायेंज होयछे माटे इहांदोषनथी जे समवायी कारण प्रमुखें द्रव्यलक्षण मानेछे तेनेपण अपेक्षा अवश्य अनुसरवी गुणपर्यायवत् द्रव्यं इतितत्वार्थे एजिनवा-णीनेंरंगके० विश्वासें मनमांधरियें ॥ १ ॥

धरमकहीजेगुणसहभावी ॥ क्रमभावीपर्यायोरे ॥ भिन्नअभिन्न
त्रिविधतियलक्षण ॥ एकपदारथपायोरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सहभावीके० यावत् द्रव्यभावी जेधर्म तेनेगुणकहियें जेमजीवनोगुण उपयोग अने पुद्गलनोगुण ग्रहणपणो तथा धर्मास्तिकायनो गतिहेतुत्वगुण वलीअधर्मास्तिकायनो स्थितिहेतुत्वगुण अने आकाशद्रव्यनो अवगाहनाहेतुत्वगुण कालद्रव्यनो वर्त्तनाहेतुत्वगुण एरीतेंद्रव्यना स्वभाविकधर्म ते गुणजाणवा तथा क्रमभाविके० यावत् द्रव्यभावी ते पर्यायकहियें जेम जीवने नरनारकादिक पर्याय तथा पुद्गलने रूपरसादि परावर्त्तिते पर्यायजाणवा एम द्रव्यादिक ते द्रव्य गुण पर्याय ए त्रणरीतें भिन्न छे तथा लक्षणादिकथी अभिन्नछे अने प्रदेशना अविभागथी त्रिविधछे केमके नवविधोपचारें एकेकमां त्रणत्रणभेद आवे ते नवविधोपचार कहेछे १ द्रव्यें द्रव्योपचार २ द्रव्ये गुणोपचार ३ द्रव्यें पर्यायोपचार ४ गुणेद्रव्योपचार ५ गुणेगुणोपचार ६ गुणेपर्यायोपचार ७ पर्यायें द्रव्योपचार ८ पर्यायें गुणोपचार ९ पर्यायें पर्यायोपचार तथा तियलक्षणके० उत्पादव्यय अने ध्रुवस्वरूपछे एहवाभावने एकपदार्थ जैनप्रमाणे पाम्यो थकोछे एह्वारूप पाछलावेपद जाणवा ॥ २ ॥

जेममोतीउज्वलतादिकथी ॥ मोतीमालाअलगीरे ॥ गुण
परयायव्यक्तिथीजाणो ॥ द्रव्यशक्तितेमवलगीरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे आढालमां प्रथम द्रव्य गुणपर्यायनो भेदयुक्ति देखाडेछे जेम मोतीथकी तथा मोतीना उज्वलतादिक धर्मथकी मोतीनीमाला अलगीछे तेमज द्रव्यनीशक्ति ते गुणपर्यायनी व्यक्तिथी अलगीछे तथा एकप्रदेश संबंधेवलगीछे एटले एमजे मोती ते पर्यायनेठामें जाणवा अने उज्वलतादिक धर्म ते गुणने ठामे जाणवो तथा माला ते द्रव्यनेठामे जाणवी एम दृष्टांत जोडवो एरीतें घटादिद्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाणें सामान्य विशेषरूप अनुभवेछे ते सामान्य उपयोगें मृत्तिकादि सामान्य भासेछे विशेष उपयोगें घटादिक विशेष भासेछे तेमांहे जे सामान्य ते द्रव्य जाणवुं अने विशेषतेगुण पर्यायरूप जाणवा३

उरधतासामान्यशक्तिते ॥ पूरवअपरगुणकरतीरे ॥ पिंडकुसू
लादिकआकारे ॥ जेममाटीअणफिरतीरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली गाथामां द्रव्यने सामान्य कह्युं ते सामान्यना बेप्रकारछे ते देखाडेछे एकउर्ध्वता सामान्यरूप द्रव्यशक्ति ते तेहनेकहियें जे पूरवके० पहेला अने अपर के० आगलें गुण के० विशेष तेने करती ते सर्वमां एकरूपे रही छे जेम पिंड के०

माटीनो पिंम्रो अने कुसूलादिके० कोठीप्रमुख एवा मृत्तिकाना अनेक आकारफिरेछे पण तेमां माटी फिरतीनथी ते पिंम्र कुसूलादिक आकारने ऊर्ध्वता सामान्य कहियें अने जो पिंडकुसूलादिक पर्यायमां अनुगत एक मृद्द्रव्य न कहियेंतो घटादि पर्यायमां अनुगत घटादि द्रव्यपण न कहेवाय तेथी सर्व विशेषरूप थातां क्षणिकवादि बौद्धमत आवे अथवा सर्वद्रव्यमां एकज द्रव्यआवे माटे घटादिद्रव्य अने तेमां सामान्य मृदादिद्रव्य अनुभवने अनुसारें परापर ऊर्ध्वता सामान्य अवश्यमानवा घटादि द्रव्य ते रक्तादिक थोडा पर्यायने व्यापेछे अने मृदादि द्रव्य ते रक्तादिक घटादिक घणापर्यायने व्यापेछे एम नरनारकादिकपणुं तेपण द्रव्यनो विशेष जाणवो ए सर्व नैगमनयनुं मत अने शुद्धसंग्रहनयनेमतेतो सदद्वैतवादें एकज द्रव्यआवे एमजाणवुं ॥४॥

भिन्नविगतमांरूपएकजे ॥ द्रव्यशक्तिजगदाखेरे ॥ तेतिर्यक्
सामान्यकहीजे ॥ जेमघटघटपणोराखेरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजोभेद देखाडेछे ते भिन्नविगतमांके० भिन्नप्रदेशी विशेषमां जेद्रव्य पोतानीशक्ति एकरूप एकाकारछे ते देखाडेछे तेतिर्यक् सामान्यछे जेम घटघटपणे घटत्वराखेछे इहां कोइपुछे जे घटादिक भिन्नव्यक्तिमां जेमघटत्वादिक एकसामान्यछे तेमज पिंम्रकुसूलादि भिन्नव्यक्तिमां मृदादिक एकसामान्यछे तो तिर्यक् सामान्य अने ऊर्ध्वता सामान्यनो स्योविशेषछे तेनेकहियेंजे देशभेदें जिहांएकाकारप्रतीतऊपजे तिहांतिर्यक् सामान्यकहियें अने जिहांकालभेदें अनुगताकारें प्रतीत ऊपजे तिहां ऊर्ध्वता सामान्य कहियें कोइक दिगंबरानुसारी एमकहेछे जे षट्द्रव्यने कालपर्यायरूप ऊर्ध्वताप्रचयछे अने कालविना पांचद्रव्यने अवयव संघातरूप तिर्यक् प्रचयछे तेनेमते तिर्यक् प्रचयनो आधार घटादिक तिर्यक् सामान्य थाय पण परमाणुरूप प्रचयपर्यायनो आधार भिन्नद्रव्य जोइयें माटे पांचद्रव्यने खंध देश प्रदेशभावेंज एकअनेक व्यवहार ऊपपादवो पण तिर्यक् प्रचय नामांतर न कहेवुं ॥ ५ ॥

शक्तिमात्रतेद्रव्यसर्वनी ॥ गुणपर्यायनीलीजेरें ॥ कार्यरूप
निकटदेखीने ॥ समुचितशक्तिकहीजेरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेऊर्ध्वतासामान्यशक्तिनावेभेददेखाडेछे तेमांजे सर्वद्रव्यनी पोतपोताना गुणपर्यायनी शक्तिमात्रलीजे तेओघशक्तिकहियें अनेजेकार्यरूप निकट के० वहेलुं ऊपजतुं देखीयें तेकार्यनीअपेक्षायें तेनेसमुचितशक्तिकहियें समुचितके० व्यवहारयोग्य ॥६॥

घृतनीशक्तियथातृणभावें ॥ जाणीपणनकहायरे ॥ दुग्धा
दिकभावेतेजनने ॥ भाषीचित्तसुहायरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इहां दृष्टांत कहेछे जेमपुद्गल द्रव्यमां घृत उपजवानीशक्ति तृणभावेंछे नहींकां तृणआहारथी धेनुदुध आपेछे तेदुधमां घृत नीपजवानीशक्तिकिहांथीआवी एम अनुमान प्रमाणें तृणमां घृतशक्तिजाणी पण कहेवायनही माटे तेनेउघशक्ति कहियें अने जोतृणने दुग्धादिकभावेंके० दूध दहीप्रमुखने परिणामें घृतशक्ति कहियेंतो ते भाषीथकी जनके० लोकना चित्तमां सुहायछे माटे तेने समुचितशक्ति कहियें एटले अनंतरकारणमां समुचितशक्ति कहेवी अने परंपरकारणमां उघशक्ति कहेवी एविवेकछे एबेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एबेबीजानाम पणकहेछे तेजाणवां ॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुद्गलनेआवर्त्तेरे ॥ उघेंसमुचित
जेमवलीकहियें ॥ छेहलेंतेआवर्त्तेरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे एशक्ति ते आत्मद्रव्यमां फलावेछे जेम प्राणीके० भव्यजीवने पूरव के० पहेला अनंता पुद्गल परावर्त्तवित्या तेमांपण उघेंके० सामान्यें धर्मशक्ति कहियें जोनकहियें तो छेहेले पुद्गल परावर्त्तेंते शक्ति आवेनही नासतो विद्यतेभाव इत्यादि वचनात् अने छहेले पुद्गल परावर्त्तेधर्मेनी समुचितशक्ति कहियें अतएव अचरम पुद्गलपरावर्त्तभाव बालकाल कह्युंछे अने छहेलो पुद्गल परावर्तधर्मे यौवनकाल कह्युंछे अचरम परिअट्टेसु कालोभव बालकालमो भणिउ ॥ चरमो उधम्मजुव्वण कालोतह चित्तभेउत्ति ॥ १ ॥ एयोगनीबीजीवीसीमध्ये कह्युंछे ॥ ८ ॥

कारयभेदेशक्तिभेदइम ॥ व्यवहारेंव्यवहरियेंरे ॥ निश्चय
नानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी उघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनीपामियें केमके कार्यनाभेदेंशक्तिनोभेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके एव्यवहारनय ते कार्यकारणभेदमानेछे अने निश्चयनयथी द्रव्यना नानाप्रकारना कार्यकारण ते एकशक्तिस्वभावज हृदयमांधरियें नहीतोस्वभावभेदेंद्रव्यभेदथाय अनेव्यवहारनयें ते तेकालादिकनीअपेक्षायें एकनेअनेक कार्यकारण स्वभावमानता कोइदोषनथी कारणांतरनी अपेक्षापण स्वभावमांज अंतर्भूतछे तेमाटे तेनुंपण निष्फलपणुं नथाय तथाशुद्धनिश्चयनयनेमतेंतो कारणकार्यतेमिथ्याछे आदावंतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्तथा इतिवचनात् कार्यकारण कल्पनारहित शुद्ध अविचलितरूप द्रव्यजछे एम जाणवुं एशक्तिरूप द्रव्य वखाण्युं ॥ए॥

गुणपर्यायविगतबहुभेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ शक्ति
रूपगुणकोइकभाषे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥ जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवे व्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेछे तेगुणपर्यायनीव्यक्तिवहुन्नेदके॰ अनेकप्रकारें निजनिजजाति सहन्नाविक्रमन्नावि कल्पनाकृत आपआपणे स्वन्नावेवर्तेछे कोइक दिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण न्नाषेके॰ कहेछे ते आवीरीतेजे जेम द्रव्यगुणपर्यायनुं कारण द्रव्यछे तेमगुणपर्यायनुं कारण गुणछे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथान्नाव जेम नरनारकादिक अथवा द्व्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्याय गुणनो अन्यथान्नाव नही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा न्नवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एम एकद्रव्य बीजोगुण एजातिशाश्वत अने पर्यायथी अशाश्वत एम आव्युं एम कहेछे ते निरतेके॰ रुडेमार्गे नही केमके एकल्पना शास्त्रथी तथा युक्तियें मिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणन्निन्ननन्नाषीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेहनो
न्नेदविवक्षावशथी ॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे ॥ जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जेपर्यायथकीगुणते न्निन्नके॰ जूदोन्नाष्योनथी एमसंमति ग्रंथनेविषे व्यक्तिके॰ प्रगटअक्षरेकह्युंछे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउं अणेगकरणे गुणत्तितुल्लठा ॥ तहविणगुणत्तिन्नणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥१॥ अर्थ ॥ जेम क्रमन्नाविपणुं पर्यायनुंलक्षणछे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणछे द्रव्यतो एकजछे अनेज्ञानदर्शनादिकन्नेदकरेछे तेपर्यायछे पणगुणनकहियें केमके द्रव्यपर्यायनीदेशना न्नगवंतनीछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुछे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीन्निन्ननथी तोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनांनाम किमकह्योछो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके॰ न्नेदनयनीकल्पना तेहथीजेम तैलस्यधारा इहां ते लने धारा न्निन्नकहीदेखाड्या पण तेल अनेतेलनीधारा न्निन्ननथी तेमसहन्नावी क्रमन्नावी कहीनें गुणपर्याय न्निन्नकहीदेखाड्या पणपरमार्थेन्निन्ननथी एरीतें जेहनोन्नेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें जेम उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरित गुण तेपणशक्तिधरेंनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्या
रथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेपर्यायथीन्निन्नमानेछे तेहनेदूषणआपेछे के जोगुणएहवोत्रीजोपदार्थद्रव्यपर्यायथी जूदोन्नावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके॰पामियें पणतेतो किहांकह्यानथी सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ२ पर्यायार्थएबेहुजनयकह्याछे अनेजोगुण होय तोत्रीजोगुणार्थनयपणकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयान्नगवया दव्वठियपज्जवठियाणिपया ॥ जइपुणगुणोविहुंतो गुणठियणउंविजुज्जंतो ॥१॥ जंचपुण न्नगवया तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ पज्जवसणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥२॥रूपादिकनेंगुणकहीनें सूत्रेवोलाव्यानथी प-

एवन्नपज्जवा गंधपज्जवा इत्यादिकपर्यायशब्दें बोलाव्या ठे तेमाटेपर्याय कहियें पण गुण कहियें नही अने एगगुणकालए इत्यादिकठामें जे गुण शब्दछेते गणितशास्त्र सिद्धपर्यायविशेषसंख्यावाचीठे पणतेवचनगुणास्तिकनयविषयवाचीनथीउक्तंचसंमतिग्रंथे जंपइअब्हिसमए एगगुणोदसगुणोअणंतगुणो ॥ रूवाइपरिणामो न्नन्नइतम्हागुण विसेसो ॥१॥ गुणसद्दमंतरेणावि तंणुपज्जवविसेससंखाणं ॥ सिज्जइ नवरंसंखाणे ॥ सब धम्मोणय गुणोत्ति ॥ २ ॥ जहदससुदसगुणमिय ॥ एगंमिदसत्तणं समंचेव ॥ अहियंमिविगुणसद्दे तहेवइयंपिदठवं ॥ ३ ॥ एम गुण ते परमार्थ दृष्टियें पर्यायथी जिन्न नथी तो तेने द्रव्यनी परें शक्तिरूप केवी रीतें कहियें ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुंहोवे ॥ तोद्रव्यैंसुंकीजेरे ॥ गुणपर्याय
पटंतर केवल ॥ गुणपर्याय कहीजेरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजेपर्यायनुं दलतेगुणछे माटे गुणनेजेशक्तिरूपकहेछे तेहने दूषणआपेछे जोगुणपर्यायनुं दलके० उपादानकारणहोय तोद्रव्यसुंकीजे द्रव्यनोकाम गुणेजकीधो माटे १ गुण २ पर्याय एबेजपदार्थकहो पणत्रीजोद्रव्यपदार्थनहोय कोइकहेसे जे द्रव्यपर्याय तथागुणपर्यायरूपकार्यन्निन्न ठे तेमाटे एकद्रव्य बीजुंगुणरूप कारणन्निन्न कल्पियें एम कहेछे तेजूठो ठे केमके कार्यमांकारणशब्दनोप्रवेश ठे तेथीकारणन्नेदें कार्यन्नेद सिद्धथाय अनेकार्यन्नेदसिद्धथयोहोय तो कारणन्नेद सिद्धथाय नहिकां अन्योन्याश्रय नामेदूषणउपजेमाटे गुणपर्याय जे कहियें ते गुणपरिणामनो जे पटंतर न्नेदकल्पनारूप तेथीजकेवलसंन्नवेछे पण परमार्थें नही अनेद्रव्यगुणपर्याय ए त्रण नामकहियें ठेयें तेपणन्नेदोपचारेंजकहियेंछेयें एमजाणवुं ॥ १३ ॥

एक अनेकरूपथी एणीपरे ॥ न्नेद परस्पर न्नावोरे ॥ आधा
राधेयादिक न्नावें ॥ इमजन्नेद मन लावोरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एणीपरेके० ए रीतें द्रव्य एक अने गुणपर्याय अनेक ए रूपें परस्पर के० माहोमांहे न्नेदन्नाव विचारो एमज आधार आधेय प्रमुख न्नावेंके० स्वन्नावें करीने एनो न्नेद मनमां लावो केमके परस्पर अवृत्तिधर्म परस्परमां न्नेद जणावे ॥ १४ ॥

द्रव्य आधारे घटादिक दीसे ॥ गुणपर्याय आधेउरे ॥ रूपा
दिक एकेंद्रियगोचर ॥ दोइ घटादिक वेउरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे तेहीज विवरीदेखाडेछे जेघटादिकद्रव्यते आधारदेखायछे अनेएघटना रूपादिकते एमजाणियेछेयें जेगुणपर्याय रूपरसादिक तथानीलपीतादिक ते आधेय द्र-

व्यक्तपरेंरह्याछे एमआधाराधेयन्नावें द्रव्यथी गुणपर्यायने न्नेदछे तथारूपादिकगुणपर्याय एकेक इंद्रियनो गोचरके० विषयछे जेम रूपते चक्कुरिंद्रियेंज जणायछे तथारसते रसनेंद्रियेंजजणाय इत्यादिक अने घटादिकद्रव्यछेते चक्कुइंद्रिय अनेस्पर्शइंद्रिय एदोइके० बेंद्रियेंकरीजणायछे एनैयायिकमत अनुसरीनेकह्युं अनेस्वमते गंधादिकपर्यायते घ्राणेंद्रियादिकेंपण द्रव्यप्रत्यक्षछे नहीकां कुसुमगंधुंछुं इत्यादिक ज्ञानने न्रांतिपणोथायछे तेजाणवुं एमएकअनेक इंद्रियग्राहकपणे द्रव्यथी गुणपर्यायने न्नेदजाणवुं अने गुणपर्यायने मांहोमाहें न्नेदते स्वन्नावी क्रमन्नावीपणेथाय एकत्वपनाथीजन्नाववुं ॥ १५ ॥

संज्ञा संख्या लक्षणथी पण ॥ न्नेद एहोनो जाणीरे ॥ सुजश
कारणी सुन्नमति धारो ॥ डुरमति वेलि कृपाणीरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाके० नाम तेथीद्रव्यनोन्नेद एटलेनामन्नेदेंन्नेद तेमांवली एकद्रव्यनामथीन्नेद बीजोगुणनामथीन्नेद त्रीजोपर्यायनामथीन्नेद तथासंख्यातेएकबेत्रणनीगणना तेथीन्नेद एटलेछद्रव्यछे गुणअनेकछे पर्यायअनेकछे अनेलक्षणथीन्नेदतेनअनेक पर्यायगमन द्रव्यलक्षण नएकथीअन्यने न्निन्नकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वेतोव्याप्ति तेपर्यायलक्षण एमद्रव्यगुणपर्याय एहोनोमाहोमांहेन्नेदजाणीने उत्तमयशनीकरनारी न्नलीमतिनेधारो तेकहेवीछे जेडुरमतिके० द्रव्याद्वैतपक्षनीमाठीमतितेरूपणीजेवेली तेहनेविषे कृपाणीके०कोहाडीसमानछे एढालमां द्रव्यगुणपर्यायनोन्नेददेखाड्यो ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शालिन्नद्र न्नोगी रह्यो ॥ एदेशी ॥

एकांतेजोन्नाषियेंजी ॥ द्रव्यादिकनोरेन्नेद ॥ तोपरद्रव्यपरेंहुएजी ॥
गुणगुणीन्नावउछेदरे ॥ न्नविका ॥ धारोगुरुउपदेश ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेजेद्रव्यमां एकांतेन्नेदमानेछे तेनेअन्नेदपक्ष अनुसरीने दूषणदीयेछेद्रव्यादिक के० द्रव्यगुणपर्यायनोजो एकांतेन्नेदन्नापियें तो परद्रव्यनीपरें स्वद्रव्यने विषे पण गुणगुणी न्नावनो उछेदथयीजाय जेमजीवद्रव्यना गुणज्ञानादिकछे तेनोगुणी जीवद्रव्य तथापुफलद्रव्यनागुणरूपादिकछे तेनोगुणी पुफलद्रव्यछे ए व्यवस्थाशास्त्रप्रसिद्धछे तेमांन्नेदमानतां तेलोपाय जीवद्रव्यने पुफलगुणथी जेम न्नेदछे तेमपोतानागुणथीपणन्नेदछेतोअमुकद्रव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्यवहारछे तेनो विलोपथयीजाय माटेद्रव्यगुणपर्यायनो अन्नेदजसंन्नवे एहवो अन्नेदनयनागुरुनो उपदेशछे तेने हेन्नव्यप्राणीतुमेधारो आदरो जेमआत्मद्रव्यशुद्धथाय ॥ १ ॥

द्रव्यैंगुणपर्यायनोजी ॥ छेअभेदसंबंध ॥ भिन्नतेहजो
कल्पियेंजी ॥ तोअनवस्थाबंधरे ॥ भ० ॥ धा० ॥२॥

अर्थ ॥ वली अभेद उपरयुक्ति कहेछे द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो जे संबंधते अभेदजछे केमके जो द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो समवायनामे संबंधने भिन्नकल्पियें तो अनवस्थादोषनुं बंधनथाय जेथी गुणगुणथीअलगो समवायसंबंधकहियेंतो तेसमवायनेपण अनेरोसंबंधजोइयें वली ते संबंधने पण अनेरो संबंध जोइयें एमकरतां किहांपण ठहेराव न थाय अने जोसमवायनो स्वरूप संबंधनेज अभिन्न मानियें तो गुणगुणीने स्वरूप संबंध मानतां सुंविघटेछे जे फोकटनवा संबंध मानोछो ॥ २ ॥

सुवर्णकुंभलादिकहुउंजी ॥ घटरक्तादिकभाव ॥ एव्यव
हारनसंभवेजी ॥ जोनअभेदस्वभावरे ॥ भ०॥धा० ॥३॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनमाने तेहनेबाधककहेछे जे सुवर्णके० सोनुंतेकुंभलथयुं तथा घमोप्रथमश्यामहतो तेहिजरातोवर्णथयो एहवोसर्वलोकनोजे अनुभवसिद्धव्यवहारछे तेजोद्रव्यादिकभणने अभेदस्वभावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खंधदेशभेदेंहुएजी ॥ बमणीगुरुतारेखंध ॥ प्रदेशगु
रुतापरिणामेंजी ॥ खंधअभेदसंबंधरे ॥ भ० ॥ धा०॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनहीमाने तेहनेबीजुंबाधककहेछेजे खंधके० अवयवी अने देशतेअवयव एहोनेजोभेदेंजमानियें तो बमणोभार खंधमांहेंथवोजोइयें जेमाटे सोतंतुनोजेपटछे ते सोतंतुआमांजेटलोभार तेटलोजभार तेनापटमांपण थायछे तथा जेकोइनवानैयायिक एमकहेछे जे अवयवनाभारथी अवयवीनो भार अत्यंतहीनछे तोतेहनेमतें द्विप्रदेशादिकखंधमांहे किहांपणउत्कृष्टगुरुता नथवीजोइयें माटेद्विप्रदेशादिकखंधते एकप्रदेशादिकनीअपेक्षायें अवयवीछे अनेपरमाणुमांहेजो उत्कृष्टगुरुत्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमांहेमानवाजोइयें अनेद्विप्रदेशादिकमां न मानवाजोइयें अनेभेदनयनो बंधनमानियेंतो प्रदेशनोभार तेहिजखंधभारपणे परिणमे जेमतंतुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेंगुरुतावृद्धीनोदोषकह्योतेनलागे ॥ ४ ॥

भिन्नद्रव्यपर्यायनेजी ॥ भवनादिकनेरेएक ॥ भाषेंकिम
दाखेनहीजी ॥ एकद्रव्यमांविवेकरें ॥ भ० ॥ धा० ॥५॥

अर्थ ॥ वलीजेद्रव्यादिकने अभेदनथीमानता तेहनेउलंभोआपेछे भिन्नद्रव्यजे पाषाण काष्ट पृथ्वी जलादिकतेनोपर्यायजेभवनादिक घरप्रमुख तेहनेतुंएककहेछे जे

एकघरइत्यादिक लोकव्यवहारछे तोएकद्रव्यमां द्रव्यगुणपर्यायनोअभेदहोय एहवो विवेक शावास्तेनथीकहेतो माटेजेआत्मद्रव्य तेहिजआत्मगुण अनेतेहिजआत्मपर्याय एहवो व्यवहारअनादिसिद्धछे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायअभेदथीजी ॥ द्रव्यनियतव्यवहार ॥ परिणति
जेछेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ भवि० ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीजीवद्रव्य अजीवद्रव्यइत्यादिक जे नियतके० व्यवस्थासहितव्यवहार थायछे तेगुणपर्यायनाअभेदथीथायछे जेमज्ञानादिकगुणपर्यायथी अभिन्नतेजीवद्रव्य अनेरूपादिक गुणपर्यायथी अभिन्नतेअजीवद्रव्य नहीकांद्रव्यसामान्यथी. गुणपर्यायनी विशेषसंज्ञानथाय १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामछे पणस्वजाति त्रणनेएकत्वपरिणामछे माटेएत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मद्रव्य ज्ञानादिकगुण तथातेहनापर्याय एसर्वेएकजआत्माकहियें तथा जेम १ रत्न २ कांति ३ ज्वरापहारशक्ति ए त्रणेनेएकजपरिणामछे तेमद्रव्यगुणपर्यायनेपण जाणवुं ॥ ६ ॥

जोअभेदनहीएहनेंजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अछतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविषाणपरेंजोयरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनमाने तेहनेदोषदेखाडेछे जोएद्रव्यगुणपर्यायने अभेदनथी तो कारणकार्यनेपण अभेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम नीपजे अनेकारणमांहेकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे अछतिकार्यवस्तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविषाण शशलानाशिंगडा माटेजोकारणमांहे कार्यनीसत्तामानियेंतो अभेदसहजेजआव्यो ॥ ७ ॥

द्रव्यरूपछतिकार्यनीजी ॥ तिरोभावनीशक्ति ॥ आविर्भावें
नीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोकारणमांहे कार्यछपनाअगाउ जोकार्यनीसत्ताछे तोकार्यदर्शनकेमथतुंनथी एहवीशंकाकरनारने उत्तरआपेछे जे कार्यछपनोनथी तेवारेंकारणमांहे कार्यनीद्रव्यरूपेंतिरोभावनीशक्तिछे तेथीकार्यजणातुंनथी पणसामग्रीमले तेवारें गुणपर्यायनीव्यक्तिथीआविर्भावके० प्रगटभावथायछे तेथीकार्यदेखायछे तिरोभाव तथाआविर्भावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायविशेषजजाणवा तेथीआविर्भाव नेसत्असत्विकल्पेंदूषणहोयनही केमके अनुभवनेअनुसारेंपर्यायकल्पियें ॥ ८ ॥

नैयायिकजाषेंइस्युंजी ॥ जिमअछतानुंरेज्ञान ॥ होवेविषय
अतीतनुंजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुंकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे तेह-नुंजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमिलेनि-पजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुंकारणदंडादिकअमेकहि-येंछैयें तिहांलाघवछे तुंमारेमतेघटाजिव्यक्तिनुं दंडादिककारणकहेवुंतिहांगौरवहोय बीजुंअजिव्यक्तिनुंकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी माटेजेदपक्षजघटेछे ॥ ए ॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायारथ
तेनहीजी ॥ ड्व्यारथछेनित्यरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेडुषवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मिथ्याछे केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेड्व्यार्थथीनि-त्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेंछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृंगपरेंथाय ॥ १० ॥

अछतोजाषेंज्ञाननेजी ॥ जोस्वजावेंसंसार ॥ कहेतोज्ञाना
कारतोजी ॥ जीपेयोगाचाररे ॥ ज० ॥ धा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञानमांहेजासेछे एहवुंकहेछे तेहनेबाधकदेखाडेछे जोज्ञाननेस्वजावें अतीतघटप्रमुखनोअछतोअर्थजासेछे. एहवुंमानीयेंतो सर्वसंसारज्ञा-नाकारज छे बाह्यआकारअनादिअविद्यावासनायेंअछताजजासेछे जेमस्वप्नमांहे अछ-तापदार्थजासेछे एहवोबाह्याकाररहितशुद्धज्ञानते बुद्धनेजहोय एमकहेतो योगाचा-रनामेत्रीजोबौधजजीपे तेमाटेअछतानुंज्ञान नहोय ॥ ११ ॥

हवणाजाण्योअरथतेजी ॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्त्तमान
पर्यायथीजी ॥ वर्त्तमानताथायरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोछतानुंज्ञाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाण्यो एमकेमकहेवायछे तेअ-तीतघटमेंहमणाजाण्यो एमजेजणायछे तिहांड्व्यथीछताअतीतघटनेविषे वर्तमानज्ञेय-आकाररूपपर्यायथी हमणाअतीतघटजाण्योजायछे अथवा नैगमनयथीअतीतने विषे वर्तमानतानोआरोपकरियेछैयें. माटेसर्वथाअछतिवस्तुनोज्ञाननथाय ॥ १२ ॥

धर्मिअछतेधर्मनोजी ॥ अछतेकालेंसुहाय ॥ सर्वकालनिर्ज
यपणेजी ॥ तोशशशृंगजणायरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिंअतीतघटअछते धर्मघटत्वअछतेकालें घटनेअन्नावकालेंनासेछे अथ-वाधर्मिंअतीतघटअछते धर्मज्ञेयाकारअछतेकालेंनासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहे सुहा-य तो सर्वेअतीत अनागत वर्त्तमानकालेंनिर्नयपणे अदृष्टशंकारहितपणे शशशृंगप-णजाएयुंजोइयें एमतो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेअछतातणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण
नेसहीजी ॥ छेअन्नेदइमजोयरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेंअछताअर्थनोबोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्द्धारकार्यकारण-नोअन्नेदछे तेदृष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अन्नेदछे एमसईहवुं एन्नेदपक्षनीढालउपरें अन्नेदपक्षनीढालकही केमकेन्नेदनयपक्षनो अन्निमानते अन्नेदनयटाले ॥ १४ ॥

न्नेदेंन्नणेनैयायिकोजी ॥ सांख्यअन्नेदप्रकाश ॥ जैनउन्नय
विस्तारतोजी ॥ पामेंसुजशविलासरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएबेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेन्नेदनयतेनैयायिकन्नाषेछे जेथीते असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअन्नेदनयप्रकाशेछे अनेजैनते बेहुन-यस्याद्वादेंकरीविस्तारतोथको न्नलायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिबेहुनय मांहो-मांहे घसतां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्य प-क्षप्रतिपक्षन्नावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः ॥ नयानशेषानविशेषमिछन्नपक्षपाती समयस्तथाते ॥ १ ॥ यएवदोषाःकिलनित्यवादे विनाशिवादेपिसमास्तएव ॥ परस्पर-ध्वंसिषुकंटकेषु जयत्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रागआसाउरी ॥ नंदनकुं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

न्नेदअन्नेदउन्नयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एक
ठामेंकहोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मेंमन
दृढकरीराखो ॥ जिमशिवसुखफलचाखोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेन्नेदान्नेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे द्रव्यादि-कनेविषे १ न्नेद २ अन्नेद एबेहुधर्म किममानोछो जिहांविरोधताने निरधारोछो के-मकेजिहांन्नेदहोय तिहांअन्नेदनहोय अने जिहांअन्नेदहोय तिहांन्नेदनहोय एबिहुं न्नावान्नावरूपें विरोधीछे तोबेहुविरोधी एकठामेंरहेनही जेमआतपहोय तिहांअंधारो रहेनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमन्नेदान्नेदपण एकत्रनहोय

इहांश्रुतधर्मे स्याद्वादप्रवचनमां मनदृढविश्वासवंत करीराखो जिनशासन श्रद्धादृढपणे मोक्षरूप कल्पवृक्षना सुखरूपफलचाखो श्रुतधर्मविना चारित्रधर्म फलवंतनहोय केमके शंकासहित चारित्रिउंपण समाधीनपामे यदुक्तं वित्तिगछसमावन्नेणं अप्पाणेणंनलन्नतेसमाहिं इतिआचारांगे ॥ १ ॥

एहवीशिष्यनीशंकाजाणी ॥ परमारथगुरुबोलेंरे ॥ अविरो
धेंसवीठामेंदीसे ॥ दोयधर्मएकतोलेंरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवीशिष्यनी शंकाजाणीकरीने गुरुस्याद्वादी परमार्थबोलेछे जे घटघटाभावादिकने यद्यपिविरोधछे तोपणभेदाभेदने विरोधनथी केमके सर्वठामे भेदअभेद एबेहुधर्म अविरोधें एकाश्रयवृत्तिपणेज एकतोले देखायछे पणकोइकएमकहेछेजे अभेदस्वाभाविक साचोछे अनेभेदउपाधिकतेंजुठो तेअनुभवतानथी केमके व्यवहारेंपरापेक्षायें बेहुनेगुणादिकनोभेद तथागुणादिकनोअभेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेंसविजननीसांखे ॥ प्रत्यक्षेंजेलहियेंरे ॥ रूपरसा
दिकनीपरेंतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामें घटादिकद्रव्यनेविषे सर्वलोकनीसांखे प्रत्यक्षप्रमाणे रक्तत्वादिक गुणपर्यायनो भेदाभेदजे लहीयेंछेयें तेनोविरोधकहो केवीरीतेंकहियें जेमरूपरसादिकनो एकाश्रयवृत्तित्वानुभावथी विरोधनकहियें तेम भेदाभेदनुंपण जाणवुं उक्तंच नहिप्रत्यक्षदृष्टेर्थेविरोधोनाम तथाजेमप्रत्यक्षदृष्टेर्थे दृष्टांतनुंपणकार्यनथी उक्तंच क्वेदमन्यत्रदृष्टत्व महोनिपुणतातव ॥ दृष्टांतंयाचसेयत्त्वंप्रत्यक्षेप्यनुमानवत् ॥ १ ॥ ३ ॥

श्यामभावजेघटेंछेपेहेला ॥ पछेभिन्नतेरातोरे ॥ घटभावें
नविभिन्नजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदना प्रत्यक्षनो अभिलाप तेपुद्गलद्रव्यें देखाडेछे जेघटपहेलां श्यामभावेंछे तेपछेंरातो थयो तेवारें भिन्नजजणायछे अनेविहुंकालें घटभावें अभिन्नज जणायछे श्यामतथारक्त अवस्थानेभेदेंघटएकजछे तोइहांविरोधतानीवातसीकहेवी॥४॥

बालभावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणभावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त
भावेंतेएकज ॥ अविरोधेंनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मद्रव्यमां भेदाभेदनो अनुभवदेखाडेछे जेप्राणी बालकभावें देखायछे तेजप्राणी तरुणभावें न्यारोके० भिन्नछे अनेदेवदत्तभावें एटलेमनुष्यपणाना पर्यायें तेएकछेतोएकपदार्थनेविषे बालतथातरुण भावेंभेदछे अनेदेवदत्तभावें अभेदछे

एमअविरोधेंनिरधारो उक्तंच पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउवा लाईया पज्जवन्नेयाबहुवियप्पा ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंथे ॥ ५ ॥

धर्मभेदजोअनुभवभासे ॥ धर्मिभेदनवीकहियेंरे ॥ भिन्न
धर्मनुंएकजधर्मि ॥ जडचेतनपणलहियेंरे ॥ श्रुत० ॥६॥

अर्थ ॥ जिहांभेदहोय तिहांअभेद होयजनही केमके भेदव्याप्यवृत्तिछे एहवी प्राचीननैयायिकनी शंकाछे तेटालेछे जे श्यामोनरक्तः इहां श्यामत्व रक्तत्वधर्मनाभेदनो अनुभवभासेछे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोभेद भासतोनथी माटेएमजो कहियेंतो जडचेतननो भेद भासेछे तेपण जडत्वचेतनत्व धर्मनोजभेदछे पणजडचेतन द्रव्यनोभेदनथी एरीतें अव्यवस्थाथाय धर्मिने प्रतियोग्यपणे उल्लेखतो बिंहु ठामें सरिखोछे अनेप्रत्यक्ष सिद्धअर्थं बाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

भेदाभेदतिहांपणकहेतां ॥ विजयजैनमतपावेरे ॥ भिन्नरूप
मांरूपांतरथी ॥ जगअभेदपणआवेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजडतथा चैतन्यमांपण भेदाभेदकहेतां जैननो मत विजयपामेछे माटे भिन्नरूपजे जीवअजीवादिक तेमांरूपांतर द्रव्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पण अभेदपणोआवे एटलेभेदाभेदने सर्वत्रव्यापकपणुंकह्युं ॥ ७ ॥

जेहनोभेदअभेदजतेहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीभेदजतेहनो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥ श्रुत० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजविवरीदेखाडेछे के जेहनोभेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अभेद होय जेम थास कोस कुसूल घटादिकनोभेदछे अनेतेजमृद्द्रव्य विशिष्टअनर्पित स्वपर्यायनो अभेदछे वलीतेनोज रूपांतरथी भेदथाय जेम थास कोस कुसूलादिक पर्यायविशिष्टमृद्द्रव्यपणें तेनोज भेदथाय एरीतेंभेदनेअभेदजेछे तेशैकडागमेनयनो मूलहेतुछे सातनयनाजे सातसेंनयभेदछे तेएरीतेंद्रव्यपर्यायनी अर्प्पणाअनर्पणायें थाय तेशतारनयचक्राद्यनयमां पूर्वेहता अनेहमणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिविधिरित्यादिरीतें एकएकनयमां बारबारभेद उपजवाकह्याछे ॥ ८ ॥

खेत्रकालभावादिकयोगें ॥ थायभंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकठामेंकहीयें ॥ सप्तभंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यादिक विशेषणे भंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक भंगथाय जेमघटद्रव्यने स्वकरीविवक्षियें तेवारे खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येकें

सप्तजंगीपण ऋोडोगमेनीपजे १ घटः स्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादवाच्यएव ४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्येवस्यादवक्तव्यएव ७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धजे कंबुग्रीवादि पर्यायेंर्पितघटछे तेनेजस्वजावेंवडीने स्वरूपेंअस्तित्व पररूपेंनास्तित्व लेइनेसप्तजंगी देखाडेछे १ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वजावनी अपेक्षायें घटछे अने २ परद्रव्य परखेत्र परकाल परजावनी अपेक्षायें घटनथी ३ तथाएकवारें वेपर्याय एकशब्दें मुख्यरूपें नकहेवायमाटे उजयविवक्षायें अवाच्यछे ४ एकअंशस्वरूपें अनेएकअंश पररूपें विवक्षियें तेवारें छेनेनथी ५ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश युगपत् उजयरूपें विवक्षियें तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअंशपररूपें अनेएकअंशयुगपत् उजयरूपें विवक्षियेंतेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअंश स्वरूपें तथाएकअंश पररूपें अनेएकअंश युगपत् उजयरूपें विवक्षियें तेवारें छे नथी अने अवाच्य ॥ ए ॥

पर्यायारथजिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअजिन्नोरे॥ क्रमेउजय
नयजोअर्पिजे ॥ तोजिन्ननेअजिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनेदानेदमां सप्तजंगी जोमियेछेयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु द्रव्य गुणपर्यायलक्षणें कथंचित्पणे जिन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथंचित्अजिन्नजछे केमके द्रव्यनाजे गुणपर्याय तेआविर्जाव तथातिरोजावेंछे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक एवेहुनय अर्पियें तोकथंचित् जिन्न तथाकथंचित् अजिन्नकहियें ॥ १० ॥

जोएकदाउजयनयग्रहियें ॥ तोअवाच्यतेलहियेंरे ॥ एके
शब्देंएकजवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥११॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थविवक्षियेंतो तेअवाच्यलहियें केमकेएक शब्दें एकजवखते बेअर्थकह्याजातानथी संकेतिकशब्दपण एकजसंकेतिकरूपकहे पण बेरूप स्पष्टकही शकीयेंनही जेमपुष्पदंतादिक शब्दपणएकोक्ति चंद्रसूर्यकहे पणजिन्नोक्ति कहीशकेनही अनेवेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो जिन्नोक्तिज कहेवा घटे इत्यादिक युक्ति शास्त्रांतरथी जाणवी ॥११॥

पर्यायारथकल्पनउत्तर ॥ उजयविवक्षासंधिरे ॥ जिन्नअवा
च्यवस्तुतेकहियें ॥ स्यातकारनेबंधिरे ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेमांप्रथमपर्यायार्थकल्पनापणछे पछेएकदाउजय नयार्पणाकरियें तेवारें वस्तुने जिन्नअवक्तव्य कथंचित् एमकहियें ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेभजनयग्रह्याथी ॥ अभिन्नतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग
पत्नयभजनयग्रह्याथी ॥ भिन्नअभिन्नअवाचोरे ॥ श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाभजनयनथ अर्पणाकरियें तेवारें कथंचित् अभिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें बेहुनयनी प्रथमअर्पणाकरियें पछेबेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् भिन्नअभिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकभेदाभेद पर्यायमां सप्तभंगी जोमी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछेछेके जिहांबेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यभावें सप्तभंगी थाउ पण जिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात छ पांच प्रमुखनयना भिन्नभिन्नविचारहोय तिहांअधिकभंगथाय तेवारेंसप्तभंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के तिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि बीजासर्वेनो निषेधेलेइ प्रत्येकें अनेकसप्तभंगीकरियें अमेतोएमजाणियेंछेयेंजे सर्वेनयार्थ प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाण वाक्य एलक्षणलेइने तेबेठामें स्यात्कारलंबित सकलनयार्थसमूहालंबन एभंगेपण निषेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने ठेकाणे बेभंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे देखाडीछे तद्गाथा ॥ एवसत्तविअप्पो वयणपहोहोइअछपज्जाए ॥ वंजणपज्जाए- पुण सविअप्पोनिव्विअप्पोअ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ एवंपूर्वोक्तप्रकारें सप्तविकल्प सप्तप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वादिकने विषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधिरूप निर्विकल्प निषेधरूप एबेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अवक्तव्य शब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्विकल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमबेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अर्थनय छे तेतो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अनेकांतविवस्थाथी जाणवुं तदेवमेकत्रविषये प्रतिस्वमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछिततावन्नयार्थप्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यदिचसर्वत्रसप्तभंगीनियमएवाश्वासास्तदाचालनीयन्यायेनतावन्नयार्थनिषेधबोधको द्वितीयोभंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिकाः पंचभंगाश्चकल्पनीयाइत्थमेव निराकांक्षसकलभंगप्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पंडितें सूक्ष्मबुद्धीयें चित्तमांधारवो.

सप्तभंगएदृढअभ्यासी ॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकिरति
जगवाधेतेहनी ॥ जैनभावेंतसलेखेरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकह्याजेसातभांगा ते दृढअभ्यासें सकलादेशी

विकलादेशी नयसप्तभंगप्रमाण सप्तभंगइत्यादि भेदें घणोअभ्यासकरी जीवाजीवादिपरमार्थसमजे देखे तेहनीजशकीर्त्तिवधे केमके स्याद्वादपरिज्ञानेज जैनने तर्कवादनुं यश छे अने जैनभावपण तेप्राणीनोज लेखेजाणवो केमके निश्चेंनयथी सम्यक्त स्याद्वाद परिज्ञानजछे उक्तंचसंमतौ चरणकरणपहाणा ससमयपरसमयमुक्कवावारा ॥ चरणकरणससारं नछयसुद्धंनयाणत्ति ॥ १ ॥ एचोथीढालमां भेदाभेददेखाड्यो अने सप्तभंगीनुं स्थापनकस्युं ॥ १५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ आदिजिणंदमयाकरो ॥ ए देशी ॥

एकअरथत्रयरूपछे ॥ देख्योभलेप्रमाणेरे ॥ मुख्यवृत्तिउपचारथी ॥
नयवादिपणजाणेरे ॥ १ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखिये ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेनयप्रमाण विवेककरेछे एकअर्थ जे घटपटादिक जीवअजीवादिक ते त्रयरूपके० द्रव्यगुणपर्यायरूपछे केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेंद्रव्य अनेघटादिरूपें सजातीयद्रव्य पर्यायरूपरसात्मकपणेंगुण एमजीवादिकमां जाणवो एहवेप्रमाणें स्याद्वादवचनेंदेख्युं जेमाटे प्रमाणेसप्तभंगात्मके त्रयरूपपणो मुख्यरीतेंजाणियें केमके नयवादीजे एकांशवादीतेपण मुख्यवृत्ति अनेउपचारें एकअर्थनेविषे त्रयरूपपणोजाणे यद्यपि नयवादिने एकांशवचने शक्तिएकज अर्थकहियें तोपणलक्षणारूप उपचारें बीजाअर्थपणजाणे पणएकदावृत्तिद्वयनहोय एपणतंतनथी जेमगंगायां मत्स्यघोषौ इत्यादिस्थलें एमबेवृत्तिपणमानीछे इहांपणमुख्य अमुख्यपणे अनंतधर्मात्मिक वस्तुजणाववाने प्रयोजने एकनयशब्दनी बेवृत्तिमानतां विरोधनथी अथवानयात्मक शास्त्रें क्रमिकवाक्य द्वयेंपणएअर्थ जणावियें अथवाएकबोधशब्दें एकबोधअर्थें एमअनेकभंगाजाणवा एरीतें ज्ञानदृष्टीयें जगतनाभाव देखीयें एअर्थकह्यो तेहिजस्पष्टपणे जणाववानेआगलीगाथाकहेछे ॥ १ ॥

मुख्यवृत्तिद्रव्यारथो ॥ तासअभेदवखाणेरे ॥ भेद
परस्परएहनो ॥ तेउपचारेंजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ मुख्यवृत्तिके० शक्तिशब्दार्थ केहेतो जे द्रव्यार्थनयते तासके० तेनेएटले द्रव्यगुणपर्यायने अभेदवखाणेछे केमके गुणपर्यायें अभिन्न एवो मृद्द्रव्यादिक तेने विषेघटादिपदनी शक्तिछे पणएनो परस्परके० मांहोमांहेभेदछे तेउपचारेंके० लक्षणे जाणे माटे द्रव्यभिन्न कंबुग्रीवादिक पर्यायनेविषे घटादिकपदनी लक्षणामानेछेअने मुख्यार्थसंबंधे तथाविधव्यवहार प्रयोजनें अनुसरीयें तिहांलक्षणाप्रवृत्ति दुरघटनथी.

मुख्यवृत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथभेदेंरे ॥ उपचारें
अनुभवबलें ॥ मानेतेहअभेदेंरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यवृत्तिकरीने सर्वद्रव्यनागुणपर्यायभेदेंलेखवे केमके एनयनेमतेमृदादिपदनो द्रव्यअर्थ अनेरूपादिपदनोगुणज घटादिकपदनो कंबुग्रीवादिपर्यायज तथाउपचारें लक्षणायेंकरी अनुभवनेबलेकरी ते अभेदेंमाने जेमघटादिमृदुद्रव्यादि अभिन्नजछे एप्रतीतें घटादिपदनी मृदादिकद्रव्यनेविषे लक्षणामानियें एपरमार्थ छे.

दोयधर्मनयजेग्रहे ॥ मुख्यअमुख्यप्रकारोरे ॥ तेअनुसारें
कल्पियें ॥ तासव्रतिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ भेदअभेदप्रमुख बहुधर्मते द्रव्यार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेग्रहे ऊहाख्यप्रमाणेधारे मुख्यअमुख्यप्रकारें साक्षात्संकेतें तथाव्यवहितसंकेतें तेअनुसारें तासके० तेनयनीवृत्ति अनेतेनयनो उपचारकल्पियें दृष्टांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्रवाहरूपअर्थनेविषेछे तेमाटेप्रवाहेशक्ति तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो ते व्यवहित संकेतछे तेमाटे उपचारछे तेमज द्रव्यार्थिकनयनो साक्षात्संकेतते अभेदछे अनेशक्तिनाभेदें व्यवहितसंकेतछे तेथीउपचारछे एमपर्यायार्थिकनयनापण शक्तितथाउपचार तेभेदअभेदने विषेजोडवा ॥ ४ ॥

भिन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानभासेरे ॥ तोस्वतंत्र
भावेंरहे ॥ मिथ्यादृष्टिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ कोइकहेछेजे एकनयते एकजविषयनेग्रहे पणबीजानयनो विषयग्रहेनहीतेहनेदूषवेछे जोनयज्ञानमां भिन्नविषयके० नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाके० अमुख्यपणेपण नभासे तो स्वतंत्रभावें सर्वथानयांतर विमुख्यपणें मिथ्यादृष्टिपासेरहे एटले दुर्नयथाय पण सुनय थाय नही एम जाणवुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावश्यकें ॥ संमतिमांपणधारोरे ॥ एमनयथी
सविसंभवे ॥ भेदअभेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एअर्थविशेषावश्यके तथासंमतिग्रंथमांछे एमधारो यतः दोहिंविणएहिंणीअ सब्बमूलएणतहविमिछत्तं ॥ जंसविसयप्हाण तणेणअणुणनिरवक्खे १ स्वार्थग्राहीइतरांशाप्रतिक्षेपीसुनयइतिसुनयलक्षणं स्वार्थग्राहीइतरांशप्रतिक्षेपीदुर्नयइतिदुर्नयलक्षणं एम नयविचारथी भेदअभेद ग्राह्य व्यवहारसंभवे तथानयसंकेतविशेषथी ग्राहकवृत्तिविशेषरूप उपचारपण संभवे तेमाटेभेदअभेद तेमुख्यपणे प्रत्येकनयविषय

मुख्यामुख्यपणे उभयनयविषयउपचारते मुख्यवृत्तिनीपरें नयपरिकर पण विषयनही एसमोमार्गते श्वेतांबरप्रमाणे शास्त्रसिद्धजाणवो ॥ ६ ॥

छांमिमारगएसमो ॥ उपनयमुख्यजेकल्पेरे ॥ तेहप्रपंच
पणजाणवा ॥ कहियेंतेजेमजल्पेरे ॥ ग्यान० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एसमोमार्गछांमिकरीने जेदिगंवर वाल उपचारादिक ग्रहवानेकाजे उपनय प्रमुखकल्पेछे तेप्रपंच शिष्यबुद्धी धंधन मात्र छे पण ते समानतंत्र सिद्धांतछे माटे जाणवानेकाजे जेमते दिगंबरीयो जल्पेके० स्वप्रक्रियायेंवोलेछे तेमजकहियेंछैयें ॥ ७ ॥

नवनयउपनयतीनछे ॥ तर्कशास्त्रअनुसारोरे ॥ अध्यातम
वाचेंवली ॥ निश्चयनेव्यवहारोरे ॥ ग्यान० ॥ ८ ॥ ॥

अर्थ ॥ तेदिगंवरीउनेमते तर्कशास्त्रने अनुसारें नवनय अने त्रणउपनयछे तथा वली अध्यात्मवाचेंके० शैलीयें १ निश्चयनय २ व्यवहारनय एवेजनयकह्याछे ॥ ८ ॥

पहेलोद्रव्यारथनयो ॥ दशप्रकारतसजाणोरे ॥ शुद्धअक
र्मोपाधीथी ॥ द्रव्यार्थिकधुरेंआणोरे ॥ ग्यान० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एकद्रव्यार्थनय वीजोपर्यायार्थनय त्रीजोनैगमनय चोथोसंग्रहनय पांचमो व्यवहारनय छठोरुजुसूत्रनय सातमो शब्दनय आठमोसमभिरूढनय नवमोएवंभूतनयएनवनयनो नियमछे तेमां पहेलोद्रव्यार्थकनय तेना दशप्रकारजाणवा तेमां धुरेंके० पहेलो अकर्मोपाधिथी शुद्धद्रव्यार्थिकनय मनमांहेआणोएटलेकर्मोपाधीथीरहित शुद्धद्रव्यार्थिक एप्रथमभेदजाणवो ॥ ए ॥

जिमसंसारीप्राणीया ॥ सिद्धसमोवमगणीयेंरे ॥ सहेजभाव
आगलकरी ॥ भवपर्यायनगणीयेंरे ॥ ग्यान० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धद्रव्यार्थिकनो विषयदेखाडेछे जेम सर्वसंसारीप्राणीमात्रने सिद्धसमानगणियें एटले सहजभावजे शुद्धात्मस्वरूप तेआगलकरियें अने भवपर्यायजेसंसारनाभाव तेगणियेंनही तेनीविवक्षानकरियें एअभिप्राय द्रव्यसंग्रहेकह्योछे यतः मगाणगुणठाणेहिं चउदसहिंहवंतितहंअसुद्धणया विणेयासंसारी सवे सुद्धाहुसुद्धणया ॥

उत्पादव्ययगौणता ॥ सत्तामुख्यजबीजेंरे ॥ भेदशुद्ध
द्रव्यारथें ॥ द्रव्यनित्यजिमलीजेंरे ॥ ग्यान० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ उत्पादव्ययनी गौणतायें अनेसत्तानी मुख्यतायें वीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थनो जाणवो उत्पादव्ययगौणत्वेन सत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिक एबीजाभेदनेमते द्रव्य ते नित्यप-

णेलेवी एटले नित्यते त्रिकालेंअविचलितरूप सत्ताने मुख्यपणेलेतां एन्नावसंन्नवे केमके जो पर्याय प्रतिक्षणे परिणामीछे तोपणजीवपुद्गलादिक द्रव्यसत्ता कदापिचलतीनथी.

त्रीजोशुद्धद्रव्यारथो ॥ न्नेदकल्पनाहिनोरे ॥ जिमनिज
गुणपर्यायथी ॥ कहीयेंद्रव्यअन्निन्नोरे ॥ ग्यान० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजोन्नेद तेन्नेदकल्पनायेंहीन शुद्धद्रव्यार्थकछे न्नेदकल्पनारहित शुद्ध द्रव्यार्थिक इतितृतीयन्नेद जेमएकजीव अथवा पुद्गलादिकद्रव्यने निजकें० पोतानागुणपर्यायथी अन्निन्नकहियें केमके जोन्नेदपणुंछे तोपणतेनी अर्पणानकरियें अनेअन्नेदनी अर्पणाकरियें तोअन्निन्नछेएत्रीजोन्नेद शुद्धद्रव्यार्थिकथयो ॥ १२ ॥

अशुद्धकर्मोपाधिथी ॥ चोथोएहनोन्नेदोरे ॥ कर्मन्नावमय
आतमा ॥ जिमक्रोधादिकवेदोरे ॥ ग्यान० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेद्रव्यार्थिकनो चोथोन्नेद ते कर्मोपाधिथीछे माटेअशुद्धकहेवुं कर्मोपाधिसापेक्षोअशुद्धद्रव्यार्थिक इतिचतुर्थन्नेद जेमक्रोधादिक कर्मन्नावमय आत्मावेदोछो जाणोछो के जेवारेंजेद्रव्य जेन्नावेंपरिणमे तेवारें तेद्रव्य तन्मयकरीजाणवुं जेम लोह अग्निपणे परिणम्युं तेकालेंलोह अग्निरूप जाणवुं एमक्रोध मोहनीआदि कर्मोदयनेअवसरें क्रोधादिन्नाव परिणतआत्मा क्रोधादिकरूप जाणवो अतएव आत्मानान्नेदआठ सिद्धांतमां प्रसिद्धछे ॥ १३ ॥

तेहअशुद्धवलीपंचमो ॥ व्ययउतपतिसापेखोरे ॥ उत्पाद
व्ययध्रुवएकें ॥ समयेंद्रव्यजिमपेखोरे ॥ ग्यान० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेवलीअशुद्धद्रव्यार्थिकनामे पांचमोन्नेद तेव्ययउत्पत्तिसापेक्षजाणवो. उत्पादव्ययसापेक्ष सत्ताग्राहकअशुद्धद्रव्यार्थिकपंचम जेमएकसमयें द्रव्यने उत्पादव्ययध्रुवरूपकहियें जेकनकाद्युत्पादसमय तेहिज केयूरादि विनाशसमय अने कनकसत्तातो अवर्जनीयजछे एवंसति त्रैलक्षणग्राहकत्वेनेदं प्रमाणवचनमेवस्यान्नतु नयवचनमितिचेन्न मुख्यगौणन्नावेनैवानेननयेन त्रैलक्षणाग्रहणान्मुख्यनयस्वस्वार्थग्रहणे नयानां सप्तन्नंगीमुखेनैवव्यापारात् ॥ १४ ॥

ग्रहतोन्नेदनीकल्पना ॥ छठोतेहअशुद्धोरे ॥ जिमआतमिक
बोलीयें ॥ ज्ञानादिकगुणशुद्धोरे ॥ ग्यान० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ न्नेदनीकल्पनाग्रहतो छठोन्नेदते अशुद्धद्रव्यार्थिक जाणवो जेमज्ञानादिक

शुद्धगुण आत्मानाबोलीयें इहांषष्ठी विभक्तीभेदकहेछे भिक्षोःपात्रमितिवत्अनेगुणगुणीने भेदतोनथी पण भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकषष्ठ ॥ १५ ॥

अन्वयद्रव्यार्थिककह्युं ॥ सप्तमएकस्वभावोरे ॥ द्रव्यएक
जिमभाषियें ॥ गुणपर्यायस्वभावोरे ॥ ग्यान० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ सातमोभेद अन्वयद्रव्यार्थिक कह्योछे. जे एकस्वभावबोले जेमएकजद्रव्य गुणपर्यायस्वभावकहियें एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्यनो अन्वयछे जेम द्रव्यने जाणवाथी द्रव्यार्थादेशें तदनुगत सर्वगुणपर्याय जाण्याकहियें जेमसामान्यप्रत्यासत्ति परवादीनी सर्वव्यक्तिजाणी कहे तेमइहांजाणवुं एअन्वयद्रव्यार्थिक सप्तम ॥ १६ ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहको ॥ भेदआठमोभाष्योरे ॥ स्वद्रव्यादि
कचारथी ॥ छतोअर्थजिमदाख्योरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ स्वद्रव्यादिग्राहक नामेंद्रव्यार्थिकनो आठमोभेदभाष्यो. जेम अर्थजे घटादिकद्रव्यतेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभाव एचारथीछतोकह्यो स्वद्रव्यथी मृत्तिकायें अनेस्वखेत्रथी तेपाटलिपुरादिकें अनेस्वकालथी विवक्षितकालें तथास्वभावथी रक्ततादिकभावें जे घटादिकनी सत्ताते प्रमाणछे सिद्धछे इतिस्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिक अष्टम एआठमोभेदथयो ॥ १७ ॥

परद्रव्यादिकग्राहको ॥ नवमभेदतेमाहिंरे ॥ परद्रव्या
दिकचारथी ॥ अर्थछतोकिमनाहिंरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेद्रव्यार्थिकमां परद्रव्यादिक ग्राहक नवमोभेदकह्योछे जेम अर्थजेघटादिक तेपरद्रव्यादिकचारथी छतोनथी परद्रव्यजे तंतुप्रमुख तेथीघटअसत्कहियें अनेपरक्षेत्रजे काशीप्रमुख तथापरकालजे अतीत अनागतकाल परभावथी कालादिभावें विवक्षितविषयें अछतापर्यायतेथी परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनवम ॥ १८ ॥

परमभावग्राहककह्यो ॥ दशमोजशअनुसारोरे ॥ ग्यान
सरूपीआतमा ॥ ग्यानसर्वमांसारोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ दशमो द्रव्यार्थिकनो परमभावग्राहकनामें भेदकहेछे जेनयने अनुसारें आत्मानेज्ञानस्वरूपकहियेंछैयें अने दर्शनचारित्र वीर्य लेश्यादिक आत्माना अनंतागुणछे पणसर्वमां ज्ञानते सारउत्कृष्टछे केमके अन्यद्रव्यथी आत्मानेभेदते ज्ञान गुणेदेखाडेछे तेमाटे शीघ्रोपस्थिकपणे आत्मानुंज्ञानते परमभावछे एमबीजाद्रव्यना पण परमभाव असाधारणगुणलेवा परमभावग्राहकद्रव्यार्थिकदशम ॥ १९ ॥

॥ ढाल बही ॥

॥ एकवारदरिशनआपगुरुजी ॥ ए देशी ॥

षटभेदनयपर्यायअरथो ॥ पहेलोअनादिकनित्यरे ॥ पुग्
लतणोपर्यायकहियें ॥ जिममेरुगिरिमुखनित्यरे ॥ १ ॥
बहुभांतफेलीजैनशैली ॥ साचडुंमनधाररे ॥ खोटफुंजे
कांइजाणे ॥ तिहांचित्तनिवाररे ॥ बहु० ॥ २ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायार्थनय बभेदेंजाणवो तेमां पहेलोअनादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिक कहियें जेमपुद्गलनोपर्याय मेरुप्रमुख प्रवाहथी अनादिअने नित्यबे असंख्यातकालें अन्योन्यपुद्गलसंक्रमे पण संस्थानतेहिजबे एमज रत्नप्रभादिक पृथ्वीपर्यायपण जाणवा॥१॥ एमघणाप्रकारें जैननी शैलीफेलीबे दिगंबरमतेंपण जैनदर्शननाम धरावी एवीनयनी अनेक शैलीप्रवर्त्तावीबे तेमांविचारतां जेसाचुंहोयते मनमांनिरधारी राखवुं अनेतिहांजेकांइ खोटुंजाणे तेचित्तमांनधरवुं पणशब्दफेरमात्रे द्वेषकरवोनही अर्थजप्रमाणबे.

सादिनित्यपर्यायअरथो ॥ जिमसिद्धनोपज्जाउरे ॥ ग्रहे
शुद्धअनित्यसत्ता ॥ गौणवयउप्पाउरे ॥ बहु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सादिनित्य शुद्धपर्यायार्थनय तेबीजोभेदजाणवो जेमसिद्धना पर्यायनी आदिबे केमके सर्वकर्मक्षयथया तेवारेंसिद्धपर्यायउपनो तेथीआदिथयी पणतेनो अंतनथी केमकेपबी सिद्धभावसदाकालेंबे एरीतेंजपर्यायसरिखो सिद्धद्रव्यपर्यायभाववो हवेसत्तागुणखे उत्पादव्ययग्राहक अनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक त्रीजोभेदकहियेंबेयें ॥३॥

जेमसमयमेंपर्यायनाशी ॥ बतिगहतनित्यअशुद्धरे ॥
एकसमयेंयथापर्याय ॥ तृतीयरूपेंरुद्धरे ॥ बहु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमएकसमयमां पर्यायविनाशीबे एमकहियें इहां नाशीकहेतां एनोप्रतिपक्षी उत्पादतोआव्यो पणध्रुवताने गौणकरीदेखाडीनही चोथो बतिके० सत्तानेग्रहतो तेनित्यअशुद्ध पर्यायार्थिक कहियें जेमएकसमयमां पर्यायते उत्पादव्ययध्रुवलक्षण तृतीयरूपेंरुद्धबे एवुंबोलीयें पणपर्यायनुं शुद्धरूपतो तेनेकहियेंजे सत्तानदेखाडवी पणइहांतो मूलसत्तादेखाडी तेमाटेअशुद्धभेदथयो ॥ ४ ॥

पर्यायअरथोनित्यशुद्धो ॥ रहितकर्मोपाधिरे ॥ जेमसिद्धना
पर्यायसरिखा ॥ भवजंतुनानिरुपाधिरे ॥ बहु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यायार्थिक पांचमोभेद कहेछे. ते जेम भव-जंतुके० संसारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहियें जोपणकर्मोपाधिभाव छताछे तोपणतेनी विवक्षानकरियें अनेज्ञानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यायनीज विवक्षाकरियें.

पर्यायअरथअनित्यअशुध्धो ॥ सापेक्षकर्मोपाधिरे ॥ संसा-
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणव्याधिरे ॥ बहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक छठोभेदकहेछे जेम संसारवासीजीवने जन्ममरणनीव्याधिछे एमकहियें इहांजन्मादिक जीवनापर्याय जे कर्मसंयोगेंछे तेअनित्य अशुद्धछे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थें मोक्षार्थ जीवप्रवृत्तेछे एरीतेंद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नयकह्या ॥ ६ ॥

बहुमानग्राहिकह्योनैगम ॥ भेदतसछेतीनरे ॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेंलीनरे ॥ बहु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नैगमनयकहेछे सामान्यविशेषज्ञानरूप बहुमानके० घणाप्रमाण तेनो ग्राही नैगमनयकहियें. नैकैर्मानैर्मिनोतीतिनिगमः ककारलोपान्नैगमइतिव्युत्पत्तिः तेनै-गमनयना त्रणभेदछे तेमांप्रथमनैगमभूतार्थ वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्परछे. ॥७॥

भूतनैगमकह्योपहेलो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथा
स्वामीवीरजिनवर ॥ लहिउंशिवपुरराजरे ॥ बहु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथमभेदनुं उदाहरण देखाडेछे जेमआज दीवालीना दिवसनेविषे श्रीमहावीरस्वामी शिवपुरनुंराज्यपाम्या इहांअतीत दिवालीनादिननेविषे वर्त्तमान दिवालीना दीवसनो आरोपकरियेंछेयेंएमवर्त्तमान दिवसनेविषे भूतदिवसनो आरोप करियें देवागमनादिक महोटाकल्याण भाजनत्व प्रतीतप्रयोजननेअर्थें जेमगंगायां घोषः इहांगंगानातटनेविषे गंगानोआरोपकरियें शैत्यपावनत्वादि प्रत्यायन प्रयोज-नभणी तोएघटमानछे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय भक्तिनेवास्तेप्रतीतिकमानियें एअलंकारनाजाण पंमितहोय तेविचारजो ॥ ८ ॥

भूतवतकहेभाविनैगम ॥ भाविजेमजिनसिध्दरे ॥ सिध्द
वंतछेवर्त्तमाने ॥ कांइसिध्दअसिध्दरे ॥ बहु० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ भावीनुं भूतवदुपचारकरे एबीजोनैगमनोभेद जेम जिननेसिद्ध कहियें छेयें केमके केवलीनेसिद्धपणो अवश्यभावीछे माटे कांइकसिद्ध अने कांइकअसिद्धने वर्त्तमानकहे तेवर्त्तमान नैगमकहियें ॥ ए ॥

भाषीयेंजिमभक्तपचियें ॥ वर्त्तमानारोपरे ॥ करेकिरिया
भूतलेश ॥ भूतवचनविलोपरे ॥ बहु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम भक्तके० रसोइरांधिछे एमकहियें इहां रसोइना केटलाकअवयव सिद्धथयाछे अनेकेटलाक साध्यमानछे पणपूर्वापरभूतावयव क्रियासंतान एकबुद्धीयें आरोपियें तेने वर्त्तमानकहियेंछेयें एआरोप सामग्री महिमायें कोइअवयवनी भूत क्रियालेश पचतिएछेकाणे अपाक्षीत् एप्रयोगनथीकरता जेनैयायिकादिक तेएमकहेछे जे चरमक्रियाध्वंस अनेअतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पक्वं किंचित्पच्यते एवुं कहेछेतो एप्रयोगनथवोजोइयें तेमाटे एवर्त्तमानारोप नैगमनयनोभेदज भलोजाणवो॥१०॥

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधओघविशेषरे ॥ द्रव्यसवि
अविरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेषरे ॥ बहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहेते संग्रहनयकहियें तेना एकओघ बीजोविशेष ए बेभेदछे तेमां एक ओघके० सामान्यसंग्रह अनेबीजो विशेषसंग्रह एबेभेदजाणवा द्रव्याणिसर्वाणिअविरोधीनि एप्रथमभेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेअविरोधिनः एबीजाभेदनुं उदाहरण सर्वद्रव्यनेएकपणे बोलाववुंते सामान्यसंग्रह अने तेमांथकी एकजीवद्रव्यने जूदो करी सर्वजीवने एकजीवद्रव्य कहिबोलाववुं तेविशेषसंग्रह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविषयभेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ द्रव्य
जीवाजीवभाषें ॥ जीवभवियासिद्धरे ॥ बहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहनयनो विषय तेनाभेदनोदेखाडनार तेव्यवहारनयकहियें तेना तेमज संग्रहनयनीपरें द्विविधके० बेभेदछे १ सामान्यसंग्रहभेदकव्यवहार २ विशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एरीते बेभेदजाणवा द्रव्यजीवाजीवौ एसामान्यसंग्रहभेदव्यवहार अने जीवाःसंसारिणः सिद्धाश्च एविशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविवक्षायें सामान्य विशेषपणुंभाववुं ॥ १२ ॥

वर्त्ततोरुजुसूत्रभाषें ॥ अर्थनिजअनुकूलरे ॥ क्षणिकपर्याय
कहेसुषिम ॥ मनुष्यादिकस्थूलरे ॥ बहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ रुजुसूत्रनयते वर्त्तमानें वर्त्ततो अर्थभाषे पणअतीत अनागत अर्थने न माने अनेवर्त्तमानेपण निजअनुकूलके० पोताना कामनोअर्थमाने पणपरकीयमाने नही ते रुजुसूत्रनय बेभेदेंकहेवो १ सूक्ष्मरुजुसूत्र ते क्षणिकपर्याय जेउत्पादव्यय तेनेमाने अनेबीजोस्थूल रुजुसूत्रते मनुष्यादिपर्यायमाने एटलेमनुष्यतीर्यंचादिक भवनापर्या-

यग्रहे पणकालत्रयवर्ति पर्यायमानेनही अनेजे व्यवहारनयछे तेत्रणेकालना पर्यायमाने तेमाटे स्थूलरुजुसूत्र तथाव्यवहारनयने संकरदोषनजाणवो ॥ १३ ॥

शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिध्धमानेशब्दरे ॥ समभिरूढ
विभिन्नअर्थक ॥ कहेभिन्नजशब्दरे ॥ बहु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तिथी सिद्धथयेलोशब्दमाने लिंगवचनादिभेदें अर्थनोभेदमाने जेम तटः तटी तटं एत्रणलिंगभेदें अर्थभेद तथा आपः जलं इहांएकवचन बहुवचनभेदें अर्थभेदमाने अनेरुजुसूत्रनयने एशब्दनय एमकहेजे कालभेदें अर्थभेदतुंमानेछे तोलिंगादिभेदें भेदकांनथीमानतो अने छठो समभिरूढनय एमकहेजे भिन्नशब्दते भिन्नार्थकजहोय माटे एनयते शब्दनयने एम कहेजे तुंलिंगादिभेदें अर्थभेदमानेछे तोशब्दभेदें अर्थभेदकेममानतोनथी तेमाटे घटशब्दार्थभिन्न अनेकुंभशब्दार्थभिन्न एमएमाने एबेशब्दनुं एकार्थपणुं तेशब्दादिनयनी वासनाथकी प्रसिद्धछे ॥ १४ ॥

क्रियापरिणतअर्थमाने ॥ सर्वएवंभूतरे ॥ नवेनयना
भेदएणीपरें ॥ अठावीसप्रभूतरे ॥ बहु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयते सर्वअर्थक्रियाने परिणतक्रियावेलायें माने पणअन्यदा मानेनही जेमछत्रचामरादिके शोभे परषदामांबेठा चामरढलावे तेवारेज तेने राजा माने पण स्नानादिकवेलायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेंनवेनयना अठावीसभेद तेप्रभूतके० घणाथया १० द्रव्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगमना २ संग्रहना २ व्यवहारना २ रुजुसूत्रना १ शब्दनो १ समभिरूढनो १ एवंभूतनो ॥ १५ ॥

नवेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेंसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरथपरखी ॥ लहोजशविस्ताररे ॥ बहु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमनवेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगंबरप्रक्रियायेंकहियेंछैयें एमां साचो श्रुतनोअर्थ परखीकरीने बहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ चक्रउपनुंसाररे ॥ एदेशी ॥

सद्भूतव्यवहार ॥ भेदप्रथमतिहां ॥ धर्मधर्मिनाभेदथीए ॥ १ ॥
शुध्धअशुध्धभेद ॥ शुध्धअशुध्धना ॥ तेहअरथनाभेदथीए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नयसमीपेंतेउपनयकहियें तेमांसद्भूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमभेदछे ते धर्म

अने धर्मिना भेददेखाडवाथी होय ॥ १ ॥ तेहनावलीवेभेदछे एकशुद्ध बीजोअशुद्ध तेमांपेहेलो शुद्धधर्मधर्मिनाभेदथी शुद्धसद्भूतव्यवहारथाय अनेबीजोअशुद्ध धर्मधर्मिनाभेदथी अशुद्धसद्भूत व्यवहारथाय इहांसद्भूततो एटलाटेजे एकद्रव्यजछे अने भिन्नद्रव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे भेददेखाडेछे ॥ २ ॥

जेमजगकेवलज्ञान ॥ आतमद्रव्यनुं ॥ मइनाणादिकतेहनुंए ॥३॥
गुणपर्यायस्वभाव ॥ कारकतन्मनो ॥ अरथभेदछेएहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमां आत्मद्रव्यनुं केवलज्ञान षष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसद्भूतव्यवहारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मद्रव्यनागुणछे एमबोलावियें तेअशुद्ध सद्भूतव्यवहारथयो ॥३॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वभाव स्वभाववंतनोकारक अने तन्मयके० कारकी तेहनोजे एकद्रव्यानुगत भेदबोलावियें तेसर्वेउपनयनो अर्थ जाणवो घटस्यरूपं घटस्यरक्तता घटस्यस्वभावः मृदाघटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा. ॥ ४ ॥

असद्भूतव्यवहार ॥ परपरिणतिभलें ॥ द्रव्यादिकउपचारथीए ॥ ५ ॥
द्रव्येंद्रव्यउपचार ॥ पुद्गलजीवने ॥ जिमकहियेंजिमआगमेंए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परद्रव्यनी परिणति भलेंथके जेद्रव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते असद्भूत व्यवहारजाणवो ॥५॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो द्रव्येद्रव्यनोउपचार कहेछे जेमजिनआगममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुद्गलसाथें मिल्योछे माटे जीवनेपुद्गल कहियें एजीवद्रव्यें पुद्गलद्रव्यनो उपचार तेद्रव्येद्रव्योपचार पहेलोभेदथयो ॥ ६ ॥

कालीलेस्याभाव ॥ श्यामगुणेभली ॥ गुणउपचारगुणेकहोए ॥ ७ ॥
पर्यायेंपर्याय ॥ उपचारेंवली ॥ हयगयखंधयथाकह्याए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेभावलेश्यातेआत्मानो अरूपीगुणछे तेनेजे कृष्णनीलादिक कालीलेश्या कहियेंछैयें तेकृष्णादि पुद्गलद्रव्यनागुणनो उपचार करियेंछैयें एआत्मगुणे पुद्गलगुणनो उपचारजाणवो एरीतें गुणेगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते हयके० घोडा गयके० हाथी रथप्रमुख आत्मद्रव्यना असमानजातीय द्रव्यपर्याय तेने खंध कहियेंछैयें तेआत्मपर्यायउपरें पुद्गलपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियेंछैयें एपर्यायेपर्यायोपचारनो त्रीजोभेदथयो ॥ ८ ॥

द्रव्यंगुणउपचार ॥ वलीपर्यायनो ॥ गौरदेहहुंबोलतांए ॥९॥ गुणे
द्रव्यउपचार ॥ पर्यायद्रव्यनुं ॥ गौरदेहजिमआतमाए ॥ १० ॥

अर्थ ॥ द्रव्येगुणोपचारः चोथोभेदकहेछे ते हुंगौरवर्णछुं एमबोलताहुंतेआत्माद्रव्य

अनेजे गौरतेपुद्गलनो उज्वलतापणो उपचस्युं एचोथोभेद हवेपांचसुं द्रव्येंपर्यायोप-चार ते जेमहुंदेहएमबोले तेमां हुंतेआत्मद्रव्य अनेदेहतो पुद्गलद्रव्यनो सामान्य-जातीय द्रव्यपर्यायउपचास्युं एपांचमोभेदथयो ॥ ए॥ गुणेद्रव्योपचारः जेम एगौरदेखा-यछे तेआत्मा एमगौरपणो उद्देसीने आत्मविधानकरियें एटलेए गौरतारूप पुद्गलगुण उपरें आत्मद्रव्यनो उपचार तेगुणेद्रव्योपचार छठोभेदथयो तथापर्यायें द्रव्योपचारः ते जेम देहनेआत्माकहियें इहां देहरूप पुद्गलपर्यायनेविषे आत्मद्रव्यनो उपचार कस्यो एसातमोभेदथयो ॥ १० ॥

गुणपज्जवउपचार ॥ गुणनोपज्जवें ॥ जिममतितनुतनुमतिगुणोए ॥११॥
असद्भूतव्यवहार ॥ एमउपचारथी ॥ एहत्रिविधहवेसांभलोए ॥१२॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचारः तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यछे तेमाटे शरीरजकहियें इहांमतिज्ञानरूप आत्मगुणनेविषे शरीररूप पुद्गलपर्यायनो उपचारकस्यो एआठमो भेदथयो हवे पर्यायेगुणोपचारः ते पूर्वप्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआवीरीतें के शरी-रते मतिज्ञानरूप गुणजछे तोइहां शरीररूप पर्यायनेविषे मतिज्ञानरूप गुणनोउप-चारकरायछे एनवमोभेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असद्भूतव्यवहार नवप्रकारनोकह्यो हवेएना त्रणभेदछेतेकहियेंछैयें तेसांभलो ॥ १२ ॥

असद्भूतनिजजाति ॥ जिमपरमाणुउं ॥ बहुप्रदेशीभाषियेंए ॥१३॥
तेहविजातिजाणो ॥ जिममूरतमति ॥ मूरतद्रव्येंउपनीए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकस्वजाति असद्भूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते बहुप्रदेशीथवानी जातिछे माटे बहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मतिके० मतिज्ञानने मूर्तिवंत कहियें मूर्त्तजे विषयालोकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहांमतिज्ञानते आत्मगुण तेनेविषे मूर्त्तत्व जे पुद्गलगुण तेनेउपचस्युं तेनेविजातीय असद्भूत व्यवहारजाणो एबीजोभेद ॥ १४ ॥

असद्भूतदोउभांत ॥ जीवअजीवने ॥ विषयग्यानजिमभांषियेंए॥१५॥
उपचरितासद्भूत ॥ करियेंउपचारो ॥ जेहएकउपचारथीए ॥१६॥

अर्थ ॥ दोउभांतिके० बेजाति तेस्वजाति अने विजातियें असद्भूत व्यवहारनो संबंध कहियें जेमजीवाजीव विषयज्ञानकहियें इहांजीवतेज्ञाननी स्वजातिछे अनेअ-जीवते ज्ञाननोविजातिछे एबेनोविषयविषयीभाव नामे उपचरित संबंधछे तेस्वजाति विजातिनामे असद्भूतकहियें स्वजातीयांशेकिंनायंसद्भूतइतिचेत् विजातीयांशेविषयता संबंधस्योपचरितस्यैवानुभावादितिगृहाण एत्रणभेदकह्या ॥ १५ ॥ जेएकउपचारथी बीजोउपचारकस्यो तेउपचरित असद्भूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

तेहस्वजातिजाणोरे ॥ हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकछेमाहराए ॥१७॥ विजा
तिथीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुऊ ॥ गढदेशादिकउन्नयथीए ॥ १८ ॥
उपनयन्नाष्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिह्राजशलहोए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारजाणो संबंधीकल्पनं जेहुंपुत्रादिक इहांहुंमारा एवुं जेपुत्रादिकनेविषेकहेवुं तेपुत्रादिकने उपचस्याछे ते आत्मानो न्नेदान्नेदसंबंध उपचरियेंछैयें जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपें स्वजातिछे पणकल्पितछे नहीतो स्वशरीरजन्य मत्कुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥ १७ ॥ तथाविजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारते कहियेंजे आवस्त्रादिक माहराछे इहांवस्त्रादिक पुद्गलनापर्यायेंनामादिन्नेदें कल्पितछे नहीतो वल्कलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेमनकहियें तेविजातिमां स्वसंबंध उपचरियेंछैयें तेमज माहरागढदेश प्रमुखछे एमकहेतांथकां स्वजाति विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार कहियें केमके गढदेशादिकतो जीवअजीवउन्नय समुदायरूपछे ॥ १८ ॥ एरीतेंउपनयकह्या हवे आगलीढालमां अध्यात्मनयकहिने एमांगुणदोष परिह्रानो यशपामो ॥ १९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जायातुजविणघडीरेछमास ॥ एदेशी ॥

दोयमूलनयन्नाषीयारे ॥ निश्चयनेव्यवहार ॥ निश्चयद्विविधकह्युरे ॥
शुद्धअशुद्धप्रकाररे ॥ प्राणीपरखोआगमन्नाव ॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेप्रथम अध्यात्मन्नाषायेंतो मूलबेजनयकह्याछे एकनिश्चयनय अनेबीजो व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनावली बेन्नेदछे एकशुद्धनिश्चयनय अनेबीजो अशुद्धनिश्चयनय हेप्राणी ! आगमना न्नावपरखीनेग्रहो ॥ १ ॥

जीवकेवलादिकयथारे ॥ शुद्धविषयनिरुपाधि ॥ मइनाणा
दिकआतमारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपछे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शुद्ध गुणविषयलेइ आत्माने अन्नेददेखाडियें तेशुद्धनिश्चय नयकहियें अने जे मतिज्ञानादिक अशुद्धगुणने आत्माकहियें तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकछे एटले जेनिश्चयनयते अन्नेददेखाडे अनेजेव्यवहारनयते न्नेददेखाडे ॥ २ ॥

दोइन्नेदव्यवहारनाजी ॥ सद्भूतासद्भूत ॥ एकविषय
सद्भूतछेजी ॥ परविषयासद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली व्यवहारनयना बेन्नेदछे एकसद्भूतव्यवहार बीजोअसद्भूतव्यवहार एक विषयके० एकद्रव्याश्रिततेसद्भूतव्यवहार अनेजे परविषयते असद्भूतव्यवहार ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पहेलोदोयप्रकार ॥ सोपाधिक
गुणगुणीन्नेदेरे ॥ जेअनिमित्तउपचाररे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमां पहेलोजे सद्भूतव्यवहारते बेप्रकारेंछे एकउपचरित सद्भूतव्यवहार बीजो अनुपचरित सद्भूतव्यवहार ते जे सोपाधिकगुणगुणीनो न्नेददेखाडे जेम जीवस्यमतिज्ञानं एउपाधि तेहिजइहां उपचरित प्रथमन्नेदछे ॥ ४ ॥

निरुपाधिकगुणगुणीन्नेदेंरे ॥ अनुपचरितसद्भूत ॥ केवल
ज्ञानादिकगुणारे ॥ आतमनाअद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथानिरुपाधिक गुणगुणीन्नेदें बीजोन्नेदजाणवो यथाजीवस्यकेवलज्ञानं इहांउपाधिरहितपणो तेहिज निरुपचरितपणुं जाणवुं ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारनाजी ॥ एमजन्नेदछेदोय ॥ प्रथमअसं
श्लेषितयोगेंजी ॥ देवदत्तधनजोयरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएजरीतें असद्भूतव्यवहारनापण बेन्नेदछे एकउपचरित असद्भूत व्यवहार बीजोअनुपचरित असद्भूतव्यवहार तेमांप्रथमन्नेदते असंश्लेषित योगें कल्पित संबंधेंहोय जेम देवदत्तनुंधन इहांधनते देवदत्तनेसंबंध स्वस्वामीन्नावरूप कल्पितछे तेमाटेउपचारथयो तथादेवदत्त अनेधनतेजाते बेहुएकद्रव्यनथी तेमाटे असद्भूत एम न्नावनाकरवी तेउपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ६ ॥

संश्लेषितयोगेंबीजोरे ॥ जेमआतमनुंदेह ॥ नयउपनय
नयचक्रमांरे ॥ कह्यामूलनयएहरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ बीजोन्नेद संश्लेषितयोगें कर्मसंबंधेजजाणवो ते जेमआत्मानुंशरीर आत्मातथादेहनासंबंध तेधनसंबंधनीपरें कल्पितनथी विपरीतन्नावनायें निवर्त्तेंनहीं जावजीवरहे तेमाटे एअनुपचरित अनेन्निन्नविषयमाटे असद्भूतजाणवो एरीतेंनयतथा उपनय एबेमूलनयसहित तेदिगंबर देवसेनकृत नयचक्रमां कह्याछे ॥ ७ ॥

विषयन्नेदयद्यपिनहीरे ॥ इहांअमारेथूल ॥ उलटी
परिन्नाषाइसीरे ॥ तोपणदाजेमूलरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इहांयद्यपिअमारे श्वेतांबरने थूलके० महोटो विषयन्नेदके० अर्थनोफेर नथी तोपणमूलके० प्रथमथी उलटीके० विपरीतपरिन्नाषानी शैलीकरीतेदाजेछे खेद

करेछे यद्यपि न भवति हानिः परकीयां चरतिरासभेद्राक्षां ॥ असमंजसं तु दृष्ट्वा तथापि फेरिखिद्यते चेतः इतिवचनात् ॥ ८ ॥

तत्वार्थेनयसातछेरे ॥ आदेशांतरपंच ॥ अंतरभा
वितउद्धरीरे ॥ नवनोकिस्योप्रपंचरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेतेबोटीकनी उलटीपरिभाषाछे ते देखाडीयेंछैयें तत्वार्थसूत्रें सातनय कह्याछे अने आदेशांतरके० मतांतर तेथीपांचनयकह्याछे सप्तमूलनयाः पंचेत्यादेशांतरं एसूत्रें एटले १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रणनयने एकशब्द एवेनामें संग्रहीयें तो पहेलानैगमादिक चारनयसाथें मेलवतां पांचनयकहियें तेवलीएकेकना सोसोभेदहोय तिहांपण ७०० तथा ५०० भेदथाय एरीतें बेमतकह्याछे तथोक्तमावश्यके इक्किक्कोयसयविहो सत्तणयसयाहवंतिएसेव ॥ अणोविहुआएसो पंचेव सयानयाणंतु ॥१॥ एवीशास्त्रनीरीत मूकीने अंतर्भावित सातनयमां भेल्याजे द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक तेउद्धरी अलगाकाढीने नवनयकह्या एस्योप्रपंच हेचतुरमनुष्योतमे विचारीजुर्ज ॥ए॥

पज्जयथ्थद्रव्यारथोरे ॥ जोतुमेअलगादीठ ॥ अप्पियण
प्पियभेदथीरे ॥ केमइग्यारनइठरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एमकरतां पर्यायार्थ तथाद्रव्यार्थ एबेनयजोतुमे अलगादीठा अनेनवनय कह्या तोअर्पित तथाअनर्पित एबेनयअलगाकरीने इग्यारनयकेमकह्यानहीं ॥ १० ॥

संग्रहव्यवहारादिकेंरे ॥ जोतुमेभेलोतेह ॥ आदिअंतनय
थोकमांजी ॥ केमनवीभेलोएहरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेजो एमकहेसोजे अर्पितानर्पितसिद्धेरित्यादि एटले तत्वार्थसूत्रादिकमां जे अर्पितानर्पित नयकह्यांछे तेअर्पितके० विशेषकहियें अने अनर्पितके० सामान्यकहियें जे अनर्पितते संग्रहनयमांभले अने अर्पितते व्यवहारादिक विशेषनयमां भले माटे जूदाशीरीतेकहियें तो अर्पितनार्पित एबेनयजो जूदानथीकहेता तो आदिअंतके० पहेला तथापाछलनयना थोकडामां द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनयकेमनथीभेलता जेथकीसूधीरीतें मूलनयसातजकहेवाय तेसर्वेसुविधियेंरहे ॥ ११ ॥

पज्जवनयतिअअंतमारे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनभद्रा
दिकभाषियारे ॥ महाभाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनय भेल्यानी आचार्य मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० छेहेलाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप एत्रण

नयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्रलक्षण तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनभद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि आचार्य- ते श्रीविशेषावश्यकना महाभाष्यमध्ये निर्धारेंकहेठे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे ॥ प्रथमद्रव्यनयतीन ॥ तसऋजु
सूत्रनसंभवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेठे के प्रथम- नात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋजुसूत्र २ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते सर्वे पर्यायाः खलु कल्पिताः ॥ सत्यंतेष्वन्वयिद्रव्यं कुंडलादिषुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायार्थमते द्रव्यं पर्यायेभ्योस्ति नोपृथक् ॥ यत्तैरर्थक्रिया दृष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥ २ ॥ इति द्रव्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजूसूत्रः शुद्धमर्थपर्या- यंमन्यमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्येतेषामाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्रव्या- वश्यकनेविषे लीननसंभवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे अणुउवत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहुत्तंनंठी इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणामसाधारण उर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसादृश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमांएकेपर्यायनमाने तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेतां एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिकद्रव्यवादी सूक्ष्मऋ- जुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थुलऋजुसूत्रतें द्रव्यनयकहेवो एमसिद्धांतवा- दीकहेठे अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिभाषितमादायोक्तसूत्रतार्किकमतंतेनोपपादनी- यमित्यस्मादेकपरिशीलितःपंथा ॥ १३ ॥

इमअंतरभाविततणोरे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचथकी
जेमसातमांरे ॥ विषयभेदनहीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमके० एरीतेअंतरभावितके० मांहेभेल्याजे द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिकनय तेनो अलगोउपदेश केमकस्यो कदाचितजो इमकहेसोजे मतांतरें पांचनयकहियेंछेयें तेमांबेनयभल्याथका सातनयकहेता जेमअलगोउपदेशछे तेमअमारे द्रव्यार्थिक पर्याया- र्थिकनो अलगोउपदेशछे तेनोउत्तरजे शब्द समभिरूढ तथाएवंभूतने जेमविषयभेदछे तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषय देखाडी जेमत्रणनयने एक संज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांछे पणविषयभिन्नछे पणइहांतो विषयभिन्ननथी केमके जेद्र- व्यार्थिकना दशभेददेखाड्या तेसर्वेशुद्धाशुद्धसंग्रहादिक नयमांआवेछे तथाजे प- र्यायार्थिकना छभेददेखाड्या तेसर्वे उपचरितानुपरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध ऋजुसूत्रा-

दिकमांआवे जोगोबलिवर्दन्यायें विषयभेदें भिन्ननयकहियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तभंगीमांक्रोमोरीतें अर्पितानर्पित सत्वासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां सप्तमूलनयप्रक्रियाभांजे एपंक्तितेविचारवुं ॥ १४ ॥

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांजो विषयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष नैगमव्यवहारनयमांभेलतांबाकीछनयजथयीजासेएहवी शिष्यनीआशंकाटालवाने अर्थेकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय भलेछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच छन्हंतहयचउन्हं पंच विहोतहयहोइभणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे किहांएक भिन्नविषयपणाथी नैगमनयभिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकबेहुनयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविषयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिक
परेंकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरतां नवनयदेखाम्रतां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहेंच्यानुं वहेंचवुंथाय जोतमारे वहेंचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाःसंसारिणः पृथ्वीकायिकादि षट्भेदाः सिद्धाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् ऋजुसूत्रादिभेदाच्चतुर्धापर्यायार्थिकः एमकह्युंछे पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजाणवो नहीतो जीवसंसारी सिद्धा. इत्यादि विभागवाक्यपण थवापामे हवेकोइकहेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेतां अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जेमकहियेंछेयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेतांथकां अनेरानय सर्वेआवेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें भिन्नभिन्न तत्व व्यवहारमात्र साध्यछे तेतेमजसंभवे अने इहां इतरव्यावृत्तिसाध्यछे तिहांहेतु कोटि अनपेक्षित भेदप्रवेशें वैयर्थ्यदोषहोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजनछे जीव अजीव एबेमुख्यज्ञेयपदार्थभणीकहेवा अनेबंध मोक्ष एबे मुख्यहेयउपादेयछे तेमाटे बंधकारण जेआश्रव ते हेयके० छांमवुं अनेमोक्षमुख्य पुरुषार्थछे तेनाबेकारण एक संवर बीजोनिर्जराकहेवा एसाततत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुण्यपापरूप शुभाशुभबंध भेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकथननीजाणवी ॥ १६ ॥

भिन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूलनयसूत्र ॥ तेणेअधिकुं
केमभाषीयेंरे ॥ राखीयेंनिजघरसूत्ररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेइहांद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकना भिन्नोपदेशनुं कोइप्रयोजननथी केमके सत्तमूलनयापणत्ता एहवुंसूत्रेंकह्युंछे तेउल्लंघीने नवनयकहियें तो आपणाघरनुं सूत्रके-मरहे तेमाटे नवनयाः एमकहेतोथको देवसेननामा बोटिकतेउत्सूत्रभाषीजाणवो॥१७॥

दशभेदादिकपणइहांरे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नहीतो
कह्योअंतरभेवेरे ॥ प्रदेशार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ इहां नयचक्रग्रंथमां दिगंबरें द्रव्यार्थिकादिक दशभेदादिककह्या तेपणउप-लक्षणेकरीजाणो नहीतो प्रदेशार्थ नयकयास्थानकेंआवे तेविचारजो उक्तंचसूत्रे दव-ठयाए पएसठयाए इत्यादि तथाकर्मोपाधीसापेक्ष जीवभावग्राहक द्रव्यार्थिकनय जेम कह्यो तेम जीवसंयोगसापेक्ष पुद्गलभावग्राहकनयपण भिन्नकह्योजोइयें एरीतेंकरियें तो अनंताभेदथाय तथाप्रस्थकादि दृष्टांते नैगमादिकना अशुद्ध अशुद्धतर अशुद्धतम शुद्धतर शुद्धतमादिभेद किहांसंग्रह्याजाय उपचारछे तेमाटे उपनयकहियेंतो अपसि-द्धांतथाय एअनुयोगद्वारसूत्रें तेनयनाभेद देखाड्याछे ॥ १८ ॥

उपनयपणअलगानहीरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहीतोभेद
प्रमाणनोरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजवातदृढेछे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादिनयथी अ-लगानथी उक्तंच तत्वार्थसूत्रे उपचारबहुलोविस्तृतार्थो लौकिकप्रायोव्यवहारइति एम करतां नयनाभेदनेजो उपनयकरीमानसो तो स्वपरव्यवसायि ज्ञानप्रमाणं एलक्षणें-लक्षित ज्ञानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिज्ञानादिक अथवा देशअवग्रहादिकतेने उप-प्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मात्नय उपनय एबोटिकनीप्रक्रिया शिष्यबुद्धीते धंध-नमात्रजाणवी ॥ १९ ॥

व्यवहारनेनिश्चयथकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्य
वृत्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारविशेषरे ॥ प्राणी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचारछे अनेनिश्चयनयमां उपचारनथी एपणस्योविशेष जे-वारें एकनयनी मुख्यवृत्तिलहियें तेवारें बीजानयनी उपचारवृत्तिआवे अतएवस्याद-स्त्येव एनयवाक्यें अस्तित्वग्राहक निश्चयनयेंअस्तित्वधर्म मुख्यवृत्तिलेतां कालादिकआठे अभेदवृत्त्युपचारे अस्तित्वसंबंध सकलधर्मलेतांज सकलादेशरूप नयवाक्य थाय एम

आकरग्रंथेप्रसिद्धछे स्वस्वार्थ सत्यपणानो अभिमानतो सर्वनयने मांहोमांहेछेज अने फलथीसत्यपणुंतो सम्यक्दर्शनयोगेंजछे ॥ २० ॥

तेणेएभाष्येभाष्युंरे ॥ आदरियेंनिरधार ॥ तत्वअरथ
निश्चयग्रहेरे ॥ जिनअभिमतव्यवहाररे ॥ प्राणी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेनिश्चय तथाव्यवहारनुंलक्षण भाष्येके० विशेषावश्यकें कह्युंछे तेरीतें निरधारीने आदरो तत्वार्थग्राहीनयोनिश्चयः लोकाभिमतार्थग्राहीव्यवहारः जेतत्वअर्थते युक्तिसिद्धअर्थ जाणवो अनेजेलोकाभिमतते व्यवहारप्रसिद्धछे तेयद्यपि प्रमाणेतत्वार्थग्राहीछे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थग्राही निश्चयनयः जछे एटले एकदेशतत्वार्थग्राही व्यवहार एभेदनिश्चें व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चयनयनी विषयता अनेव्यवहारनयनीविषयताते अनुभवसिद्धभिन्नछे अत्राज्ञाननयनिष्ट जेमसविकल्पकतानिष्टप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिभिन्न मानेछे एमहृदयमां विचारवुं ॥ २१ ॥

अभ्यंतरताबाह्यनेरे ॥ जेबहुविगतिअभेद ॥ निरमलपरि
णतिद्रव्यनीरे ॥ एसवीनिश्चयभेदरे ॥ प्राणी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेबाह्यअर्थने उपचारें अभ्यंतरपणुं करियें तेनिश्चयनयनो अर्थजाणवो यथा समाधिर्नंदनंधैर्य दंभोलिःसमताशची ॥ ज्ञानंमहाविमानंच वासवश्रीरियंपुनः ॥ १ ॥ इत्यादि पुंडरीकाध्ययनाद्यर्थोप्येवंभावनीयः जेघणीव्यक्तिनो अभेददेखाडियें तेपण निश्चयनयार्थ जाणवो जेम एगेआया इत्यादिसूत्रं वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादेशरूप शुद्धनिश्चयनयार्थ एमसंमतिग्रंथेंकह्युंछे तथाद्रव्यनीजे निर्मलपरिणति बाह्य निरपेक्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोअर्थजाणवो जेम आयासामाइए आयासामाइअस्सअट्ठे एमजेजेरीतें लोकातिक्रांत अर्थपामियें तेते निश्चयनयनो अर्थभेदथाय अने तेथीलोकोत्तरार्थ भावनाआवे ॥ २२ ॥

जेहभेदछेविगतिनोरें ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त
अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव तिभ्रयणएणंपंचवन्ने भमरेववहारणएणंकालवणे इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने निमित्तके० कारण एबेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारभाषा अनेकरूपें कहियेंछेयें ॥ २३ ॥

एमबहुविषयनिराकरीरे ॥ करतांतससंकोच ॥ केवलबाल
बोधवारे ॥ देवसेनआलोचरे ॥ प्राणी० ॥ २४ ॥

अर्थ॥एहवानिश्चयनय तथाव्यवहारनयनाघणाअर्थ तेनेनिराकरीके० टालीने तेनो संकोचकरतां थोमोनेददेखामतां नयचक्रग्रंथनोकर्त्ताजे देवसेननामादिगंबरी तेनो आलोच ते पोतासरिखा केटलाक बालकनेज बोधवानोदेखायछे पणसर्वार्थनिर्णयनो आलोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेतोश्वेतांबर संप्रदायना शुद्धनयनाग्रंथ तेना अन्यासथीज जणाय एनावार्थछे ॥ २४ ॥

एमबहुविधनयनंगसुंरे ॥ एकत्रिविधपयथ्थ ॥ परखोहरषो
हैयमलेरे ॥ सुजशलहीपरमत्नरे ॥ प्राणी० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामांपणअशुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धअर्थछे ते उपपाद्युंछे तेमाटे ए रीतें बहुप्रकारनयेनंगे एकजअर्थ त्रिविधके० द्रव्यगुणपर्यायरूप परखो स्वसमय परसमयनुं अंतरजाणीने हृदयनेविषे हर्षो परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ २५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ इमधन्नोधणनेपरचावे ॥ एदेशी ॥

एकअरथतिहुंलक्षणे ॥ जेमसहितकहेजिनराज
रे ॥ तेमसद्दहणामनधारतां ॥ सीजेसघलासुन
काजरे ॥ जिनवाणीप्राणीसांन्नलो ॥ एआंकणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेएकजअर्थ जीवपुद्गलादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पादव्ययध्रुव एत्रणलक्षणेकरी सहित एमश्रीजिनराजकहेछे उपन्नेवा विगमेइवा ध्रुवेइवा ए त्रिपदीयेंकरीने तेमज सद्दहणामनमांधरतां सर्वेकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वेअर्थव्यापकपणुं धारवुं तेजिनशासनार्थ पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैयायिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकांत अनित्यैकांत पक्षतोलोकयुक्तिथीपण विरोधछे माटे दीपथीमांमीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमां उत्पाद व्यय ध्रुव लक्षणमानवुं तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्यै आदीपमाव्योमसमस्वन्नावं स्याद्वादमुद्रानतिनेदवस्तु ॥ तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्यदितित्वदाज्ञाद्विषतांप्रलापः ॥ १ ॥ एजिनेश्वरनी वाणी हेप्राणीतुमेसांजलो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य
तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजन्नाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुवएलक्षणे षटद्र-व्यनो समयसमय परिणामछे इहांकोइकहेसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांध्रुवपणो नजो-इयें अनेजिहांध्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहवोविरोधछे तोत्रणलक्षण एक-ठामेकेमहोय जेम छाया तथाआतप एकठामेनहोयतेम ए त्रणलक्षपण एकठामे न-होवाजोइयें तेनेकहियेंजे शीत उष्ण स्पर्श जल तथा अनलके० अग्निनेविषे परस्परें परिहारेंदीठाछे तेने एकठामें उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांतोत्रणलक्षण सर्व-त्रएकठाज प्रत्यक्षथीदेखायछे परस्परपरिहारेंकिहांयें प्रत्यक्षसिद्धनथी तोए विरोधनो ठाम केमहोय अनादिकालनी एकांतवासनायें मोहितजीव तेउनोविरोधजाणेछे पणपरमार्थें विचारीजोतां विरोधनथी समनियततायें प्रत्ययजविरोधभंजकछे ॥ २ ॥

घटमुकुटसुवर्णहअर्थिया ॥ व्ययउत्पतिथितिपेखंतरे ॥
निजरूपेंहोवेहेमथी ॥ डुखहर्षउपेक्षावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखाडेछे जे एकहेमद्रव्यनेविषे घटाकारेंनाश अनेमुकुटाकारेउत्प-त्ति तथाहेमाकारेंस्थिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायछे केंमके हेमघटभांजी नेहेममुकुट थायछे तेथी हेमघटार्थ डुषवंतथायछे माटेघटाकारें हेमव्ययसत्यछे अने हेममुकु-टार्थ हर्षवंतथायछे तेमाटेहेमोत्पत्ति मुकुटाकारेंसत्यछे अनेहेममात्रार्थ तेकालेंनसुख-वंत नदुःखवंतथायछे स्थितिपरिणामेंरहेछे तेथी हेमसामान्यस्थिति सत्यछे एमसर्वत्र उत्पादव्यय स्थितिपर्याय द्रव्यरूपेंजाणवा इहांउत्पादव्यय भागेंभिन्नद्रव्य अनेस्थि-तिभांगे भिन्नद्रव्य कोइदेखातुंनथी केमके घटमुकुटाद्याकारें स्पर्शि हेमद्रव्यछेनही जेएकध्रुवहोय ध्रुवतानीप्रतितिपणछे माटेतद्भावाव्ययंनित्यं एलक्षण परिणामे ध्रुवअने परिणामेंअध्रुव एसर्वभाववुं ॥ ३ ॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुटनी॥ ध्रुवताकंचननीएकरे ॥ दलएकें
वर्त्तेएकदा ॥ निजकारयशकतिअनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्पादव्यय ध्रुवनो अभेदसंबंध भेददेखाडेछे हेमनाघटनोजेव्यय तेहि-ज हेममुकुटनीउत्पत्ति एककारणजन्यछे तेमाटे विभागपर्यायोत्पत्ति संतानछे तेथीज घटनाश व्यवहारसंभवेछे तेमाटे पण उत्तरपर्यायउत्पत्ति तेपूर्वपर्यायनो नाश जाणवो अनेकंचननी ध्रुवतापणतेहिजछे केमके प्रतित्यपर्यायोत्पदें एकसंतानपणुं तेहिजद्रव्य-लक्षण ध्रौव्यछे एत्रणलक्षण एकदलें एकदावर्त्तेछे एमअभिन्नपणे पण शोक प्रमोद माध्यस्थरूप अनेककार्यदेखीने तत्कारणशक्तिरूपें अनेकपणे भिन्नतापणो जाणवो जेम सामान्यरूपें ध्रौव्य अनेविशेषरूपें उत्पादव्यय एममानतांपण विरोधनथी व्यव-

हारतोसर्वत्र स्याद्वादार्थानुं प्रवेशेजहोय विशेषपरतापण व्युत्पतिविशेषेंजहोय अतएव स्यादुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्यादध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियेंउप्पन्नेवा इत्यादौ वाशब्दोविवस्थायांसच स्याछब्दसमानार्थः अतएव कृष्णः सर्पः एलौकिकवाक्यपण स्यात्शब्देंलहीयें केमके सर्प्पने पृष्टावछेदेंश्यामताछे पण उदरावछेदें श्यामतानथी तथा सर्प्पमात्रें कृष्णतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेषणविशेष्यनियमार्थजो स्यात्शब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीजजनासंजवे ॥ ४ ॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेज्व्यस्वजावरे ॥ तो
कारणजेदाजावथी ॥ होयकारयजेदाजावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति स्वजावतेछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथाय छे तोकारणनाजेदविना कार्यनोजेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने स्वानिष्टसाधनते शोकजनक तदुजयजिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केम होय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछेयें नहीतो अग्निसमीपें जलदाह जनकस्वजावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिजेद कारणजेद कार्यजेदानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवेछे ॥ ५ ॥

शोकादिकजननेवासना ॥ जेदेकोईबोलेबुध्दरे ॥ तसमन
सकारनीजिन्नता ॥ विणनिमित्तजेदकिमशुध्दरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शोकके० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमन्नोतमनत्नीपरें उत्पादव्ययजएकदाछे क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोछेजनही हेमथीशोकादिक कार्यहोयछे जिन्नजिन्नलोकनी जिन्नवासनाछे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनाजेदें कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष छे जेमसेलडीप्रमुख मनुष्यनेइष्टछे तथाकरजजेउंट तेनेअनिष्टछे पणतिहां वस्तुजेदनथी तेमइहांपणजाणवुं तेबौद्धने निमित्तजेदविना वासनारूप मनस्कारनीजिन्नता केमशुद्धथाय माटे शोकादिकनुं उपादान जेमजिन्नजिन्नछे तेम निमित्तपणजिन्न अवश्यमानवुं एकवस्तुनीप्रमातृजेदें इष्टानिष्टताछे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टग्यान जननशक्तिरूपपर्यायजेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तजेदविणग्यानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे ॥ तो
बाह्यवस्तुनालोपथी ॥ नघटेतुजघटपटजल्परे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेसेजे निमित्तकारणनाजेदविनाज वासना-

विशेषजनितज्ञानस्वन्नावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटादिक निमित्तविनाज वासनाविशेषें घटपटाद्याकार ज्ञानहोवुंजोइयें तेथी वाह्यवस्तु सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारज्ञानपण संन्नवेनही अंतरबहिराकारविरोधें बाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ज्ञानपण मिथ्या थयीजाय तथासुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्वं शून्यज्ञानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्साचित्रतैः कस्यांनस्यात्तस्यामतावपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धिं व्याहतछे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउतपत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहेतरे ॥ एकांत
न्नेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एमशोकादि कार्यत्रयनेन्नेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्या पण तेअविन्नक्तछे द्रव्यपणेअन्निन्नछे अतएव हेमघटनाशान्निन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे हेमघटावय विन्नागादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशान्निन्न खंडपटोत्पत्तिप्रतिएकादि तंतुसंयोगापमहेतुछे खंडपटें महापटनाशने हेतुताकल्पियें तोमहागौरवथाय एमजाणतो एलाघवप्रियनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतन्नेदनीवासना केमदीयेछे तेहनुंमतछे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे ॥ कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंतुसहामहे ॥ ८ ॥

दुग्धव्रतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतखायरे ॥ नवीदोइ
अगोरसव्रतजिमे ॥ तेणेतियलक्षणजगथायरे ॥ जिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेदधिद्रव्यते दुग्धद्रव्यनही केमके जेहनेदूधनुंव्रतछेएटलेदूधजजिमवुं एहवीप्रतिज्ञारूपछे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअन्नेदकहियें तोदधिजिमतां दुग्धव्रतन्नंगथवोनजोइयें एमाटे जे दूध तेदधिद्रव्यनही अने जोपरिणामीछे माटे अन्नेदकहियें तो दूधजिमतां दधिव्रतन्नंग नथवोजोइयेंअने जेहने दधिखावानुंव्रतछेतेपण दूधजिमतोनथी तथाअगोरसजजिमवुं एहवोव्रतवंत होय ते दूध तथादहीबेहुजिमेनहीएमगोरसपणे बेनेअन्नेदछे इहांदधिपणे उत्पत्तिअने दुग्धपणेनाशतथागोरसध्रुवपणोप्रत्यक्षसिद्धछे एदृष्टांते सर्वजगद्वर्त्तिन्नावने लक्षणत्रययुक्तपणुं कहेवुं श्लोक पयोव्रतोनदध्यत्तिनपयोत्तिदधिव्रतः ॥ अगोरसव्रतोनोन्ने तस्माद्वस्तुत्रयात्मकं ॥१॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप द्रव्यपर्यायथी सिद्धांत अविरोधेंसर्वत्र अवतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकन्नाव व्यतिरेकीज अने केटलाएकन्नावअन्वयीज एरीतेंजे दर्शनीकहेछे तिहांअनेरान्नावस्याद्वादव्युत्पत्तीयें देखाडवा वीजुंवस्तुनी

सत्ता त्रणलक्षणरूपजछे उत्पादव्यय ध्रुव्ययुक्तं सदितितत्त्वार्थ वचनात् तोसत्ताप्रत्यक्ष-तेहजत्रिलक्षणसाक्षात्छे तथारूपें सद्व्यवहार साध्यअनुमानादिकप्रमाणअनुसरियेंछेयें

उत्पन्नघटेंनिजद्रव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमहोयरे ॥ सुणध्रु
वतामांपहेलाजलिया ॥ छेअनुगमशक्तिदोयरे ॥ जिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेयावत्काल एकेकवस्तुमां त्रिणत्रिणलक्षणादिक केवीरीतेंहोय तेनिर-धारेछे उत्पत्तिथयीछेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिलक्षण स्वद्रव्यसंबंध रू-पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहिजपूर्वपर्यायनाश तेतुमेपूर्वेंथाप्योछे एहवोशिष्येंप्रश्नपुछ्यो तेवारें गुरुकहेछे प्रथमक्षणेंथयाजे उत्पत्तिनाश ते ध्रुवतामांजल्या अने अनुगमके० एकता तेशक्तिसदाइछे अछतेपण आद्यक्षणे उपलक्षणेथयीने आगलक्षणे द्रव्यरूपतत्संबंध कहियें जेम उत्पन्नोघटः नष्टोघटः सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्टः एमकहियें तेवारें एतत्क्षणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणियें तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्वितीयादि क्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटके० इहांद्रव्यार्थदेशें मृद्द्रव्यलेवुं जेमाटे उत्पत्तिनाशधरतां सामान्यरूपेंकहियें तत्प्रतियोगिता तेविशेषरूपेंकहियें ॥ १० ॥

उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ भूतादिकप्रत्ययभानरे ॥ पर्याया
रथथीसविघटें ॥ तेमानेसमयप्रमाणरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ निश्चेंनयथी क्रियमाणेकृते एवचनअनुसरीने उत्पद्यमानते उत्पन्नंएमक-हियें पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्नं उत्पत्स्यतेनश्यतिनष्टंनंक्ष्यति एविभक्त काल त्रयप्रयोगछे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे ऋजुसूत्रनय तेणेअनुगृहीत जे व्यवहारनयते लेइनेकहियें केमके ऋजुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेछे तिहां जेप-र्यायना वर्त्तमान उत्पत्तिनाश विवक्षीयें तेलेइने उत्पद्यते नश्यतिकहियें अने अतीत-लेइ उत्पन्नोनष्टः एमकहियें वली अनागतनेलेइ उत्पत्स्यतेनंक्ष्यति एमकहियें व्यव-स्थासर्वस्याछब्दप्रयोगेंसंभवे ॥ ११ ॥

जोतुजउत्पत्तिविशिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइष्टरे ॥ व्यवहारें
उत्पत्तिआदरो ॥ तोपहेलाअछतिविशिष्टरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उत्पत्तिधारारूप नाशनेविषे भूतादिकप्रत्ययनकहियें अने नशधातु-नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एवेलेइ तदुत्पत्तिकालत्रयनो अन्वयसंभवतो कहियें एरीतें कहेतां नश्यसमयें नष्टःएप्रयोगनहोय केमके तेकालेंनाशोत्पत्तिनुं अतीतत्वनथी एम व्यवहारनोजो समर्थनकरोछो तोव्यवहारें उत्पत्तिक्षणसंबंध मात्रकहो तिहांप्रागभा-

वध्वंसनाकालजावथी कालत्रयनोअन्वय समर्थनकरो अनेजोएमविचारसोजेघटने वर्त्तमानत्वादिकें जेमघटवर्त्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मेवर्त्तमानत्वादिकें पटवर्त्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोत्पत्ति वर्तमानत्वादिकें नाशवर्तमानत्वादिव्यवहारनहोय तोक्रियानिष्ठा परिणामरूप वर्त्तमानत्वने अतीतत्वलेइ नश्यतिनष्टः उत्पद्यतेउत्पन्नः एविजक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाकाल निष्टाकालयोगपद्य विवक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगछद्विगतं एसिद्धांतिक प्रयोगसंजवे अनेपरमतें इदानीं ध्वस्तोघटः एआद्यक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अमारेनयन्नेदेसंजवे उक्तंच संमतौ स्वाधिकरणक्षणत्वव्यापकस्वाधिकरणक्षणध्वंसाधिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥ उप्पज्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगछंतं॥न्नेदवियपन्नवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥१॥

उत्पत्तिनहीजोआगलें ॥ तोअनुत्पन्नतेथायरे ॥ जिमनाश
विनाअविनष्टछे ॥ पहेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलेंके० द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिकक्षणे अनुत्पन्नथाय जेमध्वंसथयापहेला नाशविना अविनष्टकहियेंछेयें तोएतर्कतुजने केमसुहातुंनथी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामद्वारें मानवा द्रव्यार्थदेशेंद्वितीयादिक्षणे जोउत्पत्ति व्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथाक्षणांतरजावें द्वितीयादिक्षणे उत्पत्ति पामीजोइयें जोअकल्पित अनुत्पन्नता होयनही तोपणप्रतिक्षणे उत्पत्तिविना परमार्थथी अनुत्पन्नताथवी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेजावेंजासिउं ॥ संमतिमांहेएजावरे ॥ संघयणादिक
जवजावथी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीउपजे ॥ केवलजावेंछेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमथीसदा ॥ शिवमांतियलक्षणएहरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमपरिणामथी सर्वेद्रव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिउं एजअनिप्रायें संमति ग्रंथमां एजावजाष्योछे जेसंघयणादिक जवजावथीसीजतां मोक्षसमयें केवलज्ञानजाय जवस्थ केवलज्ञानपर्यायें नाशथाय एअर्थतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे तेहीजकेवलज्ञानपणे जावेंछे ध्रुवछे एमोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया ततूपरिणतसिद्धद्रव्यानुगमथी शिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंघयणाइया जवछकेवल विसेषपज्जाया ॥ तेसिज्झमाणसमए एहोइविगयंतउहोइ ॥ १ ॥ सद्धत्तणेणयपुणो उप्पणोएसअछपज्जाउ केवलजावंतुपडुच्च केवलंदाइअंसुत्ते ॥ २ ॥ एजावलेइने केवलनाणेडुवि-

हेपन्नते भवत्थकेवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रें उपदेशछे एत्रणलक्षण स्थूलव्यवहारनय सिद्धनेंआव्युं पणसूक्ष्मनयनाव्युं केमके सूक्ष्मऋजुसूत्रादिकनय तेसमयसमयप्रतें उत्पादव्ययमानेछे तेलेइने तथा द्रव्यार्थादेशनो अनुगमलेइने जेसिद्धकेवलज्ञानमां त्रैलक्षणकहियें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमविचारीने पक्षांतरकहेछे ॥१४॥१५॥

जेज्ञेयाकारेंपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायरे ॥ व्यतिरेकें
तेथीसिद्धने ॥ तियलक्षणइमपणथायरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानादिकके० केवलज्ञान केवलदर्शन तेपोतानापर्यायें ज्ञेयाकारेंके० वर्त्तमानादिक विषयाकारें परिणमे व्यतिरेकेंके० प्रतिक्षणेअन्योन्यपणे सिद्धनेपरिणमे तेथीपणत्रणलक्षणथाय तेआवीरीतेंजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकारछे तेहनो द्वितीयादिक्षणेनाश अतीताकारेंउत्पादआकारेंभावें अनेकेवलज्ञान केवलदर्शनभावें अथवा केवलमात्रभावें ध्रुवछे एमभावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेंपरिणमे ॥ क्षणसंबंधेंपणभावरें ॥ तेथीतिय
लक्षणसंभवे ॥ नहीतोतेथायअभावरे ॥ जिन० ॥१७॥

अर्थ ॥ एमजेज्ञेय दृश्याकारसंबंधे केवलनेत्रैलक्षण कह्युं हवेनिराकारजे सम्यक्तवीर्यादिकभाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्रव्यने कालनासंबंधथी त्रैलक्षणदेखाडेछे एमजेभाव क्षणसंबंधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थः तेथीत्रणलक्षण संभवे जेम द्वितीयक्षणेभाव अने आद्यक्षणे संबंधपरिणामें नाशपाम्यो अनेद्वितीयक्षणे संबंधपरिणामे उपनो वलीक्षणसंबंधमात्रे ध्रुवछे तेकालसंबंधथी त्रणलक्षणसंभवे नहीतो तेवस्तुनो अभावथयीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज भावलक्षणछे अनेतेरहित जे शशविषाणादिक तेअभावरूपछे ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेंएकदा ॥ बहुसंबंधेबहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश
एमसंभवे ॥ नियमेंतिहांध्रौव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुद्गलने अनेपरपर्यायें आकाश अनेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायएत्रणद्रव्यने एककाले बहुके० घणासंबंधे बहुप्रकारें उत्पत्ति नाशसंभवे जेटलास्वपर्याय तेटला उत्पत्तिनाशहोय तेथी तिहांध्रौव्यस्वरूपपण तेटला निरधारछे पूर्वापरपर्यानुगतआधारांशतावन्मात्रहोय तेवत्ति अत्रसंमतिगाथा एगसमयंमीएग दवियस्सबहुआविहोंतिउ ॥ उप्पायसमाविगमा ठिईयउस्सग्गोणियमा ॥१८॥

द्विविधप्रयोगजवीससा ॥ उत्पादप्रथमअविशुद्धरे ॥ तेनियमें
समुदयवादनो ॥ यतनेंसंयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पादद्विविधके० बेप्रकारेंछे एकप्रयोगज बीजोवीससाके० स्वन्नावजनित तेमांपहेलो उत्पादते व्यवहारनोछे तेमाटेअविशुद्धकहियें तेनिर्द्धार समुदयवादनो तथायत्नेंकरी अवयवसंयोगें सिद्धकहियें अत्रसंमतिगाथा ॥ उप्पाउदुविअप्पो पउ-गजणीउअवीससाचेव ॥ तत्रयपउगजणीउ ॥ समुदयवाउअपरिसुद्धो ॥ १९ ॥

सहजेंथायतेवीससा ॥ समुदयएकत्वप्रकाररे ॥ समुदय
अचेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥२०॥

अर्थ ॥ न्ननेजे सहजें यत्नविनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेएकसमुद-यजनित अनेबीजोएकत्विक उक्तंच साहाविउविसमुदय कउवएगत्तिउहोज्जाहिं ॥ जेसमुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेअचेतनस्कंध अभ्रादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीर-वर्णादिकनो निरधारजाणवो ॥ २० ॥

संयोगविनाएकत्वनो ॥ तेद्रव्यविन्नागेंसिध्धरे ॥ जिमखंध
विन्नागेंअणुपणुं ॥ वलीकर्मविन्नागेंसिध्धरे ॥ जिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेएकत्विकजाणवो तेद्रव्यविन्नागें सिद्धके० उत्पन्नजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक स्कंधविन्नागें अणुपणुंके० परमाणुद्रव्यनो उत्पाद थाय तथाजेमजीवने कर्मविन्नागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेअवयवनासंयोगेंज द्र-व्यनीउत्पत्तिहोय पणविन्नागेंनहोय एहवुंजे नैयायिकादिक कहेछे तेनेमतें एकत्वादि-विन्नागें खंरुपटोत्पत्तिकेमघटे प्रतिवंधकालन्नावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हे-तुताकल्पतां महागौरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविन्नागें द्रव्योत्पादकमा-नवो तोविन्नागज परमाणुउत्पादपणे एपणअर्थसिद्धथयो एसंमतिमांसूचव्युंछे तदुक्तं दवंतरसंयोगाहि केइदवियस्सविंतिउप्पायं ॥ उप्पायथ्थाकुशलाविन्नागजायणइथ्थंति॥१॥ अणुएहिंदवेआ रद्धेतिअणुअंतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविन्नत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥

विणखंधहेतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेंउत्पादरे ॥ वलीजेक्षिण
क्षिणपर्यायथी ॥ तेएकत्वजअविवादरे ॥ जिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकत्वजछे तेमजजेनासंयोगें बंधनीपजेनही एहवो जे धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुद्गलादिकना संयोग तद्वारें जेसंयुक्तें द्रव्योत्पादअसं-युक्ता अवस्थाविनाशपूर्वक तथाऋजुसूत्रनयान्निमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीय-समयादि द्रव्यव्यवहारहेतुतद्वारें जेउत्पाद तेसर्वेएकत्वजउत्पाद अविवादपणेजाणवो इहांकोइविवादनथी ॥ २२ ॥

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥ नियमेभाष्योउत्पादरे ॥ निजप्रत्यय
पणतेहिजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय स्वोपष्टम्यगत्यादिपरिणत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजभाष्युंछे तेउभयजनित तथाएकजनितपणहोय ते माटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अंतरनयवाद के० निश्चेंव्यवहारजाणीने एअर्थ आगासाइअणंति न्हंपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेपे बीजोअर्थ वृत्तिकारें कस्योछे तेअनुसरीने लख्योछे ॥ २३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपांतरपरिणामरे ॥ अर्थांतर
गमनभावनगमनवली ॥ बीजोप्रकारअभिरामरे ॥जिन०॥२४॥

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमनंनचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः॥ सत्पर्यायेणविनाशःप्रादुर्भावोसताचपर्ययतः॥ द्रव्याणांपरिणामःप्रोक्तः खलुपर्यवनयस्य एवचन संमति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमां कह्युंछे कथंचित्सत्रुपांतर पामे पणसर्वथाविणसेनही तेद्रव्यार्थकनयनो परिणामकह्यो पूर्वेसत्पर्यायेंविणसेअने उत्तर असत्पर्यायेंउपजे तेपयायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअभिप्रायेंजोतां एकरूपांतरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना बेभेदजाणवा॥२४॥

अंधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अंतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअंधारो अनेउद्योतता तेअवस्थित द्रव्यनो रूपांतरपरिणामें रूपनाशजाणवो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअंतरसंक्रमे तेवारें द्विप्रदेशादिकभाव थायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कंधपर्यायउपनो तेणेकरीने अर्थांतरगति रूप नाशनो ठामजाणवो ॥ २५ ॥

अणुनेछेयद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ संयोग
विभागादिकथकी ॥ तोएणेएभेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसंबंधे खंधताछे तेरूपांतर परिणामजछे तोपणसंयोगविभागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधनुंजछे एउपलक्षणजाणवुं केमके द्रव्योत्पादविभागेंज जेमपर्यायोत्पादविभागथाय तेमद्रव्यनाशविभागेंज पर्यायनाशविभागहोय तेसमुदयविभाग अनेअर्थांतरगमन एबेप्रकार व्यवहारियें पहेलोतंतुपर्यंत पटनाश अने बीजोघटोत्पत्तियें मृद्पिंडादिकनो नाश उक्तंचसंमतौ विगमस्सविएसविहा समुदयजाणीयमिसोउडविअप्पो ॥ समुदयविभागमित्तं अछंतरभावगमणंच ॥ १ ॥ २६ ॥

ध्रुवन्नावथुलरुजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवन्नावपण स्थूलतथासूक्ष्मन्नेदें बेप्रकारनोछे, तेमां पहेलो स्थूलते रुजुसूत्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो, अनेबीजो सूक्ष्मते संग्रहनयनेसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवो पणजीवपुद्गलादिक निजद्रव्यजातीते जेमआत्मद्रव्यें गुणपर्यायनुं आत्मद्रव्यानुगमजध्रौव्य तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानुगमज ध्रौव्य अनेपुद्गलद्रव्यें गुणपर्यायनुं पुद्गलद्रव्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

सविअर्थसमयमांन्नाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे ॥ जे
न्नावेएहनीन्नावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्ययध्रौव्य, ततशील तत्स्वन्नावन्नाष्याछे; माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वन्नावनी न्नावनान्नावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त्व अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रन्नाविकपणानो यश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

न्निन्नअन्निन्नतिविहतियलक्षणो ॥ न्नाषिउइममेंअत्थ ॥ न्नेद
द्रव्यगुणपज्जवनाहवे ॥ न्नाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकित
सुधोरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समकेत
विणजेरेहठमारगेंपम्या ॥ तेसविजातिरेअंध ॥ सम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एरीते न्निन्नतथाअन्निन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अछके० एकअर्थ ते एक पदार्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां द्वाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगलाढालेंकह्युं. हवेद्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थेन्नेदछे तेविस्तारीनेन्नाषुछुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय परमार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्त्वनेआदरो. जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय अने एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजन्नावथीसद्दहे, तथाज्ञानवंतनोरागीहोय, तेनेपणयोग्यतायें द्रव्यसम्यक्त्वहोय एबेप्रकारछे तेसम्यक्त्ववंतनी दानदयादिक तथाथोडीक्रिया तेपणसर्वसफलहोय. उक्तंच ॥ विंसेकायांदाणाइं आउएयं मिचेवसहलाउं ॥ हुंतिकिरियाउएआउं विहुजह्मामोरकफलाउंपराउंअ ॥ १ ॥ माटेसम्यक्त्वविना तेसर्वक्रिया

धंधके० क्लेशरूपजाणवी, अनेसम्यक्त्व विनाजेअगीतार्थ तथाअगीतार्थनिश्रीत स्वस्वाभिनिवेशें हठकदाग्रहमार्गें पड्याछे, तेसर्वेजातिअंधसरिखा जाणवा, तेजोरुकुंजाणीकरे तोपणन्नलुंनहोय ॥ उक्तंच ॥ सुंदरबुद्धीइकयं बहुअंपिणसुंदरंहोइ ॥ माटेद्रव्यगुणपर्यायन्नेदपरिज्ञानेकरीने सूधूंसम्यक्त्वआदरो, एहितोपदेशछे ॥ २ ॥

धर्मअधर्मदगगनसमयवली ॥ पुद्गलजीवजएह ॥ षट्द्रव्य
कह्यारेश्रीजिनशासने ॥ जासनआदिनछेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मास्तिकाय अनेअधर्मके० अधर्मास्तिकाय तथागगनके० आकाशास्तिकाय तथासमयके० कालद्रव्य तथाअद्धासमय जेहनुं बीजुंनामछे वलीपुद्गलके० पुद्गलास्तिकाय अनेजीवके० जीवास्तिकाय ॥ एषट्द्रव्यश्रीजिनशासननेविषे कह्याछे, जेनोद्रव्यजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा छेहके० अंतनथी, एछमध्ये एककालवर्जीने बाकीपांचद्रव्यते अस्तिकायकहियें. अस्तयःप्रदेशास्तैः कायंतेशब्दायंते इतिव्युत्पत्तेः॥ एरीतेंप्रदेशनोसंबंधछे, माटेअस्तिकायकहियें. अनेकालद्रव्यने प्रदेशसंघातनथीमाटे अस्तिकायनकहियें, केमके जे एकसमयते बीजासमयने मिलेनहीमाटे. एमबीजापण धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतःपरंत्रिकमनंतंकालंविनास्तिकाया जीवमृतेचाप्यकर्तृणि इत्यादिकसाधर्म्य वैधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाग्रंथथी जाणवुं ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुद्गलजीवने ॥ झषनेजलजेमहोय ॥ तासअ
पेक्षारेकारणलोकमां ॥ धरमद्रव्यछेरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथम धर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. गतिपरिणामीजे पुद्गल तथा जीवद्रव्य ते लोकके० चतुर्दशरज्वात्मक आकाशखंडतेमांछे तेनुंजेअपेक्षाकारण परिणामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनादि क्रियापरिणत झष के० मत्स्यतेनेजेम जलअपेक्षाकारणछे तेहनीपरेंअपेक्षाकारणते धर्मास्तिकाय द्रव्य जाणवुं, स्थलेझषक्रिया व्याकुलतयाचेष्टाहेत्विछान्नावादेव नन्नवति ननुजलान्नावादिति गत्यपेक्षाकारणेमानान्नाव इतिचेन्न ॥ अन्वयव्यतिरेकाभ्यांलोकसिद्धव्यवहारादेवतद्धेतुसिद्धेरन्यथांत्यकारणेनेतराखिलकारणान्यथासिद्धिप्रसंगादितिदिग् ॥ ४ ॥

थितिपरिणामीरेपुद्गलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि
साधारणगतिथितिहेतुता ॥ दोयद्रव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेअधर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. तेस्थितिपरिणामीजेपुद्गल तथाजीवद्रव्य तेहनीस्थितिनोहेतुके० अपेक्षाकारणजेद्रव्य तेअधर्मास्तिकायजाणवुं. गतिस्थि-

तिपरिणत सर्वद्रव्यनुंजे एकद्रव्यलाघवें कारणसिद्धहोय तेएवेद्रव्यजाणवा, तेथी जखादिगत्यपेक्षाकारण जलादिद्रव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक द्रव्यलक्षणनी अति व्याप्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणें बेहुद्रव्यनोछे ॥ ५ ॥

सहेजऊर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिबंध ॥ गगनेअ-
नंतेरेकहीयेंनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मास्तिकायनेविषें प्रमाणकहेछे. जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रतिबंधके० नियमनहोय तोसहज ऊर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेएकसमयें लोकाग्रेंजाय. एहवेंस्वभावें अनंतगगनेजता हजीलगें फिरवानारसनो धंधटलेनही, केमके अनंतालोकाकाशप्रमाणें एक अलोकाकाशछे, तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपणुंछे, तेथीअलोकमां सिद्धगतिनहोयएमतो कहुंजायनही,पणधर्मास्तिकायविना लोकाकाश व्यवस्थाजनहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादावपि दंडविशिष्टाकाशसत्वेनैवहेतुतास्यादितिनकिंचिदेतत् बीजुं अन्यस्वभावपणे कल्पितआकाशने स्वभावांतर कल्पनाते अयुक्तछे ॥ माटेगतिनिबंधप्रमुख धर्मास्तियकाद्रव्य अवश्यमानवुं

जोथितिहेतुअधर्मनभाषीये ॥ तोनित्यथितिकोइठाण? ॥ गतिवि
णाहोवेरेपुद्गलजंतुनी ॥ संभालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेछे. जोसर्वजीवपुद्गलने साधारण थितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायद्रव्य नकहियेंतो किंतुधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त गत्यभावे आलोकेस्थित्यभाव एमकहियेंतो अलोकाकाशें कोइकस्थाने गतिविना पुद्गलजीवद्रव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइयें. बीजुंगतिस्थिति स्वतंत्र पर्यायरूपछे, जेमगुरुत्व लघुत्व एकने एकाभावरूप कहेतां विशेषग्राहक प्रमाणनथी, तेमाटेकार्यभेदें अपेक्षाकारण द्रव्यभेद अवश्यमानवो. धर्मास्तिकायाभावप्रयुक्तगत्यभावें स्थित्यभावकही,अधर्मास्तिकाये अपलपियें,तो अधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त स्थित्यभावेगत्यभावकही धर्मास्तिकायनोपण अपलापथाय, जेमनिरंतर गतिस्वभावें द्रव्यनकहेवोजोइयें तोनिरंतर स्थितिस्वभावेंपण केमकहीयें? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांभलीने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एबेद्रव्य असंकीर्णस्वभावेमानवा ॥ ७ ॥

सर्वद्रव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक
अलोकप्रकारेभाषिउं ॥ तेहद्रव्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. सर्वद्रव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश-

आपे तेअनुगत एकआकाशास्तिकाय सर्वाधारकहियें, इहपक्षीतेहपक्षी इत्यादिव्यवहारयद्देशभेदेंहोय तद्देशीअनुगतआकाशज पर्यवसन्नहोय, तद्देशोर्ध्वभागावच्छिन्नमूर्त्ताभावादिनातद्व्यवहारोपपत्तिरिति वर्द्धमानाद्युक्तं॥नानवच्छिन्नतस्याभावादिनिष्ठत्वेनानुभूयमानद्रव्याधारांशापलापप्रसंगात्तावत्प्रतिसंधानेपि लोकव्यवहारेणाकाशदेशप्रतिसंधेयोक्तव्यवहाराच्च ॥ एमआकाश लोकालोकभेदें द्विविधभाष्युंछे. यतःसूत्रं डुविहेआगासेपन्नते,लोआगासेय अलोआगासेय ॥ ८ ॥

धर्मादिकसुंरेसंयुतलोकछे ॥ तासवियोगअलोक ॥ तेनिर
वधिछेरेअवधिअभावने ॥वलगीलागेरेफोक ॥ सम० ॥९॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकथी संयुक्त जेआकाश तेलोकाकाशछे, अनेते धर्मास्तिकायादिकनो जिहांवियोगछे तेअलोकाकाशकहियें. तेअलोकाकाश निरवधिछे, एटले तेहनोछेहनथी. कोइएमकहेशेके जेमलोकनेपाशें अलोकनोछेहछे, तेमआगलपणहशे. तेहनेकहियेंजे, लोकतोभावरूपछे.! तेमांतोअवधिघटेछे, पणआगल अलोकमां केवलअभावछे. माटेतिहां अलोकावधिपणुंकेमघटे? शशशृंगकोणनो अवधिहोय? अनेजोभावरूप आत्मामानियेंतो तेअन्यद्रव्यरूपनथी. आकाशदेशस्वरूपनेतो तदंतपणुंकहेतां वदतोव्याघातहोय माटेअलोकाकाश अनंतुंजाणवुं ॥ ९ ॥

वत्तणलक्षणसर्वद्रव्यहतणो ॥ पज्जवद्रव्यनकाल ॥ द्रव्यअ
नंतनीरेद्रव्यअभेदथी ॥ उत्तराध्ययनेरेजाल ॥ सम० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यने लक्षणेकरीकहेछे. जेकालते परमार्थथीद्रव्यनथी, तोशुंसर्वद्रव्यनो वर्त्तनालक्षण पर्यायजछे ! तेपर्यायनेविषे अनादिकालीन द्रव्योपचारअनुसरीने कालद्रव्यकहियें. अतएव पर्यायेंद्रव्यभेदथी अनंतकालद्रव्यभेदनीजाल तेश्रीउत्तराध्ययनेछे, तथाचतत्सूत्रं ॥ धम्मोआगासं दव्वंइक्किक्कमाहियं ॥ अणंताणिय दव्वाणि कालोपुग्गलजंतवो ॥ १ ॥ टीकाएतडुपजीव्यान्यत्राप्युक्तं धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतः परंत्रिकमनंतमिति ॥ तेमाटे जीव अजीवद्रव्यजेअनंतछे, तेहनीवर्त्तनापर्यायभणीज कालद्रव्य सूत्रनेविषे अनंतकह्याजाणवा ॥ १० ॥

जीवअजीवजसमयेंतेकह्युं ॥ तेणेकेमजुदोरेतेह ?॥ एकवखा
णेरेआचारयइस्युं ॥ धरतांशुभमतिरेह ॥ सम० ॥११॥

अर्थ ॥ कंठथीपणसूत्रें जीवाजीवथी अभिन्न कालकह्योछे, तेदेखाडेछे. समयकें०सूत्रें जराखेतेकालने जीव तथाअजीवरूपजकह्योछे.तेकारणे कालने जुदोकें०भिन्नद्रव्यरूप केम कहियें तथाचोक्तं जीवाभिगमादिसूत्रे किमयंभंतेकालोत्तिपच्चुच्चइ गोयमा जीवाचेव-

अजीवाचेवत्ती ॥ एकआचार्यतो सिद्धांतनापाठने अनुसारें शुद्धमतिनीरेखाधरतां कालद्रव्यने एरीतेंवखाणेछे ॥ ११ ॥

बीजाभाषेरेजोइसचक्रने ॥ चारेंजेथितितास ॥ कालअपेक्षारेकारणद्रव्यछे ॥ षट्नीभगवइभास ॥ सम० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तथाबीजाआचार्य एमभाषेछे जेज्योतिषचक्रनेचारें परत्वापरत्व नवपुराणादिभावस्थितिछे, तेहनुं अपेक्षाकारण मनुष्यलोकमां कालद्रव्यछे. अर्थनेविषे सूर्यक्रियोपनायक द्रव्यनुं चारके० फिरवुं तेक्षेत्रप्रमाणज कल्पवुंघटे, माटेएहवुंकालद्रव्यकहियें तोज श्रीभगवतीसूत्रमां ॥ कइणंभंतेदव्वापन्नत्ता, गोयमा, छव्विहादव्वपन्नत्ता धम्मत्थीकाए जाव अद्धासमए ॥ एवचनछे तोतेनुंनिरुपचरितज व्याख्यानघटे अनेकालद्रव्यवर्त्तनापर्यायने साधारणपेक्षा द्रव्यनकहियेंतो गतिस्थित्यवगाहनासाधारणपेक्षा कारणपणे धर्माधर्माकाशास्तिकाय सिद्धथया तिहांपण अनाश्वासआवे माटेएअर्थयुक्तिग्राह्यछे तेथीकेवलआज्ञायें ग्राह्यकह्युं पणतेथीकेमसंतोषधराय ? ॥ १२ ॥

धर्म्मसंग्रहणीरेएदोयमतकह्या ॥ तत्त्वार्थमांरेजाण ॥ अनपेक्षितद्रव्यार्थिकनयमतें ॥ बीजुंतासवखाण ॥ सम० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एबेमत धर्मसंग्रहणीग्रंथमां श्रीहरिभद्रसूरियें कह्याछे, तथाचतद्गाथा ॥ जंवत्तणाइरूवो कालोदव्वस्सचेवपज्जाउ ॥ सोचेवतत्तोधम्मो कालस्सवजस्सजोलोएत्ति ॥ १ ॥ तथातत्त्वार्थसूत्रेंपण एबेमतकह्याछे ॥ कालश्चेत्येके इतिवचनात् ॥ बीजुंमतते तत्त्वार्थनेव्याख्याने, अनपेक्षित, द्रव्यार्थनयनेमतें कह्युंछे. स्थूललोकव्यवहार सिद्ध एकालद्रव्य अपेक्षारहितजाणवुं. अन्यथा वर्त्तनापेक्षाकारणपणेजोकालद्रव्य साधियें, पूर्वापरादि व्यवहारविलक्षण परत्वापरत्वादि नियामकपणे दिग्द्रव्यपणे सिद्धथाय अनेजो ॥ आकाशमवगाहाय तदनन्यादिगन्यथा ॥ तावप्येवमनुच्छेदात्ताभ्यां चान्यदुदाहृतं ॥ एसिद्धसेनदिवाकरकृतनिश्चयद्वात्रिंशिकार्थविचारी ने आकाशथीय दि कार्यसिद्धहोय, एममानीयेंतोकालद्रव्यकार्यपणेकथंचित्तेहथीज उपपन्नहोय. तस्मात्कालश्चेत्येकेइतिसूत्रंअनपेक्षितद्रव्यार्थिकनयें नैवेतिसूक्ष्मदृष्ट्याविभावनीयं ॥ १३ ॥

मंदगतेंअणुयावतसंचरे ॥ नहप्रदेशएकेठोर ॥ तेहसमय नोरेभाजनकालाणुं ॥ इमभाषेकोइऔर ॥ सम० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्याधिकारें दिगंबरप्रक्रिया उपन्यासेछे, जेएकनभप्रदेशने ठोर के० मंदगति अणुके० परमाणुजेटलेंकालें संचरे तेपर्यायनेसमयकहियें. तदनुरूपते

कालपर्यायसमयनुं जेभाजन तेकालाणु कहियें. तेएकेक आकाशप्रदेशें एकेकपरमाणु, एमकरतां लोकाकाशप्रदेशप्रमाण कालाणुहोय, एरीतें कोइक उंर के० जैनाभास दिगंबरभाषेछे उक्तंचद्रव्यसंग्रहे ॥ रयणाणंरासीइव तेकालाणुअसंखदव्वाणि ॥१४॥

योगशास्त्रनारेअंतरश्लोकमां ॥ एपणमतछेरेइठ ॥ लोक
प्रदेशेंरेअणुआजूजुआ॥मुख्यकालेंतिहांदिठ॥सम०॥१५॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अंतरश्लोकमां एदिगंबरमतपणइष्टछे केमके तेश्लोकमां लोकप्रदेशें जूजूआ कालनाअणुआ तेनेमुख्यकालकह्योछे तथाचतत्पाठः ॥ लोकाकाशप्रदेशस्था भिन्नाकालाणवस्तुये ॥ भावानांपरिवर्त्ताये मुख्यकालःसउच्यते ॥ १५ ॥

प्रचयऊर्ध्वतारेएहनोसंभवे ॥ पूर्वअपरपर्याय ॥ तिर्यक्
प्रचयघटेनहीखंधनो ॥ विणप्रदेशसमुदाय ॥ सम०॥१६॥

अर्थ॥ एकालाणुद्रव्यनो ऊर्ध्वताप्रचयसंभवे, जेममृद्द्रव्यने स्थास, कोस, कुसूलादि पूर्वापरपर्यायछे, तेमएहने समयावलिप्रमुख पूर्वापरपर्यायछे, पणखंधनोप्रदेश समुदाय एकालद्रव्यनेनथी, माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरें तिर्यक्प्रचयसंभवेनही. तेतिर्यक्प्रचयनथी, तेथीजकालद्रव्यने अस्तिकाय नकहियें. वलीएहने परमाणुपुद्गलनीपरें तिर्यक्प्रचय योग्यतापणनथी, माटेउपचारेंद्रव्यछे. तेथीपण कालद्रव्यने अस्तिकायपणुंनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमअणुगतीनीरेलेइहेतुता ॥ धर्मद्रव्यअणुथाय ॥ साधार
णतारेलेइएकनी ॥ समयखंधपणथाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरपक्ष प्रतिवादेंदूषेछे. एमजोमंदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायसमयभाजन द्रव्यसमय अणुकल्पियेंतो मंदाणुगतिहेतुतारूप गुणभाजन तेधर्मास्तिकायाणुपण सिद्धहोय. एमअधर्मास्तिकायादिक अणुनोपण प्रसंगथाय, अनेजो सर्वसाधारण गतिहेतुतादिकलेइ धर्मास्तिकायादिक एकस्कंधरूपज द्रव्यकल्पियें, देशप्रदेशनीकल्पना तेहनीव्यवहारानुरोधे पछीकरीएतो सर्वजीवाजीवद्रव्यसाधारणवर्त्तना हेतुतागुणलेइने कालद्रव्यपण लोकप्रमाणे एककल्पवोजोइयें, धर्मास्तिकायादिकने अधिकारें साधारणगति हेतुताद्युपस्थितिकल्पकछे अनेकालद्रव्यकल्पकते मंदाणुवर्त्तना हेतुत्वोपस्थितिजछे, एकल्पनायेंतो अभिनिवेशविना बीजुंकोइकारण दिगंबरीयोमांजणातुंनथी

अप्रदेशतारेसूत्रेंअनुसरी ॥ जोअणुकहियेंरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनथीजोडीयें ॥ उपचारेंसवीएह ॥ सम० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे सूत्रेंकालप्रदेशकह्योछे तेहनेअनुसारें कालाणुकहियें तोसर्वजीवाजीवनापर्यायरूपजकालकह्योछे तेमांविरोधनथी तोद्रव्यकालपण केमकह्योछे माटेकालने द्रव्यत्ववचन तथालोकाकाश प्रदेशप्रमाणअणुवचन एसर्व उपचारेंजोडीयें मुख्यवृत्तियेते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतछे, अतएव ॥ कालश्चेत्येके ॥ इहांएकवचनते सर्वसंमतत्वाभावसुचव्यो ॥ १७ ॥

पर्यायेजेमभाष्योद्रव्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकारणें ॥ तेमअणुतानोरेसार ॥ सम० ॥१९॥

अर्थ ॥ हवे उपचारप्रकारज देखाडेछे ॥ षव्द्रव्याणि ॥ एसंख्यापूरणनेअर्थे जेमपर्यायरूप कालनेविषे द्रव्यपणानोउपचार भगवत्यादिकनेविषे करियेंछैयें, तेमसूत्रे कालद्रव्यने अप्रदेशताकहियेंछैयें, तथाकालपरमाणुपण कह्याछे, तेयोजननेकारणे लोकाकाशप्रदेशस्थ पुद्गलाणुनेविषेज, योगशास्त्रनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचारकस्योछे, तेजाणवो. मुख्यकालइत्यस्यचानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचारविषयइत्यर्थः ॥अतएव मनुष्यक्षेत्रमात्रवृत्तिकालद्रव्यंयेवर्णयंतितेषामपिमनुष्यक्षेत्रावच्छिन्नाकाशादौकालद्रव्योपचारएवशरणमितिदिङ्मात्रमेतत् ॥ १९ ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लखियेंपुद्गलभेद ॥ सहज
चेतनारेगुणवलीजाणियें॥जीवअरूपअवेद ॥ सम०॥२०॥

अर्थ ॥ हवेपुद्गल तथाजीवद्रव्य संक्षेपेकहेछे. जेवर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिकगुणे पुद्गलद्रव्यनो अन्यद्रव्यथीभेदलखियें, तेपुद्गलद्रव्य; अनेजीवद्रव्य– ते सहज चेतनागुणछे. तेलक्षणेजसर्व अचेतनद्रव्यथी भिन्नछे. ते व्यवहारनयथी रूप तथावेदसहितपणेछे अनेनिश्चयनयथी रूपतथावेदरहितछे. उक्तंच ॥अरसमरूवरसगंध अवत्तचेयणागुणमसद्दं ॥ जाणअलिंगगहणं जीवमणीदिठसंठाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएभांष्यारेसंखेपेंकरी ॥ द्रव्यतणाषट्भेद ॥ विस्तारेतेजा
णिश्रुतथकी ॥ सुजशलहोगतखेद ॥ सम० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यनासंक्षेपथी छभेदभांष्याछे. तेविस्तारें श्रुतके० सिद्धांतथकी जाणीने खेदरहितथका प्रवचनदाक्षिणपणानो सुजशके० सुबोध तेपामो ॥ २१ ॥

॥ सोवनगिरिभूषणत्रिसलानंदनए ॥ देशी ॥

॥ ढाल इग्यारमो ॥

हवेभेदगुणनाभाषीजे ॥ तिहांअस्तिताकहियेंजी ॥ सद्भूत
तावस्तुताजाति ॥ व्यक्तिरूपतालहियेंजी ॥ द्रव्यभावइ

व्यत्वप्रमाणे ॥ परिछेद्यजेरूपजी ॥ प्रमेयत्वआ
णागमसुषीम ॥ अगुरुलघुत्वरूपजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनाभेद सामान्यतंत्रप्रक्रियायें कहियेंछेयें. तिहां १ अस्तित्वगुणतेक हियें के जेहथी सद्भूततानो व्यवहारथाय. २ वस्तुत्वगुणतेकहियेंके जेहथी जातिव्यक्ति रूपपणुं जाणियें. जेमघटतेहिज सामान्यथी जातिरूपछे अनेविशेषथी तद्व्यक्तिरू पछे. अतएव अवग्रहें सामान्यरूप सर्वत्रभासेछे, अपायें विशेषरूप भासेंछे, पूर्णोपयोगें संपूर्णवस्तुग्रहणथायछे. तथा ३ द्रव्यभावजे गुणपर्यायाधारताभिव्यंग्यजातिविशेषते द्रव्यत्वएजातिरूपछे माटेगुणनहोय एहवीनैयायिकादिवासनायें आशंका करवीनही, केमके ॥ सहभुवोगुणाः क्रमभुवःपर्यायाः॥ एहवीजजैनशास्त्रनी व्यवस्थाछे ॥द्रव्यत्वंचेद्गुणः स्याद्रूपादिवदुत्कर्षापकर्षभागिस्यादितितुकुचोद्यमेकत्वादिसंख्यायां परमतेपि व्यभिचा रेण तथाव्याप्त्यभावादेवनिरसनीयं. ४ प्रमाणेपरिछेद्यजे रूपप्रमाण विषयत्व तेप्रमे- यत्व गुणकहियें, तेपणकथंचित् अनुगत सर्वसाधारणगुणछे. परंपरासंबंधें प्रमाणत्वज्ञाने- पण प्रमेयत्व व्यवहारथायछे, तेमाटेजे प्रमेयत्वगुणते स्वरूपथीअनुगतछे ५ अगुरुलघुत्वगु ण ते सूक्ष्मआज्ञाग्राहीछे ॥ सूक्ष्मंजिनोदितंतत्त्वं हेतुभि र्नैवहन्यते ॥ आज्ञासिद्धंतुतद्ग्राह्यं नान्यथावादिनोजिनाः ॥ अगुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मा अवाग्गोचराः ॥ १ ॥

प्रदेशत्वअविभागीपुद्गल ॥ खेत्रभावजेव्यापिउंजी ॥ चेत
नताअनुभूतिअचेतन ॥ भावअननुभवथापिउंजी ॥ मूर
तताररूपादिकसंगति ॥ अमूर्त्ततातदभावोजी ॥ दशसा
मान्यगुणाप्रत्येकें ॥ आठआठएभावोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ६ जेअविभागीपुद्गल यावत्खेत्रेंरहे तावत्खेत्रव्यापीपणुं तेप्रदेशत्वनामा छठोगुणजाणवो. ७ चैतन्यत्वगुण तेआत्मानो अनुभवरूप गुणकहियें जेसुखदुः खादिचिंतवियें एव्यवहारथायछे, जेहथीजाति, वृक्ष, भग्न, क्षत, संरोहणादि जीवन धर्महोयछे ८ एथीविपरीत जेअचेतनत्वगुण तेअजीवमात्रनो गुणछे ए मूर्त्ततागुणते रूपादिक सन्निवेशाभिव्यंग्यपुद्गलद्रव्यमात्रवृत्तिछे. १० अमूर्त्ततागुणमूर्त्तत्वाभावस मनियतछे ॥ अचेतनत्वामूर्त्तत्वयोश्चेतनत्वमूर्त्तत्वाभावरूपत्वान्नगुणत्वमितिनाशंकनीयंअ- चेतनामूर्त्तद्रव्यवृत्तिकार्यंजनकतावच्छेदकत्वेनव्यवहारविशेषनियामकत्वेनचतयोरपि पृ- थग्गुणत्वात् ! नञ् पर्युदासार्थकत्वात् नञ्गर्भपदवाच्यतायाश्चानुष्णाशीतस्पर्श इत्यादौ व्यभिचारेणपरेणपरेषामप्यभावत्वानियामकत्वाद्भावांतरमभावोहिकयाचित्तु व्यपेक्षये

तिनयाश्रयणेनदोषाभावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणछे. तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व, एचारगुणते द्रव्योनेविषे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे, तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आठआठगुणपामियें, एमविचारीनेभावो ॥ २ ॥

ज्ञानदृष्टिसुखवीर्यफरसरस ॥ गंधवर्णएजाणोजी ॥ गति
थितिअवगाहनावर्त्तना ॥ हेतुभावमनआणोजी ॥ चेत
नादिचारेंभेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी ॥ षट्पुद्गलआत
मनेतिनह ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य, एचारआत्मानागुणछे. १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण, एचारपुद्गलना विशेषगुण. शुद्धद्रव्येंअविकृतरूप अविशिष्टरहे; तेमाटेएगुणकह्या, विकृतस्वरूपते पर्यायमांभिले एविशेषजाणवुं. १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता. एचारगुणतेधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अनेआकाशास्तिकाय, तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुण जाणवा. एरीतेंबारगुणथया, तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणभेलीयें, तेवारें सोलविशेषगुणथाय; तेमध्ये पुद्गलद्रव्यने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मूर्त्तत्व, अचेतनत्व, एछगुणहोय, अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, अमूर्त्तत्व, चेतनत्व, एछगुणहोय. बीजांसर्वेद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय; एकपोतानो अचेतनत्वगुण, बीजोअमूर्त्तत्व, त्रीजोगतिस्थित्यादि, एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति ॥ गुणसामान्यकहायजी ॥ वि
शेषगुणपरजातिअपेक्षा ॥ ग्रहताचित्तसुहायजी ॥ विशेष
गुणछेसूत्रेंभाषिया ॥ बहुस्वभावआधारोजी ॥ अर्थतेह
किमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या, अनेविशेषगुणमां पणकह्या, तेनुंकारणकहेछे. चेतनत्वादिचारगुण स्वजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंछे, तेथी सामान्यगुणकहियें, अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी स्वाश्रय व्यावृत्तिकरेछे, तेमाटे विशेषगुणकहियें ॥ परापरसामान्यवत्सामान्यविशेषगुणमेषामितिभावः॥तथाज्ञान,दर्शन,सुख,वीर्य,एचारआत्मविशेषगुणअनेस्पर्श,रस,गंध,वर्ण, एचार पुद्गलविशेषगुण एमजेकह्युं, तेस्थूलव्यवहारजाणवो. जेमके अष्टौसिद्धगुणाःतथा एकत्रिंशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुद्गलाअनंताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें

विशेषगुण अनंताथाय,तेछद्मस्थकेमगणीशके?॥तस्माद्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाह्नावर्त्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याः षडेवास्तित्वादयः सामान्यगुणास्तुविवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्यायं षण्णांलक्षणवतां लक्षणानिषडेवेतिहिकोनश्रद्दधाति ॥ नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एवंजीवस्सलख्खणं ॥ १ ॥ सदंधआरउज्जोय पभावायातहेवय ॥ वण्णरसगंधफासा पुग्गलाणं तुलख्खणं ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वभावलक्षणयोरन्यो न्येनांतरीयकत्वप्रतिपादनायेत्यादिपंक्तिर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्म्मअपेक्षायेंइहांअलगा ॥ स्वभावगुणथीभाष्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यतालेइ ॥ स्वभावगुणकरीदाष्याजी ॥
अस्तिस्वभावतिहांनिजरूपें ॥ भावरूपतादेखोजी ॥ परअ
भावपरेंनिजभावेंपण ॥ अरथअनुभविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्तिव्यावृत्तिसंबंधें धर्ममात्रनीविवक्षाकरीने इहांस्वभावनेगुणथकी अलगा के०जूदा पंडितेंभाष्याछे, तेद्रव्यना निजनिजके० आपआपणारूपनी मुख्यतालेइने, अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीने,जेस्वभावछे तेनेजगुणकरीने, दाख्याके०देखाड्याछे. माटे गुणविभागकहिने स्वभावविभाग कहियेंछैयें. तिहांप्रथम अस्तित्वभावते निजरूपें एटलेस्वद्रव्य, स्वखेत्र, स्वकाल, स्वभाव स्वरूपें भावरूपतादेखो. जेमपरभावें नास्तित्वभाव अनुभवियेंछैयें, तेमनिजभावें अस्तित्वभावपण अनुभवियें छैयें. तेमाटे अस्तिभाव तेलेखवे. एप्रथम अस्तिभावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वभावपरभावेंजी ॥
परभावेंपणसत्ताकहेता ॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसथीजी ॥ छतोसरा
वगंधनवीभासे ॥ जेमविणनीरफरशथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वभाव द्रव्यनेविषे नमानीयेंतो, परभावापेक्षायें जेमनास्तिता, तेमस्वभावापेक्षायेंपण नास्तिताथातां, सर्वशून्यताथइजाय, तेमाटेस्वद्रव्याद्यपेक्षायेंअस्तिस्वभाव सर्वथामानवो, एप्रथमगुण. अनेपरभावेंके०परद्रव्याद्यपेक्षायें नास्तिस्वभावकहियें. परभावेंपण सत्ता,अस्तिस्वभावकहेतां सर्वस्वरूपें अस्तिथयुं, तेवारें जगत्एकरूपथाय, तेतोसर्वशास्त्र व्यवहारविरुद्धछे,माटेपरापेक्षायें नास्तिस्वभाव छे. जेसत्तातेस्वभावें वस्तुमांहेजजणायछे, माटेसत्यछे,जे असत्तातेस्वज्ञाने परमुखनिरीक्षणकरेछे. तेथी कल्पना ज्ञानविषयपणे असत्यछे,एहवुं बौद्धमतछे, तेनेखंरूवानेकहेछे,जेसत्तानीपरें त-

रकाल असत्ताजेनथीस्फुरति, तेव्यंजक अणमिल्याविशथी जाणवी, पण शुन्यपणाथी, तुछपणाथकीनही, जेमछतुं माटीनुं सरावके० घटछे, तेहनोजेगंधते नीरके० पाणीना स्पर्शविना जणायनही,एतावता असत्यनथी. केटलाएकवस्तुनागुण स्वभावेंजजणायछे, अनेकेटलाक प्रतिनियत व्यंजननाव्यंग्यछे,एवस्तुमांवैचित्र्यछे,पण एकेनीतुछताकहियें,तो घणोव्यवहार विलोपाय॥ उक्तंचास्माभिर्भाषारहस्यप्रकरणे,तेहुंतिपरावेक्खा वंजपमुहदंसिणोत्तिणयतुछा ॥ दिठमिणंवेचित्तं सरावकपूरगंधाणंति॥ ६ ॥

निजनानापर्यायेंतेहज ॥ द्रव्यएहएमकहियेंजी ॥ नित्यस्वभावअनित्यस्वभावें ॥ पज्जयपरणतिलहियेंजी ॥ छतिवस्तुनेरूपांतरथी ॥ नाशेद्विधाभासेजी ॥ विशेषनेसामान्यरूपथी ॥ स्थूलअंतरनाशेजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ निजके० पोतानाजे क्रमभावी नानाप्रकारनापर्याय श्यामत्व, रक्तत्वादिकते भेदकछेतेछतां पणएद्रव्यतेहिज जेपूर्वेंअनुभव्युंहतु, एवुंज्ञानजेहथीथायछेतेनित्यस्वभाव कहियें॥तद्भावाव्ययंनित्यमितिसूत्रं॥प्रध्वंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वमित्यस्याप्यत्रैवपर्यवसानं केनचिद्रूपेणैवतल्लक्षणव्यवस्थितेः॥एनित्यस्वभावत्रीजोथयो. अने अनित्यस्वभावते पर्यायनीपरिणतिलेइयें, जेरूपेंउत्पादव्ययछे, तेरूपेंअनित्यस्वभावछे. जेमछतिवस्तुनुं रुपांतरथीपर्यायविशेषथीनाशछे,तेथीकरीएद्विधा,आरूपेंनित्य,आरूपेंअनित्यएवैचित्र्यभासेछे,विशेषअनेसामान्यरूपथी अनित्यता,जेमघटनाशें पणमृद्द्रव्यानुवृत्ति तथासामान्येमृदादिकने पण स्थूलार्थांतर घटादिकनाशेंअनित्यताछे,नेघटरूपेणमृन्नष्टेतिप्रतीतेः॥७॥

जोनित्यतानछेतोअन्वय ॥ विनानकार्यहोवेजी ॥ कारजकालेंअछतुंकारण ॥ परिणतिरूपविगोवेजी ॥ अनित्यताजोनहीसर्वथा ॥ अर्थक्रियातोनघटेजी॥ दलनीकारयरूपपरिणति ॥ अनुतपन्नतोविघटेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोनित्यता द्रव्यनेविषेनथी,अनेएकांतक्षणिकज स्वलक्षणछे, तोकारणना अन्वयविना कार्यनीपजेनही. केमके कारणक्षण कार्यक्षणोत्पत्तिकालें निर्हेतुक नाश अनुभवतो अछतोछे, तेकार्यक्षण परिणतिकेमकरे ? अछतोयेंकारणक्षण कार्यक्षणकरेतो चिरनष्टकारणथी अथवाअनुत्पन्नकारणथी कार्यनीपनुंजोइयें एमतोकार्य कारणभावनी विडंबनाथाय. अव्यवहितजेकारणक्षण कार्यक्षणकरे, एमकहियेंतो, रूपालोक मनस्कारादिक्षण रूपादिकनेविषें उपादानआलोकादिकनेविषे निमित्त ए व्यवस्थाकेम-

घटे ? केमके अन्वयविना शक्तिमात्रें उपादानता निमित्तमांहेपण कहि शकीयें; माटेजेउपादानते अन्वयीमानवुं, अनेअन्वयीपणुं तेहीज नित्यस्वभावहोय. हवेजोसर्वथा नित्यस्वभावज मानीयें, अनेअनित्यस्वभाव सर्वथानमानियेंतो, अर्थक्रियाघटेनही, केमके दलनेकारणेंअने कार्यरूपता परिणतिकथंचित् उत्पन्नपणुंजआव्युं, अनेसर्वथा अनुत्पन्नपणुं विघटीजाय, अनेजोएमकहियें, केजेकारण ते नित्यजछे, तथा तद्वृत्तिकार्य तेअनित्यजछे, तोकार्यकारणने अभेदसंबंधकेमघटे ? भेदसंबंधमाने तो तत्संबंधांतरादि गवेषणायें अनवस्थाथाय.तेमाटे कथंचित् अनित्यस्वभावपण मानवो॥८॥

स्वभावनेएकाधारत्वें ॥ एकस्वभावविलासोजी ॥ अनेक
द्रव्यप्रवाहएहने ॥ अनेकस्वभावप्रकाशोजी ॥ विणएक
ताविशेषनविलहीयें ॥ सामान्यनेअभावेंजी ॥ अनेकत्व
विणसत्तानघटे ॥ तेमजविशेषअभावेंजी ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ स्वभावके० सहभावीधर्म, तेहनेआधारत्वें एकस्वभाव. जेमरूप,रस,गंध,स्पर्शनो आधार घटादिएककहियें, तेमनानाप्रकारना धर्माधारत्वें एकस्वभावता, नाना लक्षणानुगतत्वे नित्यस्वभावता, एविशेषजाणवो; एपांचमोएकस्वभावजाणवो. हवे मृदादिद्रव्यनो स्थास, कोस, कुशूलादिक अनेकद्रव्य प्रवाहछे. तेथीअनेकस्वभाव प्रकाशियें, पर्यायपणेआदिष्ट द्रव्यकरियें, तेवारें आकाशादिकद्रव्यमांपण घटाकाशादिकभेदें एस्वभाव दुर्लभनथाय, एछठो अनित्यस्वभावकह्यो. हवेएकस्वभावविना सामान्यनो अभावथाय, माटेविशेष नपामियें, माटेविशेषाभावें अनेकस्वभावविना मूलसत्तापण घटेनही, तेमाटे एकानेक एवेहुस्वभावमान्याजोइयें ॥ ९ ॥

गुणगुणीनेसंज्ञासंख्यादिक॥भेदेंभेदस्वभावोजी ॥ अभे
दवृत्तिसुलक्षणधारी ॥ होयेंअभेदस्वभावोजी ॥ भेद
विनाएकत्वसर्वने ॥ तेणेंव्यवहारविरोधोजी ॥ विण
अभेदकेमनिराधारनो ॥ गुणपज्जवनोबोधोजी ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुणगुणीने,पर्यायपर्यायीने, कारककारकीने, संज्ञा, संख्या, तथालक्षणादिक भेदेंकरीनेसातमो पण भेदस्वभाव जाणवो, अने अभेदनीजेवृत्ति ते लक्षणवंतआठमो अभेदस्वभाव जाणवो. हवेजोद्रव्यनेविषे भेदस्वभाव नमानीयेंतो, सर्वद्रव्यगुणपर्यायने एकपणुंथाय, तेथीकरी, “ इदंद्रव्यं अयंगुणः अयंपर्यायः ” एव्यवहारनो विरोधथाय अने जो अभेदस्वभाव नकहियेंतो, निःकेवल निराधार गुणपर्यायनो बोधथ-

वोजोइयेंनही, केमके आधाराधेयनो अन्नेदविना वीजोसंबंध घटेजनही. अत्र प्रवचनसारोद्धारनीगाथा ॥ पविन्नत्तपदेशत्त पुधत्तमितिसासणंहिवीरस्स ॥ अन्नत्तमतन्नावो एतन्नवंन्नवदिकधमेगति ॥ १० ॥.

शक्तिअवस्थितनिजरूपांतर ॥ न्नवनेन्नव्यस्वन्नावोजी ॥
त्रिहुंकालेमिलतापरन्नावें॥अन्नव्यनअन्नव्यस्वन्नावोजी॥
शून्यन्नावपणन्नव्यस्वन्नावें ॥ कूटकार्यनेयोगेंजी ॥ अन्न
व्यन्नावेविणद्रव्यांतरता ॥ थायेद्रव्यसंयोगेंजी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अनेककार्य–कारणशक्तिकजे अवस्थितद्रव्यछे, तेहने क्रमिकविशेषता आविर्न्नावें अतिव्यंग्यते नवमोन्नव्यस्वन्नाव कहियें. त्रिहुंकालें परद्रव्यमांमिलतांपण परस्वन्नावें नपरिणमवुं, तेदशमोअन्नव्यस्वन्नावकहियें ॥ अन्नोन्नंपविसंता देंताञगासमणमणस्स ॥ मेलंतावियणीचं सगसगन्नावंणविजहंति ॥ १ ॥ हवेन्नव्यस्वन्नावविना कूटके० खोटाकार्यनेयोगें शून्यपणुंथाय. परन्नावेंनहोय अनेस्वन्नावेंहोय तेवारेंन्नव्यहोय, अनेतेजो परन्नावेपणनहोय अने स्वन्नावेपणनहोय तेवारें होयजनही, एवुंथयुं, तथाजोअन्नव्यस्वन्नाव नमानीयेंतो, द्रव्यनेसंयोगें द्रव्यांतरपणुं थवुंजोइयें, केमके धर्माधर्मादिकने जीवपुद्गलादिकने एकावगाहनावगाढ कारणें कार्यसंकर अन्नव्यस्वन्नावेज नथाय, तत्तद्रव्यने तत्कार्यहेतुता कल्पनपणे अन्नव्यत्वस्वन्नाव गर्न्नजछे. ॥आत्मादेःस्ववृत्यनंतकार्यजननशक्तिर्न्नव्यतातत्तत्सहकारिसमवधानेनतत्तत्कार्योपधायकताशक्तिश्च तथान्नव्यतेति तथान्नव्यतयैवनातिप्रसंगइतितु हरिन्नद्राचार्याः ॥ ११ ॥

परमन्नावपरिणामिकन्नाव ॥ प्रधानेंतायलीजेजी ॥ एवि
णमुख्यरूपकेमद्रव्यें॥प्रसिद्धरीतेंदीजेजी॥ एसामान्यस्व
न्नावइग्यारह ॥ सकलद्रव्यनेधारोजी ॥ आगमअर्थ
विचारीनेजग ॥ सुजशवादविस्तारोजी ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ स्वलक्षणीन्नूत पारिणामिकन्नाव प्रधानतायें परमन्नावस्वन्नावकहियें. जेमज्ञानस्वरूपआतमा. एइग्यारमोन्नेदथयो. जोपरमन्नाव स्वन्नावनकहियें, तोद्रव्यनेविपेप्रसिद्ध रूप केमदेवाय?अनंतधर्मात्मकवस्तुने एकधर्मेपुरुषकारें बोलावियें,तेहीज परमन्नावनुं लक्षणछे.एइग्यारसामान्यस्वन्नाव सर्वद्रव्यनेधारवा. एहवाआगमना अर्थविचारीने जगत्मां सुयशविस्तारो ॥ १२ ॥ हवेआगलाढालमांदशविशेषस्वन्नावकहेछे.

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जीहोसंनवनामसोहामणोएदेशी ॥

जीहोचेतननावतेचेतना ॥ लालाउलटअचेतननाव ॥ जीहोचेतनता विणजीवने ॥ लालाथाएकर्मअनाव ॥ चतुरनरधारोअर्थविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय,तेचेतनस्वनाव, अनेतेथीउलटो तेअचेतनस्वनाव. जोजीवने चेतनस्वनाव नकहियें,तोरागद्वेष चेतनारूपकारणविना ज्ञानावरणादिकर्मनो अनावथाय,उक्तंच॥स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य रेणुनाश्लिष्यतेयथा॥गात्रंरागद्वेषक्लिन्नस्य कर्मबंधोनवत्येव॥इति. माटेहेचतुरपुरुषोएरीतें अर्थविचारीनेधारो ॥१॥

जीहोजोचेतनतासर्वथा ॥ लालाविनाअचेतननाव ॥ जीहोध्यान ध्येयगुरुशिष्यनी ॥ लालासीखपशुध्दस्वनाव ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वनावजकहियें अनेअचेतनस्वनावनकहियें तो अचेतनकर्मनो कर्मद्रव्योपश्लेष जनितचेतनाविकारविना शुद्धसिद्धसदृशपणुंथाय, तेवारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्यनीशीखपतीपडे, एरीतेंसर्वशास्त्रव्यवहार फोकट थइजाय, शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय ? तेमाटे॥अलवणायवागूरितिवत् ॥ अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतें कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तनावमूरतीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वनाव ॥ जीहोजोमूर्त्ततानजीवने ॥ लालातोसंसारअनाव ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिके० रूप,रस,गंध,स्पर्शादिसन्निवेशते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वनावकहियें, अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वनावजाणवो, जोजीवनें कोइकरीतें मूर्त्ततास्वनाव नहोयतो, शरीरादिसंबंधविना गत्यंतरसंक्रमविना संसारनो अनावथाय ॥ ३ ॥

जीहोअमूर्त्तताविणसर्वथा ॥ लालामोक्षघटेनहीतास ॥ जीहो एकप्रदेशस्वनावता ॥ लालाअखंमबंधनिवास ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजो लोकदृष्टव्यवहारें मूर्त्तस्वनावज आत्मानेमानीयें, तोमूर्त्ततेहेतुसहस्त्रेंपण अमूर्त्तनहोय; तेथीमोक्षघटेनही. माटेमूर्त्तसंचलितजीवनेपण अंतरंग अमूर्त्तस्वनावमानवो. वलीएकप्रदेशस्वनाव तेहनेंकहियेंजे एकत्वपरिणति अखंमाकार बंधके० सन्निवेश तेहनो निवासके० नाजनपणुं तेएकप्रदेशस्वनाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वनावता ॥ लालानिन्नप्रदेशस्वनाव॥ जीहो जोनहीएकप्रदेशता ॥ लालानेदहुएबहुनाव ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अने अनेकप्रदेशस्वभाव तेहनेकहियें जेभिन्नप्रदेशयोगें तथा भिन्नप्रदेश कल्पनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपणुंहोय. हवे जोएकप्रदेशस्वभाव नहोयतो, असंख्याता प्रदेशादियोगें बहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायछे, तेमाटे एव्यवहारनहोयतो घणाधर्मास्तिकायछे, इत्यादिक थवुंजोइयें ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनिःकंपता ॥ लालाजोनअनेकप्रदेश ॥ जीहो
अणुसंगतिपणकेमघटे ? ॥ लालादेशसकलआदेश ॥च० ॥६॥

अर्थ ॥ जो अनेकप्रदेशस्वभाव द्रव्यनेकहियेंतो घटादिक अवयवी देशथीसकंप तथादेशथीनिःकंप देखियेंछेयें तेकेममले, अनेअवयवकंपे पणअवयवीनिःकंप एमकहियेंतो चलतिएप्रयोग केमथाय? प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंबंधछे; तेमदेशवृत्ति कंपाभावनोपण परंपरासंबंधछे, तेमाटेदेशथीचलेछे अनेदेशथी नथीचलतो, एअस्खलितव्यवहारेंअनेकप्रदेशस्वभाव मानवो. तथाअनेकप्रदेशस्वभाव नमानियेंतो,आकाशादिद्रव्यें अणुसंगतिके० परमाणुसंयोग केमघटे ? ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलभेदेंद्विधा ॥ लालादीठीजगमांवृत्ति ॥ जी
होप्रत्येकेंदूषणतिहां ॥ लालाबोलेसंमत्तिवृत्ति ॥ चतु० ॥७॥

अर्थ ॥ वलीएहिजयुक्ति विस्तारीदेखारुछे. एकवृत्तिदेशथीछे; जेमकुंडलइंद्रने;इहांकुंडलतो कानमांपहेस्याछे; तेकानतोइंद्रनो एकदेशछे. पणइंद्रकहिबोलायछे,तथाबीजी वृत्ति सर्वथीछे. जेमसामान्यवस्त्रद्रूयनी एटलेजामो सर्वअंगमांपेस्योछे तेदेवदत्त ए सर्वथीजाणवी. तिहांप्रत्येकेंदूषण संमत्तिग्रंथनी वृत्तिबोलेछे. परमाणुने आकाशादिकें देशवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनिछतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां परमाणु आकाशादिप्रमाण थइजाय, तथाउभयाभावेंतो परमाणुने अवृत्तिपणुंथाय; याबद्विशेषाभावस्यसामान्याभावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

जीहोभावस्वभावहअन्यथा ॥ लालाछेविभावबरुव्याधि ॥ जीहो
एविणनघटेजीवने ॥ लालाअनियतकर्मउपाधि ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्वभावथी जेअन्यथाभाव तेविभावस्वभावकहियें,तेमहाव्याधिरूपछे. ए विभावस्वभाव मान्याविना जीवने अनियतके० नानाप्रकारना देशकालादिविपाकी कर्मोपाधि नलागवाजोइयें, उपाधिसंबंध योग्यतायें अनादिविभावस्वभावः ॥ ८ ॥

जीहोशुद्धभावकेवलपणुं ॥ लालाउपाधिकजअशुद्ध ॥ जीहोवि
णशुद्धतानमुक्तिछे ॥ लालालेपनविगरअशुद्ध ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ केवलपणुंके० उपाधिन्नावरहितांतरन्नाव परिणमनते शुद्धस्वन्नाव, अने जे उपाधिजनित बहिर्न्नाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वन्नावछे. जोशुद्धस्वन्नाव नमानियें,तो मुक्तिघटेनही, अनेजोअशुद्धस्वन्नाव नमानियें,तो कर्मनोलेपघटेनही. इहांशुद्धस्वन्नावनेकदापि अशुद्धतानहोय,अने अशुद्धस्वन्नावने पढीपणशुद्धता नहोय, एवेदांतादिक मतनेनिराकरी उन्नयस्वन्नावमाने; जेथकीकोइदूषणनहोय ॥ ए ॥

जीहोनियमितएकस्वन्नावजे ॥ लालाउपचरियेंपरठाण ॥ जीहोतेउ
पचरितस्वन्नावछे ॥ लालाएविणकेमपरनाण? ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधार्योजे एकस्वन्नाव अनेपरस्थानकें उपचरियें तेउपचरित स्वन्नावहोय,तेउपचरितस्वन्नाव नमानियें,तो स्वपरव्यवसायी ज्ञानवंतआत्मा केमकहियें? जेमाटे ज्ञानने स्वविषयत्व तो अनुपचरितछे,पणपरविषयत्व ते परापेक्षायें प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित संबंधपणेउपचरितछे. ॥ १० ॥

जीहोकर्मजसहजबेन्नेदते ॥ लालामूर्त्तअचेतनन्नाव ॥ जी
होप्रथमजीवनीसिद्धने ॥ लालाअपरपरज्ञस्वन्नाव ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेउपचरित स्वन्नाव बेप्रकारेंछे, एककर्मजनित,बीजोस्वन्नावजनित, तिहांपुजलसंबंधे जीवने मूर्त्तपणुं अनेअचेतनपणुंजे कहियेंछैयें, तिहांगौर्वाहीकः एरीतें उपचारछे, तेकर्मजनितछे, माटेकर्मतेहीज उपचरितस्वन्नावछे,हवेजीवने अपरके०बीजोजे सहजउपचरित स्वन्नाव तेसिद्धने परज्ञपणु तिहांकोइ कर्मोपाधिछेनहीः तडुक्तमाचारसूत्रे ॥ अकम्मस्सववहारोणविज्जइ कम्मुणाउवाहिजायतत्ति ॥ ११ ॥

जीहोदशेविशेषस्वन्नावए ॥ लालासर्वएकवीससंन्नाल ॥ जी
होसविहुंपुजलजीवने ॥ लालापन्नरन्नेदछेकाल ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एदशेविशेषस्वन्नाव नियतद्रव्यवृत्तिमाटे, एमध्ये पूर्वोक्तइग्यार सामान्यस्वन्नाव न्नेलियें, तेवारें सर्वमिलिने एकवीस स्वन्नावथाय, तेपुजलतथाजीवने एकवीस स्वन्नावहोय. तेएकवीसमांथी छकाढियें तेवारें कालद्रव्यने पन्नरस्वन्नावथाय, तेछस्वन्नावनांनाम आगलीगाथामां कहेशे ॥ १२ ॥

जीहोबहुप्रदेशचित्मूर्त्तता ॥ लालाविन्नावशुद्धअशुद्ध ॥ जीहो
टालीआदिमसंजूआ ॥ लालासोलधर्मसुखबुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ बहुप्रदेशके० अनेकप्रदेशस्वन्नाव २ चित्के० चेतनस्वन्नाव ३ मूर्त्तत्वस्वन्नाव ४ विन्नावस्वन्नाव ५ शुद्धस्वन्नाव ६ अशुद्धस्वन्नाव, एछस्वन्नावकाढीयें, तेवारें

बाकी पन्नरस्वभाव कालद्रव्यनेथाय, वली १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय एत्रणद्रव्यने आदिमके० पहेलो अनेकप्रदेशस्वभाव तेणेसंयुक्तकरियें अने बीजापांचटालियें तेवारेंसोलस्वभावथाय. ॥ एकविंशतिभावाःस्यु,र्जीवपुद्गलयोर्मताः, धर्मादीनांषोडशस्युः, कालेपंचदशास्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेअधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वभाव ॥ जीहोसुय
शविबुधजिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुभभाव ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वभावते प्रमाणनयने अधिगमेके० ज्ञानेजाणीने सुयशके० शोभन अनुयोग परिज्ञान यशवंतजे विबुधके० पंमितजन तेहनीसंगतकरी सर्वशंकादोषटालीचित्तमांहें शुभभावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वीराचंदला ॥ ए देशी ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहकेंरे ॥ अस्तिस्वभाववखाण ॥ परद्रव्यादि
कग्राहकेंरे ॥ नास्तिस्वभावमनआणोरे ॥ चतुरविचारियें ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेस्वभावनो अधिगम तेनयेंकरीदेखाडेछे, १ जेअस्तित्वस्वभाव द्रव्यनोछे, तेस्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयें वखाणियें; अने जे २ नास्तिस्वभावछे तेपरद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयेंवखाणियें; उक्तंच ॥ सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच ॥ १ ॥

उत्पादव्ययगौणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्या
यार्थिकेंरे ॥ जाणोस्वभावअनित्योरे ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादव्ययगौणत्वें अनेसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनयें नित्यस्वभावकहियें तथा ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेंकरी उत्पादव्यय ग्राहकहोय, तेणेकरीने द्रव्यनेविषे अनित्यस्वभावजाणो ॥ २ ॥

भेदकल्पनारहितथीरे ॥ धारोएकस्वभाव ॥ अन्वय
द्रव्यार्थिकनयेंरे ॥ अनेकद्रव्यस्वभावोरे ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ५ भेदकल्पनानी अपेक्षारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकस्वभावजाणो तथा ६ अन्वयद्रव्यार्थिकनयेंकरी अनेकस्वभावजाणो, कालान्वयेसत्ताग्राहको देशान्वयेचान्वयग्राहकोनयः प्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

सद्भूतव्यवहारथीरे ॥ गुणगुणादिकभेद ॥ भेदक
ल्पनारहितथीरे ॥ जाणोतासअभेदोरे ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ७ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी, पर्यायपर्यायीनो भेदस्वभावजाणवो ८ अने भेदनीकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयथी अभेदस्वभावजाणवो, यत्रकल्प्यमानस्यांतर्निगीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वभावो यथाघटोयमिति अत्रविषयविषयिणोर्वैवित्त्येनग्रहस्तत्राभेदस्वभावो यथानीलोघटइति सारोपासाध्यवसानयोर्निरूढत्वार्थमयं प्रकारभेदः प्रयोजनत्वेतुतेयदृच्छानिमित्तकत्वेनस्वभावभेदसाधके ॥ इतिपरमार्थः ॥ ४ ॥

परमभावग्राहकनेरे ॥ भव्यअभव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धहतेहथीरे ॥ चेतनआतमरामोरे ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे ए भव्यस्वभाव अने १० अभव्यस्वभाव. एबेस्वभावते परमभावग्राहकनयें जाणवा. भव्यताते स्वभावनिरूपितछे,अनेअभव्यता तेउत्पन्नस्वभावनी तथापरभावनी साधारणछे, तेमाटेइहां अस्ति नास्ति स्वभावनीपरें स्वपरद्रव्यादिक ग्राहकनय एबेप्रवृत्तिनहोय. शुद्धाशुद्धपणा संमुग्धजे परमभाव ग्राहकनय तेणेकरीने आत्मारामने ११ चेतनस्वभाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥ चतु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचनकायापणुं तेहनेचेतनकहियें. चेतनसंयोगकृतपर्यायतिहांछे. तेमाटे "इदंशरीरमावश्यकं जानातीत्यादिव्यवहारः अतएवभवति घृतंदहतीतिवत्"अने परमभावग्राहकनयें तेकर्म नोकर्मने १२ अचेतनस्वभावकहियें, जेम घृतअनुष्णस्वभाव ॥ ६ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मोरे ॥ चतु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वभावकहियें.अतएव "जडोयमचेतनोयमित्यादि" व्यवहारछे,"एतेनमांनजानामीतिप्रतीत्या विलक्षणाज्ञानसिद्धिर्वेदांतिनामपास्ता सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वभावेनैवतदुपपत्तेः" परमस्वभावग्राहकनयें कर्मनोकर्मने मूर्त्तस्वभावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
नयेंपुद्गलविनारे ॥ द्रव्यअमूर्त्ततुंजोयरे ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्त्तस्वभावपणकहियें. अतएव॥अयमात्माहश्यते. अमुंआत्मानंपश्यामि॥एव्यवहारछे, एस्वभावेंजे "रक्तौचपद्मप्रभवासुपूज्यौ"

इत्यादिवचनछे. तथापरमभावग्राहकनयें पुद्गलद्रव्यविना बीजांसर्वेद्रव्यने १४ अमूर्त्त स्वभाव कहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुद्गलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वभाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेंरे ॥ व्यवहारेंजेहभावोरे ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकने विषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछेयें, तेमअमूर्त्तउपचरतानथी,तेमाटेअसद्भूतव्यवहारथीपण पुद्गलने अमूर्त्तस्वभावनकहियें. प्रत्यासत्तिदोषे अमूर्त्तत्व तिहांकेमउपचरिते उपचरित कहेछे. अनुगमवसे० एकसंबंधदोषे जेहभावव्यवहरियें, तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय. तथाच आरोपेसतिनिमित्तानुसरणं नतुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिभावः ॥ ९ ॥

एभावेंसंमतिभणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविभंजीयेंरे ॥ यावत्अंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एभावेंके० एअभिप्रायें संमतिग्रंथमांकह्युंछे जे, अनुगतके० अत्यंतसंबंध अशेषके० सर्वअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विभंजेनही, पृथक्करहेनही किहां? तोके अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुद्गलजीवलक्षणे विभंजीयें ॥ यथा उदारिकादि वर्गणानिष्पन्नाछरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्माभिन्नइति अत्रगाथा ॥ अनुभाणुगयाणं इमवतंवत्तिविभयणमजुत्तं ॥ जहदुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १० ॥

अनभिभूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्ततातिहांनाहिं ॥ जिहांअ
भिभूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्त्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेतांमूर्त्तता जोपुद्गलद्रव्य विभंजक अंत्यविशेषछे, तोतेनोउपचार आत्मद्रव्यें केमहोय, अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो, अन्योन्यानुगमे अमूर्त्ततानो उपचार पुद्गलद्रव्ये केमनहोय, एहवीशंका कोइकनेहोयछे, तेटालवानेकहेछे; जिहांपुद्गल द्रव्यमूर्त्तता अभिभूतनथी, किंतुउद्भूतछे, तिहांअमूर्त्तता स्वभावनहोय, तेमाटेअमूर्त्तता अपुद्गलद्रव्यनो अंत्यविशेष, अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मनहोय, तिहांअमूर्त्तता अभिभूतछे, तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय. तथाचान्योन्यानुगमा विशेषेपिक्वचिदेवकिंचित्केनचित्कथंचिदभिभूयतइतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ॥११॥

पुद्गलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोभावविलुत्त ॥ तेणेंअसद्भू
तहनयेंरे ॥ परोक्षअणुअअमूत्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्त्तस्वभाव पुद्गलनेनहोय एमकहेवाय,तो एकवीसमो भाव

लोपाय, तेवारें "एकविंशतिर्भावाःस्युर्जीवपुद्गलयोर्मताः" एवचनव्याघातथी अपसिद्धांतथाय, तेटालवानेअर्थें असद्भूतव्यवहारनयें परोक्षते पुद्गलपरमाणुछे,तेनेअमूर्त्तकहियें. व्यवहारिकप्रत्यक्षागोचरत्वममूर्त्तत्वं परमाणोः भाक्तंस्वीक्रियतइत्यर्थः ॥ १२ ॥

कालपुद्गलाणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वभाव ॥ परमनयेपर
द्रव्यनेरे ॥ भेदकलपनाअभावोरे ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ कालाणुने तथापुद्गलाणुने परमभावग्राहकनयें १५ एकप्रदेशस्वभावकहियें, एमकालतथापुद्गल एवेद्रव्यटालीने परद्रव्य जेबीजांचारद्रव्य तेहने भेदकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकप्रदेशस्वभावकहियें ॥ १३ ॥

भेदकल्पनायुतनयेंरे ॥ अनेकप्रदेशस्वभाव ॥ अणुविण
पुद्गलअणुतणुरे ॥ उपचारेतेहभावोरे ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अनेभेदकल्पनानी सापेक्षायें जेशुद्धद्रव्यार्थिकनयें अणुके० एकछुटापरमाणुविना सर्वद्रव्यने १६अनेकप्रदेशस्वभावकहियें, अने पुद्गलपरमाणुनेपण अनेकप्रदेशथवानीयोग्यताछे, तेमाटे उपचारें तेहनेपण अनेकप्रदेश स्वभावकहियें,तथाकालाणुमांते उपचारकारणनथी, तेमाटे तेहनेसर्वथा एस्वभावनथी ॥ १४ ॥

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेंरे ॥ जाणोविभावस्वभाव ॥ शुद्धेशुद्ध
स्वभावछेरे ॥ अशुद्धेअशुद्धस्वभावोरे ॥ चतु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिनये संमुग्धे १७ विभावस्वभावछे. तथा शुद्धद्रव्यार्थिकनयें १८ शुद्धस्वभावजाणो. अनेअशुद्धद्रव्यार्थिकनयें १९ अशुद्धस्वभावजाणवो ॥ १५॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ छेउपचरितस्वभाव ॥ एस्वभाव
नययोजनारे ॥ कीजेंमनधरीभावोरे ॥ चतु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी २० उपचरितस्वभावछे. एभावचित्तमांधरीने स्वभावनयनी योजनाकरियें ॥ १६ ॥

अनुपचरितनिजभावजेरे ॥ तेतोगुणकहेवाय ॥ एकद्रव्या
श्रितगुणकह्यारे ॥ उभयाश्रितपज्जाउरे ॥ चतु० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरप्रक्रिया किहांकिहांस्वसमयेंपण उपस्कृतकरीछे; एमांदेचिंत्यछे, तेदेखाडेछे. स्वभावते गुणपर्यायथीभिन्न नविवक्षियें, जेमाटे जेअनुपचरितभाव तेगुणजजाणवो, अनेजेउपचरितते पर्यायजजाणवो. जेम द्रव्याश्रिततेगुण अनेउभया

श्रिततेपर्यायकह्याछे. तथोक्तमुत्तराध्ययनेषु॥गुणाणमासउंदवं एगदवस्सियागुणा ॥लक्ख-णंपज्जवाणंतु उनउंअस्सिआनवेत्ति ॥ १ ॥ १७ ॥

स्वन्नावन्नेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेन्नेद
पज्जायनारे ॥ सुणयोसुयशन्नंमारोरे ॥ चतु० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ यदिचस्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वन्नावः परद्रव्यादिग्राहकेणनास्तिस्वन्नाव इत्युपगम्यते तदोन्नयोरपि द्रव्यार्थिकविषयत्वात्सप्तन्नंग्यामाद्यद्वितीययोर्न्नंगयोर्द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकाश्रयेण प्रक्रियान्नज्येतेत्याद्यत्रबहुविचारणीयं ॥ स्वन्नाव० एमएस्वन्नावन्नेदसहितगुणना प्रकारकह्या. हवेआगलीढालमां पर्यायनान्नेदकहुंछुं. तेहनेसुयशना न्नंडार एहवाश्रोतापुरुषो तमेसांन्नलो ॥ १८ ॥

॥ ढाल चउदमो ॥

॥ छोडोसीमंधरसामीत्र्या ॥ तेमुऊमिछामिडुक्कमंमी ॥ एदेशी ॥

सुणोन्नेदपज्जायनारे ॥ तेदोयप्रकार ॥ व्यंजनअर्थबेन्नेद
थी ॥ संक्षेपेंसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायना न्नेदसांन्नलो. तेपर्यायनान्नेद संक्षेपथी बेप्रकारनाछे. एकव्यंजनपर्याय, बीजोअर्थपर्याय, एसंक्षेपेकह्या ॥ १ ॥

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्त्तमानसु
षिमतिहां ॥ अत्थहपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेजेहनो त्रिकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोव्यंजन पर्यायकहियें. जेमघटादिने मृदादिपर्याय तेहमां सूक्ष्मवर्त्तमानकालवर्त्ति ते अर्थपर्यायछे. जेमघटनेतत्तत्क्षणवर्त्तिपर्यायते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

द्रव्यगुणेबिहुंन्नेदथी ॥ वलीशुद्धअशुद्ध ॥ शुद्धद्रव्यव्यं
जनतिहां ॥ चेतननेसिद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेप्रत्येकें एकेकबेबेप्रकारें एकद्रव्यपर्याय बीजोगुणपर्याय न्नेदथीजाणवा. तथातेवली शुद्ध अनेअशुद्धन्नेदथी बेबेप्रकारेंजाणवा. तेमांशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते चेतनद्रव्यने केवलज्ञानना न्नावथी सिद्धपर्याय जाणवो ॥ ३ ॥

अशुद्धद्रव्यव्यंजनबहु ॥ मनुजादिकन्नेद ॥ गुणथीव्यं
जनएमद्विधा ॥ केवलमइन्नेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेअशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय तेमनुष्य, देवता, नारकी, तीर्यंचादिकबहुभेदें जाणवो, केमके तेद्रव्यभेद पुद्गलसंयोग जनितछे. एमज शुद्धगुणपर्यायते केवलज्ञानादिरूप अने अशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते मतिज्ञानादिरूप जाणवा ॥ ४ ॥

ऋजुसूत्रादेशेंकरी ॥ क्षणपरिणतएह ॥ कह्योअर्थ
पज्जायए ॥ अभ्यंतरभेद ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमऋजुसूत्रादेशे क्षणपरिणतजे अभ्यंतरपर्याय तेशुद्धार्थपर्याय अने जेजेहथी अल्पकालवर्त्तिपर्याय तेतेहथीअल्पविवक्षायें अशुद्ध अर्थपर्यायकहेवा ॥ ५ ॥

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यंजनपर्याय ॥ संम
तिग्रंथेअर्थथी ॥ बालादिकहाय ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांवृद्धवचन संमतिग्रंथदेखाडेछे, जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्मादि मरणकालपर्यंत एकअनुगतपर्याय तेपुरुषनोव्यंजनपर्यायकहियें, एसंमतिग्रंथेकह्युंछे. तथाबालतरुणादि पर्यायते अर्थपर्यायकह्याछे. एमसर्वत्रफलावीलेवुं. अत्रगाथा ॥ पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउबालाईया पज्जवभेयाबहुविगप्पा ॥ ६ ॥

षट्गुणहाणीवुद्धीथी ॥ जेमअगुरुलहुत्त ॥ पज्जव
तेमक्षिणभेदथी ॥ केवलपणेवुत्त ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय, तिहांअर्थपर्यायनथी, एहवी कोइक दिक्पटाभासनी शंकाटालेछे. "जे षट्गुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मार्थपर्यायाः" एजेमकह्युंछे, तेमक्षणभेदथी केवलज्ञानपर्यायपण भिन्नभिन्न देखाड्याछे ॥ पढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे ॥ अपढमसमयोगिभवत्थकेवलनाणे॥इत्यादिवचनात्॥ तेमाटेऋजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुध्दद्रव्यव्यंजनअणु ॥ पुद्गलपर्याय ॥ अशुध्दद्र्यणु
कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुजाणवो, केमके तेपरमाणुनोकेवारें नाशनथी, तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे, तेमाटे एमगुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुणव्यंजनपर्याय तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा, जेपरमाणुगुण तेशुद्धगुणव्यंजनपर्याय अनेद्वैप्रदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ॥ ८ ॥

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम ॥ निजपरप्र
त्ययथीलहो ॥ ठांम्हिठप्रेम ॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे, एहवोजे हठकरेछे, तेह नेकहियें, जे रुजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें हठछांडीने तिहांपणकेमनथीमानता?॥ ए ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी ॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य
संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय, नहीतोपरमाणुपर्यंत विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय, एहवें अभिप्रायेंकहेछे, जेधर्मास्तिकायादिकनी आकृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें, परनिरपेक्षपणामाटे, तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें, पणतेहनोपरापेक्षपणे कहेताथका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जयकहेवाय ॥ उत्तराध्य
यनेभाषिया ॥ लक्षणपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहशे, अने संयोगपर्यायनहोय, एहवीआशंकाटालेछे. जे संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे, केमके पर्यायनांलक्षण भेदरूप श्री उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेकह्यांछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवली ॥ संख्यासंठाण ॥ वलीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुंआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंठाणमेवय ॥ संयोगायविभागाय पज्जवाणं तुलक्खणं ॥१॥ एगाथातुंमनमांआण,एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे॥१२॥

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असद्भूतम
नुजादिका ॥ तोनयशुद्धयोग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे, तेउपचरित पर्यायकहियें, पणअशुद्धपर्यायनकहियें, द्रव्यान्यथात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्व व्यवहारछे, तेवतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकहो. असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटे असद्भूत कहो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जायें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताज्ञ
विशेषथी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ द्वितंतुकादिक पर्यायनीपरें एद्रव्यजनकअवयवसंघातनयेंज अशुद्ध द्रव्यव्यंजनपर्यायपणुंज कहेतां रुडुंलागे "तस्मादपेक्षानपेक्षाभ्यांशुद्धाशुद्धानेकांतव्यापकत्वमेवश्रेयः." तेहिजदेखाडेडे. धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी विषमायीके०विलक्षणताएमजाणवी, केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुद्गलद्रव्यने विषे अशुद्धतानो विशेषनथी

एमजसजातिविजातिथी ॥ द्रव्येंपज्जाय ॥ गुणेस्व
जावविजावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन०॥१५॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमांकह्याछे, तेदेखाडेछे. एमज स्वजातीयद्रव्यपर्याय,तथा विजातीयद्रव्यपर्याय,वलीस्वजावगुणपर्याय,अने विजावगुणपर्याय एरीतेंचारजेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजकेवलीवली ॥ मतिमुखदिठंत ॥ एप्रायि
कजेणेद्रव्यथी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे. द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय द्रव्यपर्यायकहियें. तथा द्रव्यबेमिलीएकद्रव्यउपनुं, तेमाटे मनुजादिपर्यायते विजातीय द्रव्यपर्याय कहियें, केमके तेवेद्रव्यमली परस्पर जिन्नजातीय द्रव्यपर्यायउपनो, तेमाटे तथाकेवलज्ञान ते कर्मरहितपणामाटे स्वजावगुणपर्यायकहियें. अनेमतिज्ञानादिकते कर्मपरतंत्रपणामाटे विजावगुणपर्यायजाणवा. एरीते एचारजेदपण प्रायिकजाणवा. केमके परमाणुरूप द्रव्य पर्यायते एचारमांहेन अंतरजवें. पर्यायपणुतेहने विजागजाति शास्त्रेंकह्युंछे. तदुक्तं संमतौ ॥ अणुंदुअणुएहिंदव्वे आरद्धेदुअणुअंतिअणुतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविजत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपज्झवकही ॥ द्रव्यादिकहंत ॥ शुंजा
णेमनमांहेते ॥ देवसेनमहंत ॥ श्रीजिन॥ १७॥

अर्थ ॥ "गुणविकाराः पर्यायाः" एमकहीने तेहनाजेदनेअधिकारें तेपर्याय द्विजेद १ द्रव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोथको नयचक्रनोकर्त्ता जे देवसेनदिगंबर तेमनमांहेशुंजाणेछे? अर्थात् पूर्वापरविरोधजाषणथी कांइजाणतोनथी. तेमाटे द्रव्यपर्याय जकहेवा, पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थछे॥ १७ ॥

इमद्रव्यादिकपरखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ उवेखी
बहुतनुमति॥ अवगणीअजाण श्री० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्यायते स्वरूपलक्षण भेदादिकेंकरीने परख्या, गुरुआणाके० गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिके० तुच्छबुद्धिनाधणी तेहनेउवेखीने, अ-जाणजेहठकदाग्रही तेहनेअवगणी–निराकरीने द्रव्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १० ॥

जेदिनदिनएमभावशे ॥ द्रव्यादिविचार ॥ तेलहेशेज
शसंपदा ॥ सुखसघलांसार ॥ श्रीजिन० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ जे एअर्थदिनदिनप्रतें द्रव्यगुणपर्याय विचाररूपभावशे, तेप्राणी यशनीसं-पदाप्रतें पामशे तथा सघलांसुखप्रतें सारके० निश्चेंपामशे, एगुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो

दोहा

गुरुश्रुतअनुभवबलथकी ॥ कह्योद्रव्यअनुयोग ॥
एहसारजिनवचननो ॥ एहपरमपदभोग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुरुउपदेश, श्रुतशास्त्राभ्यास, अनुभवबल, अने सामर्थ्ययोग तेंहथीए द्र-व्यानु योगकह्यो. एसर्वजिनराजनां वचननोसारछे. एजपरमपदके० मोक्षतेहनोभोगछे, केमके एद्रव्यादिकविचारें शुक्लध्यानसंपदायें मोक्षपामियें ॥ १ ॥

मध्यमकिरियारतहुए ॥ बालकमानेलिंग ॥
षोमशकेंभाष्युंधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगमां जे रंगधरे, तेहनेजपंडितकहियें, एहवुं अभियुक्तसाखेंसम थेंछे. षोमशकवचनंचेदं ॥ बालःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिं ॥ आगमत त्त्वंतुबुधः परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ २ ॥

नाणरहितजेशुभक्रिया ॥ क्रियारहितशुभनाण ॥
योगदृष्टिसमुच्चयकह्यो ॥ अंतरखजुआभाण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुभक्रिया अनेक्रियारहित जे शुभज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चय मां खजुआ अनेसूर्यजेटलो आंतरोकह्योछे ॥ ३ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणभाणसमजोय ॥
कलियुगएहपटंतरो ॥ विरलाबुजेकोय ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तात्त्विकः पक्षपातश्च भावशून्याचयाक्रिया ॥ अनयोरंतरंज्ञेयं भानुखद्योतयो-रिव ॥ इत्यादिकयोगदृष्टिसमुच्चयें कह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दद्दुरचुन्नसमान ॥
ग्यानकिउंउपदेशपदें ॥ तासगरसमजाण ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ मंकुक्कचुन्नकप्पो किश्याजाणिउंकउंकिलेसाणं ॥ तद्धुरचुन्नकप्पो नाणकउं तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मथिति ॥ अकरणनियमेंनाष ॥
अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाष ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजआवे. तेपाम्यापछि मिथ्यात्वमां आवे, तोपण एककोडाकोडी सागरोपम " उपरांतकर्मबंध जीव नकरे. बंधेंणनबोलेयकयाविंतिवचनात् " एअभिप्रायें नंदिषेणनेअधिकारें महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपाति कह्योछे. उत्तराध्ययनेप्युक्तं ॥ सूइजहासमुत्ता णणस्सईकयवरंमिपडिआवि ॥ इयजीवोविससुत्तो-णणस्सइगउंविसंसारे ॥ १ ॥ ६ ॥

ग्यानवंतहकेवली ॥ डव्यादिकअहिनाण ॥ वृह
त्कल्पनाभाष्यमां ॥ सरिषाभाष्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वृहत्कल्पगाथाचेयं ॥ किंगीयछोकेवली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ तुल्लरागहेसे अणंतकायसवज्जणवा ॥ १ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणनवार्णवपोत ॥
मिथ्यामतितमभेदवा ॥ नाणमहाउद्योत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ होमतवालेसाजना ॥ एदेशीछे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ क्रियावंतमहंतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपाखरिया ॥ तेहना गुणनोनअंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेवियें ॥ १ ॥ एआंकणीछे ॥ वशनिरुपक्रमकर्म्मने ॥ जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमांकह्या ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहठरातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥ नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ परनागुह्यते खोलेरे ॥ गुणनिधि गुरूयकीबाहेरा ॥ विरउंनिजमुखेंबोलेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ बाहिरबकपरेंचालता ॥ अंतरआकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहभलाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजातीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ बहुविधबाह्यक्रियाकरें ॥ ज्ञानरहितजेहटोलेंरे ॥ शतजिमअंधदेखता ॥ तेतोपडिआछेभोलेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षेथीहरषिया ॥ निजअवगुणनवीदाखेरे ॥ ज्ञानजलधीगुणअवगणी ॥ अवगुणबहुभांषेरे ॥ श्री-जिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियआगेंअबुटता ॥ जेगुणअल्पशोभाषेरे ॥ तेपणअवगुणपरिणमे ॥ मायाशल्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन०॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेएहवा ॥ जिनशासनधनचोरेरे ॥

तेहशिथलपरेंपरिहरु॥ गबाचारनेजोरेंरे ॥श्रीजिन०॥ ए ॥ एनवमीगाथानोअर्थ॥ गबाचारवचनंचेदं ॥ अगीअबकुसीलेहिं संगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुरकमग्गस्सिमेविग्घं पहंमितेणगेजहाइति ॥ ज्ञानीवचनविषअमृतबे ॥ उलटीमूरखवाणीरे॥आगमवचनएआदरी ॥ ज्ञानग्रहोनविप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥१०॥ अर्थ ॥ गीयबस्सवयणेणं विसंहालाहलंपिबे ॥ अगीयबस्सवयणेणं अमयंपिनघुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनशास्त्रेंबे, तेमाटे हेधर्मार्थि नव्यप्राणी ज्ञानपक्षदृढआदरो, केमकेहमणाज्ञानपक्षनोदृढाधिकारबे॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणमा ॥ ज्ञानप्रधानआदरियेंरे॥ एम किरयागुणअन्यसी ॥ इबायोगथीतरियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिबोःश्रुतार्थस्यज्ञानिनोपिप्रमादिनः ॥ कालादिविकलोयोग इतीबायोगलक्षणं ॥ ललितविस्तारादौग्रंथे ॥११॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥ तनुधर्मावलीजेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधानबे ॥ मुनिनेबेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥ आवश्यकमांहेनाषिउं ॥ तेणेगहीज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापश्चालतां ॥ देइयेजश बहुमानोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्रआवश्यकगाथा ॥ दंसणपरकोसावय चरित्तनठेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपरको समणपरलोगकंखं मि॥ १३ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी॥ एदेशी ॥

आतमअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीयडेउलटआणी ॥ मिथ्यादृष्टिनेएहमांमतिमुझाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेलागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरूपासेंशीखीअर्थएहनाजाणी ॥ तेहनेएदेजो,जेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएअर्थनीहाणी ॥ योगदृष्टिसमुच्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनब्रह्माणी ॥ नलीपरेंसंनालोतत्त्वरयणनीखाणी ॥ एशुनजगतिमाता, दुरमतिवेलिकृपाणी॥ एशिवसुखसुरतरुफलरसस्वादनिशाणी ॥३॥ एहनेसुपसायेंउन्नाजोमीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पविपाणी ॥ एअमियदृष्टीथीजेहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउल्लसेसुरुचिवेली करमाणी॥४॥ बहुनावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवाणी ॥ एहथीसंनारीजिनगुणश्रेणीउसुहाणी ॥ वचनानुष्ठानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहथीसवीजाएपापश्रेणीउजाणी ॥ गुणश्रेणीचढतांलहेमुक्तिपटराणी॥घनघातिकर्मनेपीलीयेंजेमतेलघाणी ॥ निर्मलगुणएहथीपामियाबहुनविप्राणी ॥ ६ ॥ खलजनजोएहमांदूषधरेअन्निमानी ॥ तोपणसज्जनथीएहनीख्यातिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगउत्तमगुणगाणी ॥ जशदियेगुणीसज्जननेसंघअनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥

॥ देशीहमचडीनीछे ॥

तपगछनंदनसुरुतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूरींदो ॥ सकलसूरिमांजेसोनागी ॥ जेम तारामांचंदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ ज्ञानरयणनोदरिउ ॥ शाहीसनामांजेयशपाम्यो ॥ विजयवंतगुणनरिउरे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजयदेवसूरिसर ॥ महिमावंतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिंहसूरिसर ॥ सकलसूरिमांलीहोरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुरुनाउत्तमउद्यमथी ॥ गीतारथगुणवाध्यो ॥ तस हितशिखतणेअनुसारें ॥ ज्ञानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममारगनो ॥ नवेनावथीलहियें ॥ जसमहिमामहिमांयेंविदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेंरे ॥ हम० ॥ ५ ॥ श्रीकल्याणविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण संततिगावे ॥ सुरकिन्नरनिसदीसोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीलानविजयवरपंडित ॥ तासससीसोनागी॥ श्रुतव्याकरणादिकबहुग्रंथें ॥ नित्येंजशमतिलागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजयतससीसो ॥ महिमावंतमहंतो ॥ श्रीनयविजयविबुधगुरुनाता ॥ तासमहागुणवंतोरे ॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरुस्वपरसमयअन्यासें ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनसुरुचिसुरचिता ॥ मुझमतिशुनगुणवासीरे ॥ हम० ॥ ९ ॥ जशसेवासुपसायेंसहजें ॥ चिंतामणीमेंलहिउ ॥ तसगुणगाइशकुंकेमसघला ॥ गावानेगहगहिउरे ॥हम०॥१०॥ तेगुरुनीनक्तिशुनशक्ति वाणीएहप्रकाशी ॥ कवियशविजयनणेएमनणयो ॥ दिनदिनबहुअन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्रव्यगुणपर्यायेंकरी जेहवाणीविस्तरी॥गतपारगुरुसंसारमारगतरणतारणवरनरी॥ तेएहनाषीसुजनमधुकर रमणसुरनरपंजरी॥ श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जशविजयबुधजयकरी॥१॥ सर्वगाथा २७५ ॥ इयमुचितपदार्थोल्लापनश्रव्यशोना बुधजनहितहेतुर्नावनापुष्पवाटी ॥ अनुदिनमितएवध्यानपुष्पैरुदारैर्नवतुचरणपूजा जैनवाग्देवतायाः ॥

॥ इतिउपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृतद्रव्यगुण पर्यायनोरासबालावबोधसहितसमाप्तः ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत आठ दृष्टिनी सजाय बालावबोध सहित ॥

ऐंद्रश्रेणिनतंपार्श्वं, श्रीशंखेश्वरनामकं ।लिखा
मियोगदृष्टिंस्वाध्यायार्थं लोकभाषया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इंद्रना समुदाय, श्रेणिपरंपरा, जेने नम्याछे, एवा श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथने नमस्कार करीने, यम, नियम, प्राणायामादि अष्टांगयोग जेमां छे, एवा पातंजलिआदिकृत योगशास्त्रमां प्रवेश करीशकाय तेवो श्रीहरिभद्रसूरिरचित श्रीयोगदृष्टिसमुच्चय ग्रंथछे, तेना भाव ग्रहण करी, सकल तार्किकशिरोमणि वाचकराज श्रीयशोविजयजी उपाध्याये योगदृष्टिनी सजाय रचेली छे, तेनो भावार्थसूचक बालावबोध गुर्जरी भाषामां लखीए छीए.

प्रथम योग शब्द एटले शुं ? योग एटले चंचलता. त्रण प्रकारना योग ते मन, वचन, कायानायोग तथा अष्टांगयोग अने ज्ञान दर्शनादि योग; अथवा जेजे वस्तुउंना योग युंजन करीए, तेपण योग कहेवाय. एम योगना बहु प्रकार छे. अहींआ तो पातंजलादि ग्रंथानुयायी त्रण योग वर्णवेला छे. तेनां नाम. १ इछायोग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्यप्रतिज्ञायोग.

१ तथाविध ज्ञानावरणादि कर्मना क्षयोपशम विशेषथी श्रुतज्ञाननो अर्थ लई, करवानी इछावालो छतां, प्रमादथी धर्म व्यापारमां विकल अने अंतःकरणमां सूत्रार्थनुं इछकपणुं होय, पण यथार्थ बोध न होय, ते इछायोग कहीए.

२ यथार्थस्वरूपे विकथादिनो त्याग करवो तथा अप्रमादि, धर्मव्यापारवंत, श्रद्धावंत, तीव्रबोधथी अवितथ्य वचननुं भाषण करवुं, तथाविध मोहना अपगमथी सत्यप्रतीतवंत, तथा कालादि विकलपणानी बाधाए अतिचारादि दोषने जाणता छतां तथा प्रकारे टाली न शकाय; ते शास्त्रयोग कहीए.

३ शास्त्रमां बतावेला उपायोने अतिक्रमिने अधिक शक्तिथी धर्मव्यापार योग आदरवो ते सामर्थ्य प्रतिज्ञा योग कहीए. सिद्धिपद प्राप्तिनां कारणो आ योगमां बहु छे, तेनुं अतिक्रमण करे नही; शास्त्र थकीज सर्व अर्थ जाणे. सामर्थ्य प्रतिज्ञा योगथी, सर्वज्ञपदप्राप्ति, सिद्धिपदसौख्यप्राप्ति, सकलप्रवचनपरिज्ञाप्राप्ति इत्यादि सर्वनो साक्षात् लाभ छे. सामर्थ्य योगना पण बे भेद छे १ धर्मसंन्यास २ योगसंन्यास.

धर्मसंन्यास ते मोहादिक्षयोपशमरूप छे अने योगसंन्यास ते कायादि व्यापार कायोत्सर्गकरणादिरूप छे. आ बे प्रकारना सामर्थ्ययोग समस्त लाभप्राप्तिना हेतु छे,धर्म संन्यास सामर्थ्य योग प्रथमथी बीजे अपूर्व करणे होय एटले के प्रथम अपूर्व करणे यथाप्रवृत्ति करणनी संज्ञा छे, तेथी अधिकृत धर्म सामर्थ्य योग न होय अने बीजे अपूर्व करणे ते ग्रंथिभेदनुं निबंधन छे तेथी प्रथमनो त्याग करी बीजुं कह्युं ॥ यतः ॥ जागंठीतापढमं, गंठीसमइक्कमेभवेबीअं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण, सम्मत्तंपुरखडे जीवे ॥ १ ॥ इति वचनात्

अपूर्व करण ते आत्मवीर्य शुभ परिणाम, अनादिकाले अपूर्व अपूर्व जे शुभशुभ तर परिणाम धर्म स्थानकने विषे होय ते धर्म संन्यास, बीजे अपूर्वकरणे ग्रंथिभेद थवाथी सम्यग् दर्शन, शमसंवेगादि लिंगरूप, आत्मपरिणाम. यतः ॥ शमसंवेगनिर्वेदाऽनुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥ पंचभिः सम्यक्, सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ इति ॥१॥ योगशास्त्रे.तथा "तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं." त्यार पछी तथाविध कर्म स्थितिने ओछी करे, संख्य सागरोपम अतिक्रमे त्यारे प्रथम धर्म संन्यास सामर्थ्य योग होय. यतः ॥ गंठित्तिसुदुभेओ, कखडघणरूढगूढगंठिव्व ॥ जीवस्सकम्मजणिओ, घणरागदोस परिणामो ॥१॥ सम्मत्तंमिउलद्धे, पलियपहुत्तेणसावओहुज्जा ॥ चरणोपसमखयाणं, सागरसंखंतराहुंति ॥२॥ माटे स्थिति भेद उपर जेम जेम वधे, तेम तेम आयुंजी करण थकी जेम जेम आत्म वीर्योल्लासें गुण स्थानक भजन ते सर्व धर्म संन्यास सामर्थ्य योग कहीए, अने तेने पारमार्थिक तात्त्विक कहीए. कोइक वेलाए प्रव्रज्या प्रतिपत्तिकाले अतात्त्विक कहीए. कारणके प्रव्रज्या सन्मुखतो छे परंतु प्रव्रज्या आदरी नथी, माटे त्यां ज्ञानरूप प्रतिपत्ति विशेष होय अने धर्मसंन्यास सामर्थ्य अधिकारी भव विरक्त होय. आप्रमाणे सिद्धांतमां कह्युं छे.

प्रव्रज्याधिकारी, आर्यदेशोत्पन्न, विशिष्ट जातिवंत, कुलमर्यादावंत, अशुभकर्म मलबुद्धि प्रपंच प्रायः क्षीण होय अने मनुष्यपणानां निमित्त दुर्लभ छे, संपदा चपल छे, विषय दुःखौघहेतु छे, संयोग वियोग मिलित छे, शरीर प्रतिक्षणे मरणयुक्त छे, एवा दारुण विपाकवाला संसारनुं अनेक प्रकारे निर्गुणपणुं भावीने सहजपणे संसारथी विरम्यो होय, अल्प कषायी, अल्प हास्यादिवंत अल्पवेदोदयी, कृतज्ञ, विनीत, घरवासमां राजामात्यादि बहुजनमान्य, अद्रोही, सुंदर अंगवंत, श्रद्धावंत, प्रव्रज्या आराधक, ज्ञानयोगनो आराधक इत्यादि गुणोपेत मनुष्यने धर्मसंन्यास सामर्थ्ययोग जाणवो.

योग संन्यास सामर्थ्य योग पारमार्थिक तात्त्विकपणे, क्षपकश्रेणिगत योगीने तथा

क्षांत्यादि सर्वगुण क्षयोपशमपणे जेने उत्पन्न थया होय तेने, यावत् केवलज्ञान लाभ
भोग शीलसुधी तथा तेज लाभ वेलाये शैलेसी अवस्थागत योग निरुंधन काले व-
र्त्तता होय, तेने होय.

त्रण योगमां प्रथम योग, चरमा कहेवाय छे अने ते भव्य मिथ्यादृष्टिने पण होय;
बीजो योग सम्यग्दृष्टि, देशविरति प्रमुखने होय अने त्रीजो योग, दीक्षानी स-
न्मुख एवा भवविरक्त तथा अप्रमत्त यावत् अयोगी अवस्थावालासुधी पण होय. तेनो
विशेष अधिकार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जाणवो. अहीं लेशमात्रलख्यो छे.
योगनुं दर्शन ते सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमे जाणवुं अने दृष्टि ते इहा-
दि विचारणाए अवधारवुं. दृष्टिनुं स्वरूप हवे कहीए छीए.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ एदेशी ॥

शिवसुखकारण उपदिशी ॥ योगतणी अडदिठीरे ॥ तेगुण
थुणीजिनवीरनो ॥ करशुं धर्मनी पुठीरे ॥ वीरजिनेसर देशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरुपद्रव, अव्याबाध सुख तेना कारण के० हेतुवास्तें श्रीवीर
परमात्माए, योगनी आठ दृष्टि उपदेशी छे, ते श्रीवीरनागुणस्तवीने अमे धर्मनी पुष्टि
करशुं. श्रीवीर परमात्मा केवा छे? यतः ॥ विदारयतियत्कर्म, तपसाचविराजते ॥ तपो
वीर्येण युक्तश्च तस्माद्वीर इतिस्मृतः ॥ १ ॥ वली धर्म केवो छे? यथा ॥ दुर्गति प्रप-
तत्प्राणिधारणा धर्म उच्यते ॥ संयमादिदशविधः, सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १ ॥ अ-
थवा, अपरभाव व्यतिरिक्त, केवल वस्तु स्वभावपणुं, तेपण निरावरणपणे तथा सादि
अपर्यवसानपणे ते धर्म छे. एवी सामान्यपणे श्रीवीरनी देशना के० वाणी छे. ॥ १ ॥

सघन अघन दिनरयणिमां ॥ बालविकलने अनेरारे ॥ अर्थ
जुए जेम जुजुआ ॥ तेम ओघनजरनाफेरारे ॥ वीर० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम सघन के० मेघ सहित दिवस अने अघन के० मेघ रहित दिवस,
जेम दिवस तेम रात्रि अर्थात् मेघयुक्त दिवस रात्रि अने मेघ रहित दिवस रात्रि;
तेते दिवसो अने रात्रिओमां पण भेद छे अने ते भेदने देखनाराओमां पण कोइ बाल-
दृष्टि, कोइ विकलदृष्टि अने अनेरा के० कोइ तरुण, वृद्ध, रोगी इत्यादि अनेक भेद
छे. तेओ जेजे पदार्थने जुए तेमां ज्ञानावरणादि कर्मविचित्रताये सामान्य विशेषादिमां
अनेक रीते फेरपडे; जूदाजूदा भाव देखे. ते सर्वेओघ दृष्टिछे. ओघदृष्टि बहु जातनी छे॥२॥

दर्शन जे थयांजुजुआ ॥ ते ऒघनजरनेफेरेरे ॥ नेदथिरा
दिकदृष्टिमां ॥ समकितदृष्टिनेहेरेरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ऒघ नजरना फेरने अनुसारे षट् दर्शनना नेद जुदाजुदा थया. ते ऒघदृ-ष्टिनो अहीं अधिकार नथी. अहींआतो योगनी आठ दृष्टिनो अधिकार छे, यथा॥ मित्रा तारा बलादीप्रा, स्थिराकांता प्रनापरा ॥ नामानि योगदृष्टीनां, लक्षणे तु निबोधत ॥ १ ॥ ते आठ दृष्टिमां बोध—ज्ञान प्रकाश केवो होय ? ते कहे छे, यथा ॥ तृणगो-मयकाष्ठाग्निकणदीपोपमप्रभा ॥ तारार्कचंद्रना रत्नसदृशी दृष्टिरष्टधा ॥ २ ॥ इति योगदृष्टि समुच्चये. आठमां प्रथमनी चार दृष्टिसुधी मिथ्यादृष्टी; अने पाछली चार दृष्टि ग्रंथिनेदथी होय, अर्थात् थिरादृष्टिथी सम्यक्त्व छे अने ते दृष्टिऒने योगदृष्टि एवुं बिरुद घटे छे, परंतु आठेने योगदृष्टि केम कही ? तेनो एवो उत्तर छे के, पेहेली चार दृष्टिमां सत्संगना योग छे, तेमांपण वीजा ध्यान करे छे तेथी तेऒनेपण दृष्टि कहीए॥३॥

दर्शन सकलनानयग्रहे ॥ आपरहेनिज नावेरे ॥ हित
करीजननेसंजीवनी ॥ चारोतेह चरावेरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे थिरादिक दृष्टिवंत प्राणी समस्त छए दर्शनना नयग्रहण करे, तेने अ-द्वेषगुं राखे अने जगत् पोताना स्वनावमां स्यात् नित्यानित्यपणे वर्त्ते छे ते नावमां प्रवर्त्ते. शुद्ध दृष्टिनो नंग करे नही. नव्य जनने हितकारी शुद्धोपदेशरूप संजीवनी औषधीनो चारो चरावीने आपस्वरूप प्रगट करावे. ते उपर उपनययुक्त दृष्टांत कहेछे; कोइ नगरमां कुलवान मनुष्य रहे छे. तेने वे स्त्री छे. एक प्रौढ, सुशील, विनीत छे, वीजी वक्र छे. वक्र स्त्री पोताना पतिसाथे कामक्रीडा करी दिवसे वृषन बनाववानी विद्याथी पतिने वृषन बनावी खेतरमां मुके छे. प्रौढ स्त्री स्वामिना प्रेमने लीधे वृषनरूप-स्वामिपासे रही, चारापाणीथी सार संनाल करे छे. कटलाएक दिवसे विद्याधरदं-पती ते रस्तेथी विमानमां वेसी जतां, वृषनने देखीने विद्याधरे पोतानी पत्निनें कह्युं के, आ स्त्री जे वृषननी सेवा करे छे, ते तेनी प्रौढ पत्नि छे अने ते वृषननी नानी स्त्रीए पोताना पतिने वृषन करेलो छे. एवुं चमत्कारिक वृतान्त सांनली विद्याधरनी स्त्रीए कह्युं, के एवो कांइ योग छे, के जेथी आ वृषन, पुरुष थाय ? विद्याधरे कह्युं के अमुक वड समीपे जे औषधी छे, ते जो आ वृषनने चरावे तो ते पुरुष थइ जाय. विद्याधर एम कही चाल्यो गयो. प्रौढ स्त्रीए ते विद्याधरनी सर्व वात सांनली अने तेना वचननी प्र-तीतथी प्रयत्न करी ते वडनी आसपासनी सर्व औषधी ग्रहण करीने तेनो चारो वृषनने चराव्यो. तेथी वृषन पुरुष थयो. प्रौढ स्त्रीनी सेवा नक्ति पतिए जाणी. आ दृष्टांतनो

उपनय आप्रमाणे छे. पुरुष ते आत्मा; जेणे वृषन्न बनाव्यो ते अशुद्ध चेतना स्त्री; जेणे सेवान्नक्ति करी ते शुद्ध चेतना स्त्री; विद्याधर ते गुरु; विद्याधरनी स्त्री ते दयारूप धर्मकरणी; वड ते मनुष्यगति; संजीवनी चारो ते सम्यग् दृष्टिपणुं, इत्यादि सकल सामग्रीवंतने संजीवनीचारो चरावी यथास्थित न्नर्त्तार कर्यो. तेवी रीते शुद्ध चेतनाने अनुवर्त्ततो सर्व गुणनुं न्नाजन थाय. एप्रमाणे थिरादिक चार दृष्टिनो धणी सर्व जीवने हितकारी उपदेश आपे ॥ ४ ॥

दृष्टिथिरादिक चारमां ॥ मुगति प्रयाणनन्नाजेरे ॥ रयणि
शयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमछाजेरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ थिरादिक चार दृष्टिमां मुक्तिनुं प्रयाण के० गमन रोकाय नही, कारणके ए दृष्टिवंत प्राणी प्रायः प्रतिपाति न होय. जेम वांछित नगरे प्रयाण करतां, वचमां रात्रे विश्राम लइए अने तेथी जेम श्रम के० थाक दुर थाय अने इछित नगरे सुखेथी पहोचाय तेम सम्यग् दृष्टिप्राणीने मुक्ति जतां वचमां सुबाहु कुंवर तथा श्रीपालादि जेम देव मनुष्यना न्नव करवा पडे, परंतु मुक्ति पुरे अवश्य पहोंचाय ॥ ५ ॥

एह प्रसंगथी में कह्युं ॥ प्रथमदृष्टि हवे कहीएरे ॥ जिहां
मित्रातिहां बोधजे ॥ ते तृण अगनिसोलहीएरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व प्रसंगथी कह्युं, ते योगदृष्टि तथा उंघदृष्टि सामान्य रीते सर्व संसारी जीवनी वर्णवी. दृष्टि के० देखवुं, जाणवुं ते ज्ञानावरणीयना क्षयोपशम आश्री छे, पण तेनो अहीं अधिकार नथी. अहीं तो मित्रादि आठदृष्टिनो अधिकार छे, तेमां प्रथम मित्रा दृष्टिनां लक्षण, क्रिया तथा बोध कहीए छीए. सत् श्रद्धावंतना संगथी असत् प्रवृत्ति नही करतां, सत् प्रवृत्ति करवी; अने ज्ञाननो बोध होय, तेथी ते दृष्टि कहेवाय. ज्यां मित्रादृष्टि होय त्यां मिथ्यात्व दर्शननी मंद स्थिति तथा मंद रस होय अने तृणना अग्नि सरखो अल्प बोध होय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहींशुन्नकाजेरे ॥ द्वेष
नहीं वली अवरशुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिने विषे पांचयम प्राप्त थाय. १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह, आ पांचयम छे. वली शुन्न कार्य जेमके दान, दया, देवगुरुनी न्नक्ति इत्यादिमां खेद वा आलस न थाय. वली बीजा दर्शनीउंना तथा प्रकारना देखीने द्वेष न उपजे. एप्रमाणे सत् प्रवृत्तिनागुण, असत् प्रवृत्तिनुं निवारण करवाथी प्रगटे. १ पांच महाव्रत ते पांच यम छे. २ शौच संतोषादि पांच नियम छे. ३ योग, पद्म इ-

त्यादि आसन ४ पवननुं रुंधन ते प्राणायाम ५ इंद्रियोने विषयोमां न प्रवर्त्ताववी ते प्रत्याहार ६ शुद्ध वस्तुनो यथार्थ निरधार ते धारणा ७ ध्येयनुंज चिंतवन ते ध्यान ८ ध्येयनो तन्मयपणे अनुभव ते समाधि. ए अष्टांग योग प्रवृत्ति छे ॥ ७ ॥

योगनांबीज इहांग्रहे ॥ जिनवरशुद्धप्रणामोरे ॥ भावा
चारजसेवना ॥ भवउद्वेगसुठामोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली बीजी पण अष्टांगयोग प्रवृत्ति छे. १ अद्वेष २ जिज्ञासा ३ शुश्रुषा ४ श्रवण ५ बोध ६ मीमांसा ६ परिशुद्धि ८ अप्रतिपत्ति इत्यादि योगना बीज आ दृष्टिमां ग्रहण करे. नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा चार निक्षेपें जिनेश्वरने शुद्ध प्रणाम करे. सूत्रोक्त प्रवृत्तिए प्रवर्त्तनारा, पंचाचारने यथार्थ पालनारा अने शुद्ध भाषक एवा भावाचार्यनी सेवना करे अने भवोद्वेग के० संसारथी उदासीनता तेज मोक्षप्राप्ति करावे छे, एम जाणे ॥ ८ ॥

द्रव्य अभिग्रह पालवा ॥ उषधप्रमुखने दानेरे ॥ आदर
आगम आसरी ॥ लिखनादिक बहुमानेरे ॥ वीर० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ग्रंथिभेदविना भाव अभिग्रह होय नहीं, तेथी द्रव्यअभिग्रह हर्षथी पाले, अर्थात् औषध, वस्त्र, पात्र प्रमुख देवाना अभिग्रह आदर—सत्कार सहित आगम विधिने अनुसारे साधु—मुनिराजने उचित होय ते आपे तथा बहुमान पूर्वक पुस्तक लखाववा प्रमुख उद्यम करावे ॥ ए ॥

लेखन पूजन आपवुं ॥ श्रुतवाचना उद्ग्राहोरे ॥ भाव
विस्तार सझायथी ॥ चिंतनभावनचाहोरे ॥ वीर० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ सिद्धांत लखाववामां तथा वीतरागनां बिंबोना पूजनमां द्रव्यादि सामग्री आपवाने सावधान होय; वली सन्मार्ग प्ररुपक श्रुत के० सिद्धांतनी वाचनानो उद्ग्राही के० योग मेलववा उद्यम करे, वली स्वाध्याय ते वांचना प्रमुख पांच प्रकारथी करी भाव विस्तार के० भाव आस्वादिकनां कारणो वधारे, अने तेनुं चिंतवन तथा भावनानी चाहना करे ॥ १० ॥

बीजकथाभलीसांभली ॥ रोमांचितहुवे देहरे ॥ एह
अवंचकयोगथी ॥ लहीए धरम सनेहरे ॥ वीर० ॥ ११ ॥

अर्थ॥ संवेग भावनी यथास्थितता, शम, संवेग, सत्प्रवृत्तिलक्षण रूप श्रद्धा, निराशय परोपकारकरण, दुःखितानुकंपा, सत्शीलानुचरण, औदार्य, धैर्य, गांभीर्य प्रमुख बीज

कथा० योगांग कथा श्रवण करीने हर्षोत्कर्षयुक्त रोमांचित शरीर थाय. एवा प्रशस्त बाह्य संयोग मलवाथी, सदभ्यास करवा कराववानां साधन मलवाथी योगनुं अवंचकपणुं तेने प्राप्त थाय. तेथी ते प्राणी विषक्रिया वांछे नहीं, क्रिया निष्फल करे नहीं, ते अवंचक योग समजवो. ते अवंचक योग पामीने परमोत्कृष्ट धर्मस्नेह पामे. मनमां एम विचारे, के आ लाभ दुष्कर पणे पाम्यो छुं ॥ ११ ॥

सद्गुरुयोगेंवंदनक्रिया ॥ तेहथीफलहोयजेहोरे ॥ योग
क्रियाफलभेदथी ॥ त्रिविध अवंचकएहोरे ॥ वीर० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उत्तम गुरुनो योग पामीने वंदन क्रिया व्यवहारविधिपूर्वक साचवे, तेथी जे फल थाय ते आ प्रमाणे छे. मनने विशुद्धपणे प्रवर्त्तावvुं ते योग अवंचक कहिए तथा वचन अने कायाने निरवद्यपणे प्रवर्त्ताववां ते क्रिया अवंचक कहिए. ते प्रमाणे करवाथी मिथ्यात्व तथा विषय कषायादिकनी हीनताए शुभगति प्रमुख फल पामे, ते फल अवंचक कहीए. आ त्रणप्रकारना अवंचक योग ते प्राणीने होय. यद्यपि आ त्रण अवंचक योग साधुने उद्देशीने होय, परंतु अवक्र सामायिकें तथा अमत्सरयुक्त भावसमाधिपणे द्रव्यथी ए होय छे ॥ १२ ॥

चाहेचकोरतेचंदने ॥ मधुकरमालतीभोगीरे ॥ तेमभवि
सहजगुणेहोये ॥ उत्तमनिमित्तसंयोगीरे ॥ वीर० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेम चकोर पक्षी चंद्रनी चाहना करे अने जेम भ्रमर मालतीनां पुष्पनो भोगी होय तेम आ भव्य प्राणीने यद्यपि मोहनो क्षयोपशम नथी, तथापि उत्तम के० प्रधान जे शुभ निमित्तो तेनो संगी थाय, एवो सहज गुण होय ॥ १३ ॥

एह अवंचक योगते ॥ प्रगटे चरमावर्त्ते रे ॥ साधुने
सिद्धदशासमुं ॥ बीजनुं चित्त प्रवर्त्तेरे ॥ वीर० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा अवंचक योग ज्यारे चरम पुद्गल परावर्त्त संसार बाकी रहे, त्यारे उपजे. तोपण केटलाएक प्राणी जे क्रियायोगी होय तेउने होय, अने साधुउने तो सिद्ध अवस्था समान परमानंद आपनार होय. आ मित्रादृष्टिमां वर्त्तता प्राणीने, बीज जे योगना अंग, समता औदार्य प्रमुख, ते ग्रहण करवाने प्रयत्नवालुं चित्त होय ॥ १४ ॥

करणअपूर्वनानिकटथी ॥ जे पेहेलुं गुणठाणुंरे ॥ मुख्य
पणेतेइहांहोये ॥ सुयशविलासनुंठाणुंरे ॥ वीर० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अहिं छेला यथाप्रवृत्ति करणना निकट के० समीपपणाथी स्थिति तथा र-

समां मंदपणे मिथ्यात्वगुणठाणे ते प्रवर्त्ते. वली शिवराजराजर्षिप्रमुखनी पूर्वे जे दशा हती, तेवी मुख्यपणे अहीं होय. वली ते उत्तम यशना विलासनुं टाणुंके० स्थानक होय. सारांशके अनव्य, दुर्जव्य, बहुपुद्गलपरावर्त्तनवाला शठ, हठकदाग्रही, अत्यंत अजिनिवेशी, गुरु आशातनावालाने आ दृष्टि न होय ॥ १५ ॥ इतिप्रथम मित्रादृष्टि विचार.

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मनमोहनमेरे ॥ एदेशी ॥

दर्शनतारादृष्टिमां ॥ मनमोहनमेरे॥ गोमयअग्निसमान ॥ म० ॥
शौचसंतोषने तपनलुं ॥ म० ॥ सज्ञाय ईश्वरध्यान ॥म०॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेतारादृष्टिनोविचार कहेछे. मित्रादृष्टि करतां तारादृष्टिमां मिथ्यात्व केवुं मंद होय तथा बोध केवोहोय ते कहे छे. मिथ्यात्व विशेष मंद होय अने बोध गोमय के० छाणानी अग्नि समान होय. जेम छाणानो अग्नि धीमे धीमे वधे, तेम बोध वधतो जाय, अर्थात् कांइक कार्यसाधक थाय. तेथी शौच के० मननिर्मल रहे. संतोषके० प्राप्तवस्तुथी विशेष तृष्णा न राखे; इछानुंरुंधनकरे. सज्ञायके० श्रुतअध्ययन प्रमुख करेअने इश्वरध्यानके० परमात्मानुं ध्यानकरे. आत्महित चिंतवे अने विचारेके रखे अकार्य सेवीश तो दुर्गति पामीश ॥ १ ॥

नियमपंचइहांसंपजे ॥ म० ॥ नहीं किरिआउद्वेग ॥ म० ॥
जिज्ञासागुणतत्त्वनी ॥ म० ॥ पणनहीनिजहठटेग ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां पूर्वोक्त पांचनियम उपजे.मोटीक्रियामां अखेदपणे प्रवर्त्ते,अर्थात् परलोकहितार्थे कामकरतां उद्वेग न पामे. वली तत्त्वगुणके० शुद्धगुण तत्त्वसंबंधीनी जिज्ञासाके० चाहनाहोय, तथा करण, करावण, अनुमोदनरुप निर्विकारपणुं होय, परंतु पोताना हठकदाग्रहनो टेक विशेषपणे नज होय ॥ २ ॥

एहदृष्टिहोयवरततां ॥ म० ॥ योगकथाबहुप्रेम ॥ म० ॥
अनुचिततेहनआचरे ॥ म० ॥ वाल्योवलेजेमहेम ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां वर्त्ततो प्राणी अष्टांग योगादिकनी कथामां बहुप्रेम धारण करे. योगशुद्धि, क्रियाशुद्धिमां प्रवर्त्ती फलशुद्धि करे अर्थात् जेथकी परलोक संबंधी अहित थाय तेवुं अनुचित कार्य करेनहीं. वली ते प्राणीने कोइ हितशिखामण कहे, तेनी साथे सुवर्ण जेमवाल्युं, वले तेनीजेमसरलताराखे ॥ ३ ॥

विनयअधिकगुणीनोकरे ॥ म० ॥ देखेनिजगुणहाण ॥ म० ॥
त्रासधरे नवनयथकी ॥ म० ॥ नवमानेदुःखखाण ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पोताथी अधिकगुणवंतनो विनयकरे अने पोतेविशेष गुणीहोयछतां पोतामां न्यूनता जावे, अर्थात् अहंकृति वा निजउत्कर्ष नकरे. वली चतुर्गतिरुप संसारने दुःखनी खाणदेखीने तेना जयथी त्रास पामे. यतः ॥ जम्म दुखं जरादुखं, रोगाणि मरणाणिय ॥ अहोदुःखेहु संसारे, जथ्थथकिं संतिजंतुणो ॥ ४ ॥

शास्त्रघणांमतिथोम्ली ॥ म० ॥ शिष्टकहेतेप्रमाण ॥ म० ॥
सुयशलहेएजावथी ॥ म० ॥ नकरेजूठम्फाण ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ शास्त्र घणांछे अने पोतानी मति के० बुद्धि अल्पछे, माटे शिष्ट महानगुरु कहे ते वचन प्रमाणकरे. सम्यग् रीतेमन, वचन, कायाए कारण,करावण अनुमतिरुपे निर्विकारीपणुं होय, तेप्रमाणे विशिष्ट जावना जावतो थको सुयशके० निर्मल कीर्त्तिपामे. ते अछतागुणोनो जुठो के० असत्य म्फाण के० आमंबर करे नही. शुजयोग कथामां प्रीति राखे ॥ ५ ॥ इति तारादृष्टि विचार.

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवालतणे जवे जीरे ॥ ए देशी ॥

त्रीजीदृष्टिबलाकहीजी॥ काष्टअग्निसमबोध ॥ क्षेपनहीआसनसधेजी ॥
श्रवणसमीहासोधरे ॥ जिनजी ॥ धनधनतुजउपदेश ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे बला नामनी त्रीजीदृष्टि वर्णवेछे. आदृष्टिमां सुखासने बेठेलानीजेम स्थिरचित्तहोय. देववंदन, गुरुवंदन,आवश्यकादि कार्य अनुकूलपणे करे,यद्यपिमिथ्यादर्शनछे तोपण मिथ्यात्वनी बहुजमंदताहोय,अर्थात् मिथ्यात्वीउना भ्रान्तिरुप चमत्कारिक ज्ञान देखीने चपलपरिणामवालो नथाय. आदृष्टिमां शास्त्रश्रवणथी काष्टना अग्नि सरखो दृढबोध होय. वली क्रियाउनुं अन्योन्य मिश्रणकरवुं तेक्षेपदोष कहेवाय, ते वोक्षेप दोष नहोय, पर्यंकासनादि योगासनने साधे. सिद्धांत श्रवण करवानी समीहाके० तीव्रइच्छाकरे. तेवी इच्छाने सोधके० साधे. हे,जिनजी! तमारा उपदेशने धन्य छे, एवो सत्कार करे, अने पोताना आत्माने धन्य माने ॥ १ ॥

तरुणसुखीस्त्रीपरिवर्योजी ॥ जेमचाहेसुरगीत ॥ सांजलवा
तेमतत्त्वनेजी ॥ एदृष्टिसुविनीतरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई तरुण के० युवान पुरुष धनाढ्य सुखी होय, वली सुंदर स्त्रीए युक्त होय; ते जेम देवगांधर्वनां गीत–गायन श्रवण करवानी चाहना करे, तेवीरीते आ दृष्टिवंत प्राणी तत्त्व ज्ञान श्रवण करवानी चाहना करे. तेवीज रीते वली आ दृष्टिवाला विनयवंत पण होय ॥ २ ॥

सरिएबोधप्रवाहनीजी ॥ एविणश्रुतथलकूप ॥ श्रवण
समीहातेकिसीजी ॥ शयितसुणेजेमभूपरे ॥ जिन० ॥धन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टि बोध ज्ञान प्रवाहनी सरिके० सरछे, जेम कूवा अने वावमां पाणीनी सर खनन करवाथी निकली आवे, अने ते सरथी पाणी तरत प्राप्त थाय, तेम आ दृष्टिथी ज्ञान प्रवाहनी सर प्राप्त थाय. जेम राजा शय्यामां सुतांथकां याचकोनां गीत श्रवण करे, पण विषयकषायमां ग्रस्त थवाथी ते गीतमां ध्यान न रहे, तेवी रीते आ दृष्टि विना श्रुत श्रवण मात्र बोधकारक न थाय. सर्व थल कूप समान थाय ॥३॥

मनरीझैतनउल्लसेजी ॥ रीझैबुझेएकतान ॥ तेइछाविण
गुणकथाजी ॥ बेहेराआगलगानरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे श्रवणथी मनहर्ष पामे, शरीर रोमांचित थाय, अने हर्ष अने बुझ के० बोधनी एकतान के० थाय, ते श्रवणज सार्थकछे. तेवी प्रबल इछा विना तत्त्व कथा श्रवण करवी, ते जेम बेहेरा आगल गीत निष्फलछे तेम ते पण निष्फल जाणवी ॥४॥

विघनइहांप्रायेंनहींजी ॥ धर्महेतुमांकोय ॥ अनाचारपरि
हारथीजी ॥ सुयशमहोदयहोयरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां वर्त्ततां धर्मना कार्य करतां प्रायः कांइ विघन के० अंतराय थाय नहीं, केमके अनाचारनो आ दृष्टिमां परिहार के० त्याग छे; अने तेम होवाथी उत्तम यश अने महान् उदयनो लाभ पण थाय. ए दृष्टिमां शुभ योगना आरंभ, सुकथाश्रवण ईत्यादि महालाभो छे ॥ ५ ॥ इति बला दृष्टि विचार.

॥ ढाल चोथी ॥

॥ झांझरीआ मुनिवर धनधन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

योगदृष्टिचोथीकहीजी ॥ दीप्तातिहांनउत्थान ॥ प्राणायामते
भावथीजी ॥ दीपप्रभासमज्ञान ॥ मनमोहनजिनजी ॥ मीठी
ताहरीवाण ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे दीप्तानामे चोथी दृष्टिनुंस्वरुपकहेछे.१ समान २ उदान ३ व्यान ४अपान अने प्राणायाम. आपांच प्रकार वायु संबंधीछे. तेमां समान ते नाभि अनेहृदयवचेनोवायु, उदानते हृदय अने मस्तक वचेनो वायु, व्यान तेसर्वत्वचावर्तीवायु, अपान ते अंगवर्तीवायु अने प्राणायामते श्वासोछ्वासरुंधन. एप्रमाणे वायुना पांच भेदछे. तेमां रेचक, पूरक कुंभक पवन साधवाथी प्रशांतवाहितानो लाभथाय. ए

कक्रियामां अपरक्रियानो उपयोग तेउत्थानदोष, तेआदृष्टिमां नहोय. यद्यपि अहीं ग्रंथिभेद थयो नथी, तोपण प्रशस्तयोगवंतने भावथीप्राणायाम होय. आदृष्टिमां दीपप्रभा समान बोधछे, अर्थात् तत्त्वश्रवण शुश्रूषाअने यमनियमादिक फलवालो पण सूक्ष्म बोधते जाणवो. हे! मनना प्यारा. जिनजी तमारो उपदेश अत्यंत मधुरछे ॥ १ ॥

बाह्यभावरेचकइहांजी ॥ पूरकअंतरभाव ॥ कुंभक
थिरतागुणेकरीजी ॥ प्राणायामस्वभाव ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ बहिरात्म प्रवृत्ति जेबाह्यभावतेने कढववारूप रेचकपनुं आदृष्टिमां छे. वली अंतरात्म वृत्तिवाला गुणो दाखलकरवाते पूरकपणुंछे अने प्राप्तथयेला गुणोनेस्थिरकरवाते कुंभकपणुंछे. एवीरीते प्राणायमरुप आदृष्टिनो स्वभावछे, अनेश्वासरुंधनरुप प्राणायामनोपण एवोज स्वभावछे ॥ २ ॥

धर्म अर्थेइहांप्राणनेजी ॥ छंडेपणनहींधर्म ॥ प्राण
अर्थेसंकटपडेजी ॥ जुओएदृष्टिनोमर्म ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां वर्त्ततो प्राणी धर्मअर्थेप्राणने तृणनी जेमत्यागे, पणप्राणत्यागरूप संकटपडे तोपण धर्मतजेनहीं, एवोआदृष्टिनो मर्मके० रहस्यछे, तेतमे ध्यानमांल्यो ॥३॥

तत्त्वश्रवणमधुरोदकेंजी ॥ इहांहोये बीजप्ररोह ॥ खार
उदकसमभवत्यजेजी ॥ गुरुभगति अद्रोह ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां सिद्धांत प्रमुखमांथी तत्त्व श्रवण रूप मधुर उदकनुं सिंचन थवाथी बीज के० संसारनी अनाशंसा, विरक्तता प्रमुख प्ररोह के० अंकुरा प्रगट थाय. वली क्षार उदक समान भवाभिनंदी पणानो त्याग थाय; तेमज गुरु भक्तिनो अद्रोही थाय अर्थात् करनारो थाय. ॥ ४ ॥

सूक्ष्मबोधतोपणइहांजी ॥ समकितविणनहिहोय ॥ वेद्य
संवेद्यपदेंकह्योजी ॥ तेनअवेद्यजेजोय ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि सूक्ष्म बोध आ दृष्टिमां नथी, कारणके ग्रंथिभेद थया विना सम्यक्त्व थाय नहि, अने सम्यक्त्व विना सूक्ष्म बोध होय नहीं. सूक्ष्म बोध ते वेद्य संवेद्य पदरूप सम्यक्त्व ते आ दृष्टिमां नथी. अहीं तो अवेद्य पद के० मिथ्यात्व छे. तेथी सूक्ष्म बोध नथी. ते संबंधी विस्तार योगदृष्टिसमुच्चय ग्रंथमां छे. अहीं संक्षेपथी बतावीए छीए.

मित्रादि चार दृष्टि यद्यपि क्रिया प्रमुखमां सत्संगति आदि गुणो तथा धर्मनां बी-

जनो संग्रह करे, परंतु ए चारे दृष्टि ए अवेद्य पद छे अर्थात् सूक्ष्म तत्त्वबोध नथी. जेम पक्षीनी छाया पाणीमां पमतां पाणी पण तेवीज प्रवृत्ति करे, तेवी रीते आ चार दृष्टिमां पण तेवीज प्रवृत्ति होय, सूक्ष्म तत्त्व बोध न होय. ते अवेद्य पद ते अपद छे. अवेद्य पद एटले ज्यां अंतर मुहूर्त्त प्रमाण मात्रमां दर्शन मोहनीयनो क्षयोपशम रूप ग्रंथि नेद करे,एवुं आत्मानुं पंडित वीर्य स्फुरे नहीं ते पद समजवुं.

थिरादिक चार दृष्टिमां वेद्य संवेद्य पद छे. वेद्य के० जे सूक्ष्म बोध, सम्यग् वेदन छे, अर्थात् मिथ्यात्व क्षय छतां यद्यपि छेली पाप प्रवृत्ति नरकादि गमन रूप श्रेणिकादिकनी जेम तप्तलोहपदस्पर्शप्रवृत्ति सरखी होय, परंतु ते वेद्य संवेद्य- पद सूक्ष्म बोध सहित आत्म पंमित वीर्यनुं स्फुरण मिथ्यात्वादिकना क्षयथी होय ॥ ५ ॥

वेद्यबंधशिवहेतुछेजी ॥ संवेदनतसनाण ॥ नय
निक्षेपेंअतिनलुंजी ॥ वेद्यसंवेद्यप्रमाण ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी वेद्य पदनो बंध ते शिवके० मोक्षनो हेतु छे; संवेदन पद ते तेनुं ज्ञान छे. नैगमादि सप्तनय, नामादि चारनिक्षेपा, स्यादस्ति आदि सात नंग तथा गमा एटले सरखा पाठ, इत्यादिकथी अति निर्मल एवुं वेद्य संवेद्य पद प्रमाण छे. ॥ ६ ॥

तेपदग्रंथिविनेदथीजी ॥ छेहेलीपापप्रवृत्ति ॥ तप्तलोह
पदधृतिसमीजी ॥ तिहांहोयअंतनिवृत्ति ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते वेद्य संवेद्य पद, दर्शन मोह नाशथी ग्रंथिनेदें उपजे, तेथी अनादिनी अतत्त्ववासना मटे. संसारमां छेली पाप प्रवृत्ति, ते अग्निनीए तप्त एवा लोह उपर पग मांडवाना धैर्य समान अनर्थनीकरनारी एवी पाप प्रवृत्ति लागे. अंते ए पाप प्रवृत्तिनी पण अहीं निवृत्ति थाय. ए वेद्य संवेद्य पदनुं लक्षण जाणवुं ॥ ७ ॥

एहथकीविपरीतछेजी ॥ पदतेअवेद्यसंवेद्य ॥ नवा
निनंदीजीवनेजी ॥ तेहोयवज्रअनेद्य ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वेद्य संवेद्य पदथी विपरीत लक्षणवालुं पद ते अवेद्य संवेद्य, ते छतां मिथ्यात्व होय अने सूक्ष्म बोध न होय, आ चार दृष्टिमां दर्शनमोहनीयनो क्षयोपशम, ग्रंथि नेद न होय. तेथी नवानिनंदीके० संसारनां सुखमां अतिशय राचनारा प्राणीने अवेद्य संवेद्य पद होय. वज्रनी जेवुं एअनेद्य छे. अनादि कालथी छे ॥ ८ ॥

लोनीकृपणदयामणोजी ॥ मायीमच्छरठाण ॥ नवा
निनंदीनयनर्योजी ॥ अफलआरंनअयाण ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ लोभी के० सर्वत्र याचक, धनवतां अभोगी, कृपण के० द्रव्यादिक न आपनार, तुच्छ प्रकृतिवालो, दयामणो के० सर्वनुं अहित इच्छनार, मायी के० कपटी, गुप्तस्वार्थ साधक, मच्छर के० परसुखे दुःखी, भवाभिनंदी, भयभयों के० सहुथी भय पामतो रेहेनार अने अयाण के० अज्ञान, आ आठ दोषवाला अर्थात् आ आठ दोष जेनामां विद्यमान छे ते प्राणी धर्मनो आरंभ करे, ते जो सत्य होय तो पण कुशला देवीनी जेम तेनुं निष्फल थाय ॥ ए ॥

ऐहवा अवगुणवंतनुंजी ॥ पदछे अवेद्य कठोर ॥ साधु
संग आगमतणोजी ॥ तेजीत्यो धुरंधोर ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त दोषवालांने अवेद्य पद कठोर के० बहुज आकरूं होय छे, तेथी ते प्राणीने ग्रंथिभेद न थाय, त्यां सुधी तेने सूक्ष्मबोध पण न थाय. परंतु साधुनो संग अने सिद्धांतनुं श्रवण, आ बेहेतु मलवाथी ते धुर के० प्रथम धोर के० महामोहनीय उपर जयमेलवे ॥ १० ॥

ते जीते सहजें टलेजी ॥ विषमकुतर्कप्रकार ॥ दूर
निकटहाथीहणेजी ॥ जेमऐबठरविचार ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ते मोहनीयने जीतवाथी विषम के० आकरा माठा तत्त्वना विचाररूप कुतर्क सेहेजे टली जाय. जेम बे बठर के० अज्ञानी, मूर्ख हता, तेउने हाथी उपर बेठेला मावते कह्युं के तमे दूर रहो, नहीं तो हाथी तमने मारी नांखशे. ते सांभली ते बंने बठरे विचार कर्यो के हाथी प्राप्त थयेलाने हणे छे के अप्राप्तने हणे छे? जो प्राप्तने हणे छे, तो मावतने हणे अने अप्राप्तने हणे तो आवनारने हणे छे, एवो विचार करेछे, तेटलामां हाथी आव्यो, अने ते बंनेने हणी नांख्या. आवा कुतर्कवाला विचार सहेजे टली जाय ॥ ११ ॥

हुंपाम्योसंशयनहींजी ॥ मूरख करे ऐ विचार ॥ आलसु
आगुरुशिष्यनोजी ॥ ते तोवचनप्रकार ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हुं तत्त्वज्ञान पाम्यो छुं, तेमां कांइ संशय नथी, एवा विचार मूर्ख होय ते करे. जेम आलसु गुरु अने आलसु शिष्य बंनेने परस्पर अनेक वचनना वाद थतां स्वाध्यायमां आवीशक्या नहीं, तेनी जेम ते बाबत समजवी ॥ १२ ॥

धीजेतेपति आववुंजी ॥ आपमतें अनुमान ॥ आगम
ने अनुमानथीजी ॥ साचुंलहे सुज्ञान ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तेथीजे प्राणी धी के० पोतानी बुद्धिए पति आववुं के० प्रत्यय उपजावे अर्थात् पोताना अनुमान प्रमाणे पोतानी मतिपुर्वक निश्चय करे ते कांइ पण तत्त्व न पामे; अने जे आगम प्रमाणथी प्रवीण गुरुना अभिप्राय प्रमाणे प्रत्यय उपजावे के० निश्चय करे, तेज साचुं सुज्ञान के० उत्तम तत्त्वज्ञान प्राप्त करे ॥ १३ ॥

नहीसर्वज्ञजुजूआजी ॥ तेहनाजेवलीदास ॥ भगति
देवनीपणकहीजी ॥ चित्रअचित्रप्रकाश ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली ते विचार करेके सर्वज्ञ वीतराग देव जूदा जूदा होता नथी. तेउ अवितथ्यवादी छे. तेमना जेउ दास के० सर्वज्ञ शासनना आराधनारा, तेउने ते ते देवनी भक्ति पण कही छे. तेमां एक चित्रभक्ति वीजी अचित्र भक्ति एम बंनेना पण अनेक प्रकार छे ॥ १४ ॥

देवसंसारीअनेकछेजी ॥ तेहनीभक्तिविचित्र ॥ एक
रागपरद्वेषथीजी ॥ एकमुगतिनीअचित्र ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जे वीतरागभाव पाम्या नथी अने संसारमां देवनाम धरावे छे, एवा अनेक देवो छे, अने तेमनी भक्ति विचित्र के० अनेक प्रकारनी छे. एक रागथी भक्ति, बीजी द्वेषथी भक्ति; तेवी सर्व विचित्र भक्ति समजवी अने एक केवल वीतरागनी भक्ति ते मुक्ति निमित्त होय अने ते अचित्र भक्ति कहेवाय ॥ १५ ॥

इंद्रियार्थगतबुद्धिछेजी ॥ ज्ञानछेआगमहेत ॥ असंमोह
शुभकृतिगुणेजी ॥ तेणेफलभेदसंकेत ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ए रीते भक्ति बे प्रकारनी छे. तेना फलभेद अनेक तरेहनाछे. जेमके कोइ प्राणीनी बुद्धि इंद्रियना विषयोमांज पहोचे छे, कोइनी बुद्धि ज्ञानप्राप्ति माटे आगममां प्रवेश करवा निमित्ते थाय छे. कोइने असंमोह पण थाय छे अने तेथी ते शुभ कृतिरूप गुणो प्राप्त करे छे. एवा अनेक प्रकारे फल भेदना पण बहु संकेतो छे ॥१५

आदरकिरिआरतिघणीजी ॥ विघनटलेमिलेलछि ॥ जिज्ञा
साबुधसेवनाजी ॥ शुभकृतिचिन्हप्रत्यछि ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ शुभकृति गुणोनुं स्वरूप कहे छे. विधिपूर्वक क्रियामां अत्यंत प्रीति उपजे, शुद्धक्रियामां अति उद्योग होय, हर्ष पण घणो होय. तेवां वर्त्तनथी कर्मावरणनां विघ्नो टले अने अक्षय भावी मोक्षरूप लक्ष्मी मलें. वली तत्त्वज्ञान जाणवानी जिज्ञासा थाय, बुध के० ज्ञानी पुरुषना चरणनी सेवा करवानी इछा थाय, इत्यादि शुभकृतिनां चिन्हो प्रत्यक्ष जाणवां ॥ १७ ॥

बुद्धिक्रियाभवफलदीएजी ॥ ज्ञानक्रियाशिवअंग ॥
असंमोहकिरिआदियेजी ॥ शीघ्रमुगतिफलचंग ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेनां फल कहे छे. इंद्रियार्थगत बुद्धिवाली क्रिया भव के० संसार फल-आपे छे. ज्ञानक्रिया मोक्षनुं अंगछे. ते ज्ञानपूर्वक असंमोह क्रियारूप चारित्र शीघ्र के० तत्काल चंग के० मनोहर मुक्तिनां फल आपे छे. यतः ॥ ज्ञानस्य फलं विरति र्विरतिफलं संवरो बोधः ॥ संवरफलं क्रिया निवृतिः, क्रियानिवृत्तेरयोगित्वं ॥ १८ ॥

पुद्गलरचनाकारमीजी ॥ तिहांजसचित्तनलीन ॥ एक
मार्गतेशिवतणोजी ॥ भेदलहेजगदीन ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ ज्यां समस्त पुद्गल रचना कारमी के० निर्माल्य जाणी अर्थात् भव नाटकने बालके करेला धुलिग्रह जेवी असार जाणी, तेमां जेनुं चित्त लागे नहीं अर्थात् आसक्त न थाय, तेज एक मोक्षनो मार्ग छे. ते मार्गमां जे प्राणी भेद माने ते प्राणी जगत्मां दीन के० दुःखी जाणवो ॥ १९ ॥

शिष्यभणीजिनदेशनाजी ॥ कहेजनपरिणतिभिन्न ॥ कहे
मुनिनीनयदेशनाजी ॥ परमार्थथीअभिन्न ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वीतरागनी देशना, गणधर प्रमुख शिष्य तथा तीर्थ स्थापनादि कार्य माटे होय छे ॥ अग्गिला ए धम्म देसणाए तिथ्थंकर नामकम्मं वेइज्जइ ॥ इति आगम वचनात् ते देशना सर्व मनुष्य सांभले, सांभलनारानी परिणति पण भिन्नभिन्न होय मुनिराजनी देशना पण नयेनये भिन्नभिन्न होय, देशना आपनारनी परिणति पण भिन्नभिन्न होय, परंतु तेउ सर्वे परमार्थे, स्याद्वाद मुद्राए अभिन्न जाणवा ॥ २० ॥

शब्दभेदझघडोकिस्योजी ॥ परमारथजोएक ॥ कहो
गंगाकरोसुरनदीजी ॥ वस्तुफरेनहींछेक ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ शब्दभेदमां पण कांइ पण झघडो के० विवाद नथी. जो परमार्थ एक होय तो वाद शेनो होय ? जेम कोइ गंगाने सुरनदी कहे, कोइ जान्हवी कहे, तेम जुदा पर्याय नामथी कांइ वस्तुमां जरापण फेर पडे नही ॥ २१ ॥

धर्मक्षमादिकपणमटेजी ॥ प्रगटेधर्मसंन्यास ॥ तोझघडा
झांटातणोजी ॥ मुनिनेकवणअभ्यास ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ आठदृष्टिमां क्षमादि धर्म मटे अने मात्र धर्म संन्यास प्रगटे. धर्म संन्यास

सामग्री ते द्रव्य योगनुंज घर छे. ते अशठ पंडित तथा अमायीनेज होय अने एवा मुनिने ऊघडा प्रमुखनो अभ्यास नज होय ॥ २२ ॥

अभिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ ते
लेशोहवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनवृष्टि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ अभिनिवेश के० कदाग्रह, मात्सर्य इत्यादि सर्व दोष तजीने जेणे पूर्वोक्त चारदृष्टिउं प्राप्तकरी ते प्राणी पांचमी थिरादृष्टि पामे. ते दृष्टि केवी छे? सर्व दिशाए प्रवर्त्तनारा उत्तम यशरूप अमृतने वधारवाने घन के० मेघनी वृष्टि समान छे. गौतम स्वामीना पन्नरसे तापसना पारणानी जेम वृद्धि करनार छे. आचार दृष्टिमां ग्रंथिभेद नहीं परंतु सत्संगति अने सदाचार प्रवृत्ति होय ॥ इति दीप्ता दृष्टिविचार ॥२३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

दृष्टिथिरामांहेदर्शननित्ये ॥ रतनप्रभासमजाणोरे ॥
भ्रांतिनहीवलीबोधतेसूक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनविसारूं ॥ संभारूंदिनराततरे ॥ पशु
टालीसुररूपकरेजे ॥ समकितने अवदाततरे ॥ए गुण० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमी थिरादृष्टि कहे छे. थिरा दृष्टिमां ग्रंथिभेद थवाथी सम्यग् दर्शन नित्य होय. बोध ते रत्नी कान्ति समान होय. भ्रान्ति लेशमात्र न होय. तत्त्वार्थरूप सूक्ष्म बोधनुं यथार्थ ज्ञान होय. अज्ञान अने मिथ्यात्वना पुदगलो न छेदाता होय ते छेदाय. सरल बुद्धि होय. सर्व इंद्रियार्थ विषयोना रूंधन रूप प्रत्याहार प्रगट थाय ॥ १ ॥ आवो मोटो श्रीमहावीर स्वामीनो गुण हुं चित्तथी विसारूं नहीं. दिनरात निरंतर संभारूं, कारणके मारा इंद्रियार्थ गुणो विषयार्थे हता, पशुप्रायें हता, तेने टालीने सुररूप के० तत्त्वबोधवंत कर्या. दर्शन मोहना विनाशथी सम्यक्त्व गुण प्रगट थयो ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरखी ॥ भवचेष्टाइहांभासेरे ॥ रिद्धि
सिद्धिसविघटमांपेसे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम बालकोए करेली धुलिना गृहनी लीला परमार्थे गृहरूप सत्य नथी, तेम आ दृष्टिमां वर्त्तता प्राणीने संसारनी सर्व चेष्टा,पुद्गल विलास तेवाज भासे छे, अर्थात् सत्य लागता नथी. आवीरीते संसारनी अनित्यता जाणवाथी अंतरंगनी सर्व

सिद्धि तेना घटमांज प्रगट थाय. संतोषरूप महासुखोत्पादक गुण प्रगटे. अष्ट महासिद्धि तेनी पासेज रहे. समस्त लब्धिनी सिद्धि ते योगरूप कल्पवृक्षनां कुसुम छे एम माने ॥ ३ ॥

अहीं अष्ट महासिद्धिनुं वर्णन करे छे. १ महिमा के० शरीरादिकने मेरू पर्वत करतां पण मोटां करवानी शक्ति. २ लघिमा के० शरीरादिकने वायु करतां पण लघु करवानी शक्ति. ३ गरिमा के० तेउने वज्र थकी पण अत्यंत भारे करवानी शक्ति. ४ प्राप्ति के० भूमिए रह्याछतां अंगुलने मेरूना शिखरे पहोंचाडवानी शक्ति. ५ प्राकाम्य के० पाणीने विषे पण पृथ्वीनी जेम गमनादि करवानी शक्ति. ६ ईशिता के० त्रैलोक्य रीद्धि करण तथा तीर्थेश्वरादि रीद्धि विकुर्वण शक्ति. ७ वशिता के० सर्व जीवने वश करवानी शक्ति. ८ अप्रतिघात के० पर्वतमां पण प्रवेश करवानी शक्ति. वलि ते उपरांत अंतर्धान, अदृश्य करण, नानारूप करण इत्यादि अनेक चमत्कारिक शक्ति प्रगट थाय.

विषयविकारेंनइंद्रियजोमे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल
ज्योतितेतत्त्वप्रकाशे ॥ शेषउपायअसारोरे ॥ ए गुण० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शब्दादि त्रेवीश विषयना बसे बावन विकारोमां इंद्रियोने जोडे नहीं. अर्थात् आसक्त न करे ते रूप जे प्रत्याहार गुण ते आ दृष्टिमां उपजे. ते प्राणीनी ज्योति मात्र तत्त्व रहस्यनेज प्रकाश करे, अर्थात् ते तत्त्वज्ञाननेज साररूप माने अने अने संसारना बीजा सर्व उपाय के० प्रपंचने असार माने ॥ ४ ॥

शीतलचंदनथीपणउपन्यो ॥ अग्निदहेजेमवननेरे ॥ धर्म
जनितपणभोगइहांतेम ॥ लागेअनिष्टतेमनननेरे ॥ ए गुण० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे. जेम बावना चंदन अत्यंत शीतल छतां तेमांथी उत्पन्न थयेलो अग्नि वनना सर्व वृक्षने बाले छे, तेम न्यायसंपन्न वैभवथी तथा एकपत्नीव्रतादिकथी गृहस्थ धर्मनी सेवना करे छे, तोपण ते प्राणीने ते भोगादिकनी सेवना मनमां अनिष्ट लागे. अवसर प्राप्त थतां भोगादिकनो त्याग करवामां लेशमात्र वार लगाडे नहीं. गृहस्थावासने पाश समान माने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुद्गलजालतमासीरे ॥ चिदा
नंदघनसुयशविलासी ॥ केमहोयजगनोआशीरे ॥ ए गुण० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां अंशे के० थोडे भागे अविनाशी थाय. जेम जेम आश्रवना हेतु न्यून थाय, तेम तेम आत्मा निरावरणी थाय. पुद्गलनी सर्व रचनाने बाजीग-

रनी वाजी जेवी जाणे. ते प्राणी ज्ञाननो जे आनंद तेना समूहने प्राप्त करावनारो उत्तम यश तेना विलासमां रमणता करनारो थाय, अने तेथी त्रण भुवनरूप जगतूमां कोइ पण वस्तुनी तेने आशा न होय; मात्र सहज स्वरूपनो विलासी होय ॥५॥ दर्शनमोहनीना क्षयोपशमे वा उपशमे आ दृष्टि होय.

॥ ढाल ठठी ॥

॥ नोलीमा हंसारे विषयन राचियें ॥ एदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनहिं ॥ अल्पहोयदोयनीति ॥
गंधतेसारोरेकान्तिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति ॥ १ ॥
धनधनशासनश्रीजीनवरतणुं ॥

अर्थ ॥ वली ते प्राणी इंद्रियार्थना चपलपणा रहित होय. सम्यक्त्वथी तेनुं चित्त स्थिर होय. वली रोग रहित शरीर होय. तेनुं हृदय कठण न होय, परंतु कोमल होय. लघुनीति तथा वडीनीति बंने शरीरमां अल्प होय. शरीरनो मेल सुरभिवंत होय. शरीरनी कान्ति पण सुंदर होय. वचन पण प्रसन्नतावालां होय. मधुर स्वर होय. ए प्रमाणे आदृष्टिमां प्रवर्त्तन होय ॥ १ ॥ एवुं श्रीवीतरागनुं शासन के० आज्ञारूप प्रवचन ते धन्य के० प्रसंशनीय छे.

धीरप्रनावीरे आगलेंयोगथी ॥ मित्रादिकयुतचित्त ॥ लान
इष्टनोरेद्वंद्वअधृष्यता ॥ जनप्रियताहोयनित्य ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आगले कालें योगथी धैर्यताना गुण विशेपरीते नावे. जेम अप्रमत्तता वधे तेम योग थाय. १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थ, आ चार नावनायुक्त चित्त थाय. इष्ट जे ज्ञानादि तेनो लान थाय. द्वंद्व अधृष्यता के० एकत्वपणुं, असहायीपणुं वांछे. जनप्रिय के० लोकप्रियपणुं निरंतर होय. मैत्री प्रमुख चार नावना धर्मध्याननी पुष्टि करे छे. यद्यपि ध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्त मात्र होय छे, परंतु ध्याननी नावना बहुकाल सुधी रहे छे. वली बहुकाल सुधी ज्ञाननुं चिंतवन ते पण धर्मध्यान कहेवाय. तेथी मैत्री प्रमुख नावना ते धर्मध्याननुं रसायण छे. जेम रसायणथी जर्जरित शरीर दृढ थाय तेम नावनारूप रसायणथी ध्यान दृढ थाय. नावनानुं विशेष स्वरूप नवनावना ग्रंथ तथा योगशास्त्र प्रमुख ग्रंथथी जाणवुं ॥ २ ॥

नाशदोषनोरे तृपतिपरमलहे ॥ समताउचितसंयोग ॥ नाश
वयरनोरे बुद्धिशतंनरा ॥ एनिष्पन्नहयोग ॥ धन० ॥३॥

अर्थ ॥ क्षुद्रादि आठ दोष तथा रागद्वेष, कामक्रोध, मदहर्ष, तेनो नाश करे. वली अतत्त्व बुद्धिने तजवाथी, प्रकृष्ट रुचिमार्गें, तत्त्व श्रद्धानादिकमां तृप्ति पामे. कृतापराधजन उपर पण क्रोधनी मंदता होय अने तेनुं प्रतिकूल न चिंतवे, समता भाव होय. तत्त्वमार्गरूप धर्म व्यापारनो संयोगी होय. वैर विरोधनो नाश करनार होय, पाप प्रवृत्ति थइजतां पश्चात्ताप करे. तेनी बुद्धि एवी होय के शतंभरा, के० सेंकडो मनुष्योनी आजीविकाने लाभकारी होय, इत्यादि योग आठ दोष गयाथी स्वाभाविकरीते उपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारे जेपरग्रंथमां ॥ योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतेजोडीए ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली योगनां चिन्ह के० लक्षणो ब्रह्मचर्यादि कृतप्रतिज्ञा निर्वाह, अपाय निराकरणादि जे पातंजलादि योगाचार्यें सर्वांगे दीठां छे, ते सर्व पंचम दृष्टिमां होय, अर्थात् पूर्वेनी चार दृष्टिथी अधिक गुणेयुक्त गरिष्ट बुद्धि होय. तेज कारणथी मोहनो क्षयोपशम जे ग्रंथिभेद ते अहीं कह्यो छे ॥ इति थिरा दृष्टि विचार ॥ ४ ॥

छठीदिठिरेहवेकांताकहुं ॥ तिहांताराभप्रकाश ॥ तत्त्व
मिमांसारेदृढहोयेधारणा ॥ नहींअन्यश्रुतवास ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे छठी कांतानामा दृष्टि कहीये छीए. आ दृष्टिमां आकाशना तारा सरखो तत्त्वज्ञाननो प्रकाश होय. जेम तारानो अभाव थतो नथी, तेम ते ज्ञाननो अभाव थतो नथी. तत्वनीज विचारणा होय. तत्त्वउपर दृढ के० निबिड धारणा होय, मिथ्यात्त्वप्रणीत श्रुतशास्त्रनी लेश मात्र वासना न होय ॥ ५ ॥

मनमहिलानुंरे वाहलाउपरें ॥ बीजांकामकरंत ॥ तेम
श्रुतधर्मेंरे एहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥६॥

अर्थ ॥ जेम पतिव्रता स्त्रीनुं मन पोताना वहाला स्वामी उपर, बीजा सर्वकाम घरना करतां छतां, जोडायेलुंज होय तेम कांता दृष्टिवालो प्राणी जो के संसारमां रह्यो थको सर्वकार्य करे, तोपण तेनुं मन तो अर्हत्प्रणीत धर्ममांज जोडायेलुं होय. संसारनां कार्यो उपर आसक्ति न होय अने ते सम्यग् ज्ञाननोज आक्षेपक के० आदरवावालो होय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरे विघननिवारणा ॥ भोगनहीं भवहेत ॥
नविगुणदोषन विषयस्वरूपथी ॥ मनगुण अवगुणखेत ॥ धन० ॥७॥

अर्थ ॥ एवा ज्ञानथी धर्मनां विघ्नकारक कारणोनुं निवारण करे. वली अभयकुमारनी जेम परने शासन प्रभावनादि कारणो मेलवी आपे. ते प्राणी यद्यपि भोगादि भोगवे छे तथापि ते, तेने संसारना हेतु थतां नथी. कारण के ते प्राणीनी निरंतर एवी विचारणा होय छे के संसारना विषयो गुणरूप नथी, तेम दोषरूप पण नथी. वली ते विषयादिकने विषे मन जोडवुं ते अवगुणनुं क्षेत्र छे, एम जाणी तेमां मनने परोवेज नहीं ॥ ७ ॥

मायापाणीरे जाणीतेहने ॥ लंघीजायअडोल ॥ साचुं
जाणीरे तेवीतोरहे ॥ नचलेभामाडोल ॥ धन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते प्राणी मायारूप पाणीना विविध तरंगना विलास देखीने ते मायाने उलंघी जाय, अर्थात् तेमां प्रवेश करे नही. वली सम्यग् ज्ञान तथा श्रद्धाए ते प्राणी अडोल होवाथी भव प्रपंचमां फसातो नथी. आत्मस्वरूपनुं ज्ञान साचुं थवाथी भव प्रपंचथी वीतो रहे. संसारमां अविद्याना मायायुक्त प्रपंचोथी क्षोभ पामे नहीं. अंबड परिव्राजक अने सुलसाना दृष्टांतनी जेम चले नहीं ॥ ७ ॥

भोगतत्त्वनेरे एमभयनविटले ॥ जूठाजाणेरे भोग ॥ तेए
दृष्टिरे भवसायरतरे ॥ लहेवली सुयशसंयोग ॥ धन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जे संसारना भोगने तात्त्विक जाणे तेने संसारनो भय टले नहीं, एवो दृढनिश्चय थवाथी इंद्रियोना भोगने जूठा के० माठा जाणे छे. एवा संसारना भोगथी प्रपंच वधे छे परंतु मोक्षपंथ मलतो नथी एवुं जे प्राणी जाणे छे, ते प्राणी आ दृष्टिमां वर्त्ततो थको भवसमुद्रनो पार पामे छे, अर्थात् कर्मरहित थइ, सुयश मेलवी आत्माना अक्षय सुखना विलासनो संयोग प्राप्त करे ॥ इति छठी कांता दृष्टिविचार ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

अर्कप्रभासम बोधप्रभामां ॥ ध्यानप्रीयाएदिठ्ठी ॥
तत्त्वतणी प्रतिपत्ति इहांवली ॥ रोगनही सुखपुठ्ठीरे ॥
भविकावीरवचन चित्तधरीए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रभा नामा सातमी दृष्टि कहीए छीए, आ दृष्टिमां बोधनो प्रकाश सूर्यनी प्रभा सरखो होय अर्थात् अर्कप्रभा के० सूर्यनो प्रकाश जेम अंधकारनो नाश-करे तेम आ दृष्टिवंत प्राणी अज्ञाननो नाश करे. प्रशांतवाहितादि गुणो जे कायरोने

दुर्धर छे, ते आदृष्टिवंतने होय छे. आ दृष्टिमां ध्यान प्रिय होय. आ दृष्टि ध्यानप्रिया होवाथी ते प्राणी ध्यानमांज वर्त्ततो रहे. तत्त्वनी प्रतिपत्ति के० चारित्रादिक रत्न त्रयनी आदरणा होय. बाह्य अभ्यंतरना शरीरना रोग, उपाधि के असमाधि तेने न होय अने सुखनी पुष्टि होय ॥ १ ॥ अहो भव्यो! एवा श्रीवीरप्रभुनां वचनने मनमां तत्त्वपणे ग्रहण करो.

सघलुं परवश तेदुःखलक्षण ॥ निजवश तेसुखलहीए ॥ ए
दृष्टें आतमगुण प्रगटे ॥ कहोसुखतेकुण कहीएरे ॥ भवि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे पर पुद्गलादिकने वशवर्त्तीपणुं तेज दुःखनुं लक्षण छे. अने पोताना आत्मस्वभावमांज वर्त्तवुं ते सुखनुं लक्षण छे. एवीरीते आदृष्टिमां आत्मगुणथी परमानंद सुख प्रगट थाय ते सुखनां स्वरूप ने ज्ञानीविना बीजो कोण कहीशके? अर्थात् बीजाथी कहीशकाय नहीं ॥ २ ॥

नागरसुखपामरनवजाणे ॥ वल्लभसुखनकुमारी ॥ अनु
भववणतेमध्यानतणुं सुख ॥ कोणजाणेनरनारीरे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम नगरना रेहेनारा चतुर पुरुषोना सुखनो विलास गामडानो रेहेनार पामर के० गरीब जाणी शके नहीं तथा जेम कुंवारी कन्या सुंदर भत्तारयुक्त वल्लभाना सुखने जाणी शके नहीं तेम आत्माना अनुभव ज्ञानविना ध्याननुं सुख बहिरात्मा एवा स्त्री अथवा पुरुष कोण जाणी शके? अर्थात् जाणी शके नहीं ॥ ३ ॥

एहदृष्टिमां निर्मलबोधें ॥ ध्यानसदाहोयसाचुं ॥ दुषण
रहितनिरंतर ज्योति ॥ रतनतेदीपें जाचुंरे ॥ भवि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिवंत प्राणीने निर्मल बोधनो प्रकाश थवाथी निरंतर धर्म ध्यान तथा शुक्ल ध्यान साचांज होय. ध्याननो विचार, आवश्यक निर्युक्ति तथा ध्यान शतकनी वृत्तिथी अवधारवो. जेम दूषण रहित, निर्मल जात्यवंत रत्नी ज्योति निरंतर विशेष प्रकाश आपे तेम ध्यानमां लीन प्राणी कर्मउपाधिने अभावे विशेषपणे आत्मप्रकाशथी दीपे ॥ ४ ॥

विषभागक्षय, शांतवाहिता ॥ शिवमारगध्रुवनाम ॥ कहे
असंगक्रियाइहांयोगी ॥ विमलसुयशपरिणामरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिनुं लक्षण कहे छे. विष भाग के० "रागद्वेष, अहंकृति, कामेछादिकना क्षयथी मोक्ष" एवो बौधनो मत छे. "अपराधी उपर प्रशांत वाहिता के० निरंतर

शांतपणुं ते मोक्ष" एवो सांख्यनो मत बे. "ज्यां उत्पाद के विनाश नही अने जे ध्रुव होय ते मोक्ष" एम जैमिनीयनो मत बे; अने आ दृष्टिवंत ए सर्व पदार्थ असंग नावथी अलिप्त क्रियायुक्त उत्तम यशरूप आत्म गुणना परिणाम सहित, कर्मोपाधि रहितपणे शुद्ध ते मोक्ष एवा परिणामवालो होय बे. ॥५॥ इति सातमी प्रनादृष्टि विचार.

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तुज साथे नहीं बोलुं मारा वाहाला ॥ ए देशी ॥

दृष्टि आठमी सारसमाधि ॥ नामपरातसजाणुजी ॥
आपस्वनावेप्रवृत्तिपुरण ॥ शशिसम बोधवखाणुंजी ॥
निरतिचारपदएहमांयोगी ॥ कहीयेनहिअतिचारीजी ॥
आरोहेआरुढेगिरिने ॥ तेंमएहनीगतिन्यारीजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ नव्य लोकना आत्मस्वनाव ज्यां अक्षयपणे वर्त्ते बे, एवी आठमी दृष्टि सार के० प्रधान आत्म समाधिरूप बे. तेनुं नाम परा बे. आ दृष्टिमां पोताना आत्मस्वनावमां पूर्ण प्रवर्त्तन होय. वली बोध प्रकाश, संपूर्ण चंद्रमा सरखो निर्मल प्रशांतवाहितादि गुणयुक्त होय. आ दृष्टिमां प्रवर्त्ततो योगी निरतिचार पदे प्रवर्त्ते, कोइ पण वखत अतिचार पदमां वर्त्ते नहीं. १ अतिक्रम २ व्यतिक्रम ३ अतिचार, आवा त्रणे दोषना प्रकारमां आवे नहीं, तो पबी अनाचारनी प्रवृत्ति होयज क्यांथी? जेम मुनिराज उपशम, क्षपक श्रेणिरूप गिरि के० पर्वत उपर आरोहे के० चढे, तेम अहीं परिणाम धाराए आत्माना पंडित वीर्यना विलासे तेपण गुण श्रेणिने आरुढे के० आरोहे. माटे तेनी गति ते नवगतिथी न्यारी बे ॥ १ ॥

चंदनगंधसमानक्षिमाइहां ॥ वासकने, नगवेषेजी ॥
आसंगेवर्जितवलीएहमां ॥ किरियानिजगुणलेखेजी ॥
शिक्षाथी जेमरतननियोजन ॥ दृष्टिनिन्नतेमएहोजी ॥
तासनियोगे करण अपूरव ॥ लहेमुनिकेवलगेहोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली शरीरादिकनो गंध चंदन समान सहजथी होय; तेम वचन पण सहजथी चंदन समान शीतल होय. क्षमादिक धर्मपण सहजथी होय. वली तेवी वासना सहजथी होय के बीजा कोइ द्रव्यनी अपेक्षा न करे, केमके जेने सहजथी गुण प्राप्त थया होय ते परना गुणनी प्राप्ति वांबे नही. वली आ दृष्टिमां संसारनी आसंगता न होय. समिति गुप्ति प्रमुख मूलोत्तर गुणोनो अन्यास तेथी सर्व क्रिया आत्माना गुणने माटे थाय. जे क्रियाने अनुसरतो होय ते क्रिया एवी होय के अक्रि-

યાગુણને સાધે. જેમ ક્ષારાદિ શતપુટાદિ શિક્ષાના યોગે રત્નની જાતિને તાદૃશસ્થાને જોડીએ, રત્નની તો એકજ જાતિ છે પરંતુ જેમ જેમ પુટ દેતા જઇએ તેમ તેમ જોવાવાલાની દૃષ્ટિમાં ભિન્નભિન્ન તે રત્ન દેખાય, તેમ આ દૃષ્ટિમાં ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિવંત હોય, કેમકે છદ્મસ્થનું જ્ઞાન એક સરખું ન હોય, તેથી તે કારણથી આ દૃષ્ટાંત છે તે ધ્યાનમાં લેવું. તે પ્રમાણે અપૂર્વ કરણાદિ ગુણસ્થાનકના કરણ સાધતો અનુક્રમે આઠદૃષ્ટિમાં વર્ત્તતો મુનિરાજ કેવલ જ્ઞાનનું ગૃહ પામે ॥ ૨ ॥

ક્ષીણદોષ સર્વજ્ઞમહામુનિ ॥ સર્વલબ્ધિફલભોગીજી ॥
પરઉપગાર કરીશિવસુખતે ॥ પામે યોગ અયોગીજી ॥
સર્વશત્રુક્ષય સર્વવ્યાધિલય ॥ પૂરણસર્વસમીહાજી ॥
સર્વઅરથયોગેંસુખતેહથી ॥ અનંતગુણનિરીહાજી ॥ ૩ ॥

અર્થ ॥ આ દૃષ્ટિવંત પ્રાણી સર્વ દોષને ક્ષય કરે; વલી તે મહામુનિરાજ સર્વજ્ઞ કેવલજ્ઞાનવંત થાય; સમસ્ત લબ્ધિનાં ફલનો ભોગી થાય; ભવ્ય પ્રાણીઉને ચારિત્રધર્મ પમાડતાં તેઉને અત્યંત ઉપગારી થાય; પોતે મોક્ષ સુખ પામે; સયોગિ ગુણઠાણે વર્તી અયોગિ ગુણઠાણે અયોગિ પદ લઇ સિદ્ધિ પામે; સર્વ કર્મરૂપ શત્રુઉનો ક્ષય કરતાં રોગાદિ સર્વ વ્યાધિયોનોપણ નાશ કરે. એપ્રમાણે સર્વ સમીહા કે૦ વાંછાઉ પૂર્ણ થવાથી કેવલ આત્મસ્વરૂપમાં લીન થયોથકો એકરૂપતા પામે. સર્વ અર્થના યોગથી સંપૂર્ણ સુખે તૃપ્તિવંત રહે, તેથી નિરીહા કે૦ નિસ્પૃહપણે પ્રગટ થયા જે અનંતગુણ તેનું અવ્યાબાધ સુખ વધતાં વધતાં પૂર્ણ આત્માનંદી થાય ॥ ૩ ॥

એઅડદિઠી કહીસંક્ષેપે ॥ યોગશાસ્ત્રસંકેતેંજી ॥
કુલયોગીનેપ્રવૃત્તચક્રજે ॥ તેહતણેહિતહેતેંજી ॥
યોગીકુલેજાયાતસધર્મેં ॥ અનુગતતેકુલયોગીજી ॥
અદ્વેષીગુરુદેવદ્વિજપ્રિય ॥ દયાવંતઉપયોગીજી ॥૪॥

અર્થ ॥ આ આઠ દૃષ્ટિ ભવ્ય પ્રાણીઉના ઉપકારને અર્થે યોગશાસ્ત્ર, અધ્યાત્મ ગ્રંથ જેવા કે ઉપમિતિભવપ્રપંચ, ભવભાવના વૃત્તિ, પાતંજલ શાસ્ત્ર તથા પ્રવચન પ્રવોધાદિ ગ્રંથોને અનુસારે સંક્ષેપથી કહી છે. યોગી બે પ્રકારના છે. ૧ કુલયોગી ૨ પ્રવૃત્ત ચક્રયોગી. તેઉ પોતાના ચિત્તમાં અહંકારથી એમ માને છે કે અમેપણ યોગી છીએ તેથી તેઉના હિતને અર્થે આ દૃષ્ટિયો કહી છે. હવે તે યોગીઉનાં લક્ષણ બતાવે છે. જે યોગીના કુલમાં જન્મ્યા હોય તથા જેના ધર્માચાર રુઢિમાર્ગને અનુસરતા હોય એવા

सामान्यबुद्धिएवर्त्तता सर्व तापसादि षट्दर्शनीउं ते कुलयोगी जाणवा. जेउं अद्वेषी होय तथा देवगुरु अने द्विज के० ब्रह्मचर्यादिगुण जेमने प्रिय होय, वली दयावंत तथा यत्नावंत होय तेमज ॥ ४ ॥

शुश्रूषादिक अडगुणसंपूरण ॥ प्रवृत्तचक्रतेकहीएजी ॥
यमद्वयलाभी परदुगअर्थी ॥ आद्यअवंचकलहीएजी ॥
चारअहिंसादिकयमइछा ॥ प्रवृत्तिथिरसिद्धिनामेजी ॥
शुद्धरुचेंपालेअतिचारह ॥ टालेफलपरिणामेजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ १ शुश्रूषा २ श्रवणंचैव ३ ग्रहणं ४ धारणं तथा ॥ ५ उहा ६ पोहो ७ अर्थ विज्ञानं ८ तत्त्वज्ञानंच धीगुणाः ॥ १ ॥ अथवा १ शुश्रूषा २ श्रुतज्ञान ३ विरति ४ आश्रवरोध ५ संवर ६ निरीहतप ७ निर्जरा ८ क्रियानिवृत्ति. एटले के शुश्रूषादि आठ गुण जेनामा संपूर्ण होय, ते प्रवृत्त–चक्र–योगी कहेवाय. वली यमद्वय के० अहिंसा अने सत्य तेनो लाभवंत तथा परदुग के० अस्तेय अने ब्रह्मचर्यनो अर्थी होय. वली आद्य अवंचकफलनो धणी होय. अवंचक त्रण प्रकारना छे. योगावंचक २ क्रियावंचक ३ फलावंचक, तेमांथी आद्य अवंचकनो धणी होय. वली अहिंसादि चार यमने वश थको होय. वली इछा के० गुणीजननी सम्यक् कथा करवाने मन करे; प्रवृत्ति के० आचार उत्कृष्टपणे पालवाने प्रवर्त्ते; थिर के० निरतिचारपणे प्रवर्त्ति दृढ रहे; सिद्धि के० स्वार्थ परार्थने निपजावे. एप्रमाणे अति शुद्ध रुचिपणे चार प्रकारे पाले वली अतिचार टाली जे रीते फलीभूत थाय तेवा परिणामे साधे. तेवा योगी सदासफलाभ्यासी जेम एक वखत फेरव्युं चक्र फरी भाजन उतार्या करे तेम आ योगी क्रिया निःफल न थाय ॥ ५ ॥

कुलयोगीने प्रवृत्तचक्रने ॥ श्रवणशुद्धिपक्षपातजी ॥
योगदृष्टि ग्रंथेहितहोवे ॥ तेणेकहीएवातजी ॥
शुद्धभावनेसूनिकिरिया ॥ बेहुमां अंतर केतोजी ॥
जलहलतोसुरजनेखजुउं ॥ तासतेजमांतेतोजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ कुलयोगी तथा प्रवृत्त चक्रयोगीने शुद्ध मार्ग यम नियमादिक, धर्म शास्त्रनुं श्रवण होय तथा शुद्धाचार विनयादि करण, सत्संग तथा गुणोनो पक्षपात होय. एवा गुणना धारक ते योगी कहेवाय. परंतु दंभी अने विषयना प्रसंगी ते योगी न कहेवाय. आ वातनुं विस्तारथी स्वरूप श्रीहरिभद्रसूरिकृत योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जोवुं. शून्यमन अने शुन्य आचारे योगी न कहेवाय. दिवसे मध्यान्हे प्रकाश करता

सहस्र किरणोवाला सूर्यना अने अंधारी राते प्रकाश करता खजुआ के० आगीआ कीडाना तेजमां जेटलो फेर छे, तेटलो अंतर, सम्यक् क्षयोपशम भावनी शुद्धक्रियामां अने मोहना क्षयोपशम विनानी शून्य क्रियामां छे ॥ ६ ॥

गुह्यभावएतेहने कहीए ॥ जेहसुं अंतर भांजेजी ॥
जेहसुंचित्तपटंतर होवे ॥ तेहशुं गुह्यनछाजेजी ॥
योग्यअयोग्य विभाग अलहतो ॥ करशेमोटी वातोजी ॥
खमशे ते पंडित परखदमां ॥ मुष्टिप्रहारने लातोजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रना गुह्यभावके० रहस्य ते तेहनेज कहीए, के जेनी साथे अंतरंग मलतुं होय, अर्थात् मिथ्यात्वनो त्याग करी जेने सम्यग् दर्शन परिणति श्रद्धान होय तेनी पासेज शास्त्रना रहस्य प्रकाशीए. जेनी साथे चित्त पटंतर वर्त्ततुं होय अर्थात् जेने प्रवचनानुसार सम्यक् श्रद्धान न थयुं होय, तेनीसाथे शास्त्रना रहस्यनो प्रकाश करवो ते घटतुं नथी. योग्य अयोग्यनो विभागके० वेहेंचण जे समजतो नथी, अर्थात् गुरुनो विनय करतो नथी शुद्धाचार पालतो नथी, द्रव्यादि भावने समजतो नथी, छतां पोते डाह्यो थइने शास्त्र संबंधी मोटी मोटी वातो करेछे, ते पंडितोनी परखदके० सभामां हार पामी मुष्टिप्रहारके० गछादिकथी बहार काढवुं तथा नरकादि वध बंधन अने लातो के० आलोयणना प्रहार अने अपयश तथा अपकीर्त्ति पामशे. यदुक्तं ॥ जंजायइ अगीयछो, जंच अगीयछ निस्सीयो जयइ ॥ वट्टा वेयइ गछं, अणंत संसारियो भणियो ॥ १ ॥ इत्यावश्यकनिर्युक्ति वचनात्. ते कारणथी गीतार्थ तथा गीतार्थना आश्रितने विहार कह्यो छे. तेम गंभीर अर्थनी देशनापण योग्य जनने आपवी.

सभात्रण श्रोतागुणअवगुण ॥ नंदीसूत्रे दिसेजी ॥
तेजाणीएग्रंथयोग्यने ॥ देजोसुगुणजगीशेजी ॥
लोकपूरयोनिजनिज इछा ॥ योगभाव गुणरयणेजी ॥
श्रीनयविजयविबुधपयसेवक ॥ वाचकयशने वयणेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सभा त्रण प्रकारनी श्रीनंदीसूत्रमां कहीछे. १ जे श्रोता गुण तथा दोषने समजे तेवा श्रोताउनी सभा राजहंस समान डाही समजवी. २ श्रोताउ अज्ञान छे, ते सभा पशु मृगना बालको सरखी मूर्ख समजवी. ३ जेउ गीतार्थना अपमानी निंदक छे, ते अयोग्य सभा समजवी. तेवीरीते सभानुं स्वरूप जाणीने आ ग्रंथनो हार्द तेवी सभानो आपजो, जेउने देतां उत्तम प्रवचन शोभाकारकादि गुणो तथा

जगीश के० ते गुणोथी पामवानी सुखरूप लीला ते पामशे. एम इच्छायोग तथा शास्त्रादिना जे योग तेरूप जे भावगुण, तद्रूप मणिरत्नोथी समस्त लोक पुरजो! विशिष्ट आत्मयोगरूप भाव रत्नोथी समग्र लोक तृप्ति पामो! आ ग्रंथनुं रहस्य पामी भव्यजनो संसार भावथी मुक्त थाउं! आप स्वभावमां मग्न रेहेजो! एम श्रीनयविजय पंडितना चरणकमलना सेवक उपाध्याय श्रीयशोविजयगणि जेमणे काशीमां " न्याय विशारद " एवुं बिरुद प्राप्तकर्युं, तेमनां वचन जाणजो ॥ ७ ॥

काव्यं ॥ श्री मद्यशोविजयवाचकराजराज, विनिर्मितोदृष्टिविचाररूपः ॥
स्वाध्यायएषप्रथमंततोयं, भाषामयो लेशतयाटबार्थः ॥ १ ॥
श्री स्तंभतीर्थेऽत्रतपागणिय, नाम्नाचज्ञानाद्विमलाभिधेन ॥
श्रीसूरिणाभूरि सुखावबोधार्थ मेवलेशंलिखितोहिभद्र ॥ २ ॥

अर्थ ॥ महामहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिकृत योगदृष्टि विचारनी सझायोनो सुखे अवबोध थवा माटे श्रीमत्तपागच्छीय संविज्ञजन पक्षिय भट्टारक श्रीज्ञानविमलसूरिए बालावबोधरूप लेशमात्र अर्थ लख्यो छे. श्री खंभात बंदरमां दोशीभेघजी उदेकरण तथा वडनगरीआ शा. अमुलखचंदना अनुग्रहने वास्ते प्रथमादर्शे लख्यो छे. श्रीयोगदृष्टि सझायोनी सर्व गाथा ७६ तथा बे श्लोक मली ७७ छे.

॥ इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिकृत योगदृष्टि स्वाध्याय, श्रीज्ञानविमल सूरिकृत अर्थसहित समाप्तः ॥

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत अध्यात्मसार ग्रंथ अर्थसहित प्रारंभ करियेंछेयें ॥

॥ श्लोकः ॥

ऐंद्रश्रेणिनतः श्रीमान्नंदतान्नाभिनंदनः ॥ उद्दधार युगादौ यो जगदज्ञानपंकतः ॥ १ ॥ श्रीशांतिस्तांतिभिद्भूयाद्भविनां मृगलांछनः ॥ गावः कुवलयोल्लासंकुर्वते यस्य निर्मलाः ॥२॥

अर्थ ॥ इंद्रसंबंधीजे श्रेणितेणे नतके० नमस्कारकर्योंछे जेनेएवाअने अष्टमहाप्रातिहार्यरूपलक्ष्मीयेंकरीयुक्त तथा युगनेआदें जगत्ने अज्ञानरूप कादवमांथी उद्धारनाकरनार एहवाजे श्रीऋषभदेवभगवान् तेजयवंतावर्तो! ॥ १ ॥ श्रीशांतिनाथ भगवंतते भव्यप्राणीओप्रतें संतापना भेदनाराथाओ! मृगनुं लांछनछेजेने एवा तथा जेमचंद्रकिरण निर्मल थका कुमुदनीने विकसितकरेछे, तेमजेनीगावःके०वाणीते पृथ्वीनेविषे उल्लासकरेछे

श्रीशैवेयं जिनं स्तौमि भुवनं यशसेव यः ॥ मारुतेन मुखोत्थेन पांचजन्यमपूपुरत् ॥ ३ ॥ जीयात् फणिफणप्रांतसंक्रांततनुरेकदा ॥ उद्धर्तुमिव विश्वानि श्रीपार्श्वोबहुरूपभाक् ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शिवाराणीनापुत्र श्रीनेमनाथजी तेमनेस्तवुंछुं. जेभगवंतेपोताना यशेंकरीने जेम जगत्नेभर्युंछे तेमजपोतानामुखथी प्रगट्योजेवायु तेणेकरीने पांचजन्य नामे शंखनेपूरीने तेनोनादकीधो ॥ ३ ॥ फणी के० शेषनाग तेनी फणनाप्रांतेजेमणीतेनेविषे संक्रम्युंजेशरीर तेणेकरीने त्रणजगत्नो उद्धारजजाणेकरताहोयनी एवाजे श्रीपार्श्वनाथबहुस्वरूपनाकर्त्ता, तेजयवंतवर्तो ॥ ४ ॥

जगदानंदनः स्वामी जयति ज्ञातनंदनः ॥ उपजीवंति यद्वाचामद्यापि विबुधाः सुधाम् ॥ ५ ॥ एतानन्यानपि जिनान्नमस्कृत्य गुरूनपि ॥ अध्यात्मसारमधुना प्रकटीकर्तुमुत्सहे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगत्नेआनंदनाकरनार वलीजेहनी अमृतसरिखीवाणीने हजीसुधी पंडितलोको सेवेछे, अंगीकारकरेछे एहवा ज्ञातनंदनजेश्रीवीरजिन तेजयवंतावर्तो ॥ ५ ॥ एपांचेपरमेश्वरने तथा बीजापण जिनोने तथापोतानागुरूने नमस्कारकरीने अध्यात्मनो सारजेरहस्य तेप्रगटकरवाने हवेउछाहकरुंछुं ॥ ६ ॥

शास्त्रात्परिचितां सम्यक् संप्रदायाच्च धीमतां ॥ इहानुभवयो
गाच्च प्रक्रियां कामपिब्रुवे ॥ ७ ॥ योगिनां प्रीतये पद्यमध्या
त्मरसपेशलं ॥ भोगिनां भामिनीगीतसंगीतकमयं यथा ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ घणांशास्त्रोथीभलीरीतेंपरिचितकरीने ने वलीपंडितलोकोना संप्रदायथकी जे अध्यात्मशास्त्रनेविषे अनुभवयोग्य थयुं तेथकी हुंकांइक संक्षेपमात्र प्रस्तावनाकरुं बुं ॥ ७ ॥ जेरीतेंभोगीपुरुषने स्त्रीनागीतसंगीत प्रियकारीलागेछे तेरीतें योगीश्वरपुरुषने प्रीतिनाअर्थें आ अध्यात्मरसेंकरीने मनोहरकारी एहवो पद्यबंधतायेंकरुंबुं ॥ ८ ॥

कांताधरसुधास्वादा द्यूनां यज्जायते सुखं ॥ बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्म
शास्त्रस्वादसुखोदधेः ॥ ए ॥ अध्यात्मशास्त्रसंभूतसंतोषसुख
शालिनः ॥ गणयंति न राजानं न श्रीदं नापि वासवम् ॥ १० ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनाअधररूपअमृतना स्वादथीजे जुवानपुरुषने सुखउपजेछे तेसुखनो स्वादतो अध्यात्मशास्त्रनास्वादनो जेसमुद्रछे तेनोएकबिंदुमात्र स्वादछे ॥ ए ॥ जेप्राणीनेअध्यात्मशास्त्रथी मनोहर संतोषरूपसुख प्रगटथयुं, तेप्राणी राजाने तथाधनदने अनेइंद्रसरिखानेपण लेखामांगणतानथी ॥ १० ॥

यः किलाशिक्षिताध्यात्मशास्त्रः पांडित्यमिच्छति ॥ उत्क्षिपत्यंगुली
पंगुः स स्वर्द्रुफललिप्सया ॥ ११ ॥ दंभपर्वतदंभोलिः सौहार्दां
बुधिचंद्रमाः ॥ अध्यात्मशास्त्रमुत्ताल मोहजालवनानलः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकल्पवृक्षना फलने लेवानी इच्छाये पांगलोपुरु आंगलीउंचीकरेछे ते जेम- व्यर्थछे, तेमजेप्राणी निश्चेंअध्यात्मशास्त्रने पाम्यानथी, अने आचार्यपंडितपणुं इच्छेछे, ते- पणव्यर्थछे ॥ ११ ॥ कपटरूप पर्वतनेभेदवाने वज्रसमान, मैत्रताभावरूपसमुद्रनी वृद्धि करवाने चंद्रमासमान, एहवुं अध्यात्मशास्त्र ते वृद्धिपामेलुंएहवुंजे मोहजालनुंवन तेहने बालवानेअर्थें दावानलसमान छे ॥ १२ ॥

अध्वा धर्म्मस्य सुस्थः स्यात्पापचौरः पलायते ॥ अध्यात्मशा
स्त्रसौराज्ये न स्यात्कश्चिदुपप्लवः ॥ १३ ॥ येषामध्यात्मशास्त्रार्थतत्त्वं
परिणतं हृदि ॥ कषायविषयावेश क्लेशस्तेषांन कर्हिचित् ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मशास्त्रनुं भलुंराजप्रवर्ततेथके कशोएउपद्रव थायनही, धर्मनोमार्ग सुगमथाय, अने पापरूपचोरटानासीजाए ॥ १३ ॥ जेप्राणीना हृदयनेविषे अध्यात्म शा- स्त्रनाअर्थनुं तत्त्वत ज्ञान थयुंछे तेनेकषायरूपविषनावेगनो क्लेशतेकदीएनथाय ॥ १४ ॥

निर्दयः कामचंडालः पंमितानपि पीमयेत् ॥ यदि नाध्यात्मशा
स्त्रार्थबोधयोधकृपा नवेत् ॥१५॥ विषवल्लिसमां तृष्णां वर्धमा
नां मनोवने ॥ अध्यात्मशास्त्रदात्रेण छिंदंतिपरमर्षयः ॥१६॥

अर्थ ॥ जोअध्यात्मशास्त्रना अर्थनाबोधनी कृपापंडितजेवाने पणनहोयतो निर्दय एवोजे कामरूपचंमाल ते पंमितनेपणपीडाकर्याविना रहेनही ॥ १५ ॥ जेपरमऋषी श्वरछे, ते अध्यात्मशास्त्ररूप दातरडेकरीने मनरूपीवननेविषे वृद्धिपामती एहवीतृष्णा-रूप जेहेरनीवेली तेनेछेदीनाखेछे ॥ १६ ॥

वने वेश्म धनं दौस्थे तेजो ध्वांते जलं मरौ ॥ डरापमाप्यते धन्यैः
कलावध्यात्मवाङ्मयं ॥ १७ ॥ वेदान्यशास्त्रवित् क्लेशं रसमध्या
त्मशास्त्रवित् ॥ नाग्यभृन्नोगमाप्नोति वहति चंदनं खरः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेमवननेविषेघर, दरिद्रनेधन, अंधारामांउद्योत तथा, मरुदेशनेविषेजेपाणी, तेडुःखेंपामवायोग्यछे, तेमजेधन्यप्राणीहोयछे, तेनेजअध्यात्मशास्त्र कलियुगनेविषे प्रा-प्तथायछे ॥१७॥ वेदनाजाणतथा बीजाशास्त्रना जाणनाराते क्लेशनान्नोक्ताछे, अनेरस-नान्नोक्ता तेअध्यात्मशास्त्रना जाणनाराछे. तेएरसनोन्नोगतो जेन्नाग्यवंतहोय, तेज पामे, अनेजेगधेडोहोय तेतोमात्रचंदनना न्नारनेउपाडेएटलुंज ॥ १८ ॥

नुजास्फालनहस्तस्यविकारान्निनयाः परे ॥ अध्यात्मशास्त्रवि
ज्ञास्तु वदंत्यविकृतेक्षणाः ॥१९॥ अध्यात्मशास्त्रहेमाद्रिमथिता
दागमोदधेः॥ नूयांसि गुणरत्नानि प्राप्यंते विबुधैर्न किम्॥२०॥

अर्थ ॥ नुजानाआस्फोटकरवेकरीने, वलीहाथने तथामुखनेविकारेकरीने, इत्यादि कनाटिकना अन्निनयेंकरवेकरीने, न्नोगीपुरुषसुखकरीमानेछे,अनेअध्यात्मशास्त्रना जा-णजेपुरुषछे, तेतोअविकारीनेत्रनाधणी इंद्रियनाविकाररहितछे. ॥ १९ ॥ अध्यात्मशास्त्र रूपजे हेमाचलपर्वत तेणेमथ्योजे आगमरूपसमुद्र तेथकीनिकल्यां घणागुणरूपीयां जेरत्नतेतो विबुधजेपंडितलोकतेपामेछे ॥ २० ॥

रसोन्नोगावधिः कामे सन्नक्ष्ये न्नोजनावधिः ॥ अध्यात्मशास्त्रसे
वायां रसोनिरवधिः पुनः ॥ २१ ॥ कुतर्कग्रंथसर्वस्वगर्वज्वरवि
कारिणी ॥ एति दृग्निर्मलीन्नावमध्यात्मग्रंथन्नेषजात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कामनोजेरस तेन्नोगवतांसुधी मधुरछे, न्नलांन्नोजननोजेरस तेजमवाना

वखतसुधी मधुरपणेवर्त्तेछे, पणअध्यात्मशास्त्रनीसेवानोजेरस तेतोनिरवधिछे. केमके प्रारंभकालथीमांडीने सदा वधतोजरसछे, पणकिवारे विरस नथाय ॥ २१ ॥ कुतर्कशास्त्रना सर्वेरहस्यनो जेअहंकार,तेरूपीताव तेहनाविकारवाली थइएहवीजे दृष्टितेअध्यात्मशास्त्ररूप औषधनायोगथी निर्मलपणाने पामेछे ॥ २२ ॥

धनिनां पुत्रदारादि यथा संसारवृद्धये ॥ तथा पांडित्यदृप्तानां शास्त्रमध्यात्मवर्जितं ॥ २३ ॥ अध्येतव्यं तदध्यात्मशास्त्रं भाव्यं पुनः पुनः ॥ अनुष्ठेयस्तदर्थश्च देयो योग्यस्य कस्यचित्॥२४॥

अर्थ ॥ धनवंतजनने जेमपुत्रअनेस्त्री तेसंसारनीवृद्धिनां कारणछे, तेम अभिमाने भरायला पंडितलोकने अध्यात्मशास्त्रविना मात्रसंसारनी वृद्धिछे ॥ २३ ॥ तेमाटे अध्यात्मशास्त्रनेभणवुं;वलीवारंवारहृदयनेविषेभाववुं; एनाअर्थनुंवारंवार चिंतनकरवुं;अने जेपुरुषयोग्यहोय तेनेजशीखववुं, पुस्तकआपवुं. ॥ २४ ॥ एरीतें अध्यात्मशास्त्रनामहात्म्यनो पहेलोअधिकार पुरोथयो.

भगवन् किं तदध्यात्मं यदित्थमुपवर्ण्यते॥शृणु वत्स यथाशास्त्रं वर्णयामि पुरस्तव ॥ १ ॥ गतमोहाधिकाराणा मात्मानमधि कृत्य या ॥ प्रवर्तते क्रिया शुद्धा तदध्यात्मं जगुर्जिनाः॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेशिष्येपुछ्युंके,हेभगवंत! अध्यात्म तेशुंछेकेजेनुंतमे आवुंवर्णन कीधुं? त्यारे गुरुकहेछेके, हेशिष्य ! शास्त्रमर्यादायें तनेकहुंछुंतेसांभल ॥ १ ॥ जेमुनिराजनोमोहनो अधिकारनाशपाम्योछे अनेजेआत्माने आश्रीनेशुद्धक्रियायें अंतरआत्मानेविषेप्रवर्त्ते, तेनुंनाम परमेश्वर अध्यात्मकहेछे ॥ २ ॥

सामायिकंयथासर्वं चारित्रेष्वनुवृत्तिमत् ॥ अध्यात्मं सर्व योगेषु तथानुगतमिष्यते ॥३॥ अपुनर्बंधकाद्यावद्गुणस्थानं चतुर्दशं ॥क्रमशुद्धिमती तावत् क्रियाध्यात्ममयी मता॥४॥

अर्थ ॥ सामाइकचारित्रजेम सर्वेचारित्रनेविषे अनुगतकारणपणे वर्त्तेछे, तेम सर्वे जोगनेवीषे अध्यात्मपण सहचारीपणेवर्त्तेछे ॥३॥ अपुनर्बंधी जेचोथुंगुणठाणुं त्यांथीमांडीने चउदमा गुणठाणालगण अनुक्रमेजेआत्मानी विशुद्धता प्रगटथाय, ते सर्वे अध्यात्मक्रियाजाणवी ॥ ४ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धिगौरवप्रतिबंधतः ॥ जवाजिनंदी यां कुर्यात्
क्रियां साध्यात्मवैरिणी॥५॥ क्षुद्रोलोजरतिर्दीनो मत्सरी जयवा
न् शठः ॥ अज्ञोजवाजिनंदीस्या न्निष्फलारंजसंगतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अनेजेआहारोपधिनेअर्थे तथा पूजापामवानीऋद्धि तेनीगौरवतायें बंधाएा थका जवाजिनंदीजे क्रिया करे, तेसर्व अध्यात्मक्रियानीवैरिणीजाणवी ॥५॥ १ क्षुद्र ता २ लोज ३ रति ४ दीनता ५ मत्सरीपणुं ६ जय ७ शठता ७ अज्ञानता एजवाजि नंदिपणाना संगथकीजेक्रियाकरे, तेक्रियानो आरंज निःफल थायछे ॥ ६ ॥

शांतोदांतः सदागुप्तो मोक्षार्थी विश्ववत्सलः॥ निर्दंजां यां क्रियां
कुर्यात् साध्यात्मगुणवृद्धये ॥७॥ अतएव जनः पृछोत्पन्नसंज्ञः
पिपृछिषुः॥ साधुपार्श्वं जिगमिषु धर्म्मं पृछन् क्रियास्थितः ॥७॥

अर्थ ॥ १ शांतगुण २ दांतगुण ३ सदागुप्तेंद्रियपणुं ४ मोक्षार्थिपणुं५ विश्वनुं वात्स ल्यतापणुं इत्यादिकगुणवालोनिर्दंजीपणेजेक्रियाकरे, तेक्रिया अध्यात्मगुणनी वृद्धिकर्त्ता थाय ॥७॥ तेमाटेजेनेतत्त्वपुछवानीसंज्ञा उपनीछे, तथा पिपृछिषुके० तत्त्वप्रतेहवे पुछवाने सन्मुखथयोछे ते, साधुनीपासे तत्त्वसांजलवानेअर्थे जवानुंशीलछेजेनुं ते, तथा क्रिया-योगनेविषे रह्योथको धर्मना तत्त्वने पुछेछे ते ॥ ७ ॥

प्रतिपित्सुः सृजन् पूर्वं प्रतिपन्नश्च दर्शनं॥श्राद्धोयतिश्च त्रि
विधोऽनंतांशक्षपकस्तथा ॥ ए ॥ दृङ्मोहक्षपकोमोहशमकः
शांतमोहकः॥क्षपकः क्षीणमोहश्च जिनोऽयोगीच केवली॥१०॥

अर्थ ॥ वलीतत्त्वनेअंगीकार करतांथकां पूर्वेप्रतिपन्नथयुंछे सम्यक्त्वदर्शन जेने एवा श्रावकतथा यतितेत्रणप्रकारना १ उपशमसमकीति २ क्षयोपशमसमकीती ३ क्षा-यकसमकीति तेअनंतानुबंधीनो अंशखपाव्योछेजेणे ॥ए॥ वलीजेणेदर्शनमोहनीयखपा-वीछे अथवा मोहनीयने उपशमावीछे एहवाजे उपशांतमोही तथा क्षपकश्रेणिने वि-षेवर्त्तेछे तथा जेणेमोहनोक्षय कस्योछेते सयोगीकेवली तथा अयोगी केवलीजगवंत १०

यथाक्रममममी प्रोक्ता असंख्यगुणनिर्जराः ॥ यतितव्यमतोध्या
त्मवृद्धये कलयापि हि ॥११ ज्ञानं शुद्धं क्रिया शुद्धेत्यंशौ द्वावि
ह संगतौ ॥ चक्रे महारथस्येव पक्षाविव पतत्रिणः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एअनुक्रमेजेकह्या,तेसघला एकएकथकी असंख्यातगुणीनिर्जराना करताछे; माटे एक कलायेकरीनेपण आध्यात्मनीवृद्धिने अर्थे उद्यमकरवो एहिजहेतुछे ॥११॥ जेम रथनाबेचक्रते रथनीसाथें संलग्नजछे, तथा पक्षीनीवेपांखोते पक्षीनीसाथे संलग्नज छे,तेम एक शुद्धज्ञान अनेबीजीशुद्धक्रिया एवेअंशते अध्यात्मनीसाथे संलग्नजछे॥१२॥

तत्पंचमगुणस्थाना दारभ्यैवैतदिछति ॥ निश्चयोव्यवहार
स्तु पूर्वमप्युपचारतः ॥१३॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने शुश्रूषा
द्या क्रियोचिता ॥ अप्राप्तस्वर्णभूषाणां रजताभरणं यथा ॥१४॥

अर्थ ॥ पूर्वेपण निश्चयनय अने व्यवहारनयनुं आरोपण उपचारथीछे, पण पांचमा गुणठाणाथी मांडीनेएनयइछेछे ॥ १३ ॥ अने चोथेगुणठाणेपण शुश्रूषादिक क्रियाते उचितछे; जेमकोइनेसोनाना घरेणानमलताहोय,तेनेरुपाना मलेतेपण रूडांमनाय॥१४॥

अपुनर्बंधकस्यापियाक्रियाशमसंयुता ॥ चित्रादर्शनभेदेनध
र्मविघ्नक्षयायसा ॥१५॥ अशुद्धापिहिशुद्धायाःक्रियाहेतुःस
दाशयात् ॥ ताम्रंरसानुवेधेनस्वर्णत्वमधिगछति ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ शमभावेकरीनेसहित,दर्शनभेदेकरीने विचित्रप्रकारनी अपुनर्बंधी जे चोथुं गुणठाणुंतेहनी क्रियापण धर्मनाविघ्नने क्षय करनारीछे ॥१५॥ तोपण भलाआशयथकी अशुद्धक्रियाकरे, तेपण शुद्धकेवाय; जेम त्रांबुं जेछे तेनेगालीतेमां रसानुंवेधकरवाथी रसायनमेलववाथी सोनुंथइजायछे तेम. ॥ १६ ॥

अतोमार्गप्रवेशायव्रतंमिथ्यादृशामपि ॥ द्रव्यसम्यक्त्वमारो
प्यददतेधीरबुद्धयः ॥१७॥ योबुध्वाभवनैर्गुण्यंधीरःस्याद्व्रत
पालने ॥ सयोग्योभावभेदस्तुदुर्लक्ष्योनोपयुज्यते ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे धीरबुद्धिनाधणी रत्नत्रयनामार्गनेविषे पेसवाने मिथ्या दृष्टिवालानेपण द्रव्यसमकितनो आरोपकरीने चारित्रआपेछे ॥ १७ ॥ जेप्राणी संसारनुं निर्गुणपणुं जाणीने व्रतपालवानेविषे धीरथाय तेप्राणी धर्मनेयोग्यजाणवो अने अंत रंगभावनो भेदतोदुःखेकरीने समजायछे, माटेतेउपयोगमां न करवो ॥ १८ ॥

नोचेद्भावापरिज्ञानात्सिद्ध्यसिद्धीपराहते ॥ दीक्षाऽदानेनभव्या
नांमार्गोछेदःप्रसज्यते ॥ १९ ॥ अशुद्धानादरेभ्यासाद्योगान्नो
दर्शनाद्यपि ॥ सिद्धिर्नैसर्गिकीमुक्तातदप्यभ्यासिकंयतः ॥२०॥

अर्थ ॥ कदापिकोइक एमकहेशेजे नावजाण्याविना चारित्रदेवाथी सिद्धिअसिद्धि सर्वेहणाइजाय, तेवारें नव्यनेपणदीक्षानआपवी केमके तेनेअंतरंगनी खबरनथी, अने एरीतें दीक्षानआपवाथी तो सम्यग्मार्गनो उछेद थाय ॥ १९ ॥ एमअशुद्धनोअनादरकरे अने शुद्धजोगनोअभ्यासनकरे, त्यारेदर्शनजेसमकित तेपणशुद्धनथाय, केमके एकनिसर्ग समकितटालीनेशुद्धकरवुं तेपणअभ्यासथीज थइशके ॥ २० ॥

शुद्धमार्गानुरागेणाशठानांययातुशुद्धता ॥ गुणवत्परतंत्राणां
सानक्वापिविहन्यते ॥ २१ ॥ विषयात्मानुबंधैर्हित्रिधाशु
द्धंयथोत्तरं ॥ ब्रुवतेकर्म्मतत्राद्यंमुक्त्यर्थंपतनाद्यपि ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धमार्गने अनुरागेकरीने अशठताभावेजे आत्मानी शुद्धताके० निर्मलतायें गुणवंतप्राणीने आधीनथइने वर्त्ते, तो तेप्रवृत्ति कोइठेकाणे हणायनही ॥ २१ ॥ विषयेंकरीने, आत्मायेकरीने,अनेअनुबंधेकरीने एत्रणप्रकारनी विशुद्धिछे; ते एकेकथी निर्मलछे. एत्रणेकर्मछे, तेमां जेदुःखथी पोताना आत्माने मुकाववाने झंपापातप्रमुख करे, तेहनेविषयशुद्धिकहियें ॥ २२ ॥

अज्ञानिनांद्वितीयंतुलोकदृष्ट्यायमादिकं ॥ तृतीयंशांतवृत्त्यात
त्त्वसंवेदनानुगं ॥२३ ॥ आद्यानाज्ञानबाहुल्यान्मोक्षबाधक
बाधनं ॥ सद्भावाशयलेशेनोचितंजन्मपरेजगुः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानीने आत्मशुद्धिनामे बीजीशुद्धिथाय; तेलोकदृष्टिये पांच यम नियमप्रमुखपालेछे; एबीजोभेद. त्रीजोआत्मानुबंध तेकहिये, जेशांतवृत्तियेतत्त्वनुं संवेदनकरे, चिंतनकरे ॥२३॥ पेहेलीशुद्धिमां अज्ञाननीबहुलता घणीछे, तेणेकरीने मोक्षना बाधकनेबाधनकरे अनेतेनासद्भावथकी शुभाशयनोलेशमात्रहोय, तोतेथी जन्ममरणनी परंपराकांइत्रुटेनही एहवुंजोगाभ्यासीपुरुषकहेछे ॥ २४ ॥

द्वितीयादोषहानिःस्यात्क्वचिन्मंडूकचूर्णवत् ॥ आत्यंतिकीतृती
यातुगुरुलाघवचिंतया ॥ २५ ॥ अपिस्वरूपतःशुद्धाक्रियात
स्माद्विशुद्धिकृत् ॥ मौनींद्रव्यवहारेणमार्गबीजंदृढादरात् ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आत्मशुद्धिनामे बीजाजोगथकी कांइकलवलेशमात्र दोषनीहानितो थाय, पणपरंपरायें घणादोषथयेलाते मेडकानाचूर्णनीपेठे एकडेडकानो नाशथाय,पण तेथी-बीजाघणा मेडकाउत्पन्नथाय, त्रीजीशुद्धि आत्यंतिकछे, तेथीकर्मनीहानिथाय केमके तेगुरुताभाव अनेलघुताभावनी विचारणाकरवाथीप्रगटे एवीछे ॥ २५ ॥ स्वरूपथकी

जेक्रियाशुद्धछे तेजनिश्चयपणे आत्मानेविशुद्धतानी करनारीछे, तेमाटेशुद्धक्रियाकरवी मुनींद्रजेपरमेश्वर तेणेवताव्योजे व्यवहारतेनुं सेवनकरवेकरीने घणाआदरसहित क्रियाकरे, तो मार्गजेरत्नत्रयी तेनुंबीजप्रगटथायछे ॥ २६ ॥

गुर्वाज्ञापारतंत्र्येणद्रव्यदीक्षाग्रहादपि ॥ वीर्योल्लासक्रमात्प्राप्ता
बहवःपरमंपदं ॥ २७ ॥ अध्यात्माभ्यासकालेपिक्रियाकाप्ये
वमस्तिहि ॥ शुभौघसंज्ञानुगतंज्ञानमप्यस्तिकिंचन ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ गुरुनीआज्ञाने आधीनरेहेवाथी द्रव्यदीक्षालीधीहोय, तोपण वीर्योल्लासनी अनुक्रमेवृद्धिकरीने घणाजीव परमपदने पाम्याछे ॥ २७ ॥ एरीतेंअध्यात्मनाअभ्यासकालनेविषेपण क्रियाकांइक लेशमात्रनिश्चेंवर्तेजछे, अनेशुभकारी उंघसंज्ञाने सहचारीपणे तिहांज्ञानपणकांइकवर्त्तेछे ॥ २८ ॥

अतोज्ञानक्रियारूपमध्यात्मंव्यवतिष्ठते ॥
एतत्प्रवर्द्धमानंस्यान्निर्दंभाचारशालिनां ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ एजकारणमाटे ज्ञाननेक्रियारूप ते अध्यात्मपणुं वर्तेछे, जे ज्ञानक्रिया रूप तेअध्यात्मछे. एजज्ञानक्रियानिर्दंभाचारेंकरीने मनोहरएहवोजे प्राणीतेनेंविषे उत्तरोत्तरवृद्धिनेपामेछे ॥ २९ ॥ एवीजो अध्यात्मनास्वरूपनो अधिकार संपूर्णथयो ॥

दंभोमुक्तिलतावन्हिर्दंभोराहुःक्रियाविधौ ॥ दौर्भाग्यका
रणंदंभोदंभोध्यात्मसुखार्गला ॥ १ ॥ दंभोज्ञानाद्रिदं
भोलिर्दंभःकामानलेहविः ॥ व्यसनानांसुहृद्दंभोदंभश्चौ
रोव्रतश्रियः ॥ २ ॥ दंभेनव्रतमास्थाययोवांछतिपरमं
पदं ॥ लोहनावंसमारुह्यसोब्धेःपारयियासति ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मुक्तिरूपवेलीने दहनकरवामां कपटतेअग्निसमानछे; ने क्रियारूप चंद्रने ग्रासकरवाने कपटतेराहुछे; अनेकपटजदुर्भाग्यनुंकारणछे; अध्यात्मसुखनेगलीजनार भुंगलीपणकपटछे. ॥ १ ॥ ज्ञानरूपपर्वतने तोडवानेकपटते वज्रसमानछे; कामरूपी अग्निनीवृद्धिकरवाने घृतजोइयेंतेपणकपटछे, व्यसननोमित्र तेकपटछे; अने व्रतरूप लक्ष्मीनो चोरपण दंभजछे, ॥ २ ॥ कपटराखीव्रतनेविषेरही जेप्राणी परमपद जे मोक्ष तेनीवांछनाकरेछे, तेप्राणीलोढानीनावमां वेसीसमुद्रतरवानी इछाराखेछे,तेवोजाणवो.॥३॥

किंव्रतेनतपोभिर्वादंभश्चेन्ननिराकृतः ॥ किमादर्शेनकिंदीपै
र्यद्यांध्यंनदृशोर्गतं ॥ ४ ॥ केशलोचधराशय्याभिक्षाब्रह्मव्र
तादिकं ॥ दंभेनदुष्यतेसर्वंत्रासेनैवमहामणिः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेतपेंपणशुं? तेव्रतेंपणशुं? जोकपटदिशाने तजीनहीं तोतेसर्वनिष्फलछे. ते आरसीएपणशुं ? अनेदीवेपणशुं ? जोदृष्टीएअंधछेतोतेहनेसर्वठेकाणे अंधकारजरेहशे, ॥४॥ केशलोचकरवो, भुमिउपरशयनकरवुं, भिक्षामागवी, शीलव्रतादिकपालवां, ए सर्व धर्मकरणीमात्र कपटेकरीने दुषाइजायछे, जेमसुंदरमणिहोय नेतेउपरएकमाघलागवाथी तेनीकांतिमंदथायछे, तेहनीपरेंजाणवुं ॥ ५ ॥

सुत्यजंरसलांपट्यंसुत्यजंदेहभूषणं ॥ सुत्यजाःकाम
भोगाद्याडस्त्यजंदंभसेवनं ॥ ६ ॥ स्वदोषनिन्हवोलोकपूजा
स्याद्गौरवंतथा ॥ इयतैवकदर्थ्यंतेदंभेनबतबालिशाः ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ रसनुंलोलपीपणुं तेसुखेंतजीशकाय, देहनीशोभा पणसुखें तजीशकाय, कामभोगादिनेपण सुखेंतजाय, पणकपटनो त्यागकरवोघणोज विकटछे, ॥ ६ ॥ पोताना दोषने ढांकीराखेतेथी लोकमांपूजनाथाय, तथामोटाइथाय, एहिजपूजाप्रमुखनी लालचमाटे पोतानाआत्माने मूर्खप्राणीकदर्थना उपजावेछे! ॥ ७ ॥

असतीनांयथाशीलमशीलस्यैववृद्धये ॥ दंभेनाव्रतवृद्ध्यर्थं
व्रतंवेषभृतांतथा ॥ ८ ॥ जानानाअपिदंभस्यस्फुरितंबा
लिशाजनाः ॥ तत्रैवधृतविश्वासाः प्रस्खलंतिपदेपदे ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमकुलटानारीनुंशील जेआचारते कुशीलनी वृद्धिनेअर्थेंज होय, तेम कपटें वेषधरनार व्रतवंताने भवनीवृद्धिथाय; तेअव्रतनी वृद्धिनेअर्थेंजथाय ॥८॥ कपटना विपाकनेजाणतायकापण मूर्ख अज्ञानीप्राणीतेज कपटनेविषे विश्वास करतायका पगलेपगले खलनापामेछे ॥ ९ ॥

अहोमोहस्यमाहात्म्यंदीक्षांभागवतीमपि ॥ दंभेनयद्विलुंपंति
कज्जलेनेवरूपकं ॥१०॥ अब्जेहिमंतनौरोगोवनेवह्निर्दिनेनि
शा ॥ ग्रंथेमौर्ख्यंकलिःसौख्येधर्मेंदंभउपप्लवः ॥ ११ ॥

अर्थ॥ अहोइतिखेदेजूओ! मोहराजानोमहिमा! जेभगवंतसंबंधीदीक्षातेपणजेम काजलेकरीने चित्रामणनुं लोपथायछे, तेहनीपरे कपटेकरीने लोपीनाखेछे, जेमकमलने-

विषे हिम, शरीरनेविषेरोग, वननेविषेअग्नि, दिवसनेविषेरात्री, ग्रंथनेविषे मूर्खता, सुखनेविषे क्लेश, तेउपद्रवनाकरताछे; तेमधर्मनेविषेकपट तेदुःखकर्त्ताछे ॥ ११ ॥

अतएवनयोधर्तुंमूलयोत्तरगुणानलं ॥ युक्तासुश्राद्धतातस्य
नतुदंभेनजीवनं ॥ १२ ॥ परिहर्तुंनयोलिंगमप्यलंदृढरा
गवान् ॥ संविग्नपाक्षिकःसस्यान्निर्दंभःसाधुसेवकः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एहिजहेतुमाटे मूलगुणपंचमहाव्रत अनेउत्तरगुण करणसित्तरीप्रमुख धरवाने जेप्राणी समर्थनहोय, तेणेश्रावकनाव्रतपालवा तेयुक्तजछे पणकपटचारित्रे जीववुं तेरुडुंनथी ॥ १२ ॥ हवेजेप्राणी व्रतनेमूकवाने समर्थनथी केमके जेनेव्रतउपर दृढरागलाग्यो होय तेमूकीशकेनही तोतेनेसंविग्नपक्ष अंगीकारकरवो श्रेष्ठछे, केमके निर्दंभीसाधुनी सेवनाकरवाथी घणोगुणथायछे ॥ १३ ॥

निर्दंभस्यावसन्नस्याप्यस्यशुद्धार्थभाषिणः ॥ निर्जरांयतनादत्ते
स्वल्पापिगुणरागिणः ॥१४॥ व्रतभारासहत्वंयेविदंतोप्यात्मनः
स्फुटं ॥ दंभाद्यतित्वमाख्यांतितेषांनामापिपाप्मने ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ निष्कपटीहोय, शुद्धसिद्धांतना अर्थनाभाषकहोय, तेगुणेकरीने तेउसन्नाप्रमुखसाधु जो थोडीपणजतना करेछे, तोपण तेगुणनारागीपणाथी वर्तताथका तेनेनिर्जराथायछे ॥ १४ ॥ व्रतनोभारनथीउपाडतो· पोताथीएवुंजाणयाछतांपणजेपोतानाआत्माने प्रगटरीते कपटेकरीने यतिपणुंठरावेछे, संयमीपणुं स्थापेछे, तेलिंगोनुं नामलेतांपण पापथाय तोतेनीसेवनातो, पापकारीथायज तेमांशुंकेहेवुं ? ॥ १५ ॥

कुर्वते ये न यतनां सम्यगालोचितामपि॥तैरहो यतिनाम्नैव
दांभिकैर्वंच्यते जगत् ॥ १६ ॥ धर्मातिख्यातिलोभेन प्रछा
दितनिजाश्रवः॥तृणायमन्यते विश्वं हीनोपि धृतकैतवः ॥१७॥

अर्थ ॥ जेलिंगीभलीरीतें द्रव्यक्षेत्रकालभावजोइने यत्नथीकरता, तेलिंगीयतिएवेनामेकरीनेकपटीथइ लोकनेठगताफरेछे॥ १६॥जेहीनाचारीथको कपटनोधरनारो लिंगीहोय अनेतेयतिधर्मीछे एवीप्रसिद्धिथइ; कोइ तेनालोभेकरीने पोताना आश्रवनेढांक्याहोय एहवाजे यतिते समग्रजगत्ने तृणतुल्यजाणेछे, ॥ १७ ॥

आत्मोत्कर्षा त्ततोदंभा त्परेषां चापवादतः ॥ बध्नाति कठिनं
कर्म्म बाधकं योगजन्मनः ॥१८॥ आत्मार्थिना ततस्त्याज्योदं
भोऽनर्थनिबंधनं॥शुद्धिः स्यादृजुभूतस्येत्यागमे प्रतिपादितं ॥१९॥

अर्थ॥ पोतानाआत्मानी वक्राइकरे, घणुंकपटधरे, अनेपारकाअवरणवादवोले तेणे
रीने कठिणकर्मबांधेछे, तेवापुरुषो ते योगिनाजन्मने वाधककरनाराछे; तेशुद्धचारित्रने
मीशकेनही ॥ १८ ॥ माटेअनर्थनुंकारणजेकपट तेनेधर्मार्थिप्राणीयें तजवुं, केमके
त्मानीशुद्धितो सरलताजावेंथायछे, एवुंआगमनेविषेकह्युंछे ॥ १९ ॥

जैनैर्नानुमतंकिंचिन्निषिद्धंवानसर्वथा ॥ कार्यंजाव्यमदंजेने
त्येषाज्ञापारमेश्वरी ॥ २० ॥ अध्यात्मरतचित्तानांदंजःस्वल्पो
पिनोचितः ॥ छिद्रलेशोपिपोतस्यसिंधुंलंघयतामिव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तीर्थकरेंएकांते आज्ञापणनथीकरी, तेमसर्वथा निषेधपणनथीकीधो,
पणजेकार्यकरवुं तेकपटरहितकरवुं एहिजपरमेश्वरनी आज्ञाछे ॥ २० ॥ जेम
हाणमां छिद्रनो लेशहोयतेपण समुद्र तरवामांयोग्यनथी, तेम अध्यात्मनेविषेनुं जेनुं
नरंगायुछे, तेनेजरापण कपटकरवुं तेयोग्यनथी ॥ २१ ॥

दंजलेशोपि मल्ल्यादेः स्त्रीत्वानर्थनिबंधनं ॥
अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम मल्लिनाथजीने कपटनोलेशपण स्त्रीवेदनोकारणिकथयो, माटे महान्-
रुपें कपटतजवाने घणोयत्न करवो ॥ २२ ॥ इति श्रीअध्यात्मसार ग्रंथनेविषे दंज-
ागनामा त्रीजोअधिकार समाप्तथयो ॥

तदेवं निर्दंजाचरणपटुता चेतसि जवस्वरूपं संचिंत्य क्षण
मपि समाधाय सुधिया ॥ इयं चिंताऽध्यात्मप्रसरसरसी
तीरलहरी सतां वैराग्यादिप्रियपवनपीना सुखकृते ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे निर्दंजआचरणकरवाने हे चेतन! तुं सावधानथा! आत्मस्वरू-
नुं चिंतनकर! केमके क्षणमात्रपण सद्बुद्धिहृदयमांधरीने आत्मस्वरूपनीचिंता करवी
हिज आत्मदिशारूप सरोवरनीलहरीछे तेशीतलताकरेएवीछे; एहिजसज्जन लोकने
राग्यदिशारूप पवनपूर्णपुष्टताकारीछे; माटेते आत्मिकसुखने अर्थेसाधवी ॥ १ ॥

इतः कामौर्वाग्निर्ज्वलति परितोऽुःसह इतः पतंति ग्रावा
णो विषयगिरिकिटाद्रिघटिताः ॥इतःक्रोधावर्तोविकृतितटिनी
संगमकृतः समुद्रे संसारे तदिह न जयं कस्य जवति ॥२॥

अर्थ ॥ एकतरफकामरूप वरुवानलनो अग्निवलीरह्योछे, तेदुःखेसहनथाय एवोछे.

अने एकतरफ पंचप्रकारनाविषयरूप पर्वत, तेहथीपड्याजे उन्मादरूपपथरा, तेणेकरी-जयंकर; वली एकतरफ विकारदिशारूपनदीना संगथकी क्रोधनाआवर्त्तपड्याछे; एवोजे-आसंसारसमुद्रतेनेविषे कहो कयाछेकाणे प्राणीनेजयनथी? सर्वत्रजयजवर्त्तेछे. ॥ २ ॥

प्रिया ज्वाला यत्रोद्गमति रतिसंतापतरला कटाक्षान् धूमौ
घान् कुवलयदलश्यामलरुचीन् ॥ अथांगान्यंगारा कृतबहुविका
राश्च विषया दहंत्यस्मिन्वह्नौ जववपुषि शर्म क्व सुलजं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नेसंसारनेविषे रतिनासंतापेकरीने तरला के०चपल एवी जे प्रियाके० जा-र्याते कटुकज्वालावर्त्तेछे; वली नीलकमलदलना सरखी जेनीकांतिछे एहवानेत्रना त्रि-कोणमांथीजेजोवुं तेनुंनामकटाक्ष तेरूपधूम्रना समूहचालेछे, तथास्त्रीनाअंग ते अंगा-रासमानछे, जेअंगवडेघणाप्रकारना विकारप्रगटथायछे तेमाटेसंसाररूप अग्निमां बली-रह्या जेप्राणीतेने जवमांपणसुखनथी तेमजशरीरमां पणकंइजसुखनथी ॥ ३ ॥

गले दत्वा पाशं तनयवनितास्नेहघटितं निपीड्यंते यत्र प्र-
कृतिकृपणाः प्राणिपशवः ॥ नितांतं दुःखार्त्ता विषमविषयै
र्घातिकजटैर्जवः सूनास्थानं तदहह महासाध्वसकरं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनागलानेविषे पुत्र तथा स्त्रीरूपस्नेहनोफांसो नखायोछे, तेनास्नेहपाश-मां पड्यातुछस्वजावनाधणी तेअतिशयपणे पीडापामेछे. आकराविषयरूपजे घातकी सुजट तेणेकरीनेसंसारते खाटकीनुंस्थानकछे, माटेहाहासंसारतेकेवलदुःखनुंमूलछे ॥४॥

अविद्यायां रात्रौ चरति वहतो मूर्ध्नि विषमं कषायव्यालौघं
क्षिपति विषयास्थीनि च गले ॥ महादोषान् दंतान् प्रकटयति
वक्रस्मरमुखो न विश्वासार्होयं जवति जवनक्तंचर इति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानदिशारूप रात्रिनोचालनार जेनामाथाउपर विषमकषायरूप सर्पनो-समूहरह्योछे, जेनागलानेविषे विषयरूपहाडकांबांध्यांछे, जेमहोटादोषरूप दांतप्रगटक-रेछे, जेनुंमुख कामनीचेष्टाकरेछे, एवोसंसाररूपीराक्षस तेविश्वासकरवानेयोग्यनथी.॥५॥

जना लब्ध्वा धर्म्मद्रविणलवजिक्षां कथमपि प्रयांतोवामा-
क्षीस्तनविषमदुर्गस्थितिकृतः ॥ विलुप्यंते यस्यां कुसुमशर
जिल्लेन बलिना जवाटव्यां नास्यामुचितमसहायस्य गमनं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणीधर्मरूपधनना लवलेशनेपाम्योछे, तेणेजिक्षामागवाने एकलाविच-

खुंनही, केमके नवाटवीनेविषे बलवत्तरनील एवोजेकाम तेस्त्रीनास्तनरूप विषयीको- टमांरहीने तेप्राणीमात्रना धर्मरूपधनने लुटीलीयेछे, माटे सहायविना ते प्राणीयें एकलुं विचरवुं (चालवुं) योग्य नथी ॥ ६ ॥

धनं मे गेहं मे मम सुतकलत्रादिकमतो विपर्यासादासादि-
तविततदुःखा अपि मुहुः ॥ जना यस्मिन् मिथ्यासुखमद-
भृतः कूटघटनामयोयं संसार स्तदिह न विवेकी प्रसजति ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ धन, घर, पुत्र, ने स्त्रीआदि सर्ववस्तु मारी छे, एवाविपर्यासपणाथी विशेषप्र- सिद्धदुःखजछे, माटे जेप्राणीवारंवार सुखनेमदेभस्याथका सुखमानेछे, ते फोकट छे. ए संसारतो केवल कपटरचनायें भस्योछे. तेनेविषे विवेकीप्राणीयें प्रीति करवीनही॥७॥

प्रियास्नेहोयस्मिन्निगमसदृशो यामिकभटोपमः स्वीयो-
वर्गोधनमभिनवं बंधनमिव ॥ महामेध्यापूर्णं व्यसनबिस
संसर्गविषमं भवः कारागेहं तदिह न रतिः क्वापि विदुषां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्त्रिनोस्नेहतेबेडीसमानछे, बीजासगासंबंधीलोकते पोरियातसमानछे, धन- संपत्तिते नवाबंधनसरखीछे, अने महा अमेध्येंकरीसहितछे; सातप्रकारना व्यसनरूप बिलसहितछे; टुंकामांकहियेंतोआसंसारते बंदिखानाजेवोछे माटेपंडितलोकने ए वस्तु- मांहेली एके वस्तुउपर रति के० मरजी थती नथी. ॥ ८ ॥

महाक्रोधोगृध्रोऽनुपरतिशृगाली च चपला ॥ स्मरोलूकोयत्र
प्रकटकटुशब्दः प्रचरति ॥ प्रदीप्तः शोकाग्नि स्ततमपयशोभ-
स्म परितः श्मशानं संसारस्तदतिरमणीयत्वमिह किं ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेपंडितलोकते आसंसारने स्मशानसरखोकहेछे, केमके स्मशानमांरहेना- रीचीजो सर्वसंसारमांछे, तेकहीबतावेछे, जेमस्मशानमां गिधपक्षीछे, तेमसंसारमां म हाक्रोधते गीधपक्षीछे; अरतिरूपघणीचपल शियालणीछे; घुवरूपक्षीरूप कामछे, तेप्रगट- पणे कडवाशब्दथी रुदनकरेछे; देदीप्यमान शोकरूपी अग्निप्रज्वलेछे; निरंतर अपयश- रूप राख छे; माटे संसारते स्मशान छे, एमां रमणीक चीज कोइ नथी ॥ ए ॥

धनाशा यच्छायाप्यति विषममूर्छा प्रणयिनी विलासोनारीणां
गुरुविकृतये यत्सुमरसः ॥ फलास्वादोयस्य प्रसरनरकव्या-
धिनिवह स्तदास्था नो युक्ता भव विषतरावत्र सुधिया ॥ १० ॥

अर्थ ॥ धननीजेइछा तेअतिशयविषयरूप विषममूर्छानी विस्तारनारीछे. स्त्रीयोनो विलास ते महाविकारकारी कुसमनोरसछे. जेनाफलनोस्वाद विस्तारपामतोनर्कनीपिडाना समूहतुल्यथाय; एवुंसंसाररूप विषयवृक्षछे, एनीहेठल विश्रामकरवोयुक्तनथी ॥१०॥

क्वचित् प्राज्यं राज्यं क्वचन धनलेशोप्यसुलभः क्वजि जातिस्फातिः
क्वचिदपि च नीचत्वकुयशः ॥ क्वचिल्लावण्यश्रीरतिशयवती-
क्वापि न वपुः स्वरूपं वैषम्यं रतिकरमिदं कस्य नु भवे ॥११॥

अर्थ ॥ कोइनेतोविस्तारवालुंराज्यछे, कोइनेधननोलेशपण दोहेलोछे, कोइनीउत्तम जातिछे, कोइनीनीचजातिछे,कोइनेअपयशछे,कोइनेलावण्यलीलानी लक्ष्मीघणीछे, कोइनुंशरीरपण रुडुं नथी, एवुंसंसारनुंस्वरूपविषमछे. तेकोनेरतिकारीथाय ? ॥ ११॥

इहोद्दामः कामः खनति परिपंथी गुणमही मविश्रामः पार्श्व-
स्थितकुपरिणामस्य कलहः ॥ बिलात्यंतः क्रामन्मदफणभृ-
तां पामरमतं वदामः किंनाम प्रकटभवधामस्थितिसुखं ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ इहांउद्दामकामदिशाछे; तेजपरिपंथीके० शत्रुछे; तेगुणरूपजे महीके० पृथ्वीतेनेखणेछे अनेपासेरह्योजे कुपरिणामते विश्रामलीधाविना निरंतर क्लेशकरेछे; एक्लेशवडे खरडाया एवाजेप्राणी तेअष्टमदरूपसर्प तेणेकरीयुक्तछे. एवुंपामरलोकने मानवायोग्य आ संसाररूप जे घर तेनुं शुं सुख कहियें? ॥ १२ ॥

तृषार्त्ताः खिद्यंते विषयविवशा यत्र भविनः करालक्रोधार्का-
छमसरसि शोषं गतवति ॥ स्मरस्वेदक्लेदग्लपितगुण
मेदस्यनुदिनं भवग्रीष्मे भीष्मे किमिह शरणं तापहरणं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे प्राणीमात्र पुद्गलनी तृष्णारूपतरसेकरीने पीडाणाछे; अने विषयनीआशायेंकरी परवशथयाछे; एहवाप्राणीयो विहामणाक्रोधेंकरीपीडायछे, केमके तेमनेमाटे शमतारूपसरोवरतो सुकाइगयुंछे,अनेकामदिशारूपजे परिस्वेद तेनीजेग्लानता तेणेकरीनिरंतर गुणमेदा खरडायछे. ज्यां एहवोविहामणो आसंसाररूपउष्णकाल छे, त्यां तेना तापने हरे एवो कोइ नथी ॥ १३ ॥

पिता माता भ्राता प्यभिलषितसिद्धावभिमतो गुणग्रामज्ञाता
न खलु धनदाता च धनवान् ॥ जनाः स्वार्थस्फातावनिशमवदा
नाशयभृतः प्रमाता कः ख्याताविह भवमुखस्याशु रसिकः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ आसंसारनेविषे पितामातानेभ्राताके० भाइआदी तेसर्वेचिंतितअर्थनी अभिलाषापुरे त्यांलगीअभिमतके० संमतकरीमाने, तथागुणनासमूहनोजाण एहवोधनवंतप्राणीहोयतेपण कृपणपणेकरीने गुणीजनने धनदेइशकेनही, एम सर्वप्राणीपोताना स्वार्थसाधनकरवाने सावधानपणेवर्त्तेछे, पणपरमार्थथी वेगला वसेछे, एवाभवसुखना रसियाजेजीवतेहना स्वरूपने केहेवाने कोण समर्थ थइ शके! ॥ १३ ॥

पणेः पाणिंगृह्णात्यहह महति स्वार्थ इह यान् त्यजत्युच्चैर्लोक
स्तृणवदघृणस्तानपरथा ॥ विषं स्वांते वक्त्रेऽमृतमिति च विश्वा
सहतिकृन्नवादित्युद्वेगोयदि न गदितैः किं तदधिकैः ॥ १५ ॥

अर्थ॥एमस्वार्थने वशथइने प्राणी चंडालनो हाथपकडी चालेछे! अहोइतिआश्चर्य! जेस्वार्थपणुंतेएहवुंछे. वलीजेउत्तमकुलथी उपजेलातेहनेतजेछे अने तरणाजेवोनिर्लज्ज थइने हैयामांतो फेरभर्युंहोय पण मोढे अमृतजेवुंमीठुंबोलेछे. एवा अनेक प्रपंच स्वार्थमाटेप्राणीकरेछे, नेविश्वासघातीथायछे. एवाप्राणीआसंसारमांवसेछे, तेजोइनेपण आसंसारथी जेनुंमनउद्वेगपामतुंनथी तेने घणुं शुं कहियें? ॥ १५ ॥

दृशां प्रांतैः कांतैः कलयति मुदं कोपकलितैरमीभिः खिन्नः
स्यादघनधननिधीनामपि गुणी ॥ उपायैस्तुत्याद्यैरपनय-
ति रोषं कथमपीत्यहो मोहस्येयं भवभवनवैषम्यघटना ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीदृष्टिना प्रांतके० खुणातेमनोहरछे, माटेतेनाजोवाथी हर्षउपजेछे, अने स्त्रीनीकोपयुक्तदृष्टिखराबछे माटेतेदेखीनेखेदउपजेछे, तथाघणाधनवालापुरुषने गुणीजनोस्तुतिआदिकरीरीजवेछे, ने कष्टसहीनेतेमनोरोषउतारेछे, एसघलुंमोहथकीथायछे. माटे जुओमोहरूपीराजानुं केवुंविषमतापणुंछे केजेतजवायोग्यछे तेनो आदरकरावेछे अने जेनोआदरकरवोजोइये तेनोत्याग करावेछे? ॥ १६ ॥

प्रिया प्रेक्षा पुत्रोविनय इह पुत्री गुणरति र्विवेकाख्यस्तातः
परिणतिरनिंद्या च जननी ॥ विशुद्धस्य स्वस्य स्फुरतिहि कु-
टुंबं स्फुटमिदं भवे तन्नोदृष्टं तदपि बत संयोगसुखधीः ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जीवनेतत्त्वविचारणाकरवीतेस्त्रीछे, विनयकरवोतेपुत्रछे, गुणनेविषेजेरतिकरवीतेपुत्रीछे, स्याद्वादपणेस्वपरविवेचनकरवुंतेपिताछे, अनिंद्याजेपारकीनिंदातजवीतेआत्मानी माताछे, एवुंजेअंतरंगकुटुंबछे, तेतोजेवारें आत्माशुद्धथाय तेवारेंप्रगटरीतेंपेदाथाय, पणतेनेजेपुरुषसंयोगीसुखमां मग्नथइरह्योछे तेतोक्यारेपणदेखतोनथी. ॥ १७ ॥

पुरा प्रेमारंन्ने तदनु तदविच्छेदघटने तदुच्छेदे दुःखान्यथ कठिनचेता विषहते ॥ विपाकादापाकाहितकलशवत्तापबहुलाज्जनोयस्मिन्नस्मिन्कचिदपि सुखं हंत न न्नवे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ प्रथमप्रेमकरतांदुःखछे; तेपठीतेनेनिश्चलपणेराखवाने पणघणुंदुःखछे; वली तेप्रेमपात्रनो विच्छेदथाय, मरणथाय अथवाप्रेमत्रुटे त्यारेसञथीवधारे दुःखउपजे, ने ते सहनकरवाने छातीघणीकठणराखवीपडे, नींन्नाडानापाकनेविषे आरोपितकस्यो एवो जे घट तेनासरखीतापनी बहुलताछे ज्यां तोएवोजे आसंसाररूप नींन्नाडोतिहां सुखतो कांइज नथी. समग्र दुःखमयजछे. ॥ १८ ॥

मृगाक्षी दृग्बाणै रिहहि निहतंधर्म्मकटकं विलिप्ताहृद्देशा इह च बहुलैरागरुधिरैः ॥ भ्रमंत्यूर्ध्वं क्रूरा व्यसनशतगृधाश्च तदियं महामोहक्षोणीरमणरणन्नूमिः खलु न्नवः ॥ १९ ॥

अर्थ॥ आसंसारनेविषे धर्मराजाना कटकनेतोमृगनयनीना दृष्टिरूपीबाणे हणी नाख्युं; रागदिशारूपरुधीरवमे लोपाइगयाछे हृदयप्रदेशजेनाते उपर अनेकप्रकारना मन तनसंबंधीकष्टरूपीगीधपक्षीयो न्नमीरह्याछे; एवो महामोहरूप क्षोणीरमण जे राजा तेनी रणन्नूमीसमान आ संसार छे ॥ १९ ॥

हसंति क्रीमंति क्षणमथच खिद्यंति बहुधा रुदंति क्रंदंति क्षणमपि विवादंविदधते ॥ पलायंते मोदं दधति परिनृत्यंति विवशा न्नवे मोहोन्मादं कमपि तनुन्नाजः परिगताः ॥ २० ॥

अर्थ ॥ क्षणमांहसे, क्षणमांक्रीडाकरे (रमे), क्षणमांखेदकरे, क्षणमांबहुप्रकारें रुवे, क्षणमांविलापकरे, क्षणमांअनेकप्रकारनो विवादकरे, क्षणमांनासीजाए, क्षणमां हर्षित थइ नाचवामांडे, इत्यादीउन्मादसंसारनेविषे देहधारीप्राणीयोकरेछे, ते सर्व मोहराजाने आधीनथका करेछे ॥ २० ॥

अपूर्णा विद्येव प्रकटखलमैत्रीव कुनयः प्रणालीवा स्थाने विधववनितायौवनमिव ॥ अनिष्णाते पत्यौ मृगदृशइव स्नेहलहरी न्नवक्रीडाव्रीडा दहति हृदयं तात्विकदृशां ॥२१॥

अर्थ ॥ असंपूर्णविद्याजेमपंडितने, तेमज खलमाणसनीमित्राइ, वलीराजसन्नामां अन्यायनी प्रणालिका एटलेअन्यायनोमार्ग, तथा विधवास्त्रीनुंयौवन, वलीमूर्खन्नरतारने-

आगलस्त्रीनास्नेहनीलहरी तेजेमखेदनीपात्रथायछे तेमजसंसारनीक्रीडा जेलज्ञामणीछे तेथी तत्त्वदर्शीप्राणीदुःखपामेछे ॥ २१ ॥

प्रभाते संजाते भवति वितथा स्वापकलना द्विचंद्रज्ञानं वा तिमिरविरहे निर्म्मलदृशां ॥ तथा मिथ्यारूपं स्फुरति विदिते तत्त्वविषये भवोयं साधूनामुपरतविकल्पः स्थिरधियां ॥२२॥

अर्थ ॥ जेम प्रभातसमयस्वप्ननीरचना निष्फलथइजायछे, जेमकोइनीआंखमां जाकलआवीहोय तेहनेआकाशमां बेचंद्रमाभासे पणनिर्मलदृष्टथितां बेचंद्रमानुं भ्रांतिज्ञानमटीजायछे, तेमसंसारथीन्याराहृद्या, एहवाजेस्थिरबुद्धिवाला तत्त्वज्ञानसमजेलासाधु तेने आ संसार ते मिथ्यारूपभासेछे ॥ २२ ॥

प्रियावाणीवीणाशयनतनुसंबाधनसुखै र्भवोयं पीयूषैर्घटितइति पूर्वं मतिरभूत् ॥ अकस्मादस्माकं परिकलिततत्त्वोपनिषदामिदानीमेतस्मिन्न रतिरपितु स्वात्मनि रतिः ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीवाणीयेंकरीने तथा विणानादेकरीने शय्यायेंकरीने वलीशरीरनेचोलवुं चापवुंतेणेकरीने जे सुखउपजेछे, ते अमृतेकरीनेघुटेलुंहोयतेवुंछे. एवुंपूर्वेंबालकालें वर्तायुंहतुं, पण हवेसहसात्कारेंअमने तत्त्वदिशानारहस्यनी परिकलनाथइ जाणपणुं थयुं; तेथी संसारनेविषे तत्त्वरुचिवर्त्तति नथी, पण आत्मतत्त्वमां रुचिथइ छे ॥ २३ ॥

दधानाः काठिन्यं निरवधिकमाविद्यकभवप्रपंचाः पांचालीकुचकलशवन्नातिरतिदाः ॥ गलत्यज्ञानाभ्रे प्रसृमररुचावात्मनि विधौ चिदानंदस्यंदः सहजइति तेभ्योस्तु विरतिः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ संसारनासमस्तप्रपंच तेअतिशयकठिणताने धरताथकाछे, माटे मुजने काष्टअनेपाषाणनी पुतलीनास्तननीपेरे रतिकारीनथीलागता. केमके अज्ञाननुंवादल गलीगयुंछे अनेआत्मिकज्ञानरूप चंद्रोदयथयो तेथीसहजचिदानंदरसनी शीतलता प्रगटी तेणेकरी विषयतापनी अरतिमटीगइ. ॥ २४ ॥

भवे या राज्यश्रीर्गजतुरगगोसंग्रहकृता न सा ज्ञानध्यानप्रशमजनिता किंस्वमनसि॥ बहिर्याः प्रेयस्यः किमु मनसि ता नात्मरतय स्ततः स्वाधीनं कस्त्यजति सुखमिच्छत्यथ परं ॥२५॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे हाथी, घोडा, बलद, प्रमुखजेराजलक्ष्मीछे, तेशुंअंतरंगआत्माने

नथी ? अर्थात् बे. ज्ञानहाथी, ध्यानघोमा, समतातेबलद, एलक्ष्मीआत्मानीबे; अनेतुंजो मनवमेबाह्यसाथें प्रेमकरेबे तोपोतानाआत्मासाथें रतिकेमकरतोनथी ? आत्मिकसुखत- जीने पौजलिकसुखने कोणइबे ? एवोमूर्खकोणहोय ? ॥ २५ ॥

पराधीनं शर्म्म क्षयि विषयकांक्षौघमलिनं जवे जीतेः स्थानं त दपिकुमतिस्तत्र रमते॥बुधास्तु स्वाधीने दक्षयिणि करणौत्सुक्य रहिते निलीनास्तिष्ठंति प्रगलितजयाध्यात्मिकसुखे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ पौजलिकसुखकेवुंबे ? एकतोपराधीनबे; स्वजावेक्षयथवालायकबे; विषय वांबनावडेमलिनबे; एमसंसारनेविषेजयनांस्थानघणांबे, तेबतांकुमतिनाधणी संसार रमेबे. अनेपंडितलोकजेबे तेस्वाधीनसुखमांरमेबे. तेसुखकेवुंबे, केजेकोइकालेंक्षय नही; इंद्रियोनीउत्सुकतायेंरहितबे जेप्राणीआत्मज्ञानमां लयपाम्याथकाबेतेप्राणी कलजयदिशा रहितथका परमानंदनेविषे मग्नपणेरहेबे ॥ २६ ॥

तदेतन्नाषंते जगदन्नयदानं खलु जवस्वरूपानुध्यान शमसु खनिधानं कृतधियः ॥ स्थिरीजूते ह्यस्मिन्विधुकिरणकर्पूरवि मला यशःश्रीः प्रौढा स्याज्जिनसमयतत्त्वस्थितिविदा ॥२७॥

अर्थ ॥ आजगत्प्रत्येपंमितलोक एमकहेबे, जेपोतानाआत्मजावना नतेज शमताना सुखनुंकारणबे, अनेजगत्नेअजयदाननुं देवावालुंबे.जेणेक वेंबुद्धिकरीबे तेनेआत्मस्वरूपज्ञान स्थिरथयेथके चंद्रकिरणकर्पूरसरीखी शलक्ष्मीतेप्रौढपणे विस्तारपामे, एवातत्त्वज्ञानी तेजिनेश्वरप्रणीत सिद्धांतनात र्यादायेंवर्त्ते ॥ २७ ॥ इतिजवस्वरूपचिंताधिकारःचतुर्थःसमाप्तः ॥

इतिश्रीनयविजयगणिशिष्य श्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसा रप्रकरणे प्रथमः प्रबंधः ॥ १ ॥ सर्वश्लोक १०२ तेमां पेहलाना २४ बीजाना २९ त्रीजाना २२ तथा चोथाअधिकारना ॥ २७ ॥

जवस्वरूपविज्ञाना द्वेषान्नैर्गुण्यदृष्टिजात् ॥ तदिच्छोच्छेदरू पं डाग् वैराग्यमुपजायते॥१॥ सिध्या विषयसौख्यस्य वैराग्यं वर्णयंति ये ॥ मतं न युज्यते तेषां यावदर्थोप्रसिध्दितः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जवनुंस्वरूपजाणवाथकी संसारउपरद्वेषथयाथकी संसारनेनिर्गुणपणेदेख थकी शीघ्रपणे संसारना विच्छेदनोवैराग्य आत्मानेविषे प्रगटथाय ॥ १ ॥ विषयसु

सेद्धि-निष्पत्ति-प्राप्तितेवडे जेवैराग्यनुंवर्णनकरेछे, तेनुंमत घटमान नथी. जिहांसुधी
ग्रेके० इव्यछेतिहांसुधीविषयछे, एवीप्रसिद्धिछे. "अर्थसत्वेविषयसत्वं" ॥ इति. ॥२॥

अप्राप्तत्वभ्रमाडच्चै रवाप्तेष्वप्यनंतशः ॥ कामभोगेषु मूढानां
समीहा नोपशाम्यति ॥ ३ ॥ विषयैः क्षीयते कामो नेंधनैरिव
पावकः ॥ प्रत्युत प्रोल्लसच्छक्ति र्भूय एवोपवर्द्धते ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेएमजाणेछे, जेहुंकोइकाले संसारनेविषेआव्योजनथी, जोअनंतिवारविष-
व्याछे, तेछतांआविषयनवापाम्यो,एवोभ्रमजेनेउपजेछे,एवाजेकामभोगने विषे मुंका-
झाछे, तेनीअभिलाषानोनाशथतोजनथी ॥३॥ जेमइंधनथीअग्निघटेनही, पणउलटी
द्धजपामे, तेमविषयसेवतां कामभोगपण कदापिक्षयपामेनही, उलटी शक्तिउल्लास-
ातीजाये; वारंवारवधतीजजाए ॥ ४ ॥

सौम्यत्व मिव सिंहानां पन्नगानामिव क्षमा ॥ विषयेषु प्रवृत्ता
णां वैराग्यं खलु दुर्लभं ॥ ५ ॥ अकृत्वा विषयत्यागं योवैराग्यं
दिधीर्षति अपथ्यमपरित्यज्य स रोगोच्छेदमिच्छति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ चापवुंतेजेमसिंहनेसोमपणुंनथी, सर्पनेजेमशमतानथी,तेमविषयमां जेप्रवर्त्या तेमने
ग्युंहतुं, पामोछे, पण सुगमनथी ॥ ५ ॥ जेविषयनोत्यागकर्याविना चित्तमां वैराग्यनी
तेथी ३, तेकुपथ्यतज्याविना रोगटालवानी इछा करे एवुं छे ॥ ६ ॥

दृ चित्ते विषयासक्ते वैराग्यं स्थातुमप्यलं ॥ अयोघन इवोत्तप्ते
निपतन्बिंदुरंभसः ॥७॥ यदींदुः स्यात् कुहूरात्रौ फलं यद्यव
केशिनी ॥ तदा विषयसंसर्गिचित्ते वैराग्यसंक्रमः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेम लोढानो घण तप्योहोय तेपाणीनाबिंदुने शोषीजायछे, तेमजेनुंचित्त
षयासक्तछे, तेनाहृदयमां वैराग्यरहीशकतो नथी ॥ ७ ॥ जो अमासनीरात्रीयें चंद्र
ा, अने जोवांझीआवृक्षने फलआवे; तोविषयीजीवना हृदयमां वैराग्यसंक्रमे ॥८॥

भवहेतुषु तद्द्वेषा द्विषये ष्वप्रवृत्तितः ॥ वैराग्यं स्यान्निराबाधं
भवनैर्गुण्यदर्शनात् ॥ ९ ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने नन्वेवं तत्
प्रसज्यते ॥ युक्तं खलु प्रमातृणां भवनैर्गुण्यदर्शनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ भवनी वृद्धिनाहेतुउपरजेनेद्वेषहोय विषयनेविषे जेनीप्रवृत्तिनहोय तेप्र
संसारनीनिर्गुणताना चिंतनथकी निराबाधपणे वैराग्यउपजे ॥ ९ ॥ चोथागुण

ठाणानेविषेपण सम्यक्त्ववंत ज्ञातापुरुषनिश्चयनयपणे संसारनीनिर्गुणताज जुएछे, तो तेने वैराग्यनीप्राप्तिथायछे, तेयुक्तजछे ॥ १० ॥

सत्यचारित्रमोहस्य महीमा कोप्ययं खलु ॥ यदन्यहेतुयोगे
पि फलायोगोत्र दृश्यते॥११॥दशाविशेषे तत्रापि नचेदं ना
स्ति सर्वथा ॥ स्वव्यापारहतासंगं तथा च स्तवभाषितं ॥१२॥

अर्थ ॥ चारित्र मोहनीनोमहीमा साचोजछे, केमके निश्चेंथकी अन्यजोगहेतुयेंपण फलनुं अयोग्यपणुं तेथकी जोवामां आवेछे ॥११॥ सम्यक्त्वनीदशाविशेषेंकरीने तेचो थेगुणठाणेपण सर्वथावैराग्यनजहोय, एमनजाणवुं, तिहांपणपोताना आत्मिक स्वभा वनी रमणतायें कुसंगपणुंहणायछे, ए अर्थ वीतरागस्तोत्रनेविषे श्रीहेमाचार्यजीयें करे लोछे; माटे चोथे गुणठाणे वैराग्यपणुं होय॥ १२॥

यदा मरुन्नरेंद्रश्रीस्त्वया नाथोपभुज्यते ॥यत्र तत्र रतिर्नाम
विरक्तत्वं तदापि ते॥१३ ॥भवेछा यस्य विछिन्ना प्रवृत्तिः कर्म्म
भावजा ॥ रतिस्तस्य विरक्तस्य सर्वत्र शुभवेद्यतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जे कालें देवताना राजानी लक्ष्मी हेनाथ! तमेभोगवी तिहांपणजिहांजिहां रति मोहिनीउपजेते तमेकरीनथी, त्यांपणतमेविरक्तपणुजकछुछे. पणरंगायानथी ॥ १३ ॥ माटे भवनीइछाजेहनेविछेदथायछे, तेनेजेअवश्यवेदवायोग्य भावकर्मनी प्रवृत्तिप्रमुख जेविरक्तआत्मानेरतिपणुंछे तेसर्वत्र शुभवेदनीजवर्त्तेछे. ॥ १४ ॥

अतश्चाक्षेपकज्ञानात् कांतायां भोगसन्निधौ ॥ न शुद्धिप्रक्षयो
यस्माधारिभद्रमिदं वचः ॥ १५ ॥ मायांभस्तत्त्वतः पश्यन्ननु-
द्विग्नस्ततोद्रुतं॥ तन्मध्ये न प्रयात्येव यथा व्याघातवर्जितः ॥१६॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे स्वरूपज्ञाननाअभ्यासेंकरी अथवा अन्यवस्तुयेंकरी अन्य वस्तुनुंपुरवुं तेक्षेपककेवाय;तेक्षेपकपणुंजेनेनथी; तेनुंनामअक्षेपककहियें; एहवोअक्षेपक ज्ञानवंत निश्चेभावनुंग्रहणकरनारो ते पुरुषजोकांता जेस्त्रीतेनाभोगनेसन्मुख प्रवर्त्ततो होय, तोपणतेहनी शुद्धिनोप्रकर्षरीतें क्षयनथाय; एटले ज्ञानशुद्धिते कर्मक्षयनुं कार णछे एवुंहरिभद्रसूरीनुंवचनछे ॥ १५ ॥ परमार्थदिशायकी सर्वसंसारने इंद्रजालस मान देखतोथकोअनुद्वेगदिशामांवर्त्ते, जेहनेकामभोगमां उद्वेगनथी, ने रागपण नथी ते तेणेकरीतेमां तन्मयपणुंनकरे, तेनिरविघ्नपणे यथायोग्येंमोक्षेजजायछे॥ १६॥

भोगान् स्वरूपतः पश्यंस्तथा मायादिकोपमान् ॥ भुंजानोपि ह्यसंगः सन् प्रयात्येव परं पदं ॥ १७ ॥ भोगतत्त्वस्य तु पुनर्न भवोदधिलंघनं ॥ मायोदकदृढावेशस्तेन यातीह कुपथा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी शब्दादिकभोगने परमार्थदिशायें जोतोथको इंद्रजालसमानजाणेते विषयादिकने भोगवतोपण तेमांलेपातोनथी, तेनिश्चयपरमपदजे मोक्षतेनेपामेछे ॥ १७ ॥ अनेजेभवाभिनंदीप्राणी तेसंसारना भोगनेज तत्त्वकरीमानेछे, तेप्राणीसंसारसमुद्रने उलंघीनशके, केमके मायारूपउदकनाआवेशें तेप्राणीकुपंथनेविषेजायछे ॥ १८ ॥

स तत्रैव भवोद्विग्नो यथा तिष्ठत्यसंशयं ॥ मोक्षमार्गेपि हि तथा भोगजंबालमोहितः ॥ १९ ॥ धर्म्मशक्तिं न हंत्यत्र भोगयोगबलीयसीं ॥ हंति दीपापहोवायुर्ज्वलंतं न दवानलं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीभोगनो जंबालके० कलिमलतेणेमोहितथयोथको मोक्षमार्गेना साधननेविषेपण भवोद्विग्नतापणेनिश्चयथकीरहेछे ॥ १९ ॥ धर्मेनिसामर्थताने कामभोगनो संयोग हणीशकतोनथी, केमके धर्मेनीसामर्थता घणीबलवत्तरछे. दीपकसमान अल्प धर्मनेतोकदापि वायुसमानविषयओलवीनाखे, पणजाज्वल्यमान दावानलसमान जेम हाधर्मेनी वासना तेने वायुनडीशकतो नथी ॥ २० ॥

बध्यते बाढमासक्तो यथा श्लेष्मणि मक्षिका ॥ शुष्कगोलवद् श्लिष्टो विषयेभ्यो न बध्यते ॥ २१ ॥ बहुदोषनिरोधार्थमनिवृत्तिरपि क्वचित् ॥ निवृत्तिरिव नो दुष्टा योगानुभवशालिनां ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम श्लेष्मनेविषे माखीलेपाइ फसाइजायछे, तेम विषयनेविषे गाढापणे आसक्तथतां प्राणीबंधाइजायछे. सुकीमृत्तिकानागोलामांजेम माखीफसातीनथी तेम आसक्तिरहितउदासीन एवाजेजीव तेविषयनेविषे बंधातानथी ॥ २१ ॥ जेम रोग ने काढवाने औषधोनीजरूरछे, तेमघणादूषणनो रोधकरवानेअर्थे क्वचित्अनिवृत्तिपणुं पण दुष्टनथी. जेमकामभोगनी त्यागबुद्धिदुष्टनथी,तेमअनुभवजोगेकरीने सहित जेवर्त्ते तेनेक्वचित्मात्र अनिवृत्तिछे. तेपण निवृत्तिनीपरेंज दुष्टनथी ॥ २२ ॥

यस्मिन्निषेव्यमाणेपि यस्याशुद्धिः कदाचिन ॥ तेनैव तस्य शुद्धिः स्यात् कदाचिदिति हि श्रुतिः ॥ २३ ॥ विषयाणां ततोबंधजनने नियमोस्ति न ॥ अज्ञानिनां ततो बंधो ज्ञानिनां तु न कर्हिचित् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमशत्रुनी सेवनाकरनारोपुरुष दुःखीयोथइने कालांतरेसुखीथाय, तेम कदापि विषयनेसेवनारो कर्मेकरीने तेहिजविषयादिकथीशुद्धथाय, एवीपण कोइकनी श्रुतिछे ॥ २३ ॥ जेविषयतेएकांतेकर्मबंधनुंजकारणछे, एवोएकांतनियमनथी. पण जेअ ज्ञानीछे तेनेजकर्मबंधनु कारणछे, पणजेतत्त्वज्ञानी समतारसमां मग्नछे, तेनेनथी ॥२४॥

सेवतेऽसेवमानोपि सेवमानो न सेवते ॥ कोपि पारजनो न स्या
द्यछन् परजनानपि ॥ २५ ॥ अतएव महापुण्यंविपाकोपहि
तश्रिया ॥ गर्भादारभ्य वैराग्यं नोत्तमानां विहन्यते ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ केटलाकप्राणी विषयनेद्रव्यथी अणसेवताथका पणभावथी विषयनेसेवेछे; केटलाकप्राणी द्रव्यथीसेवेछे पणभावथीनथीसेवता, पारकीसेवनाकरतोथको पणतेहनो परमार्थपरप्रतेनदेतोथको एहवोजेज्ञानीते कर्ममयीजनथीथतो ॥ १ ॥ एमाटेउत्तम- पुरुषें महापुण्यविपाकनायोगें प्राप्तकरी एहवीजे तीर्थंकरादिकनीलक्ष्मी तेनेगर्भथकी मांमीनेपण वैराग्यधारात्रुटतीनथी. ॥ २६ ॥

विषयेभ्यः प्रशांताना मश्रांतं विमुखैः कृते ॥ करणैश्चारुवैरा
ग्य मेष राजपथः किल ॥ २७ ॥ स्वयं निवर्त्तमानैस्तै रनुदीर्णै
रयंत्रितैः॥ तृप्तैर्ज्ञानवतां तस्मात्स्यादसावेकपदी मता ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ जेहनेविषयथकी प्रशांतचित्तथयुंछे, अनेविश्रामरहित इंद्रियोनाविषयने विमुखकरवुं तेणेकरीने मनोहरवैराग्यमार्गसेववानुंछने, अनेविषयनोपणत्यागथाय, ते तोनिश्चयथकी वैराग्यदिशानो राजमार्गछे ॥ २७ ॥ अनेजेइछाविनां सहेजेकोइकार णयोगे पोतेइंद्रियविकारथकीनिवर्त्तेछे, पण प्रशांतनेअणउदीरवेकरीने अनियंत्रणायें करी एटलेइंद्रियनोनिरोध हजीकर्योनथी, पणसहेजचारित्रप्रमुखना योगेंइंद्रियनि रोधथयोछे एहवातृप्तिवंत ज्ञानीपुरुषतेनोवैराग्यते पूर्वोक्तराजमार्गनावैराग्यनी एकप- दीछे, एटलेएकदंडीछे. जेमगाडाचालवानामार्गने तोमहोटोमार्गकहियें, पणमाणसोनेप गेचालवानोरस्तो न्हानोथायछे, तेवोतेवैराग्यपण न्हानोकहियें. ॥ २८ ॥

बलेन प्रेर्यमाणानि करणानि वनेभवत् ॥ न जातु वशतां यां
ति प्रत्युतानर्थवृद्धये ॥ २९ ॥ पश्यंति लज्जया नीचै र्दुर्ध्यानं
च प्रयुंजते ॥ आत्मानं धार्मिकाभासाः क्षिपंति नरकावटे ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ बलात्कारेंप्रेर्याथकापण वननाहाथीनीपेठेइंद्रियो कदापि वशथतीनथी, उ-

लटीअनर्थनी वृद्धिकरनारीथायछे ॥ २९ ॥ लाजेकरीनीचुंजुएछे; अनेमनमांदुष्टध्यान धरेछे, एवाधर्मधुताराप्राणीते पोतानाआत्माने नरकनाकूपमां नाखेछे ॥ ३० ॥

वंचनं करणानां तद्विरक्तः कर्तुमर्हति ॥ सद्भावविनियोगेन स
दास्वान्यविभागवित् ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तेर्वानिवृत्तेर्वा न संकल्पो
न च श्रमः ॥ विकारोहियतेऽक्षाणा मिति वैराग्यमद्भुतं ॥ ३२॥

अर्थ ॥ शुभभावनेअर्पणकरीने सदास्वपरविवेचन ज्ञानयुक्त भावनावालाज्ञाता विरक्तप्राणी इंद्रियोनेठगवानेसमर्थथायछे, पण बीजानथीथाता ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तिनेविषे अथवा निवृत्तिनेविषे जेनेसंकल्पनथी, अनेथाकपणनथी, एवासमभावेंवर्तनारना सर्वे विकारदूरथायछे, अनेएनुंजनामअद्भुतवैराग्यपणछे ॥ ३२ ॥

दारुयंत्रस्थपांचाली नृत्यतुल्याः प्रवृत्तयः ॥ योगिनो नैव बाधा
यै ज्ञानिनो लोकवर्तिनः॥३३॥इयं च योगमायेति प्रकटं गीयते
परैः ॥ लोकानुग्रहहेतुत्वान्ना स्यामपि च दूषणं॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाष्ठनीपुतलीने दोरीनासंचारेंकरी नाचनारीनामाफकनाचती जोइयें छइयें, पणतेनेकर्मबंधननथी, तेमलौकिकव्यवहारनेविषें वर्त्तताज्ञानी जे योगीश्वरपुरुष तेहनेसंसारनी प्रवृत्तिपीडाकरतीनथी ॥ ३३ ॥ एवैराग्यदिशाने परदर्शनीजोगमाया नेनामेप्रगटपणे बोलावेछे, एपणलोकनेउपकारकर्त्ताछे, एनेविषेदूषणनथी ॥ ३४ ॥

सिद्धांते श्रूयते चेय मपवादपदेष्वपि ॥ मृगपर्षत्परित्रास नि
रासफलसंगता ॥ ३५ ॥ औदासीन्यफले ज्ञाने परिपाकमु
पेयुषि ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने तद्वैराग्यं व्यवस्थितं ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतमांपणसांभलीयेंछइयेंके, अपवादनेविषे मृगलासरखीपर्षदाने पण निरासकरवी एजवृषभतुल्यगीतार्थनी शुद्धज्ञानदिशाजाणवी. ॥ ३५ ॥ परिपक्वथइथकी एवीजेज्ञानदिशाअने जेनुंफलउदासीनताछे, तेथकीचोथेगुणस्थानके पणवैराग्यदिशा प्राप्तथायछे. इतिवैराग्यसंभवाधिकारपंचम समाप्तः ॥३६॥

तद्वैराग्यं स्मृतं दुःख मोहज्ञानान्वया त्रिधा ॥ तत्राद्यं विषयाप्रा
प्तेः संसारोद्वेगलक्षणं ॥ १ ॥ अत्रांगमनसोःखेदो ज्ञानमव्याप
कं न यत् ॥ निजाभीप्सितलाभे च विनिपातोपि जायते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेवैराग्यत्रणप्रकारनोछे. दुःखगर्भित, मोहगर्भित अने ज्ञानगर्भित. तेमां

प्रथमकह्योतेविषयादिकने नपामवाथकी संसारथीउद्वेगपामवानुं लक्षणछे,माटेतेहने दुःखगर्जितवैराग्यकहियें. ॥१॥ देहसंबंधी मनसंबंधी जेखेदतेथीउपज्युं, जेज्ञानतेअव्यापककेंव्वृद्धिकारीनथाय, आत्मानीपुष्टिकर्त्तानथाय, केमके तेप्राणीपोताने अजिला षकरवायोग्य धनादिकवस्तुनेपामीने तापसादिपणुंछोडीने पाछुंगृहस्थपणुंअंगीकारकरे ॥२॥

दुःखाद्विरक्ताः प्रागेवे छंतिप्रत्यागतेः पदं ॥ अधीराइव संग्रा
मे प्रविशंतो वनादिकं ॥ ३ ॥ शुष्कतर्कादिकं किंचि द्वैद्यका
दिक मप्यहो ॥ पठंति ते शमनदीं नतु सिद्धांतपद्धतिं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ दुःखथकीजेवैराग्यपामेछे, तेतोप्रथमथीज पाछागृहस्थावासनी इछाकरेछे; जे दुःखटलेतो घरेजइये, जेमअधीरपुरुष जेकायरते संग्रामनेविषे जतोथको वननीगली मांजराइबेसवानीइछाकरेछे, तेहनीपरें ॥ ३ ॥ प्राणीयोवादविवाद करवानेशुष्कतर्क ग्रंथजाणेछे,आजीविकानेअर्थें वैद्यकप्रमुखना ग्रंथजाणेछे,पण शमतारसनीनदी एवी सिद्धांतनी जेपद्धति तेजाणतानथी ॥ ४ ॥

ग्रंथपल्लवबोधेन गर्वोष्माणं च बिभ्रति ॥ तत्त्वांतं नैव गछंति
प्रशमामृतनिर्झरं ॥ ५ ॥ वेषमात्रभृतोप्येते गृहस्थान्नाति
शेरते ॥ नपूर्वोछायिनोयस्मा न्नापि पश्चान्निपातिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे शमताअमृतना झरणनेपाम्यानथी, तेग्रंथनापल्लवमात्रकेंव खंडखंडमात्रे करीने गर्वनीगरमीनेधरीनेज वर्त्तेछे,पणतत्त्वना रहस्यने पामताजनथी ॥ ५ ॥ जेसाधुनावेषमात्रेकरीने पोतानुं जीवितव्यपणुंराखेछे, तेपणगृहस्थतुल्यजछे, पण गृहस्थथी न्यारानथी; जेणेआगलउछाह धर्योनथी, जेगुणपामिने पडवाइ पण थयानथी, केमकेजे गुणपामीने तजेतेतोपडवाइकेहेवाय, पणएतोकोइवारें पडवाइपणथयानथी, एहवाजे छे तेतोगुणनेपाम्याजनथी ॥ ६ ॥

गृहेन्नमात्रदौर्लभ्यं लभ्यंते मोदका व्रते ॥ वैराग्यस्यायम
र्थोहि दुःखगर्भस्य लक्षणं ॥ ७ ॥ कुशास्त्राभ्याससंभूतभव
नैर्गुण्यदर्शनात्॥मोहगर्भं तु वेराग्यं मतं बालतपस्विनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोघरमांतो पुरुअन्नपणनथीमलतुं, नेदीक्षालीधाथकी तोलाडुवामलेछे, तेमाटेदीक्षालेवामां शुंदुःखछे? एवुंजाणीने जेदीक्षालियेछे,तेनुंनाम दुःखगर्जित वैराग्य जाणवुं ॥ ७ ॥ एरीतेंप्रथम दुःखगर्जितवैरागपणुंदेखाडयुं; हवेमोहगर्जित वैराग्यक-

हेडे. कुशास्त्रनाअभ्यासथी प्रगटयुंजेसंसारनुं निर्गुणीपणुं तेथीमोहगर्भित वैराग्य थायडे. तेबालतपस्वी प्रमुखजाणवा ॥ ८॥

सिद्धांत मुपजीव्यापि ये विरुद्धार्थभाषिणः ॥ तेषामप्येतदेवे ष्टं कुर्वता मपि दुष्करं ॥९॥ संसारमोचकादीना मिवैतेषां न तात्त्विका॥शुभोपि परिणामोय ज्ञातानज्ञान रुचिस्थितिः ॥१०॥

अर्थ ॥ जेसिद्धांतनुंउपजीवन करीनेपण सूत्रविरोधि अर्थकेहेडे, तेप्राणीजो दुष्कर करणीकरेडे तोपणतेनेएवोजजाणवो ॥ ९ ॥ संसारना दुःखथीमूकाववाना हेतुथीजे मुसलमानते घोडाप्रमुखने दुःखीदेखी तेनेदुःखथी डोडववाने दयाभावेकरीमारीना खेडे, तेपणशुभपरिणामनी बुद्धिराखेडे तेडतांपरमार्थेपापजडे, तेममोहगर्भितने परमार्थजडेनही. जोएनो परिणामशुभहोय तोपणपरमार्थे ज्ञाननीरुचिथायनही ॥ १० ॥

अमीषां प्रशमोप्युच्चै दोंषपोषाय केवलं ॥ अंतर्निलीनविषम ज्वरानुभवसन्निभः ॥ ११ ॥ कुशास्त्रार्थेषु दक्षत्वं शास्त्रा र्थेषु विपर्ययः ॥ स्वछंदता कुतर्कश्च गुणवत्संस्तवोंझनं ॥१२॥

अर्थ ॥ जेमअंतरंगमां लीनथइरह्यो एहवोहाडवेदीज्वर दुःखदाइथायडे,तेमएनेपण जेप्रशमादिकगुण थाय, तेपण घणुंकरीने केवलदूषणभणीजथाय, पणगुणभणी नहीजथाय, केमकेअंतरंग मिथ्यात्वगयाविना वैराग्यतेदुःखदाइडे ॥ ११ ॥ कुशास्त्रनाअर्थने विषे डाह्याथाय, नेशास्त्रनाविपरीत अर्थकरे, स्वछंदपणेवर्ते, कोइसाथेक्षमाराखेनही, अनेगुणीनी प्रशंसानकरे ॥ १२ ॥

आत्मोत्कर्षः परद्रोहः कलहो दंभजीवनं ॥ आश्रवाछादनं श क्त्युल्लंघनेन क्रियादरः ॥ १३ ॥ गुणानुरागवैधुर्य मुपकारस्य विस्मृतिः ॥ अनुबंधाद्यचिंता च प्रणिधानस्य विच्युतिः ॥१४॥

अर्थ ॥ जेपोतानीमोटाइकरे, पारकोद्रोहकरे, क्लेशकजीआकरे, कपटराखे, पोतानां पाप ढांके,पोतानुंसामर्थ्य उलंघीने क्रियानोउद्यमकरे,तेआर्त्तध्यानी केहेवाय ॥१३॥ वली जेगुणीपुरुषोनो रागीनहोय बीजानाकरेलाउपकारने विसरी जाय, तीव्रकर्मबंधनी चिंतासहितवर्त्ते, अनेशुभअध्यात्मना अध्यवसाय रहितपणेवर्त्ते ॥ १४ ॥

श्रद्धा मृदुत्वमौद्धत्य माधुर्य्यमविवेकिता वैराग्यस्य द्वितीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥१५॥ ज्ञानगर्भं तु वैराग्यं सम्यक् तत्त्व परिच्छिदः॥स्याद्वादिनः शिवोपायस्पर्शिन स्तत्त्वदर्शिनः ॥१६॥

अर्थ ॥ श्रद्धा, मृदुता, उद्धतता, मधुरता, अविवेकतापणुं एमोहगर्भित वैराग्यनी परंपराजाणवी॥१५॥एरीतेंमोहगर्भितवैराग्यनुं स्वरूपकह्युं. हवेज्ञानगर्भित वैराग्यनुंस्वरूपकहेछे. जेसम्यक्त्वेंतत्वनीओलखाणकरे, स्याद्वादद्दष्टियेंवर्त्ते,मोक्षनुंचिंतनकरे मोक्षना उपायनेफरसे, अनेतत्वदिशा देखवानोअर्थीथाय; तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवो ॥१६॥

मीमांसा मांसला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धिः स्यात्तस्य वैराग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति ॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्यं यस्य कर्मणि ॥ नासो निश्चयसंशुद्धं सारं प्राप्नोति कर्म्मणः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धांत तथापरसिद्धांतसंबंधी बुद्धि जेने होय, तेने वैराग्यनीवातकहियें, अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगट थाय ॥ १७ ॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनुं प्राधान्यपणुंनथी, तेमज क्रियानेविषेपण प्राधान्यतानथी, तेनिश्चेंथकीक्रियानुं निर्मलसारभूतजेफल तेनेक्यारेपणपामेनही ॥ १८ ॥

सम्यक्त्वमौनयोः सूत्रे गतप्रत्यागते यतः ॥ नियमोदर्शित स्तस्मात् सारं सम्यक्त्वमेव हि ॥ १९ ॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युत्थानमनाश्रवः ॥ सम्यक्त्वं तदभिव्यक्तिरित्येकत्वविनिश्चयः ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेसम्यक्त्वतेमौनचारित्रकहियें,अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें; एवुंश्री आचारांगमध्ये गतप्रत्यागककरीने कह्युंछे. ॥ जंसम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहाजम्मोई० ॥ तेमाटे नियामकातापणुंजाणवुं.॥सिझंतिचरणरहिया दंसरणहियानसिझंति॥इतिवचनात्. तेमाटेसम्यक्त्वतेते सारभूतजाणवुं॥१९॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुंफलछे, अनेअनाश्रवनुंफल तेअव्युत्थान एटलेविषयमां उजमाल नथाय, विषयनोत्यागीहोय. एनुंनाम निश्चयसम्यक्त्वतकहिये. कारकसम्यक्त्वीनी एवीद्दष्टिहोय, एटलामाटे निश्चय नयनीरीतिके० प्रीतितेशुद्धाचारित्रवंतनेजहोय ॥ २० ॥

बहिर्निर्वृत्तिमात्रं स्या च्चारित्र्या द्व्यावहारिकात् ॥ अंतःप्रवृत्तिसारं तु सम्यक् प्रज्ञानमेवहि ॥२१॥ एकांते नहि षट्काय श्रद्धानेपि न शुद्धता ॥ संपूर्णपर्ययालाभाद् यन्न याथात्म्यनिश्चयः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ बाह्यथीधन, कण, कंचन, कामिनीप्रमुख बाह्यवस्तुनोजे त्यागीथाय, एव्यवहारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार द्दष्टियेंजचालेछे. अनेजेने सम्यक्त्वसहित ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय, तेहनेजअंतरंग प्रवृत्तिनो सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्तनयनी वासनारहितथका एकांतेछकायनीरक्षानी श्रद्धाकरताथका सम्यक्त्वनीशुद्धता नकेहेवाय.

पण संपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना लाभविना यथार्थपणानोलाभ-नहीजथाय, माटेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ २२ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्ययाः ॥ सांप्रतानागताती
तास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ २३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्व
परपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं स्वत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगत्मां वर्त्तमान, अनागत, तथाअतीतकालना जेटलाशब्दपर्याय वचननाछे, तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे, ते सर्वपर्यायनिश्चेंथी एकजद्रव्यछे ॥ २३ ॥ जे-सत्वके० पदार्थते सर्वस्वपरपपर्यायमयीहोय. तेआवीरीतेंजे, अनुवृत्तिसहजचारी गुणप-स्वणेत्वंके० स्वपणुंजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ २४ ॥

ये नाम परपर्यायाः स्वास्तित्वयोगतोमताः ॥ स्वकीया अप्यमी त्या
हुः स्वपर्यायविशेषणात् ॥२५॥ अतादात्म्येपि संबंधो व्यवहा
रोपयोगतः ॥ तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया ॥२६॥

अर्थ ॥ जेटलापरपर्यायछे, तेसर्वेपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा. तेयद्यपि पोतानाछे, तोपणगतभावेंछे. अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥ २५ ॥ परपर्याय जो पणतादात्म्यभावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संबंधछे. जेमधननोधणी अनेधनते जूदाजूदाछे, तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंबंधजणायछे ॥ २६ ॥

पर्यायाः स्युर्मुनेर्ज्ञानदृष्टिचारित्रगोचराः ॥ यथा भिन्ना अपि
तथोपयोगाद्वस्तुनोह्यमी ॥ २७ ॥ नोचेद्भावसंबंधा न्वेषणे
का गतिर्भवेत् ॥ आधारप्रतियोगित्वे द्विष्टे न हि पृथग् द्वयोः ॥२८॥

अर्थ ॥ तेमअभिन्नपणे ज्ञाननातथा चारित्रसंबंधीपर्याय मुनिनेपण होय; जोपण तेअभिन्नछे, तोपणउपयोगपणेविचारतां निश्चयनयपोतपोतानाजछे, पणव्यवहारेंएक आत्मानाछे, एमकेहेवाय ॥ २७ ॥ एमजोनकहियें अने अभावनासंबंधथी गवेषणाकरियेंतो केवीगतिथाय ? आधारांतरनिरूपकतानेभावें विचारतां, "द्विष्टेविनष्टेद्व्यात्," एटले पृथक्भावताना द्वेषकरवाथी विणसेअने तेबेहुथीआत्माभिन्नथी ॥ २८ ॥

स्वान्यपर्यायसंश्लेषात् सूत्रेप्येवं निदर्शितं ॥ सर्वमेकं विद्न्वेद
सर्वं ज्ञानं तथैककं ॥ २९ ॥ आसक्तिपाटवाभ्यासस्वकार्यादिभि
राश्रयन् ॥ पर्यायमेकमप्यर्थं वेत्ति भावाद् बुधोऽखिलं ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ स्वपर्यायअने परपर्यायना संबंधथी सूत्रनेविषे पणएमदेखाड्युंछे, के सघ

लुंएकताजावें जाणता, "एगेआया,"इत्यादिक सघलुंज्ञानते संग्रहनयकरीएकजछे॥२ए॥ माटेचित्तनीआसक्तियें अने बुद्धिनीपाटवतायें अन्यासकरवाथी पोताना कार्यपणादिकनेआश्रयताथकी पर्यायना एकअर्थनेजाणीनेपण बुधजेपंमित तेसर्वेजावनेजाणे."जेएगंजाणइ सेसवंजाणइ" इतिवचनात् ॥३०॥

अंतरा केवलज्ञानं प्रतिव्यक्ति न यद्यपि ॥ क्वापि ग्रहणमेकांशद्वारं चातिप्रसक्तिमत् ॥ ३१ ॥ अनेकांतागमश्रद्धा तथाप्यस्खलिता सदा ॥ सम्यग्दृशस्तयैव स्यात् संपूर्णार्थविवेचनं ॥ ३२॥

अर्थ ॥ यद्यपिकेवलज्ञाननेविषे तोकांइपणप्रतिव्यक्तिनथी, तोपणकोइठेकाणे एक अंशनुंज ग्रहणकरखुंछे, नेकोइस्थानकें सर्वांशग्रहणकीधोछे ॥ ३१ ॥ तोपणअनेकांत आगमनी श्रद्धातेअस्खलितपणें सदाप्रवर्त्तेछे, माटेअनेकांतपणुंअंगीकारकरतांज सम्यक्त्वछे; तथाउत्सर्गेअपवाद, निश्चव्यवहारतेनासंपूर्णअर्थनोनिश्चयथायछे ॥ ३२ ॥

आगमार्थोपनयनाद् ज्ञानं प्राज्ञस्य सर्वगं ॥ कार्य्यादेर्व्यवहारस्तु नियतोल्लेखशेखरः ॥३३॥ तदेकांतेन यः कश्चिद्विरक्तस्यापि कुग्रहः॥शास्त्रार्थबाधनात्सोयं जैनाजासस्य पापकृत् ॥३४॥

अर्थ ॥ आगमनाअर्थनुं उपनयनजेथापवुं तेथकीप्राज्ञजे बुद्धिवंत तेनुंज्ञान सर्वव्यापकपणेप्रवर्त्ते; कार्यादिकजेव्यवहारछे, तेतोनिश्चयपणें चित्रामणनीरेखासरिखोछे. श्रेष्ठरूपकरवाने जेमआलेखकरे तेसरिखाव्यवहारछे, अनेसमग्ररूपकरवा समानतेनिश्चयनयछे ॥ ३३ ॥ तेमाटेएकांतनय अंगीकारकरीनेप्रवर्त्तनारा वैराग्यवंतनेपणकुग्रहीकहिये, तोबीजामात्र नामधरावनारहोय तेनीतोशीवार्ता ? एकनयवालोशास्त्रना अर्थनोबाधककरता जाणवो. तेजोपण जैनाजासछे तोपण पापकारी जाणवो ॥३४॥

उत्सर्गे चापवादेपि व्यवहारेथ निश्चये ॥ ज्ञाने कर्म्मणि वायं चेन्न तदा ज्ञानगर्जता ॥ ३५ ॥ स्वागमेन्यागमार्थानां शतस्येव परार्ध्यके ॥ तावताप्यबुधत्वं चेन्न तदाज्ञानगर्जता ॥३६॥

अर्थ ॥ उत्सर्गमार्गमां, अपवादमार्गमां. व्यवहारमार्गमां, निश्चयमार्गमां, ज्ञाननयनेविषे अनेक्रियानयनेविषे जोकदाग्रहनथी, तोतेनेज्ञानगर्जितपणुंछे, अनेतेज्ञानिपणछे ॥ ३५ ॥ स्वसिद्धांतनाजाणवाथी अन्यशास्त्रनुं जाणवुंते तेमांजसमायीजायछे. जेमपरार्ध्यनाम उत्कृष्टगणितछे, तेमांसोनुगणितपण समाइजायछे, अनेतेटलुं ज्ञानपामिनेपण जोअज्ञानपणुंरहेतो, तेनेज्ञानगर्जिताबिलकुलनथी एमजाणवुं ॥ ३६ ॥

नयेषु सार्थसत्येषु मोघेषु परचालने ॥ माध्यस्थ्यं यदि नायातं
न तदा ज्ञानगर्भता ॥३७॥ आज्ञयागमिकार्थानां यौक्तिकानां
च युक्तितः ॥ न स्थाने योजकत्वं चेन्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ पोतपोताना स्वार्थनेविषे सघला नयसत्यछे, तेपरमार्थनी चालनानेविषे निष्फलछे, अनेतेनयना विवादमांजो मध्यस्थता न आवी तोतेनेज्ञानगर्भताछेजनही॥३७॥ जेआज्ञाग्राह्यअर्थने आज्ञायें ग्रहेनही, आगमप्रमाणेग्रहवायोग्यने आगमें ग्रहे नही, अनेयुक्तिग्राह्यनेयुक्तिवडेग्रहेनही, एमसहुने पोतपोतानेठेकाणे जोडीजाणेनही,तोतेने ज्ञानगर्भिता मूलथीजनथी एमजाणवुं ॥ ३८ ॥

गीतार्थस्यैव वैराग्यं ज्ञानगर्भं ततः स्थितं ॥ उपचारादगीतस्या
प्यभीष्टं तस्य निष्ठया ॥ ३९॥ सूक्ष्मेक्षिका च माध्यस्थ्यं सर्वत्र
हितचिंतनं ॥ क्रियायामादरोभूयान् धर्मे लोकस्य योजनं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उपरकह्या मुजबतो गीतार्थनेज ज्ञानगर्भितवैराग्यछे, पणअज्ञानीनेनथी, एमठर्युं. तोपणतेनाउपचारथकी अगीतार्थने पणगीतार्थनीनिष्ठायें ज्ञानगर्भितवैराग्यछे ॥ ३९ ॥ तेमाटेसूक्ष्मदृष्टियें मध्यस्थपणुं अंगीकारकरीने अनेपरदूषण तजीने-वर्त्तवुं, सर्वजगतनाजीवनुं हितचिंतववुं, मैत्रीभावधरवो, क्रियानेविषेघणो आदरकरवो, उपयोगधरवो, अनेधर्ममार्गमां लोकनेजोडवा, एहिजश्रेष्ठछे ॥ ४० ॥

चेष्टा परस्य वृत्तांते मूकांधबधिरोपमा ॥ उत्साहः स्वगुणाभ्यासे
दुःस्थस्येव धनार्जने ॥ ४१ ॥ मदनोन्मादवमनं मदसंमर्द
मर्दनं ॥ असूयातंतुविच्छेदं समतामृतमज्जनं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ मुगाने तथाआंधलाने अनेबेहराने बोलवामां देखवामां अनेसांभलवामां इत्यादिकपारकावृत्तांतनेविषे जेणेचेष्टातजीछे; अनेपोताना गुणनाअभ्यास करवामां जे उत्साहवंतछे; जेमदरिद्रीधनकमाववानो उद्यमीहोयतेनीपरें उजमालथकोवर्त्ते ॥ ४१ ॥ कामनाउन्मादनुं वमनकरनारा,मदनासमूहने टालनारा, ईर्षारूपतंतुनातोडनारा, अने समतारूपअमृत कुंडमांमज्जनकरनारा ॥ ४२ ॥

स्वभावान्नैव चलनं चिदानंदमयात्सदा ॥ वैराग्यस्य तृतीयस्य
स्मृतेयं लक्षणावली ॥ ४३ ॥ ज्ञानगर्भमिहादेयं द्वयोस्तुस्वो
पमर्दतः ॥ उपयोगः कदाचित् स्या न्निजाध्यात्मप्रसादतः॥४४॥

अर्थ ॥ तथा चिदानंदमयपणाना स्वन्नावथी सर्वदा चलायमाननही एहवावर्त्तणुकवंत जेहोय. एत्रीजा ज्ञानगर्न्नित वैराग्यनागुणनी लक्षणावलीकही ॥ ४३ ॥ इहां ज्ञानगर्न्नितवैराग्यतेग्रहवायोग्यछे; अने मोहगर्न्नितवैराग्य तथा दुःखगर्न्नितवैराग्यनुं उपमर्दनकरीने पोतानाअध्यात्मन्नावनाप्रसादथकी कदाचित् ज्ञानगर्न्नितवैराग्यनो उपयोगथाय ॥ ४४ ॥ इतिश्रीवैराग्यन्नेदाधिकारः षष्टःसमाप्तः ॥

विषयेषु गुणेषु च द्विधा न्नुवि वैराग्यमिदं प्रवर्त्तते ॥
अपरं प्रथमं प्रकीर्तितं परमध्यात्मबुधैर्द्वितीयकं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पृथ्वीनेविषे विषयमांअने गुणमांएवेदुप्रकारे वैराग्यप्रवर्त्तेछे. तेमांविषयवैराग्यतो अमुख्यपणेकह्योछे. बीजोअध्यात्मन्नावयुक्तगुणवैराग्यतेमुख्यपणेजाणवो ॥१॥

विषयानुपलंन्नगोचरा अपि चानुश्रविकाविकारिणः ॥
न न्नवंति विरक्तचेतसां विषधारेव सुधासु मज्जतां ॥२॥

अर्थ ॥ जेविषयवैराग्यछेते, प्राप्तिगोचरपणे वर्त्तेछे, पणनिश्चेंथी ज्ञातापुरुषतेरूपरसादिकनेविषे आसक्तिकरेनही. जेविरक्तचित्तवालाते अविकारीथकाजहोय. केमकेजेअध्यात्मरूप अमृतधारानेविषे मज्जनकरताहोय, तेहनेविषनीधाराशुंकरनारछे ? अर्थात् तेहनेकांइविषनीधारापीडा करीशकतीनथी ॥ २ ॥

सुविशालरसालमंजरी विचरत्कोकिलकाकलीन्नरैः
किमु माद्यति योगिनां मनो निन्नृतानाहतनादसादरं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेयोगीश्वर अनहदनादेसहितछे, तेनेयोगमार्गेकरीने सर्व देहरंध्रपुरीने "अर्हंपद" अथवा "सोहं"पद अथवाॐकारध्वनि मनमांधरेछे, तेनोब्रह्मद्वारेजे नाद उठेछे तेनुंनाम अनहदनाद कहियें, तेणेकरीजेयुक्तछे तोतेवायोगीश्वरनुंमन न्नलीविस्तारवंती आंबानीमंजरीनेविषे विचरतीजे कोकिला तेना मनोहर शब्दसांन्नलीनेशुंमग्नथशे ? अर्थात्नहीजथशे ॥३॥

रमणीमृदुपाणिकंकणक्कणनाकर्णनपूर्णघूर्णनाः ॥ अ
नुन्नूतनटीस्फुटीकृत प्रियसंगीतरता न योगिनः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनासुकोमल हाथमांरह्यांजेकंकण तेनोशब्दसांन्नलीने पूर्णपणे घुम्यांछे लोचन तेनीअनुन्नवनदिशारूप नाटककरनारीस्त्रीयें प्रियकारीसंगीतबंध कीधांतो, तेमां योगीश्वरनुंमन रंगायनही, एटलेलोन्नायनही ॥ ४ ॥

स्खलनाय न शुद्धचेतसां ललनापंचमचारुघोलना ॥
यदियं समतापदावली मधुरालापरते न रोचते ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीपंचमरागनी घोलनाते समतापदनीश्रेणिना मधुरआलापनी रतिवालाशुद्धचेतनावंत जोगीनेरुचेनही, एटलेशुद्धचेतनावंतने खलनाकारीनथाय ॥ ५ ॥

सततंक्षयि शुक्रशोणितप्रभवं रूपमपि प्रियं नहि ॥
अविनाशिनिसर्गनिर्म्मलप्रथमानस्वकरूपदर्शिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अविनाशी सहजनिर्मल अनेविस्तारपामतुं एहवुंजे पोतानुंस्वरूप तेहनाजोनार योगीश्वरतेनेतोजेनुं निरंतर शीलक्षयथायछे अनेवीर्यरुधिरथी उपनुंएवुंजे स्त्रीआदिकनुं रूपते प्रियकारीलागतुंनथी ॥ ६ ॥

परदृश्यमपायसंकुलं विषयो यत्खलु चर्मचक्षुषः ॥
न हि रूपमिदं मुदे यथा निरपायानुभवैकगोचर ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेवोनिरपाय के० जेहनोनाशनथी एहवोअनुभवदिशाने जोवानोरसछे तेवो रूपते परपदार्थके० बीजानेजोवायोग्यछे, तथानाशवंतछे; अनेचर्मचक्षुनोविषयछे एहवो जेरूप तेजोवाथकीतेनोजेरसते निश्चयनयथकी हर्षकारीनथाय ॥ ७ ॥

रतिविभ्रमहास्यचेष्टितै र्ललनानामिह मोदते ऽबुधः ॥
सुकृताद्रिपविष्वमीषु नो विरतानां प्रसरंति दृष्टयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ रतिसुखनेदेखीने तथास्त्रीनानेत्रविभ्रमनी चेष्टायेंकरीने अबुद्धजेअज्ञानी प्राणी तेघणोहर्षपामेछे, पणए विभ्रमविलासादिकतो सुकृतरूप पर्वतनेवज्रथइ भेदेएवाछे माटेयोगीश्वरनी दृष्टितेमांरमतीनथी ॥ ८ ॥

न मुदे मृगनाभिमल्लिकालवलीचंदनचंद्रसौरभं ॥ विदुषां निरुपाधिबाधित स्मरशीलेन सुगंधिवर्ष्मणां ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ कस्तुरी, मालतीनापुष्प, लवलीके०एलचीचंदनतथाचंद्रके०कपुरनीसुगंधीते पंडितलोकोने मग्नकरतीनथी; तेमनेतो निरुपाधिक अनुभवगोचर स्वरूपचिदानंदने विषेज मग्नपणुवर्त्तेछे, पणरूपादिकनेविषेमग्नतापणुं नथी ॥ ९ ॥

उपयोगमुपैति यच्चिरं हरते यन्नविभावमारुतः ॥ न ततः खलु शीलसौरभा दपरस्मिन्निह युज्यते रतिः ॥ १० ॥

अर्थ॥ जे घणाकालसुधी उपयोगमांआवे,जेनीसुगंधीने विभावदिशारूपवायु हरी शकतोनथी, एवीजेशीलसुगंधीतेनेमूकी योगीश्वरनुं चित्तअन्यसुगंधीमां लोभातुंनथी॥१०॥

मधुरैर्न रसैरधीरता क्वच नाध्यात्मसुधालिहां सता ॥ अ
रसैः कुसुमैरिवालीनां प्रसरत्पद्मपरागमोदिनां ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम विकस्वरथतां जे कमल तेना स्वाद सुगंधयुक्त रसेमग्नथया एवाजेभ्रमर ते निरस कुसुमउपररतिपामेनही, तेम अध्यात्मरूप अमृतरसनाजोगी जेप्राणी तेने बीजाशर्करादिक मधुररसनी अधीरजताउपजतीनथी; गृधतापणुं करेनही ॥ ११ ॥

विषमायतिभिर्नु किं रसैः स्फुटमायातसुखैर्विकारिभिः ॥
नवमे नवमे रसे मनो यदि मग्नं सतताविकारिणि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जे आगल करूवा विपाकआपे एवामधुररसेशुंसारुं ? वलीप्रगटपणे राज्य रुद्धि स्त्रीविषयादिक सुखपाम्याअनेतेपाछांजतांरहे तेथीविक्रियाप्रगटे तोतेवांसुखथी शुंसारुं? जोसदायअविकारी एवोपूर्णनवमोजेशांतरस तेनेविषे मनमग्नछे, तो पूर्वेकह्या एवारसेशुंफायदोथाय ! अर्थात्कांइजनही ॥१२॥

मधुरं रसमाप्य निःपते द्रसनातोरसलोभिनां जलं ॥ परि
भाव्य विपाकसाध्वसं विरतानां तु ततोदृशोर्जलं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एकअचरत जुवो,के रसना लालचीजेप्राणी तेमधुररसने जोइने अथवा खाधानीवात सांभलीने केहेछेके, मारामुखमांपाणीभरायछे एटलेजीभथीपाणीपडेछे. अनेसर्वविरतिजे मुनिराजते मांसादिकमधुररसखाधे आगलमाठाविपाकआवशे, ते नाभयनेविचारी वेउआंखेपाणीआणेछे, एटलेआंखमांथी आंसुपाडेछे ॥ १३ ॥

इह ये गुणपुष्पपूरिते धृतिपत्नीमुपगुह्य शेरते ॥ विमले सु
विकल्पतल्पके क्व बहिःस्पर्शरता भवंतु ते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इहांचरणकरणादिकजे गुणतेरूपफुलेंपुरीएवी निर्मलजे सुविकल्पके०मन-कुशलतारूपशय्या तेहनेविषे संतोषरूपस्त्रीने आलिंगन देइनेसुएछे, तेवामुनिराज ते बाह्यस्त्रीना स्पर्शविषेरतकेमथाय ? ॥ १४ ॥

हृदि निर्वृतिमेव बिभ्रतां न मुदे चंदनलेपनाविधिः॥
विमलत्वमुपेयुषां सदा सलिलस्नानकलापि निःफला ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ रुदयनेविषे निवृत्ति सुखनेधरनारा जेप्राणी तेनेबावनाचंदनना लेपनी विधि तेहर्षआपतीनथी. तथासदैवनिर्मलभावने धरताजेप्राणी तेनेजलस्नानविधि तेनिष्फलजाणवी ॥ १५ ॥

गणयंति जनुः स्वमर्थवत्सुरतोल्लाससुखेन जोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छनामयतुल्यं तु तदेव योगिनः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोगीप्राणीस्त्रीसाथे विलाससंजोगना सुखेकरी जन्मारोसफलमानेछे, अने योगीश्वरपुरुषतोमदनजेकाम तेनीचेष्टानेसर्पनाविषनी आकरीमूर्छातुल्यमानेछे॥१६॥

तदिमे विषयाः किलैहिका न मुदे केपि विरक्तचेतसां ॥ पर
लोकसुखेपि निःस्पृहाः परमानंदरसालसा अमी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वेरागीजीवने आभवमांक्षणिकसुखआपे एवाजेविषय तेनिश्चयथकीकांइप णहर्षकारीनथी, केमकेत्यागीप्राणीतोपरलोक जेस्वर्गादिकनांसुख तेनेविषेपण निस्पृहीछे; तेतोमात्रमोक्षसुखनाजअभिलाषीछे ॥ १७ ॥

मदनमोहविवादमत्सर ज्वरबाधाविधुराः सुरा अपि॥ विष
मिश्रितपायसान्नवत् सुखमेतेष्वपि नैति रम्यतां ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ गर्वअज्ञानविषादअने मत्सरतेरूपभावनी पीडायेंरहितएवाजे देवतातेहना जेविषयादिकसुख तेपणविषमिश्रितदुधपाकनाभोजननीपरें मनोहरकारीनथी ॥ १८ ॥

रमणीविरहेण वन्हिना बहुबाष्पानिलदीपितेन यत् ॥ त्रिद
शैर्दिवि दुःखमाप्यते घटते तत्र कथं सुखस्थितिः ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ केमके स्त्रीनावियोगरूपअग्नि तेआंसुरूप वायरेकरी देदीप्यमानथयो एह-वोजे शोकरूपअग्नि प्रगट्यो,तेथी स्वर्गनादेवतानेपण पीडाथायछे, तेवारेंस्वर्गमांदेवताने पणसुखनीस्थितिछे, एहवुं केमकहेवाय? ॥ १९ ॥

प्रथमानविमानसंपदां च्यवनस्यापि दिवोविचिंतनात् ॥
हृदयं न हि यद्विदीर्यते द्युसदां तत्कुलिशाणुनिर्मितं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेने विमानसंपदामोटीछे, एवादेवतानेपण च्यवनवेलायेंजे दुःखप्रगटेछे, तेदुःखथीदेवतानुं हृदयमात्रफाटतुंनथी, तेनुंकारणजे तेमनोहृदयतेवज्रनापरमाणुयें-करी उत्पन्नकरेलुंछे, तेथीघणुंकठणछे; माटेजफाटतुंनथी ॥ २०॥

विषयेषु रतिः शिवार्थिनां न गतिष्वस्ति किलाखिलास्वपि ॥
घननंदनचंदनार्थिनो गिरिभूमिष्वपरद्रुमेष्विव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेमनिबिड नंदनवनना चंदननाविलेपनवालाने पर्वतनीभूमियें अथव

बीजाकोइपणवृंदेंरतिथातीनथी, तेममोक्षार्थिने विषयउपर प्रीतिथतीनथी, तेमजमनुष्य तथा स्वर्गप्रमुख समग्रगतिनेविषे पण प्रीतिथतीनथी ॥ २१ ॥

इति शुद्धमतिः स्थिरीकृता ऽपरवैराग्यरसस्य योगिनः ॥
स्वगुणेषु वितृष्णतावहं परवैराग्यमपि प्रवर्त्तते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमविचारी शुद्धबुद्धिस्थिरकरीने जेनेबीजावैराग्यनो गुणप्रगट्योछे, तेवायोगीने आत्मगुणनेवधारे एवीवितृष्णाना आगमरूप परमवैराग्यप्रगटथाय ॥२२॥

विपुलर्द्धिपुलाकचारण प्रबलाशीविषमुख्यलब्धयः ॥
न मदाय विरक्तचेतसा मनुषंगोपनताः पलालवत् ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ विपुललब्धि, पुलाकलब्धि, चारणलब्धि, महोटीआशीविषलब्धि, प्रमुख अनेक लब्धिओजोपणउपजे, तोपण तेवैरागीमुनीने अहंकारजणीथायनही, मात्रएक मुक्तिसुखविना पलालना पुंजरूपतेमानेछे ॥ २३ ॥

कलितातिशयोपि कोपि नो विबुधानां मदकृद्गुणव्रजः ॥ अधिकं न विदंत्यमी यतो निजभावे समुदंचति स्वतः ॥२४॥

अर्थ ॥ पंडितते कोइ मोटाअतिशयादिगुणना समूहेंसहितहोय,तोपणमदकरेनही अनेतेथीकांइ अधिकतापणनगणे, मात्रपोताना शुद्धस्वभावमांज आनंदपामे ॥ २४ ॥

हृदये न शिवेपि लुब्धता सदनुष्ठानमसंगमंगति ॥
पुरुषस्य दशेयमिष्यते सहजानंदतरंगसंगता॥२५॥

अर्थ ॥ पोतानाहृदयनेविषे मुक्तिसुखउपरपण लुब्धतानथी, एकसद्अनुष्ठानरूप सहेजानंदना कल्लोलने मलतीअसंगानुष्ठानरूपपुरुषनी जेदशातेने वांछेछे; पामेछे॥२५॥

इति यस्य महामतिर्भवे दिह वैराग्यविलासभृन्मनः ॥ उपयंति वरितुमुच्चकै स्तमुदारप्रकृतिं यशःश्रियः ॥२६॥

अर्थ ॥ वैराग्यविलासीपुरुषने एवीबुद्धिउपजेछे; तेनेवाउदारप्रकृतिवालाने यशरूपजेलक्ष्मी तेहर्षेधरीने वरवानेइछेछे. इतिश्रीवैराग्य विषयाधिकारःसप्तमः समाप्तः ॥२६॥

निर्ममस्यैव वैराग्यं स्थिरत्वमवगाहते ॥ परित्यजेत्ततः प्राज्ञो ममतामत्यनर्थदां ॥ १॥ विषयैः किं परित्यक्तै र्जागर्ति ममता यदि ॥ त्यागात्कंचुकमात्रस्य भुजंगो नहि निर्विषः ॥ २ ॥

र्थ ॥ ममतारहितप्राणीनेज वैराग्यस्थीरपणेरहेछे, तेमाटे बुद्धिवंतप्राणीयें अन-

र्थदायकजे ममतातेनेतजवी ॥ १ ॥ जेमसर्पकांचली काढवाथी विषरहितथतोनथी, तेमजेनेममता जागेछे तेविषयने त्यागकरे, तोपण त्यागीथतोनथी ॥ ४ ॥

कष्टेन हि गुणग्रामं प्रगुणीकुरुते मुनिः ॥ ममता राक्षसी सर्वं
भक्षयत्येकहेलया ॥ ३ ॥ जंतुकांतं पशूकृत्य छागविद्यौ
षधिबलात् ॥ उपायैर्बहुभिः पत्नी ममता क्रीमयत्यहो ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेगुणसमूहनेमुनिराज घणाकष्टेकरीप्रगटकरेछे, तेने ममतारूपराक्षसी एक कोलीयेंखाइजायछे ॥ ३ ॥ केवुंआश्चर्यछेके स्त्रियाराज्यनीपेरे ममतारूपस्त्री ते जीवरूपभर्त्तारने पशुजेमर्कट तेरूपेंकरीने शीघ्रपणेअज्ञानरूप जडीबुटीनाबलथकी घणेंप्रकारेनचावीने रमाडेछे ॥ ४ ॥

एकः परभवे याति जायते चैकएव हि ॥ ममतोद्रेकतः सर्वं सं
बंधं कल्पयत्यथ ॥ ५ ॥ व्याप्नोति महतींभूमिं वटबीजाद्य
था वटः ॥ तथैकममताबीजा त्प्रपंचस्यापि कल्पना ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एकलुंचेतन परभवेजायछे अनेएकलुंज आभवेंआवेछे, पणममताने वश थइने रत्नादेवीनीपरें मिथ्यासगपण न्यातजातवगेरेनी कल्पनाकरेछे ॥ ५ ॥ जेम एक वरूना बीजथकी घणीधरतीयें वडव्यापीनेविस्तारपामेछे;तेमएकममताना वीजथकी वणाप्रपंचनी कल्पनाउठेछे ॥ ६ ॥

माता पिता मे भ्राता मे भगिनी वल्लभा च मे ॥ पुत्राःसुता मे मि
त्राणि ज्ञातयः संस्तुताश्च मे ॥ ७ ॥ इत्येवं ममताव्याधिं वर्द्धमा
नं प्रतिक्षणं ॥ जनःशक्नोति नोछेत्तुं विना ज्ञानमहौषधं ॥८॥

अर्थ ॥ मातापिता, भाइ, बेन, स्त्री, एसर्वेमाहरांछे; पुत्र, पुत्री, मित्र,एपणमाहरांछे; न्याति परिचित एमाहरांछे ॥ ७ ॥ एप्रकारेंममतारूपरोग दिवसेंदिवसें वधतोजायछे, तेनेमटाडवाने कोइपणज्ञानरूप औषधविना समर्थथातोनथी ॥ ८ ॥

ममत्वेनैव निःशंक मारंभादौ प्रवर्त्तते ॥ कालाकालसमुछायी
धनलोभेन धावति ॥ए॥ स्वयं येषां च पोषाय खिद्यते ममता
वशः ॥ इहामुत्र च ते न स्यु स्त्राणाय शरणाय वा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमवेलाकवेलाउठीने विप्रबेमासासोतुं लेवानेगयो, तेनीपरेंएक ममतायेंकरीनेनिःशंकपणे आरंभमांप्रवर्त्तेछे; ममणशेठपरें धननेलोभेकरीदोडेछे ॥ ए॥ परभवमां इहांनुंकुटुंब शरणआधारनथी, तोपणकुटुंबनेपोषवानी ममतामां खेदपामेछे ॥ १० ॥

ममत्वेन बहून् लोकान् पुष्णात्येकोर्जितधनैः ॥ सोढा नरक
दुःखानां तीव्राणामेक एव तु॥११॥ममतांधोहि यन्नास्ति तत्प
श्यति न पश्यति॥जात्यंधस्तु यदस्त्येत भेद इत्यनयोर्महान् ॥१२॥

अर्थ ॥ पोतेएकलो धनमेलवीने ममत्वेंकरीने घणालोकने पुष्टिकरेछे, पणपरनवमां आकरांनारकीनांदुःखआवशे, तेवारेंएकलोजनोगवशे. ॥११॥जीवतोआंधलोनथी, पण ममतायेंकरी नास्तिकपदार्थने खरुंकरीमानेछे, तेहनेमिथ्यादृष्टिअंधकहियें, केमके तेनीचर्मचक्षुछे, तोपणतेचक्षुयेंकरी आत्मिकअर्थने नथीदेखतो, माटेएनेदेखतो पणआंधलोजजाणवो;अनेजेजातिअंधतो छे पणज्ञानीनेसंयोगें आत्मार्थने जुए छे, माटेएबेप्रकारना अंधमां घणोअंतरछे ॥ १२ ॥

प्राणाऽनित्यताध्यानात् प्रेमभूम्ना ततोधिकां ॥ प्राणापहां प्रि
यां मत्वा मोदते ममतावशः॥१३॥ कुंदान्यस्थीनि दशनान् मुखं
श्लेष्मगृहं विधं॥मांसग्रंथी कुचौ कुंभौ हेम्नो वेत्ति ममत्ववान्॥१४॥

अर्थ ॥ रागदिशायेंकरीने प्राणनेअनित्यमाने पणप्राणनी लेनारीजेस्त्री तेनेममताने वशथइ वल्लनजाणीने हर्षपामेछे ॥१३॥ तेस्त्रीनादांतयद्यपि हाडकांनाछे, तोपणतेने कुंदफुलनी कलिनाजेवाजाणे, अनेश्लेष्मजेलाल तेणेकरी नरेलुं मुखहोय तेनेचंद्रतुल्यवखाणेछे, अनेस्तनमांसनागंठाछे तेनेसोनाना कलशसमान लेखेछे, ए वातो सर्वेममत्वनेलीधे थायछे ॥ १४ ॥

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् क्रियामन्यदेव च ॥ यस्या स्तामपि लो
लार्दी साध्वीं वेत्ति ममत्ववान्॥१५॥या रोपयत्यकार्येपि रागि
णां प्राणसंशये॥दुर्वृत्तां स्त्रीं ममत्वांध स्तां मुग्धामेव मन्यते ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीतेस्त्रीकेवीछे ? जेनामनमांकोइकहोय, अनेवचनमां वली बीजो कोइक होय,अनेनोगतोवली कोइस्त्रीजानी साथेजकरे, एवीछे. तेनेवैरागीपुरुषकहेछे, जेएस्त्री थकी सर्वेसरखुं. एटलेस्त्रीने सर्वेथीजुंफीगणेछे; पणजेप्राणीममतावंतछे, तेतोएवीचंचल नेत्रवालीस्त्रीने सतीमानेछे ॥ ५ ॥ स्त्रीपोतानारागी धणीनेमरण थाय एवांकाम नलावे, अनेतेपण ममत्वेंआंधलोपुरुष तेकार्यकुटाइ पीटाइनेकरे. वली स्त्रीव्यनिचारणी होय,तोपणतेनेनोलीकरीमाने. तेउपरएक दृष्टांतछे. “लालीकेतीबापफी अवला खेलमखेल, ज्यांथीलाव्योलाकफी त्यांनीत्यांजइमेल” ॥ १६ ॥

चर्माछादितमांसास्थि विण्मूत्रपिठरीष्वपि ॥ वनितासु ममत्वं
य त्तन्ममत्वं विजृंभितं ॥ १७ ॥ लालयन्बालक नोते त्येवं ब्रुते
ममत्ववान् ॥ वेत्ति च श्लेष्मणा पूर्णा मंगुलीममृतांचितां॥१८॥

अर्थ ॥ जेममत्वनी चेष्टाते धूललीला सरखीछे, तेनेवशथइरह्यो एवोजेपुरुषते हाड,मांस,विष्टा,मूत्र,तथा चर्मेथीमढेली हांरुलीजेवीस्त्रीउपरप्रेमकरेछे;ममत्वधरेछे॥१७॥ वलीममत्वेंकरीने पोतानापुत्रनेरमाडे तेवखतेतेनेबापबापकरीकहे. अने तेबालकना हाथनीआंगलीयो श्लेष्मथीभरीहोय तेनेअमृतसमानजाणे ॥ १८ ॥

पंकार्द्रमपि निःशंका सुतमंकान्न मुंचति ॥ तदमेध्येपि मेध्यत्वं जा
नात्यंबा ममत्वतः ॥ १९ ॥ मातापित्रादिसंबंधो नियतोपि म
मत्वतः ॥ दृढभूमि भ्रमवतां नैयत्येनावभासते ॥ २० ॥

अर्थ ॥ मोहथकी बालकनीमाता पोतानाबालकने कादवेंभर्योहोय, तोपणनिःशंकपणे खोलामांथी मूकतीनथी; वलीविष्टायेंअशुचिहोय, तोपणतेबालकने तेनीमाता मोहनावशथकी तेहनेपवित्रगणेछे ॥ १९ ॥ जेमधरती शाश्वतदृढछे, पणधतुरानाफलभक्षकरनार प्राणीनेफेरआवेछे, त्यारेतेनेधरतीफरतीजणायछे तेममातापितादिकनो संबंध संसारमां अनादिनो शाश्वतछे; पणमोहवशेमुंझाणोप्राणी एमकहेछेजे, मातामरीगइ; हवेकेमथशे ? शीरीतेंचालशे ? ॥ २० ॥

भिन्नाः प्रत्येकमात्मानो विभिन्नाः पुद्गला अपि ॥ शून्यसंसर्ग इ
त्येवं यः पश्यति स पश्यति ॥२१॥अहंताममते स्वत्वस्वीयत्वभ्र
महेतुके ॥ भेदज्ञानात्पलायेते रज्जुज्ञानादिवाहिभिः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ तेमप्रत्येकेंजीवपण जुदाजुदाछे, अनेतेकइगतिथीआव्या अनेकइगतियें जशे ? तेमपुद्गलपणजुदाछे, तथाशरीरनो संगपणशुन्यछे, एरीतेजेदेखेछे; तेनेदेखतो जाणवो ॥२१॥ जेमदोरडानुं ज्ञानथये सर्पनीभीति नाशपामेछे, तेमहुंअनेस्त्रीआदिक माहरीछेएवो ममत्वथायछे,तेभ्रमहेतुछे. तेभ्रमभेद ज्ञाननजरेंजोवाथी नाशपामे ॥२२॥

किमेतदिति जिज्ञासा तत्त्वाभिज्ञानसंमुखी ॥ व्यासंगमेव नोत्थातु
र्दत्ते क्व ममतास्थितिः ॥ २३ ॥ प्रियार्थिनः प्रियाप्राप्तिं विना क्वा
पि यथा रतिः ॥ न तथा तत्त्वजिज्ञासो स्तत्त्वप्राप्तिं विना क्वचित्॥२४॥

अर्थ ॥ एसंसारनोसंबंधशुंछे? एमआत्मतत्त्वने सन्मुख ओलखवानी इछाथइ. ए

टलेममता तरतनाशपामे. आत्मज्ञानीआगल ममताकिहांठेकाणेरहे? ॥ २३ ॥ जेमकामीपुरुष स्त्रीनोअर्थीथयो, तेस्त्रीपाम्याविना कोइपणठेकाणे रतिनपामे, तेमतत्त्वनोजाण पुरुषपण तत्त्वपाम्याविना क्यांयेंरतिनपामे ॥ २४ ॥

अत एव हि जिज्ञासा विष्कंभति ममत्वधीः ॥ विचित्राभिनयाक्रांतः संभ्रांत इव लक्ष्यते ॥२५॥ धृतो योगो न ममता हता न समताऽऽहता॥न च जिज्ञासितं तत्त्वं गतं जन्म निरर्थकम् ॥ २६ ॥ जिज्ञासा च विवेकश्च ममतानाशकावुभौ ॥ अतस्ताभ्यां निगृह्णीया देनामध्यात्मवैरिणीं ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ एकारणमाटे तत्त्वजाणवानी इच्छायेंकरी ममतानीबुद्धिजेणेदबावीछे, ते प्राणी विचित्रप्रकारनी नय, गम, भंग, रचनायें व्याप्योथको संसारना सर्वपदार्थने संभ्रांतजाणे, एटलेइंद्रजालवत्जाणे ॥ २५ ॥ जेणेजोगपणधर्योनही, अनेममता पण हणीनही, तथा समतापणआदरीनही, वलीशास्त्रजाणवानी इच्छापणनकरी, तेनोनरजन्मनिष्फलगयो, एमजाणवुं ॥ २६ ॥ एकजाणवानी इच्छा अनेबीजोविवेक ए बेममताने नाशकरनाराछे. तेमाटेएबेहुथकी ममतानो निग्रहकरवो. कारणके ममता ते अध्यात्मनी दुश्मनछे ॥ २७ ॥ इतिममता त्यागाधिकारः अष्टमसमाप्तः ॥

त्यक्तायां ममतायां च समता प्रथते स्वतः ॥ स्फटिके गलितोपाधौ यथा निर्मलतागुणः ॥१॥ प्रियाप्रियत्वयोर्यार्थे व्यवहारस्य कल्पना निश्चयात्तव्युदासेन स्तैमित्ये समतोच्यते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेसमता आववानो अधिकारकहेछे. जेमस्फटिकनेविषे उपाधिपणुंटले, तेवारें निर्मलतापणुंवधेछे, तेमजेवारें ममतानोत्यागथाय तेवारेंपोतानीमेलेज समताविस्तरे ॥ १ ॥ संसारनेविषेपोताने अर्थेकोइकामपडे तेवारें एसंजाणेजेआमाहरो वहालोछे,अनेआदुश्मनछे,पणएसर्व व्यवहारकल्पनाछे; निश्चयथकीतो तेव्यवहारनाशेकरी मध्यस्थपणुंपामे; तेवारेंज तेसमतावंत केहेवाय ॥ २ ॥

तेष्वेव द्विषतः पुंस स्तेष्वेवार्थेषु रज्यतः ॥ निश्चयात्किंचि दिष्टं वाऽनिष्ट वा नैव विद्यते॥३॥एकस्य विषयो यः स्या त्स्वाभिप्रायेन पुष्टितः ॥ अन्यस्य द्वेष्यतामेति स एव मतिभेदतः ॥४॥

अर्थ ॥ व्यवहारकल्पनावालोतो जेनेविषेद्वेषलावे तेनेजविषे पोतानांअर्थसाधनेकरि राजीथाय;पणजोनिश्चयथकीविचारे, तोएमांकांइ इष्टनथी, तेमअनिष्टपणनथी,

॥ ३ ॥ एकविषयजे एककार्यछे तेएकजणने पोतानीरुचियेंपुष्टकारीछे अनेबीजानेतेथीज द्वेषउपजेछे. एमतिकल्पनानाभेदछे, एमजाणवुं ॥ ४ ॥

विकल्पकल्पितं तस्मा द्वयमेतन्न तात्त्विकं ॥ विकल्पोपरमे तस्य द्वित्वादिवदुपक्षयः ॥५॥ स्वप्रयोजनसंसिद्धिः स्वायत्ता भासते यदा ॥ बहिरर्थेषु संकल्पसमुत्थानं तदा हतं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इष्टअनिष्ट ए विकल्पनीकल्पनाथकीछे;एवेनेजरागद्वेषजाणवा. पणएमांकांइ तत्त्वनथी. जोमनथीविकल्पजाय, तोरागद्वेष एवेहुदूरथाय ॥५॥ पोताना प्रयोजननी-सिद्धि जेवारेंपोताने स्वाधीनथाय, तेवारेंबाहारना अर्थसंकल्पनो उठावनाशपामे ॥६॥

लब्धे स्वभावे कंठस्थस्वर्णन्यायाद्भ्रमक्षये ॥ रागद्वेषानुप स्थाने समता स्यादनाहता॥७॥जगज्जीवेषु नो भाति द्वैविध्यं कर्मनिर्मितं॥यदा शुद्धनयस्थित्या तदा साम्यमनाहतं ॥८॥

अर्थ ॥ जेमकंठउपररहेलुं सुवर्ण साक्षात्देखायछे, तेमस्वाभाविकगुण पामेथकेवि-भाविकभ्रमणादूरजाय, तेवारें रागद्वेषउठीदूरथाय अनेसमताविशेषेंवधे ॥ ७ ॥ जग-त्नाजीवनेविषे कर्मनुंविचित्रपणुंछे, माटेतेविभावपणुं सारुंनरतुंकेहेवानीरीतें जेवारेंन भासे, तेवारेंशुद्धनयमां रह्योथको प्रबलसमतानेपामे ॥ ८ ॥

स्वगुणेभ्योपि कौटस्था देकत्वाध्यवसायतः ॥ आत्मारामं म नो यस्य तस्य साम्यमनुत्तरं॥९॥ समतापरिपाके स्या द्विषय ग्रहशून्यता॥यया विशदयोगानां वासीचंदनतुल्यता ॥१०॥

अर्थ ॥ पोतानागुणथकी पोतानोआत्मासाक्षीकरीने पोतानाएकशुद्धअध्यवसाय-थकी आत्मानेविषे जेनुंमनरमेछे, तेनीसमताअनुत्तरकहियें ॥ ९ ॥ एमजेनेपाकीसम-ताथइ तेनुंविषयरूपघरसुनुंथयुं; एमजेमुनिनेनिर्मल समतायोगप्रगट्यो, तेमुनिनेवांस-लेंकरी कोइछेदे अथवा चंदनेकरीकोइपूजेतो बेहुतुल्यछे. ॥ १० ॥

किं स्तुमः समतां साधो या स्वार्थप्रगुणीकृता ॥ वैराणि नित्य वैराणा मपि हंत्युपतस्थुषां ॥ ११ ॥ किं दंभेन तपोभिर्वा यमैश्च नियमैश्च किं ॥ एकैव समता सेव्या तरिः संसारवारिधौ ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एवा साधुनीसमतानां शुवखाणकरियें ? जेणेपोतानाआत्मानी सिद्धिकर-वाने समताआदरी, एहवामुनितें समतारूपघरमांरहेताथका आजवनातथा आगला-

कइकभवतेसर्वं भवनांवैरभावने टालीनाखेछे, जेमनित्यपासेंवसतांथका कुतराअने मांजरीके० बिलाडीतेमनांवैरपण शमीजायछे, तेहनीपरेंजाणवुं ॥ ११ ॥ कपटीवेशधारण करवाथीशुंथाय! तथाघणीतपस्यायेंपण शुंथाय! वलीमौनधारी अतीतनीपेरें इंद्रियदमनकीधेशुंथाय? अने व्रतधारणकरेपणशुंथाय! मात्रएकसमताजे संसाररूपसमुद्रतरवामां नौकाजेवीछे, तेनुंजसेवनकरवुंतेद्दिजश्रेष्ठछे ॥ १२ ॥

दूरे स्वर्गसुखं मुक्तिपदवी सा दवीयसी ॥ मनःसंनिहितं दृष्टं स्पष्टं तु समतासुखं ॥ १३ ॥ दृशोः स्मरविषं शुष्येत् क्रोधताप क्षयं व्रजेत्॥औध्दत्यमलनाशः स्यात् शमतामृतमज्जनात्॥१४॥

अर्थ ॥ देवलोकनासुखतोदूरछे. वलीमोक्षपदवीतेतोमोटीछे, अनेभवस्थितिनेहाथछे, तेवारे मननीपासे प्रगटपणेदेखीयें एवीसमतानुंसुखते शुंखोटुंछे! ॥ १३ ॥ समतारूप अमृतकुंडमां स्नानकरवानाप्रभावथी आंखथकी कंदर्परूपदर्पनुं विषसोषाइजायछे; क्रोधरूपताप नाशपामेंछे; उद्धताइरूपी मेल तेपणदूरकरेछे. ॥ १४ ॥

जरामरणदावाग्निज्वालिते भवकानने ॥ सुखाय समतैकै व पीयूषघनवृष्टिवत् ॥१५॥ आश्रित्य समतामेका निर्वृता भरतादयः॥नहि कष्ट मनुष्ठानमभूत्तेषां तु किंचन ॥१६॥

अर्थ ॥ जन्म,जरा,मरण,रूप दावानलेंकरीबलतुंएवुं संसाररूपवनखंड तेमांसमतानुं जेसुखछे, तेअमृतनावरसादसरखुंजाणवुं ॥ १५ ॥ चित्रशालीमध्ये एकजसमताने अवलंबता भरतराजाआदि आठपाट केवलपामिने सिद्धथया, पण तेमने कष्टक्रियाकांइ पण करवीपडीनही, एहवीएसमताछे ॥ १६ ॥

अर्गला नरकद्वारे मोक्षमार्गस्य दीपिका ॥ समता गुणरत्ना नां संग्रहे रोहणावनिः॥१७॥मोहाच्छादितनेत्राणा मात्मरूपम पश्यतां ॥ दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत् ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वलीसमता तेनरकनेबारणे भोगलजेवीछे;अनेमोक्षमार्गनीदीवीछे; वलीगुणरूपरत्ननो संग्रहकरवाने रोहणाचलपर्वतनी भूमिकासरिखीछे ॥ १७ ॥ जेनांनेत्र मोहवडेढंकायांछे अनेजेपोतानास्वरूपने जोइशकतानथी, तेनेदिव्यअंजनआंजवाने समनेकारे शलाकारूपछे; अनेअज्ञाननापडलने छेदनारीछे ॥ १८ ॥

क्षणं चेतः समाकृष्य समता यदि सेव्यते ॥ स्यात्तदा सुखम
प्यस्य यद्वक्तुं नैव पार्यते॥१ए॥कुमारी न यथा वेत्ति सुखं दयित
भोगजं ॥ न जानाति तथा लोको योगिनां समतासुखं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी एकक्षणमात्र मननेखेचीने समतानेसेवे, तेप्राणीने एहवुंसुख प्रगटे, जेहनोमुखेकहेताथकां पारआवेनही ॥ १ए ॥ जेमकुमारिका भरतारनासुखने जाणतीनथी, तेम लोकोपणमुनिराजनी समतानासुखने जाणतानथी ॥ २० ॥

नतिस्तुत्यादिकाशंका शरस्तीव्रः स्वमर्म्मभृत् ॥ समतावर्मगुप्ता
नां नार्त्तिकृत्सोपि जायते ॥ २१ ॥ प्रचितान्यपि कर्म्माणि जन्मनां
कोटिकोटिभिः॥तमांसीव प्रभा भानोः क्षिणोति समता क्षणात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणेसमतानुं बख्तरपेर्खुंछे, तेनेनमस्कार, स्तुति, पूजा, लाभ, परद्रव्यनी इछादिरूप जेपोतानाज मर्मनेलागनारा एहवाजेतीक्षणबाणो तेपीडाकरीशकतानथी. ॥ २१ ॥ जेमसूर्यकिरणप्रकाशथी अंधकारनाशपामेछे, तेमकोटिकोटि भवना प्राणीनां निबिडसंचितजे पापकर्मछेते, समतावडे एकक्षणमांनाशपामेछे ॥ २२ ॥

अन्यलिंगादिसिद्धाना माधारः समतैवहि ॥ रत्नत्रयफलप्राप्ते
र्यथा स्याद्भावजैनता ॥ २३ ॥ ज्ञानसाफल्यमेषैव नयस्थानाव
तारिणः ॥ चंदनं वह्निनेव स्यात् कुग्रहेणतु भस्म तत् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेअन्यलिंगीसिद्धथया तेपण द्रव्यथी मोक्षफलसाधताथका रत्नत्रयनाफलनीप्राप्तिवडे भावथीजैनपणुंपाम्या; माटेतेअन्यलिंगीओनेपण समताते एकआधारभूतहति ॥२३॥ जोनयस्थानके उतारीजोइयेंतो, एसमताजज्ञाननुंफलछे; नेजेमज्ञानवडेभवताप शमेछे, तेमसमतारूपचंदनेकरी भवतापशमीजायछे; पणकुग्रहके० कदाग्रहअज्ञानरूप अग्निवडेतो समतारूपचंदनबली भस्मथायछे ॥ २४ ॥

चारित्रपुरुषप्राणाः समताख्या गता यदि ॥ जनानुधावनावेश
स्तदा तन्मरणोत्सवः ॥ २५ ॥ संत्यज्य समतामेकां स्याद्यत्कष्ट
मनुष्ठितं ॥ तदीप्सितकरं नैव बीजमुप्तमिवोषरे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आसंसाररूपगामनेविषे सर्वलोक क्रयविक्रयकरता दोडादोडकरेछे,तेशुंछे ? तेकहेछे; केजेवारेंचारित्ररूपीपुरुष मरणपाम्यो, तेवारें समतारूपीप्राणपण जतारह्या; पछी तेनामृतकार्यनोउत्सव पाथरणास्नानसूतक वगेरे करवानेजाणियेंएलोको दोडा-

दोडकरेछे एमसमजवुं ॥ २५ ॥ जेमऊखरक्षेत्रमां बीजवाव्युं तेकष्टेफलेनही, तेमएक समतानेछोडी जेप्राणीकष्टक्रियाकरेछे, तेनेरूडुंफल आगलमलतुंनथी ॥ २६ ॥

उपायः समतैवेका मुक्तेरन्यः क्रियाभरः ॥ तत्तत्पुरुषभेदेन तस्या एव प्रसिद्धये ॥ २७ ॥ दिङ्मात्रदर्शने शास्त्रव्यापारः स्यान्न दूरगः ॥ अस्याः स्वानुभवः पारं सामर्थ्याख्योवगाहते ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ मुक्तिनोउपायतो एकसमताछे;बाकीक्रियाकष्ट सर्वेआडंबरछे; तेपुरुषने भेदें-करी एटलेतपजप सर्वेसमतानी प्रसिद्धिछे;पुरुषभेदते गृहस्थ अने मुनिने शीलेछे; ए-टले क्रियाकरवामां गृहस्थ तथा मुनिनो व्यवहारजुदोछे, पणतेबेउनीक्रिया समतायें वखाणवी, एवीशास्त्रनीआज्ञाछे ॥२७॥ शास्त्रनाउपदेशतो जेमकोइआंगलीवडे मार्गब-तावे, पणपोतेकांइसाथेंआवेनही; तेमदिशिमात्रने बतावेएवाछे, पण जेशास्त्रसांभलीने पोतानाअनुभवमांलावी पोतानेसामर्थ्येंकरी पंथअवगाहे,तेजभवाटवीनोपारपामे ॥२८॥

परस्मात् परमेषा यन्निगूढं तत्त्वमात्मनः ॥ तदध्यात्मप्रसादेन कार्योस्यामेव निर्भरः ॥२९॥

अर्थ ॥ परपुद्गलादिक वस्तुतेआत्मानानथी, अने देखवाथी आआत्मापरमपवि-त्रछे; आत्मानेविषेआत्मतत्त्व गुप्तछे. माटेअध्यात्मने प्रसादेकरी समतानेविषे हर्षउल्ला-सकरवो ॥ २९ ॥ इतिसमताधिकारः नवमःसमाप्तः ॥

परिशुद्धमनुष्ठानं जायते समतान्वयात् ॥ कतकक्षोदसंक्रांतेः कलुषं सलिलं यथा ॥१॥ विषं गरलाऽननुष्ठानं तद्धेतुरमृतं परं ॥ गुरुसेवाद्यनुष्ठान मिति पंचविधं जगुः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कतकफलना चूर्णनेयोगें डोहलुंपाणि निर्मलथाय, तेम समतानायोगथी शुद्धअनुष्ठानप्रगटथायछे ॥ १ ॥ विषानुष्ठान, गरलानुष्ठान, अनानुष्ठान, तद्धेतुअ-नुष्ठान ने अमृतानुष्ठान एपांचअनुष्ठान गुरुसेवादिक करणीमांकह्यांछे ॥ २॥

आहारोपधिपूजर्द्धि प्रभृत्याशंसया कृतं ॥ शीघ्रं सच्चित्तहंतृत्वा द्विषानुष्ठानमुच्यते॥३॥स्थावरं जंगमं चापि तत्क्षणं भक्षितं विषं॥यथा हंति तथेदं सच्चित्तमैहिकभोगतः॥४॥

अर्थ ॥ मिष्टान्नभोजननीलालचें, वस्त्रनीलालचें, पूजानीलालचें, दोलतनीइछायें, जेतप जप कष्टक्रियाकरे, तेक्रियापोताना शुभचित्तनीहणनारीछे. एनुंनाम विषअनुष्ठा-

नजाणवुं ॥३॥ स्थावरविषते सोमलजाणवुं, अनेजंगमविषसर्पादिकनुंजाणवुं; एवेउमां-थी एकविषखाधाथी तरतमरेछे, तेमजोगाजिलाषेंक्रियाकरवी तेशुजचित्तनेहणेछे ॥४॥

दिव्यजोगाजिलाषेण कालांतरपरिक्ष्यात्॥ स्वादिष्टफल
संपूर्त्तेर्गरानुष्ठानमुच्यते ॥५॥यथा कुद्रव्यसंयोगजनितं ग
रसंज्ञितं ॥ विषं कालांतरे हंति तथेदमपि तत्त्वतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेदेवेंद्रादिकना सुखपरजवें पामवानीइछाकरीनेतपस्याकरेतेप्राणीकालां तरें नरकगतिपामे. कष्टकरीने अणदीठांफलनीवांछाकरे तेनेगरलानुष्ठानकेहेवुं ॥ ५ ॥ जेमबंगडीचूर्णप्रमुखनिर्बलद्रव्यने संयोगेंप्रगटथतुंविष तेगरलनामाविषकहियें,ते घणा दिवस कष्टपमाडीमारेछे, तेमएपणतत्त्वथी नर्कफलनीप्राप्तिकरेछे ॥ ६ ॥

निषेधध्यानयोरेव विचित्रानर्थदायिनोः ॥ सर्वत्रैवानिदान
त्वं जिनेंद्रैः प्रतिपादितं ॥ ७ ॥ प्रणिधानाद्यजावेन कर्म्मा
नध्यवसायिनः॥ संमूर्छिमप्रवृत्त्याजमननुष्ठानमुच्यते ॥८ ॥

अर्थ ॥ अनेकप्रकारें महाअनर्थउपजावे एवांएपूर्वोक्तबेअनुष्ठाननो निषेधकरवाने समस्ततीर्थंकरें नियाणुंवर्जवानुंकह्युंछे ॥ ७ ॥ प्रणिधानादिकनेअजावें कर्मजेक्रियातेमां अध्यवसायरहितके० शून्यपणेसंमूर्छिमनीपरें शून्यमननी प्रवृत्तियें अथवा देखादेखी-यें जे क्रियाकरे तेअन्योन्यानुष्ठानकहियें ॥ ८ ॥

उंघसंज्ञात्र सामान्यं ज्ञानरूपानिबंधनं॥ लोकसंज्ञा च नि
र्दोषसूत्रमार्गानपेक्षणी ॥ ए ॥ न लोकं नापि सूत्रं नो गुरु
वाचमपेक्षते॥अनध्यवसितं किंचित्कुरुते चौघसंज्ञया ॥१०॥

अर्थ ॥ इहांसामान्यप्रकारें ज्ञानरूपनुंकारणनगवेषे, तेउंघसंज्ञा प्रवाहरूपकहियें. तेथी निर्दोषसूत्रनामार्गनीअपेक्षाविना लोकदेखादेखीयें क्रियाकरे अथवा उपयोग शून्यथकाजेक्रियाकरे, तेअन्योन्यानुष्ठानछे॥ए॥एटलेलोकनीरीतविना अने सूत्रनी तथा गुरूनावचननीअपेक्षाविना उपयोगशून्यपणे जेकांइकरवुं तेनुंनाम उंघसंज्ञाछे ॥ १० ॥

शुद्धस्यान्वेषणे तीर्थोच्छेदः स्यादिति वादिनां ॥ लोकाचारादर
श्रद्धा लोकसंज्ञेति गीयते ॥ ११ ॥ शिक्षितादिपदोपेतमप्या
वश्यकमुच्यते॥द्रव्यतो जावनिर्मुक्तमशुद्धस्य तु का कथा ॥१२॥

अर्थ ॥ जोअत्यंतशुद्धमार्ग खोलवाजइयें, तो तीर्थनोउछेदथाय. माटेलोकना आ-चारउपरआदर श्रद्धाकरवी, जेमचालेतेम चालवादीजे, एहवांवचनबोलता जेलौकिक

आचारेंप्रवर्त्तें तेनुंनाम लोकसंज्ञाछे ॥११॥ अनेशिक्षाग्रहण, आसेवन, तथा पद संपदायें सहित भावशून्यपणेजे आवश्यककरे तेपण द्रव्यआवश्यक कह्युंछे, तोजे अशुद्धज करेतेनी तोशीवातकहियें ?॥ १२ ॥

तीर्थोच्छेदभिया हंता विशुद्धस्यैव चादरे ॥ सूत्रक्रियाविलोपः स्याद्गतानुगतिकत्वतः ॥१३॥ धर्म्मोद्यतेन कर्त्तव्यं कृतं बहुभि रेव चेत्॥तदा मिथ्यादृशां धर्मो न त्याज्यः स्यात्कदाचन॥ १४॥

अर्थ ॥ जेतीर्थनोउच्छेदथाय, तेनाभयथी अशुद्धक्रियानेविषे गाडरीयाप्रवाहनी पेरें गतानुगतिकपणें आदरकरतां कांइपरमार्थ जाणेनही; अनेज्ञानक्रियानो नाशकरे॥१३॥ जेधर्मनाअर्थीथइने एमकहेशो केजेघणाजन करेतेआपणेपण करवुं; तोमिथ्यात्वधर्मनापण घणासेवनारछे; माटेतेपण कोइकालेछंडाशेनही; एमठह्युं ॥ १४ ॥

तस्माद्गतानुगत्या यत् क्रियते सूत्रवर्जितं ॥ ओघतो लोकतो वा तदननुष्ठानमेव हि॥१५॥ अकामनिर्जराकत्वं कायक्लेशादिहोदितं॥सकामनिर्जरा तु स्यात् सोपयोगप्रवृत्तितः॥१६॥

अर्थ ॥ माटेसूत्रनीशैलीरहितपणे गतानुगतिकपणे ओघसंज्ञायें अथवा लोकसंज्ञायें जेकरवुं तेनेअन्योन्यानुष्ठानकेहेवुं ॥१५॥ जेअज्ञानपणे कायकक्लेशकरे, तेनेअकामनिर्जराकहेवी, अने उपयोगसहित ज्ञानक्रियाकरवी तेनुंनामसकामनिर्जराछे ॥ १६ ॥

सदनुष्ठानरागेण तद्धेतुर्मार्गगामिनां ॥ एतच्च चरमावर्त्ते नो भोगादेर्विना भवेत् ॥ १७ ॥ धर्मयौवनकालोयं भवबालदशापरा॥अत्र स्यात्सक्रियारागो न्यत्र चासत्क्रियादरः॥१८॥

अर्थ ॥ मार्गानुसारीपुरुष शुद्धक्रियानुष्ठाननेरागेकरी जेकरेते तद्धेतुअनुष्ठानकेहेवाय. तेजेवारेंछेल्लुंपुद्गलपरावर्त्तरहे, तेवारेंजेक्रियाकरे तेअनउपयोगेनकरे, माटेएअनुष्ठानपणतेवारेंजहोय ॥१७॥ छेलेपुद्गलपरावर्त्तेजेवारें तद्धेतुअनुष्ठानप्रगटे, तेवारेंएधर्मनो यौवनकाल प्रगटथो; अनेसंसारमांबालदिशाहति,तेमटिगइ; एमजाणवुं. एअनुष्ठानेशुद्धक्रियानोरागउपजेछे, अनेपूर्वेनात्रणअनुष्ठानेअशुद्धक्रियानोआदरउपजेछे ॥ १८ ॥

भोगरागाद् यथा यूनो बालक्रीडाऽखिला ह्रिये ॥ धर्म्मयूनस्तथा धर्म्म रागेणासक्रियाह्रये ॥ १९ ॥ चतुर्थं चरमावर्त्ते तस्माद्धर्म्मानुरागतः ॥ अनुष्ठानं विनिर्दिष्टं बीजादिकमसंगत ॥२०॥

अर्थ ॥ जेमयुवान्पुरुष जोगनोविलासी थायछे, नेबालक्रीडाथी लजवायछे; तेम धर्मयौवन कालवंतपुरुष धर्मनारागेंकरी शुद्धक्रियाथी लजवायछे ॥ १९ ॥ तेमाटे तेधर्मनाअनुरागथी चरमपुद्गलपरावर्त्तेंजवली तद्धेतुनामेंचोथुंअनुष्ठानकह्युंछे, पणबीजादिकजेसमकित तेतो असंगके० अप्राप्तछे ॥ २० ॥

बीजं चेह जनान् दृष्ट्वा शुद्धानुष्ठानकारिणः ॥ बहुमानप्रशंसाभ्यां चिकीर्षा शुद्धगोचरा ॥ २१ ॥ तस्या एवानुबंधश्चाकलंकः कीर्त्यतेंऽकुरः॥तद्धेत्वन्वेषणा चित्रा स्कंधकम्पा च वर्ण्यतां॥२२॥

अर्थ॥ इहांसमकीतरूपबीज तो तेवारेंथाय,के जेवारें शुद्धक्रियाकरतांप्राणीने देखीने बहुमानप्रशंसाकरे, अनेआगमविधिरागेंपोतेपण ज्ञानेशुद्धविधिगोचरहोय. तेवारेंसमकितउपजेछे ॥ २१ ॥ एतद्धेतुअनुष्ठाननोअनुबंधजे शुद्धप्रणमनते कलंकरहितअंकुरकहियें, अने तद्धेतुअनुष्ठाननी खोलकरवी तेनानाप्रकारनो स्कंधकहियें ॥ २२ ॥

प्रवृत्तिस्तेषु चित्रा च पत्रादिसदृशी मता ॥ पुष्पं च गुरुयोगादि हेतुसंपत्तिलक्षणं ॥ २३ ॥ भावधर्म्मस्य संपत्तिर्या च सद्देशनादिना॥फलं तदत्र विज्ञेयं नियमान्मोक्षसाधकं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमध्येप्रवर्त्तवुंतेरूप विचित्रप्रकारनापानडा जाणवां,अने सद्गुरुना योगवडे स्वर्गमांसुखसंपदापामवी तेरूप फुलजाणवां ॥ २३ ॥ जेवारेंगुरुपासे देशनासांभलीने भावधर्मरूप संपदापामे तेफलकहियें; तेफलमोक्षसाधनरूपछे, एमजाणवुं ॥ २४ ॥

सहजो भावधर्मो हि शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतद्गर्भमनुष्ठानममृतं संप्रचक्ष्यते॥२५॥जैनीमाज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तं चित्तशुद्धितः ॥ संवेगगर्भमत्यंतममृतं तद्विदो विदुः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥सहजस्वाभाविकजे भावधर्मछे, तेतोचंदननी सुगंधसमानछे. तेसहितजेअनुष्ठान क्रियाकरवी तेनुंनाम अमृतानुष्ठानछे ॥ २५ ॥ प्रभुनीआज्ञावडे मनशुद्धियेंप्रवर्त्ते अनेअत्यंतपणे संवेगगुणेसहितहोय तेनेगणधरादिक अमृतानुष्ठानकहेछे ॥ २६ ॥

शास्त्रार्थालोचनं सम्यक् प्रणिधानं च कर्म्मणि ॥ कालाद्यंगाविपर्यासोमृतानुष्टानलक्षणं ॥२७॥द्वयं हि सदनुष्ठानं त्रयमत्रासदेवच ॥ तत्रापि चरमं श्रेष्ठं मोहोग्रविषनाशनात् ॥२८॥

अर्थ ॥ भलीरीतेंशास्त्रना अर्थविचारें, क्रियामध्येवीर्यउल्लासधरे, पंचमकालना

दोषनगणे, अथवाजेकालेजें उचित क्रियाहोयतेक्रियाकरे, एलक्षणअमृतानुष्ठाननांजाणवां ॥ २७ ॥ एपांचअनुष्ठानमांहेलां वेअनुष्ठानतेरुडांछे अनेप्रथमनांत्रण अनुष्ठान ते रुडांनथी, तेमांपणसर्वथा श्रेष्ठतोअमृतानुष्ठान जाणवुं. केमके मोक्षके० अज्ञानतेनुं आकरुंजेविषतेएअनुष्ठान वडेनाशपामेछे ॥ २८ ॥

आदरः करणे प्रीतिरविघ्नसंपदागमः ॥ जिज्ञासा तज्ज्ञसेवा च सदनुष्ठानलक्षणं ॥२९॥ नेदैर्भिन्नं नवेदिछा प्रवृत्तिस्थिरसिद्धिभिः॥चतुर्विधमिदं मोक्षयोजनाद्योगसंज्ञितं॥३०॥

अर्थ ॥ क्रियायेंआदरकरतांरागधरे तथाआगमने अतिमोटीसंपदानुमाने, वली जाणवानीइछाकरे, जाणनोसंगकरे, एशुद्धक्रियानांलक्षणछे ॥२९॥ तेनापण जुदाजुदा नेदछे१इछा२प्रवृत्ति३स्थिरता४सिद्धियोग. एचारयोगमोक्षनेजोडे. माटेयोगकहियें॥३०॥

इछा तद्वत्कथाप्रीतिर्युक्ता विपरिणामिनी ॥ प्रवृत्तिः पालनं सम्यक् सर्वत्रोपशमन्वितं ॥ ३१ ॥ सत्क्षयोपशमोत्कर्षादतिचारादिचिंतया ॥ रहितं तु स्थिरं सिद्धिः परेषामर्थसाधकं॥३२॥

अर्थ ॥ जेगुरुनोउपदेशसांजली गुरुउपर अनेकथाउपर परमप्रीतिधरे; गुणपरिणमे तेनेपहेलो इछायोगकहियें. पछीगुरुनाकह्या प्रमाणेसमतायें सहितव्रतपाले, क्रियायें सहितप्रवर्त्ते, तेबीजोप्रवृत्तियोगकहियें ॥ ३१ ॥ जेरुडाक्षयोपशमना उत्कर्षथी अतिचारनलगाडे अने मनस्थिरपणेप्रवर्त्ते एत्रीजोस्थिरयोगकह्यो, अनेनिरतिचारशुद्ध क्रियामांबीजा प्राणीनेनेलवीने तेनोपणअर्थसधावे, तेचोथो सिद्धियोग जाणवो ॥ ३२ ॥

नेदा इमे विचित्राः स्युः क्षयोपशमनेदतः ॥ श्रद्धाप्रीत्यादियोगेन नव्यानां मार्गगामिनां ॥३३॥ अनुकंपा च निर्वेदः संवेगः प्रशमस्तथा ॥ एतेषामनुनावाः स्युरिछादीनां यथाक्रमं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ एइछादिकयोगनावली विचित्रनेदछे, ते क्षयोपशमनावना नेदथीछे. ते श्रद्धाप्रीतिप्रमुखयोगेंकरीने मुक्तिमार्गेपामनार नव्यजीवने होय ॥ ३३ ॥ १ करुणा २ वैराग्य ३ संवेग ४ उपशम एअनुक्रमे इछादिकनाचारप्रकारछे ॥ ३४ ॥

कायोत्सर्गादिसूत्राणां श्रद्धामेधादिनावतः ॥ इछादियोगसाफल्यं देशसर्वव्रतस्पृशां ॥३५॥ गुमखंमादिमाधुर्यनेदवत् पुरुषांतरे॥नेदेपीछादिनावानां दोषो नार्थान्वयादिह ॥३६॥

अर्थ ॥ कायोत्सर्गादिक आवश्यकसूत्रनुं श्रद्धापणुंजोभावथीथाय, तोश्रावक तथासाधुने इछादिकयोग सफलथाय ॥ ३५ ॥ कोइनेगोलमीठोलागेछेअने कोइनेखांडमीठीलागेछे. एरीतेंमीठाशनास्वादमां जेमभिन्नताछे. तेमजपुरुषोनी प्रकृतिभिन्नभिन्न माटे इछादिकयोगनाजेभाव तेनापणभेदछे; तोपणतेमांकांइ दूषणनथी, केमके जे मशर्करादिकनीमीठाश जुदीजुदीछे, तोपण मिठाशनो अर्थएकजछे. मिठाशगमे तेनी होय, पण तेथी मिठाशनो अर्थ सरेछे. तेमज इछादिकयोगना भेदछे, तोपण तेथकी अर्थ जेफल तेएकजमलेछे; माटेदूषणनथी एम जाणवुं ॥ ३६ ॥

येषां नेछादिलेशोपि तेषां त्वेतत्समर्प्पणे॥स्फुटो महामृषावाद इ
त्याचार्याःप्रचक्षते॥३७॥ उन्मार्गोत्थापनं बाढमसमंजसकारणे॥
भावनित्यमिदं तत्त्वं जाननैर्योगविंशिकां॥३८॥ त्रिधा तत्सदनुष्ठा
नमादेयं शुद्धचेतसा॥ज्ञात्वा समयसद्भावं लोकसंज्ञां विहाय च ॥३९॥

अर्थ॥पणजेने शुद्धअनुष्ठानने विषे इछादियोगनो लेशपण नथी, तेवाअयोग्यनरने जेइछादियोगआपे, तेनेप्रगटमृषावादनुं पापलागेछे, एवुंपूर्वाचार्यकहेछे ॥ ३७ ॥ जेअतिअसमंजस कारणछे, तेनेविषे उन्मार्गस्थापनथायछे; माटेयोगविंशिका ग्रंथना जाण पुरुषे एतत्त्वचिंतवीने सद्अनुष्ठानकरवुं. एटलेजेमतेमकरियेंतो उन्मार्गनुं स्थापनथइ जाय॥३८॥माटेशुद्धचेतनायें, मनवचनकायायेंकरीने, सदनुष्ठान सेववां; सिद्धांतना सद्भावजाणी लोकसंज्ञा तजीने शुद्धक्रियाकरवी ॥ ३९ ॥ इतिसदनुष्ठानाधिकारदशमः ॥

उचितमाचरणं शुभमिछतां प्रथमतो मनसः खलु शोधनं ॥
गदवतां ह्यकृते मलशोधने कमुपयोगमुपैतु रसायनं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी शुद्धिकरवामाटे प्रथमथीतो उचितपणे शुभआचरणनीइछाकरवी ने मननी शुद्धताकरवी. जेमरोगवंतप्राणी मलशोधनकरवाने रेचलीधाविना रसायनखायतो, तेथीतेनेकांइगुणथायनही. केमकेमलजाय, तेवारपछिरसायणखाय, तोगुणकरे; तेमप्रथममनशुद्धिथइहोय, तोजअध्यात्मनी शुद्धिथाय ॥ १ ॥

परजने प्रसभं किमु रज्यते द्विषति वा स्वमनो यदि निर्मलं ॥
विरहिणामरतेर्जगतोरतेरपि च का विकृतिर्विमले विधौ ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे! चेतन! जो तारुंमन निर्मलछे, तो लोकताहराउपर रागधरशे अथवा द्वेष

करशे, तेथकीताहरे शुंबगाडथवानोछे ? जेमचंद्रमानिर्मलछे, पणतेनाउदयथी विरही जीवो अथवाचोरलोकोने अरतिउपजेछे; अनेजगत्नाबीजाजीवोने तेथीआनंदथाय छे; पणतेथीचंद्रमाने गुणअथवा अवगुणकांईजथतांनथी ॥ २ ॥

रुचितमाकलयन्ननुपस्थितं स्वमनसैव हि शोचति मानवः ॥
उपनते स्मयमानमुखः पुनर्भवति तत्र परस्य किमुच्यतां ॥३॥

अर्थ ॥ रुडीवस्तुमनमांचिंतवी मनोरथकीधो, अनेतेमनोरथ निपनोनही, तेवारें तेप्राणीपोतानामनमां शोक धरेछे, अनेजेवारें तेधारेलीवस्तुमलेछे, तेवारें खुशीथायछे; एहर्षशोकनोकर्त्ता आत्माने एकमनजछे; तो बीजायेंमहारुंसारुंनरसुंकर्युं, एमशुंकहेवुं?३

चरणयोगघटान्प्रविलोठयन् शमरसं सकलं विकिरत्यधः ॥
चपल एष मनः कपिरुच्चकै रसवणिग् विदधातु मुनिस्तु किं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मन मांकडाजेवुंछे. केमकेतेचारित्रना योगरूपधृतनाघडाने उंधावालेछे. तथासमतारूपीअमृतरसनाघडाने ढोलीनाखेछे; एवुंएचपल मनते खरेखरुंवांदरुंछे. तेनी आगल मुनिरूप रसवाणीउपनो करनार वाणीयोबिचारोशुंकरे ? ॥ ४ ॥

सततकुट्टितसंयमभूतलोत्थितरजोनिकरैः प्रथयंस्तमः ॥
अतिदृढश्च मनस्तुरगोगुणैरपि नियंत्रित एष नतिष्ठति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीमुनियेंचारित्रेंकरी कर्मरूपीधूलने दाबीनाखीहती, पणमनरूपीघोडा यें नित्यकुदीकुदीने संयमरूपभूमीनुंतलियुं उखेल्युं, तेथीकलुषतारूप रजउडीते हनासमूहेंकरी अज्ञानरूपअंधकारथयो; एवोअतिआकरो एमनरूपघोडोछे, तेश्रुतरूपीदोरडेबंधायोछतो तोफानकरेछे, पणसमोरहेतोनथी ॥ ५ ॥

जिनवचोघनसारमलिम्लुचः कुसुमसायकपावकदीपकः ॥
अहह कोपि मनःपवनो बली शुभमतिद्रुमसंततिभंगकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एककौतुकजुवोके मनरूपीवायुमहाबलवान्छे. केमके रुडीबुद्धिरूपवृक्षने भांगीनाखेछे तथा जिनवचनरूप बरासनोचोरछे; वली कंदर्परूपअग्निनोदीपावनारछे॥६॥

चरणगोपुरभंगपरः स्फुरत्समयबोधतरूनपि पातयन् ॥ भ्रमति
यदतिमत्तमनोगजः क्व कुशलं शिवराजपथे तदा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीमनरूपहाथीछे, तेचारित्ररूपनगरना दरवाजाभांगतोथको प्रसरेछे. सि-

ऊंतनाबोधरूपीवृक्षनेपण पाकतोथकोजमेछे. एवोमदोन्मत्त मनरूपीहाथी दोडादोड करेछे; तेवारेंसाधुने मोक्षमार्गेंजतां कुशलतातेक्यांथीहोय? ॥ ७ ॥

व्रततरून्प्रगुणीकुरुते जनो दहति डुष्टमनोदहनः पुनः ॥
ननु परिश्रम एष विशेषवान् क जविता सुगुणे पवनोदये ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेसाधुछे तेव्रतरूपीवृक्षें फलीवाकीने चेतनज्ञानअमृतरसवडे सींचीनेनवपल्लवकरेछे; पणडुष्ट मनरूपजेअग्नितेे वली वाकीनेबालीनांखेछे; तोरुम्हागुणरूपवाकीमां गुणरूपवायरानेउदयें मुनिनीमेहनततेकेमकरीने सफलथाय? ॥ ८ ॥

अनिगृहीतमना विदधत्परां न वपुषा वचसा च शुजक्रियां ॥
गुणमुपैति विराधनयाऽनया बत डुरंतजवभ्रममंचति ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एकमननो निग्रहकस्याविना वचनेतथाकायायें जेटलीशुजक्रियाकरे तेउपयोगशून्यतायें अविधियेंकरे, अनेतेअविधिनोकरनारो तोअवश्यसूत्रनेविषेछकायनोविराधककह्योछे; माटेतेगुणनकरे. जेमनशून्य मने क्रियाकरनारो तेविराधकछे, माटेशुन्यक्रियाकरतो विराधकपणे संसारनेविषेघणा जवज्रमशे ॥ ए ॥

अनिगृहीतमनाः कुविकल्पतो नरकमृछति तंडुलमत्स्यवत् ॥
इयमजक्षणजा नहि जीर्णताऽनुपनतार्थविकल्पकदर्थना ॥ १० ॥

अर्थ ॥ मनवशकिधाविनाजे तपजपकरे, वलिमनमां कुविकल्पघणाथाय तेथीतेतंडुलमछनीपरें नरकेंपडे. एकुविकल्पकरतोथको जो उपवासकरे, तपकरे, तेथीतेनेमात्रअजीर्णथाय; केमकेअणपाम्याअर्थनो विकल्पकरे, तेनीकदर्थनाअजीर्णनुंकारणछे. ॥ १० ॥

मनसि लोलतरे विपरीततां वचननेत्रकरेंगितगोपना ॥
व्रजति धूर्त्ततया ह्यनयाखिलं निबिडदंजपरैर्मुषितं जगत् ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जोमनचपलछे तो, वचनगुप्तिकरेतथानेत्रनेगोपवे इंगितआकारचेष्टाविनाकाउसग्गकरे, तेसर्वविपरीतजाणवुं. तेसर्वधुर्त्तपणानेपामे अनेएवीरीतेंधुर्त्तपणे कपटक्रियानाकरनारा तेमोटाचोरछे, तेजगत्नेलुटनाराछे ॥ ११ ॥

मनसएव ततः परिशोधनं नियमतोविदधीत महामतिः ॥
इदमजेषजसंवननं मुनेः परपुमर्थरतस्य शिवश्रियः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेमननेजलिरीतें निश्चयथकी शोधनकरे, तेजपंडितनेमनोशुद्धिरूपचूर्णछे; अनेपरमपुरुषार्थनेविषे राताजेमुनि तेनेमुक्तिस्त्रीने वशकरवानुं औषधछे ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्याननेविश्रामें आश्रवनोनाशदेखे. संसारनास्वरूपने भवनीपरंपरादेखे-अनेअन्यपदार्थे आत्मानुविपरिणामपणुंजुए ॥ ७१ ॥ एशुक्लध्यानना प्रथमबेपायामां बेलेश्या तथात्रीजेपायेतो परमउत्कृष्ट शुक्ललेश्याकहिबे, अने चोथोपायोजेबे तेतो ले-श्यायेंरहितकह्योबे ॥ ७२ ॥

लिंगं निर्मलयोगस्य शुक्लध्यानवतोऽवधः ॥ असंमोहो विवेकश्च
व्युत्सर्गश्चाभिधीयते ॥ ७३ ॥ अबंधाउपसर्गेभ्यः कंपते न बि
भेति च ॥ असंमोहान्न सूक्ष्मार्थे मायास्वपि च मुह्यति ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्यानवालाने निर्मलयोगहोय, तेनांलक्षणकहेबे. अहिंसकहोय; मोह-रहित, विवेकीहोय; अनेत्यागबुद्धियें युक्तहोय ॥ ७३ ॥ वलीअबंधीथयो माटे उपसर्ग अनेपरिसह तेथीकंपेनही; तथाबीहेपणनही; एअहिंसकलक्षणहोय, तथासूक्ष्मअर्थमां वलीमायामांमुझायनही; एअसंमोहएटले मोहरहितनुं लक्षणकह्युं ॥ ७४ ॥

विवेकात्सर्वसंयोगाद्भिन्नमात्मानमीक्षते ॥ देहोपकरणासंगो
व्युत्सर्गाज्जायते मुनिः ॥ ७५ ॥ एतद्ध्यानक्रमं शुद्धं मत्वा भगव
दाज्ञया ॥ यः कुर्यादेतदभ्यासं संपूर्णाध्यात्मविद्भवेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंयोगथी आत्मानेजूदोदेखे, एविवेकनुंलक्षणबे. देहतथाउपकरणनी त्यागबुद्धियें असंगानुष्ठान वर्त्तेबे, एव्युत्सर्गनुंलक्षणबे. एचारलक्षण ६६ मा श्लोकमां कह्यांबे. तेनोएअर्थविवरिने कह्यो एलक्षणेजेमुनिहोयते, ज्ञानपणुपामे ॥ ७५ ॥ एरीतें ध्याननोजेअनुक्रम तेशुद्धरीतें जाणीनेप्रभुनी आज्ञाप्रमाणे एनोअभ्यास जेकरशे, तेसं-पूर्णअध्यात्म ज्ञानीथाशे ॥ ७६ ॥ इतिध्यानाधिकारः षोडशः ॥

यत्र गछति परं परिपाकं पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥
स्वप्रकाशसुखबोधमयं तध्ध्यानमेव भवनाशिभजध्वं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ माटेउत्कृष्ट परिपक्वध्यान पामेथके मुनिराजतेइंद्रनीपदवीनेपण तृणखला बरोबरगणे. माटे जेथकी आत्माने प्रकाशकारी सुखेज्ञानप्रगटे एवुं संसारनुं नाशकरनां रुंध्यानसेववुं ॥ १ ॥

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात् सुत्यजा हि विषया नतु रागः ॥
ध्यानवांस्तु परमद्य निदर्शी तृप्तिमाप्य न तमृछति भूयः ॥२॥

अर्थ ॥ कामातुरजेप्राणी तथाजडजेप्राणीतेपण प्रगटपणे विषयसुखने सुखेंबांडे;

पणरागदिशा बांठवीडुर्घटछे; अनेध्यानवंतमुनितो मात्र परमात्मानोजदर्शनीछे. तेत ध्यानमां तृप्तिपामिने फरीथीरागद्वेषने वांछेनही ॥ २ ॥

या निशा सकलभूतगणानां ध्यानिनो दिनमहोत्सव एषः ॥
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा ध्यानिनो भवति तत्र सुषुप्तिः॥३॥

अर्थ ॥ सर्वप्राणीने निद्रामांजे रात्रीजायछे, तेध्यानदिशावालाने एरात्रीते जागृत-महोत्सवनो दिवसछे. अनेसंसारीजीव विषयमांलीनथका जेवेलायेंजागेछे, तेवेलाध्यानवालामुनिराजने शयनरूपछे॥ ३ ॥

संप्लुतोदकमिवांधुजलानां सर्वतःसफलकर्म्मकलानां ॥
सिद्धिरस्ति खलु यत्र तदन्वैर्ध्यानमेव परमार्थनिदानं ॥४॥

अर्थ ॥ जेमअवरूकुवानुं पाणी डोहोलुंरहेछे, तेमजेमांसर्वथकी सकलकर्मनाफलनी सिद्धिएहवोजे ध्यानरूपघट जेजलमां रमतोहोय, त्यांजलनिर्मलहोय. माटेसकलक्रियाफलनी सिद्धिध्यानथीछे. ध्यानतेपरम अर्थनुं कारणछे. ॥ ४ ॥

बध्यते नहि कषायसमुत्थैर्मानसैर्नतभूपनमद्भिः ॥
अत्यनिष्टविषयैरपि दुःखैर्ध्यानवान्निभृतमात्मनि लीनः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेध्यानवान् पुरुषते कषायजनित मनेकरी बंधातोनथी. तेहनेजोराजानीश्रेणी आवीनमस्कारकरे, तोपणतेनुंचित्तडोहोलायनही. अनेअनिष्टविषयनीप्राप्तिनादुःखेकरीपणनिश्चलपणु छोडेनहि. तेनेआत्मानेविषे लीनकहिये ॥ ५ ॥

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं ध्यानमस्तु शिवशर्म गरिष्ठं ॥ ना
स्तिकस्तु निहतो यदि न स्यादेवमादिनयवाङ्मयदंडात् ॥६॥

अर्थ ॥ जेनेप्रगटदीठुं अनेमोक्षसुखेभर्युं एवुंजेध्यान तेइष्टछे, एटले मोक्षसुखथी पणध्यान मोटुंछे, पणजिहांसुधी शास्त्रनादंडथकी नास्तिकभावने अतिशयपणे हण्यो नथी, तिहांसुधीनथी; पणनास्तिकभावेंरहित जेज्ञानतेमोटुंछे ॥ ६ ॥

यत्र नार्कविधुतारकदीपज्योतिषां प्रसरतामवकाशः ॥ ध्यान
भिन्नतमसामुदितात्मज्योतिषां तदपि भाति रहस्यं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेनीआगल सूर्यनुंतेज, तथाचंद्रमा अनेतारानुंतेज, वलीदीपकनातेजनो प्रकाशअल्पछे, एवुंजेध्यान तेणेकरीने भेदाणोछेअज्ञानरूप अंधकारजेप्राणीनो एहवा मुदितआत्मावालानुंतेज तेगुप्तपणे पणआत्मानेविषे शोभेछे ॥ ७ ॥

योजयत्यमितकालवियुक्तां प्रेयसीं शमरतिं त्वरितं यत् ॥
ध्यानमित्रमिदमेव मतं नः किंपरैर्जगति कृत्रिममित्रैः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीसाथें प्राणीनेघणा कालथीवियोग हतो. तेक्षणमां वियोगजांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे. तेध्यानमित्र अमारेप्रमाणछे, एमध्यान करनारप्राणी बोलेछे. माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीशुंथाय? तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रघणोश्रेष्ठछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरबलातपचारे शीलशीतलसुगंधिनिवेशैः ॥
उच्छ्रितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे. जिहांकामरूपतापटल्योछे, अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे, तेवीबेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे, तेउपर आत्माबेठोथको पूर्णआनंदपामेछे; एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ९ ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठं प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्या
नधाम्नि भवति स्फुटमात्मा ह्रुतपूतपरमातिथिपूजा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासने इंद्रियदमनरूप जलनोबाजोटछे, अने शमतारूप पोलीओ तेएवाध्यानघरमां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्ककरी परोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनि यो भूद्भेदबुद्धिकृत एव विवादः ॥ ध्या
नसंधिकृदमुं व्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आत्मा अने परमात्मानेविषे जेभेदबुद्धिनोविवादहतो, एटलेतेमांपंडितना विवादरूपझगडाहता, तेनेध्यानरूपसंधिपाले एटलेध्यानिपुरुषे तेविवादोनेटाल्या अनेजलदीथी एबेजनुंअभेदपणुंकरीआप्युं ॥ ११ ॥

क्वामृतं विषभृते फणिलोके क्वक्षयिण्यपि विधौ त्रिदिवे वा ॥
क्वाप्सरो रतिमतां त्रिदशानां ध्यान एव तदिदं बुधसेव्यं ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ विषथकीभरेलोजे नागलोकतिहां अमृतक्यांथीहोय? तेमदिनदिनक्षय पामतोजेचंद्रमा तेमांअमृतकिहांथीहोय? अनेदेवलोकमांअप्सरानायोगें राताजेदेवता तेमांपणअमृत किहांथीहोय? माटेएमात्र ध्यानरूपअमृतसत्यछे. तेनेजपंडितेसेववुं॥१२॥

गोस्तनीषु न सितासु सुधायां नापि नापि वनिताधरबिंबे ॥ तं रसं कमपि वेत्ति मनस्वी ध्यानसंन्नवधृतौ प्रथते यः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ गायनास्तनमांजेरसनथी, जेसाकरमांरसनथी, अनेजेरसअमृतमांपणनथी तेमजस्त्रीनाअधरजेहोठ तेमांपणजेरसनथी तेरसध्यानथीप्रगट्यो अनेसंतोषथी विस्तर्यो एहवोजेकोइकअपूर्वरस तेनेतोकोइक पंमितजजाणेछे ॥ १३ ॥

इत्यवेत्य मनसा परिपक्कध्यानसंन्नवफले गरिमाणं ॥ तत्र यस्य रतिरेनमुपैति प्रौढधामम्रुतमाशु यशः श्रीः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारें मनेकरीनेपरिपक्कजे ध्यानतेथीप्रगटथुंजे फलतेहनेमोटाइपणे जाणीनेतेमांजेरतिपामे तेमहातेजवंत कांतिवानपुरुषछे अनेतेनेज यशलक्ष्मीवरशे ॥१४॥
इतिश्रीध्यानस्तुत्यधिकारः सप्तदशःसमाप्तः ॥

इतिश्रीमहोपाध्यायश्रीयशोविजयगणिविरचिते अध्यात्मसारप्रकरणे पंचमपरिछेदः तेमां पनरमांना ७२ सोलमांना ७६ अने सतरमाना १४ मलीने १७२ काव्यछे.

आत्मध्यानफलं ध्यानमात्मज्ञानं च मुक्तिदं ॥ आत्मज्ञानाय तन्नित्यं यत्नः कार्यो महात्मना ॥१॥ ज्ञाते ह्यात्मनि नो नूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ अज्ञानं पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आत्माने ध्याननुंफलतेध्यानछे, पणआत्मज्ञानहोय तेवारेंजतेनेमुक्ति आपे, माटेज्ञानतेमोटुंछे. तोमोटापुरुषें आत्मज्ञानन्नणी उद्यमकरवो ॥ १ ॥ जेणे आत्माने जाण्यो तेनेफरीबीजुंकइजाणवानुंरह्युंनथी. अनेजिहांसुधी आत्मानेजाण्योनथी, तिहांसुधी बीजुंसर्वेजाण्युं ते निरर्थकछे ॥ २ ॥

नवानामपि तत्त्वानां ज्ञानमात्मप्रसिद्धये ॥ येनाजीवादयो न्नावाः स्वन्नेदप्रतियोगिनः ॥३॥ श्रुतो ह्यात्मपरोन्नेदोऽनुभूतः संस्तुतोपि च ॥ निसर्गादुपदेशाद्वा वेत्ति न्नेदं तु कश्चन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नवेतत्त्वनुंपणजे जाणपणुंकरवुंछे, तेपणआत्मज्ञान प्रगटकरवानेअर्थेंछे. कारणके अजीवादिकजेन्नाव तेपणआत्मज्ञानवमेंशमायछे ॥ ३ ॥ पोतानोअनेपारकोजे न्नेद तेहनेन्नेदरूपेंसांन्नव्यो, अनुन्नव्यो, परिचययथोथको, सेहेजे अथवा उपदेशथकी कोइकन्नेदनेजाण्यो ॥ ४ ॥

तदेकत्वपृथक्त्वाभ्यामात्मध्यानं हितावहं ॥ वृथैवाभिनिविष्टा
नामन्यथा धीर्विडंबना ॥ ५ ॥ एक एव हि तत्रात्मा स्वभावस
मवस्थितः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेएकत्व पृथक्त्वेंकरी आत्मज्ञान हितकारीथाय, नहीतो फोकटपणे मिथ्यात्वनीबुद्धिनीविटंबनाछे ॥ ५ ॥ तिहांएकजआत्मा स्वभावपणेरह्योछे, तेआत्मा तोज्ञानदर्शन अने चारित्ररूपलक्षणेकह्योछे ॥ ६ ॥

प्रभानैर्मल्यशक्तीनां यथारत्नान्न भिन्नता ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र
लक्षणानां तथात्मनः॥७॥ आत्मनो लक्षणानां च व्यवहारो हि
भिन्नता ॥ षष्ठ्यादिव्यपदेशेन मन्यते न तु निश्चयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमरत्ननीकांति अने निर्मलता एबेजनीशक्तिकांइजुदीनथी, तेमज्ञानदर्शन अने चारित्रलक्षणे जेआत्मातेकांइजुदोनथी ॥ ७ ॥ आत्मा अनेआत्मानुंलक्षण एबे व्यवहारेजुदांछे. तेषष्टिआदेदइ विभक्तिनेव्यपदेशेंकरीमानियें, पणनिश्चयथीनही ॥८॥

घटस्य रूपमित्यत्र यथाभेदो विकल्पजः ॥ आत्मनश्च गुणानां
च तथा भेदो न तात्त्विकः ॥९॥ शुद्धं यदात्मनो रूपं निश्चये ना
नुभूयते ॥ व्यवहारो भिदाद्वारानुभावयति तत्परं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमघटनुंरूपतेनोभेदते विकल्पमात्रछे, तेमआत्माने अने गुणनेपरमार्थें भेदनथी ॥ ९ ॥ जेआत्मरूपशुद्धछे, तेनिश्चयनयेकरी अनुभवायछे; अने व्यवहारवडें परके० कायातेपणओलखायछे ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथक् ॥ आत्मा स्यादन्यथा
नात्मा ज्ञानाद्यपि जडं भवेत् ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्या
सर्वेषामेकतात्मनां ॥ निश्चितः कर्मजनितो भेदः पुनरुपप्लवः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वस्तुभावेतोगुणनुं अने आत्मानुंरूपजुदुंनथी. जोजुदुंकहीयेंतो, आत्माछे तेअनात्माथाय; ज्ञानादिकेजडथाय ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्यपणे सर्वेआत्मानी एकताछे; अनेनिश्चयथी तोकर्मेंप्रगट्योजेभेद तेतोविटंबनारूपछे ॥ १२ ॥

मन्यते व्यवहारस्तु भूतग्रामादिभेदतः ॥ जन्मादेश्च व्यवस्थातो
मिथोनानात्वमात्मनां ॥ १३ ॥ न चैतन्निश्चये युक्तं भूतग्रामो य
तोऽखिलः ॥ नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावो नात्मनः पुनः ॥१४॥

अर्थ ॥ जीवसमूहनाज्ञेदथी तथाबालजुवान वृद्ध एअवस्थावकेमांहोमांहे विचित्रपणुंजणायछे. एमव्यवहारनयवालोमानेछे ॥ १३ ॥ पणएवातनिश्चयनयवालो मानतोनथी. तेएमकेहेछेके, एजीवनेसर्वअवस्था नामकर्मना स्वज्ञावथीप्रगटेछे; पणएआत्मानोमूलस्वज्ञावनथी ॥१४॥

जन्मादिकोपि नियतः परिणामो हि कर्मणां॥न च कर्मकृतो ज्ञेदः
स्यादात्मन्यविकारिणि ॥१५॥ आरोप्य केवलं कर्म कृतां विकृ
तिमात्मनि ॥ ज्ञमंति ज्रष्टविज्ञाना ज्ञीमे संसारसागरे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जन्मजरादिक परिणाम कर्मनेवशछे, अनेआत्मातो अविकारीछे. तेथी कर्मनोज्ञेद आत्मानेसंज्ञवेनही. केमकेएआत्मस्वज्ञावनही ॥ १५ ॥ जन्मजरादिक कर्मप्रकृतिछे, अनेकर्मजनित ज्ञावनेकेवल आत्मानेविषे आरोपीने ज्रष्टज्ञानी ज्ञयंकर संसारसमुद्रमां ज्ञमशे ॥ १६ ॥

उपाधिज्ञेदजं ज्ञेदं वेत्यज्ञस्फटिके यथा ॥ तथा कर्मकृतं ज्ञेदमात्म
न्येवाज्ञिमन्यते ॥ १७ ॥ उपाधिकर्मजो नास्ति व्यवहारात्स्व
कर्मणः ॥ इत्यागमवचो लुप्तमात्मवैरूप्यवादिनः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ स्फटिकमां जेममूर्खप्राणी ज्ञेदमानेछे, तेमउपाधिज्ञेदें आत्मानेविषे प्रगट्यो जे कर्मकृतज्ञेदते एमानेछे ॥ १७ ॥ पोतानाव्यवहारथी कर्मजनित जेउपाधिते नथी, एममानता आत्मविरूपवादी आगमनुंवचन लोपेछे ॥ १८ ॥

एकक्षेत्रस्थितोप्येति नात्मा कर्मगुणान्वये ॥ यथा ज्ञव्यस्व
ज्ञावत्वाच्छुद्धो धर्मास्तिकायवत् ॥१९॥ यथा तैमिरकश्चंद्र मप्ये
कं मन्यते द्विधा ॥ अनिश्चयकृतोन्मादस्तथात्मानमनेकधा ॥ २० ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनीपरे एकक्षेत्रमां रह्योछेतोपण कर्मगुणनासंयोगने पामतो नथी, एवोआत्मा रुडास्वज्ञावथी शुद्धछे ॥ १९ ॥ जेमतिमिरके० ग्रहणघेलो एकचंद्रनेबेचंद्रमानेछे, तेमनिश्चयनयनी वातविनानोजे प्राणीते उन्मादममत्वेकरी आत्माने अनेकप्रकारे मानेछे ॥ २० ॥

यथानुज्ञूयते ह्येकं स्वरूपास्तित्वमन्वयात् ॥ सादृश्यास्तित्व
मप्येकमविरुद्धं तथात्मनां ॥२१॥ सदसद्वादपिशुनान् संगो
पि व्यवहारतः ॥ दर्शयत्येकतारत्नं सतां शुद्धनयः सुहृत् ॥२२॥

अर्थ ॥ जेमअन्वयथी एकस्वरूपास्तिपणाने अनुनवियेबइयें, तेमसरखापणे जे विद्यमानपणुंछे, तेथकीआत्माने एककहियें ॥ २१ ॥ व्यवहारनयथी सद्असद्वादरूपजे चाडियो तेनेछुपावीने शुद्धनयरूपजे मित्रछे, तेएकतारूप रत्नेदेखाडेछे ॥ २२ ॥

नृनारकादिपर्यायै रम्यं तन्न विनश्वरैः ॥ निन्नैर्जहाति नैकत्व
मात्मद्रव्यं सदान्वयि ॥ २३ ॥ यथैकं हेमकेयूरकुंमलादि
षु वर्त्तते ॥ नृनारकादिन्नावेषु तथात्मैको निरंजनः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ नरनारकादि पर्यायजेउपजेछे, अनेविणशेछे, तेनिन्नपर्यायकांइरम्यनथी; माटे तेपर्यायेंकरीने सदाअन्वयीजे शुद्धवंशीआत्मतत्त्व तेएकत्वपणाने छांमतुंनथी ॥ २३ ॥ जेमसुवर्णएकछे, पणबाजुबंध, कंठी, कुंमलादिक पर्यायेंवर्त्तेछे, तेमआत्माएकछे, पणनरनारकादिकना नवेकरीनिन्नछे; पणआत्मातो एकनिरंजनछे ॥ २४ ॥

कर्मणस्ते हि पर्याया नात्मनः शुद्धसाक्षिणः ॥ कर्मक्रिया स्वन्नावो
यदात्मा तु न स्वन्नाववान् ॥ २५ ॥ नाणूनां कर्मणो वासो नवस्व
र्गः स्वन्नावजः ॥ एकैकविरहे न्नावान्नवतत्त्वांतरं स्थितं ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ जेनरनारकादिकनव तेतो सर्वेकर्मना पर्यायछे, पणशुद्धसाक्षी निश्चयनयें आत्मपर्यायछे, अनेकर्मक्रियारूपजे स्वन्नावतेकांइआत्मानो मूलस्वन्नावनथी, आत्मा तो अज, अविनाशीस्वस्वन्नावीछे ॥ २५ ॥ कर्मनाजेपरमाणुआ तेआसंसार स्वर्गस्वान्नाविक नथी; एकेकउज्वलतानेविषे न्नावथकी नवतत्त्वमां रह्युंछे ॥ २६ ॥

श्वेतद्रव्यकृतं श्वैत्यं न्नित्तिन्नागे यथा द्वयोः ॥ न्नात्यनंतन्नवत्सत्यं
प्रपंचोपि तथेक्षतां ॥ २७ ॥ यथास्वप्नावबुद्धोर्थो विबुद्धेन न दृ
श्यते ॥ व्यवहारमते स्वर्गो ज्ञानिना न तथेक्षते ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ जेमश्वेतद्रव्यें कीधेलुंजे चित्रामण तेबेन्नीतना न्नागमांशोन्ने, तेमअनंतन्नवसत्यतायें एप्रपंचनेजाणवुंछे ॥ २७ ॥ जेमस्वप्नमां दीठेलोअर्थ जाग्यापछीदेखायनहीं, तेमव्यवहारें स्वर्गादिकमार्ग श्रेष्ठछे. पणनियतप्रमाणीज्ञानीपुरुषने संसार नजणाय. ॥२८॥

मध्याह्ने मृगतृष्णायां पयःपूरो यदेक्षते ॥ तथा संयोगजः सर्गो
विवेकख्यातिविप्लवे ॥ २९ ॥ गंधर्वनगरादीनामंबरेऽम्बरो य
था ॥ तथा संयोगजः सर्वो विलासो वितथाकृतिः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ जेममध्याह्ने मृगतृष्णावमें पृथ्वीउपर जलपूरदेखायछे, तेमसंयोगेंउपनी जे सृष्टितेविवेकनी ख्यातियेंनाशदेखायछे ॥ २९ ॥ जेमगंधर्वनगरवमें आकाशें आरुंबर जणाय, तेमसंयोगेप्रगट्याजे सर्वविलास तेजुगछे ॥ ३० ॥

इतिशुद्धनयायत्तमेकत्वं प्राप्तमात्मनि ॥ अंशादिकल्पनाप्य
स्य नेष्टा यत्पूर्णवादिनः ॥ ३१ ॥ एक आत्मेति सूत्रस्याप्यय
मेवाशयोमतः ॥ प्रत्यग्ज्योतिषमात्मानमाहुः शुद्धनयाः खलु ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंशुद्धनयेजे एकत्वपणुग्रह्युं, तेआत्मानेविषे पाम्युं; एनेअंशादिकनीजे कल्पनातेपूर्णवादिने वाहालीनथी ॥३१॥ सूत्रमां, "एगेआया" एवोजेपाठछे, तेएजआ शयेंकह्योछे. एकप्रगटज्योतिरूपजे आत्मा तेतेजरूपछे, एमशुद्धनयवालाकेहेछे ॥ ३२ ॥

प्रपंचसंचयक्लिष्टान्मायारूपाद्बिभेमि ते ॥ प्रसीद भगवन्नात्म
न् शुद्धरूपं प्रकाशय ॥ ३३ ॥ देहेन सममेकत्वं मन्यते व्यव
हारवित् ॥ कथंचिन्मूर्ततापत्तेर्वेदनादिसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयकहेछेके,प्रपंचसंचयवडे संक्लिष्टएटले दुःखरूपएवुं जेएमायारूपछे, तेथकी हे भगवन् ! हे आत्मा! हुं बीहुंछुं. माटे प्रसन्नथाओ, अनेशुद्धरूप प्रकाशकरो! ॥ ३३ ॥ कोइकप्रकारेंरूपीपणुं पाम्योजे आत्मातेनेवेदनादिक उपजेछे. माटे व्यवहारनयवालो शरीरसाथें आत्मानुंएकत्वपणुं मानेछे ॥ ३४ ॥

तन्निश्चयो न सहते यदमूर्त्तो न मूर्त्ततां ॥ अंशेनाप्यवगाहेत
पावकः शीततामिव ॥ ३५ ॥ उष्णस्याग्नेर्यथा योगाद् घृतमु
ष्णमिति भ्रमः ॥ तथामूर्त्तांगसंबंधादात्मा मूर्त्त इति भ्रमः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ पणतेवातनिश्चयवालो सहीशकतोनथी; जेमअग्निशीतलता पामतोनथी, तेमजेअरूपीआत्माछे, तेअंशेकरीनेपणरूपीपणाने पामतोनथी ॥ ३५ ॥ जेमबलताअ ग्निनेसंयोगें घृतउष्णथयुं एवोभ्रमछे, तेमरूपीशरीरने संयोगें आत्मापणरूपीदीसेछे, एप णभ्रमणाजदेखायछे ॥ ३६ ॥

न रूपं न रसो गंधो न न स्पर्शो न चाकृतिः ॥ यस्य धर्मो न शब्दो
वा तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३७ ॥ दृशादृश्यं हृदाग्राह्यं वाचा
मपि न गोचरः ॥ स्वप्रकाशं हि यद्रूपं तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेरूप, रस, गंध, स्पर्श, संस्थान एटलावानांआत्मानेनथी; एतो पुद्गलनेछे, तेमजबाह्यधर्मपणनथी, शब्दनथी; तेवारेंआत्मानेशीरीतेरूपीकहेवाय? ॥ ३७ ॥ वलीआत्मानजरेदेखाय एवोपणनथी, मनथीग्रहवाय एवोपणनथी, तथावचने पणअगोचरछे, जेनुंरूपपोताना प्रकाशेछे, पणबीजना प्रकाशेनथी, तेनेरूपीकेमकेहेवाय?॥३८॥

आत्मा सत्यश्चिदानंदः सूक्ष्मात्सूक्ष्मः परात्परः ॥ स्पृशत्यपि च मूर्त्तत्वं तथा चोक्तं परैरपि ॥३९॥ इंद्रियाणि पराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परं मनः ॥ मनसोपि परा बुद्धि र्योबुद्धेः परमस्तु सः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ आत्मासत्यछे; चिदानंदमयीछे; सूक्ष्मथीपणसूक्ष्मछे; उत्कृष्टमांउत्कृष्टछे; ते मूर्त्तपणुंकेमफरसे ? तेमजपरदर्शनमां श्रीकृष्णकहेछे, हे ! अर्जुन ! शरीरमां इंद्रियोमोटीछे, अने इंद्रियोथीमनमोटुंछे; मनकरतां बुद्धिमहोटीछे, अनेतेथीआत्मामोटोछे ॥३९॥४०॥

विकले हंत लोकेस्मिन्नमूर्त्ते मूर्त्तता भ्रमात् ॥ पश्यत्याश्चर्यवद् ज्ञानी वदत्याश्चर्यवद्वचः ॥ ४१ ॥ वेदना येन मूर्त्तत्वं निमित्ता स्फुटमात्मनः ॥ पुद्गलानां तदापत्तेः किंत्वशुद्धस्वशक्तिजा ॥४२॥

अर्थ ॥ हंतइतिखेदे. आविकललोकनेविषे अमूर्त्तिआत्मानेविषे मूर्त्तिपणानाभ्रमथ कीजेज्ञानीपुरुषछे, तेअचंबोदेखेछे, अनेवचनपणअचंबानांबोलेछे ॥ ४१ ॥ जेमाटे जीवात्मानेमूर्त्तिनिमित्तवेदना प्रगटपणेछे, एमजोमानिएतो, पुद्गलनेवेदनाथइजोइयें; ते माटेएवेदनातो आत्माने अशुद्धशक्तिथी अनुभवथायछे ॥ ४२ ॥

अक्षद्वारा यथा ज्ञानं स्वयंपरिणमत्ययं ॥ तथेष्टानिष्टविषयस्पर्शद्वारेण वेदनां ॥४३॥ विपाककालं प्राप्यासौ वेदना परिणामभाक् ॥ मूर्त्तं निमित्तमात्रं नो घटे दंडवदन्वयि ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ इंद्रियद्वारेंकरी जेम ज्ञानदिशा पोतानीमेले परिणमेछे, तेमइष्टअनिष्टविषयस्पर्शद्वारेंकरी वेदनापरिणमेछे ॥ ४३ ॥ विपाककालपामीने आवेदनापरिणामने जेम आत्माभजेछे, तेथी अमारेमतें मूर्त्तिपणुंतेनिमित्तमात्रथयुं, अन्वयीके० सहचारीथयुं, जेमघटनेविषे दंडसहचारीछे तेनीपेठेजाणवुं ॥ ४४ ॥

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्याद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफलाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैतन्यं चातिवर्त्तते ॥ अतो देहेन नैकत्वं तस्य मूर्त्तेन कर्हिचित् ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेद्विष्टरक्तताछे, तेवडेजीवने कर्मफलनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्त्तिआत्माते चैतन्यपणाने उलंघेनही अनेमूर्त्तिमान् देहसाथेंआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुंछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुद्गलात् ॥ विप्रकृष्टाद्धनादेश्च भाव्यैवं भिन्नात्मनः ॥४७॥ पुद्गलानां गुणोमूर्त्ति रात्मा ज्ञानगुणः पुनः ॥ पुद्गलेभ्यस्ततोभिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥४८॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना, मनोवर्गणाना, वचनवर्गणाना, जेआत्मानेसमीपवर्ति, एकत्वसंगतवर्ति एवातनधनादिक जेपुद्गल, तेतोसर्वेआत्माथी भिन्नके० दूरछे ॥ ४७ ॥ केमकेपुद्गलनोगुणतोमूर्त्तिमान्छे, अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे, माटेपुद्गलथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञानं तथात्मनः ॥ धर्मास्तिकायात्तद्भिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४९ ॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्वं गुणो ज्ञान गुणोऽसुमान् ॥ ततो धर्मास्तिकायान्यमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५०॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे, माटेधर्मास्तिकायथी आत्माजुदोछे, एमप्रभुकहेछे ॥ ४९ ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने आत्मानोज्ञानगुणछे, माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५० ॥

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञानं खल्वात्मनो गुणः ॥ व्योमास्तिकायात्तद्भिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५१॥ आत्मज्ञानगुणः सिद्धः समयो वर्त्तनागुणः ॥ तद्भिन्नं समयद्रव्यादात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५२॥

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे, अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिकायथीआत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे, काल वर्त्तनारूपछे माटेकालथी आत्मद्रव्यजुदुंछे, एमप्रभुकहेछे ॥ ५२ ॥

आत्मनस्तदजीवेभ्यो विभिन्नत्वं व्यवस्थितं ॥ व्यक्तिभेदेन वादेशादजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिनः शुद्धभावप्राणव्यपेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एप्रमाणेअजीवथी आत्मानुजुंदापणुं सत्यछतुं, पणभेदेंकरी देशथकी अजी

वपणुपणवंछीयेछइये ॥ ५३ ॥ जेमनिर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितप णे अजीवपणुकहिये, तेमशुद्धभावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेछैये ॥५४॥

इंद्रियाणि बलं श्वासो छ्वासो ह्यायुस्तथा परं ॥ द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः पर्यायाः पुद्गलाश्रिताः ॥ ५५ ॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै र्नास्ति जीवनं ॥ ज्ञानधैर्यसदाश्वासनित्यस्थितिविकारिभिः ॥५६॥

अर्थ ॥ इंद्रिय, बल, श्वासोछ्वास, अनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेछे. एनापर्यायतो पुद्गलने आश्रीरह्याछे॥५५॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाछे, माटे एवडे कांइआत्माने जीववुं नथी. एपर्यायतो ज्ञान, धैर्य, तेनाश्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वर्जितछे ॥ ५६ ॥

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥ जीवत्यात्मा स देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥ जीवोजीवति न प्राणैर्विना तै रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्रंयंको हंत पर्यनुयुज्यतां ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेछे, एशुद्धद्रव्यनयनी स्थितिजाणवी॥५७ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी,एजीवतोप्राणविनाजीवेछे,एअचंबा नीवात विचित्रकारी चरित्रसांभली कोणनहखें?अनेएवातशुद्धनयें कोणनजोडे? ॥५८॥

नात्मा पुण्यं नवा पापमेते यत्पुद्गलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो पादानत्वेन कल्प्यते ॥५९॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्तमशुभं पाप मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि॥६०॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही, तेमपापपणनही, केमके पुण्यनेपापतो पुद्गलरूपछे. प्रथम बालकाले जेशरीरतेनेउपादानभावेकल्पेछे ॥ ५९ ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहिये, अनेजे अशुभकर्मतेपापकहिये, तेवारे तेशुभकर्मजेछे, तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेछे?॥ ६० ॥

नह्यायसस्य बंधस्य तपनीयमयस्य च ॥ पारतंत्र्याविशेषेण फ लभेदोस्ति कश्चन॥६१॥फलाभ्यां सुखदुःखाभ्यां न भेदः पुण्य पापयोः ॥ दुःखान्नभिद्यते हंत यतः पुण्यफलं सुखं ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ एकलोहनीबेडी अनेएकसुवर्णनीबेडी तेपणपरवशपणुंछे, .माटेविचारीयेंतो फलभेदकांइनथी, तेमअशुभकर्मते लोहनीबेडीअनेजे शुभकर्मते सुवर्णनीबेडी ॥६१॥

सुखनांफल अने दुःखनांजेफलप्रगटेछे, तेथीपुण्यपापमध्ये कांइभेदनथी. जेथकीपुण्य सुखविलसे, एपुण्यनुंफलछे, तेपणदुःखरूपजछे ॥ ६२ ॥

सर्वं पुण्यफलं दुःखं कर्मोदयकृतत्वतः ॥ तत्र दुःखप्रतीकारे
विमूढानां सुखत्वधीः ॥६३॥ परिणामाच्च तापाच्च संस्काराच्च
बुधैर्मतं ॥ गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखं पुण्यभवं सुखं ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्वपुण्यनुंफल तेदुःखरूपछे, केमकेएकर्मनाउदयथीथायछे. माटेदुःख नाप्रतीकारनेविषे मूर्खनेसुखबुद्धिउपजेछे ॥ ६३ ॥ पंडितकहेछेके, परिणामथी, तथाता पथी,अनेसंस्कारथी गुणवृत्तिविरोधी एहवुं जेपुण्य,तेथीनीपनुं जेसुखतेदुःखप्रायछे॥६४॥

देहपुष्टे र्नरामर्त्यनायकानामपि स्फुटं ॥ महाजपोषणस्येव
परिणामोतिदारुणः ॥६५॥ जलुकाः सुखमानिन्यः पिबंत्यो
रुधिरं यथा ॥ भुंजाना विषयान् यांति दशामंते ऽतिदारुणां ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ नरनेराजाने, तथा इंद्रादिकनेपण जेसुखमांशरीरनीपुष्टिथायछे, तेमोटाबो कडानीपेठेछे, ए कथाउत्तराध्ययनमां कहीछेतिहांथीजाणवी. जेवारे वधथयो, तेवारे परिणामेअतिदुःखछे ॥ ६५ ॥ जेमजलोलोही पीतांथका सुखमानेछे, तेमविषयभोग वतांथकाप्राणी सुखमानेछे, पणतेथीअंते माठीदशानेपामेछे ॥ ६६ ॥

तीव्राग्निसंगसंशुष्यत्पयसामयसामिव ॥ यत्रौत्सुक्यात्सदाक्षा
णां तप्तता तत्र किं सुखं ॥६७॥ प्राक्पश्चाच्चारतिस्पर्शात्पुटपाक
मुपेयुषि ॥ इंद्रियाणांगणेताप व्याप एव न निर्वृत्तिः ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ आकरीअग्निमां बलतरायेंकरी लोहपाणीपीयेछे, तेमज्यांसदा इंद्रियोनी उत्कंठाथीघणीज बलतरारहेछे, त्यां शुं सुखछे ?॥ ६७ ॥ पेहेलाअथवापछी पणजेथकी अरतिउपजे, तेने अडकवाथी विपाकपामेथके इंद्रियोना समूहमां ताप व्यापेपणसुखन थाय,एटले पेहेलाबांध्यांजेकर्म तेजेवारे भोगववामांआवे,तेवारेपण अरतिलेशनेजआवे, अनेपछी तेकर्मो विपाकेपण दुःखआपे ॥ ६८ ॥

सदा यत्र स्थितो द्वेषोल्लेखः स्वप्रतिपंथिषु ॥ सुखानुभवकाले
पि तत्र तापहतं मनः॥६९॥ स्कंधात् स्कंधांतरारोपे भारस्येव
न तत्त्वतः ॥ अक्षाल्हादेपि दुःखस्य संस्कारोपि निवर्त्तते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेहनेसदैवशत्रुउपर द्वेषरह्योछे, तेप्राणीजो घरमांसुखेबेठोहोय, तोपणतेह नेसुखनहोय. तेमविषयसुखमां अनुभवकालेपण विषयना तापेकरीजेनुंमनहणा णुंछे, तेहनेसुख क्यांथीहोय? ॥ ६९ ॥ जेमएकखंभाउपरथी बीजाखंभाउपरभारलीधो, पणतत्त्वथी भारउतर्योनही एमइंद्रियोनेआनंदे दुःखनोसंस्कारमटतोनथी ॥ ७० ॥

सुखं दुःखं च मोहश्च तिस्रोपि गुणवृत्तयः ॥ विरुद्धा अपि वर्त्तंते दुःखजात्यनतिक्रमात् ॥ ७१ ॥ क्रुद्धनागफणाभोगोपमोभोगोद्भवो खिलः ॥ विलासश्चित्ररूपोपि भयहेतुर्विवेकिनां ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ सुख, दुःखअनेमोह एत्रणे जोपणविरुद्धछे, तोपणगुणवृत्तियेवर्त्तेछे; केम-केदुःखनीजातिने उलंघनकरीशकतानथी, माटे गुणवर्त्तिरूपछे ॥ ७१ ॥ क्रोधीनागनी-फणना विस्तारसरखो, सर्वभोगविलासछे, वलीतेभोगविलास यद्यपिविचित्ररूपछे, त-थापि विवेकीजनने तेभयनोहेतुछे. ॥ ७२ ॥

इत्थमेकत्वमापन्नं फलतः पुण्यपापयोः ॥ मन्यते यो न मूढात्मा नांतस्तस्य भवोदधेः ॥ ७३ ॥ दुःखैकरूपयोर्भिन्नस्तेनात्मा पु ण्यपापयोः ॥ शुद्धनिश्चयतः सत्यचिदानंदमयः सदा ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एरीतें फलनीअपेक्षायें पुण्यपापनुं एकत्वपणुंठराव्युं. पणजेमूर्खनमानशे, तेसंसारमांभटकशे; अनेजेमानशेतेभवसागरतरीजशे ॥ ७३ ॥ पुण्यअनेपाप एबेहुएक-सरखादुःखरुपजछे;तेथकीआत्माभिन्नछे;शुद्धनिश्चयनयथी सदासत्चिदानंदमयछे.॥७४॥

तत् तुरीयदशाव्यंगरूपमाचरणा न्वयात् ॥ भात्युष्णो द्योतश्ची लस्य घननाशाद्रवेरिव ॥७५॥ जायंते जाग्रतो ऽक्षेभ्यश्चित्रार्थि सुखवृत्तयः ॥ सामान्यं तु चिदानंदरूपं सर्वदशान्वयि ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ एवाततेचोथीदिशायें जाणवायोग्यछे. जेमवर्षाकालमां मेघवरसीरह्या पछी वादलनाशथायछे, अनेसूर्यप्रभाशोभेछे, तेमव्यंगरूपविचित्र एहवाआचरणविशेषेंकरी चोथीदशामांशोभेछे ॥ ७५ ॥ जागताजीवने इंद्रियोनीसुखवृत्तिओ नानाप्रकारनीथा-यछे, पणसामान्य जे चिदानंदस्वरूप तेनेतोसर्वदशामां सरखुंसुखछे ॥ ७६ ॥

स्फुलिंगैर्यथा वन्हि र्दीप्यते ताप्यतेऽथवा ॥ नानुभूतिपराभू ती तथैताभिः किलात्मनः॥ ७७ ॥ साक्षिणः सुखरूपस्य सुषुप्तौ निरहंकृतेः ॥ यथा भानं तथा शुद्धविवेके तदतिस्फुटं ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तणपेंकरीनेजेम अग्निदीपेनही, तपेनही, तेमअनुनवादिकें करीने आत्मानेकइंनथी ॥ ७७ ॥ निद्रावस्थामांजेम सुखरूपनोसाखीजे आत्मातेने अहंकारेंरहितसुखनो नासथायछे, तेमशुद्धविवेकनेविषे तोप्रगटपणेसुखनासेछे ॥ ७८ ॥

तच्चिदानंदनावस्य नोक्तात्मा शुध्दनिश्चयात् ॥ अशुध्दनिश्चयात्कर्म्म कृतयोः सुखदुःखयोः ॥७ए॥ कर्मणोपि च नोगस्य स्रगादेर्व्यवहारतः ॥नैगमादिव्यस्थापि नावनीयाऽनया दिशा ॥७०॥

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धनिश्चयनयथकी आत्माचिदानंदनावनोनोक्ताछे; अनेअशुद्धनिश्चयनयथकीकर्मेंकस्यांजे सुखदुःखतेनोनोक्ताछे ॥ ७ए ॥ फुलनीशय्या तथा फुलनांनूषण प्रमुखनेविषेनोगकर्मनी व्यवहारथीप्रवृत्तिछे; तेमनैगमादिकनयनी व्यवस्थापण आवीरीतें नावियें; तेनीचेंलख्याप्रमाणेछे. ॥ ७० ॥

कर्त्तापि शुध्द नावाना मात्माशुध्दनयाद्विनुः॥ प्रतीत्यवृत्तिं यच्छुध्दक्षणानामेष मन्यते ॥ ७१ ॥ अनुपप्लवसाम्राज्ये विषनागपरिक्षये ॥ आत्मा शुध्दस्वनावानां जननाय प्रवर्त्तते ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनावनोकर्त्ता आत्माशुद्धनयथी समर्थछे, जेवारेंशुद्धपरिणामीछे, तेसमर्थवीर्यवृत्तिनेआश्रयीने शुद्धनावनोकर्त्ताछे. एमशुद्धनयवालोमानेछे ॥ ७१ ॥ उपद्रव अंतरायादिकेरहित साम्राज्यपणानेविषे दुष्टनावनोनाशथयेछते आत्माशुद्धस्वनाव प्रगटकरवाने प्रवर्त्तेछे ॥ ७२ ॥

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासितं ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्तं नवांत इति कथ्यते ॥ ७३ ॥ यश्च चित्तक्षणक्लिष्टो नासावात्मा विरोधतः ॥ अनन्यविकृतं रूपमित्यर्थत्वं ह्यदः पदं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेरागादिक क्लेषवरूं चित्तवासितहोय, तेसंसारकेहेवाय. अने रागद्वेषथीमुकाववुं तेनुंनाम मुक्तिछे, एमजाणवुं ॥७३॥ रागद्वेषेंव्याप्यो जेमननोक्लिष्ट परिणामछे, तेकांइआत्मानोनथी. आत्मानुंरूपतो सत्यार्थपणेअविकारीछे ॥ ७४ ॥

श्रुतवानुपयोगश्चेत्येतन्मिथ्या यथा वचः ॥ तथात्मा शुध्दरूपश्चेत्येवं शब्दनया जगुः ॥ ७५ ॥ शुध्दपर्यायरूपस्तदात्मा शुध्दस्वनावकृत् ॥ प्रथमाप्रथमत्वादि नेदोप्येवं हि तात्त्विकः ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जेम आत्मानोउपयोग श्रुतवंतछे एखोटुंछे, तेमशब्दनयवालाकहेछेके आत्माशुद्धरूपनथी, एपणखोटुंछे ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूप आत्मा, पूर्वपश्चात्पणानो जेभेद तेपणे शुद्धस्वभावनोकर्त्ताछे. एमतात्त्विकछे ॥ ७६ ॥

ये तु दिक्पटदेशीयाः शुद्धद्रव्यतयात्मनः ॥ शुद्धस्वभावकर्तृत्वं जगुस्ते पूर्वबुद्धयः ॥७७॥ द्रव्यास्तिकस्य प्रकृतिः शुद्धा संग्रह गोचरा ॥ येनोक्ता संमतौ श्रीमत्सिद्धसेनदिवाकरैः ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ दिगंबरएमकहेछेके, शुद्धद्रव्यार्थें वलीजेमउपयोगविनाश्रुतभण्यो तेनुंपण शुद्धस्वभावनुं कर्त्तापणुंजतुंनथी; केमकेतेतेने स्वभावेजपरिणमेछे. एमअपूर्वबुद्धिनुं केहेवुंछे ॥७७॥ द्रव्यास्तिकनयनीजे शुद्धप्रकृतिछे, तेसंग्रहनयउपरचाले, केमकेसम्मति ग्रंथमां सिद्धसेनसूरियेंकह्युंछे ॥ ७८ ॥

तन्मते च न कर्तृत्वं भावानां सर्वदान्वयात् ॥ कूटस्थः केवलं ति ष्ठत्यात्मा साक्षित्वमाश्रितः ॥७९॥ कर्तुं व्याप्रियते नायमुदासी न इव स्थितः ॥ आकाशमिव पंकेन लिप्यते न च कर्मणा ॥ ९० ॥

अर्थ ॥ तेनेमते कर्त्तापणुंनथी, केमकेसदैवभावनो अन्वयछे. माटेकूटस्थकेवल निर्विक्रियजे आत्मा तेसाक्षीपणाने आश्रीनेरह्योछे ॥७९॥ करवानोव्यापार करतोनथी; उदासीनीपेठेरह्योछे. जेमकचरें आकाशलेपातुंनथी, तेमकर्मेंआत्मा लेपातोनथी ॥९०॥

स्वरूपं तु न कर्त्तव्यं ज्ञातव्यं केवलं स्वतः ॥ दीपेन दीप्यते ज्यो ति र्नित्यपूर्वं विधीयते ॥९१॥ अन्यथा प्रागनात्मा स्यात्स्वरूपा ननुवृत्तितः ॥ भवहेतुसहस्रेणाप्यात्मता स्यादनात्मनः ॥ ९२ ॥

अर्थ ॥ पोतानारूपनेनवीनकरवुंनथी. मात्रपोताना रूपनेपोताथकीकेवल जाणी लेवुंछे. जेमदीवेथी ज्योतिदीपेछे, तेमनित्य शाश्वतआत्मा स्वप्रकाशहोवाथी पोतेपोताने प्रकाशेछे ॥ ९१ ॥ एम आत्माने स्वप्रकाश अने शाश्वत अंगीकार करीएनही अने परप्रकाश तथा कर्तृत्व सिद्धमानीए तो, पूर्वेंअनात्मपणुं अंगीकार करवुंपडशे. केमके क्रियावडे उत्पन्नथएलापदार्थनुं पूर्वेनुं रूप जुंडुज होयछे, एवोनियमछे. एवी रीतेआत्मानी उत्पत्तिनी पूर्वे आत्माने अनात्मामानवो पडशे अने क्रियावडे आत्मानुं रूपांतरथाएछे, एममानीएतो, आत्मानी आवृत्ति अंगीकारकरवीपडशे. आवृत्ति अंगीकारकरीएतो संसारविषयक हजारोकृत्यरूप हेतुवडे हजारोरूप बदलाशे. त्यारें

पूर्व पूर्वनुरूपअनात्मा अने उत्तर उत्तरक्रियाजन्यरूप आत्मामानवो पडशे, अनेएम करवाथी छेवटें अनवस्था दोष प्राप्तथशे ॥ ९२ ॥

नये तेनेह नो कर्त्ता किंत्वात्मा शुद्धभावभृत् ॥ उपचारात्तु लोके
षु तत्कर्तृत्वमपीष्यते ॥ ९३ ॥ उत्पत्तिमात्रं धर्माणां विशेषग्रा
हिणो जगुः ॥ अव्यक्तिरावृत्तेस्तेषां नाभावादिति का प्रमा॥ ९४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआनयनेविषे कर्त्तापणुनथी केमके आत्माशुद्धभावनो धरनारछे अनेलोकमां उपचारथी तेनुंकर्त्तापणुकेहेछे ॥ ९३ ॥ विशेषग्राही जेज्ञानीपुरुषोछे तेपूर्वोक्तरीते आत्माने क्रियासिद्ध मानतानथी, किंतु आत्मानाधर्मोनी उत्पत्ति मानेछे. आंही कोइने शंकाथशे के,जेम आत्माअव्यक्तछे, तेमआत्मानाधर्मपण अव्यक्तछे; तो ज्यारेआत्मानी उत्पत्ति मानतानथी, त्यारेतेनाधर्मनीउत्पत्तिपण केममनाय ? तेनुं समाधानजे, केटलीएकअव्यक्त वस्तुओ आकाशनीपेठे जेमनीतेमरहेछे अने केटलीएक रूपांतरने पामेछे; आत्माशाश्वताव्यक्तछे अने तेनाधर्मअशाश्वताव्यक्तछे माटेतेओनी आवृत्तिथायछे. केमके जेमआत्मानी अनावृत्तिमां घणांप्रमाणोछे,तेमआत्मानाधर्मनीआवृत्ति नथवामां कोइप्रमाणनथी, तेथीआत्मानी पुनरावृत्ति थतीनथी;पणआत्माना धर्मोनीपुनरावृत्तिथायछे, एवुंसिद्धथयुं ॥ ९४ ॥

सत्वं च परसंताने नोपयुक्तं कथं च न ॥ संतानिनामनित्यत्वा
त्संतानोपि न च ध्रुवं ॥९५॥ व्योमाव्युत्पत्तिमत्तत्तदवगाद्दात्मना
ततः ॥ नित्यता नात्मधर्माणां तद्दष्टांतबलादपि ॥ ९६ ॥

अर्थ ॥ आत्मानुंउत्पत्तिरहितपणु दृष्टांतवडेदृढकरेछे. जेमपितापुत्ररूप परिवारनी उत्पत्तिमां पूर्वपूर्वपितारूप कारणथी उत्तरउत्तर पुत्ररूपकार्यनीउत्पत्तिथयाथी पितापणानोअभाव अनेपुत्रपणानोभाव थायछे, एमसंकलनाचालतां जेमपितानोनाश तेमपुत्रनो पणनाशथायछे. तेमअनात्माथी आत्मानीउत्पतिरूप प्रवाहथी पूर्वनोअभाव अनेउत्तरनो भावथतां पूर्वनीपेठे उत्तरनानाशनो पणसंभव सिद्धथायछे. एथीआत्मा अशाश्वत अनेनाशरूप ठरशे ॥ ९५ ॥ आकाशनादृष्टांतवडे आत्मानुंअचलपणु अने आत्मानाधर्मोनुं चलायमानपणु सिद्धकरेछे. जेमआकाशउत्पत्तिरहितछे, तेथीतेनुंरूपांतर थतुंनथी, तेमजआत्मापण उत्पत्तिरहित होवाथीतेनुं रूपांतरथतुंनथी. अनेआ-

त्मानाधर्मे उत्पत्तिवानूछे, तेथीतेनुं रूपांतरथायछे. अहींपण आकाशनुंव्यतिरेकपणे दृष्टांतलेवुं. जेवस्तुआकाशनीपेठे उत्पत्तिरहित नथीहोती, तेनुंरूपांतर थायछे ॥ ए६ ॥

ऋजुसूत्रनयसूत्रः कर्तृतां तस्य मन्यते ॥स्वयं परिणमत्यात्मा यं यं भावं यदा यदा ॥ ए७ ॥ कर्तृत्वं परभावानामसौ नाभ्युप गछति ॥ क्रियाद्वयं हि नैकस्य द्रव्यस्याभिमतं जिनैः ॥ ए८ ॥

अर्थ ॥ ज्यारेआत्मानुं रूपांतरथतुंनथी, त्यारेपरिणामवादनो उछेदथशे, एवीआशंकाकरीनेतेनो उत्तरकहेछे. ऋजुसूत्रनयवालो, ज्यारेज्यारे जेजेभावनापरिणामने आत्मापामेछे, त्यारेत्यारे तेतेभावरूप कर्मवडे परिणामरूप उत्पत्तिमानेछे, तथापिआत्माते कर्तृत्वपणे बीजाभावनी प्राप्तिथतीनथी, केमके एकद्रव्यमां बेक्रियासंभवेनही, एवुंजिनने अभिमतछे ॥ ए७ ॥ ए८ ॥

भूतिर्या हि क्रिया सैव स्यादेकद्रव्यसंततौ ॥ न साजात्यं विना च स्यात् परद्रव्यगुणेषु सा ॥एए॥ न चैवमन्यभावानां न चेत्कर्त्ता परोजनः ॥ तदा हिंसादयादानहरणाय व्यवस्थितः ॥ १०० ॥

अर्थ ॥ भूतिएटले भावअनेक्रिया एबन्नेनोएक अर्थछे. ते एकद्रव्यसंततिनेविषे सामान्यविना नथाय; अनेद्रव्यनागुणनेविषे पणनथाय; केमकेकोइपण द्रव्य अपरभावनो कर्त्ताहोतोनथी. ॥ एए ॥ एमजआत्मानेविषे अन्यभावनुं कर्त्तापणुंनथी. त्यारेशिष्यपूछेछे, के हिंसा दया दानवगेरेनी व्यवस्थाकेम रहेशे? ॥ १०० ॥

सत्यं पराश्रयं न स्यात् फलं कस्यापि यद्यपि ॥ तथापि स्वगतं कर्म स्वफलं नाभिवर्त्तते ॥१०१॥ हिनस्ति न परं कोपि निश्चया न्न च रक्षति ॥ न चायुः कर्मणो नाशो मृतिजीवनमन्यथा ॥१०२॥

अर्थ ॥ त्यारेगुरुकहेछे, तारुंबोलवुं साचुंछे. कोइनेपण पराश्रये फलथतुंनथी, तथापिपोतानेविषे रहेलुंजेकर्म तेपोतानाफलनेविषे प्रवर्त्ततुंनथी ॥ १०१ ॥ निश्चयवडे बीजाकोइने कोइमारतोनथी; तेमकोइनुंकोइ रक्षणकरतोनथी; आयुकर्मनो नाश थायनही; अनेमृत्युजीवन अन्यथाथायनही ॥ १०२ ॥

हिंसादयाविकल्पाभ्यां स्वमताभ्यां तु केवलं ॥ फलं विचित्रमाप्नोति परापेक्षां विना पुमान् ॥१०३॥ शरीरी म्रियतां मा वा ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ॥ दयैव दयमानस्य बंधेपि प्राणिनां क्वचित् ॥१०४॥

अर्थ ॥ हिंसाअने दयानीपणमात्र कल्पना करवीछे. पोतानामतेकरी तोपरनीअपेक्षाथी पुरुषकेवल विचित्रफलने पामेछे ॥ १०३ ॥ जीवनोघातथाय, अथवानथाय, तोपण जेप्रमादीजीवछे, तेनेनिश्चयेकरी हिंसाथायछे; अनेजे दयावानूप्राणीछे तेनाहाथे कदाचूकोइजीवनी घातथइजाय, तोपणतेने हिंसालागतीनथी ॥ १०४ ॥

परस्य युज्यते दानं हरणं वा न कस्यचित् ॥ न धर्मसुखयोर्यत्ते
कृतनाशादिदोषतः ॥ १०५ ॥ भिन्नाभ्यां भक्तवित्तादिपुद्गला
भ्यां च ते कुतः ॥ स्वत्वापत्तिर्यतो दानं हरणं स्वत्वनाशनं ॥१०६॥

अर्थ ॥ कोइबीजाने दानदेतोनथी, अनेबीजानी पासेथीकोइकांइ हरणकरी लेतोनथी; धर्मअनेसुखनेविषे पणदानतथा हरणनो संभवनथी; केमके कृतनाशअने अकृतनोप्रसंग इत्यादिदोष प्राप्तथशे. जेमदानकर्युं, तेनोनाशथाय तेनेकृतनाशकहेछे, अनेजेबीजाने आप्युंनथी तेनुंहरणकरवुंते अकृतागम प्रसंगकहेवाय. एवादोष आत्मानेविषे प्राप्तथशे ॥ १०५ ॥ केमकेभोजन तथाधनादिकजेपुद्गल तेतोआत्माथीभिन्नछे. तोतेमांक्यांथी पोतापणुंआव्युं? माटेदानअनेहरणते पोताथीजनाशछे. ॥ १०६ ॥

कर्मोदयाच्च तद्दानं हरणं वा शरीरिणां ॥ पुरुषाणां प्रयासः क
स्तत्रूपनमति स्वतः ॥१०७॥ स्वागताभ्यां तु भावाभ्यां केवलं
दानचौर्ययोः ॥ अनुग्रहोपघातौ स्तः परापेक्षा परस्य न॥१०८॥

अर्थ ॥ वलीतेदान अनेहरणप्राणीने कर्मनाउदयथकीछे, त्यांपुरुषनेशोप्रयासछे? तेतोपोतानीमेलेज उदयपामेछे ॥ १०७ ॥ पोतामांरह्या एवाजेदानअनेहरणना भाव तेणेकरीनेएकथी उपकारथाय; बीजाथीउपघातथाय; त्यांपरनीअपेक्षापरनेनही ॥१०८॥

पराश्रितानां भावानां कर्तृत्वाद्यभिमानतः ॥ कर्मणा बध्यतेऽज्ञा
नी ज्ञानवांस्तु न लिप्यते ॥१०९॥ कर्त्तैवमात्मनो पुण्यपापयो
रतिकर्मणोः ॥ रागद्वेषाशयानां तु कर्त्तेष्टानिष्टवस्तुषु ॥ ११० ॥

अर्थ ॥ परआश्रितजे तेनोहुंकर्त्ताछुं, एमअभिमानथीकहेवुं, एवांकर्मेअज्ञानीबंधायछे. पणज्ञानीतेवाकर्मे लेपातानथी ॥ १०९ ॥ माटेआत्मातेपुण्यपापरूप कर्मनोकर्त्ताछे, राग द्वेषआशयनो कर्त्ताछे; अनेइष्टअनिष्टवस्तुनेविषेपण आत्मा कर्त्ताछे. ॥११०॥

रज्यते द्वेष्टि चार्थेषु तत्तत्कार्यविकल्पतः ॥ आत्मा यदा तदा कर्म भ्रमदात्मनि युज्यते ॥ १११ ॥ स्नेहाभ्यक्ततनौ रंगं रेणुना श्लिष्यते यथा ॥ रागद्वेषानुविद्धस्य कर्मबंधस्तथा मतः ॥ ११२॥

अर्थ ॥ जेवारेतेतेकर्मनाविकल्पथी आत्माने कोइपदार्थउपर रागदिशा अथवाद्वेषउपजेछे, तेवारेआत्मामां कर्मनोभ्रमजोडायछे ॥ १११ ॥ तेललगाडेलाशरीरे जेम रजनोलेपवलगेछे, तेमरागीअनेद्वेषी आत्माने कर्मनोबंधवलगेछे ॥ ११२ ॥

आत्मा न व्यापृतस्तत्र रागद्वेषाशयं सृजन् ॥ तन्निमित्तोपनम्रेषु कर्मोपादानकर्मसु ॥ ११३ ॥ लोहं स्वक्रिययाभ्येति भ्रामकोपलसंनिधौ ॥ यथा कर्म तथा चित्रं रक्तद्विष्टात्मसंनिधौ ॥११४॥

अर्थ ॥ तिहांआत्मापोते कोइक्रियाकरतोनथी. पणराग द्वेषकरतोथको तेनिमित्तेपाम्यां जेकर्म तेनानिमित्तेकर्त्तापणुकर्मछे; पणतिहांआत्मातो रागद्वेष रूपकर्मनो मूकनारोछे. एटले आत्मा भावकर्मनो व्यापारवंतछे; पणद्रव्यकर्मनोव्यापारवंतनथी ॥ ११३ ॥ जेमचमकपाषाणते लोहने आकर्षे, तेणेकरीलोह पोतानीक्रियाये चमकपासेआवीमले, तेमरागद्वेषीआत्मानीपासे कर्मआकर्षणेआवीमलेछे ॥ ११४ ॥

वारि वर्षन् यथांभोदो धान्यवर्षी निगद्यते॥ भावकर्म सृजन्नात्मा तथा पुद्गलकर्मकृत् ॥ ११५ ॥ नैगमव्यवहारौ तु ब्रूतः कर्मादिकर्तृतां ॥ व्यापारः फलपर्यंतः परिदृष्टो यदात्मनः ॥ ११६ ॥

अर्थ ॥ जेमपाणीवरसेछे, तेलोकव्यवहारे धान्यवरसेछे एमकहिये; तेमभावकर्मकरतोथको आत्मापुद्गल कर्मनोकर्त्ताकहिये ॥ ११५ ॥ नैगमअनेव्यवहारनयवाला तो कर्मादिकनोकर्त्ताआत्माने मानेछे; जेआत्मानो व्यापार तेफलपर्यंतदेखायछे ॥ ११६ ॥

अन्योन्यानुगतानां का तदेतदिति वा भिदा ॥ यावच्चरमपर्यायं यथा पानीयदुग्धयोः ॥ ११७ ॥ नात्मनो विकृतिं दत्ते तदेषा नयकल्पना ॥ शुद्धस्य रजतस्यैव शुक्तिधर्मप्रकल्पना ॥ ११८ ॥

अर्थ ॥ परस्परमल्याएवाजेनय तेने एवोनिर्णययावत् चरमपर्यायछे. परंतुजातिभेदकेमजणाय ? जेमदुधअनेपाणीनासंयोगनीपेठेसंग्रहमाने नैगमने, अनेनैगममाने संग्रहने, एबेनयमांहोमांहेंमलेछे एमव्यवहारपण मलेछे ॥११७॥ वलीशुद्धनयवालो बोले-

छेजे, आत्मानेविकार नथी, आपतोएवीनैगम तथाव्यवहारनयनी कल्पनाछे. केनी पेठे? तेकहेछे. जेमशुद्धरूपानेछीपनोधर्म कल्पेछेतेनीपेठे जाणवुं ॥ ११८ ॥

मुषितत्वं यथा पांथगतं पथ्युपचर्यते ॥ तथा पुद्गलकर्मस्था विक्रि
यात्मनि बालिशैः ॥ ११९ ॥ कृष्णशोणोपि चोपाधेर्नाशुद्धः स्फ
टिको यथा ॥ रक्तोद्विष्टस्तथैवात्मा संसर्गात्पुण्यपापयोः ॥१२०॥

अर्थ ॥ जेमपंथीजनने लुंटतांलोककहेछेजे मार्गलुंटाणो, एलोकवाक्यछे; तेममूर्खप्राणी पुद्गलकर्ममांरही जेविक्रियाकरे तेआत्मानेविषे मानेछे ॥ ११९ ॥ जेमकालो अथवारातो स्फटिकछे तेउपाधिथीछे; माटेतेथीतेने अशुद्धनकहियें; तेमपुण्यपापना संयोगथी आत्मारागीद्वेषी कहेवायछे ॥ १२० ॥

सेयं नटकला तावद् यावद्विविधकल्पना ॥ यद्रूपं कल्पनातीतं
न तु पश्यत्यकल्पकः ॥१२१॥कल्पनामोहितो जंतुः शुक्लं कृष्णं
च पश्यति ॥ तस्यां पुनर्विलीनायामशुक्लं कृष्णमीक्षते ॥१२२॥

अने ॥ जिहांसुधीविविध प्रकारनीकल्पनाहोय, तिहांसुधीएसर्वे नटकलारूपछे. पणकल्पनायेअतीतजेरूप तेनेतो जेअकल्पकहोय तेदेखे ॥ १२१ ॥ पणकल्पनायेमुंझाणो जेजीव तेतो धोलानेकालुंदेखेअनेकालाने धोलुंदेखे, अनेतेकल्पना जेवारेजाय तेवारे तोकालानेकालुंजदेखे, अनेधोलाने धोलुंजदेखे ॥ १२२ ॥

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः ॥ पुण्यपापवि
हीनस्य यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥ १२३ ॥ शरीररूपलावण्यवप्र
छत्रध्वजादिभिः॥वर्णितैर्वीतरागस्य वास्तवी नो पवर्णना ॥ १२४ ॥

अर्थ ॥ पुण्यपापरहित एहवाजेपरमात्माप्रभु तेनास्वरूपनुं चिंतववुं तेनेजध्यानकहियें, अनेस्तुतिपणतेज तथाभक्तिपणतेजकहिये ॥ १२३ ॥ पणशरीरनावर्णे, रूपेंकरी, लावण्यतायेकरी, समोसरणे, अनेछत्रेकरी, तथा इंद्रध्वजादिकेकरी जेपरमात्मानेवखाणवा एहवीस्तुतिने वस्तुतः साचीनकहिये ॥ १२४ ॥

व्यवहारस्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्त्तिनां॥ज्ञानादीनां गुणानां तु
वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥ १२५॥ पुरादिवर्णनाद्राजा स्तुतः स्या
दुपचारतः ॥ तत्त्वतः शौर्यगांभीर्यधैर्यादिगुणवर्णनात् ॥१२६॥

अर्थ ॥ केमके एस्तुतितोव्यवहारेछे. पणजेमां वीतरागनाज्ञानादिकगुण प्रशंसवा

तेहनेनिश्चयस्तुतिकहिये ॥१२५॥ जेमदेशनगरादिकेकरी राजावखाणवो एउपचारेस्तुतिजाणवी;पणराजानुंबल, गांनीर्यता, धैर्यतानुंवर्णववुं, तेनिश्चयथीस्तुतिकहिये ॥१२६॥

मुख्योपचारधर्माणा मविन्नागेन या स्तुतिः॥ न सा चित्तप्रसादा
य कवित्वं कुकवेरिव ॥ १२७ ॥ अन्यथान्निनिवेशेन प्रत्युतान
र्थकारिणी ॥ सुतीक्ष्णखड्गधारेव प्रमादेन करे धृता ॥ १२८ ॥

अर्थ ॥ जेम कुकविनीकविताथी पंडितरीझेनही, तेमबाह्यउपचार देखीवेहेचणविनानीजेस्तुतिकरिये, तेथकी चित्तप्रसन्नथायनही ॥१२७॥ जेपोतानाहठ—कदाग्रहेकरी मुखउपचारे स्तुतिकरी गुणमानेछे, पणतेउलटी अनर्थकारीछे; जेमप्रमादेकरीहाथमांझालेली तरवारनीधार तेजोकदाचूपडे, तोउलटी अनर्थ—विघातकरेछे; तेनीपरें तेस्तुतिपण अन्यथाजाणवी ॥ १२८ ॥

मणिप्रन्नामणिज्ञानन्यायेन शुन्नकल्पना ॥ वस्तुस्पर्शितया
न्याय्या यावन्नान्यजनप्रथा ॥१२९॥ पुण्यपापविनिर्मुक्तं तत्त्वत
स्त्वविकल्पकं ॥ नित्यं ब्रह्म सदाध्येय मेषाशुध्दनयस्थितिः ॥१३०॥

अर्थ ॥ मणिरत्ननीकांतिदेखीने जेममणिनुंज्ञानके०ओलखाणथायछे, एदृष्टांते, शुन्नकल्पनायेकरी आत्मानुंज्ञानहोयछे. पछीवस्तुस्पर्शिकवडेकरी योग्यताथायछे; पणज्यांसुधिनिरंजन प्रथानथीथयी, त्यांसुधीकर्मछे. ॥ १२९ ॥ माटेपुण्यपापरहितपणे तत्त्वथीनिर्विकल्पएवो शाश्वतोजे आत्मातेसदायध्यावो. एवीशुद्धनयनीस्थितिछे ॥१३०॥

आश्रवः संवरश्चापि नात्मा विज्ञानलक्षणः ॥ यत्कर्म पुद्गला
दान रोधावाश्रवसंवरः ॥१३१॥ आत्मा दत्ते तु यैर्न्नावैः स्वतंत्रः
कर्मपुद्गलान् ॥ मिथ्यात्वाविरति योगाः कषायास्ते तदाश्रवाः ॥१३२॥

अर्थ ॥ आत्माज्ञानरूपछे. माटेआत्माने आश्रव,संवरकांइनकहिये. पणकर्मपुद्गलनुंग्रहवुं तथारोधवुंते आश्रव संवरछे ॥ १३१ ॥ जेन्नावकरी स्वाधीनपणे कर्मपुद्गलने आत्माग्रहेछे, ते मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अनेयोगरूपआश्रवेकरीजाणवुं ॥ १३२ ॥

न्नावनाधर्मचारित्र--परिषहजयादयः॥आश्रवोछेदिनो धर्मा आ
त्मनो न्नावसंवराः ॥ १३३ ॥ आश्रवः संवरो न स्या त्संवरश्चा
श्रवः क्वचित्॥न्नवमोक्षफलान्नेदोऽन्यथा स्याध्देतुसंकरात् ॥ १३४॥

अर्थ ॥ अनेभावनाधर्मजेचारित्रछे, जेथकी परिषहनोजयथायते एआश्रवनो उछेदकधर्मछे. एआत्माने भावसंवरकहियें॥१३३॥ जेआश्रवतेसंवरनथाय. अनेजेसंवर ते आश्रवनथाय. हेतुसंकर एवेजोकदापि एकरूपथाय, तोसंसारअने मोक्ष एवेनांफल पण एकथाय. पणतेमांभेदरहेनही,एटलेज्यांआश्रवेकरीसंवरनुं संक्रमणथाय, त्यांमोक्षफल जाणवुं; अनेज्यांसंवरेकरी आश्रवनुंसंक्रमणथाय, त्यांसंसारफलजाणवुं ॥ १३४ ॥

कर्माश्रवश्च संवृण्वा न्नात्मा भिन्नैर्निजाशयैः ॥ करोति न परापेक्षा मलंभूष्णुः स्वतः सदा ॥१३५॥ निमित्तमात्रभूता तु हिंसाऽहिंसा दयोखिलाः ॥ ये परप्राणिपर्याया न ते स्वफलहेतवः ॥१३६॥

अर्थ ॥ आश्रवभावने संवरकरतोथकोजे पोतानाआत्माथीजूदानथी एवाजे पोतानाआशय तेणेकरी परअपेक्षानकरे केमकेतेपोताथी सदायसमर्थछे ॥१३५॥ जेहिंसाअहिंसादिकसघलापरप्राणिनापर्याय ते आत्माने निमित्तभूतछे, पणपोतानेफलहेतुनथी१३६

व्यवहारविमूढस्तु हेतूंस्तानेव मन्यते ॥ वाह्यक्रियारतस्वांत स्तत्त्वं गूढं न पश्यति ॥१३७॥ हेतुत्वं प्रतिपद्यंते नैवेति नियम स्पृशः ॥ यावंत आश्रवाः प्रोक्ता स्तावंतोहि परिश्रवाः ॥ १३८ ॥

अर्थ ॥ व्यवहारमूढजेआत्मातेपरपर्यायने पोताना फलहेतुमानेछे, माटेजेनुंमन वाह्यक्रियामांरक्तछे तेवाप्राणीगुप्ततत्त्वने देखतानथी ॥ १३७ ॥ जेहिंसादिक तथाअहिंसादिक परपर्यायहेतुपणुंछे, तेनेपडिवजे अथवानथीपडिवर्जता, एहवोनियम तेतोनिश्चयनाजेफरसनाराछे तेहनेजेटलाआश्रवछे तेटलासंवररूपथाय ॥ १३८ ॥

तस्मादनियतं रूपं वाह्यहेतुषु सर्वथा ॥ नियतौ भाववैचित्र्या दात्मैवाश्रवसंवरौ ॥ १३९ ॥ अज्ञाता विषयासक्तो वध्यते विषयैस्तु सः॥ज्ञानाद्धि मुच्यते चात्मा नतु शास्त्रादिपुद्गलात् ॥ १४० ॥

अर्थ ॥ तेमाटे सदायवाह्यहेतुनेविषे अनियतरूपछे. नियतिनेविषे भावना विचित्रपणाथकी आत्मातेज संवर आश्रवरूपछे ॥ १३९ ॥ जेअज्ञानीछे, अने विषयासक्तछे, तेहिजविषयमां बंधायछे. ते विषयतो आत्माने आत्मज्ञानथकी मूकाय, पणशास्त्रादिक पुद्गलथकी नमूकाय ॥ १४० ॥

शास्त्रं गुरोश्च विनयं क्रियामावश्यकानि च ॥ संवरांगतया प्राहु र्व्यवहारविशारदाः ॥ १४१ ॥ विशिष्टा वाक्तनुस्वांतपुद्गला स्ते फलावहाः॥ये तु ज्ञानादयोभावाः संवरत्वं प्रयांति ते॥१४२॥

अर्थ ॥ शास्त्रजणवुं, गुरुनोविनयकरवो, तथाआवश्यकादिकक्रियाकरवी एनेव्यवहारमां विचक्षणपुरुषोये संवरनांअंगकह्यांछे ॥१४१॥ जेरुडामनवचनकायाचेकरी प्रवर्त्तवुं तेहनाजेपुद्गलतेफलदाइछे, पणजेज्ञानादिकभावछे तेसंवरपणानेपामेछे ॥ १४२ ॥

ज्ञानादिभावयुक्तेषु शुभयोगेषु तद्गतं ॥ संवरत्वं समारोप्य स्मर्यंते व्यवहारिणः ॥ १४३ ॥ प्रशस्तरागयुक्तेषु चारित्रादिगुणेष्वपि ॥ शुभाश्रवत्वमारोप्य फलभेदं वदंति ते ॥ १४४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानादिकभावेयुक्त एवाजेशुभयोगतेनेविषे तद्गतजेसंवरत्वतेनेआरोपीने व्यवहारे प्रवर्त्तकजेजीव तेहर्षपामेछे ॥ १४३ ॥ रुडारागेयुक्त एवाजेचारित्रादिक गुणतेनेविषे पण शुभआश्रवपणु आरोपीने फलभेदकहेछे ॥ १४४ ॥

भवनिर्वाणहेतूनां वस्तुतो न विपर्ययः ॥ अज्ञानादेव तज्ञानां ज्ञानी तत्र न मुह्यति ॥१४५॥ तीर्थकृन्नामहेतुत्वं यत्सम्यक्त्वस्य वर्ण्यते ॥ यच्चाहारहेतुत्वं संयमस्यातिशायिनः ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ संसारतथामोक्षनोहेतु तेनेवस्तुतत्त्वे कांइविपर्यासनथी, पणअज्ञाननायोग थकी तेजगाये विपर्यासपणुथायछे, पणतिहांज्ञानीपुरुष कांइमुझातानथी ॥ १४५ ॥ जिननामकर्मनाहेतु समकितने वर्णवीएछैये, तेपणउपचारेंकहेवायछे. अनेआहारकशरीरनोहेतु जेअतिशयलब्धिवंत संयमिमुनि तेपणउपचारेकहेवायछे ॥ १४६ ॥

तपःसंयमयोः स्वर्ग हेतुत्वं यच्च पूर्वयोः ॥ उपचारेण तद्युक्तं स्याद् घृतं दह्यतीतिवत् ॥ १४७ ॥ येनांशेनात्मनोयोग स्तेनांशेनाश्रवोमतः ॥ येनांशेनोपयोगस्तु तेनांशेनास्यसंवरः ॥ १४८ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वेकहेला तपअनेसंयम स्वर्गेहेतुछे, तेपणउपचारेकहिये; सर्वपरिणामेछे; पण जेमघीबलेछे एउपचारेछे,पणअग्निबलेछेएखरुछे ॥१४७॥ जेअंशेकरी आत्मा योगवर्त्ती थयो तेअंशेआश्रवकहिये अनेजेअंशेआत्माउपयोगी थयो तेअंशेसंवरकहिये ॥१४८॥

तेनासावंशविश्रांतौ बिभ्रदाश्रवसंवरौ ॥ भात्यादर्श इव स्वच्छा स्वच्छभागद्वयः सदा ॥१४९॥ शुद्धैव ज्ञानधारा स्या त्सम्यक्त्व प्राप्त्यनंतरं ॥ हेतुभेदाद्विशेषे तु योगधारा प्रवर्त्तते ॥ १५० ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआ अंशविश्रांतिनेविषे आश्रवसंवर धरेछे; तेमांएकछे मलिन, अने एकछेनिर्मल; जेमआरिशाना पछवाडानो भागमलिनछे, अने आगलोभागनिर्मलछे,

तेहनीपरें सदाय निर्मलमलिन एबेजागेकरीआत्माशोजेबे, आरिसानीपेरें ॥१४ए॥ समकितपाम्यापबी जेशुद्धजज्ञानधाराप्रगटे तेहेतुजेदथकी विशेषेकरी योगधाराप्रवर्त्तेबे१५०

सम्यग्दृशो विशुद्धत्वं सर्वास्वपि दशास्वतः ॥ मृड्डमध्यादिजाव
स्तु क्रियावैचित्र्यतोजवेत्॥१५१॥यदा तु सर्वतः शुद्धिर्जायते धा
रयो र्द्वयोः ॥ शैलेशीसंज्ञितस्थैर्या त्तदा स्यात्सर्वसंवरः॥१५२॥

अर्थ ॥ समकितिने सर्वदशामां शुद्धपणुंबे. एमाटे लघु, मध्यम, उत्तम एजावजे बे, तेक्रियाविचित्रताथीबे ॥ १५१ ॥ जेवारेसर्वथी मनवचनकायानायोग तथाउपयोग, एबेधारानी शुद्धिथाय तेवारेशैलेशीनामेस्थिरताथी सर्वसंवरहोय ॥ १५२ ॥

ततोर्वाग् यच्च यावच्च स्थिरत्वं तावदात्मनः॥संवरो योगचांचल्यं
यावत्तावत्किलाश्रवः ॥१५३॥ निर्जरा कर्मणोत्सादो नात्मा ऽसौ
कर्म्मपर्ययः॥ येन निर्जीयते कर्म स्वजावस्त्वात्मलक्षणं ॥१५४॥

अर्थ ॥ अनेतेथीपेहेलांहेठला गुणठाणेतोजिहांसुधी आत्माने स्थिरतापणुबे, तिहांसुधीआत्माने संवरवर्त्तेबे; अने जिहांसुधीयोगनीचंचलताबे, तिहांसुधीनिश्चयेथी जाणीये जे आत्मानेआश्रवपणुवर्त्तेबे. एमयावत् शैलेशीकरण सुधी समजवुं ॥ १५३ ॥ कर्मनुंजेशाडवुं तेनेनिर्जराकहिये. पणआत्मापोते कर्मपर्यायरूपनथी, तेमाटे कर्मनिर्जरियेएवोजेस्वजाव तेआत्मानुंलक्षणबे ॥ १५४ ॥

तत्तपोद्वादशविधं शुद्धज्ञानसमन्वितं ॥ आत्मशक्तिसमुद्भूतं
चित्तवृत्तिनिरोधकृत् ॥ १५५ ॥ यत्र रोधः कषायाणां ब्रह्मध्यानं
जिनस्य च ॥ ज्ञातव्यं तत्तपः शुद्ध मवशिष्टं तु लंघनं ॥१५६॥

अर्थ ॥ निर्जरानुंकारणते शुद्धज्ञानेसहित प्रगट्यो अने चित्तनी चंचलवृत्तिनेरोकतो एहवो बारजेदेतपबे ॥१५५॥ जिहां प्रजुनाध्यानयुक्त कषायनोरोधबे, ब्रह्मचर्यनुंधरवुंबे, तेशुद्धतपजाणवो. एशिवाय बीजोतपतेमात्रलांघण करवा जेवोबे ॥ १५६ ॥

बुजुक्षादेहकार्श्यं वा तपसो नास्ति लक्षणं ॥ तितिक्षाब्रह्मगुप्त्या
दिस्थानं ज्ञानं तु तद्वपुः ॥१५७॥ ज्ञानेन निपुणेनैक्यं प्राप्तंचं
दनगंधवत्॥निर्जरामात्मनो दत्ते तपोनान्यादृशं क्वचित् ॥१५८॥

अर्थ ॥ जुखेमरवुं, शरीरनेडुबलुंकरवुं, एतपनुंलक्षणनथी, पण जिहांज्ञानयुक्तपणे ब्रह्मचर्यनीगुप्ति, तथा तितिक्षाके० शांतिहोय एतपनुं स्वरूपबे ॥१५७॥ जेज्ञानसाथे एक

ताभावनेपाम्यो, एवोजेतपतेनेतपकहिये. जेमचंदनसाथे गंध एकताभावनेपाम्योछे, ते नीपरेएतपते ज्ञानेयुक्तथकोआत्मानेनिर्जराफलआपे. पण बीजीरीते नआपे ॥ १५८ ॥

तपस्वी जिनभक्त्या च शासनोद्भासनोछया ॥ पुण्यं बध्नाति बहु लं मुच्यते तु गतस्पृहः ॥१५९॥ कर्मतापकरं ज्ञानं तपस्तन्नैव वेत्ति यः ॥ प्राप्नोतु स हतस्वांतो विपुलां निर्जरां कथं ॥१६०॥

अर्थ ॥ निरासीभावेतपनोकरनारो तपसी जिन तथा ज्ञानभक्तिएकरी शासननेदिपावे, अनेघणुंपुण्यबांधे; कर्मथीमुकाय ॥१५९॥ कर्मनेतापवे एवुंज्ञानछे, अनेतेज्ञानमां जेधणी तपनेनजाणे, तेतपसीनिर्बुद्धिनोधणी विपुलनिर्जराकेमपामे ? ॥ १६० ॥

अज्ञानी तपसा जन्मकोटिभिः कर्म यन्नयेत् ॥ अंतं ज्ञानतपोयु क्त स्तत् क्षणेनैव संहरेत्॥१६१॥ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मित्याहु र्मुनिपुंगवाः॥तस्मान्निकाचितस्यापि कर्मणो युज्यते क्षयः ॥१६२॥

अर्थ ॥ ज्ञानविनाएककोटि भवसुधी जेटलांतपकरे, तेतपमांजेटलांकर्मक्षय नथाय तेटलांकर्मोनेएकक्षणमां ज्ञानसहित तपेकरीखपावे ॥ १६१ ॥ माटेज्ञानयोगेजेतपकरवोतेशुद्धछे, एरीतेप्रभुकहेछे, केमकेतेतपथी निकाचितकर्मनो क्षयथायछे ॥ १६२ ॥

यदिहापूर्वाकरण श्रेणिः शुद्धा च जायते॥ ध्रुवः स्थितिक्षयस्तत्र स्थितानां प्राच्यकर्मणां॥१६३॥तस्माद् ज्ञानमयः शुद्ध स्तपस्वी भावनिर्जरा॥शुद्धनिश्चयतस्त्वेषा शुद्धाशुद्धस्य कापि न॥१६४॥

अर्थ ॥ जेतपथीइहांअपूर्वकरण श्रेणिशुद्धथाय, वलिएथीपूर्वकर्मनी रहिजेकर्मनी स्थितिओ तेस्थितिओनिश्चयथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपसीते नेनिश्चयथी शुद्धभावनिर्जराथाय, पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

बंधः कर्मात्मसंश्लेषो ऽन्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्धेत्वध्यवसाया त्मा भावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प स्तथा पुमान्॥तत्त द्भावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना ॥ १६६ ॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहिये. तेबंधचारभेदेछे. तेहेतुअध्य वसाये आत्माभावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीमेले पोतेविंटायछे, तेमआत्मापण तेतेभावे परिणम्योथको पोतेपोतानीमेलेज कर्मसाथेबंधायछे ॥ १६६ ॥

बध्नाति स्वं यथा कोशकारकीटः स्वतंतुभिः॥आत्मनः स्वगतैर्भा वैर्बंधने सोपमा स्मृता॥१६७॥जंतूनां सापराधानां बंधकारी न हीश्वरः ॥ तद्बंधकानवस्थाना दबंधस्याप्रवृत्तितः ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीलाळेकरी पोतेजबंधायछे, तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजबंधायछे. एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे, तेवातनिषेधेछे, अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरबंधकर्त्तानथी. तेईश्वरबंधकर्त्तापणाना निषेध वाथकी अबंधनीय आत्मानेविषे अप्रवृत्तछे. एटलेस्वभावेज बंधनिवृत्तिआत्मानेछेपण ईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्त्वज्ञान प्रवृत्त्यर्थे ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु स्वप्नादौ तददर्शनात् ॥१६९॥ तथा भव्यतया जंतु र्नोदितश्च प्रवर्त्तते ॥ बध्नन् पुण्यंच पापं च परिणामानुसारतः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्त्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थे ध्रुवछे; केमकेस्वप्नादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछे, तेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी; तेमाटे ॥१६९॥ तेमज प्राणीभव्यताये प्रेर्योथको परिणामने अनुसारेकरी पुण्यपापने बांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयतः स्वात्मा न बद्धो बंधशंकया ॥ भयकंपादिकं किंतु रज्जावहिपतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगिणो यथा ॥ भवस्थित्यनुसारेण तथा बंधोपि वर्ण्यते ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माअबंधकछे; पणभयकंपादिकेकरी बंधनीशंका रहेछे. जेमदोरडुंदेखी सर्पनीशंकाउपजेछे, तेनीपरेंजाणवुं ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने अनुसारेरोगछे. एटले जेदिवसेशरीरउपनुं, तेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितिओ शरीरमां उत्पन्नथयलीछे; अर्थात्शरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे. पणतेरोगजेवारेरोगीने कुपथ्यसेवेतेवारेप्रगटथायछे. तेवारेरोगीपुरुषजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे, तेमजभवस्थितिने अनुसारे आत्माने बंधपणकहियेछैये ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीषतः ॥ अध्यात्मशास्त्रमित्थं ति श्रोतुं वैराग्यकांक्षिणः ॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्र न्यायेन तत्पुनः॥प्रत्यक्षविषयां शकां न हि हंति परोक्षधीः ॥१७४॥

अर्थ ॥ दृढअज्ञानमय एहवीजेशंका तेहनेटालवानेइछतो, वैराग्यनो अभिलाषी थको, अध्यात्मशास्त्रसांभलवानेइछेछे ॥ १७३ ॥ जेमनिर्मलचक्षुछतां ग्रहणवेलाजेवी नजरथइजायतोतेणेकरी एकचंद्रनीपासे बीजोचंद्रदेखे एन्यायेकरी जे अध्यात्मशास्त्र छे, तेपणदिशिनुंदेखाडनारछे. पणपरोक्षबुद्धिकांइ प्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टालीनशके. एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी; परोक्षपणेछे. माटेस्वभावेजे अध्यात्मशास्त्रछे, तेपरोक्षबुद्धिछे. पणअनुभवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके; एटले आत्मानुभवि पुरुषो पोतानाअनुभवेकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुभवकरेछे ॥ १७४ ॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोषात्पीतत्वधीर्यथा ॥ शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः संस्काराद्बंधधीस्तथा॥१७५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुःस्मृत्वा साक्षादनुभवं ति ये ॥ तत्वं न बंधधीस्तेषामात्मबद्धः प्रकाश्यते ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जेममधुरानोरोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलतोजाणेछे, पणरोगेकरीतेने पीलावर्णनीबुद्धिथायछे; तेमशास्त्रेकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे, पणमिथ्यात्वबुद्धिना संस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे. एटलेआत्मानेरागी द्वेषीबंधरूपजेदेखेछे, तेअनुभवविना देखेछे. एभावार्थछे ॥ १७५ ॥ गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं सांभलवुं तेनेश्रवणकेहेछे. तेसांभलेलाविषयनो अनुक्रमेपुनःपुनः अंतःकरणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे. अ नेसांभलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययभावरहित थइने उक्तआध्यात्मिक विषयरूप स्वात्मतत्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुभवकरवुं, तेनेनिदिध्यासनकहेछे. एवास्वा त्मतत्वज्ञाता पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी; केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेजछे तेअनुभवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे ? ज्यांसुधी आत्माअनुभवअथवा ज्ञानवडे प्रकाशनेपाम्यो नहतो, त्यांसुधी तमरूपअज्ञान अनेबंधवानूथयोहतो, पण अनुभवथयापछी आत्मानेविषे बंधनथी ॥ १७६ ॥

द्रव्यमोक्षः क्षयः द्रव्यकर्म्मणां नात्मलक्षणं ॥ भावमोक्षस्तु तद्धेतुरात्मा रत्नत्रयान्वयी ॥ १७७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रैरात्मैक्यं लभते यदा ॥ कर्मणि कुपितानीव भवंत्याशु तदा पृथक् ॥ १७८ ॥

अर्थ ॥ जेद्रव्यकर्मनो क्षयतेद्रव्यमोक्षछे, पणतेकांइआत्मानुंलक्षणनथी; मात्रतेद्रव्य कर्मनोक्षयतेमोक्षनो हेतुथायछे. पणआत्मातोरत्नत्रय परिणतिरूपछे. तेने द्रव्यकर्मनो क्षयतो उपचारथीमोक्षहेतुकहिये. पणवस्तुथीतत्त्वबुद्धियेकहेवायनही ॥१७७॥ तेज्ञानद र्शनचारित्रएरत्नत्रयीवडेकरीने जेवारेआत्माएकभावपणानेपामे, तेवारेजेकर्महतां, तेको इकसंसारीजीवजेम रीसाइनेघरमांथीजूदोनिकले, तेमजीवथीजुदांनिकलीजाय ॥ १७८ ॥

अतोरत्नत्रयंमोक्ष स्तदन्नावे कृतार्थता ॥ पाषंम्गिणलिंगैश्च गृहलिंगैश्च कापि न ॥ १७ए ॥ पाषंडिगणलिंगेषु गृहलिंगेषु ये रताः ॥ न ते समयसारस्य ज्ञातारो वालबुध्धयः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ एमाटेजेरत्नत्रयी तेथी मोक्षछे, पणतेरत्नत्रयीनेअन्नावे पांखमीसाधुनासमूहने तथापाखंडी ग्रहीलिंगीने कृतार्थपणु कांइनथी ॥ १७ए ॥ माटेपाखंमीसाधुनासमूहमां तथापाखंमीग्रहीलिंगीमां जेप्राणीरक्तछे, तेहनेवालमतिवाला समजवा; पण तेसिद्धांतनासार एटलेरहस्यना जाणनथी ॥ १७० ॥

न्नावलिंगरता येषु सर्वसारविदो हि ते ॥ लिंगस्था वा गृहस्था वा सिध्यंति धूतकल्मषाः ॥१७१॥ न्नावलिंगं हि मोक्षांगं डव्यलिंगमकारणं ॥ डव्यं नात्यंतिकं यस्मान्नाप्येकांतिकमिष्यते ॥१७२॥

अर्थ ॥ अनेजेप्राणी न्नावलिंगेरातछे, तेहनेसर्वसारना जाणकहिये. तेवेषधारी साधुलिंगेहोय; अथवाग्रहस्थलिंगेहोय; तोपणपापकर्मधोइने मोक्षपामे ॥ १७१ ॥ केमकेजेन्नावलिंगते मोक्षनुंअंगछे, अनेडव्यलिंगतोअकारणछे. डव्यलिंगतेकांइ आत्यंतिकनथी, माटेजेन्नावलिंगीछे, तेडव्यलिंगने एकांतेनथीइछता ॥ १७२ ॥

यथा जातदशालिंगमर्थादव्यन्निचारि चेत् ॥ विपक्षवाधकान्नावात् तध्धेतुत्वे तु का प्रमा॥१७३॥वस्त्रावधारणेच्छाचे ह्याधिकात स्य तां विना ॥ धृतस्य न किमस्थाने करादेरिव बाधकं ॥१७४॥

अर्थ ॥ इहांकोइकहेशेजे, नग्नपणेमोक्षछे. तेनेउत्तरकहेछे. जोएअर्थथी वातखरीछेतो आत्मानेमोहवाधकछे. तेमोहनोअन्नावथाशे, अनेजोनगनपणे मोक्षहोयतो मोह टालवानुं शुंप्रमाण ? तेवारेतोमोहटालवानी कांइजरूरनरहे ॥ १७३ ॥ वस्त्ररक्षणेएटले इछाविनापण जो वस्त्रराखतां मोक्षनीवाधकताछे, तोइछाविनाजे करादिक एटले हाथप्रमुखअंगधर्याछे, तेपणमोक्षना वाधकथाशे, एटले दिगंबरलोककहेछेके वस्त्रराखवाथी मोक्षनीबाधकताछे, तेहनेनिरुत्तरकर्या ॥ १७४ ॥

स्वरूपेण च वस्त्रं चेत्केवलज्ञानबाधकं ॥ तदादिक्पटनीत्यैव तत्तदावरणं न्नवेत् ॥१७५॥ इत्थं केवलिनस्तेन मूर्ध्नि क्षिप्तेन केनचित् ॥ केवलित्वं पलायंतेत्यहोकिमसमंजसं ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जोपरमार्थथी जेवस्त्रछे तेहिजकेवलज्ञानने बाधकपणेहोयतो दिगंबरनी रीते केवलज्ञानावरणीयने ठेकाणे वस्त्रावरणीय एमथयुंजोइये. तेवस्त्रावरणीय कर्मे दिगंब-

रीयो कहेतानथी, एटलीएनीचूकछे ॥१८५॥ एरीतेतो केवलिनेमाथे कोइकवस्त्रओ ढाडे तेवारेकेवलज्ञानने नासीजवुंजोइये, पणकेवलीने वस्त्रओढारुतां केवलज्ञाननासी जायछे एमतोथतुंनथी, माटे अहोइतिआश्चर्य शुंजुतुअसमंजस बोलोछो ! ॥ १८६ ॥

भावलिंगात्ततोमोक्षो भिन्नलिंगेष्वपि ध्रुवः ॥ कदाग्रहं विमुच्यै तद्भावनीयं मनस्विना॥१८७॥अशुद्धनयतो ह्यात्मा बंधोमुक्त इ तिस्थितिः ॥ न शुद्धनयतस्त्वेष बध्यते नापि मुच्यते ॥१८८॥

अर्थ ॥ तेमाटे भावलिंगथीमोक्षछे, वेषनोकांइनियमनथी. कदापिद्रव्यथी अन्य लिंगीनोवेषहोय, तोपणनिश्चयेमोक्षछे. माटेकदाग्रहछांडीने बुद्धिवंतपुरुषे एरीतेविचा- रवुं ॥ १८७ ॥ अशुद्धनयथी आत्माबंधायछे अनेमुंकायपणछे. पणशुद्धनयेतो एआत्मावं धातोपणनथी, अनेमुंकातोपणनथी ॥ १८८ ॥

अन्वयव्यतिरेकाभ्यामात्मतत्त्वविनिश्चयं ॥ नवभ्योपि हि तत्त्वे भ्यः कुर्यादेवं विचक्षणः ॥१८९॥ इदं हि परमध्यात्म ममृतं ह्य द एव च ॥ इदं हि परमं ज्ञानं योगोयं परमः स्मृतः ॥१९० ॥

अर्थ ॥ अन्वयव्यतिरेकेकरीने जेछतेतेछतुं, तेहनेअन्वयकहिये अनेजेअछते तेअ छतुं तेहनेव्यतिरेककहिये ॥ तद्भावेतद्भावोअन्वयः तदभावेतदभावोव्यतिरेकः दंड घटदृष्टांतेनभाव्यं ॥ विचक्षणपुरुषे एरीतेआत्मतत्त्वनो निश्चयनवतत्त्वेकरीने करवो ॥ १८९ ॥ एहिजउत्कृष्टअध्यात्मछे; एहिजअमृतोपमछे; वलीएहिज परमज्ञानछे; अने एहिजपरमयोगकह्योछे ॥ १९० ॥

गुह्याद्गुह्यतरं तत्त्वमेतत्सूक्ष्मनयाश्रितं ॥ न देयं स्वल्पबुद्धी नां तेह्येतस्य विडंबिकाः ॥१९१॥ जनानामल्पबुद्धीनां नैतत्तत्त्वं हितावहं ॥ निर्बलानां क्षुधार्त्तानां भोजनं चक्रिणो यथा॥ १९२॥

अर्थ ॥ छानामांछानुं एतत्त्वछे; माटेसूक्ष्मनयआश्रीने एतत्त्वअल्पबुद्धिने नसंभला- ववुं; शामाटेकेजे अल्पमतिवाला तेएतत्त्वनाविटंबकछे ॥ १९१ ॥ माटेअल्पबुद्धिवंत प्राणीने एतत्त्वहितकरेनही, जेमचक्रवर्त्तिनुं खीरनुं भोजन निर्बलजेक्षुधायेपीड्या प्राणीहोयतेनेपचेनही, तेनीपरेंजाणवुं ॥ १९२ ॥

ज्ञानांशदुर्विदग्धानां तत्त्वमेतदनर्थकृत् ॥ अशुद्धमंत्रपाठस्य फणिरत्नग्रहो यथा ॥१९३॥ व्यवहारविनिष्णातो योज्ञीप्सति विनिश्चयं ॥ कासारतरणाशक्तः सागरं स तितीर्षति ॥ १९४ ॥

अर्थ ॥ तेमखंमखंम पंडिताइयेकरीने अर्धवध्याएहवा जेप्राणी तेनेएतत्त्व अनर्थ कारीछे; जेमअशुद्ध मंत्रनापाठवालो पुरुष सर्पनोमणिलेवाजाय, तेतेनेअनर्थकारी थाय; तेनीपरेंजाणवुं ॥१७३॥ जेप्राणीव्यवहारनयमां कुशलनथी, अनेनिश्चयनयने समजवाजाय, तेप्राणीतलावने तरवामांअसमर्थछतां समुद्रतरवा वांछेछे ॥ १७४ ॥

व्यवहारं विनिश्चित्य ततः शुद्धनयाश्रितः ॥
आत्मज्ञानरतोभूत्वा परमं साम्यमाश्रयेत् ॥ १७५ ॥

अर्थ ॥ व्यवहार अनेनिश्चयेकरी शुद्धनयनेआश्रीने आत्मज्ञाने रतथइ जेप्रवर्त्ते तेप्राणी परमपदनेपामे ॥ १७५ ॥ इतिआत्मनिश्चयाधिकारः अष्टादशसमाप्तः ॥

उत्सर्प्पद्व्यवहारनिश्चयकथाकल्लोलकोलाहलत्रस्यद्दुर्नयवादिक
छपकुलं भ्रश्यत्कुपक्षाचलं ॥ उद्यद्युक्तिनदीप्रवेशसुभगं स्या
द्वादमर्यादया युक्तं श्रीजिनशासनं जलनिधिं मुक्त्वा परं नाश्रये ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनरूप रत्नाकरनीस्तुति करेछे. तेमांप्रथम जिनशासनने समुद्रनीउपमाआपेछे, तेजिनशासनरूपसमुद्र केवोछे ? तेकहेछे. पसरतीएहवी व्यवहारतथा निश्चयनयनीजेकथा, तेरूपजेकल्लोल तेनोजेकोलाहल, तेणेकरीने दुष्टजननयवादिरूपी; काचवानोकुल जेनेविषे त्रासपामेछे वलीजेमांथी कुमतिरूपियपर्वत तुटीगयाछे, भागाछे; वलीजेमांमोहोटी उक्तियुक्तिरूपिणी नदीओनो प्रवेशछे तेणे करीजेसुभग एटले मनोहरछे; वली स्याद्वादशैली रूपमर्यादायेजेयुक्तछे;एवो श्रीजिनशासनरूपरत्नाकरजेसमुद्र तेनेतजीनेपरदर्शननेकोणसेवे ?॥ १ ॥

पूर्णपुण्यनयप्रमाणरचनापुष्पैः सदास्थारसैस्तत्त्वज्ञानफलैः
सदा विजयते स्याद्वादकल्पद्रुमः॥एतस्मात् पतितैः प्रवादकुसुमैः
षट्दर्शनारामभूर्यः सौरभमुद्भमत्यभिमतैरध्यात्मवार्तालवैः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएजिनमतने कल्पवृक्षकरीदेखाडेछे. जेमांपूर्णपवित्रजे सातनय अने चारप्रमाण तेहनीजेरचना तेरूपिय फुलमांहेथी सदैव श्रद्धारूपरसेकरीने तत्त्वज्ञान रूपफल नीपनांछे, एवोस्याद्वादनामाजे कल्पवृक्ष ते सदाजयवंतोवर्त्तो ! एकल्प वृक्षथी खरीपड्यांजे प्रवाहरूपि फूल तेणेकरीने षट्दर्शनरूप वाडीनी जेधरतीते नवनवीअध्यात्मनी जेवार्त्ताओ तेनाजेलव तेणेकरीने भूयः कहेतांफरीने सुगंधपणाने प्रगटकरेछे ॥ २ ॥

चित्रोत्सर्गशुन्नापवादरचनासानुश्रियालंकृतः श्रद्धानंदनचंद
नद्रुमनिन्नप्रज्ञोल्लसत्सौरन्नः ॥ न्राम्यद्भिः परदर्शनग्रहगणैरासे
व्यमानः सदा तर्कस्वर्णशिलोछ्रितो विजयते जैनागमो मंदरः ॥३॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने मेरुपर्वतनी उपमाआपेछे. नानाप्रकारनो उत्सर्गमार्ग अनेरुडोजे अपवादमार्ग तेनीरचनावंत रूपशिखर तेनीशोन्नाये शोन्नितछे. वलीश्रद्धारूपनंदनवनमां चंदननोवृक्ष तेरूपजेबुद्धि तेथकीप्रगटीछे सुगंधजिहां एवोमेरुतुल्यछे. वलीएमेरुपर्वतनीपछवाडे न्रमताजे परदर्शनरूपी ग्रहनासमूह तेणेकरीने सदासेवितछे. तथातर्कजे शुद्धविचार तेरूपिणीसुवर्णशिला तेणेकरीने उंचोछे. एवो जैनागमरूपजेमेरु तेजयवंतोवर्त्तो ! ॥ ३ ॥

स्याद्दोषापगमस्तमांसि जगति क्षीयंत एवक्षणाद् ध्वानो विशदी
न्नवंति निबिमा निद्रादृशोर्गच्छति॥यस्मिन्नन्युदिते प्रमाणदिवस
प्रारंन्नकल्याणिनी प्रौढत्वं नयगीर्दधाति स रविर्जैनागमो नंदतात् ॥४॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने सूर्यनीउपमाआपी वखाणेछे. जैनागमरूपसूर्यनाउदयथकी चोरीजारीइत्यादिदोषटले, वलीजेथकी क्षणेकमां जगत्नेविषे अज्ञानरूपअंधारुं क्षयथाय, जेथकीमार्गनिर्मलथायछे, वलीचक्षुमांथी प्रमादरूपनिद्राजायछे, तथा जेमसूर्योदयथी दिवस उग्योएमसिद्धथायछे, तेमजैनागमना उदयथी प्रमाणनीसिद्धतारूपदिवसनीसिद्धताथायछे, तेजाणियेदिवसनेप्रारंन्ने लोकप्रन्नातेमंगलिकबोलेछे; जेमसूर्यउदये लोकन्यायमार्गेचाले, न्यायनांवचनबोले, तेमजैनसूर्यउदये नयतथा आगमनीवाणीते घणीरूडीरीतेप्रौढतापामेछे. एवोएजिनशासनरूपि सूर्य तेजयवंतोवर्त्तो ! ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिन्निः कुवलयोल्लासं विलासैर्गवां तापव्यापविनाशि
न्निर्वितनुते लब्धोदयोयः सदा॥तर्कस्थाणुशिरःस्थितः परिवृतः स्फा
रैर्नयैस्तारकैः सोयं श्रीजिनशासनामृतरुचिः कस्यैति नो रुच्यतां ॥५॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने चंद्रनीउपमाआपी वखाणेछे. अध्यात्मरूप अमृतनो जेवरसाद तेणेकरीने कुवलयजेपृथवीरूपकमल तेनेविकस्वर करेछे, एवो; वली गवांके० वाणीरूपकिरण तेनाविलासेकरीने संसारना तापनोजेसमूह तेनोनाशकरेछे, एवो; वली एचंद्रमाकेवोछे ? जेतर्कविचार रूपीजे महादेव तेनामस्तकेरह्योथको उदयपाम्योछे, एवो; वली दीतजेनय तेरूपजेतारामंडल तेणेपरिवर्योथको फिरेछे,

एवो; जिनागमचंद्र ते आजिनशासन रूपियोजेचंद्रमाते कोनेरुचिपणाने नउपजावे? अपितु सर्वनेउपजावेज ॥ ५ ॥

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिनां संग्रहात्सांख्यानां तत एव
नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः स
र्वैर्नयैर्गुंफिता जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥६॥

अर्थ ॥ जेनाअनेकनयमांथी एकेकानयग्रहणकरीने एटले रुजुसूत्रनयथी बौद्ध नोमतप्रगट्यो, अनेसंग्रहनयथी वेदांतिकनो मतप्रगट्यो, तथासांख्यमतपण संग्रह नयथीजउपनो अनेनैगमनयथी योगमत अने वैशेषिकमत प्रगट्यो, शब्दनयथकी मीमांसकदर्शन उपनुं, अनेजैनशासनतो सर्वनयेकरीने गुंफितछे, तेमाटेआ जिनशा सनमां सारमांसारपणु प्रत्यक्षपणे रुडीरीतेदेखीये छैये ॥ ६ ॥

ऊष्मा नार्कमपाकरोति दहनं नैव स्फुलिंगावली नाब्धिं सिंधुजल
प्लवः सुरगिरिं ग्रावा नवाभ्यापतत् ॥ एवं सर्वनयैकभावगरिमस्था
नं जिनेंद्रागमं तत्तद्दर्शनसंकथांशरचनारूपं न हंतुं क्षमाः ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उकलाटजे बाफ तेनोजेताप तेसूर्यनेजीतीशकेनही, अनेअग्निना कणि याते दावानलने जीतीनशके, तथासिंधुनदीनुंजल तेनोजेवेग तेलवणसमुद्रने ठेलीन शके, पत्थरनाजेखंड तेमेरुपर्वतने दावीनशके, एमसर्वनयना एकलाभावनी मोहोटाइ नुंस्थानक एहवुं तीर्थंकरनुंजेआगम तेहने तेपरदर्शनीओ हणवानेसमर्थनथी, शामा टेजे ए जैनतेसर्वदर्शनीछे, अनेतेदर्शनीयो जैननाएकेकअंशीछे ॥ ७ ॥

दुःसाध्यं परवादिनां परमतक्षेपं विना स्वं मतं
तत्क्षेपे च कषायपंककलुषं चेतः समापद्यते ॥
सोयं निस्वनिधिग्रहव्यवसितो वेतालकोपक्रमो
नायं सर्वहितावहो जिनमते तत्त्वप्रसिध्यर्थिनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीजेटलाछे तेएकएकनामतने खंड्याविना पोतानामतने थापी शक्तानथी. ए मतमतनोजेकदाग्रह तेनोप्रक्षेपकरतां कषायरूपकादवेकरीने मनम लिनथायछे. एकदाग्रहनो व्यापारतेतो दरिद्रीनाघरनोनिधान हरवाने वेतालगयो तेप्रायजाणवो. एउपक्रम सर्वजिनमतनेविषे हितकारीनथी. माटे अर्थीजीवने ए जि नमत ते तत्त्वरूपे प्रसिद्धछे ॥ ८॥

वार्त्ताः संति सहस्रशः प्रतिमतं ज्ञानांशबंधक्रमाश्चेतस्तासु ततः प्र
याति न तुमां लीनं जिनेंद्रागमे॥नोत्सर्पंति लताः कति प्रतिदिशं पुष्पैः
पवित्रा मधौ ताम्योनैति रतिं रसालकलिकारक्तस्तु पुंस्कोकिलः ॥ए॥

अर्थ ॥ जेनोअनुक्रमज्ञाननेमात्रअंशेकरीनेबंधायोबे, एवीपरदर्शनीओनीवार्त्ता-
बे, तेवामतममत्व हजारोगमेवर्त्तेबे, पणतेवातोनेविषे माहारुंचित्तजातुंनथी. शामाटे-
जेसिद्धांतोनेविषे माहारुंमनलीनबे. माटेचैत्रमासे दिशोदिशेजेफूल तेणेकरीने पवित्र
एहवीजेलता तेकेटलीकविकस्वरथाय, फले, पणपुंस्कोकिलजे कोयल तेआंबानीमंजरी
शुंरक्तएवीथकी तेलताओनेविषेरतिनपामे, तेनीपरे महारुंचित्तपण सिद्धांतरूप आं-
बानीमंजरिये रक्तथयुंथकुं अन्यदर्शनरूप लताओमां जातुंनथी ॥ ए ॥

शब्दोवा मतिरर्थ एव वसु वा जातिः क्रिया वा गुणः शब्दार्थः किमि
ति स्थितिः प्रतिमतं संदेहशंकुर्यथा॥जैनेंद्रे तु मते न सा प्रतिपदं जा
त्यंतरार्थस्थितिः सामान्यं च विशेषमेव च यथा तात्पर्यमन्विच्छति॥१०॥

अर्थ ॥ आशब्दबे, किंवा मतिबे केअर्थबे, केगुणबे, के वस्तुके० द्रव्यबे, केजातिबे
के क्रियाबे? वलीएनो शब्दार्थकेमहशे? एवोसंदेहरूपिखीलो मतमतप्रत्येरह्योबे पण
जिनमतमांनथी.तेपदपदप्रत्ये जात्यंतरअर्थनी स्थितिबे. माटे सामान्यअनेविशेष जेवाप
दार्थनो यथार्थनिश्चय तात्पर्यअर्थतेने नजेबे.माटे जिनमतमां संदेहरूपखीलोनथी॥१०॥

यत्रानर्पितमादधाति गुणतां मुख्यं तु वस्त्वर्पितं तात्पर्यानवलंबने
न तु नवेद्बोधः स्फुटं लौकिकः॥संपूर्णं त्ववन्नासते कृतधियां कृत्स्नाद्वि
वद्धाक्रमात् तां लोकोत्तरनंगपद्धतिपदं स्याद्वादमुद्रांस्तुमः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ स्याद्वादरूपजैनमुद्रामां केवोगुणबे? के जेमांवस्तुने अनर्पणकरीबतां
पण तेवस्तुगुणतानेप्राप्तिथायबे; अनेवस्तुअर्पणकरीबतांते मुख्यतान्नावनेपामेबे, अने
जेनातात्पर्यअर्थने अवलंबनेकरीने तोप्रगटपणे लौकिकबोधथायबे; अनेसंपूर्णबोधतो
समग्रविवक्षाना अनुक्रमथकी महानिपुणबुद्धिवालाने प्रकाशथायबे; तेमाटेए लोको-
त्तर नंगजालनुंठेकाणुं एवीजेस्याद्वादशैलीरूपमुद्रा तेनेअमेस्तवियेबैये ॥ ११ ॥

आत्मीयानुन्नवाश्रयार्थविषयोप्युच्चैर्यदीयक्रमो म्लेच्छानामिव संस्कृ
तं तनुधियामाश्चर्यमोहावहः ॥ व्युत्पत्तिप्रतिपत्तिहेतुविततस्याद्वा
दवाग्गुंफितं तं जैनागममाकलय्य न वयं व्याक्षेपन्नाजः क्वचित्॥१२॥

अर्थ ॥ तेजैनागमकेवुंछे ? जेमां पोतोना आत्मानो अनुभवकरवाना आश्रयनो विषयछे, एवोउंचपणेकरीने जेनोक्रमछे एटलेपरिपाटीछे, अनेम्लेछनेजेम संस्कृतभाषा आश्चर्यकरनारी अनेमोहउपजावनारीछे तेनीपरे अल्पबुद्धिवालाने अचंबोपामी मुंझाववानुंस्थानकछे; माटेजैनागमतो व्युत्पत्तिनुं निरूपण करनाराजे हेतुतेणेकरी विस्तीर्णएहवोजे स्याद्वादमार्गतेणेकरी रचेलुं छे, तेनेपामीने महाराचित्तमां बीजुंकोइपण व्याक्षेपपणु क्यारेपणथतुंनथी ॥ १२ ॥

मूलं सर्ववचोगतस्य विदितं जैनेश्वरं शासनं तस्मादेव समुद्भितैर्नय मतैस्तस्यैव यत्खंडनं ॥ एतत्किंचन कौशलं कलिमलछन्नात्मनः स्वाश्रितां शाखां छेतुमिवोद्यतस्य कटुकोदर्काय तर्कार्थिनः ॥१३॥

अर्थ ॥ माटेसर्ववचनगतसमूहनुजेमूल एहवुंएजिनशासनकह्युंछे. एजिनशासनथकीज प्रगट्या एहवाजे नयनयना मत तेवामतेकरीनेज दुष्टप्राणी तेज जिनआगमनुं खंडनकरेछे. तेपापिष्टआत्माओनो आत्मा पापरूपमेलेकरीढंकाणोछे. एवादुष्टोनुंजेकांइ किंचितमात्र डाहापणपणुछे,तेजेमकोइकमूर्ख जेवृक्षनीडाले बेठोथको तेजडालकापवानेउजमालथाय,तेथीकडवाविपाकपामे,तेमतेकुविचारवालाने आगलकडवांफल प्रगटशे १३॥

त्यक्त्वोन्मादं विभज्य वादरचनामाकर्ण्य कर्णामृतं सिद्धांतार्थरहस्य वित्क्वलभतामन्यत्र शास्त्रे रतिं ॥ यस्यां सर्वनया वसंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव या मालायां मणयो लुठंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव सा॥१४॥

अर्थ ॥ उन्मादतजीने,मांहोमांहे झगडोतजीने,वली कानेअमृतरूप वाणीसांभलीने, सिद्धांतनाअर्थ रहस्यनोजे जाणपुरुष तेबीजांशास्त्रनेविषे रतिकेमपामे ? अर्थात्नजपामे. जे जैनवाणिनेविषे सघलाएनय प्रवेशकरेछे, पणतेजूदाजूदामतवालाना मतमां सर्वनय नथी. तेथीजैनवाणीकांइतेमांरेहेतिनथी. शामाटेजेतेसर्वे व्यग्रचित्तवालाछे. माटेजैनमां सर्वे नयछे.जेममालानेविषे सर्वेमणकारमेछे,पणछूटामणकापड्याहोय तेनेमालानकहिये अनेएकमणके सर्वेमणका समाणाएमपणनकहीए माटेतेमालासरखोजैनमतछे ॥ १४ ॥

अन्योन्यप्रतिपक्षभाववितथान् स्वस्वार्थसत्यान्नयानपेक्षाविषय ग्रहै र्विभजते माध्यस्थमास्थाय यः॥स्याद्वादे सुपथे निवेश्य हरते तेषां तु दिङ्मूढतां कुंदेंदुप्रतिमं यशोविजयिनस्तस्यैव संवर्द्धते ॥१५॥

अर्थ ॥ एमएकबीजाने वैरभावेकरी जूदाजूदाजोपोतपोतानाअर्थ तेनेसाचाकरता एवामतवालाजे दर्शनी तेपोतानानयनो विषयग्रहणकरी माध्यस्थपणानेस्वीकारी

सारामागनो विभागकरावीने, स्याद्वादरूपउत्तममार्गनेविषेलोकनुं चित्तस्थापनकरावी ने अने जे माध्यस्थपणु ग्रहणकरीतेमनीदिग्मूढतानोनाशकरे, ते विजयवंतप्राणी कुंदनुं फूल तथाचंद्रमासरखो उज्वलोजेजश तेणेकरीवृद्धिवंतोथशे. अहीं कवियेपोता नुंनामपणसूचव्युंछे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजैनमतस्तुत्यधिकार एकोनविंशतिसमाप्तः ॥ ॥ इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिना विरचिताध्यात्मसारप्रकरणेषष्टप्रबंधः ॥ अढा रमांअधिकारनाकाव्य १९५ तथा ओगणीसमांना १५ मलीने २१० काव्यछे.

शास्त्रोपदर्शितदशा गलितासद्ग्रहकषायकलुषाणां ॥
प्रियमनुभवैकवेद्यं रहस्यमाविर्भवति किमपि ॥ १ ॥
प्रथमाभ्यासविलासा दाविर्भूगीव यत्क्षणाल्लीनं ॥ चं
चलतरुणीविभ्रमसमं सुतरलमनः कुरुते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रेबतावीजेदशा तेणेकरीने गलीगइछे सारीनरसी असद्ग्रहरूपक षायनी कलुषताजेनी, जेने प्रियएहवोजे एकअनुभव तेथीजणातुं एवुंजेरहस्य ते कांइकप्रगटथायछे ॥ १ ॥ प्रथमअभ्यासरूपी विलासनायोगेकरीने जेप्राणीपूर्वोक्त कांइक रहस्यमां लीनथायछे अनेफरीचंचलपणेरहेछे. जेमचंचलस्त्री पोताना विलास नायोगेकरी कांइकसुखमां लीनथायछे अनेपछी जेवीनेतेवी चंचलरहेछे, तथाजेम कीडानेभमरी ज्यारेचटकोभरावेछे, त्यारेतेनाध्यानेकरीनें तेतल्लीनथइजायछे अनेपछीजे वारेभमरीपोताना चटकानोउद्योगमुकीआपेछे, तेवारेतेसर्वभुलीजइ पोतानोमूलनो स्वभाव धारणकरेछे, तेनीपरे जाणीलेवुं ॥ २ ॥

सुविदितयोगैरिष्टं क्षिप्तं मूढं तथैव विक्षिप्तं॥एकाग्रं च निरुद्धं चे
तः पंचप्रकारमिति ॥३॥ विषयेषु कल्पितेषु च पुरःस्थितेषु च
निवेशितं रजसा॥सुखदुःखयुग्बहिर्मुखमायातं क्षिप्तमिह चित्तं ॥४॥

अर्थ ॥ योगज्ञानिये पांचभेदे मनकह्युंछे. १ क्षिप्तमन २ मूढमन ३ तेमजविक्षिप्तमन ४ एकाग्रमन ५ निरुद्धमन. एपांचप्रकारमननाछे ॥ ३ ॥ तेमांक्षिप्तनुंलक्षणकहेछे. पो- तानाचित्तनेसन्मुख कल्प्याजेविषय तेनेविषे रजोगुणेकरीने थाप्युं, सुखतथा दुःखयुक्त, अने बहिर्मुखथयलुंचित्त तेने क्षिप्तमनकह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रोधादिभिर्नियमितविरुद्धकृत्येषु यत्तमो भागा॥कृत्याकृत्यविभा
गासंयतमेतन्मनोमूढं ॥ ५ ॥ सत्वोद्रेकापरिहतदुःखनिदानेषु सु
खनिदानेषु ॥ शब्दादिषु प्रवृत्तं तदेव चित्तं तु विक्षिप्तं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमांबहुलताये तमोगुणहोय, एटलेक्रोधसहित विरुद्धकामनेविषे जे तत्पर- होय अने विवेकरहितपणे कृत्याकृत्यनी वहेंचणविना जे होय, तेनेमूढमनकहीये॥५॥ जेधैर्यनाबलथी दुःखनाकारणगणतुंनथी, शब्दादिकविषयमां रूपरसादिकनांकारण- जाणी कठोरपणेप्रवर्त्ते एवुंजेचित्ततेने विक्षिप्तमनकहिये ॥ ६ ॥

अद्वेषादिगुणवतां नित्यं खेदादिषट्कपरिहारात्॥सदृशप्रत्ययसं
गतमेकाग्रं चित्तमाम्नातं ॥ ७ ॥ उपरतविकल्पवृत्तिकमवग्रहादि
क्रमच्युतं शुद्धं ॥ आत्मारामुनीनां भवति न रुद्धं सदा चेतः ॥८॥

अर्थ ॥ रागद्वेषादिकेरहित जेगुणवंतपुरुषछे अनेसदा खेदादिकनोपरिहारकरना रजेपुरुष छे, ते तुंमन सदैवरागद्वेषटालवाथी सर्वेकार्यमां सरखुंमळ्युंछे; तेनेएकाग्रमनक हिये ॥ ७ ॥ जेनीविकल्पवृत्तिशांतथईछे, वळीअवग्रहादिक्रमथी पाछुंओसर्युंछे कष्ट थीएहवुंशुद्धमन, तेआत्मारामुनिनुंजेअंतःकरणहोय; तेनेनिरुद्धमनकहिये ॥ ८ ॥

न समाधावुपयोगं तिस्रश्चेतोदशा इह लभंते॥सत्वोत्कर्षात् स्थै
र्याद्भे समाधिसुखातिशयात् ॥ ९ ॥ योगारंभस्तु भवेद्विक्षिप्ते
मनसि जातसानंदे॥क्षिप्ते मूढे वास्मिन् व्युत्थानं भवति नियमेन ॥१०॥

अर्थ ॥ चित्तनीत्रणदशा तेआसमाधिमांकांइ उपयोग पामतीनथी, तेवारें पणतेमां वेदशातो सत्वोत्कर्षथकी तथास्थिरताथकी अनेसमाधिसुखना अतिशयथी उपयोग- पामेछे ॥ ९ ॥ कदाचित् विक्षिप्तचित्तनेविषे योगसमाधिमां आनंदितहोय तोयोगारंभ- संभवे; क्षिप्तमूढमनेतो योगनोविशेष विषयरूप उदयहोय ॥ १० ॥

विषयकषायनिवृत्तं योगेषु च संचरिष्णुविविधेषु ॥ गृहखेलद्बा
लोपममपि चलमिष्टं मनोभ्यासे॥११॥वचनानुष्ठानगतं यातायां
तं च सातिचारमपि॥चेतोऽभ्यासदशायां गजांकुशन्यायतोऽदुष्टं ॥१२॥

अर्थ ॥ विविधप्रकारना योगनेविषे फरतुं अनेविषयकषाये भर्युं एवुंघरमांरमता बालकनीपेरे चपलजेमनतेअभ्यासेकरी रुडुंजाणवुं ॥ ११ ॥ वचनानुष्ठानमांरह्युं एवुं जातुंआवतुं अतिचारसहित मनहोयतोपण जोमनअभ्यासदशामां वर्त्ततुं होयतो, जेम हस्तिते अंकुशेकरीरुडोथाय तेदृष्टांते तेमनपणरुडुंथाय ॥ १२ ॥

ज्ञानविचाराभिमुखे यथा यथा भवति किमपि सानंदं॥अर्थैःप्रलोभ्य
बाह्यैरनुगृह्णीयात्तथाचेतः॥ १३ ॥ अभिरूपजिनप्रतिमां विशिष्टपद
वाक्यवर्णरचनां च॥पुरुषविशेषादिकमप्यत एवालंबनं ब्रुवते॥१४॥

अर्थ ॥ ज्ञानविचारणानासुखथी जेमकांइक आनंदथाय एहवेबाह्यअर्थेकरी लोभावीने तेमांचित्तनेथोभावीराखीने ज्ञाननाविचारने सन्मुखकरीये ॥ १३ ॥ रुडीजिनप्रतिमा, रुडांसिद्धांतनांपद, वचन अक्षर, ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि होयतेहने एत्रणआलंबन प्रभुयेकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोभावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी मनः शुभालंबनं दध्यात् ॥१५॥ सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्यान्मनोनिरालंबं ॥ इत्यनुभवपरिपाकादाकालं स्यान्निरालंबः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेरूडोभावहोय. माटेसालंबनयोगी जे रुडाजीवहोय तेणेशुद्धआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेक्षणेकमां सालंबनमनकरे, अनेक्षणेकमां निरालंबनमनकरे, एरीतेअनुभवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय ॥ १६ ॥

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत् ॥ अनुपनतेंधनवह्निवदुपशांतं स्यात्तदा चेतः ॥ १७ ॥ शोकमदमदनमत्सरकलहकदाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुभव एवात्र साक्षात्तः ॥१८॥

अर्थ ॥ पछीएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेंबीजुंकांइ चिंतवेनही, तेवारे जेमकाष्टविनानो अग्निउपशमेछे, तेनीपरेउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक, गर्व, काम, मत्सर, क्लेश, हठ, विषाद अनेवैर एटलावानां शमतावंतप्राणीनेनहोय, एवातनो साक्षीइहां अनुभवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं॥भस्मीभवत्यविद्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामंतरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो भवति ॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेताथका आत्मानुंशांत,स्वाभाविक, सहेजानंदरूप जे तेजछेते प्रगटथाय, तेवारे जेकुविद्याछेते राखथइजाय; अनेमोहांधकार नाशपामे ॥ १९ ॥ बाह्यथकि मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय, केमकेतेने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछे. ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मनामेति ॥ गतनिःशेषोपाधिः परमात्मा कीर्त्तितस्तज्ज्ञैः ॥ २१ ॥ विषयकषायावेशः तत्त्वाश्रद्धा गुणेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कायाअधिष्ठित जेवहिरात्मा तेनुंअधिष्ठानजे अंतरात्माछे, तेप्रतेपामे

अनेगइछेसमस्त उपाधिजेने तेने ज्ञानियेपरमात्मा कह्योछे ॥ २१ ॥ जेनेविषयकषायनोआवेश होय, तथा तत्त्वनीअश्रद्धाहोय अनेगुणीउपर द्वेषहोय, अनेजेने आत्मानुं ओलखाणनथी, तेनेप्रगटपणे वहिरात्मा कहिये ॥ २२ ॥

तत्त्वश्रद्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च ॥ मोहजयश्च यदा स्यात् तदांतरात्मा भवेद्व्यक्तः ॥ २३ ॥ ज्ञानं केवलसंज्ञं योगनिरोधः समग्र कर्म्महतिः ॥ सिद्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्त्वनीश्रद्धाहोय, ज्ञानपणुहोय, महाव्रतीपणुहोय, तथाअप्रमादीपणु होय, एमकरतां जेवारेमोहनेजीते, तेवारेतेनेप्रगटपणे अंतरात्माकहिये ॥ २३ ॥ जिहांकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्धमांवसे तेवारे तेनेप्रगटपणे परमात्माकहिये ॥ २४ ॥

आत्मानंतो गुणवृत्ति र्विविच्य यः प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुबंध युक्तः प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नोति तत्र किंचित्रं ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुभवामः ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने मांहोमांहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेजोमे तेप्राणीकुशलानुवंधि पुण्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममांरह्यो ब्रह्मनोजाण तेब्रह्मनेपामे, एमांशोअचंबोछे ? माटेब्रह्मवेत्तापुरुषजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्मजेमोक्ष विलासीसुख, तेने अमे अनुभवियेछिये ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मतं ब्रह्माष्टादशसहस्रपदभावः ॥ येनाप्तं तत् पूर्णं योगी ब्रह्मणः परमः ॥ २७ ॥ ध्येयोयं सेव्योयं कार्या भक्तिः सुकृत धिया सैव ॥ अस्मिन्गुरुत्वबुध्द्या सुतरः संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युंछेके, अढारहजार शिलांगरथेकरी जेब्रह्मचर्यनेपाम्युं, तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहिये ॥ २७ ॥ माटेएनेजध्यावो, एनीजपुण्यवंते भक्तिकरवी,अनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीये;तो संसारसमुद्रतरवोसहेलछे॥२८॥

अवलंबेछायोगं पूर्णाचारासहिष्णवश्च वयं ॥ भक्त्या परममुनीनां तदीयपदवीमनुसरामः ॥२९॥ अल्पापि यत्र यतना निर्दंभा सा शुभानुबंधकरी ॥ अज्ञानविषयं यत्तद्विवेचनं चात्मभावानां ॥३०॥

अर्थ ॥ इछायोगतो अमारेनिर्वलछे; पूरोआचारपणअमे पालीशकतानथी; पणमोटा

मुनिनी भक्तिएकरीने तेहनीपदवीने पामशुं ॥ २९ ॥ थोडीपणजयणा कपटरहितथशे, तोतेशुभअनुबंधकारीछे. पणआत्मभावनीजेवेहेंचण तेअज्ञाननेटालनारछे ॥ ३० ॥

सिद्धांततदंगानां शास्त्राणां यः सुपरिचयः शक्त्या ॥ परमालंबनभूतो दर्शनपक्षोयमस्माकं ॥ ३१ ॥ विधिकथनं विधिरागो विधिमार्गस्थापनं विधेरिछा॥अविधिनिषेधश्चेति प्रवचनभक्तिः प्रसिद्धांतः॥३२

अर्थ ॥ सिद्धांतनाअमेपक्षीछीये, तेनाअंगजेशास्त्रतेनो शक्तिप्रमाणे अमारेपरिचय छे, माटेपरमआलंबनभूत एवोजेंसमकितपक्ष तेअमारेरूडोछे ॥ ३१ ॥ शुद्धभाषवुं, विधिशास्त्रनोरागकरवो, शुद्धमार्गनुं स्थापनकरवुं,विधिमार्गनीइछाराखवी, अविधिटालवी अनेसिद्धांतनी भक्तिकरवी एअमारोसिद्धांतछे ॥ ३२ ॥

अध्यात्मभावनोज्वलचेतोवृत्त्योचितं हितं ॥ पूर्णक्रियाभिलाषश्चेतिद्वयमात्मशुद्धिकरः ॥३३॥ द्वयमिह शुभानुबंधः शक्यारंभश्च शुद्धपक्षश्च ॥ अहितो विपर्ययः पुनरित्यनुभवसंगतः पंथाः ॥३४॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी भावनायेकरी उज्वलएहवीजेचित्तवृत्तितेणेकरीने उचितकार्य करवुं, तथाहितकारी करणीकरवी, पूर्णक्रियाना विलासनोअभिलाषधरवो. एअमारे आत्मानी शुद्धिकारकछे. एटलेएकअंतःकरणनी उज्वलताजे शुद्धिकरवीते, अनेवीजो आद्यथीमांडीअंतपर्यंत पूर्णशुभक्रियाकरवानी अभिलाषा एवेवानांआत्मानी शुद्धिकरनारांछे ॥ ३३ ॥ तथाएककरवायोग्यआरंभते शक्यआरंभअने बीजोशुद्धपक्ष एवेवानांशुभानुबंधीछे. एवेजेनेप्रारंभकालेसमर्थछे, एमांजेनी शक्तिउद्यमअने शुद्धप्ररुकपणुछे, तेनेतोहितकारीमाने अने एथीविपर्यासजेछे, तेने अहितकारीमाने. एवीरीते अनुभवज्ञानने मलवानो एपंथछे. एथीमिथ्यात्वटले ॥ ३४ ॥

ये त्वनुभवाविनिश्चितमार्गाश्चारित्रपरिणतिभ्रष्टाः॥ बाह्यक्रियया चरणाभिमानिनो ज्ञानिनोपि न ते॥३५॥लोकेषु बहिर्बुद्धिषु विपणिकानां बहिःक्रियासु रतिः॥श्रद्धां विना नचैताःसतां प्रमाणं यतोभिहितं३६

अर्थ ॥ जेने अनुभवनो निश्चयनथी, चारित्रथी जे भ्रष्टछे, तथाबाह्यक्रियानी जेनी आचरणाछे, अने लोकमांउग्रविहारीथइ आचारनोगर्वधरेछे, तेनेज्ञानीनकहिये ॥ ३५ ॥ बाह्यदृष्टिवाला मूर्खलोक तेने बाह्यक्रियावंतदेखी प्रीतिधरे, तेतो जेमकोइकवाणीयो बाह्यक्रियाणानो व्यापारकरतोदेखिये तेनीपरेजाणवी, माटे श्रद्धाविनानुं कशुंयेप्रमाणनथी ॥ ३६ ॥

बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुध्धिर्विचारयति वृत्तं ॥ आगमतत्त्वं तु बुधः परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ ३७ ॥ निंद्यो न कोपि लोके पापिष्टेष्वपि भव स्थितिश्चिंत्या ॥ पूजा गुणगरिमाढ्या धार्यो रागो गुणलवेपि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ माटेजेबालजीवहोयते वेषजोइने परीक्षाकरे, तथा मध्यमजीवते आचरण जोइपरीक्षाकरे; अनेपंडिततोज्ञानतत्त्वदेखी परीक्षाकरे ॥ ३७ ॥ लोकनेविषे कोइनी निंदाकरियेनही; पापीनेविषे महोटी संसारनीस्थिति चिंतविये, जेगुणयुक्तपुरुषहोय तेनीपूजाकरीये; वडाइकरीये; तथाजेअल्पगुणीहोय तेनाउपर पण रागधरीये ॥३८॥

निश्चित्यागमतत्त्वं तस्मादुत्सृज्य लोकसंज्ञां च ॥ श्रध्धाविवेकसारं य तितव्यं योगिना नित्यं ॥३९ ॥ ग्राह्यं हितमपि बालादालापैर्दुर्जन स्य न द्वेष्यं ॥ सत्या वाचः पराशापाशा इव संगमा ज्ञेयाः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ तथा आगमनोनिश्चयकरी लोकसंज्ञाछोडीने विवेकनोसारजेश्रद्धातेनेविषे योगीश्वरे सदाउद्यमकरवो ॥ ३९ ॥ बालकथकीपण आलापेकरीने हितनीवात लेवी; दुर्जनउपर द्वेषनकरवो; सत्यबोलवुं; पारकीआशानापाससरिखासंगमजाणवा ॥४०॥

स्तुत्या स्मयो न कार्यः कोपोपि च निंदया जनैः कृतया॥ सेव्या धर्माचा र्यास्तत्त्वं जिज्ञासनीयं च ॥ ४१ ॥ शौचं स्थैर्यमदंभो वैराग्यं चात्मनि ग्रहः कार्यः ॥ दृश्या भवगतदोषाश्चिंत्यं देहादिवैरूप्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ कोइवखाणेतो गर्वनकरवो; कोइनिंदेतो कोपनकरवो; धर्माचार्यनी सेवा करवी; तत्त्वनेजाणवानी इछाराखवी ॥ ४१ ॥ पवित्रपणु, स्थिरतापणु अने निष्कपट पणु आदरवुं तथावैरागधरवो अनेमननेवश्यकरीराखवुं, तथासंसारनादोषदेखवा, वली देहनेविनाशीपणे चिंतववो ॥ ४२ ॥

भक्तिर्भगवति धार्या सेव्यो देशः सदा विविक्तश्च॥ स्थातव्यं सम्यक्त्वे विश्वास्यो न प्रमादरिपुः ॥ ४३ ॥ ध्येयात्मबोधनिष्ठा सर्वत्रैवागमः पुरस्कार्यः ॥ त्यक्तव्याः कुविकल्पाः स्थेयं वृध्धानुवृत्त्या च ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ प्रभुउपरभक्तिधरवी; पशुपंडकादिदोषरहित देशजेस्थानक तेसेववुं; समकितदिशामांस्थिररहेवुं; प्रमादरूपशत्रुनोविश्वासनकरवो ॥ ४३ ॥ ध्येयस्वरूपजे आत्मबोध तेमांरहेवुं; सघलेस्थले आगमसिद्धांतने आगलकरवुं, कुविकल्पछांडवा, जेमा गेंवृद्धचाले तेमार्गेचालवुं ॥ ४४ ॥

साक्षात्कार्यंतत्त्वं चिद्रूपानंदमेडुरैर्जाव्यं ॥ हितका
री ज्ञानवतामनुभववेद्यः प्रकारोऽयं ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ तत्त्वने प्रगटकरवुं, ज्ञानरूपआनंदभरेरहेवुं, ज्ञानवंतने हितकारीथइने रहेवुं, एअनुभववंतजीवोना प्रकारछे ॥ ४५ ॥ इतिअनुभवाधिकारः विंशतिमसमाप्तः ॥ २० ॥

येषां कैरवकुंदवृंदशशभृत्कर्पूरशुभ्रागुणामालिन्यं व्यपनीय चे
तसि नृणां वैशद्यमातन्वते ॥ संतःसंतु मयि प्रसन्नमनसस्ते केपि
गौणीकृतः स्वार्थोमुख्यपरोपकारविधयोत्भृंखलैःकिंखलैः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ चंद्रविकासीकमलनाफूलनोसमूह, चंद्रमा, कपूर, एसरषाउज्वला जेना गुणछे, तथाजे मनुष्यनाचित्तनेविषे मलिनताटालीने निर्मलताउज्वलताने विस्तारेछे; एवाजेसज्जन पुरुषोते, माहाराउपर प्रसन्नमने सदैवरहेजो! जेणेपोतानोअर्थ गौणकर्योछे, अनजेनीमुख्यपणे परउपकारनी बुद्धिछे, एवासज्जन जो महाराउपरप्रसन्नछे तो, उन्मत्तएवाखलजे दुर्जनलोक तेनी अप्रसन्नताये शुंथवानुंछे ? ॥ १ ॥

ग्रंथार्थान् प्रगुणीकरोति सुकविर्यत्नेन तेषां प्रथामातन्वंति कृपाक
टाक्षलहरीलावण्यतः सज्जनाः ॥ माकंदद्रुममंजरीं वितनुते चित्रां म
धुश्रीस्ततः सौभाग्यं प्रथयंति पंचमचमत्कारेण पुंस्कोकिलाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ रूडाजेकविछे, तेअर्थानुपत्तिए नवाग्रंथरचे; पणकृपानजरनीलेहरी तेनुंघर एवाजे सज्जन तेग्रंथनेवखाणीने विस्तारकरेछे, तेउपरदृष्टांतकहेछे; जेमवसंतलक्ष्मी आंबानीमंजरीना मनोहरपणानेप्रगटकरेछे, पणपोताना पंचम रागनागचमत्कारेकरी एटलेरागनोटहुको तेणेकरीनेकोयल मंजरीनुं सोभाग्यपणुंजगमांविस्तारेछे ॥ २ ॥

दोषोल्लेखविषः खलाननबिलादुत्थाय कोपाज्वलन् जिव्हाहिर्ननु
किं गुणान्नगुणिनां वासक्षयं प्रापयेत् ॥ तस्माच्चेत्प्रबलप्रभावभवनं
दिव्यौषधी सन्निधौ शास्त्रार्थप्रतिपत्तिदां शुभहृदां कारुण्यपुण्यप्रथा॥३॥

अर्थ ॥ दोषना विस्ताररूपविषेसहित एहवुं खलप्राणीना मुखरूपजे सर्पनुंघर ते थीउठीने कोपेबलतोथको एवोदुर्जननीजीभरूपजे सर्प जेगुणिनागुणने ननुके० निश्चेथी क्षयपणाने नपमाडेशुं ? अपितुपमाडेज. तेमाटे महाप्रभावनुंघर एहवोजे शास्त्रनोअर्थ, तेनीप्राप्तिनाजाण जेसज्जन तेनीजेकरुणातेपुण्यवार्त्तारुपनीबुटी, एटलेजडीते दिव्यऔषधिकहिये, तेनेपासेरहेताथका तेने ऊरचढेनही ॥ ३ ॥

उत्तानार्थगिरां स्वतोऽवगमान्निःसारतां मेनिरे गंज्नीरार्थसमर्थने वत
खलाः काठिण्यदोषं दुः ॥ तत्कोनाम गुणोस्तु कश्च सुकविः किंका
व्यमित्यादिकां स्थित्युछेदमतिं हरंति नियतां दृष्ट्वा व्यवस्थाः सतां ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ डुर्जनमूर्खनीरीतिओ तोजेवारें पोतानीमेले पदवाचतां अर्थसुजे एवाञ्च
ल्पार्थने सुगमपदजो अमेजोमीये तोखलमाणसएमकहेशेजे, कांइआग्रंथमां सारनथी,
एममाने. वलीजोअमे गंज्नीरअर्थसहित पदबांधीएतो, खलमाणस कहशेके, कठणप
दबांध्याछे, एनोशुंअर्थकरियें? एतोमुंगानीपारसीछे. एवेग्रंथेकोइने गुणनथाय; जे आ
गलबुद्धिविचारे एवाआजेकोणमाकविछे? वलीसर्वनेज्नोगपडे एवांक्यांकाव्यछे? एवुंडु
र्जनबोलेमाटेएग्रंथमर्यादानी स्थितिनेउछेद करवानीमतिछे; तेनेजेटाले, कविनागुणने
जाणे, एवाजेसज्जनपुरुष तेनीव्यवस्था रूमीदीठी ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिणीमपि कथामापीय संतः सुखं गाहंते विषमुजि
रंति तु खला वैषम्यमेतत्कुतः॥ नेदं चाज्नुतमिंडुदीधितिपिबाः पीता
श्चकोरा ज्नृशं किं न स्युर्वत चक्रवाकतरुणास्त्वत्यंतखेदातुराः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मरूप अमृतवृष्टि एवीवार्त्ता, तेनुंपानकरीने सज्जनपुरुषसुखमानेछे.
अनेजेखललोकछे, तेएवीवाणीने विषमपदकहीने विषरूपप्रगटकरेछे, एमां शुंआश्चर्य
छे ? तेउपरदृष्टांतकहेछे. जुओचंडकिरणनांदर्शनथी अमृतपीने चकोरघणुंरीऊपामेछे,
तोशुंचंडदेषीनेचकवो, चकवीघणोखेदनथीपामता ? अपितुपामेजछे ॥ ५ ॥

किंचित्साम्यमवेक्ष्य ये विदधते का चेंडनीलाज्निदां तेषां न प्रमदाव
हा तनुधियां गूढा कवीनां कृतिः ॥ ये जानंति विशेषमप्यविषमे रेखो
परेखांशतो वस्तुन्यस्तु सतामितः कृतधियां तेषां महानुत्सवः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमकांइक सरखापणु देखीने काचमां अनेइंडनीलमणिमां अज्नेदरूपतें
एकपणुजाणे, तेवाअल्पबुद्धिवालाने मोटाकविनि गूढअर्थनीरचना तेहर्षज्नणीनथाय. जे
प्राणीअविषमवस्तुनेविषे एकरेखा, उपरेखा, अर्धरेखाइत्यादिक अंशेथकी वस्तुनेविशे
षपणेजाणेछे, एवाकुशलबुद्धिवालासज्जनने एग्रंथनाजेज्नावछे, तेमहाओछवरूपछे ॥ ६ ॥

पूर्णाध्यात्मपदार्थसार्थघटना चेतश्चमत्कारिणी मोहव्यन्नदशां ज्नवे
त्तनुधियां नो पंक्तितानामिव ॥ काकुव्याकुलकामगर्वगहनप्रोद्दाम
वाक्चातुरी कामिन्याः प्रसन्नं प्रमोदयति न ग्राम्यान् विदग्धानिव॥७॥

अर्थ ॥ जेमांपूर्णअध्यात्मपदार्थ तेसहितघटनाछे, पण तेजेनीदशाअज्ञानेकरी ने अवराणीछे, एवाअल्पबुद्धिवालानां चित्तमांतोजेरीते पंडितलोकआवाग्रंथथीरीज पामे, तेरीतनोचमत्कारनउपजावे. तेहनोदृष्टांत, जेमकामेव्यापीथकी अंतरंगमां विषयसुखने इछतीथकी, तथा बाह्यथी भयशोकधरतीथकी, पुरुषनेवल्लभ, हुंरूपवती एमगर्वे भरीथकी, रुडीवचननीचतुराइ करनार, एवीजे चतुरस्त्रीहोयतेपण गामडी आमूर्खने रीझवीनशके, पणपंडितनेतोआनंदपमाडे तेनीपेरेंजाणवुं ॥ ७ ॥

स्नात्वा सिध्धांतकुंडे विधुकरविशदाध्यात्मपानीयपूरैस्तापं
संसारदुःखं कलिकलुषमलं लोभतृष्णां च हित्वा॥जाता ये
शुध्दरूपाः शमदमशुचिताचंदनालिप्तगात्राः शीलालंका
रसाराः सकलगुणविधीन्सज्ज्ञानांस्तान्नमामः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकुंडमां चंद्रसरखानिर्मल अध्यात्मरूपपाणीनापूरमांस्नानकरीने, भवदुःखरूपजेताप अने पापरूपजेमेलाप तथालोभ, ने तृष्णानेछांडीने, यथाशुद्धरूपे करी वलीसमतारूपइंद्रियदमनजे पवित्रतेरूपचंदनेकरी शरीरविलेपितछेजेनुं, वलीशी लरूपघराणेकरीशोभता, सर्वगुणनानिधानएवाजे सज्जनतेने अमे नमिये छैये. ॥ ८ ॥

पाथोदः पद्यबंधे विपुलरसभरं वर्षति ग्रंथकर्त्ता प्रेम्णां
पूरैस्तु चेतःसर इह सुहृदां प्लाव्यते वेगवद्भिः ॥ त्रुट्यंति
स्वांतबंधाः पुनरसमगुणद्वेषिणां दुर्जनानां चित्रं भावज्ञ
नेत्रात् प्रणयरसवशान्निःसरत्यश्रुनीरं ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेग्रंथकर्त्ता मेघसरखाछे, तेपद्यबंधेकरीने, बहुरसभरे, वरसतांथका तेथी प्रेमरूपपूरते सज्जननाचित्तरूप सरोवरमां वेगेकरीनेभरायछे, वलीअसाधारणगुणना द्वेषीजे दुर्जन, तेनातोअंतःकरणना बंधतुटेछे, अने एवाविचित्रकारीजेग्रंथ तेनाभाव नाजाणजेपुरुषछे तेविनयेप्रणीत रसेउज्वलाछे, तेनानेत्रथी स्नेहरूपआंसुंझरेछे ॥ ९ ॥

उद्दामग्रंथभावप्रथनभवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीरा
ब्धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मेरुणा वर्णनेन ॥ एतड्डिंडी
रपिंडीभवति विधुरुचेर्मंडलं विप्लुषस्तास्ताराः कैलास
शैलादय इह दधते वीचिविक्षोभलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रुडाकविनी उद्दामकेंप्रौढएहवीजे ग्रंथनाभावनी रचनातेणेकरीनेउपनो

जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपंक्तिते वर्णवरूपि मेरूएकरीने मथ्यो तेथी प्रगट्योछे. फीण तेनोउज्ज्वलो चंद्रमाथयो; वलीतेनेवलोवतांजे छांटाउड्या तेनातारा मंडलथया; तथा कैलासादिक पर्वतथया. एरीतेग्रंथनोजश लीलाएकरी पसर्यो॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीनां हृतममृत मिति स्वःसदा पानशंकी खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नो मृदुतरहृदयः सज्जनो व्याधुतेन ॥ ज्ञात्वा सर्वो
पभोग्यं प्रसृमरथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरां मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायुं, एमविचारीने देवताओ सदाअमृतपीवानी शंकाधरताथका खेदधरेछे. शामाटेजे मृदुसुकोमलछे हृदयजेनुं, एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपभोग्यपणे पसरतुएवुं ते. कविनीकीर्त्तिरूप अमृतनुंपूर तथा जेनेनिरंतर रक्षारूप ढांकणुंअत्यंतपणे दीधुंछे तेनेजाणीने देखीने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११ ॥

निष्पाद्य श्लोककुंभं निपुणनयमृदा कुंभकाराः कवींद्रा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराक्षार्कभा
सां।।पक्कं कुर्वंति बाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोषदृष्टि ज्वा
लामालाकराले खलजनवचनज्वालजिव्हे निवेश्य॥१२॥

अर्थ ॥ रूडानयरूपमाटीवडे कवीश्वररूपिजे कुंभकारते श्लोकरूपघडो निपजावे. पछीजेमकुंभकारतेघटने परिचयथी हाथेझाली टपणेसमारीतडकेमूके, तेमश्लोकघटने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेसमारे एवीरीते तडकेमूके; पछीपंक्तिननेदेखाडी परिपक्ककरे, तेजाणे नीभाडोदेखाडेछे. हवेदुर्जनजाणेजे एपंक्तिछे, तेथीमाहरा गुणहरणथशे, एमवलतोथको पंक्तिनीजोडेली कलामां दोषकाढवानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानी श्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअग्नि वलीतेदुर्जननांजेवचन तेजाणिये निंदारूप अग्निनी ज्वाला तेणेकरी घडेलीजीभतेवेहु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे, अनेनीभाडानीराखथाय; घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनंः दुर्जनस्याग्नियंत्राभ्रा
नाडव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥

संतः पित्वा यदुच्चैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने द्राषनारसनासमूह सरखुंकविनुंवचनछे; पणदुर्जनरूपी अग्नि-नुंजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीते गुणपुष्टिने पामतुं एहवुं-कविनुंजेवचनते, ताजा मदिरापणानेपामेछे; तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानकरीने हृदयमांहर्षधरेछे; तेथीबेआंखोघुर्णायमानथायछे; स्वइछाये हर्षनाकल्लोलथी पणश्लोक-नोभावार्थपामीने नाचेछे; गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातःस्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः ॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वभावः ॥१४॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे. तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी विख्यात थजो ! एरीतेरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीशुं ? अपि-तुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनांकिरणछे, एम पोताथकीजे प्रवीणछे, एवातेसज्जननाजे स्वभाव तेक्यांयेपररुचिभणि निश्चेउवेखवायोग्यनथी ॥ १४ ॥

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेतोः पतितजलभरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे. जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान, एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे, तेनागीतश ब्दना कोलाहलेकरीने क्षोभनापामी एवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजभांगी,तेथीपड्युं जेजल तेनासमूहेकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत, तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे. नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेभमताजे, ग्रहमंडल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो. तेहमणाशी-तलथयोथको शोभेछे. एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंडितजे सज्जन पुरुषोनासमू-हमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः ॥
अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं भवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकजपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा. तेअ ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे, एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार होजो !॥ १६ ॥ इति ॥ सज्जनस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः ॥

॥ इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाभ
विजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य
पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म
विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते
अध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमबंधःसमाप्तःऽसर्वेकाव्य॥६१॥

॥ इति श्रीमत्तपागछे भट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंडित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकर्पूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुभविजयगणि शिष्यपंडितश्रीवीरविजयगणिभिरध्यात्म सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाया यंटवार्थःकृतःसंवत् १८८१ चैत्र-शुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेः ॥

सर्वमूलकाव्य ९४७ नीसंख्यायेछे. तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना १०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमाप्रबंधना १८३ छठाप्रबंधना २१० सातमाप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४७

सूचना.

आ अध्यात्मसार नामनो ग्रंथ श्रीयशोविजयजी उपाध्याये संस्कृतभाषाना पद्यमां रच्योछे. ए वाक्यमां आग्रंथनुं नाम, तथा तेना रचनारनुं नाम सांभलतां अथवा वांचतां सुज्ञ जनोनां मनमां प्रसन्नतायुक्त उत्कृष्टभाव उत्पन्नथयाविना रहेशे नहीं; केमके ग्रंथना नामप्रमाणे ते शब्दनो अर्थ अध्यात्मनो सार थायछे; तेम ग्रंथना रचनारना नामप्रमाणे तेनो अर्थ यशनो विजयकरनार थायछे; एवन्ने नाम सार्थकछे, एम कह्याथी कांइपण बाधा आवशे नहीं. आ ग्रंथमां जेवी रीते अध्यात्मविषयना प्रकारोनो समावेश कर्योछे, तेवी रीते बीजे क्वचित् दीठामां आवशे. उपाध्यायजीनां पांडित्य, कविताशक्ति, समयसूचकता, पूर्वपक्षखंडन,उत्तरपक्षमंडन, वाक्पटुत्व, पदलालित्य, अर्थगौरव, रस, अने अलंकारआदि एमना रचेला हरेक ग्रंथमां जोतां कोइ नेपण आश्चर्य उत्पन्न थयाविना रहेशे नहीं; केमके उपाध्यायजीए जेजे विषयोमां ग्रंथो रच्याछे, ते ते ग्रंथमां एवी युक्तिओ करीछे के, तेना यथार्थ सूक्ष्मभावार्थने साधारण अभ्यासी मनुष्य समजी शके नही. तेम विद्वानोनी बुद्धि पण कांइक

श्रमवडे जाणी शके; आम ए महापंडित हता एमां संशयनथी. तेमणे अध्यात्मविषयक जे आ ग्रंथ रच्योछे, तेनी उत्कृष्टता प्रत्यक्षप्रमाणवडे सहेजे समजाशे, एवा ग्रंथनो यथार्थभाव टीकाविना समजवो महाकठिण पडेछे; टीकानो अमे घणो शोध कर्यो, पण ते क्यांइ मली आवी नही, ने टीका थइछे एवुं पण कोइ ठेकाणेथी सांभल्यामां आव्युं नही, त्यारे ते प्रयत्न रहेवा दइने बालाबोध अथवा टबाविषे शोध करतां मात्र श्रीवीरविजयजीनो करेलो टबो मली आव्यो, ते पण तेमणे पोतानी बुद्धि अनुसार साधारण करेलोछे. ए टबाउपरथी स्पष्ट दीठामां आवेछे के, अध्यात्म विषयविषे श्रीवीरविजयजीनो अभ्यास घणो थोडो हतो, तेथी यथार्थ मूल ग्रंथनो भाव प्रदर्शित करी शक्या नथी, ए मोटी दिलगिरीनी वात छे. पण ए टबाथी बीजो सारो टबो कोइ अमने मल्यो नही, तेथी एमां कांइक सहेज अमारी मति अनुसार सुधारो करीने आ पुस्तकमां छाप्यो छे.

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ अथ ॥ श्रीसमाधिशतक श्रीयशोविजय उपाध्यायजीकृत प्रारंभः ॥

॥ दोहरा ॥

॥ समरी भगवति भारती। प्रणमी जिन जग बंधु ॥ केवल आतम बोधको। करशूं सरस प्रबंध ॥ १ ॥ केवल आतम बोध है । परमारथ शिव पंथ ॥ तामें जिनकूं मगनता । सोइ भाव निगरंथ ॥ २ ॥ भोग ज्ञान ज्यूं बालको । बाह्य ज्ञानकी दौर ॥ तरुण भोग अनुभव जिस्यो । मगन भाव कबु और ॥ ३ ॥ आतम ज्ञाने मगन जो। सो सब पुद्गल खेल ॥ इंद्रजाल करि लेखवै । मिलै न तहँ मन मेल ॥ ४ ॥ ज्ञान विना व्यवहारको । कहा बनावत नाच ॥ रत्न कहौ को काचकूं । अंत काच सो काच ॥ ५ ॥ राचै साचे ध्यानमें । जाचै विषय न कोइ ॥ नाचै माचै मुगति रस । आतमज्ञानी सोइ ॥ ६ ॥ बाहिर अंतर परम ए । आतम परिणति तीन ॥ देहादिक आतम भरम । बाहिरात्म बहु दीन ॥ ७ ॥ चित्त दोष आतम भरम । अंतर आतम खेल ॥ अति निर्मल परमातमा । नाहि कर्मको भेल ॥ ८ ॥ नर देहादिक देखिके । आतम ज्ञाने हीन ॥ इंद्रिय बल बहिरातमा । अहंकार मन लीन ॥ ९ ॥ अलख निरंजन अकल गति व्यापी रह्यो शरीर ॥ लखै सु ज्ञाने आतमा । खीर लीन ज्युं नीर ॥ १० ॥ अरि पुत्रादिक कल्पना । देहातम अभिमान ॥ निज पर तनु संबंध मति । ताको होत निदान ॥ ११ ॥ देहादिक आतम भ्रमी । कल्पै निज परभाव ॥ आतम ज्ञानी जग लहै । केवल शुद्ध स्वभाव ॥ १२ ॥ स्वपर विकल्पै

वासना । होत अविद्या रूप ॥ ताते बहुरि विकल्पमय । जरम जाल अँध कूप ॥ १३॥ पुत्रादिककी कल्पना । देहातम भ्रम मूल ॥ ताकूं जड संपत्ति कहै । इहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या भ्रम मति अब छांडि दौ । देखो अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो छोडिये । प्रगटै निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो । कहन कहावन कूट ॥ इंद्रिय जोगादिक वले । ए सब लूटालूट ॥ १६ ॥ पर पद आतम द्रव्यकूं ॥ कहन सुनन कछु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही । निज पद तौ निजमांहि ॥ १७ ॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहै नही । ग्रह्यो न छोरै जेह ॥ जानै सर्व स्वजावने । स्व पर प्रकाशक तेह ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्युं जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें जयो । त्युं तुज कूट अज्यास ॥ १९ ॥ मिटे रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति जिम नाहि । नरमें आतम भ्रम मिटै । त्युं देहादिक मांहि ॥ २० ॥ फिरै अवोधे कंठगत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशै मुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥ याविन तुं सूतो सदा । योगे जोगे जेणि ॥ रूप अतींद्रिय तुंछतें । कही शकै कहु केणि ॥ २२ ॥ देखै जाखै औ करै । ज्ञानी सवहि अचंज ॥ व्यवहारे व्यवहारसुं निश्चयमें थिर थंज ॥ २३ ॥ जग जाणे उन्मत्त औ । ओ जाणे जग अंध ॥ ज्ञानीकूं जगमें रह्यो । युं नहि कोइ संबंध ॥ २४ ॥ या परछाही ज्ञानकी । व्यवहारै जुं कहाइ ॥ निर्विकल्प तुजरूपमें । छिधा जाव न सहाइ ॥ २५ ॥ युं बहिरातम छांकिके । अंतर आतम होइ ॥ परमातम मति जावइं । जहां विकल्प न कोइ ॥ २६ ॥ सो मैं या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका जमरी ध्यान गत । जिन मति जिनपदहेत ॥ २७ ॥ जारे जय पद सोइ है । जहँ जरूकूं वीसास ॥ जिनसूं ओ रूरतो फिरै । सोइ अजय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध करि । जो खिनु गलित विजाव ॥ देखै अंतर आतमा । सो परमातम जाव ॥ २९ ॥ देहादिकतें जिन्न में । मोथै न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध जावना एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट जी नहु लहै । जेद ज्ञान सुखवंत ॥ या बिन बहु विधि तप करै । तौ जी नहि जव अंत ॥ ३१ ॥ अजिनिवेश पुद्गल विषय । ज्ञानीकूं कहँ होत ॥ गुणको जी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥३२॥ धर्म क्षमादिक जी मिटै । प्रगटत धर्म संन्यास ॥ तौ कल्पित जव जावमें । क्युं नहि होत उदास ॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटै रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञानै त्युं मिटै । जाव अवोध निदान ॥३४॥ धर्म अरूपी द्रव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन राचै नही । युं ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नैगम नयकी कल्पना । अपरम जाव विशेष ॥ परम जावमें मगनता । अति विशुद्ध नय रेख ॥३६॥ रागादिक जब परिहरी । करै सहज गु

णखोज ॥ घटमें ज्ञी प्रगटै तदा। चिदानंदकी मोज ॥३७॥ रागादिक परिणामयुत। म नहि अनंत सँसार ॥ तेहज रागादिक रहित। जानि परमपद सार ॥३८॥ जव प्रपंच म न जालकी। बाजी फूठी मूल ॥ चार पांच दिन खुस लगै। अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥ मोह बागुरी जाल मन। तामें मृग मत होउ ॥ यामें जे मुनि नहि परे। ताकूं असुख न कोउ ॥ ४० ॥ जव निज मन सनमुख हुए। चितै न पर गुणदोष ॥ तव बहुराइ लगाइये। ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत। न लहै निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगै। बुटै परहि संबंध ॥ ४२ ॥ अर्थ त्रिलिंगी पद लहै। सो नहि आतम रूप ॥ तौ पद करि क्यूं पाइए ?। अनुज्ञव गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुज्ञवत ज्ञी। देहादिकतें जिन्न ॥ ज्रूलै विज्रम वासना। जो रहि फिरै न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखै सो चैतन नही। चेतन नाहि दिखाय ॥ रोष तोष किनसूं करै। आपहि आप वुफाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्रहण बाहिर करै। मूढ कुशल अति रंग ॥ बाहिर अंतर सिद्धकूं। नही त्याग औ संग ॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरै। वचन काय रति बोडि ॥ तौ प्रगटै शुज्ञ वास ना। गुण अनुज्ञवकी जोडि ॥ ४७ ॥ योगारंज्ञीकूं असुख। अंतर बाहिर सुक्ख ॥ सिद्ध योगकूं सुक्ख है। अंतर बाहिर डुःक्ख ॥ ४८ ॥ सो कहिये सो पूबिये। तामें धरिये रंग ॥ यातें मिटै अबोधता। बोधरूप व्है चंग ॥ ४९ ॥ नहि कबु इंद्रिय विषयमें। चेतनकूं हितकार ॥ लोज्ञी जन तामें रमै। अंधो मोह अंधार ॥५०॥ मूढा तमसूं तेप्रबल। मोहै बोडी शुद्धि ॥ जागत है ममता ज्ञरे। पुजलमें निज बुद्धि ॥ ५१ ॥ ताकूं बोधन श्रम अफल। जाकूं नहि शुज्ञ योग ॥ आप आपकूं बूफवै। निश्चय अनुज्ञव ज्ञोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुफावनो। तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहै जे में बूफवो। सो नहि तुफ गुण ज्ञाग ॥ ५३ ॥ जबलौं प्रानी निज मतें। ग्रहै वचन मन काय ॥ तबलौं है संसार थिर। ज्ञेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥ सूखम घन जीरन नवै। ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध मानै नही। अपनी परिणति तेह ॥ ५५ ॥ जैसे नाश न आपको। होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश तें। चेतन अचल अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें। जाकूं ज्ञासै नित्त ॥ सोचाखै समता सुधा। अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति डूरि ताकूं नही। जाकुंथिर संतोष ॥ डूर मुगति ताकूं सदा। जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत वचन मन चपलता। जनके संग निमित्त ॥ जन संगी होवै नही। तातें मुनि जग मित्त ॥ ५९ ॥ वास नगर वनके विषे। मानै डुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकुं वसति। केवल आतम शुद्ध ॥ ६० ॥ आप ज्ञावना देहमें। देहांतर गति हेत ॥ आप बुद्धि जो आपमें। सो

विदेहपद देत ॥ ६१ ॥ जवि शिव पद दे आपकुं । आपहि सनमुख होइ ॥ तातें गुरु है आतमा । अपनो और न कोइ ॥ ६२ ॥ सोवत है निज जावमें । जागै जे व्यवहार ॥ सूतो आतम जावमें । सदा स्वरूप अधार ॥ ६३ ॥ अंतर चेतन देखिके । बाहिर देह स्वजाव ॥ ताको अंतर ज्ञानतें । होइ अचल दृढ जाव ॥ ६४ ॥ जासै आतम ज्ञान धुरि । जग उनमत्त समान ॥ आगे दृढ अज्यासतें । पत्थर तृण अनुमान ॥ ६५ ॥ जिन्न देहतें जाविये । त्यूं आपहिमें आप ॥ ज्यूं स्वपनहिमें नहि हुए । देहातम ज्रम ताप ॥ ६६ ॥ पुण्य पाप व्रत अव्रते । मुगति दोउके त्याग ॥ अव्रतपरें व्रत जी तजे । तातें धरि शिवराग ॥ ६७ ॥ परम जाव प्रापति लगै । व्रत धरि अव्रत डोरि ॥ परम जाव रति पायके । व्रत जी इनमें जोडि ॥ ६८ ॥ दहन समै ज्यूं तृण दही । त्यूं व्रत अव्रत डेदि ॥ क्रियाशक्ति इनमें नही । जा गति निश्चय जेद ॥ ६९ ॥ व्रत गुण धारत अव्रती । व्रत्ती ज्ञान गुण दोइ ॥ परमातमके ज्ञानतें । परम आतमा होइ ॥ ७० ॥ लिंगदेह आश्रित रहै । जवको कारण देह ॥ तातें जव डेदै नही । लिंग पक्ष रत जेह ॥ ७१ ॥ जाति देह आश्रित रहै । जवको कारण देह ॥ तातें जव डेदै नही । जाति पक्ष रति जेह ॥ ७२ ॥ जाति लिंगके पक्षमें । जिनकुं है दृढ राग ॥ मोह जालमें सो परे । न लहै शिव सुख जाग ॥ ७३ ॥ लिंग द्रव्य गुण आदरे । निश्चय सुख व्यवहार ॥ बाह्य लिंग हठ नय गती । करै मूढ अविचार ॥ ७४ ॥ जाव लिंग जातें जये । सिद्धा पनरस जेद ॥ तातें आतमकुं नही । लिंग न जाति न बेद ॥ ७५ ॥ पंगु दृष्टि ज्यूं अंधमें । दृष्टि जेद नहु देत ॥ आतम दृष्टि शरीरमें । त्युं न धरै गुण हेत ॥ ७६ ॥ स्वप्न विकलतादिक दशा । ज्रम मानै व्यवहार ॥ निश्चय नयमें दोष क्षय । विना सदा ज्रम चार ॥ ७७ ॥ बूटै नहि वहिरातमा । जागत जी पढि ग्रंथ ॥ बूटै जवथें अनुजवी । सुपन विकल निगरंथ ॥ ७८ ॥ पढी पार कहँ पावनो । मिट्यो न मनको चार ॥ ज्युं कोलुके बैलको । घरही कोस हजार ॥ ७९ ॥ जिहां बुद्धि थिर पुरुषकि । तहं रुचि तहं मन लीन ॥ आतममति आतम रुचि । कहो कोन आधीन ॥ ८० ॥ सेवत पर परमातमा । लहै जविक तस रूप ॥ वतियां सेवक ज्योतिकुं । होवत ज्योति सरूप ॥ ८१ ॥ आप आपमें स्थित हुए । तरुथें अगनि उद्योत ॥ सेवत आपहि आपकुं । त्युं परमातम होत ॥ ८२ ॥ एहि परम पद जाविये । वचन अगोचर सार ॥ सहज ज्योति तो पाइये । फिरि नहि जव अवतार ॥ ८३ ॥ ज्ञानीकुं दुःख कबु नही । सहज सिद्ध निर्वाण ॥ सुख प्रकाश अनुजव जये । सवही ठोर कल्याण ॥ ८४ ॥ सुपन दृष्टि सुख नाशतें ज्युं दुःख न लहै

लोक ॥ यागर दृष्ट विनष्टमे । त्युं बुधकुं नहि शोक ॥ ७५ ॥ सुखभावित दुःख पायकें । क्षय पावै जग ज्ञान ॥ न रहे सो बहु तापमें । कोमल फूल समान ॥ ७६ ॥ दुःख परितापें नविगलै । दुःख भावित मुनि ज्ञान ॥ वज्र गलै नवि दहनमें । कंचनके अनुमान ॥ ७७ ॥ ताते दुःख सूभाविये । आप शक्ति अनुसार ॥ तौ दृढतर हुइ उल्लसे । ज्ञान चरण आचार ॥ ७८ ॥ रनमें लरते सुभट ज्युं । गिनै न बान प्रहार ॥ प्रभु रंजनके हेत त्युं । ज्ञानी असुख प्रचार॥७९॥ व्यापारी व्यापारमें । सुख करि माने दुःख ॥ क्रिया कष्ट सुखमें गिणे । त्युं वंछित मुनि सुख ॥ ८० ॥ क्रिया योग अभ्यास है । फल है ज्ञानअबंध ॥ दोनूकूं ज्ञानी भजे । एक मतीतें अंध ॥ ८१ ॥ इछा शास्त्र समर्थना । त्रिविध योग है सार ॥ इछा निज शक्ति करी । विकल योग व्यवहार ॥ ८२ ॥ शास्त्र योग गुण ठाणको । पूरन विधि आचार ॥ पद अतीत अनुभव कह्यो । योग तृतीय विचार ॥ ८३ ॥ रहे यथा बल योगमें ॥ गहे सकल नय सार ॥ भाव जैनता सो लहै । चहै न मिथ्याचार ॥ ८४ ॥ मारग अनुसारी क्रिया । छेदै सो मतिहीन ॥ कपट क्रिया बल जग ठगै । सो भी भवजल मीन ॥ ८५ ॥ निज निज मतमें लरि परे । नयवादी बहु रंग ॥ उदासीनता परिणमै । ज्ञानीकूं सरवंग ॥ ८६ ॥ दोउ लरे तिहां इक परे । देखनमें दुःख नाहि ॥ उदासीनता सुख सदन । पर प्रवृत्ति दुःख छांहि ॥ ८७ ॥ उदासीनता सरलता । समता रस फल चाखि ॥ पर पेखनमें मत परे । निजमें गुण निज राखि ॥ ८८ ॥ उदासीनता ज्ञान फल । पर प्रवृत्ति है मोह ॥ शुभ जानो सो आदरो । उदित विवेक प्ररोह ॥ ८९ ॥ दोधिक शतकें उधर्युं । तंत्र समाधि विचार ॥ धरो एह बुध कंठमें । भाव रतनको हार ॥ १०० ॥ ज्ञान विमान चारित्र पवि । नंदन सहज समाध ॥ मुनि सुरपति समता शचि । रंगे रमे अगाध ॥ १०१ ॥ कवि जश विजयें ए रच्यो । दोधिक शतक प्रमाण ॥ एह भाव जो मन धरै । सो पावै कल्याण ॥ १०२ ॥ इति समाधि शतक समाप्त.

॥ अथश्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत समता शतक प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ समता गंगा मगनता । उदासीनता जात ॥ चिदानंद जयवंत हो । केवल भानु प्रभात ॥ १ ॥ सकल कलामें सार लय । रह्यो दूर थिति एह ॥ सकल योगमें भी सकल । लय दे ब्रह्म विदेह ॥ २ ॥ चिदानंद विधुकी कला । अमृत बीज अन पाय ॥ जानि केवल अनुभवी । किनही कही न जाय ॥ ३ ॥ तौ भी आश्रव तापके । उपशम करण निदान । वरषत हुं ताके बचन । अमृत बिंदु अनुमान

॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अष्ट अंग मुनि योगको । एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासंग मति विषयमें । राग द्वेषको छेद ॥ सहज भावमें लीनता । उदासीनता भेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें मन विसराम ॥ करै साधु आनंद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ ममता शिव प्रतिकूलहै । निरममता अनुकूल ॥ ८ ॥ ममता विष मूर्छित भये । अंतरंग गुण वृंद ॥ जागै भाव निरागता । लगत अमृतके विंद ॥ ९ ॥ परिणति विषय विरागता । भव तरु मूल कुठार ॥ ता आगै क्युं करि रहै । ममता वेलि प्रचार ॥ १० ॥ हहा मोहकी वासना । बुधकुं भी प्रतिकूल ॥ या केवलि श्रुत अंधता । अहंकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मनमें जगै । याके उदय अछेह ॥ अंधकार परिणाम है । श्रुतके नामे तेह ॥ १२ ॥ करै मूढमति पुरुषकुं । श्रुत भी मद भय रोष ॥ ज्युं रोगीकुं खीर घृत । सन्निपातको पोष ॥ १३ ॥ टालै दाह तृषा हरै । गालैं ममता पंक ॥ लहरि भाव वैरागकी । ताकुं भजौ निशंक ॥ १४ ॥ राग भुजंगम विष हरन । धारो मंत्र विवेक ॥ भव वन मूल उछेदकुं । विलसै याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अंतर भावि प्रकाश ॥ करौ धंध सब परिहरी । एक विवेक अभ्यास ॥ १६ ॥ प्रथम पुष्करावर्त्तके । वरषत हरख विशाल ॥ द्वेष हुताश बुझाइये ॥ चिंता जाल ज टाल ॥ १७ ॥ किनके वश भव वासना । होवै वैसा धूप ॥ मुनि भी जिनके वश भये । हाव भाव अवधूत ॥ १८ ॥ जबलूं भवकी वासना । जगै मोह निदान ॥ तवलुं रुचै न लोककुं । निर्मम भाव प्रधान ॥ १९ ॥ विषम ताप भव वासना । त्रिविध दोषको जोर ॥ प्रगटे याकी प्रबलता । क्राथ कषाए घोर ॥ २० ॥ ताते दुष्ट कषायके । छेदै हित निज चित्त ॥ धरौ एह शुभ भावना । सहज भावमे नित्त ॥ २१ ॥ सिद्ध औषधी इक क्षमा । ताको करो प्रयोग ॥ ज्युंमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग ॥२२॥ चेतनकुं कोमल ललित । चिदानंदमय देह ॥ सूक भूक जुर जात है । क्रोध लूकते तेह ॥ २३ ॥ क्षमासार चंदन रसै । सीचौ चित्त पवित्त ॥ दया वेल मंडप तले । रहौ लहौ सुख मित्त ॥ २४ ॥ याको भासै समवधू । क्षमासहजमे जोर ॥ क्रोध योध क्युं करि करै । सो अपनो वल सोर ॥२५॥ देत खेद वर्जित क्षमा । खेद रहित सुख राज ॥ इनमे नहि संदेह कछु । कारन सरिखो काज ॥ २६ ॥ पर्वत गर्व शिखर चड्यो गुरुकुं भी लघु रूप ॥ कहै तिहां अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ ार शिखर गिरिराजके । छामे विमला लोक ॥ तौ प्रकाश सुख क्युं लहै । विषनुभव न लहै वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर छेद तुं । कर मृदु ताप विघात ॥

मारग सरलता । होवै चित विख्यात ॥ २९ ॥ मृदुता कोमल कमलथें । व ज्र सार अहँकार ॥ नेदत हैं इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥ ३० ॥ विकसित माया बेलि घर । नव अटवीके बीच ॥ सोवत है नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मीच ॥ ३१ ॥ कोमलता बाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग डंसै । ग्रसै सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके निग्रह करनकूं । करौ जुं चित्त विचार ॥ समरौ रुजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोन महा तरु शिर चढी । बढी जु तृषणा बेलि ॥ खेद कुसुम बिकशित नइ । फलै दुःख रुतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सबही दोषको । गुण धनको बरु चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद है । लोन पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोन मेघ उन्नत नये ॥ पाप पंक बहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहै । रहै न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोउ सयंनू रमनको ॥ जे नर पावै पार ॥ सोनी लोन समुद्रको । लहै न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोष अग स्तिकूं । ताके शोष निमित्त ॥ नितु सेवौ जिनि सो कियो । निजजल अंजलि मित्त ॥ ३८ ॥ याकी लालच तूं फिरै । चिंतै तूं रुमडोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटै सुख रँग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ दुर्ध्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखै नसुख निदान ॥ ४० ॥ होत न विजय कषायको । विनु इंद्रिय वश कीन ॥ तातें इंद्रिय वश करै । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरै । धरै न कोसूं प्रीति ॥ इंद्रिय दुर्जन परिदहै । बहै न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा दुर्जनथें बुरे । इह परनव दुःखकार ॥ इंद्रिय दु र्जन देतु है । इह नव दुःख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगै । दहै दृष्टि विष साप ॥ तिनसूं नी पापी विषे । सुमरै करै सँताप ॥ ४४ ॥ इछाचारी वि षयमें । फिरते इंद्रिय ग्राम ॥ बश कीजै पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥ ४५ ॥ उन मारग गामी अबश । इंद्रिय चपल तुरंग ॥ खेंची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक हैं श्रमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ बाधत हैं ताकू करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक नट । सेनानी ब लवंत ॥ इंद्रिय रुणमें हरत है । श्रुत बल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चं चल करण हय । पद प्रवाह रज पूर ॥ आशा ढांदक करतु है । तत्त्वदृष्टि बल दूर ॥ ४९ ॥ पंच बाण इंद्रिय करी । काम सुनट जग जीति ॥ सबके शिर पद देतु है । गणै न कोसू नीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंद्रिय लही । काम नृपति ब लवंत ॥ करै न संख्या पूरणी । सुनट सेणिको तंत ॥ ५१ ॥ दुःख सबहिं सुख विषयको । करम व्याधि प्रतीकार ॥ ताकूं मन्मथ सुख कहै । धूर्त जगत् दुःख

कार ॥ ५२ ॥ ठगे कामके सुख गिनै । पाइ विषयकी नीख ॥ सहज राज पाव त नही । लगी न सद्गुरु शीख ॥ ५३ ॥ अप्रमाद पवि दंमथें । करी मोह चक चूँर ॥ ज्ञानी आतम पद लहै । चिदानंद नरपूर ॥ ५४ ॥ जाके राज विचारमें । अवला एक प्रधान ॥ सो चाहत है ज्ञान जय । कैसे काम अयान ॥ ५५ ॥ और त्रांति मिटि जात है । प्रगट ज्ञान उद्योत ॥ ज्ञानीकूं नी विषय भ्रम । दिशा मोह सम होत ॥ ५६ ॥ दाखै आप विलास करि । जूठेकूं नी साच ॥ इंद्रजाल परें कामिनी । तासूं तुं मत राच ॥ ५७ ॥ हसित फूल पल्लव अधर । कुच फल कठिन विशाल ॥ प्रिया देखि मत राच तुं । या विष वेलि रसाल ॥ ५८ ॥ चरम मढित है कामिनी । नाजन मूत पुरीख ॥ काम कीट आकुल सदा । परिहर सुनि गुरु सीख ॥ ५९ ॥ विषय तजै सो सव तजै । पातक दोष वितान ॥ जलधि तरत नवि क्यूं तरे । तटिनी गंग समान ॥ ६० ॥ चाटै निज लाला मिलित । शुष्क हाम ज्युं श्वान ॥ तैसे राचै विषयमें । जड निज रुचि अनुमान ॥ ६१ ॥ नूषन वहुत वनावतें । चंदन चरचत देह ॥ वंचत आपहि आपकूं । जम धरि पुद्गल नेह ॥ ६२ ॥ दूर दमनके जय किये । इंद्रिय जन सुख होत ॥ तातें मनजय करनकूं । करौ विचार उद्योत ॥६३॥ विषय ग्रामकी सीममें । इञ्चा चारि चरंत ॥ जिन आणा अंकुश करी । मन गज वश करो संत ॥ ६४ ॥ एक नाव मन पौन को । जूठ कहै ग्रँथकार ॥ यातें पवनहितें अधिक । होत चित्तको चार ॥ ६५ ॥ जामें राचै ताहिमें । विरचै करि चित्त चार ॥ इष्ट अनिष्ट न विषयको । यूं निश्चय निरधार ॥ ६६ ॥ केवल तामें करमको । राग द्वेषतें वंध ॥ परमें निज अनिमान धरि ॥ कहा फिरत हौ अंध ॥ ६७ ॥ जैसे ललना ललितमें । नाव धरतु है सार ॥ तैसे मैत्री प्रमुखमें । चित्त धरि करि सुविचार ॥ ६८ ॥ वाहिर वहुर कहा फिरै । आपहिमें हित देखि ॥ मृग तृष्णा सम विषयको । सुख सव जानि उवेखि ॥ ६९ ॥ प्रिय अप्रिय व्यवहार निज । रुचि रस साचौ नाहि ॥ अंगज वल्लन सुत नयो । यूका दिक नहि काहि ॥ ७० ॥ होवत सुख नृप रंककूं । नोवत सुनत समान ॥ इक नो गै इक नाहिसो । वढ्यो चित्त अनिमान ॥ ७१ ॥ नवको सुख संकल्प नव । कृत्रिम जिसो कपूर ॥ रंजत है जन मुगधकुं । वर्जित ज्ञान अँकुर ॥ ७२ ॥ गुन ममकारन वस्तुको । सो वासना निमित्त ॥ मानै सुतमें सुत अधिक ॥ दौरत है हित चित्त ॥ ७३ ॥ मनकृत ममता झूठ है नही वस्तु परजाय ॥ नहि तौ वस्तु विकायथें । क्युं ममता मिटि जाय ॥ ७४ ॥ जन जनकी रुचि निन्न है । नोजन कूर कपूर ॥ नोगवंतकूं जो रुचै । करन्न करै सो दूर ॥ ७५ ॥ करन्न हसै नृपनोगकूं । हसै कर

नकूं नूप ॥ उदासीनता बिनु नही । दोनूंकूं रति रूप ॥ ७६ ॥ परमे राचै पर रुचि । निज रुचि निज गुणमांहि ॥ खेलै प्रनु आनंदघन । धरि समता गलि बांहि ॥७७॥ माया मय जगको कह्यो । जहां सबहि विस्तार ॥ ज्ञानीकूं होवत कहां । तहां शोक को चार ॥ ७८ ॥ शोचत नहि अनित्य मति । होवत माल मलान ॥ जांके नी शोचत नगै । धरत नित्य अनिमान ॥७९॥ कूट वासना मढितहै । आशा तंतु वितान ॥ बेदि ताकूं शुन्न मती । कर धरि बोध कृपान ॥ ८० ॥ जननी मोह अंधारकी । माया रजनी कूर ॥ ज्ञान नानु आलोकते । ताको कीजै दूर ॥८१॥ उदासीनता मगनहुइ । अध्यातम रस कूप ॥ देखै नहि कबु और जब । तब देखे निज रूप ॥ ८२ ॥ आगे करी निसंगता । समता सेवत जेहु ॥ रमै परम आनंद रस । सत्य योगमे तेहु ॥८३॥ दंनहि जनित असंगता । इह नवके सुख देत ॥ दंन रहित निसंगते । कौन दूर सुख देत ॥ ८४ ॥ मतहो संग निवृत्तकूं । प्रेम परम गतिपाइ ॥ ताको समता रंग पुनि । कीनही कह्यो न जाइ ॥ ८५ ॥ तिसना विड्डुम वल्लि घन । विषय घुमर बहु जोर ॥ नीम नयंकर खेद जल । नव सायर चिहुं ओर ॥ ८६ ॥ चाहै ताको पार तो । सज कर समता नाउ ॥ शील अंग दृढ पाटिए । सहस अढार बनाउ ॥ ८७ ॥ कूआथंन शुन्न योग परि । बैठे मालिम ज्ञान ॥ अध्यातम सढ बले चलै । संयम पवन प्रमान ॥ ८८ ॥ योगी जब हुं तप करै । खाइ जुरै तरु पात ॥ उदासीनता वीनु न सम । हुतिमे सोनी जात ॥ ८९ ॥ बूटै नवके जालथे । जेनही तप करि लोक ॥ सो नी मोहै काहुकूं । देत जनमकोशोक ॥ ९० ॥ विषय उपद्रव सब मिट्यो । होवत सुख संतोष ॥ ताते विषयातीत है । देत शांत रस पोख ॥ ९१ ॥ बिनु लालच बश होत है । बसा वात यह साच ॥ याते करै निरीहके । आगे सम रति नाच ॥ ९२ ॥ दे परिमल समता लता । वचन अगोचर सार ॥ नित्य बहिरि नी जिहां बसै । लहतु प्रेम महकार ॥ ९३ ॥ सेना राखस मोहकी । जीपै सुखै प्रबुद्ध ॥ ब्रह्म बानि कलेइके । समता अंतर शुद्ध ॥ ९४ ॥ कविमुख कल्पित अमृतके । रसमे मूझत कांहि ॥ नजो एक समता सुधा ॥ रति धरि शिवपदमांहि ॥ ९५ ॥ योग ग्रंथ जलनिधि मथो । मनकरि मेरु मथान ॥ समता अमृत पाइके । हो अनुनव रस जान ॥ ९६ ॥ उदासीन मति पुरुष जो । समता निधि शुन्न वेष ॥ बेरत ताकूं क्रोध किधु । आपै कर्म अशेष ॥ ९७ ॥ शुद्ध योग श्रद्धान धरि । नित्य करम को त्याग ॥ प्रथम करै जो मूढसो । उनय न्रष्ट निरनाग ॥ ९८ ॥ क्रिया मूढ फूठी क्रिया । करै नथापै ज्ञान । क्रिया भ्रष्ट इक ज्ञान मति ॥ बेदै क्रिया अज्ञान ॥ ९९ ॥ ते दोनूंथे दूरि शिव । जे निज बल अनुसार ॥ मारग रुचि मारग गहै ।

सो शिव साधन हार ॥ १०० ॥ निवृत्ति ललनाकूं सहज । अचिरजकारी कोउ ॥ जो नहि याकूं रुचत है । याकूं देखे सीउ ॥ १०१ ॥ मन पारद मूर्छित जयो । सम ता औषधि आइ ॥ सहज वेध रस परम गुन । सो वन सिद्धि कमाइ ॥ १०२ ॥ बहु त ग्रंथ नय देखिके । महा पुरुषकृत सार ॥ विजयसिंह सूरी किउ । समता शतको हार ॥ १०३ ॥ जावत जाकूं तत्त्व मन । हो समतारसलीन ॥ ज्यूं प्रगटै तुऊ सहज सुख । अनुजवगम्य अहीन ॥ १०४ ॥ कवि यशविजय शुं शीखए । आप आपकूंदेत ॥ साम्यशतकउद्धारकरि । हेमविजयमुनिहेत ॥ १०५ ॥ इतिश्री समता शतक समाप्तः॥

॥ अथ श्री दिक्पट चोराशी बोल प्रारंजः ॥

॥ छप्पयछंद. ॥ सुगुण ज्ञान शुज ध्यान, दान विधि धर्म प्रकाशक; सुघटमान पर मग्न, आन जस मुगति अन्यासक; कुमत वृंद तमकंद, चंद परि दंद निकासक; रुचि अमंद मकरंद, संत आनंद विकासक; जस वचन रुचिर गंजीर नय, दिक्पट कपट कुठार सम; जिन वर्द्धमान सो वंदिये, विमल ज्योति पूरन परम. ॥ १ ॥ कवित्त इकतीसा. ॥ सागरके आगे कहा गागरी धरैगी गर्व, खर्व कहा बेसरूके आगे अर्व इंदको; नाक वृछ आगे कहा आकको अंकूर छाजे, सूर तेज आगे कहा राजे धाम चंदको; कामधेनु आगे कहा कूकरी करैगी मान, जूपतीके आगे कहा जोरहै पुलिंदको; ऐसे सरवंग शुद्ध ग्रंथ जो सितंवरको, ताके आगे कौन दर्प दुर्मतीके वृंदको ॥ २ ॥ दोहरा. ॥ पहिलुं दिक्पटशुं सुनै, बोल चुरासी फेर, सर्व विसंवादे जयो, अबतो बहुत अंधेर. ३ निन्हव थैं अधिको बुरो, कह्यो मिथ्याति सो इ; परिहरना अधिकार यह, आवश्यकमे जोइ. ४. खट शत नव वरखे जयो, तस मत जरु मृग पास; सहस मल्ल दीक्षा लइ, आर्य कृष्ण गुरुपास. ५ राजमान्य तिणे अन्यदा, वीहरयो कंबल रत्न; मूर्छासेती संग्रह्यो, कियो न संवर यत्न. ६ गुरुने कीने पूछने, टले युं मूर्छा दोष; आइ देखि मनमे धस्यो, तीनि तार्थे बहु रोष. ७ थविरकल्प खंडन कियो, बरन्यो जब जिन कल्प; नगन पंथ तिण आदस्यो, त्यजि सद्गुरुके जल्प. ८ तस जगनी देखी नगन, बेसै दीनो वेस; चरन निषेधै नारिकूं, तब सो सुरि निरदेश. ए. जैन कहावे नामथें, तार्थे बढ्यो अंकूर; तनु मल ज्युं फुनि संतनै, कियो दूरिथें दूर. १० जसमक ग्रह रज जसममय, तार्थें बेसर रूप; उठे नाम अध्यातमी,जरम जाल अंध कूप. ॥११॥ कवित्त इकतीसा ॥ जोगके जीखारी अधिकारी नही ग्रंथनके, आपकी पथारीमें चलावै निंदा पारकी; खोजै जांति न्यारी न्यारी किरियाकूं दूरि मारी, कहै कोउ शीखसारी देवै गारी नारकी;

झूठे मत नामधारी नांगकी खुमारीमें जो, लवै युक्ति नारी सोतो, कूटै नीती गारकी; एसे हैं जुआरी अब मूढनके पट्टधारी, आरी आरी नाने बात लात जैसी टारकी ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ पल्लवग्राही लोककूं, समुझावै कुन जान; कोमल करतुनघनघटा, ज्युं मुगसेल पखान. १३ दृष्टिराग मदमत्तकूं, जो देवै उवएस; सो कूकर मुखमें ठवै; आप कपूर अशेष १४ शुष्क पयोधर नारि ज्युं, निंदे कंचुककार; गूढ हेतु बुद्ध गम्य त्युं, निंदे ग्रंथगिमार. १५ ऐसे जडसूं संतकूं, घटै न वाद विचार; तो नी परके वोधकूं; कहियें बोल डुचार. १६ साचेकूं झूठा कहै, झूठेकूं कहे साच; अनिनिवेश उन्मत्तको, ऐसो बहु विधि नाच. ॥ १७ ॥ कवित्तइकतीसा ॥ बूटै अंतराय पंच रंचहीं न राग रोश, फास छक्क काम कीनो अंचही न देखिइं; वंचना अज्ञानकी मिथ्यातको प्रपंच निद्द, आश्रवको संच सो तौ, मूलथैं विलेखिइं; एसैं जो अठार दोष, घाति कर्म नाव पोष, ताको परिशोष याके ज्ञानमें विशेखिइं, सोई शुद्ध नाम कोष घोषतें अनंत तोष, मोष मग्ग दाता त्राता देव देव लेखिइं॥१७॥छपप्यछंद॥ क्षुधा, तृषा, नय, शोग, रोग, जर, मरण, जनम, मद; मोह, खेद परसेद, निंद, विषमय, चिंता, गद; रति, विषाद, ए दोष, कहे अष्टादश दिक् पट; सो लीक तिन मांहि, नही गुण दूषण उद्भट; जो नाव अघाती दोष हुइ, तौ जिनकू नर गति प्रमुख,दूषन अनंत विलगे रहै, शिव पद दूषक सुनि विमुख ॥ १९ ॥ चौपाइ ॥ सप्तधातु वर्जित जिन काया, परमौ दारिक कहै सु माया; निंदा नही वैक्री परि ताकी; संघयणादिक खंध विपाकी. २० परमौदारिक जो जिनवरकूं; तौ मध्योदारिक गणधरकूं; कहै कहा नहि कल्पन कारी; क्युं औरनि सरखे गणधारी. २१ सप्तहु धातु गलै जिनवरके; केते धातु गलै गनधरके; सप्त धातु जिण नाणें जावै; मन नाणें मुनि कहो कहाँ पावै. २२ जिन तनु थिति नो कर्माहारें; कहै मूढ तेझूठ विचारें; औदारिक थिति कवलाहारें, दृष्टि हानि होइअन्य प्रकारें; ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ कहै केवली कर्मकूं, दग्ध रज्जुं सम मूढ; आगममति जानै नही, जोआउ नाम दृढ रूढ २४ तत्त्वारथ परिषह कहै, जिनकौ प्रगटइग्यार; ताको अरथ मरोरतें, क्युं पामें नव पार; २५ सूत्रनमें परिषह कहै, वृत्ति लिख्यो नकार; जो संसो उपजत नही, तो तुज भ्रमको नार. २६ जिनकूं इंद्रिय विरहथैं, तनु गत नहि सुख डुःख; कहै जु जीव विपाक तसु, उदो फलै कुण रुख. २७ खाइक सुख जिनकूं कहै, केवल ज्ञान सरूप; वेदनीयके खय गये, कुन गुन कहो पशु रूप. २८ उदय नाव खाइक गन्यो, जिनकूं प्रवचनसार; अर्क तूल परें तो फिरे, क्रियारहित निरधार. २९ बेठें उठें आसने, देवै प्रेरित देव, ऐसो है क्युं कल्पना ? छोडि न मिथ्या टेव. ३० केवलनाणे जो खगति,

मननाणें कबु होइ; करम विफल जो मोह विनु, यश कीरति क्युं जोइ? ३१ अतिशय जूख अज्ञावको, कहै सुगुरु कुल हीन; ज्ञाव अघाती क्युं मिटै, घातीगए जो खीन. ॥ ३२ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ केवलीआहार करे जागै अग्नि अंतरकी, वेदनी आहार शक्ति ताकी नाही हीनता; हेतुके समाजतें घटै जुं काज साज शुद्ध, लाजै तहां आज लुंक हानि कहा दीनता; अन्यथा न अष्ट वर्ष, वाल केवली विशाल; पूर्व कोटि आउ पाल ताकूं वृद्धि खीनता; वृद्धि पोखदाइ ज्ञाइ वर्गणा कहासु पाइ? ज्ञानथें जु आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता. ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ दिक् पट जिन वोलें नही, शिरथै उठे नाद; किरिया विनु घट ध्वनि परे, तामे कौन सवाद. ३४ कहै शिलाका पुरुषकूं, नही कवहुं निहार; तपति लब्धि सबकूं नही, एहु अदृष्ट प्रकार. ३५ खल पुज्ञल तिनकूं जलै, रस पुज्ञल जलि जाइ; दोउ जलै तौ उदरमें, ज्ञस्म क व्याधि उपाइ. ३६ तेनरु कंक गहनि कहै, उर कपोत परिनाम; ए आगमके वचन में, क्युं न करो विसराम? ३७ कहै साधु अप्रमत्तकूं, नही आहार विहार; खांमी सिद्ध शिला ज्ञइ, जिहां न साधु प्रचार. ३८ बाहिर मानुष सेलके, गइहोई व्रत ज्ञंग; यूं कहते चारण विना, क्युं जलमें शिव संग? ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ दोइ घटीके फेर, केवल मानै ज्ञरतकूं; बडो मोहको घेर, ज्ञाव प्रधान गनै नही. ॥ ४० ॥ हरि गीत छंद ॥ च्यारहुं निखेपे एक द्रव्यें, कहे श्रीजिन आगमें; ज्युं नाम घट संठाण थापन, द्रव्य मृदगुण ज्ञावमें; युं जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत ज्ञावतें; हुइ नियम पुज्ञल द्रव्यको, तौ तंत नहि व्यज्ञिचारतें. ४१ जो समय सारे अंत्य धारे, सुगति लिंग न वेदतें; निश्चय प्रमानै व्यवहरइ तें, वस्तु गुण गुनि ज्ञेदतें; अधिगम विना सम्यक्त्व मानै, द्रव्य विनु चारित नही; चारित बिना कहै समकितै, शिव हतें मति जो वही. ४२ सुर कोइ शिर परि वस्त्र मारै, जाय केवल तौ घटी; जो द्रव्य बिनु केवल नही, तौ केवला वरणं पटी; जो ज्ञाव लिंग प्रमान कीजै, ज्ञेद पनरहुं तौ घटै; सिद्धंति ज्ञाखै सिद्धके नर, तासु निंदक ज्ञव अटै. ४३ थ्री लिंग सिद्ध कहै न कुमते, तास चरण निवारए; जो संघ प्रवचन सारि चोविह, पढ्यो सो न विचारए; चोज्ञेश्र जोलिं अज्जिका करि, पंच होवैं निफ्तके; यूं संघ लोपै समय कोपैं, दूर्मती न वधी सके. ॥ ४४ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ र; तनु कचोल रंग रोलके निचोल सोल, शीलथैं अडोल याकी जातिमें महासती; ताथें वेस२तातनकी मात अवदात गात, नमै जाकूं इंद जाति नित्तही महीपती; जोगके ज्ञीखन्न साचे, तपके प्रज्ञाव जाचै, नही ज्ञावकाचै नाचै माचै साधु संगती; जै ज्ञांति न्यारी जो दोषकी विलंविनी नितंबिनी है ऐसी ताकूं क्यूं न पंचमी ग

ति ॥ ४५ ॥ दोहरा॥ मल्ली सो कुमरी कही, मल्लसु कुमर कहाइ; पुरुष स्वरूपें देखिये, पुरुष स्वरूप न माइ. ४६ तित्थंकर श्री वेदको, क्यूं एकनको बंध; गुण थानक आकर्षे थी, एहु हमारी संध. ४७ तित्थ प्रणाम प्रदक्षिणा, थानकी वरखि कहान; परहित करनी पुण्य फल, कपिल नृत्यको तान. ४७ दोहु कुमर जिनजी कहे, पंच कुमर कुन हेत; प्रिया पंचकी द्रौपदी, माने नहि कुल केत. ४ए एके घरि ऊनोजिमें, अठावीस गुनमूल; अंतराय कलूपित कहे, ते सबही निरमूल. ५० कस्तुरी अपवीत्त कहे, वाद्य वजावे कांहि; कहु कुंकुम करपूरकी, गति आवे मनमांहि. ५१ प्रतिमा नगन न सो हियें, पट जूखन पहिराइ; स्नात्र विलेपन धूप मुख, जगतिहि हेतु कराइ. ५२ शिष्य करै ज्युं जिन करै, तौ क्यूं दिंकत शीश; क्यूं बोलत केवल बिना, न विराधौ जग दीश. ५३ नगन दशा जिनवर धरै, नगन दिखावै नाहि; अंबर हरि खंधे धरै, उचित जानि मनमांहि. ॥ ५४ ॥ अरिल्लछंद ॥ गौतम स्वामीगए, खँदककूं; माने नहि मुनि जाइ, सुसनमुख जैनकूं; धर्मके कारन क्यूं अपवाद न मानही; ऐसिहि जातिसुं होवत बीजाधानही. ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ कोरे कहे जु थापना, प्रतिमा क्यूं न पखा न; सद्भावा सद्भावतें, ताको द्विविध वखान. ५६ जिन विरहै जिन बिंबकी, ज्यूं थापना प्रमान; गुरुविरहे गुरुथापना, तैसे करै सुजान. ५७ तैसी जमति न विमल गिरि, जैसी गढ गिरनार; तीरथ क्रम जानै नही, को तस बोधन हार. ५७ शुज्ज उ पयोगी साधुकूं, शिष्य दिक्क उवएश; ध्यान शुद्ध उपयोगमें, नहि अपवाद अशेश. ५ए काय खेद जो धर्ममें, सो ग्रहि धर्म प्रकार; ताकूं करत यती नही, जाखै प्रवच नसार. ६० तापरि हम यूं कहतु हैं, कह अपवादी साध; पंचम गुन थानक जजे, कै अधि कार हि बाध. ६१ प्रथम पक्ष अविरति नही, तौ व्रतको नहि जंग; दुतिय पक्ष जो पाप है, तौ ग्रहिकूं क्यूं रंग ६२ हिंसा दोष स्वरूप जो, तो लूंपक मत रज्ञ; आगे पीछे देखिके, क्यूं जाषो नहि अज्ञ. ६३ वधू जइ वसुदेवकी, बहुतरि सहस उदार; अधिक जयो कह चक्रिथें, यूं संसौ मत धार. ६४ बाहुबली ज्यूं अधिक वल, जरत हिथें निरधार; सोजागी वसुदेव त्यूं, सबहीमें शिरदार. ६५ राज जमाली वीरको, कह्यो जमाई सुत्ति; सो उत्थाप्यो कुमतथैं, वीर कुमर कहि धुत्ति. ६६ चंद्ररुद्रके शीशकूं, मानै केवल नांहि; जानै नहिं ठांके नही, सो व्यवहार उठांहि. ६७ चोवि हार पचखान बिनु, माने नहि उपवास; जानै नहि तिविहार जी, डुब्बलको अ ज्यास. ६७ परम क्रिया आगे करै, प्रथम क्रियाके त्याग; चपल वित्तुतें मूढ नर,

नही बोधके लाग. ॥६९॥ कवित्त इकतीसा ॥ भाषाज्यूं मलेछकीन भाषै विप्रवेद दाखै, ताके बोधके निमित्त भाषै सोउ पारसी; तैसे व्यवहारकूं न शुद्धरंगी अंगी करै, लेवै शुद्ध साधवेकूं छाया व्यवहारसी; ऐसे कहै कोउ ताकूं दुष्टताके हेतु जानि, दुष्ट पुण्यतामें देखै कल्पनाकी आरसी; ज्याही परछाही ताकी लिंग साधने विछाही, ज्ञानीकूंउछाही मानै क्यूं न जानै छारसी. ७० जैसे कोउ मंद सत्व आपको ममत्व गहै, कहै में भखूं जो भख्य तत्व चक्रवर्त्तिको; खायो सो अघायो पैंन पायो चैंन तीव्र ताथें, जास्यो न जुरायो आयो दायो वंद अर्त्तिको; तेसे शुद्धरंगी अंगी ताहीको प्रसंगी होत, मार्गको विभंगी होवै श्वान जन्म गर्त्तिको; जरै ताकूं शुद्ध भाव याकूं योगको स्वभाव, बाह्य हेतुको प्रभाव पूगै मार्ग वर्त्तिको. ॥ ७१ ॥ दोहरा ॥ निश्चय नय पहिलूं कहैं, पीछेंले व्यवहार; भाषाक्रम जानैं नही, जैन मार्गको सार. ७२ नही निश्चयमें शिष्यगुरु, क्रियाक्रियाफल योग; कर्त्ता नहि भोक्ता नही; विफल सबै संयोग. ७३ तातें सो मिथ्यामती, जैनक्रिया परिहार; व्यवहारी सो समकिती, कहै भाष्य व्यवहार- ७४ जो नय पहिलूं परिनमें, सोइ कहै हित होइ; निश्चय क्यूं धुरि परिनमे, सूखम मति करि जोइ ? ॥ ७५ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ उंची उंची वातकूं दिखावै नसिखावै मग्ग, अंतलूं तिखावै सो चरकावै न सुखासिका; घोरेथें आरंभै पै निवाहलूं जो थंभै न अचंभै दंभको विलंभै ताकी सिद्धि आसिका; फूलसो अमूल शुद्ध निश्चयीको मूलपै सुगंधताको जानै व्यवहार वृत्ति नासिका; भोजन अगम्म सोहै किरिया अलग्ग जो है, पाग जैसे नग्नकूं विलज्जता प्रकाशिका. ॥ ७६ ॥ अडिल्लछंद ॥ द्रव्यारथ नय संगत आपस्वभावमें; जे राचै सो माचै स्वसमय भावमें; पर्यायारथ नयमें जे रंगी रमै; ते परसमयी भाखै प्रवचन सारमें. ७७ पक्षपात यूं एकहु नयमें जे करै; स्याद्वाद सरवंगी ते नवि चित्तधरै; एक पछ वेदको दूजो बुद्धको; खप्पर दोउमें भेद न शुद्ध अशुद्धको. ७८ निज निज वचने सत्य, असत्य नयंतरें; सबही नयहै सरखे वर्जित अंतरें; एक भाव निरधारै सो नहि पंथमें; सिद्ध सैन यूं भाखै संमति ग्रंथमें. ॥ ७९ ॥ दोहरा ॥ कहै स्वभाव विभावथैं, गुनके दो परयाउ; लहै न परिनति द्रव्यकी, जीव सिद्धके न्याउ. ८० गुन विभिन्न नहि द्रव्यथें, कुन ताके पर्याय; सह भावी परयायको, गुन अभिधान कहाय. ८१ जो गुन त्रीजो भाव है, तौ त्रीजो नय होइ; सो तौ प्रवचनमें नही, संमत साथें जोइ. ८२ नवही नय नयचक्रमें, द्रव्यारथ मुखइठ; तत्त्वारथमें सात हैं, देवसेन कहा दिठ. ८३ तत्त्व सात नवजो

कहे, त्यूं नहि नयकी बात; एहु विभक्त विभाग है, सो तौ कारन जात ७४ जो इहथें नव नय कहो, गहत द्रव्य परयाय; अप्पियणप्पिय भेदथैं, एकादश हुइ जाय. ७५ जो संग्रह व्यवहारमें, अप्पियणप्पिय इठ; आदि अंत नय थोकमें, अभाव द्रव्य निविठ. ७६ उपनय नयको अंश है, कहै विभिन्न कुवंश; उप प्रमाण माने नही, क्यूं प्रमाणको अंश. ॥ ७७ ॥ सवैया तेइसा ॥ काल अणुकुँ कहै युं अ संख्य असंख्य प्रदेश आगाशहि लोके; मंदगति अणु संक्रम गम्य समै परयायकु द्रव्य विलोके; वस्तुविना थिर जन्म विनाशि समै परयाय सधै नहि थोके; सो तुं न जानत काल सितंबर, यूं हि पुकारत दिक्पट फोके. ७८ सूखम वर्त्तन रूप समै सु तु, जीव अजीवहिके परयाया; ताहिके द्रव्य तु जीव अजीवहि, कालके द्रव्य अनंत कहाया; सूखम वर्त्तन हेतु जु चाहु तु, क्यूंगति हेतु न तैस सुहाया ? जो गति हेतु है एक साधारण, एकहि खंध समै तुह्म पाया. ॥ ७९ ॥ सोरठा ॥ गति थिति हैं जु विभाव, ताको हेतु विलोकिइं; वर्त्तन सर्व स्वभाव, बाह्य हेतु ताको नही. ८० ज्यौ पज्जव गुन द्रव्य, त्रिविध अर्थ व्यवहारथैं; त्यौं कहिये षट् द्रव्य, पज्जव काल प्रमानथैं. ८१ काल द्रव्य कहुं एक, तहं अनपेक्षित द्रव्य नय; तत्त्वा रथ सुविवेक; वृत्तिकार विगते वदे. ॥ ८२ ॥ चौपाइ॥ जनम कल्यानक समय सुहा या; मेरु अचल जिनवीर चलाया; यातो वात न मनमे आवे; मुगधनकूं यूं कहि दिखलावे. ८३ देवबले धरनी या कंपै; ताकूं शाश्वतकौन नजंपै; देवबले भावे जो सांसो; देवदेवबल कहा विमासो ? ८४ मुनिसुव्रतको गनधर थोरो; एसो कहे सु जाने थोरो; बूजे नहि असमंजस बोलै; सो संतनमे तृणके तोलै; ८५ सदा सत्य सेतंबर बानी; तहां कहै मुनिसुव्रत ज्ञानी; प्रतिष्ठानपुरमांही आए; देव मिली मठ तीन बनाए. ८६ पूरव भवको मित्र प्रमान्यो; अश्वमेधसे वधकूं आन्यो; देख्यो अश्व तास उपकारी; रातिहिमे प्रभु चलै विहारी. ८७ प्रात समय प्रभुजी भृगु कछइं; समवसरन बैठे गुन अछइं; पूरव भव कहि अश्व प्रबोध्यो; तहां ओरको चित्त न सोध्यो. ८८ प्रभुपाशे अनशन ले वाजी; भयो देव सहस्रार समाजी; सुव रनकी प्रतिमा तिन कीनी; अश्वमूर्त्ति सेवक करि दीनी. ८९ नाम अश्व अवबोध कहायो; तेहु तीर्थ जगमांहि गवायो; शत्रुंजय माहातममांही; भाव सुनो ए भव्य उछांही. १०० कुन गनधर इहां थोरो भाख्यो; कूठो आल मुगधने दाख्यो; आं खिकु औखध काने बाहे, ताको कुन गहिवांह निवाहे ? ॥ १०१ ॥ सवैया तेइसा ॥

जंगम तित्थ तुरंगम संगम, रंगम हानि धिकारन ज्ञानी; ताके प्रयोजन योजन साठि निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी; अश्वमही भृगु कञ्च सुलञ्चन, पावन कीनि सुधाखरिवानी; ताके नमो मुनिसुव्रतके पद संपद कारन तारन प्रानी. ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामंत्र नव पद कहै, कहै पंच पद आन; गोमुठसारादिक धुरे, नव पद लिखै प्रमान. १०३ ज्यूं चूला विनु श्रुत नही, त्यूं न सुध नवकार, जो संखे पहि आदरो, जपहु एक उंकार. १०४ श्रुत सवहीमे पंच पद, नव पद श्रुत महमंत; शुरू परंपर बुध लहै, ए जिन शासन तंत. १०५ चूला वर्ण वतीशकी, कहै सु सवहि अजान; अडसठ अरकर कवचसे, कहे जु मंत्र प्रमान. १०६ नव अरकर पदथे नही, तहां छंदको नंग; ऐसे वहु पद देखिइं, आगममांहि सुवंग. १०७ देव देव नर देव सव, अर्द्ध मागधी वाणि; नाखे सत्यारथ वचन, पंचम अंगे जाणि. १०८ और कहै जिन नाखही, सर्व मागधी वाणि; तामे साखी कौन थो, कहा लान कह हाणि ? १०९ दंत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाजः सो मानै नहि दाढ तस, पूजै जे सुरराज. ११० कहै ज्यु तंत्र समाधिते, जाति लिंग नहि हेत; चंडालादिक जातिको, क्युं नहि मुकति संकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटै, नीच गोत्रकी लाज; दर्शन ज्ञान चरित्तको, सवहू तुल्य समाज. ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तौ कहौ प्रमान; ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदै क्षत्रिय क्षत्रिय मान. ११३ त्राण नही कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन; सूगडांगको वचन यह, क्युं न करौ मन लीन ? ११४ करमनाव प्रनुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष; तार्थे द्विज घरि अवतरै, तहां करै जम द्वेष. ११५ दोष नही दो तातको, क्षेत्र वीजके न्याय; शील नंग नहि मातकू, गर्न न वीर्य कहाय. ११६ अन्न खात्र परिनाम है, पय तृणको परिनाम; द्रव्य निन्न पैं निन्न गुन, गर्न न वीरय नाम. ११७ करम नाव प्रनुकुं कहौ, जो आवैं तुम्ह लाज; सदा सिद्ध तौं मानिलो, कहा जनमको काज. ११८ कल्या नक दो घरि किये, कल्यानक षट्ट होत; सो दूशन हमकूं नही; तहँ दिन गणित उद्योत. ११९ सुरकृत कल्यानक नही, ऋषन राज अनिषेक; वीरगर्न अपहारमें, त्यूं न कल्यानक टेक. १२० नैगमेषिकी शकति है, रोम कूपमें गर्न; संक्रम करतहि अपहरै, सो नहि मानत अर्न. १२१ कहैं वाहुवल केवली, नम्यो ऋषनके पाय; वैठो देइ प्रदक्षिणा, कहो न जूठ वनाय. १२२ अप्रमत्तता है जहां, तहां न वंधन नाव;

उचित प्रवृत्ति न छारही, तौ नी जिन सद्भाव. १२३ छींक न मानै वीरकूं, कर्म वेद्य को जाव;फरसनकूं दरसन कहै,सो तौ कुटिल स्वज्ञाव. १२४ हरिं हरिनी हरिवर्षके,युगल हरै सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करे देह लघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तवथें जयो, हरिको वंश विशाल; ऐसो अचरय जाव ए, होत अनंतहि काल १२६. काल अनंत अनंतथें, युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत युं, दूषन कहै विचारि. १२७ तहां कहै सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल वहू निरधार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहै दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहै चमरकी गति नही, शक्र लगैं निरधार; ताकूं कोप कृतां तको, जगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही, वीर विहार अशुद्ध; मनुषिणि देव न जोगवै, कहै सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि पडवा दिने; आपुन कियो वखान. १३२ छासठ दिन मौनी रहै, जाखै एम अजान; एकहु सजा अजाषितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मौन अजावित जानिके, मानहु अधिक डुमास; एक सजा तैसी कहत, क्यूं लागत तुम पास १३४ ठवे देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहै जूमि परि गमनमें, ते देवनकी वेठि. १३५ पाउ धरे जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि चलै, कहा वन्यो एसाज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहैं सुर लोक; इंद्र मिलत सत मानही, ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहै जु गुरु कुल रीति; तौ अदृश्य आहार विधि, दाखत पावे जीती. १३८ जुगति रहित जिनवर कहौ, वलि छौंकत कुन हेत; चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोष कहु लेत. ? १३९ मरुदेवी औ नाजिको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु सनमुख धर्मकी, करै धर्मको पोष. १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; प्रजुकूं जी तवलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसाः ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहै पात्रधारी नांहि; छात्रसो पढ्यो है कोपैं गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथैं प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु कैसे होत, गृही पात्र जुंजै तौ ग्रहस्थ जाव ठानही; पाहुनेकी जक्ति युक्ति पात्रहीथै करै साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना कैसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचकै कारन राखै कमंडलु, पात्रकुँ छोरि कहा गुन पायो; वीछिसि पींछि धरी त्यजि उघेकुं, औरसु मूढने वेष वनायो; तत्तलब्धी लग जोहि कमंडलु, पात्र

लँब्धी लगि पात्रसुहायो; जैनको जूषन जैनको वेष है, और धरे कह हाथमे आयो? ॥ १४३ ॥ दोहरा ॥ वाल अग्र पुञ्जल धरे, मुखि जाषत हो दोष; धरो कमंडल पिछि का, कहा करौ कंठशोष ? १४४ उपधि सहित नहु शुद्ध हैं, ज्यूं तंदुल तुषवंत; एकु पख मन शुद्धता, कहे जाव जगवंत, १४५ कहे कोउ पचखानको, उपकरनै व्है जंग; देहा ऽहारादिकवीषे, तास न उचित प्रसंग. १४६ रौद्रध्यान मूर्छा प्रमुख, सव स रिखे तहँ दोष, यतनासूं निर्दोषता, ए सुवचन सत् कोष. १४७ द्रव्यादिक चोजंगसूं, धरै न मूर्छा साधु; ए चोविह पचखानको, एकहु अर्थ अगाधु. १४८ शुद्ध योग अप वादथैं, कह उपकरन सु मंद; उपचरिताऽनुपचरितमें, साधनतासममंद. १४९ मूर्छा बाह्य प्रवृत्तिमें, जोतुम कहो कुपरक; जोजन त्यजि अनशनजजो, ऐसे होत जु दरक १५० ध्यानदीपको तैलजो, जोजन करौ प्रमान; तौ निवात पद उपकरन, मानौ क्यूं न अजान ? ॥ १५१ कवित्त इकतीसा ॥ पापके ओढैया महा मोहमें पोढैया ढैया, दैया दैया करे देखि साधुके वसनकूं; छिद्रके कढैया निंदाचमेके मढैया माया मानके दढैया लागे लोकसे हसनकूं; अंगके पढैया गुण श्रेणिके चढैया शुद्ध शीलके दढैया कहे धर्म उल्लसनकूं; जूठके लढैया सत्य थंजके गढैया जैयावस्त्र पात्र हेत साचे काया जीकसनकूं. ॥ १५२ ॥ दोहरा ॥ शीत त्राण कलके धरे, कंवल वर्षा त्राण; मुख वस्त्रें ते राखियें, जे संपातिम प्राण. १५३ सबसज्ञानमें राखियें, चोल पट्टथें लाज, उचित धर्म आचारमें, नीलजकूं नहि लाज १५४ आठ जेद जिनकल्पके, एक कहै सो मूढ; नगन दिखावै सो त्यजै, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ और सिद्धांत उच्छिन्न है, इसो कुमतको नाच; पै संवाद विनाकहा, पावौ प्रकरन साच १५६ अव सिद्धांत जु तुम कहे, पाठ दिखावो तास; जव प्रकरन तुम गुरु किये, तब जो हुते प्रकाश. १५७ हेमराज पांडे किये, बोल चुराशी फेर; या विधि हम जाषा वचन, ताको मत किय जेर १५८ हे दिक्पटके वचनमें और दोष शत लाख; केतेकाले झारिये, जुंजत दधि उर माख. १५९ पंडित साचो सदहै, मूरख मिथ्यावंग; कहते सो आचार है, जन न त्यजै निज ढंग. १६० सत्य वचन जो सदहै, गहै साधुको संग; वाचक जस कह सो लहै, मंगल रंग अजंग १६१ इति श्रीयशोविजयजीउपाध्याय कृत दिक्पट चोराशी बोल समाप्तः ॥

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥किं, सो नेयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयं किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलि मयदक्षिणा, नंदमयं महोदयमयं शोजामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद्

वालंबनं ॥१॥ पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् दिक्चक्रं क्रमयन् सुरा सुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ॥ ब्रह्मांडं सुषुवन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन् श्री चिंतामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुंभस्रणिं मोक्षे निःसरणिः सुरेंद्रकरणि ज्योतिःप्रभासारणिः ॥ दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिकृपासारणिर्विश्वानंदसुधाधृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिंतामणिः ॥ ३ ॥ श्री चिंतामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनं त्वं मया दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणः ॥ मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवांछितं दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥ यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगज्जंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहांधविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपरं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृतौ चिंतामणिः पातु मां ॥५॥ विश्वव्यापि तमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो दारिद्र्याणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः॥पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो॥ मूर्त्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥ श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं ऱ्हींकारसाराश्रितं श्रीमर्हं नमिऊणपासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहं ॥ द्वेधाभूतविषापहं विषहरश्रेयःप्रभावास्पदं सोल्लासं वसुहांकितं जिनफुलिंगानंदनं देहिनं ॥ ७ ॥ ऱ्हींश्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो हृत्पद्मे विनिवेश्यपार्श्वमधिपं चिंतामणिसंज्ञकं ॥ भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यांत्यहो ॥८॥ नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारीप्रचाराः॥ नैवांध्यं नासमाधि नंच दुर दुरितेदुष्टदारिद्रता नो॥ नो शाकिन्योग्रहा नोन हरिकरिगणव्यालवेतालजाला॥ जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजां ॥९॥ गीर्वाणद्रुमधेनुकुंभमणयः स्वस्यांगणेरंगिणो॥देवादानवमानवाः स विनयः तस्मैहितं ध्यायिनः॥ लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्मांडसंस्थायिनीश्रीचिंतामणि पार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ॥ १० ॥ इतिजिनपतिपार्श्वःपार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसंघः॥ त्रिभुवनजनवांछादानचिंतामणीकः शिवपदतरुबीजं बोधबीजं ददातु ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्रंसं० ॥

॥ श्रीमत्सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं महामोहभूछायनाशे दिनेशं ॥ नतं नाकिभिर्भक्तिभिर्जीवनाथं स्तुवे देवचिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महानागपारींद्रवैश्वानरा हि प्रवातांबुधीरोगसंदानदाहं ॥ जितानेकपक्षं त्रिविश्वैकनाथं स्तुवे देव० ॥ २ ॥ क्षमापार्श्वसेनस्य वंशेऽवतंसं हतक्रोधशत्रुं च लक्ष्मीनिवासं ॥ जनांभोजखंडस्फुटे घस्त्रनाथं स्तुवेदेव० ॥३॥ सतांमोक्षपद्मप्रदानैकहेतुं महाकृच्छ्रविछेदने धूमकेतुं ॥ क्रमेंदी वरालीननागांकनाथं स्तुवे देव० ॥ ४ ॥ सनीरांबुदश्यामशिष्टांगकांतिं

सुविस्तारि ताविष्टपाशेषशांतिं ॥ गतान्यूनदोषं वरं मुक्तिनाथं स्तुवे देव० ॥ ५ ॥ नरें द्रादिवंद्यं सदालब्धयोगं निशारत्नकप्राननं त्यक्तशोकं ॥ कृपाभाजनं विश्वदेवाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ६ ॥ जगत्तारकं दायकं सज्जनानां श्रियं वांछितार्थापाकं निर्द्धनानां ॥ सुरम्यस्य रुङ्निर्जिताभ्राधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कषायाग्निसंतर्पणे वारिदाभं जराभीरुमातंगपंचास्यशोभं ॥ विदुष्टाष्टकंकर्म्मोरगे पत्रिनाथं स्तु वेदेव चिंतामणीं पार्श्वनाथं ॥ ७ ॥ इत्येवं श्रीमद्वीरचंद्रशिशुनामलूकचंद्रेण ॥ जयतुचिरं नूतः पार्श्वजिनवरो विजितमदरागः ॥ ए ॥ इतिश्रीमत्पार्श्वनाथस्तवनाष्टकं लिखितं.

इति श्रीचिंतामणि पार्श्वस्तोत्र संपूर्ण.

ॐ श्रीजिनायनमः

अथ श्रीसमयसार नाटक बनारसीदास कृत गुजराती भाषामां अर्थ सहित प्रारंभः

उपोद्घात.

आ ग्रंथनी दिगंबरी बनारसीदासे शुद्ध हिंदुस्थानी भाषामां पद्यात्मक ग्रंथरूप रचना करीछे. ए ग्रंथकर्त्ता पोते महापंडित तथा कवीश्वर होवाथी विविध प्रकारनी छंदरचना करीने तेणे पोतानी श्रेष्ठ कृति देखाडी आपीछे. पदलालित्यता तथा अर्थ गौरवतादिक जे काव्यना सारा गुण वर्णन कर्याछे, ते आ ग्रंथनी कवितामां सारी रीते दीठामां आवेछे. अलंकारवडे कविता सारीरीते भूषित करीछे. आ ग्रंथ आध्यात्मिक विषयवालो होवाथी आमां मात्र शांत रसज मुख्य छे पण प्रसंगानुसारे बाकीना रस पण क्वचित् दीठामां आवेछे. जोके आ ग्रंथ उपर कह्या प्रमाणे निन्ह वादिकमां गणायला दिगंबरीनो रचेलोछे, तोपण एनो विषय आध्यात्मिक होवाथी ते सर्वने उपयोगीछे; माटे आपुस्तकमां अमे नाख्योछे. ए ग्रंथनी व्याख्या कोई रूपचंदजी नामना पंडिते करीछे, ते पण हिंदुस्थानी भाषामां होवाथी सर्व जनने समज्यामां आवे नही, माटे तेनो आश्रय लईने अमे गुजराती भाषामां व्याख्या करी छे. व्याख्या करतां आदिमां मंगलाचरणनो दोहरो कर्योछे ते आप्रमाणेः—

॥दोहाः॥—श्रीजिन बचन समुद्रको, कौंलगि होइ बखान; रूपचंद तौहू लिखै, अपनी मति अनुमान. ॥ १ ॥

अर्थः—व्याख्याकर्त्ता रूपचंदजी कहेछे के, श्री जिनवचनरूप समुद्रनो क्यांसुधी व्याख्यान थाय, तोपण हुं मारी मतिने अनुमाने लखी जणावुंछुं. ॥ १ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता आरंभमां मंगलाचरणरूप श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी स्तुति करेछे-

॥कवित्त,इकतीसा सर्व ह्रस्वाक्षरः॥—करम भरम जग तिमिर हरन खग,उरग लखन पग शिव मग दरसि; निरखत नयन भविक जल बरखत, हरखत अमितभविक जन सरसि; मदन कदन जित परम धरम हित, सुमिरत भगत भगतसब डरसि; सजल जलद तन मुकुट सपत फन, कमठ दलन जिन नमत बनरसि ॥ १ ॥

अर्थः—जगमां जे आठ कर्मरूप तिमिर एटले अंधकारछे तेनुं हरण करवाने खग एटले सूर्यरूप छे. जेना चरणनेविषे सर्पनुं चिन्ह छे. जे मोक्षना मार्गने देखाडनारा छे. जेनेनेत्रे करी निरखतां कल्याणरूप जल वर्षेछे, तेणे करी अमित

के० प्रमाणविना नव्यलोकरूप सरोवर महा हर्षने पामेछे. जे कामदेवना क्षय करनार छे, अने जेनुं उत्कृष्ट सहज सुखरूप धर्मने अर्थे नक्तजन स्मरण करी रह्याछे. तेथी तेनुं सब डरसिके० सात नयरूप जे शीत छे, ते नाशी जायछे. जेनुं शरीर जलसहित मेघना जेवुं नीलवर्ण छे. जेना मुकुटनेविषे सात फण छे. जेणे कमठ नामे असुरनुं मान नंजन कर्युंछे. एवा जिन के० श्रीपार्श्वनाथ नगवान, तेने वनारसीदास नमस्कार करेछे ॥ १ ॥

फरीथी विशेषे श्री पार्श्वनाथ स्वामीनी स्तुति करेछे.

॥ सर्वलघु स्वरांत अक्षर युक्त छप्पय छंद. ॥ एने चित्रकाव्य पण कहेछेः–सकल करम खल दलन, कमठ सठ पवन कनक नग; धवल परम पद रमन, जगत जन अमल कमल खग; पर मत जलधर पवन, सजल घन सम तन समकर; पर अघ रज हर जलद, सकल जन नत नव नय हर; यम दलन नरक पद छय करन, अगम अतट नव जल तरन; वर सवल मदन वन हर दहन, जय जय परम अनय करन. ॥ २ ॥

अर्थः–सर्व कर्मरूप खलके० डुष्ट वैरीने दलवा वाला छो. कमठ नामना महा मूर्ख असुर तेरूप पवन आगल मेरु पर्वतनी परे अरूग छो. धवलके० निर्मल सिद्ध स्थानकनेविषे रमनारा छो. जगतुना लोकोरूपी उज्वल कमलने विकस्वर करवाने अर्थे खगके० सूर्य जेवा छो. एकांत नयवादी जे पर मत, तेरूप मेघने मटाडवाने अर्थे पवनना जेवा छो. जल सहित मेघ घटाना जेवुं श्याम जेनुं शरीर छे. समकरके० उपशमना करनार छो. परके० शत्रुरूप अघके० पाप रजने हरण करवाने मेघ जेवा छो. जेने सकल लोक नमे छे, अर्थात् त्रिनुवन पूज्य छो. जन्म मरणरूप जे नव नय तेने हरण करनार छो. लोकोना मृत्युने दलवावाला छो. नव्य प्राणी ओने नरक पदना क्षय करनार छो. अगम एटले अथाग अने अतटके० अपार एवो जे संसाररूप समुद्र तेने तरवावाला छो. सर्व दोषोमां वरके० प्रधान अने वलवान जे कंदर्पवन, तेने वालवाने हरके० रुद्रना नेत्रनी अग्नि जेवा हे ! नगवान तमे जयवंता थाओ ! वली तमे परम अनय पदना करनार छो, एटले नय नंजन छो. ॥ २ ॥ आ छप्पय छंद वडे परमेश्वरना महीमानुं वर्णन कर्युं. अने पोतानुं काव्य चातुर्य दर्शाव्युं छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता वनारसीदास कहेछे के जेना प्रसादथी परगसेन पिताने घेर मारो जन्म थयो एवो हुं श्री पार्श्वनाथ नगवाननी स्तुति करुंछुं.

॥सवैया इकतीसा॥–जिन्हके वचन उर धारत जुगल नाग, नये धरनिंदप द्मा

वति पलकमे; जाके नाम महीमासें कुधातु कनक करै, पारस पाषान नामी भयो है खलकमें; जिनकी जनमपुरी नामके प्रभाव हम, अपनो स्वरूप लख्यो भानसो झलकमें; तेई प्रभु पारस महारसके दाता अब, दीजे मोहि साता दृग लीलाके ललकमें. ॥३॥

अर्थः—ज्यारे श्री पार्श्वनाथ भगवाननी कुमारावस्थाहती त्यारे कोई एक समये श्री बनारसी नगरीविषे एक तापसनी साथे अज्ञानतपश्चर्यानी निर्भर्त्सना पूर्वक वाद थयो, ते प्रसंगे ते तापसनी धूणीमांनां लाकडांमां नाग छे एवी रीते श्री पार्श्वनाथ भगवाने कह्युं, ते वातने पेला तापसए गणकारी नही, तेथी ते लाकडां फोडीने ते नागने बाहेर कहाढ्यो; पण ते अधबल्यो थयो हतो तेथी तडफडवा लाग्यो, तेना अंतना समयमां श्री पार्श्वनाथ भगवाने तेने "ॐ असिआउसाय नमः" ए मंत्र संभलाव्यो ते वचन तेणे सारी रीते हृदयमां धारी लीधुं. एटलामां तेना शरीरनी शांति थई गई. तेना अंतना सारा परिणामोने लीधे ते धरणेंद्र थयो; तेनी स्त्री पद्मावती थई; ए कथा श्री पार्श्वनाथ चरित्रमां प्रसिद्ध छे. ते अद्भुत महीमाने दर्शावतां छतां ग्रंथकर्त्ता उपमालंकारवडे पारसमणि अने श्री पार्श्वनाथना ए गुणनी सादृश्यता देखाडेछेः—

जेनां वचन हृदयनेविषे धारण करीने नाग अने नागणी ए बन्ने पलकमां धरणेंद्र अने पद्मावतीरूपे थयां. आहीं नाग अने नागणी कहेवाथी दिगंबरोनुं मत जाणवुं. श्वेतांबरी तो एक नागनेज कहेछे. वली पार्श्वपाषान, खलक एटले दुनियामां, प्रसिद्ध छे, एटले पारश मणि नामना पाषाणनो स्पर्श थतांज लोखंड नामनी कुधातु सोनुं थायछे. तो ए पाषाणमां एवो महीमा किहांथी उत्पन्न थयो ? तेनो उत्तर कहेछेः— पार्श्व एवुं नाम श्री पार्श्वनाथने तुल्य छे. तेना महीमा थकी एटले मात्र पार्श्व एवुं नाम छे ते नामनाज महीमाथकी ते पार्श्वरूप पाषाणमां एवो गुण थयोछे. वली जेनी जन्म पुरीनुं नाम बनारसी नगरी छे, अने ग्रंथकर्त्ता कहे छे के, मारुं नाम पण बनारसी हुं पाम्यो. ते मात्र नामना प्रभावथी में मारुं आत्मस्वरूप जाणी लीधुं. ते केवी रीते जेम प्रभात समयमां सूर्य पोताना रूपने झलकमां स्वच्छ प्रकाशे छे, तेनीपरे मारुं रूप पण प्रकाशी रह्युं छे. ए पण श्री पार्श्वनाथ भगवानना महीमानो प्रतापछे.तेज श्री पार्श्वनाथ भगवान महा शांत रसने देवावाला छे, ते हवे दृग लीलाकी ललकमेंके० आंख मीचीने उघाडीए अर्थात् एक पलक मात्रनी सत्तामां मुजने आत्मसमाधिरूप शाता आपो. एथी निवृत्ति सुखनी सूचना करी छे ॥ ३ ॥

सिद्ध भगवाननी स्तुति करेछेः—

॥ अडिल्ल छंदः॥— अविनाशी अविकार,परम रसधाम है; समाधान सरवंग,सहज

अभिरामहै; शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है; जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ ४ ॥

अर्थः— जेनोविनाश नथी, अने जेने कोई विकार लागे नही, एवो परम रस एटले कोई केवलीगम्य जे सहजानंद उत्कृष्ट शांतरस, तेना जे धाम एटले घर छे; माटे सर्वांगने विषे सहजनी जे अनंत सुखरूप समाधि तेणेकरी जे अभिराम एटले अति मनोज्ञछे. चौदराजलोकनी उपर विराजमान होवाथी सर्व दोषथी रहित शुद्धछे. सर्वज्ञता पाम्याथी बुद्ध छे. अने सर्वना ईश्वर माटे अविरोधछे, एवी अवस्थाए करी ते अनादि अनंत छे. अने चउद राजलोकना उपर विराजमान छे तेथी जगत्ना शिरोमणि छे एवा जे श्रीसिद्ध भगवान ते सदासर्वदा जयवंत थाओ ॥४॥

साधुरूप भगवाननी स्तुति करेछेः—

॥ सवैया इकतिसाः॥—ज्ञानके उजागर सहज सुख सागर सुगुण रतनागर वैराग रस भर्यो है; सरनकी रीत हरे मरनको भै न करे करनसों पीठ दे चरण अनुसर्यो है; धरमको मंडन भरमको विहंडन जु, परम नरम व्हैके करमसो लर्यो है; ऐसो मुनिराज भुअ लोकमें विराजमान, निरखि बनारसी नमस्कार कर्यो है ॥ ५ ॥

अर्थः— जे ज्ञाननो उद्योत करनार छे. आत्मद्रव्यनुं जे सहजसुख तेना जे समुद्र छे. अने सुगुनजे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयीनी आकर एटले जे खाण छे. पांच इंद्रियोना विषयनेविषे जे वैराग्य ते रूप रसेकरी जे परिपूर्ण थयाछे. कोई परिषह आवीने प्राप्तथयाथी गृहस्थनीपरे जे शरणनी रीति राखे नही. आत्माने शाश्वतद्रव्य जाणीने जेणे मरणनो भयमुकी दीधो छे. पांच इंद्रियोने पूठ आपी तेना विषयोथी विमुख थयाथकी जे चारित्रने अनुसर्या छे; वली जेनो आश्रय लेवाथी धर्मपदार्थ बिराजमान थाय माटे धर्मना मंडन करनाराछे. मिथ्यामतिरूप जे भरम तेनुं विशेषेकरीने जे खंडन करनारा छे; जे परम दयावान थईने कर्मोनीसाथे युद्ध करेछे. (दयावानने युद्धकरवुं संभवे नही तेम छतां कह्युं ते माटे विरोधालंकार जाणी लेवो.) एवी विशेषताने लीधे जे मुनिराज एटले ऋषीश्वर भुअ लोकमां पिस्तालीश लाख मनुष्य क्षेत्रविषे विराजमान छे तेने हृदय कमलथी जोईने वनारसीदास नमस्कार करेछे. ॥ ५ ॥

हवे पांच अनुव्रत लीधा छे जेमणे एवा समकितीनी स्तुति करेछे.

॥ सवैया तेईसाः॥— भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, शीतल चित्त भयो जिम चंदन; केलि करै शिव मारगमे जगमांहि जिनेश्वरके लघु नंदन; सत्य स्वरूप सदा जिन्ह

कें प्रगट्यो अवदात मिथ्यात निकंदन; संत दशा तिन्हके पहिचान करै कर जोरि बनारसि बंदन. ॥ ६ ॥

अर्थः– जे मंदबुद्धि छे ते जीव अने शरीरने एक करी जाणेछे; भेद जाणता नथी. पण जे समकित पाम्यो छे, तेना हृदयमां जड अने चेतननुं भिन्न भिन्न ज्ञान थयुं छे; एवुं भेदविज्ञान जाग्रत थवाथी जेनुं चित्त चंदननी पेठे शीतल थयुं छे; जे मुक्ति मार्गमां केलि करे एटले खेल करी रह्या छे; आ जगत्मां श्री जिनेश्वरना जे न्हाना पुत्र छे. अने साधु जे छे ते सर्वज्ञपुत्र कहेवायछे, माटे ते मोटा पुत्र छे. वली आत्मा सदा निश्चयेकरी सत्यरूपमांज छे, पण मिथ्यात्ववडे मलिन थई रह्योछे. ते फरी सत्यस्वरूप जेनुं निर्मल प्रगटताने पाम्युंछे, अने मिथ्यात्वनुं निकंदन थयुंछे, एटले मिथ्यात्व रह्युं नथी, चार अनंतानुबंधीनी जड तुटी गईछे. एवी तेमनी शुद्धदशा ओलखीने बनारसीदास बन्ने हाथजोडी वंदना करेछे. ए सवैयामां सम्यक्त्वनी दृढता बतावीछे. ॥ ६ ॥

पूर्ण सम्यक्त्व दर्शाववानेअर्थे फरी तेनीज स्तुति करेछे.

॥ सवैया इकतीसाः॥–स्वारथके साचे परमारथके साचे चित्त, साचे साचे बैन कहे साचे जैनमतीहै; काहुके विरोधी नांहि परजायबुद्धि नांहि, आतम गवेषी न ग्रहस्थहै न यती हैं; सिद्धि रिद्धि वृद्धि दीसै घटमें प्रगट सदा, अंतरकी लक्ष्सों अजाची लक्ष्पती हैं; दास भगवंतके उदास रहै जगतसों, सुखिया सदीव ऐसे जीव समकिती हैं. ॥७॥

अर्थः– जेनी स्वार्थ एटले आत्मा पदार्थनेविषे साची प्रतीति छे. तथा परमार्थ ते मोक्ष पदार्थनेविषे साची प्रतीति छे. जेनुं चित्त निर्मल छे. जे सत्यवचनना बोलनारा छे. जे साचा जिनमतने ग्रहण करी रह्याछे. जेनुं मन कल्पना करतुं नथी. केमके, ते साते नयनुं शुद्धस्वरूप जाणेछे तेथी कोईना दर्शनना विरोधी नथी. जेम बौधमतानुसारी पर्याय बुद्धिवाला छे पण द्रव्य बुद्धिवाला नथी, तेथी जीवने क्षणभंगुर मानेछे, तेम समकितीपर्याय बुद्धिवंत नथी. पण आत्मद्रव्यनी गवेषणा करनार छे, तेथी तेने पर वस्तुमां मोह नथी; माटे गृहस्थ पण नथी, अने महा व्रत लीधा नथी तेथी यति पण नथी. पोताना घटनेविषे शुद्ध आतम द्रव्यने सिद्धसमानज जुएछे. तेथी घटमांज प्रगट सिद्धि देखेछे. अने ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रिद्धिनी वृद्धि जेना घटमां सदा प्रगट देखायछे. जे अंतर् परमात्मा देव छे तेनुं जेने लक्ष थयुं छे तेथी अयाची एटले कोईनी पासे कांई मागे नही, एवा लक्ष्पति छे. वलीजे ए पूर्वोक्त प्रकारना प्रगट स्वरूपने पामेला श्री वीतराग भगवंतने पामीने तेना दास थयाछे;

अने जतुगथी उदास रहेछे. जे आर्त्त अने रौद्र ए वे ध्यानथी विमुख थयाछे, तेथी सदैव सुखनी सन्मुख थयाछे, एवा समकिती जीव महा सुखमयी छे. ॥ ७ ॥

फरी पोताना उल्लासथी समकितीनी स्तुति करेछेः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—जाके घट प्रगट विवेक गनधरकोसो, हिरदे हरख महा मोहकों हरतु है; साचो सुख मानै निज महीमा अडोल जानै, अपुहीमें आपनो सुभावले धरतुहै; जैसे जल कर्दम कतक फल भिन्न करै, तैसे जीव अजीव विलछन करतु है; आतम सगति साधै ज्ञानको उदौ आराधै, सोई समकिती भवसागर तरतु है ॥ ८ ॥

अर्थः— जेवी रीते " उप्पनेवा, विगमेवा, धूवेवा, " ए त्रण पद सांभलीने गणधरना हृदयमां प्रगट विवेक उत्पन्न थायछे; अने अर्थनेविषे कोई संदेह रहै नहीं. तेवी रीतेज समकितीना घटमां विवेक प्रगट थयोछे, तेणेकरी स्वस्थ थई पोताना हृदयमां आनंदने पामी महा मोहने हरण करेछे. पोतानुं मिथ्यात्व दूर करीने सम्यक्त्व करेछे. हवे सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहेछेः—जे विषयसुख छे ते तो अनित्य छे; माटे जूठा छे, अने सहज समाधि सुख जे छे ते शाश्वता छे तेथी ते सुखनेज साचुं मानेछे. अने पोतानो ज्ञातारूप महीमा अडोल जाणेछे. तथा ज्ञान दर्शन अने चारित्र जे छे ते पोतानो स्वभाव छे, तेने पोतामांज धारेछे. पहेलां जीव मिथ्यात्व दशामां जीव अने शरीरने एक करी जाणतो हतो, अने हमणा जीव अने अजीवने भिन्नभिन्न लक्षणे करी जाणेछे. जेम पाणी अने चीकल एकठां थईगयां होय, तेने कतकफलनिर्मलीनुं चूर्ण नाखवाथी पाणी तथा कादवने ते रेणु भिन्नभिन्न करी नाखेछे, तेम जीव अने अजीवने जुदो जुदो लखेछे. चारित्रमां आत्मानी शक्तिने साधे, अने मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननो उदय थवानी इच्छा करेछे. मति अज्ञान तथा श्रुतअज्ञानने गमावी दियेछे. ते समकिती जीव भवसमुद्रनो तरनार कहेवायछे; ए रहस्य छे ॥ ८ ॥

हवे समकीत पाम्याछतां मिथ्यात्वदृष्टिमांज रहेछे, तेनुं वर्णन करेछे.

॥सवैया इकतीसाः॥—धरम न जानत बखानत भरमरूप, ठौर ठौर ठानत लराई पछ पातकी, भूल्यो अभिमानमें न पाउं धरे धरनीमें, हिरदेमें करनी विचारै उतपातकी, फिरेडावाडोलसें करमके कलोलनमें, वैरही अवस्थासों वघूलाकेसे पातकी, जाकी छाती ताती कारी कुटिल कुवाती भारी, ऐसो ब्रह्मघाती है मिथ्याती महापातकी॥९॥

अर्थः—जे वस्तुना स्वभावरूप धर्मने जाणे नही, अने भर्मरूप मिथ्यावाणीने वखाणे; तथा ठेकाणे ठेकाणे, पोतानुं मत स्थापवाने पक्षपातनी लराई करे अने पोताना अभिमाने भूल्यो थको धरती उपर पग राखे नही, पोतानेज तत्ववेत्ता

जाणे; (एमां अधर पगवडेकरी उत्प्रेक्षालंकार जाणवो.) अने हृदयामां जेथी उत्पात उपजे एवीज करणीनो विचार करे. अने आ संसाररूप समुद्रविषे कर्मरूप, कल्लोलोना धकाये करी चारे गतिमां झामाझोल करतो फरेछे; जेम वंटोलिया वायुमां आवीगएलुं पानडुं आकाशमां झुलीने भम्यां करेछे, पण कोई ठेकाणे स्थिरथई रहेतुं नथी; तेवीज एनी अवस्था थई रहीछे. जेनी छाती रागद्वेषवडे तप्त थई रेहेछे; ते तापे करी काली एटले माया तेने राखवाथी कुटिल थइ रहेछे. अने कुवाती एटले जे माठी वातोनुंज चिंतवनकरी रहेछे, तथा पापेकरी भरेलीछे माटे भारी जाणवी एवी जेनी छाती छे, एवो ब्रह्मघाती एटले आत्मघातनो करनार मिथ्यात्वी जीव महापातकयुक्त छे ॥ ए ॥

॥दोहराः॥–वंदो शिव अवगाहना, अरु वंदों शिवपंथ, जसु प्रसाद भाषा करो, नाटक नामे गरंथ. ॥ १० ॥

अर्थः–जिहां सिद्धनो अवगाह थई रह्योछे, ते क्षेत्रने हुं वंदन करुंछुं, अने ज्ञान दर्शन चारित्र ए मोक्षनो पंथके० मार्ग छे, तेने हुं वंदन करुंछुं. ए मंगलाचरण करी हवे पोतानुं प्रयोजन कहेछेः–जेना प्रसाद थकी समयसार नाटक ग्रंथ संस्कृतमां हतो ते प्राकृत भाषारूप करुंछुं. ए प्रयोजन कह्युं. ॥ १० ॥

हवे आ ग्रंथना अधिकारी बनारसीदास पोतेज छे; अने एमां कहेवा लायक पोतानुं आत्मद्रव्य छे तेनुं वर्णन करेछेः–कविवर्णनं.

॥सवैया तेईसाः॥–चेतनरूप अरूप अमूरति सिद्ध समान सदा पद मेरो; मोह महातम आतम अंग कियो परसंग महातम घेरो; ज्ञानकला उपजी अब मोहि कहों गुननाटक आगम केरो, जासु प्रसाद सधै शिवमारग वेग मिटे घटवास वसेरो॥११॥

अर्थः–बाह्यात्मामां अंतरात्माने अने अंतरात्मामां परमात्माना स्वरूपने जोईये, ए मारो निश्चयरूप पद कहेवा योग्य थायछे. ते चेतनरूपी अनुपम अमूर्त्तिक सिद्ध समान छे. जो ते निश्चयरूप पद एवुं छे तो पछी ते प्रगट केम जाणातुं नथी ? तेनो उत्तर एम छे के, मोहकर्मनुं कोई एहवुं महात्म्य छे, ते प्रसंगथी आतमअंगके० आत्म प्रदेशनेविषे महाअंधकारनो घेरोछे तेथी प्रगट लखातुंनथी. हमणा कोई ज्ञान कला मुजने उपनी छे ते कलानो अंश प्रगट थयोछे. तेथी नाटक सिद्धांत गुणनुं व्याख्यान करुंछुं, जे आगमना प्रसादवडे मोक्षमार्ग सिद्ध थाय अने जलदीथी शरीरमां वास वसवानुं मटी जाय, एटलेअशरीरपणुं सिद्धथाय. ॥ ११ ॥

हवे आ ग्रंथनुं गौरवपणुं वतावीने कविराज पोतानी बुद्धिनुं मंदपणुं देखाडी लघुता जणावे छेः– लघुता वर्णनंः–

॥सवैया इकतीसाः॥–जेसै कोउ मूरख महासमुद्र तरिवेको, भुजानिसों उद्यत भयो है तजि नावरो; जेसै गिरिउपरि विरषफल तोरिवेकों वामन पुरुष कोउमंग उतावरो; जैसे जलकुंडमें निरखी शशि प्रतिबिंब ताके गहिवेकों कर नीचो करे भावरो; तैसें मै अलपबुद्धि नाटिक आरंभकीनो, गुनीमोहि हसेंगे कहेंगे कोउ वावरो ॥१२॥

अर्थः–जेम कोई मूरख मनुष्य महासागरने तरवा चाहै अने वाहाणने छोडी हाथवडे तरवानो उद्यम करे, तो कार्य केमबने; जेम कोई वामन पुरुष होय अने पहाड उपर वृक्ष होय तेनां फलतोडवाने उतावलो थको उमंग करे, ते कार्य केवी रीते बनी शके? वली एक त्रीजो दृष्टांत कहेछे के, जेम पाणीना कुंडमां चंद्रनुं प्रतिबिंब पडेलुं जोईने कोई नादान तेने साचो चंद्र समजी हाथ नीचो करे तो तेना हाथमां चंद्रमा केवी रीते आवे ? तेमज हुं अल्पबुद्धि छुं, अने आवा नाटकग्रंथनो आरंभ में कीधो छे, ते मारोआरंभ सफल नही थशे तेवारे बीजा गुणवान पुरुषो कहेशेके, जुओ आ ग्रंथनो आरंभ करेछे एवुं कहीने गुणीजनो मने वावरो जाणी हशी काढशे ॥ १२ ॥

वली ए कार्य करवाने साहस करेछे पुनः

॥सवैया इकतीसाः॥–जैसै कोउ रतनसों वींध्यो है रतन कोउ, तामें सूत रेशमकी दोरी पोइ गई है, तैसै बुद्धीटीका करीनाटिक सुगम कीनो तापरि अलप बुद्धि सुद्धि परिनई है; जैसे काहु देसके पुरुष जैसी भाषा कहै, तैसी तिनहुके वालकनी सिखलई है, तैसै ज्यों गरंथको अरथ कह्यो गुरु त्यों हमारी मति कहिवेकों सावधान भई है॥१३॥

अर्थः–जेम कोई हीरानी कणीवडे कोई कठण रतनने आगलथी वींधी राख्युं होय, ने ते पछी तेमां पटुवो रेशिमनी दोरी परोवे ते सुगम चालीजाय तो तेम आ कार्य पण थशे. केमके मुनि अमृतचंद अने पांडेराजमल जेवा पंडितो थया तेमणे आ ग्रंथनी टीका बालबोधमां करीने आ नाटकग्रंथने सुगम कर्योछे, तो तेउपर माहरी अल्प बुद्धि छे तोपण आ ग्रंथमां सुधी रीते परणमी गई छे, तेथी आ कार्यनेविषे महारी समर्थाइनो दृष्टांत देखाडुं छुंः– जेम कोई देशनो वसनारो पुरुष पोतानी देशभाषामां बोलेअने तेनो बालक होय तेपण तेनीपासे रहेतोथको ते भाषा शीखी ले छे; तेमज आ कार्य पण छे. केमके मारा गुरुए आ ग्रंथनो अर्थ मने कह्योछे, तेज प्रमाणे आ ग्रंथनो अर्थ केहेवाने मारि बुद्धि सावधान थईछे. एटले आगल कहेलो पश्चाताप मट्यो ॥ १३ ॥

हवे पोताना सामर्थ्यनुं कारण बतावेछे.

॥सवैया इकतीसाः॥–कवहों सुमति व्है कुमतिको बिनाश करै, कवहों विमल ज्यो

तिअंतर जगति है; कबहों दया व्है चित्त करत दयालरूप, कबहों सुलालसा व्है लोच न लगति है; कबहों कि आरती व्है प्रभु सनमुख आवै, कबहों सु भारती व्है बाहरि बगति है;धरै दसा जैसी तब करै रीति तैसी एसी, हिरदे हमारे भगवंतकी भगति है॥१४॥

अर्थः–अमारा हृदयमां भगवंतनी भक्ति रहीछे, ते क्यारेंकतो सुमतिरूप थईने कुमतिनो नाश करेछे, क्यारेक अंतर्विषे ते भक्ति विमल ज्योतिरूप थईने जाग्रत थायछे, अर्थात् सम्यक्त्व-चेतना तेज भगवंतनी भक्ति छे; क्यारेक तेज भक्ति दयारूप थईने चित्तने दयारूप करेछे, अने क्यारेक ते भक्ति पोताना आत्मईश्वरने जोवानी लालसा के० लगन थकी, एटले लयलागवासां, लोचनोने स्थिर करेछे. अने क्यारेक तो ते भक्ति आरति के०अति रंगेकरी प्रभु सनमुख थई रेहेछे (बीजे अरथे प्रभु सनमुख आरति करेछे ते) अने क्यारेक तो ते भक्ति सुभारती के० भली वाणीरूप थईने बाहार बगति के० शब्द करी रहेछे. जेवी जेवी दशा धारेछे ते वारे तेवी तेवी रीतनी करनारी छे, ते एवी भगवंतनी भक्ति अमारा हृदयमां वसी रहीछे तेथी आ नाटकग्रंथ रचनारूप कार्यमां पण एक भगवंतनी भक्तिज कारण छे. एतात्पर्यार्थ छे. ॥ १४ ॥

हवे आ ग्रंथनो महीमा वर्णवेछे. अथ नाटक वर्णनः–

॥सवैया इकतीसाः॥–मोख चलवेकों सोन करमको करै बोन, जाको रस भौन बुध लौन ज्यों घुलति है; गुनको गरंथ निरगुनको सुगम पंथ, जाको जस कहत सुरेश अकुलित है; याहीके जु पछी सो उडत ज्ञान गगनमें, याहीके विपछी जन जालमें रुलत है; हाटकसो विमल विराटकसो विसतार, नाटक सुनत हीय फाटक खुलत है॥१५॥

अर्थः–जेम भला सुकनवडे कार्य सिद्धि थायछे, तेम आ ग्रंथपण मोक्षमार्गे चालनारने कार्यसिद्धिनो करनार छे; तथा आ ग्रंथ कर्मरूप केफनी जाल काढवाने वमन करवानुं औषध छे; अने जैन ग्रंथनो रस छे ते रस भौन के० पामिने तेमां पंडित लोक लौननीपरे गर्क थईरह्या छे. वली जेमां गुणजे ज्ञान दर्शन चारित्र तेनी ग्रंथ के० रचनाछे; परमतिनी अपेक्षाये निर्गुण जे मोक्षपद तेनो सुगम पंथ छे. ते निर्गुण कहेवो छे, जेनो यश अक्षय सुख छे; जेने कहेवाने इंद्र पण अकलायछे अने आ ग्रंथनो जेणे पक्ष लीधो छे, ते तो आ ग्रंथरूप पांखना प्रभावथी ज्ञानरूप आकाशमां पक्षीनी परे उडी रह्याछे अने जे आ ग्रंथना विपक्षिउं छे ते पांखरहित पक्षीनी परे जगतूरूप पाराधिनी जालमां रुली रह्याछे; तेमाटे आ नाटकनाम ग्रंथ ते हाटक एटले सुवर्णसमान छे; अने जेम-गीता ग्रंथमां श्रीकृष्णे वैराटरूप महोटा विस्तारे करी

देखाड्युं तेवो आ ग्रंथ पण विस्तारवंत छे, एवा आ नाटक ग्रंथने श्रवण करतामां हैयानां कमाड ते फाटक के० खुली जायछे ॥ १५ ॥

॥दोहराः॥–कहों शुद्ध निहचैं कथा, कहों शुद्ध विवहार; मुक्ति पंथ कारन कहों, अनुभौको अधिकार ॥ १६ ॥

अर्थः–जे शुद्ध निश्चयरूप कथाछे ते कहीश. अने शुद्ध व्यवहार जे छे ते पण कहीश अने मुक्ति पंथनुं कारण जे छे ते पण कहीश अने अनुभवनो जे अधिकार छे ते पण हुं कहीश ॥१६॥

अनुभव पदार्थनुं लक्षण कहेछेः– अनुभव वर्णनं

॥ दोहराः ॥ वस्तुविचारत ध्यावतै, मन पावै विश्राम; रस स्वादन सुख ऊपजे, अनुभौ याको नाम ॥ १७ ॥

अर्थः–अजाणीवस्तु जाणवाने मनमां विचार कर्याथी तथा तेनुं चिंतन कर्याथी एम खोजतां खोजतां ज्यारे मनमां ठीक ठरे, त्यारे सत्य समज्याना रसनो स्वाद प्राप्त थाय ने तेथी सुख उपजे तेनुं नाम अनुभव छे ॥ १७ ॥

॥दोहराः॥–अनुभौ रतन चिंतामनि, अनुभौ है रसकूप; अनुभौ मारग मोखको, अनुभौ मोख सरूप॥ १८ ॥

अर्थ ॥ अनुभव जेछे तेज चिंतामणि रत्न छे, अने तेज अनुभव रसायननी कुपी छे; अनुभव तेज मोक्षनो मारग छे अने अनुभवज मोक्ष सरूप छे ॥ १८ ॥

अनुभव महीमा.

॥सवैया इकतीसाः॥–अनुभौके रसकों रसायन कहत जग, अनुभौ अभ्यास यहै तीरथकी ठोर है; अनुभौकी जो रसा कहावै सोई पोरसा सु, अनुभौ अधोरसा सु उरधकी दोर है; अनुभौकी केली यहै कामधेनु चित्रावेली, अनुभौको स्वाद पंच अमृतको कौर है; अनुभौ करम तोरै, परमसों प्रीति जोरै, अनुभौ समान न धरम कोउ और है ॥ १९ ॥

अर्थः–जगत्‌वासी लोक अनुभवना रसने रसायन केहेछे, केमके जेम रसायन लोढानुं सुवर्ण करेछे, तेम अनुभव जेछे ते मिथ्यात्वने फेडीने सम्यक्त्व करेछे; जेम तीर्थनी ठोर जवाथी अपावन होय ते पावन थायछे. तेम ग्रंथविषे अनुभवनो अभ्यास ते अजाणने जाण करेछे. अने अनुभवनी जे रसा के०. पृथवी तेहज सुवर्ण पोरसा छे, एटले अनुभवनी उत्पत्ति छे, ते सोवन पोरसानी परे वृद्धि पामेछे. अने अधोरसा के० पाताल लोक, ते पण अनुभव रूपमां छे, अने ऊर्ध्व लोकनी दोर ते पण

अनुभवरूपमांज छे, एटले अनुभवमांज स्वर्ग नरक छे, अने अनुभवनी केलि के० रमत ते कामधेनुरूप छे, ते आपणीऋद्धिने वधारनारी छे, अने ते अनुभवनी जे केलि छे ते अक्षय ऋद्धि करवाने चित्रावेली छे, अने अनुभवनो स्वाद ते पंचामृतना कोर के० ग्रास जेवो छे. अनुभव करमने तोडेछे, ने परमात्मानी प्राप्ति जोडे छे; एटले अनुभवथी खोजतां परमात्मानी प्राप्ति थायछे; तेथी सर्व धर्म धारण करवामां अनुभव जेवो बीजो कोई धर्म नथी. एटले अनुभव ज्ञान जाणवाथीज मोक्ष मार्ग नजीक छे.॥१९॥

हवे अनुभव साधवाने छ द्रव्यनुं वर्णन करेछे. तेमां प्रथम जीव द्रव्य वर्णनः—

॥ दोहराः॥— चेतनवंत अनंत गुन, पर्यय सकति अनंत; अलख अखंडित सर्वगत, जीव दरववीरतंत ॥ २० ॥

अर्थः—जाणवा मात्रने चेतन कहेछे तद्रूप शक्तिमान छे, जेना अनंत गुण छे. जेमां पर्याय के० नामांतरपणुं पामवानी अनंत शक्ति छे, इंद्रिय अगोचर छे, तेथी अलक्ष छे, देहना खंड थाय पण आत्मा अखंडित छे, सर्व लोकमां भर्यो छे तेथी सर्वगत छे, एवुं जीव द्रव्यनुं स्वरूप छे. ते कह्यो. ॥ २० ॥

हवे पुद्गल द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. अथ पुद्गल द्रव्य यथाः—

॥दोहराः॥—फरस वर्न रस गंधमय, नरद पास संठाण; अणुरू पीपुद्गल दरब, नभ प्रदेश परमान ॥ २१ ॥

अर्थः—स्पर्श वर्ण रस गंध ए गुणमय सदा रहे, नरद जे सोगठीरूप राग तेना पासामां सूक्ष्म, वृत्त, अस्त्र, चतुरस्त्र, आयत ए पांच संस्थान छे; तेथी एनुं नाम संस्थान छे. पोत पोतानी वर्गणा योग्यरूप ग्रहण करे, तेथी ए पुद्गल द्रव्य अनुरूपी अथवा परमाणुरूपी छे. जेम आकाशप्रदेश अनंत छे, तेम ए पण अनंत प्रमाण छे ॥ २१ ॥

हवे धर्म द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. धर्म द्रव्य यथा.

॥दोहराः॥— जैसै सलिल समूहमें, करै मीन गति कर्म; तैसै पुद्गल जीवको, चलन सहाई धर्म. ॥ २२ ॥

अर्थः—जेम पाणीना भरावमां माछलुं गमन क्रिया करेछे, तहां क्रियानो कर्त्ता माछलुं छे, अने सलिल समूह जे पाणीनो भराव ते क्रियानो साधक छे तेम पुद्गलद्रव्यनी तथा जीवद्रव्यनी चलन क्रियानो साधक धर्मास्तिकाय द्रव्य छे. ॥ २२ ॥

हवे अधर्मास्तिकाय द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. अधर्म द्रव्य यथाः-

॥दोहराः॥—ज्यों पंथिक ग्रीषमसमै, वैठे छाया माहिं; त्यों अधर्मकी भूमिमें, जड चेतन ठहरांहि. ॥ २३ ॥

अर्थः—जेम कोई वटेमार्गु बेसवानी क्रियानो कर्त्ताछे, ने क्रियानी साधक छाया छे,

तेम अधर्मास्तिकायनी भूमी के० अवगाहना तेमां जड जे पुद्गल ने चेतन जे जीव ते बने स्थिर थायछे, तेथी अधर्मास्तिकाय द्रव्य स्थिरतानुं कारण छे. ॥ २३ ॥

हवे आकाश द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. आकाश द्रव्य यथा.

॥दोहरा॥–संतत जाके उदरमें, सकल पदारथ वास; जो भाजन सब जगत्को, सोइ दरब आकाश. ॥ २४ ॥

अर्थः–संतत के० निरंतर जेना उदरमां समस्त पदार्थ वसी रह्याछे, अने जे सर्व जगत्नुं भाजन के० आधारभूत छे, ते आकाश द्रव्य जाणवुं. ॥ २४ ॥

हवे कालद्रव्यनुं लक्षण कहेछे. काल द्रव्य यथा.

॥दोहरा॥– जो नवकरि जीरन करै, सकल वस्तु थिति ठान, परावर्त्तवर्त्तन करै, काल दरब सो जान. ॥ २५ ॥

अर्थः–जे द्रव्य वडे सघली वस्तुनी स्थिति बंधाय एटले पेहेलां सकल वस्तुने नवी बतावे, ने पछवाडेथी ते सघलीने जुनी करी देखाडे, अने उलट पालट वर्त्तवानी दशाधरे ते कालद्रव्य जाणवुं. ॥ २५ ॥

हवे आ ग्रंथमां कहेवा लायक नव तत्त्व छे तेनुं वर्णन करेछेः–तेमां प्रथम जीवतत्त्वनी समज पाडेछे. नवतत्त्व वर्णनं, जीवतत्त्व यथा.

॥दोहरा॥–समता रमता उरधता, ज्ञायकता सुखभास; वेदकता चैतन्यता, ए सब जीव विलास. ॥ २६ ॥

अर्थः–सर्व जीव बराबर छे ए समता, घटघटमां रमी रहेछे ए रमता, ऊर्ध्व दिशे गमन करवुं ए उरधता, सर्व पदार्थनो जाणनार ते ज्ञायकता, सुखमय भासे छे तेथी सुखभास, सुखदुःख वेदे ए वेदकता, अने चेतना गुणथी चैतन्यता ए सघलो जीव तत्त्वनो विलास छे. ॥ २६ ॥

अथ अजीवतत्त्व यथा.

॥दोहरा॥–तनता मनता वचनता, जडता जड संमेल; लघुता गुरुता गमनता, ए अजीवके खेल. ॥ २७ ॥

अर्थः–शरीरपणुं, मनपणुं, वचनपणुं, जडवस्तुमां भेलभेल थवापणुं, लघुपणुं, गुरुपणुं, गमनपणुं ए सर्व अजीवतत्त्वना खेलछे. ॥ २७ ॥

अथ पुण्यतत्त्व यथा.

॥दोहरा॥–जो विशुद्ध भावनि बधे, अरु ऊरध मुख होय; जो सुखदायक जगतमें, पुन्य पदारथ, सोय. ॥ २८ ॥

अर्थः—जेपदार्थ विशुद्ध परिणामथी वधे; अने जेनुं ऊर्ध्वमुखछे, ऊर्ध्वगति एज चमेछे, जे पदार्थ जगत्मां सुखदायकछे, ते पुण्य पदार्थ जाणवो. ॥ २८ ॥

अथ पापतत्त्व यथा.

॥ दोहराः॥—संकिलेसि भावनि बधे, सहज अधोमुख होय; दुःखदायक संसारमें, पाप पदारथ सोय. ॥ २९ ॥

अर्थः—जे पदार्थ संक्लेश भाव वडे कषायनीवृद्धिथी वधे, सेहजे जेनी गति नीची छे, अधोमुखछे, अने जगत्मां जे दुःखदायक छे तेज पाप पदार्थ केहेवायछे. ॥ २९ ॥

अथ आश्रवतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जोई करम उद्योत धरि, होइ क्रिया रस रत्त; करषै नुतन करमको, सोई आश्रव तत्त. ॥ ३० ॥

अर्थः—जे कर्मनो उदय धरीने शुभ तथा अशुभ क्रियाना रसमां रत थई रहे, त्यारे नवां करमनुं करखे के० खेचवुं करे ते आश्रव तत्त्व केहेवाय. ॥ ३० ॥

अथ संवरतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जो उपयोग सरूप धरि, वरतै जोग विरत्त; रोकै आवत करमकों, सो है संवर तत्त. ॥ ३१ ॥

अर्थः—जे शुद्ध उपयोग स्वरूपने धारीने मन वचन कायाना जोगथी विरक्त थको वर्त्ते अने नवां करम आवताने रोकी राखे ते संवर तत्त्व कहिये. ॥ ३१ ॥

अथ निर्ज्झरातत्त्व यथा.

॥दोहाः॥—जो पूरव सत्ता करम, करि थिति पूरण आउ, खिरवैकों उद्यत भयो, सो निर्ज्झरा लखाउ. ॥ ३२ ॥

अर्थः—जे पूर्व कालनेविषे आयुविना सात कर्म सत्तारूप हतां अने आयु कर्म वर्त्तमान कालमां सत्तारूप छे तेनी स्थिति पूर्ण करीने पछी नीरस कर्मने विखेरवामां जे जीव उद्यमवंत थयो ए निर्जरानुं लक्षण जाणवुं. ॥ ३२ ॥

अथ बंधतत्त्व यथा.

॥दोहाः॥—जो नव कर्म्म पुरानसों, मिले गंठि दिढ होइ; सकति बढावै बंसकी, बंध पदारथ सोइ. ॥ ३३ ॥

अर्थः—जे नवां कर्म जूना कर्म साथे आवी मले, अने तेनी गांठ दृढ बंधाय, अने आगल जतां ते कर्मना वंसनी शक्ति चढती थाय, ते बंध पदारथ केहेवाय. ॥ ३३ ॥

अथ मोक्ष तत्त्व यथा.

॥दोहा॥—थिति पूरन करि जो करम, षिरे बंध पद भानि; हंस अंस उज्वल करै, मोक्ष तत्त्व सो जानि. ॥ ३४ ॥

अर्थः—जे कर्मनी स्थितिने पूर्ण करीने कर्मने खेरे के० क्षयकरी नाखे अने बंध पद के० सत्तावन प्रकारे बंधस्थान तेने भानि के० भांगीने हंस के० परमात्माना अंसने क्रमे उज्वल करे तेज मोक्ष तत्त्व जाणवुं. ॥ ३४ ॥

हवे कवित्त छंदमां पदार्थनी नाममाला एटले प्रयोजनवाला नामनी नाममाला लखी जणावेछेः—

अथ नाममाला सूचनिका मात्र लिख्यते. अथ समुच्चय वस्तुके नाम.

॥दोहरा॥—भाव पदारथ समय धन, तत्त्व वित्त वसु दर्व; द्रविन अर्थ इत्यादि बहु, वस्तु नाम ए सर्व. ॥ ३५ ॥

अर्थः—प्रथम सामान्यपणे वस्तुनां नाम कहेछे. भाव, पदार्थ, समय, धन, तत्त्व, वित्त, वस्तु, द्रव्य, द्रवीण, अर्थ, इत्यादि घणां वस्तुनां नाम छे. ॥ ३५ ॥

अथ शुद्ध जीव द्रव्यके नामः—

॥सवैया इकतीसा॥—परमपुरुष परमेसुर परमज्योति, परब्रह्म पूरन परम परधान है; अनादि अनंत अविगत अविनाशि अज, निरद्वंद मुकत मुकुंद अमलान है; निरा बाध निगम निरंजन निरविकार, निराकार संसार सिरोमनि सुजान है; सरव दरसी सरबज्ञ सिद्ध सांई शिव, धनी नाथ ईश जगदीश भगवान है. ॥ ३६ ॥

अर्थः—परमपुरुष, परमेश्वर, परमज्योति, परब्रह्म, पूर्ण, परमप्रधान, अनादिअनंत, अव्यक्त, अविनाशी, अज, निर्द्वंद्व, मुक्ति, मुकुंद, अम्लान, निराबाध, निगम, निरंजन, निर्विकार, निराकार, संसारशिरोमणि, सुजान, सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, सिद्ध, स्वामी, शिव, धनी, नाथ, ईश, जगदीश, भगवान, कहीये. ॥ ३६ ॥

हवे कर्म व्याप्त अशुद्ध जीव द्रव्यना नाम कहेछेः—संसारी जीव द्रव्यके नाम.

॥सवैया इकतीसा॥—चिदानंद चेतन अलख जीव समैसार, बुद्धरूप अबुद्ध अशुद्ध उपयोगी है; चिदरूप स्वयंभू चिन्मूरति धरमवंत, प्रानवंत, प्रानि जंतु भूत भव भोगी है; गुनधारी कलाधारी भेषधारी विद्याधारी, अंगधारी संगधारी जोगधारी जोगी है; चिन्मय अखंड हंस अषर आतमराम, करमको करतार परम विजोगी है. ॥३७॥

अर्थः—चिदानंद, चेतन, अलख, जीव, समयसार, बुद्धरूप, अबुद्ध, अशुद्ध, उपयोगी, चिद्रूप, स्वयंभू, चिन्मूर्ति, धर्मवंत, प्राणवंत, प्राणी, जंतु, भूत, भवभोगी, गुण

धारी, कलाधारी, भेषधारी, विद्याधारी, अंगधारी, संगधारी, योगधारी, योगी, चिन्मय अखंड, हंस, अक्षर, आत्मराम, कर्मकर्त्ता, परमवियोगी कहिये. ॥ ३७ ॥

अथ आकाशके नामः--

॥दोहराः॥-- षं विहाय अंबर गगन, अंतरिक्ष जगधाम; व्योम वियत् नभ मेघपथ, ए आकाशके नाम. ॥ ३८ ॥

अर्थः--खं, विहाय, अंबर, गगन, अंतरिक्ष, जगधाम, व्योम, वियत्, नभ, मेघपथ, ए आकाशनां नाम. ॥ ३८ ॥

अथ कालके नाम.

॥दोहाः॥--यम, कृतांत, अंतक, त्रिदस, आवर्त्ती मृतथान; प्रानहरन, आदित तनय, कालनाम परमान. ॥ ३९ ॥

अर्थः--यम, कृतांत, अंतक, त्रिदश, आवर्त्तिक, मृतस्थान, प्राणहरण, आदित्य तनय, एवां कालनां नाम छे. ॥ ३९ ॥

पुण्यके नाम यथा.

॥दोहाः॥--पुण्य सुकृत ऊरधवदन, अकर रोग शुभ कर्म; सुखदायक संसारफल, भागबहीर्मुख धर्म. ॥ ४० ॥

अर्थः--पुण्य, सुकृत, ऊर्ध्ववदन, अकररोग, शुभकर्म, सुखदायक, संसार फल, भाग, बहिर्मुख, धर्म, ए पुण्यनां नाम छे. ॥ ४० ॥

अथ पापके नाम यथा.

॥दोहाः॥--पाप अधोमुख एन अघ, कंप रोग दुखधाम; कलिल कलुष किलविष दुरित, अशुभ कर्मके नाम ॥ ४१ ॥

अर्थः--पाप, अधोमुख, एन, अघ, कंप, रोग, दुःखधाम, कलिल, कलुष, किल्विष, अने दुरित, ए अशुभ कर्मनां नाम जाणवां. ॥ ४१ ॥

अथ मोक्षके नाम.

॥दोहाः॥--सिद्धछेत्र त्रिभुवन मुकुट, शिवमग अविचल थान; मोषमुगति वैकुंठशिव, पंचम गति निरवान ॥ ४२ ॥

अर्थः--सिद्धक्षेत्र, त्रिभुवनमुकुट, शिवमार्ग, अविचलस्थान, मोक्ष, मुक्ति, वैकुंठ, शिव, पंचमगति अने निर्वाण ॥ ४२ ॥

अथ बुद्धिके नाम यथा.

॥दोहाः॥--प्रज्ञा धिषना सेमुखी, धी मेधा मति बुद्धि; सुरति मनीषा चेतना, आशय अंसविशुद्धि. ॥ ४३ ॥

अर्थः—प्रज्ञा, धिषना, सेमुषी, धी, मेधा मति, बुद्धि, सुरति, मनीषा, चेतना, आशय, अंशविशुद्धि कहिये ॥ ४३ ॥

अथ विचक्षण पुरुषके नामः—

॥दोहाः॥—निपुन विचछ्न विबुध बुध, विद्याधर विद्वान; पटु प्रवीन पंडित चतुर, सुधी सुजन मतिमान. ॥ ४४ ॥ कलावंत कोविद कुशल, सुमन दक्ष धीमंत; ज्ञाता सज्ञान ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ गुनीजन संत. ॥ ४५ ॥

अर्थः—निपुण, विचक्षण, विबुध, बुध, विद्याधर, विद्वान, पटु, प्रवीण, पंडित, चतुर, सुधी, सुजन अने मतिमान ॥ ४४ ॥ कलावान, कोविद, कुशल, सुमन, दक्ष, धीमंत, ज्ञाता, सज्ञान, ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ, गुणीजन अने संत ॥ ४५ ॥

अथ मुनीश्वरके नामः—

॥दोहाः॥—मुनि महंत तापस तपी. भिक्षुक चारितधाम; यती तपोधन संयमी, व्रती साधु रिषि नाम. ॥ ४६ ॥

अर्थः—मुनि, महंत, तापस, तपी, भिक्षुक, चारित्रधाम, यति, तपोधन, संयमी, व्रती, साधु ए ऋषिनां नाम जाणवां. ॥ ४६ ॥

दर्शनके नामः—

॥दोहाः॥—दरस विलोकन देखनो, अवलोकन ड्गिचाल; लक्षन दृष्टि निरखन जुवन, चिंतवन चाहन भाल ॥ ४७ ॥

अर्थः—दर्शन, विलोकन, देखवुं, अवलोकन, ड्गचालन, लखवुं, दृष्टी, निरीक्षण, जोवुं, चिंतवन, चाहन, ने भालवुं. ॥ ४७ ॥

शुद्ध ज्ञान तथा चारित्रके नामः—

॥दोहाः॥—ज्ञान बोध अवगम मनन, जगतभान जगजान; संयम चारित आचरण, शरन वृति धिरवान ॥ ४८ ॥

अर्थः—ज्ञान, बोध, अवगम, मनन, जगज्ञानु, जगजान, संयम, चारित्र, आचरण, शरण, वृत्ति, धैर्यवान. ॥ ४८ ॥

अथ साचके नामः—

॥दोहाः॥--सम्यक् सत्य अमोघ सत, निसंदेह निरधार; ठीक यथारथ उचित तथ, मिथ्या आदिअकार ॥ ४९ ॥

अर्थः--सम्यक्, सत्य, अमोघ, सत्, निःसंदेह, निर्धार, ठीक, यथार्थ, उचित, तथ्य, मिथ्या आदि शब्दने अकार लगाडीने बोलीये तो अमिथ्या शब्द थाय ते पण एनुं नाम जाणवुं ॥ ४९ ॥

अथ जूठके नामः--

॥दोहा॥--अजथारथ मिथ्या मृषा, वृथा असत्य अलीक; मुधा मोघ निष्फल वितथ, अनुचित असत अठीक ॥ ५० ॥

अर्थः--अयथार्थ, मिथ्या, मृषा, वृथा, असत्य, अलीक, मुधा, मोघ, निष्फल, वितथ, अनुचित, असत्य, अने, अठीक, ॥ ५० ॥ इति नाममाला समाप्ता.

अथ समयसारके द्वादश द्वार वर्णनः--

॥सवैया इकतीसा॥--जीव निरजीव करता करम पुण्य पाप, आश्रव संवर निरजरा बंध मोष है; सरव विशुद्धि स्याद्वाद साधिसाधक डुआसद डुवार धरे समैसार कोष है; दरवानुयोग दरवानुयोग डूरि करै, निगमको नाटक परम रस पोष है; ऐसो परमागम बनारसी बखाने यामें, ज्ञानको निदान शुद्ध चारितकी चोष है ॥ ५१ ॥

अर्थः--जीवद्वार, अजीवद्वार, कर्त्ता कर्म क्रियाद्वार, पुण्यपाप द्वार, आश्रवद्वार, संवरद्वार, निर्जराद्वार, बंधद्वार, मोक्षद्वार, सर्व विशुद्धिद्वार, स्याद्वादद्वार, साध्य साधकद्वार, आ समयसारना ए बार द्वाररूप कोष के० कोठार छे; आ ग्रंथमां द्रव्यानुयोग के० द्रव्यनो विचारकरवो, पछी द्रव्यानुयोग दूर करवो, ने शुद्ध आत्मसत्तानोज विचार करवानुं अने निगमके० परमात्मानुं नाटक एमां परम शांतरसनो पोष छे, ए परम सिद्धांतने वणारसीदास वखाणेछे. वली आ ग्रंथमां ज्ञाननुं निदानके० मूलविवरो तथा शुद्ध चारित्रनी चोखी क्रिया कही बतावavानीछे ॥ ५१ ॥

अथ ग्रंथारंभको नमस्कार मंगलाचरण रूप.

॥दोहरा॥--शोभित निजअनुभूतियुत, चिदानंद भगवान; सार पदारथ आतमा, सकल पदारथ जान ॥ ५२ ॥

अर्थः--जे पदार्थ पोताना अनुभव युक्त शोभित छे, चित्के० चेतना अने आनंद तेचिदानंद कहियें; तथा भगवान के० ज्ञानवंत छे, एवो साररूप पदार्थ संसारमां आत्मा छे, जे समस्त पदार्थनो जाणनार महोटो ज्ञाता छे ॥ ५२ ॥

अथ आत्मानुं वर्णन करी नमस्कार करेछेः--

॥सवैया तेईसा॥--जो अपनी डुति आपु विराजत, है परधान पदारथ नामी; चेतन अंक सदा निकलंक महासुखसागरको विसरामी; जीव अजीव जिते जगमें तिनको गुन ज्ञायक अंतरजामी; सो शिवरूप बसै शिवथानक, ताहि विलोकनमें शिवगामी॥५३॥

अर्थ ॥ जे पोतानी द्युतिवडेज पोते विराजमान छे, एटले पोताथी पोते भासीरह्यो छे, पण बीजा पदार्थवडे जेनो भास थतो नथी एवो कोई प्रधान पदार्थ नामी प्र

सिद्ध छे. जेनुं चेतनरूप अंक के० लक्षण छे; जे सदा निकलंक छे; निरंजन छे; महोटा सुखसमुद्रमां जेनो विश्राम थई रह्योछे, एटले एकाग्रचित्ते जे सहेजे समाधिसुखमां रमी रह्योछे; जगत्मां जेटला जीव अजीव पदार्थ छे, ते सर्वना गुणनो ग्राहक छे, अने अंतरजामी छे. जे घटघटमां विराजमान छे. तेहज शिवरूप के० सिद्धरूप थयो थको लोकाग्रभागे सिद्धावस्थामां वसेछे; जेने ज्ञान दृष्टिवडे जोईने मुक्ति गामी जीव नमस्कार करे छे ॥ ५३ ॥

हवे भगवाननी वाणीने नमस्कार करेछे. अथ जिनवाणी वर्णनं.

॥सवैया तेइसा॥—जोग धरै रहि जोगसुंभिन्न अनंत गुनातम केवल ज्ञानी; तासहृदे द्रहसों निकसी सरिता सम व्है श्रुत सिंधु समानी; यातें अनंत नयातम लछन; सत्य सरूप सिद्धांत वखानी; बुद्धलखै न लखै दुरबुद्धि सदा जगमांहि जगे जिनवानी॥५४॥

अर्थः—जे त्रण योगने धारेछे तथापि ते मन वचन कायना जोगथी प्रथक् रहे छे, अलिप्त रहेछे, अने अनंत गुण प्रगटताने लीधे जेनो आत्मा कोई केवल ज्ञानी पुरुष छे ते केवल ज्ञानीना हृदय रूप द्रह छे, तेमांथी जे नदीरूप थईने निकली ते शास्त्ररूप समुद्रमां जई भली छे, ज्यांथी अनंता नय स्वरूप लक्षण सत्य स्वरूपे जिनजीयें सिद्धांतमा वखाणी छे, एवी जे वाणी ते तो बुद्धिवंत तत्त्व दर्शी होय तेज लखे, अने दुर्बुद्धि मिथ्यामति होय ते लखे नहीं, जाणे नही, एवी जिनेश्वरनी वाणी जगत्मां सदा जागृत थई रही छे. ॥ ५४ ॥

हवे जीव द्वारनो विचार लखेछे, ते जीव कवीश्वर पोतेज छे माटे पोतानी व्यवस्था कहेछे. अथ जीवद्वार कवि व्यवस्था कथनः—

॥छप्पय छंदः॥—हों निहचें तिहुं काल, शुद्ध चेतनमय मूरति; पर परिनति संयोग, भई जडता विस्फूरति; मोह कर्म पर हेतु, पाइ चेतन पर रच्चै; ज्यौं धतूर रस पान, करत नर वहु विध नच्चै, अव समय सार वर्नन करत, परम शुद्धता होउ मुझ; अ नयास वनारसि दास कहि, मिटौ सहज भ्रमकी अरुझ. ॥ ५५ ॥

अर्थः—शुद्ध निश्चयनयवडे अतीत अनागत वर्त्तमान कालमां हुं शुद्ध चेतना मय पिंड छुं, एहिज मारी मूर्त्ति छे, ते एवी छे, त्यारे शुद्ध स्वभाव छांमीने विभा वमां केम परिणम्यो छे? एनो उत्तर कहेछे जे, कर्मादिक परवस्तु छे, तेनुं अहीं प रिणमन थयुं, तेथी तेनी जडता अहीं विस्फुरति थई, एटले जडता फेली. शिष्य पूछे छे के, एवो शुद्ध स्वभाव हतो त्यारें परपरिणति केम ग्रहण करी? तेनो उतर, मोह कर्म राग द्वेष रूप जे छे तेज परहेतु उत्कृष्ट कारण पामीने चेतन आत्मा परनी साथे मोहित थयो छे; तेनो दृष्टांत कहेछेः—जेम धतुरानो रस पान करी मा

एस तरेहवार रीते नाचवा लागे, तेम अनादिनुं मोह कारण पामीने चेतन जे छे ते पोतानो शुद्ध स्वन्नाव छांमीने विन्नावथी मूर्छा पामी रह्योछे. हवे समयसार के० आत्मानुं वर्णन करतांज मुजने परम शुद्धताना स्वन्नावनी ओलखाणथई एटले शुद्ध स्वन्नावनी खबर पडी तेथी विन्नावपणु नाश पाम्युं. तेथी अनायास के० घणा ग्रंथ वांचवानो प्रयास कीधा विनाज बणारसीदास ज्ञाता कहेछे, के सहज के० आत्माने संगे अनादिथी भ्रमनी अरुफ ते मिथ्यामत मग्नता लागी रहीछे ते मारी मिथ्यामत मटी जाओ. ॥ ५५ ॥

हवे आ जीवनी शुद्धता ते आगमथी पामीये, माटे आगम वर्णवेछे. अथ आगम व्यवस्था कथन.

॥सवैया इकतीसाः॥—निहचैमें रूप एक विवहारमें अनेक, याही नै विरोधमें जगत् न्नरमायो है; जगके विवाद नासिबेको जिन आगम है, जामें स्याद्वाद नाम लछन सुहायो है; दरसन मोह जाको गयो है सहजरूप, आगम प्रमान जाके हिरदेमें आयो है; अनैसो अखंमित अनुतन अनंत तेज, ऐसो पद पूरन तुरत तीन पायो है. ॥५६॥

अर्थः—सर्व आगम ज्ञानरूप निश्चयनयमां एकरूप देखाय छे, अने व्यवहार नयनी अपेक्षावडे अनेक रूप देखाय छे; पण व्यवहार नयमां नयनो विरोध महोटो छे, एज नय-विरोधमां जगत् न्नरमायुं छे, अने एज भ्रमवमे जगतूमां वादविवाद उपज्यो छे, माटे जगतूनो विवाद मटामवाने वचमां प्रमाणिक साक्षीरूप जिनेश्वरनो आगम छे; जे आगममां स्याद्वाद नाम लेवाथी सर्वपदार्थनुं लक्षण सर्वने सोहावे छे; स्यात् एटले केवारेक द्रव्य दृष्टिए देखीए त्यारे ए नय साचोने केवारेक पर्याय दृष्टिए जोइये त्यारे ए नय साचो; एवुं कहे थके शिष्य पूछेछेके एवो स्याद्वाद सहित जिन आगम प्रमाण छे, त्यारे सर्वना हृदयामां केम आवतो नथी ? जे पुरुषनो अनादि कालनो मिथ्यादर्शनमोह गयो छे, तेना हृदयामां ए जिन आगम प्रमाणरूप आव्योछे, पण मिथ्यादर्शनमोहवालाना ऋदयमां ए आवे नही; हवे स्याद्वादना जाणनारने केवुं फल मले ते कहेछेः—जे पद नय रहित छे, एटले नयनी पेठे नथी, केमके, नयतो एकांत ग्राही छे, ते पूर्ण पदने केम ग्रहण करी शके? अने पूर्ण पद अखंमितछे, ने ते वली अनादि कालथी छे, माटे अनूतन के० पुरातन छे एवुं अनंत तेजवालुं पूर्ण पद तेने ते तुरत पाम्यो छे ॥ ५६ ॥

हवे निश्चय अने व्यवहार नयने लीधे आगम कह्यो, तेवारे शिष्य पुछेछे के एवे नयमां कार्य सिद्धिकारी नय कयो छे ? तेनो उत्तर गुरु आपे छे.

अथ निश्चय व्यवहार कथन.

॥सवैया तेईसाः॥—ज्यों नर कोउ गिरै गिरिसों तिहि, सोइ हितु जु गहै दिढ बांही, त्यों बुधकों विवहार भलो तवलों जवलों शिव प्रापति नाही; यद्यपि यों पर वान तथापि सधै परमारथ चेतनमांही; जीव अव्यापक है परसों विवहार सुतौ परकी परछांही ॥ ५७ ॥

अर्थः—जेम कोई पुरुष पाहाडनी उपरथी नीचे पडतो होय ने बीजो पुरुष तेनो हाथ मजबुत झाली रही तेने पडतो अटकावी राखे ते तेनो हित करनार कहेवाय; तेम पंडितोने ज्यां सूधी शिवसुखनी प्राप्ति नथी थई, त्यां सुधी व्यवहार भलो छे; एटले चोथा गुणठाणाथी लईने चौदमा शैलेसीकरण गुणठाणासुधी व्यवहारनुं आलं वन छे; यद्यपि ए रीते व्यवहार आलंवन प्रमाण छे, तथापि परमार्थ ज्ञान दर्शन चा रित्रनुं शुद्धपणु चेतनमांज सधाय; बीजाथी न सधाय; अने जीव जे छे ते पोताना गुणमयी छे, पोताना गुणमां व्यापी रह्योछे; परंतु पर के० कर्मादिक जडजीव सत्ताथी न्यारा, ते साथे जीव अव्यापक छे. अने व्यवहार छे तेतो परनी छायामां रहेछे, ए टले परनी निश्राविना व्यवहार न होय माटे व्यवहार करतां निश्चयनय शुद्ध छे॥५७॥

हवे शुद्धनिश्चयनयथी जे सम्यग् दर्शन प्रगटे छे तेनी व्यवस्था विशेषपणे जाण वाने अर्थे कहेछे, अथ सम्यग् दर्शन व्यवस्था कथन.

॥सवैया इकतीसाः॥—शुद्ध नय निहचै अकेलो आपु चिदानंद, अपनेही गुण परजा यको गहतु है; पूरन विज्ञान घन सोहै विवहार मांहि, नवतत्त्वरूपी पंच द्रव्यमें र हतु है; पंच द्रव्यनवतत्त्व न्यारे जीव न्यारो लखै, सम्यग् दरस यहै औरतैन गहतु है; सम्यग् दरस जोई आतमसरूप सोई मेरे घट प्रगट्यो वनारसी कहतु है ॥ ५८ ॥

अर्थः—शुद्ध निश्चय नयनी अपेक्षा लेवाथी चेतनामय जे पदार्थ छे, ते पोतानी स त्ताये पोते एकलोज छे; अने पोतानाज ज्ञानादिक गुणना पर्यायना अवस्था भेदने ते ग्रही रह्योछे. अने तेज सामान्य ज्ञानने शोधो. जे षट् द्रव्यादिक विशेष ज्ञान तेने विज्ञान कहीये; अने तेनुं पूर्ण घन के० पिंड ते ए व्यवहार नयमांज देखायछे; अने एज व्यवहार नयथी नवतत्त्वरूप लई धर्मादिक पांच द्रव्यमां एकत्र थई रहेछे. अने एवाज व्यवहारमां शुद्ध निश्चय केवलना पांच द्रव्य न्यारा छे एम जाणवुं अने नवतत्त्वने पण न्यारा जाणवा; एवी द्रव्य दृष्टिथी अन्य उपाधिनो आश्रय ग्रहण करे नही, तेनेज सम्यग् दर्शनी कहीये, अने जे सम्यग् दर्शन छे, तेज आत्मस्वरूप मारा घटमां प्रगट्युं एवुं वणारसीदास कहेछे ॥ ५८ ॥

शिष्ये पुछ्युं के जीव द्रव्यथी नव तत्त्व अने पंच द्रव्य जुदा केम जाणीए तेनो उत्तर गुरु कहेछे:– अथ जीवद्रव्य व्यवस्था अग्नि दृष्टांत.

॥सवैया इकतीसा॥–जैसै तृन काठ वांस आरनै इत्यादि और, इंधन अनेक विध पावकमें दहिये; आकृति बिलोकत कहावै आगि नानारूप, दीसैं एक दाहक सुभाउ जब गहिवे; तैसे नव तत्वमें भयो है बहु भेखी जीव, शुद्धरूप मिश्रित अशुद्धरूप कहियें; जाही छिन चेतना शकतिको विचार कीजै, ताही छिन अलख अभेदरूप लहिये.॥५९॥

अर्थः–जेम अग्निमां तृण, काठ, वांस अने आरनै के० वननो बीजो कचरो इत्यादिक अनेक तरेहना इंधण बालीये छइयें ने जेवी जेवी इंधननी आकृति एटले (आकार) तेवी तेवी आकृतिनो अग्नी देखाय; ए रीते अग्नि नाना प्रकारना रूपनो कहेवायछे; पण ते बधा अग्निनो स्वभाव एक सरखो दाहक छे; एम जो ग्रहण करिये तो बधो अग्नि एकरूप छे. तेमज नव तत्त्वमां जीव जेछे ते भातभातना भेष धारी रह्यो छे माटे जीव पण बहु वेशी के० नाना प्रकारनो थयो एटले शुद्धरूप जीव छे, ते मिश्रित थयो, त्यारे ए जीवने अशुद्धरूप कह्यो एनुं नाम व्यवहार नय छे; अने जे क्षणमां नवे तत्त्वमां एक चेतना शक्ति विचारिये, ते वखते शुद्ध निश्चयनये केवलीवडे नव तत्त्वनो प्रपंच अमुख्य राखीने अलक्षरूप जीव छे, ते सर्वत्र ते अभेदरूप पामिये शुद्ध निश्चय नय जाणवो ॥ ५९ ॥

फरी बीजी रीते शुद्ध जीव व्यवस्था कहेछे, अथजीव व्यवस्था वनवारी दृष्टांतः–

॥सवैया इकतीसा॥–जैसै वनवारीमें कुधातुके मिलाप हेम, नाना भांति भयो पै तथापि एक नाम है, कसिके कसोटी लीक निरखै सराफ तांही, बानके प्रमान करिलेतु देतु दाम है; तैसेही अनादि पुद्गलसों संयोगी जीव, नव तत्वरूपमें अरूपी महा धाम है; दीशे उनमानसौ उद्योत बान ठोर ठौर, दूसरो न और एक आतमाहि राम है ॥ ६० ॥

अर्थः–जेम सोनानी मूसमां चोखुं सोनुं गाल्युं अने सोनाथी हीण धातु ते कुधातु कहिये, तेनां नाम कहेछे;–रूपुं, त्रांबुं, सीसुं, जसत, कथीर, इत्यादि वस्तुनो जुदोजुदो हेमनी साथे मिलाप थयो तेथी जुदी जुदी जातनुं सोनुं थयुं, ते छतां एक सोनाने नामे ओलखायछे; अने ते अशुद्ध सोनाने सराफ कसोटी पथ्थर उपर कसीने तेनी लकीर जुये ने तेउपरथी सोनुं केवुं छे ते प्रमाण करे, जेम आ दस रुपीयाना भावनुं छे ने आ अगीयार रुपीयाना भावनुं छे, ने ते माफक तेना दाम आपे लिए छे, तेमज अनादि कालथी ए जीव पुद्गल द्रव्यनो संयोगी माटे ए जीवे नव तत्त्वरूप व्यवस्था धारी. गतिपणे, स्थितिपणे, भाजनपणे, वर्त्तमानपणे, आधारपणे,

ए पांचे द्रव्य ग्रहण कीधां अने नवतत्त्वरूप धारण कर्यां पण एमां कोई अरूपी महा तेजवंत द्रव्य बे ते तो कोई प्रत्यक्ष प्रमाणे ग्रहण थतुं नथी, अने अनुमान वडे लइये बइये, तेवारे शिष्ये पुब्युंके, अनुमान केवुं करीये? त्यारे गुरु कहेबे गोर गोर उद्योतवान प्रकाशवान द्रव्य देखाय, तेतो बीजुं कोई द्रव्य नही, पण एक आत्मारामज जाणवो; ए अशुद्ध निश्चय नयथी जीव कह्यो. ॥ ६० ॥

हवे एवी रीते जे खोजना करीने परिचय पामिये तेने अनुनव कहिये, ते अनुनवनुं स्वरूप केवी रीते बे? एवुं शिष्ये पूबे थके गुरु सूर्यना दृष्टांते कहेबेः—

अथ अनुनव व्यवस्था सूर्य दृष्टांत.

॥सवैया इकतीसाः॥—जैसे रविमंमलके उदै महिमंडलमें, आतप अटल तम पटल बिलातु है; तैसै परमातमाको अनुनौ रहत जो लों, तो लों कहूं दुविधा न कहू पक्ष पातु है; नयको न लेश परवानकोन परवेश, निक्षेपके वंसको विधंस होतु जातु है; जे जे वस्तु साधक हैं, तेउ तहां बाधक हैं, बाकी रागदोषकी दशाकी कौन बातु है॥६१॥

अर्थः—जेम सूर्यमंडलना उदयथी पृथ्वीमंडलमां आतप के० तावरो अटल थई जाय, अने तम के० अंधकारना पमल नासी जाय, प्रकाश उद्योत थाय, तेमज शुद्ध निश्चयनयना बलवडे ज्यांसुधी अंतरात्मानेविषे परमात्मानो अनुनव रहेबे, त्यां सुधी कांई पण द्विविधता न देखाय, पोतपोताना मतनो पक्षपात न रहे, अने अहीं नयनो लेश के० अंश न पामिये. नय तो ते बे के, जेणेकरीने वस्तुनुं साधन कराय अने अनुनव तो सिद्ध वस्तुनो होय माटे अहीं अनुनवमां नयनो लेश नथी अने एमां प्रत्यक्ष परोक्षादिक प्रमाणनो पण प्रवेश नथी, केमके जे प्रमाण होय ते तो असिद्धनुं साधन करे पण सिद्ध वस्तुने शुं साधशे? अने नाम, स्थापना, द्रव्य, नाव ए चार निक्षेपा बे, तेपण असिद्ध वस्तुनुं साधन करे बे, ते तो जेवारें परमात्मानो अनुनव सिद्ध थयो त्यारे निक्षेपाना वंशनो विध्वंसज थयो. जेम सूर्यना प्रकाशवडे अंधकारनो नाश थायबे, तेम ए सर्व विलय थाय बे. आ परमात्माने नयप्रमाण निक्षेपादिक वस्तु जे जे साधक बे ते सर्व वस्तु परमात्माना अनुनवमां बाधक बे; ज्यांसुधी नयप्रमाण अने निक्षेपानो परिवार होय त्यां सुधी शुद्ध अनुनव न होय एटलासारु ए बाधक बे. बाकी राग द्वेष दशानी शुं वात केहेवी? तिहां तो नयादिक कहेवाज जोइये. ॥६१॥

हवे अनुनवमां शुद्ध रूप जीवज लख्यो तेनी व्यवस्था वचन गोचर जेवी होय तेवी केहेबेः— अथ जीव व्यवस्था विवरण द्वार.

॥अमिल्ल बंदः॥—आदि अंत पूरन सुनाव संयुक्त है; पर स्वरूप परजोग कल्पनामुक्त है; सदा एक रस प्रगट कही है जैनमें, शुद्ध नयातमवस्तु विराजे वैनमें ॥ ६२ ॥

अर्थः–आदि निगोद अने अंत सिद्ध अवस्था, तेनी वच्चे चेतना रूप पोताना पूर्ण स्वभावेकरी संयुक्त छे; अने ए चेतनामां पर स्वरूप जे जड स्वरूप, अने परजोग जे पुद्गल संयोग, तेनी दशा, कल्पना--विचारणा तेणेकरी मुक्त छे. आदि अंतसुधी एकज स्वभाव छे. सदा एक चेतना रसमय प्रगट वस्तु छे; ते शुद्ध निश्चय नयनुं आलंबन लईने जैन आगममां कही ने जेवी कही तेवी वचन व्यवहारमां पण विराजमान छे. ॥ ६२ ॥

हवे एवुंज स्वरूप वचन द्वारवके गुरु हितोपदेश रूप केहेछेः– अथ हितोपदेश.

॥कवित छंदः॥–सतगुरु कहै भव्य जीवनिरसों, तोरहु तुरत मोहकी जेल; समकित रूप गहो अपनो गुन, करहु शुद्ध अनुभवको खेल; पुद्गल पिंड भाव रागादिक, इनसों नही तुमारो मेल; ए जड प्रगट गुपत तुम चेतन, जैसै भिन्न तोय अरु तेलने॥६३॥

अर्थः–अहो भव्यलोक! वेला थाओ, मोहनो बंध तोडो. अने तमारो पोतानो समकित गुण छे, ते ग्रहण करो; अने ते लईने पोताना शुद्ध अनुभवनो खेल खेलो. अने देखवामां जे आ शरीर छे ते पुद्गल पिंड छे. अने कर्म पण पुद्गल पिंड छे. अने आ पुद्गल पिंडनो राग द्वेषादिक भाव ते स्वभाव छे, पण ए वस्तु साथे तहारो मिलाप नथी. केमके, ए वस्तु तो जडछे, ने प्रगट छे, एटले देखवामां आवेछे, ने तमे तो चेतन छो तथा गुप्त छो. त्यारे ते पुद्गल पिंडनी ने तमारी भिन्नता ठरी; जेम पाणीने तेल भिन्न छे, तेनीपरे जाणी लेवुं. ॥ ६३ ॥

हवे एवो उपदेश सांभलीने ते ज्ञाता पुरुष थयो तेनो विलास कहेछे. अथ ज्ञाताविलास.

॥सवैया इकतीसाः॥–कोउ बुद्धिवंत नर निरखै शरीर घर, भेद ज्ञान दृष्टिसों विचारै वस्तु वासतो; अतीत अनागत वरतमान मोहरस, भिग्यो चिदानंद लखै वंधमें विलासतो; वंधको विदारि महा मोहको सुभाउ डारि, आतमको ध्यान करी देखो परगासतो; करम कलंक पंक रहित प्रगटरूप अचल अवाधित विलोकै देव सासतो. ॥ ६४ ॥

अर्थः– कोई बुद्धिवंत् सम्यग्दृष्टि मनुष्य होय ते पोताना शरीरमां घरने जुये; अने जड चेतननो भिन्न भिन्न स्वभाव जाणवो ते भेद ज्ञान कह्युं; तेमां दृष्टि आपीने वस्तु वासतो के० वस्तु स्वभावनो विचार करे. अतीतकाल, अनागतकाल ने वर्त्तमान कालमां मोहरसविषे भीनो थको, कर्मबंधमां विलास करतो थको पोताना चिदानंद परमात्माने लखे. ते पछी क्रमेक्रमे वंधने विदारतोज जाय. एवुं कार्यकरी मोहना स्वभावने मूकतो जाय अने पोताना आत्मानुं ध्यान करे, अने अनुभवमां प्रकाशरूप

देखे. त्यारे कर्म कलंक तेहिज पंक के० कादव तेथी रहित प्रगटरूप अचल अबाधित सर्व बाध रहित एवो शाश्वत निरंजन देव परमात्मा पोते छे, एवुं देखे. ॥ ६४ ॥

अथ गुण गुणी अभेद कथन व्यवस्था.

॥सवैया तेईसाः॥—शुद्ध नयातम आतमकी अनुभूति विज्ञान विभूतिहि सोई; वस्तु विचारत एक पदारथ नामके भेद कहावत दोई; यों सरवंग सदा लखि आपुहि, आतमध्यान करै जब कोई; मेटि अशुद्धि विभावदशा तब सिद्धसरूपकि प्रापतिहोई॥६५॥

अर्थः—हवे शुद्ध अनुभव जे छे ते गुण छे, एक आतमा गुणी छे, तेनुं जेवुं अभेद स्वरूप छे तेवी अभेद अवस्था कही वतावेछेः—शुद्ध निश्चय स्वरूपी आत्मानो अनुभूति के० जे अनुभव छे, तेज विज्ञान विभूती के० विशेष रूप ज्ञान संपदा छे. अहीं आत्मा गुणी छे ने अनुभवज्ञान गुण छे. हवे ए बे वस्तु शुं छे? एवो जो विचार करीये तो एकज आत्मा पदार्थ भासे छे. एकज पदार्थमां आ गुण अने आ गुणी एवां बे नाम छे. तेज भेद केहेवायछे. एम सरवंग के० सर्व प्रकारे पोतानेज गुणगुणी रूप लखीने ज्यारे कोई आत्मध्यान करे, त्यारे अशुद्धविभाव दशा मटीने सिद्धस्वरूपनी प्राप्ति थाय. ॥ ६५ ॥

अथ ज्ञाता चिंतवन स्वरूप कथन.

॥सवैया इकतीसाः॥—अपनेही गुन परजायसों प्रवाहरूप, परिनयो तिहूं काल अपने आधारसों; अंतर् बाहिर परकासवान एक रस, खिन्नता न गहै भिन्न रहै भौ विकारसों; चेतनाके रस सरवंग भरि रह्यो जीव, जैसै लोंन काकर भर्यो है रस खारसो; पूरन सरूप अति उज्वल विज्ञान घन, मोकों होहु प्रगट विशेष निरबारसो ॥ ६६ ॥

अर्थः—हवे एज वातने जेम ज्ञाता लोक पोताना चित्तमां चिंतवे तेवुंज स्वरूप कही देखाडे छेः—आ जे कोई आत्मा केहवायछे, ते तो विज्ञान घन छे; विशेष ज्ञानमय पिंड छे; ते अतीत, अनागत ने वर्त्तमान ए त्रणे कालमां प्रवाहरूप करवाथी अविछिन्न धाराये पोतानाज गुण पर्याये करीने पोतानाज ज्ञानादिक गुणनी अवस्था भेदने लीधे अने पोताना आधारथी परना आश्रयविना परिणामी रहे छे. अने ए विज्ञान घननो एवो महीमाछे के तेथी मांहे अने बाहिर एक चित्त चेतना रसवडे प्रकाशवान थयो जे पोताने जाणे ते अंतर् प्रकाश अने बाह्य वस्तुने जाणे ते बाहिर प्रकाश एवा कार्यमां खिन्नता ग्रहण न करे; अने भव विकारथी न्यारो रही सर्व प्रदेशविषे चेतनना रसे करी जीव भरपूर थई रह्यो छे. ए उपर दृष्टांत कहे छे के, जेम लुणना कांकरा खार रसथी भरेला छे, तेम चेतना रसथी जीव भरपूर थई रह्यो छे. एवुं पूर्ण स्वरूप ते अखंडित घणुंउज्वल जे विज्ञान घन पूर्वे वखाण्युं ते मने प्रगट थाओ.

निशेष निरवार ते सम विभाव दशानुं निवारण करीने पछी ए रीते ज्ञाता पुरुष मनमां चिंतवे अने एमांज स्थिर रहे ॥ ६६ ॥

अथ द्रव्य पर्याय अभेद कथन व्यस्था.

॥ कवित्त छंदः ॥— जहँ ध्रुव धर्म कर्म छय लछन, सिद्ध समाधि साध्य पद सोइ; सुधोपयोग जोग महि मंडित, साधक ताहि कहै सब कोइ; यों परतछ परोछ स्वरूप सु, साधक साध्य अवस्था दोइ; दुहुको एक ज्ञान संचय करि, सेवै शिव वंछक थिर होइ. ॥ ६७ ॥

अर्थः— विज्ञान घन छे ते द्रव्य छे, अने ज्ञाता केहवाय ते पर्याय छे, एम विज्ञान अने ज्ञाता एकज छे, तेथी द्रव्य पर्यायनुं अभेदपणुं बतावे छेः— ज्यां सकल कर्मनो क्षय लखिये एवो ध्रुव धर्म जे निश्चल स्वभाव छे, एवुं कोइक सिद्धपणानुं थवुं ते तो पद साध्य केहेवाय छे, अने शुद्ध उपयोग लेता थका ए मन वचन काय योगमां मंडित थका तीर्थंकर साधु प्रमुख पर्याय लई रह्या छे; तेमने सहु कोई साधु कहेछे. एवुं साधुपणुं ते प्रत्यक्ष स्वरूप छे; अने साध्यपणुं ते परोक्ष स्वरूप छे. ए बन्ने अवस्था लईने एक विज्ञान घन छे. मोक्षने इछनार साध साध्य बन्नेने एक ज्ञान संचयवडे सेवे, ते बन्ने पदमां विज्ञान घन एक छे; अने ए बन्ने पदनी सेवामां स्थिर थई रहेछे ॥ ६७ ॥

अथ द्रव्य गुण पर्याय भेद व्यवस्था कथन.

॥ कवित्त छंदः ॥— दर्शन ज्ञान चरन त्रिगुनातम, समल रूप कहिये विवहार; निहचे दृष्टि एकरस चेतन, भेद रहित अविचल अविकार; सम्यग् दशा प्रमाण उभै नय, नीर्मल समल एकही बार; यों समकाल जीवकी परिनति, कहे जिनंद गहे गनधार. ॥ ६८ ॥

अर्थः— शिष्य पूछे छे के, स्वामी! तमे अभेद व्यवस्था कही ते कया नयना बल वडे कही? गुरु केहेछे के, व्यवहार नय वडे द्रव्य गुण पर्यायनी भेद अवस्था छे ते कहुं छुं.— ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रणे आत्माना गुण छे; ए स्वरूपथी जे व्यवहार कहीए ते समल रूप छे; अने एज निश्चय दृष्टिथी जोइये तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र एक चेतना रसमय देखाय छे, अने चेतनाज चेतन छे, तेणे करीने भेदरहित अविचल अविकार निर्मल रूप छे. निश्चय नय ने व्यवहार नय ए बन्ने छे ते सम्यग् दशामां प्रमाण छे; जे नय छे ते तो अभिप्राय विशेष छे, माटे एकज अव्यक्त रूप निर्मल तथा समल रूप जाणिये. एम समकाले निर्मल अने समल जीवनी परिणति थई रही छे, ते श्री जिन देव कहे छे अने गणधर देव सर्दहे छे. ॥ ६८ ॥

ताना अनुजवनो विलास ग्रहण करे, पोताने सत्यार्थपणे जाणे, पछी ए जेद विज्ञान पाम्या थकी शरीर कर्मादि पुजल रूपी जाणीने पोतानुं न कहे. आत्मा रूप न कहे करतुति के० ए जे जेदविज्ञाननी क्रिया तेज जगत्थी जुदाईने करे, पांच द्रव्यथी जुदाई करे, अहीं दृष्टांत बतावेछेः– जेम अग्नि, माटी पाषाणने कंचनथी जुदां करे छे तेम जाणी लेवुं ॥ ७४ ॥

अथ परमार्थ शिक्षा कथन.

॥ सवैया इकतीसाः॥– बनारसी कहै जैया जव्य सुनो मेरी शीख, केहुं जांति कैसे हुके एसो काज कीजिए; एकहु मुहुरत मिथ्यातको विध्वंस होइ ज्ञानको जगाइ अंस हंस खोजि लीजिये; वाहीको विचार वाको ध्यान यहै कोतुहल, योंही जरि जनम परम रस पीजिए; तजी जववासकी विलास सविकाररूप, अंतकरि मोहको अनंत काल जीजिए. ॥ ७५ ॥

अर्थः–हवे शुद्ध जीवद्रव्यमां रहेवुं तेज परमार्थ छे तेनी शिक्षा कहेछेः– वणारसीदास केहेछेः– अहो जाई जव्य जीवो, मारी शीक्षा सांजलो. कोइ पण रीतेथी कोई द्रव्य क्षेत्र काल जाव पामीने एवुं काम करवुं के जेणे करीने एक मुहूर्त्तमात्र मां मिथ्यात्व मोहनो विध्वंस थाय अने ज्ञाननो अंश जगावी लेवो, अने “सोहं हंसो” एवी ध्वनि करतो हंस जे आत्मा तेने खोजी लइयें. पछी तेनुं लक्षण विचारवुं, पछी तेने उलखीने तेनुं ध्यान करवुं. एवी एनी कला खोजीने कुतूहल जे खेल ते कस्या करियें; अने तेज जन्म पर्यंत परम रस पीवो. एरीते सविकार रूपथी फेली रह्यो एवो जववासनो विलास तेने तजीने तथा मोहनो अंत आणीने अनंत कालसुधी जीजिए. जयवंता वर्त्तिये ! एटला प्रकारे सिद्ध थवाय छे. ॥ ७५ ॥

अथ तीर्थंकरकी स्तुति, बाह्यरूप कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–जाकी देहद्युतिसों दसो दिशा पवित्र जई, जाके तेज आगे सब तेजवंत रुके हैं; जाको रूप निरखी थकित महारूपवंत, जाकी वपुवाससों सुवास और लुके हैं; जाकी दिव्य धुनी सुनि श्रवनकों सुख होत, जाके तन लछन अनेक आइ ढूके हैं; तेई जिनराज जाके कहे विवहार गुन, निहचै निरखि सुद्ध चेतनसों चुके हैं ॥ ७६ ॥

अर्थः– हवे चेतन महीमावान थयाथी पुजलपण महिमावान थाय माटे कवि राज तीर्थंकरना बाह्य शरीररूप पुजलनो महीमा कहेछेः–जेनी देहनी द्युति एवी पसरी रहीछे के जेथी दशे दिशा पवित्र थई जायछे; एटले शोजायमान थायछे अने जेन तेज आगल सर्व तेजवाला छुपी जायछे एटले सर्व देवता मंद तेजवंत थायछे. अने जेनुं रूप जोईने महारूपवंत पंच अनुत्तरवासी देवता पण चकित थइ रहेछे अने

जेना शरीरनी सुवासथी अन्य सुवासी वस्तु सर्वे ढुकी जायछे. अने जेनी दिव्य ध्वनि सांजलीने श्रवणने सुख थाय छे, एटले जव्य अजव्य सर्वेने ते वाणी मीठी लागेछे अने जेना शरीरमां अनेक शुज लक्षण आवी ढुकी रह्याछे एवा श्री जिनराज देव छे, तेमना एटला गुण कह्या ते अशुद्ध व्यवहार नयनो आश्रय लइने कह्या पण, निश्चयनयथी ए कहेला गुण सर्वे शुद्ध चेतननी०जिन्नता दर्शावेछे. ॥ ७६ ॥

अथ जिन स्तुति व्यवहाररूप पुनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जामें बालपनो तरुनपनो वृद्धपनो नांहि, आयु परजंत महारूप महा बल है; विनाहि जनत जाके तनमें अनेक गुन, अतिसै विराजमान काया निर मल है; जैसै विनुपवन समुद्र अविचलरूप, तैसै जाको मन अरु आसन अचल है, ऐसो जिनराज जयवंत होउ जगतमें, जाकी शुजगति महा सुकृतिको फल है ॥७७॥

अर्थः— हवे फरी व्यवहारनय वडे जिन स्तुति करे छेः— जेमां जन्मथी मांडीने मरण पर्यंत महारूप अने महाबल समान रहेछे; पण बालपणु, तरुणपणु, वृद्धपणु, ए त्रण जे अवस्थाना जेद तेमां रूपमां अने बलमां जेद न पामे, जेना सहज स्वजावे जतनविना शरीरमां अनेक गुण आवी रहेछे; अने जेने विषे चोत्रीस अतिशय गुण विराजमान थई रह्या छे; अने जेनी काया प्रस्वेदरहित निर्मल रहेछे; जेम पवननी लहेर विना समुद्र अचलरूप थई रहेछे, तेम जेनुं मन अचल छे; ने आसनपण अच ल छे; अहीं गतिनी अपेक्षाविना आसन अचल कह्युं छे, पण निरंतर अचल आस न संजवे नही, एवा जिनराजदेव जगत्‌मां जयवंत थाउ. जेनी रूडी जक्ति करवाथी महामुक्ति फलनी प्राप्ति थाय छे. ॥ ७७ ॥

यथार्थ कथनः—

॥ दोहराः ॥— जिन पद नाहिं शरीरकों, जिन पद चेतन मांहि; जिन बर्नन कछु और है, यह जिन बर्नन नांहि. ॥ ७८ ॥

अर्थः— एटली व्यवहार स्तुति करीने हवे सत्यार्थ वात कहे छेः— ए जे जिन नाम छे ते जीव विपाकी छे पण पुद्गल विपाकी नथी, तेथी जिनपद ते शरीरनुं नथी, जिनपद तो चेतननुं छे; तेथी जिनेश्वरनी स्तुति कोई उरज छे पण पूर्वे जे जिनेश्वर नी स्तुति करी ते जिन स्तुति नथी. इहां शरीर जड छे अने आतमा चेतन छे ए बने जाव जिन्न स्वजावमां छे तेनुं दृष्टांत आपेछे. ॥ ७८ ॥

अथ जड चेतन जिन्नजाव दृष्टांत कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ऊंचे ऊंचे गढके कंगुरे यों विराजत हैं, मानो नज लोक लील वेकों दांत दियो है; सोहे चिहोंउर उपवनकी सघनताई, घेरा करि मानो जूमि लोक

घेरि लियो है; गहरी गंभीर खाई ताकी उपमा बनाई, नीचो करि आनन पाताल जल पियो है; ऐसो है नगर यामें नृपको न अंगकोउ, योंही चिदानंदसो शरीर भिन्न कियो है ॥ ७९ ॥

अर्थः– जेम कोई गढना उंचा उंचा कांगरा विराजे छे (अहिं कवि उत्प्रेक्षण करे छे.) पण ते कांगरा नथी पण मानुं छुं जे आ नगरमां स्वर्गलोकने गली जवाने दांत आप्यां छे; एटले जाणे स्वर्ग लोकने गली जशे. अने एनी चारे तरफ उपवन एटले बाग वाडीनी सघनता एवी शोभी रही छे के जाणे भूमिलोक एटले मनुष्य लोक तेणे घेरी लीधो छे. अने ए नगरनी चारे बाजुए उंडी खाईवनी ते जाणे नीचुं आनन एटले मुख करीने पातालज पाणी पातो होयनी ए रीते जेणे त्रणे लोक जीत्या छे एवुं नगरनुं वर्णन कीधुं पण ए नगरमां कोइराजाना अंगनुं कांइ वर्णन कीधुं नथी मतलब के चिदानंद थकी शरीरने भिन्न करी बताव्युं. ॥ ७९ ॥

अथ तीर्थंकरकी निहचै स्तुति सरूप कथन वस्तु वर्णनं.

॥ सवैया इकतीसाः॥– जामें लोकालोकके सुभाउ प्रतिभासे सब, जगी ज्ञान सगति विमल जैसी आरसी; दर्शन उदोत लियो अंतराय अंतकीउ, गयो महामोह भयो परम महारसी; संन्यासी सहज जोगी जोगसों उदासी जामें, प्रकृति पंचाशी लगि रहि जरि छारसी; सोहै घटमंदिरमें चेतन प्रगटरूप, ऐसो जिन राजतांहि वंदत बनारशी ॥ ८० ॥

अर्थः– हवे तीर्थंकरपदने लेइ रहेली जे वस्तु छे तेमा स्वरूपनुं वर्णन करे छेः– जेमां लोक अने अलोकनो स्वभाव एटले खट् द्रव्य भाव प्रतिभासी रहे, एवी ज्ञान शक्ति निर्मल प्रगटी छे. जेम आरीसामां पदार्थना भाव भासेछे, एवी रीते जेना ज्ञानमां सर्व भाव भासेछे, एटले ज्ञानावरण गयुं, अने दर्शनावरणना नाश थवाथी केवल दर्शन, उद्योत थयो. अने अंतराय नाश कर्यो, तेथी अनंतवीर्य धैर्यवंत थयो; अने महा मोह कर्म जे छे ते नाश पाम्युं; तेथी परम उत्कृष्ट महर्षि थयो, तेणे करी यथाख्यात चारित्रनो संन्यास एटले तेनो धारण करनार ज्ञान दर्शनचारित्र आदि जे सहजयोग छे तेनो धरनार, मन वचन कायना योगथी उदास थइने अघातिक चार कर्मनी पंच्यासी प्रकृति सत्ताये रहि छे, ते पण बलीने खाख जेवी थइ रही छे; अने जेना घटमंदिरमां चेतन देव छे ते प्रगटपणे साक्षी रह्यो छे. एवा श्री जिन राज देव तेने वणारसीदास वंदन करेछे. ए निश्चय स्तुति कही ॥ ८० ॥

हवे एवा शुद्ध चेतननी स्तुतिनुं दृष्टांत देखाडीने निश्चय व्यवहारनो निर्णय क छे. अथ श्री निश्चय व्यवहार तीर्थंकर स्तुति कथनः–

॥ कवित्त छंद॥— तनु चेतन विवहार एकसें, निहचे भिन्न भिन्न है दोइ; तनु स्तुती विवहार जीव थुति, नियत दृष्टि मिथ्या थुति सोइ; जिन सो जीव जीव सो जिनवर, तनु जिन एक न मानै कोइ; ता कारन तनकी अस्तुतिसों, जिनवर कीअ स्तुति नहि होइ. ॥ ७१ ॥

अर्थः— शरीर अने आत्मा ए बने व्यवहारमां एक सरखा छे; अने निश्चयथी जोइये तो बनें जुदा जुदा छे. एमाटे तननी स्तुति करतां जीवनी स्तुति करिये ए व्यवहार छे. अने निश्चय दृष्टिथी जोतां ते मिथ्या स्तुतिछे. जिनपद कर्म जे छे ते जीव विपाकी छे, पण पुद्गल विपाकी नथी, तेथी जिन ते जीव छे, अने जीव ते जिन छे; पण शरीर अने जिन एक करी न मानीए; ते कारणे तननी स्तुति करी ते जिनवरनी स्तुति थई नही. ॥ ७१ ॥

अथ वस्तु स्वरूप कथन दृष्टांत करी ढिढाइयतु हैः—

॥ सवैया तेईसा॥ — ज्यों चिरकाल गडी वसुधा महि, भूरि महानिधि अंतर गूझी; कोउ उखारि धरै महि ऊपरि, जो दृगवंत तिन्हें सब सूझी; त्यों यह आतमकी अनुभूति पगी जड भाव अनादि अरूझी; नैजुगतागम साधि कही गुरु, लछन वेदि विचछन बूझी. ॥ ७२ ॥

अर्थः—शिष्य पुछेछे के एवो अनुपम महीमानो धारक जीव आ शरीरमां केम पामिये? त्यारे गुरु दृष्टांत आपी न्यारी अद्भुत स्वरूप वस्तु आ शरीरमां दृढावे छेः—जेम कोई महानिधि घणा काल सूधी धरतीनी अंदर दटाई रही होय, ते अंतर गुप्त थई रहेली लक्ष्मीने कोई खोदी काढी जमीन उपर मूके त्यारे जे नेत्रवंत पुरुष छे तेने बधी देखाई आवेछे. तेम आ आत्मानो अनुभव अनादि कालथी जड एटले पुद्गल द्रव्यमां दटाई रह्यो छे, तेने नयसहित आगम जे सिद्धांत तेणेकरी गुरुए साध्य एटले साधने करी सिद्ध करी दीधाथी विचक्षण पुरुष तेने सारी पठे जाणी लियेछे. ॥ ७२ ॥

हवे तेनो भेद ज्ञान पाम्याथी उपादेय वस्तुनुं उपादान करवाथी आवे ते उपर धोबीनुं दृष्टांत बतावे छेः—अथ भेदज्ञान स्वरूप कथन धोबीको दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥— जैसै कोउ जन गयो धोबीके सदन तिन्ह, पहिस्यो परायो वस्त्र मेरो मानि रह्यो है; धनी देखि कह्यो भैया यहु तो हमारो वस्त्र, चीन्ह्यो पहिचानतहीं त्याग भाव लह्यो है; तैसैही अनादि पुदगलसों संयोगी जीव, संगके ममत्वसों बिभावतामें बह्यो है; भेद ज्ञान भयो जब आपो पर जान्यो तब, न्यारो परभावसों स्वभाव निज गह्यो है. ॥ ७३ ॥

अर्थः— जेम कोई मनुष्य धोबीने घेर गयो अने पारकुं वस्त्र पोतानुं मानी भूलमां

लईने पेहेर्युं, एटलामां ते वस्त्रनो खरो मालक मळ्यो, तेणे जोईने कह्युं के, भाई, आ वस्त्र जे तें पेहेर्युं छे, ते महारुं छे. ते वखते पेला मनुष्ये ते वस्त्र जोयुंने परायुंज छे एवुं जाण्युं, तेवारे ते वस्त्रनो त्याग भाव उपज्यो, ने तेणे ते वस्त्र तेना धणीने हवाले कीधुं. तेमज जीवने अनादि कालथी पुद्गलनो संयोग थयो छे, एटले शरीर तथा कर्मनो संयोगी जीव अनादि कालनो छे, ते संगना ममत्वथी विभावता एटले उलटा भावमां वही रह्यो हतो ते ज्यारे जड चेतननी भिन्नतानुं ज्ञान थयु त्यारे ते पोताना स्वरूपने तथा परना स्वरूपने समज्यो; अने ते पर रूपथी जुदो थयो ने पोताना स्वरूपनुं ग्रहण कीधुं. ॥ ७३ ॥

ज्यारे निश्चय पोतानुं स्वरूप जाण्युं त्यारे ज्ञाता एवो विचार करवा लागे ते कहेछेः—

अथ निश्चय स्वरूप कथनः—

॥ अडिल्ल छंदः॥— कहै विचछन पुरुष सदा हों एकहों, अपने रससों भर्यो आपनी टेकहों; मोह कर्म मम नांहि नांहि भ्रम कूप है; शुद्ध चेतना सिंधु हमारो रूप है.॥ ४॥

अर्थः— विचक्षण पुरुष केहेछे के, हुं सदा एक पणे रहुं छुं; चेतना रस वडे भरपूर छुं, अने पोताना आधारथी रहुं छुं, मने बीजानो आश्रय नथी, अने जे भात भातनो मोह कर्मनो प्रपंच छे ते महारुं स्वरूप नथी, ए भ्रम रूप कूप छे ते मारुं स्वरूप नथी; पण शुद्ध चेतनानो सिंधु के० समुद्र ते मारुं रूप छे. ॥ ७४ ॥

हवे एवा पोताना स्वरूपने जाण्याथकी केवी अवस्था प्राप्त थई ते केहेछेः—

अथ ज्ञान व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसा॥— तत्त्वकी प्रतीतिसों लख्यो है निज पर गुन, दृग ज्ञान चरन त्रिविध परिनयो है; विसद विवेक आयो आछो विसराम पायो, आपुहीमें आपनो सहारो सोधि लयो है; कहत बनारसी गहत पुरुषारथकों; सहज सुभाउ सों विभाउ मिटि गयो है; पन्नाके पकाय जैसै कंचन विमल होतु, तैसै शुद्ध चेतन प्रकाश रूप भयो है. ॥ ७५ ॥

अर्थः— एवी जीव तत्त्वनी प्रतीति थइ तेणे करीने ज्ञानादिक निजगुण अने परगुण ते बीजा द्रव्यना गुण जे गति, स्थिति, अवगाह, वर्त्तना, वर्णादिक ए सर्व लखीने दर्शन, ज्ञान अने चारित्र ए त्रणे गुणनेविषे परिणमी रह्यो छे; निर्मल विवेक आव्याथी सारो विश्राम पाम्यो ते स्थिरता पामीने पोतानो विषेज पोतानो सहज स्वभाव शोधी लीधो. अहीं वणारसीदास केहेछे के त्यारे आ पुरुषार्थ ते आत्मस्वरूप अर्थ तेनुं ग्रहण करीने सहज स्वभावमां राग द्वेष मोहरूपी विभाव जे अनादिकालनो हतो

ते मटी गयो. अहीं दृष्टांत कहेछे:— जेम पाकी ईंटनी जठीमां गालवाथी सुवर्ण निर्मल थायछे, तेम शुद्ध चेतन निर्मलरूप थईने प्रकाश रूप थयोछे. ॥ ७५ ॥

हवे विभाव छूटवाथी निज स्वरूप प्रगटताने पामे तेउपर नटी जे नाचनारी स्त्री, तेनुं दृष्टांत कही देखाडे छे:— अथ वस्तु स्वरूप कथन पातरको दृष्टांतः—

॥सवैया इकतीसाः॥— जैसै कोउ पातर वनाय वस्त्र आभरण, आवति अखारे निशि आडो पट करिके; दुहू ओर दीवटि संवारि पट दूरि कीजे, सकल सभाके लोक देखै दृष्टि धरिके; तैसै ज्ञान सागर मिथ्यात ग्रंथि भेद करि, उमग्यो प्रगट रह्यो तिहुं लोक भरिके; ऐसो उपदेस सुनि चाहिये जगत जीव, सुद्धता संभारे जग जालसौं निकरिके. ॥ ७६ ॥

अर्थः— जेम कोई नाचनारी स्त्री आडो पट करीने तथा वस्त्राभूषणवडे पोतानो वेष मनोहर बनावीने रातना वखते अखाडामां आवी ऊभी रहे, ते आडा पटथी रात्रीनेविषे देखाय नही, ने ज्यारे अंतरपट दूर करी बेहु तरफ हाथमां काकडा सलगावी परिछद दूर करे त्यारे सर्व सभाना लोक दृष्टि धरीने तेनां रूप शणगार वगेरेनी शोभा प्रगट जोई रीझे छे, तेम ज्ञाननो सागर एवो जे आत्मा, ते मिथ्यात्व रूप आडा पटथी प्रछन्न रह्यो हतो, ते कोई समे मिथ्यात्व ग्रंथी रूप पटने भेदीने प्रगट थयो; ते ज्ञान समुद्र त्रण लोके भरी रह्यो छे; एटले त्रणे लोक ए आत्माने विषे भासी रह्या छे. हवे गुरु कहेछे के अहो ! जगत्वासी जीव, में जे पूर्वे उपदेश दीधो एवा उपदेशनुं श्रवण करवुं तारे जरूरनुं छे; ते सांभली जगत् जाल मांथी निकलीने तारी शुद्ध दशाने संभारी लेईश. ॥ ७६ ॥

॥इति श्रीसमयसारनाटिकना प्रथम जीव द्वारनुं निरूपण बालबोध सहित समाप्त थयुं.॥

॥दोहरो॥—जीव तत्व अधिकार यह, कह्यो प्रगट समुझाइ; अब अधिकार अजीवको, सुनो चतुर मन लाइ. ॥ ७७ ॥

अर्थः— जीवतत्त्वनुं जेवुं स्वरूप छे तेनो ए अधिकार एटले स्वरूप, लक्षण, गुण, प्रगट समजाव्यां. हवे बीजो जे अजीवद्वारछे, तेमां अजीवनो अधिकार मुख्यपणे करीने कहुंछुं; ते चतुर लोको चित्त दईने सांभलजो. ॥ ७७ ॥

हवे अजीवने पण ज्ञानवडेज जाणवानुं बनेछे अने आ ग्रंथमां अभिधेय ज्ञानछे माटे संपूर्ण ज्ञाननी अवस्था निरूपण करेछे:—अथ ज्ञानकी व्यवस्था कथनः—

॥सवैया इकतीसाः॥—परम प्रतीति उपजाइ गनधरकीसी, अंतर अनादिकी विभावता

बिदारी है; जेदज्ञान दृष्टिसों बिबेककी सकति साधि, चेतन अचेतनकी दशा निरवारी है; करमकी नासकरी अनुजौ अन्यास धारी, हियेमें हरख निज शुद्धता संजारी है; अंतराय नास गयो शुद्ध परकास जयो, ज्ञानको विलास ताकों बंदना हमारी है. ॥ ७७ ॥

अर्थः– प्रथमथी जे ज्ञानवडे जव्य लोकना आत्मामां गणधरनी माफक तत्त्वनी परम प्रतीति उपजावी, अने समकालपणे अंतरात्मानेविषे अंतरनी जे अनादिनी विजावता (मूढता) तेने विडारीछे, अने जड चेतन ए बने जिन्न छे एवुं जेदज्ञान प्रगटयुं तेनी दृष्टि तेज विवेकनी शक्ति ते साधि एटले जुदा जुदा गुण पर्याय जाण्या, अने जुदा जुदा जाणीने चेतन तथा जड तेनी दशा ठीक कीधी, ते पछी गुण श्रेणिने धरीने क्षणेक्षणे कर्मनी निर्जरा करवा लाग्यो, ते करी अनुजव अन्यास कीधो, एटले सत्य प्रत्ययमां पेठो, अने हृश्यानेविषे हर्ष पाम्यो अने पोतानी शक्ति उत्कृष्ट कीधी. ए कार्य थतां अंतराय कर्म जांग्युं, अने केवल रूप प्रकाश पाम्युं, एवो कोई क्रमे क्रमे करी ज्ञाननो विलास उत्पन्न थयो, तेने अमारी वंदनाछे. ॥ ७७ ॥

शिष्य पूछे छे के, स्वामी! तमे जे ज्ञान विलास कह्यो, तेतो तेवोज छे, पण ते पामवुं डुर्लज छे. ते उपर गुरु परमार्थनी शिक्षा दिये छेः–अथ परमार्थ शिक्षा कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैया जगबासी तूं उदासी व्हैके जगतसों, एक छ महीना उपदेस मेरो मानु रे; और संकलप विकलपके बिकार तजि, बैठके एकंत मन एक ठोर आनु रे; तेरो घट सर तामें तुंही है कमल ताकों, तूंही मधुकर है सुवास पहचानु रे; प्रापति न व्हे है कबु ऐसो तूं बिचारतु है, सही व्हैहे प्रापतिसरूपयाही जानुरे ॥ ७८ ॥

अर्थः– अरे जीव जगत्वासी जाई तुं जगत् के० जव ज्रमणा तेनु कारण (शब्द, स्पर्श, रूप, रसने, गंध,) एने आचारांग सूत्रना वचनथी जगत् कहियें, तेथी उदास थईने, एक छ महिना सूधी अखंड धाराए मारो उपदेश शांजल एटले मान्य कर. एमां छ महीना कह्या ते उपलक्षणथी जाणवा, पण नियम नथी, अने आर्त्तरौद्रध्यानथी अज्ञान दशामां संकल्प विकल्प घणा ऊठे, तेथी आत्मानेविषे विकार उपजे छे, माटे तेना विकारने तजीदे अने एकांत आसनें बेसी मनने एक ठेकाणे परिणामथी राख; तारो घट के० शरीर तेनेज सरोवर जेवो देख; अने तेमां एक उज्वल कमल जोइयें, ते कमल तुंज छे; अने तुंज उज्वल रूपने लीधे मधुकर रूपे था; एम करवाथी तुं सहस्र दल कमलमां विलास कर; ए पिंडस्थ ध्यान लगाव्युं एटलुं कार्य करवाथी पोताना स्वरूपनी प्राप्ति न थशे एवुं तुं क्यारे पण विचारीश नही. एवा प्राणायामवडे कमल कोष खुलशेने पोताना रूपनी प्राप्ति थशे; एज रीते ज्ञानगुण खुलशे॥ ७८ ॥

हवे जीवने अजीव एक सरखा थई रह्याछे, ते जुदा जुदा लक्षणवडे देखाडेछे.

अथ वस्तु व्यवस्था वर्णनं:—

॥दोहरा:॥— चेतनवंत अनंत गुण, सहित सु आतमराम, याते अनमिल और सब, पुद्गलके परिणाम ॥ ९० ॥

अर्थः— चेतनावंत छे अने अनंत गुणसहित जे पदार्थ छे ते तो आत्माराम जाणवो; अने जे एटलां लक्षणोथी मळेला नथी ते सर्वे अपर पुद्गलना परिणाम जाणवा. ॥ ९० ॥

हवे एवी पिछान अनुभवविना न होय माटे अनुभवनी प्रशंसा कहेछे:—

अथ अनुभव प्रशंसा:—

॥कवित्त छंदः॥—जब चेतन सँभारि निज पौरुष, निरखै निज दृगसौं निज मर्म, तब सुखरूप विमल अविनाशक, जानै जगत शिरोमनि धर्म; अनुभौ करै शुद्ध चेतनको, रमै सुभाव वमै सब कर्म, इहि विधि सधै मुक्तिको मारग, अरु समीप आवै शिव सर्म. ॥ ९१ ॥

अर्थः—ए चेतन जे छे, ते ज्यारे पोतानुं पुरुष के० पराक्रम संभारे, ने पछी पोतानी दृष्टि करी पोतानुं मर्म जे चेतनपणुं छे ते निरखे; त्यारे पोतानो धर्म के० स्वभाव सुख रूप जे निर्मल पणुं, अविनाशी पणुं, जगत्शिरोमणीपणु, सहज स्वरूप तेने जाणे. एज अनुभव एटले जे निःसंदेह यथार्थ ज्ञान छे तेज चेतनने शुद्ध करेछे, अने एज अनुभव जे छे ते पोताना स्वभावमां रमे अने सर्व कर्मने दूर करे, एरीते अनुभव वडे मुक्ति मार्ग सिद्ध थायछे; अने शिवशर्म के० मोक्षनुं सुखते पामेछे ॥ ९१ ॥

हवे ए अनुभवथकी चेतनविषे पोतानुं अस्तित्व साधीने परनुं नास्तित्व साधेछे:—

अथ अनुभव प्रशंसा:—

॥ दोहरा:॥— बरनादिक रागादि जरु, रूप हमारो नांहि; एक ब्रह्म नहि दूसरो, दीसे अनुभव मांहि. ॥ ९२ ॥

अर्थः—आ शरीरमां जे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श राग द्वेषादिक पदार्थनेविषे मोह छे ते मारुं आत्मरूप नथी; अने अनुभवविषे पोतानुं एकज जाणपणानुं रूप अमे जोइये छइये. पण बीजुं रूप जोता नथी. ॥ ९२ ॥

हवे जीव अजीव एक क्षेत्रावगाही थया ते जुदा केम कहेवाय? ते उपर दृष्टांत कहेछे:— अथ वस्तु विचार:—

॥ दोहरा:॥— खांडो कहिये कनकको, कनक म्यान संयोग; न्यारो निरखत म्यान सों, लोह कहैं सब लोग. ॥ ९३ ॥

अर्थः– जे सोनानी म्यानमां राखेली तलवार लोक जाषामां सोनेरी केहेवाय छे, ते सोनेरीनो योगतो म्यान उपर छे; ज्यारे तरवारने सोनेरी म्यानमांथी बार काढी जोइये त्यारे तरवार लोढानी जणाय, पण सोनेरी नही जणाय. तेम अंतरात्मा मांहे जाणवो. ॥ ए३ ॥

हवे व्यवहार नय वडे बाह्यात्मा अने अंतरात्मा कहेवाय छे; पण एमांज निश्चय नयथी परमात्मा छे; एवो वस्तुनो विचार कही समजावे छे. अथ निश्चय व्यवहार रूप वस्तु विचार कथनः–

॥ दोहराः॥– बरनादिक पुद्गल दशा, धरै जीव बहु रूप; वस्तु विचारत करम सों, जिन्न एक चिद्रूप. ॥ ए४ ॥

अर्थः– वर्णादिक ते वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरूप ए पुद्गल स्वजाव छे, तेने नवी नवी रीते जीव धारण करे छे, तेथी जीव बहु रूप धारी केहेवाय छे. अने पुद्गल जे छे ते तो कर्मछे पण वस्तुनो विचार करवाथी ए कर्म अजीवछे; अने चिद्रूप चिदानंद छे ते तो सर्वत्र एक स्वरूप छे, ने ते ए अजीवथी जिन्न छे. ॥ ए४ ॥

हवे ए व्यवहारनो दृष्टांत बतावे छेः– अथ व्यवहार दृष्टांत कथनः–

॥ दोहराः॥– ज्यों घट कहिये घीउको, घटको रूप न घीउ; त्यो बरनादिक नाम सों, जडता लहै न जीउ ॥ ए५ ॥

अर्थः– व्यवहारमां माटीनो घमो कहेवाय छे, तेम घृतनो पण घमो कहेवाय छे; पण घडानुं रूप जेवी माटी छे तेवुं घृत नथी. तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श प्रमुख नाम कर्म अजीव रूप जड छे, तेना संयोगथी जीव जमपणु पामे नही. ॥ ए५ ॥

हवे प्रत्यक्ष पणे निरालुं चेतननुं स्वरूप दृष्टांत देखाडी कहेछेः–

अथ चेतनको साक्षात स्वरूप कथनः–

॥ दोहराः॥– निराबाध चेतन अलख, जाने सहज सुकीउ, अचल अनादि अनंत नित, प्रगट जगतमें जीउ. ॥ ए६ ॥

अर्थः– जेनी कोई पण रीते खंमना नथी तेथी निराबाध एहवो चेतन पुरुष छे; अने वली इंद्रिय ज्ञानवडे लख्यो न जाय; तेथी अलख छे; अने स्वकीय जे पोतानो सहज स्वजाव ज्ञातापणु तेने पोतेज जाणे पण बीजा अन्य ज्ञानांतरवडे न जणाय एवा अचल स्वरूपने लीधे अनादि, अनंत, नित्य, शाश्वत, एवो जीव जगत्मां प्रत्यक्ष प्रमाण छे. ॥ ए६ ॥

हवे जीव पोतानो अनुजव पोतेज करे छे पण मिमांसक नैयायिक प्रमुख जेम बीजाथी कहे छे तेम नथी ते समजावे छेः– अथ अनुजव विधान कथनः–

॥ सवैया इकतीसा ॥— रूप रसवंत मूरतीक एक पुदगल, रूप विन उर युं अजीव दर्व डुधा है; च्यारि हैं अमूरतिक जीवजी अमूरतिक, याहितें अमूरतिक वस्तु ध्यान मुधा है; औरसों न कवहू प्रगट आपु आपहीसों, ऐसो थिर चेतन सुजाव शुद्ध सुधा है; चेतनको अनुजौ आराधै जग तेई जीव, जिन्हके अखंड रस चाखिवेकी वुधा है. ॥ए७॥

अर्थः— जेम रूपवंत तथा रसवंत कहेवाय छे तेम गंधवंत तथा स्पर्शवंत ए लक्ष ण जाणवाथी मूर्त्तिक एटले मूर्त्तिवंत ते एक पुद्गल द्रव्य जाणवुं; अने रूपादिक विना वीजा अमूर्त्तिक चार द्रव्य छे; ए रीते अजीव द्रव्यते वे प्रकारनुं छेः— हवे ए अजीव द्रव्यमां धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए चार अमूर्त्तिक छे; अने जीव द्रव्य पण अमूर्त्तिक छे; तेथी कोइ अमूर्त्तिक वस्तुनुं ध्यान करवाथी मुक्ति छे एम कहेनारा मूर्ख छे. एथी कोई अन्य धर्मनुं आलंवन लई आत्मा द्रव्य प्रगट न थाय एवो स्थिर चे तननो स्वजाव छे, एज शुद्ध सुधा के० निर्दोष अमृत रस तेज चेतनने प्रगट करे छे, एवो जे जगत्ने विषे चेतना स्वजाव छे ते चेतननो अनुजव के० यथार्थ ज्ञान आरा धे तेज शुद्ध जीव द्रव्यना आराधक छे. अने जे अखंड रसना क्षुधावंत छे ते एना आराधक छे. ॥ ए७ ॥

हवे कोई कहे छे के, जीव अंगुष्ट प्रमाण छे, तंडुल प्रमाण छे इत्यादि कहिने जे जीवने मूर्त्तिमान थापे छे, तेनी मूढता वतावे छे. अथ मूर्त्तिवर्णनंः—

॥ सवैया तेइसाः ॥— चेतन जीव अजीव अचेतन, लछन जेद उजै पद न्यारे; सम्यग् दृष्टि उद्योत विचछन, जिन्न लखै लखिके निरधारे; जे जगमांहि अनादि अखंडित, मोह महामदके मतवारे; ते जड चेतन एक कहै, तिन्हकी फिरि टेक टरै नहि टारे. ॥ए८॥

अर्थः— जीवनुं लक्षण चेतन छे, ने अजीवनुं लक्षण अचेतन छे; एटले जडता छे; ए लक्षण जेदथी उजय पदार्थ जुदा जुदा छे; पण जेना घटमां समकित दृष्टिनुं अज वालुं पड्युं छे, तेज विचक्षण पुरुष ए वेहुने जिन्न जिन्न जाणे छे. अने जीव अजी व जुदा निरधार करेछे. अने जे जगत्नेविषे अनादि कालना अखंडित, मूर्ख, अने म हामोहमदवडे मतवाला छे, ते लोक जड चेतनने एक कहे छे. अने जीवने मूर्त्तिमा न मानेछे. ते मिथ्यादृष्टिने लीधे माने छे; तेमनी टेक टालवाथी टले नही एवी होयछे॥ए८॥

हवे अजीव पुद्गलमां जीवविलास जूदोज छे, पण अविवेकी पुरुष ते जाणतो नथी अने जे ज्ञानी होय ते जाणे ते कहे छेः— अथ ज्ञाता विलासः—

॥सवैया तेईसाः॥— या घटमें ज्रमरूप अनादि विलास महा अविवेक अखारो; तामंहि उर सरूप न दीसत, पुग्गल नृत्य करै अति जारो; फेरत जेष दिखावत कोतुक, सो जलिये वरनादि पसारो; मोहसुं जिन्न जुदो जडसों चिन्, मूरति नाटक देखनहारो ॥एए॥

अर्थः— आ घटमां अनादि कालनो विस्तारवंत ज्रमरूप महा अविवेकनो अखाडो मंडाई रह्यो ले, ते अखाडामां बीजुं कोई शुद्ध स्वरूप तो देखातुं नथी; अने पुज्ञल ड्रव्य जे ले ते अत्यंत महोटुं नृत्य करी रह्योले, एज अविवेकनी आज्ञा ते अजीव पुज्ञल ड्रव्य ले. तेहिज एकेंड्रियादिकना वेषमां लेवरावी फेरवी फेरवी वर्णादिकना पसारनी सामग्री लेवरावी कौतुक देखाडी रह्यो ले. हवे इहां विवेकरूप जे ले ते मोहथी जे पुज्ञल जड तेथी जूदो ले. तेहिज चिन्मूर्त्ति एटले चेतन राजाले ते तो इहां नाटिकनो देखनारो बे ॥ एए ॥

हवे जे जीव अने अजीवनुं एकतापणुं मिथ्या ज्ञानमां ज्ञासेले, तेतो ज्ञान बुद्धिथी ज्ञिन्न ज्ञिन्न रूप देखाय बे, ते कहेलेः— अथ ज्ञान विलास कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे करवत एक काठ वीचि खंड करै, जैसे राजहंस निरवारे दूध जलकों; तैसे ज्ञेदज्ञान निज ज्ञेदक शकतिसेंति, ज्ञिन्न ज्ञिन्न करै चिदानंद पुदगलको; अवधिकों ध्यावै मनपर्येकी अवस्था पावै, उमंगिके आवै परमावधि केवलकों; याही ज्ञांति पूरन सरूपको उद्योत धैरै प्रतिबिंबत पदारथ सकलकों ॥ १०० ॥

अर्थः— जेम एक लाकडाने करवती वेहेरीने बे ज्ञाग करेले, ने जेम राजहंस डुध ने पाणी एकठा होय तेने जुदा जुदा करी नाखे ले. तेम जेने ज्ञवितव्य परिपाके ज्ञेदज्ञान प्रगटे ते पोतानी ज्ञेदक शक्तिवडे चिदानंद तथा पुज्ञल एकमेक होय तेने जुदा जुदा करेले. अने तेज ज्ञेदज्ञान पोताना क्षयोपशम माफक पोतानी अवधिने ध्यावे एटले पोताना अवधि ज्ञानरूप पर्यायने पामे, पली तेहिज ज्ञेद ज्ञानथी विशुद्ध थयेला मनपर्याय अवस्थाने पामे; अने तेथी विशुद्ध थईने परमावधि सुधी पोचे; एम वधते वधते ज्ञेदज्ञान थकी पोतानुं वर्ण स्वरूप उद्योतवंत धारण करे, एटले केवल अवस्था धारे; अने सर्व पदार्थने प्रविंबित करे ॥ १०० ॥

॥इती श्री समयसार नाटकनो वीजो अजीवद्वार वालावबोध सहित समाप्त थयो.॥

॥ दोहराः॥— यह अजीव अधिकारको, प्रगट वखान्यो मर्म; अव सुनु जीव अजीवके, करता किरिया कर्म. ॥ १०१ ॥

अर्थः— अजीव द्वार एरीते समजावीने कह्यो; एनुं रहस्य ए ले के अजीव पदार्थ जाणीने तेथकी जीव पदार्थ जुदो जाणवो; तेनुं वर्णन कर्युं ले. हवे जीवनेविषे कर्त्ता कर्मक्रियानो विचार अने अजीवनेविषे पण कर्त्ताकर्मक्रियानो विचार गुरु कहेले ने शिष्य सांजलेले ॥ १०१ ॥

हवे कर्त्तापणामां जीवनी मिथ्या दृष्टि ले ते ज्ञेदज्ञानथी तुटे, माटे ज्ञेदज्ञाननुं महात्म्य कहेलेः— अथ ज्ञेद ज्ञान महात्म्य वर्ननः—

॥ सवैया इकतीसा॥– प्रथम अज्ञानी जीव कहै में सदीव एक, दुसरो न और मेंही करता करमको; अंतर विवेक आयो आपापर भेद पायो, भयो बोध गयो मिटी भारत भरमको; भासै छहों दरवके गुण परजाय सब, नासै दुःख लख्यो मुख पूरन प रमको; करमको करतार मान्यो पुग्गल पिंड, आपुं करतार भयो आतम धरमको. ॥ २ ॥ जाहि समै जीव देहबुद्धिको विकार तजै, वेदत सरूप निज भेदत भरमको; महा परचंड मति मंडन अखंड रस, अनुभौ अभ्यास परकासत परमको; ताही समै घटमें न रहै विपरीत भाव, जैसै तम नासे भानु प्रगट धरमको, ऐसी दशा आवै जव साधक कहावै तव, करता व्है कैसे पुग्गल करमको. ॥ ३ ॥

अर्थः– प्रथमथी अज्ञानी जीव जे छे, ते पोताना रूपनी भूलवडे एमज कहेछे के निरंतर कर्मनो कर्त्ता हुंज छुं, वीजो कोई नथी. एरीते जीवनी अपेक्षा लईने कर्मनो कर्त्ता वनेछे. पछी ज्यारे घटमां विवेक प्राप्त थाय, त्यारे निजरूपनो भेद समज्यो ए टले वोध थयो, अने भ्रम के० मिथ्यात्वनो खेल मटी गयो; ने भ्रम नाश थता छए द्रव्यना गुण पर्याय आत्मानेविषे भासवा लाग्या, क्षण क्षण अवस्था भेद ते पर्याय कहीए. अने पूर्णपुरुष जे छे तेनुं मुख दीठुं, तेणे करीने कर्मनो कर्त्ता पुग्गलपिंड मान्यो. अने पोते अकर्त्ता थयो अने आत्मिक धर्म जे ज्ञायकता, वेदकता, तथा चे तनता इत्यादिक स्वभावनो हुं पोते कर्त्ता छुं एम मान्युं, एटले मर्मनो अकर्त्ता अने पोताना स्वभावनो कर्त्ता एम केहेवा लाग्यो. ॥ २ ॥

जे प्रस्तावे जीव छे, ते श्रेणिनुं आरोहण करे, अप्रमत्तता पामे, देहबुद्धिनो विकार तजे, एटले वाह्यात्माने पोतापणे जाणवो ए विकार छांडे, ने पोतानुं स्वरूप जुदुंज वेदे, अने भ्रमनो भेद करे, घणी तीक्ष्णवुद्धिनी शोभानो करनार, अने जेनो रस अ खंड छे, पूर्ण रसस्वाद छे, एवो जे शुद्धात्मानो अनुभव छे तेनो अभ्यास करी अंते परमात्मानो प्रकाश करे तेज प्रस्तावे घटपिंडमां विपरीत भाव रहे नही, एटले अ हंबुद्धि वडे जे अकर्त्ताने कर्मनो कर्त्ता करी मान्यो; ए विपरीत भाव हतो ते रहे नही. ते उपर दृष्टांत कहेछेः–जेम भानुधर्म के० सूर्यना तीक्ष्ण तेजना प्रकाशवाथी तम जे अंधकार ते सर्व नाश पामेछे; तेम एवी अप्रमत्त दशा ज्यारे प्राप्त थाय, त्यारे ते आत्मस्वभावनो साधक थयो; ते वखत कर्मनो कर्त्ता केम थाय! अने पुद्गलरूपी कर्मने केवी रीते करे! एनो अहीं उपयोग नथी. ॥ ३ ॥

हवे अहीं प्रथम आत्माने कर्मनो कर्त्ता मानीने पछी तेने अकर्त्ता मानवो ते ज्ञा नना सामर्थ्य वडे वनेछे ते कहेछेः–अथ ज्ञानसामर्थ्यवर्णनंः–

॥सवैया इकतीसा॥– जगमें अनादिको अज्ञानी कहै मेरो कर्म, कर्त्ता में याको

किरियाको प्रतिपखी है; अंतर सुमति भासी जोगसों भयो उदासी, ममता मिटाय परजाय बुद्धि नाखी है; निरभै सुभाउ लीनो अनुभौके रस भीनो, कीनो व्यवहार दृष्टि निहचैमें राखी है; भरमकी दोरी तोरी धरमको भयो धोरी, परमसों प्रीति जोरी करमको साखी है ॥ ४ ॥

अर्थः– संसारनेविषे जीव अनादिकालथी अज्ञानीज छे, ते कहेछे के शुभ अने अशुभ कर्मनो कर्त्ता हुंज छुं क्रियानो प्रतिपक्षी के० कर्मनी क्रियानो पक्षराखनारो छुं, पछी ज्यारे अंतरमां सुमतिनो भास थयो, अने मन वचन तथा कायाना योगथी उदास थयो, एटले ए योगने पररूप समज्यो, तथा ए योगनी ममता मटी गई, अने परजाय बुद्धि के० मन वचन अने कायाना योगनी जे बुद्धि ते नाखी दीधी; अने द्रव्यबुद्धि राखीने आत्मानो जे निर्भय स्वभाव छे, तेनुं ग्रहण कीधुं अने ए स्वभावनो जे अनुभव रस तेमां भीनो के० मग्न थई रह्यो, अने सर्व व्यवहारमां प्रवृत्ति करी रह्योछे, पण दृष्टिमां श्रद्धा तो निश्चयमां राखी छे, एम करतां भरमनी दोरी तोडी नाखी, एवुं छद्मस्थपणुं मूकी दीधुं, अने आत्मिक धर्म जे पोतानो स्वभाव तेनो धोरी के० धरनारो थयो; परम साथे प्रीति जोडी, एटले सिद्धपदमां प्रीति राखीने मर्मनो साखी थयो; एटले पुद्गलकर्मने करे तेनो साक्षी थयो छे. ॥ ४ ॥

शिष्य पूछेछे के, चेतन तथा अचेतन एकक्षेत्रमां रहेछे, अने कर्म करेछे, त्यां चेतनने कर्मनो अकर्त्ता केम मनाय? गुरु कहेछे के, ज्ञानशक्तिवडे अकर्त्ता मनाय. ते कहेछे.– अथ भेदज्ञानको सामर्थपनो कथनः–

॥सवैया इकतीसाः॥– जैसो जो दरव ताके तैसै गुन परजाय, ताहुसों मिलत पें मिले न काहु आनसों; जीव वस्तु चेतन करम जड जाति भेद, अमिल मिलाप ज्यों नितंब जुरे कानसों; एसो सुविवेक जाके हिरदे प्रगट भयो, ताको भ्रम गयो ज्यों तिमिर भग्यो भानसों; सोइ जीव करमको करतासौ दीसे पें अकरता कह्योहै शुद्धताके परवानसों. ॥ ५ ॥

अर्थः– जे जेवुं द्रव्य होय तेना तेवा गुणपर्याय होय छे, ते तेज द्रव्यसाथे मळेछे, पण बीजा द्रव्यसाथे मळता नथी; जेम कोई स्निग्धगुणवडे घृतादिक द्रव्य पोताना पर्यायथी स्निग्ध गुणवाला द्रव्यसाथे मळे, पण रुक्ष गुणवालासाथे मळे नही; तेम ए जीव वस्तु चेतनजाति छे, अने कर्म जे छे ते जडजाति छे, एवो जातिभेद छे. तेथी चेतन तथा जडने अमिलनता छे, पण कांई युक्ति मिलाप नथी. जेम केडना भागनी नीचे पश्चिम प्रदेश नितंब छे, ते उपर रहेला कानसाथे केम मळे? एवो गुणपर्यायनो विवेक जेना हैयामां प्रगट थयोछे, तेना हैयामां पूर्वनो उपजेलो भ्रम

नाश पाम्यो, ते उपर दृष्टांत कहेछे के, जेम सूर्यनो उदय थवाथी अंधकार नासेछे, तेम नाश पामेछे; एवा विवेकवालो जीव जे छे ते कर्मनो कर्त्ता तो देखायछे पण शुद्धता जे पोतपोताना द्रव्यनी गुण परिणति तेना प्रमाणथी जीवने कर्मनो अकर्त्ताज कह्यो. ॥५॥

हवे जीव अने पुद्गलना लक्षणना भेद देखाडीने एज वात दृढ करेछेः—

अथ जीवपुद्गललक्षणभेदकथनः—

॥छप्पय छंदः॥— जीव ज्ञानगुनसहित, आपगुण परगुन ज्ञायक; आपा परगुन लखै, नांहि पुद्गल इहि लायक; जीवरूप चिद्रूप, सहज पुदगल अचेत जरू; जीव अमूरति मूरतीक पुदगल अंतर वरू; जबलग न होइ अनुभौ प्रगट, तबलगु मिथ्यामति लसै; करतार जीव जड करमको, सुबुधि विकाशक भ्रम नसै ॥ ६ ॥

अर्थः— जीवजे छे ते ज्ञानगुणसहित छे, अने जेम पोताना गुणनो ग्राहक छे ते मज पारका गुणनो पण ग्राहक छे. अने एज गुणना भेदे करीने पोताने तथा परने लखै के० जुएछे; एवी कला शक्ति लायक पुद्गल क्यारे पण बनी शके नही. जीवनुं स्वरूप चिद्रूप के० चेतनारूप छे, अने पुद्गलतो सेहेज भावे अचेतना रूप छे; एटले जरू छे. वली जीव अमूर्त्ति छे अने पुद्गल मूर्त्ति छे, ए मोटुं अंतर ए बंने वच्चेछे. ज्यां सुधी शुद्धचेतननो अनुभव प्रगट न थाय. त्यांसुधी मिथ्यामति लसै के० दीप्ति वंत होयछे अने जडस्वरूपी कर्मनो कर्त्ता जीव छे, ते भ्रमबुद्धि छे; पण ए अनादि कालनो भ्रम ते सुबुद्धिना विकाश थवाथी नाश पामेछे. ॥ ६ ॥

हवे कर्त्ता, कर्म अने क्रिया ए त्रणे स्वरूप कहेछेः—अथ कर्त्ताकर्मक्रियास्वरूपकथनः—

॥दोहराः॥— करता परिनामी दरब, करमरूप परिनाम; किरिया परजैकी फिरनि, वस्तु एक त्रय नाम. ॥ ७ ॥

अर्थः—रूपांतरने भजे ते परिणामी कहेवाय, एवुं जे द्रव्य, ते कर्त्ता कहिये; रूपां तर थवुं ते परिणाम, ऐने कर्मनुं स्वरूप कहियें; अने पर्यायनुं क्रमे क्रमे फरवुं तेने क्रिया कहिये. ए रीते कर्त्ता, कर्मने, क्रिया एवां त्रण नाम छे पण वस्तु तो एकज छे. ॥७॥

हवे कर्त्ता, कर्म, ने क्रिया ते केहेवामां नाम भिन्न भिन्न छे पण वस्तु एकज छे ते कहेछेः—अथ कर्त्ताकर्मक्रियैकत्वकथनः—

॥दोहराः॥—कर्त्ता कर्म क्रिया करै, क्रिया कर्म करतार; नाउ भेद बहु विधि भयो, वस्तु एक निरधार ॥ ८ ॥

अर्थः—कर्त्ता त्यारे कहेवाय के ज्यारे क्रिया करे, अने क्रिया त्यारे कहेवाय के ज्यारे कर्म करे, एम नाम भेद भातभातनो पड्यो पण करवाथी कर्त्ता, करवाथी कर्म ने करवाथी क्रिया ए त्रणे एकज वस्तु छे. ॥ ८ ॥

हवे एक कर्म क्रियानो कर्त्ता एकज होयछे, ते स्थापन करेछेः--अथ कर्त्ता कर्मक्रियाप्रतिस्थापनाः--

॥दोहा॥-- एक कर्म कर्त्तव्यता, करै न कर्त्ता दोय; दुधां दरव सत्ता सु तो, एक भाव क्यों होय. ॥ ए ॥

अर्थः-- ए वात तो खुल्ली छे के, एक कर्मनी कर्त्तव्यता के० क्रिया ते एकज होयछे. अने तेनो कर्त्ता पण एकज होयछे, पण वे कर्त्ता एकज क्रियाना करनार नहोय. अहीं चेतन द्रव्यसत्ता अने पुद्गलद्रव्यसत्ता ते तो दुधा के० वे प्रकारे जुदी जुदी छे, ते माटे एक भाव एक कर्म केम बने? ॥ ए ॥

हवे कर्त्ता कर्म ने क्रियानो विचार कहेछे. अथ कर्त्ताकर्मक्रियाविवरणंः--

॥सवैया इकतीसाः॥-- एक परिनामके न करता दरव दोय, दोय परिनाम एक दर्व न धरतु है; एक करतूति दोइ दर्व कवहों न करै, दोई करतूति एक दर्व न करतु है; जीव पुदगल एक खेत अवगाही दोई, अपने अपने रूप कोउ न टरतु है, जड परिनामनिको करता है पुदगल, चिदानंद चेतन सुभाउ आचरतु है ॥ १० ॥

अर्थः--एक परिणामना वे द्रव्य कर्त्ता न होय, अने एक द्रव्य जे छे ते वे परिणाम धारण करे नही; ए रीते वे द्रव्य मलीने एक करतूती के० क्रिया क्यारे पण नज करे. तेमज एक द्रव्य वे क्रिया पण नहीज करे; ए व्यवस्था बुद्धि कहेवा लायक कहेछे के, जीव अने पुद्गल एकमेक थई रह्यां छे; तेथी ए वंने एक क्षेत्रावगाही थयां पण पोत पोताना स्वभावथी कोई टले नही; तेथी पुद्गल जे छे ते जड छे; ते जडपरिणामनोज कर्त्ता थाय; अने चिदानंद चेतन छे ते चेतन स्वभावने आचरे ॥ १० ॥

हवे सम्यक्त्वअवस्थामां कर्मनो अकर्त्ता अने मिथ्यात्वअवस्थानेविषे कर्मनो कर्त्ता छे एम कहेछेः--अथ सम्यक्त्वमिथ्यात्वकथनंः--

॥सवैया इकतीसाः॥-- महा ढीठ दुःखको वसीठ पर दर्वरूप, अंध कूप काहुपे निवार्यो नहि गयो है; ऐसो मिथ्याभाव लग्यो; जीवकों अनादिहीको, याही अहं बुद्धि लिये नाना भांति भयो है; काहू समै काहूको मिथ्यात अंधकार भेद, ममता उछेदि शुद्ध भाउ परिनयो है; तिनही विवेक धारि वंधको विलास डारि, आतम सकतिसों जगत जीति लयो है. ॥ ११ ॥

अर्थः-- महाधृष्ट अने दुःखनो पढु आत्मद्रव्य ते परद्रव्य के० पुद्गलद्रव्य जेनुं रूप छे, पिंड छे, अने जेमां सत्य दृष्टि पोची शकती नथी, तेमाटे अंधकूप समान छे; अने कोईथी निवारण नथी थतो, एवो मिथ्याभाव जे मिथ्यात्व मोह कर्म ते जीवने अनादि काल थकी लागेलुं छे, एथी परद्रव्य तरफ जीवनी अहंबुद्धि लागी, तेथी

नाना प्रकारनो थयो. अने कोई समये यथाप्रवृत्तिकरण कोई भव्यजीवनो मिथ्यात्व अंधकार भेदायो, ते मिथ्यात्वग्रंथि भेदीने अने सर्व कार्यनेविषे जे अहंबुद्धिवडे रहेली ममता हती, तेने छेदीने शुद्ध चिदानंद भावमांज परिणमी रह्यो, ते समये ते भव्यजीव भेद विज्ञान के० जड चेतननो विवेक धारण करीने अविरति, कषाय, योग तथा प्रमाद ए जे बंधनाहेतु हता, तेनो विलास छोडीने आत्मशक्तिवडे एटले पोताना वीर्यबलवडे जगत्ने जीति लीयेछे; जगत्थी निरालो थाय छे. ॥ ११ ॥

हवे जेम कर्मनो कर्त्ता आत्मा नथी तेम ए कर्म आत्माना करेलां नथी; अने कर्त्ताने कर्म एक रूपज छे ते कहेछेः—अथ यथा कर्म तथा कर्त्ता एकरूपकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— शुद्धभाव चेतन अशुद्धभाव चेतन, दुहूंको करतार जीव और नही मानीये; कर्मपिंडको विलास वर्न रस गंध फास, करता दुहुंको पुदगलपर मानिये; ताते वरनादि गुन ज्ञानावरनादि कर्म, नाना परकार पुग्गलरूप जानिये; समल विमल परिनाम जे जे चेतनके, ते ते सब अलख पुरुष यों वखानिये. ॥ १२ ॥

अर्थः— चेतनानेविषे शुद्ध भाव तथा अशुद्ध भाव जे जाणवामां आवेछे, ते तो परिणामरूप कर्म छे; तेथी ते बनेनो कर्त्ता जीवज छे, बीजो कोई कर्त्ता मानवो नही. अने ज्ञानने ढांकवुं, दर्शनने ढांकवुं, इत्यादि कर्म पिंडनो विलास छे; अने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, इत्यादि जे कार्य अने कर्म छे, ए बनेनो कर्त्ता पुद्गलद्रव्यनेज प्रमाण राखिये; तेणे करीने वर्णादि के० वर्ण, रस, गंध, स्पर्श गुण छे ते अने ज्ञानावरण, दर्शनावरण प्रमुख जे कर्म छे ते सर्व नाना प्रकारना पुग्गलरूप जाणवां; जेम कह्युं छे के, "जोगापयडिपयेसा," के० जोगवडे प्रकृतिप्रदेशबंध थाय, ने तेनेविषे चेतनना समलपरिणाम के० अशुद्ध परिणाम अने विमलपरिणाम के० शुद्ध परिणाम ए जे कर्मरूपक छे ते ते सर्व अलक्ष पुरुषरूप छे, माटे कर्त्ता कर्मने एकज वखाणीए. ॥ १२ ॥

हवे ए वातना रहस्यने मिथ्यादृष्टि जाणे नही, तेना उपर हस्तिनो दृष्टांतः—

अथ मिथ्यादृष्टि बर्ननं हस्तिको दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसै गजराज नाज घासके गरास करि, भछत सुभाय नहि भिन्न रस लियो है; जैसै मतवारी नहि जानै सिखरनि स्वाद, जुगमें मगन कहै गऊ दूध पियो है; तैसै मिथ्यामति जीव ज्ञान रूपी है सदीव, पग्यो पाप पुन्य सों सहज सुन्न हियो है; चेतन अचेतन दुहुकों मिश्र पिंड लखि, एकमेक मानै न विवेक कबु कियो है. ॥ १३ ॥

अर्थः— जेम हाथीने अनाज साथे घास भेलवीने ग्रास आपेछे ते खायछे. हाथीनो स्वभाव एवोछे के, घासने अनाजनो जुदो स्वाद लेतो नथी. वली कोई माणस मद्य

पीने मतवारो थयो होयने तेने दहीने खांडथी बनेलुं शीखरण* जमवाने आपीये ने पुछीये के एनो स्वाद केवोछे, तो ते कहेशे के गायनुं दुध पीये तेवोछे. पण तेने दारूनी धुममां जुदा स्वादनी खबर पडती नथी, तेम जीव मिथ्यामतिवालो थईने जो पण अनादि कालनो ज्ञानरूपी छे एटले ज्ञानमय छे तो पण पापकर्म अने पुण्यकर्ममां लीन थई रह्यो छे, माटे सहज भावे शुन्यहृदय थयोछे; त्यारे चेतन अचेतन जे पुद्गल ते बेउने मिश्र के० एक पिंड जोईने एकमेक मानेछे; पुद्गलना भेलथी चेतनने पण पुद्गलकर्मनो कर्त्ता मानेछे पण कदी विवेकनी नजरथी जोतो नथी. ॥ १३ ॥

हवे जीवने कर्मनो कर्त्ता मानवो ए भ्रमवडे मनायछे; ते उपर दृष्टांत आपेछे.

अथ भ्रमस्वरूपकथनदृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥—जैसै महाधूपकी तपतिमें तिसीयो मृग, भरमसों मिथ्याजल पीवनकों धायो है; जैसै अंधकारमांहि जेवरी निरखी नर, भरमसों डरपी सरप मानि आयो है; अपने सुभाय जैसै सागर सुथिर सदा, पवन संजोगसो उछरि अकुलायो है, तैसै जीव जडसों अव्यापक सहजरूप; भरमसों करमको करता कहायो है.॥१४॥

अर्थः— जेम वैशाख ने जेठना घणा सख्त तापनी गरमीवडे मृग तरस्यो थईने मृगजलने जोई तेने जल भरेलुं तलाव मानी ते मिथ्या जलने पीवाने दोडेछे; तथा जेम अंधारे पडेली दोरडीने जोइने कोई मनुष्य भरमवडे तेने साप जाणी डरीजायछे; वली जेम समुद्रनो स्वभाव स्थिर छे पण पवनना संजोग थकी उछलतो देखायछे, तेम जीव निश्चय थकी जोतां जड वस्तुथी अव्यापक छे, पण अनादि कालनो सहजरूपी भ्रम तेणे करीने ते जीवने कर्मनो कर्त्ता कहेछे. ॥ १४ ॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि थाय ते सम्यक् स्वभावे करीने भ्रम दूर करे; अने जुदो जुदोज भाव जाणे, ते उपर राजहंसपक्षीनो दृष्टांत आपेछे. अथ सम्यग् दृष्टिस्वभाववर्णनं, राजहंसके दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥— जैसै राजहंसके वदनके सपरसत, देखिये प्रगट न्यारो छीर न्यारो नीर है, तैसै समकितीकी सुदृष्टिमें सहजरूप, न्यारो जीव न्यारो कर्म न्यारोई शरीर है; जब शुद्ध चेतनाको अनुभौ अभ्यासे तव, भासै आपु अचल न दुजो और सीरहै;पूरव करम उदै आइके दिखाई देहि,करता न होइ तिन्हको तमासगीर है॥१५॥

अर्थः— जेम राजहंसनुं वदन के० मुखनी अंदरनी जीभ, तेना अडकवाथी दुधने पाणी एकमेक होय ते फाटीने दुध जुदुं ने पाणी जुदुं थाय छे; तेमज सम्यग्दृष्टिवडे सहजरूपे जीव छे ते जुदोज जणाय ने कर्म पण जुदुंज जणाय; अने शरीर पण जुदुंज जणाय, एटले बाह्यात्मा, अंतरात्मा ने परमात्मा ए त्रणे जुदा जणाय. ज्यारे

शुद्ध चेतन अनुभवनो अभ्यास करे त्यारे पोतेज देखाय. कर्मादिकनो बीजा कोई साथे भेल नथी. पूर्वे संचित कर्म जे छे ते निज स्थिति पूर्ण थये अथवा उदीरणा करी के० कर्म उदय आव्याथी देखाय, पण जीव कांई कर्मनो कर्त्ता नथी,पण ते कर्मना उदयनो तमासो जुएछे ॥ १५ ॥

हवे शिष्य पूछे छे के, हे स्वामी! जीव तथा पुद्गल एकमेक थई रह्यां छे, त्यारे ते उनेविषे एवो जुदो जुदो स्वभाव केम जाणीये? त्यारे गुरु तेनो उत्तर आपतां पाणिनुं तथा शाकनुं दृष्टांत आपेछेः अथ कर्तृत्व स्वभाव तप्तोदक तथा व्यंजननो दृष्टांतः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–जैसै उसनोदकमें उदक सुभाउ सीरो,आगिकी उसनते फरस ज्ञान लखिये; जैसै स्वाद व्यंजनमें दीसत विविध रूप, लोनको सवाद खारो जीभ ज्ञान चखिये; तैसै याहि पिंडमें विभावता अज्ञानरूप, ज्ञानरूप जीव भेद ज्ञानसो परखिये,भरमसों करमको करता है चिदानंद, दरव विचार करतार भाव नखिये.॥१६॥

अर्थः– जेम उसोदक के० उनुं पाणी ते पाणीनो पोतानो स्वभाव तो सीरो के० शीतलज छे, पण तेनो स्पर्श करतां गरम लागे छे,ते गरमी आगनी छे. अने स्वादिष्ट व्यंजन के० शाकमां भात भातनो स्वाद होय छे अने लोन के० निमकनो खारो स्वाद जुदोज जणाय छे, ते जीभ ज्ञानवडे जणायछे; तेमज घटपिंडमां विभावता जे कर्मनी साथे चेतननुं मलवुं तेतो जेम में आ कीधुं एम मानवुं, एतो अज्ञानरूप छे. अने जीव छे ते शुद्ध ज्ञानरूपी छे, एनेतो शुद्ध जाणवो एज एनुं कार्य छे. ए वात भेदज्ञान वडे जणाय छे. ए चिदानंद जे छे तेने कर्मनो कर्त्ता मानवो ते भ्रमवडे मनाय छे! पण द्रव्यनो विचार करतां एनो कर्त्ता भाव बने नही पण ज्ञाता भावज बने ए रहस्य छे. ॥ १६ ॥

हवे निश्चय प्रमाणवडे जे जेनो कर्त्ता छे तेने जुदो बतावे छे. अथ कर्तृत्वविवरणंः

॥ दोहाः॥– ज्ञान भाव ज्ञानी करै, अज्ञानी अज्ञान; दरव करम पुदगल करै, यह निहचै परवान. ॥ १७ ॥

अर्थः– ज्ञानी होय तेतो ज्ञानभाव करे एटले जाणवारूपजे कार्य छे ते करे छे; अने अज्ञानी होय ते हुं कर्त्ता छुं एम मानी अज्ञानभाव करेछे; द्रव्यरूप जे कर्म छे तेने पुद्गलज करेछे, निश्चयप्रमाणमां एवुं स्पष्ट छे. ॥ १७ ॥

शिष्य पूछेछे के हे स्वामी! ज्ञानभाव ज्ञानीकरे ए वात कहेतां ज्ञाननो कर्त्ता जीव ठरेछे, ते कया नयथी ठरेछे? तेनो उत्तर गुरु आपेछेः–अथ व्यवहार कर्तृत्वकथनः–

॥ दोहाः॥– ज्ञानसरूपी आतमा, करे ज्ञान नहि और; दर्व कर्म चेतन करै, यह विवहारी दौर. ॥ १८ ॥

अर्थः– आत्मा ज्ञानस्वरूपी छे माटे ज्ञानने तो तेज करे, पण बीजो नही, ए निश्चय;अने जे एम कहे छे के,द्रव्यकर्मनो कर्त्ता पण चेतन छे तेतो व्यवहारमां कहेवाय॥१८॥

हवे शिष्य प्रश्नः– कर्तृत्वकथनः–

॥ सवैया तेईसाः॥–पुदगल कर्म करै नहि जीव कही तुम में समुझी नहि तैसी; कौन करै यहु रूप कहो अब, को करता करनी कहु कैसी; आपुहि आपु मिलैबिछुरै जड क्यों करि मोमन संशय ऐसी; शिष्य संदेह निवारन कारन बात कहै गुरु है कछु जैसी. ॥१९॥

अर्थः– हवे शिष्य पूछे छे के, जीवने निश्चयनयथी ज्ञाननो कर्त्ता कह्यो ने कर्मनो अकर्त्ता कह्यो, तेनुं शुं कारण? हे गुरु! पुद्गल द्रव्यरूप कर्मने जीव करे नही एवी जे वात तमे कही, ते वात हुं यथार्थ समज्यो नही. ए पुद्गलरूपी कर्मनो स्वनाव करे? इहां कर्त्ता तो ठरावता नथी अने तेनी क्रिया केवी छे ते कहो. वली पुद्गल कर्मनो कर्त्ता पुद्गलनेज बनावोछो त्यारे कर्त्ता कर्म बंने जड थयां, ते पोतानी मेले मलवुं छूटा थावुं केम बनी शके? ए मारा मनमां संदेह छे. शिष्यनो संदेह निवारवाने आ प्रश्ननो यथार्थ उत्तर गुरु हवे कहेछेः– ॥ ११९ ॥

अथ गुरु उत्तर कथनः–

॥दोहाः॥– पुदगल परिनामी दरव, सदा परिनमै सोय; याते पुदगल करमको, पुदगल कर्त्ता होय ॥ २० ॥

अर्थः– हे शिष्य! पुद्गल जे छे ते परिणामी द्रव्य छे. क्षण क्षणमां तरेहवार बनी जायछे तेमाटे सदा परिणमी रह्यो छे, ते युक्तिथी पौद्गलिक कर्मनो कर्त्ता पुद्गलज थई शकेछे. ॥ २० ॥

अथ पुनः शिष्य प्रश्नः–

॥ अडिल छंदः ॥– ज्ञानवंतको नोग निर्जरा हेतु है; अज्ञानीको नोग बंध फल देतु है;यह अचरजकी बात हिये नहि आवही;बूझै कोऊ शिष्य गुरू समुझावही.॥२१॥

अर्थः–हवे शिष्य पूछेछे के, ज्ञाननाव ज्ञानी करे एवुं कहेवाथी नोग निर्जरारूपी थाय छे ते केम? ज्ञानी नोग नोगवे ते कर्मनी निर्जरा करेछे, त्यारे तो ज्ञानीनो नोग निर्जरानो हेतु छे अने अज्ञानी जे नोग नोगवे ते कर्म बंधन करेछे; त्यारे तो अज्ञानीनेज नोग बंध फलदाई कह्यो एतो अचरजनी वातछे; केमके नोग नोगववामां समान होय ने एकनो नोग निर्जरानो कारक अने बीजानो नोग बंधनो कारक एम केम बने? अने ए वात हृदयमां ठसती नथी. आवुं शिष्यनुं केहेवुं सांनलीने गुरु तेनो उत्तर कहेछेः– ॥ २१ ॥

अथ गुरु उत्तर कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— दया दान पूजादिक विषय कषायादिक, दोहू कर्म भोग पै दुहूको एक खेतु है; ज्ञानी मूढ करम करत दीसे एकसे पें, परिनाम भेद न्यारो न्यारो फल देतु है; ज्ञानवंत करनी करै पें उदासीन रूप, ममता न धरै ताते निर्जराको हेतु है; वहै करतूति मूढ करै पै मगन रूप, अंध भयो ममता सो बंध फल लेतु है. ॥ २२ ॥

अर्थः— दया पालवी, दान देवुं, पूजा प्रमुख करवी, एक एवी रीतनां कर्मछे, अने पांच इंद्रिओना विषयनुं सेवन करवुं, कषायनुं सेवन करवुं; एक एवी रीतनां कर्म छे, ए बंने कर्मनो संसारमां भोग छे, पण क्षेत्र एक छे, तेथी बंने बंधरूप छे. अने ज्ञानी पण ए बे कर्म करे छे, तथा अज्ञानी पण करे छे, अने ए कर्म करतां तो ज्ञानी अज्ञानी एक सरखाज देखाय छे, पण एना परिणाम भेद जुदा जुदा छे माटे ए कर्मनुं फल जुदुं जुदुं आपे छे. ज्ञानवान जे कर्म क्रिया करेछे, ते उदासीन रूप थईने करे छे, एटले एनी मेले उदय आवेलुं कर्म करेछे, पण ममता धरतो नथी; ए माटे निर्जरानो हेतु छे. अने एज कर्म क्रिया मूढ करे छे, पण ए क्रिया करवामां आनंद रूप रहे छे; ने निजात्मशुद्धिने विसरी जाय छे; एटले अंध जेवो बनी जाय छे, अने ममता धारण करे छे, तेथी बंध फलने लिये छे; एज माटे अज्ञानी अज्ञाननो कर्त्ता ठरे छे. ॥ २२ ॥

हवे कुंभारनुं दृष्टांत आपीने मूढनुं कर्त्तापणुं सिद्ध करेछेः—

अथ मूढ कर्तृत्व कथन कुलाल दृष्टांतः—

॥ छप्पय छंदः ॥— ज्यों माटीमहि कलस, होनकी शक्ति रहै ध्रुव; दंड चक्र चीवर कुलाल बाहिज निमित्त हुव; त्यों पुदगल परवानु, पुंज बरगना भेष धरि; ज्ञानी वरनादिक सरूप विचरंत विविध परि; बाहिज निमित्त बहिरातमा, गहि संसै अज्ञान मति; जगमांहि अहंकृत भावसों, करम रूप व्है परिनमति. ॥ २३ ॥

अर्थः— जेम कलसरूप कार्य थवामां माटी द्रव्यनी शक्ति ध्रुव के० निश्चय छे. अने ते कार्यनेविषे तेने फेरववानो दंड अने चक्र के० चाकने चीवर उतारवानी दोरी ने कुंभार ए सर्व बाह्य निमित्त थयां, तेम परमाणु पुद्गलनो पुंज ते बंधपणु धरीने कार्म्मणवर्गणानो भेष धरीने ज्ञानावरणी, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयुष, नामकर्म, गोत्रकर्म,अंतराय ए स्वरूपे विविध के० भात भातनो पुद्गल खंध विचर्यो; अहीं बहिरात्मा एटले देव मनुष्यादिरूपी बाह्यात्मा बाह्यनिमित्त थईने भ्रम

रूपी अज्ञान ग्रहीने अहीं कारण बन्यो; त्यारे जगत्मां अहंकारबुद्धिनी संगति ते द्विज पुद्गलखंध कर्मरूप बनीने परिणम्यो छे. ॥ २३ ॥

हवे निश्चये जीवनुं अकर्त्तापणुं मानीने एना अनुभवमां रेहेवुं तेनुं महात्म्य कहेछेः—

अथ शुद्धानुभव महात्म्य कथनः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— जे न करे नयपक्ष विवाद धरे न विषाद अलीक न भाखे; जे उदवेग तजै घट अंतर, शीतलभाव निरंतर राखे; जे न गुनी गुन भेद विचारत, आकुलता मनकी सब नाखैं;ते जगमें धरि आतमध्यान अखंडित ज्ञानसुधारस चाखे॥२४॥

अर्थः—जेम मिथ्यात्वी लोक पोतपोताना नयनो पक्ष धरीने पोतपोतामां विवाद करेछे तेम न करतां जे सहज आनंदमां रहेछे; ने विषाद धरता नथी, अने जूठुं बोलता नथी, अने दुष्ट ध्यान धरता नथी एटले उद्वेगनो त्याग करेछे; अने हमेश पोताना हृदयनेविषे शीतल भाव राखेछे, ने एवा शुद्ध आत्माना अनुभवमां मलेछे. जेथी आत्मा गुणी छे ने ज्ञानगुण छे, एवो जेने भेद विचार रह्योज नथी, अने विकल्प के० व्याकुलताने मनमांथी काढी नाखे, एवा जे शुद्ध अनुभवी थाय, तेज आत्मध्यान धरीने जगत्नेविषे संपूर्ण केवल ज्ञानरूप अमृत रस तेने चाखेछे. ॥ २४ ॥

हवे निश्चय नय थकी अकर्त्तापणानी स्थापना अने व्यवहार नयवडे कर्त्तापणानी स्थापना प्रमाण करी बतावे छेः—अथ निश्चय व्यवहारनय प्रमाण स्थापनाः—

॥सवैया इकतीसा॥— बिवहार दृष्टिसों बिलोकत बंध्योसो दीसे, निहचे निहारत न बांध्यो यह किनही; एक पक्ष बंध्यो एक पक्षसों अबंध सदा, दोउ पक्ष अपने अनादि धरे इनही; कोउ कहै समल बिमल रूप कोउ कहे, चिदानंद तैसोई बखान्यो जैसो जिनही; बंध्यो मानै खुल्यो मानै दुहुनको भेद जानै, सोई ज्ञानवंत जीव तत्त्व पायो तिनही. ॥ २५ ॥

अर्थः— चतुर्गतिरूप संसारमां भ्रमण करवानो आत्मानो व्यवहार जोइए तो आत्मा कर्त्ताज देखाय ने बंधमां पण जणाय, अने निश्चयनयवडे ज्ञाननोज कर्त्ता अने ज्ञानस्वरूपी जोइये तो एज आत्मा कशामां बंधायलो नही जणाय; तेथी एकलो व्यवहार पक्ष ग्रहीये तो आत्मा बंधमां छे, ने एकलो निश्चयपक्ष ग्रहीये तो आत्मा सदा अबंध जणाय, एवा बंने पक्ष अनादिकालना ग्रहण कीधा छे. कोई व्यवहारनयवालो होय ते जीवने समल कहेछे, ने कोई निश्चयनयवालो होय ते एने विमल कहेछे. पण जेणे जेवो पोतानी बुद्धिथी चिदानंदने वखाण्यो तेवोज चिदानंद छे. हवे जे सम्यग्दृष्टि होय तेतो आत्माने बंधायलो पण माने, अने अबंधपण

माने, पण ए मानवामां बेहुनयनो ज्ञेद जे जाणे तेज ज्ञानी कहेवाय, अने तेणेज जीव तत्वनुं स्वरूप उलख्युंछे ॥ २५ ॥

हवे बेउ नयने समान राखीने समकित राखेथी समरस ज्ञावमां रहे तेनी प्रशंसा करेछेः—अथ समरसी ज्ञाव प्रशंसा कथनः—

॥सवैया इकतीसाः॥— प्रथम नियत नय दूजो विवहार नय, डुहुकों फलावत अनंत ज्ञेद फलै हैं; ज्यों ज्यों नय फलै त्यों त्यों मनके कलोल फलै, चंचल सुज्ञाय लोका लोकलौं उछलै है; ऐसी नय कक्ष ताको पक्ष तजि ज्ञानी जीव, समरसी ज्ञये एकतासों नही टलै है; महा मोह नासै शुद्ध अनुज्ञौ अज्यासै निज, बल परगासै सुख रासि माहिं रलै है ॥ २६ ॥

अर्थः— पहेलोतो निश्चय नय छे, अने बीजो व्यवहार नय छे; ए बेउ नयने एक एक द्रव्य साथे फलावियें त्यारे अनंत द्रव्यनी अपेक्षाने लीधे नयना अनंत ज्ञेद फले छे. हवे ए नयना अनंत ज्ञेद मननाज विचारथी फले छे, तेथी जेम जेम नयनुं फलाव थाय तेम तेम मनना तरंग पण अनंत ज्ञेदे फलेछे, अने मनना कल्लोल जेटला होय तेटला चंचल स्वज्ञावमनना थई जाय, एनुं प्रमाण षट्गुणी हानि वृद्धि लेखे लोकालोक प्रदेश परिमाण होय एवी जे नय कक्षा के० नयने अंगीकार करी तेनो पक्षपात त्यजीने जे ज्ञानी जीव समरसी ज्ञावमां रह्या अने सघला नयना विस्तारमां चेतनानी एकता होय तेथी टले नही ते तो समरसी ज्ञाव वाला महा मोह के० ज्रमनो नाश करीने अने शुद्ध चिदानंदना अनुज्ञवनो अज्यास करीने, एटले क्षपकश्रेणि आरोहण करीने परमात्मानुं जे बल छे तेनो प्रकाश करीने सुख राशि जे मोक्ष पद छे तेनेविषे मली जायछे ॥ २६ ॥

हवे निश्चय व्यवहार बतावीने पोतपोतानुं जे सत्य स्वरूप लक्षण छे तेहिज कहेछेः—अथ सम्यक् स्वरूप लछन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे काहु बाजीगर चौहटे बजाई ढोल, नाना रूप धरीके ज्ञगल विद्या ठानी है; तैसे मैं अनादिको मिथ्यातके तरंगनिसों ज्ञरममें धाइ बहु काय निज मानी है; अब ज्ञान कला जागी ज्ञरमकी दृष्टि ज्ञागी, अपनी पराई सब सौंजु पहिचानी है; जाके उदे होत परवान एसी ज्ञांति ज्ञई, निहचे हमारी ज्योति सोई हम जानी है. ॥ २७ ॥

अर्थः— जेम कोई बाजीगर चौटामां ढोल वगाडीने ज्ञात ज्ञातना रूप धरीने पोतानी ज्ञगल विद्या प्रसारे छे, ने तेने लोको साची मानेछे, ते रीते हुं अनादि कालथी मिथ्यात्व तरंग के० लहेरोमां मगन बनी रह्यो तेथी ज्ञगलविद्या जोनाराने न्याये

भ्रमसां धायो थको घणी कायाउं पामीने पोतानी मानी लीधी हती, ते हाल मने ज्ञान कला प्राप्त थवाथी भ्रमनी दृष्टि दूर थई गई, त्यारे पोतानी तथा पारकी सोंज के० सामग्री ते सर्वने ओलखी लीधी; जे ज्ञान कलाना उदय थवाथी वस्तुनुं परमाण थायछे एवी रीत थई तेथी पोतानी परंपरानी शुद्धि आवी, एवा निश्चयथी अमारी ज्योति जे अमारुं स्वरूप तेने अमे ओलखी लीधुं ॥ २७ ॥

हवे जे ज्ञाता होय ते सम्यक् स्वरूपने शुद्ध अनुभवनेविषे विचारी लिये ते कहे छेः– अथ शुद्धानुभव चिंतन ज्ञान विलासः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे महा रतनकी ज्योतिमें लहरि उठे, जलकी तरंग जैसें लीन होइ जलमें; तैसे शुद्ध आतम दरवपरजाय करी, उपजे विनसे थिर रहे निज थलमें; ऐसे अविकलपी अजलपी आनंद रूपी, अनादि अनंत गहि लीजे एक पलमें; ताको अनुभव कीजे परम पियूष पीजे, वंधको विलास डारि दीजे पुदगलमें ॥ २८ ॥

अर्थः– जेम हीरा, लाल, पन्ना अने रत्ननी ज्योतिमां लहरी उठे, ने ज्योतिमांज समाइ जाय छे, वली जेम पाणीना मोजां पाणीमांज समाई जाय, तेम शुद्ध आत्म द्रव्यना जे ज्ञान प्रमुख गुणना पर्याय छे ते समये समये उपजे छे, ने वणसे छे, अने द्रव्य पोताना द्रव्य स्थानने विषेज रहेछे. उपजवुं ने वणसवुं ए विकल्प पर्यायने आश्रये थाय छे; पण द्रव्यमां तो थिरता रही छे, द्रव्यमां विकल्प नथी माटे जे अविकल्पक अने अजल्पी के० स्थिरछे सर्वथा वचन गोचर नथी, अने आनंदरूपी छे, तेथी सहज समाधि थईछे, एवुं कोइ आत्म द्रव्यछे, तेनुं अनादि अनंत काल सुधी एक रूपमां ग्रहण करवुं, अने तेज द्रव्यनो अनुभव करवो, एटले तेने विषेज उपयोग राखवो, ए अनुभवमां परम पियूष के० परम अमृतरस उपजे छे ते पीवो. अने जे आश्रव वंधनो विलास आत्मामां छे तेने पुद्गलनी सामग्रीमां नाखी देवो, एटले पुद्गलरूप जूदुंज छे ॥ २८ ॥

हवे आत्मानो शुद्ध अनुभव परम पदार्थ छे, तेनी प्रशंसा करेछेः-अथ अनुभव प्रशंसाः-

॥ सवैया इकतीसाः॥– दरवकी नय परजाय नय दोउ नय, श्रुत ज्ञानरूप श्रुतज्ञान तो परोष है; शुद्ध परमातमाको अनुभौ प्रगट ताते, अनुभौ बिराजमान अनुभौ अदोष है; अनुभौ प्रवान भगवान पुरुष पुरान, ज्ञान औ विज्ञानघन महासुखपोष है, परम पवित्र योंही अनुभौ अनंत नाम, अनुभोविना न कहीं ओर ठोर मोष है ॥ २९ ॥

अर्थः– पदार्थने ओलखवाने वेज नय प्रवर्ते छे, एक द्रव्यार्थिक नय वडे द्रव्यनो विवरो अने पर्यायार्थिक नयवडे पर्यायनो विवरो थाय छे, ए वंने नय श्रुतज्ञानरूप छे, अने श्रुतज्ञान जे छे ते परोक्ष ज्ञान छे; अने शुद्ध परमात्मानो अनुभव जे छे

तेतो प्रगट के० प्रत्यक्ष प्रमाणमां आवे छे, तेथी अनुभवज महा बलवान थको विराजमान थई रह्योछे, एथी अनुभव ते अदोष के० शुद्ध छे. हवे अनुभवनां नाम कहेछे, अनुभव कहिये, प्रमाण कहिये, भगवान कहीये, एनेज पुराण पुरुष कहीये, एनेज ज्ञान कहीये, एनेज विज्ञानघन कहीये, एनेज महा सुखनुं पोष कहीये, एनेज परम पवित्र कहिये, एवा अनुभवनां अनंत नाम छे. अने ए शुद्ध अनुभव शिवाय बीजे कोई स्थानके मोक्ष नथी ॥ २९ ॥

हवे शुद्ध अनुभवविना संसारमां भमे अने शुद्ध अनुभव प्राप्त थये मोक्ष पामे ते कहे छे. अथ अनुभव साम्यर्थ जलको दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे एक जल नाना रूप दरवानुयोग, भयो बहु भांति पहिचान्यो न परतु है; फीरि काल पाई दरवानुयोग दूरि होतु, अपने सहज नीचे मारग ढरतु है; तैसे यह चेतन पदारथ विभावतासों, गति योनि भेष भव भावर भरतु है; सम्यक सुभाइ पाइ अनुभौके पंथ धाइ, बंधकी जुगती भानि मुगति करतु है ॥३०॥

अर्थः— जेम पाणी एक रूप छे तथापि तेनेविषे नाना प्रकारनी माटी प्रमुख द्रव्यनो मिलाप थये पाणी पण तरेहवार जातनुं थाय छे, हवे देखवामां तो माटी प्रमुख देखाय छे, पण पाणी ओलखातुं नथी. फरी कोई औषधादिकथी ते द्रव्यनो मिलाप दूर थयो अने पाणी तरी आव्युं त्यारे पोतानुं सहज रूप लईने नीचाण तरफ ढलवा लाग्युं; ते रीते जे चेतन पदार्थ छे ते विभावतासों के० पोतानी भुल थकी चार गतिमां चोरासी लाख जीव योनिनेविषे भेष के० एक क्रोड साडासत्ताणुंलाख कुल कोडीमां भातभातना भवकरतो भावरी के० फरी रेहे छे, एज जीव कोई अवसर सम्यग् भाव पामीने पोताना अनुभवना मारगमां दोडीने अने बंधनना विलासने तोडीने कर्मनी मुक्ति करे छे. ॥ ३० ॥

हवे मिथ्यादृष्टि होय ते अनुभव शिवाय कर्मनो कर्त्ता होयज ते कहे छेः— अथ मिथ्यादृष्टि कर्तृत्व कथनः—

॥ दोहाः ॥— निशिदिन मिथ्या भाव बहु, धरै मिथ्याती जीव; ताते भावित करमको, करता कह्यो सदीव. ॥ ३१ ॥

अर्थः— रात ने दिवस पोतानी भूलनेविषे मिथ्यात्वी जीव होय ते फलाणुं में कीधुं में लीधुं, आमारुं इत्यादिक मिथ्या भाव धारे ते माटे अशुद्ध चेतनाजे छे ते विभावित कर्मछे तेनो कर्त्ता सदीव के० निरंतर कह्यो. ॥ ३१ ॥

हवे ज्ञानी अने मूढ करम करे छे, ते एक सरखां देखाय छे, तथापि मूढ जीवने

कर्मनो कर्त्ता कह्यो ने ज्ञानी जीवने कर्मनो अकर्त्ता कह्यो तेनुं कारण कहे छेः—अथ मूढ कर्मको कर्त्ता ज्ञाता अकर्त्ता यहु कथनः—

॥ चोपाईः ॥— करै करम सोई करतारा; जो जानै सो जाननहारा; जो कर्त्ता नहि जानै सोई; जानै सो करता नहि होई. ॥ ३२ ॥

अर्थः— जे कर्मने करे तेज कर्त्ता कहेवाय अने जे जाणेछे तेने तो जाणनार कहीये; जे कर्त्ता छे तेज जाणनार नथी अने जे जाणनार छे ते कर्त्ता नथी ॥ ३२ ॥

हवे जे जाणनार छे ते अकर्त्ता छे ते समजावे छेः—अथ ज्ञाता अकर्त्ता कथनंः—

॥ सोरठाः ॥— ज्ञान मिथ्यात न एक, नहि रागादिक ज्ञानमहि; ज्ञान करम अतिरेक, जो ज्ञाता करता नही. ॥ ३३ ॥

अर्थः—ज्ञान भाव अने मिथ्यात्व भाव एक कहेवाय नही; अने रागादिक जे राग द्वेष मोह इत्यादिक भाव ज्ञानमां होय नही; एथी ज्ञान जे छे ते कर्मथी अतिरेक के० जुदुं छे, तेमाटे जे ज्ञाता होय ते कर्त्ता न होय ॥ ३३ ॥

हवे जे मिथ्यात्वी जीव छे ते पुद्गलद्रव्य रूप कर्मनो अकर्त्ताज छे अने भाव कर्मनो कर्त्ता छे ते कहेछेः-- अथ जीवद्रव्य कर्मको अकर्त्ता यहु कथनः--

॥ छप्पयछंदः ॥-- करम पिंड अरु राग, भाव मिलि एक होहि नहि; दोऊ भिन्न स्वरूप, वसहि दोऊ न जीवमहि; करम पिंड पुद्गल विभाव रागादि मूढ भ्रम; अलख एक पुग्गल अनंत किम धरहि प्रकृति सम; निज निज विलास जुत जगत महि, जथा सहज परिनमहि तिम; करतार जीवजड करमको, मोह विकल जन कहहि इम ॥ ३४ ॥

अर्थः-- पुद्गल द्रव्य रूप कर्म पिंड अने राग द्वेषादिक भाव ए बंने मलीने एक रूप थाय नही, ए बंने भाव भिन्न स्वरूपमां छे, पण ए बेउ भाव जीवमां रहेता नथी. एनो विवरो कहेछेः-- कर्मपिंड छे तेतो पुद्गलरूपी छे. अने जे रागादिक विभाव छे तेतो मूढ जीवनो भ्रम छे; अलख जीव छे तेतो एकता लीधे रह्यो छे अने पुद्गल अनंतताने लेई रह्याछे. तो कर्मनुं कर्त्तापणुं एवी सम प्रकृति बेउ केम धारण करशे? जगत्मां सर्व कोई पोतपोताना स्वभाव विलासमां युक्त थई रह्याछे, जेवो पोतानो सहज स्वभाव छे तेवोज परिणमी रह्यो छे ए न्यायनी वात छे, तेथी जड रूपी कर्मनो कर्त्ता जीव छे, एवुं वचन जे जीव मोहथी विकल होय छे ते कहेछे ॥ ३४ ॥

हवे सम्यक् प्रकारे करीने सिद्धांत समजावेछे. अथ सम्यक्त्व प्रभाव कथनः--

॥छप्पयछंदः॥— जीव मिथ्यात न करै, भाव नहि धरै भरम मल; ज्ञान ज्ञान रस रमै, होइ करमादिक पुद्गल; असंख्यात परदेश, सकति जगमें प्रगटे अति; चिद्‌ वि

लास गंभीर, धीर थिर रहै विमल मति; जब लगि प्रबोध घटमहि उदित, तब लग अनय न पेखियै; जिम धरमराज वरतांतपुर, जह तह नीति परेखिये ॥ ३५ ॥

अर्थः— जीव छे ते मिथ्यारूपी कर्म करे नही, एनो हेतु कहेछे के, भ्रम मल रूपी जे भार छे तेने ए जीव धारण करे नही. अने ज्ञान ज्ञाननाज रसमां रमे एटले ज्ञातापणामां रहे. अने कर्मादिक जे ज्ञानावरणादिक राग द्वेषादिक तेतो पुद्गलसाम ग्रीछे. अने ए जीवना तो असंख्यात प्रदेशनेविषे एवी शक्ति अति प्रगटपणे जग मगी रही छे. ते कहीये छइये के, चिद्विलास के० ज्ञान विलासनेविषे गंभीरछे, धीर ने विमल मतिवंत थको स्थिरता थई रह्यो छे; एवुं प्रबोध सम्यग् ज्ञान जां सुधी घट पिंडमां प्रकाशमान थई रह्युं छे त्यांसुधी अनय के० अन्याय स्वरूपने दे खीये नही, ते उपर दृष्टांत कहेछे जेम पुर नगरमां धर्मराज वर्त्तता थका जहां तहां नीतिज जोवामां आवे ॥ ३५ ॥

॥ इति श्रीसमयसार नाटक कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार तृतीय बालबोध सहित समाप्तं ॥

॥ दोहराः ॥— करता किरिया करमको, प्रगट बखान्यो मूल; अब बरनौं अधिकार यह, पाप पुण्य समतूल ॥ ३६ ॥

अर्थः— कर्त्ता क्रिया अने कर्म एउनुं मूल के० रहस्य ते प्रगट करी वखाण्युं. हवे पाप अने पुण्य ए बने बराबर छे तेनो अधिकार वर्णन करुं छुं ॥ ३६ ॥

हवे पाप पुण्य द्वार विषे प्रथम ज्ञानचंद्रनी कलाने नमस्कार करेछेः—

अथ ज्ञानचंद्र कला वर्णनंः—

॥कवित्तछंदः॥—जाके उदै होत घटअंतर, विनसै मोह महातम रोक; सुभ अरु असुभ करमकी दुबिधा, मिटे सहज दीसे इक थोक; जाकी कला होतु संपूरन, प्रतिभासै सब लोक अलोक; सो प्रबोध शशि निरखि बनारसि, सीश नमाइ देतु पग धोक ॥३७॥

अर्थः— जे प्रबोध चंद्रना प्रकाशवाथी समान घटमां जे मोहरूप महातम के० घोर अंधकारनुं रोक जे अटकाव ते नाश पामे, अने जेम अंधकार गयाथी एक कर्म शुभ अने एक कर्म अशुभ एवी जे कर्मने विषे द्विविधा छे ते मटी जाय, अने स हज भावे कर्म बंधरूप छे एवुं एक थोक देखाय अने जेने प्रबोधचंद्रनी सर्व संपूर्ण कला प्रगट थयेथके सर्व लोकालोकनो प्रतिभास थाय ते प्रबोधरूपी चंद्रकलाने नि रखीने बनारसीदास माथुं नमावीने पगधोकदेतुहे के० प्रणाम करेछे. ॥ ३७ ॥

हवे मोहमां शुभ अशुभ कर्मनी द्विविधता देखायछे ते एकरूपपणे देखाडेछेः—

अथ शुभाशुभ एकत्वीकरनः—

॥सवैया इकतीसा॥—जैसे काहु चंडाली जुगल पुत्र जने तिन्ह, एक दियो बामन कूं एक घर राख्यो है; बामन कहायो तिन्ह मद्य मांस त्याग कीनो, चंमाल कहायो तिन मद्य मांस चाख्यो है; तैसे एक वेदनी करमके जुगल पुत्र, एक पाप एक पुण्य नांउ भिन्न भाख्यो है; ड्हों माहिं दोरधुप दोउ कर्म बंधरूप, याते ज्ञानवंतने न कोउ अभिलाख्यो है. ॥ ३७ ॥

अर्थः— जेम कोई चंमालनी स्त्री जुगल पुत्र के० बे पुत्र जणे ने पछी एक छोकरो ब्राह्मणने आपे, ने एक छोकरो पोताना घरमां राखे, हवे जे छोकरो ब्राह्मणना घरमां उछरे ते ब्राह्मण केहेवाय, ने ते मद्य मांसनो त्याग करे, जे चंमालना घरमा रहे ते चंमाल केहेवाय, ने ते मद्य मांस पण चाखे, ते रीते एक वेदनीय कर्मनां बे पुत्र छे, एक पाप ने बीजो पुण्य, एवां जुदां जुदां नाम कह्यांछे, पण बंनेनो स्वभाव एक छे, एटले बेउने विषे दोरधूप के० वेदनानी सत्ता छे. एटले खेदसंताप छे वली पापने पुण्य ए बेउ कर्म बंधरूप छे, एटला वासते ज्ञानीजने ए बेउमांथी कोइनो पण अभिलाष कीधो नथी. ॥ ३७ ॥

हवे पाप तथा पुण्य ए बेउने समान कह्यां तेउपर शिष्य प्रश्न पूछेछेः—

अथ शिष्य प्रश्नः—

॥ चोपाईः ॥— कोऊ शिष्य कहै गुरु पांही; पाप पुण्य दोऊ सम नांही; कारन रस सुभाव फल न्यारे; एक अनिष्ट लगे इक प्यारे. ॥ ३९ ॥

अर्थः— कोई शिष्य गुरुनी पासे आवी कहे के, स्वामी पाप ने पुण्य ए बेने समान कह्यां पण ते समान देखातां नथी केमके, ए बेनां कारण, रस, स्वभाव तथा फल ते तो जुदां जुदां छे; वली एमांथी एक प्रिय लागे छे, ने एक अप्रिय लागे छे. ॥ ३९ ॥

हवे शिष्य ए बेउनां कारण प्रमुख जुदां जुदां कहे छेः— अथ शिष्य कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— संकिलेस परिनामनिसों पाप बंध होइ, विशुद्धसों पुन्य बंध हेतु भेद मानिये; पापके उदे असाता ताको है कटुक स्वाद, पुन्य उदे साता मिष्ट रस भेद जानिये; पाप संकिलेस रूप पुन्यहिं विशुद्ध रूप, दुहूंको सुभाउ भिन्न भेद यों बखानिये; पापसों कुगति होय पुन्यसों सुगति होय, ऐसो फल भेद परतछ परवानिये. ॥ ४० ॥

अर्थः— तीव्र कषायमय जे परिणामछे तेनुं नाम संक्लेश परिणाम, तेणे करीने पापनो बंध थायछे; अने कषायनुं जे मंदपणुं तेने विशुद्ध कहिये; तेवडे पुण्यनो बंध थाय; एवा हेतु एटले कारण भेद मानिये छइये. अने पापना उदयथी अशाता थाय

छे, तेनो स्वादतो कटुक होय छे. ने पुण्यना उदयवडे शाता उपजे छे, तेनो मिष्ट स्वाद होय छे. एटले पाप ने पुण्य ए बेउने विषे रसभेद थयो; वली पापकर्म क्लेश रूप छे, तीव्र कषाय रूप छे; अने पुण्य कर्म विशुद्ध रूप छे. मंद कषायरूप छे; ए बंने कर्मनो भिन्न भिन्न स्वभाव थयो, ते एज उपरथी ए बंने कर्मनो भेद वखाणीये छइयें; अने पापथी कुगति के० नर्क गति तिर्यंच् गति, थाय छे, अने पुण्यवडे मनुष्यगति, देवगति एवी सुगति थाय छे; ए रीते पाप पुण्यरूप कर्मनेविषे फलनो भेद प्रत्यक्ष प्रमाणथी छे.॥४०॥

हवे शिष्यना प्रश्ननो गुरु उत्तर करे छेः— अथ गुरु उत्तर वचन यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— पाप बंध पुन्य बंध दुहूमें मुगति नांहि, कटुक मधुर स्वाद पुग्गलको पेखिये; संकिलेस विशुद्धि सहज दोउ कर्म चालि, कुगति सुगति जग जालमें विशेखिये; कारनादि भेद तोहि सूझत मिथ्यातमांहि, ऐसो द्वैत भाव ज्ञान दृष्टिमें न लेखिये; दोउ महा अंधकूप दोउ कर्म बंध रूप, दुहू को विनास मोष मारगमें देखिये. ॥ ४१ ॥

अर्थः— पापनो पण बंध थाय ने पुण्यनो पण बंध थायछे; ने ज्यां बंध होय त्यां मुक्ति न होय, एटले बेउथी मुक्ति नही ते माटे बेउ समान छे; अने जे कटुक रसमां पाप छे ने मधुर रसमां पुण्य छे ए बेउ रस पुद्गलना छे तेथी पापने पुण्य समानज छे. वली जे संक्लेश स्वभावने लीधे पाप छे, ने विशुद्ध स्वभावथी पुण्य छे; पण ए बेउ स्वभाव जे छे ते कर्मनी चाल छे. अने कुगति तथा सुगति ते पाप पुण्यनां फल छे, ते भेदवडे जगत् जालनी विशेषता छे, तेथी पाप पुण्य समानज छे. अरे! शिष्य! तने जे पाप पुण्यना कारणादि भेद तेणे करीने पाप पुण्यनो द्वैत भाव के० द्विविध भाव सूजे छे, ते तो मिथ्यामतिमां सूजे छे; पण ज्ञान दृष्टि करी जोतां तो ए द्वैतभाव देखाशे नही. ए बेनेविषे आत्मानुं अवलोकन नथी, तेथी ए बेउ महा अंधकूप छे, अने ए बेउ कर्म छे; ते बंधरूप छे अने मोक्षमार्गने विषे ए बेउनो विनाश देखीये छीए तेथी ए बेउ समान छे ॥ ४१ ॥

हवे मोक्ष मार्गनेविषे बेउनो विनाश बतावे छेः— अथ मोक्ष पद्धति कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— सील तप संजम विरति दान पूजादिक, अथवा असंजम कषाय विषै भोग है; कोउ शुभरूप कोउ अशुभ सरूप मूल, वस्तुके विचारत दुविध कर्म रोग है; ऐसी बंध पद्धति बखानी वीतराग देव, आतम धरममें करम त्याग जोग है; भौजल तरैया राग दोषको हरैया, महा मोषको करैया एक शुद्ध उपयोग है. ॥ ४२ ॥

अर्थः— ब्रह्मचर्य तप, पंचेंद्रिय निग्रह, संवर, दान पुजाप्रमुख क्रिया; पुण्य एवंध

नां कारण कर्म छे. अथवा पापना कारण असंयम कषाय अने विषय भोग छे. ए वेउमां कोई शुभरूप कार्य छे, अने कोई अशुभरूप कार्य छे; पण वस्तुनुं मूल विचारतां तो वेउए कर्म रोग छे; एटले वेउ प्रकारनो कर्म रोग छे; एवी बंधनी पद्धति के० एक ढंगी ते वीतराग देवे वखाणी; पण आत्मिक धर्ममां एटले आत्मानो स्वभाव जोतां कर्म क्रिया त्यागवा योग्य छे; एवा पापपुण्यने हेय कहेनार, अने भवजल ने तरनार, राग द्वेषने हरनार तथा महा मोक्षनो करनार एक शुद्ध उपयोग उपदेश छे.॥४२॥

हवे अर्धा सवैयामां शिष्य प्रश्न करेछे, ने अर्धा सवैयामां गुरु तेनो उत्तर वाळे छेः– अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– शिष्य कहै स्वामी तुम करनी शुभ अशुभ, कीनी है निषिद्ध मेरे संसो मनमांहि है; मोषके सधैया ज्ञाता देसविरती मुनीस, तिन्हकी अवस्था तो निरावलंब नांहि है; कहै गुरु करमको न्यास अनुभौ अभ्यास ऐसो अवलंब उन्हहीको उनमांहि है; निरुपाधि आतम समाधि सोइ शिवरूप, और दौर धूप पुदगल परछांहि है. ॥ ४३ ॥

अर्थः– शिष्य पूछेछे हे स्वामी, तमे तो मोक्ष मार्गमां शुभने अशुभ करणी वेउनो निषेध कीधो, तेनो मारा मनमां संदेह पडेछे; केमके मोक्षमार्गना साधक ज्ञाता देश विरती पंचम गुण स्थान वर्त्ति थया अने मुनीश के० षष्ट सप्तम गुणस्थानवर्त्ति सर्व विरती थया, तेमनी अवस्था तो निरालंबन नथी, एटलेपोतपोतानी शुद्ध क्रियाना आलंबनने लेईने देश विरती सर्व विरती कहेवायछे, त्यारे करणी निषिद्ध केम थई? हवे गुरु कहेछेः– जेवो अक्षरनो न्यास मांड्यो तेवुं श्रुत ज्ञाननुं आलंबन होय तेम शुभ कर्मनो न्यास तेतो जोवामां छे पण ते अनुभवनोज अभ्यासछे, ते अनुभव अभ्यासरूप आलंबन ते तो ज्ञातानुं ज्ञाता पासेज छे, अने तेमां निरुपाधि के० राग द्वेष कषाय इत्यादिकविना आत्मानी जे समाधीछे, एटले जे पर रूपने विषे निरुपयोगीपणे रहेवुं तेज शिवरूप, के० मोक्षरूपछे अने जे दोरधूप के० खेद संताप जेछे ते तो पुद्गलनी परिछांही के० छांयाछे ॥ ४३ ॥

हवे एज शुभ क्रियाविषे बंध अने एज शुभ क्रियाविषे मोक्ष ए वेउ स्वरूप कही बतावेछेः– अथ बंध मोक्ष स्वरूप कथनः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– मोछसरूप सदा चिनमूरति, बंधमई करतूति कही हैः जावतकाल वसै जह चेतन, तावत सो रसरीति गही है; आतमको अनुभौ जवलों तव शिव रूप दसा निवही है; अंध भयो करनी जव ठानत, बंधविथा तव फैलि रही है ॥ ४४ ॥

अर्थः– चिन्मूर्त्ति के० चिदानंद छे ते तो सदा मोक्ष स्वरूप छे, अने करतूती के० क्रिया तेतो सदा बंधमयछे. यावत् काल के० जेटला काल सुधी चेतन ज्यां वसे तावत्काल के० तेटला काल सुधी तेज रसरीति ग्रहण कीधी छे, एटले तेज रसमां रहेछे; एटले ज्यांसुधी आत्मानो अनुभव रहे त्यां सुधी शुभ क्रिया करतां छतां शिवपद दशा निवही एटले मोक्ष स्वरूपमां रहे, अप्रमतता कहेवाय; अने पोतानुं स्वरूप भुलीने अंध थयो थको ज्यारे करणीनोज रस छरावे त्यारे तो बंधनाज कष्ट रोग फेलावे छे ॥ ४४ ॥

हवे मोक्षप्राप्तिनुं कारण कहेछेः–अथ मोक्ष मार्ग निरूपणंः–

॥ सोरठाः ॥– अंतर् दृष्टि लखाउ, अरु सरूपको आचरण; ए परमातमभाउ, शिवकारन एई सदा ॥ ४५ ॥

अर्थः– बाह्य दृष्टि छांडीने अंतरदृष्टि आपीने अलक्षनो जापकरवो, अने तेना स्वरूपनुं आचरण करवुं, एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्रने आचरिये, तेथकी परमात्मभावसिद्ध थाय; सदाकालनेविषे एज मोक्षनुं कारण छे ॥ ४५ ॥

हवे बाह्य दृष्टिवडे बंध पद्धति थाय ते कहे छेः– अथ बंध मार्ग निरूपणंः–

॥ सोरठाः ॥– करम शुभाशुभ दोइ, पुद्गल पिंड विभाव मल; इनसों मुगति न होइ, नांही केवल पाइए ॥ ४६ ॥

अर्थः– शुभकर्म ते पुण्य ने अशुभ कर्म ते पाप ए बेउ कर्मछे, पुद्गलना पिंड छे, अने विभाव जे राग द्वेषादिक मलरूप छे ए बेउनेविषे दृष्टि रहेवाथी मुक्ति थाय नहीं, अने केवलज्ञाननुं पद पामिये नहीं ॥ ४६ ॥

ए वात उपर शिष्य प्रश्न करे छे, ने तेनो उत्तर गुरु दिये छेः–

अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोउ शिष्य कहे स्वामी अशुभ क्रिया अशुद्ध, शुभ क्रिया शुद्ध तुम ऐसी क्यों न वरनी ?; गुरु कहै जवलों क्रियाको परिणाम रहै, तवलों चपल उपयोग योग धरनी; थिरता न आवै तोलों शुद्ध अनुभो न होइ, याते दोउ क्रिया मोष पंथकी कतरनी; बंधकी करैया दोऊ दुहूमें न भली कोऊ, बाधक विचारमें निषिद्ध कीनी करनी ॥ ४७ ॥

अर्थः– कोई शिष्य पूछे छे के हे स्वामी ! तमे एवुं वर्णन केम करता नथी के अशुभ क्रिया जे हिंसादिक ते अशुद्ध छे अने शुभ क्रिया जे दया दानादिक ते शुद्धछे? त्यारे गुरु उत्तर आपेछे के अहो शिष्य! ज्यांसुधी क्रियाना परिणाम रहे छे त्यां सुधी उपयोगनी धरनी के० क्षेत्री एटले उपयोगवंत आत्मा चंचल रहे छे. ज्यांसुधी

क्रियामां उपयोग रहे त्यांसुधी आत्मानी स्थिरता थाय नहीं, अने आत्मानो शुद्ध अनुजव होय नहीं, ए उपरथी ए पुण्य पापनी बेउ क्रिया छे ते मोक्षमार्गनी कतरणी समान छे; बंधनी करनारछे एथी बेउ क्रियामां एक पण जली नथी. ज्यां मुक्तिमार्गनो बाधक विचारे त्यां बेउ क्रिया निषिद्ध कीधी छे ॥ ४७ ॥

हवे मात्र ज्ञान मोक्षनो मार्ग छे ते कहे छेः– अथ ज्ञान मोक्ष मार्ग यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– मुकतिके साधककों बाधक करम सब, आतमा अनादिको करममांहि लुक्यो है; एते परि कहै जो कि पाप बुरो पुण्य जलो, सोइ महा मूढ मोछमारगसों चुक्यो है; सम्यक् सुजाउ लिये हियेमें प्रगट्यो ज्ञान, उरध उमंगि चल्यो काहूपे न रुक्योहै; आरसीसो उज्वल बनारसी कहत आपु, कारन सरूप व्हैके कारजकों ढुक्यो है ॥ ४८ ॥

अर्थः– जे आत्मा मुक्तिनो साधक छे, तेने सर्व कर्म बाधक छे; एथीज अनादि कालनो आत्मा कर्ममां लुक्यो एटले दबाई रह्यो छे; एम छतां पण जो कोई एवुं कहेके, पाप कर्म नठारुं छे, ने पुण्य कर्म सारुं छे, तेने महा मूढ जाणवो; ने ते मोक्ष मार्गथी चुक्यो छे, एम जाणवुं. एवामां कोईने जव्यत्व परिपाक थकी सम्यक् स्वजावनी प्राप्ति थइ तेवारे हीयामां ज्ञान प्रगट्युं तो ते ऊर्ध्व दशा तरफ उमंगे करीने चाल्यो, पण कोई कर्मथी रोकायो रह्यो नही. ते आरीसानी पठे उज्वल थईने निज ज्ञानोपयोगीपणे कारण स्वरूपी थईने पोताना मुक्तिरूप कार्यने पोतेज ढुके छे, एवुं बनारसी दास कहे छे ॥ ४८ ॥

हवे ज्ञाननो तथा कर्मनो विवरो बतावेछेः– अथ ज्ञान तथा कर्म विवरनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जोलों अष्ट कर्मको विनास नाही सरबथा, तोलों अंतरातमामें धारा दोई वरनी; एक ज्ञानधारा एक शुजाशुज कर्मधारा, दुहूकी प्रकृति न्यारी न्यारी न्यारी धरनी; ग्यान धारा मोछरूप मोछकी करन हार, दोषकी हरन हार जौ समुद्र तरनी; इतनो विशेष जु करमधारा बंधरूप, पराधीन सकति विविध बंध करनी. ॥ ४९ ॥

अर्थः– ज्यां सुधी आठ कर्मनो सर्वथा विनाश थतो नथी त्यांसुधी मुक्ति न होय अने त्यांसुधी अंतरात्मा थकी बे धारा वहेछे; तेमां एक ज्ञाननी धारा ने बीजी शुजाशुज कर्मनी धारा. ए बंनेनी प्रकृति जुदी जुदी छे, अने धरनी के० क्षेत्र ते पण जुदुं जुदुं छे. एमां एटलुं विशेष छे के जे कर्मधारा छे ते बंधरूप छे; अने जडपणाने लीधे एनी शक्ति पराधीनरूपछे अने प्रकृतिबंध, स्थितिबंध तथा रसबंध एवा जात जा

तना बंधनी करनारीछे; अने ज्ञानधारा मोक्षस्वरूप छे; मोक्षनी करनारी छे; ने दोष मात्रनी हरनारी छे अने भवसमुद्र तरवाने तरनी के० नाव समान छे. ॥ ४९ ॥

हवे मोक्ष कर्त्ता जे ज्ञान क्रिया एवो जे स्याद्वाद तेनी प्रशंसा करेछेः–

अथ स्याद्वाद प्रशंसाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–समुझै न ज्ञान कहै करम कियेसौं मोक्ष, ऐसे जीव विकल मिथ्यातकी गहलमें; ज्ञान पक्ष गहै कहै आतमा अबंध सदा, बरते सुछंद तेउ बूडे है चहलमें; जथाजोग करम करे पैं ममता न धरै, रहै सावधान ज्ञान ध्यानकी टहलमें; तेई भवसागरके उपर व्है तरै जीव, जिन्हको निवास स्याद्वादके महलमें ॥ ५० ॥

अर्थः– क्रियावादी कहेछे के, "न ज्ञान श्रेय" एनो अर्थ एछे के ज्ञान भलुं नथी. जेमां संशय उपजे छे, अने संशय थया थकी जीव अहींनो नहीं ने तहींनो पण नहीं एवो थाय छे, माटे क्रिया कर्म करवाथीज मोक्ष छे, एम विकल थयलो जीव मिथ्यात्वनी गहलमां कहेछे. हवे जे ज्ञानवादी सांख्यमती छे ते ज्ञाननोज पक्ष ग्रहीने रहेछे ने एवुं कहेछे के बंध ने मोक्ष प्रकृतिने विषेज छे, पण आत्मा तो सदा अबंध पणे वर्त्ते छे; एवी श्रद्धावडे स्वछंद के० पोतानी मरजीमां आवे तेम चालेछे, तेउ चहल के० कर्दममां बूडेला छे. अने जे स्याद्वादी छे ते कोईना विरोधी नथी, तेथी यथायोग्य एटले गुण ठाणा माफक कर्म क्रिया करेछे, पण कर्मने उदय दशामां राखे छे, अने ममताने धरता नथी, ज्ञान ध्याननी सेवामां सावधान रहे छे; एवा स्याद्वादी जीव उपर थइ रह्या थका भवसागर तरेछे, जेनो निवास स्याद्वाद रूपमेहेलमां छे. ॥ ५० ॥

हवे मूढनी तथा विचक्षणनी क्रियानुं वर्णन करे छेः– अथ मूढविचक्षण क्रिया वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे मतवारो कोउ कहै और करै और, तैसे मूढ प्रानी विपरीतता धरतु है; अशुभ करम बंध कारन वखानै माने, मुगतिके हेतु शुभ रीति आचरतु है; अंतर सुदृष्टि भई मूढता विसरि गई, ज्ञानको उद्योत भ्रम तिमिर हरतु है; करनसों भिन्न रहै आतम सरूप गहै, अनुभौ आरंभि रस कौतुक करतु है. ॥ ५१ ॥

अर्थः–जेम कोई मतवारो पुरुष कहे कई अने करे कई तेम मूढ प्राणी उलटोज भाव धारे छे, एटले अशुभ कर्मने बंधनुं कारण समजे अने मुक्तिनो हेतु शुभ रीत के० शुभ क्रियाने आचरेछे. हवे ज्ञानीने अंतर सुदृष्टि थई तेथी मूढता मटी गई ने ज्ञाननो उद्योत थयो; तेणे करीने भ्रमरूप तिमिरनो नाश थयो, त्यारे मुक्तिनुं कारण जे शुभ क्रिया छे तेथी ते ज्ञानी भिन्न रहे, ममतान धरे, अने आत्मानुंज स्वरूप ग्रही आत्माना अनुभवना आरंभना रसनुं कौतुक करे छे. ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटकको पुण्य पाप एकत्वी कथन चतुर्थ द्वार संपूर्णः॥

॥ दोहराः॥–पुन्य पापकी एकता, वरनी अगम अनुप; अब आश्रव अधिकार कहुं, कहों अध्यातम रूप. ॥ ५२ ॥

अर्थः– पाप पुण्यनी एकता तो अगम छे अने अनुपम छे तेनुं वर्णन कीधुं, हवे कइंक आश्रवनो अधिकार छे ते कहुंबुं अने अध्यात्मनुं स्वरूप कहुबुं ॥ ५२ ॥

आश्रव सुभटनो नाश करनार ज्ञान सुभटने नमस्कार करे छेः–अथज्ञानबल वर्णनंः-

॥ सवैका इकतीसाः॥– जे जे जगवासी जीव थावर जंगम रूप, ते ते निज वस करी राखै बल तोरिके; महा अभिमानी ऐसो आश्रव अगाध जोधो, रोपि रनथंभ ठाढो भयो मूछ मोरिके; आयो तिहि थानक अचानक परमधाम, ज्ञान नाम सुभट सवायो बल फोरिके; आश्रव पछार्यो रनथंभ तोरि डार्यो ताहि, निरखी बनारसी नमत कर जोरिके. ॥ ५३ ॥

अर्थः– जे जे थावर जंगमरूप जगत्वासी जीव छे, तेना सहज बल ने तोडीने ते ते जीवोने आश्रव जोधाए पोताने वश करी राख्याछे, एवो महा अभिमानी आश्रवरूपी अगाध जोद्धो जगत्मां रहे छे, ते रणथंभ रोपीने मूछ मरोडीने ठाढो थयो छे; ते एम कहेछे के, जगत्मां मने जीते एवो कोइ नथी. ते स्थले अचानक परम धाम के० अति तेजस्वी ज्ञान नामनो सुभट उपला आश्रव जोद्धानो प्रतिपक्षी ते सवायो बल फोरवीने लडवाने आव्यो; तेणे आश्रव सुभटने पछाड्यो अने तेनो रणथंभ तोडी नाख्यो. एवा ज्ञान सुभटने निरखीने बनारसीदास हाथ जोडी नमस्कार करेछे ॥५३॥

हवे द्रव्यरूपी आश्रव अने भावरूपी आश्रवनां लक्षण कहेछेः– अने सम्यग् ज्ञाननुं लक्षण पण कहेछेः– अथ द्विविध आश्रव लछन तथा ज्ञान लछन वर्णनंः–

॥ सवैया तेइसाः॥–दर्वित आश्रव सो कहिये जहिं पुग्गल जीव प्रदेस गरासै; भावित आश्रव सो कहिए जहिं राग विरोध विमोह विकासै; सम्यकपद्धति सो कहिये, जहिं दर्वित भावित आश्रव नासै;ज्ञानकला प्रगटै तिहि थानक,अंतर् बाहरि और न भासे॥५४॥

अर्थः–ज्यां पुग्गल द्रव्य छे ते जीवना सर्व प्रदेशने ग्रासेछे के० गली जायछे, ते द्रवित आश्रव जाणीये. अने ज्यां द्रवित आश्रवना प्रसंग थकी आत्माने विषे राग द्वेष विमोहनो विकाश थाय त्यां भावित आश्रव कहीये, अने ज्यां आत्माने विषे सम्यक् पद्धति के० सम्यक् स्वरूप कहिये त्यां तेने द्रवित आश्रव अने भावित आश्रवनो नाश थाय्यारटले सम्यक् पद्धतिनेविषे ज्ञान कला प्रगटे, तेथी अंतर्भावाश्रव मां वाह्यिछे. एमां एवां बीजुं भासे नही, सम्यक्ज दीठामां आवे ॥ ५४ ॥

ज्ञेनी शक्ति पराधीन धणी जे ज्ञाता तेनुं लक्षण कहेछे. अथ ज्ञाता लक्षणंः–

॥ चोपाई छंदः॥–जो दरबाश्रवरूप न होई, जह्र भावाश्रव भाव न कोई; जाकी दशा ज्ञानमय लहिये, सो ज्ञातार निराश्रव कहिये ॥ ५५ ॥

अर्थः– जे द्रव्याश्रवना स्वरूपमां होय नही, अने ज्यां भावाश्रवनो पण भाव कोई नथी, अने जेनी दशा ज्ञानमय होय, तेज जीव ज्ञानी अने आश्रवरहित कहिये.

हवे ज्ञातानी समर्थाईथी निराश्रवपणुं देखाडे छेः–अथज्ञाताकोसमर्थपणोवर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जेते मन गोचर प्रगट बुद्धि पूरवक, तिन परिनामनकी ममता हरतु है; मनसा अगोचर अबुद्धि पूरवक भाव, तिन्हिके विनासवेको उद्यम धरतु है; याहि भांति परपरिनतिको पतन करे, मोखको जतन करै भौजल तरतु है; एसै ज्ञानवंत ते निराश्रव कहावै सदा, जिन्हको सुजस सुविचक्षण करतु है ॥ ५६ ॥

अर्थः– जेटला परिणाम प्रगट मनगोचर छे, एटला जिन परिणामने मनमां संभारेछे, जाणे छे, अने बुद्धिपूर्वक के० पोतानी अहं बुद्धिवडे जे अशुद्ध परिणाम उपजेछे, ते परिणामनी ममता छांडे छे; अने जे भाव मनथी अगोचर के० जेनुं स्वरूप मनवडे देखाय नही, अने अबुद्धि पूर्वक के० जेने बुद्धिनो प्रचार लागे नही, एवा अनागत कालना जे अशुद्ध परिणाम, तेनो विनाश करवाने उद्यम करे छे, ए रीते परपरिनति के० पर वस्तुनो जे परिणाम जे अतीत कालमां थयो छे, वर्त्तमान कालमां छे, अनागत कालमां थशे, तेनुं पतन करे. अने मोक्ष के० तेथी छुटवुं तेनुं जतन करे, ते भव सागरथी तरे, एवा जे ज्ञानवान् प्राणी छे तेतो सदा निराश्रव कहेनांवाय, जे सुजश ने स्तुति ते पंडित पुरुषो गायछे ॥ ५६ ॥

ज्ञानीने निराश्रव कह्या तेउपर शिष्य प्रश्न करेछेः– अथ शिष्य प्रश्न कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– ज्यों जगमें विचरै मतिमंद सुछंद सदा वरते बुध तैसे; चंचल चित्त असंजत वैन, सरीर सनेह जथावत जैसे; भोग सजोग परिग्रह संग्रह मोह विलास करै जहाँ ऐसे, पूछत शिष्य आचारजसों यह, सम्यकवंत निराश्रव कैसे?॥५७॥

अर्थः– जेम मतिमंद के० अज्ञानी जन जगतमां स्वछंद के० मरजी मुजब वर्त्ते, तेम पंडित पण सदा तेवी रीते वर्त्ते, ते आवी रीते चंचल चित्तवाला रहे, असंजत वेन के० विचारविना वचन बोले, अने शरीर स्नेहने प्रवर्त्तावे, अने अज्ञानीनी माफक भोगसंयोग राखे, परिग्रहनो संग्रह करे, अने ज्ञान अवस्थामां मोहविलास एवो ज करे, ए रीते अज्ञानीनी अने ज्ञानीनी एक सरखी रीति जोईने शिष्य आचार्यने पूछेछे के, एने सम्यक्त्ववंत निराश्रव केम कहिये ? ॥ ५७ ॥

हवे ए प्रश्ननुं उत्तर गुरु आपेछेः– अथ गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– पूरव अवस्था जे करमबंध कीने अब, तेई उदै आई नाना

ज्ञांति रस देत हैं; केई शुज्ञ शाता केइ अशुज्ञ अशातारूप, ज्हुसों न राग न विरोध सम चेत हैं; यथा योग क्रिया करै फलकी न इछा धरै, जीवन मुगतिको विरुद गहिलेत हैं; यातें ज्ञानवंतकों न आश्रव कहत कोउ, मुरूतासों न्यारे ज्ञये सुरूता समेत हैं. ॥ ५८ ॥

अर्थः—पूर्वकालमां अज्ञान अवस्थानेविषे जे जे कर्मबंध कीधेलां होय, तेज कर्मो वर्त्तमान कालमां उदय आवीने नाना प्रकारनो रस आपेछे. तेमां केटलांएक शुज्ञ कर्म ते शातारूप छे, अने केटलांएक अशुज्ञ कर्म अशातारूप छे; एवां बेउ जातनां कर्मनेविषे ज्ञानीने राग अने विरोध नथी, एथी ज्ञानी समचित्त छे. अने यथायोग्य के० उदयमाफक क्रिया करे, पण फलनी इछा राखे नही; ने जीवताज मुक्त थया छे, तेथी जीवन्मुक्तिनुं विरुद धारे छे, ए रीते ज्ञानवंत मनुष्यने कोई आश्रव कहेतुं नथी. ते मूढताथी न्यारो थयो अने शुरूता समेत छे ॥ ५८ ॥

हवे राग, द्वेष, मोह अने ज्ञाननां लक्षण कहेछेः—अथ राग, द्वेष, मोह, ज्ञान लक्षणः—

॥ दोहराः॥— जो हितज्ञाव सु राग है, अनहितज्ञाव विरोध; ज्रामकज्ञाव विमोह है, निर्मल ज्ञाव सुबोध ॥ ५९ ॥

अर्थः—जे हितज्ञाव छे ते राग छे अने अनहितज्ञाव ते विरोध छे; अने ज्रामकज्ञाव छे तेने विमोह कहिये, अने निर्मलज्ञाव ते बोध एटले ज्ञान कहिये ॥ ५९ ॥

हवे राग द्वेषनुं स्वरूप कहेछेः— अथ राग द्वेष कथनः—

॥ दोहाः॥— राग विरोध विमोह मल, एइ आश्रव मूल; एइ कर्म वढाइके, करै धरमकी ज्रूल ॥ ६० ॥

अर्थः— राग, द्वेष ने विमोह जे छे ते आत्माने मल छे, अने एज दोष आश्रवनां मूल छे. अने एज राग द्वेष अने मोह छे. ते कर्मने वधारीने धर्मने ज्रुलावी दिएछे॥६०॥

हवे ज्ञाताने निराश्रव कहेछेः— अथ ज्ञातानिराश्रव कथनः—

॥ दोहाः॥— जहां न रागादिक दसा, सो सम्यक् परिनाम; यातें सम्यकवंतको, कह्यो निराश्रव नाम ॥ ६१ ॥

अर्थः—ज्यां राग, द्वेष, मोहनी दशा न मले तेने सम्यक् परिणाम कहिये, ए उपरथी सम्यक्त्ववंत पुरुषने निराश्रवी नाम आप्युं ॥ ६१ ॥

हवे ज्ञाता जे छे ते निराश्रवणपणामां विलास करेछेः— अथ ज्ञाता कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जे कोई निकट ज्ञव्य रासी जगवासी जीव, मिथ्या मतज्ञेद ज्ञान ज्ञाव परिनये हैं; जिन्हकी सुदिष्टिमें न राग दोष मोह कहूं, विमल विलोकनिमें तीनो जीति लये हैं; तजि परसाद घट सोधि जे निरोधि जोग, शुरू उपयोगकी

दशामें मिलिगये है; तेई बंध पद्धति विडारि पर संग डारि आपुमें मगन व्हैके आ परूप भये हैं ॥ ६२ ॥

अर्थः— जे कोई भव्य राशिमां जगत्वासी जीव छे, ते भव्यत्व परिपाकने लीधे निकट के० पासे थया; ने मिथ्यामतिने भेदीने पोतानुं स्वरूप जे ज्ञान भाव तेने विषे परिणमी रहे छे; जेनी ज्ञानरूपी दृष्टिमां राग, द्वेषने मोह कंइ पामिये नही; अने निर्मल निज स्वभावनी विलोकतामां राग, द्वेषने, मोह ए त्रणेने जीती लीधा छे; अने पांचे प्रमाद तजी पोताना शरीरने साधीने मन, वचन अने कायाने शैलेशीकरणमां निरोध करीने शुद्ध उपयोग दशा जे केवल दशा तेने विषे मली गया, तेवा ज्ञानी बंधनो मार्ग विडारी अने परवस्तुनो संग छोडीने आत्माने विषे मग्न थई आपरूपें थया ॥६२॥

शिष्य पूछेछे के, एम ज्ञाताने विषे निराश्रवपणुं थशे तो आयुष्यपर्यंत ज्ञाता निराश्रवी थशे. गुरु उत्तर आपेछे के, ज्ञातापणुं तो उपशमभावने क्षयोपशम भाववडे चंचल छे ते कहेछेः—अथ उपशमी क्षयोपशमी व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जेते जीव पंडित खयोपशमी उपशमी, तिन्हकी अवस्था ज्यों लुहारकी संडासी है; छिन आगमांहि छिन पानिमांहि तैसे एउ, छिनमें मिथ्यात छिनु ज्ञान कला भासी हैं; जोलों ज्ञान रहै तोलो सिथिल चरन मोह, जैसे कीले नागकी सगति गति नासी है; आवत मिथ्यात तव नानारूप बंध करै, जो उकीले नागकी प्रकृति परगासी है ॥ ६३ ॥

अर्थः— मिथ्यात्वनी गांठ भेद कीधा पछी जे मिथ्यात्वनो अंश उदय आवे छे ते जेनो खपी जाय अनें मिथ्यात्वपुंज उपशम्यो रहे, ते जीव क्षयोपशमी कहिये अने जेने अंतरमुहूर्त्तलगी उपशम्योज रहे तेने उपशमी कहिये. एवा बेउ भाव ते जे जीव पंडित छे तेनी अवस्था ते लुहारनीसाणसी समान छे; जेम साणसी घडीमां लोहने ग्रहण करी आगमां होयछे, ने घडीमां तेहज साणसी लोखंडने ठंडो करवा सारु पाणीनेविषे होयछे; तेम ए क्षयोपशमी अने उपशमी जीव क्षण एकमां मिथ्यात्व भावमां आवे ने क्षणनेविषे ज्ञानकलाना प्रकाशमां रहेछे. एवी अवस्थानेविषे ज्यांसुधी ज्ञानकला रहेछे, त्यांसुधी चारित्र मोहनीयनी पचीस प्रकृति शिथिल के० ढीली थई रहेछे; जेम मंत्रनी जडीए करीने सर्पनी शक्ति—गति शिथिल थई जायछे, तेम ए पण जाणवुं. हवे ए जीवने फरी मिथ्यात्व उदय आवेछे त्यारे तो नाना प्रकारना कर्मबंध करेछे; जेम नागनी उकीलनी करवाथी नागनी पोतानी प्रकृति फरीथी प्रगटे ते रीते जाणवुं. ॥ ६३ ॥

हवे ज्ञानना शुद्धपणानी प्रशंसा कहेछेः—अथ शुद्धनय प्रशंसाः—

॥ दोहा॥—यह निचोर या ग्रंथको, कहै परम रस पोष; तजै शुद्धनय बंध है, गहै शुद्धनय मोष ॥ ६४ ॥

अर्थः—आ समयसारग्रंथनुं रहस्य एज छे अने एज उत्कृष्ट रसनो पोषकछे के जे शुद्धतानी नय रीति छांडी तो बंध छे अने शुद्धतानी नयरीति ग्रही तो मोक्ष छे॥६४॥

हवे बे नयनेविषे जीवनो विलास कही बतावे छेः—अथ जीव विलास वर्ननंः—

॥ सवैया इकतीसा॥—करमके चक्रमें फिरत जगवासी जीव, व्है रह्यो बहिर मुख व्यापत विषमता; अंतर् सुमति आई विमल वडाई पाई, पुद्गलसों प्रीति टूटी छूटी माया ममता; शुद्ध नै निवास कीन्हो अनुभौ अभ्यास लीन्हो, भ्रमभाव छांडिदीनो भिनो चित्त समतां, अनादि अनंत अविकलप अचल ऐसो, पद अवलंबी अवलोके राम रमता ॥ ६५ ॥

अर्थः—चौदराजलोकमां कर्मनुं चक्र के० कटक फरी रह्युं छे, तेमां जगत्वासी जीव पण फरी रह्यो छे, अने ए फरवामां जीव विषमताए युक्त थयो थको क्यारे इष्ट संयोगी ने क्यारे अनिष्ट संयोगी थई ने तेमां वहिर्मुख थई रह्यो, एटले बाह्य विषय भोगनोज ग्राहक थयो, अने अंतरदृष्टिथकी आत्मा न जाण्यो, एटलामां अंतर्नेविषे सुमति उपजी, तेणे करीने पोतानी निर्मल प्रभुताने पाम्यो, त्यारे परवस्तु जे पुद्गल तेनी प्रीति तूटी. एटला कालसुधी पुद्गलनी माया ममता जे नहीं छुटी हती ते छुटी. जेम शुद्धनयवडे आत्मानुं स्वरूप कह्युं, तेवा शुद्धनयमां पोते निवास कीधो, अने आत्मस्वरूपमां उपयोग राखीने अनुभवनो अभ्यास लीधो, एथी भ्रमभावनो त्याग थयो, अने मन जे छे ते समाधिनेविषे लीन थयुं; त्यारथी अनादि अनंत कालसुधी जे स्वरूपमां कंइ बीजा विकल्प न पामिये एवुं पोतानुं अचल पद अवलंबीने पोतानुं जे रमतारामपणुं छे तेने अवलोके ॥ ६५ ॥

हवे आत्मानुं शुद्धपणुं सम्यग् दर्शन छे, तेनी प्रशंसा करे छेः—अथसम्यक्त्वप्रशंसाः—

॥ सवैया इकतीसा॥— जाके परगासमें न दीसे राग दोष मोह, आश्रव मिटत नहि बंधको तरस है; तिहुं काल जामें प्रतिबिंबित अनंतरूप, आपु हु अनंत सत्ता नंततें सरस है; भावश्रुत ज्ञान परवान जो विचारि वस्तु, अनुभो करे जहां न बानीको परस है; अतुल अखंड अविचल अविनासी धाम, चिदानंद नाम ए सो सम्यक दरस है

अर्थः—जे शुद्ध आत्माना प्रकाशमां राग, द्वेष, मोह न देखाय, अने आश्रव न होय तेमां बंधनो तरस के० लागवुं ते पण न होय, अने जे शुद्ध आत्माना प्रकाशमां त्रणे काले अनंतरूप प्रतिबिंबित थाय छे; अने निजस्वरूप पण अनंत छे, अने सत्तानंतमां सरस छे, ते सत्तास्वरूपी अनंत पदार्थ छे, तेथी सरस छे, एटले जेना अनंतपर्याय

सर्व तेज धर्म कहे, अने जावश्रुत ज्ञानने प्रमाण करी वस्तुनो विचार अनुजव करे अने ज्यां वाणीनो स्पर्श नही, एटले जे वचन गोचर नथी, अनक्षररूपनो अनुजव पोते करे, ए संयोगी गुणस्थानकनी दशा छे. जेनी तुलना नथी एटले अतुल; वली जेनी खंडना नथी माटे अखंड, एवुं अचल ने अविनाशी धाम के० तेजोमय तेज चिदानंद स्वरूप छे; एवुं इश्वररूप सम्यग् दर्शननुं स्वरूप कहिये ॥ ६६ ॥

॥ इति श्री नाटक समयसारविषे बालावोधरूप आश्रवद्वार पंचम संपूर्णः ॥

॥ दोहाः॥– अधिकार आश्रवको यह, कह्यो यथावत् जेम; अव संवर वरनन करों, सुनौ जविक धरि प्रेम. ॥ ६७ ॥

अर्थः– ए रीते आश्रवनो अधिकार कह्यो; हवे संवरतत्त्वनुं वर्णन करुंछुं; अहो ! जविक के० जव्य प्राणीर्ज ! प्रेम धरीने ते सांजलो. ॥ ६७ ॥

हवे संवरनुं आदि ज्ञानवस्तु तेने नमस्कार करेछेः– अथ ज्ञान वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– आतमको अहित अध्यातमरहित ऐसो, आश्रव महातम अखंरू अंडवत है; ताको विसतार गिलिवेकों परगट जयो, ब्रह्मंरूको विकासी ब्रह्मंरूवत हे; जामें सवरूप जो सवमें सवरूपसो पें सवनि सों अलिप्त अकाशखंरूवत हे; सौ है ज्ञान जानु शुद्ध संवरको जेष धरे, ताकी रुचि रेखको अमारे दंडवत है॥६८॥

अर्थः– आत्मानुं अहित करता अने अध्यात्मस्वरूपथी रहित एवुं आश्रवरूप महातम के० महा अंधकार अखंरूपणे अंडवत के० सर्व लोकने ढांकी रह्यो छे, तेनो विस्तार गलवाने जे ज्ञानसूर्य प्रगट थयो ते ब्रह्मांड जेवो सर्व लोकालोकने विकाशनो करनारो थयो, अने ब्रह्मांडनुं मंडन जेथकी थाय छे,अने जेने विषे सर्वरूप जासे छे अने जे सर्वरूपे सर्वमां पामिये छियें अने जे सर्व मूर्त्तिक वस्तुथी आकाशखंडनी परे अलिप्त छे; ते ज्ञानरूपी सूर्य तथा जे शुद्ध संवरनो जेप धरी रह्या छे; तेनी रुचि रेखाने एटले तेना उदयने अमारो दंरूवत् के० नमस्कार छे. ॥ ६८ ॥

हवे जरू चेतनना जेद ज्ञान थकीज संवररूपी परमात्माने उलखाय छे, ते समजावे छेः– अथ जेदज्ञान महिमा कथनः–

॥ सवैया तेइसाः॥–शुद्ध सुछेद अजेद अवाधित, जेद विज्ञान सु तीछन आरा; अंतर जेद सुजाउ विजाव, करे जरू चेतनरूप डुफारा; सो जिन्के उरमें उपज्यो न रुचै तिन्हको परसंग सहारा; आतमको अनुजौ करि ते हरखे परखे परमातम धारा.॥६९॥

अर्थः–शुद्धपणे स्वछेद के० पोतपोताना न्यारा स्वरूपने वतावनार,अजेद के० एकस्वरूप अवाधित एटले कोई प्रमाणांतरे अखंडित एवुं जेदज्ञान ते तीक्ष्ण सुलाख छे, ते सुलाखथी अंतरात्मामां जेदन करीने स्वजाव अने विजावने जुदा जुदा करे,ने ज

डरूप तथा चेतनरूपने डुफार के० न्यारा करी वतावे, एवुं भेदज्ञान जेना हृदयनेविषे उपज्युं छे, तेज जीवने परवस्तुनो संग ते सहारा के० रुचे नही. अने तेज जीव पोताना स्वरूपनो अनुभव करी यथार्थपणे अंतरात्मानेविषे जे परमात्मानी धाराछे तेनेपारखे.

हवे भेदविज्ञान जे छे, ते सम्यग् ज्ञान छे, तेनी समर्थाइ थकी स्वरूपनी प्राप्ति थाय छे; ते कहेछेः— अथ सम्यक्त्व सामर्थ्य कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— जो कबहु यह जीव पदारथ, औसर पाइ मिथ्यात मिटावै; सम्यक धार प्रवाह वहे गुन, ज्ञान उदे मुख ऊरध धावै; तो अभिअंतर दर्वित भावित कर्म किलेश प्रवेश न पावै; आतम साधि अध्यातमको पथ पूरण व्है परब्रह्मकहावै॥७०॥

अर्थः— जो कोई आ जीव पदार्थ छे ते यथाप्रवृत्ति करणरूप अवसर पामीने मिथ्यात्वग्रंथि भेदीने मिथ्यात्वने मिटावे; शुद्ध सम्यक् अने स्वरूप जलधारानो प्रवाह वहे अने ज्ञानगुणना उदय वडे ऊर्ध्व मुख थईने मुक्ति सन्मुख दोडे, त्यारे अभ्यंतर जे द्रवित कर्म अने भावित कर्म तेना क्लेशनो प्रवेश ते न थाय. जे प्रकृति प्रदेशरूप कर्म ते द्रवित कर्म अने राग द्वेषादिक ते भावित कर्म ए बंने प्रवेश नही करी शके अने अध्यात्मना पंथ सेलीमां आवीने आत्माने साधीने पोताना रूपमां पूर्ण थईने परब्रह्म कहेवाय. ॥ ७० ॥

हवे संवरनुं कारण सम्यग्दृष्टिछे, तेनो महिमा कहे छेः—अथ सम्यग् दृष्टि महिमाः—

॥ सवैया तेइसाः॥—भेद मिथ्यात सु वेद महारस, भेद विज्ञान कला जिन पाई; जो अपनी महिमा अवधारत, त्याग करे उरसों ज पराई; उद्धतरीति वसे जिनके घट, होतु निरंतर ज्योति सवाई; ते मतिमान सुवर्ण समान लगे तिनकों न शुभाशुभकाई॥७१॥

अर्थः—मिथ्यात्वग्रंथि भेदीने तथा उपशमरूप महारस वेदीने जे बुद्धिवंते भेद विज्ञाननी कला पामी छे, अने जे ए भेदविज्ञान वडे पोताना स्वरूपनी प्राप्ति करीने पोताना ज्ञान, दर्शन चारित्ररूप महिमाने अवधारे, उर के० हैया थकी पराई सोज के० सामग्री तेनो त्याग करे अने जेना घटमां उद्धतरीति के० देशविरति तथा सर्व विरतिनी रीत फुरी अने निरंतर तप थकी जेनी सवाई ज्योति थाय छे, तेने बुद्धिमान् कहिये, ते सुवर्णसमान छे. तेमने शुभाशुभ कर्मरूप काट लागी शकतो नथी ॥७१॥

हवे संवरनुं मूल भेद विज्ञान छे; ते मोक्षनुं कारण कही समजावेछेः—

अथ भेदज्ञान महिमा कथनः—

॥अडिल्ल छंदः॥—भेदज्ञान संवरनिदान निरदोष है; संवरसो निरजरा अनुक्रम मोष है; भेदज्ञान शिवमूल जगतमहि मानिये, यदपि हेय है तदपि उपादेय जानिये॥७२॥

अर्थः— भेदज्ञान जे छे ते निर्दोष संवरनुं निदान के० मूलकारण छे अने निर्जरा

नुं कारण संवर छे अने निर्जरा जे छे ते मोक्षनुं कारण छे. ए अनुक्रम प्रमाणे मोक्षनुं कारण परंपराथी भेदविज्ञानज छे. अगर जो शुद्ध स्वरूपनी अपेक्षाने लीधे भेदज्ञान त्याग जोग छे, तो पण नयोनुं उपादेय, ते आदरवा जोग्य जाणिये. ॥ ३२ ॥

हवे स्वरूपनी प्राप्ति थया पछी भेदज्ञाननुं हेयपणुं देखाडेछेः—स्वरूप कथनः—

॥ दोहाः॥— भेदज्ञान तबसों भलो, जबलों मुक्ति न होय; परम ज्योति परगट जहां, तहां विकल्प न कोय ॥ ३३ ॥

अर्थः— भेदज्ञान त्यांसुधी भलुंछे, के ज्यांसुधी मुक्ति थई नथी. ज्यां परम ज्योति प्रगट थाय त्यां विकल्प कोई रहे नही, तो भेदज्ञान केम करीने रही शके ? ॥ ३३ ॥

भेदज्ञान मुक्तिनो उपाय छे ते कहेछेः— अथ भेदज्ञानमहिमा कथनः—

॥ चोपाईः॥— भेदज्ञान संवर जिन्हि पायो, सो चेतन शिवरूप कहायो; भेदज्ञान जिनके घट नांही, ते जडजीव बंधे घटमांही. ॥ ३४ ॥

अर्थः— जे जीवने भेदज्ञानरूप संवरनी प्राप्ति थइ, तेज चेतन शिवरूप कहियें; जेना हृदयनेविषे भेदज्ञान नथी, ते मूर्ख घट पिंडनेविषे बंधायलो रहेछे. ॥ ३४ ॥

हवे भेदविज्ञानवडे आत्मानो महिमा वधेछे ते कहेछेः—अथ भेदज्ञानको महात्म्यः—

॥ दोहराः॥— भेदज्ञान साबू भयो, समरस निर्मल नीर; धोवी अंतर आतमा, धोवै नीज गुन चीर. ॥ ३५ ॥

अर्थः— भेदज्ञान जे छे ते साबुरूप जाणवुं; अने उपशम रस ते निर्मल पाणी छे ने अंतर् आत्माने धोबी मानवो; ते धोवी पोताना गुणरूप वस्त्रने धुवेछे ॥ ३५ ॥

हवे भेदविज्ञाननी जे क्रिया छे ते कहेछेः—अथ भेदज्ञानकी कर्त्तव्यता महात्म्यः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसै रजसोधा रज सोधिके दरब काढे, पावक कनक काढी दाहत उपलकों, पंकके गरभमे ज्यो डारिये कतक फल, नीर करे उज्वल नितारिडारे मलको; दधिको मथैया मथि काढे जैसै माखनको, राजहंस जैसै दूध पीवै त्यागि जलको; तैसै ज्ञानवंत भेदज्ञानकी सकति साधि, वेदे निज संपति उछेदे परदलको॥३६॥

अर्थः— जेम कोइ रज सोधा के० जोनारो रजने सोधीने एटले सोना रूपा प्रमुख द्रव्यने काढवाने पावक के० अग्निने लगाडे, ने सोनुं काढीलइ पथरा धूल वगेरेने बाली नाखेछे. वली जेम कतकफलने पंकना गर्भनेविषे नाखीये तो ते फल जलने मेलथी जूदुं करेछे, वली जेम दधिनो मथनहार दधिनुं मथन करी माखणने जूदुं करेछे ने राजहंस पाणी दूध भेगां होय तेमांथी मात्र दूध पीइ जायछे, पाणीने जूदुं करे छे; तेम ज्ञानवंत प्राणी भेदविज्ञाननी शक्ति साधीने पोतानी ज्ञानसंपत्तिने वेदे अने परदल के० पुद्गलनुं कटक जे राग द्वेषादिक तेने कापी नाखेछे. ॥ ३६ ॥

अथ नेदज्ञान मोक्षमूल यह कथनः-

॥ छप्पय छंदः॥– प्रगट नेद विज्ञान, आपगुण परगुणजानै; परपरिनति परि त्यागि शुद्ध अनुनव थिति ठानै; करि अनुनव अन्यास, सहज संवर परगासै, आश्रव द्वार निरोद्ध, कर्म घनतिमिर विनासै; छय करिविनाव समनाव नजि, निरविकल्पनिज पद गहै; निर्मल विशुद्ध सासुत सुथिर, परम अतींद्रिय सुख लहै. ॥ ७७ ॥

अर्थः– नेद ज्ञान जे छे ते प्रगटपणे पोताना तेम पारका गुणने जाणेछे, तेथी पर वस्तुमां जे परिणमन छे तेनुं ज्ञान करे, पोताना शुद्ध अनुनवनो ठराव राखे, ने ते अनुनवनो अन्यास करीने सहज संकरना रूपनो प्रकाश करे, आश्रव द्वारनो निरोध करीने कर्मरूप मेघ अंधकारनो नाश करे; अने विनाव के० मोह दशानो क्षय करीने समनाव के० समाधिने नजे, तेणे करीने ज्यां कांई विकल्प नथी एवुं पोतानुं निर्विकल्प पद तेने पामे, एटले जे सुखनेविषे मल नथी ए उपरथी ते विशुद्ध अनंत कालसुधी एकरूप तेथी शाश्वत स्थिर एवुं अतींद्रिय के० इंद्रियगोचर नही एवुं सुख पामे.

॥ इति श्री समयसारनाटकको वालावोधरूप संवर द्वार छठो संपूर्णः ॥

॥ दोहाः–वरनी संवरकी दसा, जथा जुगति परमान; मुक्ति वितरनी निर्जरा, सुनहु नविक धरि कान ॥ ७८ ॥

अर्थः–संवररूपनी दशा कही ते युक्ति तथा प्रमाणे करी कहीछे; हवे मुक्तिनी वितरणी के० आपनारी एवी जे निर्जरा छे तेनुं वर्णन करुंछुं:– ते अहो! नव्य लोको तमे कान दईने शांनलो. ॥ ७८ ॥

हवे निर्जरानुं केवुं स्वरूप छे ते कहेछेः– अथ निर्जरास्वरूप कथनः–

॥ चौपाईः॥–जो संवर पद पाइ अनंदे; जो पूरव कृत कर्म निकंदे; जो अफंद व्है वहुरि न फंदे; सो निरजरा वनारसि वंदे. ॥ ७९ ॥

अर्थः–पोतानुं जे शुद्ध स्वरूप राखवुं तेनुं नाम संवर कहियें; तेनुं पद पामीने संवर आनंद करे; अने पूर्वे कालनेविषे जे कर्म कीधांछे, तेने जडथी उखेडी नाखे; अने जे पूर्वे कर्मना फंद ते थकी छूटीने पाछु ते फंदमां सपडाय नही तेनुं नाम आत्मानी निर्जरा कहिये. ते निर्जराने बनारसी दास वंदन करेछे. ॥ ७९ ॥

निर्जरानुं कारण सम्यक्त्व छे, माटे सम्यक्त्वनो महिमा वखाणे छेः–

अथ सम्यक्त्व महिमा कथनः–

॥ दोहाः॥–महिमा सम्यक् ज्ञानकी, अरु विराग बल जोइ; क्रिया करत फल भुंजतें, करमबंध नहि होइ. ॥ ८० ॥

अर्थः–जे कर्म छुटे तेनुं फरीने बंधन थइ शके नही, ए सम्यग् ज्ञाननो महिमा

छे. वली ए सम्यग्ज्ञान साथे वैराग बलनो जोग छे, तेथी शुभाशुभ क्रिया करता थका ने तेनुं फल भोगता थका शृंखलाबंध नवां कर्मनो बंध थतो नथी. ॥७०॥

हवे सम्यक्त्वनी महिमामां क्रिया करतांज कर्मनी निर्जरा थाय छे ते दृष्टांते कहेछेः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे भूप कौतुक सरूप करै नीच कर्म, कौतुकी कहावै तासों कौन कहै रंक है; जैसे विभचारिनी विचारै विभिचार वाको, जारहीसों प्रेम भरतासों चित्त बंक है; जैसे धाइ बालक चुंघाइ करै लालि पालि, जानै तांहि और को जदपि वाके अंक है; तैसै ज्ञानवंत नानाभांति करतूति ठानै, किरियाकों भिन्न मानै यातें निकलंक है. ॥ ७१ ॥

पुनः– जैसै निशिवासर कमल रहै पंकहिमें, पंकज कहावै पै न याके ढिग पंक है; जैसै मंत्रवादी विषधरसों गहावै गात, मंत्रकी सकति वाके विना विषडंक है; जैसै जीभ गहै चिकनाइ रहै रूख अंग, पानीमें कनक जैसै कांइसो अटंक है; तैसै ज्ञान वंत नानाभांति करतूति ठानै, किरियाकों भिन्न मानै याते निकलंक है. ॥ ७२ ॥

अर्थः– जेम कोई भूप के० राजा होय ने ते पोताना कौतुके करीने गमे तेवुं नीच कर्म करे ते क्रिया करवाने लीधे ते कौतुकी कहेवाय पण कोई ते राजाने रंक नही कहे; जेम कोई कुलटा व्यभिचारिणी स्त्री होय ते यद्यपि पोताना धणीनी साथे रहे खरी, तोपण धणीनी साथे तेनुं चित्त लुब्ध होतुं नथी; चित्तने विषे तो व्यभिचारनो ज विचार थाय, के जो वखत मले तो नीकली जाउं ने यारने मलुं; जेम कोइ धाव होय ने ते पारका बालकने धवरावे, अने रमाडे लालन पालन करे, अने अंक के० पोताना खोलामां लइने बेसे, यद्यपि एवी क्रिया तो करे खरी, पण एम जाणेछे के आ बालक पारकुं छे; तेवीज रीते जे सम्यग् ज्ञानी छे ते नाना प्रकारनी शुभाशुभ क्रिया राजा श्रेणिक तथा भरत चक्रवर्त्ति अने बीजा साधुनी माफक करे छे, पण ए क्रिया ने पुद्गलरूप जाणेछे, पोताना स्वरूपथी भिन्न माने छे एथी बंधननुं कलंक लागतुं नथी.

एज उपर बीजा दृष्टांत कहेछे के; जेम कमल छे ते रात्र दिवस पंक के० कर्दमने विषे रहे छे, तेथकीज उत्पन्न थयुं छे, तेथी पंकज कहेवाय छे; तोपण कमलने पंकनो स्पर्श नथी होतो; जेम कोई गारूडी मंत्रवादी होय ते पोताना गात के० शरीरने सर्प पासे पकडावे करडावे, पण ते मंत्रवादीना मंत्रनी शक्तिवडे सर्पनो डंख विषसंजोगर हित होयछे; जेम जिव्हा इंद्रिय घी दही प्रमुखनी चीकणाई ग्रहण करेछे, पण पो ताना अंगने ते चिकाशनो लेश रहेवा देती नथी, किंतु भूखीज रहेछे; जेम सोनुं पाणीनेविषे रेहेतां थका काटवालुं थतुं नथी, तेवी रीते ज्ञानवंत प्राणी

नाना प्रकारनी क्रिया करेछे, पण क्रियाने पुद्गल संयोगवाली जाणी आत्मस्वरूपथी जिन्न माने छे, तेथीज कर्म बंध कलंकथी जुदो रहेछे ॥ ७२ ॥

हवे विषय जोगवता थका कर्म बंध न थाय एवी ज्ञानवैराग्यनी शक्ति बतावे छेः— अथ ज्ञान वैराग शक्ति वर्णनंः—

॥ सोरठाः॥— पूर्व उदय संबंध, विषय जोगवै समकिती; करै न नूतन बंध, महिमा ज्ञान विरागकी ॥ ७३ ॥

अर्थः— पूर्व संचित कर्म उदय आव्याथी तेना संबंधे समकीति जीव विषय जोग जोगवे छे, पण नवां कर्मबंध करतो नथी, ए सम्यग् ज्ञान तथा वैरागनी शक्ति छे ॥७३॥

हवे जे ज्ञाता होय छे ते सम्यग् ज्ञान अने विषयनी अरुचि ए बेउने साधेछे, ते कहेछेः— अथ ज्ञाताकी व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— सम्यकवंत सदा उर अंतर, ज्ञान विराग उजै गुन धारै; जासु प्रजाव लखै निज लछन, जीव अजीव दशा निरवारै; आतमको अनुजौ करि व्है थिर, आपु तरै अरु औरनि तारै; साधि सुदर्व लहै शिवसर्म सुकर्म उपाधि व्यथा वमिडारै.

अर्थः— जे समकिती होय ते सदा पोताना अंतःकरणनेविषे ज्ञान अने वैराग ए बे गुणने धारे जे गुणना प्रजाववडे पोतानुं ज्ञातापणुं लक्षण जोईने जीव अजीव दशा एटले जीव अजीवनुं स्वरूप निरवार के० जुडुं जुडुं जाणे, ते पछी आत्माने यथार्थ पणे वेदीने आत्मिक स्वजावमां स्थिरता थइ रहेछे; ते पोते पण तरे अनेसत्यउपदेश आपी बीजाने पण तारेछे; ए रीते पोताना आत्मद्रव्यने साधीने मोक्षसुखने पामे, अने कर्मउपाधि सहित जे व्यथा तेनुं वमन करेछे ॥ ७४ ॥

हवे विषयनी अरुचिविना ज्ञाननुं बल निष्फल छे, अने एवा ज्ञानीने एकांत पक्षने विषे रहेवाथी मिथ्या दृष्टि ठरावे छेः— अथ मिथ्यादृष्टि व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— जो नर सम्यकवंत कहावत, सम्यग् ज्ञान कला नहि जागी;, आतमअंग अबंध विचारत, धारत संग कहै हम त्यागी; जेष धरै मुनिराज पटंतर. मोह महानल अंतर दागी; सून्य हिये करतुति करै परि, सो शठ जीव न होइ विरागी.

अर्थः— जे मनुष्य पोते सम्यक्त्ववंत कहेवाय अने सम्यग् ज्ञाननी कला न जागी, एटले सम्यग् ज्ञाननी प्राप्ति न थई तेथी आत्माना अंगविषे बंधविचारे नही, आत्मा अबंध छे एम माने; ने तेथी ते अभ्यंतर संयोग धारे छे. वली कोई निश्चय नयनो पक्ष लइने पोते त्यागी छे एम कहे, मुनिराजनी पठे पटंतर के० जेष धरे; पण अंतर नेविषे मोहमहानल के० मोहरूप अग्नि शलगी रही होय; विषय थकी वैरागी न

थयो, तेथी हैया सुन्य थको मुनिराजनी पेठे क्रिया करे, पण ते जीव मूर्खज कहेवा यठे पण वैरागी कहेवाय नही ॥ ७५ ॥

हवे जे सर्व क्रिया करता थका पण मूढ कहेवाय ठे ते कहे ठेः—

अथ मूढ क्रिया वर्णनंः—

सवैया तेइसाः॥— ग्रंथ रचै चरचै शुज्ञ पंथ लखै जगमें व्यवहार सुपत्ता; साधि संतोष अराधि निरंजन, देइ सुसीख न लेइ अदत्ता; नंग धरंग फिरे तजि संग ठके सरवंग मुधारस मत्ता; ए करतुति करै शठ पें समुझै न अनातम आतम सत्ता.॥७६॥ ध्यान धरै करि इंद्रिय निग्रह, विग्रहसों न गिनै निज नत्ता; त्यागि विजूति विजूति मिटै तन जोग गहै ज्ञवजोग विरत्ता; मौन रहै लहि मंद कषाय सहै वध वंधन होइ न तत्ता; ए करतुति करै सठ पै समुझै न अनातम आतम सत्ता ॥ ७७ ॥

अर्थः— ग्रंथ रचना करे, ज्ञला मार्गनी चरचा करे, ज्ञला मार्गने लखे, जगत्मां व्यवहार मार्गमां प्राप्ति थको रहे, संतोषी थईने निरंजनने आराधे, लोकोने सारी शीखामण आपे, अदत्तदान ले नही, परिग्रह संग त्यागीने नंग धरंग फिरे के० दिगंबर थई फरे, अने मुधा के० मुग्धपणे पोताना रसमां मातो थको सर्वांगे ठक्यो रहे एवी एवी क्रिया मूर्ख होय ते करे ठे पण अनातम सत्ता के० आत्माथी पृथक् जे मोहनी गहलता ठे तेने, अने आत्मसत्ता के० शुद्ध जाणपणानी जे सत्ताठे, तेने जुदी जुदी जाणे नही तेमने मूर्ख कहेवा ॥ ७६ ॥

वली मूढनी क्रिया केहेठे के, ध्यान धरे, इंद्रिय दमन करे, विग्रह करेठे ते शरीरनी साथे पोताना आत्मानो संबंध गणे नही. विजूति के० संपत्तिनो त्याग करी विजूति के० ज्ञस्म शरीर उपर लगाडे, योग मार्ग ग्रहे, अने संसारना ज्ञोगथी विरक्त रहे, मौनपणे रहे, कषायनुं मंदपणुं समजे, वध वंधन सहतो थको पण तातो नही थाय, क्रोधादिक न करे, एवी क्रिया शठ मूढ होय ते करे ठे, पण अनातम सत्ता एटले कर्मादिक प्रज्ञावनी सत्ता अने आत्मसत्ता एटले आत्मानुं सत्य स्वरूप तेने समजे नही माटे तेने मूर्ख समजवो. ॥ ७७ ॥

हवे फरी मूढपणानुं स्वरूप वतावेठेः— पुनः मूढ वर्णनंः—

॥ चौपाईः॥— जो विनुज्ञान क्रिया अवगाहै; जो विनु क्रिया मोख पद चाहै; जो विनु मोख कहै में सुखिया; सो अजान मूढनिमें मुखिया ॥ ७८ ॥

अर्थः— जे जन ज्ञानविना क्रिया अवगाहे अने क्रियाविना मोक्ष पद वांठे, वली जे मोक्ष पाम्या शिवाय कहे के हुं सुखी ठुं, तेने अजाण मूर्खनो शिरोमणि जाणवो.

हवे जेने कर्मसत्ता तथा आत्मसत्तानी निन्नता नासती नथी, तेने महामूढ कहिये. तेनुं विवेचन करेछेः— अथ महामूढ व्यवस्थाकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जगवासी जीवनिसौं गुरु उपदेश कहै, तुम्हे इहां सोवत अनंत काल बीते हैं; जागो व्हे सुचेत चित समता समेत सुनो, केवल वचन जामें अक्षर सजीते हैं; आउ मेरे निकट बताउं में तुह्मारे गुन, परम सुरस नरे करमसौं रीते हैं; ऐसे बैन कहै गुरु तउ ते न धरे उर, मित्रकेसे पुत्र किधो चित्रकेसे चीते हैं.

अर्थः— सर्व जगवासी जीवना हित वात्सल्यने अर्थे गुरु एवो उपदेश करेछे के, अहो! नव्य प्राणी जीव! तमे आ जगत्मां मोहनिद्रानेविषे सूता रह्या थकाज अनादि अनंतकाल तमोने वीत्यो छे, माटे हवे तो चित्तमां सचेत थईने जागो; अने समता सहित थका केवलीनां वचन सांनलो, जे केवलीनां वचनमां अक्षर रस के० इंद्रियना विषय रस तेने जीतेला छे; अने तमे मारी पासे आवो तो तमारा गुण बतावुं; ते गुण केवा छे, परम एटले उत्कृष्ट सुरसे करी नरेला छे; अने कर्म थकी रीते के० न्यारा छे; एवां वचन गुरु कहेछे ते जे प्राणी हैयामां धरता नथी ते मित्रना पुत्र जेवाछे, केमके मित्रना पुत्रवडे पोतानुं घर उघाडु रेहेतुं नथी. अने तेने शीखामण शी देवी? अने चित्रामण जेवा छे, कारण के चित्रामण थकी कांई सत्य क्रिया थती नथी. ॥ ८ए ॥

॥ दोहाः॥— एते पर बहुरो सुगुरु, बोलै बचन रसाल; सेन दशा जाग्रत दशा, कहै डुहूंकी चाल. ॥ ए० ॥

अर्थः— ए प्रमाणे सद्गुरु छे ते फरी सरस वचन बोले छे, के जीवने एक सयनदशा ने बीजी जाग्रतदशा एवी बे दशा छे तेनी चाल शांनलो. ॥ ए० ॥

हवे सैन दशानुं वर्णन करेछेः— अथ शयन दशा वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— काया चित्र सारीमें करम परजंक नारी, मायाकी संवारी सेज चादर कलपना; सैन करै चेतन अचेतनता नींद लिए, मोहकी मरोर यहै लोचनको ढपना; उदै बलजोर यहे श्वासको सबद घोर, विषे सुख कारजकी दोर यहे सुपना; ऐसी मुढ दसामें मगन रहै तिहू काल, धावै भ्रमजालमें न पावै रूप अपना.

अर्थः— कायारूप चित्रशाली छे, तेमां कर्मरूप पर्यंक छे, तेउपर मायानी सेज संवारी छे, कल्पना के० मननी विकल्पनारूप चादर छे, अचेतनानी ऊंघ लईने एवी सामग्रीमां चेतन शयन करी रह्यो छे, मोहनी मरोरु तेणे करीने लोचन ढंकाया छे; उदय बल जोर जे छे, ते श्वासनो घोर शब्द छे, अने विषयसुख कार्यनी दोड एटले करणी करवी ते स्वप्नावस्था छे, अने एनुंज नाम मूढदशा तथा शयन दशा कहिये.

अने ए दशानेविषे जे मूढ जन होय, ते त्रणे काल मग्न थको धावे छे, एटले भ्रम जालमां दोडेछे, पण पोतानुं रूप पामतो नथी. ॥ ७१ ॥

हवे जीवनी जाग्रतदशानुं वर्णन करेछेः– अथ जाग्रतदशा वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– चित्र सारी न्यारी परजंक न्यारो सेज न्यारी, चादर भी न्यारी इहां झुठी मेरी थपना; अतीत अवस्था सैन निद्रा वही कोउ पैन, विद्यमान पलक न यामें अब छपना; श्वास औ सुपन दोउ निद्राकी अलंग बूझ, सूझै सब अंग लखि आतम दरपना; त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागी, भाले दृष्टि खोलि के संभाले रूप अपना. ॥ ७२ ॥

अर्थः– आत्मज्ञान पाम्याथकी कायारूप चित्रसारी जुदी जुए, अने कर्मरूप पलंगने पण न्यारो देखे; मायारूप सेज पण जुदी जुए, कल्पनारूप चादरने न्यारी जुए. मतलबके ए ठेकाणे मारी स्थापना जुठी छे एम समजे. अतीत अवस्थानेविषे एटले सयनदशामां निद्रा लेनार पण कोई बीजा रूपे हुं ज हुं, विद्यमान कालमां ते अवस्था नथी, हवे पलकमात्र पण आ अवस्थामां मारो अभाव थनार नथी. श्वास अने स्वप्न ए बे निद्रानी अलंगना संयोगे बूझे, अने आत्मारूप आरिसामां आत्मा नुंज सर्व अंग सूझे, एवी रीते अचेतनतारूप निद्रानो त्याग करीने चेतन त्यागी थयो, त्यारे पोतानी दृष्टि खोलीनें जूए, अने पोतानुं रूप संभाले. ॥ ७२ ॥

वली सद्गुरु शिक्षानां वचन कहेछेः– अथ पुनः सद्गुरु शिक्षा कथनंः–

॥ दोहाः ॥– इहि विधि जे जागे पुरुष, ते शिवरूप सदीव; जे सोवहि संसारमें, ते जगवासी जीव ॥ ७३ ॥

अर्थः– ए रीते जे पुरुष जागे छे, तेतो सर्व कालनेविषे शिवरूप के० मोक्षरूप जाणवा. अने जेटला संसारनेविषे सूता छे, तेटला तो जगत्वासी जीव समजवा.॥७३॥

हवे मोक्षपद उपादेयरूप कहीने स्तुति करेछेः–अथ आत्मद्रव्य स्तुतिकथनंः–

॥ दोहाः ॥– जो पद भौपद भय हरै, सोपद सोउ अनुप; जिहि पद परसत और पद, लगै आपदारूप ॥ ७४ ॥

अर्थः– जे पद के० जे स्थानक भवस्थानकनो भय हरे छे, तेनेज पद कहेवुं, तथा अनुप स्थानक कहेवुं, अने जे पदनो स्पर्श थतांज अन्य पद जे कर्म पद छे, ते आपदारूप लागे छे. ॥ ७४ ॥

हवे भव जे संसार पद तेनो भय बतावे छेः– अथ संसार वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जब जीव सोवै तब समुझ सुपन सत्य, वहि झुठ लागै जब जागै नींद खोइके; जागे कहै यह मेरो तन यह मेरी सोज, ताहू झुठ मानत म

रणथिति जोइके; जाने निज मरम मरन तव सूझै झूठ, बूझै जब और अवताररूप होइ के; वाहु अवतारकी दशामें फिरि यहे पेच, याहि भांति झूठो जग देख्यो हम ढोइके.॥९५॥

अर्थः– ज्यारे जीव सयन दशामां सूतो होय छे, त्यारे स्वप्नने सत्य करी माने छे. अने तेज स्वप्न रूपने ज्यारे निद्रा मूकी जागीने जुए छे, त्यारे झूठूं जाणे छे, जागीने कहे के आ मारुं शरीर तो आहीं छे, आ सोंज के० सामग्री सर्व मारी छे; ने ज्यारे पोतानी मरण स्थितिनो विचार करे छे, त्यारे तो वर्त्तमान शरीर तथा सामग्री सर्वने झूठी माने छे, अने ज्यारे पोताना मर्मनी वात जाणे एटले पोताना स्वरूपनी वातने जाणे, त्यारे तो मरणने पण झूठूं जाणे; एमज वली बीजो अवतार ले त्यारे बीजा रूपे थईने बीजी वात जाणे; फरी तेज अवतारमां सूता-जागता, झूठा-साचानो पेच आ गलीज रीते लाग्यो रहे. ए रीते वारे वारे अवतार लेवाने वली सामग्रीने पोतानी समजवी ने वली मरवुं; ए रीते सर्व संसारने ढोई के० देखीने अमे सर्व संसारने झूठोज जाण्यो. ॥ ९५ ॥

हवे ज्ञाता केवी क्रिया करे ते समजावे छेः– अथ ज्ञाताकी क्रिया कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– पंडित विवेक लहि एकताकी टेक गहि, दुंदज अवस्थाकी अनेकता हरतु है; मति श्रुत अवधि इत्यादि विकलप मेटी, निरविकलप ज्ञान मन में धरतु है; इंद्रियजनित सुख दुःखसों विमुख व्हैके, परमकी रूप व्है करम निर्जरतु है; सहज समाधि साधि त्यागी परकी उपाधि, आतम आराधि परमातम करतु है.९६

अर्थः– जे पंडित जन होय ते विवेकनो भेद एटले विज्ञान लहीने पोतानी एकतानी टेक राखीने प्रथमनी द्वंद्वअवस्था जे भ्रम अवस्थामां अनेकता हती तेने हरे छे. अने मति, श्रुत, अवधि इत्यादि ज्ञानस्वरूपना विकल्पने मटाडीने निर्विकल्प ज्ञान तेने मनमां धरेछे. अने इंद्रियजनित जे सुख दुःख तेथी विमुख थई परमात्मारूप थईने कर्मनी निर्जरा करे छे, एटले निर्जरा थाय छे. तेथी पोतानी सहज समाधिसाधिने पर जे कर्म पुद्गलादिकनी उपाधि जे राग द्वेषादिक, तेनो त्याग करीने आत्माने आराधी परमात्मापणु करेछे. ॥ ९६ ॥

हवे जे ज्ञान समुद्र परमात्मानी प्राप्ति थाय छे, ते ज्ञाननी प्रशंसा करेछेः–

अथ ज्ञान समुद्रवर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जाके उरअंतर निरंतर अनंत दर्व, भाव भासि रहे पें सुभाउ न टरतु है; निर्मलसौं निर्मल सुजीवन प्रगट जाके, घटमें अघट रस कौतुक करतु हैं; जानै मति श्रुत औधि मनपर्ये केवल सु, पंचधा तरंगनि उमंग उछरतु है; सो है ज्ञानउदधि उदार महिमा अपार, निराधार एकमें अनेकता धरतु है ॥ ९७ ॥

अर्थः– जे ज्ञान सागरना मध्यन्नागनेविषे निरंतर अनंत द्रव्य पदार्थ न्नासी रह्या ठे, पण ते द्रव्यनो स्वन्नाव पोते पामतो नथी, निर्मलमां निर्मल एवुं सुजीवन के० जीवन के० जीवितव्य अने समुद्र पक्षे सुजीवन के० पाणी ते, जेनुं प्रगट ठे, अने घट में के० हृदयनेविषे अघट के० अक्षणरस कौतुक के० सत्यार्थ वेदननो जे रस तेनुज कुतुहल करे ठे, एटले ए समुद्रनेविषे रस कुतुहल घणा ठे, अने जे ज्ञान समुद्रने विषे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान ने केवल ज्ञान ए पांचे ज्ञान तरंगरूप ठे, उमंग के० पोतपोताने ठेकाणे प्रगट थइ रह्यां ठे एवो ज्ञानसमुद्र ते उदार प्रधान ठे, एनो अपार महिमा ठे, एने विषे सर्व पदार्थ न्नासे ठे तेथी पोते निराधार अने एक स्वरूप ठतां ज्ञातापणामां अनेकता धरे ठे ॥ ए७ ॥

हवे ज्ञानविना मात्र क्रियावरुेज मोक्षनी प्राप्ति नथी तेनु वर्णन करेठेः–

अथ मोक्षमार्ग अप्राप्ति कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– केई क्रूर कष्ट सहै तपसों शरीर दहै, धुम्रपान करें अधो मुख व्हैके झुले हैं; केई महा व्रत गहै क्रियामें मगन रहैं, वहै मुनि न्नारमें पयारके से पूले हैं; इत्यादिक जीवनको सर्वथा मुगति नांहि, फिरे जगमांहि ज्यो वयारके वधुले हैं; जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहीको निरवान, करमके करतार न्नरममें न्नूले हैं ॥ए८॥

अर्थः– कोई अज्ञानी क्रूर कष्ट सहन करेठे अने पंचाग्नि प्रमुख तप करीने शरीर ने बालेठे; कईक अज्ञानी अग्निना धुमाडानुं पान करेठे, नीचुं मुख राखी उंचा पग करीने जुलेठे; केटलाक अज्ञानी जैन लिंग लईने पांच महाव्रत द्रव्यथी ग्रहण करेठे, अने क्रियामां मग्न रहेठे; ए रीते मुनिराज पणानो न्नार वहेठे, पण ते पयारना जेवा पूले ठे, (देश न्नाषाये) पयार एटले पलाल, जेना फूलनेविषे कण होता नथी, तेवी रीते निराश जाणवा; इत्यादि केवल क्रिया कलापवडे जीवने सर्वथा मुक्ति थती नथी; ते जगत्‌नेविषे वयारना वघुल जेम उंचा नीचा फरी रहे ठे, पण एक ठेकाणे ठरता नथी तेवा समजवा; अने जेना हृदयनेविषे ज्ञान कला जाग्रतरूप थईठे, तेमने निरवाण के० मोक्ष ठे; अने जे कर्मना करतार एटले केवल क्रियानाज करनारा ठे तेतो न्नर्मनेविषेज न्नूली रह्याठे. ॥ ए८ ॥

हवे जे मूढ जन ठे तेनी दृष्टि निश्चयमां नथी, पण व्यवहारने विषे ठे, तेथी तेने विषे अज्ञान ठे ते कहेठेः– अथ मूढ व्यवस्था वर्णनंः–

॥ दोहाः ॥– लीन न्नयो विवहारमें, उकति न उपजै कोइ; दीन न्नयो प्रन्नु पद जपै, मुकति कहांसों होइ. ॥ एए ॥

अर्थः– जे व्यवहारमां लीन थई रह्यो होय एटले मग्न थइ रह्यो होय, तेने कोई

उकति के तत्त्वदृष्टि उपजे नही, अने पोते अनाथ थईने पोताना नाथना पदने जजे, ए रीते पोतानुं निश्चयरूप जाण्याविना मुक्ति क्यांथी थाय ?॥ ए९ ॥

॥ दोहाः ॥– प्रजु समरो पूजो पढो, करो विविध विवहार; मोक्ष सरूपी आतमा; ज्ञानगम्य निरधार. ॥ २०० ॥

अर्थः– प्रजुने समरो, जावे पूजो, ने जावसहित पढो इत्यादि व्यवहार करो पण मोक्ष स्वरूपी आत्माछे तेतो निरधार के० निश्चय ज्ञान गम्य छे. ॥ २०० ॥

हवे निश्चय स्वरूपनेविषे ज्ञान पर्याय रूपी अर्थनुं निरूपण करेछेः–

अथ पर्यायार्थ निरूपणंः–

॥ सवैया तेइसाः ॥– काज विना न करे जिय उद्यम, लाज विना रनमांहि न जुंजै; डीलविना न सधे परमारथ, सीलविना सतसो न अरूजै; नेम विना न लहे निहचे पद, प्रेमविना रस रीति न बूजै; ध्यानविना न थन्ने मनकी गति, ज्ञान विना शिवपंथ न सूजे. ॥ १ ॥

अर्थः– अहीं अर्थांतर बतावे छे के. जेम जीव पोताना काम विना उद्यम करतो नथी; जेम लाज विना रणसंग्रामने विषे जूजतो नथी; वली जेम देह धर्याविना परमार्थ थतो नथी; अने शील धारण कीधाविना सत्व साथे मलातुं नथी; वली नियम धर्या शिवाय निश्चय पद मलतुं नथी, अने जेम प्रेमनी प्रीत विना रसरीत जणाती नथी, तथा ध्यानविना मननी गति थोजाती नथी, तेम ज्ञानविना शिवपथ के० मुक्तिमार्ग ते सूजतो नथी. ॥ १ ॥

हवे ज्ञानवंतनो महिमा देखाडीने तेनी व्यवस्था कहेछेः–

अथ ज्ञानमहिमा धारक व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः॥ ज्ञान उदै जिनके घट अंतर, ज्योति जगी मति होति न मैली; वाहिज दृष्टि मिटी जिन्हके हिय, आतम ध्यान कला विधि फैली; जे जड चेत न जिन्न लखै सु विवेक लिये परखै गुन थैली; ते जगमें परमारथ जानि गहै रुचि मानि अध्यातम सैली. ॥ २ ॥

अर्थः– जेना हृदयनेविषे ज्ञाननो उदय थवाथी पोतानी ज्योति जागृत थईने तेथी मति जे बुद्धि ते उज्वल थई पण मेली नथी; अने पोताना बाह्य शरीरने आत्मा करी माने एवी बाह्य दृष्टि ते मटी गई, अने हृदयनेविषे आत्मध्याननी कला तेनी विधि जे यमनियमादिक ते विधि फेली एटले पसरी, ते वखतथी जड चेतनने जिन्न जिन्न लखे, अने पोतानो विवेक के० जेदविज्ञान तेणे करी पोताना गुणनी थेली पार

खी लीधी. एवा जे जीव तेज जगत्मां परमार्थने जाणी तेने रुचिये करी ग्रहण करे. ए रीते अध्यात्मशैली मान्य करीने परमार्थने जाणे. ॥ २ ॥

हवे मोक्षनी समग्र प्राप्ति देखाडेछेः— अथ मोक्षप्राप्ति कथनंः—

॥ दोहाः ॥— बहु विधि क्रिया कलेससों, शिवपद लहै न कोइ; ज्ञान कला परकाशसों, सहज मोक्ष पद होइ. ॥ ३ ॥ ज्ञान कला घट घट वसे, योग युगतिके पार; निज निज कला उदोत करि, मुक्त होइ संसार. ॥ ४ ॥

अर्थः— जात जातनी क्रियाने निमित्ते क्लेश करवो, तेथी मोक्षपद मळे नही. पण ज्ञानकलानो प्रकाश थवाथी सेहेज मोक्षपद थायछे. ॥ ३ ॥ ज्ञानकला तो घट घटने विषे वसी रहेली छे, पण मन वचन अने कायाना योगनी युक्तिथी पार रहेली छे, माटे पोत पोतानी कलाने प्रकाश करवाथी संसारथी मुक्त थवाय छे, एवो सर्वेने सद्गुरुनो आशीर्वाद छे. ॥ ४ ॥

हवे मुक्तपणुं अनुभव थकी थायछे माटे अनुभवनी प्रशंसा करेछेः—

अथ अनुभव प्रशंसाः—

॥ कुंडलिया छंदः॥— अनुभव चिंतामनिरतन, जाके हिय परगास; सो पुनीत शिवपद लहै, दहै चतुर्गतिवास; दहै चतुर्गतिवास आस धरि क्रिया नमंडै, नुतन बंध निरोध, पूर्वकृत कर्म विहंडे; ताके न गनु विकार, नगनु बहु भार न गनु भौ, जाके हिरदेमांहि रतनचिंतामनि अनुभौ ॥ ५ ॥

अर्थः— अनुभवरूपी चिंतामणिरत्न जेना हृदयनेविषे प्रकाशमान थई रह्युंछे, ते जीव पुनीत के० पवित्र थईने शिवपदने पामेछे, ने चतुर्गतिनो जे वास तेने दहन करेछे; एटले देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंच्गति ने नरकगति ए चारे गतिना वासने बाली नाखेछे; अनुभवी जननी रीत एछे के ते आशा धरीने क्रिया मांडे नही. नुतन बंध के० नवा कर्मना बंधने निरोधीने संवर धारण करे, तथा पूर्वकृत कर्मने विहंडी नाखीने तेनी निर्जरा करेछे, तेना विकारने अहो! भव्य जीव! तुं गणीश नही; अने तेना अतिचारने तुं गणीश नही, अने तेना भयने पण गणीश नही, जेना हृदयमां अनुभवरूपी चिंतामणिरत्न प्रकाशी रह्युं छे ॥ ५ ॥

हवे अनुभवीनी ज्ञानदृष्टिनुं सामर्थ्य वखाणेछेः— अथ ज्ञानदृष्टि सामर्थ्य कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जिनके हियेमें सत्य सूरज उदोत भयो, फेलि मति किरन मिथ्यात तम नष्ट है; जिनकी सुदृष्टिमें न परचै विषमतासों, समतासों प्रीति ममतासों लष्ट पुष्ट है; जिन्हके कटाक्षमें सहज मोक्ष पथ सधै, साधन निरोध जाके तनको न कष्ट है; तिन्हिकों करमकी किलोल यह है समाधि, डोले यह जोगासन बोले यह मष्ट है॥६॥

अर्थः– जेना हियानेविषे सत्य सूर्यनो उद्योत थई रह्योछे, अने सत्य सूर्यना मति रूप किरण फेली रह्याछे, तेथी मिथ्यात्व रूप अंधकार ते नाश पाम्यो. वली जे जीवनी सुदृष्टिमां विषमतानो परिचय नथी, एटले समतासाथे प्रीति बंधाणी छे, ने ममतासाथे तथा मोहसाथे लष्ट पुष्ट के० चित्तविनानी प्रीति राखेछे, ने जेना कटाक्षनेविषे एटले थोडा विलोकनमां सहज स्वभावे मोक्षमार्ग सिद्ध थायछे. साधन के० मनोयोगादिक त्रण योगनो निरोध एटले निग्रह कर्योछे अने जेना शरीरने कष्ट नथी, एवा ज्ञानधारीने जे कर्म लहेर आवेछे तेने गणतीमां समाधि भावज जाणेछे; जो कदी गति कर्मना उदयवडे डोलेछे तोपण ते जोगासनधारीछे अने जो बोलेछे तोपण मष्ट के० मौनव्रति छे. ॥ ६ ॥

हवे ज्ञानीने परवस्तुनो त्याग कह्यो अने विशेषपणे तेनोज त्याग वखाणेछेः–

॥ अथ परवस्तुको त्याग ताको विशेष वर्णनं:– ॥

॥ सवैया इकतीसाः॥– आतम सुभाउ परभाउकी न सुद्धि ताकों, जाको मन गमन परिग्रहमें रह्यो है; ऐसो अविवेकको निधान परिग्रह राग, ताको त्याग इहांलों समुच्चैरूप कह्यो है; अव निज परे भ्रम दूरि करिवेके काजु वहुरो सुगुरु उपदेशको उमह्यो है; परिग्रह अरु परिग्रहको विशेष अंग, कहिवेको उद्यम उदीरि लह लह्यो है.

अर्थः– जेनुं मन परिग्रहनेविषे मग्न थई रह्युं छे, ते जीवने पोताना तथा पारका स्वभावनी शुद्धता थती नथी. परिग्रहनो राग तेतो अविवेकनुं निधान कह्युं छे, जे परिग्रहना रागनेविषे पोताना ने पारका स्वभावनी शुद्धता नथी, ते परिग्रह रागने त्याग अहीं सुधी सामान्य मात्र कह्यो. हवे निजस्वरूपनो भ्रम ने पर स्वरूपनो भ्रम तेने दूर करवाना कार्यने घणा प्रकारे सद्गुरु उपदेश करवाने उमंगवंत थया छे. हवे इहां परिग्रह तथा ते परिग्रहनुं विशेष अंग केहेवाने सद्गुरु जे छे ते उद्यम उदीरणा करीने लह लह्यो के० सचेत थया छे. ॥ ७ ॥

हवे सामान्यरूप परिग्रहनो राग अने विशेषरूप परिग्रहनो राग तेनो विवरो कहेछेः– अथ सामान्यविशेष कथनंः–

॥ दोहाः॥– त्याग जोग परवस्तु सब, यह सामान्य विचार; विविध वस्तु नाना विरति, यह विशेष विस्तार ॥ ८ ॥

अर्थः– जेटली परवस्तु छे तेटली बधी त्याग जोग छे. एतो सामान्यपणे परिग्रहना त्यागनो विचार जाणीये; अने ते परवस्तु भात भातनी छे अने तेना उपर विचारपण भातभातनो छे; एने विशेषपणे परिग्रह त्यागनो विस्तार जाणवो. ॥ ८ ॥

हवे परिग्रह छतां ज्ञातानी परिग्रह उपर अलिप्त दशा कहे छेः-
अथ ज्ञाता अलिप्त कथनंः-

॥ चोपाईः॥- पूरव कर्म उदै रस भुंजे; ज्ञान मगन ममता न प्रयुंजे, उरमें उदासीनता लहिये, यों बुध परिगह वंत न कहिये ॥ ए ॥

अर्थः- पूर्व कर्मना उदयथकी जे शुभाशुभ रस उपजे ते भोगवे पण ते रस भोगनेविषे ममता प्रयुंजे नही, मात्र ज्ञाननेविषेज मग्न रहे, पण परिग्रहना संयोग वियोगनेविषे हर्ष विषाद उपजे नहीं, एवी रीते जेना मनमां उदासीनता पामीये छइये, एवा बुध के० पंमितने परिग्रहवंत कहेवाय नही ॥ ए ॥

हवे ज्ञानीनी निस्पृह दशा वखाणे छेः- अथ ज्ञानी अवांछक कथनंः-

॥ सवैया इकतीसाः॥- जे जे मनवंछित विलास भोग जगतमें, तेते विनासिक सव राखे न रहत हैं; और जे जे भोग अभिलाष चित्त परिणाम, तेते विनासीक धर्मरूप व्है वहत हैं; एकता न डुहों मांहि ताते वांछा फुरे नांही, ऐसे भ्रम कारजको मूरख वहत हैं; सतत रहे सचेत परसो न करे हेत, याते ज्ञानवंतको अवंछक कहत हैं॥१०॥

अर्थः- मनना मानी लीधेला जे जे जगतना भोग विलास छे, ते ते नाश रूप छे, आपणा राख्या रेहेता नथी. वली जे जे भोग अभिलाषरूप चित्त परिणाम रहेछे ते ते चित्त परिणाम चंचलपणे विनासी धर्म रूपने विषे थई रह्या छे. एवा भोगनेविषे तथा भोग अभिलाषनेविषे अनेकता छे, पण एकता नथी. वली विनश्वरपणुं छे तेथी एना उपर ज्ञानीनी वांछा फुरती नथी. एवा भ्रम कार्यने मूर्ख होय तेज चाहे छे, जे सतत के० निरंतर सावधान रहे अने परवस्तु साथे हेत करे नही, एज माटे ज्ञानवंतने अवंछक निस्पृही कहेछे. ॥ १० ॥

हवे परिग्रहमां रेहेता छतां ज्ञाताने अलिप्तपणुं केवी रीते कहेवाय ते दृष्टांत आपीने समजावे छेः- अथ ज्ञाता अलिप्त दृष्टांत कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥- जैसे फिटकडी लोद्र हरडेकी पुटविना स्वेत वस्त्र डारिये मजीठ रंग नीरमें; भीग्यो रहै चिरकाल सर्वथा न होइ लाल, भेदे नही अंतर सपेती रहे चीरमें; तैसे समकितवंत राग दोष मोह विनु, रहे निशिवासर परिग्रहकी भीरमें, पूरव करम हरे नूतन न बंध करें जाचे न जगत सुख राचे न शरीरमें ॥ ११ ॥

अर्थः- जेम कोइ स्वेत वस्त्र होय तेने फटकडी लोदर तथा हरडानी पुट के० पट दीधा शिवाय मजीठना लाल रंगना पाणीमां चिरकाल के० घणाकाल सुधी भीनावी राखे तोपण ते वस्त्र सर्वथा प्रकारे लाल थाय नही; अंतररंग भेदे नही तेथी ते चीरमां सफेती रहेज; तेमज समकितवंत जे जीव होय ते राग द्वेष मोहना पटविना

निशिवासर के० रात दिवस परिग्रहनी भीडमां रहेछे, तोपण पूर्व कर्मना भोगनी निर्जरा करेछे, अने नवां कर्मनुं बंधन करे नही, अने जगत्ना सुखने जाचे नही. वली शरीरने जोईने राचे नही. ॥ ११ ॥

हवे परिग्रहने विषे रेहता ज्ञाताने उद्वेग रहितपणुं होय छे ते दृष्टांत वडे दृढ करावे छेः– अथ ज्ञाता अनुद्वेग कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे काहु देसको वसैया बलवंत नर, जंगलमें जाई मधु छत्ताकों गहतु है; वाकों लपटाय चहु ओर मधुमक्षिका पे कंबलीकी ओटसों अडंकित रहतु है; तैसे समकिती शिव सत्ताको सरूप साधे उदेकी उपाधिकों समाधिसी कहतु है; पहिरे सहज को सनाह मनमें उछाह, ठाने सुखराह उदवेग न लहतु है. ॥१२॥

अर्थः– जेम कोईक देशनो रेहेवासी भील वगेरे बलवंत नर जंगलमां जईने मधपुडाने ग्रहण करे छे, ते वखत ते पुरुषने चारे तरफ मधु मक्षिका के० मध माखीओ लपटाई जाय छे, पण ते पुरुषना शरीर पर कांमली होयछे, तेथी अडंकित के० डंखविना अडंख रहेछे; तेमज समकिती जीव शिव के० परमात्मानी सत्ता के० सद्भूतपणुं तेनुं स्वरूप जे एक विज्ञानघनपणुं तेने साधे छे, अने कर्म उदयनी जे आत्माने उपाधि लागी रहीछे, तेने ते समाधि करी जाणे छे. सहज गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तद्रूप जे सनाह के० बखतर ते पहेरी राखेछे, अने ए रीते जे कर्मनिर्जरा तेनो उछाह मनमां धारण करे एवा अनंत सुखना राह के० मार्गनेविषे रहेतो थको उद्वेग दशाने पामतो नथी. ॥ १२ ॥

हवे ए रीतमां ज्ञातानुं अबंधकपणुं बतावेछेः– अथ ज्ञाता अबंध कथनंः–

॥ दोहराः॥ ज्ञानी ज्ञान मगन रहे, रागादिक मल खोइ; चित उदास करनी करे, करम बंध नहि होइ. ॥ १३ ॥ मोह महातम मल हरे, धरे सुमति परगास; मुगति पंथ परगट करे, दीपक ज्ञान विलास. ॥ १४ ॥

अर्थः– ज्ञानी पुरुष तो ज्ञानमां मग्न रहेछे, अने रमेछे, अने राग-द्वेष-मोहरूपी जे मल छे, तेनें खोइ दिएछे; अने जे क्रिया करेछे ते पण उदासीनरूप करेछे, माटे एवा ज्ञानीने कर्म बंध थतो नथी. ॥ १३ ॥ वली मोहरूपी महातम के० घोर अंधकाररूप जे मल तेने हरे, अने सुमतिना प्रकाशनार दीपकने धरे, ए रीते मुक्ति पंथने प्रगट करी बतावे, एवोज ज्ञाननो विलास ते दीपकरूप जाणवो. ॥ १४ ॥

हवे ज्ञानदीपकनुं स्वरूप कही देखाडेछेः– अथ ज्ञान दीपक वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जामें धूमको न लेस वातको न परवेस, करम पतंगनिका नाश करे पलमें; दसाको न भोग न सनेहको संयोग जामें, मोह अंधकारको विजोग

जाके थलमें; जामें ततताइ नही रागरंग नांइ रंच, लह लहे समता समाधि जोग ज लमें; ऐसी ज्ञानदीपकी सिखा जगी अजंगरूप, निराधार फुरी पैं डुरी है पुदगलमें॥

अर्थः— जे ज्ञान दीपकमां धुमाडानो लेश नथी ने जेमां वायुनो पण प्रवेश नथी अने जे कर्मरूपी पतंग जीवनो पलकमां नाश करे छे, ने जेमां दशा के० दीवेटनो जोग नथी, (बीजो अर्थ)— कोइ विकल्प दशा नथी अने जेने सनेह के० घृत तेलनो संयोग नथी; वली जेना प्रकाशमां मोहरूप अंधकारनो वियोग थयो छे; वली जे दीपकमां तत तापणुं नथी; वली जेमां लालरंगनीरंचमात्र लालाश नथी, अने जे समता समाधिनो जोगते रूप जल तेनेविषे लहलहायमान थई रह्यो छे,एवो जे ज्ञानदीपक छे, तेनी शिखा सदा अजंगरूप जागी रही छे, अने ए शिखा सर्व पदार्थनुं ज्ञान करवानो आधार छे अने पोते निराधार फुरी रही छे, अने पुद्गलमां डुरी के० छुपी रही छे. ॥ १५ ॥

हवे ज्ञानना स्वजावमां खंमना नथी ते उपर दृष्टांत आपेछेः—

अथ ज्ञान स्वजाव अखंमित दृष्टांत कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसो जो दरव तामें तैसोही सुजाउ सधे, कोउ दर्व काउ को सुजाउ न गहतु है; जैसे संख उज्वल विविध वर्ण माटी जखे, माटीसो न दीसे नित उज्वल रहतु है; तैसे ज्ञानवंत नाना जोग परिगह जोग, करत विलास न अ ज्ञानता लहतु है; ज्ञानकला डूनी होइ डुंददशा सूनी होइ ऊनी होई जौथिति वनारसी कहतु है. ॥ १६ ॥

अर्थः— जे जेवुं ड्रव्य छे, तेमां तेवोज स्वजाव सिद्ध छे, पण कोई ड्रव्य अन्य ड्र व्यनो स्वजाव ग्रहण करे नही. जेम कोई जलाशयमां संख बेइंद्रीजीव होय ते स्वरू पमां उज्वल होय छे, पण जात जातनी माटी खाय छे, तेम छतां माटीनो रंग तेना स्वरूपमां देखातो नथी, तेतो नित्य उज्वलज देखाय छे; तेम ज्ञानवंत प्राणी परिग्र हना जोग थकी नाना प्रकारना जोग जोगवतो छतां अने विलास करतो छतां अज्ञानता पामतो नथी. अने ज्ञाननी कला बमणी थाय छे, अने द्वंद्रदशा के० ज्रमदशा ते शुनी थाय छे, अने जवस्थिति के० संसारस्थिति ते उणी के० ओछी थाय छे, एवी रीते वना रसी दासनुं कहेवुं छे. ॥ १६ ॥

हवे सम्यग् ज्ञाननी साथे सम्यक् क्रिया स्याद्वाद मतने आश्रयी कहे छेः—

अथ स्याद्वाद प्ररूपन कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जोलों ज्ञानको उदोत तोलों नही बंध होतु, वरते मिथ्या त तव नाना बंध होहि है; ऐसो जेद सुनिके लग्यो तुं विषै जोगनिसों, जोगनिसों उद्यमकी रीतितें विछोहि है; सुनो जैया संतत कहे में समकितवंत, यहु तो एकंत प

रमेसरकी दौहि है; विषेसों विमुख होइ अनुभो दशा आरोहि, मोख सुख ढोि
ऐसी तोहि मति सोहि है ॥ १७ ॥

अर्थः– ज्यां सुधी ज्ञाननो उद्योत छे त्यांसुधी बंध थतो नथी अने ज्यारे मिथ्
त्वदशावंत छे, त्यारे तो नाना प्रकारनो बंध थाय छे, कोई एकांतवादीयें एवो ज्ञा
माहात्म्यनो भेद सांभलीने एवुं कह्युं, के तुं विषय भोगववा लाग्यो छे, अने मन, व
न, कायाना योग थकी उद्यमनी रीति जे क्रिया, तेने तें छोडी दीधी छे, तेने कहे
के हे सत् पुरुष, सांभल तुं जे कहे छे, के हुं समकितवंत छुं, पण ए एकांतमत जे
ते परमेश्वर परमात्मानी दोही के० द्रोह करनारी छे, माटे तुं विषयथी विमुख थई
अनुभव दशामां गुण श्रेणि धरी आरोहण करी अने मोक्षना सुखने ढोही के० जो
तो एवीज बुद्धि थकी शोभे छे. ॥ १७ ॥

हवे ज्ञाननुं तथा विषय विमुखतानुं सहचारिपणुं बतावेछेः–

अथ ज्ञान वैराग्य युगपद् वर्णनंः–

॥ चौपाईः ॥– ज्ञानकला जिनके घट जागी; ते जगमांहि सहज वैरागी; ज्ञान
मगन विषैसुखमांही; यहु विपरीत संभवै नांही. ॥१८॥ दोहाः॥– ज्ञान सहित वैराग
बल, शिव साधै समकाल; ज्यों लोचन न्यारे रहैं, निरखै दोऊ नाल. ॥ १९ ॥

अर्थः– जेना घटनेविषे ज्ञानरूपी कला जागी छे तेतो जगत्नेविषे सहेजे वैराग
रहे छे. ज्ञानी थईने विषयसुखमां मग्न होय ए विपरीत वात संभवती नथी ॥ १८
वली ज्ञाननी संगति ने वैरागनी संगति ए बंने चीज समकाल मलीने मोक्षने साधे
जेम बे आंखो जुदी रहीछे, पण नाल के० साथे बेउ नेत्र पदार्थने जुएछे. ॥ १९

हवे मूर्खने कर्मनुं कर्त्तापणुं अने ज्ञानीने निर्जरानुं कर्त्तापणुं ए बेनुं स्वरूप कहेछे
अथ मूढ कर्त्ता कर्मको यह कथनंः–

॥ चौपाईः॥– मूढ कर्मको कर्त्ता होवै; फलअभिलाष धरै फल जोवै; ज्ञानी क्रिय
करै फल सूनी; लगै न लेप निर्जरादूनी ॥ २० ॥ दोहाः– बंधे कर्मसों मूढज्यो, पा
कीट तन पेम; खुलै कर्मसों समकिती, गोरख धंधा जेम. ॥ २१ ॥

अर्थः– मूढ छे ते कर्मनो कर्ता बने छे, केमके ते क्रियाना फलनो अभिलाष ध
छे, अने फलने जोई रहेछे; ने जे ज्ञानी होय ते क्रिया तो करें पण फल शुन्य
करे, तेथी ज्ञानीने कर्मनो लेप लागतो नथी; एथी बमणी निर्जरा थाय छे. ॥ २० ॥

वली जे मूढ छे ते कर्मनेविषे बंधाइ रहेछे, जेम रेशिमनो किडो पोताना शरी
ना प्रेमवडे पोतानी लाल थकी पोतेज बंधाय छे, अने जे समकिती होय तेतो कर्

नी जालथी खुलेलो रहे छे, कोनी पेठे? जेम गोरखधंधो पोतानी जालथी खुली जा यछे तेम जाणवुं ॥ २१ ॥

हवे ज्ञानी जीवने कर्मनुं अकर्त्तापणुं तथा निर्जरारूप ठरावे छेः—

अथ ज्ञानीको अकर्तृत्व कथनंः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— जे निज पूरव कर्म उदै सुख भुंजत भोग उदास रहेंगे; जे दुखमें न विलाप करै निरवैर हिये तन ताप सहेंगे; है जिनके दृढ आतम ज्ञान क्रिया करिके फलकों न चहेंगे; ते सुविचछन ज्ञायक है तिनको करत्ता हम तो न कहेंगे॥२२॥

अर्थः— जे जीव पोताना पूर्वे संचित शुभ कर्मना उदय वडे सुख भोगवतो थको पण भोगथी उदास रहे छे, अने जे जीवने असाता वेदनीयना उदयथी दुःख उपजे तो पण विलाप करे नही, अरतिनो विभाग करे नही, अंतरमां कोई चिंता नही राखे; अने शरीरनो संताप सहन करे, वली जेनीपासे आत्मज्ञान छे, तेतो क्रिया करीने फलने इछे नही; तेज उत्कृष्ट विचक्षण ज्ञानी कहेवाय छे, अने तेने कर्म करता थका कर्मना कर्त्ता एम तो अमे कही शकशुं नही ॥ २२ ॥

हवे एवा ज्ञानीनी व्यवस्था कहे छे. ज्ञाता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिनकी सुदृष्टिमें अनिष्ट इष्ट दोउ सम, जिनको आचार सुविचार सुभ ध्यान है; स्वारथको त्यागी जे लहेंगे परमारथको, जिनके वनिजमें नफा न है न ज्यान है; जिनकी समुझमें शरीर ऐसो मानीयतु, धानकोसो छीलक कृपानकोसो म्यान है; पारखी पदारथके साखी भ्रम भारथके, तेई साधु तिनहीको जथारथ ज्ञान है. ॥ २३ ॥

अर्थः— जे ज्ञातानी सुदृष्टि एवी छे के, जेनेविषे इष्ट वस्तु तथा अनिष्ट वस्तु बेउ बराबर छे, अने जेनो आचार एवो छे के जे भला विचारथी शुभ ध्यानमांज रहे, अने विषय सुख प्रमुख स्वार्थने त्यागीने जे अध्यात्मरूप परमार्थ तेनेविषे लागी रहे छे, वली जेनां वचन एवां छे के, जेमां नफो नथी तेम टोटो पण नथी, एटले कोईने सुसीख किंवा कुसीख देता नथी; मौन वृत्तिज रहेछे. वली जेनी समज एवी होय के शरीरने धानना छील के॰ तुस जेवुं अने कृपान के॰ तरवार तेना म्यान जेवुं माने छे, मतलब के आत्माने शरीरथी जुदो जाणे छे. वली जे जेवो पदार्थ होय तेवी तेनी परीक्षा करे छे, अने जेम नय ज्ञानविना पांच दर्शनमां जे भ्रमनुं भारथ चाली रह्युं छे,तेनोसाक्षी छे; पूछवानुं थानक छे, तेहिज साधु कहेवाय छे, अने तेने यथार्थ ज्ञानी कहिये. ॥२३॥

हवे समकितनुं साहसपणुं वर्णन करेछेः— अथ सम्यक्त्वंतको साहसकथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जमकोसो भ्राता दुःखदाता है असाता कर्म, ताके उदै

मूरख न साहस गहतु है; सुरग निवासी भूमिवासी औ पतालवासी, सबहीको तन मन कंपत रहतु है; उरको उजारो न्यारो देखिये सपत भैसों, डोलतु निशंक भयो आनंद लहतु है; सहज सुवीर जाको सासुतो शरिर ऐसो, ज्ञानी जीव आरज आचारज कहतु है ॥ २४ ॥

अर्थः– आहं संसारनेविषे जे असाता वेदनीय कर्म छे, ते केवां दुःखदाता छे? अहिं उत्प्रेक्षा करे छेः– जमकासो भ्राता के० यमना भाई छे, तेनो उदय थता मूरख जन जे छे, तेतो साहस ग्रही शके नही. सुरगनिवासी के० देवता भूमिवासी के० मनुष्य तिर्यंच् अने पातालवासी देवता नारकी एवा सर्व त्रिलोकवासी जीवोनां तन मन असातावेदनीय थकी कांपता रहेछे, हवे ज्ञानी जीवना उरनुं अजवाळुं जे छे ते अंतरना चांदरणां जेवुं छे, ते केवुं छे? ते समजावे छे के, ते सात भय थकी जुदुंज छे, जे अजवालाथी साते भय प्राप्त थता नथी, अने ए प्रभावथी निःशंक थई रुोले छे, अने आनंद पामे छे. सहज सुवीर के० महोटो साहसीक सुभट, जेनुं ज्ञानरूपी शरीरशाश्वत छे, एवा ज्ञानी जीवो आचार्य के० महा पुरुष पूज्य जाणवा, एवुं आचार्य कहेछे. ॥२४॥

हवे साते भयनां नाम कहेछेः– अथ सप्त भयनामः–

॥ दोहाः॥– इह भव भय परलोक भय, मरन वेदना जात; अनरक्षा अनगुप्तभय अकस्मात भय सात ॥ २५ ॥

अर्थः– आ भवनो भय, परलोकनो भय, मरण भय, वेदना उपजवानो भय, अनरक्षानो भय, अनगुप्त भय, अने अकस्मात् भय. ए सात भय जाणवा ॥ २५ ॥

हवे साते भयनां लक्षण कही जुदां जुदां उलखावे छेः–अथ सप्त भय लछन कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– दसधा परिग्रह वियोग चिंता इह भव, दुर्गति गमन परलोक भय मानिये; प्राननिको हरन मरन भै कहावै सोई, रोगादिक कष्ट यह वेदना वखानिये; रक्षक हमारो कोउ नांही अनरक्षा भय, चौर भै विचार अनगुप्त मन आनियें, अनचिंत्यो अवहि अचानक कहांधों होइ, ऐसो भय अकस्मात जगतमें जानिये. ॥

अर्थः– शास्त्रमां जे दश भातनो परिग्रह कह्यो छे, तेना विजोगनी चिंता रहे तेज आ भवनो भय जाणवो. दुर्गतिगमननो जे भय ते परलोकनो भय कहिये; प्राण छूटवानो जे भय ते मरण भय; रोग प्रमुखथकी जे कष्ट उपजे ते वेदना भय वखाणिये; अमारी रक्षा करनार कोई नथी देखातो ए अनरक्षा भय; चोर अथवा दुश्मन आव्याथी हुं शुं यत्न करी शकीश एवो जे भय तेने अनगुप्त जाणिये. अणचिंत्युं शुं थशे एवो जे भय मननेविषे रहे तेनुं नाम अकस्मात् भय जाणवो.॥ २६ ॥

हवे आ भवना भय निवारण रूप मंत्र कहेछेः— अथ इह भव भय निवारण कथनंः—

॥ छप्पय छंदः॥— नख शिख मित परवान, ज्ञान अवगाह निरक्कत; आतम अंग अभंग, संग परधन इम अक्खत; छिनभंगुरसंसार, विभव परिवार भारज सु; जहाँ उतपति तहाँ प्रलय, जासु संयोग विरह तसु; परिग्रह प्रपंच परगट परखि, इह भव भय उपजै न चित; ज्ञानी निशंक निष्कलंक निज; ज्ञानरूप निरखंतनित ॥ २७ ॥

अर्थः— पगना नखथी ते माथानी शिखासुधी एटले सर्व शरीर प्रमाण आत्मानो गुण जे ज्ञान ते अवगाह के० व्याप्ति तेने जुए, एवां नख शिख सहित ज्ञानमय आत्मानुं अंग अभंग रहे, तेनी साथे पुद्गल छे तेने परधन के० परद्रव्य कहेछे, अने सर्व संसार क्षणभंगुर छे, ने तेने जे विभव परिवाररूप भार छे, ते पण क्षणभंगुर छे, अने जेनी उत्पत्ति तेनो विनाश छे, जेनो संयोग तेनो वियोग पण थाय छे, एवो परिग्रहनो प्रपंच प्रगट परखीए तो आ भवनो भय चित्तमां उपजे नही. ए रीते जे ज्ञानी होय ते परिग्रहना वियोगनी चिंता न राखे, निःशंक रहे, पोतानुं निष्कलंक स्वरूप ज्ञान मय सदा जुए. ॥ २७ ॥

हवे परलोकभय निवारणनुं मंत्र कहेछेः— अथ परलोक भय निवारण मंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥— ज्ञान चक्र मम लोक,जासु अवलोक मोख सुख; इतरलोक मम नांहि नांहि जिसमांहि दोष दुख; पुन्न सुगति दातार, पाप दुरगति पद दायक; दो खंडि त खानिमें, अखंडित है शिवनायक; इह विधि विचार परलोक भय, नहि व्यापक वरते सुखित; ज्ञानी निःशंकनिष्कलंक निज ज्ञानरूप निर्खंतनित ॥ २८ ॥

अर्थः— ज्ञान चक्र के० ज्ञान विस्तार तेतो ममलोक के० मारो लोक छे, मह्यरो प्र चार छे, तेने प्रत्यक्ष जोवो, अने मोक्ष सुख बन्ने रूप छे, अने इतर लोक के० तेवि ना अन्य लोक ते मारो नथी, मह्यरो ज्ञान लोक मारी साथे छे, जेनेविषे दोष दुःख नथी. परलोकमां सुगतिनुं देनार पुण्य छे, अने परलोकमां कुगतिनुं आपनार पाप छे. ए बे पुण्य पाप आत्मानी खंडनानी खाणी छे. अने हुं अखंडित रूप छु. शिवना यक के० सिद्धरूपी छुं एवा विचारथी परलोक भय व्यापे नही; अने सुखित के० सदा सुखवंत वर्त्ते; ए प्रमाणे परलोक भय छांडिने ज्ञानी पुरुष निशंक थको निष्कलंक एवुं जे निजज्ञानरूप तेने सदा निरखे ॥ २८ ॥

हवे मरणभय निवारणनो मंत्र कहे छेः— अथ मरन भय निवारण मंत्रः—

॥ छप्पय छंदः॥— फरस जीभ नाशिका, नैन अरु श्रवन अक्ष इति; मन वच तन बल तीन, सास उस्सास आउ थिति; ए दस प्राणविनाश, ताहि जग मरण कहीजे;

ज्ञान प्राण संयुक्त; जीव तिहु काल न छीजे; यह चित करत नहि मरण भय, नय प्रमाण जिनवर कथित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंतनित. ॥ २९ ॥

अर्थः– स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, ए पांचे इंद्रिय; मनोबल, वचनबल, ने कायबल ए त्रण, श्वासोश्वास, आयुस्थिति, ए दश प्राण आदिनो विनाश थाय, तेने जगत्मां मरणभय कहे छे, पण जीव पदार्थ छे ते ज्ञानरूपी भाव प्राण संयुक्त छे, तेतो जीवने ज्ञान प्राण त्रणे काळनेविषे छूटे नही, एवो विचार मनमां करवाथी मरणभय उपजे नही. नय प्रमाण वडे एवुं जिनेश्वरनुं कथन छे, ज्ञानी लोक निःशंक पणे पोताना निष्कलंक स्वरूप ज्ञानरूपने सदा निरंतर निरखत के० सत्यपणे जुए छे॥२९॥

हवे वेदना भय निवारणरूप मंत्र कहे छेः–अथ वेदना भय निवारण मंत्रः–

॥छप्पय छंद॥ः–वेदनवारो जीव, जांहि वेदंत सोउ जिय; यह वेदना अभंग, सुतो मम अंग नांहि व्यय; करम वेदना द्विविध, एक सुखमय दुतीय दुख; दोऊ मोह विकार, पुद्गलाकार बहिरमुख; जब यह विवेक मनमहिं धरत, तब न वेदना भय विदित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३० ॥

अर्थः–वेदनावारो एटले जाणनारो तेतो जीव छे, अने जेने जाणवुं छे, तेपण जीवज छे, एटले वेदनावंत ते ज्ञानी जीवए ज्ञानरूप वेदन जे अभंग रूप छे तेतो मारुं अंग छे, अने कर्म वेदना जे छे ते मारी नथी. अने ते कर्मरूप वेदना बे प्रकारनी छे, एक सुखमय वेदना ने बीजी दुःखमय वेदना छे, ए बेउ मोह विकार छे, एवी सुख दुःखनी वेदना पुद्गलाकार छे, पुद्गलनी छाया बाह्यरूप छे, ज्यारे एवो विवेक विचार मनमां धरे छे, त्यारे वेदनानो भय वेदी शकातो नथी. ज्ञानी लोक होय तेतो वेदनाना भयथी निःशंक रहे अने निष्कलंक एवुं पोतानुं ज्ञान स्वरूप तेने सदा जोता रहे ॥ ३० ॥

हवे अनरक्षाभय निवारणरूप मंत्र कहे छेः–अथ अनरछा भय निवारण मंत्रः–

॥छप्पय छंदः॥–जो स्ववस्तु सत्ता सरूप जगमहि त्रिकाल गत; तास विनास न होइ सहज निहचै प्रमाण मत; सो मम आतम दरब, सरवथा नहि सहायधर; तिहि कारन रछक न, होइ भछक न कोइ पर; जब यहि प्रकार निरधार किय, तब अनरछा भय नसित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३१ ॥

अर्थः–स्ववस्तु के० निजआतमरूप वस्तु; सत्तास्वरूप के० द्रव्यपणे छतुं कहेवाय ते जगत्मां त्रणे काळनेविषे पामिये, तेनो क्यारे पण विनाश नथी थतो, एवुं सहज स्वरूप निश्चयनयना प्रमाणवडे जाणवुं; एज मारुं आत्मद्रव्य जे छे, तेतो सर्वथा प्रकारे कोईनो सहाय धरतुं नथी, तेमाटे ए आत्मद्रव्यनो कोई रक्षक नथी. तेमज

कोईपर के० बीजो एनो जक्षक पण नथी. जेवारे एवो विचार हृदयमां नकी करी राखे, त्यारे अनरक्षा जय नाश पामे, एवा ज्ञानी होय ते अनरक्षा जयथी निःशंक थका पोताना निष्कलंक ज्ञानस्वरूपने सदा निरखे छे. ॥ ३१ ॥

हवे चौरजय निवारण रूप मंत्र कहे छेः—अथ चौरजय, निवारनमंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥—परम रूप परतछ, जासु लछन चिन् मंडित; पर प्रवेश तहाँ नांहि महि माहिं अगम अखंडित; सो मम रूप अनूप, अकृत अमित अखूट धन; तांहि चोर किम गहै, ठोर नहि लहै और जन; चितवंत एम धरि ध्यान जव, तव अगुप्त जय उपसमित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित. ॥३२॥

अर्थः—जे परम स्वरूप कहेवाय छे, अने मान सन्मानवडे प्रत्यक्ष छे, चिन्मंडित के० चिन्मय एवुं जेनुं लक्षण छे, अने जेना स्वरूपनेविषे परस्वरूपनो प्रवेश नथी; महीमांहि के० पृथ्वीना वचमां अगम्य छे, अने अखंडित छे, एवुं तो अनूपम मारुं रूप छे, ते कोईनुं कीधेलुं नथी, अमित के० प्रमाणविना, एवुं अखूट धन छे, ते धनने चोर केम हरी शके ? अने और के० बीजा कोई लोक तेनी जगा पामी शके नही. ज्यारे ध्यान धरीने एवुं चिंतवन करे त्यारे अगुप्त जय के० उघाडा धननो जे जय ते उपशमी जाय. अने एवा ज्ञानी होय ते अगुप्त जयथी निःशंक थका पोताना निष्कलंक ज्ञान स्वरूपने सदा निरखता रहेछेः ॥ ३२ ॥

हवे अकस्मात्‌जय निवारण रूप मंत्र कहेछेः—अथ अकस्मात्‌जय निवारण मंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥—शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सहज सु समृद्ध सिद्ध सम; अलख अनादि अनंत, अतुल अविचल सरूप मम; चिद विलास परगास, वीत विकलप सुख थानक; जहाँ दुविधा नहि कोइ, होइ तहाँ कछु न अचानक; जव यह विचार उपजंत तव, अकस्मात जय नहि उदित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञान रूप निरखंत नित. ॥ ३३ ॥

अर्थः—जे वस्तु शुद्ध छे, केवल पोताना स्वरूपने विषेज छे, बुद्ध के० ज्ञानमय छे, अविरोधी छे, सिद्धसमान ऋद्धिवंत छे, अलक्ष छे, आदिरहित छे, अने अंत रहित छे, जेनी तुलना कोईथी न थाय माटे अतुल छे, एवुं अविचल मारुं रूप छे. चिद्‌विलास के० ज्ञानविलासनो जेने प्रकाश छे. वीतविकलप के० अवस्था भेद रहित छे, अने समाधि सुखनुं थानक छे. ज्यां कोई विजातीय न पामिये त्यां कोई अणचिंतव्यो अचानक जय शोक कांई उपजे नही, आवो विवेकविचार हृदयामां ज्यारे उपजे छे, त्यारे अस्कमात् जय जे छे; ते उदय थतो नथी. जे ज्ञानी हो

य छे ते अकस्मात् भयथी निःशंक थको पोताना निष्कलंक ज्ञान स्वरूपने सदा जोता रहेछे. ॥ ३३ ॥

हवे निर्जराना करनार ज्ञानीनी व्यवस्था कहेछेः— अथ ज्ञानी व्यवस्था कथनंः—

॥ छप्पय छंदः॥—जो परगुन त्यागंत, शुद्ध निजगुन गहंत ध्रुव; विमल ज्ञान अंकूरा जासु घट महि प्रकास हुव; जो पूरव कृतकर्म, निर्जरा धार वहावत; जो नव बंध निरोध, मोक्ष मारग मुख धावत; निःसंकतादि जस अष्ट गुन, अष्ट कर्म अरि संहरत; सो पुरुष विचक्षन तासु पद, बनारसी वंदन करत. ॥ ३४ ॥

अर्थः— जे कोई पुद्गलादि गुणनो त्याग करे, अने ध्रुव के० निश्चयरूप एवा शुद्ध पोताना गुणनुं ग्रहण करे; निर्मल ज्ञाननो अंकुर के० उदय जेना घटमां प्रकाशित थयो, अने जे पूर्वकृत कर्मने निर्जरानी धार के० श्रेणिविषे वहावि दिये वली जे नवा बंधनो निरोध करीने एटले निराश्रव थईने मोक्षमार्गने सन्मुख दोडेछे; गुण श्रेणिमां दोडेछे, निशंकित प्रमुख जेना आठ गुण छे, ते आठे कर्मरूप शत्रुनो संहार करे, तेज विचक्षण पुरुष कहेवाय, अने तेना चरणकमलने वणारसीदास वंदन करेछे ॥ ३४ ॥

हवे आठ अंगनां नाम कहेछेः— अथ अष्टांगके नाम कथनंः—

॥ सोरठाः॥— प्रथम निसंसैजानि, दुतिय अवंछित परिनमन; तृतिय अंग अगिलान, निर्मल दृष्टि चतुर्थ गुन ॥ ३५ ॥ पंच अकथ परदोष, थिरी करन छठम सहज सत्तम वछल पोष, अठम अंग प्रभावन. ॥ ३६ ॥

अर्थः— पेलुं निःसंशय के० निःशंकित, बीजुं समकितनो गुण जे अवांछक पणारूप मननो परिणाम, त्रीजु अंग अग्लान, चोथुं गुण निर्मल दृष्टि एटले मूढ दृष्टि नही ते ॥ ३५ ॥ पांचमुं परदोष अकथन, छठुं अंग समकित स्थिर करवाना स्वभावरूप, सातमुं सर्व साथे वाछलपणुं अध्यात्मक पोषक, अने आठमुं अंग प्रभावना गुणरूप॥३६॥

हवे अंगनां लक्षण कहे छेः— अथ अंग लक्षणंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— धर्ममें न संसै शुभकर्म फलकी न इछा, अशुभको देखि न गिलानि आनै चित्तमें; साचि दृष्टि राखै काहू प्रानीको न दोष भाखै, चंचलता भानि थिति ठानै बोध चित्तमें; प्यारे निजरूपसों उछाहके तरंग उठे, एह आठो अंग जब जागे समकितमें; तांहि समकितकों धरे सो समकितवंत, वहे मोषपावे वेन आवै फिर इतमें ॥ ३७ ॥

पुनः— धर्मनेविषे संदेह नहोय ते निःशंकित गुण, शुभ कर्मना फलनी इछा न होय ते निस्पृही गुण, अनिष्ट वस्तुने जोइने चित्तमा ग्लानी न लाववी ते अग्लान गुण, कोईना

मुगाव्यामुगवुं नही ने साचनेविषे दृष्टि राखवी ते अमूढ दृष्टिगुण, कोई प्राणीनो दोष कहेवो नही ते दोषाकथन गुण; चंचलता त्यागीने ज्ञानरूप चित्तनेविषे स्थिरता राखवी ते थिरीकरण गुण;आत्म स्वरूपमां प्रेम राखवो ते वछल गुण;अने आत्मस्वरूप साधननेविषे उछाह लहरी के० तरंग उठवापणुं लीधुं रहे ते प्रभावना गुण, एम एक समकितना आठे अंग ज्यारे जागे, अने ते आठ गुणे सहित सम्यक्त्व धारण करे, ते समकितवंत केहेवाय ने तेवाज समकिती मोक्ष पामे, ने फरीथी आ संसारमां आवे नही

हवे निर्जराधारी चैतन्यनुं नाटक कहे छेः—अथ चैतन्य नाटक कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—पूर्व बंध नासे सोतो संगित कला प्रकाशे, नव बंध रुंधी ताल तोरत उछरिके; निसंकित आदि अष्टअंग संग सखा जोरी, समता अलाप चारि करे सुख भरिके; निरजरा नाद गाजे ध्यान मिरदंग वाजे, छक्यो महानंदमें समाधि रीझि करिके; सत्तारंग भूमिमें मुकत भयो तिहू काल, नाचे शुद्ध दृष्टि नट ज्ञान स्वांगधरिके ३८

अर्थः— जेम पूर्वकालनेविषे उत्कृष्ट स्थिति थकी बंध करतो हतो तेवी रीते न करतां अनुत्कृष्ट स्थिति थकी करवो एम पूर्व बंध नासे, तेतो संगित कला आलापचारी प्रकाशे, अने नवा बंधने रोधवुं ते रूपताल उछले छे, तालतोरे छे, निःशंकित प्रमुख जे समकितनां आठ अंग कह्यां, ते सहाय जोडी समता समाधि धारी तद्रूप स्वर बांधीने आलाप करे छे, अंही कर्मनी निर्जरा हेतु छे, एटले कर्मनाश करवारूप कार्यनुं निर्जरा कारण छे, ते ध्याननेविषे एक स्वरूपनाद गाजे छे, अने "सोहं" ध्वनि छे तेरूप मृदंग वाजे छे, अंही जे महानंदमय थईने छक्यो तेतो सुखी थयो, ते जाणिये रीझ थई, ने पोतानी आत्मसत्ता तेज कोई रंगभूमि छे एटले रंग मंडप थयो, तेनेविषे त्रणे कालमां शुद्ध दृष्टिसहित ज्ञानरूप वेष स्वांग पहेरी धरीने नटरूप चैतन्य मुक्त थइने नाचे छे

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बालबोधरूप निर्जराद्वार सप्तम संपूर्ण. ॥

॥ दोहाः ॥— कही निर्जराकी कथा, शिवपथ साधनहार; अब कछु बंध प्रबंधको, कहुं अल्प विस्तार ॥ ३९ ॥

अर्थः—मोक्ष मार्गनी साधनकार जे निर्जरा तेनी कथा हती ते कही, हवे जे बंध थाय छे तेना अधिकारनो अल्प विचार कहेछे ॥ ३९ ॥

हवे बंध जे छे ते छांडवा योग्य छे, माटे ते बंधनो विदारणहार जे समकित तेने नमस्कार करेछेः—अथ बंध विदारन सम्यक्त्व वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—मोह मद पाई जिन संसारी विकल कीने, याहिते अजानुबाहु विरद वहतु है; ऐसो बंध वीर विकराल महाजाल सम, ज्ञान मंद करे चंद राहु ज्यों गहतु है; ताको बल भंजिबेकों घटमे प्रगट भयो, उद्धत उदार जाको

उदेस महतु है; सो है समकित सूर आनंद अंकूर ताही, निरखी बनारसी नमो नमो कहतु है. ॥ ४० ॥

अर्थः–जे बंधरूप सुजट ठे ते मोहरूप मदिरा पाईने सर्व संसारी जीवने विकल करेठे, एथी ए बंधरूप वीर ठे ते अजानुबाहुनुं वीरुद कहावेठे के० सार्वजौम थई रहेला ठे, एवो विकराल ए बंधरूप वीर सुजट ठे, वली ए महाजाल समान ठे. अने एज ज्ञान प्रकाशनें मंद करेठे, कोनी पेठे? जेम राहु चंद्रने मंद करेठे, तेनी पठे जाणी लेवुं. हवे एवा बंधरूप वीरनो प्रतिपक्षी जे ठे, ते एनुं बल तोरुवाने घटनेविपेज प्रगट थयो ठे, जेनो उद्यम उरूत ठे, एटले कोईथी रोक्यो रहे एवो नथी, अने उदार ठे के० श्रेष्ठ ठे. तथा महत के० मोटो ठे, तेतो समकितरूप शूरवीर जाणवो. ते आनंद अंकूर लईने उदय थयो ठे, ते सम्यक्त्व शूरवीरने जोईने पोताना अंग उल्लसित थको बनारसीदास नमो नमो कहेठे. ॥ ४० ॥

हवे चेतनाविना कर्म बंध नथी थतां, माटे ज्ञानचेतना तथा कर्म चेतना ए बे उनी समज पाडेठेः–अथ कर्मचेतना ज्ञानचेतना वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः–जहां परमातम कलाको परगास तहां, धरम धरामें सत्य सूरजको धूप है; जहां शुज अशुज करमको गढाश तहां; मोहके विलासमें महा अंधेर कूप है; फेली फिरै ठटासी घटासी घट घन वीच, चेतनाकी चेतना उुहोंधा गुपचूप है; बुद्धिसों न गही जाय वेनसों न कही जाय, पानीकी तरंग जैसे पानीते गुरुप है.॥४१॥

अर्थः–जे चेतनामां परमात्मानी कलानो प्रकाश थाय ठे, ते धर्म धरती ठे. ते धरतीमां सत्यरूप सूर्यनो तमको ठे, एटले उजली जगा ठे. वली जे चेतनानेविषे शुज अशुज कर्मना रसनी गढाश ठे, एटले शुजाशुज कर्मना रस वडे जे चेतना घोलाइ रही ठे, त्यां मोहराजा विलास करे ठे, तेतो घोर अंधकार ठे, ए रीते चेतन पुरुषनी जे चेतना के० संज्ञा ठे, तेतो घटाघन बीच के० शरीररूप मेघवच्चे ठटानी माफक फेली रही ठे, अने घटानी माफक फेलीथकी फरे ठे, अने ए चेतना ते परमात्मानी कलाना प्रकाशमां तथा मोहविलासमां ए बेउ तरफ गुपचुप ठे, एटले चुप थई रही ठे; एवी ए चेतना बे तरफ प्रवेश करे ठे, ए वात बुद्धिथी ग्रहण थाय ठे; पण वचनथी कही जाय एवी नथी, जेम पाणीना तरंग पाणीमां गुरुप्प ठे तेम चेतना बेउ तरफ गुरुप्प ठे. ॥ ४१ ॥

हवे बंध द्वारनेविषे बंधनो हेतु कहे ठेः– अथ बंधनिदान कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– कर्मजाल वर्गनासों जगमें न बंधे जीव, बंधे न कदापि मन वच काय जोगसों; चेतन अचेतनकी हिंसासों न बंधे जीव, बंधे न अलख पंचविषे

विखरोगसों; कर्मसों अवंध सिद्ध जोगसौं अवंध जिन हिंसासौं अवंध साधु ज्ञाता विषै भोगसों; इत्यादिक वस्तुके मिलापसों न वंधे जीव, वंधे एक रागादि अशुद्ध उपजोगसों ॥ ४२ ॥

अर्थः– कोई कहे छे के कर्मजाल वर्गणा थकी जगत्मां जीव वंधाय छे, ते वात खोटी एटले कर्म वर्गणा जीवना वंधनो हेतु नथी, एवी रीते कदाचित् मनवचन कायाना योगथी पण जीव वंधातो नथी; चेतन तथा अचेतननी हिंसाथकी पण जीवने वंध थतो नथी. अलक्ष पति छे, तथा अलक्षरूपी छे; ते पंचेंद्रियना विषयरूप विष रोग वडे पण वंधातो नथी. कर्म वर्गणाथी सिद्धना जीव वंधाता नथी; वली जिनेश्वर देव छे तेतो त्रणे योगमां छे तोपण अवंध छे; साधुजेछे, ते अनाभोगपणे हिंसा करे छे, तोपण अवंध छे; ज्ञाता विषय भोगवेछे, तो पण ते अवंध छे. ए रीते कर्म वर्गणा प्रमुख वस्तुना मिलापथी जीववंधातो नथी. पण मात्र एक राग द्वेषने मोह अने जीव वंधरूप अशुद्ध उपयोगथीज जीव वंधाय छे ॥ ४२ ॥

हवे राग द्वेष अने मोहनेज दृढपणे वंधना हेतु ठरावे छेः–

अथ वंधनिदानदृष्टि करन व्यवस्थाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कर्मजाल वर्गनाको वास लोकाकाश माहिं, मन वच काथाको निवास गति आउमें; चेतन अचेतनकी हिंसा वसै पुद्गलमें, विषै भोग वरते उदेके उरजाउमें; रागादिकशुद्धता अशुद्धता है अलखकी; यहे उपादान हेतुवंधके व ढाउमें; याहिते विचछन अवंध कह्यो तिहूं काल, राग दोष मोहनादि सम्यक् सुभाउमें.४३

अर्थः– कर्म जाल वर्गणानो वास तो लोकाकाशमांज छे, केवल कर्म वर्गणा कारण थकीज जो अमूर्त्ति चेतनद्रव्य वंधभावने पामे, तो लोकाकाशनो वंध केम नही थाय? तेमज मन वचन अने कायाना योगनो वास तो चारे गतिनेविषे छे, अने चारे आउषामां छे, त्यारे योग ते आत्माना वंधना हेतु केम थाय? चेतननां प्राण हरणथी हिंसा थाय छे; ते पुद्गल वंधरूप प्राणमांज हिंसा थाय छे, एमज अचेतननी हिंसा पण पुद्गलमां छे, ते आत्मासाथे स्पर्शती नथी, तो वंध केम थाय? अने विषय भोग जे वरते छे, तेतो कर्मना उदयमां छे, अरुजी रह्या छे, अने आत्मा तो तेथी निरालो छे, ते वंधाय केम? माटे राग द्वेषने मोहथकी जेशुद्धता के० मुग्धता थाय ने परवस्तुने पोतानी करी मानवी ते अलख पुरुषनी अशुद्धता छे. अने एज अशुद्धता वंधने वधारे छे, ए माटे विचक्षण पुरुषने त्रण कालविषे अवंध कह्यो; केमके, तेने सम्यक् स्वभावमां राग द्वेष अने मोह नथी. ॥ ४३ ॥

हवे ज्ञाताने अबंध कह्यो तोपण उद्यमी थइने क्रिया करवी ते समजावेछेः—

अथ उद्यम प्रशंसाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कर्मजाल जोग हिंसा भोगसों न बंधे पै त, थापि ज्ञाता उद्यमी बखान्यो जिन बैनमें; ज्ञानदृष्टि देतु विषै भोगनिसों हेतु दोउ, क्रिया एक खेत यो तौ बनै नांहि जैनमें; उद्रै बल उद्यम गहे पै फलकौं न चहे, निरदै दसा न होइ हिरदेके नैनमें; आलस निरुद्यमकी भूमिका मिथ्यात मांहि, जहां न संभरे जीव मोहनींद सैनमें ॥ ४४ ॥

अर्थः— जीव छे ते कदापि कर्मजालथी बंधाय नही, अने जोग थकी, पण बंधाय नही अने हिंसा थकी पण न बंधाय, भोगवडे बंधायतोपण जिनेश्वरनावचनथकी ज्ञाता जीवने उद्यमीज वखाण्यो छे. ज्ञाननेविषे दृष्टिपण आपेछे, अने विषयभोगमां प्यार पण राखे छे, एवी बे क्रिया एक खेत के० एक आत्माविषे एक स्थानकविषे करेछे, एवुं तो जैनवासीमां बने नही; अने जे ज्ञानी होय ते एटलुं तो करेके जे संहनन के० संघयण प्रमुख कर्मनुं उदय बल छे, तेथी यथायोग ते क्रियाविषे उद्यमवंत थाय, अने तेना फलने इछे नही, ने हृदयरूप नेत्रनेविषे निर्दय दशावंत न थाय; अने आलस निरुद्यम तो मिथ्यात्वमांज पामिये, एथी आलस ने निरुद्यमनी मिथ्यात्व भूमिका छे, जे भूमिकानेविषे जीव मोहनिद्रा लेतो थको शयनदिशामां रहेछे, अने पोताना स्वरूपने संभारतो तथी. ॥ ४४ ॥

हवे जे उदय माफक क्रिया कही तेथी उदय बलनी व्यवस्था कहेछेः—

अथ उदै व्यवस्था वर्णनंः—

॥ दोहाः ॥— जब जाकौं जैसे उदै, तब सो है तिहि थान; सकति मरोरे जीवकी, उदै महा बलवान ॥ ४५ ॥

अर्थः— जे कालनेविषे जेनो उदय जेवो थाय ते कालनेविषे ते स्थान के० ते स्वरूपमां जीव रहे छे; ते जीवनी शक्ति मरोडीने पोतानी शक्ति प्रगट करे, एथी कर्म उदय महा बलवान् छे ॥ ४५ ॥

हवे उदय बल उपर दृष्टांत आपेछेः— अथ उदै बल वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे गजराज पर्यो कर्दमके कुंडबीच उद्यम अहुटै न पै छूटै दुःख फंदसों; जैसे लोह कंटककी कोससो उरज्यो मीन, चेतन असाता लहै साता लहे संदसों; जैसे महाताप सिरवाहिसों गरास्यो नर, तकै निजकाज उठी सकै नसुछंदसों; तैसे ज्ञानवंत सब जानै न बसाईकछु, बंध्यो फिरै पूरब करम फल फंदसों. ४६

अर्थः—जेम हाथी कर्दमना कुंडमां पड्यो पछी तेमाथी निकलवाने उद्यम अहुटै के०

करेछे, पण ते दुःखदंडथी छूटी शक्तो नथी; जेम हृदयमां लोह कटकी के० लोढाना कांटानी अणीमां भरायो एवो मछ छुटो थई शकतो नथी, तेथी मत्स्यनुं चेतन अशाता पामे, अने संद के० छुटे तो शाता लहे पण छूटे नही; वली कोई माणस ताप ज्वर अने माथाना दरदथी हेरान थतो पथारीमां पडी रह्यो होय अने ते मनुष्य पोताना कार्य करवाने वास्ते त्यांथी उठवाना अनेक उपाय करतो छतां पोताना स्वछंदथी उठी शकतो नथी, तेमज ज्ञानवंत जीवतो सर्व हेय उपादेय जाणे छे पण कोइ पोतानुं वल चाले नही; पूर्व संचित कर्मना फलना फंदथी एटले कर्मना उदयथी बांध्यो फरे छे ॥ ४६ ॥

हवे आलसुने निरुद्यमीनी जेवी अवस्थाछे तेवी बतावे छेः—अथ यथावस्था वर्ननंः—

॥ चौपाईः॥— जे जिय मोहनींदमें सोवै, ते आलसु निरुद्यमि होवै; दृष्टिखोलिजे जगै प्रवीना; तिन्हि आलस तजि उद्यम कीना ॥ ४७ ॥

अर्थः— जे जीव मोहरूप निद्रानेविषे सुइ रह्या छे, ते जीवने आलसु कहीए ने तेज निरुद्यमी कहेवाय. अने जे प्रवीण जीव ज्ञान दृष्टि खोली जाग्रत छे, ते आलस तजीने उद्यम करे छे ॥ ४७ ॥

हवे आलसु ने उद्यमीनी क्रियानुं वर्णन करे छेः— अथ यथावस्थातथा क्रिया कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— काच बांधे सिरसों सुमनी बांधे पायनिसों, जानै न गवार कैसी मनी कैसो काच है; योंही मूढ जूठमें मगन जूठहिकों दौरे, जूठ बात मानै पै न जानै कहा साच है; मनीकों परखि जानै जोहरी जगत मांहि, साचकी समुझी ज्ञान लोचनकी जाच है; जहांको जु वासी सो तो तहांको मरम जानै, जाको जैसो स्वांग ताको तैसेरूप नाच है ॥ ४८ ॥

अर्थः— काचने माथाउपर बांधे अने मणिने पगे बांधे, एवा गमार लोकने खबर नथी होती के काच शी वस्तु छे, अने मणि शी वस्तु छे? एम मूढ अज्ञानी जीव जूठी वातमां मग्न रहे, जूठा कार्यमां दोडे, अने जूठी वात माने, पण एम न जाणे के एमां साच केटलुं छे? मणि रत्नने तो जे झवेरी होय तेज जगतमां परीक्षा करी शके, तेमज साचानी समज पण तेनेज पडे, जेने ज्ञानरूपी लोचननी उत्पत्ति थई होय? केमके, जे ज्यांनो वासी होय ते त्यांनो मरम जाणे, एटले मिथ्यात्व भूमिकानो वासी मिथ्यात्वनेज ग्रहे अने सम्यक्त्व भूमिकानो वासी ते समकितनेज साचुं माने, मतलब जे जेवो वेष धरी आवे ते तेवोज नाच नाचेछे. ॥ ४८ ॥

हवे जे जेवी क्रियाकरे ते तेवुं फल पामे ते कहेछेः—अथ यथाक्रिया तथा फलकथनंः—

॥ दोहाः ॥– बंध वंधावे अंध व्हे, आलसी अजान; मुक्ति हेतु करनी करे, ते नर उद्यमवान. ॥ ४ए ॥

अर्थः– जे जाव अंध थईने बंधने वधारे, ते अजाण आलसु कहेवाय ठे अने जे मुक्ति हेतुने अर्थे क्रिया करेठे, ते मनुष्य उद्यमवंत कहेवाय ठे. ॥ ४ए ॥

हवे जो ज्ञान होय तो वैराग्यपण होय अने जो वैराग्य न होयतो ज्ञान पण न होय, तेथी ज्ञान वैराग्यनुं सहचारिपणुंः–अथज्ञानवैराग्य सहचारित्ववर्णनंः– कहे ठे.

॥ सवैया इकतीसाः॥– जब लगु जीव शुद्ध वस्तुकों विचारे ध्यावे, तवलगु जोगसों उदासी सरवंग हैं; जोगमें मगन तव ज्ञानकी जगन नाहिं, जोग अजिलाषकी दशा मिथ्यात अंग है; तातें विषे जोगमें मगन सो मिथ्याति जीव, जोगसों उदासि सो समकिति अजंग है; ऐसी जानि जोगसों उदासि व्हे मुगति साधे, यहै मन चंग तो कठोत मांहि गंग है. ॥ ५० ॥

अर्थः– ज्यांसुधी जीव शुद्ध वस्तुना विचारमां दोरुतो होय, ज्यांसुधी सर्व अंगनेविषे जोगथी उदासीनपणुं जोवामां आवे; अने ज्यारे जोगमां मगन रेहेतो होय, त्यारे तो ज्ञाननी जगन के० जागृती न होय, केमके जोग अजिलाषनी दशामां वर्त्तवुं तेतो मिथ्यात्वनुं अंग ठे, तेथी विषयजोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यातनुं अंग ठे, तेथी विषयजोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यात्वी कहेवाय, अने जे विषय जोगथी उदासी रहे ते तो अजंग समकिती ठे. एवुं जाणीने अहो ! जव्यलोको ! जोगथी उदास थई, ने मुक्तिने साधो. ते उपर दृष्टांत कहे ठे के, जेनुं मन चंगुठे तेने कथरोटमांज गंगा ठे, मतलब के कथरोटमां नातां थका गंगा स्नाननुं फल ते पामेठे. ॥ ५० ॥

हवे मोक्षना अधिकारनेविषे चार पदार्थनुं स्वरूप कहे ठेः–

अथ पदार्थ चतुष्क कथनंः–

॥ दोहाः॥– धरम अरथ अरु काम सिव, पुरुषारथ चतुरंग; कुधी कलपना गहि रहै, सुधी गहै सरवंग ॥ ५१ ॥

अर्थः– धर्म, अर्थ, काम, ने मोक्ष, पुरुषार्थना ए चार अंग ठे, ए पुरुषार्थ विषे कुधी के० कुमतिवालो पोतानी मति कल्पनाने जालीने बेसे ठे, अने सुधी के० पंडित पुरुष ठे ते सर्वांगनुं ग्रहण करे ठे. ॥ ५१ ॥

हवे चारे पदार्थनी न्यारी न्यारी व्यवस्था सुमति अने कुमतिनामन आश्री कहे ठेः– अथ पदार्थ व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– कुलको आचार ताहि मूरख धरम कहै, पंडित धरम कहै वस्तुके सुजाउकों; खेहको खजानो ताहि अज्ञानी अरथ कहै, ज्ञानी कहै अरथ दरवदरसा

ভककों; दंपतिको भोग ताहि दुरबुद्धि काम कहै, सुधीकामकहै अभिलाष चित आउको; इंद्रलोक थानकों अजान लोक कहै मोक्ष, मतिमान मोक्ष कहै बंधके अभाउकों ॥५२॥

अर्थः– जे मूर्ख जन होय ते पोताना कुलना आचारने धर्म कहै छे, अने पंडित जन तो वस्तुना स्वभावने धर्म कहे छे, अज्ञानी जन होय ते खेहना खजाना जे सोनुं रुपुं जवाहिर वगेरे छे तेने अर्थ के० द्रव्य कहि बतावे छे, अने ज्ञानी जन होय ते द्रव्यना दरशावने अर्थ कहे छे; एटले षट्द्रव्यने अर्थ कहे छे. दुर्बुद्धि जन स्त्री भर तारना भोग संयोगने काम कहे छे, पण सुधी के० पंडित जन तो चित्तनी इछा अभिलाषने काम कहे छे, अने जे इंद्रनुं स्थानक छे, तेने अजाण लोक मोक्ष कहे छे, अने जे मतिमान एटले पंडित लोक छे तेतो जेथकी बंधनो अभाव थाय छे, तेने एटले बंधना नाशने मोक्ष कहे छे ॥ ५२ ॥

हवे चारे पुरुषार्थने अध्यात्मरूप कहे छेः–अथ पुरुषार्थ चतुष्क अध्यात्मरूपकथनंः–

॥ सवैया इकतीसा॥–धरमको साधन जु वस्तुको सुभाउ साधै, अरथको साधन विलछ दर्व षटमें; यहै काम साधना जु संगहै निरास पद, सहज स्वरूप मोष सुद्धता प्रगटमें; अंतर सुदृष्टिसों निरंतर विलोकै बुध, धरम अरथ काम मोछ निजघटमें; साधन आराधनकी सोंज रहै जाके संग, भूलो फिरे मूरख मिथ्यातकी अलटमें ॥५३॥

अर्थः– धर्मनुं साधन तो तेने कहीये के जे वस्तुना स्वभावने साधवो एटले वस्तुना स्वभावने यथार्थ जाणवो; अर्थनुं साधन तेने कहीये के जे षट् द्रव्यने विलक्षण के० जुदां जुदां जाणवां; काम साधन तेनुं नाम छे के, जे निरास पदनो संग्रह करवो, एटले निस्पृह दशामां रहेवुं; मोक्षनुं साधन ते छे, के जेवडे पोतानी सहज स्वरूप शुद्धता प्रगट भावमां करवी; ए रीते अंतरदृष्टि वडे एटले ज्ञान दृष्टि थकी बुद्धिमान पुरुष धर्म, अर्थ, काम ने मोक्ष ए चार पुरुषार्थने निरंतर पोताना घटमां देखे; एम चारे पुरुषार्थ साधवानी जेना संघाते सोंज के० सामग्री रहे छे, तोपण मूर्ख जे छे ते मिथ्यातनी अटलमां भूल्या फिरे छे ॥ ५३ ॥

हवे शुद्ध व्यवहार नये करी वस्तुनुं सत्य स्वरूप कहेछेः–

अथ शुद्ध नय वस्तु स्वरूप कथनंः–

॥ सवैया एकतीसा॥–तिहुं लोकमांहि तिहूं काल सब जीवनिको, पूरव करम उदै आइ रस देतु है; कोउ दीरघाउ धरे कोउ अलपाउ मरै, कोउ दुखी कोउ सुखी कोउ समचेतु है; याहीमें जीवायो याहि मार्यो याहि सुखी कर्यो, दुखी कर्यो एसी मूढ आपु मानी लेतु है; याही अहं बुद्धिसों न विलसै भरम मूल, यहै मिथ्या धरम करम बंध हेतु है. ॥ ५४ ॥

अर्थः– त्रणे लोक तथा त्रणे काल तेनेविषे जगत्वासी सर्व जीवने पूर्व संचित कर्म उदय आवेछे, ने ते पोतानो कडवो तथा मीठो रस आपेछे, तेणे करी ने कोई दीर्घ आयुष्य भोगवी मरेछे, ने कोई अल्प आयुष्यमांज मरेछे, कोई दुःखी छे, अने कोई सुखी होयछे, कोई समचित के० सम भावमां रहेछे, एम पोत पोतानी कमाई थी सर्व जीव सुखी अथवा दुःखी छे. तेने मूढ प्राणी जे छे ते पोताना साधन माने छे के, जो में फलाणाने जीवाड्यो, फलाणाने मारी नाख्यो, फलाणाने दुःखी कीधो, ने फलाणाने सुख आप्युं. एवो मूढ अहं बुद्धिथी भर्ममां भुल्यो फरेछे, अने ए भूल एनी मटती नथी, एज मिथ्या धर्म मूढने कर्मबंधनो हेतु थाय छे. ॥ ५४ ॥

हवे फरी मूढनीज व्यवस्था कहेछेः– अथ मूढता कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जहांलों जगतके निवासी जीव जगतमें, सबै असहाको ऊ काहुको न धनी है; जैसी जैसी पूरव करम सत्ता बांधि जिन, तैसी तैसी उदेमें अवस्था आइ बनी है; एते परि जो कोउ कहै कि में जीवावो मारो इत्यादि अने क विकलप बात घनी है, सो तो अहं बुद्धिसों विकल भयो तिहुं काल, डोले निज आतम सकति तिन्ह हनी है. ॥ ५५ ॥

अर्थः– ज्यांसुधि जीव जगत्मां निवास करेछे त्यांसुधी एक बीजाने असहाय पणे रहेछे, कोई कोईनो सहायकारी नथीं, तेम कोई कोइनो धणी नथी, अने जेवी जेवी पूर्व कालनेविषे कर्मसत्ता बांधी राखीछे, तेवी तेवी उदय कालनेविषे जीवनी अ वस्था बनेछे; एटला उपर जे कोई कहे के में आने जीवाड्यो ने आने मार्यो, इत्या दि अनेक मनना विकल्पनी वातो घणी छे, ते सघली अहंबुद्धि थकी थाय छे, अने ते जीव त्रणे कालने विषे अहंकार बुद्धिमां डोले छे; तेणे शुद्ध ज्ञानशक्तिने हणी छे, अने ते जीवनी ए मूढ अवस्था कहेवाय छे ए रहस्य छे. ॥ ५६ ॥

हवे चार प्रकारे करीने जीवनी व्यवस्था उपर चार दृष्टांत आपेछेः–

अथ चार प्रकार जीव व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– उत्तम पुरुषकी दशा ज्यों किसमिस द्राख, बाहिज अभिं तर विरागी मृदु अंग है; मध्यम पुरुष नारीयर केसी भांति लिये, बाहिज कठिन हिय कोमल तरंग है; अधम पुरुष बदरीफल समान जाके, बाहिरसों दिसै नरमाइ दिल संग है; अधमसों अधम पुरुष पुंगीफल सम, अंतरंग बाहिर कठोर सरवंग है.

अर्थः– उत्तम पुरुषनी दशा किसमिस द्राक्ष जेवी छे, जेम किसमिस द्राक्ष बा हिरथी ने अंदरथी कोमल छे; तेमज उत्तम पुरुष बाह्य व्यवहार अने अभ्यंतर व्यव हारमां पण मृदु अंग के० कोमल छे; मध्यम पुरुष नारीयल सरीखो छे, जेम नारीय

ल बाह्य व्यवहारमां कठोर अने अभ्यंतर कोमल छे, तेम मध्यम पुरुष पण बहारथी कठण अने हृदयामां कोमल होय छे. अधम पुरुष बोर समान छे; जेम बोर बाह्य व्यवहारनेविषे नरम देखाय छे, ने मांहेथी कठोर छे, तेम अधम पुरुष बहार नरमाश राखे पण अंतरमां संग के० पाषाण जेवो कठण होयछे. अने अधमाधम पुरुष पुंगीफल के० सोपारी जेवोछे; जेम सोपारी बहारने अंदर सर्वांगमां कठोर छे, तेम अधमाधम पुरुष मांहे अने बहार सघले कठोर होय छे. ॥ ५६ ॥

हवे उत्तम पुरुषनी दशा कही बतावेछेः– अथ उत्तम पुरुष कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– कीचसो कनक जाके नीचसो नरेसपद, मीचसी मित्ताई गरवाई जाके गारसी; जहरसी जोग जानि कहरसी करामति, हहरसी हौंस पुदगल छवि छारसी; जालसों जग विलास भालसों भुवन वास, कालसों कुटंब काज लोक लाज लारसी; सीठसों सुजश जानै बीठसों बखत मानै ऐसी जाकी रीति ताही वंदत बनारसी. ॥ ५७ ॥

अर्थः– जे पोताना हैयानेविषे सुवर्णने कादव सरखुं जाणे, अने नरेश पद के० राज्य गादीने नीच सरखी जाणे, मित्राईने मीचसी के० मरण जेवी जाणे, ने गरवाई के० वडाई ते लीपवानी गार जेवी जाणे, रसायन प्रमुख द्रव्यजोगनी जातिने जे झेर सरिखी जाणे, मंत्र शक्तिवडे जे करामत थाय तेने कहर सरखी जाणे, देशी भाषाने विषे हहर के० अनर्थ ते सरखी हौंस छे, अने पुद्गलनी छवी ते राख समान जाणे, माया रूप जाल तथा जगतनो विलास तेने जाल जेवो जाणे, भुवनवास के० घरवास ने तीरना भाल समान जाणे, कुटुंब कार्यने काल समान करी जाणेछे, लोकलाज राखवी ते मोहडानी लाल जेवी जाणे छे, सुयशने सीठ के० नाकना मेल समान जाणे, भाग्योदयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेछे५७

हवे मध्यम पुरुषनी दशा बतावे छेः– अथ मध्यम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे कोउ सुभट सुभाय ठग मूरखाय, चेरा भयो ठगनी के घेरामें रहतु है; ठगोरी उतरि गई तब तांहि सुधि भई, पर्यो परवस नाना संकट सहतु है; तैसेंही अनादिको मिथ्याति जीव जगतमें, डोले आठो जाम विसराम न गहतु है; ज्ञान कला भासी भयो अंतर उदासी पें तथापी उदै व्याधिसों समाधि न लहतु है. ॥ ५८ ॥

अर्थः–जेम कोई स्वभावे सुभट होय ने तेने कोइ ठग मले ने ते सुभटने कोइ जडी मूली खवरावे, तेथी ते सुभट ठगनो चेलो थइ जाय, अने ठगना घेरामां पड्यो रहे, पछी ते सुभटे मूली खाधेली तेनी असर नीकली जाय ने पाछो पोतानी शुद्धिमां आवे, तेवा

रे ते ठगने डुर्जन करी जाणे, पण पोते परवश पड्यो तेथी नाना प्रकारना संकट स हन कर्या करे छे, तेम अनादि कालनो मिथ्यात्वी जीव परवश पडेलो नाना प्रकारना संकट सहन करेछे, ते आठ प्रहर संसारमां विकल थइ ने डोले, पण विश्राम लिये नही, एटलामां ज्ञान कलानो ज्ञास थयो, तेवारें अंतरमां उदासी थयो तो पण कर्म ना उदयरूप व्याधिवडे समाधि लेतो नथी, आश्रवमांज रहेछे ॥ ५७ ॥

हवे अधम पुरुषनी दशा दृष्टांत दइने देखावे छेः– अथ अधम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसें रांक पुरुषके ज्ञाये कानी कोमी धन, उलूवाके ज्ञाय. जैसे संझाई बिहान है; कूकरके ज्ञाये ज्यों पिंमोर जिरवानी मठा, सूकरके ज्ञाय ज्यों पुरीष पकवान है; वायसके ज्ञाये जैसे नींबकी निंबोरी दाख, वालकके ज्ञाये दंत कथा ज्यों पुरान है; हिंसकके ज्ञाये जैसे हिंसामें धरम तैसें, मूरखके ज्ञाये सुज्ञ बंध निरवान है

अर्थः– जेम रांक पुरुषने काणी कोढी छे तेहीज धन मनाय छे, अने जेम घुवडने संध्याकाल प्रज्ञात मनाय छे,अने कुकमाने पिंडोर जीरवानी के० गाय ज्ञेंसनुं पाणी ते दहींनो थमो मनाय छे, अने सूकर के० सूअरने पुरीष के० विष्टा तेज पकान्न मना यछे अने कागडाने लींबोडी तेज द्राक्ष जेवी मनाय छे, अने बालकने दंत कथा के० लोकनी कथा छे तेज पुराण मनाय छे, ने हिंसकने हिंसामांज धर्म मनाय छे, तेम ज मूर्खने पुण्यबंध ते निरवाण के० मोक्षपद मनाय छे, ए अधम पुरुषनी दशा जाणवी.

हवे अधमाधम पुरुषनी दशा दृष्टांतेकरी देखावेछेः–अथ अधमाधम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कुंजरको देखि जैसे रोष करी ज्ञुंसे स्वान, रोष करै निधन विलोकि धनवंतकों; रेनके जगैयाको विलोकि चोर रोष करै, मिथ्यामति रोष करै सुनत सिद्धांतको, हंसकों विलोकी जैसे काग मनि रोष करे, अज्ञिमानी रोष करै देख त महंतकों; सुकविकों देखि ज्यों कुकवि मन रोष करै त्योंही डुरजन रोष करै देखि संतको.

अर्थः– जेम हाथी जोइने कुतरा रीशे ज्ञराईने ज्ञुंकेछे, जेम निर्धन पुरुष धनवान ने जोईने रीशे ज्ञराय छे, जेम राते जागनार पुरुषने जोईने चोर रीशे ज्ञराय छे, जेम मिथ्यात्वी सिद्धांतने सांज्ञली रीशे ज्ञराय छे, जेम हंसने जोईने कागडो रीशे ज्ञराय छे, जेम महंतने जोईने अज्ञिमानी रीश करे छे, जेम सुकवि के० सारा कविने जोई ने कुकवि के० नठारो कवि रीशे बले छे, तेम अधमाधम पुरुष साधुने जोईने डुष्ट मन वमे रीशे ज्ञराय छे. ॥ ६० ॥

हवे वली अधमाधम पुरुषनी चाल कहेछेः–अथ पुनः अधमाधम पुरुष वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– सरलकों सठ कहै वकताकों धीठ कहै, विनो करे तासों कहै धनको अधीन है; छमीको निवल कहै दमीकों अदत्ती कहै, मधुर वचन बोलै

तासों कहै दीन है; धरमीको दंभी निसपृहीको गुमानी कहै, तिशना घटावै तासो कहै भागहीन है; जहां साधु गुण देखे तिन्हकों लगावै दोष, ऐसो कछु दुर्जनको हिरदो मलीन है. ॥ ६१ ॥

अर्थः— सरल चित्तवालाने शठ के० मूर्ख कहे, वक्ता के० कथा कीर्त्तन वांचनारने धीठ कहे, विनय करनारने कहे के एतो धननी आधीनताथी करेछे, क्षमावंतने निर्बल कहे; इंद्रिय दमन करनारने अदाता कहे, अने मधुर भाषण करनारने कहे एतो गरीब बीहामणो छे, धर्मीने दंभी कहे, निस्पृहीने अहंकारी कहे छे, तृष्णा छोडनारने भाग्यहीन कहे, ज्यां एवा सरलतादिक गुण देखे त्यां दूषण लगाडे, एवुं दुर्जननुं हृदयुं मलीन के० मेलुं होय छे. अने एवा दुर्जननेज अधमाधम पुरुषनी प्रकृति जाणवी.

हवे मिथ्यादृष्टिनी अहंबुद्धिनुं वर्णन करे छेः— अथ मिथ्यादृष्टि वर्णनंः—

॥ चौपाईः॥— में करता में कीन्ही कैसी; अब यों करो कहौ जो ऐसी; ए विपरीत भाव है जामें; सो बरतै मिथ्यात दसामें. ॥ ६२ ॥ दोहराः— अहं बुद्धि मिथ्यादसा, धरै सु मिथ्यावंत; विकल भयो संसारमें, करै विलाप अनंत. ॥ ६३ ॥

अर्थः— हुं कर्त्ता छुं, आ वर्त्तमान कालमां केवी वात करुंछु, भविष्य कालमां जेवी कहीश तेवी करीश, एवी अहं बुद्धि ए विपरीत भाव छे, अने ए भाव मिथ्यात्व दशा ना छे ॥ ६२ ॥ जे एवी अहंबुद्धि छे, तेज मिथ्यात्व दशा छे, अने ए मिथ्यात्वदशाने धारण करे, तेज मिथ्यात्वी कहेवाय छे, अने एवा पुरुषोज संसारनेविषे विकल थका संसारमां भटकता दुःख सहता अनंत विलाप करेछे. ॥ ६३ ॥

हवे मूढ प्राणीनी व्यवस्था कही देखाडे छेः— अथ मूढ व्यवस्था कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— रविके उदोत अस्तहोत दिनदिन प्रति, अंजुलीके जीवन ज्यों जीवन घटतु है; कालके ग्रसत छिनछिन होत छीन तन, औरके चलत मानो काठसो कटतु है; एते परि मूरख न खोजै परमारथकों, स्वारथके हेतु भ्रम भारथ ठटतु है; लग्यो फिरे लोगनिसों पग्यो परजोगनिसों, विषै रस भोगनिसौं नेकु न हटतु है. ॥६४॥ जैसे मृग मत्त वृषादित्यकी तपतिमांहि तृषावंत मृषा जल कारण अटतु है; तैसे भववासीमायाहीसों हित मानिमानि ठानिठानि भ्रमभूमि नाटक नटतु है; आगेकों ढुकत धाय पाछे बछरा चराय, जैसे दृग हीन नर जेवरी वटतु है; तैसे मूढ चेतन सुकृत करतूति करै, रोवत हसत फल खोवत खटतु है. ॥ ६५ ॥

अर्थः— सूर्यना उदयथी ते अस्तसुधीमां अंजलिना पाणीनी परें आयुष्य घटतुं जायछे, अने क्षण क्षणविषे काल जे छे ते शरीरने ग्रासेछे, तेथी शरीर क्षीण थाय छे. ए रीते तन और के० शरीर तरफ काल ग्रसी रह्योछे, एटले जेम शस्त्र कोई वस्तुने का

पेठे तेम कालरूपी शस्त्र शरीरने कापेठे. एवुं कार्य थइ रह्युं ठे तोपण मूर्खजन जे ठे ते परमार्थने खोजतो नथी, पण पोताना स्वार्थने माटेज भ्रमना भारने खेंची रहेठे; लोग के० परवस्तु जे काम क्रोधादिक ते साथे लागो फिरेठे, अने परपुद्गलजोग तेथी पग्यो के० हलि मलि रहेठे, तेथी विषयरसने भोगवतां जरा पण हटतो नथी. ॥६४॥

वली जेम कोइ जवरो मृग होय ठे ते वृषादित्य के० वृषसंक्रांतनो सूर्य एटले जेष्टमास तेना तापनेविषे अति तृषावंत थयो थको मृषा के० जूठी इछा थकी पाणीने माटे अटत हे के० भटके ठे, तेवी रीते संसारी जीव परस्वरूप मायाजालने विषे हेत राखीने एटले तेने हितकारी मानीने भ्रमरूपी भूमीनेविषे ठराव करी नट नी पेठे नाची रह्यो ठे. ते केवो ठे तो के जेवो कोई दृगहीन के० आंखविनानो पुरुष होय ने ते दोरी वाटतो होय त्यां पासे वाठकुं होय ते दोरीने चावी नाखतो होय तेने ते जाणी शकतो नथी तेथी तेनी मेहनत व्यर्थ जाय ठे. तेम मूढ प्राणी जे ठे ते सुकृतनी क्रिया करेठे त्यारे रोवत हासत के० अरति अने रतियें करी क्रिया करेठे तेथी ते करेली क्रियाना परम फलने खोई देयठे. ॥ ६५ ॥

हवे फरी बंधना करनार मूढ विषयिनी अवस्था कहेठेः—अथ मूढ विषयी वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— लिये द्रिढ पेच फिरे लोटन कबूतरसो, उलटो अनादि को न कहो सुलतु है, जाको फल दुःख ताहि सातासो कहत सुख, सहित लपटी असी धारासी चटतु है; ऐसे मूढ जन निज संपती न लखे क्योंही, मेरी मेरी मेरी निशिवासर रटतु है; याही ममतासों परमारथ विनसी जाइ, कांजीको फरस पाई दूध ज्यों फटतु है. ॥ ६६ ॥

अर्थः— जेम लोटण खबुतर होय ते जो पांख बंध करीने पेच लाग्यो तेथी उलट पालट फरेठे, तेम मूढ प्राणी अनादि कालना कर्म बंध पेचमां पडेलोठे माटे अवलो मार्ग धरेठे, पण कोई रीते सवलो मार्ग धरतो नथी. अने जेनुं फल दुःख ठे एवा विषय भोगवडे जे कंईक साता उपजे, तेने सुख मानेठे, जेम कोई मधे लपेटी तरवार नी धारने चाटे, जेमां मधनी मीठाश थोडी होय ने तरवारनी धार ते मीठास चाखवा जतां जीभने ठेदी नाखे तेनुं दुःख वहु थाय, तेम मूर्ख प्राणी पोतानी ज्ञानादिक संपत्तिने कदी उलखतो नथी, पण परवस्तुने रात दिवस मारी मारी मानी रह्योठे, एज जूठी ममतावडे परमार्थ जाणवानो विनाश थई जायठे; जेम कांजीना पाणीना स्पर्शथी दूध फाटी जायठे, तेम ममताथी परमारथ वगडी जायठे. ॥ ६६ ॥

हवे मूढनी अहंबुद्धिनी वठ्यवस्था कही वतावेठेः— अथ पुनः मुढ व्यवस्थाः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—रूपकी न झांक हिये करमको डांक दिये, ज्ञान दबि रह्यो

मिरगांक जैसे घनमें,लोचनकी ढांकसों न मानै सदगुरु हांक,बोलै पराधीन मूढरांक तिहूं पनमें; टांक इक मांसकी डलीसी तामें तीन फांक, तीनि कोसो अंक लिखिराख्यो काहु तनमें; तासों कहै नांक ताके राखिवेको करे कांक,लांकसो खरग बांधिबांक धरै मनमें.

अर्थः– आत्मानुं रूप हृदयामां नथी दीठुं, तेथी कर्मनो डांक पीधो, एटले कर्मनो रस व्यापी गयो, तेणे करी आत्मानुं स्वरूप जे शुद्ध ज्ञान ते दबाई रह्युं. कोनी पेठे? जेम धन कहेतां मेघरुप वादलाउने विषे चंद्र ढंकाइ रहेछे तेम ज्ञानरुप लोचनउपर मिथ्यात्वनी ढांक पडी तेथी सद्गुरुनी हांक के० आज्ञा तेने मानतो नथी, अने मूर्ख पराधीन थको रांक वचन बोलेछे, अने त्रणे कालनेविषे निःशंक रहेछे. हवे मूढता प्रगट करी बतावेछे जे नाकछे ते टांक के० एक मांसनी सीरुरी छे तेनेविषे फांक छे ते प्रत्यक्ष प्रमाणे देखियें छैयें, ते त्रण फांक केवा देखायछे ते कहेछे, ते जाणे त्रणनो आंक त्रण फांकवालो कोइए शरीरमांज लखी राख्योछे, ते औदारिक अवयवने नाक कहेछे, अने ते नाकने राखवाने कांक के० लडाई करे ने विचारे जे मरी जईश तोपण नाक तो रहेशे एवा विचारथी लडाई करेछे खग धरेछे अने मनमां वांक धरीज राखेछे.

हवे मूढना विषय रागीपणानी दशा कहे छेः– अथ मूढ विषय वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे कोउ कूकर क्षुधित सूके हाड चावे, हाडनिकी कोर चिहूं उंर चुभे मुखमें; गाल तालु रस मांस मूढनिको मांस फाटे, चाटै निज रुधिर मगन स्वादमुखमें; तैसे मूढ विषयी पुरुष रति रीत ठाने, तामें चित साने हित माने खेद दुखमें, देखै परतछ वल हानी मल मूत खानी गहे न गिलानि पगी रहे रागरुखमें

अथः– जेम कोई कुतरो भुख्यो थको हाडकाने चावे छे, ते हाडकु सूकु होय छे, तो पण तेने चारे तरफ फेरवीने ते चाटे छे, ने तेम चाटतां तेना गाल जीभ ने तालवानी चामडी फाटे छे, अने तेथी लोही नीकले छे ने तेज पोताना लोहीना स्वादथी मगन थई जाय छे, तेमज जे मूढ विषयी पुरुष छे, ते रति के० स्त्री पुरुष संयोगनी रीति जे श्रृंगार रस तेनेविषे मग्न रहे छे, अने तेथी खेद दुःख उपजे छे, तोपण तेमां सुख माने छे, अने ते कार्यथी प्रत्यक्ष पणे बलनी हानि थती जाणे छे, तथा तेने मल मूत्रनी खाण जुए छे. तेम छतां तेमां ग्लानि ग्रहण करतो नथी, दुगंछा पामतो नथी, अने रागरूप रुख के० वृक्षमां मली रहेछे, तेनो शोक आणतो नथी, उलटो तेमां चित्त लगावी आनंद मानेछे. ॥ ६७ ॥

हवे संसारीनी विकलता कहीने साधु जननी व्यवस्था कहे छेः–

अथ संसारी तथा मुनि व्यवस्था कथनः–

॥ अडिल्ल छंदः ॥– सदा करमसों भिन्न सहज चेतन कह्यो; मोह विकलता मानि

मिथ्याती व्है रह्यो; करे विकल्प अनंत, अहंमति धारिके; सो मुनि जो थिर होइ ममत्त निवारि के ॥ ६ए ॥

अर्थः– निश्चयनय वडे सहजरूपे चेतन छे, ते सदा कर्मथी जिन्न कह्युं छे, पण व्यवहारमां पडीने मोहनुं विकलपणुं मानीने मिथ्यामती थई रह्यो छे, तेथी मनमां अनंत विकल्प धरीने अहंबुद्धि धारी रह्यो छे, अने जेणे ममत्व निवारण कीधुं ने स्थिरता पाम्यो तेज साधु थयो. ॥ ६ए ॥

हवे मिथ्यात्व जावथकी व्यवहारनुं असंख्यातपणुं कहे छेः–

अथ मिथ्यात्वजाव व्यवहार एकत्व कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– असंख्यात लोक परवान जो मिथ्यात जाव, तेई व्यवहार जाव केवली उकत है; जिन्हके मिथ्यात गयो सम्यक दरस जयो, ते नियत लीन विवहारसों मुकत है; निरविकलप निरुपाधि आतम समाधि, साधि जे सगुन मोछ पंथ कों ढुकत है, तेई जीव परम दशामें थिररूप व्हे के, धरममें ढुके न करमसों रुकत है.

अर्थः– एक लोकाकाश छे, तेनी असंख्यातपणे कल्पना करीयें; तेना प्रदेश असंख्यात छे, ते प्रमाणेज मिथ्यात्व जाव छे. जीवना अध्यवसाय स्थान छे, ए व्यवहार जावे केवलीनु कहेवुं छे, अने जेनु मिथ्यात्व गयुं, जेने सम्यक् दर्शन थयुं,जे निश्चय–लीन थयो, ते व्यवहारथी मुक्त थाय. जेमां विकल्प नथी ते निर्विकल्प, अने जेमां उपाधि नही ते निरुपाधि, एवी समाधिथी जे सगुण थईने एटले ज्ञानादिकगुणमय थईने मोक्ष मार्गने जुए छे, ते जीव परम दशामां स्थिर रूप थईने आत्मिक धर्ममां ढुके पण कर्मथी रोकाय नही. ॥ ७० ॥

हवे गुरुने शिष्य प्रश्न पूछे छेः– अथ शिष्य प्रश्न कथनंः–

॥कवित्त छंदः॥– जे जे मोह करमकी परिनति, बंध निदान कही तुम सब;संतत जिन्न शुद्ध चेतनसों, तिन्हिको मूल हेतु कहु अब; कै यह सहज जीवको कौतुक, कै निमित्त है पुद्गल दव; शिश नवाइ शिष्य इम पूछत, कहै सुगुरु उत्तर शुनु जब.॥७१॥

अर्थः– मोह कर्मनी जे जे परिणति छे, एटले राग द्वेषादिक छे, ते तो तमे सर्व बंधनुं निदान कह्युं, अने एतो निरंतर शुद्ध चेतन थकी जिन्न छे, ते माटे ए बंधनो हवे मूल हेतु कहो; ए बंध थाय छे ते शुं जीवने सहज कौतुक छे, के एने पुद्गल द्रव्य निमित्त छे ते कहो एम, शिष्य माथुं नमावीने गुरुने पूछे छे. हवे गुरु उत्तर आपे छे के जव्य प्राणी एनो उत्तर शांजलो॥ ७१ ॥

अथ गुरु वचनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे नाना वरन पुरी बनाइ दीजे हेठि, उज्जल विमल मनु

सूरज कांति है; उजलता न्नासै जव वस्तुको विचार कीजै, पुरीकी झलकसों वरन न्नांति न्नांति है; तैसे जीव दरवको पुग्गल निमित्त रूप, ताकी ममता सो मोह मदि राकी मांति है; न्नेद ज्ञान दृष्टिसों सुन्नाव साधि लीजे तहां, साचि शुद्ध चेतना अ वाची सुख शांति है. ॥ ७२ ॥

अर्थः– जेम सूर्यकांति मणि छे तेम वीजो काश्मिरी पाषाण तेवोज छे, ने ते महा उज्वल छे, ने तेनी नीचे तहरेतहरेना रंगनी पुरी वनावी आपिये, त्यारे तेमां न्नात न्नातनो रंग देखाय; पण ज्यारें ते सूर्यकांति मणिना स्वन्नावनो विचार करिये, त्यारे तो तेनी कांति जे उज्वल छे, तेज मनमां आवे, अने दीठामां तो नीचेनी वनावेली रंग नी पुरणीनी जलक पडेछे तेथीज तरेहवार रंग वरण देखाय छे, ते रीते जीव द्रव्यनी अशुद्ध दशानुं निमित्त कारण पुद्गल द्रव्य छे, तेनी ममताथी मोहरूप मदिरानुं उन्म त्तपणुं छे अने ज्यारे जड चेतननी न्नेद ज्ञान दृष्टिवडे चेतननो स्वन्नाव साधिये, त्यारे साची शुद्ध चेतनाज न्नासे. अने अवाच के० वचन गोचर नही, एवी रीतनी सुख शांति छे तेज न्नासे. ॥ ७२ ॥

हवे वस्तुना संयोगथी स्वन्नावमां न्नेद पडेछे, ते उपर दृष्टांत आपे छेः–

अथ संयोगिका स्वन्नाव वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे महिमंडलमें नदीको प्रवाह एक, ताहीमें अनेक न्नांति नीरकी ढरनि है; पाथरको जोर तहां धारकी मरोरि होति, कांकरिकी खानि तहां झागकी झरनि है; पौनकी झकोर तहां चंचल तरंग उठे, न्नूमिकी निचानि तहां न्नौरकी परनि है; तैसे एक आतमा अनंत रस पुदगल, डुहूकी संयोगमें विन्नावकी न्नरनि है. ॥७३॥

अर्थः– जेम पृथ्वी मंडल उपर नदीनो प्रवाह एकरूप छे, अने तेज नदीना प्रवा हमां पाणीनुं व्हेवुं अनेक तरेहनुं छे, जे ठेकाणे नदीना प्रवाहमां मोटा मोटा पथरा आवी अडेला होय त्यां धार मरडाईने पडे छे, अने ज्यां कांकरी घणी होय त्यां झा गनी झरनी के० झाग एटले पाणीना झरा न्नन्नकी उठेछे. अने ज्यां पवननी झकोर चालती होय त्यां चंचल तरंग उठेछे, अने जे ठेकाणे जमीन नीची होय त्यां न्नोर पडेछे, वमल थायछे, तेम आत्मद्रव्य छे, तेने पुद्गल द्रव्यनो संयोग छे अने रस जे छेते षट्‌गुणी हानि वृद्धिथी अनंत छे, तेनो संयोग थये आत्मानेविषे विन्नावनी न्नरणी थायछे.

हवे आत्मा अने शरीर एक मेक वंधाई रह्यां छे पण लक्षण न्नेदे जुदा जुदा छे. ते वतावे छेः– अथ आत्मशरीर लछन न्निन्न कथनंः–

॥ दोहराः ॥– चेतन लछन आतमा, जड लछन तन जाल; तनकी ममता त्यागि के, लीजें चेतन चाल ॥ ७४ ॥

अर्थः— आत्मानुं चेतन लक्षण छे. शरीरनुं जड लक्षण छे, तेथी शरीरनी ममता छोडीने चेतननुं शुद्ध ज्ञानपणुं तेनुं ग्रहण करी लेवुं. ॥ ७४ ॥

हवे निःकेवल आत्मानी शुद्ध चाल कहेछेः— अथ आत्मा यथाः—

॥ सवैया तेईसाः॥— जो जगकी करनी सब ठानत, जो जग जानत जोवत जोई; देह प्रमान पै देहसुँ दूसरो, देह अचेतन चेतन सोई; देह धरे प्रभु देहसु भिन्न, रहे पर छन्न लखै नहि कोई, लछन वेदिविचछन बूझत अछनिजों परतछ न होई. ॥७५॥

अर्थः— जे पदार्थ सर्व जगत्नी करणी करेछे, एटले चतुर्गति गमन करेछे, अने जे जगत्ने जाणे छे, अने जोवत के० देखेछे, पोनाना देहने प्रमाणे छे, पण देहथी ते जुदो छे. देह अचेतन पिंड छे अने आत्मा चेतनपिंड छे, देहधारी छे, प्रभु छे, पण देहथी भिन्न छे. देहनेविषे प्रछन्न के० ढंकाई रह्यो छे, एने कोइ लखतो नथी, पण एनां जे लक्षण छे तेने वेदी के० जाणीने विचक्षण पुरुष एने उलखेछे. एवो ए आत्मा अक्ष के० इंद्रियथी प्रत्यक्ष नथी. ॥ ७५ ॥

हवे देहनी चाली कहेछेः— अथ देह यथाः—

॥ सवैया तेईसाः॥—देह अचेतन प्रेत दरी रज रेत भरी मल खेतकी क्यारी; व्याधिकी पोट अराधिकी उंट उपाधिकी जोट समाधिसें न्यारी; रे जिय देह करे सुख हानि इते परि तोहि तु लागत प्यारी; देह तु तोहि तजेगि निदान पि तूहि तजे क्युं न देहकि यारी ? ॥ ७६ ॥

अर्थः— देह अचेतन छे, प्रेत दरी के० जडतारूप प्रेतनी गुफा छे. रज के० लोहि, रेत के० वीर्य ते थकी भरेलो छे, अने मलरूप खेतरनो क्यारो छे. व्याधि० रोगनी पोट छे, आराध के० आत्माने छुपावाने उंट छे अने उपाधिनी जोट के० मेलारूप छे. एने विषे असमाधिज रहेछे, समाधि रेहेती नथी. माटे अरे ! जीव ! ए देह ते सुखनो नाश करे छे एवो छे, तोपण तने ए देह प्यारो लागे छे. अरे! जीव ! तुं समज के ए देह निदान तनेज तजशे पण तुं ए देहनी यारीनो त्याग करतो नथी ? ॥ ७६ ॥

॥ दोहराः ॥— सुनु प्रानी सद्गुरु कहै, देह खेहकी खानि; धरै सहज दुख दोष कों, करै मोछकी हानि. ॥ ७७ ॥

अर्थः—सद्गुरु कहेछे के अरे प्राणी! सांभलो. देह छे ते खेह के० धुलनी खाण छे. इव्ये सहज स्वभाव वात, पित्त, कफ रूप दुःख दोषने धरनारो छे. अने मोक्षनी छे के भव्यने. ॥ ७७ ॥

हवे देहनुं वर्णन करेछेः—अथ देह वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— रेतकीसी गढी किधों मढी है मसान केसी अंदर अंधेरी

जैसी कंदरा है सैलकी; ऊपरकी चमक दमक पट भूखनकी, धोखे लागे भली जैसी कली है कनैलकी; औगुनकी ओंडी महा भोंडी मोहकी कनोंडी, मायाकी मसूरति है मूरतिहैमैलकी; ऐसी देह याहिके सनेह याकी संगतिसों, व्है रही हमारी मति कोलू केसेवैलकी. ॥७७॥ ठौर ठौर रकतके कुंड केसनिके झुंड हाडनिसों भरी जैसे थरी है चुरेलकी; थोरेसे धकाके लगे ऐसे फट जाइ मानो, कागदकी पुरी किधों चादर है चैलकी; सूचै भ्रम वानि ठानि मूढनिसों पहिचानि, करै सुखहानि अरुखानि वदफैलकी; ऐसी देह याहिके सनेह याकी संगतिसों, व्है रही हमारी मति कोलू केसे वैलकी.

अर्थः— जाणे रेतीनी ढीग बांधी होय, के मसाणनी मढी एटले अपवित्र ठेकाणे हाड मांसनुं एक थवुं कर्युं होय, वली जेनी अंदर सैल के० पहाडनी कंदर के० गुफाजेवुं अंधारुं छे, एवुं अपवित्र देहरूप स्थानछे. ते उपरना भूषणना चमक दमकथी शोभे छे;धोखे के० भूल भ्रमकाथी देह भलो लागे छे. ते उपर दृष्टांत छे के, जेम कनेरनी कलि उपरथी सुंदर देखाय छे, पण तेमां अंदर बिलकुल सुवास होतो नथी; तेथी उचाटकारी लागे छे, तेम वलीदेह अवगुणनी ओरडी छे, महाभुंडो छे, अने मोहनी कनोंडी के० मोहनी काणी आंख छे, तेथी सूजतुं नथी, अने मायानी मसूरति के० मायानो समुदायछे; एवी मेलनी मूर्त्ति ए देह छे; एना स्नेहथी अने संगतथी अमारी मति शेलडीपीलवानुं कोल्हु तेना वलद सरखी वनी गई छे. ॥ ७७ ॥

वली ए देहनेविषे ठेकाणे ठेकाणे लोहीनां कुंडलां छे, ने अपवित्र केशनी झुंड छे. तेमां हाडकां भरेलां छे. जेम चूडेल- व्यंतरीनुं स्थानक होय तेवो ए देह छे. थोडो धको लागवाथी ए देह फूटी जाय छे; जेम कागलनी पुडी अने जुंनी मेली चादर ते टकोराथी फाटी जाय, तेम देह फाटी जाय छे; एवी ए देहनी ममताथी भ्रम वाणी के० मिथ्यावाणी सुचै के० कहे, अने मूढलोक एनी पिछान राखे छे, अने ए देह सुखनी हानिकर्त्ता छे, अने वदफेलीनी खाण छे. एवा ए देहना स्नेह तथा एनी सोवत थकी अमारी बुद्धि शेलडी पीलवाना कोल्हाना वलदनी गति जेवी थई गईछे.

हवे कोल्हुना वलदनी अवस्था अने तेनी वरावर संसारी जीवनी गति छे, एवुं स्पष्ट करी वतावे छे; अथ कोल्हुका वैलकी अरु संसारी जीव समानरूप कथनं:—

॥ सवैया इकतीसा: ॥— पाटी वंधे लोचनसों संकुचे दवोचनिसों, कोचनिकोसोच सोनिवेदे खेद तनको;धाइवोही धंधा अरु कंधा माहि लग्यो जोत,वार वार आरस हेकायर है मनको; भूखसहे प्यास सहे दुर्जनको त्रास सहे, थिरता न गहे न उसास लहे छिनको; पराधीन घूमै जैसो कोल्हुकोकमेरो वेल, तेसोइ स्वभाव भैया जगवासी जनको.

अर्थः— जेनी आंख उपर पाटी वांधी छे, जे दवोच के० पगथी ठेलवुं, तेथी संकोचा

य छे, अने परोणानी आरना घोंच वागे छे, तेनी सोचनांथी शरीरने खंचवा दे नही, ने दोमतो फिरे, पोताना धंधामां धावतोज रहे, जे ने खांधे जोतर लाग्युं रहे छे,वारंवार जेने आरनो मार पडे छे, तेजे सहन कर्या करे, अनेजे मननो कायर छे, भूखने पण वेठे छे, अने डुर्जननो त्रासपण खमे छे, अने स्थिरता पकमतो नथी, क्षण वार पण सुखे मोडेथी श्वास लई शकतो नथी, एरीते पराधीन थको जेम कोल्हुनो कमेरो, के० काम करनारो बलद घूमेछे, तेम जगत्वासी लोक घूमे छे. अर्थात् हे! भाई! कोल्हुना बलद सरखो तेमनो पण स्वभाव छे. ॥ ७० ॥

हवे जगत्वासी जीवनी व्यवस्था कहे छेः– अथ जगत्वासी यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जगतमें डोले जगत्वासी नर रूप धरी, प्रेतकैसे दीप किधों रेत केसे धुहे है; दीसे पटभूखन आरूंवरसों निके फिरे, फीके छिनमांही सांझीअंबर ज्यों सुहे है; मोह के अनल दगे मायाकी मनीसों पगे दाभकी अनीसों लगे ऊसकेसे फुहे है, धरमकी बुझिनाहिं, रिझे भरम माहि नाचि नाचि मरजाहि मरीकेसे चुहे है.

अर्थः– जगत्वासी जीव मनुष्यरूप धरीने मोली रह्या छे; ए केवा छे, जाणियें प्रेतना दीप छे, ते जेम जलदी मटी जाय छे, तेम ए पण समजवा. वली रेतिना धूमाडा जेवा छे, तथा वस्त्र भूषणना आरूंबरथी शोभायमान देखाय छे, अने क्षणेकमां फीका थई जाय छे, जेम सांझ समये आकाशमां वादल रंग वदले छे, तेम जाणवा. वली मोहना अग्निथी दाझे छे, ने मायानी मनी के० पोतापणुं तेथी पगे के० व्यापी रह्या छे, जाणियें डाभनी अणीउपर लागेला पाणीना बिंडु सरखा छे, ठारना बिंडु जेवा छे. धर्मनी ळेलखाण जेने नथी अने भ्रमनेविषे जे अरुझी रह्या छे, जेम मरी उत्पादनां उंदरमां नाची नाची ने मरी जाय छे. तेम ए संसारी जीव नाचीने मरण पामेछे. ॥७१॥

हवे जगत्वासीनी मोह व्यवस्था कहेछेः– अथ जगत् व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः– जासों तुं कहत यह संपदा हमारी सोतो, साधनि अमारी ऐसे जैसे नाक सिनकी; जासों तुं कहत हम पुन्य जोग पाई सोतो, नरककी साई हैवडाई देढ दिनकी; घेरा मांहि पर्यो तू विचारै सुख आखिन्हिको, माखिनके चूंटत मिठाई जैसे भिनकी; एते परि होहि न उदासी जगवासी जीव, जगमें असाता है न साता एक छिनकी. ॥ ७२ ॥

अर्थः– अरे! प्राणी! जेने तुं कहेछे के आ मारी संपत्ति छे, तेने तो साधु लोके नाकना मेलनी जेम नाखी दीधीछे, अने जे बमाईने तुं कहेछे के पुण्यना जोगथी हुं पाम्यो छुं, ते तो नरकनी सहायी छे; जे राजादिकनी साहेबीछे. ते दोढ दिवसनी छे. ए परिवारना घेरामां तुं पड्यो थको आंखनुं सुख समजे छे, पण

ते मिठाईनी ऊपर माखीनी पेठे टोलानो जणजणाट थई रहे तेम परिवारनो घेरोछे, एवुं छतां जगवासी जीव उदास थतो नथी. वास्तविक रीते तो जगत्‌नेविषे असाताज छे, एक क्षणमात्र पण साता नथी. ॥ ७२ ॥

॥ दोहराः ॥– यह जगवासी यह जगत्, इनसों तोहि न काज; तेरे घटमें जग वसै, तामें तेरो राज ॥ ७३ ॥

अर्थः– ए जे पूर्वे वखाण्या एवा जगत्‌वासी लोक छे, अने ए लोकोनो ज्यां वास छे, तेने जगत् जाणवुं, ए साथे संबंध राखवानुं तारुं काम नथी, पण तारा घटनेविषे ज जगत्‌नो वास छे, अने ते जगत्‌मां तारुं राज्य छे. ॥ ७३ ॥

हवे जे पिंडे ते ब्रह्मांडे एवात साची छे, एवुं सिद्ध करी आपेछेः–

अथ पिंड ब्रह्मांड वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– याही नर पिंडमें विराजे त्रिभुवन थिति, याहिमें त्रिविध परिणाम रूप सृष्टि है; याहिमें करमकी उपाधि दुःख दावानल, याहिमें समाधि सुख वारिदकी वृष्टि है; यामें करतार करतुति याहिमे विभूति, यामें भोग याहीमें वियोग यामें घृष्टिहै, याहिमें विलास सब गर्भित गुपतरूप, ताहिकों प्रगट जाके अंतर सुदृष्टि है.

अर्थः– मनुष्य पिंडनेविषे कटीनी नीचे पाताल लोकछे, नाभि ते तिर्यक् लोकछे, ते उपर उर्द्ध लोकछे, एवी त्रिभुवननी स्थिति जाणवी, अने एनेविषेज कईक परिणाम उपजे छे, ने कईक नाश पामे छे, ने कईक स्थिर छे, एवी त्रिविध सृष्टि बनी रही छे; अने एज पिंडमां आत्माने कर्मनी उपाधि वळगी छे, तेज दुःखकारी दावानल के० अग्निनो समूह लाग्यो छे; अने एज पिंडमां कोईवारे समाधि सुख आवेछे तेज वादलनी वृष्टि जाणवी. ते दावानल उपर मेघनी वृष्टि छे, एज पिंडमां कर्मनो कर्त्ता पुरुष छे, एज पिंडमां कर्त्तानी क्रिया छे; ए पिंडमांज विभूति के० ज्ञानादिक संपत्ति छे, एज पिंडमां कर्मनो भोग ने कर्मनो वियोग छे, अने एज पिंडमां आत्मानुं धृष्ट के० दलन जे शुभाशुभ गुणोमां घसडाई रहेवुं ते छे; ए रीते ए पिंडमां गर्भित के० मध्य भागमां गुप्तरूपे सर्व विलास छे. पण जेना अंतरमां सुदृष्टिनो प्रकाश छे, तेने सर्व विलास प्रत्यक्षपणे जणाय छे ॥ ७४ ॥

हवे ए वातनो उपदेश गुरु कहे छेः– अथ गुरूपदेश कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः॥– रे रुचिवंत पचारि कहै गुरु, तुं अपनो पद बूझत नांही; खोज हिये निज चेतन लछन, है निजमें निज गुझत नांही; सिद्ध सुछंद सदा अति उज्जल मायाके फंद अरूझत नांही; तोर सरूप न दुंदकि दोहिमें तोहिमेंहै तुहि सूझत नांही. ॥ ७५ ॥

अर्थः—पचारी के० बोलावीने गुरु कहे छे, के रे! रुचिवंत तुं पोतानुं पद के० स्थान तेने जाणतो नथी. पोतानुं चेतन लक्षण हृदयामां खोज. ए पोतानुं लक्षण पोताने विषे छे ते गुझत के० गुप्त नथी; तारूं स्वरूप सिद्ध समान छे, स्वछंद के० निज आधीन छे, सदा अति निर्मल छे, पण मायानी जालना फंदमां पड्युं छे, तेमांथी छूटी शकतुं नथी; तारूं स्वरूप द्वंद्वनेविषे नथी एटले भ्रम जालनी द्विविध दशामां नथी. तारामांज छे; पण तने सूजतुं नथी. ॥ ७५ ॥

हवे ज्ञानना प्रकाश वडे ईश्वरताने पमाय ते समजावे छेः—

अथ ज्ञान महात्म्य कथनंः—

॥ सवैया तेईसाः॥—केइ उदास रहै प्रभु कारन, केइ कहीं उठि जाहि कहींके; केइ प्रनाम करै गढि मूरति, केइ पहार चढे चढि छींके; केइ कहे असमान के ऊपरि, केइ कहे प्रभु हेठि जमीके; मेरो धनी नहि दूरदिशांतर मोमहि है मुहि सूजतनीके॥७६॥

अर्थः— कोई पोताना परमेश्वरने ओलखवाने उदासी थई बेसी रहे छे, कोई कई क्षेत्रनेविषे जतो रहे छे, कोई परमेश्वरनी घडेली मूर्त्तिने प्रणाम करे छे, कोई परमेश्वरने पामवा छीकामां बेसी पर्वत उपर चढे छे, कोई परमेश्वरने आस्मान उपर छे एवुं कहे छे, कोई कहे छे के परमेश्वर जमीननी नीचे छे, (ए कुरानवालानी श्रद्धा छे); पण ए विषे मारो निश्चय तो ए छे के मारो धणी तो कांइ दूर देश नथी; पण माराविषेज छे. एम अनुभवथी मने सारुं मालम पडे छे. ॥ ७६ ॥

॥ दोहराः ॥— कहै सुगुरु जो समकिती, परम उदासी होइ; सुथिर चित्त अनुभौ करै, यह पद परसै सोइ ॥ ७७ ॥

अर्थः— सद्गुरु कहे छे केजे समकिती होय ते परम उदासी रूप थइ चित्तने स्थिर राखीने निज अनुभव अभ्यासथी पोताना पदने पामे. ॥ ७७ ॥

हवे मननी चंचलता दर्शावी तेने स्थिर केम राखवुं ते उपदेशे छेः—

अथ मन स्वरूप कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— छिनमें प्रवीन छिनहीमें मायासों मलीन, छिनकमें दीन छिन मांहि जेसो शक्र है; लिये दोरधूप छिन छिनमें अनंतरूप कोलाहल ठानत मथानको सो तक्र है; नट कोसो थार किधों हार है रहट कोसो नदी कोसो भौर कि कुंभार कोसो चक्र है; ऐसो मन भ्रामक सुथिर आजु केसो होइ, उरहिको चंचल अनादिहीको वक्र है. ॥ ७८ ॥ धायो सदा काल पै न पायो कहू साचो सुख रूपसों विमुख दुख कूपवास वसा है; धरमको घाती अधरमको संघाती महा, कुराफाती जाकी संनिपातीकीसी दसा है; मायाकों झपटि गहै, कायासों लपटि रहै, भूल्यो भ्रम भीरमें

वहीरकोसो ससा है; ऐसो मन चंचल पताका कोसो अंचल सु ज्ञानके जगेसें निरवान पथ धसा है. ॥ ७९ ॥

अर्थः– आ मन क्षणमां प्रवीण थायछे, क्षणमां मायानेविषे मलीन थायछे, क्षणमां दीन दशा धरेछे, क्षणमां शक्र के० इंद्र जेवुं बनेछे, क्षणमां दोरु धाम करेछे, क्षणमां अनंतरूप धरे छे, जेम दहीने वलोवतां कोलाहल थायछे, तेवो कोलाहल ए मन करेछे. वली नट जे नाचनार घुमे तेवो, के अरहटनी माला घुमे तेवो, के नदीनो वमल घुमेछे तेवो, अथवा कुंभारनुं चक्र फरेछे तेवो सदाकाल मननो भ्रामक स्वभाव छे. एवुं ए मन आज केम स्थिर थाय? जाते चंचल अने अनादिकालथी वाकुं चालनारुं मन छे. वली केवुं छे? ॥ ७८ ॥ हमेशा दोडतुं फरेछे, पण एने किहांय साचुं सुख प्राप्त थतुं नथी, पोताना समाधिसुखथी विमुख थयुंछे अने दुःखरूप कूप वासमां वस्युं छे, वली ए मन धर्मनुं घाती छे, अने अधर्मनुं संघाती छे, एवुं महा कुरापाती छे, ए मननी दशा तो जेम कोई पुरुषने सन्निपात थयो होय तेना सरखी छे. द्रोह तथा वंचनाने झट ग्रही लिये ने कायाना मोहथी मग्न रहे, ने भ्रम जालमां परी गुल्युंज फरे. जेम कटकनी भीरुमां ससलुं आवी परे ने भमतुं फरे, तेवुं मन छे. ने पताका के० ध्वजा तेना अंचल के० छेरुानी पेठे जाणवुं. ते ज्यारे ज्ञान प्रगटे त्यारे निरवाण के० मोक्ष मार्ग तेने विषे गमन करे एवुं छे. ॥ ७९ ॥

॥ दोहराः ॥– जो मन विषय कषायमें, वरते चंचल सोइ; जो मन ध्यान विचार सों, रुके सु अविचल होइ ॥ ९० ॥ ताते विषय कषायसों, फेरि सु मनकी वानि; शुद्धातम अनुभौविषे, कीजे अविचल आनि ॥ ९१ ॥

अर्थः– जो मन विषय कषायरूप राग द्वेषमां वर्त्ते तो चंचल जाणवुं. अने जो ए मन राग द्वेष छांडो ध्यान विचारथी रोक्युं रहे तो अविचल जाणवुं. ॥ ९० ॥ माटे विषय कषायमां मननी लागणी छे तेने काढी निज शुद्धात्मना अनुभवमां लगारुीने आ मनने अविचल करियें. ॥ ९१ ॥

हवे मन स्थिर करवाने आत्मानो विचार करवो ते कहेछेः–

अथ विचार शिक्षा कथनंः–

॥ सवैया इकतीसा ॥ः– अलख अमूरति अरूपी अविनासी अज, निराधार निगम निरंजन निरंध है; नानारूप भेष धरें भेषको न लेस धरे, चेतन प्रदेस धरे चेतनाको षंध है मोह धरे मोहीसो विराजे तोमें तोहीसो, न तोहिसो न मोहीसो निरागी निरबंध है; ऐसो चिदानंद याही घटमें निकट तेरे, ताही तुं विचार मन और सर्व धंध है. ॥ ९२ ॥

अर्थः– ए आत्मा अलक्ष छे, अमूर्त्ति छे, अरूपी छे, अविनाशीछे. अज केª जन्म्यो नही एवो छे, अने जेने कोईनो आधार नही, ज्ञानरूपी छे, तथा रंगविनानो छेने छिद्र विनानो छे. व्यवहारमां जोईयें तो नाना प्रकारना वेष धरनारो छे, निश्चयमां जोईये तो वेषनो लेश धरे नही मात्र चेतनाए प्रदेशनुं धारण करनारो छे, अने चेतनानो षंध केª पुंजरूप छे, ए उपदेश मनने वाह्यात्मानो छे. ते मनने कहे छे के, ए चिदानंद जेछेतेराजाछे ने आ पिंमनो मोह धरे छे, अने हे ! मन ! ए चिदानंद तारामां ताराजेवो विराजे छे, पण निश्चयनयथकी तारा ने माराविषे एने मोह नथी, एवो निरागी निर्वंध छे, एवो जे चिदानंद ज्ञगवान छे, ते अरे मन जे घटमांहे ज्यां तुं वसेछे तेज घटमां ते पण वसेछे माटे ते ईश्वरनोज विचार तुं कर, वीजो विचार सर्व द्वंद्व रूपछे.

हवे ए चिदानंदनो जे रीते शुद्धानुज्ञव थाय, ते रीते मनने उपदेश करेछेः–

अथ शुद्धानुज्ञव शिक्षा कथनंः–

॥ सवैया इकतीसा॥– प्रथम सु दृष्टिसों सरीररूप कीजे ज्ञिन्न; तामै और सूछम शरीर ज्ञिन्न मानियें; अष्ट कर्मज्ञावकी उपाधि सोई किजे ज्ञिन्न, ताहुमें सुबुद्धिको विलास ज्ञिन्न जानिये; तामें प्रज्ञु चेतन विराजित अखंमरूप, वहे श्रुत ज्ञानके प्रवान ठीक आनिये; वाहिको विचार करि वाहिमें मगन हुजे, वाको पद साधिवेकों ऐसी विधि ठानिये. ॥ ए३ ॥

अर्थः– प्रथम सम्यग् दृष्टिवडे शरीररूप वाह्यात्मा ज्ञिन्न राखवो, ते वाह्यात्माने विषे बीजुं सूक्ष्म शरीर कर्म संबंधी अंतरात्मा छे ते पण ज्ञिन्न जाणवो, ते अंतरात्माथी परमात्माना ज्ञान दर्शननुं आछादन थायछे, एवुं अष्ट प्रकारनुं कर्म तेना ज्ञावनी उपाधि ते पण ज्ञिन्न जाणवी अने ते अंतरात्मानेविषे सुबुद्धिनो विलास जे ज्ञेद ज्ञानादिक ते पण ज्ञिन्न जाणीये, अने ते सुबुद्धि विलासमां चेतनरूपी प्रज्ञु जे छे ते अखंमरूपे विराजे छे, अने ते चेतन श्रुत ज्ञानना प्रमाणथी हृदयमां सारी पठे ठरावियें, ए रीते हे ! मन ! तुं तेनाज विचारमां मग्न रेहेजे, ने ते चेतननुं पद साधवाने एटले मोक्ष मार्ग ग्रहवाने एज विधि युक्त छे एम जाणजे. ॥ ए३ ॥

हवे ज्ञाता जीवनुं स्वरूप वर्णवे छेः– अथ ज्ञानी जीव कथनंः–

॥ चोपाईः ॥– इहि विधि वस्तु व्यवस्था जाने; रागादिक निजरूप न माने; तातें ज्ञानवंत जगमांही, करम बंधको करता नांही. ॥ ए४ ॥

अर्थः– ए रीते वस्तुनी व्यवस्था जाणे अने राग द्वेषादिक जे ज्ञाव छे, तेने पोतानुं रूप न माने, तेणे करीने ज्ञानवंतने जगतूमां कर्म बंधनो कर्त्ता कह्यो नथी. आठ कर्म तेने बंध करी शकतां नथी. ॥ ए४ ॥

हवे ज्ञातानी क्रिया कहे छेः— अथ ज्ञाताकी क्रिया कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— ज्ञानी भेद ज्ञानसों विलेछि पुदगल कर्म, आतमाके धर्मसों निरालो करि मानतो; ताको मूल कारन अशुद्ध राग भाव ताके, नासिवेको शुद्ध अनुभौ अभ्यास ठानतो; याही अनुक्रम पररूप भिन्न बंध त्यागि, आपुमांहि अपनो सुभाउ गहि आनतो; साधि शिवचाल निरबंध होतु तिहू काल, केवल विलोक पाइ लोकालोक जानतो. ॥ ९५ ॥

अर्थः— ज्ञाता होय ते भेद ज्ञानवडे पौद्गलिक कर्मनुं विलक्षण केम करे ते कहे छे. आत्मिक धर्मथी पौद्गलिक धर्मने जूदो करी जाणे, एम विलक्षण करे, अने ते पुदगल धर्मनुं मूल कारण अशुद्ध रागद्वेषादिक भाव छे, तेनो नाश करवाने शुद्ध अनुभव अभ्यास जे रीते पूर्वे कह्यो ते प्रमाणे अवस्था देखी अभ्यास राखे. ए रीते अनुक्रमे प्रथम सुदृष्टिथी शरीररूप भिन्न करवुं, ए अनुक्रमें पूर्व संबंधथी अनादि कर्म बंधने त्यागीने पोतानेविषे पोतानोज ज्ञानादिक स्वभाव ग्रहण करे, एम शिव पदनी साधना करीने त्रणे काल निर्बंध थाय, तेवो थई केवल ज्ञान पामीने लोकालोकने जाणनार थाय.

हवे सम्यक्त्व धारीनुं पराक्रम कही बतावे छेः— अथ सम्यक्त्वधारी वैभव वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे कोउ हिंसक अजान महा बलवान, खोदि मूल विरख उखारे गहि बाहुसों; तैसे मतिमान दर्वकर्म भावकर्म त्यागि, व्है रहै अतीतमति ज्ञानकी दसाहुसों; याहि क्रिया अनुसार मिटे मोह अंधकार, जगे ज्योति केवल प्रधान सवि ताहुसों; चुके न सकतिसों लुके न पुदगलमांहि, ढुके मोषथलकों रुके न फिरि काहुसों. ॥ ९६ ॥

अर्थः— जेम हिंसक पुरुष भील प्रमुख जे हिंसानां फलथी अजाण छे, अने महा बलवान छे, ते वृक्षना मूलने खोदीने पछी पोताना भुजाना बले करी तेने उखेडी नाखे छे, तेम मतिमान के० सम्यक्त्वी पंडित जे छे, ते पुद्गल स्वरूपी द्रव्य कर्मने अने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय इत्यादि आठ भाव कर्मने त्यागीने ज्ञान दशावडे अतीत के० कर्मरहित थई रह्यो छे, अने क्षण क्षणमां ए क्रियाना अनुसारे मोह अंधकारने मटावे छे, अने तेथी केवल ज्ञाननी ज्योति उदय थाय, ते ज्योति मतिज्ञान प्रमुख सर्व ज्ञानोमां प्रधान छे, अने एथी अनंत वीर्य प्रगटे, ने फिरि ए शक्तीते चुके नही अने मोक्ष स्थानने जई ढुके, अने कोईथी रोकाय नही. ॥ ९६ ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बंध द्वार बालबोध रूप अष्टम समाप्तः॥

॥ दोहराः॥— बंध द्वार पूरन भयो, जो दुःख दोष निदान; अब बरनों संछेपसों मोक्ष द्वार सुखखान ॥ ९७ ॥

अर्थः– दुःखने दोषनुं निदान जे बंध तेनो द्वार संपूर्ण थयो. हवे सुखनुं स्थान जे मोक्ष तेनो द्वार संक्षेपथी वरणवुं छुं. ॥ ९७ ॥

हवे मोक्ष द्वारने आदि ज्ञान विलासने नमस्कार करे छेः–अथ ज्ञान विलास वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥ – भेद ज्ञान आरासों दुफारा करै ज्ञानी जीव, आतम करम धारा भिन्न भिन्न चरचै; अनुभौ अभ्यास लहै परम धरम गहै, करम भरमको ख जानो खोलि खरचै; योंही मोखमुख धावै केवल निकट आवै, पूरन समाधि लहै पू रनके परचै; भयो निरदोर याहि करनो न कछु और ऐसो विश्वनाथ ताहि बना रसी अरचै ॥ ९८ ॥

अर्थः– जेम कोई परीक्षानो करनार पुरुष मुद्रा प्रमुख द्रव्यने सुलाकनी आरवडे भेदी सुधातु छे, के कुधातु छे, तेनो निश्चय करे छे, तेम ज्ञानी जीव छे, ते भेद ज्ञान रूपी आर वडे आत्मा तथा कर्म ए बेउने जुदां करे छे, अने ते बेउने जुदा जुदा चरचे के० तेमां आत्मिक धारानेविषे तो अनुभवनो अभ्यास धारण करे, तेथी परम धर्म के० शुद्ध समाधि तेनुं ग्रहण करे; अने कर्मजालने जुदी जाणी छे, तेने सत्ता कर्मरूप खजानो खोलि खरचे के० विखेरी नाखे, तिहां निर्जरा थाय, एवी क्षपक श्रेणिने लीधे मोक्षना सुखने धाय, त्यां केवल ज्ञान ढुकडो आवे, अने पूर्ण आत्म स्वरूपना परिचय थकी पूर्ण समाधि पामे, पछी भव भ्रमणनी दोर छांडीने निर्दोर थाय. ते पछी तेने कई बीजुंकृत्य करवानुं बाकी रहे नही; ने तेथी ते विश्वनो नाथ थयो, तेने बनारसी दास पूजे छे ॥ ९८ ॥

हवे सुबुद्धि विलास वडे आत्मस्वरूप सधाय ते अधिकार कहेछेः–

अथ सुबुद्धि विलास वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– काहु एक जैनी सावधान व्है परम पैनी, ऐसी बुद्धि छैनी घटमांहि डारि दीनी है; पैठी नौ करम भेदि दरब करम छेदि, सुभाउ विभाउ ता की संधि सोधि लीनी है; तहां मध्य पाती होइ लखी तिन्हि धारा दोइ, एक मुधा मई एक सुधारस भीनी है; मुधासों विरचि सुधा सिंधूमें मगन भई, ए ती सब क्रि या एक समै बीच कीनी है ॥ ९९ ॥ ॥ दोहराः ॥– जैसी छैनी लोहकी, करै एक सों दोइ; जड चेतनकी भिन्नता, त्यों सुबुद्धिसों होइ ॥ ३०० ॥

अर्थः– कोई एक जैनी जैन आगमना जाणनारे सावधान थईने परमपैनी के० अ ति तीक्ष्ण एवी बुद्धिरूप छैनी के० सोनीनी छीणी ते शस्त्र विशेष, पोताना घटमां नाखी दीधी, पछी ते सुबुद्धिरूप छीनी नौ कर्म के० आत्म प्रदेशनेविषे श्लेष्म रूप जे राग द्वेष परिणाम छे, ते नौ कर्मना भेद तेना पुद्गलरूपी द्रव्य कर्मने छेदीने स्व

भाव अने विभावतानी संधी शोधि लीधी छे, त्यां सांधनेविषे मध्यपाती के० त्रिहा ईत बनीने ते पुरुषे वे धारा लखी, तेमां एक तो मुधामइ के० अज्ञान मय छे, ने बी जी सुधारस भीनी के अमृत रस भीनी ज्ञान समाधिमय छे, अहीं राग द्वेषादिकनी दशा छे, ते मुधा दशा छे, तेथी विरचि के० वैराग धारीने सुधा सिंधुमां मग्न थवुं, ज्ञान समाधिरूप सुधा समुद्रमां मग्न रेहेवुं, ए जे क्रिया कही ते सर्व क्रियानो विचार एक समयमां करे ॥ ९९ ॥ जेम लोढानी छीणी एकना वे भाग करे छे, तेम जड चे तननी एकता भांगीने भिन्नता करवी ते सुबुद्धिथकीज थाय छे. ॥ ३०० ॥

हवे जेवो सुबुद्धिनो विलास छे, तेवो कहे छेः– अथ सुबुद्धि विलास कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–(सर्व ह्रस्वाक्षर चित्रालंकार) धरति धरम फलहरति क रम मल, मन वच तन बल करत समरपन; भखति असन सित चखति रसन रित, लखति अमित वित करि चित दरपन; कहति मरम धुर दहति भरमपुर, गहति प रम गुर उर उपसरपन; रहति जगत हित लहति भगति रति, चहति अगति गति यह मति परपन ॥ १ ॥

अर्थः– सुबुद्धि जे छे ते धरम रूप फलने धारेछे, कर्मरूप मलने हरे छे, अने ए क्रियाने विषे मनबल, वचनबल अने कायानुं बल तेने समर्पण करे एटले ए त्रणे बल ते क्रियामां कामे लगाडे. भखति के० खाय छे, सित के० शीतल भोजन ते रसन रित के० जीभना स्वादविना भोजन जमे, अमित वितके० परिमाण विनानुं पो तानुं ज्ञानादिक धन चित्तरूप दर्पण वडे जुए, मर्म धुर के० मर्मनी वात जे जीवनुं स्वरूप ते कहे, भ्रम पुर के० मिथ्या नगर तेने वाले, अने अंतरनेविषे उत्कृष्ट गुरुनां वचनने ग्रहण करे, अने ह्रदयनेविषे उपसरपन के० स्थिरता धारे अने जगत्नो हि तकारी थको रहे, त्रणे लोकनी भक्ति अने रति के० सुख तेने लहे, एटले सर्व लो कने पूजनीक थाय. होई अगति गति के० जेनेविषे बीजा सामान्यनी गति थती नथी, तेवी मोक्षगति चाहे, एवो सुमतिनो उत्कृष्ट विलास छे. ॥ १ ॥

हवे ज्ञातानो विलास कहे छेः– अथ ज्ञाता वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–(सर्व गुरु अक्षर चित्रालंकार) रानाकोसो बाना लीने आपा साधे थाना चीने, दाना अंगी नानारंगी खाना जंगी जोधा है; माया वेली जेती तेती रेतेमें धारेती सेती, फंदाहीको कंदा खोदे खेतीकोसो लोधा है; बाधा सेती हांता लोरे राधासेती तांता जोरे, बांदी सेती नांता तोरै चांदी कोसो सोधा है; जानै जाही ताही नीके माने राही पाही पीके, ठानै बाते डाही ऐसो धारा वाही बोधा है. ॥ २ ॥

अर्थः— जे बुध के० ज्ञानी बे, ते राणा के० राजा जे पातसाहनुं स्वांग लेतो थको रहे बे. जेम राजा पोताना आत्मानुं साधन करे; अने पोताना मंफलनो साज राखे- पोताना थाणाने चीन्हे के० नीघेबानी राखे, दानाइ राखे पण नादानी नही राखे, ए चारे उपाय वडे नाना रंग करे, खाना जंगी के० लमाईनेविषे जोद्धा थई रहे, तेम ज्ञानी पुरुष आत्म साधन करे, गुणठाणा चिन्हे अने त्यागी थको कर्म निर्जरानेविषे नाना प्रकारना रंग धारे, राग—द्वेष डुर्जन साथे लमी तेने हटावी देय, एवी रीते एक पदमां बे अर्थ थाय बे. जेम लुहार रेतरमीवमे लोढाने घसी नाखे बे, तेम जेटली जेटली माया वेली के० कर्मजाल तथा गजवेल ने क्रोध तेने मेधा के० सुबुद्धि ते रूप रेतरमी वडे घसी नाखे; अने फंदना कंदने खोदेबे. जेम लोधा के० खेमुत खेतरनी धरतीने कंद के० मूलथी खोदी नाखे बे, तेम बाधा के० कर्मबंध तेथी हातालोरे के० जुदाई करे, अने राधा के० सुबुद्धि ते साथे नातो जोडे; बांदी के० कुबुद्धि तेनो नांतो के० संबंध ते तोडे. जेम सोनारूपानी चांदी शोधनार वस्तु उज्वल करेबे, तेम जे जेने तेने जाणे, हेय जे बांडवा योग्य वस्तु अने उपादेय जे आदरवो योग्य वस्तु तेने पण नीके के० ठीक जाणे, पण हैयाने राहीपाही के० फुल समान पीकसमान जाणे ज्ञीनासथी खीलावेबे, ए रीते माही वातो ठरावे एवो सम्यक्त्व धारानो वेहेनार बोधा के० पंडितने ज्ञानी कहीये. ॥ २ ॥

हवे ज्ञाताने चक्रवर्त्ति समान कही बतावेबेः— अथ ज्ञाता चक्रवर्त्ति समान कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिन्हिके दरब मिति साधत ब खंड थिति, बिनसै विज्ञाव अरिपंकति पतन है; जिन्हिके ज्ञगतिको विधान पईनो निधान त्रिगुनके ज्ञेदमान चौदह रतन है; जिन्हिके सुबुद्धि रानी चूरि महा मोह वज, पूरे मंगलीक जे जे मोखके जतन है; जिन्हिके प्रमान अंग सोहै चमू चतुरंग, तेई चक्रवर्त्ति तनु धरै पै अतन है.

अर्थः— जेणे बए द्रव्य प्रमाण करी साध्या तेज जाणे बये खंड साधी लीधा अने जेना राग द्वेषादि विज्ञावदिशा वणसी जाए तेज जाणिये शत्रुनी पंक्तिनुं पतन के० नाश थयो, अने तेने नव प्रकारनी ज्ञक्तिनुं विधान के० करवुं तेज तेने नव निधान बे, ज्ञान दर्शनने चारित्ररूप जे त्रण गुण बे, अने तेना क्षयोपशम माफक जे ज्ञेद उपजेबे, ते जेना चौद रतन प्रगटमान बे,अने जेम चक्रवर्त्तिने स्त्रीरत्न होय बे, ते तेनो ब खंड साधवानो राज्याज्ञिषेक समय होय त्यारे वज्ररत्न हाथवडे चूरीने, मुख आगल मंगलीक पूरे तेम जेने सुबुद्धिरूप स्त्री रत्न बे, ते महा मोहरूप वलिने चूरीने मोक्षना जतनने माटे मंगलीक पूरे बे, एटले मंगल कार्य करे; अने जे, प्रत्यक्ष प्रमाणे करीने अर्थनुं ग्रहण करेबे, तथा परोक्ष प्रमाणे करीने पण अर्थनेग्रहेबे, एवा जेना

प्रमाणरूप अंग छे, तेज तेनी चतुरंगी सेना थई एम जाणवुं. ए रीते ज्ञाता पुरुषे च क्रवर्त्तिनो देह धार्यो छे, तेम छतां पण ज्ञाता अतनके० अशरीरीजेवो छे. ॥ ३ ॥

पूर्वे कही जे नवधा भक्ति तेनुं हवे वर्णन करेछेः– अथ नवधा भक्ति वर्णनंः–

॥ दोहाः ॥– श्रवन कीरतन चिंतवन, सेवन वंदन ध्यान; लघुता समता एकता, नौधा भक्ति प्रमान. ॥ ४ ॥

अर्थः– उपादेय स्वरूपने सांभलवुं, किरतन करवुं, चिंतवन करवुं, सेवा पूजा करवी, वंदन स्तुति करवी, ध्यान धरवुं, तन्मयता करवी, समाधि करवी, अने एकमेक पणुं, ए नौधा के० नव भेदवडे भक्ति प्रमाण थायछे. ॥ ४ ॥

हवे जे ज्ञाता मोक्ष सन्मुख थयो तेनी अनुभव दशा कहे छेः–

अथ अनुभवी वचनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोई अनुभवी जीव कहै मेरे अनुभौमें, लछन विभेद भिन्न करमको जाल है; जानै आप आपुकों जु आपु करी आपुविषे, उतपति नासध्रुव धारा असराल है; सारे विकलप मोसों न्यारे सरवथा मेरो निहचै सुभाउ यह विवहार चाल है; मैं तो शुद्ध चेतन अनंत चिन मुद्रा धारी, प्रभुता हमारी एक रूप तिहू काल है.

अर्थः– जे आत्मानो अनुभव पाम्यो तेज अनुभवी जीव एवुं कहे छे, के मारा अनुभवमां लक्षण भेदथकी कर्म जाल हवे भिन्न दीसवा लागी. अने आत्माज कर्त्ता कारक, आत्माज करण कारक, आत्माज आधार कारकविषे आत्माज कर्म कारकने जाणे. अने अहीं कोई पर्यायनी उत्पत्ति अने नाश छे, अने द्रव्य ध्रुवता पणे छे, ए त्रणे धारा अहीं असराल पणे वही रही छे, तोपण ए त्रणे धारा विकल्परूप छे, अने माराथी तो सर्व विकल्प सर्वथा जुदाज छे, विकल्पमां तो कहीं निश्चय नथी. अने मारो तो चेतना स्वरूप निश्चय स्वभाव छे, अने आगल कही जे त्रण धारा तेतो व्यवहार नयनी चालमां छे. आ जे सिद्धांत वचन कहुं छुं तेणे करीने हुंतो शुद्ध चेतना स्वरूपी छुं, अनंत चिन्मुद्रा धारी के० अनंत ज्ञाननो धरवावालो छुं, एहवी म्हारी प्रभुता त्रणे कालने विषे एक रूपेछे. ॥ ५ ॥

हवे चेतनानुंज स्वरूप बतावे छेः– अथ चेतना वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– निराकार चेतना कहावे दरसन गुन साकार चेतना शुद्ध ज्ञान गुण सार है; चेतना अद्वैत दोउ चेतन दरवतांहि, सामान विशेष सत्ताहीको विसतारहै; कोउ कहै चेतना चिनह नाही आतमामें, चेतनाके नास होत त्रिविध विकार है; लछनको नास सत्ता नास मूल वस्तु नास, तातें जीव दरवको चेतना आ

धार है ॥ ६ ॥ ॥ दोहराः ॥– चेतन लछन आतमा, आतम सत्ता मांहि; सत्ता परिमित वस्तु है, भेद तिहूमें नांहि ॥ ७ ॥

अर्थः– आत्मानो दर्शन गुण जे निराकार कहीये छइये तेतो निराकार चेतना थई, अने जे आत्माने शुद्ध ज्ञान गुण सारभूत कहीये छइये तेतो साकार चेतना थई, विशेषताने लीधे रह्यो छे माटे साकार कहिये, ए रीते निराकार आने साकारपणे दर्शन तथा ज्ञानने विषे द्वैत भाव थयो, पण चेतनाने विषे तो अद्वैत भावज रह्यो छे, अने चेतनागुण थकी चेतन द्रव्य छे, तेथी चेतन द्रव्यमां बेउ समाइ गयां. वली निराकार ने साकारपणुं सामान्य ने विशेषपणाथकी छे, ते तो सामान्यता अने विशेषता चेतना द्रव्यनी सत्तानो विस्तार छे; कोई मूढमति वैशिषिक प्रमुख दर्शनवाला कहे छे, के, आत्माने विषे चेतन चिन्ह नथी, चेतना लक्षण नथी, तेने केहेवुं के अरे! मूढ,! जो चेतन चिन्ह न कहिये तो चेतनानो नाश थवाथी त्रिविध विकार उपजशे, ते कया ? तो के मन वचन ने कायाना विकार जाणवा, माटे लक्षणनो नाश थवाथी वस्तुनी सत्तानो नाश थशे अने वस्तुनी सत्तानो नाश थवाथी मूल रूप वस्तुनो पण नाश थशे, माटे जीवने जाणवानो तो एक आधार चेतनानोज छे ॥ ६ ॥ आत्मानुं चेतना लक्षण छे, सत्ता धर्मविना आत्मा ठरे नही तेथी आत्मा सत्ताने विषेज छे, अने पोतपोतानी सत्ता प्रमाणेज सर्व वस्तु छे, वस्तु द्रव्य विचारी जोइये त्यारे उत्पादादि त्रणे वस्तुमां भेद कोई नथी ॥ ७ ॥

हवे चेतना लक्षणनुं शाश्वत तथा अविनाशीपणुं दृढ करावेछेः–

अथ चेतना अविनाशी यह कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– ज्यों कलधौत सुनारकि संगति, भूषन नांउ कहै सब कोई; कंचनता न मिटी तिहिं हेतु वहै फिरि औटि तु कंचन होई; त्यों यह जीव अजीव संयोग भयो बहु रूप भयो नहि दोई; चेतनता न गई कबहू तिहिं, कारन ब्रह्म कहावत सोई. ॥ ८ ॥ देखु सखी यह आपु विराजत याकि दसा सब याहिकुँ सोहै; एकमैँ एक अनेक अनेकमैँ, द्वंद्व लिये दुविधामहि दो है; आपु सँभारि लखै अपनो पद, आपु विसारकैँ आपुहि मोहै; व्यापक रूप यहै घट अंतर, ज्ञान मैँ कौन अज्ञानमैँ कोहै ! ॥ ९ ॥ ज्यों नट एक धरै बहु भेष कला प्रगटै जग कौतुक देखै; आपु लखै अपनी करतूति वहै नट भिन्न विलोकत पेखै; त्यों घटमें नट चेतन राउ विभाउ दसा धरि रूप विसेखै; खोलि सुदृष्टि लखै अपनो पद, द्वंद विचार दसा नहि लेखै. ॥ १० ॥

अर्थः–जेम कलधौत के० सोनुं तेने सोनी घमीने भूषण बनावेछे, त्यारे ते घाटना

संयोगथी लोको तेने भूषण केहेवा लागेछे. पण मूल वस्तु जे कंचन ते कांई जतुं रह्युं नथी, केमके, ज्यारे ते घाटने अग्निमां गाली नाखे त्यारे पाछुं ते सोनुं केहेवाय, तेम आ जीव जे छे, ते अजीवरूप कर्म पुद्‌गल इत्यादिक बीजा पण पुद्गलना संयोगथी एक कोडी साडी संताणुं लाख कुल कोडीमां वहुरूपे थयो, तोपण द्विविध नथी थयो, केमके, चेतनता कंई गई नथी; तेमाटे ते स्वरूपमां जीव ब्रह्मज केहेवाय छे, जेनो विस्तार मोटो तेने ब्रह्म कहीये. ॥ ८ ॥ आत्मानी अनुभूति ते सुबुद्धि सखीने कहेछे, हे सखी, जो आ आपणो ईश्वर विराजे छे, अने ए ईश्वरनी दशा सर्व एनेज शोभेछे, एवी विरुद्धता बीजे ठेकाणे न शोभे. लक्षणवडे एकतामां जोईये तो एक रूप छे, अने अपर सत्ताए देखीये तो अनेकरूप छे, अने द्वंद्व दशामां देखीये एटले अज्ञान दशामां देखीये अने ज्ञान दशामां देखीये तो द्विविध रूप छे, ते द्विविधपणुं कहेछेः— क्यारेक तो पोतानुं पद जे पोतानुं स्वरूप तेने संभारीने जुए, अने क्यारेक तो पोताने विसरीने पोते मोहमां पडे. हे सखी, एहिज ईश्वर घटने अंतर्व्यापक रूप छे, तेथी जे जे अवस्थामां आप छे, तेवारे ज्ञाननेविषे पण बीजो कोइ नथी अने अज्ञाननेविषे पण बीजो कोइ नथी. ॥ ९ ॥ हवे एना उपर दृष्टांत कहेछेः— जेम कोई नट होय ते बहु वेष धरेछे, ने तेते वेषनी कला प्रगट करेछे, त्यारे जगत् तेने कुतुहल समजे पण नट पोते पोतानी क्रिया जाणेछे, ने तेणे धरेला वेषथी पोते जुदोछे, एवुं जाणेछे. तेम घटनेविषे चेतन राजा रूप नट छे, ते विभाव दशा धरीने रूप विशेष करेछे, पण ज्यारे सुदृष्टि खोली जुए त्यारे तो पोतानुं पद ओलखे अने द्वंद्व विचारनी दशाने पोते लेखामां गणे नही. ॥ १० ॥

हवे चेतन नटनी सघली चेतना एक छे, ते कहेछेः— अथ चेतना उपादेय कथनंः—

॥अडिल छंदः॥— जाके चेतनभाव चिदातम सोइ है; और भाव जो धरे सु औरे कोइ है; यों चिन्मंडित भाव, उपादे जानते; त्याग जोग परभाव पराये मानते ॥११॥

अर्थः— जेनेविषे चेतन भाव छे, तेने चिदात्मा अथवाचिद्रूप कहिये छे, अने ए चेतनाभावथी बीजो भाव जे धारेछे, तेतो कोई बीजो छे, एथी चेतना मंडित जे भाव छे तेतो उपादेय रूप जाणवो, अर्थात् पोतानो करी जाणवो, अने चेतना भावथी जे परभाव छे, तेसघलो त्यागवा योग्य छे ने तेने पारको करी मानी लेवो. ॥ ११ ॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि चेतना उपादेय राखीने मोक्ष मार्गना साधक थया तेनी अवस्था कहेछेः— अथ सम्यग्दृष्टि मोक्ष मारगको साधक कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिन्हके सुमति जागी भोगसों भये विरागी, परसंग त्यागी जे पुरुष त्रिभुवनमें; रागादिक भावनिसों जिन्हकी रहनि न्यारी, कबहु मगन व्है रहै

धाम धनमें; जे सदीव आपकों विचारै सरवंग सुरू, जिन्हके विकलता न व्यापै कब मनमें; तेई मोक्ष मारगके साधक कहावै जीव, जावै रहो मंदिरमें जावे रहो वनमें.

अर्थः— जेना ह्रदयामां सुबुद्धि जागी, अने विषय जोगथी जे वैरागी थया, अने जे रागद्वेषादिक परजाव छे, तेना सेवना संग के० त्रण लोकनेविषे तेना त्यागी जे पुरुष छे, अने जे राग द्वेषादिक जाव पदार्थ छे तेथकी जेनी रेहेणी न्यारी छे, तेथी धाम के० घर अने धन तेनेविषे मग्न थई न रहे, अने जे सदा निश्चय दृष्टिए देखीने आत्माने सर्वांग शुद्ध विचारे छे, तेथी जेना मननेविषे विकलता नही व्यापे, एवी दशा लईने जे जीव रह्या छे, तेज जीव मोक्ष मार्गना साधक केहेवाय, पछी ते जावे तो मंदिरमां रहे, ने जावे तो वनमां रहे, पण तेनी दशा सर्व स्थानके एकज होय छे.॥१२॥

हवे मोक्षगामी जीव विचक्षण पुरुषनी दशा कहेछेः— अथ विचक्षणदशा वर्णनंः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— चेतन मंडित अंग अखंडित शुद्ध पवित्र पदारथ मेरो; राग विरोध विमोह दशा समुझे भ्रम नाटिक पुग्गल केरो; जोग सँयोग वियोग व्यथा अविलोकि कहे यह कर्मज घेरो; है जिन्हकों अनुजौ इहि जांति सदा तिन्हिकों परमारथ नेरो. ॥ १३ ॥

अर्थः— जे परमात्मानेविषे दृष्टि दैने विचार करे के, जे मारो पदार्थ छे, ते चेतन मंडित छे, अने अखंडित छे, अछेद्य छे, अजेद्य छे, अने शुद्ध छे, पवित्र छे, अने एथी जुदी जे राग द्वेषने मोहनी दशा थई रहीछे, तेने तो भ्रमरूप मिथ्याजाल पुद्गलनुं नाटक करी समझे छे, अने पंचेंद्रियना जोगसंयोगने वियोग एवी बाह्यात्माने विषे व्यथा अवलोकीने एवुं कहे के, एतो कर्मनो घेरो छे, कर्मनो उदय छे, एवो अनुजव जेने नित्य रहे, तेने परमार्थरूप मोक्ष ते सदा नेरो के० नजीक छे. ॥ १३ ॥

हवे जे मोक्षथी दूर ते चोर, ने मोक्षथी निकट ते साहुकार एवुं कहेछेः—

अब चोर तथा साहुकार वर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— जो पुमान परधन हरै, सो अपराधी अज्ञ; जो अपनो धन विव हरै, सो धनपति धरमज्ञ. ॥ १४ ॥ परकी संगति जो रचै, बंध बढावे सोइ; जो निज सत्तामें मगन, सहज मुक्त सो होइ. ॥ १५ ॥

अर्थः— जे पुमान के० पुरुष परधनने हरे, ते अपराधी जीव अज्ञ के० अजाण कहीयें; ने जे पोतानाज धननो व्यवहार राखे, ते धनपति कहिये, धर्मज्ञ के० धर्मने जाणनार कहियें. ॥ १४ ॥ तेम जे परवस्तुनी संगतीए राचे ते चोर केहेवाय, ने तेज पोताना बंधने वधारे, अनेजे पोतानी सत्तामां सदाकाल मग्न रहे तेज मुक्तरूप थाय.

हवे वस्तु कोने कहिये अने सत्ता कोने कहियें ते बतावेछेः—अथवस्तुसत्तावर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— उपजे विनसे थिर रहे, यह तो वस्तु वखान; जो मरजादा वस्तुकी सो सत्ता परवान. ॥ १६ ॥

अर्थः— उत्पत्तिवंत, विनाशवंत, स्थिरतावंत एतो वस्तुनुं वखाण छे, अने जे वस्तु नी मर्यादा जे परिमाण ते धर्मने सत्ता कहीये, ए अनुभव प्रमाण ग्राह्य छे. ॥ १६ ॥

हवे केवा केवा द्रव्यनी केवी केवी सत्ता छे ते कहेछेः—

अथ सत्ता व्यवस्था वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— लोकालोक मान एक सत्ता है आकाश दर्व, धर्म दर्व एक सत्ता लोक परिमिति है; लोक परवान एक सत्ता है अधर्म दर्व, कालके अणु असंख सत्ता अगनिति है; पुदगल शुद्ध परवानकी अनंत सत्ता, जीवकी अनंत सत्ता न्यारी न्यारी थिति है; कोउ सत्ता काहुसों न मिलै एकमेक होई, सवे असहाययों अनादि हीकी थिति है. ॥ १७ ॥

अर्थः— आकाश द्रव्यनी मर्यादा लोकालोक लगे एक छे, तेथी आकाश द्रव्यनी एक सत्ता छे, अने धर्मास्तिकाय द्रव्य लोक प्रमाण रूप छे, तेथी धर्म द्रव्यनी एक सत्ता छे, अने अधर्मास्तिकाय द्रव्य पण लोक प्रमाण एक रूप छे तेथी अधर्म द्रव्य नी एक सत्ता छे, अने कालना द्रव्यना अणु छे ते लोकाकाश प्रदेश परिमाणे असं ख्यात छे, तेथी काल अणुनी असंख्यात सत्ता छे, ए कहेवुं दिगंबर संप्रदायनुं छे, अने अने योग शास्त्रमां पण कह्युं छे, अने लोकविषे पुद्गलरूपी शुद्ध परमाणुनी पण अ नंत सत्ता छे, अने लोकविषे जीव अनंत छे, तेथी जीवनी पण अनंत सत्ता छे, तेथी ज जीवाजीवनी जुदी जुदी क्षेत्रावगाहना छे, जे द्रव्यनी जे सत्ता होय ते बीजी कोई द्रव्यनी सत्ता साथे मले नही, जो एकमेक थइ जाय तो सर्व सत्ता असहाय पणे वर्त्ते, माटे एकमेक न थाय एवी अनादि कालनी स्थितिछे. ॥ १७ ॥

हवे चेतन द्रव्यनी सत्तानुं वर्णन करेछेः— अथ चेतन सत्ता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— एइ छहो द्रव्य इन्हहीको है जगतजाल, तामें पांच जड एक चेतन सुजान है; काहुकी अनंत सत्ता काहुसों न मिले कोई, एक एक सत्तामें अनंत गुण गान है; एक एक सत्तामें अनंत परजाय फिरे, एकमें अनेक इह भांति परवान है; यहे स्यादवाद यहै संतनिकी मरजाद, यहे सुख पोष यहै मोक्षको निदान है. ॥ १८ ॥

अर्थः— ए छए द्रव्ये करी एथीज जगत्जाल वर्त्तेछे, ते छनेविषे पांच द्रव्य जड रूपी छे, ने एक चेतनरूपी द्रव्य छे ते जाणनार छे. अंही पुद्गलनी अनंत सत्ता कही,

अने जीवनी अनंत सत्ता कही, एवा अनंतपणे करीने कोईनी सत्ता कोई साथे मले नही, एटले जुदी जुदी अनंत सत्ता छे, अने प्रत्येक सत्तामां अनंत गुणनुं ज्ञान छे, अने एक एक सत्तामां अनंत पर्याय अनंत अवस्था भेदफिरे तेथी जे पूर्वे एकमां अनेक कह्युं ते एरिते छे. स्याद्वाद मतमां ए वात प्रमाण छे, अने सत्पुरुषनां वचननी पण एज मर्यादा छे, तथा एज मत सुखनुं पोषण करनार छे, अने मोक्षनुं निदान एटले मूल कारण छे. ॥ १८ ॥

हवे ए वचन थकी जे वस्तुनो धर्म ग्रह्यो जाय तेज सत्ताधर्म कहीये तेथी एक जीव द्रव्यनी सत्ता कहेछेः— अथ एक जीव द्रव्यसत्ता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— साधि दधि मंथनि अराधि रसपंथनिमें, जहां तहां ग्रंथनिमें सत्ताहीको सोर है; ज्ञान भानु सत्तामें सुधा निधान सत्ताहीमें, सत्ताकी डुरनि सांझि सत्तामुख भोर है; सत्ताको सरूप मोख सत्ता भूलै यहै दोष, सत्ताके उलंघे धूंम धाम चिहू ओर है; सत्ताकी समाधिमें विराजि रहे सोई साहु. सत्तातें निकसि और गहे सोई चोर है. ॥ १९ ॥

अर्थः— जे वस्तुनेविषे छती देखाय, जेम दहीना मंथनमां घीनी सत्ता साधिये,जे औषधमां मधुर रस छे, तो तेथी वस्तु नीपजे छे, माटे रस मार्गमां सत्ताविना सिद्ध नथी. जे वस्तुमां छतापणुंछे तेने सत्ता कहिये. शास्त्रमां ज्यां त्यां ग्रंथोनेविषे सत्तानोज सोरके० शब्दछे. ज्ञान रूपी भानुनो उदय जीवनी सत्तामां निपजे, वली सुधा के० अमृत ते पण सत्तामांज पामिये, निधान पण सत्तामांज पामिये. जे सत्तानुं डुरनि के० छुपाववुं ते संध्या रूपछे, अने जे सत्तानी मुख्यताछे तेज भोर के० प्रभात रूपछे. जीवनी सत्तानुं जे स्वरूप छे तेज मोक्ष छे, अने सत्ताने भुली जवुं एज दोषरूप छे. सत्तानुं उलंघन करवाथी चौहोछर के० चारें तरफ धामधुम नीपजे, जे पोतानी सत्ता सद्भूतपणुंछे, तेमां विराजमान थई रहे तेने साहुकार कहिये, अने जे पोतानी सत्ताथी नीकलीने अन्यनी सत्ताने ग्रहे तेने चोर कहीये. ॥ १९ ॥

हवे सत्तानी समाधिनुं वर्णन करेछेः— अथ समाधि वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जामें लोक वेद नांहि थापना उछेद नांहि पाप पुन्य खेद नांहि क्रिया नाहि करनी; जामें राग दोष नांहि जामें बंध मोष नांहि, जामें प्रभु दास न आकास नाहि धरनी; जामें कुलरीत नांहि जामें हारजीत नांहि जामें गुरु शिख नांहि विष नांहि भरनी; आश्रम वरन नांहि काहुकी सरनि नांहि ऐसी सुद्ध सत्ताकी समाधि भूमि वरनी. ॥ २० ॥

अर्थः— जेमां लौकिक वेदवुं नथी, अने जेमां स्थापनानो उछेद नथी, जेमा पाप

पुण्यनो खेद नथी, जेमां कोइ क्रियाकरणी नथी, जेमां राग द्वेष नथी, जेमां बंध मोक्ष नथी, जेमां प्रभुताने दासपणुं नथी, जेमां आकाश अने धरती नथी, जेमां कुलनी रीत नथी, जेमां हारने जीत नथी, जेमां गुरु अने शिष्य नथी, जेमां विष चर नी एटले चालवुं हालवुं नथी, जेमां कोई आश्रम व्यवहार नथी, तथा वर्ण व्यवहार नथी, जे कोइनी शरण रूप नथी, एवी शुद्ध सत्तानी भूमि ते समाधिरूप वरणवीछे. एटले स्वरूपनी शुद्ध समाधिने विषेज शुद्ध सत्ता पामीये. ॥ २० ॥

हवे मिथ्यादृष्टिने चोर अने अपराधी कही देखडावे छेः—

अथ मिथ्यादृष्टि अपराधि यह कथनंः—

॥ दोहराः ॥— जाके घट समता नही, ममता मगन सदीव; रमता राम न जानही, सो अपराधी जीव ॥ २१ ॥ अपराधी मिथ्यामती, निरदै हिरदै अंध; परकों माने आतमा, करे करमको बंध ॥ २२ ॥ झूठी करनी आचरे, झूठै सुखकी आस; झूठी भगती हिय धरे, झूठो प्रभुको दास ॥ २३ ॥

अर्थः— जेने केवल जाणपणुं जे समता ने समाधि ते नथी, अने जे सदा परवस्तुनी ममताविषे मगन थई रहे, ने निज घट अथवा स्वरूपनेविषे रमी रह्यो एवो जे आत्मराम तेने जेणे जाण्यो नथी तेनेज अपराधी चोर जीव कहीये ॥ २१ ॥ जे पर वस्तु लेय ते अपराधी ने तेज मिथ्यामति, तेज निर्दय ने तेज हैयानो अंध कहिये, एटले जे पररूप पुद्गलने आत्मा माने ते कर्मनो बंध करेछे ॥ २२ ॥ ज्यांसुधी पोतानी वस्तुने न जाणे त्यांसुधी तो जे क्रिया आचरे ते सर्व झूठी छे, अने तेने जे मोक्ष सुखनी आशा छे, ते सर्व झूठी छे. पोताना प्रभु जाण्या विनानी जे भक्ति हैयामां धरे छे, ते सर्व झूठी जाणवी, अने परमेश्वरने ओलख्याविना दासपणुं राखवुं ते पण सघलुं झूठुं छे ॥ २३ ॥

हवे मूढ लोकना झूठपणानी व्यवस्था कहे छेः— अथ मूढ व्यवस्था यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— माटी भूमि सैलकी सु संपदा बखाने निज, कर्ममें अमृत जाने ज्ञानमें जहर है; अपनो न रूप गहै औरहीसों आपु कहै, साता तो समाधि जाके असाता कहर है; कोपको कृपान लिये मान मदपान किये, मायाकी मरोरि हिये लोभकी लहर है, याही भांति चेतन अचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख भयो झूठमें वहर है ॥ २४ ॥ तीन काल अतीत अनागत वरतमान, जगमें अखंडित प्रवाहको डहर है; तासों कहै यह मेरो दिन यह मेरी घरी, यह मेरोई परोई मेरोई पहर है; षेहको खजानो जोरे तासों कहे मेरो गेह, जहां वसे तासों

कहे मेरोई सहर है; याहि भांति चेतन अचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख भयो झूठमें बहर है ॥ २५ ॥

अर्थः– सात धातु जे छे पहाडनी धरतीनी माटी जेवी छे, तेने संपत्ति करी वखाणे छे. पोतानी अशुद्ध क्रियामां अमृत जाणे छे, अने ज्ञानमां झेर समजे छे; एटले क्रिया थकी सिद्धि जाणे, ने ज्ञान थकी नही जाणे. जे पोतानुं चिदानंद स्वरूप छे, तेने ग्रहे नही, पण शरीरादिक जे छे तेने आत्मारूप जाणेछे. अने जे साता वेदनीय उपजे छे, तेने तो समाधि करी जाणे छे; असाता वेदनीयने कहर के० उपद्रव माने छे, कोपनुं कृपान जे खडग ते लईने रहे छे; मान ने अहंकार रूप मद पीइने रहेछे; हैयानेविषे मायानो मरोड राखेछे, लोभनी फेर खाया करे छे, एवी रीते अचेतननी संगती थकी एटले जड पुद्गलनी संगतीथी साच थकी विमुख थयोछे, ने जुठमां बहर हे के० तत्पर थई रह्योछे, ॥ २४ ॥ अर्थ स्पष्ट. ॥ २५ ॥

हवे सम्यग् दृष्टि साहुकारनी व्यवस्था कहे छेः–अथ सम्यकदृष्टि व्यवस्थाकथनंः–

॥ दोहराः ॥– जिन्हके मिथ्या मति नही, ज्ञान कला घटमांहि; परचे आतम रामसों, ते अपराधी नांहि ॥ २६ ॥

अर्थः– जेनी मिथ्यामति नाश पामीने घटनेविषे ज्ञान कला प्रगटी छे, जेणे आत्मारामने ओलख्यो छे, ते लोक अपराधी नथी, साहुकार छे ॥ २६ ॥

हवे ज्ञानीनी व्यवस्था कहे छेः– अथ ज्ञानी यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जिन्हके धरम ध्यान पावक प्रगट भयो, संसे मोह विभ्रम विरष तीन्यो वढे हैं, जिन्हकी चितौनि आगे उदे स्वान भूसि भागे लागे, न करमरज ज्ञान गज चढे हैं; जिन्हिकी समुझिकी तरंग अंग अगममें, आगममें निपुन अध्यातममें कढे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाढ करे यहै पाठ पढे हैं ॥ २७ ॥ जिन्हकी चिहुंटी चिमटासी गुन चूनबेकों, कुकथाके सुनबेकों दोउ कान मढे हैं; जिन्हको सरल चित कोमल वचन बोले, सोम दृष्टि लिये डोले मोम कैसे गढे हैं; जिन्हिके सगति जगि अलख अराधिबेकों, परम समाधि साधिबेगो मन बढे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाढ करे यहे पाठ पढे हैं ॥ २८ ॥

अर्थः– जेना हैयामां धर्म ध्यानरूप पावक के० अग्नि प्रगट थयो, तेथी संशय, मोह अने विभ्रम ए त्रणे वृक्षरूप छे, ते वढे के० बली गया छे, जेनी चितौनी के० ज्ञानदृष्टि आगल उदयरूप कुतरो भसीने भागी जाय छे, अने जे ज्ञानरूपी गजराज उपर चढी रहेछे, तेथी जेने कर्मरूप रज लागती नथी, बीजानुं जे अगम अंग छे, तेमां जेनी समजना तरंग उठी रह्या छे एवा आगम के० जैन वाणीमां जे निपुण थयो, अने अ

ध्यात्म ज्ञानमां पूर्ण थयो छे, तेनेज सम्यगूदृष्टि कहिये; परमार्थने पामनार पुनित के० पवित्र रूप थयो जाणवो. आत्मारामना अनुभव रसमां आठे प्रहर गढे के० संपूर्ण मग्न थई, एज पाठ पढे छे, एटले भणे छे, ॥ २७ ॥ वली जेम चीमटी के० हाथनी चिमटी अथवा चिपीयो तेवडे कई नानी वस्तुने पकडी लइयें छइये, तेम पारका गुण चुंटी लेवाने जेनी एवी चपटी छे, अने विकथा सांभलवाने जे बने कानने बंध करी राखे छे, जेनुं चित्त सरल ने निष्कपटी छे, जे निरहंकारीपणे कोमल वचन बोले छे; काम क्रोधादिक विकारविना सौम्य दृष्टि जे राखे छे, वली जे मोम केसेगढेहें के० मीणना घडाजेवुं हृदय कोमल राखे छे, अने पोताना अलख समाधि स्वरूपने साधवाने जेनी सुमति जागी छे, अयोगी अवस्थामां जेनी परम समाधि थइ छे, तेने साधवाने जेनुं मन वध्युं छे, तेज सम्यग् दृष्टि परमार्थना पामनार पुनित के० पवित्र रूप थई रह्या छे, ने तेज आत्मारामना अनुभव रसमां आठे पहोर दृढ मग्न थई एज पाठ पढे छे. ॥ २८ ॥

हवे समाधिनुं स्वरूप कहे छेः— अथ समाधि वर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— राम रसिक अरु रामरस, कहन सुननकों दोइ; जब समाधि परगट भई, तब डुविधा नहि कोइ. ॥ २९ ॥ नंदन वंदन थुति करन, श्रवन चिंतवन जाप; पढन पढावन उपदिसन, बहुविध क्रिया कलाप. ॥ ३० ॥ शुद्धातम अनुभौ जहां, सुभाचार तिहि नांहि; करम करम मारगविशे, शिव मारग शिवमांहि. ॥ ३१ ॥

अर्थः— आत्माराम जे छे ते रसिक के० रस भोक्ता छे, अने राम के० रमवुं ते रस रूप छे, केहेवाने सांभलवाने रसिकने रस बेउ छे, पण जेवारे एनेविषे समाधि प्रगट थाय छे त्यारे बे पणुं नथी रेहेतुं. त्यारे तो रसिक अने रस ए बे एकज वस्तु छे ॥२९॥ राम के० रसिक अवस्था धारतो एटली क्रिया करे छे के, नंदन के० आनंद पामे छे, वंदन के० प्रणाम करे, थुती के० भात भातना गुणनी स्तुति करे छे, अने एवाज गुण सांभली एनुंज चिंतवन करे, एनोज जाप जपे छे, भणे, भणावे, उपदेशे, एवी रीते रसिक अवस्थामां भात भातनां क्रिया कलाप छे ॥ ३० ॥

पूर्वे कही जे क्रिया तेने करतां करतां ज्यां शुद्ध आत्मानो अनुभव थाय शुभाचार बुटीजाय, कृत—कृत्यपणे ते अयोगी दशामां छे, कर्म जे छे ते कर्म मार्गे मांज रहे, एटले संसार मार्गनेविषेज रहे, शुभ कर्म पण संसार मार्गमां छे अने शिव मार्ग ते शिवमांहे एटले शुद्ध आत्माने विषेज छे. ॥ ३१ ॥

॥ चोपाईः ॥— इहि विध वस्तु व्यवस्था जैसी, कही जिनिंद कही में तैसी; जे प्रमाद संयति मुनि राजा, तिन्हिको शुभाचारसों काजा. ॥ ३२ ॥ जहां प्रमाद द

सा नहिं व्यापे; तहाँ अवलंब आपनो आपे, ता कारन प्रमाद उतपाती, प्रगट मोक्ष मारगको घाती. ॥ ३३ ॥ जे प्रमाद संयुक्त गुसांई; ऊठहि गिरिहि गिडुककी नांई; जे प्रमाद तजि उद्धत होही, तिन्हिको मोष निकट द्दग सोही. ॥ ३४ ॥ घटमें है प्रमाद जबतांई, पराधीन प्रानी तबतांई; जब प्रमादकी प्रजुता नासै, तब प्रधान अनुजो परगासै. ॥ ३५ ॥

अर्थः– ए रीते श्री जिनेंद्र देवे वस्तुनी व्यवस्था कही छे, ने तेवीज आज्ञा प्रमाणथी में पण कही छे, अने जे मुनिराज प्रमाद दशामां छे, तेने तो शुजाचार एटले शुज क्रियानुं आलंबन लीधाथीज कार्य सिद्धि थाय ॥ ३२ ॥

अने जे मुनिराजने आत्माना अधिक वीर्यांशने लीधे प्रमाद दशा न व्यापे त्यां पोतानुं आलंबन पोते लिये, तेमाटे प्रमाद तो उत्पाती छे; अने प्रगट रीते मोक्ष मार्गनो घात करनार छे, अने अंतरायनो करनार छे. ॥ ३३ ॥

गुसांई देशी जाषानो शब्द छे, एनो अर्थ मुनिराज थाय छे. जे मुनिराज प्रमाद संयुक्त छे, ते तो गिडुक के० दडानी रीते उठे छे, ने पडे छे, पण स्वस्थताने पामे नही अने जे प्रमाद छोडीने अप्रमादपणे उठीने उजा रहे छे, तेने पोतानी द्दष्टि नजीक मोक्ष छे. ॥ ३४ ॥ ज्यां सुधी घटमां प्रमाद छे, त्यांसुधी ते पराधीन छे, अने ज्यारे आत्मानी शक्ति जागे छे, त्यारे प्रमादनी प्रजुता नाश पामे छे. त्यारे तो पोताना प्रधान अनुजवनो प्रकाश थाय छे. ॥ ३५ ॥

॥ दोहराः ॥–ता कारन जग पंथ इत, उत शिव मारग जोर; परमादी जगकों ढूंके, अपरमाद सिव ओर ॥३६॥ जे परमादी आलसी, जिनके विकलप जूरि, होहि सिथिल अनुजौविषे, तिन्हिको शिवपथ दूरि ॥ ३७ ॥ जे अविकलपी अनुजवी, शुद्ध चेतना युक्त; ते मुनिवर लघु कालमें, होहि करमसों मुक्त ॥ ३८ ॥ जे परमादी आलसी, ते अजिमानी जीव, जे अविकलपी अनुजवी, ते समरसी सदीव ॥ ३९ ॥

अर्थः– तेमाटे जगतनो मार्ग प्रमादीनी तरफ छे, अने अप्रमादीनी तरफ मोक्ष मार्ग छे, केमके, जे प्रमादी होय ते जगत्ने जुए अने अप्रमादी मुक्ति तरफ जुए छे ॥ ३७ ॥ जे प्रमादी छे, ते आलसु छे. तेने जूरि के० घणा विकल्प उठे छे, अने पोताना अनुजवमां तेने शिथिलपणुं रहे छे, अने तेने मुक्ति मार्गरूप स्वरूपाचरण दूर छे ॥ ३७ ॥ अने जे विकल्पविना अनुजवमां वसे छे, ने शुद्ध चेतना युक्त छे, ते मुनीश्वर थोडा कालमां कर्मथी मुक्त थाय छे ॥ ३८ ॥ जेप्रमादी अने आलसु छे, तेने अहंबुद्धिथी अजिमानी कहिये. ने जे विकल्प रहित पोताना अनुजवमां छे तेने तो सदाय समरसी कहिये ॥ ३९ ॥

हवे अभिमानी तथा ज्ञानीनी अवस्था उपर दृष्टांत आपेछेः—

अथ अभिमानी तथा ज्ञानी व्यवस्था कथनंः—

॥कवित्त छंदः॥—जैसे पुरुष लखे पहार अढि, भूचर पुरुष तांहि लघु लग्ग; भूचर पुरुषलखे ताकों लघु, उतर मिलै दुहुको भ्रम भग्ग, तैसे अभिमानी उन्नतगल, और जीवको लघुपद दग्ग; अभिमानीको कहे तुछ सब, ज्ञान जगे समतारसजग्ग ॥ ४० ॥

अर्थः—जेम कोई माणस पहाड उपर चड्यो होय तेने भूचर के० तलाटीपरना माणसो न्हानोछे एम जुए, अने तलाटी वाला माणसने पहाड उपर चडेला न्हाना जुए, अने पछी पहाड उपर चडेलो हेठे उतरी तलाटी वालाने मले त्यारे बेउनो नाना पणानो भ्रम दूर थाय, तेम अभिमानी पुरुष उंची गरदन राखनारो, अन्य, जीवने नाना जुए, तुछ जाणे, अने बीजा पुरुषो ते अभिमानी पुरुषने तुछ जाणे, एम अरस्परस विचारमां विषमता रहे छे, ते ज्यारे ज्ञान जागे त्यारे बेउना मनमां विषमता मटीने समपणुं आवी जाय ॥ ४० ॥

हवे एकला अभिमानीनी व्यवस्था कहे छेः—अथ अभिमानी यथाः—

॥सवैया इकतीसाः॥—करमके भारी समुझे न गुनको मरम, परम अनीति अधरम रीति गहे हैं; होहि न नरम चितगरम घरमहुते, चरमकी दृष्टिसों भरम भूली रही है; आसन न खोले मुख वचन न बोले सिरधूनाएहू न डोले मानो पाथरके चहे हे; देखनके हाउ भव पंथके वटाउ ऐसे, मायाके खटाउ अभिमानी जीव कहे हैं. ॥४१॥

अर्थः—जे करम बंधथी अति भारी छे. जे दूषनने गुण जाणेछे, पण गुणनो मर्म जाणतो नथी; अने परम अन्याय तथा अधर्मनी रीत ग्रही राखेछे; जेना चित्तनेविषे नरमाश तथा दया परिणाम नथी; द्वेषनो अति घर्म ताप छे, तेथी जे गरम रहेछे, ज्ञान दृष्टि नथी अने चर्मरूप दृष्टिवडे भ्रममां भूल्यो फरे छे, कोई विकट आसन बांधे तेने खोले नही, ने मोढेथी वचन बोले नही, मौन व्रती रहे, तेने ज्ञानी महा पुरुष जाणीने कोई माथुं नमावे, तो तेनो सत्कार ने अंग चेष्टा पण न करे, जाणिये पथर थवानीज इछा करतो होय; नेवली जेम वालकने डरावावाने हाउ कहीये छइये तेम लोकोने डरावावाने वेष धरी हाउ बनीने बेसे, अने भव भ्रमणना मार्गमां वटाउना सरखो चाले; एरीते माया जालना खाटनारा अभिमानी जीवने उलखीये ॥ ४१ ॥

हवे ज्ञानी जीवनी व्यवस्था कहे छेः—अथ ज्ञानी यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—धीरके धरैया भवनीरके तरैया भयभीरके हरैया वर वीर ज्यों उमहे हैं; मारके मरैया सुवीचारके करैया सुख ढारके ढरैया गुनलोसों लह लहे हैं;

रूपके रीझैया सबनैके समुझैया सबहीके लघुभैया सबके कुबोल सहे हैं; वामके व मैया दुखदामके रमैया ऐसे रामके समैया नर ज्ञानी जीव कहे हैं ॥ ४२ ॥

अर्थः—धीरजने धरनार, संसार सागरने तरनार, भवभीडने हरनार, मोटा शूर वीरनी परे पोताने साह्य आपवाने उमंगी रह्याछे, कंदर्पने मारनार, भला विचारना करनार, सुख समाधिना ढालामां ढलनार, आत्माना गुणनो लव एटले अंश तेमां ल हलहि रह्या छे, आत्मरूपना रीझवनार, सर्व नयना सारनो रस समझनार, निरहं कारी पणे सर्वेना नाना भाई जे थई रह्याछे; क्षमावंतपणे सर्वेनां दुष्ट वचन जे सहेछे; वाम के० स्त्रीने वमैया के० छोडनार, दुःखनी परंपराना दमनार, एवा आत्मारामने विषे रमनारा मनुष्यने ज्ञानी जीव कहीये ॥ ४२ ॥

हवे शुद्धात्मना अनुभवनी प्रशंसा करेछेः—अथ शुद्धात्म अनुभव प्रशंसाः—

॥चौपाईः॥—जे समकिती जीव समचेती; तिन्हिकी कथा कहों तुमसेती; जहां प्रमाद क्रिया नहि कोई; निर्विकल्प अनुभौ पद सोई. ॥ ४३ ॥ परग्रिह त्याग जोग थिर तीनो; करम बंध नहि होइ नवीनो; जहां न राग दोष रस मोहे; प्रगट मोषमारग मुख सोहे. ॥ ४४ ॥ पूरव बंध उदे नहि व्यापे, जहां न भेद पुन्न अरु पापे; दरब भाव गुन निर्मल धारा, बोधविधान विविध विस्तारा. ॥ ४५ ॥ जिन्हिके सहज अ वस्था ऐसी; तिन्हिके हिरदे दुविधा केसी; जे मुनिषिपक श्रेणिचढी धाये; ते केवलि भगवान कहाये. ॥ ४६ ॥ दोहराः—इहिविधि जे पूरन भये, अष्ट करम वनदाहि; ति न्हिकी महिमा जो लखे, नमे बनारसि ताहि. ॥ ४७ ॥

अर्थः— जे समकिती जीव छे ते समचेती के० वीतरागपणे समतावंत छे अहो! भव्य प्राणी! तेनी कथा हुं तमने कहुछुं. ज्यां कोई प्रमादनी क्रिया नथी, तेने नि र्विकार निर्विकल्प अनुभव पद कहीये, एटले अनुभवमां विकल्प नथी. ॥ ४३ ॥ ज्यां परिग्रहनो त्याग छे, अने त्रणे जोग स्थिर छे, त्यां नवीन कर्मनो बंध नथी थतो; वली ज्यां जीवने राग द्वेष रस मोह नथी, तेज प्रगटपणे मोक्ष मार्गनुं मुख के० प्रारंभ छे. ॥ ४४ ॥ वली ज्यां पूर्वे जे कर्मबंध छे, तेनो उदय नथी, अने ज्यां पुण्य पापना भेदनो विचार नथी, अने ज्यां साधुना सतावीस गुण द्रव्यपणे भाव पणे निर्मल धाराये वही रह्या छे, वली ज्यां बोधविधान के० ज्ञानना प्रकार भात भातना विस्तारमां छे. ॥ ४५ ॥ जेनी एवी सहज अवस्था थई होय तेना हृदयमां आत्म उलखवानी दुविधा केम रहे? अने एज अवस्थामां जे मुनिराज क्षपक श्रेणि चढी ऊर्ध्व मुख धाये तेतो केवली भगवंत जाणवा. ॥ ४६ ॥ ए रीते करी अष्ट कर्म रूप वनने बालीने पूर्ण आत्मारूपमां जे थायछे अने जेना महिमाने जे सत् पुरुष

होय तेहिज जुएछे, एटले सत्य पणे जाणेछे, तेने वारणसीदास नमस्कार करेछे ॥४७॥

हवे मोक्ष पदार्थनी उत्पत्तिनो क्रम कहेछेः—अथ मोक्ष उत्पत्ति वर्णनं:॥—

॥ छप्पय छंदः—नयो शुद्ध अंकूर, गयो मिथ्यात् मूर नशि; क्रमक्रम होत उदोत, सहज जिम शुक्लपक्ष शशि; केवल रूप प्रकासि, नासि सुख रासि धरम ध्रुव; करि पूर न थिति आउ, त्यागि गतनाव परम हुव; इह विधि अनन्य प्रनुता धरत, प्रगटी बूंद सागर नयो; अविचल अखंड अननय अखय, जीव दरव जगमहि जयो. ॥ ४८ ॥

अर्थः—शुद्धतानो अंकुर प्रगट थतां मिथ्यात मूलथी नाश पाम्युं, तेवारे जेम अजवालीया पखवाडीयामां चंद्रमां क्रमे क्रमे ज्योतवंत थायछे, एरीते आत्मापण क्रमे क्रमे ज्योत थतां केवल ज्ञान रूपनो प्रकाश थाय, अने आत्मानो निश्चल ध्रुव धर्म सुख समुह ते नासे, ते पछी आयुष्य कर्मनी स्थिति पूर्ण करीने अने मनुष्य गतिनो नाव छोडीने परमात्मारूपे थाय, एरीते अनन्य प्रनुता एटले सर्वथी श्रेष्टता धारण करे. कोनी पेठे ? तो के जेम पाणीनी बुंद बुंद एकठी मली समुद्र थायछे तेम आत्मा गुणना अंश क्रमे क्रमे प्रगट करतो पूर्ण थयो, ते पछी अविचल, अखंड, अनय ने अक्षय एवुं जीव द्रव्य जगत्नेविषे सदा जयवंत थायछे. ॥ ४८ ॥

हवे अष्ट कर्मनो नाश थयेथी जे आत्मामां सहज आठ गुण प्रगट थायछे ते कहेछेः—अथ अष्ट कर्म नाशते अष्ट गुन प्रकाश वर्णनं:—

॥ सवैया इकतीसाः॥— ज्ञानावरनीके गये जानिये जु है सु सव, दंसनावरनके गयेते सब देखिये; वेदनी करमके गयेते निरावाध रस, मोहनीके गये शुद्ध चारित विसेखिये, आउकर्मगये अवगाहनअटल होइ, नामकरमगये ते अमूर्त्तिक पेखिये; अगुरुअलघुरूप होई गोत कर्म गये, अंतराय गयेते अनंत वल लेखिये. ॥ ४९ ॥

अर्थः— ज्ञानावरणीय कर्म नाश थता लोकालोकमां जे वस्तु छे, ते सर्व जणाय, एटले केवल ज्ञान प्रकाश थाय; अने दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थवाथी लोकालोकना नावने सामान्यपणे जोईये, एटले केवल दर्शनगुण प्रगट थाय, अने वेदनीय कर्मना क्षयथी निरावाध रस उपजे एटले आत्मा वाधपणाथी मुक्त थाय, ते अवाधपणे अनंत सुखरूप गुण उपजे; वली मोहनीय कर्मनो नाश थयेथी विशेषपणपणे शुद्ध चारित्र प्रगट थाय, एटले यथाख्यात चारित्र स्पष्ट गुण होय; आयु कर्मनाश थयेथी अवगाहनानी सादि अनंत स्थिति थाय (आयुकर्मगते निश्चला स्थितिर्नवति); नाम कर्म नाश थयेथी अमूर्त्तिकपणुं जीवनुं शुद्ध स्वरूप उपजे; गोत्र कर्मनो क्षय थयेथी अगुरुलघु गुण उपजे, जेथी जीवमां लघुपणु तथा गुरुपणु न होय; अने अं

तराय कर्मनो नाश थयेथी अनंत बल उपजे, एटले अनंत वीर्यपणानो गुण उपजे छे. ए आठ गुण उपजे. ॥ ४९ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालबोधरूप नवमो मोक्ष द्वार समाप्तः ॥

॥दोहराः॥–इति श्रि नाटिक ग्रथमें, कह्यो मोक्ष अधिकार; अब वरनों संक्षेपसों, सरव विशुद्धीद्वार. ॥ ५० ॥

अर्थः– इति के० संपूर्ण नाटक समयसारविषे मोक्ष द्वारनो अर्थ कह्यो ने हवे दशमुं संक्षेपथी सर्व विशुद्धि द्वारनुं वर्णन करुं छु ॥ ५० ॥

हवे अंही सर्वउपाधि रहित शुद्ध आत्म स्वरूपनुं वर्णन करे छेः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–करमको करता है भोगनिको भोगता है, जाकी प्रभुतामें ऐसो कथन अहित है; जामें एक इंद्रियादि पंचधा कथन नांहि, सदा निरदोष बंध मोक्षसों रहित है; ज्ञानको समूह ज्ञान गम्य है सुभाउ जाको, लोक व्यापी लोकातीत लोकमें महित है; शुद्ध वंस शुद्ध चेतनाके रस अंश भर्यो, ऐसो हंस परम पुनीतता सहित है ॥ ५१ ॥ दोहराः–जो निहचे निरमल सदा, आदि मध्य अरु अंत; सो चिद्रूप बनारसी, जगतमांहि जयवंत ॥ ५२ ॥

अर्थः– कर्मनुं कर्त्तापणुं अने सुखदुःखनुं भोक्तापणु एवुं जे लोक व्यवहारमां केहेवाय छे, ते जेनी प्रभुतामां ईश्वरताई छे, तेमां अहितकारी छेः वली जेनी प्रभुतामां एकेंद्रिय प्रमुख पांच भेदनुं केहेवुं ते पण अहितकारी छे, सत्य नथी. केमके जे सदा निर्दोष छे, तेना निश्चय स्वभावमां बंध नथी, अने मोक्ष पण नथी, एवो जे बंध मोक्ष रहित छे. त्यारे ए द्रव्य शुं छे, एवो प्रश्न उठे तेनो खुलासो करे छे के, ए ज्ञाननो समूह जे पुंज ते रूप छे. जेनो स्वभाव ज्ञान गम्य छे, ज्ञान वडे जाणवामां आवे एवो छे, लोकमां सघले स्थले व्यापी रह्यो छे, लोकातीत के० क्षेत्र लोकथी जुदो छे, ने लोकमां महित के० पूजनीक उपादेय छे, अनादि कालनो एवोज चाल्यो आवेछे तेथी जेनो शुद्ध अवतंश छे अने शुद्ध चेतनाना रस प्रदेशथी भरपूर छे, एवा जे हंस छे ते परम पुनीतता सहित एटले उत्कृष्ट शुद्धता सहित छे ॥५१॥ जे निश्चय स्वरूपमां सदा निर्मल छे, आदि मध्यने अंत्य अवस्थाने विषे एक रूप छे, ने तेज चिद्रूप छे. तेनी बणारसी स्तुति करेछे के एवा भगवान जगत्मां जयवंत थाओ. ॥ ५२ ॥

हवे जीवनुं अभोक्ता पणुने अकर्त्ता पणु ठरावे छेः– अथ जीव अकर्त्ता वर्णनंः–

॥ चोपाईः ॥–जीव करम करता नहि ऐसो; रस भोगता सुभाउ न जैसो; मिथ्याम तिसों करता होई; गये अज्ञान अकरता सोई ॥ ५३ ॥

अर्थः–जेम जीवने कर्मनो कर्त्ता न कहिये तेम रसनो भोक्ता पण न कहिये; जीव

ज्यांसुधी मिथ्यामति वालो छे, त्यांसुधी तो कर्त्तापणुं केहेवतमां साचो छे. पण ज्यारे ए अज्ञान जायछे, त्यारे जीव अकर्त्तापणे छे एवुं स्पष्ट जणाय छे. ॥ ५३ ॥

हवे आत्माना शुद्ध स्वभाव तथा विभावनुं वर्णनः— अथ स्वभाव विभाव वर्णनं:—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— निहचे निहारत सुभाउ जाहि आतमाको, आतमीक धरम परम परगासना; अतीत अनागत वरतमान काल जांको, केवल सरूप गुन लोकालोक भासना; सोई जीव संसार अवस्थामांहि करमको, करतासो दीसे लिये भरम उपासना; यहे महा मोहके पसार यहे मिथ्याचार, यहे भौ विकार यहे व्यवहार वासना ॥ ५४ ॥

अर्थः— निश्चय दृष्टिए जोतां जे आत्मानो आत्मिक धर्म परम प्रकाशरूप सदा स्वभाव छे. एटले निश्चयनयथी अतीत, अनागत तथा वर्त्तमान कालमां लोकालोक भासनानो करनार केवल स्वरूप गुण छे. तेज आत्मा संसार अवस्थानेविषे भ्रम उपासनावडे एटले मिथ्यात्व-अज्ञाननी सेवाने लीधे कर्मना कर्त्तानी पेठे देखाय छे, एम मिथ्यात्वनी सेवामां जे रेहेवुं ते मोहनो पसार छे, एज मिथ्याचार छे; जीवने भव भ्रमणनो एज विकार छे. तथा एज व्यवहार वासना छे ॥ ५४ ॥

हवे जीवनी अभोक्ता अवस्थानुं वर्णन करेछेः— अथ जीव अभोक्ता वर्णनं:—

॥ चोपाईः ॥— तथा जीव करता न कहावै; तथा भोगता नाउ न पावै; है भोगी मिथ्यामति मांही; मिथ्यामती गयेतें ते नाही. ॥ ५५ ॥

अर्थः— जेम जीव कर्त्ता नथी तेम भोक्ता पण नथी, मात्र मिथ्यात्वमां कर्त्ता जीव छे, ने भोक्ता पण जीव छे, पण मिथ्यात्व नाश थाय त्यारे जीव कर्त्ता अने भोक्ता नाम धरावतो नथी. ॥ ५६ ॥

हवे नय स्वरूपमां भोक्ता अभोक्ता पणानां लक्षण बतावेछेः—

अथ भोगतापना अभोगतापनाको लक्षणः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जगवासी अज्ञानी त्रिकाल परजाय बुद्धी, सोतो विषे भोग निको भोगता कहायो है; समकिती जीव जोग भोगसों उदासी तातें, सहज अभोगता गरंथनिमे गायो है; याही भाति वस्तुकी व्यवस्था अवधारे बुध, परभाउ त्यागि अपनो सुभाउ आयो है; निरविकलप निरुपाधि आतमा अराधि, साधि जोग जुगति समाधिमें समायो है. ॥ ५६ ॥

अर्थः— जगत्‌वासी जे अज्ञानी छे, त्रणे कालविषे पर्याय बुद्धि छे, एटले द्रव्यबुद्धि नथी, ने हुं सुखी, हुं दुःखी एवी पर्याय बुद्धि करेछे, पण भिन्नपणे शुद्ध आतम द्रव्यने नही जाणे, एवो अज्ञानी जीव तो विषय भोगनो भोक्ता केहेवायछे, अने सम

किती जीव मनवचन ने कायाना योगथी तथा विषय जोगथी उदासीपणे रहेछे अने शुद्ध आत्म द्रव्यना अनुजवमां मग्न छे, तेथी समकितीने शास्त्रमां सहज अजोक्ता पणे गायलो छे, एरीते पंमित छे ते वस्तुनी व्यवस्था अवधारीने एटले वस्तुनो स्व जाव विचारीने परजावने त्यागीने पोताना सहज स्वजावमां आवे छे, तेथी सुखी दुःखी इत्यादि विकल्पविना, कर्म संयोगरूप उपाधिविना, एवा आत्माने आराधीने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जोगनी जुगति साधी समाधि एटले सहज स्वरूपमां समायछे.

हवे अजोक्ता जीवनी अवस्थानुं वर्णन करेछेः— अथ जीव अजोक्ता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— चिनमुद्रा धारी ध्रुव धर्म अधिकारी गुन, रतन जंडारि अप हारी कर्म रोगको; प्यारो पंमितनिको हुस्यारो मोख मारगमें, न्यारो पुदगलसों उजियारो उपयोगको; जाने निजपर तत्त रहे जगमें विरत्त, गहे न ममत्त मन वच काय जोगको; ता कारन ज्ञानी ज्ञानावरनादि करमको, करता न होइ जोगता न होइ जोगको. ॥ ५७ ॥ दोहराः॥— निरजिलाप करनी करे, जोग अरुचि घट मांहि; तातें साधक सिद्ध सम करता जुगता नांहि. ॥ ५८ ॥

अर्थः— चेतना चिन्हनो धरनार, निश्चल स्वजाव ज्ञातापणुं तेनो अधिकारी, ज्ञानादिक गुणरूप रत्नना जंडारनो जंमारी छे, कर्मरूप रोगनो विनाश करनार, पंमितनो प्यारो एटले तत्त्व ज्ञानीने वल्लज, मोक्षमार्गमां हुशीयार के० सावधान, पौद्गलिक धर्मथी जुदो रेहेनार, मतिश्रुत प्रमुख उपयोगनुं अजवालुं जेना हृदयमां थयुंछे, पोतानां अने पारकां सर्व तत्त्वनो जाणनार, जगतमां विरक्तपणे रेहेनार, एटले वैरागी, मन वचन ने कायाना योगनी ममता नही राखनार माटे ज्ञानी जीव ज्ञानावरणीय प्रमुख कर्मनो कर्त्ता पण नथी, अने दुःख सुखना जोगनो जोक्तापण नथी. ॥ ५७ ॥ इछा विना क्रिया करवी, अने घटपिंममां जोगनी रुचि नही राखवी, तेथी मुक्तिनो साधक पुरुष सिद्ध समान कह्यो, अने ते कर्त्ता तथा जोक्ता नथी. ॥ ५८ ॥

हवे अहंबुद्धि थकी कर्त्तापणु थायछे ते कहेछेः— अथ अहंबुद्धि वर्णनंः—

॥ कवित्तछंदः ॥— ज्यों हिय अंध विकल मिथ्यात धर मृषा सकल विकलप उपजावत; गहि एकंत पछ आतमको, करता मानि अधोमुख धावत; त्यों जिनमती दरव चारित कर, करनी करि करतार कहावत; वंछित मुक्ति तथापि मूढमति, विनु समकीत जवपार न पावत. ॥ ५९ ॥ चोपाईः॥— चेतन अंक जीव लखि लीन्हा, पुद्गल करम अचेतन चीन्हा; वासी एक खेतके दोऊ; यदपि तथापि मिले नहि कोऊ.॥६०॥

॥ दोहराः ॥— निजनिज जाउ क्रिया सहित, व्यापक व्यापि न कोइ; करता पुद्गल करमको, जीव कहांसों होइ. ॥ ६१ ॥

अर्थः–जेम कोइ हृदय अंधपुरुष विकल मिथ्यात्वधारीने हैयामां विकल्प उपजावे, ते सर्व जुठा छे, ते क्रियावादीनो एकांत पक्ष ग्रहीने आत्माने कर्त्ता मानीने अधोमुख के० नीची गतिने पकडी रह्योछे, एवो जे जिनमती छे ते भाव चारित्रविना अने द्रव्य चारित्रयुक्त करणी करेछे, ने क्रिया करण एटले शुभ क्रियानो कर्त्ता पोते केहेवायछे, ते मुक्तिने वांछे तोपण मूढमतिछे; भवनो पार समकित विना पामतो नथी. ॥ ५९ ॥ अने जीवनो अंक के० चिन्ह चेतना जाणवी; अने पुद्गल तथा कर्म ए वे उने जड जाणवां. चेतन अने अचेतन वेउ एक क्षेत्रावगाहीछे एटले एक क्षेत्रवासी छे, तथापि कोई कोईथी मले एवां नथी. ॥ ६० ॥ जे पदार्थ छे ते पोतपोताना भावनी क्रिया सहित रहे छे; जेमां व्यापी रहे ते वस्तुने व्याप्य कहीये अने व्यापी रहेनार पदार्थने व्यापक कहीये तेथी पुद्गल व्याप्यमां जीवनुं व्यापकपणुं नथी, माटे पौद्गलिक कर्मनो कर्त्ता जीव क्यांथी थाय अर्थात् न ज थाय. ॥ ६१ ॥

हवे व्यवहारमां जे रीते जीवनुं कर्त्तापणुं ठरेछे ते जणावेछेः–अथ कर्त्ता कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः– जीव अरु पुद्गल करम रहे एक खेत, जद्यपि तथापि सत्ता न्यारी न्यारी कही है; लछन सरूप गुन परजे प्रकृति भेद, दुहूमें अनादिहीकी दुविधा व्हैरही है; एते परि भिन्नता न भासे जीव करमकी, जौलों मिथ्या भाउ तोलों ऑंधी वाउ वही है; ज्ञानके उदोत होत ऐसी सूधी दृष्टि भई, जीव कर्म पिंडको अकरतार सही है. ॥ ६२ ॥ दोहराः॥– एक वस्तु जेसी जु है, तासों मिले न आन, जीव अकर्त्ता करमको, यह अनुभौ परवान. ॥ ६३ ॥

अर्थः– जेम आकाश प्रदेशमां पुद्गल कर्म अवगाहि रहे छे; तेज आकाश प्रदेशमां जीव प्रदेश पण अवगाहि रहे छे. एम जीव अने पुद्गल एक क्षेत्रना वासी छे, तथापि चेतननी सत्ता अने जडनी सत्ता ए वे जुदी छे. अनादि कालनी लक्षण भेदवडे, स्वरूप भेदवडे, गुणपर्यायवडे ने प्रकृति भेदवडे ए वेउनेविषे द्विविधता चाली आवेछे, तेम छतां लक्षण प्रमुखनी भिन्नता मिथ्यात्व भावने लीधे जीव अने कर्मनी ज्यां सुधी भासे नही, त्यां सुधी अंधोवायु वहे छे एटले जीवने कर्त्ता मानीये छैये. अने ज्ञाननो उद्योत थवाथी सम्यक्त्वनी एवी शुद्धता थई के तेथी कर्म पिंडनो अकर्त्ता जीव सही थयो छे, एम जाणवुं ॥६२॥ जे वस्तु जेवीरीते छे ते साथे आनके० बीजा स्वरूप वाली वस्तु मलती नथी; एकमेक थती नथी; एथी जीव कर्मनो अकर्त्ता छे. ए अर्थ अनुभव प्रमाणथी समजाय छे ॥ ६३ ॥

हवे मूढ जीव कर्मनो कर्त्ता मानी लेय छे ते कहे छेः– अथ मूढकर्त्तायहकथनंः–

॥ चोपाईः ॥– जेदुरमती विकल अज्ञानी; जिन्हि सुरीति पररीति न जानी; मा

या मगन भरमके भरता; ते जिव भाव करमके करता ॥ ६४ ॥ दोहराः॥–जे मिथ्या मति तिमरसों, लखे न जीव अजीव; तेई भावित करमके, करता होइ सदीव ।६।५॥ जे अशुद्ध परिनति धरे, करे अहं परमान; ते अशुद्ध परिनाम के, करता होइ अजान॥

अर्थः–जे जीव दुष्ट बुद्धिवडे विकल छे, अज्ञानी छे, जे पोतानी ने पारकी रीत जाणता नथी, माया जालमां मग्न छे, भ्रमनाभरता के० धणी छे, ते जीव भाव कर्मना करनारा छे ॥ ६४ ॥ जे जीव मिथ्यामति अंधकारथी जीव अजीवने भिन्न पणे जाणता नथी, ते जीव सदाकाल भावित कर्मना कर्त्ता छे, एटले पोतपोताना कर्मनो जे स्वभाव तेनेज भावित कर्म कहिये ॥ ६५ ॥ जे जीव अशुद्ध परिणतिने धरेछे, सर्व क्रियामां अहंकार बुद्धिथी अहं कर्त्ता एवुं प्रमाण करछे, ते जीव अजाण थका अशुद्ध परिणामना कर्त्ता थायछे ॥ ६६ ॥

अथ शिष्य प्रश्नः–

॥ दोहराः ॥– शिष्य कहैं प्रभु तुह्म कह्यो, दुविध करमको रूप; दर्व कर्म पुद्गल मई, भाव कर्म चिद्रूप ॥ ६७ ॥ करता दरवित करमको, जीव न होइ त्रिकाल: अब इह भावित करम तुम, कहो कौनकी चाल ॥ ६८ ॥ करता याको कौन है, कौन करै फल भोग; के पुदगल के आतमा, के दुहुको संयोग ॥ ६९ ॥

अर्थः– हवे शिष्य प्रश्न पुछे छे के, हे प्रभु ! तमे कह्युं छे के,कर्मनुं स्वरूप बे प्रकारनुं छे; एकतो पुद्गलमय ते पुद्गल पिंडरूप द्रव्य कर्म छे, अने बीजुं भाव कर्म छे ते चिद्रूप के० चेतनाविकार रूप छेः ॥ ६७ ॥ वली स्वामी तमे एवुं कह्युं के द्रव्य कर्मनो करनार जीव त्रणे कालमां नथी, त्यारे भावित कर्म तमे कोनी चाल कहो छो? ॥ ६८ ॥ ए भावित कर्मनो कर्त्ता कोण छे, ने एना कर्म फलनो भोक्ता कोण छे ? पुद्गल कर्त्ता भोक्ताछे? के आत्मा कर्त्ता, भोक्ता छे? किंवा पुद्गल अने आत्मा ए बेहुनो संयोग कर्त्ता भोक्ता छे? ॥ ६९ ॥

हवे आ प्रश्ननो गुरु उत्तर आपेछेः– अथ गुरु उत्तर कथनंः–

॥ दोहराः ॥– क्रिया एक करता जुगल, यों न जिनागम मांहि; अथवा करनी औरकी, और करै यों नाहि ॥ ७० ॥ करे और फल भोगवे, और बने नहि एम; जो करतासो भोगता, यहे यथावत जेम ॥ ७१ ॥ भाव कर्म कर्त्तव्यता, स्वयं सिद्ध नहि होइ; जो जगकी करनी करे, जग वासी जिय सोइ ॥ ७२ ॥ जिय करता जिय भोगता, भाव कर्म जिय चालि; पुदगल करे न भोगवे, दुविधा मिथ्या जालि ॥ ७३ ॥ तातें भावित करमकों, करे मिथ्याती जीव; सुख दुख आपद संपदा, भुंजे सहजसदीव ॥ ७४ ॥

अर्थः– क्रिया करणी एक होय अने तेना करनारा जुगल केः वे एवी वात जिनेश्वरना आगममां नथी कही, तेम पुद्गल अने जीव ए वेउ एक क्रिया करे नही अथवा वीजानी क्रिया छे अने करनार वली वीजोज छे, एवुं पण छे नही, एटले पुद्गलनी क्रिया जीव न करे अने जीवनी क्रिया पुद्गल न करे ॥ ७० ॥ ए रीते करे एक अने तेनुं फल जोगवनार वीजोज होय एवुं वने नही, एवुं जिनेश्वरना आगममां नथी कह्युं, एटले पुद्गलनी क्रियानुं फल जीव जोगवे नही; केमके जे कर्त्ता तेहिज जोक्ता; जे कर्म करे तेज फल जोगवे ए वात केहेवत प्रमाणे खरी छे. ॥७१॥

जाव कर्मनी कर्त्तव्यता केः क्रिया तेतो स्वयं सिद्ध न थाय; एटले जाव कर्म पोतानी मेले सिद्ध नही थाय. तेथी एवुं ठरे छे के जे जगत्‌नी क्रिया करे ते जाव कर्मनो कर्त्ता छे; एटले गमनागमन क्रिया करे तेज जाव कर्मनो कर्त्ता जगत् वासी जीव छे ॥ ७२ ॥ जीव ज कर्त्ता अने जीवज जोक्ता छे, जीवनी चल विचलताथी जाव कर्म उपजे छे, एथी जावित कर्म जीवनी चाल छे. ए जावित कर्मने पुद्गल करे नही, तेम जोगवे पण नही, एमां जे अद्वैत मतवाला द्विधा राखे छे; ते मिथ्या जाल छे ॥ ७३ ॥ तेमाटे जे मिथ्यात्वी जीव छे, ते जावित कर्मने करे छे. तेणे करी सुख दुःख आपदा संपदा सदा सहजे जोगवे छे ॥ ७४ ॥

हवे एकांत वादिसांख्यमतना वचननुं वर्णन करे छेः–अथ एकांत वादी वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोई मूढ विकल एकंत पछ गहे कहे आतमा अकरतार पूरन परम है; तिन्हसो जु कोउकहे जीउ करता है तासो, फेरी कहे करमको करता करम है; ऐसे मिथ्यामगन मिथ्याती ब्रह्म घाती जीव, जिन्हेके हिये अनादि मोहको जरम है; तिन्हको मिथ्यात दूरि करिवेको कहे गुरु स्यादवाद परवान आतम धरम है ॥ ७५ ॥

अर्थः– कोई मोह मूढ जीव ज्ञानवडे विकल एकांत पक्ष ग्रहीने एम कहे छे के, आत्मा अकर्त्ता छे, परम पूर्ण छे, ते एकांत वादीने कोई एवुं कहे के, आत्मा कर्त्ता छे, तेने सांख्यमति प्रमुख एकांत वादी कहे छे के, कर्मनो कर्त्ता कर्मज छे. एवा मिथ्यात्वमां मग्न मिथ्यात्व जीव ब्रह्म घाती छे. तेमना हैयामां अनादि कालथी मोह कर्म लाग्युं रहे छे, ते मिथ्यात्वी जीवनुं मिथ्यात दूर करवाने स्याद्वाद रूप जे आत्म धर्म छे, ते धर्मज वधी रीत प्रमाण करी कहे छे ॥ ७५ ॥

हवे जेम स्याद्वाद वस्तु स्वरूप छे तेम कहे छेः–अथ स्याद्वाद कथनंः–

॥ दोहाः ॥– चेतन करता जोगता, मिथ्या मगन अजान; नहि करता नहि जोगता, निहचे सम्यकवान ॥ ७६ ॥ सवैया इकतीसा॥ः– जैसे सांख्यमति कहे अलख

अकरता है सर्वथा प्रकार करता न होइ कब ही; तैसे जिनमति गुरु मुख एक पक्ष सुनि, याही जांति मानै सो एकंत तजो अबही, जोलों दुरमति तौलो करमको करता है, सुमती सदा अकरतार कह्यो सब ही; जाके घट ज्ञायक सुजाउ जग्यो जब ही सो, सोतो जग जालसो निरालो जयो तबही ॥ ७७ ॥

अर्थः– मिथ्यात्वमां मग्न अजाण थको चेतन कर्त्ता छे. अने जोगता पण छे अने समकिति जीव निश्चयथी कर्त्ता पण नथी अने जोक्ता पण नथी ॥ ७६ ॥

जेम सांख्यमति पोताना मतमां एवी प्ररूपणा करेछे के, जे अलक्षरूप छे ते सर्वथा अकर्त्ता छे, पण क्यारे कर्त्ता थतो नथी, अने सत्व रज तम गुण प्रकृति कर्त्ता छे, एरीते जे सांख्यमतिवाला कहे छे, तेम कोई जिनमती पण कोई गुरुना मुखथी निश्चय नयनो एक पक्ष सांजलीने एमज माने, एटले जीवने अकर्त्ता माने छे. पणश्री जिनेश्वरना मतमां स्याद्वाद पक्ष छे. ते एवो ठराव छे के ज्यां सुधी दुष्ट बुद्धि मिथ्यामती अहं बुद्धिमां छे, त्यां सुधी जीव कर्मनो कर्त्ता छे; अने सुमति आवेथी सदा अकर्त्ता छे, जेवो छे तेवोज अकर्त्ता कह्यो, जेना घटमां पोतानो ज्ञायक स्वजाव ज्यारे जाग्यो ते वखतथीज ते जगजालथी निरालो थइ, तेणे अर्ध पुजल परावर्तमां संसार लावी मुक्यो ॥ ७७ ॥

हवे एकांत वादी बौधमतीनि बुद्धिनुं वर्णन करेछेः–अथ बौध मति वर्णनं

॥ दोहरा ॥– बोध छिनय वादी कहे, छिनु जंगुर तनुमांहि; प्रथम समे जो जीव है, दुतिय समे सो नांहि ॥ ७७ ॥ ताते मेरे मतविषे, करे करमजो कोइ; सो न जोगवे सरवथा, और जोगता होइ ॥ ७ए ॥

अर्थः–बौध क्षणिक वादी छे, ते एवुं कहे छे के शरीरमां रेहेनारो जे पदार्थ छे ते क्षणजंगुर छे एटले प्रथम समयमां जे जीव पदार्थ शरीरने विषे छे, ते बीजा समयमां न पामिये, एथी सर्व क्षणजंगुर छे ॥ ७७ ॥ वली बौध कहे छे के मारा मनमां एवी श्रद्धा ठरी छे, के जे कोई कर्म करेछे, ते तो कर्मना फलनो जोक्ता नथी. क्षणजंगुर पणाने लीधे बीजोज जोक्ता थाय छे ॥ ७ए ॥

हवे एकांत वादी बौधमतीना खंमननो उपदेश करेछेः–अथ बौध मतखंमन उपदेशः–

॥ दोहरा ॥–यह एकंत मिथ्यात पष, दूरि करनके काज; चिद विलास अविचल कथा, जाषै श्री जिनराज ॥ ७० ॥ वालायन काहू पुरुष देख्यो पुर कइ कोइ; तरुन जये फिरिके लख्यो, कहे नगर यह सोइ. ॥ ७१ ॥ जो दुहु पनमे एक थो, तो तिन्हि सुमिरन कीय; और पुरुषको अनुजव्यो, और न जाने जीय. ॥७२॥ जबयह वचन प्रगट सुन्यो, सुन्यो जैनमत शुद्ध; तब इकांत वादी पुरुष, जैन जयो प्रति बुद्ध ॥७३॥

अर्थः– ए जे एकांत क्षणभंगुरपणुं ते मिथ्यात्व पक्ष छे, तेने दूर करवाने चिद्विलास अविचल कथा के० जीवना अचल पदनी वात सामान्य केवलीना राजा श्री जिनेश्वर देव कहेछे. ॥ ७० ॥ कोईक पुरुषे बाल्यावस्थामां एक नगर दीठुं होय ने ते पछी ज्यारे जुवानीमां आव्यो त्यारे फरीथी तेज नगरने तेणे जोयुं त्यारे तेने रेहेतां रेहेतां स्मृति आवी के, आ नगर तो में बालपणामां जोयुं हतुं तेज छे. ॥७१॥ हवे अही जीवना अचलपणानो संभव देखाडेछेः–के, बेहु कालमां जो ते एकज हतो ते वारे ते पुरुषे बालपणामां ते नगर जोयुं हतुं त्यारे तेने जुवानीमां तेनुं स्मरण थयुं ए वात सत्य छे. एटले बने वखतमां नगर तेज खरुं छे, तेम एक पुरुषनो अनुभव के० भोगवेलुं कार्य तेने बीजो पुरुष जाणी शके नही. ॥ ७२ ॥ ज्यारे आ वात प्रगट सांभली अने जैनना शुद्ध मतनी वात सांभली त्यारे एकांतवादी पुरुषे प्रतिबोध पामीने जैनमत ग्रहण कीधो अने बौधमतने छोडी दीधो. ॥ ७३ ॥

हवे बौधमतीना क्षणभंगुरपणामां सद्दहणा केम थई ते कहे छेः–

अथ बौध मतीकी सद्दहना कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– एक परजाय एक समैमे विनसि जाइ, दूजी परजाय दूजे समै उपजति है; ताकी छल पकरिके बोध कहे समै समै, नवो जीव उपजे पुरातनकी षति है; ताते माने करमको करता है और जीव, भोगता है और वाके हिय ऐसी मति है; परजै प्रवानको सरवथा दरव जाने, ऐसे दुरबुद्धिकों अवश्य दुरगति है ॥७४॥

अर्थः– हरकोई द्रव्यनो एक समयमां जे एक पर्याय छे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वने लीधे अवस्था भेद छे, तेतो पर्याय ते समदमांज विनाश पामे छे, अने बीजा समयमां बीजो पर्याय उपजे छे, एवी जैननी वाणी छे. ते वातनेज बौध मतीवाला निश्चलपणे पकडी राखीने कहे छे के, समय समय नवो नवो जीव उपजे छे, अने पाछला जुना जीवनी हाणी थायछे; वली आम मानेछे के कर्मनो कर्त्ता कोई बीजो जीवछे अने कर्मनो भोक्ता कोई बीजोज जीव छे. एम बौधमति कहेछे; द्रव्यना पर्यायतो समयमां फरे छे, तेने बौधमति पर्याय प्रमाणने सर्वथा प्रकारे द्रव्यज जाणे छे. एवा दुर्बुद्धिने अवश्य दुर्गतिज प्राप्त थाय छे. ॥ ७४ ॥

हवे दुर्बुद्धि अने दुर्गतिनु लक्षण कहे छेः–अथ दुर्गति स्थिति लक्षणः–

॥ दोहराः ॥–दुर्बुद्धी मिथ्यामती, दुर्गति मिथ्या चाल; गहि एकंत दुर्बुद्धिसों, मुगति न होइ त्रिकाल ॥ ७५ ॥ कहै अनातमकी कथा, चहै न आतम शुद्धि, रहै अध्यातमसों विमुख, दुराराधि दुर्बुद्धि ॥ ७६ ॥सवैया इकतीसाः ॥–कायासें विचारि

प्रीति मायाहिसे हारि जीति, लिये हठरीति जैसे चरिलकी सकरी; चूंगुलके जोर जैसे गोह गहि रहै भूमि,त्योंहि पाई गाडेपेंन ठोडेटेक पकरी; मोहकी मरोरसों भर-मको न ठार पावे, धावै चिहु ओर ज्यों वढावै जाल मकरी; ऐसी दुर्बुद्धि भूलि फूठके झरोखे भूली, फूली फिरे ममता जंजीरनिसों जकरी. ॥ ७७ ॥ वात सुनि चौक उठे वातहिसों भौंकी उठे, वातसों नरम होइ वातहीं अकरी; निंदाकरे साधुकी प्रशंसा करे हिंसककी, साता माने प्रभुता असाता माने फकरी; मोख नं सुयाइ दोख देखै तहां पेठि जाई, कालसो डराई जैसे नाहरसों वकरी; एसी डुरबुद्धि भूलो जूठके झरोखे जूली, फुली फिरे ममता जंजीरनिसों जकरी ॥७७॥

अर्थः— मिथ्यामतिने डुर्बुद्धि कहिये, अने मिथ्या चालने डुर्गति कहिये, जे डुष्ट बुद्धि छे, ते एकांत मतीने ग्रहणेकरी रहेछे, तेने त्रणे कालमां मुक्ति न थाय. ॥७५॥ हवे डुर्बुद्धिनी व्यवस्था कहेछेः—जे आत्माथी भिन्न होय ते अनात्मा कहिये. तेअ नात्मानी कथा करे, आत्मानी शुद्धता न जाणे, अने जे आत्माने आश्रयी विचार छे तेने अध्यात्म कहिये, ते तेनाथी डुराराध्य के० डुखे समजायो जाय; तेनाथी डुर्बुद्धि जीव विमुख रहे छे ॥ ७६ ॥ डुर्बुद्धिनो विचार कहेछेः—कायासाथे प्रीति विचारे; हार जीत करी मायामां गही रहे; हठ पकडी रहे; जेम हारल पक्षी पोताना पगमां लाकडी पकडीज राखे छोडे नही. वली बीजो दृष्टांत एक छे; जेम कोई एक चोर चुंगली बंध देई करी गोहने मेहल अथवा हवेली उपर चढावे छे, ते बंधना जोरथी गोह भुमीने पकडी राखे, ने त्यां पोताना पग घटी राखे, पण जे टेक पकडी ते मूके नही, तेम मोह कर्मनी मरोड लागी तेथी भ्रमनो छेर पामे नही, एटले भ्रम छोडे नही. जेम मकडी जाल वधारती पसारती चारे तरफ दोडे छे, तेम चारे तरफ दोडती फरे, ए रीते डुर्बुद्धिये भूली जुठने झरुखे झुली रहेछे, ने ममतारूप डु र्बुद्धिना जंजीरनी वेडीने जकडी रह्यो छे, ॥ ७७ ॥

वली एवाने कोई अध्यात्मनी वात कहे त्यारे चोंकी उठे, ने भों भों करी उठे,कदा ग्रह करे अने पोताना मनने रुचती वातथी नरम थाय ने मनमानती वात न थाय तो प्रकृति अकारी करे, मोक्षमार्गना साधकनी निंदा करे, अने जे हिंसक अधर्म कहेछे, तेनी प्रशंसा करे, पोतानी मोटाईने साता सुख समजे असाताने फकीरी जाणे मोक्षनी वात सुहाय नही, ज्यां कोई दोष जुए त्यां चतुराईनुं अभिमान बतावे, अने मृत्युथी एवो डरे के, जेम नाहीरथी बकरी डरे, ए रीते डरतो रहे एम डुर्बुद्धि जीव भूल्यो फरेछे, ने जूठने झरुखे झुलतो ममतारूप बेडीमां बंधाई रह्यो छे. ॥ ७७ ॥

हवे एकांत पक्षीना मतनी स्थापनाउपर अनेकांत स्याद्वादी मतनी प्रशंसा करेछेः—

अथ अनेकांत श्लाघा कथनः—

॥ कवित्त छंदः ॥— केई कहै जीव छिन भंगुर, केई कहै करम करतार; केई कर्म रहित नित जंपहि, नय अनंत नाना परकार; जे एकंत गहै ते मूरख, पंडित अने कांत पखधार; जैसे भिन्न भिन्न मुगतागन, गुंनसों गहत कहावे हार. ॥ ८९ ॥

॥ दोहराः ॥— जथा सूतसंग्रहविना, मुक्तमाल नहि होइ; तथा स्याद्वादी विना, मोख न सधे कोई. ॥ ९० ॥

अर्थः— कोई बौध मती जेवा तो जीवने क्षणभंगुर कहे छे; कोई मिमांसक सरखा कर्मने कर्त्ता मानेछे; कोई सांख्यमती सरखा तो सदा जीवने कर्मरहित कहे छे. एरीते अनंत नय नाना प्रकार कहे छे, एमांथी जे एकांत पक्षज ग्रही रहेछे ते तो मूर्ख छे अने पंम्डित जन जे छे, ते अनेकांत पक्ष ग्रहेछे, जेम एक मालामां मोतीनो समुदाय आपणी आपणी सत्तामां सउ जुदा जुदा छे पण ते सुतरमां परोव्याथी सवेनुं एक हार नाम पडे छे, ॥ ८९ ॥ तेवो अनेकांत मत छे, केम के, सूतरना संगविना मोतीनी माला बने नही, तेम स्याद्वादमत धारण कीधा शिवाय मोक्षनो साधन हार थाय नही. ॥ ९० ॥

हवे मत भेदनुं कारण पांच नय छे तेनुं वर्णन करेछेः— अथ पंच नय वर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— पद सुभाउ पूरवउदे, निहचे उद्दिम काल; पक्षपात मिथ्यात पथ, सरवंगी सिव चाल. ॥ ९१ ॥

अर्थः— कोई पद वस्तु स्वभाव माने, कोई पूर्व कर्मनो उदय माने, कोई निश्चय माने, कोई उद्यम माने, अने कोई काल माने. एमां पक्षपात करी जे एकनेज माने ते मिथ्यात्व मार्ग कहेवाय. ॥ ९१ ॥

हवे जुदा जुदा मतनी व्यवस्था कहे छेः— अथ मतव्यवस्था कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— एक जीव वस्तुके अनेक रूप गुन नाम, निरजोग शुद्ध पर जोगसों अशुद्ध है; वेद पाठी ब्रह्म कहै मीमांसक कर्म कहै सिवमति शिव कहै बौध कहे बुद्ध है; जैनी कहे जिन, न्याय वादी करतार कहै, छहों दरसनमें वचनको विरुद्ध है; वस्तुको सरूप पहिचाने सोइ परवीन, वचनके भेद भेद माने सोई शुद्ध है ॥

अर्थः—जीव वस्तु एक अने तेना गुण अनेक छे, रूप अनेक छे, अने नाम अनेक छे, निरजोग छे एटले परसंयोग विना पोताना स्वभावमां रह्यो शुद्ध छे, अने परना संयोगथी अशुद्ध छे. वली वेद पाठी प्रभावे करी एने ब्रह्म कहेछे. मिमांसक जैमिनीय एने कर्म कहेछे; शिवमती एटले वैशेषिक एने शिव कहेछे, बौधमती एने

बुद्ध कहेछे, अने जैनी एने जिन कहेछे, न्यायवादी नैयायकादिक एने कर्त्ता कहेछे, एरीते छए दर्शनमां शुद्ध जीवने कहेवामां एकएकथी वचननो विरोध छे. ए छए द र्शनमां जे वस्तुनुं स्वरूप ओलखे तेज प्रवीण कहेवाय, अने वचनना भेद प्रमाणे सम भिरूढ नयनिमित्ते वस्तुमां भेद प्रवीण माने तेज शुद्ध वात छे ॥ ए२ ॥

हवे छए दर्शननामत स्थापन करे छेः— अथ. मतस्थापना कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—वेदपाठी ब्रह्म मानै निहचै स्वरूप गहै, मीमांसक कर्म मा ने उदैमें रहतु है; बौधमति बुद्ध मानै सूछम सुभाउ साधै, शिवमती शिवरूप कालकी हरतु है; न्याय ग्रंथके पढैया थापे करतार रूप, उद्दिम उदीरी उर आनंद लहतु है; पांचो दरसनी तेतो पोषे एकएक अंग, जैनी जिनपंथी सरवंगी नै गहतु है ॥ ए३ ॥

अर्थः—वेद पाठी के० वेदांती जीव वस्तुने ब्रह्म मानीने निश्चय स्वरूपने ग्रहेछे. ए टले एक अद्वैत मत धारेछे. मिमांसक के० यज्ञना करनार जीवने कर्मरूप मानेछे, तेथी उदयरूप थया जे संस्कार तेनुं ग्रहण करेछे. बौधमती जीवने बुद्धमानीने क्षणभंगुर पणाथी सूक्ष्म स्वभाव साधेछे, तेथी वस्तुना स्वभावनेज कर्त्ता मानेछे. शिवमती जे वै शेषिक ते जीवने कालरूप मानेछे, अने शिवने कर्त्ता मानेछे. न्याय ग्रंथना जाणनारा प्रमाणादिक सोल पदार्थने मानेछे, शुद्ध जीवनेज कर्त्ता मानीने उद्यमनी उदीरणामां चित्तने आनंद करी मग्न रहेछे, एम ए पांचे दर्शन वस्तु स्वभावादिक पांच नयना एक एक अंग पोषेछे, एटले एकांत पक्ष ग्रहेछे. अने जे जैन मार्ग केहेवाय छे, तेतो सर्वांगी सर्व नय ग्रहण करेछे ॥ ए३ ॥

हवे जे मत स्थापनामां जुदी जुदी बुद्धि कही ते सर्व एक छे, एवुं जणावेछेः—

अथ मत स्थापना एकत्वी कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— निहचै अभेद अंग उदै गुनकी तरंग, उद्यमकी रीति लिये उद्धता सकति है; परजायरूपको प्रवान सूछम सुभाउ, कालकीसी ढाल परि नाम चक्र गति है; याही भांति आतम दरबके अनेक अंग, एक माने एककों न माने सो कुमति है; टेक डारि एकमे अनेक खोजे सो सुबुद्धि, खोजी जीवे वादी मरे साची कहवति है ॥ ए४ ॥

अर्थः—सर्व जीवमां लक्षण भेद नथी एवुं निश्चय अंग ते साचो तरतम योगे गु णना तरंग उठी रह्या छे तेथी उदय अंग साचो छे, अने जीवनी उद्धत शक्ति छे. त्यां ते प्रवर्त्ते छे, तेथी उद्यम अंगवडे कर्त्तापणुं साचुं छे, अने पर्याय क्षण क्षणमा जुदा जुदा छे, तेनारूपनुं प्रमाण सूक्ष्म छे. तेथी बौध सूक्ष्म स्वभावने साधेछे, ते पण सांचु अने परिणामनी गति छे, ते फरता चक्रनी शक्ति छे, ते काल द्रव्यनी ढाल छे तेथी

ईहां कालने कर्त्ता कह्यो ते पण साचो छे, एरीते आत्मद्रव्यमां अनेक अंग पामीये पण एमांथी एकज अंग माने अथवा एक अंग न माने तेनुं नाम कुमति छे, जे एकांत पक्ष छोडीने एक वस्तुमां अनेक अंग खोजे तेनुं नाम सुबुद्धि कहीए जेम के खोजी जीवे ने वादी मरे ए केहेवत छे, ते साची छे ॥ ९४ ॥

हवे स्याद्वादनुं रूप कहेछेः—अथ स्याद्वाद स्वरूप कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— एकमें अनेक है अनेकहीमें एक है सु, एक न अनेक कछु कह्यो न परतु है; करता अकरता है भोगता अभोगता है उपजे न उपजिति मूए न मरतु है; बोलत विचारत न बोले न विचारे कछु, भेषको न भाजन पै भेखसो धरतु है; ऐसो प्रभु चेतन अचेतनकी संगतीसो उलट पलट नट बाजीसी करतु है ॥ ९५ ॥

अर्थः— एक द्रव्यमां अनेक पर्याय छे, अने अनेक पर्यायमां एक द्रव्य छे, एथी हर कोई वस्तु एक छे, अथवा अनेकज छे, एम कांई केहेवातुं नथी. व्यवहारमां कर्त्ता छे, निश्चयमां अकर्त्ता छे, व्हवहारथी भोक्ता छे, निश्चयथी अभोक्ता छे, व्यवहारथी उपजे छे, निश्चयथी उत्पत्ति नथी, व्यवहारथी मुउं, ने निश्चयथी नथी मुउं, व्यवहारथी बोलेछे, विचारेछे, ने निश्चयनयथी कांइ बोले पण नही, ने विचारे पण नही, अविकल्पी छे, निश्चयथी भेषनुं भाजन के॰ स्थानक नथी, व्यवहारथी भेखनो धरनार छे. एवो चेतनवंत जे ईश्वर छे, ते पौद्गलिक अचेतननि संगतीथी उलट पालट थई रह्योछे, जाणे नटनी बाजीनो खेल करतो होय नी तेम खेल करेछे. ॥ ९५ ॥

अथ अनुभव व्यवस्था कथनंः—

॥ दोहरा ॥— नट बाजी विकलप दसा, नाही अनुभौ जोग; केवल अनुभौ करनको, निरविकलप उपयोग. ॥ ९६ ॥

अर्थः— अनुभवमां आत्मद्रव्यनी जे अवस्था पामिये ते कहेछे. पूर्वे कही जे नट सरखी जीवनी उलट पालट बाजी छे ते तो विकल्प दशा छे. ए दशा अनुभवमां योग्य नथी, निःकेवल अनुभव करवाने निर्विकल्प उपयोग आपवो तेज सत्य छे. ॥ ९६ ॥

हवे अनुभवमां निर्विकल्प उपयोग आपवो तेनुं दृष्टांत कहेछेः—

अथ अनुभौ दृष्टांत कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे काहु चतुर संवारी है मुगतमाल, मालाकी क्रियामें नाना भांतिको विज्ञान है; क्रियाको विकलप न देखे पहिरन वालो, मोतीनकी शोभमें मगन सुखवान है; तेसे न करे न भुजे अथवा करे सु भुजे, उर करे उर भुजे

सब नै प्रवान है; यद्यपि तथापि वीकलप विधि त्याग जोग, निरविकलप अनुनौ अमृत पान है. ॥ ए७ ॥

अर्थः– जेम कोई चतुर पुरुषे मोतीनी माला संमारीने बनावी ने तेमां नात नातनुं विज्ञान छे, पण ते मालानो पहेरनारो तेनी क्रियानो विकल्प जोतो नथी, पण मोतीनी शोनाथी मगन ने सुखवान थई रहे छे. जेम मोतीनी मालामां अनेक विज्ञान छे, तेम अहीं पण अनेक विकल्प छे, आत्मा कर्त्ता नथी, नोक्ता नथी, अथवा कर्त्ता छे, नोक्ता छे, अथवा राग द्वेषादिक करनारा बीजा छे, अने नोगवनारा बीजा छे; ए सर्व नय प्रमाण छे. यद्यपि ए सर्व नय प्रमाण छे, तथापि ए सर्व विकल्प विधि त्यागवा योग्य छे. केमके अनुनव जे छे तेतो निर्विकल्प छे अने अमृतपान समान छे, उपादेय छे. ॥ ए७ ॥

हवे स्याद्वादी आत्माने कर्त्ता जे नयथी मानेछे ते कहेछेः–अथ कर्त्ताकथनः–

॥ दोहराः ॥– दरब करम करता अलख, यहु विवहार कहाउ; निहचे जोजे सो दरब, तेसो ताको नाउ. ॥ ए८ ॥

अर्थः–पुजल द्रव्यरूप कर्मनो कर्त्ता अलख पुरुष आत्मा छे, ए व्यवहारमां केहेवाई शके छे, निश्चय नयमां तो ए वात छे के जेवुं जे द्रव्य होय तेवुं तेनुं नाव स्वरूप होय, एथी पुजल द्रव्यनी क्रिया पुजलवडेज बनेछे. ॥ ए८ ॥

हवे जेवुं विपरीतपणुं बुद्धिमां नासेछे, तेवुं कहेछेः–अथ विपरीत बुद्धिकथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– ज्ञानको सहज ज्ञेयाकाररूप परिनमे, यद्यपि तथापि ज्ञान ज्ञान रूप कह्यो है; ज्ञेयज्ञेय रूप यों अनादिहीकी मरजाद, काहु वस्तु काहुको सुनाउ नहि गह्यो है; एते परि कोउ मिथ्या मति कहे ज्ञेयाकार प्रति नासनिसों ज्ञान अशुद्ध व्है रह्यो है; याहि दुरबुद्धिसों विकल नयो फोलत है, समुझे न धरम यों नर्ममाहि वह्यो है ॥ एए ॥

अर्थः–ज्ञाननो ए सहज स्वनाव छे के, घट पट प्रमुख ज्ञेय के० जाणवाजोग जे पदार्थ छे, तेनो जे आकार छे, तेजरूपे आत्मानुं ज्ञान परिणमे, यद्यपि ए वात प्रमाण छे तो पण ज्ञान जे छे, ते ज्ञानरूपज कहेवाय पण ज्ञेयरूप न कहेवाय अने जे ज्ञेय पदार्थ छे ते ज्ञानमां परिणम्यो छे तोपण ज्ञेयरूपज केहेवाय, पण ज्ञानरूप न केहेवाय एवी अनादि कालनी मर्यादा छे, कोई वस्तु बीजी वस्तुनो स्वनाव ग्रहण करे नही, तेम जुदो जुदो स्वनावपण धारण करे नही, एवी मर्यादाबंध वातछे, तेम छतां कोई वैशेषिक प्रमुख मिथ्यामति कहेछे, के ज्ञेय पदार्थना आकार प्रति नासे छे, तेथी ज्ञान पदार्थ अशुद्ध थई रह्यो छे. ज्यारे ए अशुद्धपणुं मटी जशे तारे मुक्तिथशे, एज दुष्ट

बुद्धिथी मिथ्यात्व मोहनो विकल्प थयो, तेथी अंहिं तहिं विकल थईने डोले छे, अने धर्मके० वस्तुनो स्वभाव जाणतो नथी. तेथी भ्रममां वह्यो फिरे छे. ॥ ९९ ॥

हवे सर्व पदार्थ पोताना स्वभावमां व्यापीरह्याछे ते कहेछेः—अथव्यापकताकथनः—

॥ चोपाईः ॥—सकल वस्तु जगमें असहाई, वस्तु वस्तुसों मिले न काई; जीव वस्तु जाने जग जेती, सोऊ भिन्न रहे सबसेती ॥ ४०० ॥

अर्थः—जगत्नेविषे सर्व भाव असहायपणे वर्त्ते छे. कोई कोईनो सहाय कारी नथी, एज अर्थ प्रगट पणे कहे छे, के एक वस्तु बीजी विलक्षण वस्तु साथे मले नही. जगत्मां जेटली वस्तु छे, तेटलीने जीव जाणे छे. एटले सर्व ज्ञेय वस्तु जीवना ज्ञानमां परिणमे छे, तोपण जीव सर्व वस्तुथी जुदोज रहे छे, एम पोतपोतानां जुदां लक्षण छे तेथी जुदां रहेछे ॥ ४०० ॥

हवे व्यवहारनी केहेवत देखाडेछेः—अथ व्यवहार कथनंः—

॥ दोहराः ॥— करम करै फल भोगवै, जीव अज्ञानी कोइ; यह कथनी व्यवहार की वस्तु स्वरूप न होइ. ॥ ४०१ ॥

अर्थः—कोई अज्ञानी जीव छे,ते कर्मने करेछे अने तेनुं फल पण भोगवेछे, ए केहेवत व्यवहारमां छे. पण जेवुं वस्तुनुं स्वरूप छे, तेवी केहेवत नथी ॥ ४०१ ॥

हवे व्यवहारने प्रमाण करे एवी विपरीत बुद्धिनुं वर्णन करे छेः—

अथ विपरीत बुद्धि वर्ननंः—

॥ कवित्त छंदः—॥ ज्ञेआकार ज्ञानकी परिनति, पैं वह ज्ञान ज्ञेय नहि होइ; ज्ञेय रूप खट दरव भिन्न पद, ज्ञानरूप आतम पदसोइ; जाने भेद भाउ सुविचछन गुन लछन सम्यग् दग जोइ; मूरख कहे ज्ञान महि आकृति, प्रगट कलंक लखे नहिकोइ॥१॥

अर्थः—जेवो ज्ञेय वस्तुनो आकार छे, तेवी ज्ञाननी परिणती छे. एटले ज्ञान घट पटादिक ज्ञेयना आकार परिणाम छे, पण ज्ञान छे ते ज्ञेय रूप न थाय. जगत्मां जे ज्ञेय वस्तु छे ते छ द्रव्य छे तेतो भिन्न पद के० जूदा जूदा स्वभावथी केहेवा योग्य छे, अने जे आत्मापणुं कहिये तेतो ज्ञानरूप छे एवो भावनो भेद छे, ते गुण लक्षण जुं लखीने जे भलो विचक्षण अध्यात्मनो वेत्ता सम्यग् दृष्टी होय तेज जाणे. पण वैशेषिक मति जेवो मूर्ख होय ते ज्ञानमां आकार विकल्प जोईने कहे, अहो! आ ज्ञानमां आकार भासे छे तेतो प्रगट कलंक छे. तेने कोई केम लखे नही ? ॥ २ ॥

हवे मिथ्यामति जीव पोतानी मतिने दृढ करेछेः—अथ मिथ्यामति कथनः—

॥ चोपाईः ॥—निराकार जो ब्रह्म कहावे; सो साकार नाम क्यों पावे; ज्ञेयाका ज्ञान जबताई; पूरन ब्रह्म नहि तबताई ॥ ३ ॥ ज्ञेयाकार ब्रह्म मल माने; नास करनको उ

दिम ठाने; वस्तु सुजाउ मिटे नहि क्योंही; ताते पेद करे सठयोही ॥ ४ ॥ दोहराः ॥ मूढ मरम जाने नही, गहे एकांत कुपक्ष; स्याद्‌वाद सरवंगमें, माने दक्ष प्रत्यक्ष॥५॥

अर्थः—ब्रह्मतो निराकारज ठे, ते साकार नाम केम धारण करे, जो ब्रह्मने आकार मानीये तो साकार केवुं जोये, ते केम वने, ज्यांसुंधी ज्ञेयनो आकार ज्ञानमां प्रति जासे ठे, त्यांसुधी पूर्ण ब्रह्म न केहेवाय ॥ ३ ॥ ज्ञेय वस्तुनो जे आकार के० प्रति जासठे ते ब्रह्मने मलरूप माने ठे, ते मलनो नाश करवाने उद्यम करे, जे वस्तुनो जेवो स्व जाव होय तेवोज रहे पण कदी मटे नही, तेथी मूर्खजे शठ लोकठे ते अमथो जूठो द्वेष करे ठे ॥ ४ ॥ जे मूर्ख ठे ते मर्मनी वातने न उलखे ने एकांत पक्ष जे जे कुपक्ष ठे तेनेग्रहे अने जे डाह्यो पुरुष ठे, ते स्याद्वाद मतना आश्रयथी सर्वांगमय प्रत्यक्ष पणे माने, एटले निराकार साकार सर्व नय माने ॥ ५ ॥

हवे स्याद्वादने ग्रहण करनार जेसम्यक्त्वी ठे तेनी स्तुति करे ठेः—अथसम्यक्त्व स्तुतिः—

॥ दोहराः ॥—शुद्ध दरव अनुजौ करे, शुद्ध दृष्टि घटमांहि; ताते सम्यग्‌वंत नर, सहज उठेदक नांहि ॥ ६ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वीना हृदयमां जे अनुजव ठे, तेज शुद्ध द्रव्यने शुद्ध करे ठे. केमके, हृदयमां वस्तु स्वजाव जाणवाथी शुद्ध दृष्टि ठे, तेथी जे सम्यक्त्ववंत पुरुष ठे, ते सहज स्वजावनो उठेदक थतो नथी, एटले सहज जावनो उठेद मानतो नथी ॥ ६ ॥

हवे परवस्तुमां परद्रव्यनुं अव्यापक पणुं दृष्टांतवडे दृढ करेठेः—

अथ अव्यापक द्रव्य कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे चंदकीरन प्रगटि जूमि सेत करे, जूमिसीत होति सदा जोतिसी रहती है; तैसे ज्ञान सकति प्रकासे हेय उपादेय, ज्ञेयाकार दीसे पे न ज्ञेयकों गहती है; शुद्ध वस्तु शुद्ध परजायरूप परिनमै, सत्ता परवान मांहि ढाहे न ढहती है; सोतो औररूप कबहो न होई सरब था, निहचे अनादि जिनवानी यों कहती है ॥ ७ ॥

अर्थः—जेम शरद्‌पुनमनी रात्री समे चंद्रना किरण प्रकाश वके पृथिवने श्वेत रूप करेठे, पण ते चंद्रमानी ज्योति कंई पृथ्वी वनती नथी, सदा ज्योतिरूप रहेठे, तेम ज्ञान शक्ति एवी ठे के जे हेय उपादेय वस्तुने प्रकाशे त्यारे ज्ञान, ज्ञेय वस्तुने आकारे देखायठे पण ज्ञेय वस्तुनुं स्वरूप ग्रहण करे नही. केमके, जे शुद्ध वस्तु ठे ते शुद्ध पर्यायरूप पणेज परिणमे अने जेनी पोतानी सत्ताठे ते जेटलामां वस्तुनुं सद्रूप पणुं ठे, तेटला प्रमाण मांहे शुद्ध पर्यायनेज परिणमे ठे, पण ए वस्तुनुं

स्वरूप ढांक्युं रहे नही, तेतो शुद्ध वस्तु कोईनी संगतीथी सर्व प्रकारे बीजे रूपे न थाय ए वात निश्चयमां छे, एवी अनादि कालनी जिनवाणी कहेछे ॥ ७ ॥

हवे वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप कहे छेः—अथ यथा स्वरूप कथनः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— राग विरोध उदे तबलों जबलों यह जीव मृषा मग धावे; ज्ञान जग्यो जब चेतनको तब कर्म दशा पररूप कहावे; कर्म विलेछि करे अनु भो तब मोह मिथ्यात प्रवेश न पावे; मोह गये उपजे सुख केवल सिद्ध भयो जगमांहि न आवे ॥ ८ ॥

अर्थः—ज्यांसुधी आ जीव मिथ्यात्व मार्गमां दोडे छे, त्यां सुधी राग द्वेषनो उदय छे, अने तेथी सत्य मार्गने पामतो नथी. ज्यारे शुद्ध चेतन वस्तुनुं ज्ञान जाग्युं त्यारे तो कर्म दशा जे छे ते पररूप जणाय, अने आत्मा तेथी जुदो जोवामां आवे. ज्यां चेतननो अनुभव छे त्यां सत्यार्थ पणे जाणवुं होय ते कर्मनुं विलक्षण पणुं करे. एटले भेद विज्ञानवडे भिन्न लक्षण पणे जाणे, अने त्यां मोहरूप मिथ्यात्व प्रवेश करी शके नही. मोह गयाथी सुख समाधिमां केवल ज्ञान प्रगटे अने त्यारे जीव सिद्ध थाय अने फरीथी जगत्‌ने विषे आवे नही ॥ ८ ॥

हवे जेम अनुक्रमे वस्तु स्वरूपने प्रगट पणे स्वभावने वधारे ते कहेछेः—

अथ अनुक्रम वस्तु स्वरूप वर्द्धमानता कथनंः—

॥ छपय छंदः ॥—जीव करम संयोग, सहज मिथ्यात रूप धर; राग दोष परिनत, प्रभाव जाने न आपापर; तम मिथ्यात्व मिटिगयो,भयो समकित उदोत ससि; राग दोष कछु वस्तु, नाहि छिनु माहि गये नसि; अनुभौ अभ्यासि सुखराशी रमि, भयो नि पुन तारन तरन, पूरन प्रकाशनिहचलि निरखी, बनारसी वंदत चरन ॥ ९ ॥

अर्थः—अनादि कालनो जीवने कर्म साथे संयोग छे. तेथी सहज संबंधे मिथ्यात्व स्थिति रूप धारी जीव छे, अने क्यारेक जीव रागमां परिणम्यो रहेछे, अने क्यारेक द्वेषनी परिणतिना प्रभावथी पोताने तथा परने जाणतो नथी. एवामां क्यारेक मिथ्या त्वरूप अंधकार मटी गयो ने समकितरूप चंद्रमानो प्रकाश थयो तेथी खबर पडीके रागद्वेष कंइ वस्तु नथी, एटले भली वस्तु नथी, एम जाणी एना अनादरथी राग द्वेष क्षणमां नाश पाम्या अने ते पछी पोताना अनुभवनो अभ्यास कीधो, तेवारे तो सहज समाधिरूप सुखराशिमां रमी रह्यो. एरीते निपुण सर्व ज्ञानी, तरण तारण स मर्थ प्रभु थयो. हवे ए पूर्ण प्रकाश अनंत काल लगी निश्चय थयो तेना ध्यानने नि रखी बनारसीदास ते प्रभुना चरणने नित्य प्रते वंदेछे. ॥ ९ ॥

रागद्वेषना हेतुनुं शिष्य प्रश्न करछे. गुरु उत्तर आपेछेः—अथ प्रश्नोत्तर कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोउ शिष्य कहे स्वामी राग दोष परिनाम ताको मूल प्रेरक कहहु तुम कोनहै; पुग्गल करमजोग किधो इंद्रिनिको भोग; किधो धन किधो परिजन किधों भोन है; गुरु कहे छहों दर्व अपने अपनेरूप, सवनिको सदा असहाई परीनोन है; कोउ दर्व काहु को न प्रेरक कदाचिताते, राग दोष मोह मृषामदिरा अचोन है ॥ १० ॥

अर्थः—कोइ शिष्य आचार्यने विनय पुर्वक पुछवा लाग्यो के अहो स्वामी, आत्माने राग द्वेष परिणाम उपजे छे. तेनो प्रेरक निश्चय पणे तमे कोने ठरावो छे? एटले आत्माने पौद्गलिक कर्मनो योग छे, तेज इहां हेतु छे, के पंचेंद्रियनो भोगहेतुछे के धन हेतु छे, के परिवार हेतु छे, अथवा मंदीर हेतु छे, ? इत्यादिकोमांथी राग द्वेष परिणामनो हेतु कोण छे, ते कहो. गुरु कहे छे, हे! शिष्य, ए पुद्गल संबंध हेतु नथी, तेम द्रव्य इंद्रिय छे, तेतो पोतपोताने रूपे पोतपोतानी सत्तामां रहे छे, अने सर्व द्रव्योनुं परिणमन सदा असहाई छे, कोई कोईनुं सहाय करतुं नथी. तेथी कोई काले कोई द्रव्य कोईनुं प्रेरक एटले हेतु नथी, माटे राग द्वेष परिणामनो हेतु तो मिथ्यात्व मोहकर्मरूप मदिरानी अचौन के० उद्धतपणुं छे ॥ १० ॥

हवे कोई मूर्ख राग द्वेष परिणामनुं प्रेरक पुद्गलनुं बल छे एम कहेछे, तेने गुरु समजावे छेः— अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनंः—

॥ दोहराः ॥— कोऊ मूरख यों कहै, राग दोष परिनाम; पुद्गलकी जोरावरी, वरते आतम राम ॥ ११ ॥ ज्यों ज्यों पुग्गल बल करे, धरि धरि कर्मज भेष; राग दोषको परिनमन, त्यों त्यों होइ विशेष ॥ १२ ॥ इहविधि जो विपरीत पख, गहे सद्दहे कोई; सो नर राग विरोधसों, कवहू भिन्न न होइ ॥ १३ ॥ सुगुरु कहै जगमें रहे, पुग्गल संग सदीव; सहज शुद्ध परिनमनको, औसर लहे न जीव ॥ १४ ॥ ताते चिद्भावनविषे, समरथ चेतन राउ; राग विरोध मिथ्यातमें, सम्यकमेंसिव भाउ ॥ १५ ॥

अर्थः—कोई मूर्ख लोक एम कहेछे के, आत्मारामविषे जे राग द्वेष परिणाम छे, ते पुद्गलनी जोरावरीथी छे, एटले एज पुद्गलनुं जोर छे ॥ ११ ॥ जेम जेम कर्म भेख धारीने एटले कर्म वर्गनारूप धारीने पुद्गल द्रव्य आपणुं बल विस्तारेछे, तेम तेम रागद्वेषनुं परिणाम विशेषरूपे थाय छे, एम आत्मनेविषे देखाय छे, ए सांख्यमतिनुं केहेवुं छे ॥ १२ ॥ ए रीते जे सांख्यमतिवाला आवुं विपरीत ग्रहण करेछे, अने सद्दहेछे, ते पुरुष राग द्वेषथी एवी श्रद्धावरू पण कदी जुदो थाय नही ॥ १३ ॥ हवे सद्गुरु कहेछे, अरे! प्राणी! जगत्मां पुद्गलना संगमां जीव सदा रहेछे. अनादिथी ए पु

फलने जीवनुं संश्लेषपणुं छे, तेथी सहज शुद्ध परिणामवालो जीव अवसर न पामे, एटले पोतानुं शुद्ध परिणाम ग्रहिशके नही ॥ १४ ॥ चेतनराय जे छे ते चिद्भावने विषे एटले ज्ञान भावविषे समर्थ छे, एटले जाणपणाना कार्यमां समर्थ छे, अने मिथ्यामति निमग्नताथी जाणपणामां राग द्वेष परिणाम देखाय छे, अने जीव सम्यग् भावमां रहेछे, त्यारे शिव भाव उपजेछे ॥ १५ ॥

हवे ज्ञान भावमां पुद्गलनो भाव व्यापी शकतो नथी तेथी परभावनुं अव्यापक पण कहेछेः—अथ अव्यापकता कथनः—

॥ दोहराः॥—ज्यों दीपक रजनी समै, चिहु दिसि करे उदोत; प्रगटे घट पट रूप में, घट पट रूप न होत ॥ १६ ॥ त्यों सु ज्ञान जाने सकल, ज्ञेय वस्तुको मर्म; ज्ञेयाकृति परिनमन पे, तजै न आतम धर्म ॥ १७ ॥ ज्ञान धर्म अविचल सदा, गहे विकार न कोइ; राग विरोध विमोह मय कबहु भूलि न होइ ॥ १८ ॥ ऐसी महीमा ज्ञानकी, निहचै है घटमांहि; मूरख मिथ्या दृष्टिसों, सहज विलोके नांहि ॥ १९ ॥

अर्थः— जेम दीवो रात्रे चारे दिशाने प्रकाशमान करेछे, अने तेथी घटपटादिक पदार्थ प्रगटेछे, पण दीपकनो प्रकाश घटपटरूप थतो नथी. ॥१६॥ तेम सुज्ञान जे छे,ते सर्व ज्ञेय वस्तुनो मर्म जाणेछे. तेना ज्ञानमां ज्ञेय पदार्थनो आकार पण परिणमेछे तो पण ज्ञान जे छे ते आतम धर्म शुद्ध पणु छांडतुं नथी ॥ १७ ॥ ज्ञान धर्मथी जाणपणुं ते सदा अविचल छे. ए जाणपणामां कोई विकार प्रवेश करे नही. राग द्वेषमोहमां जीव वहेछे खरो, तोपण जाणपणाने कही भूलतो नथी ॥ १८ ॥ एवो ज्ञाननो महिमा निश्चे स्वरूपे घटमां छे. पण मूरख मिथ्या दृष्टि सहज स्वरूपने विलोकतो नथी ॥ १९ ॥

हवे अनादिकालथी जीवनो मूढ स्वभाव छे ते कहेछेः—अथ मूढ स्वभाव कथनः—

॥दोहराः॥— परसुभावमें मगन व्है, ठाने राग विरोध; धरै परिग्रह धारना, करे न आतम सोध ॥ २० ॥

अर्थः— शुद्ध चेतन स्वभावथी बीजा स्वभाव जे छे ते पर स्वभाव छे, तेमां मग्न थईने राग द्वेषमां छेरी रह्योछे, अने एज राग द्वेषथी परिग्रहनी धारणा धरेछे पण आत्मद्रव्यनो सोध करे नही ॥ २० ॥

हवे मूढने कुबुद्धि अने पंडितने सुबुद्धि होय ते कहेछेः—अथ कुबुद्धि तथासुबुद्धिविवरनः-

॥चौपाईः॥— मूरखके घट दुरमति भासी; पंडित हिए सुमति परगासी; दुरमति कुबजा करम कमावे; सुमति राधिका राम रमावे ॥ २१ ॥ दोहराः॥—कुब्जा कारी कूबरी, करे जगतमें खेद; अलख अराधे राधिका, जाने निज पर भेद ॥ २२ ॥

अर्थः— मूर्ख प्राणीना घटमां दुर्मति भासी रहीछे, अने पंडितना हेयामां सुबुद्धि प्रकाश थई रही छे. दुर्बुद्धि जे छे ते कंसराजानी दासी जे कुब्जा तेना सरखी छे. ते कर्मनी कमाई करेछे; अने सुबुद्धि जे छे ते राधिका सरखी छे. ते आत्माराम नाय कने रमाडनारी छे ॥ २१ ॥ कुब्जा दासी काली अने कुवडी छे, ते जगत्मां खेद प्रयास उपजावे एवा काम करनारी छे, अने सुबुद्धि राधिका जे छे, तेतो अलख ना यकनेज आराधे छे. अने एज माहारो श्रेष्ट इष्ट नायक छे, अने वीजा सर्व पर छे; एवो भेद जाणे छे ॥ २२ ॥

हवे कुबुद्धि अने कुब्जानुं एकसरखुं वर्णन करेछेः— अथ कुबुद्धि यथाः—

॥सवैया इकतीसाः॥—कुटिल कुरूप अंग लगी है पराए संग, अपनो प्रवान करि आपुहि विकाई है; गहे गति अंधकीसी सकती कमंधकीसी, वंधको वढाउ करे धंध हीमें धाई है; रांडकीसी रीति लिए, मांड कीसी मतवारी, सांड ज्यों सुछंद डोले भांडकीसी जाई है; घरको न जाने भेद करे पराधिन खेद, याते दुर्बुद्धि दासी कुब्ज जा कहाई है ॥ २३ ॥

अर्थः— जे कुबुद्धि छे ने मायाथी कुटील छे, तेज कुब्जा कुरूप अंग वालीछे, अने कुबुद्धि पारका संगमां लागी रहेछे, तेम कुब्जा पण एवीछे. कुबुद्धि पोताना अशुद्ध प्रमाण वडे पोतेज परवश थईछे, अने कुब्जा पण तेम वेचाईछे. कवंध एटले मस्तक विना लडाई करे तेनी शक्ति वेफाम होयछे, ते आंधलानी माफक गति लई डोलतो फिरेछे तेम कुबुद्धि ने कुब्जापण माथा विनानी फिरेछे अने दुर्बुद्धि छे ते कर्मना वं धने वधारेछे, ने धंध के० राग द्वेष विग्रहमां दोडेछे, तेम दासी पण पारका घर धं धामां दोडती फरेछे. कुबुद्धि पोताना नायकने ओलखती नथी, तेथी रांड जेवी रीती राखेछे, तेम दासीपण नायकविना रांडनी रीतेछे. वली सोहागननी रीते मतवारी थ की फरेछे. जेम सांढ जनावर स्वछंदे डोलेछे, अने भांडनी छोकरी लाज विनानी हो यछे, तेवी ए कुब्जा दासी छे. जेम कुबुद्धि पोताना घरनो भेद जे ज्ञानादिक वित्त छे ते जाणे नही, तेम दासी पण घरनो भेद जाणे नही, ने पराधीन थकी खेद कर्या करे माटे दुर्बुद्धिरूप दासी ते कुब्जा दासी सरखीछे ॥ २३ ॥

हवे सुबुद्धि अने राधिका ए बेनुं एक स्वरूप कही देखाडेछेः—अथ सुबुद्धि यथाः—

॥सवैया इकतीसाः॥— रूपकी रसीली भ्रम कुलफकी कीली सीली, सुधाके समुद्र झीली सीली सुखदाई है; प्राची ज्ञान भानकी अजाची है निदानकी, सुराची नरवा- ची ठोर साची ठकुराई है; धामकी खबर दार, रामकी रमन हार, राधा रस पंथ निमें ग्रंथनि मेगाई है; संतनिकी मानी निरवानी नूरकी निसानी याते सदबुद्धि रानी रा

धिका कहाई है. ॥२४॥ दोहराः ॥— वह कुब्जा वह राधिका, दोउ गती मति मान; वह अधिकारनि करमकी, यह विवेककी खान. ॥ २५ ॥ दरव करम पुद्गल दसा, भाव कर्म मति वक्र; जो सुज्ञानको परिनमन, सो विवेक गुनचक्र. ॥ २६ ॥

अर्थः— सुबुद्धि आत्मरूपनी रसीली छे. अने राधा पण रूपनी रसीली छे, अने भ्रमरूप तालाने खोलवानी कुंची छे. सुबुद्धि शील रूप सुधा समुद्रमां झली रहेछे अने राधा पण तेवी छे, एम ए बेउ शील प्रकृतीयेकरी महा सुखदायी छे, ज्ञानरूप भानुनो उदय करवाने प्राची के० पूर्व दिशा जेवीछे, निदाननी जाचनारी नथी, एटले निस्नेहीपणे सुबुद्धि अने राधिका छे. निरवाची के० वचन गोचर नथी, एवे ठेकाणे राची रहेछे, जेनी साची ईश्वरता छे धाम के० जे पोतानुं आत्म घर तेनी खबरदार छे, जेनी साथे रमी रहीछे ते राम एटले पोताना इष्टनी साथे रमनारी छे. राधा रस पंथ एटले राधावल्लभीना मार्गना रसग्रंथमां राधानामे ईश्वरनी प्यारी छे, तेवीज सुबुद्धि पण छे. एवी संतजननी मानीती छे अने स्वस्थपणे रेहेनारी अने नूर के० शोभानी निशाणी छे एवी सुबुद्धि वर्त्तेछे, माटे सुबुद्धिने राधिका राणी कहेवी ॥ २४ ॥ ए रीते कुबुद्धि कुब्जा थई अने सुबुद्धि राधिका थई, ए बे पोतपोतानी गति अने मति लीधी रहेछे. ते कुबुद्धि जे कुब्जा तेतो कर्म बंधनी अधिकारणी छे, अने सुबुद्धि राधिका तो विवेकनी खाण छे. ॥ २५ ॥ ज्ञानावरणीय आदिक द्रव्य कर्म छे. ते पुद्गल रूप छे अने मतिनी वक्रता छे ते भाव कर्म जाणीए, जे सुज्ञाननो परिणमन होय तेने विवेक गुणनुं चक्र कहीए ॥ २६ ॥

हवे भाव कर्मना चक्रनी उपर दृष्टांत कहेछेः— अथ कर्म चक्र यथाः—

॥कवित्त छंदः॥— जैसे नर खेलार चोपरको, लाभ विचार करे चित चाउ; धरि सवारि सा बुद्धि बलसों, पासाको कुछु परे सुदाउ; तैसें जगत जीव स्वारथको करि उद्यम चिंतवे उपाउ; लिख्यो ललाट होइ सोई फल, कर्म चक्रको यही सुभाउ ॥ २७ ॥

अर्थः— जेम कोई चोपटनो खेल करे, ते पुरुष चित्तमां लाभ विचारी खेलवानो चाह राखे, एहले हौस राखे, पोतानी बुद्धि बलने जुग प्रमुखनो यत्न राखीने त्रिक चोक प्रमुख दाव उपर सारी संभाल राखीने रमे, पण दाव तो पासाने आधीन छे. तेम जगतनो जीव उद्यम करीने पोताना स्वारथनो उपाय चिंतवे, पण पोताना ललाटमां लिख्युं होय तेज फल थाय,कर्म चक्र उदय माफक थाय एनो एज स्वभावछे२७

हवे विवेक चक्र उपर दृष्टांत कहे छेः— अथ विवेक चक्र यथाः—

॥कवित्त छंदः॥— जैसे नर खेलार सतरंजको, समुझे सब सतरंजकी घात; चले चाल निरखै दोउ दल, मोह राग न विचारे मात, तैसे साधु निपुन शिव पथमे लक्षन

लखे तजे उतपात; साधे पुन्य चिंतवे अज्ञै पद, यह सुविवेक चक्रकी वात ॥ २७ ॥ ॥दोहरा॥– सतरँज खेले राधिका, कुबजा खेले सारि; याके निसिदिन जीतवो, वाके निसिदिन हारि ॥ २९ ॥ दोहराः– जाके उर कुबजा बसे, सोई अलख अजान; जा के हिरदे राधिका, सो बुध सम्यक वान ॥ ३० ॥

अर्थः–जेम कोईमाणस सेतरंजनो रमनार सेतरंजना खेलनी सर्व धात के० युक्ति अने दाव समजेछे, पोताना पराया दल उदर नजर राखी चाल चाले, पोताना पारका वजीर हाथी प्रमुख मोहोरा गणतिमां राखी मनमां परने मांत करवानुं विचारेछे, तेम साधु लोक पंडित छे, ते मोक्ष मार्गमां खेले; लक्षणथी वस्तुने जोय; तेमां उत्पातरूप कार्य होय ते छांडी दे, अने पोतानुं साधन करे, चित्तमां अज्ञेद पद विचारे ए विवेक चक्रनी वात छे ॥२७॥ सुबुद्धि राधिका ते सेतरंज खेली रही छे, अने कुमति कुब्जा पासा सरखो खेल खेलेछे. तेमां आ सुमति राधिका तेनुं विवेक चक्रमां रातदिन जितवुं थायछे. अने कुमति कुब्जा ते कर्म चक्रमां रातदिन हारेछे ॥२९॥ जेनां हैयामां कुमति कुब्जा वसे, तेतो अलख आत्माना अजाण छे; अने जेना हैयामां सुमति राधिका वसेछे, तेज समकितवंत बुद्ध कहेतां ज्ञाता कहिये ॥ ३० ॥

हवे ज्यां शुद्धज्ञान छे त्यां शुद्धक्रिया थाय ते कहेछेः–अथ ज्ञानक्रिया सहकार कथनः–

॥सवैया इकतीसा॥–जहां शुद्ध ज्ञानकी कला उद्योत दीसे तहां, सुद्ध परवान शुद्ध चारित्रको अंस है; ता कारन ज्ञानी सब जाने ज्ञेय वस्तु मर्म, वैराग विलास धर्म वाको सरवंस है; राग दोष मोहकी दसासों ज्ञिन्न रहे याते, सर्वथा त्रिकाल कर्मजालको विध्वंस है; निरुपाधि आतम समाधिमें विराजे ताते, कहिये प्रगट पूरन परमहंस है; ॥ ३१ ॥ दोहराः–ज्ञायक ज्ञाव जहां तहां, शुद्ध चरनकी चाल; ताते ज्ञान विराग मल, सिव साधे सम काल. ॥ ३२ ॥

अर्थः–जे प्राणीविषे जे शुद्ध ज्ञाननी कलानो उद्योत देखायछे, ते प्राणीविषे तेज वखतमां आत्मानी शुद्धता प्रमाण करीने शुद्ध चारित्रनो पण अंस थाय ते कारणथी जे ज्ञाता होय तेतो ज्ञेय के० हेय उपादेयरूप सर्व जाणवा योग्य वस्तुनो मर्म जाणे, त्यारे ते हेयने छांडे अने उपादेयरूप सर्व जाणवुं तेने ग्रहे छे, एवो वैराग्यना विलासनो स्वज्ञाव सर्व अंशे करी प्रगट थाय. अने वैराग्य आव्याथी राग द्वेष मोहनी दशाथी प्राणी ज्ञिन्न रहेछे, तेथी पूर्वकृत कर्मनी निर्जरा थायछे, अने वर्त्तमानकालमां कर्म न बांधे, जे प्रकृति छुटी गई ते आगामिक कालमां बांधे नही, एम सर्वथा प्रकारे कर्मजालनो विध्वंस थाय. तेवारे राग द्वेषादिक उपाधि रहित आतम समाधिमां विराजे तेथी तेने पूरण परमहंस प्रगटपणे कहिये ॥ ३१ ॥ ज्यां ज्ञायक ज्ञाव

छे त्यां शुद्ध चारित्रनी चाल पामिये तेथी ज्ञान अने वैराग्य मलीने समकाले शिवमार्ग साधे छे ॥ ३२ ॥

हवे ज्ञानक्रिया उपर अंध पंगुनुं दृष्टांत देछेः– अथ ज्ञान क्रियाको दृष्टांतः–

॥दोहराः॥–यथा अंधके कंध परि, चढे पंगु नर कोइ; वाके दृग् वाके चरण, होहि पथिक मिलि दोइ, ॥३३॥ जहां ज्ञान क्रिरिया मिले, तहां मोक्ष मग सोइ; वह जाने पदको मरम, वह पथमें थिर होइ. ॥ ३४ ॥

अर्थः–कोई पांगलो नर जेम कोई आंधलाना खभा उपर चढवाथी, पांगलानी आंख अने ते आंधलाना पगथी चाले, त्यारे पंथ मार्ग होय तो बनेना मलवाथी गमन थाय, हालवुं चालवुं बने, तेम ज्ञान वैराग्य मलेथी मोक्षमार्गे चलाय ॥३३॥ ज्यां ज्ञा अने क्रिया ए बे एकठा थई रहे त्यां मोक्षनो मार्ग थाय. एटले ज्ञानथी वस्तुनो मर्म जाणे अने क्रियाथी पोताना वस्तुस्वभावमां स्थिर थाय ॥ ३४ ॥

हवे ज्ञान अने क्रियानुं जेवुं स्वरूप छे तेवुं कहे छेः– अथ ज्ञानक्रियाको स्वरूपः–

॥दोहराः॥– ज्ञान जीवकी सजगता, करम जीवकी भूल; ज्ञान मोक्ष अंकूर है, करम जगतको मूल. ॥ ३५ ॥ ज्ञान चेतनाके जगे, प्रगटे केवल राम; कर्म चेतनामें बसे, कर्म बंध परिनाम. ॥ ३६ ॥

अर्थः– ज्ञान छे ते जीवनी सजगता छे एटले जीवने जगावे छे; कर्म के० क्रिया कार्य करवो ते जीवनी भूल छे, त्यां ज्ञान छे ते मोक्षनो अंकूर छे, एटले मोक्षनो हेतु छे, क्रिया कार्य करवो तेतो भवभ्रमणनुं मूल छे ॥ ३५॥ चेतना बे प्रकारनी पूर्वे कही छे. तेमां ज्ञानचेतनाना जागवाथी केवल राम प्रगटे ते शुद्ध परमात्मा प्रगटे छे, अने बीजी कर्मचेतना कहिए तेमां आत्मानो बंधपरिणाम उपजे छे. ॥ ३६ ॥

हवे ज्ञाननो प्रभाव अने क्रियानो प्रभाव भिन्न भिन्न कही देखाडे छेः–

अथ ज्ञानक्रियाको प्रभाव भिन्न कथनः–

॥ चोपाईः॥–जबलग ज्ञान चेतना भारी; तब लगु जीव विकल संसारी, जब घट ज्ञान चेतना जागी, तब समकिती सहज वैरागी. ॥ ३७ ॥ सिद्ध समान रूप निज जाने; पर संजोग भव परमाने; शुद्धातम अनुभो अभ्यासे, त्रिविध करमकी ममता नासे. ॥ ३७ ॥

अर्थः–ज्यांलगी क्रिया परिणामे करीने ज्ञान चेतना भारी थई एटले चेतना कर्मरूप थई, त्यांलगी तो संसारी जीव विकलरूप थई रह्यो छे अने ज्यारे घटमां ज्ञानचेतना जाग्रतरूप थई, त्यारे ते समकिती कहेवाय छे; तेने सहज वैरागी कहिए. ॥ ३७ ॥ अने ज्ञान चेतनाना जाणवाथी पोताना रूपने निश्चय सिद्धसमान

जाणे, अने पर पुद्गलना संयोगथी जे भाव उपजे, तेने तो पररूप माने, शुद्धात्मना अनुभवनो अभ्यास राखे; द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म एवी त्रण जातिनां कर्मनी ममता गमावे. ॥ ३८ ॥

हवे ज्ञाता थईने जे पूर्वकालविषे कर्म कीधांछे तेनी आलोयणाले, अने पोतानी विगत कहेछेः—अथ ज्ञाता पूर्व कृतकर्म आलोचन कथनः—

॥ दोहराः ॥— ज्ञानवंत अपनी कथा, कहै आपसों आप; मैं मिथ्यात दसाविषे, कीने बहु विधि पाप. ॥ ३९ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—हिरदे हमारे महा मोहकी विक लताही, ताते हम करुना न कीनी जीव घातकी; आप पाप कीने ओरनकों उपदेश दीने, हूती अनुमोदना हमारे याही बातकी; मन वच कायमें मगन व्है कमाए कर्म, धाए भ्रम जालमें कहाए हम पातकी; ज्ञानके उदे भए हमारी दशा एसी भई, जेसी भान भासत अवस्था होत प्रातकी. ॥ ४० ॥

अर्थः— ज्ञान चेतना जागतां ज्ञानवंत पोतानी कथा पोतानी मेले करे के में पूर्व कालमां मिथ्यात्व दशामां बहु जातनां पाप कीधां छे. ॥ ३९ ॥ हमारा हैयामां पूर्व कालविषे महामोहनी विकलता थई, तेथी अमें जीव घातनी करुणा न कीधी, ने निर्दयदशा राखी, पोतानी कायाथी तो पोतेज पाप कीधां अने बीजाने वचने करी पापनो उपदेश दीधो; अथवा कोईने पाप करतो देखीने में तेनी अनुमोदना करी एवी रीते मन वचन कायाना अशुद्ध व्यवहारमां मग्न थईने कर्मनी कमाणी करी मिथ्या जालमां एवी रीते दोड्या, तेथी अमे पातकी केहेवाइए छैयें; हवे ज्ञाननो उदयथतां हमारी दिशा एवी थई के जेम सूर्यना भासवाथी प्रभात कालनी अवस्था उद्योतवंत थाय, तेम हमारी पण एवी अवस्था थई ॥ ४० ॥

हवे ज्ञाता ज्ञानना प्रभावथी जेवी आपणी अवस्था जाणे तेवी कहेछे.

अथ ज्ञाता ज्ञान प्रभाव कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञान भान भासत प्रवान ज्ञानवान कहे, करुना निधान अमलान मेरो रूप है; कालसों अतीत कर्म चालसों अभीत जोग, जालसों अजीत जाकी महिमा अनुप है; मोहको विलास यह जगतको वास मेंतो, जगतसों शुन्य पाप पुन्य अंध कूप है; पाप किन कियो कौन करे करिहै सु कोन, क्रियाको विचार सुपनेकी धोर धूप है ॥ ४१ ॥

अर्थः—ज्ञानरूप सूर्यनो प्रकाश होवाथी प्रमाण ज्ञानवान के० ज्ञाता पुरुष एम कहेछे के, मारुं स्वरूप करुणा निधान छे. तथा सर्वेनुं पोताना जेवुं स्वरूप जाणी ने सर्वेनो हित वत्सल छे. अने अम्लान कहेता निर्मल छे, कालने वश नथी एटले

शाश्वत छे. कर्म चालनो तेने जय नथी, एटले कर्म जेना स्वभावनो नाश करी शके नही, मन वचन अने कायना योगनी जाल तेथी जे अजित छे, अने आ जगत्‌नो वास छे, तेतो मोहतोविलासछे, पण मारो विलास नथी. जगत् कहिये भवभ्रमण तेथी हुं शून्य छुं, गति कर्म जगत् करेछे, तेतो मारा स्वरूपमां पाप पुण्य अंधकूप समान छे, एथी पाप कोणे कीधुं, हवे कोण करे छे, आगल कोण करशे; आजे क्रियानो विचार दिठामां आवेछे, तेतो स्वप्नानी दोरधाव समान मिथ्याव्यवहार छे ॥ ४१ ॥

हवे मिथ्या परिणामनुं वर्णन करेछेः—अथ मिथ्यात्व परिणाम वर्णनः—

॥ दोहराः ॥— मैं यौं कीनौ यौं करौं, अव यह मेरो काम, मन वच कायामें वसे, ए मिथ्यात परिनाम, ॥४२॥ मन वच काया करम फल, करम दशा जड अंग; दरवित पुद्गल पिंडमें, भावित भरम तरंग ॥ ४३ ॥ तांते भावित धरमसो, करम सुभाउ अपूठ; कोंन करावे को करे, कोसर लहे सव जूठ ॥ ४४ ॥

अर्थः— मैं आवुं कीधुं, आम करुंछु, हवे आ मारुं काम छे, ते कहुछु, एरीते ज्ञान चेतना जाग्याविना मन वचन कायामां मिथ्या परिणाम वसेछे, ॥ ४२ ॥ आ जे मन वचन कायाना जोग छे, ते कर्मनुं फल छे, अने कर्मनी दशा जडरूप अंग छे, ए जे मन वचन काया छे, ते पुद्गल द्रव्यनो पिंड छे, तेथी आ मिथ्या तरंग भाव उपजे छे. ॥४३॥ तेमाटे आत्मानो भावित धर्म एटले शुद्ध जाणपणुं तेथी मिथ्या तरंगरूप कर्म स्वभाव विपरीत छे तेने करावे कोण अने करे कोण? अने सरल कोण छे एटले अनुमोदे कोण ए प्रपंच सर्व जुठोछे, ॥ ४४ ॥

हवे आ जोगथी क्रिया होय तेनी निंदा करेछेः— अथ क्रियाकी निंदा कथनः—

॥ दोहराः ॥—करनी हित हरनी सदा; मुकति वितरनी नांहि; गनी वंध पद्धति विषे, सनी महा दुष मांहि, ॥ ४५ ॥ सवैया इकतीसाः॥— करनीकी धरनीमें माहा मोह राजा वसे, करनी अज्ञानभाव राकसकी पुरीहै, करनी करम काया पुग्गलकी प्रती छाया, करनी प्रगट माया मिसरीकी छुरी है, करनीके जालमें उरझि रह्यो चिदानंद, करनीकी उट ज्ञान भान दुति दुरी है; आचारज कहैं करनीसों विवहारी जीव करनी सदीव निहचै सरूप वुरी है ॥ ४६ ॥

अर्थः— करणी जे क्रिया छे ते सदा अहितनी करनारी छे, मुक्तिने देवा वाली नथी, आ क्रियाने आगममां तो वंध पद्धतिमांज गणी छे, तेथी क्रिया महा दुख सहित छे. ॥ ४५ ॥ क्रियानी भूमिमां महा मोह राजा वसेछे, अने क्रिया छे ते तो अज्ञान भाव राक्षसनी नगरी छे. एटले क्रियामां अज्ञान राक्षस रही शकेछे. अने ए क्रिया छे ते तो कर्मनो पडछायो छे, अने काय योगनो पडछायो छे. अने पुद्गलनो प

रूढायो छे. क्रिया छे ते प्रगट माया जाल छे, तथा ते साकरनी छरी छे, मीठास आपी मारेछे. आ करणीनी जालमां चिदानंद परमात्मा जरजी के० मग्न थई रह्यो छे, अने क्रियाना ओथे ज्ञानरूप सूर्यनी ज्योति छपी रही छे. श्री आचार्य कहेछे के क्रिया करतो थको जीव व्यवहारीज कहिए. पण निश्चय रूपे देखवाथी क्रिया सदा सर्वदा बुरी छे, एटले खोटी छे. ॥ ४६ ॥

हवे पोतानी समज पामे तेने ज्ञाता कहेछेः— अथ ज्ञाता कथनः—

॥चौपाईः॥— मृषा मोहकी परिनति फैली, तातें करम चेतना मैली; ज्ञान होत हम समुजी एती, जीव सदीव जिन्न परसेती ॥ ४४ ॥ दोहराः॥—जीव अनादि सरूप मम, करम रहित निरुपाधि; अविनाशी अशरन सदा, सुखमय सिद्ध समाधि ॥ ४७ ॥

अर्थः— अमारामां पहेला मिथ्या मोहनी परिनति फेलाई छे, एटले मोहथी अशुद्ध थई, त्यारे फेलाणी. तेनो उदय गाढो थयो, तेथी चेतना शुद्ध हती पण अशुद्ध थई, कर्मसहित चेतना मलीन थई. हवे ज्ञान चेतना प्रगट थतां अमे एटली वात जाणी, के जे जीव छे ते निश्चये परजोगथी न्यारो छे ॥४७॥ अनादि कालथी जे जीव प्राणधारी कहेवायछे, ते मारुं स्वरूप छे. ते स्वरूप केवुं छे ते कहेछे. कर्म रहित छे; अने संयोगादिक उपाधि रहित छे; वली विनाश न पामे, सदा ईश्वर छे; कोईनुं शरण न राखे, अने आ स्वरूप सिद्धसमाधिना सुखमय छे ॥ ४७ ॥

हवे ज्ञानस्वरूप कर्म उपाधिथी जिन्नछे ते कहेछेः— अथ ज्ञान स्वरूपी कथनः—

॥चौपाईः॥— में त्रिकाल करणीसों न्यारा, चिदविलास पद जगत उज्यारा; राग विरोध मोह मम नांही, मेरो अवलंबन मुजमांही ॥४९॥ सवैया तेइसाः॥— सम्यकवंत कहे अपने गुनमें नित राग विरोधसुँ रीतो, मैं करतूति करों निरवंछक, मोह विषे रस लागत तीतो; सुद्ध सुचेतनको अनुजौ करि, मैं जग मोह महा जड जीतो, मोष समीप जयो अब मो कहुं काल अनंत इही विधि वीतो ॥ ५० ॥ दोहराः॥— कहे विचछन में सदा, रह्यो ज्ञान रस राचि, सुद्धातम अनुजूति सों, खलित न होइ कदाचि ॥ ५१ ॥ पूर्व करम विष तरु जए, उदे जोग फल फूल; में इन्हको नहिं जोगता, सहज होहुं निरमूल ॥ ५२ ॥

अर्थः— हुं त्रणे कालमां क्रिया करणीथी न्यारो छुं. मारे कर्मथी संग नथी तो क्रियाथी संगती केम थाय ? मारुं पद के० स्वरूप, चिद्विलास के० ज्ञानविलास छे, ते जगत्मां अजवालु छे. अने राग द्वेष मोहजाव वर्त्ते छे, तेतो मारुं स्वरूप नथी. मारो अवलंब आधार मारा स्वरूपमां छे ॥ ४९ ॥ समकिती जीव पोताना गुण कहेछे. हुं नित्य प्रत्ये राग द्वेष मोहथी, रीतो के० रिक्त एटले रहित छुं. हुं जे क्रि

या करुंछुं ते राग द्वेष विना वांछारहित करुंछुं. अने जे ए विषय रस छे ते, मोहती तो के० मने तिक्त लागेछे एटले कडवो लागेछे. पोतानी शुद्ध चेतनानो अनुभव करीने में जगत्मां मोहरूप महासुभट जीत्यो. मारुं एवुं स्वरूप पामीने हुं मोक्षने सन्मुख थयो, हवे मने एवी रीतथीज अनंत काल वीतो! एटले अनंत काल लगे एवोज रहुं ए आशंसा छे ॥ ५० ॥ विचक्षण ज्ञानी पुरुष आशंसा करीने कहे के हुं सदा ज्ञान रसमां राची रहुं अने हुं शुद्ध आत्मना अनुभवथी कोइ पण कालमां स्खलित न थाउं ! ॥ ५१ ॥ ए पूर्व कृत पुण्य पापरूप जे कर्म छे, ते विष वृक्ष जाणवा अने ते कर्मना उदयनो जे भोग छे ते विष वृक्षनां फल फुल छे. हुं आ उदय भोगनो भोक्ता नथी. राग द्वेषथी रहित छुं. अनादिकालना साथे लागेला विषय भोग छे तेसहज निर्मूल थाय ॥ ५२ ॥

हवे उदासीनताने वैराग्य कहिये तेनो महिमा कहेछेः–अथ वैराग्यमहिमाकथनः–

॥दोहराः॥–जो पूरव कृत कर्म फल, रुचिसों भुंजे नांहि; मगन रहे आठो पहुर, शुद्धातम पदमांहि ॥ ५३ ॥ सो बुध कर्मदसा रहित, पावे मोष तुरंत; भुंजे परम समाधि सुख, आगम काल अनंत ॥ ५४ ॥

अर्थः– जे पूर्वकालमां कर्म कर्युं, तेनुं फल उदय थयुं, ते फलथी रुचि लगाडी भोगवे नही अने आठे प्रहर शुद्ध आत्मपदमां मग्न रहे ॥ ५३ ॥ तेज पंडित कर्म दशा रहित थईने तरत मोक्षपद पामे, ते पछी आगामिक कालमां अनंत काल लगी परम समाधिनुं सुख भोगवे ॥ ५४ ॥

हवे ज्ञानि पुरुषनो क्रमे क्रमे महिमा वधे ते कहेछेः– ज्ञानी पुरुष महिमा कथनः–

॥छप्पय छंदः॥– जो पूरव कृतकर्म, विरष विष फल नहि भुंजे; जोग जुगतिकारज करंत ममता न प्रजुंजे; राग विरोध निरोध संग विकलप सवि छंडे, शुद्धातम अनुभौ अभ्यासि सिव नाटक मंडे; जो ज्ञानवंत इह मग चलत, पूरत व्है केवल लहे; सो परम अतींद्रिय सुखविषे, मगन रूप संतत रहे ॥ ५५ ॥

अर्थः– जो ज्ञाता थईने पूर्व कृतकर्म रूप वृक्षना विष फलने भोगवे नही एटले इष्ट फलथी रति न उपजे, अनिष्ट फलथी अरति न उपजे एवो ज्ञाता जे छे, ते मन वचन कायाना योगे करी युक्त छे, तेथी जोगनी गति के० प्रवृत्तिये कार्य करेछे, पण कार्यविषे ममता प्रजुंजे नही, एरीते राग द्वेषनो निरोध करीने योगना संगथी जे विकल्प उठेछे, ते सर्व छांडे, शुद्ध आत्माना अनुभवनो अभ्यास करीने शिवनाटक के० जे थकी जीवन्मुक्ति होय एवुं नाटक मांडे. जो ज्ञानवंत पुरुष एहिज मार्गे चा

ले तो पूर्ण स्वज्ञाव पामीने केवल ज्ञान पामे. पढी केवल ज्ञान पामीने उत्कृष्ट अ तींद्रिय सुखनेविषे निरंतर मग्न रहे. ॥ ५५ ॥

हवे शुद्ध आत्मा द्रव्य ढे तेनुं वर्णन करेढेः–अथ शुद्ध आत्मदर्वेवर्ननः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– निरन्नै निराकूल निगम वेद निरन्नेद, जाके परगासमें जग त माइयतु है; रूप रस गंध फास पुदगलको विलास, तासों उदवंश जाको जश गा इयतु है, विग्रहसों विरत परिग्रहसें न्यारो सदा, जामें जोग निग्रहको चिन्ह पाइ यतु है; सो है ज्ञान परवान चेतन निधान ताहि, अविनाशी ईश मानी सीस नाइ यतु है; ॥ ५६ ॥ जैसो नर न्नेदरूप निहचैं अतीत हुंतो, तेसो निरन्नेद अब न्नेदको न गहेगो; दोसे कर्म रहित सहित सुख समाधान, पायो निज थान फिरि बाहिर न वहेगो; कबहु कदाचि अपनो सुन्नाउ त्यागि करि, राग रस राचिके न परवस्तु गहेगो; अमलान ज्ञान विद्यमान परगट न्नयो, याही न्नांति आगम अनंत काल र हेगो ॥ ५७ ॥ जबहितें चेतन विन्नाउसों उलटि आपु समौं पाइ अपनो सुन्नाउ ग हि लीनो है; तबहीते जोजो लेन जोग सो से सब लीनो, जो जो त्याग जोग सो सो सब ढांडि दीनो है; लेवेकौ न रही ठोर त्यागिवेकों नांही और, बाकी कहा उ वय्यो जु कारज नवीनो है; संग त्यागि अंग त्यागि वचन तरंग त्यागि, मन त्यागि बुद्धि त्यागि आपा सुद्ध कीनो है ॥ ५८ ॥

अर्थः–जे निर्न्नय केहेवाय ढे, निराकुल केहेवाय ढे, निगम के० उत्कृष्ट अर्थ केहे वाय ढे, वेद के० ज्ञानरूप केहेवाय ढे, जेनो न्नेद नथी एवो प्रकाशवंत पदार्थ ढे; जे मां सर्व जगत् शमाय ढे; अने जे ए रूप रस गंध स्पर्श जे विनाशी पदार्थो ढे, तेतो पुद्गलनो विलास ढे, तेना उदवंस के० तेथी रहित जे ढे तेनो जसगाइए ढे. वली जे विग्रह के० शरीर तेथी विरत के० रहित अने द्रव्यन्नावरूप परिग्रह तेथी जुदो ढे, जेमां सदाय त्रणे योगथी रहित पणानुं चिन्ह के० लक्षण पामीए ढे, एवो पदार्थ तो ज्यां ज्ञान ढे त्यां ते पदार्थ ढे. तेथी ज्ञान प्रमाण ढे. अने चेतनानो निधान ढे. तेने अविनाशी ईश्वर मानीने मस्तक नमावीए ढे ॥ ५६ ॥ हवे बीजुं पण शुद्धात्म द्रव्य सिद्धनुं वर्णन करेढेः–अतीत कालमां पण शुद्धात्म द्रव्य निश्चय नयथी अन्नेद रूप हतुं अने व्यहारनये न्नेदरूप हतुं. हवे केवल रूप पामिने निर्न्नेद के० न्नेद र हित जाणीए. हवे एवी दशामां कोण मूर्ख न्नेद ठरावशे ? नैयायिक लोक जे पोता नी प्ररूपणामां समाधियोगआत्माने कर्म रहित मानीने फरी संसारमां अवतार मानीने तेने नमस्कार करेढे, पण जे कर्म रहित थयो, सुख समाधान सहित थयो, पोतानुं स्थानक पाम्यो, ते पाढो बाह्य संकटमां केम पमशे? जेम धरतीनो न्नार उता

रवा ईश्वर अवतार लेइने दुःख पामेछे एवुं मिथ्यादृष्टिनी केहेवतमांछे, पण जीव शुद्ध थईने फरी राग रसमां राचिने कोई कालमां आपणो स्वभाव त्याग करीने पर वस्तुने ग्रहे नही. केमके अम्लान ज्ञान के० जे फरी करमाय नही एवुं ज्ञान विद्यमान कालविषे प्रगट थयुं तेतो आगामिक कालमां अनंत काल लगी रहेशे॥५७॥ हवे फरीथी अवतार लेवाना कारणनो अभाव कहेछेः— अनादिकालथी चेतन मिथ्यात्व भावरूप विभावमां रमि रह्यो हतो ते समयप्रस्ताव पामीने, विभावथी उपरांठो थई पोतानो शुद्ध स्वभाव हतो ते पोतेज लइ लीधो, तेथी ज्ञान दर्शनादिक भाव लेवा योग्य हतो ते लीधो, अने राग द्वेषादिक भाव त्यागवाजोग हतो ते सर्वे त्यागी दीधो; ते लेवानुं बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही, अने त्यागवानुं पण बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही. हवे इहां बाकी नवुं कार्य करवानुं शुं रह्युंछेके जे कार्य करवाने फरी अवतार लेवो पडे? जे उपाधिसंग हतो तेतो सर्वे त्यजीने एटले अंग त्याग के० काय योग त्यागिने, वचन तरंग त्याग के० वचन योग त्यागीने तथा मनोयोग त्यागिने बुद्धि त्याग के० विकल्प त्यागीने आत्माने शुद्ध करी लीधो ॥ ५८ ॥

हवे बाह्य भेष धरवो ते द्रव्यलिंग कहिए ते एकांतपणे मोक्षनुं कारण नथी ते कहेछेः— अथ एकांत द्रव्यलिंगीकी निंदाः—

॥ दोहराः॥— शुद्ध ज्ञानके देह नहिं, मुद्रा भेष न कोइ; ताते कारन मोषको, दरवलिंगि नहि होइ ॥ ५९ ॥ द्रव्य लिंग न्यारो प्रगट, कला वचन विन्यान; अष्ट महारिधि अष्ट सिधि, एऊ होहि न ज्ञान ॥ ६० ॥

अर्थः— आत्मा तो शुद्ध ज्ञानमय छे. अने शुद्ध ज्ञानने देह नथी, अने ज्यारे देह नथी त्यारे ज्ञान ने मुद्रा भेष पण कोइ नथी. तेथी मोक्षनुं कारण द्रव्य लिंग होय नही. एटले भेष लीधे मुक्ति नथी ॥ ५९ ॥ ज्ञानथी द्रव्यलिंग तो प्रगट पणे जुदुंज छे. कलाविज्ञान, वचन विज्ञान, ते ज्ञानथी न्यारां छे. तथा आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, बुद्धि, उपयोग, संग्रह संलीनता, ए अष्ट महा रिद्धि छे. अने अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व, वशित्व, ए अष्टमहा सिद्धि छे. ते पण ज्ञान नथी ॥ ६० ॥

हवे एटलां महिमावंत स्थानक छे, तो पण ए ज्ञानना स्थानक नथी ते कहेछेः—

अथ ज्ञान अभाव स्थानक कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—भेषमें न ज्ञान नहि ज्ञान गुरु वर्त्तनमें, मंत्र जंत्र तंत्रमें न ज्ञानकी कहानी है; ग्रंथमें न ज्ञान नहिं ज्ञान कवि चातुरीमें वातनिमें, ज्ञान नहीं ज्ञान कहा वानी है; तातें भेष गुरुता कवित्त ग्रंथ मंत्र वात, इनतें अतीत ज्ञान चे

तना निसानी है, ज्ञानहीमें ज्ञानन्हि ज्ञान ठौरठौर कहू, जाके घट ज्ञान सोइ ज्ञानको निदानी है ॥ ६१ ॥

अर्थः— वेषमां ज्ञान न पामीए अने गुरुवाई के० गर्वपणुं महोटाइ पणुं तेमां पण ज्ञाननुं स्थानक नथी अने मंत्र, तंत्र, यंत्रमां ज्ञाननी कहेणी नथी तथा ग्रंथ शास्त्र पढवाथी पण ज्ञान प्राप्त थतुं नथी; कवितामां, चातुर्यतामां ज्ञान नथी. वातनी चतुराइमां ज्ञान नथी; अने जे वाणी छे ते शुं ज्ञान छे? अर्थात् वाणी पण ज्ञान नथी. माटे नेख, गुरुताइ, कविताई, ग्रंथ, मंत्र, यंत्र, तंत्र, वात ए सर्वेथी अतीत के० जुदीज ज्ञान वस्तु छे, ते चेतननी सहिनाणी छे. ज्ञानतो क्यारे जाणवुं, के जे अशुद्ध पणे होय तेतो ज्ञान न कहेवाय, माटे पूर्वे जे स्थानक कह्यां तेथी जूदीज कोइ ज्ञान वस्तु छे, माटे जेना घटमां ज्ञान प्रगटयुं, तेज ज्ञाननुं मूलकारण छे ॥ ६१ ॥

हवे जेपूर्वे वेष प्रमुखना धारक कह्या तेनी मूढता कहि देखाडे छेः—

अथ नेषादि धारक मूढ यहु कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— नेष धरे लोगनिकों वंचे सो धरम ठग, गुरु सो कहावे गुरु वाई जाते चहियें; मंत्र तंत्र साधक कहावे गुनी जादूगर, पंमित कहावे पंमताई जामें लहिये; कवित्तकी कलामें प्रवीन सो कहावे कवि, वात कही जाने सो पवारगीर कहिये; ए तो सब विषेके निखारी मायाधारी जीव, इन्हकों विलोकिकें दयाल रूप रहिये ॥ ६२ ॥

अर्थः— वेष धरीने लोकोने ठगे, जरमावे ते धर्म ठग कहेवाय, एटले तेने गुरुतानी चाहना होय ते गुरु केहेवाय. मंत्र, यंत्र, तंत्रादिक गुणनो जे साधक होय ते जादूगर केहेवाय. अने जेमां पंमिताई रही छे, ते पंडित केहेवाय. कवित चातुरिनी कलामां जे प्रवीण होय तेतो कवि केहेवाय. वातो बनावी बनावीने कही जाणे ते पवारगर केहेवाय एटली अवस्थाना धरनारा छे. ते सर्वे इंद्रियविषयना याचक मायाधारी जीव छे. तेने जोईने मनमां एवुं विचारिये के अहो! इति आश्चर्य! ए बापडा केम पोतानो स्वार्थ खोयछे, एवी रीते तेना उपर दयालरूप थई रहेवुं ॥६२॥

हवे जीवना अनुजवनी योग्य दशा कहे छेः— अथ अनुजव जोगता कथनः—

॥ दोहराः॥— जो दयालता जाव सो, प्रगट ज्ञानको अंग; पैं तथापि अनुनो दशा, वरतै विगत तरंग ॥ ६३ ॥ दरशन ज्ञान चरण दशा, करे एक जो कोइ, थिर व्है साधे मोष मग, सुधी अनुजवी सोइ ॥ ६४ ॥

अर्थः— जे आत्माने शुद्ध दयालता जाव प्रगटेछे, तेतो ज्ञाननुं अंग प्रगट थयुं एम जाणीए. पण अनुजव दशा जे छे, ते तो विगततरंग के० विकल्प रहित वर्त्ते॥६३॥

वली दर्शन ज्ञान चारित्रनी दशाने विकल्प रहित एकपणे आत्माने जुएछे, एज रीते स्थिररूप थइने मोक्ष मार्गने साधे छे तेनेज सुधी के० सुबुद्धिवंत अनुभववंत कहियें॥६४॥
हवे निःसंदेह शुद्ध स्वरूप पामवुं तेनो महिमा कहे छेः—अथ अनुभव महिमाकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जोइ दृग् ज्ञान चरणातममें ठवि ठोर, भयो निरदोर पर वस्तुकों न परसे; सुद्धता विचारे ध्यावे शुद्धतामें केलि करे, सुद्धतामें थिर व्हे अमृत धारा वरसै; त्यागी तन कष्ट व्हे स्पष्ट अष्ट करमको, करे थान भ्रष्ट नष्ट करे ओर करसे; सोई विकलप विजई अलप कालमांहि, त्यागि भो विधान निरवान पद दरसे ॥ ६५ ॥

अर्थः— जे कोई दर्शन ज्ञान चारित्ररूपी आत्मानेविषे ज्ञानने ठेकाणे ठेरावीने वाट बांधे, त्यां निरदोर के० संशय रहित थईने परवस्तुनो स्पर्श न करे, त्यां निश्चय नय ग्रहण करीने शुद्धताज विचारे, शुद्धताज ध्यावे, अप्रमादि थईने शुद्धतामां केलि करे, शुक्ल ध्यानना प्रथम पायामां प्रवेशकरी शुद्धतामां थिर थईने महा आनंदरूप अमृतनी धारा वरषावे. आंही अवयवरूप लक्षण छे. तेथी शरीरना कष्टने त्यागेछे. लीनताथी शरीर कष्ट न जाणे त्यारे स्पष्ट थईने एटले वीर्य फोरवीने आठे कर्मनां स्थानने भ्रष्ट करे एटले कर्मोने सत्ता थकी चलायमान करे अने नष्ट करे के० निर्जरा करे ऐसे औरहुंकैसे के० ते जीव कर्मोने आकर्षिने निर्जरावे ते जीव विकल्प जालनो विजय करीने अल्प कालमांज भो विधान के० भवश्रेणिने त्यागी मोक्ष पद देखे एटले पामे ॥ ६५ ॥

हवे शिष्य पुछे छे के ए अनुभव पामवो महा विषम छे ते उपर गुरु शिक्षा देछेः—

अथ अनुभव शिक्षा कथनः—

॥ चौपाईः ॥—गुन परजैमे दृष्टि म दीजे; निरविकलप अनुभौ रस पीजे; आप समाइ आपमे लीजे; तनपा मेटि अपनपो कीजे ॥ ६६ ॥ दोहराः ॥—तजि विभाव हुइजे मगन, सुद्धातम पदमांहि; एक मोष मारग यहे, और दूसरो नांहि ॥ ६७ ॥

अर्थः—आत्माना गुण पर्याय अनेक छे, पण तेमां दृष्टि न देवी. मात्र निर्विकल्प द्रव्यनो अनुभव रस पीवो. आत्मा आधारमां आत्मानो समास करी लेवो एटले लय लगाडवी, एटले आपणे शरीर धारी छीए, ते दशानुं काय योग पणुं छे ते मटावी आत्म स्वरूप करीए ॥ ६६ ॥ आत्माना मूल स्वभाव विना बीजुं सर्व विभाव पणु छे, तेहने त्यजीने शुद्ध आत्माना चिदानंद स्वभावमांज मग्न थइये, एक अद्वितीय मोक्षनो मार्ग एज छे. तेथी बीजो कोइ मोक्षनो मार्ग नथी ॥ ६७ ॥

हवे शुद्ध आत्स्वरूपना अनुभवविना महाव्रत्ति पण द्रव्यलिंगी जाणवा ते कहेछेः–

अथ द्रव्यलिंगी व्यवस्था कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कइ मिथ्या दृष्टि जीव धारे जिन मुद्रा भेष, क्रियामें मगन रहे कहे हम जती है; अतुल अखंड मलरहित सदा उदोत, ऐसे ज्ञान भाव सों विमुख मूढमति है; आगम संभाले दोष टाले विवहार भाले, पाले वृत्त यद्यपि तथापि अविरती हैं; आपुकों कहवे मोष मारगके अधिकारी मोषसों सदीव रुष्ट दुष्ट दुरगति है. ॥ ६७ ॥ दोहराः॥–जे विवहारी मूढ नर, परजे बुद्धी जीव, तिनको बाहिज क्रीयको, हे अवलंब सदीव. ॥ ६९ ॥

अर्थः–कैक जीव मिथ्या दृष्टि छे अने आचार्य उपदेश रसथी जिन मुद्राभेषधारी छे अने साधुनी क्रियामां मग्न रहेछे, अने पोताना मनथी अथवा कोईना पूछवाथी अमे जति छइये एम कहेछे एटले महाव्रत्ति छैये. अने जेनी तुलना नथी एवुं अखंड के० संपूर्ण विभाव मलरहित सदा प्रकाशवंत पोतानुं अनुभवरूप जे ज्ञान भाव छे तेथी विमुख छे माटे मूढमति छे. ते क्रिया करेछे, आगम सिद्धांत संभारेछे, अने आहारादिकना दोष टाली व्यवहारमां दृष्टि राखेछे, एम यद्यपि महाव्रत्त पाले छे, तोपण निश्चय नयथी ए अविरतीज कहीए. एवा जे जीवछे ते पोते मोक्ष मार्गना अधिकारी लोकमां कहेवायछे. मोक्षथी ए सदा रुठयाज रहेछे एटले अभव्यने पण क्रिया केवल नवमा ग्रैवेयकसुधी गति कही छे; पाछो ए दुख दुर्गतिमां पडेछे.॥६७॥ जे कोइ मूर्ख मनुष्य व्यवहारमांज रहे अने जे जीव पर्याय बुद्धिवंत छे ते शुभ गतियो जीव होय तो भली एवी पर्याय बुद्धि धारेछे तेने तो बाह्य क्रियानुं अवलंबन सदाय कह्युंछे ॥ ६९ ॥

हवे व्यवहारे महामूढ छे तेनुं वर्णन करेछेः– अथ महामूढ बर्ननः–

॥ चोपाईः॥–जेसे मुगध धान पहिचाने; तुष तंदुलको भेद न जाने; तैसे मूढमती व्यवहारी; लखे न बंध मोष विधि न्यारी ॥७०॥ दोहराः॥–कुमति बाहिज दिष्टिसो, बाहिज क्रिया करत, माने मोष परंपरा, मनमें हरष धरंत ॥ ७१ ॥ शुद्धात्तम अनुभो कथा, कहे समकिती कोइ, सो सुनिके तासों कहे, यह सिवपंथ न होइ ॥ ७२ ॥

अर्थः–जेम कोइ मननो भोलो पुरुष छे ते धानने तो ओलखे पण तूस अने तंदुलमां भिन्नता छे ते न जाणे तेम, जे व्यवहारी मूढमति छे तेतो बंधविधि अने मोक्षविधि जूदो जूदो लखी शके नही; केवल विधि जाणे ॥ ७० ॥ जे कुमति होय ते पर्याय बुद्धिथी शाता वेदनीय पणे समाधि सुख जाणीने बाह्य द्रष्टिथी तेनी हेतुरूप बाह्यक्रिया करे अने बाह्यक्रियामां मग्न होय तो तेथी तेने निर्जरा मानीने मोक्ष

परंपरा माने अने मनमां आनंद पामे ॥ ७१ ॥ ते मूढने कोइ समकिती जीव शुद्ध आत्मानी अनुभव दशाने मोक्षनुं कारण कहे तो तेनुं वचन सांभळीने तेने एवुं कहे के ए रीतेतो मोक्षमार्ग थाय नहि ॥ ७२ ॥

हवे मूढ तथा ज्ञानीनुं लक्षण कहेछेः—अथ मूढ तथा ज्ञानी लक्षण कथनः—

॥ कवितः॥— जिन्हके देह बुद्धि घट अंतर, मुनि मुद्रा धरि क्रिया प्रवानहि; ते हिय अंध बंधके करता, परम तत्वको भेद न जानहि; जिन्हके हिये सुमतिकी कनिका, बाहिज क्रिया भेष परमानहि; ते समकिती मोष मारग मुष, करि प्रस्थान भव स्थिति भानहि ॥ ७३ ॥

अर्थः— जेना हीयामां देह बुद्धि रहेछे एटले देहधारी ने पण भिन्नपणे जाणतो नथी अने मुनीश्वरनी मुद्रा धारिने क्रियानेज प्रमाण करेछे, तेतो हीयानो अंध छे अने बंधनो करनार छे अने परम तत्त्वके० मोक्ष तत्त्वना भेद ने जाणतो नथी अने जेना हैयामां सम्यग् दृष्टिने लीधे सुबुद्धिनी करणीका जागी तेतो बाह्य क्रियाने भेष रूप प्रमाण करेछे. तेनेतो समकिती कहीए;ते जीव मोक्ष मार्ग ने सन्मुख प्रस्थान के० प्रयाण करीने भवस्थितिने निश्चयेभांजे छे ॥७३॥

हवे संक्षेपथी निःकेवल उपादेयरूप मोक्ष मार्गनो उपदेश देछेः—

अथ मोक्षको उपदेश संक्षेप मात्र कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— आचारिज कहे जिन वचनको विसतार, अगम अपार है कहेंगे हम कितनो!, बहुत बोलवेसों न मकसूद चुप भली, बोलीए सुवचन प्रयोजन है जितनो; नानारूप जलपसों नाना विकल्प उठे, ताते जेतो कारिज कथन भलो तितनो; शुद्ध परमातमको अनुभौ अभ्यास कीजे, यहे मोष पंथ परमारथ है इतनो ॥ ७४ ॥ दोहराः ॥— सुद्धातम अनुभोक्रिया, शुद्ध ज्ञान दृग दौर, मुकति पंथ साधन वहै, वाग जाल सब और ॥ ७५ ॥

अर्थः—आचार्यजी शिष्यने कहे छे. अहो! शिष्य! जिनेश्वरनां वचननो विस्तार तो नय प्रमाण करीने अगम अपार छे. अमे केटलोक कहीए, आहीं बहु बोलवुं ते अमारी मकसुद नथी तेथी चुप रहेवुं तेज ठीक छे, अने जेटलुं प्रयोजन छे तेटलुंज बोलवुं पण नाना प्रकारनु जल्प के० बोलवुं कहिये तो नाना प्रकारना विकल्प उठेछे, तेथी जे एक कार्य छे तेपुरतुंज बोलवुं बस छे;शुद्ध परमात्म द्रव्यना अनुभव योगना अभ्यास करीए एज मोक्ष मार्ग जाणीए, बधी वातमां एटलोज परमार्थ छे ॥ ७४ ॥ जे क्रियाथी शुद्ध आत्मानो अनुभव थाय तेज क्रियाछे अने शुद्ध ज्ञान दृष्टिनी दोर तेज मुक्ति पथनुं कारण छे. बीजु सर्व वचनाडंबरछे ॥ ७५ ॥

हवे शुद्ध जीव द्रव्यनुं वर्णनः– अथ शुद्ध जीव द्रव्य वर्ननः–

॥ दोहराः–॥ जगत चक्षु आनंदमय, ज्ञान चेतना जास; निर्विकल्प शाश्वत सुथिर, कीजे अनुज्ञौ तास. ॥ ७६ ॥ अचल अखंमित ज्ञानमय, पूरन वीतममत्व, ज्ञान गम्य बाधा रहित, सो है आतम तत्त्व. ॥ ७७ ॥

अर्थः– जे पदार्थ जगत्मां चक्षुजेवो वे अने आनंदमय वे,जेनी ज्योति ज्ञान अने चेतना वे, जेमां कोई विकल्प नथी, ज्ञेद नथी, अने शाश्वतो वे तथा स्थिर वे, जे पदार्थनो अनुज्ञव करीए तो मुक्ति पामीए. ॥ ७६ ॥ जे कोईकाले पोताना स्वजावथी चलायमान थाय नही एवो अखंडित ज्ञानमयवे, संपूर्ण समाधिवंत अने ममत्व रहितवे, इंद्रिय ग्राह्य नही तेथी ज्ञान गम्य वे अने अवेद्य अज्ञेद्यपणाथी बाधा रहित वे, तेज आत्म तत्त्व कहीए. ॥ ७७ ॥

॥इति श्री समयसार नाटक ग्रंथनो दशम सर्व विशुद्धि नामा द्वार बालावोधरूप संपूर्ण थयो.॥

॥ दोहराः ॥– सरव विसुद्धी द्वार यह, कह्युं प्रगट शिवपंथ; कुंद कुंद मुनिराज कृत, पूरन ज्ञयो गरंथ. ॥ ७८ ॥

अर्थः– जे द्वारमां आत्मानी सर्व विशुद्धि पामिये तेज द्वार कह्युं, ते प्रगटपणे मोक्षनो मार्ग कह्यो वे. श्री सीमंधर स्वामीनी वाणी सांज्ञलीने श्री कुंदकुंदाचार्ये आग्रंथ कीधो. एवी संप्रदाय वातवे, ते ग्रंथ संपूर्ण थयो. ॥७८॥

हवे ग्रंथ कर्त्तानुं नाम अने ग्रंथनो महिमा कहेवेः–अथ ग्रंथ व्यवस्था कथनः–

॥ चोपाईः ॥– कुंद कुंद मुनिराज प्रवीना; तिन्ह यह ग्रंथ ईहालों कीना; गाथा बद्ध सु प्राकृत बखानी; गुरु परंपरा रीति बखानी. ॥७९॥ ज्ञयो ग्रंथ जगमें विख्याता, सुनत महा सुख पावहि ज्ञाता; जे नवरस जगमांहि वखाने; ते सव रसमें सार समाने. ॥ ८० ॥ दोहराः–॥ प्रगट रूप संसारमें, नवरस नाटक होइ; नवरस गर्जित ज्ञानमें, विरला जानै कोइ ॥ ८१ ॥

अर्थः– कुंद कुंद नामे मुनिराज ते अध्यात्ममां प्रवीण थया, ते आचार्ये आ सर्व विशुद्धिनामा द्वार लगि आ ग्रंथ कीधो. ते ग्रंथ प्राकृत गाथाबद्ध ज्ञलीवाणी प्रकाशी आ वाणीने गुरु संप्रदायथी अमृतचंद्र आचार्ये वखाणी ॥ ७९ ॥ आ ग्रंथनी टीका व्याख्यान करवाथी कुंद कुंदाचार्यनो करेलो ग्रंथ जगत्मां विख्यात थयो, तेने सांज्ञली ज्ञाता होय ते महासुख पामे. जगत्मां जे नवरस वखाण्या वे, ते सर्व रसमां सार रस ते ए समयसार नाटकमां समाई रह्यावे. ॥ ८० ॥ संसारमा ए वात प्रगट वे के जे नाटक होय ते नव रसमय होय, पण शांतरसमां जे ज्ञान वे, तेमां नवे

रस गर्भित छे. तेने तो कोई विरलाज जाणेछे.॥८१॥ हवे नव रसनुं वर्णन करतां नव रसनां नाम कहेछे:-अथ प्रथम नव रसके नाम:-॥ कवित्त छंद:॥-प्रथम शृंगार वीर दूजो रस, करुना तृतिय जगत सुखदायक; हास्य चतुर्थ रुद्र रस पंचम, छठम सुरस विभत्र विभायक; सत्तम भय अष्टम रस अदभुत, नवमो शांत रसनिको नायक; ए नवरस एई नव नाटक, जो जहों मगन सोइ तहों लायक ॥ ८२ ॥

अर्थ:-प्रथम शृंगार रस,बीजो वीर रस,अने त्रीजो करुणा रस,ते जगत्मां सुखदायक छे.चोथो हास्य रस,पांचमो रौद्र रस,अने छठो विभत्स रस, ते विभायक कहेतां चित्तनो भंग करनार छे. सातमो भय रस,आठमो अद्भुत रस, अनेनवमो शांत रस ते सर्व रसनो नायक छे. ए नव रस कहिए. ते नव रस नाटक रूप होय. जे प्राणी जे रसमां मग्न थई रह्यो छे तेने ते रस लायक छे. ॥ ८२ ॥

हवे नव रसना स्थाई भाव कहेछे;-अथ रस अवस्था कथन:-

॥ सवैया इकतीसा: ॥-सोभामे सिंगार वसै वीर पुरुषारथमे, हियेमे कोमल करुना रस वखानिये; आनंदमे हास्य रुंरु मुंरुमे विराजे रुद्र, वीभछ तहां जहां गिलान मन आनिये; चिंतामे भयानक अथाहतामे अदभुत, मायाको अरुचि तामे शांत रस मानिये; एई नव रस भवरूप एई भावरूप, इन्हको विलेछन सुदृष्टि जग जानिये. ॥ ८३ ॥

अर्थ:-शोभामां शृंगार रसनो निवास छे. अर्थ साधन रूप पुरुषार्थमां वीर रसनो वास छे. हृदयनी कोमलतामां करुणा रसनो वास छे. आनंदनी प्राप्तिमां हास्य रसनो वास छे. रण संग्राममां रूंड मूंडपडेला होय, त्यां रौद्र रसनो वास छे. कोई सुगामणु स्थानक जोई मनमां ग्लानी आवे, त्यां विभत्स रसनो वास छे. चिंतामां भय रसनो वास छे. जे कोई अथाग अघटमान वस्तु जाणिए त्यां अद्भुत रसनो वास छे. ज्यां मायानी अरुचि होय तहां शांत रसनो वास प्रमाण कहिए. ए नव रस छे ते भवरूप के० संसार रूप पण छे, अने एहिज नव रस भाव के० उत्तम भावरूप पण छे; ए नव रसनो विलेछन के० विवेक जे छे ते तो जगत्मां सुदृष्टिथी जाणीए ॥८३॥

हवे एज नव रस भावरूप ज्ञानमां गर्भित छे ते एकज ठेकाणे देखाडे छे:-

अथ नव रस ज्ञान गर्भित एकीभूत कथन:-

॥ छपय छंद:॥- गुन विचार सिंगार, वीर उद्दिम उदार रुप; करुना सम रसरीति, हासहिरदे उछाह सुख; अष्ट करम दल दलन, रुद्र वरते तिहि थानक; तन विलेछ वीभछ, दुंद दुखदसा भयानक; अद्भुत अनंत वल चिंतवत, शांत सहज वैराग धुव; नव रस विलास परगास तव, जव सुवोध घट प्रगट हुव ॥ ८४ ॥

अर्थः— ज्ञानादिक गुणेकरी आत्म विभूषित देखिये त्यांतो शृंगार रस उपज्यो १, अने आत्मानेविषे निर्जरा प्रमुखनो उद्यम देखिये त्यांतो उदार प्रधान वीर रस छे २, ज्यारे आत्माने उपशम रसनी रीते देखिये त्यारे करुणा रस जाणीए ३, ज्यारे एने अनुभवमां उत्साह अने सुखउपजे छे ते तो हैयामां हास्य रस उपजे छे ४, महा बलवान आठ कर्मना अनंत प्रदेशी दल छे तेनो दलन करतां देखीए तो त्यां आत्मा रौद्र रसमयि थई रह्यो छे ५, ज्यारे पुद्गलनुं स्वरूप विचारीये छीए त्यारे बिभत्स रस छे ६, ज्यारे आत्मा पोतानुं स्वरूप न जाणे अने दुंद दुःखदशामां पड्यो छे, त्यारे तो भय रसमां देखीए ७, अनंत वीर्यनुं ज्यारे चिंतवन करीए त्यारे तो आत्मा अद्भुत रस पामे ८, ज्यारे राग द्वेष निवारीने सहज वैराग्यने ध्रुव के० निश्चल धारे छे, त्यारे आत्मा शांत रसमय पामीए ९, ए नव प्रकारना भाव रसना विलास नो प्रकाशतो ज्यारे घटमां सुबुद्धि प्रगट थाय त्यारेज थाय. ॥ ८४ ॥

हवे कुंदकुंदाचार्यकृत आ ग्रंथ छे तेनी स्तुति करेछेः—अथ ग्रंथ स्तुतिः—

॥ चोपाईः ॥—जब सुबोध घटमें परगासे, तब रस विरस विषमता नासे, नव रस लखे एक रसमांही, ताते विरस भाव मिटि जांही. ॥८५॥ दोहरा—॥ सब रस गर्भित मूल रस, नाटक नाम गरंथ; जाके सुनत प्रवान जिय, समुझे पंथ कुपंथ. ॥ ८६ ॥

॥चोपाईः॥—बरते ग्रंथ जगत हित काजा, प्रगटे अमृतचंद मुनि राजा; तब तिन्ह ग्रंथ जानि अति नीका, रची बनाइ संसकृत टीका ॥ ८७॥ दोहराः ॥—सर्व विशुद्धि द्वारलों, आए करत बखान; तब आचारज भक्तिसों, करे ग्रंथ गुन ज्ञान. ॥ ८८ ॥

॥ चोपाईः ॥—अद्भुत ग्रंथ अध्यातम बांनी, समुझे कोऊ विरला ज्ञानी, यामे स्यादवाद अधिकारा, ताको जो कीजे विसतारा ॥ ८९ ॥ तो गरंथ अति शोभा पावे वह मंदिर यह कलस कहावे, तब चित अमृत वचन गढखोले, अमृतचंद आचारज बोले ॥९०॥ दोहरा.—॥ कुंदकुंद नाटकविषे, कह्यो दरब अधिकार, स्यादवादने साधिमे, कहों अवस्था द्वार ॥ ९१ ॥ कहों मुकति पदकी कथा, कहों मुक्तिको पंथ, जैसे घृत कारज जहां, तहों कारन दधिपंथ ॥ ९२ ॥ अर्थ स्पष्ट ॥

॥ चोपाई ॥—अमृतचंद बोले मृदु बानी, स्यादवादकी सुनो कहानी, कोऊ कहै जीव जगमांहीं, कोऊ कहै जीव है नाही ॥ ९३ ॥ दोहराः ॥—एक रूप कोऊ कहै, कोऊ अगनित अंग; छिन भंगुर कोऊ कहै, कोऊ कहै अभंग ॥ ९४ ॥ नय अनंत इह विधि कही, मिले न काहू कोइ, जो सब नयसाधन करे, स्यादवाद है सोइ ॥ ९५ ॥ स्यादवाद अधिकार अब, कहों जैनको मूल, जाके जाने जगत जन, लहै जगत जलकूल ॥ ९६ ॥

अर्थः—हवे संगतनी वात कहेछेः—ज्यारे घटमां सुबोध प्रकाशे छे, त्यारे ए रसस हित छे अने ए विरस छे. एवो विषय ममता भाव छे, ते सर्व नाश पामेछे. एनो हेतु ए छे के जे नव रस छे तेने एक भाव रसमांज लखे के० जुवे, तेथी विरस भाव मटीने एकज रसमां आत्मानुं रहेवुं थाय. ॥ ७५ ॥ एम सर्व रसोमां गर्भित एक र समय थयलो एवो आ समयसारनाटक नामे ग्रंथ श्री कुंदकुंदाचार्यजीए कह्यो, जेना अर्थ भावने सांभलता प्रमाणिक जीव छे ते मार्ग कुमार्गनो विचार समजे. ॥ ७६ ॥ प्रथम जगत्वासी जीवोने हितकारी कार्यनो ग्रंथ प्रवर्त्तमान थयो ते पछी अमृत चंद नामा आचार्य प्रगट्या तेणे आ ग्रंथ अति श्रेष्ठ जाणीने आ ग्रंथनी टीका व नावी, गाथानुं रहस्य लइने काव्य बंध कह्यो ते कहीएछीए. ॥ ७७ ॥ श्री अमृतचं दजी एज ग्रंथनुं व्याख्यान करता सर्व विशुद्धि द्वार सुधी आव्या. आंही ग्रंथ सं पूर्ण थयो जाणी श्री अमृतचंद्र आचार्य भक्तिना वशथी ग्रंथनुं गुण ज्ञान करे छे. ॥ ७८ ॥ आ ग्रंथ अध्यात्म वाणीमां अद्भुत थयो, पण आ ग्रंथने कोई विरला ज्ञान वंत पुरुष समझे. आ ग्रंथमां स्याद्वादनो अधिकार छे, ते अल्प बुद्धि स्थूलमतिने समजवो मुशकेल छे. तेथी ते स्याद्वादनो जो विस्तार करीये तो सारु. ॥ ७९ ॥ जे थकी आ ग्रंथ अति शोभा पामे एम विचारी आ ग्रंथरूप मंदिर तेना उपर स्याद्वा दनो विस्तार करिये तो ते कलशरूप थाय. त्यारे म्हारा चित्तमां अमृत जेवा वचन गढो के० धारण थइने खुले. एम दोष रहितनी परे श्री अमृतचंद आचार्य बोले छे के ॥८०॥ श्री कुंदकुंदाचार्यना करेला नाटक ग्रंथमां जीव अजीव द्रव्यनो अधिकार कह्यो. हवे हुं स्याद्वाद नयनी अवस्थानो द्वार कहुंछु, अने साध्य वस्तुनी अवस्था नो द्वार कहुंछुं. ॥ ८१ ॥ बाणुमां दोहरानो अर्थ सुलभ छे ॥ ८२ ॥ अमृतचंद आ चार्य एवी कोमल वाणी बोल्या के अहो ! शिष्य! स्याद्वादनी कथा हुं कहुंछुं ते सां भलो. कोई अस्तिवादि तो एम कहे छे के जगतमां जीव वस्तु छे, अने कोई नास्ति वादी कहे छे के, जगत्मां जीव वस्तु नथी. ॥ ८३ ॥ कोई अद्वैत वादी ब्रह्मने एक रूप कहेछे. कोई नैयायिक वैशेषिक जीवने अगणितपणे कहेछे. कोई बौधमतीने लीधे जीवने क्षणभंगुर कहेछे; कोई सांख्यमतीने लीधे जीवने अभंगज कहेछे. ॥ ८४ ॥ अर्थ समजवाना मार्गने नय कहिए, ते समजवाना मार्ग अनंत छे; तेने लीधे नय पण अनंत कहिये; तेमां कोई नय कोई नयने मले नही, विरोधी छे. हवे आंही जे सर्व नयनुं साधन करे, एटले सर्व नयने साचा साधिने देखाडे, तेने स्याद्वादि जाणीए. ॥ ८५ ॥ ते स्याद्वादनो अधिकार हवे हुं सर्व कहुं छुं. एज

स्याद्वाद आगमनुं मूल छे. जे स्याद्वादना जाण प्रवीण जगत्वासी लोक छे ते संसार जलधिनो कांठो पामेछे. ॥ ९६ ॥

हवे नयजालथी शिष्यने संदेह उपज्यो त्यारे प्रश्न करेछेः—अथ शिष्यप्रश्न गुरु उत्तर कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— शिष्य कहे स्वामी जीव स्वाधीन के पराधीन, जीव एक है किधौ अनेक मानि लीजिये; जीव हे सदीव किधौ नाहि है जगतमांहि ? जीव अविनस्वर के नस्वर कहीजिये; सतगुरु कहे जीव है सदीव निजाधीन, एक अविनस्वर दरव दृष्टि दीजिये, जीव पराधीन छिन भंगुर अनेकरूप, नांहि तहां जहां परजे प्रवान कीजीए. ॥ ९७ ॥

अर्थः—प्रथम शिष्य पुछेछे, स्वामी जीव स्वाधीन छे के पराधीन छे? जीव एक छे के गणतिमां अनेक छे? ए केम मनमां जाणवुं. अने जीव कहेवाय छे तो जगत्मां सदाछे के नथी, ए अस्तिपणानो संदेहछे, अने जीव अस्ति के० अविनाशी छे के विनाशी छे. हवे आवी रीतना प्रश्न उपर सद्गुरु कहेछे, के हे! शिष्य! जीव वस्तु जगत्मां छे, पण नास्ति न कहीए, अने ते जीव आपणे स्वाधीन छे. अने एकछे यद्यपि गणतीये अनेक छे, तो पण लक्षणथी एक छे. अविनाशी द्रव्य द्रष्टि दीजे तो एम ज छे, अने जो पर्याय नय प्रमाण करीये तो जीव पराधीन छे, कर्माधीन छे. अने अवचित मरण देखतां क्षणभंगुर छे. गत्यादिक देखतां अनेकरूप छे. वली अजीव पदार्थ स्थापनानी अपेक्षाये नथी. अने जहां पर्याय प्रमाण छे तिहां एछे. ॥ ९७ ॥

हवे द्रव्य क्षेत्र काल भावे करीने सर्व वस्तुनुं अस्तिनास्तिपणुं कहेछेः—

अथ दरव क्षेत्र काल भाव अस्तिनास्ति कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— सर्व खेत्र काल भाव चारो भेद वस्तुहीमे, अपने चतुष्क वस्तु अस्तिरूप मानिये; परकेचतुष्क वस्तु नासति नियत अंग, ताको भेद दर्व परजाय मध्य जानिये; दरवतो वस्तु खेत्र सत्ता भूमिकाल चाल, सुभाव सहज मूल सकति बखानिये, याही भांती परविकलप बुद्धि कलपना, विवहार दृष्टि अंशभेद परवानिये. ॥ ९८ ॥ दोहराः ॥— हे नाही नाही सु है, है है नाही नाही; यह सरवंगी नय धनी, सबमाने सब मांहि. ॥ ९९ ॥

अर्थः—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ए चारे भेद वस्तुमां विचारीए. आंही आपणे वस्तु छे, ते अस्तिरूप मानीए. एटले स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वभावथी विचारीए त्यारे तो सर्व वस्तु अस्तिरूपे छे, अने जो परवस्तुथी ए चारने विचारिये तो वस्तुनुं नास्तिस्वरूप नीपजे छे. एटले परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभावथी सर्व वस्तु नास्तिरू

पे छे. नियत अंग के० निश्चयनयथी अस्ति छे तेनो भेद द्रव्य पर्यायथी जाणवो. ए चार भेदमां द्रव्यथी वस्तु कहीए; वस्तुनी सत्तानी भूमिने क्षेत्र कहिये; वस्तुनी परिणाम चालथी काल कहीए; सहजनी मूलशक्तिने स्वभाव कहीए. ए रीते बुद्धिनी कल्पना करीने परद्रव्य क्षेत्रादिकना जो विकल्प ग्रहण करियें. जेम के घट वस्तु ग्रहण करवाथी परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभावनी कल्पनाथी नास्ति छे. ए व्यवहार दृष्टिथी वस्तुना अंश भेद प्रमाण थाय. ॥ ४७ ॥ अने ए नथी एवुं कहेवामां स्वद्रव्यादिकनुं अस्तिपणुं लईने परद्रव्यादिकथी नास्तिपणुं लईए तथा ते छे नहि एम कहेवामां प्रथम परद्रव्यादिकनुं अस्तिपणुं ग्रहीए; छे अने नथीज एम केहेवामां फरी परद्रव्यादिकनुं केवल नास्तिपणुंज ग्रहण करिये छिये; एथी सात भांगा उपजे छे; आंही सर्वांग नयना धणी स्याद्वादी सर्व वस्तुमां सर्व भांगा माने छे. ॥ ४४ ॥

हवे चौद नयना भेदथी एकेक भेदे एकांत पक्षीनी जेवी केहेणी छे तेवी कहेछेः—

अथ चतुर्दश नय भेद एकांत पक्ष कथन नाम स्थापनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञानको कारन ज्ञेय आतमा त्रिलोक मेय, ज्ञेयसों अनेक ज्ञान मेल ज्ञेय छांही है; जोलों ज्ञेय तोलों ज्ञान, सर्व दर्वमे विज्ञान, विनाज्ञेय छेत्र ज्ञान जीव वस्तु नांही है, देह नसे जीव नसे देह उपजत लसे, आतमा अचेतन है सत्ताअंसमांही है, जीव छिन भंगुर अज्ञायक सरूपी ज्ञान, ऐसी ऐसी एकंत अवस्था मूढ पाही है ॥ ५०० ॥

अर्थः—प्रथम चउद नयना नाम स्थापना कहेछेः—जे ज्ञेय वस्तुमां ज्ञान उपजेछे, तेथी ज्ञाननुं कारण ज्ञेय छे ए नाम छे, १. त्रण लोक प्रमाणे आत्मा छे, तेथी त्रिलोकमय एवुं नाम छे, २. जेम अनेक ज्ञेय छे, तेम ज्ञान पण अनेक छे. ते अनेक ज्ञान ए नामछे, ३. ज्ञानमां ज्ञेयनी छाया छे ते मेलवुं छे. तेथी मेलन ज्ञेय ए नाम छे, ४. ज्यां सुधी ज्ञेय छे त्यां सुधीज्ञान छे. ज्ञेय उपरांत ज्ञान नथी तेथी ज्यां लगी ज्ञेय ए नामछे ५. सर्व द्रव्य मयी विज्ञान छे. तेनु तेज नामछे. ६. ज्ञेय क्षेत्रने प्रमाणेज ज्ञान छे, तेथी ज्ञेय क्षेत्रमान ए नाम छे. ७. जीव वस्तु जगत्मां नथी. तेथीनास्ति जीव ए नाम छे, ८. देहनो नाश थवाथी जीवनो पण नाश, तेथी जीव नाश ए नामछे ए. देह उपजवाथी जीव विराजे छे, तेथी देह त्यां जीवोत्पाद ए नामछे १० आत्मा छे ते अचेतन पदार्थ छे तेथी अचेतन ज्ञाता ए नाम छे ११. सत्ताना अंश ते जीव कहिए छे, पण आत्मा अंश मात्रछे ए नाम छे १२. जीव छे, ते क्षणभंगुर छे तेथी एज नामछे १३. ज्ञान छे ते ज्ञायक स्वरूपमां नथी तेथी अज्ञायक ज्ञान ए नाम छे १४. एवी एवी एकांत अवस्था मूढ लोको पामे छे ए नयना भेद जाणवा ॥ ५०० ॥

हवे ज्ञाननुं कारण ज्ञेय. एजे प्रथम नय कह्यो तेनो प्रपंच करी देखाडेछेः—

अथ ज्ञानको कारन ज्ञेय प्रथम नय यहु कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ मूढ कहे जैसे प्रथम समारि जीति, पीछे ताके उपर सुचित्र आछो लेखिये; तैसे मूल कारन प्रगट घट पट जैसो, तैसो तहां ज्ञान रूप कारज विशेषिये; ज्ञानी कहे जैसी वस्तु तैसोई सुजाव ताको, ताको ज्ञान ज्ञेय जिन्न जिन्न पद पेषिये; कारन कारज दोउ एकहीमे निहचे पे, तेरो मत साचो विवहार दृष्टि देखीये ॥ ५०१ ॥

अर्थः—कोई मूढ मीमांसक ते शिष्य लोकने एम समजावे छे के, जेम प्रथम जिंतने समारी होय तोपछी तेना उपर चित्र सारुं थाय, अने नरसी उपर नरसुं चित्र थाय; तेम ज्ञाननी उत्पत्तिनुं कारण मन छे, पण जेवो घटपट प्रमुख पदार्थ होय ते वुंज तिहांज्ञानरूप कार्य विशेष थाय छे, जो घटपदार्थ जाणवा योग्य होय तो घट ज्ञान होय, अने पट पदार्थमां पट ज्ञान होय, तेथी ज्ञाननुं कारण ज्ञेय छे, हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी एम कहेछे के, अहो जाई! जे जेवी वस्तु छे तेनो स्वजाव पण तेवोज छे; जे ज्ञानपदार्थ छे तेनो स्वजाव जाणवानोज छे, अने जे ज्ञेयपदार्थ छे ते जाणवा योग्यज छे, आ अर्थ जेदथी ज्ञान अने ज्ञेय ए बने जुदा पद जाणवा. अहीं जे ज्ञेय कारणपणे कह्युं तेज ज्ञान विकल्पे कह्युं, तेथी घटपटादि जगत् छे ते जड पदार्थ दूर रह्या, अने ज्ञान छे तेज सामान्य पणे छे तेथी निश्चय नयथी तो ज्ञानमां ज्ञेय पामिये, पण व्यवहार दृष्टि आपतां तो तारुं मत पण साचुं छे ॥ ५०१ ॥

हवे बीजा एकांत नय आत्मा त्रिलोकमय छे तेनो प्रपंच देखाडे छेः—

अथ दुतिय नय आतमा त्रिलोक प्रमानयहु कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—कोउ मिथ्यामति लोकालोक व्यापि ज्ञान मानि, समुझे त्रिलोक पिंरु आतम दरव है; याहिते सुछंद जयो डोले मुष हु न बोले, कहे या जगतमे हमारोई खरब है; तासों ज्ञाता कहे जीव जगतसों जिन्न पै, जगतको विकासी तोहि याहीते गरव है; जो वस्तु सो वस्तु पररूपसों निराली सदा, निहचे प्रमान स्याद्वादमे सरव है; ॥ ५०२ ॥

अर्थः— कोई नैयायिक, वैशेषिक मिथ्याति छे. ते ज्ञानने लोकालोक व्यापी मानीने एवुं समजे छे के, जीवछे ते विज्ञाननो पिंरु छे. अने विज्ञान छे ते लोकालोक व्यापी छे. तेथी आत्मद्रव्य त्रण लोक प्रमाण छे. तेथी पोताने सर्व व्यापी ईश्वर मानीने स्वछंद थको डोले छे. अजिमानमां चड्यो थको बीजाने मूर्ख मानीने कोईनी साथे मुखथी न बोले. जो बोले तो एम कहे के आ जगत्मां हमारीज खरब के०

सर्व रचना छे. हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी कहे छे के, अहो! भाई! जीव जे छे ते जगत्थी भिन्न छे पण तेना ज्ञानमां जगत्नोविकास छे तेथी ईश्वरपणानो गर्व चढ्योछे पण जे वस्तु छे तेतो पोताना स्वरूपमांज रहे छे अने परस्वरूपथी सदा जुदी रहे छे तेथी जगत् अने आत्माने निश्चय नयना प्रमाणथी स्याद्वादमां सर्वथा विरोध पामिए.॥५०२॥

हवे त्रीजो एकांत नय ते ज्ञेयथी ज्ञाननो अनेक प्रपंच कहि देखाडेछेः–

अथ तृतीय ज्ञेयसो अनेक ज्ञान कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–कोउ पशु ज्ञानकी अनंत विचित्राई देखे, ज्ञेयको अकार नाना रूप विसतर्यो है; ताहीकों विचारी कहे ज्ञानकी अनेक सत्ता, गहिके एकंत पक्ष लोकनिसों लर्यो है; ताको भ्रम भंजवेकों ज्ञानवंत कहे ज्ञान, अगम अगाध निराबाध रस भर्यो है; ज्ञायक सुभाव परजाईसों अनेक भयो, जद्यपि तथापि एकतासों नहिं टर्यो है; ॥ ५०३ ॥

अर्थः–कोई पशु के० मूर्ख ज्ञाननी अनंत विचित्रता देखेछे. तेनो हेतु कहे छे जगत्मां ज्ञेय वस्तु अनंत छे, तेना आकार अनंत छे. ते ज्ञानमां परिणमे छे तेथी ज्ञानपण नानाप्रकारथी विस्तारे छे, अने तेना नाना रूप विस्तारने विचारीने ज्ञाननी अनंत सत्ता माने छे. एवो एकांत पक्ष लईने प्रतिवादी लोकथी लडे छे. हवे स्याद्वादी ज्ञानवंत ते एकान्तपक्षीना भ्रम भांजवाने एम कहेछे के, अहो! भाई! तुं ज्ञानने ज्ञेयनो आकार परिणम्यो जाणीने केम भूले छे? ज्ञान छे ते अगम्य वस्तु छे; निराबाध रसथी भर्युं छे. ज्ञाननो ज्ञायक स्वभाव छे, तेथी यद्यपि पर्याय शक्ति ज्ञान अनेकरूप थयुं छे. तथापि ज्ञायक स्वभावथी ज्ञाननी एकताज छे. पण ते एकताथी ज्ञान टलतुं नथी. ॥ ५०३ ॥

हवे चोथा नयमां ज्ञाननेविषे ज्ञेयनी छायानो प्रपंच देखाडे छेः–

अथ चतुर्थ ज्ञेय छाया यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ कुधी कहे ज्ञानमांहि ज्ञेयको आकार, प्रतिभासि रह्यो है कलंक ताहि धोइए; जब ध्यान जलसों पखारिके धवल कीजे, सब निराकार शुद्ध ज्ञानमई होइए; तासों स्याद्वादी कहे ज्ञानको सुभाउ यहे, ज्ञेयको आकार वस्तु नांहि कहा खोइए; जैसे नाना रूप प्रतिबिंबकी झलक दीसे, जदपि तथापि आरसी विमल जोइए. ॥ ५०४ ॥

अर्थः–कोई कुधी के० कुबुद्धि वैशेषिक मतवालो एम कहे छे के, जो जगत्वासी जीवना ज्ञानमांज ज्ञेयनो आकार प्रतिभासे छे, ते आकार तो निराकार ज्ञाननुं कलंक उपजेछे. तेने धोई नाखवुं जोइए, तेथी निराकारनुं ध्यान लगाडवुं तेतो जल

थयुं, ते जलथी प्रक्षालीने ते ज्ञानने उज्वल करिये तेवारे निराकार शुद्ध ज्ञानमय थवाय छे, हवे आंही स्याद्वादी तेने कहे छे. अरे! ज्ञाई! ज्ञाननो एज स्वज्ञाव छे, के ज्ञेयनो आकार वस्तुमां ज्ञासे तो आंही आकार गमावी नाखवानी शुं मतलब छे? जेम आरसीमां नाना रूप प्रतिबिंबनो झलकाट देखाय छे, तो पण आरसी निर्मल जोइए पण तेने प्रतिबिंबनुं कलंक कोई न कहे. ॥ ५०४ ॥

हवे पांचमो एकांतनय ते ज्यां लगे ज्ञेय त्यां लगे ज्ञान तेनो प्रपंच कही देखाडे छे,

अथ पंचम जौलों ज्ञेय तौलों ज्ञान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ अज्ञ कहे ज्ञेयाकार ज्ञान परिनाम जौलों, विद्यमान तौलों ज्ञान प्रगट है; ज्ञेयके विनाश होत ज्ञानको विनास होइ, ऐसी वाके हिरदे मिथ्यातकी अलट है; तासों समकितवंत कहे अनुज्ञो कहान, परजे प्रवान ज्ञान नानाकार नट है; निरविकलप अविनस्वर दरव रूप, ज्ञानज्ञेय वस्तुसों अव्यापक अघट है. ॥ ५०५ ॥

अर्थः–कोई अजाण पुरुष एवुं कहेछे के जेवो ज्ञेयनो आकार तेवुं ज्ञाननुं परिणाम थायछे, तेथी ज्ञेय विद्यमान ज्यां लगी होय, त्यां लगी ज्ञान प्रगट रहेछे अने ज्ञेयनो विनाश थये ज्ञाननो पण विनाश थायछे, एवी वात मिथ्यामतीना हृदयमां मिथ्यानी अलट लागी रहेछे; हवे तेनाथी सम्यक्त्ववंत स्याद्वादी अनुज्ञवनी कथा कहेछे. अरे! ज्ञाई! जेम कोई नट पुरुष छे ते नाना प्रकारना ज्ञेष धारीने नाना प्रकारनां नाम धरावेछे, तेम ज्ञानरूप नट नाना प्रकार धरीने पर्याय प्रमाणे बहुरूपी थायछे पण जेवुं नट द्रव्य एक छे तेवुं ज्ञान वस्तु पण निर्विकल्प एक छे, द्रव्यपणे अविनस्वर छे. अने ज्ञान वस्तु ते ज्ञेय वस्तुथी अव्यापक छे एटले ज्ञेयवस्तु ज्ञान वस्तुमां एकमेक न थाय तेथी ज्ञान ज्ञेयनी एकता अघटती छे ॥ ५०५ ॥

हवे छठा एकांतनय सर्व द्रव्यमयी आत्मानो प्रपंच कही देखाडे छेः–

अथ षष्टम सर्व दर्वमय आतमा यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ मंद कहे धर्म अधर्म आकास काल, पुदगल जीव सब मेरो रूप जगमें; जाने न मरम निज माने आपा परवस्तु, बंधे दिढ करम धरम खोवे डगमे; समकिती जीव सुद्ध अनुज्ञो अज्यासे ताते परको ममत्व त्याग करे पग पगमे; अपने सुज्ञावमे मगन रहे आठों जाम, धारा वाही पंथिक करावे मोष मगमे ॥५०६॥

अर्थः–कोई मूर्ख ब्रह्माद्वैतवादी एवुं कहे छे के जो कोईना मतमां धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव, पुद्गल ए छए द्रव्य कहेवाय छे ते सर्व ब्रह्म छे. तेथी मारुं पण रूप सर्व जगतुमां विस्तरि रह्युं छे. बीजो पदार्थ कोई नथी. आंही गुरु शिष्यने

कहे छे. अहो! शिष्य! एतो ब्रह्माद्वैतवादी मूढ मती छे, ते पोतानो धर्म जाण तो नथी; अने पर वस्तु छे तेने आत्मा जाणे छे. एवा मिथ्यात्वथी ए दृढ कर्म वांधे छे. अने जगत्मां पोतानो धर्म खोवे छे. पोतानो स्वजाव गमावे छे. जे सम किती जीव होय तेतो "सोहं" वीजना ध्यानथी शुद्ध अनुजवनो अज्यास करे, तेथी आत्मतत्त्व जुंडुज पामे. अने पगले पगले परवस्तुनो त्याग करे, अने पोताना शुद्ध स्वजावमां आठे प्रहर मग्न रहे, तेथी ज्ञान धारामां वहेनारो मोक्ष मार्गमां चालनारो कहेवाय छे ॥ ६ ॥

हवे सातमो एकांत नय जे ज्ञेय क्षेत्र प्रमाण ज्ञान तेनो प्रपंच कहि देखाडेछेः–

अथ सप्तम ज्ञेय क्षेत्र प्रमाण ज्ञान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ सठ कहे जेतो ज्ञेयरूप परवान, तेतो ज्ञान ताते कहुं अधिक न और है; तिहूं काल पर छेत्र व्यापी परनयो माने, आपा न पि छाने ऐसी मिथ्या दृग दौर है; जैन मती कहे जीव सत्ता परवान ज्ञान, ज्ञेयसों अ व्यापक जगत सिर मोर है; ज्ञानकी प्रजामे प्रतिविंवित विविध ज्ञेय, जदपि तथापि थिति न्यारी न्यारी ठौर है ॥ ७ ॥

अर्थ– कोई मूर्ख एम कहे छे के जेटलुं ज्ञेय वस्तुना आकाररूपनुं प्रमाण छे एटले ज्ञेयनुं जेटलुं एक नाहानुं मोहोटुं प्रमाण छे, तेटलुं ज्ञाननुं प्रमाण छे; तेथी कंई वधारे वीजुं प्रमाण नथी. एम ज्ञानने त्रणे कालमां परक्षेत्र व्यापी अने पर वस्तुथी परिणम्यो, एटले ज्ञेयथी एक मेक थयो ज्ञानने माने छे. पण ज्ञानने आ त्मारूप जाणे नहीं; एवी मिथ्या दृष्टिनी दोर छे. हवे तेने जैनमती स्याद्वादी कहे छे, अहो! जाई! जेटला आकाश क्षेत्रमां जीव सत्ता छे तेटलाज प्रमाण ज्ञान छे. अने ज्ञान छे ते घट पटादिक ज्ञेय पदार्थथी अव्यापक छे एज जगत्ना मस्तके मुगट समान छे. जो पण ए ज्ञाननी प्रजामां नाना प्रकारना ज्ञेय पदार्थ प्रतिविंवित थई रह्याछे, तोपण ज्ञाननी स्थिति जूदीज छे. अने ज्ञेयनी स्थिति पण जुदीज छे. अने ज्ञाननुंठेकाणुं आत्मा छे ते पण जुदोज छे, अने ज्ञेयना पृथिवी प्रमुख जे ठे काणा छे ते पण जुदांज छे ॥ ७ ॥

हवे आठमो नय नास्तिकवादी एम कहे छे के वस्तु नथी एज एकांत नय छे. तेनो प्रपंच कही देखाडे छेः–अथ अष्टम नास्तिकवादी वस्तु नास्ति यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ शुन्यवादी कहे ज्ञेयके विनास होत, ज्ञानको विना श होइ कहो केसे जीजिये; ताते जीवितव्यताकी थिरता निमित्त अव, ज्ञेयाकार प रिनामनिको नास कीजिये; सत्यवादी कहे भैया हूंजे नांही षेदखिन, ज्ञेयसों विर

चि ज्ञान भिन्न मानी लीजीये; ज्ञानकी शकती साधि अनुभो दशा अराधि, करमकों त्यागिके परम रस पीजिये ॥ ८ ॥

अर्थः—कोई बौध मतिनो भेद शुंन्यवादी एम कहे छे के, ज्ञेय छते ज्ञान उपजे छे, अने ज्ञेयनो विनाश थए ज्ञाननो पण विनाश थाय छे. अहो! प्रतिवादी! तमेज कहो छो, के ज्ञान ते जीवनुं रूप छे. तो ज्ञाननो विनाश थएथी जीव पण विणसी जाय. तो जीववुं केम होय? तेनो उत्तर के जीवितव्यनी स्थिरताने कारण एटले शाश्वत जीव राखवा निमित्त ज्ञानमां जे ज्ञेयाकार परिणाम उपजे छे, तेनो नाश करिये तो जीवनी स्थिरता थाय, हवे ते उपर सत्यवादी जैनी कहे छे. अहो! भाई! एम खेदमां खिन्न के० आकुलव्याकुल न थवुं. ज्ञेयथी विरचिने उदासीन थईने ज्ञान वस्तु भिन्नज मानी लइये. ए ज्ञाननी ज्ञायक शक्ति छे, ते शक्तिनुं साधन करीने अनुभव दशामां ए ज्ञायकने आराधिने कर्मने त्यागी परम रस पीजीए ॥ ८ ॥

हवे नवमो एकांत नय देहनो नाश थातां जीवनो नाश तेनो प्रपंच कही देखाडेछेः—

अथ नवम देहके नाश होते जीवको नाश यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ क्रूर कहे काया जीव दोउ एक पिंड, जब देह नसैगी तबहीं जीव मरेगो; छायाको सो छल किधों मायाकोसो परपंच, कायामें समाइ फिरि कायाकों न धरेगो; सुधी कहे देहसों अव्यापक सदीव जीव, समोपाइ परको ममत्व परिहरेगो; अपने सुभाउ आइ धारना धरामे धाइ, आपुमे मगन व्हेके आपा शुद्ध करेगो. ॥ ९ ॥ दोहराः ॥— ज्यों तन कंचुकि त्यागसों, विनसे नांहि भुयंग; त्यों शरीरके नासते, अलख अखंडित अंग. ॥ १० ॥

अर्थः— कोई चार्वाक मती क्रूर एम कहे छे के, काया अने जीव बने एक पिंड छे, तेथी ज्यारे देह नाश पामशे त्यारे जीव पण नाश पामशे. जेम वृक्षनो विनाश थये तेनी छाया पण विनाश पामे छे, तेम काया अने जीवनी छायानो छल बनी रह्यो छे. अथवा इंद्रजालनी मायानो प्रपंच बनी रह्यो छे, तेथी ते कायामां समाइने एटले दीपकनी परे ओलवाइने पाछो कायाने धरशे नही. हवे तेने सुधी के० पंडित स्याद्वादी कहेछे, अहो! भाई! जीव छे ते देहथी सदा अव्यापक छे. एटले जीव देह पणे परिणम्यो नथी. आ जीव पोतानो समय प्रस्ताव पामीने परनो ममत्व छोडशे. त्यारे पोताना शुद्ध स्वभावमां आवीने, धारनाधरामेधाइके एटले स्थिरता रूप भूमिमां रहीने आप स्वरूपमां आपज मग्न थईने आत्मानी शुद्धता करशे ॥ ९ ॥ जेम सर्पना शरीर उपर कांचली आवे, ते कांचलीना तजवाथी भुजंग विणशे

नहीं, तेमज शरीरनो त्याग थतां अलष जीव छे ते अखंडित अंगे रहेछे पण जीवनो विनाश थतो नथी. ॥१०॥

हवे दशमो एकांत नय देह उपजवाथी जीव उपजे तेनो प्रपंच कही देखामेछेः—

अथ दशम देह उपजत जीव उपजे यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ डुरबुद्धि कहे पहिले न हूंतो जीव, देह उपजत उपज्यो हे अव आइके; जोलों देह तोलों देहधारी फिर देह नसे, रहेगो अलष ज्योति ज्योतिमे समाइके; सदबुद्धी कहे जीव अनादिको देह धारी, जव ज्ञान, होइगो कवहीं काल पाइके; तवही सो पर तजि अपनो सरूप जजि, पावेगो परम पद करम नसाइके ॥ ११ ॥

अर्थः—कोई डुष्ट बुद्धि धरनार एक ममत्व वालो एम कहेछे के, पहेलो जीव हतो नहीं. अने पृथ्वी, जल, तेज, वायु, ए चार जूतना मिलापथी देह उपज्यो तेमां ज्ञान शक्तिरूप जीव आवी उपज्यो. हवे ज्यांसुधी देह वर्ते त्यांसुधी देहधारी नाम धरावे छे अने पाछो देहनो नाश थशे त्यारे अलख पुरुष ज्योति रूपी छे, ते ज्योतिमां समाइ जाशे. हवे सद्बुद्धि स्याद्वादी कहेछे, अहो! जाई! जीव अनादि कालथी देह धारी मूर्त्तिक छे एटले नवो उपनो नथी. अने ए जीव कोई काले काललब्धि पामीने ज्ञानी थशे, त्यारे देहादिक पर वस्तुने त्यागिने पोताना स्वरूपने जजशे. पछी कर्मोनो नाश करीने परम पदने पामशे. ॥ ११ ॥

हवे अग्यारमो एकांत नय आत्मा अचेतन तेनो प्रपंच विस्तारथी कहे छेः—

अथ एकादशम आतमा अचेतन यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ पक्षपाती जीव कहे ज्ञेयके आकार, परिनयो ज्ञान ताते चेतना असत हे; ज्ञेय के नसत चेतनाको नास ता कारन, आतमा अचेतन त्रिकाल मेरे मत है; पंडित कहत ज्ञान सहज अखंडित हे, ज्ञेयको आकार धरे ज्ञेयसों विरत हे; चेतनाके नाश होत सत्ताको विनाश होय, याते ज्ञान चेतना प्रवान जीव तत हे ॥ १२ ॥

अर्थः—कोई पक्षपाती हठवादी जीव कहेछे, ज्ञान छे ते ज्ञेयनो आकार परिणम्यो होय, अने आकार परिणाम असत् छे, तेथी चेतना पण असत् छे. तेनो हेतु कहे छे; जुओ ज्ञेयनो नाश थाय त्यारे चेतनानो नाश थाय छे. जे सत् वस्तु होय तेनो तो विनाश क्यारे पण न थाय. ते कारणथी चेतना असत् थई तेथी त्रणे कालमां आत्मा अचेतन थयो एवो मारो मत छे. हवे पंडित स्याद्वादी कहे छे, अहो! जाई! ज्ञान वस्तु सहज स्वजावे अखंडित छे, अने ज्ञेयनो आकार धरेछे

तोपण ज्ञेयथी विरक्त छे. जेम आरसीमां आकार नासे तोपण ते आकाररूप आरसी न थाय, तेम. जो चेतना लक्षणनोपण नाश मानीए तो जीवनी सत्तानो पण नाश थाय, त्यारे जीव वस्तु पण असत् थाय, तेथी जीव तत्त्व जे छे ते ज्ञान चेतनाना प्रमाणथीज मानीए ॥ १२ ॥

हवे बारमो एकांत नय अंशप्रमाण जीव सत्तानो प्रपंच कही वतावे छेः–

अथ द्वादश अंस प्रमान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोउ महा मूरष कहत एक पिंममांहि, जहांलों अचित चित्त अंग लहलहे हे; जोगरूप नोग रूप नानाकार ज्ञेय रूप, जेते नेद करम के तेते जीव कहे हे; मतिमान कहे एक पिंडमांहि एक जीव, ताहीके अनंत नाव अंश फेली रहे हे; पुग्गलसों निन्न कर्म जोगसो अखिन्न सदा, उपजे विनसे थिरता सुनाव गहे है. ॥ १३ ॥

अर्थः–कोई बौधमती महा मूर्ख एम कहेछे के, एक शरीरमां ज्यां लगी अचित चित अंग के० घटपटादिक अचेतन विकल्प अथवा नर अमर तिर्यंचादि चेतन अंग ते सचित विकल्प चकचकी रह्याछे, योगपरिणामथी योगरूप, नोगपरिणामथी नोगरूप, एम ज्ञेयनां नानाप्रकार रूप जेटलां कर्म के० क्रियाना नेद थायछे, तेटलाने जीव संख्या कहेछे, एटले जीव सत्ता अंश प्रमाण थई. हवे बुद्धिवंत स्याद्वादी एम कहेछे के, अहो! नाई! एक पिंडमां एक जीव छे अने ते जीवना ज्ञान परिणामे करीने अनंत नाव नासनरूप अंश फेली रह्याछे. पण जीव छे, ते पुद्गलथी निन्न छे, अने कर्मयोगथी अनिन्न के० निराकुल छे, तेमां नाव अंश अनंत उपजेछे, अने अनंत विणसे छे पण जीवतो स्थिरतारूपज ग्रही रह्यो छे ॥ १३ ॥

हवे तेरमो एकांतनय क्षणनंगुर जीवनो प्रपंच कही देखाडे छेः–

अथ त्रयोदश छिननंगुर जीव यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ एक छिनवादी कहे एक पिंममांहि, एक जीव उपजत एक विनसतु है; जाही समै अंतर नवीन उतपति हुइ, ताही समै प्रथम पुरातन वसतु हे; सरवंग वादी कहे जेसे जलवस्तु एक, सोइ जलविविध तरंगनि लसतु है, तेसे एक आतम दरव गुनपरजेसों अनेक नयो पे एक रूप दरसतु है ॥ १४ ॥

अर्थः–कोई एक क्षणवादी बौध एम कहेछे के एक पिंममां एक जीव उपजे छे, एक जीव विणसे छे. जे समे पिंडमां नवा जीवनी उत्पत्ति न थाय ते समे पेहलो पुराणो जीव छे ते वसे छे, पछी ते विणसेछे. एम श्रृंखलाबद्ध उपजे विणसे छे, तेने सर्वांगवादी जैनमती एम कहेछे के, अहो! नाई! जेम तलाव प्रमुख जलाश्रयमां

जल वस्तु एक छे तेज जल विविध तरंगे करी लसित केº भिन्न भिन्न देखाय छे, तेम एक आत्मा द्रव्य छे ते गुण पर्यायथी अनेक रूप थयो छे तोपण द्रव्यार्थिक नये एक रूपेज देखीए छे. ॥ १४ ॥

हवे चउदमो एकांतनय ज्ञायक अज्ञायकनो प्रपंच कही वतावे छेः–

अथ चतुर्दशम अज्ञायक ज्ञायक नय यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ बाल बुद्धि कहे ज्ञायक सकति जोलों, तोलों ज्ञान अशुद्ध जगत मध्य जानिये; ज्ञायक सकति काल पाई मिटि जाई जब, तब अ विरोध बोध विमल वखानिये; परम प्रवीन कहे एसी तो न वने वाही, जैसे विनुं परगास सूरज न मानिये; तेसे विनुं ज्ञायक सकति न कहावे ज्ञान, यहतो न पक्ष परतक्ष परवानिये. ॥ १५ ॥

अर्थः–जेनी वालकना जेवी तुछ बुद्धि छे, एवो कोई शून्यवादी तथागत कहेछे के, ज्यां लगी ज्ञानमां ज्ञायक शक्ति छे, त्यां लगी जगत्मां ज्ञान अशुद्ध कहेवायछे, तेनो एज परमार्थ छे, के जे ज्ञायकपणुं छे ते विकल्परूप छे. अने विकल्पथी ज्ञान अशुद्ध थाय छे, तेथी निर्विकल्प ज्ञान शुद्ध छे. ज्यारे भवितव्यताने वशथी पोतानो समय प्रस्ताव पामीने ज्ञायक शक्ति छे ते मटी जाय, त्यारेज विकल्पना विरोधथी रहित एवुं बोध केº ज्ञान ते विमल केº शुद्ध वखाणीए. हवे एने परम प्रवीण स्याद्वादी कहेछेः–अरे! भाई! जे तुं ज्ञायक एकतामां विकल्प मानीने शंका पामेछे, अने ज्ञायकपणुं अशुद्ध मानेछे, ए वात बने नही. जेम प्रकाशविना सूर्य मान्यो न जाय अने प्रकाशथीज सूर्य मान्यो जाय, तेम ज्ञायक शक्तिविना ज्ञानपण कहेवाय नही, जो तमे अनुमानप्रमाणथी तमारो पक्ष साधन करता नथी, तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी पण तमारो पक्ष प्रमाण कीधो न जाय, तेथी तमारो पक्षछेते पक्षाभास छे. ॥१५॥

हवे जेणे चउद एकांत नय हठावी दीधा एवो जे स्याद्वाद तेनी स्तुतिकरेछेः–

अथ स्यादवाद प्रशंसा कथनः–

॥ दोहराः ॥–इह विधि आतम ज्ञान हित, स्यादवाद परवान, जाके वचन विचारसों, मूरख होइ सुजान ॥ १६ ॥ स्यादवाद आतम सदा, ता कारन बलवान, शिव साधक बाधा रहित, अषे अखंडित आन ॥ १७ ॥ स्यादवाद अधिकार यह, कह्यो अलप विसतार, अमृत चंद मुनिवर कहे, साधक साधि दुवार ॥ १८ ॥

अर्थः–आवी रीते आत्माना ज्ञाननो हितकारी स्याद्वाद मत छे, तेज प्रमाण जाणवो. जे स्याद्वादनी वचन युक्तिमां पूर्वे मूर्ख होय ते सुजाण थाय. ॥ १६ ॥ जे स्याद्वाद स्वरूप छे तेज आत्मानी दशा छे. ते कारणथी स्याद्वाद छे ते महा बलवान

ठे, मोक्षनो साधक ठे, अने कोई मुक्तिथी जांगे नही, तेथी ते बाधा रहित ठे अक्ष य ठे. अने सर्व नयमां फेलि रह्यो ठे तेथी अखंमित एनी आण ठे ॥ १७ ॥ श्री आचार्य एम कहे ठे के, आ कंईक स्याद्वादनो अधिकार अल्पविस्तारथी कह्यो. हवे श्री अमृतचंद आचार्य बारमो साध्य साधक द्वार कहे ठे. ॥ १८ ॥

इति श्री समयसारना नाटकमां स्याद्वादनामा इग्यारमां द्वारनो अधिकार बालबोध सहित समाप्तः ॥

हवे साध्य वस्तु अने साधक वस्तुनुं स्वरूप देखामे ठेः—

अथ श्री साध्य साधक स्वरूप कथनः—

॥सवैया इकतीसाः॥—जोइ जीव वस्तु अस्ति प्रमेय अगुरु लघु, अजोगी अमूरतिक परदेशवंत हे; उतपतिरूप नाशरूप अविचल रूप, रतनत्रयादि गुण जेदसों अनंत हे; सोई जीव दरव प्रवान सदा एकरूप, ऐसो शुद्ध निहचे सुजाउ विरतंत हे; स्यादवाद मांहि साधि पद अधिकार कह्यो, अब आगे कहिवेकों साधक सिधांत हे ॥ १ए ॥

॥ दोहराः ॥—साधि शुद्ध केवल दशा, अथवा सिद्ध महंत; साधक अविरत आदिबुध, डीन मोह परजंत. ॥ २० ॥

अर्थः—जे कोई जीव वस्तु ठे ते द्रव्यथी अस्तिपणे, प्रमेयपणे, अगुरु लघु पणे, अजोगीपणे, अमूर्त्तिक पणे, प्रदेशवंत पणे, प्रवर्ते ठे, तेमां जे नास्तिपणुं नही ते अस्तिपणुं जाणवुं, अने प्रमाण ग्रहण करवा योग्य ठे, तेथी प्रमेयपणुं ठे. अपौद्गलिक पणाथी अगुरु लघुपणुं ठे, इत्यादि धर्म ठे. उत्पत्तिरूप पर्यायथी, विनाश रूप पर्यायथी, अविचलरूपथी, ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रय कहिए. इत्यादिक गुणोना जेदथी अनंत पणुं लीधो वर्त्ते ठे. तेज जीवद्रव्य एकरूपज सदा प्रमाण ठे. ते एकरूपने अस्तित्व प्रमेयत्वादिक धर्में करी आगल कह्यो तेज शुद्ध निश्चयनयथी एनो एवो स्वजाव वृत्तांत ठे. तेज साध्य पद कह्युं एटले साधवालायक वस्तु ते स्याद्वाद अधिकारमां कही. हवे आगल एने साधवानो सिद्धांत साधकठे ॥ १ए ॥ शुद्ध केवलीनी दशाने साध्य वस्तु कहीए. अथवा महंत सिद्धपणुं ते साध्य वस्तु ठे. अने चोथा अविरत गुणठाणाथी मांमीने बारमां क्षीणमोह गुणठाणा पर्यंत नव गुणठाणाना धणी जे बुध के० पंमित ठे, ते सर्वेने साधक कहीए. ॥ २० ॥

हवे अविरत्यादि साधकनी व्यवस्था कहेठेः—अथ साधक व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाको अधो अपूरव अनवर्त्ति करनको, जयो लाज जई गुरु वचनकी बोहनी; जाके अनंतानुबंध क्रोध मान माया लोज, अनादि मिथ्यात मिश्र समकित मोहनी; सातों परकिति खपी किंवा उपसमी जाके, जगी उरमांही स

मकित कला सोहनी; सोइ मोक्ष साधक कहायो ताके सरवंग, प्रगटी शगतिगुन थानक आरोहनी. ॥ २१ ॥ सोरठाः ॥–जाकी मुगति समीप, भई भव स्थिति घट गई; ताकी मनसा सीप, सुगुरु मेघ मुकता बचन. ॥ २२ ॥

अर्थः–जे जीवने अधो के० यथाप्रवर्त्ति करणनो अने अपूर्व करणनो तथा अनिवृत्त करणनो लाभ थयो, एटले ए सम्यक्त्व प्राप्तिनां त्रण करण छे तेनो लाभ थयो, अने जेने गुरु वचननी वोहनी थई एटले गुरु उपदेशनो लाभ थयो, तेथी अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभ तथा अनादिकालनी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्व मोहनीय, ए सात प्रकृति जेनी क्षय थई, अथवा उपशमी अथवा सातेमां कंइ खपी कंइ उपशमी, एवी जेना हैयामां सुहामणी समकितनी कला जागी तेज जीव मोक्षनो साधनारो कहेवाय. तेना सर्व अंगमां एटले बाह्य अभ्यंतर अंगमां गुणस्थानक आरोहणी के० चढवानी शक्ति प्रगटी ॥ २१ ॥ जेने भवस्थितिना परिपाकथी मुक्ति समीप थई अने संसारनी स्थिति घटी गई, ते पुरुषनी मनसा शीप समान थई, त्यां सद्गुरु ते मेघ समान थयो, ते सद्गुरुनां वचन तेनी मनसारूप सीपमां अमौलिक मोती जेवां थयां थकां रुचे छे ॥ २२ ॥

हवे सद्गुरुने मेघनी उपमा कहीने स्तवे छेः–अथ गुरु प्रशंसाः–

॥ दोहराः ॥–ज्यों बरषे बरषा समे, मेघ अखंडित धार; त्यों सदगुरु बानी खिरे, जगत जीव हितकार ॥ २३ ॥

अर्थः–जेम वरसाद कालमां मेघ अखंडित धाराये वरसे, तेमज सद्गुरु होय ते जगत्वासी जीवने हित कारक अमृत वाणी खेरे छे ॥ २३ ॥

हवे सद्गुरुना उपदेश आक्षेपणी धर्म कथा कहे छेः–अथ उपदेश कथनः–

॥ सवैया तेइसाः॥–चेतनजी तुमजागि विलोकहु लाग रहे कहों मायाकि तांई; आय कहींसुं कही तुम जाउगे माया रहेगि जहांकि तहांई; माया तुह्मारि न जाति न पाति न वंसकि वेली न अंसकि झांई; दासि किए बिनु लातनि मारत, एसि अनीति न कीजे गुसांई ॥ २४ ॥ दोहराः ॥–माया छाया एक है, घटे वढे छिनमांहि; इन्हकी संगति जे लगे, तिनहिं कहुं सुख नांहि ॥ २५ ॥ सवैया तेईसाः॥–लोगनिसों कछु नांतौं न तेरौं न तोसौं कछू इह लोगकौं नांतो; ए तो रहेरमि स्वारथकके रस, तू परमारथके रस मातो; ए तनसों तनमे तनसे जरु, चेतन तुं तनसों नित हातो; होहि सुखी अपनो बल तोरिके राग विराग विरोधको तांतो. ॥ २६ ॥ सोरठाः ॥–जे डुरबुद्धीजीव, ते उतंग पदवी चहे; जे समरसी सदीव, तिन्हकों कछू न चाहिए ॥२७॥ सवैया इकतीसाः॥–हांसीमें विषाद वसे विद्यामे विवाद

वसे, कायामें मरन गुरुवर्त्तनमें हीनता; सुचिमें गिलान वसे प्रापतिमें हानि वसे, जैमें हारि सुंदर दशामें छवि छीनता; रोग वसे जोगमें संयोगमें वियोग वसे, गुनमें गरव वसे सोवमांहि दीनता; और जगरीति जेती गर्भित असाता सेती, साताकी स हेली है अकेली उदासीनता ॥ २८ ॥ दोहराः ॥–जिहि उतंग चढि फिरि पतन, नहि उतंग वहिकूप; जिहि सुख अंतर जयवसे, सो सुख है डुखरूप ॥ २९ ॥ जो विलसे सुप संपदा, गये ताहि डुख होइ; जो धरती वहु त्रिणवती, जरे अगनिसों सोई ॥ ३० ॥ इति गुरुउपदेस समाप्तः ॥ दोहराः ॥–सवदमांहि सतगुरु कहे, प्रगटरूप जिन धर्म; सुनत विचक्षण सद्दहै, मूढन जानै मर्म ॥ ३१ ॥

अर्थः–अहो! जीव! चेतन! तमे मोह निद्रा तजोने जागो, अने सत्य स्वरूप देखीने मायारूप संपदाने शुं वलगी रह्याछो; पृथिवी प्रमुख अढार जारादीक जे छे तेमां तमें क्यांथी आव्या छो? अने कही दशामां जोशो? अने जेनी साथे तमे राची रह्याछो, तेतो मायाजाल संपदा ज्यांनी त्यां रहेशे. ए मायाजाल तमारी जाती नथी, तथा पाती नथी अने माया तमारा वंशनी वेली नथी, अने तमारा अंश के० एक देशनी पण कांई नथी, तेथी तमारे अने मायाने संवंध तो कोई पण नथी. अने तमे पोतानी करीने जाणोछो. तेथी ए कहेवत साची करो छो, के दासी कर्या वगर लात मारो छो, तेथी उत्पात थाशे. माटे हे! महंत पुरुषो! एवी अनीति न करवी ॥२४॥ माया अने छाया एक सरखीज छे. क्षणमां वधे छे अने क्षणमां घटे छे. तेथी ए मायानी संगते जे लागी रहेछे, तेने क्यारे पण सुख थातुं नथी ॥ २५ ॥ आ जे पुत्र कलत्रादिक तुं पोताना जाणे छे, तेतो पारका लोको जेवा छे, ए लोकोनी साथे तारो कांई नातो नथी. अने ए लोकोने पण ताहारी साथे कोई प्रकारनो नातो नथी. ए जे पुत्रकलत्रादि लोको छे तेतो पोताना स्वार्थना रसथी ताहारी साथे रमी रह्या छे, अने अरे! चेतन! तुं तो पोताना चेतनारूप परमार्थना रसमां राची रह्यो छुं. वली ए जे लोको छे ते तारा तनथी तन्मय थई रह्या छे, एटले तारा श रीरथी मोहित छे, अने ए शरीर तो जरू छे अने तुं तो चेतन छे. तेथी ते जरूथी तारी सदा जिन्नता छे. माटे राग अने द्वेष रूप मोह कर्मनो नातो तोमी पोतानुं वल फोरवीने सुखी था ॥ २६ ॥ जे जीव राग द्वेषथी डुष्ट बुद्धि थई रह्यो छे ते तो इंद्रादिकनी उंची पदवी चाहे छे, अने जे जीव सदाई समरसी जावमां रहे छे, ते ने कोई उंच पदवीनी चाहना थती नथी. ॥ २७ ॥ हांसीने सारी मानीए छे पण तेमां विषवाद वसे छे, विद्याने सारी जाणीए छीए पण तेमां विवाद ऊगडो वसे छे; कायाने सारी जाणीए छीए पण तेमां मरणदोष छे, गुरुताई के० वडाईने सारी जाणीए

छीए पण तेमां कोईकवारे हीणता छे; पवित्राई सारी जाणीए छीए, पण एने आदिके अंते दुगंछा उपजे छे; प्राप्ति सारी जाणीए छीए, पण तेनी साथे हाणीलागी रहीछे; जीतवुं नलुं छे पण तेनी साथे हारवुं लाग्युंज छे; ज्ञानीनी सुंदर दशा नली छे पण अंते कांति क्षीण थई जाय छे; नोगनुं सुख सारुं छे, पण तेमां रोगनी उत्पत्ति छे; इष्ट संयोग नलो छे पण तेनी साथे वियोगपण तैयार थई रहे छे; प्रीति नली छे पण तेनीसाथे अप्रीति पण उपजे छे; औदार्यादिक गुणमां गर्व अहंकार वसे छे; राज सेवा सारी छे, पण तेमां दीनपणुं वसे छे; अने वीजी जेटली जगत्‌वासी जीवोनी रीत सारी जाणीए छिए, तेतो सर्व अंतर्‌गर्भित अशाता सहित छे. तेथी एकली उदासीनताज शातानी साहेली छे. माटे समरस नावज श्रेष्ट छे ॥ २७ ॥ जे उंचे ठेंकाणे चढीने पछी नीचे पडवुं थाय, ते उतंग ठेकाणुं न कहेवाय; पण ते ठेकाणुं कुवा जेवुं कहेवाय. तेम जे सुखना अंदर दुःख वसे छे ते सुख पण दुःखरूप कहे वाय छे ॥ २९ ॥ केमके सुख संपदा विलसे छे पण पछी तेना नाशथी दुःख थाय छे. जेम तृणोवाली धरती अग्निथी वली जायछे, पण तृणविनानी धरती कोई रीते वलती नथी, ए दृष्टांते जाणी लेवुं ॥ ३० ॥ एरीते गुरु उपदेश सूचनिकामात्र संपूर्ण थयो; सद्‌गुरु जैनधर्मने प्रगट रूप शब्दमांज कहे छे, एटले वचनमां व खाणे छे. ते जैन धर्मने सांनली विचक्षण पुरुष होय ते सर्द्दहे छे, अने मूर्ख होय ते तेनो मर्म जाणे नहीः— ॥ ३१ ॥

हवे कोईकने उपदेशनी रुचिछे, अने कोईकने नथी तेनुं स्वरूप कहे छेः—

अथ उपदेश रुचि अरुचि कथनः—

॥ सवैया एकतिसाः॥—जेसे काहू नगरके वासी द्वै पुरुष नूले, तामें एक नर सुष्ट एक दुष्ट उरको; दोउ फिरे पुरके समीप परे कुवटमे, काहू उर पंथिककों पूछे पंथ पुरको; सोतो कहे तुह्मारो नगर है तुमारे ढिग, मारग दिखावे समुझावे खोजपुरको; एते पर सुष्ट पहिचाने पें न माने दुष्ट, हिरदे प्रवान तेसे उपदेश गुरुको ॥ ३२ ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे काहू जंगलमे पावसकी समो पाई, अपने सुनाई महा मेघ बरषतु है; आमल कषाय कटु तीषन मधूर षार, तेसो रस वाढे जहां जेसो दरषतु है; तेसो ज्ञानवंत नर ज्ञानकौ बखान करे, रसको उमाहो है न काहू परषतु है; वहे धुनि सुनि कोउ गहें कोउ रहै सोई, काहूकों विषाद होई कोउ ह रषतु है ॥ ३३ ॥ दोहराः ॥—गुरु उपदेश कहा करे, दुराराधि संसार; वसे सदा जा के उदर, जीव पंच परकार ॥ ३४ ॥

अर्थः—जेम काई नगरना वासी बे पुरुष नगरमांथी निकलीने दिशा नूली गया.

ते बे पुरुषमां एक तो सुष्ट के० हैयाना सरल स्वजावनो हतो, अने एक हैयानो डुष्ट हतो. पछी ते बने पुरुष नगरनी समीपज फरवा लाग्या. पछी कोई बीजा वाटमार्गुने नगरनो मारग पूछवा लाग्या, त्यारे ते कहेवा लाग्यो जे तमारुं गाम तो तमारी समीप छे, एम कही ते बनेने मारग देखाडे, अने रुमी रीते पुर के० नगरने खोज करी समजावे, पण तेमां जे सरल हैयानो छे, तेतो साचुं माने, पण डुष्ट हैयानो छे ते माने नही, तेम गुरुनो उपदेश छे तेपण पुरुषना हैया प्रमाणे छे ॥ ३२ ॥ जेम कोई अरण्यमां वरसाद पोतानो समय पामीने स्वजावथी महा मेघ वरषे छे. त्यारे आंबली प्रमुख खाटा रसवाला तथा बावल प्रमुख कषाएल रसवाला, अने लिंबमा प्रमुख कडवा रसवाला, जाल प्रमुख नींबरसवाला, जेठीमध प्रमुख मधुर रसवाला, अने लुण प्रमुख क्षाररस वालां फाडोमां तेउंना गुण प्रमाणे रस वृद्धि थाय छे, तेम ज्ञानी आचार्य प्रमुख पोतानी वचन वर्गणा वचन योगे खिरे के० प्रकाशे छे, ते ज्ञाननुं वखाण करतां पोताना अनुजव रसमां उमग थई रह्या छे, पण ते वखते कोई योग्य अयोग्य श्रोतानी परीक्षा करता नथी, पछी ते श्रोता पुरुषोमां ते ज्ञाननी ध्वनि सांजलीने कोई तेनी वाणीने ग्रहे छे, कोई सुई रहेछे, कोई निद्रा करे छे, कोई मिथ्यादृष्टिने विषादपण थाय छे, अने कोई सम्यग् दृष्टि हर्ष पण पामे छे ॥३३॥ माटे गुरुनो उपदेश शुं करे? आ संसारी लोक डुराराध्य छे, समजाववा कठण छे, जे संसारना उदरमां पांच प्रकारनी श्रद्धावाला जीवो छे, ते सदा वसीज रह्या छे. ॥ ३४ ॥

हवे पांच प्रकारना जीवनां नाम कहे छेः—अथ पंच प्रकार यथाः—

॥ दोहराः ॥—डूंघा प्रज्ञु चुंघा चतुर, सूंघा रोचक सुद्ध, उंघा डुरबुद्धी विकल वूंघा घोर अबुद्ध ॥ ३५ ॥

अर्थः—एक तो डुंघा तेतो प्रज्ञु स्वामी छे; बीजा चुंघा के० चतुर छे; त्रीजा सुंघा के० रुचिवंत छे; चोथो उंघाके० डुष्ट डुर्बुद्धि छे, अने विकल छे; पाचमा घूंघा के० घोर कुबुद्धि छे ॥ ३५ ॥

हवे डूंघानुं लक्षण कहे छेः—अथ डूंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाकी परम दशाविषे; करम कलंक न होइ; डूंघा अगम अगाध पद, वचन अगोचर सोइ ॥ ३६ ॥

अर्थः—जेनी उत्कृष्ट दशा वर्णवेली छे, जेमां कोई कर्मरूप कलंक देखाय नही, एवुं जे अगम तथा अगाध पद छे, एटले सिद्ध पद छे जे वचननो विषय थई शके नही तेने डूंघा कहिये. ॥ ३६ ॥

हवे चुंघानुं लक्षण कहेछे:—अथ चुंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जे उदास व्हे जगतसों, गहे परम रस पेम; सो चूंघा गुरुके वचन, चूंघे बालक जेम. ॥ ३७ ॥

अर्थः—जे जीव जगत्थी उदासी थई रहे छे, अने जे परम दशामां रही तेना प्रेम स्वादने ग्रहे छे, एटले उत्कृष्ट दशा पावे छे, तेतो गुरुनां वचनने बालकनी परे चुंघे छे, अने पुष्ट थाय छे, ते चुंघा कहेवाय छे. ॥ ३७ ॥

हवे सुंघानुं लक्षण कहेछे:—अथ सुंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जो सुवचन रुचिसों सुनै, हिए दुष्टता नांहि; परमारथ समुझै नही, सो सुंघा जगमांहि. ॥ ३८ ॥

अर्थः—जे रुचिये करी आगमना अंग जे सुवचन तेने सांभले छे, जेना हृदयमां दुष्टता नथी, पण जे सूक्ष्म तत्त्वने समजे नही तेने जगत्मां सुंघा पुरुष कहीये.॥३८॥

हवे ऊंघानुं लक्षण कहेछे:—अथ ऊंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाकों विकथा हित लगे, आगम अंग अनिष्ट; सो ऊंघा विषई विकल, दुष्ट रिष्ट पापिष्ट. ॥ ३९ ॥

अर्थः—जेने विकथानां वचन हितकारी लागे छे, अने आगम अंग अनिष्ट लागे छे, तेतो विकल विषयी जीव ऊंघा कहेवाय, दोषवंत रोषवंत पापकर्मी थई रहेछे.

हवे घूंघानुं लक्षण कहेछे.—अथ घूंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाके श्रवन वचन नही, नहि मन सुरति विराम; जडता सो जड वत् जयो, घूंघा ताको नाम, ॥ ४० ॥ चोपाईः ॥—डूंघा सिद्ध कहे सब कोऊ; सुंघा ऊंघा मूरख दोउ; घूंघा घोर विकल संसारी; चुंघा जीव मोष अधिकारी. ॥ ४१ ॥ ॥ दोहराः ॥—चूंघा साधक मोषको, करे दोष दुःख नास; लहे पोष संतोष सों, वरनों लगन तास. ॥ ४२ ॥

अर्थः—जेने वचन नथी एटले जे एकेंद्रिय छे अने जेने श्रवण नथी एटले जे बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय, चौरिंद्रिय छे, अने जेने मननी सुरता नथी एटले जे असंज्ञी छे, वली जेने विराम के० विरति नथी, अज्ञानरूप जडताथी जे जडरूप थई रह्या छे, तेने घुंघा कहीए. ॥ ४० ॥ डुंघा पुरुषने तो सहु कोई सिद्ध कहे छे; सुंघा अने ऊंघा ए बंने मूर्ख छे; अने घूंघा होय तेतो अघोर अंधारामां विकल संसारी जीव छे; अने चुंघा जीव छे तेतो मोक्षना अधिकारी होय, अने मोक्षना वांछक होय ॥ ४१ ॥ चूंघा छे तेतो मोक्षनो साधक छे, दोष अने दुःखनो नाश करे छे, अने संतोषथी पुष्टता पामे छे, तेनुं लक्षण वरणवुं छुं. ॥ ४२ ॥

हवे मोक्ष साधकनुं उदाहरण कहेछेः—अथ साधक लक्षणः—

॥ दोहराः ॥—कृपा प्रसम संवेग दम, अस्ति भाव वैराग; ए लछन जाके हिये, सप्त व्यसनको त्याग. ॥ ४३ ॥

अर्थः—कृपा जे दया, तथा जे कषायना उदयनुं दबाववुं ते प्रशम अने संवेग ते मोक्षना अभिलाषनुं पद के० स्थानक, तथा दम ते इंद्रियदमन, आस्ति एटले जिनोक्त वचन उपर श्रद्धा, एहवो वैरागीभाव; एटलां लक्षण जेना हृदयमां रहे छे, अने सात व्यसननो जे त्याग करे तेज साधक होय.॥ ४३ ॥

हवे साते व्यसननां नाम कहेछेः—अथ सप्त व्यसन नामः—

॥ चोपाईः ॥—जूवा आमिष मदिरा दारी; आषेटक चोरी परनारी; एई सात व्यसन दुख दाई; दुरित मूल दुर्गतिके भाई. ॥ ४४ ॥ दोहराः ॥—दर्वित ए सातों व्यसन, दुराचार दुख धाम; भावित अंतर कलपना, मृषा मोह परिनाम. ॥ ४५ ॥

अर्थः—जुगार १, मांस भक्षण २, मदिरापान ३, वेश्या गमन ४, आखेटक के० शिकार खेलवो ५, चोरी करवी ६, परस्त्री गमन ७, ए सात व्यसन कहेवाय छे, ते संसारमां दुःखदाई छे. पापनां मूल छे अने दुर्गतिना भाई छे. ॥ ४४ ॥ ए जे क्रियारूप साते व्यसन छे ते द्रव्यरूप छे. ए दुष्ट आचाररूप दुःख धाम के० दुःखनुं घर छे. अने जेना अंतरमां वृथा के० जूठा मोह परिणामनी कल्पना के० विचारणा ध्यावन थाय, ते भावित व्यसन कहीए. ॥ ४५ ॥

हवे भावित सात व्यसननी व्यवस्था कहेछेः—अथ भावित व्यसन व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—अशुभमें हारि शुभ जीति यहै दूत कर्म, देहकी मगनताई यहै मांस भषिवो; मोहकी गहलसों अजाने यहै सुरापान, कुमतिकी रीति गनिकाको रस चाखिवो; निरदै व्हे प्राण घात करिवो यहै सिकार, परनारी संग परबुद्धिको परषिवो; प्यारसों पराई सोंज गहीवेकी चाह चोरी, एई सातों व्यसन विडारि ब्रह्म लखिवो. ॥ ४६ ॥

अर्थः—अशुभ कर्मना उदयथी हार मानिये अने शुभ कर्मना उदयथी जीत मानिये तेतो जुगार खेलवो छे. देह उपर ममता रहे तेतो मांस भक्षण जाणवुं. मोह कर्मथी मूर्छित थई रह्याथी अजाण थई रह्यो होय तेज सुरापान व्यसन छे. कुबुद्धिनी रीते चालवुं तेतो वेश्याना रसनुं चाखवुं छे. निर्दय परिणाम राखीने प्राणघात करवो, तेज शिकार खेलवो छे. पररूप जे पुद्गलादिक तेनी बुद्धिने परखवी तेतो परनारी सेवा व्यसन छे. पारकी सोंज सामग्री उपर प्रीत राखीने प्यार मेल

ववानो चाह राखे तेज चोरी छे. ए जावित सात व्यसननुं विदारण करवाथी ब्रह्म लख्यो जाय छे. ॥ ४६ ॥

हवे मोक्षना साधकनी व्यवस्था कहेछेः—अथ साधक व्यवस्थाः—

॥ दोहराः ॥—विसन जाव जामे नही, पौरुष अगम अपार; किये प्रगट घट सिंधुमथि, चौदह रतन उदार. ॥ ४७ ॥

अर्थः—जेना चित्तमां व्यसनजाव पामिए नही, अने अगम अपार पुरुषातन पांमिए, तेणे घटरूप समुद्र मंथन करीने उदार के० अमुल्य चौदे रत्न प्रगट कीधां ॥४७॥

हवे जावित चौद रत्ननुं वर्णन करेछेः—अथ जावित चौद रतनको वरननः—

॥ सवैया इकतीसाः—लछमी सुबुद्धि, अनूभूति कउस्तुजमनि, वैराग कलपवृक्ष, संत सुवचन है; ऐरावत उद्यिम प्रतीतिरंजा उदैविष, कामधेनु निर्जरा सुधा प्रमोद घन है; ध्यान चाप प्रेमरीति मदिरा विवेक वैद्य शुद्धजाव चंद्रमा तुरंगरूप मन है; चौदह रतन ए प्रगट होइ जहां तहां ज्ञानके उदोत घट सिंधुको मथन है. ॥ ४८ ॥

॥ दोहराः ॥—किए अवस्थामे प्रगट, चौदह रतन रसाल, कबुं त्यागे कबुं संग्रहै, विधि निषेधकी चाल. ॥ ४९ ॥

अर्थः—सुबुद्धि उपनी तेतो लक्ष्मी उपनी १, आत्मानो अनुजव उपज्यो तेतो कौस्तुजमणि उपज्यो २, वैराग उपज्यो तेतो कल्पवृक्ष उग्युं ३, जाषा समिति उपजी तेतो शंख उपज्यो ४, उद्यम उपज्यो तेतो ऐरावत हाथी उपज्यो ५, प्रतीत उपजी तेतो रंजा उपजी ६, कर्मनो उदय तेतो विष उपज्युं ७, कर्म निर्जरा थइ तेतो कामधेनु उपजी ८, आनंद उपज्यो तेतो अमृतघन उपज्युं ९, ध्यान उपज्युं तेतो चाप के० सारंग धनुष उपज्युं १०, प्रेमरीत के० प्रेमनी लय उपनी तेतो मदीरा उपज्यो ११ विवेक उपज्यो तेतो धनवंतरि वैद्य उपन्यो १२, शुद्धजाव उपन्यो तेतो चंद्रमा उपन्यो. १३, मन शुद्ध थयुं तेतो सात मुखो अश्व उपन्यो. १४, ए चउद रत्नतो ज्यां ज्ञाननो उदय थवाथी पोताना ज्ञानरूप घट समुद्रनुं मंथन थाय छे, त्यां उपजे छे एम जाणवुं ॥ ४८ ॥ साधनी अवस्थामां ए चौदे रत्न रसाल हतां ते प्रगट कीधां, ए चौद रत्नमां विधि निषेधनी चालमां एटले हेय, उपादेयनी चालमां कंइक त्यागे छे अने कंइक संग्रह करेछे ॥ ४९ ॥

हवे जावित चउद रत्न तेमां आठ रत्न त्यागवा योग्यछे अने छ रत्न ग्रहण करवा योग्य छे ते कहेछेः—अथ अष्ट रत्न हेय षट् उपादेय कथनः—

॥ दोहराः ॥— रमा, संष विष धनु सुरा, वेद धेनु हय हेय, नति रंजा गज क

ल्पतरु, सुधा सोम आदेय ॥ ५० ॥ इह विधिजो परभाव विष, वमे रमे निजरूप, सो साधक शिवपंथको, चिद्‌विवेक चिद्रूप, ॥ ५१ ॥

अर्थः–रमाके० लक्ष्मि तेतो सुबुद्धि १, सुवचनशंष २, उदय विष ३, ध्यान धनुष ४, प्रेम रीत मदिरा ५, विवेक वैद्य ६, निर्जरा काम धेनु ७, मनशुद्धते घोडो ८, ए आठ अथिर छे तेमाटे छांडवा योग्य छे. अने अनुभव मणि १, प्रतीति रंभा २, उद्यम हाथी ३, वैराग्य कल्पवृक्ष ४, आनंद सुधा ५, शुद्ध भाव चंद्रमा ६, ए छ रत्न ग्रहण करवा योग्य छे. ॥५०॥ आ रीतिथी पररूप जे कर्मादिक भाव छे, तेज विषथयुं. तेनुं जे वमन करे छे, अने पोताना स्वरूपमां जे रमे छे तेज पुरुष मोक्ष मार्गनो साधक जाणीये. जे ज्ञान भावनो जाणनार अने ज्ञान स्वरूपी तेज साधक कहीए॥५१॥

हवे मोक्षपदना साधकनी व्यवस्था कहे छेः–अथ साधक व्यवस्था कथनः–

॥कवित्त छंदः॥–ज्ञानदृष्टि जिन्हके घट अंतर निरखे दरव सुगुन परजाइ, जिन्हके सहजरूप दिन दिन प्रति, स्यादवाद साधन अधिकाइ, जे केवल प्रतीत मारग मुषचिते चरन राषे ठहराई, ते प्रविण करिछिन मोह मल अविचल होइ परमपद पाइ ॥ ५२ ॥

अर्थः–जेना घट अंतरमां ज्ञाननी दृष्टि जागी तेथी द्रव्यने जे देखे जाणे, ते द्रव्यना गुण जाणे; गुणना पर्याय जाणे; अने जेने सहज रूपेज एटले भवितव्यतानापरिपाकथी दिन दिन प्रत्ये स्याद्वादनुं साधन अधिक थई रह्युं छे, अने जे केवलिना कहेला मारगने सन्मुख थई रहे, एज चित्त राखे अने एज मार्गवीषे चरण ठरावी राखे, ते प्रवीण पुरुष मोहरूप मलने क्षीण करी परम पद पामी अविचल थायछे ॥ ५२ ॥

हवे सम्यग् दृष्टिनी व्यवस्था अने मिथ्या दृष्टिनी व्यवस्था कहेछेः–

अथ सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि व्यस्थाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–चाकसो फिरत जाकों संसार निकट आयो, पायो जिनि सम्यग् मिथ्यात नाश करिके; निरद्वंद मनसा सुभूमि साधि लिनी जिनि, कीनी मोष कारन अवस्था ध्यान धरिके; सोई शुद्ध अनुभौ अभ्यासी अविनाश भयो, गयो ताको करम भरम रोग गरिके; मिथ्यामति आपनो सरूप न पिछाने तामे, डोले जग जालमे अनंत काल भरिके. ॥ ५३ ॥

अर्थः–जेम रात्रिनेविषे चकवो फिरतो फरतो रहे छे, तेम संसारमां फिरतां फिरतां जेनो अंत निकट आव्यो, जे सम्यक्त्व पाम्यो, मिथ्यात्वनो नाश करीने रागद्वेषादिक रहित एवी मनसारूप भली भूमिका जेणे साधि लीधी, अने ध्यान धरिने पोतानी अवस्था मोक्षपदना कारणरूपी जेणे कीधी, तेज सम्यग् दृष्टि शुद्ध अनुभवनो अभ्यासी थयो, एम कर्म रोगने गमावीने अविनाशी थयो, एटले एनांजन्म मरण टल्यां.

एसिद्ध थयो, एवी सम्यग् दृष्टि पाम्याविना मिथ्यात्वी पोतानुं स्वरूप ओलखे नही. तेथी अनंतकाल नरिके के० लगी जगत्‌नी जालमां झोले ॥ ५३ ॥

हवे जे आत्मानो अनुभव पाम्यो तेनो विलास कहेछेः—अथ अनुभव विलासः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जे जीव दरवरूप तथा परजायरूप, दोउ नै प्रवान वस्तु सुद्धता गहत है; जे अशुद्धभावनिके त्यागी भए सरवथा, विषेसों विमुष व्है वि रागता चहत है; जो ग्राहजभाव त्यागभाव दुहूं भावनिको, अनुभौ अभ्यास विषे एकता कहत है; तेई ज्ञान क्रियाके आराधक सहज मोष, मारगके साधक अबाधक महत है. ॥ ५४ ॥

अर्थः—जे कोई जीव द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए बे नय प्रमाण करीने व स्तुनी शुद्धताने ग्रहेछे, जे जीव रागद्वेष मोहथी आत्मामां जे अशुद्धभाव छे तेना सर्वथा त्यागी थया छे, तेथी पांच इंद्रियोना विषयथी विमुख थईने वैरागतामां जे वर्त्तवा लागेछे, अने जे भावित चौदे रत्नमां छ भाव रत्न ग्रहण करवा योग्य छे, अने आठ भाव रत्न त्यागवा योग्य छे, एटले आठ हेयने छ उपादेय छे, ते अनुभवना अभ्यासविषे बंने भावनी एकता करेछे, एटले जे द्रव्यमां दृष्टि रहे अने पर्यायमां दृष्टि न रहे, तेने एकता कहेछे. ते जीव ज्ञान क्रिया जे मोक्ष मार्गनुं कारण कह्युं छे तेना आराधक थया. अने सहजरूपमां मोक्ष मार्गना साधक थया; फरी तेने कर्म बाधा न होय, तेथी अबाधक थया महिमावंत थया, पूजनिक थया. ॥ ५४ ॥

हवे जे ज्ञान अने क्रियाने भिन्नभावे माने छे तेने एनी एकता कही देखाडे छेः—

अथ ज्ञान क्रिया एकता कथनः—

॥ दोहराः ॥—विनसि अनादि अशुद्धता, होइ शुद्धता पोष; ता परनतिकों बुध कहे, ज्ञान क्रियासों मोष ॥ ५५ ॥

अर्थः—अनादि कालनी जे अशुद्धता छे तेनो ज्यां विनाश थायछे त्यां शुद्धतानुं पोषण थायछे, एवी जे आत्मानी परिणति थाय तेज ज्ञाननी क्रिया कहेवायछे तेने बुध के० पंडित पुरुष एवुं कहेछे के ए ज्ञान क्रियाथी मोक्ष थाय, आंही ज्ञान तथा क्रियानी जे दुविधा लखेछे ते शब्दनयथी जाणवी. ॥ ५५ ॥

हवे ज्ञाननी व्यवहार नयथी थापना देखाडे छेः—अथ ज्ञान द्रव्य स्थापनाः—

॥ दोहराः ॥—जगी शुद्ध समकित कला, बगी मोषमग जोइ; वहे करम चूरन करै, क्रम क्रम पूरन होइ ॥ ५६ ॥ जाके घट एसी दशा, साधक ताको नाम; जेसे दीपक जो धरे, सो उजियारो धाम. ॥ ५७ ॥

अर्थः—जेणे शुद्ध समकितनी कला जाणी अने जे कला मोक्षना मुखमां जावा

लागी ते पुरुष कर्मने चूरण करीने क्रमे क्रमे पूरण थाय ॥ ५६ ॥ जेना घटमां एवी दशा थई रही छे, ते पुरुषनुं साधक नाम कहेवाय. जेम दीवानुं अजवालुं थएथी घरमां पण अजवालुं थाय, तेम ज्ञानक्रिया तो मोक्ष साधक छे, पण ज्ञानक्रियाने ध रतां पुरुष पण साधक थाय ॥ ५७ ॥

कहे ज्ञाननुं फल कहेछेः—अथ ज्ञानफल वर्ननः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाके घट अंतर मिथ्यात अंधकार गयो, भयो परगास सुद्ध समकीत भानकी; जाकी मोह निद्र घटी ममता पलक फीटी, जान्यो जिन मरम अवाची भगवानको; जाको ज्ञान तेज वग्यो उद्दिम उदार जग्यो, लग्यो सुष पोष समरस सुधा पानको, ताही सुविचक्षन को संसार निकट आयो, पायो तिनि मारग सुगम निरवानको ॥ ५७ ॥ जाके हिरदेमे स्यादवाद साधना करत, शुद्ध आतमाको अनुभौ प्रगट भयो हे; जाकों संकलप विकलपके विकार मिटि, सदा काल एकी भाव रस परिनयो है; जिनि बंध विधि परिहार मोष अंगीकार, ऐसो सुविचार पछ सोउ छांडि दियो है; जाकी ज्ञानमहिमा उदोत दिनदिन प्रति, सोइ भवसागर उलंघि पार गयो है ॥ ५ए ॥

अर्थः—जेना घटमां अनादिकालनो मिथ्यात्व अंधकार हतो ते गयो, अने शुद्ध सम्यक्त्व रूप सूर्यनो प्रकाश थयो, राग द्वेष मोह निद्रा जेनी घटी गई, ममतारूप पलक लागी हती ते फिटि गई, तेथी जिन अवाची भगवाननो एटले सिद्ध स्वरूपनो मर्म पाम्यो, जेनुं ज्ञानतेज वध्युं एटले प्रकाश थयो, प्रधान उद्यम जाग्यो अने उपशम रस रूप अमृत पानना सुखनो जेने पोष थयो, ते सुविचक्षण पुरुषने संसार निकट आव्यो, ते तो सुगम वातमां मुक्तिनो मारग पाम्यो ॥ ५७ ॥

जेना हृदयमां स्याद्वाद स्वरूपनी साधनाथी शुद्ध आत्मानो अनुभव प्रगट थयो अने जेने संकल्प विकल्पनो विकार बहु भातनो हतो ते मटीने सदा कालमां एक चेतना रस जे एकी भावपणुं छे ते पणे परिणम्यो, तेणे करीने बंध विधिनो परिहार जे संवरनुं धरवुं ते जेने थयुंछे, अने निस्पृह दशाथी मोक्षनो जे अंगीकार तेना विचारनो पक्ष धार्यो छे ते पक्ष छांडी दीधोछे, जेना ज्ञाननो महिमा दिन दिन प्रते उद्योत थयोछे. तेज जीव भव समुद्र उतरीने पार पहोंच्यो एम जाणवुं. ॥ ५ए ॥

हवे अनुभवीनी व्यवस्था तेज उपादेय छे ते कहे छेः—अथ अनुभौ व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥ —अस्तिरूप नासति अनेक एक थिररूप, अथिर इत्यादि नानारूप जीव कहिये; दीसे एक नैकी प्रतिक्षनी अपर दूजी नैकों नै दिषाइ वाद विवादमे रहिये; थिरता न होइ विकलपकी तरंगनिमे, चंचलता बढे अनु

जौ दशा न लहिये; तातें जीव अचल अबाधित अषंड एक, एसो पद साधिके समाधि सुख गहिये ॥ ६० ॥

अर्थः—कोई नयथी अस्तिरूप छे, कोई नयथी नास्तिरूप छे. कोई नयथी अनेक, कोई नयथी एक, कोई नयथी स्थिररूप, कोई नयथी अस्थिररूप, इत्यादि नाना प्रकारना स्वरूपथी जीव कहीए. अहीं एक नय जे स्वरूप साधे छे, त्यां ते नयनो प्रतिपक्षी के० उलटी रीते बीजो नय देखाय छे, तेतो पेला नयथी विपरीतपणुं साधे छे, तेथी जो एकांतनयपणुंज ग्रहीए अने ते उपर बीजो नय न देखाडीये तो वादविवाद थई जाय. तेथी नय भेद करणीथी कुविकल्पना तरंग उठेते तरंगथी चेतन स्थिर न थाय, अने चंचलतापणुं वधे तेथी अनुभव दशाग्रहो न जाय. माटे नयपक्ष तजीने अनुभव अभ्यासने कारणे जीव द्रव्य अचल छे, अबाधित छे, अखंड छे, एक छे, एवा स्वरूपनुं स्थानक साधिने सुख ग्रहण करिये ॥ ६० ॥

हवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने आत्मानुं अखंडितपणुं कहे छेः—

अथ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे एक पाकी आंबफल ताके चारि अंस, रसजाली गुठली छालक जब मानिये; यों तो न बने पे एसे बने जेसें वहे फल, रूप, रस, गंध, फास, अषंड प्रवानिये; तेसे एक जीवकों दरव, षेत्र, काल, भाव, अंस भेद करि भिन्न भिन्न न वषानिये; दर्व रूप, षेतरूप, कालरूप, भावरूप, चारों रूप अलख अखंड सत्ता मानिये ॥६१॥

अर्थः—शिष्य कहेछे. हे! स्वामी! द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप वस्तुना चार अंश तमे कहो छो, त्यां एवुं दृष्टांत आपवुं के, एक आंबफल छे तेना रस, जाली एटले रेसो, गोटली अने छाल ए चार अंश छे, तेमज वस्तुना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ए अंश होय के न होय? हवे गुरु कहे छे, हे! शिष्य! आहीं तुं अंशके० खंड समज्यो तेथी ए दृष्टांत दीधुं. तेतो बने नही पण आंही अखंडपणामां चार अंश लाववा तेनुं दृष्टांत ए छे, के तेज आंब फल छे, तेमां रूप, रस, गंध ने स्पर्श ए चारे अखंडपणे प्रमाण करिए, ए चार रस छे, तेम एक जीवनुं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप अंशभेदे करीने रस जाली गोठलीने छाल ए खंड खंड वखाणीये नहीं. आंही जे साध्यरूप आत्मा सत्ता छे, ते द्रव्यथी अखंडितपणे, आत्मा द्रव्यरूप छे, अने क्षेत्रथी अखंडपणे असंख्यात प्रदेशाअवगाहपणे छे, कालथी अखंड त्रिकाल वर्तिछे, भावथी अखंड ज्ञायक भावपणे छे; एम जीवना चार अंश अखंडपणे मानीये ॥ ६१ ॥

हवे साध्यपदमां ज्ञान ज्ञेयनुं विशेष पणुं अने अविशेष पणुं कहेछे;–

अथ ज्ञान ज्ञेय वीशेष कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ ज्ञानवान कहे ज्ञान तो हमारो रूप, ज्ञेय षटदर्व सो हमारो रूप नांही है; एक नै प्रवान एसे दूजी अब कहों जेसे, सरस्वती अक्षर अरथ एक ठांही है; तेसे ज्ञाता मेरो नाम ज्ञान चेतना विराम, ज्ञेयरूप सकति अनंतमुझ पाही है; ताकारण वचनके ज्ञेद ज्ञेद कहों कोउ, ज्ञाता ज्ञान ज्ञेयको विलास सत्ता मांही हे ॥६१॥ चोपाईः ॥ स्वपर प्रकाशक सकति हमारी; ताथे वचन ज्ञेद ज्रम जारी; ज्ञेय दसा द्विविधा परगासी; निज रूपा पररूपा जासी, ॥ ६३ ॥ ॥ दोहराः ॥–निजरूपा आतम सकति, पररूपा परवस्त, जिनि लखि लीनो पेच यह, तिनि लिख लियो समस्त ॥ ६४ ॥

अर्थः–कोई ज्ञानवंत प्राणी पोताना अनुजव प्रमाणथी एम कहेछे, के जे ज्ञान छे तेतो अमारुं रूप छे. अने जे षट् द्रव्य ज्ञेयछे तेतो अमारुं रूप नथी, तेथी ज्ञान अने ज्ञेय विशेषपणामां छे. गुरु कहे छे, एतो एकज नय प्रमाण छे. हवे बीजा नयथी जेम अविशेषपणुं थाय छे, तेम कहुं बु. जेम सरस्वती के० विद्यारूप अर्थ छे. तेम अक्षर के० विद्यारूप अर्थ एकठो रहे, तेम ज्ञाता ते तो माहारुं नाम थयुं. अने जे ज्ञान छे तेतो चेतनानो विराम के० प्रकार छे. अने जे ज्ञान ज्ञेय पणे परिणम्युं छे, ते तो ज्ञेयरूप शक्ति छे. एवी अनंत शक्ति महारीज पासे छे. ते कारणथी वचन ज्ञेद करीने ज्ञान अने ज्ञेयनो ज्ञेद कोई जले कहो, पण बीजो नय देखवाथी ज्ञाननो ने ज्ञेयनो विलास आत्मा सत्तामांज छे. तेथी अविशेष पणुं छे. ॥ ६१ ॥ जेथी हमारी शक्ति एवी छे जे पोतानो प्रकाश करे अने परनो पण प्रकाश करे तेथी स्वपर प्रकाशक छे, तेथी ज्ञान अने ज्ञेय ए वचन ज्ञेदे जे ज्ञेद छे, तेज जारी ज्रम उपजावेछे; पण वस्तु एक छे. ज्ञेय के० जे जाणवा योग्य तेतो दशा बे प्रकारे करीने कही. एक तो निजरूपा बीजी पर रूपा कही छे ॥ ६३ ॥ आंही जे निजरूप ज्ञेय दशा कहीए तेतो स्वरूप प्रकाशक आत्म शक्ति छे, अने जे बीजी पर रूप ज्ञेय दशा ते पर वस्तु छे. जेणे एवातनो पेच जाएयो तेणे तो समस्त जाएयुं ॥ ६४ ॥

हवे एज पेच स्याद्वादमां जोइए ते स्याद्वादरूप वस्तुनुं वर्णन करेछेः–

अथ स्याद्वाद रूप वस्तु वर्णनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–करम अवस्थामे अशुद्धसो विलोकियत, करम कलंकसों नानार शुद्ध अंग हे; उन्ने नै प्रवान समकाल सुद्धासुद्धरूप, एसो परजाइ धारी जीव वाद विव। हे; एकही समेमें त्रिधारूप पे तथापि याकी, अखंकित चेतना सकति स

वंग हे; यहे स्याद्वाद याको भेद स्याद्वादी जानै, मूरष न माने जाकी हियो दृग भंग हे. ॥ ६५ ॥ निह्चे दरव द्रिष्टि दीजे तव एकरूप, गुन परनति भेद भावसों वहुत हे, असंष प्रदेश संयुगत सत्ता परवान, ज्ञानकी प्रभासौं लोकालोकमां न जुत हे, परजे तरंगनिके अंग छिनभंगुर हे, चेतना सकति सो अखंडीत अचुत हे, सोहे जीव जगति विनायक जगत सार, जाकी मौज महिमा अपार अदभुत हे. ॥ ६६ ॥ विभाव सकति परिनतिसौं विकल दीसे, सुद्ध चेतना विचारते सहज संत हे; करम संयोग सो कहावे गतिको निवासी, निह्चे सरूप सदा मुकत महंत हे; ज्ञायक सुभाउ धरे लोकालोक परगासी, सत्ता परवान सत्ता परगास वंत हे; सोहे जीव जानत जहां न कौतुकी महान, जाके कीरति कहान अनादि अनंत हे. ॥ ६७ ॥

अर्थः—कार्मण शरीर सहित आत्मानी कर्म अवस्थामां दृष्टि दईए, तो आत्माने शुद्ध देखीए छीए. अने कर्म कलंक रहित केवल आत्मामांज दृष्टि दइए तो तो शुद्ध अंग छे. अने ए वेउनय समकालेज प्रमाण करीए तो शुद्धशुद्धरूप कह्युं जाय. एमां पर्यायनी धाराये करीने जीवना विचित्र प्रकार छे. शुद्ध अशुद्ध अने शुद्धाशुद्ध ए त्रणरूप आत्माना एकज समय पामीए, यद्यपि एम छे तथापि त्रणेरूपमां आत्मानी अखंडित चेतना शक्ति सर्व अंगमां भरि रहि छे, तेज स्याद्वाद कहीए, तेनो भेद जे स्याद्वादी होय, तेज जाणे, पण जेनुं हइयुं दृगभंग के० सम्यग् दृष्टि रहित छे, ते मूर्ख एनो भेद न जाणे. ॥ ६५ ॥ निश्चयनयथी द्रव्य उपर दृष्टि आपिये तो आत्म द्रव्य एकरूप छे अने ए आत्म द्रव्यना गुण परिणतिरूप भेद भावथी जोइये तो आत्मा वहुरूपे छे अने आत्मानी सत्ता असंख्यात आकाश प्रदेश संयुक्त छे, अने ते सत्ताने प्रमाण आत्मा कह्यो जायछे. अने ज्ञाननी प्रभा विचारीएतो लोकालोक प्रमाण क्षेत्रथी संयुक्त आत्मा कह्यो जायछे, तथा क्षणक्षणमां पर्याय रूप तरंगना अंग विचारीएतो जीव क्षणभंगुरज कहेवाय छे, अने तेने चेतना शक्तिथी विचारीए तो सदा सर्वदा अखंडज कहेवाय, अने अच्युत कहेवाय छे. तेज जीव जगत्नो विनायक के० धणी अने जगत्मां सारभूत पदार्थ छे. जेना मोज अने महिमा अपार छे अने अद्भुत छे ॥ ६६ ॥ हवे वीजुं पण स्याद्वाद कहेछेः—राग द्वेषादिक विभाव शक्तिथी परिणम्यो देखीए तो आत्मा विकल देखाय छे; अने तेनी शुद्ध चेतनाज विचारीएतो सहज संतरूप दीसे छे; कर्म संयोग सहित आत्मा विचारीये तो चारे गतिनो वासी अने चोराशी लाख योनिनी दासी कहेवाय छे; अने निश्चयनयथी एनुं स्वरूप जो विचारीए तो सदा सर्वथा मुक्तिरूप महंत छे; अने जो एने ज्ञायक स्वभाव धारी विचारीए तो लोकालोक-प्रकाशक अमेय कहेवाय; अने जो ए आत्मानी

प्रकाशवंत सत्ता विचारिये तो पोतानी सत्ता प्रमाण आत्मा होय; ते जीव वस्तु साध्य छे. जे जहांन के० जगतने जाणेछे, जे महोटो कौतुकी पुरुष छे, जेनी कीर्त्ति अने कथा अनादि अनंत काल लगी एवीज चालती आवेछे ॥ ६७ ॥

हवे साध्यरूप केवल दशानुं वर्णन करे छेः–अथ केवल दशा वर्ननः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–पंच परकार ज्ञानावरनको नास करि, प्रगटी प्रसिद्ध जगमांहि जगमगी है; ज्ञायक प्रजामे नाना ज्ञेयकी अवस्था धरि, अनेक जई पे एकतामें रसपगी हें; याही जांति रहेगो अनंत, काल परजंत, अनंत शकति फोरि अनंत सों लगी है; नरदेह देवलमे केवलमे सरूप सुद्ध, ऐसी ज्ञान ज्योतिकी सिषा समाधि जागी है ॥ ६८ ॥

अर्थः–मति ज्ञानावरणीय प्रमुख पांच प्रकारना ज्ञानावरणीय कर्मनो नाश करीने प्रसिद्ध के० प्रत्यक्षपणे प्रगटी एवी जे ज्ञान ज्योतिनी सिषा जगत्‌मां जगमगी रही छे. ते ज्ञान ज्योतिनि शिषा पोतानी ज्ञायकपणारूप प्रजामां नाना प्रकारना ज्ञेयनी अवस्था धरीने अनेक रूप थई छे, तेपण ज्ञायक पणानी जे एकता छे तेना रसथी मली रही छे. तेज रीते अनंत काल पर्यंत रहेशे. अने अनंत वीर्य फोरवीने अनंत पदथी लागी रहेशे. ज्यारे मनुष्यना देहरूप देवलमां शुद्ध केवल ज्ञान स्वरूपे एवी ज्ञान ज्योतिनी सिखा जेवी समाधि छे, ते जागृत थई एटले सर्व विषमता जाव मटि गयो ॥ ६८ ॥

हवे अमृतचंद आचार्य छे ते चंद्रमा छे. अने तेनी कलारूपि त्रण धारा छे, तेनुं जुदा जुदा अर्थथी वर्णन करे छेः–अथ अमृत चंद्र कलाके तीन अर्थ कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–अक्षर अरथमे मगन रहे सदा काल, महा सुख देवा जैसी सेवा काम गविकी; अमल अबाधित अलष गुन गावना है, पावना परम शुद्ध जावना है जविकी, मिथ्यात तिमर अपहार वर्द्धमान धारा, जैसी उन्ने जामलों किरन दीपे रविकी; ऐसी है अमृत चंदकला त्रिधारूप धरे, अनुजो दशा गरंथ टीका बुद्धि कविकी ॥ ६९ ॥ दोहराः ॥–नाम साधि साधक कह्यो, द्वार द्वादशम ठीक, समय सार नाटक सकल, पूरन जयो सटीक ॥ ७० ॥

अर्थः– अमृतचंद्रनी अनुजव दशारूप कला छे, तेतो अक्षर अर्थमां के० मोक्ष पदार्थमां सदाकाल मग्न रहे छे, अने जेवी कामधेनुनी सेवा सुखदायक थाय तेवी सुखदायक छे; अने अमृतचंद्रनीग्रंथ टीकारूप कला छे तेज पाछला वर्णने करी युक्तछे, अने अमृतचंद्र कविनी बुद्धि छे, तेतो अक्षर अर्थ के० शब्दार्थ तेमां मग्न रहे छे. आगल बीजुं वर्णन पूर्वेली रीते जेम अमृतचंद्रनी अनुजव दशानी कला अने

अने ग्रंथनी टीकानी कला अने कविकला ए त्रणे कला अमल छे, अवाधित छे, अलख पुरुषनागुणनुं गायन करतीज रहे छे तेथी पावन छे, भव्यत्व पणानी परम शुद्ध भावना छे, अने ए त्रणेकला, मिथ्यात्वरूप अंधकारनी अपहरण करनार छे, अने चडते परिणामे वे; जेम चढता वे पोहोरो लगी सूर्यना किरण चढता चढता दीपे छे, तेम ए कलापण वधती वधती दीपे छे, एवी अमृतचंद्र आचार्यनी कला छे ते त्रण प्रकारनुं रूप धारण करे छे, एक तो अनुभवदशा, वीजी ग्रंथनी टीका करी ते अने त्रीजी काव्य वंध करतां कविकला कीधी ॥ ६७ ॥ साध्य साधक सामे वारमो द्वार ठीक कह्यो; अमृतचंद्र आचार्यनो करेलो कलशरूप समयसार नाटक ग्रंथ टीका समेत संपूर्ण थयो ॥ ७० ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकनो साध्य साधकनामा वारमोद्वार वालाववोधरूप संपूर्ण थयो ॥ ग्रंथाग्रंथ ७००० श्लोक मान छे. ॥

हवे ग्रंथनी अंते अमृतचंद्र आचार्य कवि आलोचनाकरेछे:–अथ कविआलोचनः–

॥ दोहराः ॥–अव कविजन पूरव दशा, कहै आपसों आप; सहज हरष मनमें धरे, करे न पछाताप. ॥ ७१ ॥ सवैया इकतिसाः ॥–जो मे आप छांडि दीनो पररूप गहि लीनो, कीनी न वसेरो तहां जहां मेरो थल है; भोगनिको भोगी रहि करमको कर्ता भयो, हिरदे हमारे राग दोष मोह मल है; ऐसी विपरीति चाल भई जो अतीत काल, सो तो मेरी क्रियाकी ममता ताको फल है; ज्ञान दृष्टि भासी भयो क्रिया सों उदासी वह, मिथ्या मोह निद्रामे सुपनको सो छल है. ॥ ७२ ॥ दोहरा ॥:–अमृत चंदमुनिराज कृत, पूरन भयो गरंथ; समयसार नाटक प्रगट, पंचमगतिकोपंथ. ॥ ७३ ॥

अर्थः–हवे कलसनो करनार कविछे, ते पोतानेज पोतानी पूर्वदशा कहेछे. पोताना मर्म जाण्याथी सहज हर्ष उपज्यो छे, ते आलोचनामां धारे छे, पण पस्तावो करतो नथी. ॥ ७१ ॥ अतीत काले जे मह्यारो आत्मानो स्वभाव हतो ते मे छांडि दीधो, अने पर जे कर्मादिक पररूप हतो ते में लई लीधो, अने ज्यां समाधिविषे मारो निवास हतो, त्यां में वास न कीधो. पांच इंद्रियोना विषय भोगनो भोगी थईने कर्मनो कर्त्ता थयो, अमारा हैयामां राग द्वेषरूप महा मोह मल हतो, एवी उलटी चाले चाल्यो तेतो अतीत कालमां वात वीती; एवुं जे कार्य थयुं, तेतो मारी क्रियामां ममता राखी तेनुं फल थयुं; हवे तो ज्ञान दृष्टि भासी तेथी क्रियाथी उदासी थयो, अने जे अतीत कालमां अवस्था थई तेतो मोह मिथ्यात्व निद्रामां स्वपना जेवो खेल थयो. ॥ ७२ ॥ अमृतचंद आचार्यनो करेलो ग्रंथ संपूर्ण थयो; आ समयसार नाटक जे ग्रंथ छे ते प्रगट पणे पंचम गतिके० मुक्तिनो पंथ छे. ॥ ७३ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक ग्रंथ अमृतचंद आचार्यकृत संपूर्णम् ॥

हवे बणारसीदास कहेछेः-

॥ दोहराः ॥-जाकी जगति प्रजावसों, कीनो ग्रंथ निवाहि; जिन प्रतिमा जिन सारषी, नमे बनारसी ताहि. ॥ ७४ ॥

अर्थः-जेनी जक्तिना प्रजावे करीने गहनार्थ ग्रंथहतो तेनो निर्वाहकीधो, एवी आकालमां जिन प्रतिमा जे श्रीजिनेश्वर सरषी छे तेने बणारसीदास नमेछे. ॥ ७४ ॥

हवे जेवा श्री जिनेश्वर देव महात्म्यवंत छे, तेवी जिन प्रतिमा पण महात्म्यवंत छे ते कहेछेः-अथ जिन प्रतिमा महात्म्य कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-जाके मुख दरससों जगतके नैननिकों, थिरताकी वानी चढी चंचलता विनसी; मुद्रा देखे केवलीकी मुद्रा यादि आवे जहां, जाके आगे इंद्रकी विजूति दिसे तिनसी; जाको जस जपत प्रकास जगे हिरदेमे, सोई सुद्ध मती होइ हुती जो मलिनसी; कहत बनारसी सुमहिमा प्रगट जाकी, सोहे जिनकी सबी हे विद्यमान जिनसी ॥ ७५ ॥

अर्थः-श्री जिन प्रतिमाना मुख दर्शन थवाथी जे तेना जक्तजन छे तेना नयनने कंइ आगल सम्यग् दशा के० संवर दशा पामेली होय तेनी स्थिरतानी वाणी वधे अने जे जावपदार्थमां चंचलता होय तेनो नाश थाय. अने पद्मासन स्थित मुद्रा आकार ज्यां देखे, त्यां केवलीनी मुद्रा याद आवे छे; ते केवलीनी मुद्रा एम संजारवामां आवे छे के, जेनी आगल इंद्रनी संपदा छे ते तृण समान देखायछे, एटले चोसठ इंद्र महिमाकरेछे, अने ते दशा सांजलवामां आवे त्यारे त्यां जे केवलीना जश कहेवायछे, तेना गुणनो प्रकाश हैयामां जागेछे, अने त्यां जे पहेली मति सम्यग् दशामां मेली जेवी हती ते शुद्ध थई, तेथी वणारसीदास कहेछे के, जिन प्रतिमानो एवो प्रगट महिमा छे के ते विद्यमानजिनेश्वर समानज मानवी ॥ ७५ ॥

हवे जिनप्रतिमानो जेजक्तिवंत छे तेनुं वर्णन करेछेः-अथ प्रतिमा माने ताको वर्णनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-जाके उर अंतर सुदृष्टिकी लहरि लसी, विनसी मिथ्यात मोह निद्राकी समारषी; सैली जिन सासनकी फली जाके घट जयो, गरवको त्यागी षट दरवको पारषी; आगमके अक्षर परे है जाके श्रवनमे, हिरदे जंमारमे समानी वानी आरषी; कहत बनारसी अलप जवस्थिति जाकी, सोइ जिन प्रतिमा प्रवाने जिन सारषी ॥ ७६ ॥

अर्थः-जेना हैयामां सम्यग् दर्शननी लेहेर बिराजमान थई रही छे. अने मिथ्यात्व मोहनीय रूप निद्रानी मूर्छा ते विनास पामी छे, तथा जेना घटमांथी जिन शा

सननी शैली के० तत्त्व समजवामां अने तत्त्व समजणमां अहं बुद्धिरूप अभिमाननो त्याग थयोछे, अने जे छ ए द्रव्यने परखनारो छे, जेना श्रवणमां आगमना अक्षर पडे छे, एटले जे सिद्धांत सांभले छे, वली "ऋषेरियं आर्ष" आर्षित, ऋषि संबंधी वाणी ते जिनवाणी कहिये, ते जेना हृदयरूप भंडारमां समाणी छे, एटले भरी छे, तेमज वणारसी दास कहे छे के जेनी भवस्थिति अल्प आवी रही छे, तेज पुरुष जिन प्रतिमाने जिन सरिषी प्रमाण करेछे ॥ ७६ ॥

हवे वणारसी दास पोतानी कथनी कहेछेः—अथ वणारसी कथनः—

॥ चोपाईः ॥—जिन प्रतिमा जन दोष निकंदे; सीस नमाइ वनारसिवंदे; फिरि म नमांहि विचारे ऐसा; नाटक ग्रंथ परम पद जैसा ॥ ७७ ॥ परम तत्व परचे इस मांही; गुन थानककी रचना नांही; यामे गुनथानक रस आवे; तो गरंथ अति शोभा पावे ॥ ७८ ॥ दोहराः ॥—यह विचारि संक्षेपसों, गुनथानक रस योज, वरनन करे वनारसी, कारन सिव पथ खोज ॥ ७९ ॥

अर्थः—जिन प्रतिमा छे तेज मनुष्यना राग द्वेष मिथ्यात्वनुं निकंदन करनार छे, तेथी वणारसीदास मस्तक नमावीने तेने वंदे छे. पछी वनारसीदास मनमां एम विचारे छे के, आ नाटक ग्रंथमां जेवुं परमपद छे तेवुं आहीं कहेछे ॥ ७७ ॥

आ ग्रंथनां उपादेयरूप परम तत्त्व, आत्म तत्त्वनो परिचय छे. पण गुणस्थानकनी रचना आ ग्रंथमां नथी. हवे जो आ ग्रंथमां गुणस्थानकनो रस आवे तो आ ग्रंथ सारी शोभा पामे ॥ ७८ ॥ ए प्रमाणे विचारीने संक्षेप मात्र गुण स्थानकना रसनी चीजनुं वणारसीदास वर्णन करें छे. ते वर्णन शिवपंथनुं कारण छे अने शिवपंथनी खोजना छे. ॥ ७९ ॥

हवे गुणस्थानकनुं स्वरूप छे तेवुं कहेछेः—अथ गुनथानक सरूप कथनः—

॥ दोहराः ॥—नियत एक विवहारसों, जीव चतुर्दश भेद; रंग जोग बहु विधि भयो, ज्युं पट सहज सुपेद. ॥ ८० ॥

अर्थः—निश्चे जीव एकरूप छे. अने व्यवहारनयथी जीव चौद भेदे छे. आहीं दृष्टांत आपेछे, जेम वस्त्र सहज रंगमां सफेद छे. पण रंगना जोगथी विचित्र प्रकारना रंगनुं थाय, तेम गुणस्थानकथी जीवनो तेवो भेद छे. ॥ ८० ॥

हवे चौद गुणस्थानकनां नाम कहेछेः—अथ चतुर्दश गुनथानक कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः—प्रथम मिथ्यात दूजो सासादन तीजो मिश्र, चतुरथो अव्रत पंचमो व्रतरंच है; छठो परमत्त सातमो अपरमतनाम, आठमो अपूरव करन सुख संच है; नौमो अनिवर्त्तभाव दशमो सूछमलोभ, एकादशमो सु उपसंत मोह वंच

है; द्वादशमो छीन मोह तेरहों सजोगी जिन, चौदहों अजोगी जाकी थिति अंक पंच है. ॥ ८१ ॥ दोहराः ॥–वरने सब गुन थानके, नाम चतुर्दश सार; अब वरनों मिथ्यातके भेद पंच परकार. ॥ ८२ ॥

अर्थः–प्रथम मिथ्यात, बीजो सास्वादन, त्रीजोमिश्र, चोथो अविरत, पांचमो रंच मात्र व्रत एटले देशव्रती, छठो प्रमत्त, सातमो अप्रमत्त, एवां नाम छे. आठमो अपूर्वकरण अथवा निवृत्ति बादर, ए बे नाम छे. ते आंही सुखनो संचके० मिलाप छे. नवमो अनिवृत्ति बादर, दशमो सूक्ष्म लोभ, अग्यारमो उपशांत मोह, आंही मोहनी वंचना छे एटले मोहथी छुटवुं छे. बारमो क्षीण मोह कहीए, तेरमो सयोगी जिन, ते केवली थयो, चौदमो अजोगी जिन, जेनी स्थिति अ इ उ ऋ ऌ ए पांच ऱ्हस्व अक्षर जेटली छे. ॥ ८१ ॥ एम सर्व चउदे गुण स्थानना नामनुं सत्यार्थ वर्णन कीधुं ते शोभे छे. हवे अनुक्रमे पहेला मिथ्यात्व गुणठाणाना पांच प्रकारथी पांच भेद छे ते कहुंछुं. ॥ ८२ ॥

हवे पांच मिथ्यात्वनां नाम कहेछेः–अथ पंच मिथ्यावत्के नाम कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–प्रथम एकंत नाम मिथ्यात अभिग्रहीक, दूजो विपरित अभिनिवेसिक गोत है; तीजो विनै मिथ्यात अनाभिग्रह नाम जाको, चोथो संसे जहां चित भोरकोसो पोत हे; पंचमो अज्ञान अनाभोगिक गहलरूप, जाके उदे चेतन अचेतनसो होत है; ए पांचो मिथ्यात भ्रमावे जीवकों जगतमें, इन्हके विनास समकितको उदोत है. ॥ ८३ ॥

अर्थः–पांच मिथ्यात्वमां पेहेलुं एकांत पक्षना ग्राही अभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व छे. बीजुं मिथ्यात्व पेहेला मिथ्यात्वथी विपरित छे. तेनुं अभिनिवेसिक एवुं गोत के० नाम छे, त्रीजुं विनय मिथ्यात्व, सर्वने पूजवुं ते छे, जेनुं नामा अनाभिग्रहिक छे, चोथुं संसयिक मिथ्यात्व ज्यां भमराना बचानी माफक, चित्त भ्रमण करतुं रहे, पांचमुं अज्ञान मिथ्यात्व, ए अनाभोगीक पणाथी अजाणपणे एकेंद्रियादिकमां गहलरूपि छे. निद्रानी छाकनुं स्वरूपी छे. जेना उदयथी चेतन छे ते अचेतन थई रहुंछे. जेना नाम लीधा ते एज पांचे मिथ्यात्व जीवने जगत्मां भमावेछे. ए पांचे मिथ्यात्वनो विनाश थएथी समकितनो उद्योत थायछे ॥ ८३ ॥

हवे एकांतवादी अभिग्रहीक मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेछेः–अथ एकांत यथाः–

॥ दोहराः ॥–जो इकंत नय पक्ष गहि, छके करावे दक्ष, सो इकंत वादी पुरुष मृषावंत परतक्ष. ॥ ८४ ॥

अर्थः—साते नयमां हर कोई एक नयनो पक्ष ग्रहीने पोताना जाणपणामां छकी जायछे, अने दक्ष केο तत्ववेत्ता कहेवाय, ते एकांत मतनो स्थापक—मीमांसक नैयायक प्रमुख पुरुष छे ते प्रत्यक्षपणे अभिग्रहीक मिथ्यात्वी छे ॥ ७४ ॥

हवे जाणपणामां तो कांईक अनेकांतपणुं छे, पण हठथकी विपरीत कहेछे माटे तेनुं लक्षण कहेछेः—अथ विपरीत यथाः—

॥ दोहराः ॥—ग्रंथ उकति पथ उछपे, थापे कुमत मुकीय, सुजस हेत गुरुता ग्रहे, सो विपरीती जीय ॥ ७५ ॥

अर्थः—ग्रंथमां जे कह्यो एवो मार्ग तेने उथापीने निन्हवादिक पोतानी कुमति थापे, पोतानी प्रसिद्धि थवाने माटे गुरुता केο आचार्यपणुं ग्रहेछे, ते जीव अनेकांतताथी विपरीत थयो तेने अभिनिवेशिक मिथ्यामती कहीए ॥ ७५ ॥

हवे जेनुं विनय मिथ्यात्व छे एवा अनभिग्रहिक मिथ्यात्वीनुं लक्षण कहेछेः—

अथ विनय मिथ्यात्व यथाः—

॥ दोहराः ॥—देव कुदेव सुगुरु कुगुरु, गिने समान जु कोइ; नमें भगतिसों सब निकों, विनय मिथ्याती सोइ ॥ ७६ ॥

अर्थः—सुदेवने अने कुदेवने सुगुरुने अने कुगुरुने जे कोइ समानज गणे छे, अने तामली तापसनीपरे परिणाम प्रवर्ज्या लेइने भक्तिथी सर्वने नमेछे, पण गुणदोषनी खबर न होय ते विनय मिथ्यात्व कहिये ॥ ७६ ॥

हवे जेना जाणपणामां संदेह छे, ते संशय मिथ्यात्वी कहिये तेनुं लक्षण कहेछेः—

अथ संशय यथाः—

॥ दोहराः ॥—जो नाना विकलप गहे, रहे हिए हेरान; थिर व्हे तत्व न सद्दहे, सो जिय संसयवान ॥ ७७ ॥

अर्थः—जे अपार नय जाल देखिने जीवमां संशय राखे, नानाप्रकारना चित्त विकल्प ग्रहे अने हेरान थई रहेछे. स्थिरता राखीने तत्त्वने सर्दे नही तेज जीव संशयवंत मिथ्यात्वी कहीये ॥ ७७ ॥

हवे पांचमा अज्ञान मिथ्यात्वीनुं लक्षण कहेछेः—अथ अज्ञान यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाको तन दुष दहलसों, सुरति होति नहिं रंच; गहल रूप वरते सदा, सो अज्ञान तिरयंच ॥ ७८ ॥ पंच भेद मिथ्यातके, कहे जिनागम जोइ; सादि अनादि सरूप अब, कहों अवस्था दोइ ॥ ७९ ॥

अर्थः—शरीरमां दुःखना दहेलथी जेने हेय उपादेयनी, रंचमात्र सुरता रेहेती नथी, मूर्छित रूपे जे सदा वर्त्ते छे, ते एकेंद्रियादिक तिर्यंच अज्ञान मिथ्यात्वी कहिये॥७८॥

श्री जिनेश्वरना आगम सिद्धांत जोईने मिथ्यात्वना पांच नेद कहेछेः–जेनी आदि पामीए तेतो आदि मिथ्यात्व कहीए, अने जेनी आदि न पामीए तेतो अनादि मिथ्यात्व कहिये, एवी एवी मिथ्यात्वनी अवस्थानुं स्वरूप हवे कहेछे ॥ ८९ ॥

प्रथम सादि मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेछेः–अथ सादि यथाः–

॥ दोहराः ॥–जो मिथ्या दल उपसमे, ग्रंथ नेद बुद्धि होइ,
फिरि आवे मिथ्यातमें, सादि मिथ्याती सोइ ॥ ९० ॥

अर्थः–जे मिथ्यात्व मोहनीयना दलने उपशमावीने मिथ्यात्व ग्रंथी नेदीने ज्ञाता समकिती थईने पाछा मिथ्यात्वमां आवे ते सादि मिथ्यात्व कहीए. एना मिथ्यात्वमां हवे आदि थई तेथी सादि मिथ्यात्वी कहिये ॥ ९० ॥

हवे बीजुं अनादि मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेछेः–अथ अनादि मिथ्यात्व कथनः–

॥ दोहराः ॥–जिनि गरंथि नेदी नही, ममता मगन सदीव; सो अनादि मिथ्यामती, विकल वहिर्मुख जीव. ॥ ९१ ॥

अर्थः–जे जीवे मिथ्यात्व ग्रंथी नेदी नथी अने सदासर्वदा काल लगण, ममता मांज मग्न रहे, ते जीव अनादि मिथ्यात्वी कहीए; अने जे वहिर्मुख रहे, जेने परमात्मा द्रव्यनी दृष्टि नथी, ते बहिर्मुख जीव कहीए. ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री बणारसीदास कृत समयसार नाटकनेविषे प्रथम गुणस्थानकनो अधिकार संपूर्ण थयो.॥

॥ दोहराः ॥–कह्यो प्रथम गुण थान यह, मिथ्या मत अनिधान; अलप रूप अव वरनवुं, सासादन गुन थान. ॥ ९२ ॥

अर्थः–जेनुं मिथ्यात्व एवुं नाम छे, ते पेहेलुं गुणस्थानक सूचना मात्र कह्युं, हवे संक्षेप मात्र सास्वादन गुणस्थाननुं स्वरूप कहुंछुं. ॥ ९२ ॥

॥ सवैया इकतीसा; ॥–जैसे कोउ छुधित पुरुष खाइ खीर खांड, वोन करे पीछेके लगार स्वाद पावे हे; तैसे चढि चोथे पांचमे के छठे गुनथान, काहु उपसमीको कषाइ उदे आवे हे; ताहि समे तहां गिरे परधान दशा त्यागी, मिथ्यात अवस्थाकों अधोमुख व्हैं धावे हे; बीच एक समे वा छ आवली प्रमान रहे, सोइ सासादन गुनथानक कहावे हे. ॥ ९३ ॥

अर्थः–जेम कोइ क्षुधावंत पुरुष छे ते खीरखांड खाय, पछी तेने वमन करेछे. ते वमननी पछी पण खीरखांडना नोजननो लगारेक स्वाद पामेछे. तेम कोइ जीव उपशम सम्यक्त्व पामीने चोथे अविरत गुणस्थाने रह्यो छे. अथवा उपशम सम्यक्त्व पामताज सरखो समान पांचमा गुणठाणें अथवा छठे गुणठाणे चढ्यो त्यां समकितनी

उज्वलता न थई, अने अनंतानुबंधी उपशमि कषाय हतो ते उदय थयो ते समयमां ते त्रणे गुणठाणाथकी ते उपशम सम्यक्त्वनी प्रधान दशा जे श्रेष्ट दशा तेने त्यागीने फरी मिथ्यात्व दशाने उंधे मुखे उलटो रहेछे, एटले मिथ्यात्व पामतामां अने सम्यक्त्व छूटतामां वचे एक समयकाल प्रमाणे अथवा उत्कृष्ट छ आवलिका प्रमाणे जे सम्यक्त्व अंश रहेछे तेनेज सास्वादन गुण स्थानक कहिए. ॥ ए३ ॥

॥ इति द्वितीय गुन थानक समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥—सासादन गुन थान यह, जयो समापत बीय; मिश्र नाम गुन थान अब, वरनन करों त्रितीय. ॥ ए४ ॥

अर्थः—आ बीजुं सास्वादन नामे गुणस्थान संपूर्ण थयुं. हवे त्रीजुं मिश्र गुनथाननुं वर्णन करुंछुं. ॥ ए४ ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥—उपसमी समकिती केतो सादि मिथ्यामती, दुहूनिको मिश्रीत मिथ्यात आइ गहे है; अनंतानुबंधी चोकरीको उदे नांही जामे, मिथ्यात समे प्रकृति मिथ्यात न रहेहे; जहां सद्दहन सत्यासत्यरूप समकाल, ज्ञान जाव मिथ्या जाव मिश्र धारा वहे हें; जाकी थिति अंतर मुहूरत वा एक समे, एसो मिश्र गुन थान आचारज कहे हे. ॥ ए५ ॥

अर्थः—उपशम सम्यक्त्व मिथ्यात्व, मिश्र,अने सम्यक्त्व रूप त्रण पुंज करीने ज्यारे मिश्र पुंजमां जीव वर्त्ते, अथवा सम्यक्त्वथी पडीने फरी मिथ्यात्वमां आवी सादि मिथ्यात्वी थईने मिश्र पुंज उदय थयाथी मिश्रमां वर्त्ते, ए वेउने मिश्र गुण स्थानक कहिये, केमके मिथ्यात्व सम्यक्त्व थको वर्त्ते छे. जेथी संसार अनंतो वधे ते अनंतानुबंधीनी चोकडी कहिए, तेनो जेमां उदय नथी अने मिथ्यापणुं शमे तथा उपशमेछे, त्यां मिथ्यात्वनी प्रकृतिनो उदय रहेतो नथी. ज्यां समकाले सत्यासत्यरूप श्रद्धा छे, एटले श्रद्धामां साचुं खोटुं वेउ छे, तिहां ज्ञान जाव छे, ते मिश्र धारामां वहेछे. अने मिथ्यात्व जाव पण सम्यक्त्व धाराथी मिश्रित धारा थकी वहेछे. जेनी उत्कृष्ट स्थिति अंतर्मुहूर्त्त कालनी छे, अथवा जघन्य एक समयनी छे. एनुं नाम त्रीजुं मिश्र नामे गुणठाणुं आचार्यजी कहेछे. ॥ ए५ ॥ ॥ इति तृतीय गुनस्थान समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥—मिश्र दशा पूरन जई, कही यथा मति जापि; अब चतुर्थ गुनथान विधि, कहों जिनागम साषि, ॥ ए६ ॥

अर्थः—मिश्र गुणठाणानी जेवी दशा छे, ते जेवी पोतानी बुद्धि छे तेवी रीते जाषारूप कही ते संपूर्ण थई, हवे श्री जिनागमनी शाष लईने चोथा सम्यक्त्व गुणठाणानो विधि कहुंछुं ॥ ए६ ॥

हवे चोथा सम्यक्त्व गुणठाणानुं वर्णन करेछेः—अथ सम्यक्त्व वर्णनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—केई जीव समकित पाइ अर्ध पुद्गल, परावर्त्त काल तांई चोखे होई चित्तके; कोई एक अंतर मुहूरतमें ग्रंथि नेदि, मारग उलंघि सुख वेदे मोष वितके; ताते अंतरमुहूरतसों अर्द्ध पुद्गलसों, जेते समे होही तेते नेद समकितके; जाही समे जाको जब समकित होई सोई, तवहीसों गुन गहे दोष दहे इतके.॥९७॥

॥ दोहराः ॥—अथ अपूर्व अनवर्त्ति त्रिक, करन करे जो कोइ; मिथ्या ग्रंथि विदार गुन, प्रगटे समकित सोइ. ॥ ९८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्व पामीने चित्तनो चोखो थईने अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त काल लगण संसारमां रहेछे,अने कोईक जीव तो एकज अंतमुहूर्त्त कालमां मिथ्यात्व ग्रंथी नेदी समक्त्व पामीने चारे गतिनो मार्ग उल्लंघन करी मोक्षरूप वित्तना सुख वेदे, पण संसारमां रहे नही, तेथी सम्यक्त्व पामीने जघन्य संसार स्थिति एक अंतर् मुहूर्त्तनी छे अने उत्कृष्ट संसार स्थिति अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी थायछे, हवे एटली संसार स्थितिनी वचमां एक एक समयनी वृद्धि करता जेटला ते स्थितिना नेद थाय तेटला सम्यक्त्वना नेद पामीए. ए रीते सम्यक्त्वना घणा नेद पामिये; जे समये जेने सम्यक्त्व उदय होय ते समये ते जीव त्यारथी पोताना गुण ग्रहेछे; अने इतके के० ते संसार अवस्थाना दोषनुं दहन करेछे.॥९७॥ अथ के० यथाप्रवृत्ति करण, अपूर्व करण, अनिवृत्ति करण ते त्रणे करण जे कोई नव्यजीव करेछे त्यां कोईक वखते एक, आयुकर्मविना साते कर्मनी स्थिति अंत कोडा कोमी सागरोपम प्रमाण रहे, त्यारे यथाप्रवृत्ति करण थाय. पछी मिथ्यात्व ग्रंथी नेदवाथी अपूर्वकरण थाय, अने सम्यक्त्व प्रगटवाथी अनिवृत्तिकरण थाय, जे कोई एत्रणे करणे करी मिथ्यात्व ग्रंथी विदारीने सम्यक्त्व स्वरूप पामे तेज सम्यक्त्व कहिये ॥ ९८ ॥

हवे अष्ट प्रकारथी सम्यक्त्व विवरण करे छेः—अथ अष्टरूप कथनः—

॥ दोहराः ॥—समकित उतपति चिन्ह गुन, नूषण दोष विनास; अतीचार जुत अष्ट विधि, बरनों बिवरन तास ॥ ९९ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वनुं सरूप,१ सम्यक्त्वनी उत्पत्ति,२ सम्यक्त्वनुं चिन्ह,३सम्यक्त्वनो गुण, ४ सम्यक्त्वनुं नूषण, ५ सम्यक्त्वना दोष, ६ सम्यक्त्वनो विनाश,७ सम्यक्त्वना अतिचार, ८ ए सर्व आठ प्रकार थया, तेनो विवरो करुंछुं ॥ ९९ ॥

हवे प्रथम सम्यक्त्वनुं सरूप कहेछेः—अथ सम्यक्त्व यथाः—

॥ चोपाईः ॥—सत्य प्रतीति अवस्था जाकी; दिन दिन रीति गहे समताकी; छिन छिन करे सत्यको साको; समकित नाउ कहावे ताको ॥ ६०० ॥

अर्थः—सत्यमां जेनी प्रतीत छे, जे साचानेज सर्दहेछे, एवी जेनी अवस्थाछे अने दिवसे दिवसे वधती वधती क्षमा निर्लोभता प्रमुख समतानी रीत जे ग्रहण करेछे. एवुं सत्य कार्य पहेलां कदी न कर्युं, तेथी हवे क्षण क्षणमां सत्यनी साको के० महा कार्य जे करेछे, ते जावनुं नाम सम्यक्त्व कहीए ॥ ६०० ॥

हवे सम्यक्त्वनी उत्पत्ति कहेछेः—अथ उत्पत्ति यथाः—

॥ दोहराः ॥—केतो सहज सुजावको, उपदेशे गुरु कोइ; चिहुँ गतिसेती जीवकों, सम्यक दरशन होइ, ॥ १ ॥

अर्थः—नदीने किनारे उन्ना पाणीना कल्लोल आवता जाताना न्यायथी एटले सरिदुपल घोलना न्यायथी कोइने सहज स्वन्नावमांज समकित उपजे, कोईने गुरुना उपदेश थकी सम्यक्त्व उपजे. जे जीव चारे गतिमां शयन निद्रा करी रह्यो हतो तेने जे सम्यक्त्व उपजे छे, ते एवा एवा प्रकारथी उपजेछे ॥ १ ॥

हवे जेथी सम्यक्त्व उपज्युं जाणीए ते सम्यक्त्वनां लक्षण कहे छेः—अथ लछन यथाः—

॥ दोहराः ॥—आपा पर परचेविषे, उपजे नहिं संदेह; सहज प्रपंच रहित दशा, समकित लक्षण एह ॥ २ ॥

अर्थः—आत्मा अने आत्माथी बीजां जे कर्मादिकना पुद्गल छे, एटले बीजा पांचे द्रव्य तेना परिचय प्रतीतिमां, संदेह उपजे नही अने सहज स्वन्नावमां आत्मदशा ते मायाप्रपंच रहितथाय ए सम्यक्त्वनां लक्षण कहिये ॥ २ ॥

हवे सम्यक्त्वना गुण कहेछेः—अथ गुन यथाः—

॥ दोहराः ॥—करुना वछल सुजनता, आतमनिंदा पाठ; समता न्नगति विरागता, धरम राग गुन आठ ॥ ३ ॥

अर्थः—दया तथा सर्वेनुं हित वांछक पणु, सर्व साथे मैत्री न्नाव राखवो, आत्मनिंदानुं पठन करवुं, इष्ट अनिष्ट उपर समन्नावे रहेवुं, देव गुरुनी न्नक्ति, वैरागरसमांज न्निज्या थका रहेवुं, धर्मथी राग राखवो. ए सम्यक्त्वना आठ गुण छे ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच न्नूषण कहे छेः—अथ पंच न्नूषण यथाः—

॥ दोहराः ॥—चित प्रन्नावना न्नावजुत, हेय उपादेयवानि; धीरज हरष प्रवीनता न्नूषन पंच बखानि ॥ ४ ॥

अर्थः—चित के० ज्ञान एटले जिन शासननो जेवी रीते प्रन्नाव वधे तेवा न्नावमां रहेवुं, हेय उपादेयना ज्ञानवंत थई धैर्यमां रहेवुं, सम्यक्त्वपामीने हर्ष राखवो, तत्त्वविचारमां प्रवीणता राखवी, ए पांच सम्यक्त्वनां न्नूषण वखाणिए ॥ ४ ॥

नंतानुवंधी लोज्ञ, पांचमी प्रकृति मिथ्यात्व मोहनीय, छठी प्रकृति मिश्र परिणाम एटले मिश्र मोहनीय, सातमी प्रकृति जे छे ते पहेली छए प्रकृतिनुं सम थयुं एटले दबाई गई ते सातमी सम्यक्त मोहनीय जाणवी, एमां धुरली छ प्रकृतितो विंग वनितासी के० वाघणी जेवी छे. एनी गैल लागी तो कांइ बूटती नथी, अने एक सातमी प्रकृति कुतियासी के०कुज्ञार्या जेवी छे. तेनोपण ज्ञरोसो नथी. ए साते मोह नीयनी प्रकृति ते जीवनासद्ज्ञावनी रोकनार छे. ॥ १४ ॥

हवे साते प्रकृतिथी सम्यक्त्वना ज्ञेद उपजे ते कहे छेः—अथ सम्यक्त्व ज्ञेद कथनः—

॥ छप्पय छंदः ॥—सात प्रकृति उपसमहि, जासु सो उपसम मंम्फित; सात प्रकृति छय करन, हार छायकी अखंडित; सातमांहि कछु षिपहि, कछुक उपसम करि रखे; सो छय उपसमवंत, मिश्र समकित रस चखे; षट प्रकृति उपशमइवा षिपइ, अथ वा छय उपशम करे; सातई प्रकृति जाके उदय, सो वेदक समकित धरे ॥ १५ ॥

अर्थः—जेने ए सात प्रकृति उपसमी जाय तेतो उपसमी, पंम्फित के० ज्ञाता होय तेनुं नाम उपशम सम्यक्त्व कहीए;अने जे ए साते प्रकृतिनो क्षय करनार होय तेने क्षायकी कहीए, ते अखंम्फित क्षायक सम्यक्त्व होय, वली ए साते प्रकृतिमां कंई ख पावे, कंई उपशमावी राखे,तेतो उपशम लक्षण सहित,तेमां मिश्ररूप सम्यक्त्व रसने चाखे, ए साते प्रकृतिमां छ प्रकृति उपशमे अने सातमी सम्यक्त्व मोहनीय तो प्र कृति उदय आवी वेदे छे. अथवा छ प्रकृति क्षय थईछे अने सातमी वेदे छे. अथवा छ प्रकृतिमां कोई प्रकृतिनो क्षय थयो छे, अने कोइनो उपशम थयोछे, अने सातमी प्रकृति वेदे छे ते वेदक सम्यक्त्व धारी कहीए ॥ १५ ॥

हवे सर्वे सम्यक्त्वना नव ज्ञेद कहे छेः—अथ नवविधि सम्यक्त्व वर्ननंः—

॥ दोहराः ॥—छय उपसम बरते त्रिविध, वेदक चार प्रकार; छायक उपशम जुग लयुत, नौधा समकित धार ॥ १६ ॥

अर्थः—क्षयोपशमसमकित त्रण प्रकारनुं वर्त्ते छे. वेदक सम्यक्त्वना चार प्रकारे छे, क्षायक सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे अने उपशम सम्यक्त्वनो एक प्रकार, ए क्षायकने उपशम बेहुना मलवाथी सर्व मली नव प्रकारनो सम्यक्त्वधारी थाय ॥१६॥

हवे क्षयोपशम सम्यक्त्वना त्रण प्रकार कहेछेः—अथ क्षयोपशम त्रयि यथाः—

॥ दोहराः ॥—चारि षिपहि त्रय उपसमहि, पण षय उपसम दोइ; षै षट उपसम एक यों, षय उपसम त्रिक होइ ॥ १७ ॥

अर्थः—साते प्रकृतिमां अनंतानुबंधीनी चोकमी खपी गइछे, अने त्रण दर्शन मोहनी उपसमी छे, तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिए. अथवा चार अनंतानुबंधी अने मि

थ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति क्षय गईछे, अने बे उपशमी छे, तेने पण क्षयोपशम सम्यक्त्व कहीए; अथवा मिश्र मोहनीय लगण छ प्रकृति क्षय गई, अने सातमी उपश मावी छे, तोपण क्षयोपशम सम्यक्त्व कहीए; ए त्रण प्रकारे क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय. हवे क्षयोपशम सहित सम्यक्त्व मोहनीय वेदवाथी जे क्षयोपशम वेदक नीपजे छे, तेना बे प्रकार छेः—अथ क्षयोपशम वेदक ठिक यथा कथनः—

॥ दोहराः ॥—जहां चारि प्रकारती षिपहिं, द्वै उपसम इक वेद; षय उपसम वेदक दशा, तासु प्रथम यह भेद. ॥ १८ ॥ पंच षिपे इक उपसमै, इक वेदे जिहि ठौर, सो षयउपसम वेदकी, दशा दुतिय यह और ॥ १९ ॥

अर्थः—ज्यां अनंतानुबंधी चार प्रकृति क्षय थाय छे; अने मिथ्यात्व अने मिश्र ए बेउ प्रकृति उपशमेछे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदेछे, आवी दशामां जे क्षयोपशम सहित वेदक समकित थयुंछे, तेनो आ प्रथम भेद छे. ॥ १८ ॥ वळी ज्यां चार अनंतानुबंधी अने मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति खपीछे, अने एक मिश्र मोहनीय उपशमी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे क्षयोपशम सहित वेदक समकितनी आ बीजी दशा थई. ॥ १९ ॥

हवे जे क्षायिक सहित वेदकछे, अने उपशमसहित वेदक छे, तेनो प्रकार कहे छेः—अथ क्षायक वेदक उपशम वेदक यथा कथनः—

॥ दोहरा ॥—षय षट वेदे एक जो, ष्यायक वेदक सोइ, षट उपसम इक प्रकृति विद, उपसम वेदक होइ. ॥ २० ॥ खायक उपसमकी दशा, पूरव षट पदमांहि, कही प्रगट अब पुनरुकति, कारन वरनी नांहि. ॥ २१ ॥

अर्थः—ज्यां चारे अनंतानुबंधि अने मिथ्यात मोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए छ प्रकृति खपी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे क्षायिक वेदक सम्यक्त्व कहिये; अने ए जे पूर्वे छ प्रकृति कही ते जेणे उपशमावी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे उपशम वेदक सम्यक्त्व कहिये. ॥ २० ॥ क्षयोपशम नामे जे सम्यक्त्व कहीए, तेनी दशा तो पाछला षट्पद के० छपय छंदमा कही छे, तेमां ए सातमां कंईक उपशम करी राखे, एवुं प्रगट कहेलुं छे. तेथी आंहि फरी कहेवायाथी पुनरुक्ति दोष लागे ते कारणथी फरी वरणवी नथी. ॥ २१ ॥

हवे सम्यत्वना मूल भेद चार अने उत्तर भेद नव छे ते कहेछेः—अथ भेद विवरनः—

॥ दोहराः ॥—षय उपसम वेदक षिपक, उपसम समकित च्यारि; तीन च्यारि इक इक मिलत, सब नव भेद विसारि. ॥ २२ ॥

अर्थः—क्षयोपशम सम्यक्त्व, वेदक सम्यक्त्व, क्षायक सम्यक्त्व, उपशम सम्यक्त्व,

एवा मूल चार भेद समकितना थया. वली क्षयोपशमना त्रण भेद, वेदकना चार भेद अने क्षायकनो एक भेद, उपशमनो एक भेद, ए सर्व मली समकितना नव उत्तर भेद थाय. ॥ २२ ॥

हवे निश्चयादिक सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहेछेः—अथ निश्चे व्यवहार सामान्यविशेषः—

॥ सोरठा ॥—अब निहचे विवहार, अरु सामान्य विशेष विधि; कहों च्यारि परकारि, रचना समकित भूमिकी. ॥ २३ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—मिथ्या मति गंठि भेद जगी निरमल ज्योति, जोगसों अतीत सोहे निहचे प्रवानिये; वहे दुंद दसासों कहावे जोग मुद्रा धरे, मति श्रुति ज्ञान भेद विवहार मानिये; चेतना चिह्न पहिचान आपपर वेदे, पौरुष अलप ताते समान वखानिये; करे भेदाभेदकी विचार विसताररूप हेय गेय उपादेयसों विशेष जानिये. ॥ २४ ॥ सोरठाः ॥--थिति सागर तेतीस, अंतर मुहुरत एक वा; अविरति समकिति रीस, यह चतुर्थ गुन थान इति ॥२५॥

अर्थः--हवे निश्चयथी अने व्यवहारथी सामान्य विशेषपणो कहेछे सम्यक्त्वनी भूमिनी चार प्रकारनी रचना छे ते कहेछे. ॥२३॥ प्रथम मिथ्यात्व ग्रंथी भेदिने जे आत्मानी निर्मल ज्योति जागी छे अने जे ज्योति मन, वचन, कायाना जोगथी अतीत छे तेतो सम्यक्त्व निश्चयनयथी प्रमाण करीए. बीजुं ते सम्यक्त्व द्वंद्व दशाथी वर्त्तमान थाय छे, एटले बहु विकल्पथी धामधुम दशाथी वर्त्ते छे. त्यारे तो एवुं कहेवाय छे के ए जोग मुद्रा धारी छे, आ मतिज्ञानी छे, आ श्रुत ज्ञानी छे. एवा भेद व्यवहारनयथी मानिये छे. त्रीजुं ए आत्माना चेतनारूप चिन्ह के० लक्षण जाणीने आत्म द्रव्य अने परद्रव्यने वेदे छे. परंतु अंतरायना उदयथी पुरुष पराक्रमअल्प छे, एटले अविरति छे. तेथी ए सामान्यपणे सम्यक्त्व कहीए. चोथुं गुण अने गुणिनो भेदाभेद विचार विस्ताररूप करे० जेम आत्मा गुणिछे; ज्ञानादिक गुण छे. तेना भेदाभेदनो विचार करवो, एवा हेय, ज्ञेय, उपादेयनो विचार राखवो. विशेषपणे सम्यक्त्व जाणिए. ॥ २४ ॥ अविरति सम्यक्त्वनी उत्कृष्टि तेत्रीस सागरोपम स्थिति अथवा जघन्यथी एक अंतर मुहूर्त्तनी स्थिति होय. अविरति सम्यक्त्वनी रहस्य मर्यादा एवे प्रकारे होय, ए चोथुं गुणस्थानक समाप्त थयुं. ॥ २५ ॥

हवे पांचमां गुणस्थानकना विवरणनो आरंभ करेछेः--अथ पंचमगुनथानक आरंभ.

॥ दोहराः ॥--अब वरनो इकवीस गुन, अरु बावीस अभष्य; जिन्हके संग्रह त्यागसों, सोहे श्रावक पष्य. ॥ २६ ॥

अर्थः--तेमां प्रथम पांचमा गुणस्थानक लायक श्रावकना एकवीस गुण कहुंछुं.

अने वावीस अजक्ष छे ते कहुंछुं. जे गुणने संग्रह करवाथी अने जे अभक्षने त्याग वाथी श्रावकनो पक्ष गुणसंग्रहीत शोजायमान थाय ते कहुंछुं. ॥ २६ ॥

हवे श्रावकना एकवीस गुणनां नाम कहेछेः—अथ श्रावक इकवीसगुन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—लज्जावंत दयावंत प्रसंत प्रतीतवंत, परदोषकों ढकैया पर उपकारी है; सोम दृष्टि गुन ग्राही गरिष्ट सबकों इष्ट, सीष्ट पक्षी मिष्टवादी दीरग विचारी है; विशेषज्ञ रसज्ञ कृतज्ञ तज्ञ धरमज्ञ, नदीन न अजिमानी मध्य विवहारी है; स हजै विनीत पाप क्रियासों अतीत एसो, श्रावक पुनीत इकवीस गुन धारी है ॥ २७ ॥

अर्थः—लज्जावंत १, दयावंत २, शांतमूर्ति ३, प्रतीतवंत ४, परदोषनो ढांकनार ५, परउपकारी ६, सोमदृष्टि ७, गुणग्राहक ८, गुरुवाई ९, सर्वनो वल्लज १०, शिष्टाचारनो पक्षी ११, मिष्टवचन बोलनार १२, ऊंडो विचार विचारे १३, विशेष ज्ञाननो जाणनार १४, शास्त्ररस जाणनार १५, करेला उपकारने जाणे १६, ते उपकारने जाणे १७, ध र्मने जाणनार १८, अदीनपणुं ग्रहे अजिमानी रहे नही १९, एवा मध्यम व्यवहारमां रहे, के जेथी सहज स्वजावे विनयवंत होय २०, अने पापक्रियाथी रहित होय २१, एवा पवित्र श्रावक एकवीश गुणना धारनार थाय. ॥ २७ ॥

हवे जघन्य श्रावकने वावीस वस्तु अजक्ष छेः—अथ वावीसअजक्ष वर्ननः—

॥ कवित्त छंदः—उंरा घोरवरा निसज्ञोजन, वहु वीजा वेगन संधान; पींपर वर उंबरि कठूंबरी, पाकर जोफल होइ अजान; कंद मूल माटी विष आमिष, मधु माषन अरु मदिरापान; फल अति तुछ तुसार चलित रस, जिनमत ए वावीस अषान. ॥ २८ ॥

अर्थः—गमोरा हेमा करहा १, काचा धोलनां वमा २, रात्री जोजन ३, वहु वीज फल ते दामम प्रमुख ४, वेगण ५, अथाणुं पाणीमांहेलुं ६, पीपलनी पीपी ७, वम वृक्षनां फल ८, घोलरनां फल ९, कठुंवरनां फल १०, पाकरीनां फल ११, अजाण्यां फल १२, कंदमूलनी जाति सर्व १३, माटीनीजाति १४, अफीमप्रमुख १५, मांस १६, मधु १७, मांखण १८, मदिरापान १९, वहु तुछ फल काचुं फल २०, हीम २१, जेनो वर्ण, रस, गंध, स्पर्श फरी गयो होय ते चलित रस २२, ए वावीस वस्तु श्री जिने श्वरना मत धारीने अजक्ष छे. ते खावी नही ॥ २८ ॥

॥ दोहराः ॥—अव पंचम गुन थानकी, रचना वरनो अल्प;
जामे एकादश दशा, प्रतिमा नाम विकल्प. ॥ २९ ॥

अर्थः—हवे देशविरतीनामे पांचमा गुनथानननी रचना अल्पमात्र वर्णवुं छुं. संक्षेपमात्र करीने ते गुणथानमां अग्यार प्रतिमा धारी छे. प्रतिमा एवुं नाम चारित्र विकल्पनुंछे.॥२९॥

हवे अगीआर प्रतिमानां यथार्थनाम कहेछेः—अथ एकादश प्रतिमा नामकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥–दंसन विशुद्धकारी वारह विरतधारी, सामायक चारी पर्व पोसह विधि वहे; सचित्तको परिहारी दिवा अफरस नारी, आठो जाम ब्रह्मचारी निरारंनी व्है रहे; पाप परिग्रह छंडे पापकी न शिक्षा मंडे, कोउ याके निमित्त करे सो वस्त न गहे; एते देस व्रतके धरैया समकिती जीव, ग्यारह प्रतिमा तिन्हे नगवंतजी कहे ॥ ३० ॥

अर्थः–दर्शन विशुद्धिनी करनारी दर्शन प्रतिमा १, वारे व्रतनी धारनारी विरति प्रतिमा २, ज्यां सामायिकनो उच्चार छे ते सामायिक प्रतिमा. ३, ज्यां पर्व आठ्याथी पोसह करवो ते पोसहप्रतिमा ४, ज्यां सचित्त वस्तुनो परिहार करिये ते सचित्त परिहार प्रतिमा ५, ज्यां दिवसे स्त्री स्पर्श न करवो ते दिवस अस्पर्श प्रतिमा ६, आठे प्रहर ब्रह्मचर्यमां रहेवुं ते ब्रह्मचर्य प्रतिमा ७, सर्व आरंनो ज्यां त्याग करवो ते निरारंनी प्रतिमा ७, परिग्रहने त्यागवो ते परिग्रह त्याग प्रतिमा ए, ज्यां पापोपदेश न देवो ते पापोपदेश त्याग प्रतिमा १०, कोई आपणा निमित्त आहारादिक वस्तु करे ते ले नही ते उद्देशिक त्याग प्रतिमा ११, ए अगीयार प्रकारे करीने देश विरत धारी सम्यक्त्वि जीव कह्याछे. तेनी आ इग्यार प्रतिमारूप प्रतिज्ञा नगवंतजी कहे छे ॥ ३० ॥

हवे ए प्रतिमानो अर्थ कहेछेः–अथ प्रतिमा कथनः

॥ दोहरा ॥ संयम अंस जग्यो जहां, नोग अरुचि परिनाम; उदे प्रतिज्ञाको नयो प्रतिमा ताको नाम. ॥ ३१ ॥

अर्थः–जहां संयम चारित्रनो अंस जाग्यो अने नोग अरूचिना परिणाम थया, त्यां कोई प्रतिज्ञानो उदय थयो तेनुं नाम प्रतिमा कहीए. ॥ ३१ ॥

हवे प्रथम दर्शन प्रतिमानुं विवरण करेछेः–अथ प्रथम प्रतिमा यथाः–

॥ दोहराः ॥– आठ मूलगुण संग्रहे, कुवसन क्रिया न कोइ; दर्शन गुन निर्मल करे; दर्शन प्रतिमा सोइ ॥ ३२ ॥

अर्थः–आहीं पेहेला कह्या छे करुणा वत्सल, सुजनता इत्यादिक सम्यक्त्वना आठ मूल गुण छे तेनो संग्रह करे, ज्यां साते व्यसननी क्रिया नथी एवा सम्यक्त्व दर्शनना गुण निर्मल करे, तेज दर्शन प्रतिमा कही. इहां व्रत नथी एनो काल एक मासनो छे ॥३२॥

हवे बीजी प्रतिमानो विवरो कहेछेः–अथ द्वितीय प्रतिमा यथाः–

॥ दोहराः ॥–पंच अनुव्रत आदरे, तीन गुण व्रत पाल; सिक्षा व्रत च्यारों धरे, यह व्रत प्रतिमा चाल. ॥ ३३ ॥

अर्थः—पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने सामायिक धारे १, पोसह धारे २, देशा वकासिक करे ३, अतिथि संविभाग करे ए चार शिक्षाव्रत धारे, ते व्रत प्रतिमा, जाणवी. तेनो काल बे महीनानो छे. ॥ ३३ ॥

हवे त्रीजी सामायिक प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ तृतीय प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—दर्वभाव विधि संजुगत, हिये प्रतिज्ञा टेक; तजि ममता समता गहे, अंतर मुहुरत एक, ॥ ३४ ॥ चोपाईः॥—जो अरि मित्र समान विचारे, आरत रूद्र कुध्यान निवारै; संजमसहित भावना भावे; सो सामायकवंत कहावे. ॥ ३५ ॥

अर्थः—दश दोष वचनना टालवा, बार दोष कायाना टालवा, ए द्रव्यविधि अने दश दोष मनना टालवा ते भावविधि जाणवो. तेणे करीने संयुक्त; अने हैयामां एक शो आठ पंचपरमेष्टी मंत्रनुं स्मरण लागी रहे, एम बीजी पण कोई प्रतिज्ञानी टेक राखीने, ममता तजीने, समता ग्रहण करवी, एम एक अंतरमुहूर्त्त काल पर्यंत सामायिक चारित्र थाय ॥ ३४ ॥ जे कोई शत्रु मित्रने समान विचारे, आर्त्तध्यान रौद्रध्यानतुं निवारण करे, पंच संवर सहित थाय, बार भावना भावे, तेज सामायिकधारी श्रावक कहिए; ए त्रीजी प्रतिमा त्रण मासनी होय ॥ ३५ ॥

हवे चोथी पोसह प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ चतुर्थ प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—सामायक कीसी दसा, चार पहर लों होइ;
अथवा आठ पहर रहे, पोसह प्रतिमा सोइ. ॥ ३६ ॥

अर्थः—जे पूर्वे सामायिकनी दशा कहीछे तेवी दशा चार प्रहर लगी होय, अथवा तेवी दशा आठ प्रहर लगी रहे, तेज पोसह प्रतिमा धारी श्रावक कहीए. ए चार मासनी प्रतिमा जाणवी इहां आठम, चउदश, अमास, पूनमने दहाडे तथा पर्वदिन आवेथी पोसह करे ॥ ३६ ॥

हवे पांचमी सचित्त परिहार प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ पंचमी प्रतिमायथाः—

॥ दोहराः ॥—जो सचित्त भोजन तजे, पीवे प्रासुक नीर;
सो सचित्त त्यागी पुरुष, पंच प्रतिज्ञागीर ॥ ३७ ॥

अर्थः—जे सचित्त भोजननो त्याग करे अने फासु जल पीए, ए रीते जे पुरुष सचित्त वस्तुनो त्याग करे, ए पेहेली प्रतिमाथी एटली वधती, क्रिया करे तेतो पांचमी प्रतिमानो धरनार जाणवो. ए प्रतिमा पांच मास सुधी रहे. ॥ ३७ ॥

हवे छठी ब्रह्मचर्यप्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ षष्टि प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो दिन ब्रह्मचर्यव्रत पाले; तिथि आए निसि द्यौस संभाले;
गहि नौवाडी करै व्रत रक्षा; सो षट प्रतिमा साधक अक्षा ॥ ३८ ॥

अर्थः--सचित्तनो परिहारि तो प्रथमनीज रीते छे. अने दिवसे ब्रह्मचर्य वधारे पाले. अने पंचमी आदिपर्व आवे दिवसरात्रिमां एटले आठ प्रहर ब्रह्मचर्य पाले त्यां नववाडे करीने ब्रह्मचर्यवृत्तनी रक्षा करे, ते पुरुष छठी प्रतिमानो साधनहार होय ते छमास लगणनी जाणवी ॥ ३८ ॥

हवे सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो विवरो कहे छेः—अथ सप्तमी प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाई ॥—जो नववाडि सहित विधि साधे; निशिदिन ब्रह्मचर्य आराधे; सो सप्तम प्रतिमाधर ज्ञाता; शील शिरोमनि जगत विख्याता ॥ ३९ ॥

अर्थः—जे श्रावक नववाड सहित जे ब्रह्मचर्यवृत्तनो विधि छे, ते विधिये रात दिवस ब्रह्मचर्यने आराधतो रहे, अने जे आगल छ प्रतिमानी क्रिया कही छे तेने तो लीधो रह्या छे. एवो जे श्रावक छे, तेतो सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो धरनार ज्ञानी पुरुषशील शिरोमणि जगत्मां प्रख्याति पामेलो जाणवो ॥ ३९ ॥

हवे आंही प्रसंगथी नव वाडनो विवरो कहे छेः—अथनौवाडि यथाः—

॥ कवित्तछंदः ॥—तियथलवास प्रेमरुचि निरषन, देपरीछ भावन मधुवेन; पूरवभोगकेलि रसचिंतन, गुरु आहार लेत चितचेन; करि सुचि तन सिंगर बनावत, तियपरजंक मध्यसुखसेन;मनमथ कथा उदरि भरि भरि भोजन,ए नववाडि जान मतजेन॥४०॥

अर्थः—ज्या स्त्रीउं वसे त्यां वास न करवो, प्रेमरुचि राखीने स्त्रीना अंगोपांग देखवां नहीं, दृष्टिदोषनुं निवारण करीने, आडो पडदो आपीने स्त्रीना मधुर वचन सांभले नहीं, पूर्व कालमां जे भोग क्रीडा करी होय तेनो रस चिंतवे नहीं, चित्तना चेनने अर्थे घृतादिक सहित गरिष्ट आहार लेहीं, स्नान मज्जनथी शरीरने पवित्र करीने शृंगार शोभा सजे नहीं, स्त्रीने सुवाना पलंगमां सुखसेन करे नहीं, मन्मथ जे कंदर्प तेनी कथा कहे नहीं, पेट भरीने भोजन न करे, ए नव वाडो जैन मतमां जाणवी. ए बहुज आनंद कारी छे ॥ ४० ॥

हवे आठमी निरारंभ प्रतिमानो विवरो कहे छेः—अथ अष्टमी प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जो विवेक विधि आदरे, करे न पापारंभ; सो अष्टम प्रतिमा धनी, कुगति विजे रन थंभ ॥ ४१ ॥

अर्थः—जे कोई श्रावक पाछली सर्व क्रिया करतो थको विवेक सहित विधि विशेष आदरे, अने पापनो आरंभ पोताना हाथे न करे तेतो आठमी निरारंभ प्रतिमानो धरनार श्रावक कुगतिना विजयनो रणथंभ रूप थई रह्यो छे ४१ ॥

हवे नवमी परिग्रह प्रतिमानो विवरो कहे छेः—अथ नवमी प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो दसधा परिग्रहको त्यागी; सुख संतोष सहज वैरागी; समरस चिंतित किंचित ग्राही; सो श्रावक नौ प्रतिमा वाही ॥ ४२ ॥

अर्थः—नवविध परिग्रहनो त्यागी होय, सुख संतोष सहित वैरागी होय, उपशम रसथी भींज्यो रहेतो होय, किंचित् ग्राही कहेतां कंईएक अशन वशननुं ग्रहण करनारो होय अने बीजी क्रिया सर्वे आठमी प्रतिमानी परे होय, ते श्रावक नवमी प्रतिमानो धरनार होय. ए प्रतिमा नवमास लगी रहे ॥ ४२ ॥

हवे दसमी पापोपदेश त्याग प्रतिमा कहेछेः—अथ दसमी प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—परकों पापारंभको, जो न देइ उपदेश; सो दशमी प्रतिमासहित, श्रावक विगत कलेश. ॥ ४३ ॥

अर्थः—नवमी प्रतिमा लगण गृह कुटुंब परिवारने कदाच् पापनो उपदेशआपे, पण आहीं पापारंभनो उपदेश त्यागे ते श्रावकने दशमी प्रतिमासहित जाणिये. तेज श्रावक क्लेश रहित थयो एम जाणवुं. ॥ ४३ ॥

हवे अग्यारमी उचित्तग्राही प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ अग्यारमी प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो सुछंद वरते तजि डेरा, मठमंडपमहिं करे बसेरा; उचित आहार उदंड विहारी; सो एकादश प्रतिमा धारी. ॥ ४४ ॥

अर्थः—जे आपणां घर बार डेरा छांडीने स्वछंदे वर्त्ते, अने मठ मंडपमां वास करे, आधाकर्मि आहार त्यागे, योग्य आहार ले अने उद्दंड व्यवहारी थइ साधु जेवो थाय, ते अगीआरमी प्रतिमानो धरनार थाय. ए श्रावकनी करणी छे. ॥ ४४ ॥

हवे अग्यारमी प्रतिमानी व्यवस्था कहेछेः—अथ एकादश प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—एकादश प्रतिमा दशा, कही देशव्रत मांहि; वही अनुक्रममूलसों, गही सु छूटी नांहि ॥ ४५ ॥

अर्थः—ए अगीआर प्रतिमानी दशा पांचमा देशविरति गुणस्थानकमांहे कही. हवे प्रथमथी जे आगलनी प्रतिमाउं ग्रहण करेली छे तेतो अनुक्रमे ग्रहीज रह्यो छे, पण तेथी छुटो नथी अने चढति चढति क्रिया करतो रहेछे ॥ ४५ ॥

हवे अग्यार प्रतिमाधारीमां जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, दशा कहेछेः—

अथ जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट दशा कथनः—

॥ दोहराः ॥—षट प्रतिमा ताई जघन, मध्यम नव परजंत; उत्तम दशमी ग्यारमी, इति प्रतिमा विरतंत ॥ ४६ ॥

अर्थः—ठठी दिवस ब्रह्मचर्य प्रतिमा लगण जघन्य श्रावक होय, अने नवमी परिग्रह त्याग प्रतिमा लगण मध्यम श्रावक थाय, दशमी अगीआरमी प्रतिमानो धणी उत्तम श्रावक होय. एटले प्रतिमानुं वृत्तांत कह्युं ॥४५॥ इतिप्रतिमा अधिकार समाप्त॥

हवे पांचमा गुणस्थाननी स्थिति कहेछे:—अथ पंचम गुनस्थानक स्थितिः—

॥ चोपाईः ॥—एक कोटि पूरव गनिलीजे; तामें आठ वरष घट कीजै; यह उत्कृष्ट काल थिति जाकी, अंतरमुहुर्त्त जघन्य दसाकी ॥ ४७ ॥

अर्थः—एक कोटि पूर्ववर्षनी संख्या कीजे, तेमां आठ वर्ष घटाडीए. पछी जे वर्ष रहे ते देश व्रति गुणस्थानकनी उत्कृष्टि कालस्थिति जाणवी, अने आदेशव्रत्ति गुणस्थाननी जघन्यदशानी स्थिति एक अंतर्मुहूर्त्त कालमान होय ॥ ४७ ॥

हवे एक पूर्वकालनी वर्षसंख्या कहे छे:—अथ पूर्वसंख्या कथनः—

॥ दोहराः ॥—सत्तरि लाख करोरू मिति, छप्पन सहस करोड़ि; एते वरष मिलाइ करि, पूरव संख्या जोरू. ॥ ४८ ॥

अर्थः—सिंतेरलाख कोटि वर्ष एटली मिती के० प्रमाणता उपर छपन हजार कोटि वर्ष मेलवीये त्यारे पूर्वकालनी जोरूनी वर्ष संख्या थाय, तेना ७०५६०००००००००००. एटला अंक थाय. लोक व्यवहारमां सात पद्म पांच खर्व साठ अब्ज कहिए. ॥ ४८ ॥

हवे अंतर्मुहूर्त्त कालनुं जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण कहुंछुं:—अथ अंतमुहुरतप्रमान

॥ दोहरा:॥—अंतर मुहुरत द्वै घरूी, कछुक घाटि उतकृष्ट; एक समै कलाउली, अंत मुहुर्त्त कनिष्ट. ॥ ४९ ॥ यह पंचम गुनथानकी, रचना कही विचित्र; अब छठ्ठम गुन थानकी, दसा कहुं सुनु मित्र ॥ ५० ॥

अर्थः—बेघरूीमां एक समय उंछो थाय, त्यारेतो उत्ष्टकृ अंतमुहूर्त्त थाय अने एक आवलिने एक समय ते कनिष्ट के० जघन्य अंतमुहूर्त्त काल होय. ए दिगंबर संप्रदायथी छे ॥ ४९ ॥ एम देशव्रति पांचमा गुणस्थाननी विचित्र रचना कहीछे. हवे हे ! मित्र ! छठा गुणस्थाननी दशा कहुंछुं ते सांजलो ॥ ५० ॥

हवे प्रमत्तनामे छठा गुणठाणानी अवस्था कहुंछुं—अथ प्रमत्तगुनस्थानकः—

॥ दोहराः ॥—पंच प्रमाद दशा धरे, अठाइस गुनवान; थविर कल्प जिन कल्प जुत, है प्रमत्त गुनथान. ॥ ५१ ॥

अर्थः—धर्मरागादी पांच प्रमादनी दशा धारेछे. अने साधुना अठ्यावीस गुणो धारे छे. आंही अठयावीस गुण कह्या ते दिगंबर संप्रदायथी. थिवर कल्पथी थिवरनो आचार अने अने जिनकल्पथी जिननो आचार तेणेकरी युक्त छे. एम प्रमत्त गुण स्थान होय

हवे पांच प्रमादनां नामनी गणत्री करेछे:—अथ पंच प्रमाद यथाः—

॥ दोहराः ॥—धरमराग विकथा वचन, निद्राविषय कषाइ; पंच प्रमाद दसासहित, परमादी मुनि राइ. ॥ ५२ ॥

अर्थः—धर्मउपर राग राखे, विकथा वचन बोले, निद्रासेवे, रस ते इंद्रियप्रमुखना विषय सेवे, कषाय सेवे, ए दशासहितजे मुनिराज होय ते प्रमादी कहीए. ॥ ५२ ॥

हवे श्री मुनिराजना अठावीस मूल गुण कहेछे:—अथ अठाइस मूलगुन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—पंच महाव्रत पाले पंच समिती संभाले, पंच इंद्रि जीति भयो भोगी चित चेनको; षट आवशक क्रिया दर्वित भावित साधे, प्रासुक धरा मे एक आसन है सेनको; मंजन न करे केस लुंचे तन वस्त्र मुंचे, त्यागे दंतधावन पें सुगंध स्वास चेनको; ठाढो करषे आहार, लघु भुंजी एकवार, अठाइस मूल गुन धारो जती जैनको ॥ ५३ ॥

अर्थः—"सव्वाउ पाणाइ वायाउवेरमणं" इत्यादिक पंच महाव्रत पाले; इर्यासमिति प्रमुख पांच समिति संभालीने करे अने पांच इद्रियनो जीतनार एटले जेने इंद्रियोना विषय सेवतां चित्तमां चेन न उपजे, तेथी विषयोनो त्यागी थाय. सामायिक प्रमुख छ आवश्यकक्रिया छे, ते द्रव्यथी पण साधे अने भावथी पण साधे, ए २१ गुण थया. फासू पृथ्वी प्रमुख शय्यामां प्रमाणोपेत एक शयन आसन राखे, ए २२ गुन थया. स्नान न करे, केश लोच करे, शरीरविषे वस्त्रनो त्याग करे, दांतण नकरे, श्वासवदननो सुगंध मूखलुण प्रमुख नले, उभो उभो आहारकरे लघुता के० अंतप्रांत आहार भुंजे, तेपण एक टंक खाय. ए अठावीस मूल गुणनो धरनार जैन दर्शनी जती होय ॥ ५३ ॥

ए दिगंबर संप्रदायथी गुण कह्या छे.

हवे पांच महाव्रत कहेछे:—अथ पंचव्रत यथाः—

॥ दोहराः॥ —हिंसा मृषा अदत्त धन, मैथुन परिग्रह साज;
किंचित त्यागी अनुव्रती, सवि त्यागी मुनिराज. ॥ ५४ ॥

अर्थः—जीवघात, असत्य, चोरी, मैथुन, परिग्रहसामग्री ए पांचे आश्रवने किंचित् त्यागे, ते अणुव्रती श्रावक कहिए अने सर्वथा त्यागे ते मुनिराज कहिए ॥ ५४ ॥

हवे पांच प्रकारनी समिति एटले सावधानपणुं कहेछे:—अथ पंच समिति यथाः—

॥ दोहराः ॥—चले निरषि भाषे उचित, भषे अदोष आहार;
लेइ निरखि डारे निरखि, समिति पंच परकार ॥ ५५ ॥

अर्थः—जोईने चाले ते इर्या समिति; योग्य वचन बोले ते भाषा समिति; दूषणर

हित आहार लीए ते एषणा समिति; वस्त्र पात्र निरषीने ले ते आदानसमिति; मलमूत्रादिक जोइने परठवे ते पारीठावणीया समिति. ए पांच प्रकारे समिति ॥ ५५ ॥

हवे जे अवश्य करीए ते आवश्यक कहीए तेनां नाम कहेछे,—अथषडावश्यकयथाः—

॥ दोहराः ॥—समता वंदन थुति करन, पडिकमणुं सज्झाउ, काउसग्ग मुद्राधरन ए षगावसिक जाउ. ॥ ५६ ॥

अर्थः—सामायिक धरवुं १, गुरुवंदना करवी २, चोवीशजिनेश्वरनी स्तुति करवी ३, अतिचारथी निवर्त्तवुं ते पडिकमणुं ४, स्वाध्याय करवो ५, काउसग्गमुद्रा धरवी. हे! जाइ! ए ठ आवश्यक कहीए. ॥ ५६ ॥

हवे थिवर कल्प अने जिनकल्पनो भेद कहेछेः—अथ स्थिविर कल्पी जिनकल्पीः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—थविर कलपी जिनकलपी डुविध मुनि, दोउ वनवासी दोउ नगन रहत है; दोउ अठाईस मूल गुन के धरैया दोउ सरव तियागी व्हे विरागता गहत है; थविर कलपिते जिन्हके सिष्य साषा होई, बेठके सन्नामे धर्म देसना कहत है; एकाकी सहज जिन कलपी तपस्वी घोर, उदेकी मरोरसुं परिसह सहत है. ॥ ५७ ॥

अर्थः—थिवर कल्पी अने जिन कल्पी ए बे प्रकारना मुनीश्वर होय. ए बे वनवासमां रहे. अने बेहु नागारहे; ए बे अठावीस मूल गुणना धारनार ए बे सर्वस्व के० सर्व परिग्रहना त्यागी थईने वैराग्नाव धरे. एवा कह्या पण ते बेमां स्थिवरकल्पी ते कहीए जेने शिष्य शाषा होय, अने सन्नामां बेसिने धर्म देशना करे अने जे जिन कल्पी होय ते एकाकी होय, घोरतपस्वी होय. अने कर्म उदयनी मरोरथी जे परिषह उपजे छे ते सहन करे, ए दिगंबर संप्रदायिक वचनो छे. ॥ ५७ ॥

हवे प्रसंगथी बावीस परिषह साधुने सवहा योग्य तेनां नाम कहेछेः—

अथ बावीस परीषह यथा कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—ग्रीषममे धुप थिति सीतमे अंक पचीत, भूषेधरेधीर प्यासे नीर न चहतु हैं; डंस मसकादिसों न डरे भूमि सैन करे, वध बंध विथामे अडोल व्हैर हतु हैं; चर्या डुख भरे तिन फाससों न थरहरे, मल डुरगंधकी गिलान न गहतु हैं; रोनगकौ न करे इलाज एसो मुनिराज, वेदनीके उदे ए परिसह सहतु हैं. ॥५८॥

अर्थः—उष्ण कालमां तडकामां आताप सहे, शीत कालमां शीत सहेवाथी चित्तमां कंपे नही, भुख्यो छतां धीरज राखे, अनेषणी ग्रहे नही, प्यासवंत थको सदोष पाणीनी चाहना करे नही, नागा शरीरने डांस मसकादि करडे तोपण डरे नही, धरतिये शय्या करे, मरणांत कष्ट आवे जातजातना वध बंधनादिक कष्ट तेथी अडोल रहे, पण चलायमान न थाय, चर्या के० विहारनुं डुःख भरे, तदरीते विहारमां तथा सय

नासनमां कठोर त्रण स्पर्शथी थरहरे नही, मेलनी दुर्गंध छे, तेनी दुगंछा न करे, रोगनी वेदना सहे पण तेनो इलाज न करे, एवा मुनिराज होय ते वेदनीय कर्मना उदयथी ए इग्यार परिषह उपजे छे तेने सहे छे. ॥ ५८ ॥

॥ कुंडलीया: ॥—एते संकट मुनि सहे, चारित मोह उदोत; लज्जा संकुच दुःष धरे, नगन दिगंबर होत; नगन दिंगंबर होत, श्रोत रति स्वाद न सेवे; त्रियसनमुख दृग रोकि, मान अपमान न वेवे; थिर व्है निर्जय रहे सहे कुवचन जग चेते; भिक्षुक पद संग्रहे, लहे मुनि संकट एते. ॥ ५९ ॥ दोहरा: ॥—अल्प ज्ञान लघुता लखे, मति उतकरष विलोइ, ज्ञानावरन उदोत मुनि; सहे परीसह दोइ ॥ ६० ॥ सहे अदरसन दुरदसा, दरसन मोह उदोत; रोकेउमंग अलाजकी, अंतरायके होत. ॥ ६१ ॥

अर्थः—हवे चारित्र मोहनीयना उदय थवाथी मुनिराज संकट सहेछे. ते संकटनी गणतरी कहेछे. नगन दिगंबर थई जे लज्जाथी संकोच दुःख उपजे छे तेने धरे. एटले संकटथी न जागे १, वली नगन दिगंबर थइ श्रोत के० इंद्रीयना रति स्वादने न सेवे, २, स्त्रीना हाव जावथी चुके नही ३, कोइ सत्कार करे कोइ सत्कार न करे तेउपर विषम जाव लावे नही ४, कोइ जयथी जागे नही स्थिर रहे निर्जय रहे ५, जगत्मां जे कंइ कुवचन छे, आक्रोशनां वचन छे ते सर्वे सहन करे ६, जिक्षा ग्रहणथी जिक्षुक पद संग्रहे पण ते संकटथी जाजे नही, ए सात संकट चारित्र मोहनीयना उदयथी मुनि लहेछे ते सहन करे छे ॥ ५९ ॥ हवे जणयाविना अल्पज्ञानथी सर्वेमां पोतानी लघुता थाय ते सहन करे; पोतानी मतिना उत्कर्षथी उत्कृष्टपणुं जोइने गुरुता सहे २, एम ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय थातां अज्ञान परिषह अने प्रज्ञापरिषह एवे परिषह उपजे छे ते सहन करे ॥ ६० ॥ दर्शन मोहनीयना उदय थवाथी सम्यग् दर्शननी मलिनता उपजे, तेनी दुष्ट दशा सम्यग् दर्शनथी न जागे, अंतराय कर्मनो उदय थवाथी जे लाजनो उमंग रोकी रहे तेथी अलाजने सहन करे. ए बावीस परिसह कह्या ॥ ६१ ॥

हवे जे कर्मथी जे परिसह उपजे ते कहे छे. अथ बावीस परिषह विवरननः—

॥ सवैया इकतीसा: ॥—एकादश वेदनीकी चारित मोहकी सात, ज्ञानावरनीकी दोइ एक अंतरायकी; दंसन मोहकी एक द्वाविंसति बाधा सब, केई मनसाकी केइ बाकी केई कायकी; काहुकों अलप काहूसों वहोत उनी साता, एकहीं समेमें उदे आवे असहायकी; चर्याथित सज्जामांहि एक सीत उस्नमांहि, एक दोइहोहि तीनि नांही समुदायकी ॥ ६२ ॥ ॥ दोहरा: ॥—नानाविध संकटदशा, सहिसाधे शिवपंथ, थिविरकल्प जिन कल्पधर, दोऊ सम निगरंथ ॥ ६३ ॥

अर्थः– अग्यार संकट तो वेदनीय कर्मना उदयथी उपजे छे. चारित्र मोहनीय कर्मथी सात वाधा उपजे छे. ज्ञानावरणनी करेली वे वाधा उपजे छे. अंतरायनी कीधी एक वाधा उपजेछे. दर्शन मोहनीयनी करेली एक वाधा उपजे छे. सर्व मली बावीस वाधा थइ. ते वावीसने परिषह कहीए. वाधामां कोई मननी छे, कोइ वचननी छे, कोइ कायानी छे; आ वावीस वाधामांहेली कोइने अल्प एक वे उपजे; कोइने वहु उपजे, तो एकज समे ओगणीस वाधानो उदय थाय. तेमां असहायनी के० जे वाधा वाधासाथेज वोलेछे पण साथे वने नही त्यारे तेमां एकज वाधा एक समे थई ते असहायनी कहीए. जेम चर्यापरिषह चालवाथी उपजे छे; निषेद्या परिषह रहेवाथी उपजेछे; शय्या परिषह रहेवाथी उपजे छे. अने शितवाधा तथा उष्ण वाधामां एक समयमां एकज वाधा उपजे तेथी आ पांच परिषहमां एक अथवा वे अथवा त्रण एक समयमां थाय, पण समुदायरूप पांचे न थाय ॥ ६२ ॥ इति परिसह अधिकार समाप्त थयो ॥

अर्थः–एवां नाना प्रकारना संकट छे तेनी दशा सहन करीने मुक्तिमार्ग साधे, तेथी थिविर कल्पना धरनार अने जिन कल्पना धरनार ए वेहु निग्रंथ समान छे॥६३॥

हवे थिवर कल्पमां अने जिनकल्पमां कंइ तफावत छे ते कहेछेः–

अथ स्थिविरकल्प जिनकल्प तारतम्य कथनः–

॥ दोहराः ॥– जो मुनि संगतिमें रहे, थविरकल्प सो जानि; एकाकी जाकी दसा सो जिनकल्प वषानि ॥ ६४ ॥ ॥ चोपाईः ॥– थविर कलप मुनि कछुक सरागी; जिन कलपी महांत विरागी; इति प्रमत्त गुनथानक धरनी; पूरन भई जथारथ वरनी ॥६५॥

अर्थः– जे मुनीश्वर गच्छना गणनी संगतमां रहेछे, तेतो थिवर कल्पी जाणीए. जेने गणनी निश्रा नथी, जेनी एकाकी दशा छे तेतो जिनकल्पी कहिए ॥ ६४ ॥ ए वेउ निर्ग्रंथमां थिवरकल्पनो धरनार कइक सराग दशामां छे, अने जे जिनकल्पी छे ते महावैरागी छे. एटले प्रमत्त गुणठाणानी जे भूमिका वांधी अने यथार्थ साचपणे वरणी ते पूर्ण थई ॥ ६५ ॥

हवे सातमा गुणस्थाननु वर्णन करेछेः– अथ सप्तम गुणथानक वर्ननंः–

॥ चोपाईः–॥ अव वरनो सत्तम विसरामा; अप्रमत्त गुनथानक नामा; जहां प्रमाद क्रिया विधि नासे; धर्मध्यान थिरता परगासे ॥ ६६ ॥ दोहराः–प्रथम करनचारित्रको जासु अंत पद होइ, जहां आहार विहार नहि, अप्रमत्त है सोइ ॥ ६७ ॥

अर्थः– मुक्तिरूप मंदिरमां चढतां ते सातमो विसामो छे, अने अप्रमत्त गुणस्थानक जेनुं नाम छे ते हवे वखाणे छे जे गुणस्थानमां धर्मरागादिकेकरी प्रमादनो

विधि नासेछे, जे पूर्वला गुणस्थानकमां धर्मध्यान चंचल हतुं, ते आंही स्थिरपणे प्रकाश करेछे ॥ ६६ ॥ प्रथम गुणस्थानना अंतपदमां एटले छेला समयमां चारित्रमोहनीय कर्मने भेदवानो यथा प्रवृत्तिनामे प्रथम करण थयुं. आंही धर्मध्याननी स्थिरता एवी छे के ज्यां आहार विहार क्रिया नथी. ते अप्रमत्त गुणस्थानक होय. ए वचन दिगंबर संप्रदायनुं छे ॥ ६७ ॥

हवे आठमा गुणस्थानकनुं वर्णन करेछेः—अथ अष्टम गुणस्थानक वर्ननंः—

॥ चोपाईः॥— अब बरनो अष्टम गुनथाना, नाम अपूरब करन बखाना, कछुक मोह उपसम करि राखे, अथवा किंचित क्षयकरि नाखे ॥ ६८ ॥ जो परिनाम भये नहि कबहीं, तिन्हको उदो देखिये जबहीं, तब अष्टम गुनथानक होई, चारित करन दूसरो सोई ॥ ६९ ॥

अर्थः— जेनुं नाम अपूर्व करण वखाणीए छीए, हवे आंही श्रेणि चढवामां जे उपशमीक थको चढेछे तेतो आंही कंइक मोहने उपशमावी राखेछे, अथवा जे क्षपक थको चढे छे तेतो आंही चारित्र मोहनो कंइक क्षय करि नांखेछे ॥ ६९ ॥ एवुं जे परिणाम पेहेलां कोइ कालमां थयुं नथी ते परिणामनुं ज्यारे प्रगट पणुं देखियेछीए, त्यारेतो आठमुं गुणस्थानक होय. तेने छेले समये चारित्र मोहनीय कर्म भेदवाने अपूर्व करण नामे बीजुं करण होय तेनुं नाम निवृत्ति पण छे ॥ ६९ ॥

हवे नवमा गुणस्थाननुं वर्णन करेछेः— अथ नवम गुणस्थानक वर्णनंः—

॥चोपाईः॥— अब अनवर्त्ति करन सुनुं भाई, जहां भाव थिरता अधिकाई; पूरव भाव चलाचल जेते, सहज अडोल भए सब तेते ॥ ७० ॥ जहां न भाव उलटि अध आवे; सो नवमो गुनथान कहावे; चारित मोह जहां बहु छीजा; सो है चरण करण पद तीजा ॥ ७१ ॥

अर्थः— प्रथम अनिवृत्ति करण गुणस्थाननो व्यवहार कहुं छुं ते सांभलो. जे गुणस्थाननेविषे स्थिरता भावनी अधिकाई छे. अने पूर्वभाव कषायना उदयथी जेटला चलाचल भाव होय तेवा सर्वे आंही सहज अडोल थया छे ॥ ७० ॥ ज्यां भावथी चढीने फरी तिहांथी पडी नीचेना गुणस्थानकें न आवे. एवो अनिवृत्ति कहेवाय, ज्यां चारित्र मोहनीय कर्म घणुंज छुटी गयुं छे तेज ए चारित्र मोहनीय कर्म भेदवानुं त्रीजुं अनिवृत्ति करण थयुं ॥ ७१ ॥

हवे दशमु गुन स्थानक कहु छुंः— अथ दशम गुनथानक वर्ननंः—

॥चोपाईः॥—कहों दशम गुन थान दुसाखा; जहां सूछम शिवकी अभिलाषा; सूछम लोभ दसा जहां लहिए; सूछम संपराय सो कहिए ॥ ७२ ॥

अर्थः– ज्यां उपशमिक अने क्षपक एवी बे शाखा वर्त्ते छे, जे गुण स्थानमां सूक्ष्म शिव पदवीनी अभिलाषा छे एवी ज्यां सूक्ष्म लोभ दशा पामियें, ते सूक्ष्म संपराय कहीए. संपराय एवुं कषायनुं नाम छे ॥ ७२ ॥

हवे अग्यारमुं उपशांत मोह नामे गुणथान कहुंछुंः– अने तेनी प्रभुतानुं प्रमाण कहुंछुं. अथ एकादशम गुनथान वर्ननः–

॥चोपाईः– अब उपसंतमोह गुनथाना; कहों तासु प्रभुता परवाना; जहां मोह उपसमे न भासे; जथाख्यात चारित परगासे ॥ ७३ ॥ दोहराः–जाहि फरसके जीव गिरि, परै करै गुन रद्द; सो एकादसमी दसा, उपसमकी सरहद्द ॥ ७४ ॥

अर्थः– जे गुणस्थानमां मोहनीय कर्म सर्वे उपशमी जाय, पण उदयमां भासे नही अने यथाख्यात चारित्रनो प्रकाश थईने जेवुं निसंग आत्मानु सहज रूप छे तेवुं प्रगटेछे ॥ ७३ ॥ जे उपशम श्रेणि चढिने जे गुणस्थानने फरसीने अवश्य जीव तिहांथी पडे अने जे गुण प्रगटे ते सर्व रद करे, ए अगीयारमी दशा थई, एटले उपशांत मोह गुणस्थानक थयुं. एटले उपशमनी मर्यादा थई ॥ ७४ ॥

हवे बारमां क्षीणमोह गुनस्थाननुं वर्णन करुंछुंः–अथ द्वादश गुनथानक वर्ननंः–

॥चोपाईः॥– ज्ञान निकट जहां आवे; तहां जीव सब मोह षिपावे; प्रगटे यथा ख्यात परधाना; सोद्वादशम छीन गुन थाना ॥ ७५ ॥

अर्थः–जे गुणस्थानने केवल ज्ञान निकट आवे छे, अने त्यां जीव सर्वे मोहनीय कर्म खपावीने बीजा पण घाती कर्म सर्वे खपावे, अने ज्यां प्रधान उत्कृष्ट यथा ख्यात चारित्र प्रगटे एवा प्रकारथी जे छे ते बारमुं क्षीण मोह गुणस्थानक कहीए ॥ ७६ ॥

हवे आंही लगण पाछला छगाथी मांमी सात गुणस्थानमां उपशम श्रेणिनी अपेक्षाये जेकाल स्थिति छे ते कहेछेः–अथ षष्ट गुनथानक स्थितिकथन उपशम श्रेणिक अपेक्षाये

॥ दोहराः ॥–षट सत्तम अठम नवम; दश एकादश बार, अंतर मुहुरत एक वा, एक समे थिति धार. ॥ ७६ ॥ छीन मोह पूरन भयो, करि चूरन चित चाल; अब सजोग गुण थानकी, बरनों दसा रसाल. ॥ ७७ ॥

अर्थः–छठुं, सातमुं, आठमुं, नवमुं, दशमुं, अग्यारमुं, बारमुं, ए सात जे गुणस्थान छे, तेनी स्थिति एक अंतर मुहूर्त्तनी छे. अथवा सात गुनस्थाननी जघन्य एक समयनी स्थिति धारो. ॥७६॥ मोहमय जे चित्तनी चाल हती तेनुं चूर्ण करीने क्षीण मोह गुण स्थानक पूरण थयुं. हवे सजोगी गुन थानकनी रसाल दशानुं वर्णन करुंछुं ॥ ७७ ॥

हवे तेरमा गुणथाननुं वर्णन करुछुंः–अथ त्रयोदश गुन स्थानक वर्ननः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जाकी दुःख दाता घाती चोकरी विनसगई, चोकरी अघा

ती जरी जेवरी समान है; प्रगट भयो अनंत दंसन अनंत ज्ञान, वीरज अनंत सुख सत्ता समाधान है; जामे आउ नाम गोत वेदनी प्रकृति ऐसी एक्यासी चोरासी वा पंचासी परवान है; सो है जिन केवली जगत वासी भगवान, ताकी जो अवस्था सो सजोगी गुन थान है. ॥ ७८ ॥

अर्थः—आत्माना गुणना घातना करनार एवा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय, ए घाती कर्मनी चोकडी दुःख दाता हती ते जेनी विनाश थई गई, अने जे आत्माना गुणनो घात न करे एवा वेदनीय, आयु, नाम, अने गोत्र, ए चार अघाति कर्मनी चोकडी रही ते वलेली दोरी समान रही छे. दर्शनावरणीय कर्मक्षय थयाथी ज्यां अनंत केवल दर्शन प्रगट थयुं, अने ज्ञानावरणीय क्षय थयाथी ज्या केवल ज्ञान प्रगट्युं, अंतराय कर्म क्षय थयाथी अनंत वीर्य प्रगट्युं, मोहनीय कर्म क्षय थयाथी अनंत सुखसत्ता अने समाधि प्रगट्या अने जेमां आयु कर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म, वेदनीयकर्म, एचारनी सर्वे (८५) प्रकृति रही छे. तेमां कोईने आहारिक शरीर, आहारक अंगोपांग, आहारक संघातन, आहारक बंधन, तथा जिननामविना, (८०) प्रकृती रही छे अने कोईने जिननाम सहित छे, तेथी (८१) रही छे तथा काईने आहारक चतुष्कछे अने जिननामनथी माटे (८४) छे तथा कोईने जिननाम सहित (८५) प्रकृतिनुं प्रमाण छे. एवी दशानो धरनार जे छे ते जिन होय केवली होय, जगत्नो भगवान् होय, तेनी जे अवस्था छे तेनेज सयोगी गुणस्थानक कहीए. ॥ ७८ ॥

हवे सजोगी गुणस्थानकवालानी मुद्रा देखाडेछेः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जो अडोल परजंक मुद्रा धारी सरवथा अथवा सुकाउसग्ग मुद्रा थिरपाल है; खेत सपरस कर्म प्रकृतिके उदै आए, विना डग भरे अंतरिक्ष जाकी चाल है; जाकी थिति पूरव करोडि आठवर्ष घाट, अंतरमुहुरति जघन्य जग जाल है; सो है देव अठारह दूषन रहित ताकों बनारसी कहै मेरी वंदना त्रिकाल है. ॥७९॥

अर्थः—जे अडोलपणे सर्वथा प्रकारे पर्यंक मुद्रा धारी होय एटले पद्मासनवालीने सदा सर्वदा बेसेछे, अथवा काउसग्गमुद्रा स्थिरपणे पाले ए वचन दिगंबर संप्रदायनुं छे, अने क्षेत्र स्पर्श रूप जे कर्म प्रकृति छे तेनो उदय थयाथी केवली विहार करेछे पण बीजापुरुषनीपेठे चाले नहिं पण केवली डगलुं भर्याविनाज आकाशमां अधर चाले चाले. ए परूपणा दिगंबर संप्रदायनी छे. जे सयोगी गुण स्थाननी स्थिति आठ वर्षे न्यून पूर्वकोटी वर्षनी थाय केमके जन्मथी आठ वर्षलगी केवलज्ञान उपजतुं नथी, अने आ गुनथानानी जघन्यस्थिति एक अंतरमुहूर्त्तनी थाय. जगतुजालमां ए

टलुंज रहेवुं होय. आंही जे एवी अवस्थानो धरनार होय तेतो अढार दूषण रहित देवाधिदेव थाय. वनारसीदास कहेछे के तेने मारी त्रिकाल वंदनाछे ॥ ७९ ॥

हवे अढार दूषणनां नाम कहेछेः—अथ अठारस दोष कथनः—

॥ कुंमलीयाः ॥—दूषन अठारह रहित, सो केवलि संजोग; जनम मरण जाके नहीं, नहिं निद्रा जय रोग; नाहिं निद्रा जय रोग, सोग विस्मय न मोहमति; जरा खेद परखेद, नाहिं मद वैर विषे रति; चिंता नांही सनेह, नाहिं जह प्यास न जूषन; थिर समाधि सुख सहित अठारह दूषन. ॥ ८० ॥ —वानी जहां निरक्षरी, सप्तधातु मल नांहि; केस रोम नख नहि बढे, परम उदारिक मांहि; परम उदारिक मांहि, जांहि इंद्रिय विकार नसि, जथाख्यात चारित प्रधान थिर सुकल ध्यान ससि; लोकालोक प्रकास, करन केवल रजधानी; सो तेरम गुनथान; जहां अतिशयमय वानी. ॥ ८१ ॥ दोहराः ॥—यह सजोग गुनथानकी, रचना कही अनूप; अब अयोग केवल कथा, कहों यथारथ रूप ॥ ८२ ॥

अर्थः—जे अढार दूषणथी रहित ते सजोगी केवली कहिए १,जेने जन्म नथी, मरण नथी२,निद्रा नथी३,जय नथी४,रोग नथी५, शोक नथी ६, विस्मय नथी ७, मोहमति नथी. जरानो खेद नथीए, परसेवो नथी १०, मद नथी११,वैर नथी १२, विषय उपररति नथी १३, चिंता नथी १२, स्नेह नथी १५, जेने तरस लागे नही १६, जूष लागे नही १७, अस्थिरपणुं नथी १८, तेथी समाधिसुख सहित स्थिररूप थायछे, एवा अढार दूषण रहित छे. ए अढार दोष दिगंबर संप्रदायथी छे. सिद्धांत संप्रदायमां १८ दूषण जुदां कह्यां छे. ॥ ८० ॥ आ गुणस्थाननी अवस्थामां निरक्षरी वाणी होय ने मस्तकमां ॐकार ध्वनिरूप होयछे; अने शरीरमां सात धातु अने सात धातुना मल थता नथी. ए दिगंबर संप्रदायथी कहेलुं छे. अने जेना शरीरमां केश, रोम, नखनी वृद्धि थती नथी, एतो उदारीक शरीरमां पण एटला दोष नथी, तेथी देवाधिदेव परम उदारीक शरीरमांज कहिए; ज्यां इंद्रियविकार नासी गयाछे, ने ज्यां प्रधान उत्कृष्ट यथाख्यात चारित्र प्रगट थयुं छे, ज्यां शुक्ल ध्यानरूप चंद्रमा स्थिररूप थयोछे, अने ज्यां लोकालोकना प्रकाशनी करनारी केवल ज्ञानरूप राजधानी बिराजी रही छे; ते तेरमुं सजोगी गुणस्थानक कहिए, ज्यां पांतरीश अतिशयमय वाणी छे ॥ ८१ ॥ ए सयोगी गुणथाननी सर्वथी अधिक अनूप रचना कहीछे. हवे अयोगी केवलीनी दशा यथार्थरूप के० जेवीरीते बनीछे तेवी रीतनी कहुंछुं. ॥ ८२ ॥

हवे चौदमा अयोगी गुणस्थाननुं वर्णन कहुंछु.—अथ चतुर्दश गुनस्थानक वर्ननं.—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जहां काहू जीवकों असाता उदे साता नांहि, काहूकों अ

साता नांहि साता उदे पाइये; मन वच कायसों अतीत नयो जहां जीव जाको जस गीत जग जीत रूप गाइये; जामे कर्म प्रकृतिकी सत्ता जागी जिनकीसी, अंतकाल द्वैसमेमें सकल खिपाइये; जाकी थिति पंच लघु अक्षर प्रवान सोइ, चौदहो अयोगी गुन थाना ठहराइये. ॥ ७३ ॥

अर्थः—जे गुणस्थानमां कोई जीवने अशाता वेदनीयनो उदय छे अने शाता वेदनीयनो उदय नथी, एटले शाता वेदनीय सत्तारूप छे, अने कोइने शाता वेदनीयनो उदय छे, अने अशाता दुःखरूप उदयमां नथी, एटले सत्तामां छे. अने ज्यां शैलेसी करण करीने मनोयोग, वचनयोग, काया योगथी जीव अतीत एटले रहित थयो. जेना जशनु वर्णन जगत्ने जीतवा रूप गाइए छीए एटलुं छे अने जेमां जोगी जन केसी के० सजोगी केवलीनी रीते कर्म प्रकृतिनी सत्ता रहिछे. ते अंतकालमां अनंत वे समयमां समस्त खपावेछे. अने जे गुणस्थानकनी स्थिति पंच लघु अक्षर अ, इ, उ, ऋ ऌ ए अक्षर कहेतां जेटलो काल प्रमाण होय एटलो काल प्रमाण स्थिति छे तेज चौदमुं अयोगी गेरावीए. ॥ ७३ ॥

॥ इति श्री चतुर्दश गुणस्थानक अधिकार वालावोधरूप समाप्तः ॥

॥ दोहरा ॥—चौदहगुनथानक दशा, जगवासी जियनूल; आश्रव संवर नाव द्वै, वंध मोक्षके मूल. ॥ ७४ ॥

अर्थः—जगत्वासी जीव अशुद्ध थको नूलमां पड्यो छे तेनी ए चौद गुणस्थानकथी चौद दशा थाय छे. आंही तत्त्व दृष्टिमां जोतां जे आश्रव संवर नाव छे तेज वंध मोक्षना मूल छे; एटले आश्रव वंधनुं मूल छे अने संवर मोक्षनुं मूलछे. हवे आश्रव संवरनी जुदी जूदी अवस्था कहेछे. अथ आश्रव संवर व्यवस्था कथन. ॥ ७४ ॥

॥ चोपाईः ॥—आश्रव संवर परनति जोलों; जगत निवासि चेतना तोलों; आश्रव संवर विधि विवहारा; दोऊ नवपथ शिवपथ धारा. ॥ ७५ ॥ आश्रव रूप वंध उतपाता, संवर ज्ञान मोष पद दाता; जा संवरसों आश्रव छीजे, ताकों नमस्कार अव कीजे. ॥ ७६ ॥

अर्थः—ज्यां सुधी आश्रव संवरनुं परिणाम परिणमे छे, त्यांसुधी चेतन रूप ईश्वर जगत् निवासी थई रह्योछे. आंही आश्रवनो विधि छे ते व्यवहारमां छे. अने संवरनो विधि छे ते पण व्यहारमां छे. ए उन्नौ के० वे व्यवहार पंथ ते संसार मार्गनी धारा अने मोक्ष मार्गनी धारा पण छे. ॥ ७५ ॥ संसारमां जे वंधरूप उत्पात छे, ते तो आश्रवरूप छे. अने जे मोक्षपदनो दाता ज्ञान छे ते संवर रूप छे. जे संवरथी आश्रव क्षय थयो होय तेने हवे नमस्कार करीए छीए. ॥ ७६ ॥

हवे ग्रंथनी अंते मंगलाचरण रूप संवर रूपी ज्ञानने नमस्कार करेछेः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जगतके प्रानी जीवऽहैरह्यो गुमानी एसो, आश्रव असुर दुःख दानी महा जीम हे; ताको परताप खंमिवेको परगट जयो, धर्मको धरैया कर्म रोगको हकीम हे; जाके परजाव आगे जागे परजाव सब, नागर नवल सुख सागरकी सीमहे; संवरको रूप धरे साधे शिवराह एसो, ज्ञानी पातसाह ताकों मेरी तसमील हे. ॥७७॥

अर्थः–जगत्ना वासी जेटला प्राणी छे, ते सर्वेने जीतीने जे गुमानी थई रह्यो, एवो आश्रवरूप जे असुर छे, ते महा दुःखदायक छे. तेनो प्रताप खंमवाने जे ज्ञान रूप बादशाह प्रगट थयो छे ते केवो छे के धर्मनो धारण करनारो छे. अने कर्मरूप रोग गमाववानो हकीम छे.जे ज्ञान बादशाहना प्रजाव आगल काम क्रोधादिक राग द्वेषरूप पुजलना जाव छे ते सर्व नासी जाय छे; अने नागर के० चतुर छे, जे पेहेलां कोइ वारे न पामेलो एवो जे नवो सुख समुद्र ते लगण जेनी सीम छे. संवररूपनो धरनार अने मुक्तिमार्गनो साधनार एवो जे ज्ञानरूपी बादशाह छे, तेने महारी स लाम छे. एटले नाटक करीने ज्ञान बादशाहने मुजरो कीधो छे. ॥ ७७ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालावबोधरूप अर्थ सहीत समाप्त थयो. ॥

॥ चोपईः ॥–जयो ग्रंथ संपूरन जाषा, बरनी गुनथानककी साषा; बरनन ओर कहांलौं कहिये, जथा सकति कही चुप रहे रहीये ॥ ७७ ॥ लिहए पार न ग्रंथ ठ दधिका; ज्यों ज्यों कहिये त्यों त्यों अधिका; ताते नाटक अगम अपारा; अलप कवीसुरकी मतिधारा ॥ ७ए ॥

॥ दोहराः ॥–समयसार नाटक अकथ, कविकी मति लघु होइ; ताते कहत ब नारसी, पूरन कथे न कोइ. ॥ ए० ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जेसे कोउ एकाकी सुजट पराक्रम करि, जीते केही जां तिचक्री कटक सों लरनो; जेसे कोउ परविन हारू जुज जारु नर, तरे केसे स्वयंजू रमन सिंधु तरनो; जेसें काउ उद्दिमी उठाह मनमांहि धरे, करे केसे कारज वि धाताको सो करनो; तेसे तुछ मती मोरी तामें कविकला थोरी, नाटक अपारमे क हांलों याहि बरनो? ॥ ए१ ॥

अथ जीव महीमा कथनः–

॥सवैया इकतीसाः॥–जेसे वटवृक्ष एक तामें फल हे अनेक, फल फल बहू बीज बीज बीज वट हे, वटमांहि फल फलमांहि बीज तामे बट, कीजे जो विचार तो अ नंतता अघट हे; तेसे एक सत्तामें अनंत गुण परजाय;प्रजामें अनंत नृत्य नृत्यमें अनंत ठट हैं; ठटमे अनंत कला कलामें अनत रूप, रूपमें अनंत सत्ता एसो जीव नट है.॥ए२॥

॥ दोहरा: ॥–ब्रह्म ज्ञान आकाशमें, उडे समति खग होइ; जथा सकति उद्दिम धरे, पार न पावे कोइ. ॥ ९३ ॥

॥ चोपाई ॥–ब्रह्म ज्ञान नभ अंत न पावे; सुमति परोछ कहालों धावे; जिहि विधि समयसार जिनी कीनो; तिन्हके नाम धरे अब तीनो. ॥ ९४ ॥

अथ कवि त्रयी कथन नाम:–

॥ सवैया इकतीसा: ॥–कुंदकुंदाचारज प्रथम गाथा बद्ध करे, सामेसार नाटक विचारी नाम दयो है; ताहीके परंपरा अमृतचंद भये तिन्ह, संसकृत कलस समारि सुख लयो है; प्रगट्यो बनारसी गृहस्थ सिरीमाल अबकिये हे कवित्त हिए बोध बीज बयो है; शबद अनादि तामें अरथ अनादि जीव, नाटक अनादियों अनादि हिको भयो है. ॥ ९५ ॥

अथ कविव्यवस्था कथन:–

॥ चोपाई ॥–अब कछु कहुं यथारथ बानी; सुकवि कुकविकी कथा कहानी; प्रथम सुकवी कहावै सोई; परमारथ रस वरने जोई. ॥ ९६ ॥ कलपित बात हीए नहिं आने; गुरु परंपरा रीति बखाने; सत्यारथ सैली नहि छंडे; मृषा वादसों प्रीति न मंडे. ॥ ९७ ॥

॥ दोहरा: ॥–छंद सबद अक्षर अरथ, कहे सिद्धांत प्रवान; जो इहि विधि रचना रचे सो हे सुकवि सुजान ॥ ९८ ॥

॥ चोपाई: ॥–अब सुनु कुकवि कहुं है जेसा; अपराधी हिय अंध अनेसा; मृषा भाव रस वरने हितसों; नई उकति नहि उपजे चितसों. ॥ ९९ ॥ ख्याति लाभ पूजा मन आने; परमारथ पथ भेद न जाने; बानी जीव एक करि बूझे; जाको चित जड ग्रंथि न सुझे. ॥ १०० ॥ बानी लीन भयो जग डोले, बानी ममता त्यागि न बोले; हे अनादि बानी जगमांही; कुकवि बात यह समुझे नांही. ॥ १०१ ॥

अथ बानी व्यवस्था कथन:–

॥ सवैया इकतीसा: ॥–जेसे काहू देसमें सलिलधार कारंजकी, नदीसों निकसि-फिरि नदीमें समानी हे; नगरमें ठौर ठौर फेली रही चहू ओर, जाके ढिग बहे सोई कहे मेरो पानी हे; त्योंही घट सदन सदनमे अनादि ब्रह्म, बदन बदनमें अनादिहींकी बानी हे; करम कलोलसों उसासकी बयारि बाजे, तासों कहे मेरी धुनि एसो मूढ प्रानी है. ॥ १०२ ॥

॥ दोहरा: ॥–एसे मूढ कुकवि कुधी, गहे मृषा पथ दोर; रहे मगन अभिमाननमें, कहे ओरकी ओर. ॥ १०३ ॥ बस्तु सरूप लखे नही, बाहिज दृष्टि प्रमान; मृषा विलास विलोकके, करे मृषा, गुन गान. ॥ १०४ ॥

अथ मृषा गुन गान यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—मांसको गरंथि कुच कंचन कलस कहे, कहे मुख चंद जो सलेखमाको घरु हे; हाडके दशन आहि हीरा मोती कहे ताहि, मांसके अधर उंठ कहे बिंब फरु हे; हाड दंड भुजा कहे कौलनाल काम जुधा, हाडहीके थंभा जंघा कहे रंभा तरु हे; योंही जूठी जुगति बनावे औ कहावे कवि, एते पर कहे हम सारदाको वरु हे. ॥ ७०५ ॥

॥ चोपाईः ॥—मिथ्यावंत कुकवि जे प्रानी, मिथ्या तिनकी भाषित बानी, मिथ्या वंत सुकवि जो होई, वचन प्रवान करे सव कोई. ॥ ७०६ ॥

॥ दोहराः॥ वचन प्रवान करे सुकवि, पुरुष हूवे परवान, दोऊ अंग प्रवान जो, सोहे सहज सुजान. ॥ ७०७ ॥

॥ अथ समयसार नाटकव्यवस्था कथनः— ॥

॥ चोपाईः ॥—अब यह वात कहों हे जैसे; नाटक भाषा भयो सु एसे, कुंद कुंद मुनि मूल उधरता, अमृतचंद टीकाके करता. ॥ ७०८ ॥ समेसार नाटक सुख दानी, टीका सहित संसकृतवानी, पंडित पढै दृढमती बुझे, अलपमतीकों अरथ न सूझे. ॥ ७०९ ॥ पांडे राजमल्ल जिनधर्मी, समयसार नाटकके कर्मी, तिन्ह ग रंथकी टीका कीनी, बालाबोध सुगम करि दीनी. ॥७१०॥ इहि विधि बोधवचनिका फैली, समैपाइ अध्यातमशैली; प्रकटी जगतमांहि जिनबानी, घर घर नाटक कथा बखानी. ॥ ७११ ॥ नगर आगरामांहि विख्याता, कारन पाइ भए बहुज्ञाता, पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने, निसिदिन ज्ञानकथा रस भीने. ॥ ७१२ ॥

॥ दोहराः ॥—रूपचंद पंडित प्रथम, डुतिय चतुर्भुज नाम, तृतिय भगौती दास नर, कौंरपाल गुनधाम. ७१३ ॥ धर्मदास ए पंच जव, मिलि बेसे इक ठोर; परमा रथ चरचा करे,इन्हके कथा न और. ॥ ७१४ ॥ नाटक रस सुने, कबहूं उर सिद्धांत, कबहूं विंग बनाइके, कहे बोध विरतंत. ॥ ७१५ ॥

अथ विंगयथाः—

॥ दोहराः ॥—चित चकोर वरु धरम धरु, सुमति भगौती दास, चतुर भाव थि रता भए, रूपचंद परगास. ॥ ७१६ ॥ इहि विधि ज्ञान प्रगट भयो, नगर आगरे मांहि, देसदेस महि विस्तार्यो, मृषा देशमहि नांहि. ॥ ७१७ ॥

॥ चोपाईः ॥—जहां तहां जिनवानी फेली, लषे न सो जाकी मति मेली, जाके सहज बोध उतपाता, सो ततकाल लखे यह बाता. ॥ ७१८ ॥

॥ दोहराः ॥–घटघट अंतर जिन वसे, घटघट अंतर जैन, मत मदिराके पान सों मतवाला समुझे न. ॥ ७१९ ॥

॥ चोपाईः ॥–वहुत वढाउ कहालो कीजे, कारजरूप वात कहि लीजे, नगर आगरा माहे विष्याता, वनारसी नामे लघु ज्ञाता. ॥ ७२० ॥ तामे कवित कला चतुराई, कृपा करे ए पंचो भाई, ए परपंच रहित हिय खोले, ते वनारसीसों हसि वोले. ॥ ७२१ ॥ नाटक समैसार हित जीका, सुगमरूप राजमली टीका, कवित वद्ध रचना जो होई, भाषा ग्रंथ पढे सब कोई. ॥ ७२२ ॥ तव वनारसी मनमहि आनी, कीजे तो प्रगटे जिनवानी, पंच पुरुषकी आज्ञा लीनी, कवित वंधकी रचना कीनी. ॥७२३॥ सोरहसे तिरानवे (१६९३) विते, आसुमास सित पक्ष वितीते, तिथि तेरसि रविवार प्रवीना ता दीन ग्रंथ समापत कीना. ॥ ७२४ ॥ दोहरा ॥ सुख निधान सकवंध नर, साहिव साहि किरान, सहस साहि सिर मुकुटमनि, साह जहां सुलतान. ॥७२५॥ जाके राज सुचेनसों, कीनों आगमसार, इति भीती व्यापी नही, यह उनको उपकार. ॥ ७२६ ॥

॥ अव सवका ठीक कथनः– ॥

॥ सवैया इकतीसा ॥– तीनसे दसोत्तर सोरठा दोहा छंद दोउ, जुगलसे तेतालीस इकतीसा आने हैं; छासी सु चोपईये सेंतीस तेइ सेसवैये, वीस छप्पै अठारह कवित्त वषाने हैं; सात फुनिही अरिल्ल चारि कुंडलिये मिले, सकल सातसें सत्ताईस ठीकठाने हैं; वत्तीस अक्षरके सलोक कीने ताके ग्रंथ संख्या सत्रहसे सातअधिकाने है. ॥ ७२७ ॥ दोहराः–॥समयसार आतम दरव, नाटक भाव अनंत; सोहे आगम नाममें, परमारथ विरतंत. ॥ ७२८ ॥

॥ इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धांत

संपूर्णम् ॥ श्रीरस्तु ॥